☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

तेरवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

तत्करा

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
०१ कत्तक २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	००१
१८ कत्तक २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	०१४
१६ कत्तक २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	०२१
१६ कत्तक २०१६ बिक्रमी	नूं एह शब्द राष्ट्रपती नूं फोटो नाल भेजे गए	जेठूवाल	अमृतसर	०३३
०१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	०४१
०७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	बंता सिँघ दे गृह	पंज गराईं	गुरदासपुर	०५६
०८ मग्घर २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	दय्या	गुरदासपुर	०६४
०८ मग्घर २०१६ बिक्रमी	नौरंग सिँघ दे गृह	दय्या	गुरदासपुर	०७०
०६ मग्घर २०१६ बिक्रमी	प्रीतम कौर दे गृह	ठीकरी वाला	गुरदासपुर	०७६
०६ मग्घर २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	भुंमली	गुरदासपुर	०८५
१० मग्घर २०१६ बिक्रमी	चानण शाह नाल गोष्ट	भुंमली	गुरदासपुर	०६१
१० मग्घर २०१६ बिक्रमी	जुगिंदर सिँघ दे गृह	डडवां	गुरदासपुर	०६४
१० मग्घर २०१६ बिक्रमी	शुदर्शन नाल गोष्ट	सोहल	गुरदासपुर	०६६
१० मग्घर २०१६ बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	हयात नगर	गुरदासपुर	१०१
११ मग्घर २०१६ बिक्रमी	धिरता सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	११२
११ मग्घर २०१६ बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	११५
१२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	धिरता सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१२२
१२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	जागीर सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदासपुर	१२३
१२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	पिपगली	गुरदासपुर	१२६

1 १३

1 १३

१२ मग्घर २०१९ बिक्रमी		जट्टा	गुरदासपुर	१३०
१३ मग्घर २०१९ बिक्रमी	जसवंत सिंघ नाल गोष्ट	रमदास	गुरदासपुर	१३६
१३ मग्घर २०१९ बिक्रमी	सुंदर सिँघ दे गृह	रोसे	गुरदासपुर	१४४
१३ मग्घर २०१९ बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह	शोहन	गुरदासपुर	१४७
१३ मग्घर २०१९ बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोहन	गुरदासपुर	१५०
१४ मग्घर २०१९ बिक्रमी	—	दोसत परा	गुरदासपुर	१६१
१४ मग्घर २०१९ बिक्रमी	किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१६७
१५ मग्घर २०१९ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१९०
१६ मग्घर २०१९ बिक्रमी	आसा सिँघ प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१९९
१७ मग्घर २०१९ बिक्रमी	हज़ारा सिँघ बलाका सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२२३
१७ मग्घर २०१९ बिक्रमी	वरखा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२३२
१७ मग्घर २०१९ बिक्रमी	खेड़ा सिँघ करतार कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२३८
१८ मग्घर २०१९ बिक्रमी	दीदार सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२४७
१८ मग्घर २०१९ बिक्रमी	बीबी बाजी दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२५२
१८ मग्घर २०१९ बिक्रमी	सन्त सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२५४
१८ मग्घर २०१९ बिक्रमी	मुनशा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२५९
१९ मग्घर २०१९ बिक्रमी	मेला सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२६१
१९ मग्घर २०१९ बिक्रमी	—	बाबूपुर	गुरदासपुर	२६६
१९ मग्घर २०१९ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	२७१
१९ मग्घर २०१९ बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	वजीरपुर	गुरदासपुर	२७७
२० मग्घर २०१९ बिक्रमी	मुनशा सिँघ दे गृह	नोशहरा	गुरदासपुर	२८६
२० मग्घर २०१९ बिक्रमी	उजागर सिँघ दे गृह	चेबे	गुरदासपुर	२८८

3
१३

२० मग्घर २०१६ बिक्रमी	त्रलोक सिँघ, त्रलोक सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	२६६
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	अतर सिँघ, चतर सिँघ, लक्खा सिँघ	ओगरा	गुरदासपुर	३०८
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	चानण कौर दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	३१२
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	ज्ञान सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	३१४
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	रावी कंढे दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	३१४
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	बचन सिँघ दे गृह	सिमल सकोर	गुरदासपुर	३१६
२२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	सिमल सकोर	गुरदासपुर	३२४
२२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	अनतोड़	गुरदासपुर	३२६
२३ मग्घर २०१६ बिक्रमी	महिंगा सिँघ दे गृह	सदा	गुरदासपुर	३३६
२३ मग्घर २०१६ बिक्रमी	गुरचरन सिँघ दे गृह	कत्तोवाल	गुरदासपुर	३३७
२४ मग्घर २०१६ बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	कत्तोवाल	गुरदासपुर	३४४
२४ मग्घर २०१६ बिक्रमी	—	नवां पिंड	गुरदासपुर	३४८
२४ मग्घर २०१६ बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	नयाशाला	गुरदासपुर	३४६
२४ मग्घर २०१६ बिक्रमी	सरूप सिँघ दे गृह	मंगूपुर	कपूरथला	३५२
२५ मग्घर २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	हरनामपुर	कपूरथला	३५७
०१ पोह २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३६०
१० पोह २०१६ बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३६७
२५ पोह २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३७२
२६ पोह २०१६ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३७८
२७ पोह २०१६ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४०६
२८ पोह २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४२३
३० पोह २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४२६

3
१३

०१ माघ २०१६ बिक्रमी	भगवान सिँघ, बूड़ सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	४३५
०१ माघ २०१६ बिक्रमी	——	जेठूवाल	अमृतसर	४३८
०१ माघ २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४४०
०३ माघ २०१६ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	मुंडी जमाल	फिरोज़पुर	४६६
०४ माघ २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४६७
०६ माघ २०१६ बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	४७५
०६ माघ २०१६ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	४८०
०६ माघ २०१६ बिक्रमी	जसबीर सिँघ, दिलबाग सिँघ, जगीर सिँघ	भोलेके	गुरदासपुर	४८३
१० माघ २०१६ बिक्रमी	सोहण सिँघ, मोहण सिँघ दे गृह	भोलेके	गुरदासपुर	४८६
१० माघ २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	भोलेके	गुरदासपुर	४६४
१० माघ २०१६ बिक्रमी	गिरधारी लाल दे गृह	भोलेके	गुरदासपुर	४६५
१० माघ २०१६ बिक्रमी	भगवान सिँघ दे गृह	महिता चौक	अमृतसर	५००
१० माघ २०१६ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	कोटली थान सिँघ	अमृतसर	५०५
१७ माघ २०१६ बिक्रमी	बलदेव सिँघ दे गृह	हरी पुर	अमृतसर	५१४
१७ माघ २०१६ बिक्रमी	नरैण सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	५२१
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	५२६
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	५५६
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	बलवंत सिँघ, हरबंस सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	५३१
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	चंनण सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	५३८
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	बेला सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	५३६
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	गोपा राए	अमृतसर	५४३
१८ माघ २०१६ बिक्रमी	सविंदर सिँघ दे गृह	भुलर	अमृतसर	५४७

4 १३

१९ माघ २०१९ बिक्रमी	बीबी प्यारो दे गृह	भुलर	अमृतसर	५५७
१९ माघ २०१९ बिक्रमी	नाजर सिँघ दे गृह	माना वाला	अमृतसर	५६०
१९ माघ २०१९ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	लैलीआं	अमृतसर	५६२
१९ माघ २०१९ बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	५६८
२० माघ २०१९ बिक्रमी	समां सिँघ दे गृह	मोधे	अमृतसर	५७७
२० माघ २०१९ बिक्रमी	हज़ारा सिँघ दे गृह	काउँ के	अमृतसर	५८४
२० माघ २०१९ बिक्रमी	अवतार सिँघ दे गृह	काउँ के	अमृतसर	५९०
२० माघ २०१९ बिक्रमी	सुरजन सिँघ दे गृह	भरोभाल	अमृतसर	५९३
२१ माघ २०१९ बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	६०३
२१ माघ २०१९ बिक्रमी	हरी सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	६०९
२१ माघ २०१९ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	६११
२१ माघ २०१९ बिक्रमी	मंगल सिँघ, दरबारा सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	६१३
२१ माघ २०१९ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	६१५
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	गुरबख़्श सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	६२३
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	चंनण सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	६२५
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	जगीर सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	६२८
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	६२९
२२ माघ २०१९ बिक्रमी		गग्गो बूआ	अमृतसर	६३०
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	सुरजन सिँघ दे गृह	भुलर	अमृतसर	६३१
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	मोता सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	६३६
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	बीबी बीरो दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	६३७
२२ माघ २०१९ बिक्रमी	मनी राम दे गृह	सिधवां	अमृतसर	६३८

5
१३

२३ माघ २०१९ बिक्रमी	समुंद सिँघ दे गृह	माड़ी मेघा	अमृतसर	६४५
२३ माघ २०१९ बिक्रमी	कुंदन सिँघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	६५२
२३ माघ २०१९ बिक्रमी	गंडा सिँघ दे गृह	दराज के	अमृतसर	६५४
२४ माघ २०१९ बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	भूरे	अमृतसर	६६२
२४ माघ २०१९ बिक्रमी		भूरे	अमृतसर	६६७
२५ माघ २०१९ बिक्रमी	सूरत सिँघ दे गृह	मस्तगढ़	अमृतसर	६७५
२५ माघ २०१९ बिक्रमी	मक्खण सिँघ दे गृह	सुगा	अमृतसर	६८६
२६ माघ २०१९ बिक्रमी	हज़ारा सिँघ दे गृह	मनिआला	अमृतसर	७०१
२६ माघ २०१९ बिक्रमी	बली सिँघ दे गृह	केरों	गुरदासपुर	७०३
२६ माघ २०१९ बिक्रमी	जगीर सिँघ दे गृह	सभरा	गुरदासपुर	७०६
२७ माघ २०१९ बिक्रमी	गुरबचन सिँघ, मोहण सिँघ	उसमा	गुरदासपुर	७२१
२७ माघ २०१९ बिक्रमी	करतार सिँघ, निरंजन सिँघ	चंबल	अमृतसर	७३०
२८ माघ २०१९ बिक्रमी	तारा सिघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	७४०
२८ माघ २०१९ बिक्रमी	गुरनाम सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	७४५
२८ माघ २०१९ बिक्रमी	दीदार सिँघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	७४८
२८ माघ २०१९ बिक्रमी	केसो राम दे गृह	जंडो के सरहाली	अमृतसर	७५२
२८ माघ २०१९ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	७५६
२९ माघ २०१९ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	७७४
२९ माघ २०१९ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	७७७
२९ माघ २०१९ बिक्रमी	ईशर सिँघ प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	७८०
०१ फग्गण २०१९ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७८६
०२ फग्गण २०१९ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८०५

6 १३

6 १३

०६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरी छंना	करनाल	८०८
०६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	अरजन सिँघ दे गृह	बलोच पुर	करनाल	८१०
०७ फग्गण २०१६ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	हरिआणा	८२०
०८ फग्गण २०१६ बिक्रमी	नैशनल हाई सकूल	बादशाहपुर	हरिआणा	८२५
०८ फग्गण २०१६ बिक्रमी	——	गुड़गाउँ	हरिआणा	८२७
०६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	८३७
१० फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरिभजन सिँघ दे गृह	लंगर पुरा	उत्तर प्रदेस	८४८
१० फग्गण २०१६ बिक्रमी	शिव सिँघ दे गृह	मेरट छौणी	उत्तर प्रदेस	८५५
१० फग्गण २०१६ बिक्रमी	प्रेमी देवी दे गृह	गरास मंडी	उत्तर प्रदेस	८५६
१० फग्गण २०१६ बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरट छौणी	उत्तर प्रदेस	८५८
११ फग्गण २०१६ बिक्रमी	दरबारी लाल दे गृह	गाजीआबाद	उत्तर प्रदेस	८६८
११ फग्गण २०१६ बिक्रमी	दर्शन सिँघ दे गृह	धीरपुर ढक्का	दिल्ली	८६६
११ फग्गण २०१६ बिक्रमी	अवतार सिँघ निरंकारी नाल		दिल्ली	८७३
११ फग्गण २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	सकूर बसती	दिल्ली	८८६
१२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	दिल्ली दरबार दे गृह	पहाड़गंज	दिल्ली	८८४
१२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	सरूप सिँघ दे गृह	चांकीआ पुरी	दिल्ली	८६५
१३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	गुरचरन सिँघ दे गृह	चांकीआ पुरी	दिल्ली	८६६
१३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	चंदा सिँघ, राज सिँघ दे गृह	प्रताप नगर	दिल्ली	६०३
१३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	अवतार सिँघ दे गृह	दिल्ली	दिल्ली	६०६
१३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	करौल बाग	दिल्ली	६६१३
१३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	रतन सिँघ दे गृह	दिल्ली दरबार	दिल्ली	६१५
१४ फग्गण २०१६ बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६१६

7
१३

१५ फग्गण २०१६ बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६३१
१५ फग्गण २०१६ बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६३५
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६४१
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	सुरिंदर सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	६४४
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	कौड़ा मल दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६४८
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	टोपन राम दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६५२
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६५४
१८ फग्गण २०१६ बिक्रमी	लैफटीनेंट महिंदर सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	६६५
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	औरंगजेब दे मकबरे उत्ते	खुलदाबाद	मध्ध प्रदेस	६८५
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	६८५
२० फग्गण २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	६६१
२० फग्गण २०१६ बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	६६८
२० फग्गण २०१६ बिक्रमी	जगजीत सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	१००२
२० फग्गण २०१६ बिक्रमी	सरमैल सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	१००३
२० फग्गण २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	औरंगाबाद	मध्ध प्रदेस	१००५
२१ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	पूना	—	१०१६
२१ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	पूना		१०१७
२२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरचंद सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ६		पूना	१०२४
२२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	गुरबलविंदर सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ६		पूना	१०३०
२२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	गुरदेव सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ६		पूना	१०३०
२२ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ६		पूना	१०३१
२३ फग्गण २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ६		पूना	१०४२

8
१३

8
१३

२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी प्रीतम सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ९ पूना १०४६
२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी प्यारा सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ९ पूना १०४७
२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी ज्ञान सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ९ पूना १०४९
२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी प्यारा सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ९ पूना १०५०
२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी गुरबख़श सिँघ सी० अैम० ई० किरकी बंगला ९ पूना १०५१
२३ फग्गण २०१९ बिक्रमी मल सिँघ, संतोख सिँघ, ओमप्रकाश सकन्दराबाद १०५३

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❇ पहली कत्तक २०१६ बिक्रमी जेठूवाल ❇

सो पुरख निरँजण चढ़या चा, सचखण्ड दुआर बहि बहि खुशी मनाइंदा। निरगुण सरगुण मेला मिल्या आ, हरि पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। जुग जुग विछड़े फड़ फड़ बांह, एकँकारा अंग लगाइंदा। दो जहानां दीप जगा, आदि निरँजण नूर धराइंदा। दरगाह साची सच निशाना इक झुला, अबिनाशी करता खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव उठा, श्री भगवान राह जणाइंदा। आत्म परमात्म पर्दा लाह, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्लाइंदा। नेत्र नैण इक उठा, अक्ख प्रतख आप वखाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, आपणा पल्लू आप छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साची खुशी मनाइंदा। सो पुरख निरँजण चाउ घनेरा, घर साचे वज्जे वधाईआ। लेखा चुक्कया मेरा तेरा, तेरा मेरा भेव ना राईआ। हरि पुरख निरँजण देवणहारा साचा गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। एकँकारा नाउँ रखाए सिँघ शेरा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश मिटाए अन्धेरा, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसाए सच्चा खेड़ा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। श्री भगवान दरगाह लाए आपणा डेरा, दर दरबारा आप सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए वखाईआ। करे खेल इक इकेला, दूजा संग ना कोए रलाईआ। धार बंधाए गुरु गुर चेला, चेला गुर करे कुड़माईआ। बोध अगाधी सज्जण सुहेला, मीत मित्र प्यारा मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी बैठा रिहा वेहला, गुर अवतारां सेवा लाईआ। सो पुरख निरँजण होया खुश, ख्वाहिश आपणी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी रिहा लुक, नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड दा बूटा पुट्ट, लोकमात लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर एका नाम पढ़ाई तुक, तर्ज़ राग ना कोए सुणाइंदा। सच निशान्यौं सारे गए

उक, तीर अंदाज़ ना कोए जणाइंदा। जीवण जीवण पैंडा गया मुक, युगति आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम सब दे कोलों रिहा पुच्छ, लुक्या कोए रहिण ना पाइंदा। वेखणहारा चारे गुठ, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बैठा रिहा कर के चुप्प, आपणा नाद ना किसे सुणाइंदा। किसे हथ्थ ना आया अन्धेरे घुप्प, चौदस चन्द ना कोए रुशनाइंदा। आपणी करनी आपे उठ, आपणी कार आप कमाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। ना कोई बणत ना कोई बुत्त, रूह रूप ना कोए वखाइंदा। मात पिता ना कोए पुत्त, जननी जन ना कोए अख्वाइंदा। मास बरख ना कोए रुत्त, दिवस रैण घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण होया दयाल, घर साचे खुशी मनाईआ। अन्तिम होया हल्ल स्वाल, बाकी कोए नज़र ना आईआ। लहिणा देणा चुकाया काल महाकाल, महिमा आपणी आप जणाईआ। सच दवारा सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आदि जुगादि करे प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। दो जहानां चले नाल नाल, सगला संग रखाईआ। सदा सुहेला बणे दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नजर इक उठाइंदा। करे खेल श्री भगवान, करनी करता आप जणाइंदा। दाता दानी बण अंञाण, बाला आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण रूप हो प्रधान, सरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। नेत्र नैण खोल्ह महान, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। जोती जोत नूर दो जहान, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप वड्याइंदा। सो पुरख निरँजण दयानिध, आपणी दया कमाईआ। नव नौ चार कर कर बिध, बिध नाता लए जुड़ाईआ। आपे करे कारज सिध, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि हरि आप कराइंदा। सचखण्ड वसे सच दवारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, ज़हूर आपणा आप प्रगटाइंदा। शाह पातशाह बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। भूपत भूप राज राजान योद्धा सूरबीर वड बलकारा, बल आपणा आप धराइंदा। नाम निधान शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार अल्हाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाइंदा। वस्त अमोलक देवणहार आप भण्डारा, वड भण्डारी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हो तैयार, त्रैभवण धनी वेस वटाईआ। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बण

प्रितपाल, सेवा आपणे हथ्थ वखाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। पारब्रह्म अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला रिहा सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाया फेरा, फेरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। दो जहानां चाउ घनेरा, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वखाए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। नव नौ चार चुकाए गेड़ा, उलटी लठ्ठ आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह बहि बहि खुशी मनाइंदा। गृह मन्दिर सोहे आप, आपणा घर आप वड्याईआ। आपे कर वड्ड प्रताप, वेखणहारा चाईं चाईंआ। जुग चौकड़ी जपावणहारा जाप, जप जीव जीव समझाईआ। दो जहानां माई बाप, पिता पूत खेल कराईआ। निरगुण सरगुण सज्जण साक, सगला बन्धन पाईआ। लख चुरासी माटी ख़ाक, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण जोत नूर ललाट, गृह मन्दिर इक रुशनाईआ। सच संदेसा शब्द नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। खेलणहारा खेल तमाश, गोपी काहन रास रचाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सरगुण निरगुण वसे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर एका रंग रंगाईआ। साचे घर हरि साचा रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। नव नौ चार पूरी होई मंग, मंगत आपणा वेस वटाइंदा। दो जहानां लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघ, लोकमात फेरा पाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे सन्त वेख चन्द, चन्द चांदना नूर चमकाइंदा। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म जणाए इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता ढाही कंध, पर्दा उहला ना कोए रखाइंदा। नव सत कटया पन्ध, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। गीत सुहागी सोहला छन्द, सो पुरख निरँजण आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। रंग रंगीला एकँकार, घर साचे खुशी मनाईआ। जन भगतां होया सच दीदार, कर दरस हरस मिटाईआ। हरख सोग ना कोए विच संसार, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। नव नौ चार विछड़या रिहा सांझा यार, यारी मात ना किसे लगाईआ। रसना कह कह गए गुर अवतार, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। मुकामे हक़ वसे परवरदिगार, महल अटल करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे बहे आप निरँकार, नानक निरगुण गुर रिहा जणाईआ। कबीर जुलाहा करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जिस दी चार जुग गाउँदे गए वार, वारता मात सुणाईआ। सो सिफ्त सालाही बेपरवाही प्रगट होणा आप निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सच भूमका वेख संसार, वड संसारी दया कमाईआ। मन्दिर सोहे इक दुआर, दर दरवाजा आप खुल्ल्हाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले मेलणहार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। ऊँचां नीचां

कर प्यार, राउ रंकां राह वखाईआ। कागद कलम छाही ना पावे सार, कातब लेख ना कोए चुकाईआ। चार वेद गए हार, पुराण अठारां नीर वहाईआ। शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान ना कोए विचार, त्रिलोकी नाथ बण अनाथ, बैठा सीस झुकाईआ। ईसा मूसा कलमा कलाम इलाही नूर किसे मकतब पढ़े ना कोए गाथ, कलमा कलाम ना कोए जणाईआ। सच अमाम वेखणहार नज़ाम, सच दवारे एका नैण उठाईआ। पीर पैगम्बर कर गुलाम कराउँदा रिहा सजदा सलाम, हदीस जगदीश इक पढ़ाईआ। करे खेल नौजवान, रूप रंग ना कोए निशान, भेख नज़र कोए ना आईआ। नानक गोबिन्द दे दे दान, इक वखाए सच निशान, झुलदा रहे दो जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपणा नाउँ रख पुरख अकाल, सचखण्ड वसाए सच्ची धर्मसाल, मेला मेल मेलणहार, दीवा बाती एका बाल, करे खेल दीन दयाल, आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे ख़ुशी मनाईआ। होया ख़ुशहाल आप करतार, भेव किसे ना आया। कलिजुग अन्तिम हो तैयार, त्रैगुण अतीता वेस वटाया। मन्दिर मसीतां वसया बाहर, जगत अंगीठा रिहा तपाया। गीता ज्ञान ना पावे सार, अठारां ध्याए ना पन्ध मुकाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर चढ़या चिखा विच संसार, अग्नी हवन नाल मिलाया। सब दा लेखा जुग जुग देवे पाड़, थिर कोए रहिण ना पाया। पारब्रह्म दी सारे तक्कदे रहे आड़, निउँ
४ निउँ आपणा सीस झुकाया। कहिन्दे रहे लाशरीक वाहद गाड, नूरो नूर नूर धराया। किसे हथ्थ ना आई हाद, महिदूद ४
१३ हद्द ना कोए कराया। उच्ची कूक देंदे रहे बांग, नाअरा नौबत नाम वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १३
कर, घर साचे ख़ुशी मनाया। साचा घर इक्को एक, एकँकारा आप जणाइंदा। जिस दा कोए रूप ना कोए रेख, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जिस दी सिफ्त कर कर गया गुर दस्मेश, दस दस मास भेव ना पाइंदा। तिस साहिब अग्गे चले ना किसे कोए पेश, पेशा सर्ब जगत जगत मात कमाइंदा। जिस दी पूजा करदे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, कोटन कोटि सीस निवाइंदा। आदि जुगादि जिस दा इक्को सच्चा देस, परदेस फेरा कोए ना पाइंदा। जिस मन्दिर रहे हमेश, सो मन्दिर हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दवारे बहि बहि रिहा खेड, साची खेड आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। साची दया श्री भगवान, आपणी आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सचखण्ड दवारा कर परवान, परवाना नाम हथ्थ फड़ाईआ। लोकमात हो प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले आण, आप आपणा बन्धन पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स दस्स गए निशान, निशाना आपणा दए झुलाईआ। करे खेल नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहा बेपहचान,

५
१३

बेनज़ीर नज़र किसे नज़र नाल ना मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जुग चौकड़ी देंदा रिहा लारा, भेव अभेदा आप छुपाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दे सहारा, सहिज सहिज सहिज गुण आप समझाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जिस दा भेव कोए ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान चारे बाणी बोल जैकारा, जै जैकारा नाअरा इक्को लाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, तेरा खेवट खेटा बण बण मात चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधारा, करोड़ तेतीसा खोल्ह किवाड़ा, सुरप्त इन्द आप उठाइंदा। भगत भगवान लाए अखाड़ा, आपे वेखे वेखणहारा, दुसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी आपे कर, आपणी ख़ुशी आप मनाईआ। गुरमुख गुर गुर आपे वर, वर इक्को इक समझाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप नज़र ना आईआ। सन्त सुहेले घाड़न घड़, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाईंआ। सच महले आपे चढ़, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। आत्म परमात्म लए फड़, पल्लू आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल नरायण नर, नारी कन्त सेज सुहाईआ। निरगुण जोत नूर धर, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। घर साचे बहि श्री भगवान, आपणी ख़ुशी आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो मारो ध्यान, धीरजवान आप समझाइंदा। हरि प्रगट होया इक्को काहन, नाम बंसरी हथ्थ रखाइंदा। लोक परलोक दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। नाम धराए हरि अमाम, अमाम अमामा वेस वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, चौदां तबकां फोल फुलाइंदा। सब दा लेखा मुक्के हराम, हलाल आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। आपणा खेल करे हक़, हकीकत आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम पीर पैगम्बरां उत्ते प्या शक़, साबत नज़र कोए ना आईआ। बण बण पांधी गए थक्क, पैंडा सके ना मात मुकाईआ। दे दे सुक्ख्या गए अक्क, साची करे ना कोए पढ़ाईआ। सजदा कर कर रगड़या नक्क, नाम नकेल कोए ना पाईआ। चौदां तबक खोल्ह हट्ट, साची वस्त ना कोए विकाईआ। मणका मणका माला तसबी रहे रट, रट्टा दीन मज़्हब लड़ाईआ। शरअ कोई ना कढ्ढे वट्ट, लाशरीक ना कोए वखाईआ। द्वैती मेटे ना कोए फट्ट, फ़तवा ग़ैर ना कोए वखाईआ। सुहाग ना दिसे कोई नथ्थ, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। अल्ला राणी ना कोई पति, पतिपरमेश्वर भुलया सच्चा माहीआ। कलिजुग प्रेम अन्दर गई फस, फांदी कोए ना अन्त तुड़ाईआ। चारों कुण्ट रही

५
१३

नठ्ठ, घर घर फेरा पाईआ। जिध्धर वेखे कुली कक्ख, साचा वणज ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह होया खुशहाल, आप आपणा भेव चुकाइंदा। उठौ वेखो सारे करो ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी कल आप धराइंदा। चौदां विद्या मेट निशान, साची सिख्या इक समझाइंदा। अक्खर वक्खर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। चरण कँवल दे ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। साचा राग सुणाए कान, तन्दी तन्द ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। खुश होया आप भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां आपे मिल्या आण, मेहरवान आपणा पन्ध मुकाईआ। आपणी गोदी चुक्के आण, जुग जुग हरि जू खुशी वखाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर कोटन कोटि राम कृष्न काहन, ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस झुकाईआ। सो साहिब बरदा बणया ग़ुलाम, दर दर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाईआ। आपणा खेल दस्से करतार, हरि हरि जू दया कमाइंदा। नेत्र वेखो गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप मिलाइंदा। रुत्त रुतड़ी सोहे फुलवाड़, पत डाल्ही आप महकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ लोकमात लाई इक गुलज़ार, गुलशन आपणा आप खिलाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग रहे इक बहार, ख़िज़ां रूप ना कोए वटाइंदा। लख चुरासी विच्चों छत्ती छत्ती मार लकार, हद्द हदूद वंड वंडाइंदा। गुरमुख गुरसिख अन्दर वाड़, अग्गे हो हो आपणा वास्ता पाइंदा। बिन गुरसिखां कोई ना मददगार, यारी यार ना कोए निभाइंदा। बिन भगतां करे ना कोए प्यार, दो जहान ख़ाली नज़री आइंदा। बिन सन्तां मिले ना सच दीदार, दीद ईद चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। बिन गुरमुखां कोए ना दए आधार, तृष्ना मात ना कोए बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो खेल, हरि सतिगुर आप वखाईआ। भगत भगवन्त कर कर मेल, मेला हरि दुआर लगाईआ। जुग जुग वसदा रिहा धाम नवेल, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। रूप धराया गुरु गुर चेल, चेला गुर आप अख्वाईआ। घर घर दर दर सगन मना चढ़ाए तेल, बण पांधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्हो अक्ख, हरि आख़र आप जणाइंदा। लख चुरासी नालों कीते वक्ख, भगत भगवान आप वखाइंदा। जिन्हां पिच्छे होया आप प्रतख, पारखू आपणा नाउँ धराइंदा। सच दवारे कर इकठ्ठ, इक्को रंग वखाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग चलदा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव दस्से निरँकार, निरगुण आप जणाईआ।

तेई अवतार गए हार, भगत अठारां पन्ध मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर पुकार, अञ्जील कुराना लेख जणाईआ। नानक गोबिन्द बोल जैकार, जीव जंत जगत समझाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, इक्को इक बेपरवाहीआ। अन्तिम सारे गए हार, मार्ग इक ना कोए रखाईआ। साचा नाअरा सच ना दिसे किसे जैकार, जो मेला लए मिलाईआ। कोई राम करे प्यार, कोई कृष्न सीस निवाईआ। कोई मूसा मंगे दीदार, कोई ईसा नूर खुदाईआ। कोई मुहम्मद कहे यार, यारी यारां संग रखाईआ। कोई नानक कहे निरँकार, कोई गोबिन्द सीस झुकाईआ। कोई कहे सतिनाम करतार, कोई वाहिगुरू ढोला गाईआ। साचा भेव ना पाया जीव विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि रिहा दस्स, दहि दिशा आप वखाईआ। वेखो हरि जू होया वस, भेव अभेद खुल्हाईआ। इक्को अक्खर दस्स के गया फस, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। चार कुण्ट ना जाए नठ्ठ, दहि दिशा ना पन्ध मुकाईआ। साचे भगतां होया इकठ्ठ, दर घर वज्जी सच वधाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, किनारा कोए नज़र ना आईआ। चौदां लोक ना कोई हट्ट, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, शिवदुआला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। साचा खेल श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। इक्को अक्खर इक ज्ञान, एका वार पढ़ाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार रसना जिह्वा सारे गाण, गा गा शुकर मनाइंदा। आत्म परमात्म देवे दान, दाता दानी खेल कराइन्दा। पारब्रह्म दा ब्रह्म निशान, ब्रह्म बूटा आप लगाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, पंज तत्त नाच नचाइंदा। त्रैगुण माया कर परवान, परम पुरख वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल महान, कलिजुग आपणा रंग रंगाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे ज्ञान, एका पर्दा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाइंदा। साचा मार्ग पारब्रह्म, ब्रह्म आपणा आप लगाईआ। निरगुण रूप निरगुण धर्म, निरगुण राह चलाईआ। निरगुण ज़ात पात निरगुण वरन, निरगुण वंड वंडाईआ। निरगुण शाह पातशाह निरगुण सरन, सरनगति इक समझाईआ। निरगुण करता करनी करन, करता पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। निरगुण परमात्म निरगुण आत्म, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। ना कोई जाणे धर्म सनातम, सनातन आपणा रंग वखाइंदा। भेव खुल्हावणहारा बातन, ज़ाहरा आपणा रूप वटाइंदा। लेखा जाणे मकतूल कातिल, कतलगाह आप समझाइंदा। आपे बणया रहे मुक्दस बातल, बेवफ़ा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव जीव ईश, जगदीश्र आप जणाईआ। जुग चौकड़ी चले रीत, रीतीवान फेरा पाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर गा गा गए गीत, गीत सुहागी ढोला गाईआ। वंडां वंड वंड गए मन्दिर मसीत, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। अन्तिम औध गई बीत, वेला सब दा रिहा मुकाईआ। प्रगट होया आप अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपे जीत, जित्त आपणे हथ्थ रखाईआ। फेर जन भगतां करे सच प्रीत, लोकमात दए वड्याईआ। फड़ फड़ मिट्ठे कीते कौड़े रीठ, आपणा नाम रस भराईआ। आपे वढ़या अन्दर चीत, चितवित ठगोरी कोए ना पाईआ। आपे गाए सुहागी गीत, गोबिन्द आपणा नाउँ वड्याईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच भेव मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक जणाईआ। साचा राह निरगुण निरगुण रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। निरगुण सेज निरगुण पलँघ, निरगुण नर हरि हंढ्ढाइंदा। निरगुण नाम निरगुण मृदंग, निरगुण तार सतार हिलाइंदा। निरगुण रस निरगुण अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। निरगुण नूर निरगुण चन्द, निरगुण चांदना चन्द चमकाइंदा। निरगुण खण्ड निरगुण ब्रह्मण्ड, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। निरगुण सूरज निरगुण चन्द, निरगुण गगन मण्डल रुशनाइंदा। निरगुण वसे सचखण्ड, निरगुण लोकमात फेरा पाइंदा। निरगुण सूरबीर सरबँग, निरगुण शहिनशाह अख्वाइंदा। निरगुण चिला तीर कमंद, निरगुण तेज कटार चमकाइंदा। निरगुण निरगुण करे जंग, निरगुण निरगुण वार रखाइंदा। निरगुण निरगुण पाए बंध, पंज तत्त काया पर्दा पाइंदा। निरगुण निरगुण गाए छन्द, गुर अवतार नाउँ धराइंदा। निरगुण सुहागण निरगुण रंड, निरगुण कन्त कन्तूहल वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। निरगुण करनी करे करतारा, कुदरत निरगुण रूप वखाईआ। निरगुण बन्न्हे साची धारा, निरगुण लेखा दए मुकाईआ। निरगुण आवे जावे विच संसारा, निरगुण मार्ग एका लाईआ। निरगुण करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखणा वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण सतिजुग त्रेता द्वापर देंदा रिहा लारा, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या हरि दातार, दाता आप जणाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, परम पुरख भेव चुकाइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात जणाइंदा। दर दरवाजा खोल्ह किवाड़, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त इक विहार, बण बिवहारी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाइंदा। साचा मार्ग हरि जू हरिसंगत, सगला संग रखाईआ। ना कोई अंकड़ा ना कोई अंकत, अंक लेख ना कोए बणाईआ। ना कोई पांधा ना कोई पंडत, साची विद्या ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई दाता ना कोई मंगत, भिच्छया नाम ना कोए वरताईआ। ना कोई गुर ना कोई संगत, कलिजुग अन्त संग ना कोए निभाईआ। पुरख अबिनाशी

सारे कीते खण्डत, खण्डा आपणे हथ्थ रखाईआ। दर दरवेश बणे दर मंगत, बैठे सीस झुकाईआ। दरोही ख़ुदाए नबी रसूल कहिण असीं बहीए बण के पंगत, शरअ मज़्ह़ब ना दीन कोए वड्याईआ। गढ़ तुटा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म तेरी शरनाईआ। तेरा चरण दुआरा साचा जंनत, दूजा दर ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। साचा खेल तक्को मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी चलाई रीत, लोकमात समझाइंदा। भगत भगवान मिल मिल गायण इक्को गीत, सोहँ सोहला आप सुणाइंदा। सच सच दी सच प्रीत, घर साचे आप लगाइंदा। पिछली सब दी गई बीत, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सृष्ट सबाई लई जीत, आप जितया कदे ना जाइंदा। ग़रीब निमाणयां नाल गंढु लई पीच, दो जहान ना कोए खुल्ह़ाइंदा। शहिनशाह बणया आप नाचीज़, गुरमुखां मात वड्याइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों ना गया पतीज, आपणा भेव ना किसे खुल्ह़ाइंदा। छोटयाँ बाल्यां पूरी करे रीझ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दो जहान जे कोई ला के वेखे नीझ, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। इक्को नानक दिती निक्की झीत, कबीर ताकी बंद वखाइंदा। सारयां पीसण ल्या पीस, हरि जू चक्की आप चलाइंदा। उठ के सारे वेखो ख़ाली होए ख़ीस, सौदा हट्ट ना कोए विकाइंदा। ना कोई शरअ ना हदीस, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा। फड़ फड़ बाहों रिहा घसीट, ईसा मूसा सीस झुकाइंदा। करवट दे ना बदलें पीठ, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। तेरा रल के गाईए गीत, सोहँ ढोला मोहे भाइंदा। तेरे चरण कँवल अमृत आब हयात पीए ला के झीक, रसना मुख ना कोए वखाइंदा। तेरी सच्ची दिसे रीत, ज़ात पात ना कोए बणाइंदा। लेखा चुक्कया मन्दिर मसीत, वक्त पंज निमाज़ ना कोए पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। वाह वा तेरा खेल लग्गा सोहणा, गुर अवतार ख़ुशी मनाईआ। हरिसंगत विच बहि के किसे ना रोणा, सुख सुख विच मिलाईआ। आत्म मैल दुरमति धोणा, सोहँ ढोला गाईआ। आत्म अन्तर तेरे जोगा होणा, होर ना कोए साक सज्जण भैण भाईआ। इक्को बीज साचा बोणा, अमृत बूटा मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। वेखो खेल हरी दुआर, हरि साचा आप जणाइंदा। सतिजुग दा सच प्यार, हरिसंगत विच प्रनाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर तैयार, तत्त इक्को इक वखाइंदा। ब्रह्म मति दे अधार, मनमति मोह चुकाइंदा। गतमित जाणे करतार, दूसर भेव कोए ना आइंदा। रथ चलाए विच संसार, बण रथवाही सेव कमाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ कर तैयार, मन्दिर अन्दर आसण लाइंदा। निरगुण जोत नूर उज्यार, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। अजूनी रहित हो तैयार, अनभउ प्रकाश कराइंदा। ऋषी मुनी गए हार, आपणी रेख ना किसे वखाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल करे करतारा, हरि करनी आप जणाईआ। सचखण्ड दा सच विहारा, लोकमात प्रगटाईआ। इक नौ दा इक अखाड़ा, एकँकारा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत रीती दए समझाईआ। जगत रीती दस्से आप, आपा आप छुपाईआ। सति सतिवादी सच्चा जाप, घर साचे आप जपाईआ। एका अक्खर एका पाठ, एका वार पढ़ाईआ। दो जहानां पार घाट, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। लहिणा देण चुकाए मात, बाकी कोए नज़र ना आईआ। जन भगतां धूढ़ी मस्तक ख़ाक, टिक्का आपणा आप चमकाईआ। हरिजन उपजाए साची ज़ात, ज़ात आपणी नाल मिलाईआ। गुरमुख तेरी ना होए वफ़ात, फ़ातिहा सब दा दए पढ़ाईआ। उन्नी कत्तक गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए इक जमात, इक्को अक्खर दए समझाईआ। सचखण्ड दी सच कनात, शब्द दीवार आप वखाईआ। जे कोई वेखे मार झात, भगत दुआरा दए दरसाईआ। जिस दवारे प्रगट होए साख्यात, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग दए लगाईआ। उन्नी कत्तक नीला बाणा, हरि हरि जू आप सुहाईआ। करे खेल वड जरवाणा, जाबर ज़बर बेपरवाहीआ। सच संदेसा देवे राजा राणा, हुक्म हाकम आप जणाईआ। सब नूं मन्नणा पए भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अमाम मैहन्दी जिस दर्शन पाणा, मुस्लिम सुन्नी दए सुणाईआ। राम कृष्न जिस चरण ध्यान लगाणा, सरन चरण दए वड्याईआ। नानक गोबिन्द जिस गोद सुहाणा, तिस गोदी लए उठाईआ। वरनां बरनां दए फ़रमाना, फुरना सब दा बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। उन्नी कत्तक पन्थ ख़ालसा, हरि ख़ालस दए समझाईआ। जिस दी करदे रहे लालसा, सो लालण आया माहीआ। नेत्र खोलो लाहो निंद्रा आलसा, आलस सब दा रिहा गंवाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो करदा रिहा मालशां, लोकमात मर्द मर्दान बणाईआ। सो सब दा अन्तिम बणया सालसा, लेखा हक़ो हक़ मुकाईआ। करन आया इक अदालता, आदल आपणा रूप वटाईआ। पिच्छों देवे ना कोई अलामता, उल्मा चले ना कोए चतुराईआ। आप रहे सही सलामता, सब दा लेखा दए मुकाईआ। एथे किसे नूं करे ना कोई ममानता, सुणे फ़रियाद सच्चा माहीआ। अन्तिम देणी ना किसे ज़मानता, बरीख़ाना ना कोए वखाईआ। इक्को गोबिन्द आया देण शहादता, शहिनशाह आपणे संग रखाईआ। सब दी लेखे लाए इबादता, आपणी झोली पाईआ। उठ उठ कर लओ आप तुआकबा, पिच्छा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा लेख लिखे शाह इंगलैंड, इंगलस्तान आप जणाइंदा। अन्तिम ख़ाली दिसे लैंड, लैंड मारक आप वखाइंदा। ना कोई फ़रैंडि ना फ़रैंड,

फ़रमांबरदार ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा
लेखा लिखे शाह ईरान, अरब तुरकस्तान नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी चाढ़े इक तूफ़ान, तोहफ़ा सब नूं दए पुचाईआ।
साबत रहे ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। आप बदलण आया नज़ाम, नज़म इक्को नाम सुणाईआ। चल
के बरदे बणो गुलाम, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। दर्शन करो इक अमाम, जिस नूं मुहम्मद सीस झुकाईआ। सच संदेसा
दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह
लाशरीका, हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। डूँग्घी धार उठाए अमरीका, अमरपद इक जणाइंदा। अन्तिम वेला आया नज़दीका,
नेड़े हो हो खेल कराइंदा। लेखा जाणे जीव जीअ का, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। अग्गे पैण ना देवे तरीका, तारीक
अन्धेरा आप गवाइंदा। जिस दी मूसा रखदा गया उडीका, ईसा नैणां राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म घल्ले चीना, चिर अन्त कोए ना लाईआ। अन्तिम सब नूं होणा पए
अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अबिनाशी साचे अस्व पावणहारा ज़ीना, शाहसवारा सच्चा माहीआ। सब दा
पाड़नहारा सीना, तीर निशाना इक चलाईआ। वेखणहारा कत्तक रुत्त महीना, रुतड़ी आपणी नाल मिलाईआ अठारां साल
११
१३
बैठा रिहा बण नाबीना, आपणी अक्ख ना कदे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा
११
१३
दए घलाईआ। सच संदेस रूस नरेशा, एका एक जणाईआ। आपणा दरसण आया भेसा, भेव अभेद खुल्हाईआ। अग्गे
चले ना किसे कोई पेशा, ज़िमी असमान ना कोए लड़ाईआ। बुध मति दी खेडे खेडा, जीवण जुगत ना किसे जणाईआ।
कूड़ी क्रिया कीता तेरे जेडा, चारों कुण्ट रही भवाईआ। अन्तिम सब दा होए इक्को नेता, निहकलंक बेपरवाहीआ। नौ
खण्ड पृथमी कर कर वेंता, शब्दी शब्द दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।
बेपरवाह हो मेहरवान, मेहरवान दया कमाईआ। संदेसा देवे मुग़ल पठाण, नाम निधाना इक जणाईआ। चुग़ली चुग़ल ना
लाए कोए विच जहान, पर्दा आपणा आप चुकाईआ। साचे तख्त बैठा नौजवान, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। रल के सारे
करो सलाम, अलैकम मिले मात वड्याईआ। अन्तिम छुपण वाला भान, किरन चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह कम्म करे ख़ास, ख्वाहिश सब दी पूर कराइंदा। हुक्म
देवे शाह फ़रांस, फाँसी सब दे हथ्थ वखाइंदा। सौखा लैण ना देवे सांस, साह साह आपणा नाम वखाइंदा। नौ खण्ड
पृथमी पावे रास, बण नटुआ स्वांग वरताइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद पीर पैगम्बर प्रगटाए आपणी शाख़, शनाख़त इक्को इक

जणाइंदा। शाह तुरकी करे घात, घाउ आपणा नाम लगाइंदा। बिन हरि ना कोए नज़ात, बिन खुदा खुदी ना कोए मिटाइंदा। रल मिल पीओ हयात आब, अरब अरबानीआं आप समझाइंदा। प्रभ देवणहारा अन्त इक्को ख़ताब, ख़ता सब दी वेख वखाइंदा। सब नूं मन्नणा पए हुक्म जनाब, जलवा आपणा ना कोए धराइंदा। दो जहानां वड नवाब, लोकमात फेरी पाइंदा। ख़ाली हथ्थ करो आदाब, पुन्न सवाब भेव चुकाइंदा। जिस दा पीर पैगम्बर लैंदे रहे ख्वाब, सो ख़बर आप पुचाइंदा। जे किसे लैणा सच जवाब, घर सद्दो दर आ आ हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पाक ख़ाक ख़ाक पाक आप कराइंदा। मन वासना जाए चल, चलितर हरि वखाइंदा। गुरसिख दुआरा लए मल्ल, मनसा मोह मुकाइंदा। जिस दुआरे रिहा घल्ल, सो दुआरा चरण कँवल समझाइंदा। सच प्रेम जाणा रल, प्यार घर इक वखाइंदा। जिथ्थे मिले इक्को फल, दूजी वस्त ना कोए वरताइंदा। जिथ्थे नेड़ ना आए काल कल, कालख टिक्का ना कोए लगाइंदा। सो साहिब होया तेरे वल, तेरे अग्गे वास्ता पाइंदा। बाहरों दिसे तेरी चम्मड़ी खल्ल, निज घर तेरे डेरा लाइंदा। अन्त ना करे छल, छहबर आपणा नाम वखाइंदा। घर दीपक दीआ गया बल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जिस दवारे रिहा घल्ल, सो दवारा तेरे अन्दर वखाइंदा। आत्म परमात्म जाए रल, अग्गा पिच्छा ना कोए बणाइंदा। जोती जोत

१२ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा देवे घर, उठ पाल राह तेरा आप तकाइंदा। उठ के जा जा जा, आपणी १२

१३ याद दिलाईआ। तेरी सिफ्त वाह वा, वाहिगुरू आप गाईआ। तेरा मेरा इक्को राह, रहबर बणे जगत लोकाईआ। तेरा १३

नाता जुड़या सहिज सुभा, सबक साबत इक पढ़ाईआ। रहबर बणया आप खुदा, राह साचा रिहा वखाईआ। जिस घर जा फेर ना होए जुदा, जुज़ आपणा ना कोए वंडाईआ। चला जा चला जा चला जा, जब तक्क ना मिले माहीआ। बाहों फड़ गल लए लगा, तिस अग्गे कर अरजोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। उठ जा उठ जा मन्न कहिणा, कह कह आप सुणाया। तेरे पिच्छे हरि जू रहिणा, फिर फिर आपणा वक्त लँघाया। साची वस्त नाम अमोलक पाए गहिणा, गहर गम्भीर बेपरवाहया। धाम इकठ्ठे इक्को रहिणा, रहि रहि खुशी मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच रिहा घलाया। गुरमुख फड़ी हरि जू डोर, डोरी गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। चमरेटे मिल्या ढो ढो ढोर, पाणां गंढु पवाईआ। बटवारा वेख्या ठग्ग चोर, चोरी ठग्गी हरि जू भाईआ। त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े लए जोड़, जोड़ी जगत जुड़ाईआ। आपे चढ़ के वेखे साचे घोड़, घोड़ा नज़र किसे ना आईआ। ग़फ़लत अन्दर गया बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी कर कर आपणा हाल सुणाईआ। हरि जू वेख्या तक्क के ग़ौर, गहर गम्भीर नैण तकाईआ। पूरब

जन्म दे विछड़े अन्त बणाए आपणे कौर, देवे माण वड्याईआ। दोहां दवादस गई सौर, दावत हरि खवाई आ। परम पुरख प्रभ गया बौहड़, बहु भांत दए वड्याईआ। जन्म जन्म दी मिटे औड़, अमृत रस चुआईआ। माणस जन्म गया सौर, सौहरे पेईए खुशी मनाईआ। जिस दे सिर ते आदि जुगादि झुलदा चौर, सो चूहड़े चम्यार गले लगाईआ। फल मिठ्ठे कीते कौड़, विख अमृत रूप बणाईआ। बिध करी अवर की और, कोई भेव ना जाणे राईआ। कर किरपा बदले तौर, तरा तर्ज़ आप समझाईआ। सस्से उपर नजर आया होड़ा होड़, होका दे दे रिहा समझाईआ। हँ ब्रह्म करे कोरा कोर, दुरमत्त मैल ना लागे राईआ। इक दूजे दे नाल दित्ते तोर, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। पारब्रह्म दे निक्के बाले छोहर, आपणी उंगली रिहा लगाईआ। कदी चुक्क लए आपणी मौर, मोढे उपर लए टिकाईआ। आप बण के बरदा घोड़, गुरमुख आपणी पीठ टिकाईआ। अन्त निमस्कार करे दोए जोड़, जोड़ी जोड़ी आप शहिनशाहीआ। गुरमुखां दी सदा सदा लोड़, बिन गुरमुखां हरि जू कम्म किसे ना आईआ। गुरसिखो तुहाढ्ढे अग्गे कोई ना ज़ोर, बण बरदा सीस झुकाईआ। जिध्धर चाहो लओ तोर, तोर आपणी आया बदलाईआ। तुहाढ्ढे हथ्थ फड़ाई डोर, ज़िमी असमान चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे खुशी वखाईआ। जोड़ी जुड़ी जुड़या रथ, रथ रथवाही खेल कराइंदा।
१३ वेखण आया पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। नाम अमोलक दे वथ, वस्त इक्को इक वरताइंदा। इक दूजे दा करना जस, दूजी सिख्या ना कोए पढ़ाइंदा। गुरसिखां गुरसिख मिले हस्स हस्स, हँस मुख आप हँसाइंदा। जन भगतां अग्गे आपे कर के बहि जाए बस्स, बसता आपणा बन्नू वखाइंदा। सच दवारयों कदे ना जाए नस्स, घर बहि बहि डेरा लाइंदा। कलिजुग अन्तिम कीते वक्ख, वक्खरी धार जणाइंदा। जगत जोड़ी भगत भगवन्त करन आया पक्ख, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जिस कक्खों कीते लख, लखों आपणे ख़ज़ाने पाइंदा। जिस दा भेव ना सक्या कोई दस्स, पर्दा चुक्क ना कोए वखाइंदा। सो निरगुण आया नठ्ठ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां दवारे गया ढठ्ठ, आपणा बल ना कोए वखाइंदा। हरिसंगत तेरा इकठ्ठ, प्रभ सच्चे इक्को भाइंदा। रविदास चुमारा लए रख, बाल्मीक तोड़ निभाइंदा। पुरख अबिनाशी अन्दर जाए वस, वास्ता दोहां अग्गे पाइंदा। तुहाढ्ढे प्रेम बद्धा कस, ढिला रूप ना कोए रखाइंदा। मेरी तक्क तक्क थक्की अक्ख, आख़र तुहाढ्ढे दवारे आइंदा। प्रगट हो आप प्रतख, पारस कंचन लोहा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, रथ भगतां आप चलाइंदा। छब्बी अन्दर इक्को छब्ब, हरि छहबर नाम लगाइंदा। बिन लभ्भयां प्या लभ्भ, गुरमुख लभ्भण किते ना जाइंदा। आपणी वंडी साची हद्द, हदूद आपणे १३

हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख सज्जण साचे सद्द, सदा एका नाम सुणाइंदा। आप वखाए आपणा पद, पद निरबाण आप जणाइंदा। पिछली कीती देवे वड्ड, अग्गा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साल बसाल बण दलाल, हाल अहिवाल दलाल आप अख्वाइंदा।

❇ १८ कत्तक २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

१४ ज़बर ज़ेर होई ज़ेर, जाबर इक खुदाया। बेसबर ना लाए देर, बेऐब बेपरवाहया। लेखा जाणे चन्न अन्धेर, धूंआँधार समाया। आदि जुगादि खेले खेल, ख़ालक ख़लक रूप वटाया। जुग चौकड़ी चाढ़े तेल, साहिब साचा सगन मनाया। महिबूब वसे धाम नवेल, हुजरा हक़ आप वडयाया। अल्फ़ ये करे मेल, आलमीन बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर लेख मुकाया। ज़ेर ज़बर ना कोए ज़ाहर, ज़ाहरा रूप धराईआ। सच खुदा ना होए कायर, बल इक्को इक रखाईआ। दूजा कोए ना दिसे ग़ैर, ग़ैरत आपणे विच छुपाईआ। चौदां तबक करे सैर, सैरगाह इक बणाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर, महिमान ख़लक खुदाईआ। लेखा जाण सञ्झ सवेर, सरघी आपणे रंग रंगाईआ। दरगाह वेखे

१४ १३ सच्चा खेड़, खेड़ा नगर इक वड्याईआ। नूर इलाही बन्ने बेड़, जलवा ज़ाहर ज़हूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर लए समाईआ। ज़ेर ज़बर जाए समा, समाप्त आप कराइंदा। आपणे विच लए छुपा, पर्दा उहला आप वखाइंदा। रहबर बणे नूर खुदा, मख़लूक ख़लक समझाइंदा। सति सरूप कर फ़िदा, फ़ितरत सर्ब मिटाइंदा। राह जणाए इक सिध्धा, सिदक सबूरी नाल मिलाइंदा। चौदां तबक पए गिध्धा, पीर पैगम्बर नाच नचाइंदा। कोई ना जाणे हरि का खेल किडा, भेव अभेव ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर वेख वखाइंदा। ज़ेर ज़बर होए ख़ाक, हरि ख़लक आप समझाईआ। परवरदिगार पाकी पाक, पतित पुनीत बेपरवाहीआ। साहिब सुल्तान सज्जण साक, साख्यात नूर रुशनाईआ। दर बदर सुणाए गाथ, बेदर्दी दर्द वंडाईआ। हक़ जनाब साची ज़ात, सच सफ़ात इक दृढ़ाईआ। दो जहान ना होए वफ़ात, फ़तवा सादर ना कोए कराईआ। खेले खेल कायनात, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। रूह बुत्त बाग़ बाग़ात, बाग़बान बाग़ीचा इक लगाईआ। चौदस चौदां हौई अन्धेरी रात, चन्न चौधवीं मुख छुपाईआ। सच ना दिसे कोई जमात, करे हक़ ना कोए पढ़ाईआ। कोई ना देवे अन्त निज़ात, वही नाज़ल दए वखाईआ। कोई ना पुच्छे बातन बात, बातल रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर

रिहा खपाईआ। ज़ेर ज़बर मारे धाह, नेत्र नीर वहाया। दरोही दरोही दरोही ख़ुदा, ख़ुदी रूप ना कोए वडयाया। अल्फ़ ये होए जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाया। तेरे उत्तों होए फ़िदा, सब दे उपर डेरा लाया। चरणां हेठां सीस झुका, सजदा दर दर इक वखाया। कागद कलम लेख बणा, लिख लिख लेखा मात जणाया। चौदां तबक वंड वंडा, हिस्सा इक्को इक रखाया। चार कुण्ट फेरी पा, दहि दिशा डेरा ढाहया। पीर पैगम्बर आप पढ़ा, कलमा नबी जणाया। रहमत कर इक ख़ुदा, रहमान बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहया। शहिनशाह वड पीरन पीर, बेऐब वड्डी वड्याईआ। इक इकल्ला दस्तगीर, दस्त आपणा रिहा दिखलाईआ। चौदां तबक देवे धीर, धीरज सब दी रिहा मिटाईआ। आफ्ताब महिताब चढ़े इक अख़ीर, महिराब करे रुशनाईआ। हयात आब ठांडा सीर, नीर नीर रूप वखाईआ। बदलणहार जगत तकदीर, तदबीर आपणी रिहा समझाईआ। नूरी जलवा सच तस्वीर, तसबी माला ना कोए लटकाईआ। चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, आख़र आपणा घर सुहाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, हकीकत हक़ दए दृढ़ाईआ। पहनणहारा वस्त्र नील, नीलम आपणा रूप जणाईआ। ज़िमीं असमानां बण वकील, साचा वुकला फेरा पाईआ। देवणहारा इक दलील, दिलबर हरि जू सच्चा माहीआ। सुणनहारा सच अपील, अपरम्पर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर रिहा उठाईआ। ज़ेर ज़बर जाए उठ, हरि हरि जू आप उठाइंदा। चार कुण्ट वेखे गुठ्ठ, दिशा आपणी फोल फुलाइंदा। ख़ाली दिसण काया बुत्त, रूह कलबूत पाक ना कोए कराइंदा। ना कोए सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, पत डाल्ही ना कोए महकाइंदा। सच महिराबे कोई ना पए उठ, हुजरा हरि ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़बर ज़ेर रंग रंगाइंदा। ज़बर ज़ेर तेरी अन्तिम हद्द, हदूद दए समझाईआ। पीर पैगम्बर गए लद्द, मुल्लां शेख़ रहिण ना पाईआ। किस्से कहाणीआं गए छड्ड, जगत ढोला मात सुणाईआ। अञ्जील कुराना दे दे मति, मति मतांतर गए बणाईआ। कराए खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा भेव छुपाईआ। नूर नुराना जोत उजाला नूर इलाही हो प्रगट, प्रगट आपणी कार कमाईआ। चौदां तबक खोल्ह हट्ट, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। इक नगारा वज्जे सट्ट, नाद धुन शनवाईआ। पीर पैगम्बर सत्थर बैठे घत्त, यारड़ा नज़र कोए ना आईआ। सब दे ख़ाली दिसण हथ्थ, चारों कुण्ट कूक सुणाईआ। कवण करे पूरी आस, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। कवण रखे सच्चा साथ, सगला संग निभाईआ। कवण जणाए पार किनारा घाट, बणे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर आप जणाईआ। ज़ेर ज़बर हरि दए दिलासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चौदां तबक जग तमाशा, चौदां

लोक सलोक अलाइंदा। चौदां विद्या देवे इक भरवासा, भरम भुलेखा आप कढ्ढाइंदा। अन्तिम सब ने होणा नासा, लोकमात रहिण कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी प्रगटाईआं शाखां, पत डाली आप महकाइंदा। आपे बणदा रिहा राखा, लुक लुक सेव कमाइंदा। पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा साका, नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। आपे बणया रिहा आका, आकी नज़र कोए ना आइंदा। तन माटी दिसे ना कोए ख़ाका, धूढ़ी धूढ़ ना कोए उडाइंदा। नूर इलाही पाकी पाका, पतित पुनीत वेस वटाइंदा। सच बणाए इक जमाता, दूसर पट्टी ना कोए पढ़ाइंदा। लेखा जाणे बातन बाता, बिहबल आपणा हाल सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर वेख वखाइंदा। ज़ेर ज़बर प्या रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चौदां लोक गए सो, नेत्र नैण ना कोए खुलाईआ। पीर पैगम्बर ढोआ देवे ना कोई ढो, ढूंड थक्की सर्ब लोकाईआ। मुल्लां शेख़ आपणा आप गए खो, वस्त हट ना किसे विकाईआ। कलमा नबी ना करे लोअ, नूर ज़हूर ना कोए प्रगटाईआ। तेरे चरण ना सके कोए छोह, दूर दुराडे देण दुहाईआ। कन्नां नाल सुणदे रहे तेरी सो, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। आपणे जिहा आपे हो, प्रभ आपणी खेल कराईआ। आदि जुगादि रहे निरमोह, मुहब्बत हक़ ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर रिहा जणाईआ। ज़ेर ज़बर दित्ता जणा, हरि जाणत भेव खुलाइंदा। बख्शणहारा सर्ब गुनाह, गुसताख़ नज़र कोए ना आइंदा। पीर पैगम्बरां देवणहार पनाह, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। सदी सदीवी देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नबी रसूलां पकड़नहारा बांह, जुग जुग आपणे मार्ग पाइंदा। चौदां तबक लेखा रिहा वखा, पर्दा उहला आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल करे करतार, हरि करनी आप कराईआ। इक नौ दे आधार, दर साचे वेख वखाईआ। एका नांयां कर प्यार, प्यार वेखे सर्ब लोकाईआ। नव नौ गई हार, चार चार ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर लेखा आप जणाईआ। ज़ेर ज़बर तेरा धुर दा लेखा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कढ्ढणहारा भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। वसणहारा साचे देसा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। चौदां तबक जाणे लेखा, लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। आदि जुगादि भुल्ले ना चेता, अभुल भुल्ल विच ना आइंदा। पीर पैगम्बरां देवे निउँता, एका सद्दा नाम जणाइंदा। जिस दा लभ्भदे रहे भेता, सो आपणा भेव खुलाइंदा। जिस दे पिच्छे मकबरे अन्दर करी विउँता, सो सीआं वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर नाल मिलाइंदा। ज़ेर ज़बर मेला मीत, मित्र प्यारा आप बणाईआ। नेत्र वेखो जगत मसीत, मुसल्ला कवण रिहा विछाईआ।

कवण करे सच प्रीत, वुज़ू हक़ जणाईआ। कवण निमाज़ पढ़े ठीक, ठीकर झूठा भन्न जणाईआ। कवण मेटे अन्धेरा तारीक, चौदस चन्न करे रुशनाईआ। कवण लेखा जाणे लाशरीक, शिरकत देवे आप मिटाईआ। कवण गाए सुहागी गीत, नाअरा इक्को इक इलाहीआ। कवण वसे धाम अनडीठ, दरगाह साची बैठा डेरा लाईआ। कवण लख चुरासी चौदां तबक त्रै भवण जाए जीत, अवण गवण चरणां हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर रिहा सुणाईआ। ज़ेर ज़बर करे सलाम, सजदा सीस झुकाया। तेरे बरदे बण ग़ुलाम, पीर पैगम्बर सेव कमाया। तूं शहिनशाह अमाम, तेरा हुजरा नज़र किसे ना आया। चौदां तबक इक पैग़ाम, नबी रसूल आप पढ़ाया। तेरा सच सच नज़ाम, सच रहमत इक खुदाया। तेरा झुलदा रहे निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाया। तेरी मन्नदे रहे आण, दर अग्गे झोली डाहया। तेरी सुणदे रहे कलाम, बिन कन्नां राग सुणाया। तेरी सके ना कर पछाण, बेपहचान तेरा नूर नज़र ना आया। अन्तिम इक्को मंगीए दान, दर दरवेश फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक सुहाया। सच खुदावंद खुद करीम, रहमत आप कमाईआ। लेखा जाणे डण्डा मीम, मुश्कल आपणे हथ्थ रखाईआ। अल्फ़ ये ना कोए तक्सीम, तअलुकात ना कोए तुड़ाईआ। ज़ेर ज़बर सच मज़मून, मुहब्बत इक्को इक वखाईआ। नुक्ता कोए ना जाणे नून, हमज़ा रंग ना कोए चढ़ाईआ। साहिब सच्चे दा सच कानून, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नूर इलाही रखे एका फ़ून, बिन तन्दी तार रखाईआ। आपे बणया रहे ममनून, बेनज़ीर सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाईआ। ज़ेर ज़बर हरि दए सलाह, सलाहगीर इक अख्वाया। चौदां तबक इक मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाया। ईसा मूसा जिस लेखे लए लगा, मुहम्मद चरणां हेठ दबाया। चौदां लोक लए वसा, चौदां तबक रंग चढ़ाया। चारों कुण्ट वेखणहारा मार ध्यान, बिन नेत्र नैण जगत उठाया। शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, शहिनशाह आपणा रूप प्रगटाया। सच संदेसा देवे आ, सुनेहड़ा इक्को इक जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल हक़, हकूक आपणे हथ्थ रखाईआ। चौदां लोक रिहा तक्क, तकवा होर ना कोए जणाईआ। पीर पैगम्बरां उत्ते प्या शक़, शक़ सब दा दए मिटाईआ। इक नकेल पाए नक्क, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। करनहारा कक्खों लख, लखों कक्ख दए बणाईआ। आपणे ख़ाते रिहा घत्त, ख़ाता नज़र किसे ना आईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक गोडयां उपर बैठे रख के हथ्थ, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। मुहम्मद चले ना कोए वस, चाल निराली इक रखाईआ। चार यारी होई बेबस, बिहबल हो हो दए दुहाईआ। चौदां लोक रहे नठ्ठ, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। दरोही खुदाए

लग्गा फट, पट्टी उपर ना कोए बंधाईआ। जगत काअबा उब्बले रत, रती रत ना कोए सुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, भेव किसे ना आया। करे खेल इक इकल्ला, दूजा संग ना कोए रलाया। सच सिँघासण इक्को मल्ला, महल अटल करे रुशनाया। दीपक जोत एका बला, नूरो नूर नूर धराया। पीर पैगम्बर फड़ाया पल्ला, पल्लू एका गंढु दिवाया। मेल मिलावा एका अल्ला, इलाही आपणा नूर दरसाया। करन आया साचा हल्ला, हालत सब दी वेख वखाया। नाम फड़या तिक्खा भल्ला, दो जहानां रिहा डराया। वेखणहारा उच्चा टिल्ला, डूँघी कन्दर फोल फुलाया। जोती शब्दी आपे रला, जलवा नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ेर ज़बर पर्दा दए उठाया। ज़ेर ज़बर हरि देवे दस्स, आपणा भेव जणाईआ। चौदां तबक ना कोए वस, वास्ता सारे रहे पाईआ। चार कुण्ट ख़ाली दिसे हट्ट, वस्त सति ना कोए वरताईआ। तीस बतीस गए थक्क, रसना जिह्वा कर हल्काईआ। तेरा जलवा ना सके तक्क, तसबी कम्म किसे ना आईआ। मणका मणका माला रट, मौली तन्द सगन मनाईआ। लाल मैहन्दी रंग रत, रतड़ा रंग इक जणाईआ। अन्तिम सारे होए बस, बैठे ढेरी ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिले सच्ची सरनाईआ। सरनाई देवे मददगार, आपणी दया कमाइंदा। एका नायां खेल अपार, हरि ख़ालक ख़लक जणाइंदा। वीह सौ बिक्रमी हो तैयार, उन्नी उनीसा रंग चढ़ाइंदा। कत्तक महीना ठांडा दुआर, दर साचा इक समझाइंदा। छैल छबीला परवरदिगार, पीर पैगम्बर कबीला वेख वखाइंदा। बणया वसीला अपर अपार, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। सुणे अपीला सच दरबार, दरगाह साची आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत उनी, उन्नी उन्नी मेल मिलाइंदा। उन्नी कत्तक पहली रात, इक अठ्ठ दए वड्याईआ। उन्नी वेखे खेल तमाश, पर्दा नशी पर्दा आप चुकाईआ। चौदां तबक देवणहार निज़ात, निज घर बैठा डेरा लाईआ। सबक पढ़ाए सच जमात, पट्टी इक्को इक लिखाईआ। मुहम्मद वेखणा मार झात, हरि झलक रिहा वखाईआ। प्रगट होया कायनात, कलमा आपणा आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कत्तक अठारां हुक्म जणाईआ। कत्तक अठारां अद्धी रात, हरि आदी आप जणाइंदा। मुहम्मद मिलणा इक्को साथ, चार यारी आप जणाइंदा। हरि दवारा सच्चा घाट, साचा मन्दिर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। शहिनशाह हरि वड नरेशा, निरगुण बेपरवाहीआ। धाम अवल्लड़े वसे देसा, दरगाह साची आसण लाईआ। आपे जाणे पिछला लेखा, अगला मार्ग आप समझाईआ। चौदां सदीआं रख्या चेता,

चौदां तबक दए वड्याईआ। नबी रसूलां खेलया खेडा, ख़ालक ख़लक आप खलाईआ। भेव अभेदा दस्सया भेता, अञ्जील कुरान जणाईआ। कर पढ़ाई औलीआ शेख़ा, सबक इस्लाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। अद्धी रात होए अन्ध, अन्ध अन्धेर जणाइंदा। मुहम्मद मुका के आउणा पन्ध, हरि पांधी आप जणाइंदा। चौदां लोक झूठा धंद, धन्दा हरि जू आप कराइंदा। बिन हरि चरण ना कोए अनन्द, रस फ़िका सर्ब वखाइंदा। अन्तिम होणा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग खड़काइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सुणया कन्न, मुहम्मद ध्यान लगाईआ। तूं दाता मेरा जननी जन, हउँ बालक रूप सखाईआ। चौदां लोक भाण्डा देवें भन्न, चौदां तबक खेल रचाईआ। कोई ना जाणे नेत्र अन्न, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। तेरा हुक्म सुणया कन्न, सुण सुण ख़ुशी मनाईआ। परवरदिगार बेड़ा देवे बन्न्ह, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। देवण आया अन्तिम

१६
१३
डंन, डंका इक्को रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। साचा हुक्म हरि करतारा, हरि हरि आप जणाइंदा। अठारां कत्तक सच दिहाढ़ा, सति सतिवादी आप समझाइंदा। चरण कँवल परवरदिगारा, परम पुरख वखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ दए इक सहारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, नूरो नूर धराइंदा। दीआ बाती धूंआँधारा, बत्ती बात ना कोए टिकाइंदा। चढ़दी दिशा करे पसारा, आप आपणा आसण लाइंदा। लहिंदी दिशा खेल न्यारा, पंच प्यारा मेल मिलाइंदा। सिँघ बिशन कर तैयारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। परमेश्वर करया खेल न्यारा, सम्मत पन्द्रां भेव चुकाइंदा। इक इकल्ला कीता बाहरा, उपर आपणा पर्दा पाइंदा। मुहम्मद मंगे मंग बण भिखारा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव छुपाइंदा। साचा भेव खोल्हे करतार, आपणी दया कमाईआ। दर दरवेश आवण चार यार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अग्गों नज़री आए गुरमुख सिँघ लाल दुलार, गुर सतिगुर मेल मिलाईआ। लहिंदी दिशा खेल करतार, करता पुरख आप वड्याईआ। दक्खण वेख इक किनार, सिँघ इन्द्र सोभा पाईआ। पहाड़ करे आप दो फाड़, सिँघ प्रीतम प्रीतम मेला सहिज सुभाईआ। सिँघ पाल होए ख़बरदार, हथ्थ चवर चवर झुलाईआ। करे खेल अगम्म अपार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। दर आई संगत कोई ना जाए बाहर, अन्दर वड़ वड़ ख़ुशी मनाईआ। ग़फ्लत विच ना आए परवरदिगार, आपणी ग़फ्लत रिहा मिटाईआ। निरगुण सरगुण खिच्चे आप लकार, लकीर फ़कीर दए समझाईआ। गुरमुख लहिंदी दिशा सोवण पैर पसार, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। मक्के काअबे रातीं सुत्यां जा जा मारे मार, अद्धी रैण आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपे वस्त्र करे ख़ाकी, आपे चढ़े साचे राकी, आपे खोल्हे बंद ताकी, हट्ट आपणा आप खुल्हाईआ। करे खेल अद्धी रात, हरि भेव कोए ना पाइंदा। देवणहारा साची दात, दाता दानी वेस वटाइंदा। मुहम्मद लहिणा चुक्के साक, चार यारी संग मुकाइंदा। आप सोए ना किसे खाट, चढ़दी दिशा वंड वंडाइंदा। लहिंदी दिशा आए घाट, घाटा कोए ना पूर कराइंदा। आपे वेख खेल तमाश, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेस अनेका रूप धराइंदा। वेस अनेका कर मलँघ, महिफ़ल आपणी आप लगाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। चौदां तबक करे जंग, जंगजू बणे सच्चा माहीआ। लाल मैहन्दी लाए रंग, रंग रंगीला फेरा पाईआ। करवट बदल वेखे कंड, पासा आपणा लए बदलाईआ। तिक्खी धार चण्ड प्रचण्ड, ब्रह्मण्ड दए डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। करे खेल भुक्खा नंगा, ख़ाली हथ्थ रखाइंदा। दो जहानां टप्प के आया कंधा, नंगी पैरीं फेरा पाइंदा। वेखणहारा चंगा मंदा, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। चौदां तबकां तोड़नहारा जंदा, चौदां लोक कुण्डा लाहइंदा। बाहरों दिसे ख़ाकी बंदा, अन्दरों नूरो नूर ख़ुदा नज़री आइंदा। दो जहानां वेखे आर पार कन्ढा, आपणी हद्द ना किसे जणाइंदा। वसणहारा कोटन कोटि विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्माद आपणा हुक्म वरताइंदा। बुड्ढा शेख़ होया अन्धा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। जगत गुनाह ना कोए बख्शंदा, बख्शिश झोली ना कोए पाइंदा। चौदां तबक पए डण्डा, नेत्र रो रो नीर सर्ब वहाइंदा। कोई ना चढ़े साचा चन्दा, नूरो नूर ना कोए दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। भुक्खा नंगा तन अल्फ़ी चोली, जामा तन ना कोए रखाईआ। करे खेल हौली हौली, हौला आपणा भार वखाईआ। नाल रखाए तन्द मौली, मौला आपणा फेरा पाईआ। उन्नी कत्तक चुक्के डोली, डोला आपणे कंध उठाईआ। कलिजुग तेरी अन्त विहाए बोली, अनबोलत वेख वखाईआ। नबी रसूलां अन्तर रिहा फोली, बसन्तर लग्गी सर्ब लोकाईआ। पूरा तोल रिहा तोली, तोलण आया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह खेल आपणा करना, करनहार करतारा। अद्धी रात चौदां तबक उपर चढ़ना, चढ़ वेखे आप मुनारा। पीर पैगम्बरां बोदीआं उत्तों फड़ना, लेखा मंगे परवरदिगारा। अग्गे किसे हो ना अड़ना, निउँ निउँ सजदा करन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे आपणा सच विहारा। सिँघ अंग्रेज़ चौथा यार, अन्तिम मंग मंगाईआ। कादर करीम करता मिले परवरदिगार, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। देवे दरस दीद दीदार, दर्द दुःख मिटाईआ। चौदां तबकां कढ्ढे बाहर, चरण सरन मिले सरनाईआ। मेल मिलाए अन्तिम वार, अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ।

पुरख अबिनाशी कर प्यार, पूरब लेखा लेखे लाईआ। नावें दर सौणा पैर पसार, अठारां कत्तक दसवें आपे लए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरमुख रंग रंग गुरमुख नाल रंगाईआ।

❇ १६ कत्तक २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

परवरदिगार चुक्कया पर्दा, मुकामे हक़ रुशनाईआ। लेखा जाणे दर बदर दा, बेनज़ीर सच्चा माहीआ। साचे अस्व एका चढ़दा, शाहसवारा सच्चा माहीआ। पीर पैगम्बर आपे फड़दा, चौदां चौदां फेरा पाईआ। कलमा नबी आपे पढ़दा, पढ़ पढ़ रिहा सुणाईआ। जीव जंत घाड़त घड़दा, घड़ घड़ दए वड्याईआ। पंज तत्त काया अन्दर वड़दा, रूह बुत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण बण बण बरदा, फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नूर करे रुशनाईआ। परवरदिगारा नूर जलाला, जलवा हरि जणाइंदा। करे खेल बेमिसाला, पिछली मिसल सर्ब मिटाइंदा। रहिण ना देवे कोई दलाला, दस्तगीर ना कोए अख्वाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए वेस वटाइंदा। सति सतिवादी सति जणाए इक निशाना, नाम निशाना इक लगाइंदा। परवरदिगार हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। धुरदरगाही सच तराना, बिन तर्ज़ ताल अल्लाइंदा। वसणहारा सच मकाना, महिफ़ल आपणे घर लगाइंदा। सच महिराबे इक टिकाणा, हुजरा हक़ हक़ सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। करे खेल सच महिबूब, भेव कोए ना पाईआ। आपणा देवे आप सबूत, साबत आपणा नाम वड्याईआ। पंज तत्त ना कोए कलबूत, तन ख़ाकी ना कोए रखाईआ। ना कोई ताणा पेटा सूत, करे खेल बेपरवाहीआ। भेव ना जाणे पंज भूत, भूतक रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार वेस वटाईआ। परवरदिगार इक इकल्ला, हरि आपणा खेल कराइंदा। नूर इलाही नूरी रला, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। आप उपाए सच महल्ला, साचा दर आप खुल्लाइंदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी हरि सुल्तान, शहिनशाह प्रभ आप कराईआ। खेले खेल वड मेहरवान, मिहबान बेपरवाहीआ। सति सति सति निशान, सति सति सति दए वखाईआ। निरगुण सरगुण कर परवान, सच परवाना इक जणाईआ। लेखा जाण ज़िमी असमान, ज़ामन आपणा आप बणाईआ। भेव ना पाए अञ्जील कुरान, कुरह हक़ ना खोज खुजाईआ। हक़ मुकामे नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। सोहबत जाणे ना कोए जहान, सही सलामत बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल जणाईआ। साचा खेल बिस्मिल धार, बिस्मिल आपणा रंग वखाइंदा। हक़ हकीकत खोल्ह किवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। शब्द अगम्मी एका लाड़, पुरख अकाला आप बणाइंदा। निरगुण चले नाल नाल, सगला संग निभाइंदा। चौदां तबक वज्जे ताल, तलवाड़ा आपणे हत्थ रखाइंदा। पीर पैगम्बर आपे भाल, मुरीद मुर्शद वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक़ नबेड़ा आप जणाइंदा। हक़ नबेड़ा हक़ हकीकत, हरि हरि जू वेख वखाईआ। ना कोई जाणे अवर शरीकत, लाशरीक फेरा पाईआ। मेटणहारा जगत तारीकत, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। परवरदिगार पर्दा चुक्क, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। नव नौ चार बैठा लुक, लुक लुक खेल कराईआ। अन्तिम कलिजुग प्या उठ, दिस किसे ना आईआ। पीर पैगम्बर वेखे सुत, अबिनाशी अचुत दया कमाईआ। सदी चौधवीं रिहा पुच्छ, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। आबे हयात कवण घुट्ट, मधर प्याला कवण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करन आया, करे खेल अवल्ला। निरगुण नूर धर के आया, वसे सच महल्ला। आपणा आप घड़ के आया, जोती शब्दी रला। साचे अस्व चढ़ के आया, दो जहान पए तरथला। आपणी मरनी मर के आया, आपे होए रहे बिस्मिला। इलाही नूर धर के आया, नाम जणाए इललिल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वसणहारा उच्चे टिल्ला। उच्चा टिल्ला सच मनारा, परवरदिगार खेल कराईआ। नूरी जलवा नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। कलमा नबी ना कोए प्यारा, कायनात ना कोए वड्याईआ। शनाख़त करे ना कोए विच संसारा, रूप रंग ना कोए वखाईआ। इबादत भुल्लया जीव गंवारा, इबारत सच ना कोए लिखाईआ। सधर दिसे ना कोई सच सरकारा, साचा हुक्म ना कोए मनाईआ। चौदां तबक हाहाकारा, साचा सबक ना कोए पढ़ाईआ। अञ्जील कुरान मारे नाअरा, नेत्र नैण नीर वहाईआ। श्री भगवन्त हो उज्यारा, लेखा जाणे मुहम्मदी यारा, अहमद आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करे आलमीन, इलम आपणा ना किसे जणाइंदा। चौदां लोक कर तक्सीम, चौदां तबक वंड वंडाइंदा। देवणहारा सच ताअलीम, ताअज़ीम इक्को इक समझाइंदा। एका जलवा रखे अज़ीम, अज़मत आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे जनाब, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। पीर पैगम्बरां देवणहार ख़ताब, ख़तूत हत्थ ना कोए फड़ाईआ। आपे करनहार आदाब, सलाम अलैकम आप समझाईआ। आपे लेवणहार जवाब, वेस अनेकां रूप वटाईआ।

आप वखावणहार ख्वाब, खूबी आपणी दए समझाईआ। लेखा जाणे पुन्न सवाब, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। देवणहार हयात आब, आब हयात दए पिलाईआ। वसणहारा सच महिराब, हुजरा इक्को इक वखाईआ। जुग चौकड़ी मुख ते रखदा रिहा नकाब, अन्तिम आपणा पर्दा लाहीआ। जिस नूं ईसा कह के गया बाप, सो फेरा रिहा पाईआ। जिस नूं मुहम्मद कहे मेरा साक, सो साका रिहा सुणाईआ। जिस पीर पैगम्बर कीते ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक नाल मिलाईआ। सो प्रगट होया आप, परवरदिगार नाउँ धराईआ। चढ़ के आया साचे राक, अस्व इक्को इक दौड़ाईआ। आदि जुगादी पाकी पाक, पाक रसूल बेपरवाहीआ। दो जहानां करे वफ़ात, आपणा फ़तवा देवे लाईआ। ना कोई दीसे सज्जण साक, सगला संग ना कोए निभाईआ। इके हुजरे रिहा झाक, झरोका आपणा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जलवा नूर इक इलाहीआ। जलवा नूर इक जलाल, हरि हरि हरि आप जणाइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, भेव अभेद ना कोए समझाइंदा। पीर पैगम्बर नाता जुड़दा रिहा माटी खाल, ख़ालक खलक आप समझाइंदा। अन्तिम सारे हो हो गए बेहाल, बिहबल हो हो नीर नैण वहाइंदा। सदी चौधवीं अन्तिम खुदावंद बणे इक दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हकीकत हरि जू खोज खुजाइंदा। ऐली अल्ला मारे छाल, इलाही नूर आप धराइंदा। चौदां तबक लए संभाल, पिछली सफ़ा सर्ब उठाइंदा। जिस दी घालण रहे घाल, सो घालण लेखे लाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। नेत्र नैणां दए वखाल, बिन अक्खां राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप सुणाइंदा। आपणा भेव दस्से मुरीद, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। पीरां पैगम्बरां देवे दीद, दीद शुनीद खेल कराईआ। इक्को कलमा साची ईद, इबरतनाक करे पढ़ाईआ। आपणी हथ्थीं किसे ना देवे कट रसीद, रसूल साचा खेल वखाईआ। कोई ना करे दर बकरीद, ज़बह आपणा आप जणाईआ। जुमादुलसानी खेल नज़दीक, नेत्र नैण दए दरसाईआ। जिस दा कलमा पढ़या ठीक, सो ठीकर भन्न वखाईआ। जिस दी धार इक बरीक, सो आपणा नूर प्रगटाईआ। जिस नूं कहिन्दे लाशरीक, सो आया सच्चा माहीआ। जिस दी लभ्भदे गए प्रीत, पीर पैगम्बर झोली डाहीआ। जिस दा आब हयात पीता ला ला झीक, ईसा मूसा मुहम्मद खुशी मनाईआ। सो साहिब खेल करे अनडीठ, आपणा भेव जणाईआ। चौदां सदीआं सुत्ता रिहा दे कर पीठ, सुफ़ने विच मुहम्मद नज़र ना आईआ। अन्तिम दस्सण आया आपणी इक तारीक, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। सब दे ख़ाली करे ख़ीस, नाम हट्ट ना कोए चलाईआ। कलमा कोए ना तीस बतीस, हज़ारां दरूद ना कोए पढ़ाईआ। कोई रसूल ना करे शुनीद, ईद चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जिस दी करदे रहे उडीक, सो आया फेरा पाईआ। सदी चौधवीं रही

बीत, पिछली बीती दए सुणाईआ। जिस दा नबी रसूलां गाया गीत, सो कलमा रिहा पढ़ाईआ। किसे नज़र ना आए चौदां तबक निक्की झीत, पर्दा दूई ना कोए उठाईआ। वसणहारा हस्त कीट, कीट कीटां रिहा समाईआ। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। भेव अभेदा खोल्हे सांझा यार, यारी आपणी ना किसे जणाईआ। गुर पीर अवतार करदा रिहा तैयार, आपणी तैयारी ना किसे समझाईआ। चरण कँवल दस्सदा रिहा प्यार, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। साम्हणे हो कीता ना किसे दीदार, जलवा नूर नज़र ना आईआ। पंज तत्त अन्दर कराउँदा रिहा गुफ़तार, गुप्त आपणा आप छुपाईआ। जुग चौकड़ी चलाउँदा रिहा नाल रफ़तार, आपणी रफ़तार ना किसे जणाईआ। अन्तिम सारे गए हार, ढह ढह ढेरी ख़ाक मिलाईआ। दोए जोड़ मंगदे गए भिखार, बण स्वाली अलख जगाईआ। तेरा भेव ना आया परवरदिगार, पीर पैगम्बर देण दुहाईआ। मूसा डिगा मूँह दे भार, दोए जोड़ सीस निवाईआ। ईसा मंगे चरण धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का लाईआ। मुहम्मद चाली साल ना होया उज्यार, काया माटी चम्म हंढ्ढाईआ। बाती बाली आप करतार, दीवा नाम इक जगाईआ। चवाती लाई इक्को वार, चौदां लोक अग्न बुझाईआ। बूँद स्वांती दिती ठंडी ठार, आब हयात जाम प्याईआ। बिन कलम छाहीयों लेखा दित्ता वखाल, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। अल्फ़ ये ना कोए स्वाल, इलम उल्मा ना कोए पढ़ाईआ। करे खेल आप कमाल, कलमा आपणा आप जणाईआ। नज़र ना आया सच अमाम, सच घर वसे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल रिहा समझाईआ। साची खेल दस्से अमाम, सिर अमामां फेरा पाइंदा। पीर पैगम्बर बरदे रखे गुलाम, सच गुलामी आप जणाइंदा। कलमा कलमा दे कलाम, कायनात आप पढ़ाइंदा। तारा चन्द करा सलाम, इस्म आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाइंदा। तारा चन्द चन्द तारा, हरि इक्को रंग वखाईआ। चौदां तबक इक किनारा, किनारा पार ना कोए वड्याईआ। मुहम्मद वसे अद्धविचकारा, बैठा आपणा डेरा लाईआ। उपर वेखे परवरदिगारा, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। खोल्हे भेव हरि सच्चा आका, आकी कोई रहिण ना पाईआ। पीर पैगम्बर गोदी चुक्के छोटा काका, एका आपणी उंगली लाईआ। जिस दा गाउँदे रहे साका, सो साख्यात रूप वटाईआ। चौदां तबक चुकाए बाका, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। पूरा करन आया घाटा, घाट आपणा दए समझाईआ। अल्ला राणी गुन्न्हे आटा, घर आपणे खुशी मनाईआ। प्रगट होया इक्को माई बापा, जिस दी ईसा मूसा चले रज़ाईआ। मेरा बौहड़ी खुल्हा झाटा, चौदां लोक

दए दुहाईआ। पीर पैगम्बर तुट्टा साका, सगला संग ना कोए निभाईआ। परवरदिगारा ना बन्न्ह्या नाता, नाता नाल ना कोए जुड़ाईआ। चौदां तबक निक्का जिहा हाता, प्रभ चरणां हेठ दबाईआ। जिस दा किसे ना खिचिआ ख़ाका, सो आपणा वेस वटाईआ। अन्तिम देवण आया नजाता, निज घर फेरा पाईआ। बणी रही नार कमज़ाता, कोझी कमली रंग ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाईआ। फेरा पाए सच करीम, कर्म आपणा आप जणाइंदा। अन्तिम मन्नणा पए दीन, दीन दुनी आप समझाइंदा। जिस ने गुर अवतार पीर पैगम्बर कीती तक्सीम, सो पिछला लेखा मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़ुरमाणा हुक्म जणाइंदा। धुर फ़ुरमाणा सुणया कन्न, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। परवरदिगार प्रगट होया कहिण धन्न धन्न, घर घर वज्जे वधाईआ। लख चुरासी देवे डंन, डंका इक्को नाम सुणाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, भंनणहार बेपरवाहीआ। आलम उल्मा होए अन्न्ह, साचा इलम ना कोए जणाईआ। जोती नूर नज़र ना आए चन्न, चौदस चन्द ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि हरि जू आप कराइंदा। चौदां नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना नूर धराइंदा। लेखा जाणे चन्द सितारा, सतह आपणी आप छुपाइंदा। ख़ालक खलक खलक ख़ालक परवरदिगारा, मख़लूक आपणा पर्दा लाहइंदा। प्रगट हो विच संसारा, सच सालसी आप जणाइंदा। जिस दा हथ्थ ना आया किनारा, नईया दो जहान वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। भेव अभेदा देवे खोल्ह, हरि ख़ालक खलक खुदाया। नाअरा वजाए मृदंग ढोल, सलोक चौदां लोक सुणाया। अवण गवण तोले तोल, तोला बण के निरगुण तोल तुलाया। दो जहानां लए फोल, अन्दर वड़ वड़ कुण्डा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह पाक रसूल, रहमत आपणी आप कमाईआ। आपणा बदलण ना देवे असूल, असलीअत आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि ना जाए भूल, अभुल बेपरवाहीआ। मुरीद मुर्शद करे कबूल, कबीला आपणा इक बणाईआ। साचे हुजरे रिहा झूल, झलक इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह होया मुख़ातब, भेव आपणा आप जणाइंदा। अन्तिम सब दा करन आया तुआकब, पिच्छे हो हो सेव कमाइंदा। आपणी जाणे सच सदाकत, सिदक सबूरी संग रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के इबादत, पीर पैगम्बर मेट मिटाइंदा। लेखा जाणे हरि जू बातन, बातल आपणा भेव खुलाइंदा। मुक्दस कोई ना दिसा आतल, इतल वेस ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। मेहरवान होया फ़िदा, मिहबान

बीदो बेपरवाहीआ। नूरी जलवा धर खुदा, खुदी सब दी दए गंवाईआ। पीर पैगम्बरां नालों होया जुदा, जुज़ आपणा आप वंडाईआ। अन्तिम मार्ग लाए सिध्धा, साचा राह दए समझाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे वड्डा किडा, अन्त कोए ना पाईआ। साम्हणे हो के आया निक्का, नीकण नीका रूप धराईआ। जिस दा नाम चलाउँदे रहे सिका, दो जहानां दम चम्म कुड़माईआ। सो अन्तिम आपणे आप आपणे मस्तक लावण आया टिक्का, टिक्का लावे सच्चा शहिनशाहीआ। नबी रसूलां करया रस फ़िक्का, फ़ितरत सब दी दए गंवाईआ। सदी चौधवीं तेरा हिस्सा, प्रभ तेरी झोली पाईआ। अग्गे हो परवरदिगार मुहम्मद अजे ना डिठा, सो रहमान आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग देंदा रिहा सिफ्ती चिट्ठा, हक़ हकूक आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा नाम निधान सब ने लिखा, बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। जिस दा पीसण लोकमात पीर पैगम्बरां पीसा, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। सो साहिब देवण आया आप हदीसा, हज़रत बणया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक उनीसा खेल कराईआ। इक उनीसा एका एक, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। इक जणाए साची टेक, टेक इक्को इक वड्याइंदा। एका घर रिहा वेख, दूजा रूप ना कोए धराइंदा। अन्तिम खोल्हण आया भेत, भेव आपणा आप समझाइंदा। जिस दा गुर अवतार करदे आए हेत, सो आपणा हेत समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म चौदां तबक, चार कुण्ट रिहा जणाईआ। पिछला भुल्लो सारे सबक, सफ़ा सब दी रिहा मिटाईआ। पीर पैगम्बर रहे तभक, तोबा तोबा देण दुहाईआ। कोई ना सके अग्गे अटक, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल परवरदिगार आपणा नाम चढ़ाया कटक, बल इक्को इक जणाईआ। अन्तिम सब नूं देवे झटक, हलाली सब दी दए वखाईआ। ना कोई पीर पैगम्बर लोकमात उम्मत नाल रखे तुअल्लक, तलाक सब दे दए दिखाईआ। प्रगट होया आप ख़ालक खलक, मख़लूक वेखे चाईं चाईंआ। लेखा जाणे फर्श अर्श, अर्श फर्श एका रंग वखाईआ। चौदां तबक ना करे तरस, छुरी हक़ हथ्थ उठाईआ। अद्धविचकार सारे रहे लटक, फाँसी हरि जू इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुरीद मुर्शद लभ्भे आपणे भगत, भगवन आपणा फेरा पाईआ। मुरीद मुर्शद लए लभ्भ, आप आपणा खेल कराइंदा। कबरां विच जो दित्ते दब, सो पीर रूह पाक नाल मिलाइंदा। आब हयात प्याया झब्ब, झलक आपणी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा आप समझाइंदा। औलीए पीर वेखे गौंस, कुतब आपणा रंग वखाईआ। सब नूं देवण आया धौंस, धौल धर्म रिहा हिलाईआ। जिथ्थे किसे दी ना होई कदे पहुंच, दर जा ना दर्शन पाईआ। सो वेखणहारा पुष्कर करौंच, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। चौदां तबक वेखे

गल बद्धा तौक, तसबी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मणका फेरे ना कोई कर के शौक, शिकवा सब दा रिहा मिटाईआ। किसे हथ्थ ना आया माही खौंत, बेवा फिरे सर्ब लोकाईआ। अन्तिम सारी चली औत, पुत्त पोतरा गोद ना कोए बहाईआ। पीर पैगम्बर गए भौंक, रसना जिह्वा ढोला सुणाईआ। आउँदे रहे अग्गे पिच्छे जौक दर जौक, जगत हरि जू आप जणाईआ। चौदां तबक दस्स के गए किला कोट, अगला भेव ना किसे जणाईआ। परवरदिगार निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दी किसे हथ्थ ना आई सोत, सो आपणी ना किसे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराए नाल शौक, आपणा सौक आप हंढ्ढाईआ। आपणा शौक हंढ्ढाए हरि शौकीन, आपणी दया कमाइंदा। पीर पैगम्बरां करनहारा तलकीन, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। बरदे बण के रहो मस्कीन, मसला इक्को इक पढ़ाइंदा। चरण दवारे मन्नणी ईन, शरअ इक्को इक समझाइंदा। अल्फ़ ये ना कोए मीम, नुक्ता नून ना कोए पढ़ाइंदा। ऐन ग़ैन ना कोए सीन, रुसवा रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल हरि जू दस्से, दस्सण आया सच्चा माहीआ। आपणे खेड़े आपे वसे, घर आपणा रिहा सुहाईआ। आपे रोवे आपे हस्से, आपे वेख वेख खुशी कराईआ। आपे नेरे आपे दूर दुराडा नस्से, नज़र किसे ना आईआ। आपे होए अन्धेरी मस्से, आपे चन्द चन्द चमकाईआ। आपे गगन पाताल कर कर इकठ्ठे, वंड आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए छोटे छोटे पठ्ठे, लोकमात दीन मज़्हब घोल कराईआ। अन्तिम सारे आपणे आप गए ढठ्ठे, आपणी पिठ्ठ रहे लवाईआ। दोए जोड़ वासते सब ने घत्ते, तेरी कोए ना जाणे वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ दर आपणे रखे, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। साडे ख़ीसे होए सखे, सखावत नज़र कोए ना आईआ। उम्मत उम्मती विच फसे, फ़ैसला तेरा ना कोए वखाईआ। तूं दूर बहि बहि हस्सें, साडे उत्ते तरस ना कोए कमाईआ। चौदां तबक चरणां हेठां फड़ फड़ झस्सें, दर्दीयां दर्द ना कोए वंडाईआ। बौहड़ी बौहड़ी तेरे दवारे असीं ढठ्ठे, बल आपणा गए मुकाईआ। कब्रिस्तान उडदे घट्टे, घाटा पूर ना कोए कराईआ। किसे तन्द ना मौली गट्टे, साचा सगन ना कोए मनाईआ। चौदां लोक परवरदिगार आपणे छानणी पा पा छट्टे, दिस किसे ना आईआ। असीं बैठे रहे बण के हट्टे कट्टे, आपणा बल धराईआ। भेव ना जाणया अन्तिम प्रगट होए अबिनाशी अचुते, चेतन सब नूं दए कराईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पुरख अकाल इक्को शेर ना किसे रजाया भुक्खे, भुक्खे भुक्ख ना कोए गंवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस रखे आपणी कुक्खे, आपे बणया पिता माईआ। अन्तिम आ के सानूं पुच्छे, दो जहानां फेरा पाईआ। कवण दवारा किस घर जाईए लुके, लुकयां रहिण किते ना आईआ। उच्ची बांह कर कर

सारे रोंदे परवरदिगार फड़ सानूं ना कुट्टे, ना देवे अन्त सज़ाईआ। आपणी हथ्थीं जड़ साडी पुटे, लोकमात रहिण ना पाईआ। सदी चौधवीं गए लुट्टे, लुट्ट इक्को वार वखाईआ। जिस दे नालों बैठे रुसे, सो सब दा रोसा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। वेखणहारा सर्ब संसारा, संसार सागर खोज खुजाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे कारा, करनी करता आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी सच विहारा, बिवहारी आप जणाइंदा। मुहम्मद रोवे गिरयाज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइन्दा। ईसा दोए जोड़ करे पुकारा, पुनह पुनह सीस झुकाइंदा। मूसा मंगे ख़ाक छारा, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाइंदा। चौदां लोक होया अँध्यारा, चौदां तबक नूर ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे ना चन्द सितारा, चन्द चांदना ना कोए चमकाइंदा। आफ्ताब ना कोए प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा आप चलाइंदा। आफ्ताब ना कोए तलू, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। कोई ना जाणे लेखा नदी नूह, नूह नदी हथ्थ किसे ना आईआ। पीर पैगम्बर कढुणे गए सूह, भेव अभेद ना कोए खुल्ाईआ। जिस दी वड़ के मुहम्मद ना वेखी जूह, सो प्रगट होया सच्चा माहीआ। जिस पिच्छे यूसफ़ सुटाया खूह, सो ख्वाब रिहा जणाईआ। चौदां तबकां आए बदबू, दोज़ख़ बहिश्त ना कोए वड्याईआ। अन्तिम नाता तोड़े बुत्त रूह, अरूज आपणा आप जणाईआ। जिस नूं कहिन्दे अल्ला हू, सो हक़ हक़ रिहा वखाईआ। अग्गे पीर पैगम्बर कोई ना करे मूँह, मोह मुहब्बत रहे तुड़ाईआ। जिस दे चरणां नाल ना सके छूह, सो छहबर रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। साचा खेल देवे तालब, तुलबा इक्को इक पढ़ाइंदा। आपे होए सब ते ग़ालब, ग़लबा आपणा आपे पाइंदा। साल उन्नी रिहा होया नाबालिग़, बाली बुध ना कोए जणाइंदा। आपणा लाह के आया आलस, निंद्रा रूप ना कोए वटाइंदा। परवरदिगार बणया सालस, साची सालसी आप कमाइंदा। आपे करे सच अदालत, अदल आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे मकतूल कातिल, कतलगाह पर्दा लाहइंदा। जिस दा जलवा तक्कया बातल, सो बातन भेव खुल्ाइंदा। मेटणहार अन्धेरी रातन, नूरो नूर नूर चढ़ाइंदा। सच सिँघासण लाए आसण, सोभावन्त सोभा पाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। भेव जणाए शाह नवाब, रहमान दया कमाईआ। ना कोई हिस्सा ना कोई बाब, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। परवरदिगार इक आदाब, आदर्श इक समझाईआ। साचा हुजरा सच महिराब, आफ्ताब सच चढ़ाईआ। पीर पैगम्बर सारे कर ला जवाब, जुमला आपणा दऐ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह दस्से हाल, अहिवाल आप जणाईआ। जलवा जलवा जलवा इक जलाल, ज़ाहर ज़हूर दए दरसाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शाह कंगालां वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण करे प्रितपाल, प्रितपालक वेस वटाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, जुग चौकड़ी भेव चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निभया नाल, रूप अनूप आप रखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे निराल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। खेल करे हरि निरँकारी, निरगुण दया कमाइंदा। नील वस्त्र पहने बनवारी, रूप अनूप धराइंदा। जिस गोबिन्द नाल लाई यारी, नानक आपणे अंग वखाइंदा। जिस वसाई सचखण्ड अटारी, महल अटल इक रुशनाइंदा। जिस दा नाम सति जैकारी, जै जैकार सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। नीले वस्त्र हरिजू पहन, गोबिन्द रंग वखाईआ। गोबिन्द वेखे आपणे नैण, नैण नैणां विच टिकाईआ। पिता पूत मन्नया कहिण, मन्न कहिणा खुशी वखाईआ। अन्तिम आया देणा देण, देवणहार भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नील वस्त्र तन छुहाईआ। नील वस्त्र सोहे तन, तन ख़ाकी आप वड्याइंदा। सेवा लग्गे तारा चन्न, चौदां लोक मुख शरमाइंदा। संग मुहम्मद सारे ल्यांदे बन्न्ह, गुरमुखां अक्खां नाल वखाइंदा। सत्तां तबकां देवे डंन, सत्त सत्त चौदां बणत बणाइंदा। पंजां राग सुणाए कन्न, पंज आपणी गोद उठाइंदा। वेखो हरि जू देवे डंन, नाम खण्डा इक चमकाइंदा। सृष्ट सबाई नेत्र करे अन्न्ह, आपणा नेत्र ना किसे वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। काला वस्त्र नीला रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। पुरख अबिनाशी सूरा सरबँग, सूरबीर दया कमाईआ। गोबिन्द सीस सच पलँघ, प्रभ चढ़या सच्चा माहीआ। इक वजाए नाम मृदंग, चौदां तबक रिहा हिलाईआ। करनहारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग रिहा खड़काईआ। पीर पैगम्बर होए रंड, अल्ला राणी दए दुहाईआ। साडा नूर खिचिआ तारा चन्द, आपणे सीने नाल लगाईआ। साडा टुट्टा बंद बंद, हड्डी हड्डी रही कुरलाईआ। पीर पैगम्बरां रिहा ना कोई घमण्ड, बण निमाणे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दरोही खुदाए दी नबी रसूल दी साडी झोली पा दे वंड, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। तेरा खेल विच ब्रह्मण्ड, तेरा भेव कोए ना आईआ। तेरा कलमा कोए ना जाणे छन्द, ना कोई लिखे कलम छाहीआ। किस मैंख़ाने कीते बंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक रखाईआ। साचा खेल वस्त्र नीला, नील वस्त्र आप रंगाइंदा। प्रगट होया छैल छबीला, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। गुर अवतार वेखण आया कबीला, पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। दो जहान करया आपणा हीला, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

खेल आप कराइंदा। नील वस्त्र पहर नौजवान, नईया जगत रिहा चलाईआ। जिस दी पूजा करे राम, सो रमईया फेरा पाईआ। जिस दा ध्यान धरे कृष्ना काहन, सो काहन सिर आपणे मुक्ट वखाईआ। जिस नूं ईसा करे सलाम, सो सही सलामत नज़री आईआ। जिस नूं मुहम्मद करे आदाब, बेताब फेरा पाईआ। जिस तों मंगण हक़ जनाब, सो हक़ हकीकत रिहा वखाईआ। जिस दा ढोला नानक गाया सतिनाम, सो सति सति रिहा समाईआ। जिस नूं गोबिन्द किहा पुरख अकाल, सो इक इकल्ला वेस वटाईआ। आपणा बणया आप दलाल, दिलबर आपणी दया कमाईआ। निरगुण संग निरगुण भाल, निरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए जणाईआ। पूरब लेखा नील वस्त्र, गोबिन्द दए वड्याईआ। दो जहानां इक्को शस्त्र, लाशरीक आप चमकाईआ। तिक्खी धार नाम अस्त्र, आतश रूप दए वखाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कराउँदा रिहा कसरत, अन्तिम घोल वेखे चाईं चाईंआ। आपणी मिटावण आया आप हसरत, दूजा संग ना कोए रलाईआ। चौदां लोक करदे रहे ऐश इशर्त, आशक माशूक भेव ना राईआ। सूफ़ी मिटा के गए आपणी फ़ितरत, फ़तवा जगत सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वस्त्र इक रंगाईआ। साचा वस्त्र नीला रंग, हरि रंगणहार करतारा। गोबिन्द लाया आपणे अंग, अंगीकार करे निरँकारा। जिस वसाया पुरी अनन्द, सो वसे सम्बल धाम न्यारा। जिस नूं कहिन्दे गुजरी चन्द, सो शब्दी खेल अपारा। जिस ने पाई पंजां वंड, सो पंजां करे प्यारा। जिस ने मेटया सूरज चन्द, गुरमुख चमकाए सच सितारा। गुरमुखां अन्दर रखे आपणा परमानंद, एका बणे दर भिखारा। करे खेल सूरा सरबँग, नौ खण्ड पृथ्मी इक वणजारा। चार वरन सुणाए छन्द, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई दए सहारा। पीर पैगम्बर विच पाए ना कोई वंड, सारे कीते पार किनारा। आपणी वंडण रिहा वंड, प्रगट हो विच संसारा। दूई द्वैती ढाहे कंध, इक्को इक वखाए सच मनारा। कटणहारा धर्म राए दा फंदी फंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नीले वस्त्र तन शृंगारा। नीले वस्त्र पगड़ी सोहे सीस, हरि सीस सीस वड्याईआ। इक इकल्ला आया हरि जगदीश, जगत उलटी रीत वखाईआ। लेखा चुकाए मन्दिर मसीत, मुसल्ला हेठ ना कोए विछाईआ। नबी रसूलां वेखे नीत, नीतीवान फेरा पाईआ। भेव खोल्हे आप अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त्र एका तन छुहाईआ। वस्त्र तन गया लाग, हरि नीलम आप रंगाइंदा। सचखण्ड दा सच चिराग, लोकमात जगाइंदा। जुग जुग दा भगत वैराग, हरि भगवन आप मिटाइंदा। कर्म कर्म दा धोवे दाग़, निर्मल नीर वखाइंदा। दो जहानां रच रच काज, साचा सगन मनाइंदा। खेले खेल ग़रीब निवाज, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा।

गुर गोबिन्द दे के गया आवाज़, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जिस मेरा साजण ल्या साज, मैं उस दा राह जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम आवे भाज, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। निउँ निउँ करे ना किसे निमाज़, निमाज़ी रूप ना कोए वटाइंदा। चार जुग दा खोल्ह्ण आए पाज, ग़ाज़ी पाज़ी वेख वखाइंदा। नवीं साजणा लए साज, साजणहार दया कमाइंदा। लेखा चुकाए हाजी हाज, मक्का काअबा फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वस्त्र इक सुहाइंदा। साचा वस्त्र तन चोला, चोली हरि जू आप बदलाईआ। आपणा भेव आपे खोल्हा, खोल्ह ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। पीर पैगम्बरां कोलों रखदा रिहा उहला, लुक लुक मुख छुपाईआ। कलिजुग अन्तिम बण कहार, चुक्कण आया डोला, सेवक बणया सच्चा माहीआ। मुरीद सारे पाओ रौला, मुर्शद आया बेपरवाहीआ। जिस गोबिन्द नाल कीता कौला, सो कौल रिहा निभाईआ। करे खेल उपर धौला, धरनी धरत धवल वड्याईआ। जन भगतां भार करे हौला, गुर पीरां सिर पंड चुकाईआ। वेखो खेल करदा की मौला, मौली तन्दी तन्द बंधाईआ। आपे बण के आया विचोला, विचली गल्ल रिहा समझाईआ। जिस दा पर्दा किसे ना फोला, सो आपणी खलड़ी रिहा लुहाईआ। जिस दा तोल किसे ना तोला, सो कंडा गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। जिस दा गाउँदे रहे ढोला, सो ढोला गा गा खुशी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त्र रंग इक रंगाईआ। वस्त्र नील रंग मलंग, मलाह नज़र किसे ना आइंदा। जिस दे पिच्छे ऐली कसे तंग, दुलदुल फड़ फड़ सेव कमाइंदा। जिस दी गोबिन्द खिच्चे कमंद, भथ्था तीर नाल मिलाइंदा। जिस नूं पीर पैगम्बर गाउँदे बत्ती दन्द, दन्दां विच कदे ना आइंदा। जिस ने कलमा सुणाया रसूलां छन्द, सो संसा सर्ब चुकाइंदा। जो वसया जेरज अंड, नूर ज़हूर आप धराइंदा। जिन बणाया तारा चन्द, सो तारा चन्द आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेखो पीर पैगम्बर पाउदे डण्ड, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। साडी उम्मत होई रंड, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। सदी चौधवीं भागां मंद, साचा भाग ना कोए लगाइंदा। दीन दयाल ना होया बख़्शंद, आपणी बख़्शिश आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। नीला वस्त्र जगत पाजामा, पाज सब दा दए खुल्हाईआ। पंज तत्त ना पूजा रामा, राम निरगुण गया आईआ। लेखा चुक्के राधा कृष्ना काहना, शब्द काहन फेरा पाईआ। प्रगट होया वड अमामा, ईमान आपणा दए वखाईआ। बिन लिखण पढ़न तों जाणे कलामा, लेखा लिख्त ना कोए समझाईआ। बण बरदा देवण आया पैग़ामा, जबराईल असराईल असराफील मेकाईल माण मिटाईआ। बाहरों वेखण पंज तत्त काया पहरया जामा, वस्त्र नीले रंग रंगाईआ। अन्दर वेखण इक भगवाना, जोती नूर नूर रुशनाईआ। बन्न्हण आया सच्चा गाना, मौली तन्द इक वखाईआ। लेखा चुक्के दो जहानां,

बन्धन इक्को इक बंधाईआ। करे खेल वड मेहरवाना, मेहर आपणी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नीला रंग चरण जोड़ा, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को घोड़ा, शब्दी शब्द वंडाइंदा। सस्से उपर लग्गा होड़ा, होका दे जणाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी सर्ब कुरलाइंदा। अन्तिम वक्त रहि गया थोड़ा, थोड़ा थोड़ा पन्ध मुकाइंदा। चौदां तबक ना लम्मां चौड़ा, इक अंगुशत हेठ दबाइंदा। लख चुरासी वेखे मिठ्ठा कौड़ा, कौड़ा सब नज़री आइंदा। पंडत पांधिओ वेखो आया ब्रह्मण गौड़ा, जिस ने गोबिन्द अन्दर लाया पौड़ा, डण्डा नज़र किसे ना आइंदा। अग्गे मार्ग दस्से सौड़ा, बिन हरि जू पार ना कोए कराइंदा। गोबिन्द अटकाया इक्को रोड़ा, गुर अवतार पीर पैगम्बर ना कोए हटाइंदा। जिस दी गोबिन्द कह के गया पए लोड़ा, सो लोड़ींदड़ा साजण घर घर फेरा पाइंदा। उठो वेखो खुल्ला वेहड़ा, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। सूरज चन्द सतार छेड़न छेड़ा, छीकर डूंगर एका लाइंदा। हरि का भेव जाणे केहड़ा, कह कह हाल ना कोए सुणाइंदा। जिउँ भावे तिउँ बन्न्हे बेड़ा, बन्न बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जन भगतां राह दस्सया तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव कोए ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम पीर पैगम्बर कोई ना रखे वड्डा जेरा, ज़ेर ज़बर सर्ब मिटाइंदा। बिन पुछिउँ पाया फेरा, बिन सद्दयां सद्दा आप जणाइंदा। हकीकत करे हक़ नबेड़ा, लाशरीकत शरीकत आप खपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन वस्त्र इक छुहाइंदा। तन वस्त्र चढ़या रंग गूढ़ा, बेपरवाह आप रंगाईआ। लाल मैहन्दी रंगण चूड़ा, मौली तन्द मींढी रिहा गुंदाईआ। नाता तुट्टणा बहिशती हूरां, हरि हरि राग ना कोए सुणाईआ। मुहम्मद लेखा करे पूरा, पूरा पूरन रिहा पाईआ। गोबिन्द बचन ना होए अधूरा, हदूद सब दी दए मिटाईआ। आपणी ज़रूरत पूरी करे ज़रूरा, ज़ाहर जहूर सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे विच मिलाए जोती नूरा, नूर धर ना कोए जणाईआ। प्रगट होया योद्धा सूरा, सूरबीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मौली तन्द हथ्थ उठाईआ। मौली तन्द वेख हथ्थ, मुहम्मद राह तकाइंदा। मेरी तोबा मेरी बस, बसता आपणा आप बन्न्हाइंदा। मेरी कुरान गा ना थक्की तेरा जस, तेरा जलवा नज़र ना आइंदा। चौदां सदीआं राह रिहा तक्क, बुढ्ढा शेख़ नैण उठाइंदा। अन्तिम बूटा गया पक्क, फल तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। नाता तुटया मदीना मक्क, मकबरा कोए ना मोहे सुहाइंदा। मेरी नकेल तेरे हथ्थ, आपणी डोरी तोहे फड़ाइंदा। दोए जोड़ वास्ता घत्त, आपणी भुल्ल बख्शाइंदा। लेखे ला मेरी रत्त, मेरा करबला कूक सुणाइंदा। हसन हुसैन गए ढठ्ठ, अली अली ना कोए जणाइंदा। बिन तेरे किसे दर ना मिल्या रस, साचा रस ना कोए वखाइंदा। तारा चन्द रहे छुप, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाइंदा। तेरे दर आस मेरे मौला, इक्को इक रखाईआ। चौदां सदीआं पूरा करदे कौला, कँवल नैण तेरी वड्याईआ। आपे वसें परदे उहला, पर्दानशीं आपणा नाउँ धराईआ। मेरा भार करदे हौला, तेरे हथ्थ समरथ वड्याईआ। मेरा चम्म तेरा बणे पौला, पानही रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। मुहम्मद वेख बेनक़ाब, नुक्ता आपणा आप मिटाइंदा। दर दरवेश कर आदाब, आदत इक्को इक समझाइंदा। ना कोई कलमा ना निमाज़, नज़ाम आपणा आप बदलाइंदा। ना कोई साजण रिहा साज, जलवा नूर आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी रच रच काज, चौदां तबक पर्दा लाहइंदा। चरण दवारे आउणा भाज, हरि भावी आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। आपणा हुक्म हरि जणा, एका एक समझाईआ। हथ्थीं तन्द लैणा बंधा, बन्धन पिछला दए मुकाईआ। साची वंडण दए वंडा, वंडणहारा थाउँ थाईंआ। आपणी हथ्थीं गंढ्ढां दए बन्नां, खोल्हण कोए फेर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द रंग नीली धार, नीले वाला आप रंगाइंदा। शहिनशाह शाह बण सच्ची सरकार, शाह पातशाह हुक्म सुणाइंदा। लेखा लिखे अगम्म अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, हरि करतारा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा।

❇ १६ कत्तक नूं एह शब्द राष्ट्रपती नूं फोटो नाल भेजे गए ❇

सच संदेसा राज राजान, शाह पातशाह आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्मरान, एका हुक्म मनाईआ। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तिम बण प्रधान, नाम प्रधानगी इक वखाईआ। वाली हिन्द कर ध्यान, हरि ज्ञान रिहा दृढ़ाईआ। सम्मत अठारां खिच्ची विच्चों आप म्यान, तिक्खी धार धार जणाईआ। रजिन्दर प्रशाद बणया अञ्याण, हरि हरि भेव कोए ना पाईआ। पंडत नहरू बणया आप सुजान, जगत विद्या करे लड़ाईआ। अन्त वरासत होणी वैरान, सिआसत कम्म किसे ना आईआ। नेत्र खोल्ह बाल अंजाण, श्री भगवान रिहा समझाईआ। प्रगट होया वाली दो जहान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। बवंजां देशां संदेसा दे विच जहान, पिछला लेखा याद कराईआ। भुलया रहे ना शाह इंगलस्तान, इंक इंक लिखे लेख नाल छाहीआ। अमरीका बणया ना रहे विधान, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। नेत्र खोल्हे शाह ईरान, शहिनशाह इक्को हुक्म मनाईआ। रूसा चीना दे ब्यान, सच ब्याना इक जणाईआ। शब्द अगम्मी इक तूफ़ान, तोहफ़ा घर घर दए

पुचाईआ। अन्तिम सारे होणे वैरान, वैरी वैर ना कोए कमाईआ। लेखा चुकणा शाह अफ़गान, तुरकस्तान तुरत करे लड़ाईआ। प्रगट होया योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा दए वखाईआ। सत्त रंग वखाया जिस निशान, राष्ट्रपती हथ्थ फड़ाईआ। सो आया विच मैदान, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। पहली चेत्र देवे ज्ञान, गोष्ट करे थाउँ थाईंआ। पटणे लौहण जाए मुकाण, बेमुकाम फेरा पाईआ। आपणी फेर जणाए शान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। पन्थ ख़ालसा होए हैरान, हरि जू हरि हरि आपणा हुक्म जणाईआ। गोबिन्द सूरा प्रगट होया मेल मिलाया गुण निधान, गुण आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्को इक जणाईआ। सच संदेसा शाह सुल्ताना, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। साचा खण्डा कढु म्याना, मीआं बीवी वंड वंडाइंदा। मीआं बणयां आप भगवाना, बीवी सिआसत रूप वखाइंदा। आपे वेखण आया घर घर ख़ाना, दर दर आपणा कुण्डा लाहइंदा। अन्तिम झुल्लणा इक निशाना, निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा पाक सदर, परवरदिगार आप जणाइंदा। उम्मत नबी पैणा ग़दर, ना कोई मेट मिटाइंदा। बिन खुदावंद करे ना कोई कदर, कादर आपणा हुक्म वरताइंदा। सदी चौधवीं नज़ाम देवे बदल, बदला आपणे हथ्थ रखाइंदा। करन आया साचा अदल, अदालत इक्को इक
३४ १३ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा अरब कासर, हरि ३४ १३
हरि आप जणाईआ। नेत्र खोलृ सदर नासर, नास्तिक रूप सर्ब खुदाईआ। लहिंदी दिशा वखाए आतश, अग्नी अग्ग अग्ग लगाईआ। वेखो करे खेल खुदावंद साज़श, आपणी साज़श ना किसे जणाईआ। मुहम्मद पूरी करन आया ख्वाहिश, ख्वाहिश उम्मत नाल मिलाईआ। अन्तिम निक्की जेही रहिण देवे इक्को शाख़, शनाख़त आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक पुचाईआ। सच संदेसा ईरान शाह, हुक्मरान आप जणाईआ। अन्त भुल्ले सच्चा राह, रहबर नज़र कोए ना आईआ। इबादतख़ाना कोई दिसे ना, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ।

उन्नी कत्तक सच दिहाढ़ा, इक इक नाल मिलाईआ। एका नांयां कर विहारा, बिवहारी खेल कराईआ। एका नांयां कर उज्यारा, उज़र सब दा दए मिटाईआ। एका नांयां बोल जैकारा, जै जैकार दए सुणाईआ। एका नांयां कर तैयारा, त्रैभवण बूझ बुझाईआ। एका नांयां ला अखाड़ा, नव खण्ड नाच नचाईआ। एका नांयां पुरख नारा, नर नरायण वेख वखाईआ।

एका नांयां साची कारा, करता पुरख आप कमाईआ। एका नांयां कर पसारा, पसर पसारी वेखे थाउँ थाईंआ। एका नांयां दे अधारा, सच प्यारा दए वखाईआ। एका नांयां रूप वटाए चन्न सतारा, तार सतार हिलाईआ। एका नांयां भगत दवारा, भगवान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका उन्नी आपणी उनती लए कराईआ। एका उंनी खेल उनीसा, हरि करता आप कराइंदा। एका खेल जगत जगदीशा, जगदीशर आप जणाइंदा। एका नाम इक हदीसा, एका हज़रत आप पढ़ाइंदा। एका रूप दस्से अनडीठा, अनभव आपणा रंग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नांयां मेल मिलाइंदा। एका नांयां नईया नाउँ, नर निरँकारा आप चलाईआ। एका नांयां मेला सहिज सुभाउ, सतिगुर पूरा आप मिलाईआ। एका नायां नज़री आए हर घट थाउँ, घट घट रिहा समाईआ। एका नांयां निउँ निउँ लागो पाउँ, पारब्रह्म सच सरनाईआ। एका नांयां मेल मिलाया पिता माउँ, मात पित आप अख्वाईआ। एका नांयां भगत उधारे फड़ फड़ बाहों, बालक आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। आपणा खेल करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। चन्द कहे तूं मेरा कन्त, हउँ नारी रूप वटाइंदा। तेरी महिमा सदा अगणत, लेखा लिख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे ओट रखाइंदा। तारा कहे मैं तेरा तारा, तारनहार तेरी वड्याईआ। कलिजुग आया अन्त किनारा, तट रोवे दए दुहाईआ। आदि जुगादि तेरा प्यारा, प्रेम प्यार भुल्ल ना जाईआ। हउँ बरदा सेवादारा, बालक तेरी सेव कमाईआ। तूं बेपरवाह परवरदिगारा, तेरी डूँग्घी गार नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे ओट रखाईआ। चन्द कहे मैं तेरा नूर, नूर नूर विच समाइंदा। तूं साहिब हाज़र हज़ूर, हज़रत तेरे अग्गे वास्ता पाइंदा। मेरी बेनन्ती कर मंज़ूर, मनशा होर ना कोए वधाइंदा। चौदां सदीआं तप्या वांग तन्दूर, तुध बिन सीतल धारा ना कोए वखाइंदा। मेरा मुआफ़ कर कसूर, कसूरवान वास्ता पाइंदा। मैं विछड़यां रिहा तैथों दूर, नेरन नेर ना कोए ल्याइंदा। मेरा कटदे शरअ जूड़, शरीअत वंड ना कोए वंडाइंदा। मैं तेरे चरणां लावां धूढ़, मस्तक टिक्का इक वखाइंदा। तुध बिन होया मज़बूर, मेरी मज़बूरी ना कोए मुकाइंदा। तूं सर्ब कलां भरपूर, घट घट आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे झोली डाहइंदा। तारा कहे मैं तेरा तारा, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। चौदां लोक ना कोए सहारा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। तेरी खुदाई तेरा लाए नाअरा, लाशरीक तेरी शनवाईआ। शहिनशाह तेरा नज़ारा, जलवा नूर नज़र ना पाईआ। तूं हद्द हदूद वसें बाहरा, शरअ वंड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चन्द

३५
१३

सतारा दए दुहाईआ। चन्द सतारा रिहा कूक, कूक कूक सुणाइंदा। तूं साहिब ऊँचो ऊँच, महल अटल डेरा लाइंदा। सदी चौधवीं होणा कूच, कूचा गली रहिण कोए ना पाइंदा। ताणा पेटा नज़र आए ना कोए सूत, बण तरखाण सूत्र लाइंदा। आपे घड़ें सच कलबूत, कलमा आपणा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारा चन्द मंग मंगाइंदा। तारा चन्द करे पुकार, दरोही दरोही रहे सुणाईआ। मेल मिला सांझे यार, यारी यारां नाल रखाईआ। तुध बिन पावे ना कोए सार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पीर पैगम्बर कर गए किनार, कन्नी आपणी गए छुडाईआ। तेरे दर ते डिगे आण, निउँ निउँ चरणां सीस निवाईआ। असीं पिच्छे रहे अंञाण, तेरा भेव कोए ना पाईआ। उन्नी कत्तक कर पछाण, वीह अठारां करी कुड़माईआ। गोबिन्द खून दित्ता बलीदान, नीहां हेठ आप रखाईआ। उत्ते भगत दवारा बणया इक निशान, निशांना सच सच झुलाईआ। जिस घर वसे आप भगवान, भगवन आपणा डेरा लाईआ। गुरमुखां दवारे आया बण महिमान, मेहरवान फेरा पाईआ। जन भगतां दी मन्नण आया आण, आपणा ताण गया मिटाईआ। उत्ते बहि के पिच्छे आपणा देवे सच ब्यान, ब्याना आपणा नाम रखाईआ। भगतो दयो इक्को दान, दाता झोली अग्गे डाहीआ। हुक्म करो ते अन्दर वड़ां आण, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चन्द सतारा पए रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। साडी सुरत संभाले ना को, कूट कूट नज़र कोए ना आया। तेरे चरणां नाल ना सके छोह, बांके छोहरे देण दुहाया। तूं भगत दवारे आया छब्बी पोह, मोह मुहब्बत इक वधाया। पीर पैगम्बरां ल्या टोह, अन्दर वड़ वड़ पर्दा लाहया। सब दी वस्त लई खोह, आपणे अन्दर आप छुपाया। आपणे जिहा आपे हो, रूप आपणा आप प्रगटाया। दो जहानां करे लो, लोआँ पुरीआँ नूर वखाया। असीं गूढ़ी नींद गए सो, पीर पैगम्बर ना किसे उठाया। साडे नाल कमाया धरोह, तेरे अग्गे वास्ता पाया। तूं होवीं ना आप निरमोह, तुध बिन माण ना कोए दिवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाया। सुण तारे मेरे छोटे लाल, हरि साचा सच जणाईआ। सदी चौधवीं खा जाए काल, महाकाल डौरु रिहा वजाईआ। चौदां तबक होण बेहाल, बेहबल होवे सर्ब लोकाईआ। मुहम्मद संग ना निभे नाल, सगला संग ना कोए रखाईआ। साचा मार्ग दयां सिखाल, पर्दा उहला इक चुकाईआ। गोबिन्द बणे तेरा दलाल, बण विचोला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। साचे तारे तेरा मेल नाल मनजीत, मन वासना पूर कराइंदा। आपणी छाती उत्ते मारी लीक, पिछली लीक आप मिटाइंदा। अग्गे कोई ना दिसे फ़रीक, फ़िरका सब दा आप बदलाइंदा। आपणी लिख लिख दए तारीख़, पिछली तहिरीक

सर्ब मिटाइंदा। बाले बाले रहे उडीक, बाली बुध वेख वखाइंदा। तेरी रखे सच प्रीत, प्रीतीवान आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साचा हुक्म जणाइंदा। चन्द कहे मैं तेरा चन्द, तेरे नूर समाईआ। जिउँ भावे तिउँ टुट्टी गंढु, गंढुणहार बेपरवाहीआ। तेरा गोबिन्द मेला पुरी अनन्द, पुर अनन्द आपणे विच वखाईआ। जे तूं माण दित्ता लाल गुजरी चन्द, मैं चन्द तेरी सरनाईआ। चौदां तबक दे के आया कंड, आपणी करवट रिहा बदलाईआ। ला सीने पा दे ठंड, मेरी कट पिछली जुदाईआ। मैं तेरा माणां इक अनन्द, अनन्द तेरे चरण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सुण चन्द मेरे सीतल सीत, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरा मेला नाल जगदीश, जगदीश्र आप कराइंदा। जिस दवारे छत्तर झुले प्रभ साचे सीस, सो दवारा सोभा पाइंदा। तेरी कोई ना करे रीस, तेरी बेनन्ती आपणे लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चन्द सितारे आप समझाइंदा। चन्द सतारा दोवें लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। आपणी छाती लए स्वाल, गुरमुखां राह वखाईआ। सारे उठ उठ करो भाल, बिन भालयां नज़री आईआ। बण बरदा होया दलाल, सच दलाली रिहा कमाईआ। तुहाढ्ढी झल्लदा रिहा झाल, शाह कंगाल रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चन्द सतार दए वड्याईआ। चन्द सतार साचे लाड़े, धुर दरगाही आप प्रगटाइंदा। उन्नी कत्तक चढ़ाए खारे, खारा आपणी हथ्थीं उठाइंदा। चौदां सदीआं मुहम्मद देंदा रिहा लारे, ला ला लारा वक्त लँघाइंदा। आप बैठा रिहा पार किनारे, उरार रूप ना कोए वखाइंदा। दूर दुराडे दस्सदा रिहा नाल इशारे, इशारा आपणा आप प्रगटाइंदा। करे खेल परवरदिगारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। चन्द सतारे चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक वखाईआ। परवरदिगार मिल्या आ, मिल मिल खुशी मनाईआ। साची दरगाह बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचा मार्ग दए वखा, रहबर बणे सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाईआ। चन्द सतारे साचे पूत, हरिजू आपणे रंग रंगाइंदा। एका पेटा ताणा दिसे सूत, सूत्र धारी वेख वखाइंदा। लेखा जाणे आप अनूप, महिमा आपणी आप सुणाइंदा। शहिनशाह वड भूपन भूप, भूपत राज जोग कमाइंदा। लेखा जाण चार कूट, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नांयां वेख वखाइंदा। एका नांयां सम्मत उंनी, बीस बीस दए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी वड गुण गुणी, गुणवन्ता फेरा पाईआ। लेखा चुकाए मुस्लिम सुन्नी, शीआ रूप ना कोए वखाईआ। लहिणा चुक्के ऋषी मुनी, तपी तपीश्र ना कोए वड्याईआ। चोटी सब दी जाए मुन्नी, मोन आपणा सके ना कोए खुलाईआ। बिन भगत

किसे घर ना वज्जे राग नाद धुनी, धुन आत्मक ना कोए शनवाईआ। सब दे सिर तों लथ्थे चुन्नी, कन्त सुहाग ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। चन्द सतारे तेरा सति, सति सतिवादी आप जणाइंदा। उम्मत नबी रसूल देवे मति, मसला इक्को इक पढ़ाइंदा। आपे जाणे मितगत, गतमित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उन्नी कत्तक आप वड्याइंदा। उन्नी कत्तक मेला मेल, मिल मिल खुशी कराईआ। साहिब सतिगुर सज्जण सुहेल, घर साचा वेख वखाईआ। वसणहारा सदा नवेल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द लेखा गुरु गुर चेल, चेला गुर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वस्त्र नील रंग रंगाईआ। वस्त्र नील रंग अपारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी भेव ना आया। आदि जुगादी जिस दा इक्को नाअरा, ज़ाहरा आपणा नूर रुशनाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करदे गए मुशाअरा, मुश्कल हल्ल ना कोए कराया। सो अन्तिम जन भगतां भगत दवारे देवे पहरा, बण सेवादार सेव कमाया। अग्गे औण ना देवे कोई ऐर ग़ैरा, ग़ैरत आपणी रिहा जणाया। कलिजुग अन्तिम वरते कहरा, कहर आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। चन्न सतार दोवें जागे, जागरत नैण खुल्हाईआ। प्रभ दर साचे आए भागे, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा काजे, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। पीर पैगम्बर तेरा कलमा पढ़दे गए निमाज़े, तेरे हुजरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे इक सरनाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाइंदा। चन्द सतारे सुरत संभाल, सुरती सुरत खुल्हाइंदा। चरण प्रीती निभे नाल, सच निशाना इक वखाइंदा। पहलों वेखो सृष्ट सबाई हुन्दी बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। चारों कुण्ट आए ज़वाल, ज़ावीआ आपणा ना किसे समझाइंदा। कुतर रूप वंड वंडे ना कोए जहान, रकबा मुरक्कब ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। चन्द सतारे सुण लै बात, बेपरवाह जणाईआ। चौदां तबक अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा छाईआ। नार कुलखणी होई कमज़ात, कलमा नबी ना कोए शनवाईआ। पंज वक्त ना कोए निमाज़, वुज़ू बांग ना कोए वड्याईआ। सच मिले ना कोई सफ़ात, सिफ़रा सिफ़र ना कोए गंवाईआ। एका अल्फ़ ना मिले नजात, ये युकती ना कोए समझाईआ। साचा दिसे ना कोए बागात, माली बण सेव ना कोए कमाईआ। पीर पैगम्बर मार्ग दस्स दस्स गए बहु भांत, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। आप दूर दुराडे रहे झाक, तेरा दरस कोए ना पाईआ। चन्द सतारे तेरा बणया हरि जू साक, आपणा संग रखाईआ। कर किरपा पर्दा देवे ढाक, ढाकन को पत सच्चा माहीआ। तेरा

लेखा करे बेबाक, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। चन्द सतार चरण फड़, सीस जगदीश झुकाया। तेरे दवारे डिगे दड़, निधड़क बेपरवाहया। कर किरपा बाहों लै फड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। चौदां तबक गए हर, जित नज़र कोए ना आया। तुध बिन साईं गए मर, मरन मरन ना कोए मिटाया। कर किरपा आपणे बन्ह् लड़, इक्को डोरी तन्द रखाया। तेरे दवारे लग्गे जड़्, ना सके कोए उखड़ाया। तेरा नाउँ लईए पढ़, पढ़ पढ़ शुकर मनाया। तेरयां भगतां सेवा लईए कर, बण सेवक वेस वटाया। तेरे दवारयों आवे डर, वेले अन्त ना दएं दुरकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चन्द सतार सीस झुकाया। चन्द सतार गए झुक, झुक झुक सलाम बुलाईआ। पिछला पैंडा गया मुक्क, अग्गे तेरे हथ्थ वड्याईआ। पीर पैगम्बरां कोलों ल्या पुच्छ, बणे कोई ना सच मलाहीआ। परवरदिगार सब दीआं जड़्हां रिहा पट्ट, ना सके कोए लगाईआ। कलिजुग अन्तिम आपे प्या उठ, बल आपणा आप धराईआ। जन भगत बणाए साचे सुत, पिता पूत जोड़ जुड़ाईआ। लग्गी प्रीत ना जाए छुट्ट, बन्धन बंध ना कोए तुड़ाईआ। भगत फलवाड़ी गई फुट, सतिजुग साचा नूर रुशनाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
साडी पूरी आस कराईआ। श्री भगवान दस्से भेत, भेव आप जणाईआ। सम्मत चढ़ना पहली चेत, वीह सौ वीह बिक्रमी दए वड्याईआ। चन्द सतारे छाती उत्ते लैणा खेड, पिता पूत लाड कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। चन्द सतारे करो ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। सारे रखो इक ईमान, अमाम आप समझाइंदा। बग़ले मारो जगत कुरान, कुरा आपणा फेर वखाइंदा। ना कोई कलमा ना कलाम, हरफ़ बहरफ़ ना कोए पढ़ाइंदा। दीन मज़्हब ना कोए इस्लाम, शरअ शरीअत ना कोए रखाइंदा। सच्चो सच इक नज़ाम, नज़रीआ इक्को इक पाइंदा। बणया रहे आप गुलाम, बरदा रूप आप हो जाइंदा। ना कोई सुबह ना कोई शाम, चन्द सतार ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म चन्द सतारे, हरि हरिजू आप जणाईआ। देवणहारा वस्त अपारे, वासतक इक्को इक वरताईआ। दोए लाल बैठे सच दवारे, दर पर्दा रिहा खुल्हाईआ। जगत जगदीश वाजां मारे, सोहँ ढोला एका गाईआ। आ चन्द मेरे चन्द प्यारे, तैनूं साहिब साचा चन्द दयां वखाईआ। जिस दी जोत अठ्ठ पहर चमकां मारे, रैण अन्धेरी ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि ना होए धूंआँधारे, बादल उपर ना पर्दा पाईआ। सो साहिब मेरा वसे सचखण्ड दवारे, सचखण्ड दवारा लोकमात बणाईआ। सीस बन्ह्े सच दस्तारे, दस्त आपणे सेव कमाईआ।

गोबिन्द मेला कन्त भतारे, घर पाया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आ सतारे वेख सति, सति सतिवादी आप जणाइंदा। छोटा बाला देवे मति, मनजीता मन जितया हथ्थ किसे ना आइंदा। आ के वेख मेरा कमलापति, कोझयां कमलयां गले लगाइंदा। जिस दा गोबिन्द सत्थर बैठा घत्त, सो गोबिन्द विच समाइंदा। चरण दवारे आ के ढठ्ठ, डिगयां फड़ उठाइंदा। चार जुग दयां विछड़यां होया इकठ्ठ, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जिस दो जहान चलाया रथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर राह वखाइंदा। सो साहिब होया प्रगट, प्रगट आपणी जोत जगाइंदा। सच सतारे साचा नाम लैणा रट, सोहँ ढोला इक अलाइंदा। तेरा मिटे विछोड़ा फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। चन्द सतार सुण संदेसा, इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला मिले नर नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। पिछला चुकाए मूल लेखा, मुल्लां शेख़ संग तुड़ाईआ। अग्गे करे नाल भगतां हेता, हित्त आपणा नाल मिलाईआ। दर आयां घर खोल्हे भेता, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चन्न सतार दए वड्याईआ। चन्न सतार तेरा चुक्कया लहिणा, हरि लहिणा लेखे पाइंदा। उठ उठ वेखो आपणे नैणां, नेत्र नैणां आप वखाइंदा। जिउँ भगतां मन्यां मेरा कहिणा, तिउँ साचा हुक्म सुणाइंदा। सरन सरनाई साचे बहिणा, दर घर साचा इक खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मण्डल मण्डप आप वड्याइंदा। चन्द सतारा मण्डल धार, भूमका धवल दए वड्याईआ। आकाश आकाशां खेल न्यार, प्रकाश प्रकाश लए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची रुतड़ी रुत्त महकाईआ। साची रुतड़ी सोहे रुत्त, हरि सतिगुर आप सुहाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, पर्दा उहला आप उठाइंदा। पहली चेत्र मण्डल मण्डप लए पुच्छ, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा चुप्प चुपीता, चौहां हरि जणाईआ। आदि जुगादी जुग जुग रीता, भगवन आप बणाईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीता, मस्तक तिलक ना कोए छुहाईआ। त्रैगुण तपे ना कोए अंगीठा, हवन कुण्ड ना कोए वड्याईआ। ना कोई कबाब भुन्ने उपर सीखां, छुरी हलाल ना कोए समझाईआ। झटका करे ना कोई प्रीता, गोबिन्द खण्डा इक खड़काईआ। चार वरन दस्से इक तरीका, तरा तरा नाल समझाईआ। प्रभ का भाणा लागे मीठा, सद मन्नो इक रज़ाईआ। गुरमुख इक सत्त छे पंज जे ना फोलदे मेरा अगीठा, घर घर बहिंदा डेरा लाईआ। पुरख अकाल वखाउदा इक्को रीता, मन्दिर मसीतां डेरा ढाहीआ। मेरा साहिब सदा सद जीता, ना मरे ना जाईआ। वेखो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बदलण आया रीता, रीतीवान फेरा पाईआ। ऊँच

नीच राउ रंक हस्त कीट जिन इक्को जिहा कीता, कीती सब दी आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं वेला बीता, बीती कहाणी लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री इक लिआईआ। सच समग्री लै के आया, वाहद लाशरीका। इक नगरी बहि के आया, जिस दीआं करदे रहे उडीकां। जोत उजगरी कर के आया, पिछलीआं मेटे सर्ब तरीकां। आपणी कहाणी सजरी पढ़ के आया, जन भगतां दस्से चरण प्रीता। पीर पैगम्बर गुर अवतारां फड़ के आया, फड़ फड़ बाहों सर्ब घसीटा। सतिजुग दा साचा चन्द चढ़ के आया, नूरो नूर नूर अनडीठा। तारनहारा तारा बण के आया, साहिब दयाल दयाल हरि नज़दीका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रीता।

❇ पहली मग्घर २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

पुरख अकाल कलि साची कल्की, हरि साची कार कमाईआ। निरगुण सरगुण खेल आपे करदी, नार कन्त रूप वटाईआ। सचखण्ड दवारे आप चढ़दी, ख़ाकी ख़ाक आप समाईआ। आपणा नाम आपणा अक्खर आपणा कलमा आपे पढ़दी, पढ़ पढ़ आपे ख़ुशी मनाईआ। आपणी जोत आपणी अग्नी आपणे हवन आपे सड़दी, दूसर सार किसे ना आईआ। आदि अन्त आपणा घाड़न आपे घड़दी, सुनयार ठठयार ना कोए वड्याईआ। सीस जगदीश सेव कमाए बण बण बरदी, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। दर दरवेश बण बण फिरे डरदी, निरभउ भय इक रखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां फिरे फड़दी, दो जहानां वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी अकाश फिरे लड़दी, आप आपणा बल वखाईआ। जुगा जुगन्तर किसे कोलों ना हरदी, हार जित आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन भगत प्यार सदा मरदी, जीवण जुगत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर जोत सुआईआ। जोती नूर कल्कीधर, कलकल्की खेल खिलाइंदा। सच सिंघासण आपे चढ़, तख़्त निवासी सोभा पाइंदा। मर्द मर्दाना आपे बण, नूर ज़हूर आप कराइंदा। हक़ मुकामे आपे खड़, जलवा नूर वेख वखाइंदा। आयत शरायत आपे पढ़, कलमा नबी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साची कल्की गोबिन्द तोड़ा, भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग अन्तिम बणया जोड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रस वेखे मिठ्ठा, कौड़ा, आदि जुगादी फोल फुलाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को रख्या आपणा घोड़ा, आप आपणा आसण लाइंदा। चुक्कणहारा आपणा पौड़ा, रूप

रंग ना कोए रखाइंदा। दो जहानां फिरे दौड़ा, दरोही ख़ुदाए सर्ब कुरलाइंदा। खेल कराए ब्रह्मण गौड़ा, ग़ौर आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल्गी आप समझाइंदा। साची कल्गी गोबिन्द धार, हरि हरि खेल कराईआ। पुरख अकाल हो उज्यार, उजरत पिछली लेखे पाईआ। लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज़ रिहा निभाईआ। चमक वखाए अपर अपार, दमक आपणे विच छुपाईआ। सनक सनंदन रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बराह चरण धूढ़ी मंगे छार, तेरा मुखड़ा नज़र ना आईआ। हाव ग़रीव कहे मेरे उत्ते हो अस्वार, मुख मेरा तोहे सालाहीआ। यगै पुरुष दोए दोए जौड़ मंगे चरण धूढ़ छार, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। नर नरायण कहे खोल्ह ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। तेरी कल्गी वेखां झाक, झाकी इक्को वार जणाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा साक, सति पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी तक्कदे रहे तेरी वाट, तेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। तुध बिन पुछे ना कोए वात, सीस जगदीश हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल्गी इक समझाईआ। साची कल्गी कलि अवतारा, एका एक जणाइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण खोल्ह कवाड़ा, थिर घर आपणा कुण्डा लाहइंदा। एकँकारा पावे सारा, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता कर प्यारा, श्री भगवान संग रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, साचा वणज आप जणाइंदा। दत्ता त्रै वेख किनारा, हरि घाट इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। हरि कल्गी नूर नूर अवल्ला, नज़र किसे ना आइंदा। परवरदिगार इक इकल्ला, दरगाह साची वेख वखाइंदा । चौदां तबक तबक महल्ला, साचा सबक सबक पढ़ाइंदा। आदि जुगादी एका पल्ला, पल्लू आपणा नाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका घल्ला, जोत शब्दी आपे रल्ला, जोती नूर नूर समाइंदा। जोती नूर आलमीन, उल्मा आलम भेव ना राईआ। देवणहारा सच तलकीन, जागरत जोत करे रुशनाईआ। करे कराए हक़ तलकीन, तहिकीक आपणी आप दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलि कल्की आप जणाइंदा। लेखा जाण धुर दरबारा, धुर दा भेव आप चुकाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाइंदा। लेखा जाण तेई अवतारा, दर दर आपणा हुक्म मनाइंदा। हुक्मे अन्दर खेल न्यारा, नर हरि नरायण आप कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर लिखारा, लिख लिख लेखा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची

४२
१३

करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, एका एक कराईआ। भगतन मेला कन्त भतार, घर साचे वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे पीर पैगम्बर साचे यार, यारी यारां नाल निभाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे आधार, एका एक करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। साचा भेव हरि भगवाना, एका एक जणाइंदा। नानक निरगुण नाम तराना, सति सति वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा सच मकाना, हक़ मुकाम इक दृढ़ाइंदा। एका जोती खेल महाना, गोबिन्द एका गोद सुहाइंदा। गोबिन्द मेला पिता सुजाना, साची सिख्या इक रखाइंदा। धुरदरगाही हरि निशाना, निगाहबान आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी गोबिन्द सूरा, पुरख अकाल इक ध्याईआ। अन्दर बाहर इक्को बौहड़ा, गुप्त ज़ाहर वेख वखाईआ। नेत्र लोचण नैण हाज़र हज़ूरा, दिवस रैण ना कोए वड्याईआ। सर्ब कला समरथ भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। वसणहारा दूर नेड़ा, नेरन हो हो दरस दिखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना जाणे कोए राईआ। तेरा नगर मेरा खेड़ा, मेरा खेड़ा तेरी वड्याईआ। लख चुरासी झूठा झेड़ा, जीवण जुगत जगत कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकामी सदा स्वामी पाए फेरा, फेरी आपणी इक जणाईआ। नव नौ चार करे नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव हरि हरि खोल्हे, ख़ालक ख़लक हरि जणाइंदा। दो जहानां तोल तोले, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। आदि जुगादि रहे अडोले, अडोल डुल कदे ना जाइंदा। वसणहारा काया परदे ओहले, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। बिन गोबिन्द साची धरत कोए ना मौले, मौला रूप ना कोए वखाइंदा। निरगुण निरगुण नाल करे कौले, सरगुण सरगुण मोह चुकाइंदा। अन्तिम कलि प्रगट होए उपर धौले, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणाइंदा। साची खेल हरि करतार, गुर गुर गोबिन्द आप जणाईआ। तेरा सीस मेरी दस्तार, तेरी दस्तार मेरी रुशनाईआ। तेरी प्रीत मेरा प्यार, मेरा प्यार तेरी वड्याईआ। तेरी रीत विच संसार, शाह हकीर वेख वखाईआ। बेनकाब मुख पर्दा आपे पाड़, शरअ शरीअत ना कोए वड्याईआ। दीन मज़्बां वसे बाहर, नूर नुराना सच्चा माहीआ। कलि कल्की लै अवतार, सिर कल्ग़ी इक टिकाईआ। जिस दी किसे ना पाई सार, चार जुग निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेई अवतार रहे भिखार, भगत ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। पीर पैगम्बर सुणदे रहे गुफ़तार, जलवा नूर नज़र किसे ना आईआ। किरन किरन किरन विच्चों कढ्ढी बाहर, आपणी किरपा दए दृढ़ाईआ। मूसा डिगा मूँह दे भार, मुफ़लस हो के मंग मंगाईआ। ख़िमा ग़रीबी साचे यार, नज़दीकी

तेरी नज़दीकी नज़र किसे ना आईआ। बारीकी बारीकी बारीक तेरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद ना कोए जणाईआ। कोई ना जाणे तेरी रफ़तार, तेरा भेव ना कोए जणाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। तेरा नूर इक अपार, तेरी चमक चमक वड्याईआ। तूं पीरां दा पीर पैगम्बर शाहां दा शाह सिक्दार, दस्तगीर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल्ग़ी दए वड्याईआ। साची कल्ग़ी गोबिन्द रंग, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। चरण भिखारी मंगी मंग, मंगी मंग पूर कराइंदा। प्रगट हो सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। दो जहान वजाए मृदंग, मृदंगा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतारा, कल कलिजुग आप वखाईआ। जोती जामा भेख न्यारा, आदि जुगादी रामा नज़र किसे ना आईआ। सचखण्ड निवासी साचा काहना, खेले खेल मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी इक कमाईआ। पीर पैगम्बर गाए इक तराना, तरा तरा नाल समझाईआ। भगत भगवान दए निशाना, सति निशाना इक वखाईआ। गुर गुर देवे इक परवाना, परम पुरख बूझ बुझाईआ। जुग चौकड़ी खेल महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम होए प्रधाना, सति प्रधानगी आप कमाईआ। सीस जगदीश सुहाए इक निशाना, बेनिशाना आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलि कल्की वेस वटाईआ। कलि कल्की गोबिन्द धार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जोती जोत हो उज्यार, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ निरँकार, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल अपार, हरि करता आप जणाइंदा। पंचम मुख मुख अपार, अपरम्पर रंग रंगाइंदा। इक अठ्ठ कर विचार, बीस बीस संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। एका एक होया दो, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सरगुण निरगुण लग्गा मोह, मोह मुहब्बत इक वड्याईआ। आत्म परमात्म गई छोह, बांका छोहरा रूप वटाईआ। आपणा नाँ रखाया सो, हँ आपणा बंस सुहाईआ। अमृत इक्को इक चो, प्यार प्यार विच्चों टपकाईआ। निरगुण जोत करे लोअ, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। आपणे जिहा आपे हो, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। नाता तोड़ छब्बी पोह, पूरन पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। दो जहानां रिहा जोह, गुर पीर अवतार नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल करने योग, जुगति आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेखणहार लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। सुणावणहारा सच सलोक, ब्रह्मा विष्न शिव आप पढ़ाइंदा। देवणहारा वस्त थोक, नाम भण्डारा झोली पाइंदा। वसावणहारा

किला कोट, सचखण्ड दुआर बंक वड्याइंदा। प्रगटावणहारा निर्मल जोत, जोती नूर नूर रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल आपणा प्यार, आपे आप जणाईआ। आपे प्रीतम करे विहार, पिया आपणा रंग रंगाईआ। आपे वेखे वेखणहार, वेख वेख आप बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा चुक्के आप, हरि साचा सच जणाइंदा। आपणा दस्से आप प्रताप, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। आपणा बणे आपे माई बाप, दूसर गोद ना कोए सुहाइंदा। आपणा करे आपे जाप, आपे आपणा नाउँ वड्याइंदा। आपणा बणे आपे साक, सज्जण सैण आप अख्वाइंदा। आपे आपणी प्रगटाए साची ज़ात, ज़ात अजाति ना कोए रखाइंदा। आपे होए पाकी पाक, पुनीत आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे लाह, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। आदि निरँजण आप अख्वा, सो पुरख निरँजण सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटा, एकँकारे रंग रंगाईआ। सचखण्ड बैठे साचे थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप धराईआ। आपणी इच्छया आपे रख, मेहरवान खेल कराइंदा। आपणे विच्चों हो प्रतख, आपणा नूर प्रगटाइंदा। आपणा खेल करे समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपे शाह सुल्तान राजन राज, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आपे रच रच आपणा काज, हरि हरि आपे वेख वखाईआ। आपे बणे गुरू महाराज, शाह पातशाह वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। आपणी इच्छया देवे माण, हरि जू दया कमाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, पंचम मुख वड्याइंदा। पंचम पंचां कर प्रधान, पंचम भेव खुल्हाइंदा। आपणा नूर नूर महान, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप धराइंदा। आपणा नूर जोती धार, जोत जोत रुशनाईआ। आपणी जोत कर प्यार, आपणे अंग लगाईआ। आपणे मन्दिर दए आधार, आप आपणी खुशी वखाईआ। आपे फड़ फड़ करे प्यार, प्यार प्यार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण प्यार निरगुण धार, निरगुण निरगुण दए वड्याईआ। निरगुण प्यार साचा दर्दी, पुरख अकाल दर्द वंडाइंदा। सति सतिवादी आपणे प्यार पुआए साची बरदी, वरदी आपणे रंग रंगाइंदा। आपणे नूर नुराने नाउँ धराए साची कल्ग़ी, कल्ग़ी आपणे सीस उठाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग आपणी कला राखे चढ़दी, लख चुरासी आप निवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची

कल्ग़ी आप बणाइंदा। साची कल्ग़ी धुरदरगाह, हरि इक्को इक बणाईआ। जुग जुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्दी शब्द देंदा रिहा सलाह, आप आपणी सिफ्त सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण प्रगट हो के आए सच मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। दो जहानां करे रुशना, चौदां तबक वेख वखाईआ। चौदां लोक पर्दा देवे लाह, पर्दानशीं बेपरवाहीआ। साचा सोहला दए सुणा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म बोला लए व्याह, पारब्रह्म प्रभ फेरी पाईआ। गोबिन्द विचोला लए बणा, रूप रंग रेख नज़र ना आईआ। पर्दा उहला आप उठा, मौला आपणा वेस वटाईआ। तोला बण बेपरवाह, नाम कंडा इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कल्ग़ीधर सिर कल्ग़ी रख, कलिजुग अन्तिम खेल कराईआ । जुग चौकड़ी रिहा दस्स, शब्दी शब्द राग सुणाईआ। आदि अन्त किसे ना होया वस, बेवस सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गा गा थक्की जस्स, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दा तुटा हठ, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दवारे प्रभ चरणीं गए ढठ्ठ, आपणा बल ना कोए रखाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, समरथ तेरे हत्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी भाण्डे सक्ख, नाम वस्त ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्ह्ब करदे आए पक्ख, निरपक्ख ना कोए अख्वाईआ। अन्तिम होए ख़ाली हत्थ, दो जहान फिरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल जाणे भगवन्त, भेव अभेद जणाइंदा। जुग जुग माया पाए बेअन्त, बेअन्त आपणी धार वखाइंदा। हरिजन मेला विरले सन्त, सन्त साजण अंग लगाइंदा। नाम जणाए इक्को मंत, मंत्र एका नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, एका एक जणाईआ। आपणा मंगे आपे दान, दर आपणे अलख जगाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, दर दरवेश आप हो जाईआ। आपे निउँ निउँ करे सलाम, सजदा सीस आप झुकाईआ। आपे देवणहार पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाईआ। आपे बणे सच अमाम, इस्म आज़म आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सच संदेसा, हरि कल्की आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम धारे वेसा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। लहिणा देण चुकाए ब्रह्मा विष्न महेषा, शंकर लेखा आप मुकाइंदा। जुग चौकड़ी कढ्ढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। खेल खलाए पिता पूत हरि बेटा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। जुग चौकड़ी भुल्ले ना चेता, चेतन सब नूं आप कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणी कल्की आप रंगाइंदा। आपणी कल्की हरि निरँकार, एका रंग वखाईआ। गुर गोबिन्द तेरा सच प्यार, नानक धार नाल मिलाईआ। प्रगट हो अगम्म अपार, अलख अगोचर खेल वखाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, सम्बल आपणा चरण छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप चुकाईआ। पूरब लेखा आप चुकाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। कल्कीधर फेरा पाउणा, कल्की आपणे सीस टिकाइंदा। गुरमुख साचे आप उठाउणा, अन्दर वड़ वड़ सेव कमाइंदा। जुग जन्म दा लहिणा आप चुकाउणा, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल्कीधर आप हो आइंदा। कल्कीधर आया जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग, कागों हँस आप उडाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रखाया विच अद्ध, बिन नानक नज़र किसे ना आईआ। इक कबीरा ल्या सद्द, सद्दा आपणा नाम रखाईआ। कलिजुग अन्तिम पर्दा लए कज्ज, गुरमुख साचे गोद बहाईआ। ग़रीब निमाणे पिच्छे लए ना छड्ड, अग्गे हो हो दरस कराईआ। जगत जहान पार हद्द, दो जहानां डेरा ढाहीआ। जिउँ पुरख अकाल गुर गोबिन्द बणाई आपणी यद, बंस सरबंस आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो कल्की इक चमकाईआ। सो कल्की आई मात, लग्ग मात्र ना कोए रखाइंदा। वरन बरन ना कोए ज़ात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाइंदा। जगत भण्डार ना कोए ख़ात, ख़ाता इक्को नाम वखाइंदा। पिछला लहिणा चुकाए पिछली गाथ, अग्गे आपणा मार्ग लाइंदा। कलिजुग अन्तिम लहिणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चम्यारा लेखा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। अभुल कदी ना भुलया, आदि जुगादी साची कार। लख चुरासी विच कदे ना रुलया, निरगुण जोत नूर उज्यार। लख चुरासी फलया फुलया, पत पंखड़ीआं वेखे इक गुलज़ार। आदि अन्त कदे ना हुल्लया, सद रखे बसन्त बहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलि कल्की इक अवतार। कलि कल्की हरि आया प्रभ, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। भगत भगवन्त लए लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जो चरणां हेठां रखे दब्ब, कलिजुग अन्त लए प्रगटाईआ। सरगुण निरगुण लए सद्द, हुक्मी हुक्म इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह आया दरवेश, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। शाह सुल्ताना नर नरेश, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, लोकमात फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणयां करे हेत, कोझे कमले गले लगाइंदा। गोबिन्द साथीआं नाल रिहा खेड, सगला संग आप हो जाइंदा। बिन भगतां दस्से किसे ना भेत, लख चुरासी जीव सर्ब कुरलाइंदा। वेखो रुत्त बसन्ती मौले चेत,

चेत्र आपणे रंग रंगाइंदा। बीस बीसे खोल्हे भेत, भाण्डे सब दे आप भंनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा कंध कलर रेत, बालू आपणा पर्दा लाहइंदा। कल्गीधर आया जगदीश, जगदीश्र आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई रिहा पीस, पीसण पीस सेव कमाईआ। किसे सिर ते रहिण ना देवे सीस, सीस छत्र ना कोए झुलाईआ। ना कोई पढ़े जगत हदीस, हुजरे मिले ना कोए वड्याईआ। नाता तुटे तीस बतीस, बीस इकीस वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल्गी एका नूर चमकाईआ। कल्गी चमके नूर नुराना, नूर इलाही वेख वखाइंदा। परवरदिगार हो बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। अमाम अमामां इक तराना, राग अनादी नाद अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक जणाइंदा। साची सिख्या हरि करतारा, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। पंज महीने ना कोई विहारा, जुग जुग भुल्ल कदे ना जाइंदा। सिंघ सवरन क्यों रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर नैण पुंझाइंदा। तेरी भुल्ल ना गई वज्जी कटारा, ख़ंजर आपणा जिगर चिराइंदा। तेरा लेखा नाल मुहम्मद यारा, चार यारी वंड वंडाइंदा। आपणी अक्खीं वेख नज़ारा, नाज़ल वही आप जणाइंदा। उलटे रूप बणया लिखारा, कातब कलम ना कोए वड्याइंदा। जलवा नूर परवरदिगारा, परवश गुरमुखां अन्दर पाइंदा। एका नायां होए उज्यारा, उन्नी उनीसा वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट प्रगट होए पीर ज़ाहरा, ज़ाहरा आपणी कल धराइंदा। जिस दा लाया हज़ारा दरूद नाअरा, ला हक़ आपणा हुक्म मनाइंदा। अल्फ़ ये जिस दा करदी रही मुशायरा, सो मुश्कलां हल्ल कराइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार फड़ के रखे आपणे दायरा, हद्द सब दी आप तुड़ाइंदा। कलि कल्की लै अवतारा, करे खेल अपर अपारा, निहकलंक इक वणजारा, लख चुरासी हट्ट वखाइंदा। लख चुरासी खोल्हे हट्ट, हट्ट हटवाणा इक्को आईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कल्गी दो जहान करे रुशनाईआ। पुरख अकाल सूरा सरबँग, सतिगुर हुक्म जणाईआ। तख्त निवासी बैठ साचे पलँघ, सचखण्ड दए वड्याईआ। आदि जुगादी इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। जुग चौकड़ी गई लँघ, वेला वक्त विहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मंगदे रहे मंग, मंगी मंग झोली पाईआ। दूर दुराडे खलोते अग्गे आओ लँघ, प्रभ साचा रिहा बुलाईआ। वेखो प्रकाश बिन सूरज चन्द, हरि सतिगुर आप कराईआ। जिस दा लेखा कोट ब्रह्मण्ड, कोटन कोटि रूप वटाईआ। जिस दा गाउँदे रहे छन्द, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सो साहिब अन्त मुका के आया आपणा पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा रिहा खुल्हाईआ। सच दवारा हरि जू

खोल्, निरगुण हुक्म जणाया। आओ वसो मेरे कोल, भेव अभेदा आप जणाया। आपणा आपणा दुखड़ा लओ फोल, हरि दुखियां दर्द वंडाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदा रिहा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाया। सचखण्ड निवासी प्रगट हो के आया उपर धौल, धरत धवल भेव ना राया। दर चुकाए पर्दा ओहल, मुख घूँगट आप उठाया। सच दवारे जाणा मौल, मौला आपणा नूर वखाया। जिस दी गोबिन्द छकी पौहल, सो परम पुरख वेस वटाया। जिस दा भेव ना पाया किसे पांधे रौल, चार वेद नैण शरमाया। सो सतिगुर वसया भगतां कोल, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। जुग चौकड़ी मारदा रिहा रोल, अन्तिम साख्यात वेस वटाया। फड़ फड़ उंगली आपणे नाल रिहा तोर, आपणा भेव ना किसे जणाया। जिस नूं उंगलां नाल दस्सदे रहे उत्ते वसे होर, सो हरि जू नेड़ा आपणा आप वखाया। जिस दे अग्गे बन्दना करदे रहे दोए जोड़, सो गोबिन्द नाल जोड़ी रिहा बणाया। चढ़ के आया साचे घोड़, घोड़ा नज़र ना कोए वखाया। जिस दा उच्चा लम्मा पौड़, चढ़ पौड़े दरस किसे ना पाया। जिस दा मार्ग दिसे सौड़, औझड़ राह पन्ध ना कोए मुकाया। सो वेखण आया कलिजुग अन्तिम घोर, नूर नुराना नूर चमकाया। तिस अग्गे किसे दा चलणा ना कोई ज़ोर, ज़ोर आपणा आप वखाया। जिस दा मंत्र इक्को नाम फोर, फुरना सब दा आपणे विच लए छुपाया। जिस दे उत्ते सब ने रखी डोर, सो डोरी आपणे नाम बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे लए बुलाया। आओ दर निक्के बाले, हरि बालक आप समझाईआ। कलिजुग अन्त क्यों होए बेहाले, बिहबल हो हो नीर वहाईआ। पीर पैगम्बरां सूसे काले, काली रैण अन्धेरी छाईआ। भगतां कढ्ढे अन्त दीवाले, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। प्रभ किसे ना मिल्या मन्दिर मठ्ठ शिवदुआले, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। आत्म अन्तर करे ना कोई प्रितपाले, प्रितपालक बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा दया कमाईआ। गुर पीर अवतार आओ अग्गे, अग्गा नज़र किसे ना आइंदा। सब दे रंग होए बग्गे, बग्गा शेर इक डराइंदा। हुक्मे अन्दर सारे बद्धे, हुक्मी हुक्म आप मनाइंदा। वारो वारी भार सब ने लद्दे, थिर नज़र कोए ना आइंदा। जिस ने लोकमात घल्ले अन्तिम ओहो सद्दे, सद्दा इक्को इक सुणाइंदा। चौदां तबकां विच्चों फड़ फड़ कढ्ढे, अन्दर वड़ मुख ना कोए छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। अग्गे आओ वेखो प्रीत, हरि सीतगुर आप जणाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे लाशरीक, तुहाढ्ढी शिरकत दए मिटाईआ। जिस दी दस्सदे आए तरीक, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। सो वेला आया नज़दीक, नेड़े हो हो दया कमाईआ। आओ दर्शन पाओ ठीक, ठीकरा सब दा भन्न वखाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात कोई रहिण ना देवे झीत, आपणी झलक इक वखाईआ।

सब दा अन्तर करे ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अवाज इक लगाईआ। आओ नेड़े वेखो दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। सरन सरनाई एका पड़, सरनगति इक रखाइंदा। साचे पौड़े जाणा चढ़, पौड़ा इक्को इक वड्याइंदा। चौदां सदीआं जो अद्ध विच बैठे अड़, अड़िका आपणा नाम हटाइंदा। रल मिल सारे इक्को कलमा लओ पढ़, कलमा कलाम आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़ुरमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़ुरमाणा सुण लओ गीत, हरि साचा सच सुणाईआ। सतिजुग बदलण आया रीत, कलिजुग लेखा दए मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नाता तोड़ो मसीत, मसला हक़ करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पुरख अकाल मन्नो ठीक, इट्टां गारा ना कोए वड्याईआ। जिस दा गोबिन्द अमृत पीता ला के झीक, सो प्याला सब नूं रिहा वखाईआ। जाम प्याए बीस बीस, बीस बीस आप हो आईआ। सब दे ख़ाली होए ख़ीस, ख़ालक आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक पुचाईआ। सच सुनेहड़ा सुणया दर दरवाजे, तेरा अन्त कोई ना पाइंदा। परवरदिगार ग़रीब निवाजे, ग़ुरबत कोए ना विच रखाइंदा। अन्तिम प्रगट होइउँ देस माझे, गोबिन्द घर इक वसाइंदा। दो जहानां रचया काजे, रच रच काज ख़ुशी मनाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग साडे साजण साजे, पंज तत्त काया चोला तन हंढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाइंदा। पीर पैगम्बर करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा जलवा परवरदिगार, नूर नूर नूर चमकाईआ। चरण कँवल दे आधार, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार जोड़ हथ्थ, दोए बन्धन सीस झुकाया। सच दुआर तेरा पुरख समरथ, समरथ इक्को नज़री आया। जुग जुग आपणा मार्ग दस्स, लोकमात राह चलाया। तेरा नाउँ गा गा आए जस्स, जस वेद पुराण सिफ्त सालाहया। तेरा आदि अन्त किसे ना आया हथ्थ, बेअन्त तेरी वडयाया। अन्तिम सारे कर के गए बस, निउँ निउँ चरणां सीस टिकाया। तेरे बरदे तेरे होए वस, जिउँ भावें लएं चलाया। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चमकाया। साडी पूरी करदे आस, निरासा कोए रहिण ना पाया। असीं तेरे होए दास, बण सेवक सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। दर आओ पीर अवतार गुर, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सच प्रीती जाए जुड़, जोड़नहारा फेरा पाईआ। एथे ओथे निभे तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। कलिजुग अन्त भगवन्त दी पई लोड़, भगवन आपणा फेरा पाईआ। नेत्र खोल्हो वेखो नाल ग़ौर, गहर गवरा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत

५० १३

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सच सुनेहड़ा सुणया कन्न, बिन कन्नां आप जणाइंदा। चार जुग दे विछड़े गए मन्न, मन मनसा पूर कराइंदा। दर दुआर खलोते कहिण धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याई भेव कोए ना आइंदा। आदि जुगादी जननी जन, मात पिता हो जाइंदा। एथे ओथे बेड़ा बन्नू, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाइंदा। दर तेरे सारे गए आ, पिच्छे कोए रहिण ना पाईआ। दोए जोड़ पए सरना, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। आदि जुगादी इक मलाह, मलाहगीर इक समझाईआ। पुरख अबिनाशी साची दे सलाह, सिफ्त सालाह ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी नालों तोड़ के आए नकाह, तेरे नाल होए कुड़माईआ। मुहम्मद कहे चौदां तबक दित्ते तजा, ज़िमीं असमानां डेरा ढाहीआ। ईसा कहे मेरे खुदा, खुदी तेरे विच रखाईआ। मूसा कहे होया फ़िदा, फ़ितरत रूप ना कोए जणाईआ। तेई अवतार बैठे सीस झुका, दोए दोए प्रणाम इक वखाईआ। भगत भगवन्त ढोला रहे गा, गा गा शुकर मनाईआ। नानक गोबिन्द रहे ध्या, ध्यान ध्यान नाल रलाईआ। वेखो वेला अन्तिम गया आ, करे खेल बेपरवाहीआ। निहकलंका नाउँ धरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। डंका इक्को शब्द वजा, दो जहानां दए सुणाईआ। दुआर बंका इक सुहा, गोबिन्द गढ़ दए वसाईआ। पुरख अकाल फेरा पा, होका दे दे गुरमुख रिहा उठाईआ। साचा हट्ट दए चला, हरिजन साचे वस्त वखाईआ। काग़द कलम ना कोए शाह, बिन शाही लेखा रिहा लिखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लख चुरासी दे सारे बणो गवाह, भुलया कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी सफ़ा सब दी दए उठा, उलटी रीती रीत चलाईआ। चार जुग दा डेरा देवे ढाह, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। मक्के काअबे हज्ज ना सके कोई करा, करबला सब नूं दए वखाईआ। तेई अवतारां लेखा दए मुका, दर साचे मुक्कर कोए ना जाईआ। भगत भगवन्त लहिणा देणा झोली देवे पा, झोली आपणी हथ्थीं भराईआ। नूरी जलवा नूर धरे खुदा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाल प्रगट होवे बेपरवाह, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जिस दे अग्गे गोबिन्द सीस गया झुका, निरगुण साचा नाम मंग मंगाईआ। सो पुरख निरँजण सति सतिवादी आदि जुगादी आया वेस वटा, वेस अवल्ला आप कराईआ। सीस जगदीश ताज रिहा सुहा, तख्त ताजां ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, दर बैठा सच्चा माहीआ। दर बैठा सच्चा माही, भेव अभेद खुल्लाइंदा। चार जुग दे आओ राही, हरि रहबर वेख वखाइंदा। इक्को वेर इक सलाही, इक्को राह जणाइंदा। इक्को पिता इक्को माई, एका बालक रूप वखाइंदा। इक्को दाया इक्को दाई, इक्को गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर

आपणे आप बुलाइंदा। आओ दर वेखो नेड़े, हरि जू दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मुक्कणे झेड़े, झेड़े सब दे आप चुकाईआ। किसे ना वसणा झूठे खेड़े, खेड़ा झूठा रहिण ना पाईआ। ग़रीब निमाणे गुरसिख गुर दर बैठे कर के वड्डे जेरे, आप आपणा गए गंवाईआ। जिस नूं नानक निरगुण कह के गया चौथी लांव लए फेरे, फेरा आपणा आपे पाईआ। जन भगतां करे हक़ नबेड़े, हक़ो हक़ वेख वखाईआ। जिन्हां पाए दवाले घेरे, तिन्हां मिले दरगाह माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां दर रिहा बुलाईआ। गुर अवतार खोल्ण अक्ख, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। वेखो साहिब होया प्रतख, पारखू बणया सच्चा माहीआ। इस दे चरणी जाईए ढठ्ठ, बिन ढठ्ठयां सार कोए ना पाईआ। दरोही खुदाए दी सदी चौधवीं कीता कठ्ठ, इकठ्ठा इक्को हुक्म सुणाईआ। आपणी गेड़नहारा लठ्ठ, दो जहानां रिहा भवाईआ। आपणा आपणा हाल चल्लीए दस्स, हाल मुरीदां सुण सुण खुशी मनाईआ। ना कोई जाणे इस दा जस, जस गा गा अन्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। वेखो कठ्ठे होए भाई भाई, गुर अवतार वेख वखाइंदा। जिस ने कटणी सब दी फाही, सो सतिगुर फेरा पाइंदा। जिस ने कठ्ठे कीते झीवर छींबे नाई, सो गोबिन्द मेल मिलाइंदा। जिस दी नानक निरगुण करी कुड़माई, बण नार कन्त सेज हंढाइंदा। जिस नूं राम कृष्न कहिण सच्चा गोसाईं, सो गहर गम्भीर फेरा पाइंदा। जिस नूं भगत कहिण फड़ फड़ पार कराए बाहीं, भव सागर ना कोए रुढ़ाइंदा। आओ दर्शन करीए चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। जिस दे पिच्छे लोकमात आए बण के राही, सो रहबर वेख वखाइंदा। जिस दे पिच्छे गोबिन्द बूटा पुटया काही, सो सब दी जड़्ह उखड़ाइंदा। ग़रीब निमाणयां दुरमति मैल मुख धोवे छाही, बण सेवक सेव कमाइंदा। लख चुरासी कटे फाही, फंदन आपणे नाम पाइंदा। जिस ने रविदास चम्यारे कंगण फड़ाया गंगा धार कढ्ढ के बाहीं, सो आपणा होका नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार दर सुहाइंदा। गुर अवतार आ दवारे, दर साचे खुशी मनाईआ। तेरा नूर तेरा चमत्कारे, तेरी जोत जोत सवाईआ। तेरा दर तेरा दरबारे, सचखण्ड तेरी वड्याईआ। तेरे चरण बण भिखारे, इक्को भिख्या मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दे वर सच्चे भगवाना, वारी वारी सीस झुकाया। तूं साहिब सच्चा सुल्ताना, तेरा अन्त किसे ना पाया। तूं मर्द मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी रिहा जणाया। कलिजुग अन्तिम पहरें बाणा, जोती जामा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा रिहा सुणाया। सच संदेसा हरि करतार, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। दर दुआर सुणो गुरू अवतार, पीर पैगम्बर

आप समझाईआ। एका नांया करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर पुचाईआ। बीस बीसा होए उज्यार, भेव अभेदा आप जणाईआ। लेखा लिखे अगम्म अपार, लिख लिख हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल आदि अन्त, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। एकँकारा महिमा अगणत, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। आदि निरँजण नूर अनन्त, अन्त कोए ना पाइंदा। अबिनाशी करता एका नाम जपाए साचा मंत, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। श्री भगवान साचा कन्त, कन्त कन्तूहल सोभा पाइंदा। पारब्रह्म लेखा जाण जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल धर के आया , हरि करता पुरख अकाल। सम्बल नगर वड़ के आया, गुर गोबिन्द रख्या नाल। ग़रीब निमाणयां लड़ फड़ के आया, गुरमुख वेखे साचे लाल। जर जरवाणयां नाल लड़ के आया, मारे नाम खण्डा तेज़ कटार। सोहँ अक्खर इक्को पढ़ के आया, आत्म परमात्म परमात्म आत्म निभे नाल। आपणी मरनी आपे मर के आया, भगत भगवन्त लए ज्वाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप कमाल। करे खेल आप करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोती नूर नूर चमत्कारा, ज़ाहरा नूर करे रुशनाईआ । हक़ हकीकत पावे सारा, लाशरीक इक ख़ुदाईआ। चौदां सदीआं पार किनारा, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। चौदां लोक इक्को नाअरा, इक्को राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण वारो वार, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। लोकमात लख चुरासी जिस लाई गुलज़ार, पत डाल्ही फोल फुलाइंदा। माली बणया परवरदिगार, ख़ाली हथ्थ फेरा पाइंदा। गुलशन वेखे हरि निरँकार, बुलबुल आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। गुलशन वेखे हरि अहिबाब, आप आपणा रूप वटाईआ। सच सरंग वजाए रबाब, तार सतार ना कोए हलाईआ। शाह पातशाह लेखा जाणे शाह नवाब, रईयत आपणा भेव चुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा लैंदे गए ख्वाब, सो ख़ाह मख़ाह आपणा हुक्म चलाईआ। जिस नूं मन्नदे गए हक़ जनाब, सो जलवा रिहा वखाईआ। जिस दी मूसा झल्ल ना सक्या ताब, सो आपणा नूर गुरमुखां अग्गे रिहा प्रगटाईआ। जिस नूं ईसा कहे मेरा बाप, सो खुदावंद फेरा पाईआ। जिस दा निरगुण नानक जप्या जाप, जपत जपत सुख पाईआ। जिस नूं गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल थापना रिहा थाप, थपकी आपणी गोद इक वखाईआ। सो कलिजुग अन्तिम वखावण आया आपणा

प्रताप, परम पुरख वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे कांप, थर हर कंपे बाला जीउ पिछला लेखा पूर कराईआ। बिन बूझ नानक ना जप्या जाप, बिन सूझ सूझ किसे ना आईआ। सम्मत वीह सौ वीह बिक्रमी सब नूं दस्से सच्चा जाप, जिस नूं पढ़ियां मुक्ती चरणां हेठ सीस झुकाईआ। नेड़ ना आयण तीनों ताप, त्रैगुण भज्जे वाहो दाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार तोड़े साक, आसा तृष्ना इक घर वसे ना धी जवाईआ। जिस नूं मिल जाए शाह पातशाह शहिनशाह माई बाप, तिस भुक्ख ना लागे राईआ। जिस नारी मिल जाए हरि जू कमलापात, दूजी सेज ना कोए हंढाईआ। जिस आवण जावण चुक्क जाए वाट, तीर्थ तट ना नुहावण जाईआ। जिस घर आ के मिले पुरख समरथ, सो ढूंडण किते ना जाईआ। ग़रीब निमाणा हो के जन भगतां गाए जस, आपणे जस ना रखे वड्याईआ। एथे माण दे ना करे बस, सचखण्ड आपणे चरणां हेठ रखाईआ। इक दवारा जाणा वस, जिस दवारे सतिगुर सच्चा पुरख अकाल आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जोती जामा रूप वटाईआ। जोती जामा भगतां ख़ातर, निरगुण निरगुण आप वटाया। सचखण्ड दवारे बणया रिहा चातर, जुग जुग अछल छल वखाया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाम सुनेहड़ा देंदा रिहा पात्र, लिख लिख लेखा जगत जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। आपणा खेल करे बेज़ोर, जर जरवाणा भेव चुकाईआ। आपणा बेड़ा आपे रोड़्, कलिजुग नईया दए वहाईआ। आपणा चोला आपे छोड़, पंज तत्त माटी ख़ाक रलाईआ। आपणा जोड़ा आपे जोड़, सरगुण निरगुण करी कुड़माईआ। आपणा होड़ा आपे लोड़, सस्से उपर रिहा टिकाईआ। बिन नानक वेख्या किसे ना कर के ग़ौर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण विच समाईआ। जिस दा मंत्र चले फोर, फ़ुरना आपणा नाम जणाईआ। जिस दा खेल अन्ध घोर, घोरी नज़र किसे ना आईआ। जिस दे हथ्थ सब दी डोर, जिउँ भावे रिहा चलाईआ। जिस दी गुरू अवतारां रखी लोड़, सो लोहड़ा पौण कलिजुग अन्तिम फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल इक कराईआ। निरगुण खेल करने आया, हरि दाता बेपरवाह। आपे मेटणहारा झूठी छाया, शहिनशाह आपणा हुक्म चला। आपे देवणहारा आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बिस्मिल रूप ख़ुदा। बिस्मिल रूप होया ख़ुद आप, आपणा भेव जणाईआ। लेखा जाण बहु बिध भांत, भावी भाणा हरि वरताईआ। पीर पैगम्बर सुणो बात, हरि बातन रिहा जणाईआ। सारे पढ़ो इक जमात, तुलबा रूप इक वखाईआ। मकतब खोल्ह्े हक़ जनाब, हक़ हकीकत दए दृढ़ाईआ। अल्फ़ ये लोकमात दित्ता ख़ताब, प्रभ चरण दवारे अल्फ़ कम्म किसे ना आईआ। इक अल्फ़ वजाई तन

रबाब, सारंग सारंगा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक समझाईआ । साची सिख्या सुण लओ मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। आदि जुगादी साची रीत, रीतीवान आप वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा रल मिल गाओ गीत, गीत गोबिन्द इक वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ साची प्रीत, पुरख अकाल तोड़ निभाइंदा। गोबिन्द दस्स के गया ठीक, कलिजुग जीव भेत ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। निरगुण आया दर बनवाली, बन खण्ड ना फेरा पाईआ। आदि शक्ति ना जोत ज्वाली, चतुर्भुज ना खेल कराईआ। नूर नुराना जोत नुरानी, ज़हूर इक शनवाईआ । आदि जुगादि मस्त मस्तानी, मस्ती इक्को इक खुदाईआ। अलक फ़लक ना कोए रुशनानी, रोशन नूर ना कोए वड्याईआ। पीर पैगम्बर ना कोए ज़िंदगानी, रूह बुत्त ना कोए समाईआ। अन्तिम होए सारे फ़ानी, सब दा लेखा आप चुकाईआ। भेव खुला अञ्जील कुरानी, इज़राईल सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तिम आवे इक तुग्यानी, पीर पैगम्बर गए समझाईआ। नदी नूह चढ़े तुफ़ानी, तोहफ़ा देवे ख़लक खुदाईआ। माण रहे ना कोए सुलेमानी, सिलसला सब दा करे सफ़ाईआ। इक सुणाए आपणी आप कहाणी, पिछली कहाणी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे जिहा होवे आप लासानी, लाअ आपणा लए बणाईआ।
५५ १३ आपणा लाअ करे तामील, तामील आपणी आप कराईआ। दूसर दए ना कोए दलील, दलील दलील ना कोए मिलाईआ। दरगाह साची ना कोए वकील, वुकला नज़र कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम चौदां तबकां तोड़े आप फ़सील, नेज़ा नाम इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह तैनूं दस्सीए सच, सच सच आख सुणाया। तेरे हुक्मे अन्दर आए नच्च, लोकमात वेस वटाया। अन्तिम तेरे प्यार अन्दर गए रच, आप आपणा भेव छुपाया। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पहली चेत तेरे अग्गे डाहीए हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा वर, वर दाता इक्को नज़री आया। परदे अन्दर ढकया पर्दा, पर्दा आपणा नाम पाईआ। गुरमुख चिन्ता विच कदे ना सड़दा, जगत अग्न ना कोए तपाईआ। दर दवारे जो होए बरदा, बंदीख़ाना दए छुडाईआ। कर निमस्कार सोहँ अक्खर पढ़दा, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान मिले सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा करदा, कर किरपा मेल मिलाईआ। नाता तुटया झूठे घर दा, घर साचे मिली वड्याईआ। मेरा राम ना जींदा ना मरदा, मरन जम्मण विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख पल्लू आपे फड़दा, अन्त आपणे लड़ बंधाईआ।

५६
१३

❈ ७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पंज गराईं बंता सिँघ दे गृह ज़िला गुरदास पुर ❈

सो पुरख निरँजण तेरी ओट, गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण रहे ध्यान लगाईआ। सचखण्ड दवारा साचा कोट, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर डगमगाईआ। जुग चौकड़ी तेरे चरण ना सके पहुंच, दो जहान ढोला गाईआ। आदि अन्त तुध बिन लख चुरासी जाए औंत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फिर फिर वेख्या लखण करौच, पुष्कर जम्बु फेरा पाईआ। सलमल सान दिसे खोट, साचा हट्ट ना कोए जणाईआ। कुशा नेत्र रोवे रोत, नैण नैणां नीर वहाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कर कर गए खोज, खोजत खोजत भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत्त जगत रचना चुक्कया बोझ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म ईश जीव जगदीश ब्रह्म पारब्रह्म रिहा लोच, लोचां पूर ना कोए वखाईआ। साहिब सुहेला इक इकेला निरगुण दाता पुरख बिधाता कदे ना आए विच सोच, सोच सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा ना थक्के होंट, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या कोई ना सके दर तेरे पहुंच, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जगत बसन्तर सारे होए फ़ौत, फ़तवा सादर इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। पुरख अकाल तेरी दरगाह, परवरदिगार सच खुदाया। मुकामे हक़ हो रुशना, नूरी जलवा नूर प्रगटाया। तख्त निवासी बण सच्चा शहिनशाह, शाहो भूप नाम वडयाया। हुक्मी हुक्म इक जणा, धुर फ़ुरमाणा आप सुणाया। सचखण्ड दवारा इक वसा, थिर घर आपणा पर्दा लाहया। सुत दुलारा इक जणा, जननी जन नाउँ धराया। दाई दाया बण सेव कमा, सेवा आपणे हथ्थ रखाया। भेव अभेदा आप खुल्हा, अलख अगोचर अगम्म अथाह, आपणा पर्दा आप उठाया। निरगुण निरगुण मेल मिला, नारी कन्त सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची धाम सुहाया। दरगाह साची सोभनीक, सोभावन्त आप सुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण इक तौफ़ीक, तौफ़ीक तेरी खुदाईआ। आदि जुगादि लाशरीक, शरकत विच कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी तेरी रखदे गए उडीक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी ढोला गाईआ। अन्तिम वेला आया नज़दीक, कोटन कोटि काल विहाईआ। गोबिन्द दस्स के गया ठीक, ठीकर सब दा आप भंनाईआ। निरगुण धारा पुरख अकाला दीन दयाला दो जहानां दस्से इक प्रीत, साची प्रीत इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस गया झुक, दर करन इक अरज़ोईआ।

५७
१३

सचखण्ड दुआर बैठा लुक, लुकवीं खेल कराईआ। कलिजुग वेला अन्तिम उठ, उठ उठ आपणा रंग वखाईआ। ग़रीब निमाणयां उपर तुठ, गुरबत सब दी दे मिटाईआ। जग करनी कीती सब तों पुच्छ, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नौ दुआर ख़ाली दिसण काया बुत्त, हुजरे हज्ज ना कोए कराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर उच्चे टिल्ले पर्बत बुक, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म जणाईआ। साडे हथ्थ ना दिसे कुछ, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरे दर झुकया सीस, साहिब सच्चे सुल्ताना। जुग चौकड़ी पढ़ी तेरी हदीस, कलमा नबी रसूल वखाना। लेखा गाया तीस बतीस, शरअ शरीअत जोड़ जुड़ाना। एका मंगी मंग बीस इकीस, प्रगट हो नूर नुराना। लेखा जाण राग छतीस, बहत्तर खोल्ह इक दुकाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे साहिब मर्द मर्दाना। मर्द मर्दान सचखण्ड निवासी, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान ख़लक ख़ुदाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरी करे आसी, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदा आया बंद ख़लासी, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। देवणहारा धर्म राए दे हथ्थ फाँसी, फ़तवा इक्को इक लगाईआ। कोई रहिण ना देवे पंडत कांसी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द आप उठाइंदा। त्रैगुण माया तोड़े माण, पंज तत्त ममता मोह चुकाइंदा। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां देवे धुर फ़ुरमाण, सच संदेसा इक सुणाइंदा। जोती नूर नूर महान, नूर नुराना वेस वटाइंदा। पीर पैगम्बरां देवे दान, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक जणाइंदा। सच संदेसा एकँकार, ओंकार आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण हो तैयार, हरि पुरख निरँजण लए उठाईआ। आदि निरँजण खोल्ह कवाड़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठांडा दरबार, दो जहानां इक वखाईआ। श्री भगवान सति निशाना देवे चाढ़, निरगुण सरगुण आप झुलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे ख़बरदार, लख चुरासी लए जगाईआ। आत्म परमात्म दए अधार, ईश जीव नैण खुल्हाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करे ख़बरदार, सच संदेसा इक जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मिलो यार, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा साचा गीत, सो पुरख निरँजण

आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म मम इक्को प्रीत, तोहे रूप ना कोए वखाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक भेव चुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आया जीत, जित आपणे हथ्थ वखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जिस दी रखदे गए उडीक, सो साहिब फेरा पाइंदा। लख चुरासी ख़ाली करे ख़ीस, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर आप फिराइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को बणे सच रफ़ीक, रफ़ाकत आपणी आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां श्री भगवान आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार नेत्र खोल्हो, निरगुण आप खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे ढोला इक्को बोलो, पिछला बोला दए चुकाईआ। मंत्र अन्तर निरगुण निरगुण धार मौलो, सरगुण तन ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्हो अक्ख, हरि आख़र आप जणाइंदा। कलि कल्की होया प्रतख, निहकलंक रूप वटाइंदा। अमाम मैहन्दी हो समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी खेड़ा करे भठ्ठ, अग्नी जोती लम्बू लाइंदा। किसे दा चले ना कोए वस, हुक्मे अन्दर सर्ब भवाइंदा। जिन्ना चिर गुर गोबिन्द ना कहे बस, बसता सब दा आप बंधाइंदा। सचखण्ड निवासी दूर दुराडा रिहा हस्स, सोहँ हँसा आपणा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते जग, जग जीवण दाता आप जणाईआ। जीव जंत होए कग, काग वांग रहे कुरलाईआ। नव नौ लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिन हरिनामे ख़ाली दिसण हड्ड, पंज तत्त करे लड़ाईआ। काया अन्धेरी डूँग्घी खड्ड, निर्मल जोत ना कोए रुशनाईआ। गुर का शब्द गए छड्ड, मन वासना होई हल्काईआ। किसे ना मिले अमरापद, साध सन्त रसना जिह्वा गा गा हरि हरि नाम ना कोए रस खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच कहाणी आप सुणाईआ। सच कहाणी धुर दी बात, ज़ाहर बातन आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पढ़ो इक जमात, पट्टी आपणी आप वखाइंदा। अल्फ़ ये नाता कायनात, दरगाह रूप ना कोए जणाइंदा। परवरदिगार साख्यात, निरगुण निरगुण इक अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर ना कोई ज़ात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाइंदा। एथे ओथे कदे ना होए वफ़ात, मढ़ी गोर ना कोए दबाइंदा। जुगा जुगन्तर गुर अवतारां वखाए आपणा घाट, साचे पत्तण डेरा लाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम मुक्की वाट, बण पांधी फेरा पाइंदा। लेखा जाणे चौदां तबक चौदां लोक चौदां विद्या हाट, दो जहानां पर्दा लाहइंदा। देवणहारा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सदा निजात, निज घर आपणे डेरा लाइंदा। किसे हथ्थ ना आए विच्चों

५८ १३

लुग़ात, लुक लुक आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक समझाइंदा। सच संदेसा धुर दी गाथा, हरि गोबिन्द आप जणाईआ। पुरख अकाल पिता माता, पूत सपूता दए वड्याईआ। निरगुण बद्धा निरगुण नाता, सरगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। मन मति बुध ना कोई नार कमज़ाता, कुलखणी रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साका, पिता पूत मात पुत्त नारी कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। खेलणहारा जगत तमाशा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरन करे आसा, पूरब लेखा आप मुकाईआ। मण्डल मण्डप दो जहान पृथ्मी आकाश पावे साची रासा, बण नटुआ नाटक आपणा इक जणाईआ। जुग जुग किसे ना दस्सया आपणा सच खुलासा, आपा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर जोत धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां दे दिलासा, दीद ईद इक वखाइंदा। रहीम करीम सच खुदा बेऐब परवरदिगार ना कदे विनासा, अबिनाशी आपणा नाउँ धराइंदा। दो जहानां आर पार मँझधार आपे जाणे आपणा वासा, नेत्र नैण लोचण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म हकीकत हक़, नर हरि नरायण आप जणाईआ। जिस दा चार जुग वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पाउदी रही शक़, सो शहिनशाह आपणा रूप वटाईआ। निरगुण जोत निराकार आदि निरँजण जो वसे घट घट, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बीज बीजे काया वत, पत डाल्ही फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। जो लख चुरासी देवणहारा बुध मन मति, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चलावणहारा जुग जुग रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जिस दा रसना जिह्वा गा गा गई जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा भेव खुल्हाईआ। खोल्हे भेव आप निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। सति सतिवादी लै अवतारा, अवण गवण भेव चुकाइंदा। दो जहानां करे ख़बरदारा, शब्द दुलारा इक उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, हुजरा सब दा आपे ढाइंदा। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ारा, पंज तत्त धीर ना कोए धराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए दोए जोड़ करन निमस्कारा, निउँ निउँ सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। तेरी खेल तेरी कुदरत परवरदिगारा, बेपरवाह तेरा भेव कोए ना आइंदा। सरगुण निरगुण तेरी धारा, गुर अवतार खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा पसारा, पत डाल्ही आप महकाइंदा। ईश जीव तेरा हुलारा, लहर लहर नाल मिलाइंदा। आत्म परमात्म तेरा अखाड़ा, पंज तत्त काया नाच नचाइंदा। निरगुण जोत तेरा उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा।

५६
१३

घड़नहार सदा ठठयारा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जगत दृष्टी रंग चम्यारा, इष्टी इष्ट ना किसे जणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, कालख टिक्का आपे लाहइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह दवारा, दर दरवाज़ा इक वखाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे नगारा, ताल तलवाड़ा ना कोए जणाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ ना कोई गुरूदवारा, हरि मन्दिर इक वड्याइंदा। तेल बाती दीआ ना कोए उज्यारा, कमलापाती जोती नूर डगमाइंदा। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, धुर फ़ुरमाणा हुक्म जणाइंदा। लेखा चुके चार यारा, यारी यार ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते मात, नव नौ करे जणाईआ। मेटणहार अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर एका दरस दिखाए साख्यात, शाख़ सब दी दए कटाईआ। नाम प्याला प्याए आब हयात, अमृत रस इक चखाईआ। जलवा नूर दए आफ्ताब, महिताब करे रुशनाईआ। लेखा लिखे हक़ जनाब, दस्तगीर वड वड्याईआ। अन्तिम इक दवारे करना पए आदाब, सलाम अलैकम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, महिराब इक्को इक सालाहीआ। सच महिराब दस्से महिबूब, महिफ़ल आपणी इक लगाइंदा। जिस दा किसे ना दित्ता सबूत, साख्यात ना कोए वखाइंदा। ना कोई काया ना कोई काअबा ना कोई कलबूत, रूह बुत्त ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर दर दरवेश, हरि दर्दी दर्द जणाईआ। परवरदिगार निरगुण नूर पुरख अकाल रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोए मूंड मुंडाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दवारे नानक निरगुण करे आदेस, सरगुण नानक ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक वड्याईआ। सच दवारा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। साहिब सतिगुर वसे इक्को कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढ्ढाइंदा। आदि जुगादी एका मंत, मंत्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। सदा सुहेला साचा पंडत, जगत विद्या ना कोए रखाइंदा। दो जहान रखे अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे आप, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। जिस नूं ईसा कहे बाप, सो पिदर फेरा पाईआ। जिस नूं मुहम्मद करे आदाब, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं नानक निरगुण कहे वड प्रताप, वड प्रतापी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सच्चा माहीआ। सति सतिवादी सच्चा माही, मेहरवान हरि

अख्वाइंदा। कलिजुग अन्तिम बणया राही, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। कलिजुग मेटे झूठी शाही, शहिनशाह कोए नज़र ना आइंदा। गोबिन्द बूटा पुटया काही, कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार फड़ फड़ बाहों मेले भाई भाई, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। सच संदेसा देवे थाउँ थाईं, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या सच दलील, दहि दिशा आप जणाईआ। नील वस्त्र पहर नील, नीली धार पार कराईआ। लेखा जाणे गुणी गहीर, गहर गवर वडी वड्याईआ। सब दी बदलण आया तकसीर, तकदीर तकसीर नाल रलाईआ। कटण आया शरअ ज़ंजीर, शरीअत कम्म किसे ना आईआ। लेखा जाण हकीर फ़कीर, शहिनशाह पर्दा दए उठाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे लकीर, सच सुच्च दए वड्याईआ। मुरीद मुर्शद कटे भीड़, भय भउ ना कोए वखाईआ। गुरमुखां देवे अमृत आत्म सीर, तृष्ना अग्नी अग्ग बुझाईआ। जन भगतां चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, जिस दवारे जुलाहा कबीर ढोला गाईआ। लेखा जाणे पीरन पीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत आपणी आप कमाईआ। रहमत कमाए आप रहमान, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। चौदां तबकां वेख ईमान, मुहम्मद नेत्र नैण खुल्हाइंदा। पीर फ़कीर कर गुलाम, बरदे इक्को दर बहाइंदा। नज़री आए सच अमाम, नज़र नज़र नाल मिलाइंदा। देवणहारा जुग जुग पैग़ाम, पात्र आपणा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर भेव कोए ना आइंदा। दूसर भेव ना जाणे कोआ, कूक कूक गुर अवतार गए जस गाईआ। आपणे जिहा आपे होआ, निरगुण निरगुण विच समाईआ। आपणा अमृत आपे चोआ, रस आपणा आप चखाईआ। आपणी करे आपे सच लोआ, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। आपणा देवणहारा जुग जुग ढोआ, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणा नाम झोली पाईआ। ना जन्मे ना कदे मोआ, जन्म मरन विच ना आईआ। सचखण्ड निवासी नवां नरोआ, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। आलस निंद्रा विच कदे ना सोया, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची गाथा रिहा समझाईआ। साची गाथा देवे दस्स, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो बेबस, बेऐब फेरा पाइंदा। एकँकारा आया नस्स, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बण बण दासी दास, सेवक साची सेव कमाइंदा। श्री भगवान पूरी करे आस, आसा पूरन आप हो जाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे पास, सदा सुहेला संग रखाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। भेव खुलाए पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव

नौ चार वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। ख़ालक ख़लक कीता मजबूर, मजबूरी आपणी दए सुणाईआ। चौदां लोक करन कसूर, कसर नज़र किते ना आईआ। नेड़े वसणहारा दिसे दूर, नेरन नेर दरस कोए ना पाईआ। साध सन्त कलिजुग अन्त सूफ़ी होए मफ़रूर, सुफ़ने विच दरस कोए ना पाईआ। कलमा पढ़ पढ़ पाइण फ़तूर, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। जलवा नज़र ना आए कोए ज़हूर, ज़ाहर रंग ना कोए वखाईआ। कलिजुग नाता जुड़या कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया सर्ब हंढ्ढाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी बदलण आया सर्ब दस्तूर, दो सत वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन मेले आप ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ। नव नौ करे चूरो चूर, चूंडी चोटी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कातिल मकतूल लाए फ़तवा, फ़ातिहा सब दा आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे नूरी जलवा, जलाल आपणा इक वखाइंदा। चौदां सदीआं चौदां लोक चौदां तबक सब दा लेखा मंगे खादा हलवा, छुरी कसाई जगत हथ्थ ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे ख़ालक, ख़लकत दए जणाईआ। पीर पैगम्बर कहिण आया मालक, मलकुलमौत नाल लिआईआ। अग्गे कोई ना दिसे सालस, सगला संग ना कोए निभाईआ। नानक गोबिन्द कहे पुरख अकाल इक्को ख़ालस, दूसर ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी सारयां नाल करदा रिहा नालश, भेव अभेदा ना किसे जणाईआ। कलिजुग वेले अन्तिम किसे दी मन्ने ना कोई सफ़ारस, सब दी सफ़ा रिहा उठाईआ। पीर पैगम्बर तोबा तोबा करके बैठे ढाह ढारस, ढै ढै ढेरी ख़ाक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही बेपरवाह इक खुदा, खुदी विच कदे ना आइंदा। आदि जुगादि रहे जुदा, जुज़ आपणा आप वंडाइंदा। पीर पैगम्बरां राह दस्से सिध्धा, सिदक सबूरी नाल मिलाइंदा। मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीद मिल मिल पाए गिधा, निरगुण सरगुण ताल आप वजाइंदा। कोई ना जाणे साहिब किड्डा, इशारयां नाल सर्ब समझाइंदा। चरण दवारा बिन नानक किसे ना दित्ता, अद्धविचकार सर्ब रखाइंदा। जुग चौकड़ी वंडदा आया हिस्सा, झोली सब दी आप भराइंदा। खाणी बाणी वेद पुराण शास्त्र सिमरत कथा कहाणी सुणाए किस्सा, आपणा भेव ना किसे खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे साचे वड़, साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचा तख्त सच्चे सुल्तान, सति तेरी वड्याईआ। साचा खेल श्री भगवान, भगवन भेव कोए ना पाईआ। साचा नूर तेरा महान, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। मिहबान बीदो इक मिहबान, बी ख़ैर या अल्ला तेरी

वड्याईआ। मुकामे हक़ तेरा निशान, रसवा दूजा नज़र कोए ना आईआ। साबत तेरा इक ईमान, उम्मत रूप ना कोए वखाईआ। इलाही कलाम तेरा पैग़ाम, रसना जिह्वा ना कोए सुणाईआ। सचखण्ड तेरा मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दर दरवेश ना कोए दरबान, सजदा सीस ना कोए कराईआ। तीर तरकश ना कोए कमान, खण्डा खड़ग ना कोए खड़काईआ। कागद कलम ना कोए कलाम, कातब लिखे नाल ना कोए शाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तत्तव तत्त ना कोए वखान, एका दूआ दूआ एका वेस अवेस ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरण कँवल मिले सरनाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार मंगण मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। जुग चौकड़ी गई लँघ, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथ्मी दीसे नंग, सिर ओढण ना कोए टिकाया। किसे दुआरे मिले ना परमानंद, निजानंद ना कोए चखाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर पैंदी डण्ड, डंका नाम ना कोए वजाया। दीन मज़्ब ज़ात पात कूड़ी क्रिया होई कंध, तुध बिन धक्का ना कोए लाया। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी गा गा सुणाउदे छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाया। आत्म परमात्म मुकया किसे ना पन्ध, साध सन्त नेत्र रो रो नैणां नीर रहे वहाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी एकँकारा इक्को सुत्ता दे कर कंड, करवट आपणी ना लए बदलाया। जीव जंत कलिजुग अन्त होए भागांमंद, आपणा भाग सके ना कोए वंडाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पाए ठंड, अग्नी तत्त ना कोए बुझाया। जगत वैरागण होई दुहागण सुरत सवाणी मात रंड, हरि कन्त शब्द ना कोए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचे जागण वेला, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। कलिजुग वक्त होए दुहेला, वेला गया हथ्थ ना आईआ। प्रगट होया इक इकेला, एकँकारा साचा माहीआ। नाल मिलाया गोबिन्द चेला, चेला गुर आप अख्वाईआ। एथे ओथे सज्जण सुहेला, सगला संग आप निभाईआ। आत्म परमात्म करया मेला, मिल मिल आपणी खुशी वखाईआ। कटणहारा धर्म राए दी जेला, लख चुरासी फंद कटाईआ। वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण फेरा पाईआ। अचरज खेल पारबहम प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण मेले आण, आन इक्को इक रखाइंदा। मेल मिलावा श्री भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा । आत्म परमात्म देवे दान, सोहँ ढोला इक पढ़ाइंदा। दो जहान झुलाए निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाइंदा। सचखण्ड निवासी साचा काहन, गुरमुख गोपी आप प्रनाइंदा। लेखा जाणे

६३ १३

साचा राम, सीता सुरती आप जगाइंदा। नाम अगम्मी मारे बाण, अणयाला तीर आप चलाइंदा। अन्तर होवे जाणी जाण, मंत्र इक्को इक पढ़ाइंदा। बसन्तर बुझे विच जहान, सांतक सति सति कराइंदा। बिन पढ़ियां देवे ज्ञान, गोझ ज्ञान आप खुल्हाइंदा। जिस जन कर किरपा देवे आपणा नाम, तिस नाम आपणे विच जणाइंदा। जन भगतां पूरन करे काम, करनी किरत आप कमाइंदा। काया नगर खेड़ा वेख ग्राम, गृह आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, गुर शब्द जणाए साचा मंत्र, मंत्र आपणा नाम सुणाइंदा।

❇ ८ मग्घर २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दया ज़िला गुरदास पुर ❇

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। शाहो भूप वड सिक्दारा, शहिनशाह बैठा आसण लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, अलख अलखणा लख्या ना जाईआ। नूर इलाही परवरदिगारा, बेऐब रूप खुदाईआ। मुकामे हक़ इक नज़ारा, नज़र विच कदे ना आईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, सरगुण निरगुण रंग रंगाइंदा। दो जहानां कर पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। करता पुरख करनी कर, करता कादर आपणी खेल कराईआ। आपे दाता दानी देवे वर, दर दरवेश आपणी झोली आप भराईआ। निरगुण सरगुण रूप धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्द अगम्मी देवे एका डर, निरभउ भय आपणा इक समझाईआ। बोध अगाधा निष्अक्खर अक्खर लैणा पढ़, रसना जिह्वा ना कोई पढ़ाईआ। सच महल्ले उच्च मिनार दरस दिखाए अग्गे खड़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करनेहारा, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। करे खेल एकँकारा, नित नवित्त वेख वखाइंदा। गुर अवतार कर उज्यारा, पीर पैगम्बर नूर वखाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता, आत्म परमात्म कर प्यारा, प्रेम प्रीती बन्धन एका पाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, सच संदेसा इक सुणाइंदा। पंज तत्त काया खोल्ह किवाड़ा, जन जननी लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल

आप समझाइंदा। साचा खेल आदि पुरख, एका एक जणाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता सोग ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर कर परख, साचा पारखू सेवा लाइंदा। नित नवित्त आत्म परमात्म देवे दरस, दरस ईद दीद चन्द चमकाइंदा। निरगुण सरगुण उपर कर कर तरस, मेहर नज़र इक रखाइंदा। आबे हयात अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। लेखा जाणे अर्श कुर्श, कलिजुग आपणा भेव चुकाइंदा। दो जहानां लाहे कर्ज़, मकरूज़ आपणा लहिणा आप मुकाइंदा। जुग जुग होण ना देवे कोई हर्ज, विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा। पूर कराए आपणा फ़र्ज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव अभेद जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दिसे नाता, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी खोल्ह्या जगत तमाशा, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती नूर शब्दी धार देवणहारा दाता, दाता दानी दया कमाइंदा। मेटणहारा अन्धेरी राता, सतिगुर साचा चन्द चमकाइंदा। जगत विद्या दस्स गाथा, गा गा अन्त कोए ना पाइंदा। लुक्या रिहा पुरख बिधाता, नेत्र नैण नज़र ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्ह्ब जुड़या नाता, साची ज़ात ना कोई समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप चुकाइंदा। साचा पर्दा देवे लाह, लाशरीक इक खुदाईआ। प्रगट होया बेपरवाह, पर्दानशीन नज़री आईआ। जलवा नूर एका धरा, नूरो नूर रुशनाईआ। लेखा मुकाए काग़ज़ कलम शाह, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। सच दवारा दए खुल्ह्हा, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। मख़लूक एका मार्ग दए पा, रहबर बणे सच्चा माहीआ। नाम निधाना इक दृढ़ा, दृष्टी सब दी दए खुल्ह्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, करोड़ तेतीसा हुक्म मनाईआ। गुर अवतार लए उठा, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। पिछला लेखा दए मुका, अगला लेखा कोई रहिण ना पाईआ । होका देवे वाहो दाह, दो जहानां रिहा सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश प्रकाश इक करा, सूरज चन्द ना कोई रुशनाईआ। सूरज चन्न चरणी डिगे आ, दर साचे सीस झुकाईआ। साडी पिछली ना वेख ख़ता, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। तुध बिन होए बेअबा, अबादत कम्म किसे ना आईआ। रहबर बणया इक खुदा, चार कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। उम्मत उम्मती रही कुरला, आपणी कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक विखाउणा साचा घर, जिस घर बैठा आसण लाईआ। सच महल्ला दस्स महिराब, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। निउँ निउँ सजदा करन अदाब, सीस जगदीश इक झुकाईआ। शाह पातशाह इक नवाब, नौबत इक्को नाम वजाईआ। देवणहार हयाते आब, आबे हयात एका रूप दरसाईआ। लहिणा देणा चुके मक्का काअब, काअबा तेरे चरण वड्याईआ। शाह अस्वार चरण घोड़े दे रकाब, तुआकब आपणा आप वखाईआ।

पीर पैगम्बरां बणदा रिहा माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। गुर अवतार करदे रहे तेरा जाप, जप जप आपणा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। देवे वर दर दरबाना, दहि दिशा वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी इक परवाना, परम पुरख आप समझाइंदा। कागद कलम होए हैराना, हरि का भेव कोई ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुराना, दो जहाना पन्ध ना कोई मुकाइंदा। खाणी बाणी गुण निधाना दस्से इक निशाना, तीर निशाना चिले ना कोई चढ़ाइंदा। सचखण्ड वसे श्री भगवाना, दरगाह साची आसण लाइंदा। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, महाबली नाउँ धराइंदा। जुग चौकड़ी वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाइंदा। करे खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण धार जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्याना, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। प्रगट होया नौजवाना, बिरध बाल जवान रूप ना कोई रखाइंदा। साचे वसे मन्दिर मकाना, सम्बल डेरा इक्को लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाइंदा। साची सिख्या सम्बल खेड़ा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जिस दवारे चुके झेड़ा, झगड़ा कोई रहिण ना पाईआ। दो जहानां वखाए खुल्ह्हा वेहड़ा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वंड ना कोई वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ढाह ढाह बैठे आपणा डेरा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ गुरुदुआर ना कोई सुहाईआ। कलिजुग वेला आया नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगतां कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूसर संग ना कोई रखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सचखण्ड बैठा रिहा कर के वडा जेरा, ज़ेर ज़बर हुक्म मनाईआ। निरगुण धार निरगुण जोत निरँकार पाया फेरा, भेव अभेदा ना कोई समझाईआ। बिन नानक गोबिन्द जाणे केहड़ा, कवण घर वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी करे हक़ निबेड़ा, पीर पैगम्बर आपणी गोद बहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड देवणहारा गेड़ा, सूरज चन्द रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रूप आप जणाईआ। साचा रूप निरगुण रंग, निरवैर आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्द डोरी बन्न पतंग, लोकमात आप उडाइंदा। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर दो जहानां वेखे आर पार लँघ, मँझधार आपणा खेल खिलाइंदा। भगत भगवन्त साचे सन्त वसे संग, सगला संग आप हो जाइंदा। ग़रीब निमाणयां कटणहारा भुक्ख नंग, नाम वस्त झोली पाइंदा। ज़ात पात दीन मज़्हब मारनहारा झूठी कंध, शरअ शरीअत मेट मिटाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए साचा छन्द, गीत गोबिन्द इक अलाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान मुकाए पन्ध, बण पांधी फेरा पाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी सिर सिर आपणी सेव कमाइंदा। नाता तोड़े कूड़ी क्रिया

झूठ पखण्ड, माया ममता मोह मिटाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। हरिजन सज्जण सति सतिवादी सति चढ़ाए चन्द, चन्द चांदनी इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक वसाइंदा। सच्चा घर वसाए इक, एकँकारा वड वड्याईआ। निर्मल नूर जोत बबेक, विवेकी आपणी खेल रचाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। दूसर रखे ना कोई टेक, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। आदि जुगादि करे खेल हमेश, नित नवित्त वेस वटाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त रिहा वेख, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादि अलखणा अलख गुर अवतार पीर पैगम्बर करन आदेस, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार पीर पैगम्बर औलीए शेख़, मुल्लां मुसायक पर्दा रिहा उठाईआ। पंडत पांधे दस्त बदस्त वेखणहारा रेख, रेखा सब दी रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री इक वखाईआ। सच समग्री साची रास, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण जोत नूर प्रकाश, प्रकाशवान फेरा पाइंदा। लहिणा देणा तोड़ लख आकाशां आकाश, आकाशां उपर आपणा डेरा लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण कर दासी दास, सेवक सेवा सच समझाइंदा। जुग चौकड़ी होए विनास, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। अन्तिम सद्दे आपणे पास, धुर फ़ुरमाणा हुक्म जणाइंदा। पत डाली वेखणहारा शाख़, फुल्ल फलवाड़ी फोल फुलाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले परखणहारा पारजात, परम पुरख प्रभ दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम कन्ढे आया घाट, घाटा सब दा पूर कराइंदा। बिन भगतां किसे ना देवे दात, लख चुरासी ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। जीव जंत कूड़ी क्रिया करे घात, घाउ इक्को नाम लगाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा सच्चा साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। शब्द सरूपी नाता तोड़े ज़ात पात, आत्म ब्रह्म इक समझाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दरस दिखाए साख्यात, सखी सरवर रूप धराइंदा। पर्दा लाहे कायनात, मुख नकाब ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। लोकमात निरगुण धार कर प्रगट, प्रगट आपणा रूप जणाईआ। लहिणा देण चुकाए चौदां तबक चौदां हट्ट, चौदां लोक भेव ना राईआ। त्रैगुण माया मारे सट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। पंज विकारा मेटे फट्ट, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, सरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। गुर अवतार कर कर वस, पीर पैगम्बर बन्धन पाईआ। कलिजुग अन्तिम ख़ाली कीते सब दे हथ्थ, वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ।

साचा खेल रच करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। कलि कल्की लै अवतार, कलिजुग अन्तिम पर्दा लाहइंदा। निरगुण नूर नूर उज्यार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। अमाम अमामां वड सिक्दार, शहिनशाह शाह आप हो आइंदा। मुकामे हक़ कर गुफ्तार, गुफ्त शनीद रंग वखाइंदा। हक़ हकीकत पावे सार, लाशरीक दया कमाइंदा। सच तौफ़ीक इक निरँकार, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। पीर पैगम्बर करे ख़बरदार, ख्वाब आपणा इक्को इक जणाइंदा। गुर अवतारां दे आधार, आदर्श आपणा इक वखाइंदा। सारे करो इक स्वाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। सच स्वाल करो स्वाली, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जलवा नूर जोत अकाली, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी करे दलाली, निरगुण दाता वड वड्याईआ। लेखा जाणे हक़ हलाली, हकीकत आपणे विच छुपाईआ। प्रगट होए दो जहानां वाली, दोए दोए आपणी धार जणाईआ। पीर पैगम्बर फिरदे ख़ाली, ख़ालक ख़लक दए वखाईआ। करे खेल आप निराली, निरगुण आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। ख़ाली हथ्थ करन पुकार, नाअरा इक्को इक लगाईआ। तेरा खेल परवरदिगार, बेपरवाह नज़र ना आईआ। हू हू करन कर निमस्कार, करता कीमत कोए ना पाईआ। कोई ना दिसे मददगार, मुश्कल हल्ल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच सच्ची सरनाईआ। लाशरीक परवरदिगारा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान दया कमाइंदा। प्रगट होया एकँकारा, एका हुक्म सुणाइंदा। रल मिल गाओ साची वारा, वारता आपणी आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण कँवल कँवल चरण करे निमस्कारा, निउँ निउँ एका घर वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक जणाइंदा। साची सरन श्री भगवान, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी जो देंदा रिहा दान, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां झोली नाम भराईआ। जिस दा दस्सदे गए निशान, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। सो कलिजुग अन्तिम प्रगट होया विच जहान, दो जहानां वाली दया कमाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्से आण, सति सतिवादी दया कमाईआ। रल मिल सारे आत्म परमात्म परमात्म आत्म ढोला गाओ श्री भगवान, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ मिल्या आण, ममता मोह रिहा चुकाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, तख्त निवासी सच प्रधानगी आप कमाईआ। दर दरबार करो सलाम, अलैकम सब दी झोली पाईआ। मंत्र सिख्या सति नाम, नाम सति वज्जे वधाईआ। रसना जिह्वा गाए कलाम, हरि का कलमा रसना जिह्वा पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या निरगुण सरगुण मीत, मुरीद मुर्शद खेल कराइंदा। साची सिख्या प्रभ चरण प्रीत, परम पुरख वेख वखाइंदा। साची सिख्या मेल मिलाए इक अतीत, त्रैगुण बन्धन ना कोए पाइंदा। साची सिख्या लहिणा देण चुकाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याइंदा। साची सिख्या देवे धाम अनडीठ, दरगाह साची डेरा लाइंदा। साची सिख्या देवे बीठलो बीठ, पारब्रह्म प्रभ सिर सिर हुक्म मनाइंदा। रल मिल सारे गाओ इक्को गीत, सोहँ ढोला आप जणाइंदा। नाता तुटणा मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ, बिन काया मन्दिर नज़र कोए ना आइंदा। प्रभ परखण आया लख चुरासी नीत, कलिजुग अन्तिम फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या धुर दा लेखा, लिख्त विच कदे ना आईआ। कन्न ला ला सुणे विष्न ब्रह्मा महेष गणेशा, गणपति आपणा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण कँवल कँवल चरण करन आदेसा, दृष्ट इष्ट नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदा आया आपणा पेशा, पेशीनगोई सब नूं रिहा सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम सब तों मंगे लेखा, गुर अवतार पीर पैगम्बर बचया कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेलदा आया खेडा, वड खिडारी सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जणाईआ। खेले खेड एकँकारा, अक्ल कला अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी कर पसारा, थिर घर पर्दा लाहइंदा। सुन्न अगम्मी हो उज्यारा, धूंआँधार वेख वखाइंदा। शब्द अनादी बोल जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाइंदा। मात पूत बण लेखा जाणे सुत दुलारा, जन जननी गोद वड्याइंदा। शब्दी सुत दए हुलारा, झूला इक्को इक वखाइंदा। वस्त अमोलक भर भण्डारा, सति सतिवादी दया कमाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर पसारा, त्रैगुण नाता जोड़ जोड़ाइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा हुक्म चलाइंदा। लख चुरासी कर पसारा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म वंड वंडाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाता जोड़ विच संसारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग रंगाइंदा। आदि अन्त श्री भगवान पावणहारा सब दी सारा, समरथ पुरख आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार वेख्या वारो वारा, वारता आपणे नाम अलाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, नाम डंका इक वजाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी लोकमात खोल्ह सच दवारा, सचखण्ड आपणा डेरा लाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर कर उज्यारा, दीवा बाती ना कोए जगाइंदा। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोए सहारा, पढ़ पढ़ आस ना कोए वधाइंदा। आपे वसे सब तों बाहरा, बेपरवाह आपणा पर्दा आप उठाइंदा। कलिजुग अन्तिम पार किनारा,

घनईया नईया आप चलाइंदा। साचा सईया परवरदिगारा, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। जन भगतां देवे इक सहारा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाइंदा। सोहँ शब्द सच जैकारा, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री साची रास, आदि जुगादि रखे पास, जन भगतां देवे बण बण दासी दास, सेवक आपणी सेव कमाइंदा। सेवक बण श्री भगवान, जग चाकरी जगत कमाईआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। धर्म वखाए सच निशान, दरगाह साची आप उठाईआ। लेखा चुके गोपी काहन, जिस जन मिले सच्चा माहीआ। जन भगतां दरस देवे दर दर आण, घर घर मेला सहिज सुभाईआ। जगत नेत्र ना सकण पछाण, गुर नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, चौदां विद्या पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख विरले मेले आण, पूरब लहिणा जुग जन्म दा देणा कर्म कांड निहकर्मी निरगुण लेखा दए मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व आपणी धार चलाईआ।

७०
१३

✻ ८ मग्घर २०१६ बिक्रमी नौरंग सिँघ दे गृह पिण्ड दया ज़िला गुरदास पुर ✻

सो पुरख निरँजण सोचे आपणी सोच, सोच विच कदे ना आइंदा। आदि जुगादी निर्मल जोत, नूर नूराना डगमगाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे कोट, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सोच आप समझाइंदा। साची सोच सोचे हरि, दूसर संग ना कोए रखाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। सच महल्ले आपे चढ़, अटल मनार करे रुशनाईआ। दरगाह साची निरगुण खड़, परवरदिगार नूर रुशनाईआ। सच सिँघासण बहि बहि देवे वर, तख्त निवासी सच्चा माहीआ। अक्ल कला कल खेल कर, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोच सोच विच समाईआ। साची सोच श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, निरगुण आपणा बल वखाइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। एकँकारा खेल महान, खेलणहारा आप खलाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता शाह सुल्तान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। श्री भगवान हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी आन, भाणे आपणे आप समाइंदा। सचखण्ड निवासी

थिर घर दवारा खोलू दुकान, साचा हट्ट इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच आपणे विच छुपाइंदा। साची सोच श्री भगवन्त, भेव अभेद छुपाईआ। निरगुण निरगुण नार कन्त , कन्त कन्तूहल सेज सुहाईआ। पुरख अकाल बणाए बणत, अक्ल कल वड वड्याईआ। सचखण्ड दवारा धाम सुहंत, सोभनीक करे रुशनाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच इक प्रगटाईआ। साची सोच हरि निरँकार, इक इकल्ला आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड निवासी हो तैयार, थिर घर आपणा पर्दा लाहइंदा। मुकामे हक़ खोल कवाड़, नूरी जलवा नूर चमकाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दर दरवाजा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच आपणे नाल रखाइंदा। साची सोच आपणे नाल रख, नर हरि नरायण खेल कराईआ। आदि आदि हो प्रतख, मध आपणी धार चलाईआ। निरगुण नूर कर प्रगट, हर घट रिहा समाईआ। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आपणा मार्ग आपे दस्स, बण पांधी फेरा पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमां अकथ आप जणाईआ। चलावणहारा साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोच आपणे नाल प्रनाईआ। साची सोच जुड़या नाता, पुरख अकाल दया कमाइंदा। निरगुण खेल खेल तमाशा, निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण करे निवासा, निरगुण बहि बहि खुशी मनाइंदा। निरगुण जोत नूर प्रकाशा, निरगुण अन्ध अन्धेर वखाइंदा। निरगुण रखे डूँग्घा ख़ाता, निरगुण अतोल अतुट निखुट भण्डार आप वरताइंदा। निरगुण देवणहारा दाता, निरगुण ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सोच ना किसे जणाइंदा। साची सोच किसे ना दस्से, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दवारे आपे वसे, वसणहारा सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे प्यार अन्दर आपे फसे, प्रीतम आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपे दो जहानां उठ उठ नस्से, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, सति सतिवादी दरगाह साची आसण लाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग अछल अछल्ला, वल छल आपणी खेल कराइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। आदि जुगादी लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। शब्द अनादी बोल जैकारा, ब्रह्म ब्रह्माद करे शनवाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, त्रैगुण बन्धन एका पाईआ।

पंज तत्त करे प्यारा, तत्तव तत्त नाल समाईआ। लख चुरासी खोल्ह किवाड़ा, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म दे सहारा, सगला संग रखाईआ। निरगुण सरगुण कर विचारा, निरगुण आपणी कल प्रगटाईआ। नाउँ रख गुर अवतारा, गुर गुर आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि परवरदिगार, बेऐब वड्डी वड्याईआ। नूर इलाही हो उज्यार, किरन किरन नाल मिलाईआ। सूरज चन्द रवि ससि पावे सार, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। लोक परलोक दे आधार, अवण गवण रिहा जणाईआ। त्रैभवण खेल अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा भेव शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जुग चौकड़ी हो मेहरवान, नव नौ आपणी वंड वंडाइंदा। चार चार करे कल्याण, कल आपणी आप रखाइंदा। पंचम पंच देवे माण, पंचम आपणा पर्दा लाहइंदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए मकान, बेमुकाम फेरा पाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी नौजवान, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। अठ्ठां तत्तां करे कल्याण, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणी झोली पाइंदा। नौ दवारे दर खोल्ह दुकान, सृष्ट सबाई राह चलाइंदा। दसवें खेल श्री भगवान, भगवन आपणा घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा साचे घर, घर मन्दिर आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण देवे वर, सरगुण निरगुण दया कमाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, जोती जाता नूर रुशनाईआ। सच्चे मन्दिर बहे चढ़, हरि मन्दिर कुण्डा लाहीआ। नूर प्रकाश एका कर, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ लए फड़, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। काया मन्दिर घाड़न घड़, गुर सतिगुर वंड वंडाईआ। इक्को अक्खर देवे वर, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सति सरूपी बाहों फड़, सीस धड़ लेख मुकाईआ। पंच विकारा तोड़ गढ़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी पंज तत्त चोला, काया मन्दिर आप सुहाइंदा। लख चुरासी कोलों रखे उहला, पर्दा दूई ना किसे उठाइंदा। गुर अवतार सुणाए आपणा सोहला, सोहला इक्को नाम जणाइंदा। नजरी आए हरि जू मौला, मौला आपणा रूप वटाइंदा। उलटा करे नाभ कौला, कँवल नाभी आप भवाइंदा। पंज तत्त ना पाए रौला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। सच दवारा इक्को खोल्हा, गुर अवतारां आप वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा पुरख अकाल गावे ढोला, दूजा राग ना कोए सुणाइंदा। लख चुरासी बणया तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रूप वखाइंदा। गुर अवतार आपे

बण, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। लेखा जाणे जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। एका राग सुणाए कन्न, बिन कन्नां आपे गाईआ। भाण्डा भरम भउ प्रभ देवे भन्न, ठीकर कोए रहिण ना पाईआ। करे प्रकाश पंज तत्त काया तन, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। सचखण्ड वसाए वसेरा ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। कोटन कोटि मंगण दान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। मेहरवान हो मेहरवान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला, इलाही नूर दया कमाईआ। परवरदिगार इक इकल्ला, सच महल्ला रिहा वसाईआ। पीर पैगम्बर फड़ाए पल्ला, डोरी शब्दी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साची खेल करता करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी कर विहार, बिवहारी आपणी धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, पंज तत्त चोला मात हंढ्ढाइंदा। शब्दी शब्द बोल जैकार, शहिनशाह आपणा राग सुणाइंदा। लेखा लिख्त लेख अपार, लिख लिख लेखा आप प्रगटाइंदा। विष्नूं विश्व कर विचार, वासतक आपणे रंग रंगाइंदा। ब्रह्मे खोल्ह इक कवाड़, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। ठोकर देवे नाम मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। साचा राह चलाए आप, आपणी दया कमाईआ। आदि पुरख बण बण माई बाप, लख चुरासी बणत बणाईआ। विष्न ब्रह्मा देवे दात, शंकर आपणा हुक्म मनाईआ। आत्म परमात्म ओअँ सोहँ सति सरूपी साचा जाप, जपत जपत एका सुख वखाईआ। ईश जीव वड प्रताप, वड प्रतापी पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सोच ना किसे जणाईआ। सोचयां किसे ना आवे हथ्थ, गुर अवतार ध्यान लगाया। आदि जुगादी पुरख समरथ, सचखण्ड बैठा डेरा लाया। जुग चौकड़ी देवणहारा नाम वथ, वस्त अमोलक इक वरताया। सदा सुहेला मार्ग दस्स, लोकमात राह चलाया। पंज तत्त काया चोले अन्दर वस, जगत लेखा रिहा मुकाया। त्रैगुण विच ना जाए फस, ममता मोह ना कोए वधाया। आपणा नाउँ गाए हस्स हस्स, सोहँ हँसा राग अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, साची करनी आप कमाया। साची करनी करे गोबिन्द, भेव अभेद छुपाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आदि जुगादि बणाए आपणी बिंद, पिता पूत लाड लडाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी साहिब सुल्तान होए बख्शंद, बखशिश आपणे हथ्थ रखाईआ। योद्धा सूरबीर वड मरगिंद, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच दए वड्याईआ। साची सोच सोचणहारा, एकँकारा आप अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी कर विहारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड वेखणहारा,

नूर नुराना डगमगाइंदा। सचखण्ड निवासी परवरदिगारा, थिर घर आपणा पर्दा लाहइंदा। शब्द अगम्मी सुत दुलारा, पूत सपूता आप प्रगटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कराए वणज वपारा, लोआँ पुरीआँ हट्ट चलाइंदा। चौदां लोक दे सहारा, चौदां विद्या अंग लगाइंदा। चौदां तबकां पावे सारा, सबक इलाही इक पढ़ाइंदा। लहिणा देणा जाणे सूरज चन्द सतारा, मण्डल मण्डप खोज खुजाइंदा। नूर इलाही हो उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा । लेखा जाण धुर दरबारा, धुर दी कल आप वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। लहिणा चुकाए शास्त्र सिमरत वेद चारा, चारे खाणी चारे बाणी पर्दा लाहइंदा। चार वरन वेखे अखाड़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाच नचाइंदा। चारों कुण्ट खेल न्यारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप कराइंदा। कलि कल्की लै अवतारा, करे खेल अगम्म अपारा, बेपरवाह नज़र किसे ना आइंदा । वेद व्यास करे प्यारा, पूत सपूता दए सहारा, ब्रह्मण गौड़ा वेख वखाइंदा। मूसा डिगा मूँह दे भारा, जलवा तक्कया इक नज़ारा, बेनज़ीर आप वखाइंदा। ईसा मंगे बण भिखारा, किरपा कर परवरदिगारा, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, चौदां सदीआं दे हुलारा, चौदां तबक तेरा किनारा, पार हद्द ना कोए जणाइंदा। नाता जुड़या चार यारा, चारों कुण्ट होए हल्कारा, इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील हुक्मी हुक्म मनाइंदा। करे खेल आप करतारा, अमाम अमामां सच सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सोच आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची सोच जुग जुग धार, निरगुण निरगुण आप चलाईआ। निरगुण किरन निरगुण उज्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण तत्त निरगुण करे पसार, निरगुण निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण नानक देवे इक आधार, अदर उदर ना फेरा पाईआ। काया चोला विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अपणे विच रखाईआ। भेव अभेदा पारब्रह्म, प्रभ आपणे विच रखाइंदा। आदि जुगादि ना पए जम्म, जन्म मरन विच ना आइंदा। जुग चौकड़ी जाणे कम्म, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। किसे ना वसे छप्पर छन्न, चार दीवारी बंद ना कोए वखाइंदा। साचे तख्त बहे श्री भगवन, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। लहिणा देणा मुकाए सूरज चन्न, तारा मण्डप आपणी गोद बहाइंदा। नूर इलाही इक सुणाए राग कन्न, कायनात आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मंत्र इक समझाइंदा। साचा मंत्र सति नाम, सति सति करी जणाईआ। निरगुण नानक इक पैग़ाम, पीर पैगम्बर रिहा सुणाईआ। आदि जुगादी साचा राम, रमिआ हर घट ठाईंआ। निरगुण दाता इक्को काहन, लख चुरासी गोपी रिहा हंढुाईआ। जुग चौकड़ी बदलणहार

७४
१३

नज़ाम, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, दाता दानी आपणी वस्त वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत्त मेला मेले आण, लोकमात वज्जे वधाईआ। सच वखाए इक निशान, निशाना आपणे हथ्थ उठाईआ। सृष्ट सबाई होई अंञाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जीवण जुगत ना किसे जणाईआ। सुण सुण थक्के झूठे कान, अनहद राग ना कोए शनवाईआ। पी पी थक्की रसना जाम, अंमिउँ रस ना कोए चुआईआ। चला चला थक्के शस्त्र बाण, तीर निराला ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच ना किसे दृढ़ाईआ। साची सोच एकँकार, निरगुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। नानक निरगुण दे आधार, सरगुण नानक आप पढ़ाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल अपार, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां वसया बाहर, लोकमात राह चलाइंदा। जगत उदासी भेख न्यार, भेखी आपणा रंग रंगाइंदा। शब्द अगम्मी इक सतार, बिन तन्दी तन्द वजाइंदा। दिवस रैण करे गुफ़्तार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। सच संदेसा दित्ता अन्तिम वार, अन्त भगवन्त खेल कराइंदा। कलिजुग प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, जिस दा भेव कोए ना पाइंदा। आपे सोच करे सर्ब संसार, पिछली सोच सर्ब गवाइंदा। जिस दे दर्शन रहे लोच पीर पैगम्बर गुर अवतार, सब दी लोचा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच इक रखाइंदा। साची सोच शब्दी सुत, सुत दुलारे हथ्थ फड़ाईआ। कलिजुग अन्त सुहौणी रुत्त, रुत रुत्तड़ी मात महकाईआ। ना कोई काया ना कोई बुत्त, रूह कलबूत ना वंड वंडाईआ। आपणी धारों आपे उठ, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच रिहा समझाईआ। साची सोच सोचण आया, निहकलंक नर नरायण। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेखण आया, निरगुण निरगुण खोल्ह आपणा नैण। जगत लहिणा मेटण आया, नाता तोड़े कूड़ा साक सज्जण सैण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहान वहाए वहण। साची सोच इक्को आस, आसा सब दी पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पुरख अकाल सद्दे पास, सद्दा आपणा नाम दिवाईआ। सिफ्त सालाही बेपरवाह वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता कदे ना होए नास, अबिनाशी आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सोच आपे रिहा प्रगटाईआ। अन्तिम सोच करे प्रगट, प्रगट आपणा खेल कराइंदा। लहिणा मुकाए चौदां लोक हट्ट, हट्ट हटवाणा फेरा पाइंदा। चौदां तबक आपणे खाते लए घत्त, ख़ाता पिछला आप मुकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दर दवारे एका रख, एका घर बहाइंदा। साचा मार्ग सति सतिवादी देवे दस्स, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड

७५
१३

पन्ध मुकाए नस्स नस्स, लोअ पुरीआँ चरणां हेठ दबाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गायण जस, जस वेद पुराण किसे हथ्थ ना आइंदा। आदि जुगादी शब्द अनादी महिमां अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी चलाउँदा आया रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत कर प्रकाश, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल नगरी रखे वास, गोबिन्द मेला इक मिलाइंदा। आपे बैठा आपणे घाट, पत्तण नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतारा पुच्छणहारा वात, पिछली वारता आप मुकाइंदा। पीर पैगम्बरां तोड़े नात, नाता बिधाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। चौदां तबक वेखो खात, नाज़ल वही ना कोए वखाइंदा। रल मिल पढ़ो इक जमात, दूजा अक्खर ना कोए सिखाइंदा। अल्फ़ ये होई वफ़ात, फ़ातिहा सब दा आप पढ़ाइंदा। इक सुणाए बातन बात, बैतुल आपणा घर वखाइंदा। निरगुण नूर इक महिताब, आफ्ताब आप रुशनाइंदा। सच सुल्ताना हक़ जनाब, हकीकत पर्दा आपे लाहइंदा। वड अमाम करो आदाब, अदब इक्को इक समझाइंदा। जुग चौकड़ी कदे ना भुल्ले याद, यादाशत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच आप रखाइंदा। साची सोच इक निरँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ । जुग जुग बेड़ा करे पार, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहिण सर्ब पुकार, अन्त कहिण कोए ना आईआ। दोए दोए जोड़ करन निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सचखण्ड वसे एकँकार, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। लेखा जाणे तेई अवतार, भगत अठारां संग मिलाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद खोल्ह् कवाड़, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। नानक गोबिन्द साची कार, पुरख अकाल आप कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दे अधार, खाणी बाणी वंड वंडाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे वेखणहार, वेखणहारा इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण बरदे मंगदे गए भिखार, भिखक आपणी झोली डाहीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे महाबली अवतार, बल आपणा आप जणाईआ। पिछली सोच करे करतार, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया करे पार, जूठ झूठ दए मिटाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान देवे इक आधार, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म शब्द अनाद सुणाए जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। ढोला सोहला एका वार, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। नबी रसूलां करे ख़बरदार, कलमा अमाम इक पढ़ाईआ। सच संदेसा देवे आण, देस परदेसां फेरा पाईआ। एका इष्ट श्री भगवान, दृष्ट सब दी दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्को सोच दए वड्याईआ। इक्को सोच हरि हरि धार, हरि दाता आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड दवारा खोल्ह् कवाड़, लोकमात रंग रंगाइंदा। भगत भगवन्त कर तैयार,

त्रैगुण अतीता मेल मिलाइंदा। ठांडा सीता पावे सार, साजण मीता अंग लगाइंदा। चरण प्रीता विच संसार, साची रीता आप रखाइंदा। मन्दिर मसीता पार किनार, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। ऊँचां नीचां इक विहार, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। सच बग़ीचा खिड़े गुलज़ार, गुलशन आपणे गुल महकाइंदा। रसना जिह्वा गाए इक जैकार, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यार, परम पुरख मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे छार, झूठी खेह ना कोए उडाइंदा। सच सुच्च करे प्यार, सति सति आपणा रंग रंगाइंदा। कागद कलम ना पाए सार, शाही लेख ना कोए जणाइंदा। पुरख अबिनाशी हो तैयार, परम पुरख दया कमाइंदा। जन भगतां खोल्हे बंद कवाड़, बज़र कपाटी कुण्डा लाहइंदा। मेट मिटाए पंचम धाड़, पंचम नाता तोड़ तुड़ाइंदा। निर्मल जोती कर उज्यार, इक इकलोती मेल मिलाइंदा। सोई सुरती लए उठाल, अकाल मूर्ती वेख वखाइंदा। सतिगुर सच्चा होए दयाल, गुरमुख लाल गोद बहाइंदा। अन्तिम नेड़ ना आए काल, महाकाल मुख भवाइंदा। नाता तोड़ जगत जंजाल, चरण कँवल इक दरसाइंदा। माणस जन्म ना होए बेहाल, बेहबल हो ना कोए कुरलाइंदा। वेले अन्त करे संभाल, सतिगुर पूरा अपर अपार आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद मुरीदां हाल आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच इक ल्याइंदा। साची सोच लै के आया, कलि कल्की हरि अवतार। सचखण्ड दुआरे बहि के आया, निरगुण दाता परवरदिगार। दो जहानां कह के आया, सच संदेसा देवे एका वार। आपणा भाणा सहि के आया, भाणा मन्ने अगम्म अपार। आपणी चरणी ढह के आया, दोए दोए जोड़ कर निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपार खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। आदि जुगादी सोचां सोचदा रिहा एकँकारा, आपणी सोच ना किसे जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। सतिजुग करना सच विहारा, बण बिवहारी फेरा पाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, प्रेम प्रीती इक सिखाइंदा। ऊँचां नीचां पार किनारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। भगत भगवन्त दए सहारा, भगवन आपणा राह चलाइंदा। चार वरन वखाए इक घर बारा, भगत दवारा आप प्रगटाइंदा। जिस गृह वसे एकँकारा, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। जिस मन्दिर नाम जैकारा, तिस मन्दिर हरि जू सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच आप प्रगटाइंदा। साची सोच हरि हरि दात, इक्को इक रखाईआ। सतिजुग सच जणाए नाम करामात, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका वस्त्र एका खाट, अबिनाशी रिहा सुहाईआ। एका पुछणहारा वात, घर घर आपणा फेरा पाईआ। एका मेटणहार अन्धेरी रात, कलिजुग रैण दए मिटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सोच आप वरताईआ। साची सोच गुरमुखां गोली, कलिजुग अन्त भगवन्त आप बणाईआ। बिन सोचयां बदले काया चोली, चोला आपणे रंग रंगाईआ। बिन कहारों चुके आप डोली, बण सेवक सेव कमाईआ। चार जुग दी व्याहण आया बोली, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सच दवारा एका खोली, जन भगतां आप वखाईआ। लख चुरासी होई पोली, नाम भार ना कोए वंडाईआ। गुरमुख गुरसिख जन्म जन्म आत्म परमात्म चरण घोली, घोली घोल घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच इक प्रनाईआ। साची सोच दए प्रना, प्रना आपणा नाम विच रखाइंदा। निरगुण निरगुण करे विवाह, सौहरे पेईए आपणे घर बणाइंदा। बीस बीसा इक सुधाए साह, संसा सब दा आप मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर साचा ढोला लैण गा, गा गा खुशी सर्ब मनाइंदा। तोबा तोबा तोबा कहिण रहबर बणया आप खुदा, खुदी सब दी आप मिटाइंदा। नाम सति सति रिहा जपा, वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू आपणा भेव जणाइंदा। राम राम राम रिहा समा, रहमत आपणी आप कमाइंदा। कृष्न कृष्न कृष्न काहन रिहा अख्वा, घनईया आपणा भेव जणाइंदा। आदि शक्ति मइया नईया रिहा चला, साचा सईया फेरा पाइंदा। जिस रविदास चम्यारे पिच्छे कढ्ढी आपणी बांह, गंगा धार खेल कराइंदा। जिस लेखे लाया कबीर जुलाह, जोबन आपणा रंग रंगाइंदा। जिस कोटन कोटि पापी दित्ते तरा, दुखियां दुःख दर्द वंडाइंदा। सो साची सोच आपणी भगतां नाल दए प्रना, परम पुरख आपणा मेला आप मिलाइंदा। वेखो परवदिगार करे नकाह, मुख नकाब ना कोए रखाइंदा। पुन्न सवाब ना कोए जणा, सुहबत वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सोच जन भगतां झोली पाइंदा। धुर दी सोच आई भगत दुआर, दोए जोड़ पए सरनाईआ। मेरी कबूल करो निमस्कार, बण निमाणी दए दुहाईआ। चौथे जुग रली विच परिवार, पुरख अबिनाशी आपणा बंस वड्याईआ। मैं करन आई दीदार, चौधवीं चन्द रिहा शरमाईआ। लख चुरासी विच्चों खिड़ी इक गुलज़ार, पुरख अबिनाशी बूटा लाईआ। जिस दी महक नूं तरसण गुर अवतार ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाण, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिन्हां कलिजुग अन्तिम मिल्या विष्नूं भगवान, जिस विश्व धार चलाईआ। नैण दर्शन कीता आण, मेरी हरस रही ना राईआ। दर दुआर करो परवान, नेत्र नैण नैण नीर वहाईआ। मैं बाली इक अंञाण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलिजुग अन्त भगतां उत्ते होया मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैं मंगण आई दान, ख़ाली झोली दयो भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सोच रिहा दृढ़ाईआ। साची सोच चढ़या चा, चाउ घनेरा

७८
१३

इक रखाया। गुरमुख मिल्या जगत मलाह, बेड़ा पार दए कराया। जिस नाल श्री भगवान करे सलाह, संसा रोग रिहा मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेपहचान जगत नेत्र नज़र किसे ना आया।

❇ ६ मग्घर २०१६ बिक्रमी प्रीतम कौर दे गृह ठीकरी वाला ❇

इक इकल्ला एकँकारा, अक्ल कल हरि अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, दोए दोए रूप आप वटाइंदा। एका दूआ कर विहारा, दोए दोए आपणे अंग लगाइंदा। थिर घर वासी खोल्ह किवाड़ा, शब्दी सुत सुत जगाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे आप अखाड़ा, दो जहानां खोज खुजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सुरप्त राजा करोड़ तेतीसा सोया रहिण ना पाइंदा। त्रैगुण माया देंदा रिहा लारा, पंचम तत्त भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ बणत बणाइंदा। एकँकारा इक इकल्ला, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सच सिँघासण एका मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाईआ। जोती नूर आपे बला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। धुर फ़रमाणा साचा घल्ला, सच संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ आपणा नूर जणाईआ। एका दूआ होया दो, दो दो आपणी धार चलाइंदा। आपणे जिहा आपे हो, होका आपणे नाम सुणाइंदा। पिता पूत लग्गा मोह, परम पुरख मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे सो, सो पुरख निरँजण भेव कोए ना पाइंदा। हरि पुरख निरँजण लेखा जाणे सो, सो आपणी वंड वंडाइंदा। एकँकारा लै के आए ढोआ ढो, साची वस्त हथ्थ रखाइंदा। आदि निरँजण जोत निरँजण चुकाए मोह, मोह मुहब्बत वेख वखाइंदा। श्री भगवान अबिनाशी करता निरगुण सरगुण नाल जाए छोह, शहिनशाह एका रंग रंगाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा लेखा जाणे छब्बी पोह, दोए दोए आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ बन्धन पाइंदा। एका दूआ जुड़या जोड़, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दरगाही लाया एका पौड़, परवरदिगार वड वड्याईआ। मुकामे हक़ करे खेल वेखे कर के ग़ौर, नूर नुराना शाह सुल्ताना जलवा नूर इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ दए समझाईआ। साचा दूआ निरगुण सरगुण वक्ख, भेव अभेदा आप जणाइंदा। पतिपरमेश्वर हो प्रतख, लख चुरासी आपणा रूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल अलख, नाम जैकारा इक सुणाइंदा। निरगुण नाल निरगुण वक्ख, निरगुण नाल निरगुण बन्धन पाइंदा। सरगुण खेल करे समरथ,

समरथ आपणी कार वखाइंदा। थिर घर वासी हो प्रगट, शब्दी डंका इक वजाइंदा। आदि आदि आपणा मार्ग दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ खोज खुजाइंदा। एका दूआ एका अंक, एकँकार आप जणाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाए बंक, बंक दवारी सोभा पाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। नाम निधान जणाए मंत, मंत्र इक्को इक समझाईआ। खेले खेल नार कन्त, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण बणया दूआ, हरि जू आपणे अंग लगाइंदा। दूसर भेव ना जाणे कोआ, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणे विच छुपाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी अकाश प्रकाश लेखा जाणे लहिणा लोआ, नेत्र लोचण नैण आपणा आप खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेस वटाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। पंचम तत्त अन्दर आपे वड़, आत्म परमात्म वेस वटाईआ। सच दवारे एका चढ़, तख्त निवासी सोभा पाईआ। निश्अक्खर अक्खर आपे पढ़, आखर करे सर्ब पढ़ाईआ। निरगुण जोत नूर धर, धरनी धरत दए वड्याईआ। देवणहारा साचा वर, विष्नूं झोली इक भराईआ। सच भण्डारा हथ्थीं धर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। ब्रह्मा चरणी डिग्गा दड़, निउँ निउँ चरणी सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशा वेखणहार खेल तमाशा आपणी किरपा देवे कर, दे मति रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका दूआ पर्दा लाहीआ। एका दूआ पर्दा लाह, एकँकारा दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। शब्द अगम्मी दे सलाह, चारे वेदां भेव खुल्लाइंदा। इक दृढ़ाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण पकड़नहारा बांह, समरथ आपणा हथ्थ रखाइंदा। सच संदेसा दए सुणा, बिन कन्नां आप जणाइंदा। घट घट हरि जू रिहा समा, सच सिँघासण आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या दस्से याद, याद आपणी आप जणाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्त वेखण आईआ। जुग चौकड़ी सुणे फ़रयाद, दरगाह बैठा आसण लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे दाद, नाम अमोलक झोली पाईआ। लेखा जाणे सन्त साध, हरि सज्जण सच गोसाईंआ। भगत भगवन्त आपे लाध, वाद विवाद मेट मिटाईआ। शब्द सुणाए अगम्मी नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। आपणे विच्चों आपा काढ, पंज तत्त करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ खेल आप रखाईआ। दूआ खेल हरि करतारा, दोए दोए धार आप चलाइंदा। निरगुण

सरगुण लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदा आया पार किनारा, भेव अभेदा आप चुकाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग लख चुरासी वेखदा रिहा अखाड़ा, विष्न ब्रह्मा शिव नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए आपणा रंग वखाइंदा। दोए धार कुदरत करतार, आपणी आप जणाईआ। करे खेल परवरदिगार, बेऐब नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ हो तैयार, त्रैगुण आपणा वेस वटाईआ। ख़ालक ख़लक वेखे सांझा यार, मख़लूक आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ सब नूं रिहा वखाईआ। एका दूआ पीर पैगम्बर गुर अवतार दिती दात, दाता दानी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म इक जमात, इक्को अक्खर आप पढ़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। सिफ्त सालाही सुणाए गाथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ाइंदा। वसणहारा आपणे घाट, पार किनारा ना किसे जणाइंदा। जुग चौकड़ी मेटणहारा वाट, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलणहारा साचा हरि, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। लख चुरासी पाई नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सुणाई गथ, रसना जिह्वा मेल मिलाईआ। बत्ती दन्द ना सकण दस्स, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। साध सन्त जीव जहान नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप उच्चे टिल्ले पर्बत रहे नठ्ठ, बण पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ आपणा अंक बणाईआ। दूआ दूई धार, धरनी धरत धवल जणाइंदा। भेव खोल्ह तेई अवतार, भेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। शास्त्र सिमरत करन पुकार, उच्ची कूक कूक अल्लाइंदा। वेद व्यासा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, नैण नैण नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव एका एक, इक इकल्ला आप जणाईआ। भगत भगवन्त दे टेक, इष्ट दृष्ट आप वखाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला बुद्धि करे बबेक, ववेकी आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ दए वड्याईआ। एका दूआ ईसा मूसा रंग, गल अल्फ़ी एका पाइंदा। शहिनशाह सूरा सरबँग, भेव अभेद आप जणाइंदा। मुकामे हक़ वजाए मृदंग, मर्द मर्दाना आप अख्वाइंदा। मुहम्मद देवणहारा संग, सगला संग आप निभाइंदा। चौदां तबक वेखे लँघ, सबक इक्को इक पढ़ाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद अन्त मंगी इक मंग, दोए दोए जोड़ सीस सर्ब झुकाइंदा। अन्तिम होई नंगी कंड, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। नेत्र रोवे कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड सार ना कोए पाइंदा। कलिजुग अन्त अन्धेरा

होणा अन्ध, चारों कुण्ट साचा नूर ना कोए रुशनाइंदा। कम्म ना आए चौधवीं चन्द, चौदस चन्द ना कोए चमकाइंदा। तुध बिन परवरदिगार टुट्टी देवे ना कोई गंढु, गंढुणहार नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ इक्को इक जणाइंदा। एका दूआ एकँकार, ओंकार दया कमाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, सरगुण नानक मेल मिलाईआ। सरगुण नानक तन शृंगार, निरगुण नानक जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण नानक शब्दी कार, साचा सोहला इक्को गाईआ। निरगुण नानक प्रनाया कन्त भतार, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे माण वड्डी वड्याईआ। वस्त अमोलक झोली डार, नाम सति इक रखाईआ। एका जोती खेल अपार, गोबिन्द आपणी गोद बहाईआ। पुरख अकाल होया ख़बरदार, बेख़बर आपणी ख़बर सुणाईआ। सबर प्याला दित्ता प्याल, मतिवाला इक्को हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका दूआ सिफ्त सालाहीआ। नानक दूआ निरगुण रंग, निरगुण नानक वेख वखाया। सचखण्ड निवासी सच पलँघ, पुरख अबिनाशी इक हंढाया। ग़रीब निमाणा मंगे मंग, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। सतिजुग त्रेता द्वापर गए लँघ, कलिजुग वेला अन्तिम आया। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग दे होए नंग, सगला संग ना कोए रखाया। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, भाण्डा भरम ना कोए भंनाया। कोई ना देवे आत्म परमात्म परमानंद, निजानंद रस ना कोए चखाया। कोई ना गाए सुहागी छन्द, गोबिन्द मेल ना कोए मिलाया। सुरत सवाणी होई रंड, शब्दी कन्त ना कोए हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक सुहाया। दर तेरा सोभावन्त, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। आदि जुगादी एका कन्त, लख चुरासी सेज हंढाणा। जुग जुग देवे मंत, मंत्र नाम इक समझाणा। तोड़नहारा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप पछाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सो पुरख निरँजण होए आप मेहरवाना। सो पुरख निरँजण दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग जुग करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी चलणहारा नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे कमाल, पारब्रह्म वड वड्याईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप गृह मन्दिर वेखे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे फेरा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा रूप धराईआ। लहिणा देण चुकाए काल महाकाल, महाबली वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप समझाईआ। साचा भेव श्री भगवाना, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। प्रगट होवे योद्धा सूरबीर बली बलवाना,

बल आपणा आप धराइंदा। दो जहानां मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। आपणा नाउँ रखे निरँकार, निहकलंक वज्जे वधाईआ। मात पित ना कोए आधार, भाई भैण ना कोए वखाईआ। साक सैण ना कोए संसार, पुत्तर धी ना कोए जणाईआ। भगत भगवान करे प्यार, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। साचे सन्तां लए उठाल, गुरमुखां आपणा पर्दा लाहीआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग क्रिया कर बेहाल, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर लए उठाल, गोबिन्द नेत्र दए वखाईआ। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, दूए नाल सिफ़रा आपे लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना पाईआ। शास्त्र सिमरत होए हैरान, अञ्जील कुरान ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ सिफ़रा जोड़ जुड़ाईआ। दूआ सिफ़रा मिल्या मेल, मेलणहार आप अख्वाइंदा। शब्द गुरू लख चुरासी कूड़ कुड़यारी चाढ़े तेल, पहली चेत्र सगन मनाइंदा। गुरमुखां मेला हरि जू साचे सज्जण सुहेल, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ सिफ़रा जोड़ जुड़ाइंदा। दूआ सिफ़रा जुड़या जोड़ा, हरि सतिगुर आप जुड़ाईआ। गुर गोबिन्द चढ़या साचे घोड़ा, घोड़ा नज़र किसे ना आईआ। नीली धारों बाहर मारे पौड़ा, सुम्ब इक्को इक हिलाईआ। सब नूं नजरी आए ब्रह्मण गौड़ा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई वेखण कर के गौरा, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। करे बिध अवर की औरा, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ी क्रिया रहि जाए झोरा, सगला संग ना कोए रखाईआ। अगला वक्त रहि गया थोड़ा, थोड़ा कर कर रिहा मुकाईआ। सस्से उपर लाया होड़ा, नानक सतिगुर गया समझाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी सुणे खलक खुदाईआ। दो जहान फिरे दौड़ा, ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। दूआ सिफ़रा बीस बीस एको वरका रखे कोरा, उत्ते हरफ़ ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बीस दए बणाईआ। एका बीस सुहाए बीसा, बीस बीस नाल वड्याईआ। प्रगट होवे हरि जगदीशा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां खाली करे खीसा, दर दर घर घर आप मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बीस बीसा चढ़े जग, जगजीवण दाता आप जणाइंदा। जन भगतां दर्शन देवे उपर शाह रग, निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। मनमुखां त्रैगुण अग्नी लाए अग्ग, नौ खण्ड पृथमी तत्त ना कोए बुझाइंदा। कूड़ी क्रिया होए कग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। वीह सौ वीह पन्द्रां

८३
१३

कत्तक किसे नूं लौण ना देवे अज पज, जो घड़या भन्न वखाइंदा। निरगुण दाता पुरख बिधाता दिली तख्त बहे सज, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गोबिन्द ख़ालसा पन्थ पए गज्ज, दो जहानां गूंज अल्लाइंदा। ग़रीबां निमाणयां पर्दा देवे कज्ज, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणी गोद उठाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले इक दवारे बहिण सज, साचा मन्दिर इक वड्याइंदा। नाता तुटे मक्का काअबा हज्ज, हुजरा होर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ वीह खेल कराइंदा। वीह सौ वीह खेल न्यारा, हरि निरँकारा आप कराईआ। गोबिन्द लेखा लिख के गया लिखारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पुरख अकाल बणया वणजारा, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। दहि दिशा होवे हाहाकारा, गुरमुख विरला हरि हरि नाम ध्याईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी ग़ारा, समुंद सागर फोल फुलाईआ। इक्को ख़ालस ख़ालसा करे न्यारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सच सुच्च सच विहारा, सति सतिवादी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा लेखा दए चुकाईआ। बीस बीसा आए मात, मात्र भूमी वेख वखाइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, घर इक्को इक सुहाइंदा। पुरख अकाल सारे मिल के गौण गाथ, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। गुर गोबिन्द सतिगुर पूरा वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। नानक निरगुण देवे दात, सरगुण झोली आप भराइंदा। हरि जू आपणा कम्म अन्तिम करे ख़ास, सब दी ख्वाहिश पूर वखाइंदा। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। सीता राम करे दास, कोटन कोटि राम सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद चौदां तबक मिले बणवास, सदी चौधवीं पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करने योग, एकँकार इक अख्वाईआ। लहिणा देण मुकाए चौदां लोक, चोदां विद्या भेव चुकाईआ। चौदां तबक देवे झोक, हुक्मी हुक्म इक सुणाईआ। हरि का भाणा सके ना कोई रोक, गुर अवतार पीर पैगम्बर लख लख शुकर मनाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वध गई बहुत, गुर का शब्द ना कोए ध्याईआ। जगत वासना होए मोहत, मन का मणका ना कोए भवाईआ। कलिजुग जीव आहलणयों डिगे बोट, बिन सतिगुर पूरे फेर ना कोए उठाईआ। गुर गोबिन्द कह के गया पुरख अकाल रखो एका ओट, आदि जुगादि होए सहाईआ। सचखण्ड निवासी निर्मल जोत, वरन बरन ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त बणाए ओत पोत, पूत सपूता गोद सुहाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक गुरमुखां उत्ते होवे आप मोहत, आपणी भेंटा आप चढ़ाईआ। रसना जिह्वा नौ खण्ड सारे गायण होंट, हौली हौली दए जणाईआ। रातीं सुत्यां सब दे अन्दरों कढ्ढे खोट, आपणी दया आप कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन कलिजुग अन्तिम वेला करो होश, वेला गया हथ्थ ना आईआ।

८४
१३

नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा ख़ामोश, सो संदेसा रिहा सुणाईआ। जिस दा दर्शन रहे लोच, सो लोचण दर्शन दए कराईआ। गुर शब्द सारे करो खोज, गुर शब्दी बूझ बुझाईआ। गुर नानक गोबिन्द नाल मिल के माणो मौज, सचखण्ड मिले वड्याईआ। दूए नाल चुक्की दूज, सिफ़रा इक्को इक खुदाईआ। दूजे दूए होए बूझ, आप आपणा पर्दा लाहीआ। चौथा अक्खर चौथा सिफ़रा भेव खुलाए गूझ, ज्ञान नेत्र इक दृढ़ाईआ। बिन खंडिउँ जाणा झूझ, आत्म परमात्म भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ वीह बिक्रमी देवे माण वड्याईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी देवे माणा, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, सिर ताज ना कोए टिकाइंदा। जन भगतां देवे इक ध्याना, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। हरिजन साचा सुघड़ स्याणा, गुर सतिगुर दर्शन पाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी परम पुरख पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ होए प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। एका हुक्म देवे धुर फ़ुरमाणा, नौ खण्ड पृथ्मी आप जणाइंदा। वीह सो इक्की झुल्ले सत्त रंग निशाना, सत्तां दीपां हुक्म मनाइंदा। वाहवा खेल करे भगवाना, भगवन आपणा राह चलाइंदा। कोई भेव ना जाणे जीव जहाना, मन मति बुध अन्त कोए ना आइंदा। गुरसिखां गुरमुखां गुर सतिगुर देवे नाम निधाना, निज आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी सृष्ट सबाई करे परवाना, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। गुरमुख सखीआं मिल मिल मंगल गाणा, गा गा मंगल घर घर शुकर मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां अग्गे आपणा सीस निवाइंदा।

❈ ६ मग्घर २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भुम्बली ज़िला गुरदास पुर ❈

साची सोच धुर वस्त, जन भगतां झोली पाइंदा। लहिणा देणा देवे दस्त बदस्त, दीन दयाल दीनां नाथ दया कमाइंदा। लेखा चुकाए कीट हस्त, नीच ऊँच रंग रंगाइंदा। दिवस रैण रहिण मस्त, नाम मस्ती इक चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साची सोच जन भगतां झोली डाल, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद बणया सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग साची वस्त रखी संभाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर ना किसे वरताईआ। कलिजुग अन्त जन भगतां पिच्छे घाले आपणी घाल, बण सेवक सेव कमाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत जगत जणाईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, महाकाल आपणा

हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साची सोच भगतन गंढु, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण पाए ठंड, सांतक सति सति कराइंदा। आत्म परमात्म इक अनन्द, निजानंद रस चखाइंदा। जोती नूर साचा चन्द, चन्द चांदना इक रखाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा इक्को नाम उठाइंदा। लेखा चुकाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा वेख वखाइंदा। सोहँ ढोला सुणाए साचा छन्द, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, आवण जावण लेखे लाइंदा। नज़र ना आए जगत नेत्र अन्ध, लख चुरासी भरम भुलाइंदा। पुरख अकाल सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना कोए बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची वस्त हरि भगत दुआर, भगवन आपणे आप रिहा वरताईआ। जिस दी सोच सोच ना सके गुर अवतार, पीर पैगम्बर अन्त कहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी गा गा गए वार, वारता लोकमात सुणाईआ। माणस जन्म गए हार, हरि का भेव कोए ना आईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह पुकार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। सोचयां सोच विच ना आए निरँकार, निरगुण दाता वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम हो ख़बरदार, जन भगतां साची ख़बर आप सुणाईआ। आओ वेखो जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बद्धे चरणां नाल, चरण चरणोदक इक वखाईआ। जन भगतां पिच्छे होया आप बेहाल, बिहबल आपणा रूप वटाईआ। सचखण्ड निवासी मारी इक्को छाल, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, भगतन मीता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण बण वणजारा, सतिगुर साचा हट्ट खुल्हाइंदा। वस्त अमोलक नाम थारा, थिर घर वासी आप टिकाइंदा। तोलणहारा परवरदिगारा बेपरवाह दया कमाइंदा। वंडणहारा अगम्म अपारा, अलख अगोचर अथाह राह चलाइंदा। वेखणहारा सर्ब संसारा, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। देवणहारा चरण प्यारा, हरिजन साचे आप जगाइंदा। आत्म अन्तर कर उज्यारा, जगत बसन्तर अग्न बुझाइंदा। एका मंत्र सोहँ नाम जैकारा, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी हुक्म मनाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, विष्न ब्रह्मा शिव भेव ना पाइंदा। गुर अवतार करन निमस्कारा, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाइंदा। महाबली इक अवतारा, आदि जुगादी वेस वटाइंदा। सचखण्ड वसे धाम न्यारा, निहचल आपणा आसण लाइंदा। नाद अनादी बोल जैकारा, शब्दी शब्द राग सुणाइंदा। पवण पवणी इक हुलारा, अवण गवण फेरा पाइंदा। तन्द तार ना कोए सतारा, सति सतिवादी हुक्म

जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त जन भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। भगतां देवे हरि जू दात, दाता दानी दया कमाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां पुछण आया वात, बिन सद्दयां घर घर फेरा पाईआ। दिवस रैण रैण दिवस सज्जण सुहेला गावे गाथ, गा गा आपणा शुकर मनाईआ। चार जुग जिस दी किसे ना आई हाथ, पार किनारा ना कोए वखाईआ। सो जन भगतां बणया दास, चाकर चाकरी इक कमाईआ। तन माटी कीता ख़ाक, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। निरगुण जोत सज्जण साक, हरि शब्द वज्जे वधाईआ। सच रसूल पाकी पाक, नबी आपणा फेरा पाईआ। चौदां लोक दए तलाक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। दो जहान सुणाए एका आयत, शरीअत इक्को इक समझाईआ। प्रगट होया साख्यात, साहिब सतिगुर सच्चा माहीआ। जन भगत बणाए पारजात, सिंमल रुक्ख ना कोए वखाईआ। देवणहारा इक्को दात, नाम नामा झोली पाईआ। लेखा जाणे पत्तण घाट, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। अन्त मुकावण आया वाट, पांधी कोए रहिण ना पाईआ। सच वखाए इक्को खाट, आत्म सेजा सोभा पाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास, स्वासां रिहा समाईआ। दिवस रैण रैण दिवस आत्म परमात्म करे भोग बलास, ब्रह्म पारब्रह्म धुर संजोगी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतारा, हरि करनी आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, कलिजुग अन्तिम फेरा पाइंदा। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख भेख ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड सुहाए इक दवारा दरगाह साची आसण लाइंदा। कलिजुग अन्त हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। सति सतिवादी बोल जैकारा, जै जैकार इक्को नाम सुणाइंदा। चार वरनां दए अधारा, चारे खाणी चारे बाणी मेल मिलाइंदा। रागां नादां वसे बाहरा, छत्ती राग भेव ना पाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखणा वेस वटाइंदा। खोल्ले ताक इक कवाड़ा, दो जहानां कुण्डा लाहइंदा। चौदां तबकां पावे सारा, चौदां लोक भेव चुकाइंदा। चौदां विद्या करे ख्वारा, चारों कुण्ट फोल फुलाइंदा। दहि दिशा देवे इक सहारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण मण्डल मण्डप आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्द सतारा, सतह आपणी ना किसे समझाइंदा। जुग चौकड़ी लै अवतारा, निरगुण सरगुण सेवा लाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण आया पहली वारा, सरगुण चोला ना कोए हंढाइंदा। मंगण ना जाए किसे दुआरा, ख़ाली झोली ना कोए वखाइंदा। देवणहार सर्ब संसारा, सति भण्डारा आप वरताइंदा। बोलणहारा नाम जैकारा, नाम निधाना आप उपजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखणहार अखाड़ा, जुग चौकड़ी नाच नचाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सति सतिवादी पुरख

अकाल इक्को लाड़ा, सीस जगदीश इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे आप, घर आपणे खुशी मनाईआ। जन भगतां बणे माई बाप, पिता पूत दए वड्याईआ। इक्को मंत्र इक्को पाठ, पूजा इक्को इक समझाईआ। इक सरोवर मारे ठाठ, अठ्ठसठ्ठ बैठे मुख शरमाईआ। इक्को देवणहारा दात, दयावान इक हो जाईआ। इक्को पुछणहारा वात, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार बैठे इक जमात, दूसर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। हरि हरि दर्शन साख्यात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा चुके उहला, आलम उल्मा भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल बदले चोला, चोली रंग ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देंदा रिहा माण लोकमात कला सोल्ह, सोलां कल आपणे चरणां हेठ दबाइंदा। चार जुग खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी पवाउदा रिहा रौला, आपणा भेव ना किसे खुल्हाइंदा। कोई कूके इक्को मौला, मौला हथ्थ किसे ना आइंदा। गुर अवतारां नाल करदा रिहा कौला, कीता कौल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर वेस वटाइंदा। कीता कौल दस्से निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। हर घट वसे विच संसार, घर घर बैठा डेरा लाईआ। वेखणहारा रैण अन्धेरी मस्से अन्ध अँध्यार, कूड़ कुड़यारा वेख वखाईआ। पावे सार धूंआँधार, धुँदूकार दए मिटाईआ। ग़फ्लत विच ना आए परवरदिगार, बेपरवाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सोच बिन सोचयां भगतां हथ्थ फड़ाईआ। साची सोच झोली पा, झूला आपणे नाम लगाइंदा। सतिगुर निरगुण बणया आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। अग्गे पिच्छे फिरे खुदा, खुद आपणी सेव कमाइंदा। रहबर बणया बेपरवाह, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। सच ख़ताब दए दिवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साची सोच पल्ले बन्न्ह, जन भगतां दए वड्याईआ। धुरदरगाही साचा धन, धन ख़ज़ीना इक लुटाईआ। एथे ओथे कोई ना देवे डंन, राए धर्म बैठा सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त चढ़ाए चन्न, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। सति पुरख निरँजण बेड़ा दित्ता बन्न्ह, बन्न्ह बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जन भगतां चुकावण आया लेखा, आपणा लेखा भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। ग़रीब निमाणयां निउँ निउँ करे आप आदेसा, आपणा सिर जन भगतां भेंट चढ़ाइंदा। रूप धरया मुछ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आइंदा। जिस दुआरे कोटन कोटि खलोते ब्रह्मा विष्न महेषा, महिफ़ल आपणी इक लगाइंदा।

करनहारा साचा हेता, नित नवित्त फेरा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल खेडदा रिहा खेडां, निक्की निक्की खेड आप जणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से हाल, अहिवाल ना कोए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा इक वजाईआ। अन्तिम दिसे ना कोए दलाल, जगत दलाली ना कोए वखाईआ। फल ना दिसे किसे डाल, पतझड़ वेखे थाउँ थाईंआ। गुरमुखां वसे आप नाल, नाम आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल दस्सण आया, सो पुरख निरँजण मीत। त्रैगुण माया पर्दा लाहया, नजरी आया इक अतीत। आपणा मार्ग आप वखाया, सोहँ ढोला गाओ गीत। जन्म मरन दा दुःख मिटाया, सतिजुग चलाई साची रीत। घर विच घर दए दिखाया, नाता तुटे मन्दिर मसीत। आत्म परमात्म दए मिलाया, परखणहारा लख चुरासी नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हस्त कीट। हस्त कीट वेखे आप, हरि आपणी दया कमाईआ। चार वरन दा इक्को जाप, रसना जिह्वा दए समझाईआ। आत्म परमात्म सच्चा पाठ, पूजा इक्को इक वखाईआ। सर सरोवर घर मन्दिर वखाए ताट, अमृत इक्को ताल भराईआ। निर्मल जोत जगाए ललाट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। नाता तुटे आन बाट, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। लख चुरासी मुक्के वाट, जूनी जून ना कोए भुआईआ। लेखा चुकाए धुर मस्तक माथ, लहिणा देणा झोली पाईआ। मेल मिलावा साचे नाथ, अनाथां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सोच विचार, बिन सोचयां आप जणाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दरबारी फेरा पाइंदा। हिस्सा वंडे विच संसार, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। गुरमुखां लेखा झोली देवे डाल, पूरब लहिणा आप मुकाइंदा। दो जहानां बणे दलाल, एथे ओथे सेव कमाइंदा। लेखे लाए पंज तत्त काया माटी खाल, खालक आपणे रंग रंगाइंदा। शब्द अनाद वजाए ताल, धुन अनादी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाइंदा। कर किरपा वेखे नरायण नर, निज घर आपणा फेरा पाईआ। आत्म परमात्म ख्ोल दर, दर दरवाजा कुंडा लाहीआ। सति प्रकाश इक्को धर, अज्ञान अन्धेर दए चुकाईआ। स्वच्छ सरूपी अग्गे खड़, दरसी दरस आप वखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी एका पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा बहे चढ़, सच सिँघासण डेरा लाईआ। सुरत सवाणी लए फड़, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। आप वसाए साचा घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। साचा घाड़न आपे घड़, घड़ घड़ वेखे चाईं चाईंआ।

८९
१३

आप बंधाए आपणे लड़, पल्लू एका गंढु पुआईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। माणस जन्म ना जाए हर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। सेवा करे दर दर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। वस्त अमोलक इक्को धर, धरनी धरत धवल दए सुहाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल वखाईआ। कलिजुग अन्तिम किला तोड़ हँकारी गढ़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर आपणा नाम वखाईआ। वर दाता श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। वेखणहारा सच निशान, सच सुच्च नाल मिलाइंदा। बणावणहारा सति विधान, विद्दत आपणा भेव चुकाइंदा। अख्खावणहारा इक्को काहन, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। गवौणहारा इक्को राम, रमईया आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाइंदा। आपणा खेल रच निरँकार, निरगुण आपणी धार चलाईआ। कलिजुग अन्त हो तैयार, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। गुर अवतारां सुरत संभाल, पीर पैगम्बरां आप उठाईआ। अन्तिम लेखा सब नूं दए वखाल, बचया कोए रहिण ना पाईआ। दीन मज़्ब होए बेहाल, चारों कुण्ट कुण्ट लड़ाईआ। साची सिख्या कोई ना सके सिखाल, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। दूई द्वैती चली चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। साचा खेल करे अन्तिम जुग, जुग चौकड़ी आप मिटाइंदा। कलिजुग औध गई पुग, वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी कूड़ी चोग लई चुग, अन्तिम लेखा आप मुकाइंदा। किसे संग ना जाए कुछ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार इक दूजे नूं रहे पुछ, हरि जू की की खेल वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जो बैठा रिहा लुक, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। सति सरूप शाहो भूप, शेर हो के रिहा बुक्क, दो जहानां भबक लगाइंदा। लख चुरासी डरदा बूटा रिहा सुक्क, सुकया हरा ना कोए कराइंदा। धरत मात दी ख़ाली करे कुख्ख, जन जननी वेख वखाइंदा। जन भगतां मेटे विछोड़ा दुःख, आप आपणा मेल मिलाइंदा। दर्शन दे दे मेटे तृष्ना भुक्ख, भुख्यां भुक्ख आप गवाइंदा। सोचयां कोई ना सके सोच, सोच विच कदे ना आइंदा। हरि का भाणा कोई ना सके रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। ढावणहारा किला कोट, बंक दवारा इक वखाइंदा। जिस मन्दिर प्रगटाए निर्मल जोत, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर इक्को इक अख्वाइंदा। इक्को नर नर नरायण, नारी वेखे सर्ब लोकाईआ। रसना कोई ना सके कहिण, कह कह अन्त कोए ना पाईआ। बिन भगवन्त दरस ना पेखे कोई नैण, कबीर जुलाहा दए गंवाईआ। लेखा जाणे नुक्ता ऐन ग़ैन, ऐन आपणा रूप समझाईआ।

लहिणा देण चुकाए साक सज्जण सैण, सैण इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। साची वस्त नाम अमोलक, अनमुल्ली झोली पाइंदा। आप टिकाए काया गोलक, त्रैगुण उत्ते पर्दा पाइंदा। शब्द वजाए अगम्मी ढोलक, ढोला आपणा राग सुणाइंदा। आपे बणया रहे अनबोलत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। आदि जुगादि सदा अनडोलत, डुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्को वर, वर इक्को नाम वखाइंदा। इक्को नाम हरि गुणवन्त, गुरमुख झोली पाईआ। होए धनाढ वडा धनवन्त, दर मंगण किसे ना जाईआ। आत्म परमात्म मणीआ मंत, मन वासना दए मुकाईआ। मेल मिलाए हरि जू कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तुटे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म मम ना कोए चतुराईआ। मेल मिलाए साची संगत, हरिसंगत रूप समाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ियां हथ्थ किसे ना आईआ। करे खेल बार अनक, अनक कल आप वरताईआ। लेखा जाणे सन्त सुहेले जिउँ जन जनक, जन आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां करे आप परख, बण बण पारखू फेरा पाईआ। पारखू बण लाए कसवटी, कसवटी आपणा नांउँ रखाइंदा। गुरमुख किसे तोल ना तुले तकड़ी सेर वट्टी, चौदां भार ना तुल रखाइंदा। गुरमुख नाम किसे ना मिले हट्टी, चौदां लोक सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप सालाहइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, धुर दी सोच जन भगतां विच रखाइंदा ।

❊ १० मग्घर २०१६ बिक्रमी चानण शाह नाल गोष्ट भुम्बली ज़िला गुरदास पुर ❊

कवण दुआरे होए सतिसंग, सतिगुर बैठा आसण लाईआ। कवण दुआरे चढ़े रंग, रंग उतर कदे ना जाईआ। कवण सेज सोहे पलँघ, कवण कन्त रिहा हंढाईआ। कवण मन वासना करे खण्ड, खण्डा खड़ग नाम हथ्थ उठाईआ। कवण देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ । कवण सुणाए सुहागी छन्द, बिन रसना जिह्वा गाईआ। कवण लहिणा देणा चुकाए जीउ इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे शनवाईआ। कवण नाता तोड़े बत्ती दन्द, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। कवण लेख चुकाए भेख पखण्ड, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। कवण दुआरे अग्गे जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। कवण दुआरे चढ़े साचा चन्द, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। कवण गृह मिले सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण आसण लाईआ। चानण शाह क्यों दिती कंड, कन्ढा वेखण आया सच्चा माहीआ। सुरत दुहागण होई रंड, कन्त कन्तूहल नज़र

ना आईआ। आत्म नेत्र दिसे अन्ध, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। रसना जिह्वा जगत डण्ड, डंका डोरू रही वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल कर, पुछण आया इक्को घर, कवण मन्दिर निरगुण बैठा आसण लाईआ। कवण दुआर शब्द धुनकार, धुन अनादी नाद वजाइंदा। कवण घर निर्मल जोत करे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। कवण दुआर साहिब सतिगुर वसे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता डेरा लाइंदा। कवण गृह सति पुरख निरँजण करे खेल तमाश, सचखण्ड दुआरा एकँकारा निरगुण धारा वेस वटाइंदा। कवण रूप शाहो भूप पूरी पूरन करे आस, आसा तृष्ना ना कोए वधाइंदा। चानण शाह आपणी मंज़ल दस्सणी ख़ास, ख़ुलासा हरि जू पुच्छ पुछाइंदा। कवण वस्त रखी पास, काया चोले बंद कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक्को घर, काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर खोज खुजाइंदा। आपणा आप दस्स हाल, हालत हरि जू पुच्छ पुछाईआ। कवण रूप खेल करे काल, नव नौ फेरा पाईआ। कवण लेखा जाणे महाकाल, महाबली वड वड्याईआ। कवण दुआरे गुर शब्द मिले दलाल, सच दलाली इक कमाईआ। कवण दुआरे जोत निरँजण दीपक देवे बाल, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। कवण दुआरे सच वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साधां सन्तां जीवां जंतां अन्दर बाहर जाणे चाल, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। आपणी मंज़ल देणी दस्स, दहि दिशा वेख वखाइंदा। कवण दुआरे सुरती रही वस, वेस अवेस कवण कराइंदा। कवण कूटे रिहा नस्स, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छण आया इक्को घर, जिस मन्दिर गृह अन्दर प्रकाश, शब्द जोत खेल कराइंदा। जोत शब्द कवण धार, कवण घर मिले वड्याईआ। कवण बिध मिले मीत मुरार, परम पुरख बेपरवाहीआ। आलस निंद्रा कर ख्वार, जागत सोवत एका रंग वखाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैख़री कर ख्वार, आत्म परमात्म भेव अभेद जणाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म खोल्ह किवाड़, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। नूर इलाही परवरदिगार, जलवा हक़ दए जणाईआ। शनाख़त करे अगम्म अपार, साख्यात आपणा रूप वटाईआ। सो सतिगुर पूरा सच्चा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। रसना जिह्वा करे ना कोई कल्याण, बोलत बोल ना कोए सुणाईआ। काया वेखे सच म्यान, साचा खण्डा इक वखाईआ। कवण दुआर मिले भगवान, सच सिँघासण बैठा आसण लाईआ। चानण शाह देणा आपणा आप ब्यान, भेव अभेद खुल्हाईआ। पुच्छणहारा ना बणया अंञाण, हर घट जाणे थाउँ थाईंआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, निरगुण दाता पुरख बिधाता बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछण आया इक्को घर, जिस घर सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, हरि सतिगुर

मिल मिल मिल खुशी मनाईआ। घर विच घर घर कवण सुहाग, कवण खेल कराईआ। कवण नाद शब्द धुन राग, कवण गीत गोबिन्द अल्ढ़ाईआ। कवण ताल तलवाड़ा वजाए साज, साजण आपणी सेव कमाईआ। कवण रखणहारा लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कवण खोल्ढ़णहारा पाज, पर्दा आपणा ना कोए जणाईआ। जिस नूं कहिन्दे गुरू महाराज, सो गुर शब्द वसे कवण थाईंआ। जिस दी कन्नां नाल सुणी ना जाए आवाज़, कवण हुजरे बांग अल्ढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखण आया सन्त समाज, जगत भाग वंड वंडाईआ। आदि जुगादी इक्को सतिगुर, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। दरगाह साची बैठा धुर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। शब्दी सुरती रिहा जुड़, मूर्त अकाल बेपरवाहीआ। अठ्ठे पहर चढ़या रहे घोड़, दो जहानां चरणां हेठ दबाईआ। लख चुरासी वेखणहारा रीठा मिठ्ठा कौड़, आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर रिहा बौहड़, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। जिस दुआरे साध सन्त कोटन कोटि, रहे दौड़, दौड़यां हथ्थ किसे ना आईआ। सो साहिब सतिगुर इक्को वेख्या कर के ग़ौर, दूसरे वल अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को गुर गुर सतिगुर आप हो जाईआ। जवाब वलों लाजवाब, रुहानीअत कम्म किसे ना आईआ। जिस दा लैंदे रहे ख्वाब, सो ख्वाब विच दरस देण ना आईआ।
६३
१३
काया ख़ाली दिसे महिराब, महिबूब बैठा मुख छुपाईआ। मन वासना वज्जे रबाब, मति मतिवाली तन्दी तन्द रखाईआ। लेखा मंगे हक़ जनाब, हकीकत पर्दा आपणा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। एथे अन्त कोई ना रिहा, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर गए फेरा पाईआ। अन्त काल पंज तत्त काया बुरज सब दा ढहया, ढह ढह ढेरी ख़ाक मिलाईआ। प्रभ का भाणा सब ने सहया, सिर सिर हुक्म मनाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अकाल इक्को आपणे जिहा आपे रिहा, लख चुरासी जुग जुग काल फास लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे वसे आपे घर, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त जुग चौकड़ी गेड़ा गेड़े नाल भुआईआ। आत्म ब्रह्म पंज तत्त वसे, ईश जीव खेल कराइंदा। मन वासना जीव फसे, सृष्ट सबाई नाच नचाइंदा। गुरमुख विरला सतिगुर दुआरे बहि बहि हस्से, मिल सतिगुर खुशी मनाइंदा। सतिगुर पूरा तीर निराला इक्को कसे, नाम चिला हथ्थ उठाइंदा। जगत विकारा फड़ फड़ झस्से, आसा तृष्ना माया ममता हउमे हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्त कलिजुग सन्त लए फड़, नाम डोरी हथ्थ उठाइंदा ।

❇ १० मग्घर २०१६ बिक्रमी जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला गुरदास पुर ❇

सचखण्ड दुआर सच्चा शहिनशाह, सो पुरख निरँजण बैठा ध्यान लगाईआ। दो जहानां वेखे थाउँ थाँ, थिर घर वासी आपणा कुण्डा लाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरला, नाअरा इक्को इक लगाईआ। पीर पैगम्बर मारन धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार रहे ध्या, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी गए विहा, कोटन कोटि काल बिताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर ल्या हंढ्ढा, कलिजुग खेल वड वड्याईआ। तेरा लेखा कोई लिख सके ना, लिख्त विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। सचखण्ड निवासी शाह पातशाह, शहिनशाह आपणा आसण लाइंदा। निरगुण सरगुण वेखणहारा राह, बेपरवाह खेल कराइंदा। आदि जुगादी वड मलाह, खेवट खेटा नाउँ रखाइंदा। धुर फ़ुरमाणा हुक्म जणा, सच संदेसा इक मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड निवासी रंग अपारा, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। एकँकारा कर पसारा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। आदि निरँजण नूर उज्यारा, रवि ससि दए रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठांडा दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। अबिनाशी करता दए हुलारा, साचे हुजरे सोभा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगारा, नूरी जलवा नूर इलाहीआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, आपे जाणे आपणी कारा, करनी आपणी आप कमाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, निहचल बैठा डेरा लाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सारा, महासार्थी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणी धार आप चलाईआ। साची धार पुरख निरँजण, सो आपणी आप चलाइंदा। दाता दानी दुःख दर्द भय भंजन, भव सागर वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण देवणहारा साचा मजण, सरोवर इक्को इक नुहाइंदा। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी सति सतिवादी एका सज्जण, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। सचखण्ड दुआरे सोभनीक, सति सतिवादी वड वड्याईआ। आदि जुगादी लाशरीक शिरकत विच कदे ना आईआ। वसणहारा दूर नज़दीक, नेरन नेर पन्ध मुकाईआ। आपणा भाणा वरते ठीक, ठोकर सब नूं रिहा लगाईआ। सदा सुहेला इक अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। आत्म परमात्म दस्सणहार प्रीत, सच प्रीती इक समझाईआ। परखणहारा लख चुरासी नीत, निज घर बैठा डेरा लाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, राज राजानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा इक वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा वड वडेरा, नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख

अबिनाशी करनहारा मेहरां, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सरगुण सरगुण बन्नूणहारा बेड़ा, निरगुण निरगुण आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच महल्ला आप उपाइंदा। सच महल्ला सोभावन्त, सति सतिवादी आप उपाईआ। आदि जुगादि महिमां अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। पुरख अकाल नार कन्त, अजूनी रहित सेज सुहाईआ। एकँकारा मणीआं मंत, मंत्र इक्को नाम दृढ़ाईआ। बणावणहारा साची बणत, घड़न भंनणहार समरथ पुरख, पुरख पुरखोतम आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अवल्ला, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। दरगाह साची इक इकल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग फड़ावणहारा नाम पल्ला, पल्लू इक्को इक प्रगटाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणा खेल कराइंदा। दीप प्रकाश आपे बला, तेल बाती ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआर साचे चढ़, हरि नीकन नीक ध्यान लगाईआ। महल अटल आपे खड़, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। निर्मल जोत प्रकाश आपे धर, दो जहान करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। बोध अगाध निष्अक्खर आपे पढ़, गुर अवतार पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। लख चुरासी लावणहारा
९५
१३
जड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। माही वसे सचखण्ड, नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी वंडे वंड, गुर अवतार सेव लगाइंदा। पीर पैगम्बर चाढ़ चन्द, निरगुण सरगुण आप चमकाइंदा। दीन मज़्ब रखे कंध, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। सति सुहाग सुणाए छन्द, ब्रह्म ब्रह्माद नाद वजाइंदा। वसणहारा साची सेज पलँघ, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची कार कमाइंदा। साची कार करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। दो जहानां पावे सारा, चौदां लोक भेव चुकाईआ। चौदां तबक दे हुलारा, दूई पर्दा इक उठाईआ। अवण गवण इक नज़ारा, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्त कहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर ठांडे करन निमस्कारा, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आउँदा रिहा वारो वारा, नित नवित्त वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दआरे साचे चढ़, साचे तख्त आसण लाईआ। साचे तख्त आसण लाया, रहबर नज़र किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाया, उच्ची

कूक कूक सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे गाया, गा गा शुकर सर्ब मनाइंदा। खण्ड ब्रह्मण्ड चरण कँवल ध्यान रहे लगाया, नेत्र नैण दरस कोए ना पाइंदा। रवि ससि रहे शरमाया, चन्द चांदना कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। डेरा लग्गा सच दुआर, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। हरि पुरख निरँजण हो तैयार, त्रैभवन धनी आपणी खेल कराईआ। एकँकारा हो उज्यार, आदि निरँजण नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सुण पुकार, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां एका हुक्म जणाईआ। श्री भगवान चार जुग दे विछड़े लए उठाल, पूरब लेखा आप मुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म चले नाल नाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वेखे जगत धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त होए बेहाल, बिहबल रोवे सर्ब लोकाईआ। ना कोई सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दए ना कोए पैग़ाम, सच हदीस ना कोए पढ़ाईआ। चौधवीं चन्द ना कोए निशान, चौदां तबक ना कोए रुशनाईआ। नाता तुटा अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज ना कोए खुजाईआ। साचे हुजरे मिले ना मेहरवान, महवान बीदो नूर ज़हूर ना कोए दरसाईआ। मक्का काअबा होया हैरान, हज़रत बैठा मुख छुपाईआ। किसे कम्म ना आए जगत ईमान, अमानत सब दी आपणी झोली पाईआ। मुकामे हक़ नौजवान, हरि जू बैठा डेरा लाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर धुरदरगाही नूर इलाही सुणाए सच कलाम, कलमा आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। पीर पैगम्बरां वड अमाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, खण्डा इक्को नाम चमकाईआ। साचा खण्डा नाम कटार, हरि करता आप चमकाइंदा। जुग चौकड़ी वेखी विच संसार, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सारे मंगदे गए वारो वार, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। देवणहारा आप दातार, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण दाता पुरख बिधाता, नर हरि आपणा फेरा पाइंदा। मंगदे रहे मंग असीस, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर पढ़ाउदे रहे हदीस, तीस बतीस सोहला गाईआ। अन्तिम खेल करे जगदीश, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एका छत्र झुलाए सीस, दो जहानां सच्चा शहिनशाहीआ। सृष्ट सबाई जाए पीस, कलिजुग चक्की आप पिसाईआ। शाह सुल्ताना ख़ाली करे ख़ीस, माया राणी दए दुहाईआ। लहिणा देणा चुकाए बीस इकीस, बीस इकीसा आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, अन्दर बैठा मुख छुपाईआ। अन्दर बैठा हरि जू छुप, नज़र किसे ना आइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी रिहा

लुक, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण धार विच्चों फुट्ट, जोती जोत डगमगाइंदा। गोबिन्द सूरा मेले साचा सुत, जन जननी आप हो आइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चितवित ठगौरी ना कोए रखाइंदा। नाता तोड़े काया बुत्त, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों रिहा पुच्छ, दर घर साचे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक वसाइंदा। सचखण्ड दुआरा वसया एक, वसावणहार आप वसाईआ। आदि जुगादी साची टेक, निरगुण सरगुण रिहा समझाईआ। जुग चौकड़ी खेलया खेड, खिडारी आपणा राह चलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करदा रिहा हेत, अन्तर अन्तर जोड़ जुड़ाईआ। वेखणहारा काया खेत, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रुत्त बसन्ती वेखी चेत, चेतन आपणा रंग वखाईआ। नज़री आया नेतन नेत, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी करे कार, करता पुरख करनेहार, कुदरत कादर लए विचार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। ना कोई संगी ना कोई संग, सगला संग ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि सूरा सरबँग, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। गुर अवतारां चाढ़े रंग, पीर पैगम्बरां आप वड्याइंदा। गृह मन्दिर वजाए सच मृदंग, नाद धुन आप सुणाइंदा। कर प्रकाश चाढ़े चन्द, जोत निरँजण नूर रुशनाइंदा। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवाना, एका एक वरताईआ। कलिजुग अन्तिम पहरे बाणा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी गाए गाणा, चार वेद भेव ना राईआ। दो जहाना देवे धुर फ़रमाणा, विष्न ब्रह्मा शिव उठाईआ। सचखण्ड निवासी दर घर साचा कर परवाना, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वखाए इक मकानां, मक्का काअबा ना कोए चतुराईआ। शिवदुआला मठ्ठ गुरुदुआर ना कोए निशाना, निशाना इक्को नाम लगाईआ । योद्धा सूरबीर बली बलवाना, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। एथे ओथे मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे इक ज्ञाना, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। अठ्ठे पहर इक तराना, तुरीआ राग आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड आपणी सेवा लाईआ। साची सेवा आपे लग्ग, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ धराइंदा। वेखणहारा घट घट, गृह गृह आपणा पर्दा लाहइंदा। जन भगतां अन्दर आपे वस, रैण अन्धेरी मस्स मिटाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। आत्म परमात्म भोग बलास, घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम वेख

वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखे आप, अपरम्पर आपणी दया कमाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मन्नदे रहे बाप, परवरदिगार सच खुदाईआ। जिस नूं मुहम्मद करदा रिहा आदाब, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस नूं नानक कहिन्दा रिहा वड प्रताप, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह खुशी मनाईआ। जिस नूं गुर गोबिन्द पिता पूत बणाया सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। सो साहिब सतिगुर स्वामी निहकर्मी निहकामी, आदि जुगादी अन्तरजामी, शब्द अगम्मी बोल बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। कलिजुग कूड़ी मेटे निशानी, लेखा जाणे दो जहानी, गुरमुख मेले पद निरबाणी, चौथे पद मेल मिलाईआ। पिच्छे रहि जाए जगत कहाणी, ना कोई राजा ना कोई राणी, सुघड़ स्याणी कम्म किसे ना आईआ। प्रगट होया शाह सुल्तानी, आदि जुगादी चढ़ी रहे इक जवानी, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। ना कोई चिला तीर कमानी, ना कोई शस्त्र खण्डा खिच्चे विच्चों म्यानी, नाम खण्डा इक चमकाईआ। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाईंआ। भरमे भुल्ले जीव प्राणी, परम पुरख नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी लोकमात फेरा पाईआ। लोकमात आया ठाकर, भेव कोए ना आइंदा। कलिजुग वेखे डूँघा सागर, गहर गम्भीर खोज खुजाइंदा। लख चुरासी भेव जाणे करता कादर, कुदरत आपणा रंग वखाइंदा। मुरीद मुर्शद देवे आदर, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। गुरमुखां देवे सिदक सबूरी सादर, सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाइंदा। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाइंदा। साचा वणज कराए इक सौदागर, नाम वस्त झोली पाइंदा। आप टिकाए पंज तत्त गागर, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। हरि का रंग सदा अनडिठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी सुत्ता दे कर पिठ, करवट घर विच ना रिहा बदलाईआ। गुरमुख विरले माणस जन्म गए जित, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां करे हित्त, ग़रीब निवाज़ सच्चा शहिनशाहीआ। आपे मात आपे पित, गुरमुख पूत गोद सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम बीस बीसा सुहाए साची थित, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा विच संसारा अलख अगोचर अगम्म अपारा, चरण कँवल इक दरसाईआ। चरण कँवल साची धूढ़, धूढ़ी मस्तक हरि जणाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन टिक्का नाम लगाइंदा। नाता तोड़े माया ममता कूड़ो कूड़, हउमे हंगता रोग गवाइंदा। निज घर निज आत्म जोती धरे साचा नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द अनादी अनहद वजाए साची तूर, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। आसा मनसा करे पूर, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, मुख

नकाब ना पर्दा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा एकँकारा इक इकल्ला आप जणाइंदा। इक इकल्ला आपे इक, इक इक नाल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम लेखा दए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सच वस्त पाए भिख, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। बिन नेत्र रातीं सुत्यां पए दिस, घर घर आपणा दरस दिखाईआ। जन्म कर्म दी लाहे विख, दुरमति मैल दए धुआईआ। सदा सुहेला रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग अग्न ना लग्गे महीना जेठ, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हँ ब्रह्म दस्से आपणा भेत, सो पुरख निरँजण पर्दा लाहीआ। भगत भगवन्त लए वेख, लख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। सन्त सतिगुर करे हेत, घर घर विच मेल मिलाईआ। गुरमुख गुर गुर नेतन नेत, निज घर आपणा रंग रंगाईआ। गुरसिख रुत्त बसन्ती रहे चेत, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दो जहानां वेख वखाईआ।

✻ १० मग्घर २०१६ बिक्रमी सुदर्शन नाल गोष्ट पिण्ड सोहल ज़िला गुरदास पुर ✻

सुदर्शन कहाणी दस्सी जग, कलम शाही मेल मिलाईआ। आपणा वसेरा दस्सो किस बिध वसो उपर शाह रग, नव दर कूड़ा डेरा ढाहीआ। कवण बिध मिटाई जगत तृष्ना अग्ग, माया ममता मोह तजाईआ। कवण दुआर वज्जे नद, अनहद धुन अनादी राग सुणाईआ। कवण मक्के काअबे कीता हज्ज, हुजरा हकीकत कवण सुहाईआ। कवण रूप निरगुण सच सिँघासण रिहा सज, तख्त निवासी सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लौण ना देवे अज्ज पज, पर्दा पर्दा लए फुलाईआ। परदे अन्दर परवरदिगार, कवण मुख नक़ाब रखाइंदा। कवण जलवा दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। कवण तकवा शिकवा करे पार, साख्यात रूप वखाइंदा। कवण वेखे बातन ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आप अख्वाइंदा। कवण बिन रसना जिह्वा करे गुफ़तार, बिन कन्नां राग अल़ाइंदा। कवण मुकामे हक़ होए ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आपणी आप पुचाइंदा। सुदर्शन आपणा दस्सो सच विहार, कवण दुआरे सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। सुरत शब्द कवण रंग, कवण रूप रिहा जणाईआ। कवण सेज कवण पलँघ, कवण आसण रिहा लाईआ। कवण नाम कवण मृदंग, कवण ताल तलवाड़ा रिहा जणाईआ। कवण सुत्ता दे कर कन्ढ, आपणी करवट ना सके बदलाईआ। जगत कहाणी गाया छन्द, जीव जंत समझाईआ। आपणा दस्सो किन्ना मुक्कया पन्ध, अग्गे नज़री किन्नां आईआ। ना कोई गीत ना कोई छन्द, ना कोई तार सतार हिलाईआ।

९९
१३

जिस घर वसे सूरा सरबँग, सतिगुर पूरा डेरा लाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई सुरत नार दुहागण फिरे रंड, बिहबल हो देवे ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पुछे सच घर, कवण दुआर हरि निरँकार निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत पुरख अबिनाशी घट घट वासी दीन दयाला हरि गोपाला बैठा आसण लाईआ। आपणा दस्सो सच टिकाणा, काया मन्दिर अन्दर वेख वखाईआ। कवण रूप मिले बबाणा, नाम बबाणा हथ्थ उठाईआ। कवण बिध लेखा जाणे भाणा, भाणे विच कवण समाईआ। कवण पीणा कवण खाणा, आसा तृष्ना कवण बुझाईआ। कवण गाए अगम्मी गाणा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस अग्गे होए रहे निमाणा, सो शहिनशाह कवण घर बैठा डेरा लाईआ। सुदर्शन सच बोलणा आपणी ज़बाना, ज़ेर ज़बर कोए रहिण ना पाईआ। काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ मकाना, जगत मकबरा वेख वखाईआ। अन्त कोई ना रहिणा राजा राणा, रईअत संग ना कोए निभाईआ। जन भगतां मिल्या इक्को पद निरबाणा, परम पुरख दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा घर, आपणी हकीकत हक़ हक़ दयो समझाईआ। हक़ हकीकत देवो खोल्ह, पर्दा पर्दा ना कोए रखाइंदा। नाम कंडे तोलो तोल, जगत हट्ट ना कोए चलाइंदा। रसना जिह्वा कोटन कोटि कर कर गए घोल, हार जित जित हार दोवें रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुदर्शन वेखे तेरा घर, कवण घर बहि बहि हरि हरि दर्शन पाइंदा। ओथे एथे अन्दर बाहर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। आपणा लेखा करो ज़ाहर, बातन नज़री इक्को आईआ। दीद शुनीद ईद बेदीद बेदर्द करो गुफ्तार, सोहला ढोला इक्को गाईआ। कवण बिध बिन छुरी करद तलवार होए हलाल, तकबीर तकदीर तदबीर आपणी आप जणाईआ। सच सच आपणा दस्सो अहिवाल, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा इक्को घर, काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर उच्च महल अटल मनार बजर कपाटी वेखे पाड़, दस्म दवारी खोल्ह कवाड़, निर्मल जोती कर उज्यार, नूर नूर नूर विच समाईआ। तूं मैं मेरा तेरा, तेरा मेरा खेल वखाईआ। अन्दर बाहर जगत झेड़ा, नव नौ दए दुहाईआ। गुरमुख विरले वसया काया खेड़ा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। मन मनुआ देवे गेड़ा, बुध मति ना कोए चतुराईआ। एथे ओथे हको हक़ नबेड़ा, हक़ हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। मुरीद मुर्शद इक्को हाल, नूर ज़हूर रिहा दरसाईआ। दोहां नेड़ ना आवे काल, महाकाल बैठा मुख भुआईआ। आपे करनहारा हल्ल स्वाल, फ़िकरा आपणा आपे गाईआ। बिन तलवाड़उँ वज्जे ताल, बिन रसना जिह्वा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट खेले खेल खेलणहार इक अख्वाईआ।

❇ १० मग्घर २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह हयात नगर ज़िला गुरदास पुर ❇

सो पुरख निरँजण साची धार, सति सतिवादी आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, शाह पातशाह आप कराइंदा। एकँकारा बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जलवा नूर ज़हूर प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। श्री भगवान खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो तैयार, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राजन राज नाउँ वड्याइंदा। साचा तख्त कर तैयार, दर घर साचे सेव कमाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप प्रगटाइंदा। आपणी कल कर प्रतख, परम पुरख खेल कराईआ। निरगुण नूर जोत प्रगट, जोती जाता नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह हट्ट, छप्पर छन्न ना कोए जणाईआ। आपे हो पुरख समरथ, समरथ आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण रूप इक इकल्ला, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। जोती नूर आपे बला, धार धार विच समाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल आप रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा खेल कर करतार, आपणी करनी आप कमाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलकार, बल आपणा आप वखाईआ। तख्त निवासी हो सिक्दार, धुर फ़रमाणा हुक्म मनाईआ। सच संदेसा देवे एका वार, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। भूपत भूप बणे चोबदार, सेवक साची सेव कमाईआ। ना कोई साजण मीत मुरार, सगला संग ना कोए रखाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे बेपरवाह, परवरदिगार आसण लाइंदा। निरगुण देवे निरगुण सलाह, सिफ्त सालाह आप हो जाइंदा। निरगुण बण निरगुण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाइंदा। निरगुण पांधी निरगुण राह, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा रंग, हरि सतिगुर आप रंगाईआ। सति सतिवादी इक पलँघ, बिन पावा चूल टिकाईआ। उपर बैठ सूरा सरबँग, सीस जगदीश इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आपणी खेल कराईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। आदि जुगादी हो हो वक्ख, निरगुण निरगुण रंग वखाइंदा। बोध अगाधी शब्द

अकथ, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। नाम निधाना एका वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, जुग चौकड़ी राह चलाइंदा। अन्तिम खेड़ा करे भठ्ठ, जो घड़या भन्न वखाइंदा। दो जहानां पन्ध मुकाए नठ्ठ नठ्ठ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार आप कमाइंदा। साची कार करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नूर इलाही हो उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाईआ । लेखा जाणे धुर दरबारा, त्रै भवन धनी सच्चा माहीआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त आपे खोल्ह् आपणा बंद किवाड़ा, थिर घर आपे कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच लए प्रगटाईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर, हरि सतिगुर आप प्रगटाइंदा। निरगुण दाता देवे वर, वर इक्को इक वखाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक सुहाइंदा। थिर घर देवे एका माण, एका एक वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। शाहो भूप बण राजान, सच संदेसा इक सुणाईआ। नार कन्त खेल महान,
१०२ श्री भगवन्त सेज हंढाईआ। दाई दाया हो मेहरवान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गोदी सोहे बाल अञ्याण, पूत सपूत १०२
१३ गोद उठाईआ। सुत दुलारा इक मेहरवान, हरि शब्दी वंड वंडाईआ। थिर घर करे आप परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाईआ। १३
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता सच्चा माहीआ। जुग करता हरि करनेहारा, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। नव नौ करे पार किनारा, मंझधार आप रुढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेखणहारा, पेख पेख आपणा हुक्म मनाइंदा। काग़द कलम ना लिखणहारा, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, आपणा मन्दिर आप खुल्हाइंदा। आपणा मन्दिर आपे खोल्ह्, हरि हरि जू दया कमाईआ। नाउँ निरँकारा एका बोल, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। आपणा करे आपे पूरा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि संदेसा दित्ता एका वार, अन्तिम आपणे लेखे लाईआ। आदि संदेसा दित्ता आप, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। जुगादि होए वड प्रताप, मद्ध भेव कोए ना आईआ। दो जहानां बणे माई बाप, पिता पूत वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे

दया कर, हरि दीनन दया कमाइंदा। आपणा नूर आपे धर, नूर नुराना वेस वटाइंदा। आपणी मरनी आपे मर, मर जीवत खेल जणाइंदा। आपणा चुकाए भउ डर, भय अवर ना कोए वखाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़न भंनणहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे कलिजुग अन्त, हरि करता फेरा पाईआ। वेस वटाए श्री भगवन्त, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। सचखण्ड दुआर बणाए साची बणत, वेखणहारा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे सोभा पाईआ। सच दुआरा एकँकार, एका एक सुहाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर संदेसा आप अलाइंदा। जुग चौकड़ी पावणहारा सार, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। कलिजुग आई अन्तिम वार, वारता सब दी आप समझाइंदा। विष्नूं हरि जी लए उठाल, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक सुहाइंदा। विष्नूं उठ आ नेड़े, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। दो जहान पए झेड़े, झगड़ा जगत ना कोए मुकाईआ। खण्ड ब्रह्मण्ड दुखी होए वेहड़े, सांतक सति ना कोए वरताईआ। अन्तिम हरि जू करे हक़ नबेड़े, वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। उठ ब्रह्मे कर ध्यान, हरि सतिगुर आप सुणाया। ब्रह्म विद्या ना कोए ज्ञान, पारब्रह्म नज़र किसे ना आया। लख चुरासी होणी वैरान, धीरज धीर ना कोए धराया। जीव जंत सर्ब कुरलाण, अमृत मेघ ना कोए बरसाया। पुरख अबिनाशी अन्तिम लेखा मंगे आण, बचया कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे आपणा हुक्म सुणाया। शंकर उठ खोल्ह अक्ख, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रतख, तेरी भूमका रिहा सुहाईआ। तेरी त्रसूल दिसे ख़ाली हथ्थ, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। कूड़ी क्रिया ना गई ढठ्ठ, तेरा बल कम्म किसे ना आईआ। फिरी दरोही शिवदुआले मठ्ठ, मन्दिर रो रो हाल सुणाईआ। लग्गी अग्ग पंज अठ्ठ, तत्त तत्त ना कोए टकराईआ। अन्तिम आपणा आ के लेखा दस्स, पुरख अबिनाशी रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़ुरमाणा इक जणाईआ। त्रैगुण माया उठ बलधार, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी आई अन्तिम वार, कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाइंदा। जुग चौकड़ी बणी रही नार विभचार, कूड़ी क्रिया बन्धन पाइंदा। मुख धूढ़ी कूड़ी लग्गी छार, मस्तक टिका ना कोए लाइंदा। आ के आपणा दस्स सच विहार, तेरा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। साध सन्त कोई बचया रहे ना विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोई सवाणी आप जगाइंदा। पंज तत्त जाणा जाग, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रिहा जगाईआ। घर घर ना लग्गी अजे

आग, अग्नी अग्ग ना कोए वखाईआ। लख चुरासी बुद्धी होई ना काग, काग दिसे ना सृष्ट सबाईआ। अन्त सुणो इक आवाज़, बिन कन्नां आप सुणाईआ। हरि सरनाई आओ भाज, भावी हरि जी रिहा वरताईआ। जिस रचाया तुहाढ्ढा काज, सो करता फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सच संदेसा सन्त कुमार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। उठ बराह कर दीदार, वेला अन्तिम आइंदा। हाव ग़रीव हो ख़बरदार, यगै पुरुष नाल मिलाइंदा। नरायण रूप धूढ़ी मंगे छार, धूढ़ी मस्तक इक्को लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा सद्दा इक जणाइंदा। सच्चा सद्दा देवे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। इक संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दी धार आप समझाईआ। दत्ता त्रै तेरी करे अन्त कल्याण, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। रिखप लेखा चुके आण, लिख्या लेखा दए मिटाईआ। प्रिथू वेख मार ध्यान, सृष्टी रो रो नीर वहाईआ। मत्तस देवे ना कोई दान, ख़ाली हथ्थ रिहा फिराईआ। कच्छप होया बाल अंञाण, मिंदरा सीस ना कोए चुकाईआ। धनंतर रोवे ना दिसे नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म मोहणी धार, हरि माधव आप जणाइंदा। हँसा बंसा खोल्ह कवाड़, सहँसा आपणा रूप वटाइंदा। नर सिँघ तेरा इक दुआर, दर दरवाजा इक समझाइंदा। बावण आए बण भिखार,

१०४

१३

बल आपणा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आप बुलाइंदा । सच दुआरे आउणा नठ्ठ, मेहरवान रिहा जणाईआ। नर नरायण कर इकठ्ठ, हरी हरि वेख वखाईआ। परस राम मार सट्ट, राम राम लए जगाईआ । वेद व्यास वेखे तेरा हट्ट, कृष्न बंसरी कवण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अन्दर ईसा मूसा, मोह मुहब्बत आप तजाइंदा। तन वखाए एका सूसा, अल्फ़ी होर ना कोए हंढाइंदा। धुर फ़रमाणा सच हदीसा, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक जणाइंदा। सच सुनेहड़ा मुहम्मद यार, अहिमद दए वड्याईआ। चौदां तबक वेख विचार, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। करे खेल परवरदिगार, ख़ालक ख़लक वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे धुर दी कार, धुर लहिणा रिहा मुकाईआ। आउणा चल सच्चे दुआर, दर दरवाजा इक खुल्हाईआ। शरअ शरीअत करे ख्वार, लाशरीक फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग रिहा वखाईआ। एका मार्ग नानक गोबिन्द रंग, रंग राता आप जणाइंदा। पुरख अकाल बणया संग, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाइंदा। साचे अस्व कसे तंग, नीला नीली धारों पार वखाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, जेरज अण्डज

आप उठाइंदा। सच दुआरा सूरा सरबँग, सति सतिवादी आप खुलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए सूरज चन्द, मण्डल मण्डप हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आप बुलाइंदा। दर घर साचे साजण आउणा, हरि सज्जण रिहा जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी रुत्त सुहाउणा, पहली चेत्र वंड वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाउणा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। त्रैगुण माया डेरा ढाउणा, पंज तत्त करे सफ़ाईआ। तेई अवतारां हुक्म जणाउणा, ईसा मूसा मुहम्मद नाल मिलाए फड़ फड़ बांहींआ। नानक गोबिन्द ढोला गाउणा, प्रभ इक्को सच्चा माहीआ। साचा हुक्म इक सुणाउणा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। चार जुग दा लेखा आप मुकाउणा, ख़ाते आपणे आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। चौथे जुग जाणा आ, हरि आख़र आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल बेपरवाह, पर्दानशीं पर्दा आप उठाइंदा। रहबर बणे इक ख़ुदा, ग़फ़लत विच कदे ना आइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां एका अक्खर दए पढ़ा, साची सिख्या इक समझाइंदा। अल्फ़ ये पन्ध दए मुका, नुक्ता नून ना कोए वखाइंदा। अक्ख प्रतख दए खुल्हा, जलवा नूर नूर धराइंदा। दीनां मज़्हबां भाण्डे ख़ाली सख दए करा, कूड़ी वस्त ना कोए विकाइंदा। हथ्थो हथ्थ लहिणा दए मुका, कर्ज़ा मकरूज ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा ब्रह्मा विष्न महेषा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण सुण मीत, सारे रहे ख़ुशी मनाईआ। प्रगट होया इक अतीत, त्रैभवन धनी फेरा पाईआ। चार जुग दी मेटे रीत, सतिजुग साचा राह चलाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मिल मिल गावण इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। करवट बदल दरस दिखाए मीत, मित्र प्यारा फेरा पाईआ। मुरीद मुर्शद कराए दीद, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे गोबिन्द, हरि गोबिन्द धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए रखाइंदा। भगत भगवान उपजाए साची बिंद, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। करे खेल गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आपणा राह चलाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जाम प्याइंदा। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म कर परवान, सारे रहे ध्यान लगाईआ। तेरी किरपा श्री भगवान, तेरी मेहर नज़र वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम मिलीए आण, चौथे जुग होए कुड़माईआ। नाता तुटे जगत जहान, ईश जीव ना कोए समझाईआ। कागद कलम ना कोए

निशान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। दर घर साचे आईए चल, निहचल धाम मिले वड्याईआ। ज़िमी असमान जाइण हल्ल, पर्बत चोटी देण दुहाईआ। कोई ना पाए सार जल थल, जल थल महीअल भेव ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा रिहा वल छल, अछल अछल्ल तेरा अन्त कोए ना आईआ। अन्त सुनेहड़ा दित्ता घल्ल, सद्दा इक्को नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सूझ इक जणाईआ। साची सूझ लैणी जाण, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तेई अवतार करन चरण ध्यान, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नाता तुटे ज़िमीं असमान, सति सति ना वंड वंडाइंदा। अद्धविचकारे मिले आण, चन्द सतारा मुख छुपाइंदा। आपणा देणा पए ब्यान, हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। नाता तुटे जगत कुरान, तीस बतीस ना कोए वड्याइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक होण वैरान, वैरी हरि जू नज़री आइंदा। कूड़ी रैण कूड़ा छुटणा भान, कूड़ा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। सिदक रिहा ना कोए ईमान, साबर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव चुकणा मात,
१०६
१३
सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मिलणा इक जमात, नानक पट्टी रिहा पढ़ाईआ। चौदां लोक डूँग्घा ख़ात, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। नाता तुटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार साक, हउमे हंगता संग ना कोए रखाईआ। करे खेल परवरदिगार पाकी पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। ना कोई दिसे ज़ात पात, ज़ात अजाति ना कोए रखाईआ। नूर इलाही कमलापात, कँवल नैण फेरा पाईआ। दरस दिखाए साख्यात, घर घर पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए मुकाईआ। लहिणा देणा अन्त मुकाउणा, गुर अवतारां आप जणाइंदा। रल मिल सब ने ढोला इक्को गाउणा, सो पुरख निरँजण इक पढ़ाइंदा। सतिजुग मार्ग साचा लाउणा, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। सुरती शब्दी गंढु पवाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे अन्तिम कल, कलकाती रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा पुरख बिधाता मात धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को लैण पढ़, पिछली चुके सर्ब लड़ाईआ। इक सरनाई जाण पड़, करता इक्को नज़री आईआ। दीन मज़्ह़ब टुट्टे गढ़, हउमे हंगता दए मिटाईआ। भगत भगवन्त आपे फड़, रातीं सुत्यां लए जगाईआ। काया मन्दिर आपे चढ़, दरस

१०६
१३

दवारी कुंडा लाहीआ। निरगुण नूर प्रकाश कर, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बीस बीसे वज्जे वधाईआ। बीस बीसे खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। सतिजुग बन्ने साची धारा, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। कलिजुग अन्तिम पार किनारा, धुर दरबारा हुक्म सुणाइंदा। सच संदेसा देवे एका वारा, एका दूआ दूआ एका भउ मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चलाए सतिजुग, सति सतिवादी दया कमाईआ। सन्त साजण चुण चुण, लख चुरासी विच्चों लए जगाईआ। दरस दिखाए उठ उठ, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। गुरमुखां उपर आपे तुठ, मेहर नज़र इक्को पाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह देवे पुट, बूटा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द भेंटा चाढ़े सुत, सति सतिवादी दया कमाईआ। सतिजुग अन्तिम मौले रुत्त, पत डाली फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। निहकलंक आए अबिनाशी अचुत, कलि कल्की फेरा पाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, अंमिउँ रस एका मुख चुआईआ। आवण जावण लख चुरासी जाए छुट्ट, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे लए जगाईआ। सतिजुग साचे जाणा जाग, पहली चेत्र हुक्म जणाइंदा। बीस बीसे लग्गा भाग, हरि जगदीशा खुशी मनाइंदा। दो जहानां इक वैराग, वैरागी आपणा नाम
१०७ १३ वड्याइंदा। कलिजुग अन्तिम धोवे दाग़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गुरमुख सुरत सवाणी हरिजू कन्त मिले सुहाग, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित अनभउ प्रकाश मार इक अवाज़, शब्द अगम्मी ढोला गाइंदा। ग़रीब निवाजा साजण साज, शाहो भूप वड राजन राज, तख्त निवासी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा आप जगाइंदा। सतिजुग अन्तिम खोल्हे अक्ख, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी दरस कराए प्रतख, पारखू बणे सच्चा माहीआ। भगत भगवान मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा आप समझाईआ। नाता तुटे तीर्थ तट्ट, किनारा कोई ना दए वड्याईआ। चौदां लोक छुट्टे हट्ट, तबक तबक ना कोए अल्हाईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ इक सुणाईआ। सतिजुग चलाए आप रथ, निरगुण सेवक सेव कमाईआ। कलिजुग लहिणा देणा झोली पाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चम्यारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे आप जगाईआ। सतिजुग साचा साचा पुत्त, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरी कुक्खों गया उठ, मात पित ना कोए वखाइंदा। तूं सुहौणी मेरी रुत्त, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। आपणी वारी कीती पुच्छ, तिन्न जुग सोया ना कोए उठाइंदा। मेरे पल्ले नहीं कुछ, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। कलिजुग बैठा रिहों चुप्प, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। लख

१०७ १३

चुरासी दिसे अन्धेरा घुप्प, नूर नज़र किसे ना आइंदा। घर घर वड़ी चन्द्री भुक्ख, भुख्यां भुक्ख ना कोए मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां लग्गा दुःख, दुखियां दर्द ना कोए बुझाइंदा। बिन भगतां धरती दी ख़ाली होई कुक्ख, जन जननी गोद ना कोए सुहाइंदा। लख चुरासी उलटा रुख, जून अजूनी आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। सतिजुग सच्चा छोटा बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। बाली बुध बाल अंञाणा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तूं साहिब सतिगुर बणया दाना, देवणहार इक अख्वाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर राजा राणा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा भवाईआ। तेरी किरपा पीणा खाणा, तुध बिन वस्त अवर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा सगला संग निभाईआ। सगला संग रखणा रघुनाथ, रघुपत एका मंग मंगाइंदा। साची दस्स इक्को गाथ, जिस पढ़ियां दुःख कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणे इक जमात, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाइंदा। कूड़ी क्रिया ना होए अन्धेरी रात, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। साचा दस्स दे सज्जण साक, कवण नाता जोड़ जुड़ाइंदा। करे निमस्कार जोड़ हाथ, चरण कँवलां सीस झुकाइंदा। मेरा लहिणा लिख दे मस्तक माथ, तेरा लिख्या ना कोए मिटाइंदा। इक्को दस्स पूजा पाठ, जिस पढ़ियां जम ना अन्त सताइंदा। तेरी नेड़े आए वाट, तेरा

१०८ दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। किस मिलें सच्चे घाट, शिवदुआला मन्दिर मठ्ठ कोए रहिण ना पाइंदा। आपणी सच्ची १०८

१३ दस्स ज़ात, जिस ज़ात विच्चों विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर लख चुरासी जून प्रगटाइंदा। कर किरपा दे दे १३

दात, तेरे घर घाटा कोए नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। सतिजुग झोली अग्गे डाह, दोए जोड़ वास्ता पाया। निरगुण बणना आप मलाह, सरगुण संग ना कोए रखाया। इक दृढ़ाउणा आपणा नाँ, दूजा इष्ट ना कोए मनाया। एथे ओथे पकड़ी बांह, पल्लू आपणे नाल बंधाया। अछल छलधारी तेरा करे ना कोई विसाह, अछल छल तेरी खेल बेपरवाहया। आपणा भेव दे जणा, जिस बिध तेरी मेरे सीस रहे साया। तेरी चरणी डिगा आ, जिउँ भावे तिउँ लै उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा रिहा सुणाया। सतिजुग साचे बाल निधान, बाली बुध आप जणाईआ। किरपा करे श्री भगवान, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्त बणाया तेरा इक निशान, निशाना आपणा नाम लगाईआ। लख चुरासी विच्चों कर परवान, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। सत्तरां बहत्तरां चुहत्तरां दित्ता दान, दो जहान ख़ाली हथ्थ वखाईआ। कोटन राम करन प्रणाम, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। कोटन काहन करन ध्यान, हरि मुक्ट बैण शरनाईआ। कोटन

ईसा मूसा मुहम्मद गाण, गा गा शुकर मनाईआ। कोटन कोट भगत करन परवान, कबीर जुलाहा दए सालाहीआ। कोटन कोटि नानक गोबिन्द मेल श्री भगवान, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड दा सच विधान, लोकमात ल्या प्रगटाईआ। धुरदरगाही इक निशान, सत्त रंगा रूप वटाईआ। धरनी धरत धवल करे कल्याण, कल कालख टिक्का लाहीआ। बाले नीहां हेठां दब्बे आण, कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ाईआ। छत्ती छत्ती खेल महान, नानक निरगुण वंड वंडाईआ। गोबिन्द सूरा हो प्रधान, परम पुरख रिहा ध्याईआ। पुरख अकाल आया नौजवान, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाण दो जहान, लोआँ पुरीआँ खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख्या मार ध्यान, पिछला लहिणा सर्ब चुकाईआ। सारे इकट्ठे कीते आण, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। अद्धविचकारे बैठा मुहम्मद दूर दुराडा करे ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। अल्ला राणी कर पहचान, मीआं बीवी लए प्रनाईआ। ख़ावंद बणया आप भगवान, लख चुरासी सुरती रिहा प्रनाईआ। करे खेल इक महान, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। साढे तिन्न हथ्थ देवे दान, रविदास चम्यारा नाल मिलाईआ। भगत दुआरा कर परवान, भगवन आपणा आसण लाईआ। पिछली कूड़ी क्रिया मिटे निशान, अग्गे सच निशान झुलाईआ। जिस दुआरे वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान सर्ब शरमाण, नेत्र नैण सके ना कोए उठाईआ। गीता ज्ञान बणे अंञाण, अठारां ध्याए ना कोए वड्याईआ। खाणी बाणी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ । तिस दुआरे सतिजुग लग्गे आण, सतिगुर आपणी नींह रखाईआ। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, इक्को अक्खर आप पढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दर आ के मंगण दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन परवान, हरि जू परवाना हथ्थ फड़ाईआ। एकँकार एका सच बणाए विधान, विदित्त विद्या चले ना कोए चतुराईआ। सतिजुग तेरा संग निभाए श्री भगवान, भरम भुलेखा दए चुकाईआ। मेरयां भगतां मिलणा आण, तेरा दुखड़ा लैण वंडाईआ। उज्जल मुखड़ा होए विच जहान, दुरमति मैल ना लागे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुण भगवान, सतिजुग आपणी खुशी मनाइंदा। चारों कुण्ट वेखे मार ध्यान, दहि दिशा ध्यान लगाइंदा। कवण दुआरे बैठा भगत भगवान, जिस दर भगवन दया कमाइंदा। नौ खण्ड पृथमी दिसे वैरान, वैरी इक्को इक अख्वाइंदा। कूड़ी क्रिया चढ़या तूफ़ान, तोहफ़ा हरि जू घर घर आप पुचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सतिजुग चारों कुण्ट विचार, नेत्र नैण रिहा शरमाईआ। कोई ना दिसे साचा यार, यारी यार ना कोए निभाईआ । चारों कुण्ट धूंआँधार साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। कवण दुआरे भगतां करां भाल, भाल थक्का सर्ब लोकाईआ। कवण बिध मेरी पूरी होए

घाल, घाली घाल लेखे लाईआ। प्रभ अग्गे फेर करे स्वाल, बण स्वाली दए दुहाईआ। बिन तेरी किरपा कोई भगत ना चले मेरे नाल, मेरी मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जिस दुआरे भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला दस्स अकाल, अक्ल कला जणाइंदा। सतिजुग साचे साचे लाल, हरि सतिगुर आप प्रगटाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल गोद बहाइंदा। त्रैगुण माया ना कोए जंजाल, जागरत जोत आप जगाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। अठ्ठे पहर वज्जे अगम्मी ताल, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। शाहों करनहार कंगाल, कंगालों शाह आप बणाइंदा। सतिजुग चली अवल्लड़ी चाल, बिन दस्सयां भेव कोए ना पाइंदा। सम्बल नगर लैणा भाल, जिस दुआरे गोबिन्द सेव कमाइंदा। पुरख अकाल चले नाल नाल, निरगुण आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। सम्बल नगर वेख खेड़ा, हरि खिड़की आप खुल्हाईआ। जिथ्थे कोई ना दिसे झेड़ा, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल गोबिन्द कहे तूं मेरा मैं तेरा, नानक सोहँ ढोला गाईआ। सो साहिब खुल्हा कीता वेहड़ा, चार दीवार ना कोए बणाईआ। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा रिहा जणाईआ। सच दुआरा एका तट्ट, हरि सज्जण आप जणाइंदा। पुरख समरथ खोलया हट्ट, बण हटवाणा सेव कमाइंदा। ओथे इक्को रखे वथ, दूसर वस्त ना कोए टिकाइंदा। सतिजुग साचे आउणा नठ्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। भगतां चरणी जाणा ढठ्ठ, साची सिख्या इक समझाइंदा। तेरी पत्त लैण रख, लोकमात मेल मिलाइंदा। दोहां मिल के दो जहान ढोला देणा दस्स, दोए दोए रूप खेल कराइंदा। सोहँ रूप आप प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे अंग लंगाइंदा। महाराज शेर सिँघ करे तेरा पक्ख, सगला संग आप हो जाइंदा। विष्नूं सिर ते चुक के आवे भत, घर घर रिज़क पचाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म तेरे अग्गे देवे रख, रख्या इक्को ओट तकाइंदा। श्री भगवान हो प्रतख, रूप अनूप दरस कराइंदा। सतिजुग पांधी राही बण के चलणा हस्स हस्स, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। तेरा मार्ग लाए पुरख समरथ, साची वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे साचा दान, भगत भगवन्त मिलाए आण, मिल मिल आपणी खुशी वखाइंदा।

दया अन्दर सेवक स्वामी, सेवादार अख्वाईआ। चाकर बणे हरि निहकामी, निहकर्मी कर्म कांड मिटाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर वेख वखाईआ। गुरमुखां उपर करे मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। धुरदरगाही

देवे इक निशानी, निशाना आपणा नाम लगाईआ। आत्म परमात्म सुणाए कहाणी, दूजा नाद ना कोए वजाईआ। गृह मन्दिर अन्दर वखाए पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक समझाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ नुहावण कोए ना जाईआ। सुरत सवाणी सुघड़ स्याणी, गोबिन्द शब्द हाणी मेल मिलाईआ। जन भगतां उत्तों विटुह होए आप कुरबाणी, कर्म कांड आपणी झोली पाईआ। एथे ओथे दो जहान औण ना देवे हानी, हाणी मिल्या सच्चा माहीआ। लेखा चुके अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चार खाणी, चार जुग जूनी जून ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दया अन्दर आपणी सेव कमाईआ। दया अन्दर होया ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। गुरसिख तेरा डूँघा सागर, सतिगुर अन्दर तारीआं लाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, उजरत कीमत कोए ना पाईआ। धुरदरगाही सच्चा माही निरगुण दाता बण के आया आप सौदागर, वणज करावे थाउँ थाईंआ। पूरब जन्म दे विछड़यां कलिजुग अन्तिम देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। गहर गम्भीर गुण निध दाता दर दुआरे होया हाज़र, हाज़री सब दी दए लगाईआ। ख़ालक ख़लक वेखण आया कादर, कुदरत आपणी गोद बहाईआ। जिस नूं कहिन्दे सुत गोबिन्द तेग बहादर, सो गोबिन्द पुरख अकाल विच समाईआ। नाम पटोला सिर ते देवे चिटी चादर, ढाकण कू पत हार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप
१११
१३
हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे बण सेवक, सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। दया अन्दर हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखावे धर्मसाल, धर्म दुआरा आप प्रगटाइंदा। जन भगतां पिच्छे भगती घाली घाल, आपणी कीती घाल जन भगतां झोली पाइंदा। निरगुण जोत बेमिसाल, कलिजुग अन्त मुसीबत विच आप जगाइंदा। कंचन पारस मिल होए सवरन सवरन मिल्या हरि का लाल, लाल हरि रंग आप रंगाईआ। अन्त नेड़े ना आए काल, होए सहाई बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयानिध दीन स्वामी दया दया गुरमुखां घर घर सेवा लाईआ। अनाइत करन दी पिच्छे रखी आदत, आदत सब नूं आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ला ला रखे इबादत, इबारत लिख लिख करी पढ़ाईआ। पिच्छे किसे ना करया तुआकब, लेखा लैण देण कोए ना आईआ। रसना जिह्वा करदे रहे कलामत, आपणा कलमा किसे ना झोली पाईआ। साहिब दयाल ठाकर सदा सही सलामत, सति सरूप समाईआ। सतिजुग अनाइत देण दी लाए ना कोए अलामत, फड़ फड़ बाहों पार कराईआ। एथे ओथे अग्गे कोई ना करे बग़ावत, नाम खण्डा इक उठाईआ। जन भगतां देवे इक्को वार सच सख़ावत, ख़ाली झोली आप भराईआ। दूजी कोई ना लग्गे अलामत, आलमीन होए सहाईआ। जुग चौकड़ी भगत भगवन्त धरनी धरत धवल उत्ते रखे आपणी आप अमानत, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनाइत शरायत हदाइत किफ़ायत, आपणे विच छुपाईआ। किफ़ायत शुआरी पाटा कफ़न, कफ़नी दए उडाईआ। अन्तिम करन आया दफ़न, दफ़ा आपणी ना किसे समझाईआ। भगत भगवान आया रखण, रक्षया करे सच्चा माहीआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे मक्खण, नाम मधाणा छाछ विरोले थाउँ थाईंआ। साधां सन्तां भाण्डे कीते काया सक्खण, नाद धुन आत्म संख ना कोए वजाईआ। छिन्न भंगर फेरा पाए उतर पूरब पच्छिम दक्खण, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। ग़रीब निमाणयां आया परदे ढकण, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों आया कढ्ढण, सच सुच्च साचा राह चलाईआ। गुरमुख जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर, उच्चे टिल्ले पर्बत कोई ना जाए लभ्भण, घर आ आ दरस दिखाईआ। अमृत आत्म जाम प्याए साची मधन, मधर रस इक्को इक वखाईआ। बण दरवेश जाए सद्दण, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा वर, किफ़ायत शुआरी करे ख्वारी, कलिजुग अन्तिम हारी हाए हाए दरोही दरोही होका दे दे करे दुहाईआ। किफ़ायत शुआरी देवे होका, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सृष्ट सबाई उठो वेखो अन्तिम वेला मौका, वेला गया हथ्थ ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो देंदा रिहा धोखा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम मार्ग दस्से इक्को सौखा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। इक्को नाम सदा बहुता, बहु बहु भांती वंड वंडाईआ । रल के जट्ट सारे लाओ इकठ्ठा जोता, भार दोंह हथ्थां उपर पाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात बण के आया चोटा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ । दर आ के सौदा करो खरा खोटा, वणज वणजारा इक जणाईआ। हथ्थीं फड़ के आओ मोटा सोटा, पारब्रह्म नठ्ठ किते ना जाईआ। जिस दीआं आदि जुगादि जगाउँदे रहे जोतां, सो जोती सरूप फेरा पाईआ। उच्ची कूक दयो होका, दरोही दरोही दरोही नाम खुदाईआ। जिस दा चार जुग रिहा सोका, सो सुक्के रुक्खड़े हरे कराईआ। जो वसे सचखण्ड दुआरे साचे कोटा, सो सम्बल नगरी डेरा लाईआ। तुहाढ्ढे नाल काहदा रोसा, जगत रुसयां रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत किफ़ायत इशारी इशारे नाल मिटाईआ।

❊ ११ मग्घर २०१६ बिक्रमी धिरता सिँघ दे गृह कलानौंर ज़िला गुरदास पुर ❊

किरपा कर श्री भगवाना, भेव अभेद आप जणाइंदा। सतिजुग साचे कर ध्याना, हरि ध्यानी ध्यान वखाइंदा। आदि जुगादि खेल महाना, जुग जुग आप कराइंदा। आदि पुरख प्रभ हो प्रधाना, सच प्रधानगी नाम कमाइंदा। लेखा जाण

दो जहाना, दोए दोए रूप वटाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाणा सच संदेसा आप सुणाइंदा। राग अनादी नाद तराना, लोआँ पुरीआँ आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, मेहरवान खेल खिलाइंदा। घट घट होए अन्तर जामा, अन्तरजामी पर्दा लाहइंदा। बोध अगाध नाम निधान गाए गाणा, गा गा आपणा हुक्म सुणाइंदा । सदा सुहेला इक इकेला आपे जाणे आपणा भाणा, सद भाणे आप रहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाइंदा। साची सिख्या सतिजुग मीत, सो मित्र आप जणाईआ। भगत भगवान इक्को रीत, नित नवित्त वेस वटाईआ। आत्म परमात्म ढोला गीत, साचा अक्खर करे पढ़ाईआ। वखाए धाम इक अनडीठ, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। लेखा जाण हस्त कीट, लख चुरासी पर्दा लाहीआ। कलिजुग अन्तिम रिहा बीत, चारों कुण्ट कूक सुणाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाली ख़ीस, माया राणी दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया रही पीस, पीसण आपणा आप पिसाईआ। ना कोई शरअ ना हदीस, कलमा नबी ना कोए वड्याईआ। ना कोई छत्तर झुले सीस, शाह पातशाह शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सतिजुग, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी औध जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा जाण लोक परलोक, दो जहानां वेख वखाइंदा। सतिजुग सच सुणाए सलोक, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। लख चुरासी देवे मोख, मुक्ती चरणां हेठ रखाइंदा। पुरख अकाल इक्को ओट, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। जन भगतां उपर हो मोहत, मुहब्बत आपणे नाम वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। भगतां संग सदा सुहेला, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे वेला, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। लहिणा देण चुकाए गुरु गुर चेला, गुर चेला आपणा नाउँ प्रगटाईआ। एथे ओथे सज्जण सुहेला, साहिब सुल्तान सच्चा माहीआ। वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल दस्से आप, हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। सतिजुग तेरा पूजा पाठ, अक्ख़र वक्ख़र आप दृढ़ाइंदा। सति सरोवर मारे ठाठ, अमृत रस आप भराइंदा। इक्को किनारा दिसे ताट, तीर्थ आपणा नाम वखाइंदा। लख चुरासी आत्म सेजा वेखे खाट, घर घर मन्दिर आप बणाइंदा। मन मनुआ ना नाचे नाट, स्वांगी स्वांग ना कोए रखाइंदा। आत्म परमात्म देवे इक्को दात, दूजी वस्त ना कोए वरताइंदा। पंच विकारा करे घात, नाम खण्डा इक रखाइंदा। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। चार वरन इक प्रभात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रूप दरसाइंदा। निर्मल जोत नूर ललाट, नूरो नूर डगमगाइंदा। ग़रीब निमाणयां

पुछे वात, शहिनशाह आपणा फेरा पाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, दीन मज़्ह़ब ना कोए रखाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर देवे साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। परम पुरख प्रभ कमलापात, कँवल नैण नैण खुलाइंदा। दीन दयाल बण बण सज्जण साक, सगला संग आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाइंदा। साचा राह एकँकार, सतिजुग सति सति जणाईआ। साचा मेला विच संसार, भगत भगवान दए कराईआ। करे खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना आईआ। चार जुग दी पिछली वारता जाए हार, अग्गे आपणा मार्ग लाईआ। काग़द कलम होए ख्वार, ख़हि ख़हि मरे सर्ब लोकाईआ। हरि का नाउँ विके ना किसे इशतयार, करता कीमत कोए ना पाईआ। हट्ट खोले ना कोए बण वणजार, टका टका मुल्ल ना कोए पाईआ। बिन काया मन्दिर दूजा रहिण ना देवे कोई गुरुदुआर, घर डूँघी कन्दर सतिगुर पूरा आसण लाईआ। जिस दा वरका हथ्थां नाल ना सके कोई पाड़, कूड़े किरकट विच ना कोए सुटाईआ। अक्खां नाल जगत ना करे वसाल, निज नेत्र दए दरसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कोए ना सके भाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, हथ्थ किसे ना आईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां इक्को नाम देवे सच्चा लाल, लालण आपणी वंड वंडाईआ। सतिजुग तेरी पूरी करे घाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप जणाईआ।
११४ १३ साचा मार्ग आत्म अन्त, अन्तरजामी आप जणाइंदा। इक्को पूजा इक्को मंत, मंत्र आपणा नाम समझाइंदा। इक्को सेज ११४ १३
इक्को कन्त, सुहञ्जणी सेज इक हंढाइंदा। इक्को महिमा इक अगणत, लेखा इक्को आपणे हथ्थ रखाइंदा। इक बणाए साची बणत, घड़न भंनणहार इक हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल दस्से आख़र, आख़र आपणे हथ्थ रखाईआ। नाता तोड़े पाहन पाथर, सिल पूजस नज़र कोए ना आईआ। कलम शाही ना बणे कोई चाकर, सेवक सेव ना कोए वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सतिजुग त्रेता द्वापर सब दे कोलों करौंदा रिहा आपणी ख़ातर, सिर ख़तरा आपणा इक समझाईआ। किसे नूं बणन ना दित्ता चातर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कोटन कोटि गए सीस झुकाईआ। अन्त रहिण ना दिती किसे दी आकड़, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अगम्मी घोड़े पाए पाख़र, शाहसवार बणे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा धंदे लाईआ। सतिजुग तेरा साचा धन्दा, धुरदरगाही आप जणाइंदा। पहलों लख चुरासी आत्म अन्तर आपणी हथ्थीं फेरे रंदा, बण तरख़ाण सेव कमाइंदा। फिर सच सुच्च बणाए बंदा, बंदगी आपणे नाम दृढ़ाइंदा। कूड़ी क्रिया संग ना वखाए कोई गंदा, माया ममता मोह चुकाइंदा। ज्ञानहीण अज्ञानी कोई रहिण ना देवे अन्धा, आत्म

नेत्र सर्ब खुलाइंदा। सतिगुर पूरा नज़री आए इक्को चन्दा, चन्द सूरज जिस नूं सीस झुकाइंदा। इक्को हुक्म चलाए विच नव खण्डा, नव नौ आपणा हुक्म मनाइंदा। दाता योद्धा सूरबीर सरबँगा, शहिनशाह बल आपणा आप धराइंदा। वेखणहारा आर पार कन्ढा, मध आपणा खेल कराइंदा। भगत भगवान सदा बख्शंदा, बखशिश आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा संग रखाइंदा। सतिजुग तेरा संग निर्भय, निरभउ आपणा संग रखाईआ। दूजा कोई मात ना रहे, रहबर इक्को सच्चा माहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरणी गए ढह, आपणा वेला वक्त चुकाईआ। एका बोलण रसना ढोला तूं मैं, मैं तूं तेरे विच भेव ना राईआ। तेरा भाणा रहे सहि, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सेव कमाईआ। बिन तेरे अन्त कोई ना रहे, ख़ाकी ख़ाक सर्ब समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म देवे भगवान, दाता दानी दया कमाइंदा। मस्तक तिलक ना कोए निशान, त्रसूल रूप ना कोए वखाइंदा। जैनी बोधी ना कोए कल्याण, तन गात्रा ना कोए लटकाइंदा। लबां कट ना बणे कोए मुस्लिमान, सुनत रूप ना कोए वखाइंदा। सजदा करे ना कोए कब्रिस्तान, मकबरा नजर कोए ना आइंदा। प्रगट हो आप मेहरवान, मिहबान वेस वटाइंदा। छत्र मित्र करे आण, संसा रोग सर्ब गवाइंदा। आत्म परमात्म वखाए इक इस्लाम, इस्म आज़म आप दृढ़ाइंदा। रूह बुत्त दए कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मारे बाण, तीर अणयाला इक चलाइंदा। हर घट नज़री आए राम, रहमत आपणी आप कमाइंदा। सतिजुग साचे देवे माण, अभिमान रूप ना कोए वखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सोहला ढोला गायण महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपे लाइंदा।

❇ ११ मग्घर २०१६ बिक्रमी सरदारा सिंघ दे गृह कलानौर ज़िला गुरदासपुर ❇

सच सिँघासण शहिनशाह, तख्त निवासी आसण लाईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेऐब पर्दा आप उठाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल खला, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। एकँकारा वेस वटा, दो जहानां फेरा पाईआ। आदि निरँजण नूर धरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वंड वंडा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाईंआ। श्री भगवान सच निशाना हथ्थ उठा, सति सतिवादी रिहा वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ रिहा ध्यान लगा, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। राजन राज भूपन भूप सच संदेसा रिहा सुणा, धुर फ़ुरमाणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच

दरबारे आसण लाईआ। सच दरबारे हरि जू चढ़, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। सति सतिवादी खोल्ह दर, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। नाउँ रखाए नरायण नर, नर हरि आपणी कल धराइंदा। आदि जुगादी घाड़न घड़, जुग जुग वेख वखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह निश्अक्खर आपणा आपे पढ़, पढ़ पढ़ आपणा राग सुणाइंदा। सदा सुहेला इक इकेला निरगुण निरगुण देवणहारा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। करता पुरख करतार आपणी करनी कर, कुदरत कादर रंग रंगाइंदा। धरनी धरत धवल धर, जल थल महीअल आप समाइंदा। समुंद सागर दे दे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त निवासी एका तख्त सोभा पाइंदा। साचा तख्त एकँकार, आदि जुगादि दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे चाउँ चाईंआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे अपार, अपरम्पर आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा आदि जुगादि, जुग करता आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाद, दादर आपणा राग अल्हाइंदा। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्मांड, पारब्रह्म आपणा भेव चुकाइंदा। सति सतिवादी देवे दाद, दस्त बदस्त आप फड़ाइंदा। धुरदरगाही वजाए आपणा नाद, अनादी धुन आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाइंदा। धुर दा भेव श्री भगवान, आदि पुरख आप खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मे देवे दान, शंकर झोली आप भराईआ। आपणा नाम इक निशान, सच निशाना लए प्रगटाईआ। आपणी किरपा हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। आपणा हुक्म कर प्रधान, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। आपणी इच्छया कर परवान, साची भिच्छया झोली पाईआ। करे खेल नौजवान, नईया आपणी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे देवे माण वड्याईआ। विष्नूं देवे आपणी याद, हरि जू आपणा भेव खुल्हाइंदा। श्री भगवान वजाए नाद, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। बिन रसना देवे स्वाद, रस रसीआ आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं आपणे रंग रंगाइंदा। विष्नूं वेखे हरि हरि रंग, घर आपणे खुशी मनाईआ। इक्को सेज इक पलँघ, एका आसण लाईआ। इक सुहेला इक्को संग, एका अंगण रिहा उठाईआ। इक्को नाद इक मृदंग, इक्को ढोला रिहा गाईआ। इक्को दाता सूरा सरबँग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। धुन नाद अन्तर धार, धार धार नाल मिलाइंदा। भगवन करे आप प्यार, विष्नूं आपणा रूप वखाइंदा। विष्नूं मेला हरि करतार, करता करनी आप कमाइंदा। निरगुण कर सच प्यार, निरगुण आपणी गोद सुहाइंदा। निरगुण

करे आप गुफ्तार, भेव अभेद आप खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त पारब्रह्म, प्रभ आपणी आप वरताईआ। विष्नूं तेरा मेरा होया धर्म, घर साचे वज्जे वधाईआ। आदि जुगादी करे खेल निहकर्मी कर्म, कर्म आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरा नूर तेरा वरन, तेरा वरन मेरी वड्याईआ। मेरी धूढ़ साचे चरण, तेरे मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि आदि समझाईआ। आदि आदि हरि खेल कर, करता आपणी दया कमाइंदा। विष्नूं भण्डारा नाम भर, भर प्याला जाम प्याइंदा। चरण धूढ़ वखाए साचा घर, घर मन्दिर इक जणाइंदा। कृपानिध फड़ाए आपणा लड़, पल्लू इक्को गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल कँवल चरण आपणा खेल कराइंदा। चरण नाल चरण मिला, दोए दोए आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड बैठा बेपरवाह, बेऐब खेल कराइंदा। रगढ़ नाल रगढ़ लए प्रगटा, प्रगट आपणा रस चुआइंदा। साचे रस अमृत नाम धरा, विष्नूं अन्तर जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। विष्नूं पीता सच प्याला, पीआ प्रीतम आप प्याईआ। किरपा करे दीन दयाला, आदि आदि वड्डी वड्याईआ। घर विच बणाई सच्ची धर्मसाला, थिर आपणा पर्दा लाहीआ। कँवल कँवल खेल निराला, कँवल नैण लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अमृत अमृत रूप दरसाईआ। अमृत देवे हरि जू दात, दाता दानी दया कमाइंदा। विष्नूं नाल रले जमात, ब्रह्मा आपणा रूप धराइंदा। निरगुण निरगुण देवे साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। लेखा जाणे साचे माथ, मस्तक आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। वस्त देवे बण विचोला, विष्नूं नाल रलाईआ। पुरख अबिनाशी तोल तोला, तोलणहारा सच्चा माहीआ। चरण कवाड़ पर्दा खोल्हा, दर मिले माण वड्याईआ। विष्न ब्रह्मे चुक्कया उहला, चरण इक्को नज़री आईआ। रसना कहिण सोहँ ढोला, तूं मेरा मैं तेरा तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी समरथ स्वामी पहली वार बोला, सच संदेसा दए जणाईआ। दोवें मिल के पाओ रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिफ्त आप सालाहीआ। विष्न ब्रह्मा तक्क नज़ारा, नज़र आपणी सर्ब बदलाइंदा। दोए जोड़ कर निमस्कारा, चरण ध्यान सर्ब लगाइंदा। मंगण मंग दर भिखारा, ख़ाली झोली इक वखाइंदा। तेरा खेल परवरदिगारा, बेऐब नज़र ना आइंदा। दर तेरे मिले सहारा, दर्दी होर ना कोए जणाइंदा। तेरी सिफ्त भरे भण्डारा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। हउँ चाकर सेवादारा, सति चाकरी इक कमाइंदा। हउँ बालक

ख़िदमतगारा, चरण धूढ़ मस्तक टिक्का लाइंदा। एका दे नाम आधारा, इक्को ओट तकाइंदा। इक्को वणज इक वपारा, एका हट्ट जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मे आप समझाइंदा। विष्नूं मंग इक्को मंग, हरि सज्जण आप जणाईआ। ब्रह्मे तेरा चाढ़े चन्द, ब्रह्म तेरा नूर रुशनाईआ। आपणा देवे इक्को छन्द, साचा ढोला दए जणाईआ। निरगुण निरगुण पावे गंढु, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा अन्तर दए प्रगटाईआ। ब्रह्मे अन्तर आए आवाज़, धुन अनादी आप वजाइंदा। आप सुणाए साचा साज, रागी आपणा राग अलाइंदा। तेरा तेरा वेखे काज, करनी करता आप कमाइंदा। लेखा लिख गुरू महाराज, हरि गोबिन्द आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। ब्रह्मे सुणी सच पुकार, निरगुण निरगुण रिहा जणाईआ। चार कुण्ट दिह दिशा उठ उठ वेखे नैण उग्घाड़, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पिच्छे ना अगाड़, भेव अभेद ना कोए खुलाईआ। दोए जोड़ प्रभ अग्गे करे निमस्कार, तेरी महिमा कथन ना जाईआ। कर किरपा दे आधार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी हो तैयार, दीनन आपणी दया कमाईआ। चरण धूढ़ी देवे छार, छाही इक्को नाम रखाईआ। विष्नूं अमृत विच देवे डाल, हरि का नाउँ कानी विच फिराईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणा भेव चुकाईआ। मिले संदेसा लिखो हाल, अहिवाल रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। चरण धूढ़ बणी शाही, अमृत विष्नूं इक चुआइंदा। हरि का नाउँ कलम बणी बेपरवाही, बेपरवाह आप प्रगटाइंदा। ब्रह्मे फड़ी चाईं चाईं, साहिब सुल्तान आप फड़ाइंदा। लेखा लिखे बिन हथ्थीं बाहीं, उंगली नज़र ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। कलम शाही कर प्यार, अमृत जल नाल रलाइंदा। लेखा लिख वेद चार, चार जुग वंड वंडाइंदा। चारे बाणी कर उज्यार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री नाउँ रखाइंदा। चारे जुग वंड कर संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ धराइंदा। चारे वरनां दे आधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणा हुक्म मनाइंदा। शास्त्र सिमरत कर तैयार, कलम शाही खेल कराइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां खोल्ह कवाड़, धुर संदेसा आप अलाइंदा। रसना शब्द बोल जैकार, जै जै नाअरा इक सुणाइंदा। वेद व्यासा दे आधार, अठ्ठ दस जोड़ जुड़ाइंदा। काहना कृष्ना कर प्यार, दस अठ्ठ बन्धन पाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद दे दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। कातब बण परवरदिगार, सरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। अञ्जील कुराना कर कर ख़बरदार, तीस बतीसा ढोला गाइंदा। भगत भगवन्त दे प्यार,

११८
१३

आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सच संदेसा विच संसार, सुरती शब्दी आप सुणाइंदा। पर्दा उहला दए उतार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। आखण आए एकँकार, नित नवित्त कर कर हित, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। करता पुरख करनी आपणी करे कार, कुदरत कादर खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलम शाही माण वधाइंदा। कलम शाही दित्ता माण, लोकमात वज्जे वधाईआ। लिख लिख लेखा थक्की श्री भगवान, अन्त कहिण ना पाईआ। नानक निरगुण दे ब्यान, लख चुरासी गया समझाईआ। खाणी बाणी जगत निधान, गुण निधान रिहा प्रगटाईआ। हथ्थ ना आया किसे निशान, उच्च महल्ले बैठा डेरा लाईआ। गोबिन्द कहे पिता सुजान, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाईआ। काग़द कलम शाही दए ब्यान, जुग चौकड़ी गुर अवतार आपणा ब्यान गए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी कलम शाही मिले वधाईआ। कलम शाही कीता वाधा, लिख लिख लेख जणाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर पिता पूत पोतरा दस्सया दादा, दहि दिशा खोज खुजाया। लेख लिखाया सन्तां साधां, भगत भगवन्त मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कलमी कलमा वंड वंडाया। कलमी कलमा लिख लिख लेख, कायनात रही सुणाईआ। आदि जुगादी जुग जुग वेस, करता कीमत कहिण ना पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लिखदी रही लेख, रेखा रेख नाल मिलाईआ। किसे नूं दस्सदी रही रखदा मुच्छ दाढ़ी केस, किसे नूं मूंड मुंडाया रही सालाहीआ। किसे नाल फाँसी चड़िआं करे हेत, किसे दी पुठ्ठी खल्लू लुहाईआ। किसे सिर पुआई तत्ती रेत, किसे बाले नीहां हेठ दबाईआ। आपणा दस्सया ना किसे भेत, कलम शाही की की कर्म कमाईआ। जुग चौकड़ी खेडां रही खेड, नौ खण्ड पृथ्मी डेरा ढाहीआ। काग़ज़ उत्ते चढ़ चढ़ रही वेख, आप आपणा माण वधाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण तेरा सारे छड्ड गए भेत, तेरी ओट ना कोए रखाईआ। काग़ज़ पत्रे रहे वेख, पिछला कर्जा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलम शाही भेव जणाईआ। कलम शाही कहे पुकार, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी सेवा करी विच संसार, बण निमाणी सेव कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लिखदी रही गुफ़तार, तेरा गुप्त भेव समझाईआ। आपणे लेखे नाल मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ कीते तैयार, तेरा नाउँ चीन किसे ना पाईआ। सृष्ट सबाई कीती ख्वार, तेरे हुक्मे सीस टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम चारों कुण्ट हो तैयार, आपणा डंका दित्ता वजाईआ। सृष्ट सबाई उठ दुहागण नार, हरि जू कन्त वेख चाईं चाईंआ। जिस ने मेरी सेवा लाई जुग चार, अन्तिम

११६
१३

आपणी झोली पाईआ। सब दा दुखड़ा रिहा निवार, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान इकठे कीते आण, चरण कँवल दए सरनाईआ। अन्तिम शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान एका वार चरणीं डिगण आण, उठ उठ बैठे राह तकाईआ। कवण वेला संदेसा दए श्री भगवान, ग़रीब निमाणयां दर मंगाईआ। जा के दस्सीए आपणा हाल, फ़रियाद सच सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा कमाईआ। कलम कहे मैं दयां संदेसा, कलिजुग अन्तिम सेव कमाईआ। शाही कहे मैं लिखां लेखा, निहकलंक फेरा पाईआ। जिस नूं गुर दस्मेश कहिन्दा गया मेरा पिता, सो पुरख निरजण वेस वटाईआ। आदि ना भुलया मेरा चेता, अन्त नैण रिहा खुलाईआ। सुत दुलारा पुत्तर जेठा, इक्को इक जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मारन आया ठेडा, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। चार जुग मैं दस्स ना सकी प्रभ जू केडा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण मेरी देवे ना कोए गवाहीआ। कलिजुग अन्तिम जन भगतां नाल करन आया हेता, मेरी पिछली रीत गंवाईआ। रुत्त बसन्ती इक्को रखे चेता, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। कलिजुग कूड़ा भंने रीठा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। दो जहानां लख चुरासी जीवां जंतां साधां सन्तां देवे नेंदा, घर घर आपणा हुक्म सुणाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सच सिँघासण इक्को बहिंदा, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। कलिजुग अन्तिम खेड़ा ढहिंदा, ना सके कोए बचाईआ। दीन मज़्हब जगत इस्लाम इक दूजे नाल खैहन्दा, खहि खहि करे लड़ाईआ। अग्गे हो कोई ना बहिंदा, दूर दुराडे बैठे मुख छुपाईआ। वेखो मेरा लेखा अन्तिम ढहिंदा, कलम शाही दए दुहाईआ। हरि का भाणा कोए ना सहिंदा, सारे बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साडा लेखा लेखे पाईआ। लेखा लेखे पौण आया, बेऐब मेहरवान। पिछली रीती मिटौण आया, निरगुण नूर श्री भगवान। मन्दिर मसीती ढौण आया, शब्द अगम्मी मारे बाण। जगत पलीती वहौण आया, सच सुच्च करे प्रधान। अनडीठी रीती चलौण आया, नाम जपाए नौजवान। हस्त कीटी आपणी गोद उठौण आया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वाली दो जहान। शाही कहे प्रभ रखी आस, तेरी इक्को ओट तकाईआ। कलम कहे मैं बणी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। काग़ज़ कहे मैं जगत कीती पूरी ख्वाहिश, जगत जगत बन्धन पाईआ। बिन भगतां तेरा मार्ग किसे ना आया हाथ, मेरे अक्खर पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। ऊड़ा कहे एक ओंकार तेरा सगला साथ, ड़ाड़ मिटावे थाउँ थाईंआ। अल्फ़ कहे मैं चौदां तबक कीते नार कमज़ात, ये युकती हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तेरा भेव ना आया कलम दवात, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मुहम्मद नाल कीती निक्की निक्की बात, तिस बात नूं बातल कह मनाईआ। जलवा नूर नज़र

१२० १३

ना आया साख़िआत, परवरदिगार मिल्या ना सच्चा माहीआ। बग़ल कुरान रख बणाई जमात, आपणा जामा सके ना कोए बदलाईआ। मस्जिद बहि बहि रोवण मस्तक धर धर हाथ, निउँ निउँ ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तेरी मिली किसे ना ज़ात, ज़ेर ज़बर दए दुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कोटन पा गए वफ़ात, सब दे उत्ते आपणा फ़तवा लाईआ। तेरे बिनां पीर पैगम्बरां पाई ना किसे नजात, निज घर डेरा कोए ना लाईआ। अन्तिम सारे गए ख़ाली हाथ, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ईसा कहे मेरे पिच्छे आवे मेरा बाप, जिस दी सर्ब लोकाईआ। मुहम्मद कहे अमाम मैहन्दी देवे मेरा साथ, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नानक निरगुण कहे निहकलंक वड प्रताप, दो जहानां खेल कराईआ। गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल पिता मात, मोहि आपणी गोद सुहाईआ। जिस दा इक्को इक जाप, सोहँ ढोला गाईआ। तिस दा लेखा लिखे ना कलम दवात, शाही नेत्र रो रो नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्त संदेसा नर नरेसा देवे कलम शाहीआ। कलम कहे उठ भैण शाही, शहिनशाह अन्तिम फेरा पाइंदा। जिस नूं लिख लिख दस्सदी रही राही, सो रहबर वेख वखाइंदा। जिस दा गीत गाउँदी रही सच्चा माही, सो महिबूब आपणा रंग वखाइंदा। करे खेल बेपरवाही, परवाह कोई ना होर जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा हथ्थो हथ्थ चुकाइंदा। चार जुग मैं करदी रही शुकर, शाही आपणा हाल सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम किवें जावां मुक्कर, मुक्का हरि जू रिहा वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिख लिख पंडत पांधे मुला शेख़ मुसायक ग्रंथीआं पन्थीआं खवाउदी रही टुक्कर, घर घर झोली डाहीआ। अन्तिम बिन साहिब सतिगुर चारों कुण्ट होई छुट्टड़, मेरी सुध कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट जीव जंत मेरी सीस मींढी पुट्टण, ज़ोर लावण वाहो दाहीआ। मेरे लिखे लेख वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत खाणी बाणी उत्ते थुक्कण, जो कलिजुग जीव पैरां हेठ रहे रुलाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता अन्तिम सब नूं आया कुट्टण, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। बौहड़ी बौहड़ी जड़ आया पुट्टण, दरोही दरोही ना सके कोए बचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण दुआरे बहि बहि लुकण, अग्गे हो मेरी फ़रयाद ना कोए सुणाईआ। चार जुग दे बूटे सुक्कण, सुके हरे ना कोए कराईआ। मेरी ख़ाली हुन्दी दिसे कुक्खण, मेरी गोदी भाग ना कोए लगाईआ। मेरा पैंडा आया अन्तिम मुक्कण, बणया पांधी राहीआ। मेरी कीती करता पुरख आपणी गोदी आया चुक्कण, ख़ाली सब दे हथ्थ कराईआ। दो जहानां सब दे कोलों आया पुच्छण, पुछ गिछ करे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा नर, आदि दित्ता जिस ने वर, अन्तिम आपणे विच छुपाईआ।

❇ १२ मग्घर २०१६ बिरकमी धिरता सिँघ दे घर कलानौर ज़िला गुरदासपुर ❇

गुरमुख नाता हरि हरि चरण, चरण मिले वड्याईआ। सतिगुर पूरा भय चुकाए मरन डरन, जन्म मरन फंद कटाईआ। दरगाह साची देवे साची सरन, शाह पातशाह दया कमाईआ। कादर करता करनी करन, कर्म कांड दए मिटाईआ। नाता तोड़ वरन बरन, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा थाउँ थाईंआ। गुर गुर मेला गुरसिख मीत, अलख अलखना खेल कराइंदा। आदि जुगादी इक अतीत, त्रैभवन धनी खेल खिलाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। भेव चुकाए हस्त कीट, राउ रंकां खेल कराइंदा। जिस जन सुणाए आपणा गीत, मन्दिर मसीत डेरा ढाइंदा। सदा सुहेला वसे चीत, चित वित ठगौरी कोई ना पाइंदा। हरि चरण सच्ची प्रीत, प्रीतीवान आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचे साचा सज्जण, सो पुरख निरँजण इक अख्वाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल धुआईआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गृह मन्दिर अन्दर निर्मल दीपक दीप जगन, जागरत जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझे अग्न, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। अठ्ठे पहर रखे मग्न, अमृत रस इक चखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लग्गी रहे लग्न, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। नाम खुमारी मस्तक टिक्का लाए चन्दन, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। दीन दयाल ठाकर सुआमी साहिब सदा बख्शंदन, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। दोए जोड़ जोड़ करे जन बन्दन, दर दुआरे दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन लेखा जाणे आप, हरि साहिब सच्चा दयाला। मेटणहारा तीनों ताप, निरगुण सरगुण करे प्रितपाला। एथे ओथे बणे बाप, गुरमुख बाल उठाए आपणे बाला। आत्म परमात्म देवे जाप, सोहँ नाम सुखाला। चौदां लोक पार कराए हाट, इक वखाए सचखण्ड सची धर्मसाला। आवण जावण मात गर्भ लेखा चुके आन बाट, तोड़नहारा जगत जंजाला। आत्म सेज सुहाए खाट, जोत निरँजण दीपक एका बाला। जन्म जन्म दी पिछली मुक्की वाट, अग्गे दिसे पन्ध निराला। पूरा सतिगुर वसे सदा साथ, दो जहानां बण रखवाला। सगल वसूरे जाण लाथ, नेत्र नैण होए खुशहाला। आप कराए पार घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वखाए एका घर, जिस गृह वसे दीन दयाला। दीन दयाल साहिब सुल्तान, सति सतिवादी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण खेले खेल महान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। भगत भगवन्त देवे दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़े अभिमान, निवण-सु-अक्खर इक समझाईआ। घर मेला गोपी काहन, गृह

बंसरी नाम वजाईआ। आत्म परमात्म देवे ज्ञान, चौदां विद्या मुख शरमाईआ। जिस जन किरपा करे आप भगवान, तिस जन जम नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सज्जण साचा मीता, काया मन्दिर विखाए ठांडा सीता, एका अन्तर आत्म आपणा नाम जपाईआ। अन्तर आत्म इक्को रंग, रंग रंगीला आप वखाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गीत सुहागी साचा छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। निज घर निज आत्म निज रस इक्को अमृत धारा गंग, सुरस्ती जमना गोदावरी चरणां हेठ वहाइंदा। गीत सुहागी सोहला छन्द, छहबर आपणे नाम लगाइंदा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक चमकाइंदा। सुरत सवाणी ना होवे रंड, गुर शब्दी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नाता पुरख बिधाता जुगा जुगन्तर पहन वस्त्र अन्तर आत्म मंत्र आप जपाइंदा। आत्म परमात्म इक्को जाप, जग जीवण दाता आप जणाईआ। जन्म जन्म दा उतरे पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। कूड़ी क्रिया वस्त्र जाए पाट, शब्द दुशाला तन छुहाईआ। मेटे आप अन्धेरी रात, निरगुण चन्द करे रुशनाईआ। सोहँ ढोला इक्को गाथ, गुरमुख गा गा खुशी मनाईआ। दरस देवे प्रभ आपणा आप, घर मन्दिर फेरा पाईआ। एथे ओथे सज्जण साक, दो जहानां संग निभाईआ। फड़ फड़ बाहों पार किनारे लाए घाट, घाटा कोई रहिण ना पाईआ। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण हरिजन मेला एका थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे इक्को दात, धुरदरगाही आप वरताईआ।

❇ १२ मग्घर २०१६ बिक्रमी जगीर सिँघ दे घर पिण्ड भोले के ज़िला गुरदासपुर ❇

सतिजुग प्रभ साची दाद, सति सतिवादी झोली पाइंदा। आत्म परमात्म वज्जे इक्को नाद, दूजा राग ना कोई अलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ होए बिसमाद, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा। नाम निधाना बोध अगाध, अक्खर अक्खर नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे सन्त साध, सज्जण हरि जू वेख वखाइंदा। पंज तत्त कूड़ी क्रिया काढ, सच सुच्च इक वरताइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप आप वखाइंदा। लेखा जाणे तन माटी काया हाड, मन मति खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त आप वरताइंदा। सतिजुग साचे तेरा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी तेरा संग निभाईआ। नौ खण्ड पृथमी नाता तुटे मन्दिर मसीत, साचा दर इक सुहाईआ। शब्द अनादी गाए गीत, गोबिन्द आपणा ढोला इक सुणाईआ। जन भगतां वसे सदा

चीत, चेतन आपणा रूप धराईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग वस्त इक वरताईआ। सतिजुग वस्त देवे नाम, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी शाम, सति सतिवादी चन्द चमकाइंदा। नेहकर्मी करे आपणा काम, कर्म कांड मेट मिटाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मांड, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। प्यावणहारा अमृत जाम, निझर झिरना आप झिराइंदा। वसाणहारा नगर खेड़ा ग्राम, दस्म दुआरी कुण्डा लाहइंदा। निरगुण जोती कर प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। सृष्ट सबाई देवे इक ज्ञान, एका दूआ मुख भवाइंदा। चरण धूढ़ी इक अशनान, अठसठ तीर्थ इक वखाइंदा। काग़ज़ कलम शाही होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। प्रगट होवे योद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। जीव जंत साध सन्त इक रखाणे आण, हुक्मी हुक्म आप मनाइंदा। सोहँ ढोला सारे गाण, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म अबिनाशी करते चरण कँवल सीस झुकान, झुक झुक आपणा सीस निवाईआ। करे खेल श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआँ लोआँ वेखे मार ध्यान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। सतिजुग साचे साचा देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। लेखा दर ते आ के मंगो कोलों काहन, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण नैण आपणा आप खुल्हाईआ। परवरदिगार नूर इलाही सच पैगम्बर देवे इक पैग़ाम, पीरन पीर आप पढ़ाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मंत्र जणाए एका नाम, नमो सति सति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा खुल्हाए साचा दर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। सतिजुग तेरा खोल्ह दर, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। चार वरनां देवे इक्को वर, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा। भगत भगवन्त आपे फड़, साचे मार्ग एका लाइंदा। डूँग्घी कन्दर आपे वड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। अक्खर अक्खर आपे पढ़, साचा ढोला आप सुणाइंदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए लड़, शब्दी डोरी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे साची दात, चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता इक वखाइंदा। साचा बन्न्हे हरि जू नाता, सतिजुग साची वंड वंडाईआ। सृष्ट सबाई इक्को गाथा, रसना जिह्वा आप समझाईआ। इक्को तीर्थ इक्को ताटा, सर सरोवर इक्को इक नुहाईआ। इक अमृत इक्को बाटा, आबे हयात इक वखाईआ। इक्को मस्तक इक्को माथा, लिखणहार इक हो जाईआ। इक्को सज्जण इक्को साका, सगला संग इक निभाईआ। इक्को परवरदिगार पाकी पाका, पतित पुनीत दए कराईआ। पीर पैगम्बरां गुर अवतारां देवणहारा दातां, सचखण्ड निवासी सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम मेट अन्धेरी राता, रुत्त रुतड़ी दए महकाईआ।

मनमति मिटे नार कमज़ाता, कुलखणी लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां पुछे आप वातां, वड दाता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे लए उठाईआ। उठ जाग छोटे बाले, सो पुरख निरँजण आप जगाइंदा। लख चुरासी तेरे हवाले, धर्म तेरा इक मनाइंदा। लेखा जाण काल महाकाले, महाबली आपणा हुक्म वरताइंदा। संग रखाए दीन दयाले, दीनन आपणी गोद बहाइंदा। कोई ना दिसे शाह कंगाले, इक्को रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मीता ठांडा सीता, सति दुआरा इक जणाइंदा। सति दुआर एकँकार, अक्ल कल आप वखाईआ। सुत दुलारे हो तैयार, त्रैभवन धनी रिहा उठाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। सतिजुग साचे तेरा सति करे विहार, सति सतिवादी फेरा पाईआ। शब्द अनादी इक जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर करे ख़बरदार, हुक्मी हुक्म इक समझाईआ। सोहँ ढोला गाओ अन्तिम अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचा गया उठ, नेत्र नैण खुलाइंदा। किरपा कर अबिनाशी अचुत, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। बाली बाला मैं तेरा पुत्त, भेव कोए ना आइंदा। ठाकर सुआमी साहिब मेरे उपर तुठ, दर तेरे मंग मंगाइंदा। अमृत जाम पिआउणा घुट्ट, रस इक्को इक चखाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। बण सेवक दासी दास, सेवा साची सच कमाइंदा। जन भगतां पूरी करनी आस, घर घर फेरा पाइंदा। लेखा वेखां पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। तेरे दर अलख भगवान, भगती आपणी झोली पाईआ। मैं बाली बुध अञ्याण, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। तूं साहिब सज्जण सुल्तान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां देवें माण, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। सच संदेसा जुग जुग देवें आण, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करें महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिजुग मार्ग लाएं आण, लहिणा देणा सब दा रिहा चुकाईआ। काग़ज़ कलम शाही होण हैरान, चार जुग दा लेखा लिख्या प्रभ आपणी झोली पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान, खाणी बाणी नेत्र नैण सर्ब कुरलाईआ। जुग चौकड़ी बणे रहे अञ्याण, हरि का भेव कहिण कोए ना पाईआ। नानक गोबिन्द इक्को मंग के गए दान, पुरख अकाल आवे वाहो दाहीआ। ईसा मूसा करदे गए कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। चौदां लोक वेखदे गए नज़ाम, चौदां तबक फेरा पाईआ। बरदे बण के करदे सलाम, अलैकम तेरे चरण सरनाईआ। मुकामे हक़ नौजवान, लाशरीक खेल

कराईआ। प्रगट हो विच जहान, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। साचा मन्दिर इक मकान, बेमुकाम आसण लाईआ। शब्द अगम्मी देवे धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग तेरा मेला दो जहान, भगवन भगतां नाल कराईआ। दोहां मिल के ढोला गाउणा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा विष्न ब्रह्मा शिव शहिनशाह साख्यात इक्को इक समझाईआ।

❇ १२ मग्घर २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड पिपराली ज़िला गुरदासपुर ❇

सो पुरख साहिब समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि चलाए रथ, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। बोध अगाध खेल अकथ, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। दो जहानां आपे वस, ब्रह्मण्ड खण्ड बैठा डेरा लाईआ। रवि ससि कर प्रकाश, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे दासी दास, सेवक सेवा इक जणाईआ। लेखा जाण पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर रिहा सुहाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, करनी करता आप कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लख चुरासी अन्दर पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। रसना जिह्वा लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वासां संग रखाईआ।
१२६ १३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अबिनाशा, दूजा नज़र कोई ना १२६ १३
आइंदा। निरगुण सरगुण पूरी करे आसा, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दिलासा, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आत्म परमात्म खोल्ह खुलासा, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। अन्तर अन्तर एका साथा, सगला संग निभाइंदा। भेव चुकाए पूजा पाठा, मंत्र इक्को नाम समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि निरँकारा, आदि जुगादि आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। शब्द अनादी बोल जैकारा, कलम शाही दए वड्याईआ । कातब बण वड लिखारा, सेवा सच दए जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दए अधारा, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वारा, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। पीर पैगम्बर दे हुलारा, हज़रत इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पुरख अगम्म, अलख अगोचर खेल कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, रूप रेख ना कोई रखाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणा कम्म, करता करनी आप कमाइंदा। दो जहानां बेड़ा बन्न्ह, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। गुर अवतार बणाए जन, पीर पैगम्बर संग रलाइंदा। भाग लगाए पंज तत्त तन,

काया चोली सोभा पाइंदा। लेखा जाणे छप्पर छन्न, मण्डल मण्डप आप वड्याइंदा। वस्त अमोलक नाम धन, धन ख़ज़ीना इक रखाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, लेखा लिखण विच ना आइंदा। मात पित बण जननी जन, दाई दाया सेव कमाइंदा। करे खेल श्री भगवान, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव नौ चार वंड वंडाइंदा। जुग चौकड़ी नव नौ चार हित, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे बैठा लुक, नज़र किसे ना आईआ। दो जहानां मार्ग दस्से सच सुच्च, जीवण जुगत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। जुग चौकड़ी गेड़ा गेड़े, आपणा बन्धन आपे पाईआ। वेखणहारा नौ खण्ड खेड़े, नौ दर खोज खुजाईआ। भगत भगवन्त बन्ने बेड़े, बन्ने बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। धरत मात दे खुल्ले करे वेहड़े, सतिजुग त्रेता द्वापर फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम करे हक़ नबेड़े, हक़ हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। हक़ हकीकत लए पेख, लाशरीक इक खुदाया। चार जुग दा ख़ाली पेट, निरगुण आपणा लए भराया। जन भगतां करे साचा हेत, मित्र प्यारा संग रखाया। मुरीद मुर्शद नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र दरस दिखाया। जोत सरूपी शाहो भूपी पुरख अगम्मा खेड़े खेड़, दो जहानां फेरा पाया।

१२७

१३

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग लेखा आप चुकाया। जुग जुग लेखा चुकाए करतार, दूजा संग ना कोई रखाईआ। लहिणा देणा देवे गुर अवतार, भगत अठारां भेव चुकाईआ। ईसा मूसा खोल्ले किवाड़, ताकी इक्को इक जणाईआ। काला सूसा तन शृंगार, अल्फ़ी अल्फ़ रंग दरसाईआ। ये युक्ती आपणे हथ्थ रखे सिरजणहार, पर्दानशीन पर्दा सके ना कोई उठाईआ। गुरु गुर देवे इक्को धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। सति सतिवादी साची कार, सतिगुर सच्चा आप कमाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर वाजां रहे मार, उच्चे हुजरे कूक कूक सुणाईआ। सदी चौधवीं आवे परवरदिगार, बेपरवाह फेरा पाईआ। चौदां तबकां करे ख़बरदार, चन्द तारा लए उठाईआ। जगत हदीसा वेख कुरान, सच निशाना इक दृढ़ाईआ। हक़ हकीकी इक ईमान, अमाम इक्को नज़री आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद संग चार यार करे गुलाम, गुरबत सब दी मेट मिटाईआ। नानक गोबिन्द वेखे मार ध्यान, सचखण्ड वासी सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम चारों कुण्ट होए वैरान, खेड़ा नज़र कोई ना आईआ। कूड़ी क्रिया चढ़या तुफ़ान, जीव जंत दए रुढ़ाईआ। आत्म परमात्म दस्से ना कोई ज्ञान, गुर शब्द ढोला कोई ना गाईआ। अमृत रस मिले ना कोई ज़बान, आत्म रस ना कोई चखाईआ। अनहद राग सुणे ना कोई कान, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ।

जीव जंत होए बेईमान, बेवा होई सुरत सवाणी शब्द कन्त ना कोई हंढ्ढाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा चतुर सुघड़ सुजान, बिन नैणां वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, जोती जामा वेस वटाईआ। निहकलंक बण बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड बैठा भेव चुकाईआ। सचखण्ड बैठा एकँकार, अक्ल कला अख्वाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया करे ख्वार, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। भगत भगवान दए अधार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। साची सखीआँ मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाइंदा। कागज़ कलम शाही रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। कलमा भुलया सर्ब संसार, नाम सति मंत्र नज़र किसे ना आइंदा। घर घर दिसे धूंआँधार, जगत अन्धेरा इक्को छाइंदा। कूड़ी क्रिया वणज वपार, साचा हट्ट ना कोई चलाइंदा। चारे खाणी होई ख्वार, चारे बाणी बाण ना कोई लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। निरगुण पाए आपणा फेरा, वेद व्यास ध्यान लगाईआ। ईसा कहे परवरदिगार मेरा, बेपरवाह नज़र ना आईआ। मुहम्मद कहे मेरा बन्ने बेड़ा, आमाम अमामा आपणा रंग वखाईआ। नानक कहे पुरख अकाल बण आपणा चुकाए हक़ निबेड़ा, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को घर वसाईआ। गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल मेरा सम्बल नगर वसाए खेड़ा, कीता कौल पूर कराईआ। कलिजुग मेटे झूठा झेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे मात, करता पुरख दया कमाइंदा। सतिजुग साची देवे दात, दाता दानी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म इक्को ज़ात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। नेड़ ना आए नार कमज़ात, मन वासना दूर कराइंदा। इक्को प्याला आबे हयात, अमृत रस मुख चुआइंदा। दूई द्वैती पर्दा लाहे कायनात, काया काअबा इक वखाइंदा। निउँ निउँ सजदा करे आदाब, सीस जगदीश इक झुकाइंदा। नज़री आए हक़ जनाब, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल सच्चा शहिनशाह, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सचखण्ड वसे बेपरवाह, तख्त निवासी डेरा लाईआ। थिर घर सुत दुलारा रिहा बहा, पूत सपूता गोद उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव रिहा कमा, सेवा इक्को इक जणाईआ। जुग चौकड़ी कोटन काल गए विहा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला गया आ, लेखा लेखे सच्चा पाईआ। सतिजुग साचा बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्को राह, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। एका मन्दिर दए वखा, शिवदुआला मठ्ठ मसीत गुरुदुआरा इक्को नज़री आईआ। एका कलमा दए पढ़ा, कायनात करे शनवाईआ। एका मंत्र दए समझा, नमो सति सति एका ढोला गाईआ।

एका बीज दए बिजा, लख चुरासी काया खेत हल चलाईआ। साचा सोहला दए गा, गा गा आपणी खुशी मनाईआ। जन भगतां हौला भार दए करा, सिर आपणे भार उठाईआ। नाभी कँवल दए उलटा, अमृत झिरना इक झिराईआ। पंज तत्त विकारा दए दबा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। आसा तृष्ना दए मिटा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। नज़री आए इक्को पाक खुदा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण वेस वटा, हरि पुरख निरँजण पर्दा दए उठाईआ। एकँकारा दर खुल्हा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता फेरा पा, श्री भगवान सच निशान रिहा झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ लेखा जाणे थाउँ थाँ, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म एका घर दए वखा, घर घर विच कुण्डा लाहीआ। दीआ बाती इक जगा, कमलापाती खुशी मनाईआ। अमृत बूँद स्वांती दए प्या, अग्नी तत्त बुझाईआ। साची दाती झोली देवे पा, नाम निधाना इक वरताईआ। सतिजुग साचे फड़े बांह, पल्लू आपणी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा संग रखाईआ। सतिजुग तेरा साचा लहिणा, तेरी झोली पाइंदा। भगतां मेला करना नैणां, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। भाणे अन्दर सदा रहिणा, साचा भाणा आप समझाइंदा। ग़रीब निमाणयां अन्दर वड़ के बहिणा, माण अभिमान ना कोए जणाइंदा। कूड़ी क्रिया नज़र ना आए कोई गहिणा, सति धर्म वस्त्र इक पहनाइंदा। भगत दुआर जा जा चरणी ढहिणा, जो जो हरि हरि नाम ध्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच सच समझाइंदा। सतिजुग सुणया ला कर कन्न, हरि जू आप जणाईआ। रसना कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। मेरा बेड़ा दित्ता बन्न्ह, भगतां संग मिलाईआ। तेरे भगत साचे जन, दो जहान करन रुशनाईआ। एथे ओथे कोई ना देवे डंन, तेरी इक्को ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वारो वारी घड़े लए भन्न, घड़न भंनणहार आपणी खेल कराईआ। समरथ पुरख सुआमी सदा निहकामी अन्तरजामी तेरा कहिणा लईए मन्न, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होवे इक्को राणा, दूसर सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। चार वरन गाए सच्चा गाणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप पढ़ाइंदा। इक्को मन्दिर सच दुआर नज़री आउणा, दूजा घर ना कोए वखाइंदा। इक्को अमृत पीणा खाणा, रसना रस ना कोए वड्याइंदा। इक्को इष्ट श्री भगवाना, दूजी दृष्ट ना कोए जणाइंदा। आत्म परमात्म सच तराना, तुरीआ राग नाद सुणाइंदा। योद्धा सूरबीर बली बलवाना, हुक्म हाकम आप मनाइंदा। सतिजुग साचे बन्न्हे गाना, साचा सगन मनाइंदा। बीस बीसा करे प्रधाना, सच प्रधानगी इक कमाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या सिरजणहार, सिर सिर आप जणाईआ। सतिजुग रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। नाता तुटे चार यार, पंचम मिले माण वड्याईआ। चौथे जुग आई हार, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। चारे वरन होए ख्वार, चारे बाणी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म सच संदेसा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। दो जहाना इक नरेशा, पुरख अकाल नाउँ धराइंदा। हुक्मे अन्दर रखे ब्रह्मा विष्न महेषा, शंकर आपणे राह चलाइंदा। इक जणाए सच आदेसा, निउँ निउँ सीस सर्ब निवाइंदा। जुग चौकड़ी करदा आया आपणा पेशा, निरगुण सरगुण सेव कराइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां करे हेता, मिल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म ईश जीव जगदीश ब्रह्म पारब्रह्म खोल्हे भेता, पर्दा दूई आप चुकाइंदा। लहिणा देणा चुके औलीआ पीर शेख़ा, मुल्लां मुसायक कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग झोली साची आप भराइंदा। सतिजुग तेरी साची झोली, एका नाम भराईआ। जगत विद्या तेरी गोली, एका नाम दए वड्याईआ। सुरती शब्द फलवाड़ी मौली, रुत्त बसन्ती इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। रुत्त बसन्ती मौले रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। सतिजुग साचे साहिब सच्चा गया तुठ, तेरी तृष्ना तृखा बुझाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट, रस इक्को इक वखाइंदा। कलिजुग कूड़ा कढ्ढे कुट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नज़र ना आइंदा। तेरी धार विच्चों तेरा रूप पए फुट्ट, मात पित ना कोए बणाइंदा। ना कोई पंज तत्त दिसे बुत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह, बण रहबर आप जणाइंदा।

❃ १२ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड जट्टा ज़िला गुरदासपुर ❃

सति पुरख तेरा दरबार, घर सच वज्जे वधाईआ। शाहो भूप सच सिक्दार, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तेरा हुक्म अगम्म अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दोए जोड़ करां निमस्कार, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। मंगां मंग बण भिखार, दर दरवेश अलख जगाईआ। सतिजुग रोवे करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैनूं तेरे उत्ते आवे ना कोई एतबार, अछल छल तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद्दे दर दुआर, घर आपणे रिहा बहाईआ। कलिजुग वेखी करनी

कार, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिजुग कहे मेरे सुल्तान, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं बालक बाल अंझाण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैनूं देवण आपणा दान, मेरी झोली मात भराईआ। रसना कहिण साडी पिछली गई कलाम, अग्गे कलमे तेरे वड्याईआ। नाता तुटा शरअ ईमान, शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। इष्ट देव ना कोए मनाण, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतारां दे सुणाईआ। गुर अवतारां दे फ़रमाणा, सच्चे सच तेरी वड्याईआ। सारे कहिण मन्नीए तेरा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार जुग दा भुल्लीए गाणा, पूरब राग ना कोए सुणाईआ। सारे मन्नीए इक भगवाना, दूजा इष्ट ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी पूरी आस कराईआ। साहिब सतिगुर प्या हस्स, आपणी खुशी मनाइंदा। गुर अवतारां देवां दस्स, धुर धुर हुक्म सुणाइंदा। पिछला लेखा करो बस, बसता सर्ब बंधाइंदा। पन्ध मुकाया नठ्ठ नठ्ठ, वेला अन्तिम आइंदा। चरण कँवल गए ढठ्ठ, दर साचा आप सुहाइंदा। देवणहारा शब्दी मति, गुरमती आप जणाइंदा। आदि जुगादी कमलापति, कँवल नैण खेल खलाइंदा। जिस बणाई आपणी रत, रती रत नाल मिलाइंदा। सो साहिब जाणे मितगत, गतमित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा । साचा हुक्म गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाईआ। सारे बोलो इक्को वार, इक्को ढोला गाईआ। पिछली करनी प्रभ दी झोली रहे डार, आपणी गंढु ना कोए बन्नाईआ। अन्तिम डिगे मूँह दे भार, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। चार यारी होई ख्वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। लख चुरासी होई बीमार, तबीब नज़र कोए ना आईआ। धनंतर रोवे ज़ारो ज़ार, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप मनाईआ। साचा हुक्म इक्को एक, एका एक जणाइंदा। सारे रखो इक्को टेक, एका दर बहाइंदा। पिछला चुक्के सब दा लेख, लेखा कोए रहिण ना पाइंदा। लोकमात करे ना कोई हेत, सिख गुर रूप ना कोए वखाइंदा। मुरीद मुर्शद ना लए वेख, मुर्शद मुरीद नज़र कोए ना पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग छोटे बाले बण के खेडां आए खेड, पिछली खेड सर्ब भुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप दृढ़ाइंदा। सुणो हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप जणाईआ । रल मिल गाओ इक्को गाणा, सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। चरण कँवल ध्यान लगाओ श्री भगवाना, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। सतिजुग साचे दयो ब्याना, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, कह कह हाल सुणाईआ। सतिजुग तेरा सच्चा सैण, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जन भगतां खोले नेत्र नैण, निज नेत्र करे रुशनाईआ। आदि अन्त आवे लैण, दो जहानां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग साचे रहे आख, इक्को इक जणाईआ। चार जुग असीं बणे रहे शाख़, पत डाली मात महकाईआ। लख चुरासी जीव जंत देंदे रहे भविख्त वाक, दाता दानी सर्ब समझाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे पाकी पाक, पाक रसूल फेरा पाईआ। परवरदिगार खोले ताक, बंद कवाड़ा इक दृढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी पार किनारा जाणे घाट, साचे पत्तण बहे सच्चा माहीआ। चार जुग दी मेटे वाट, कलिजुग लेखा दए चुकाईआ। अग्गे सुणाए आपणी गाथ, साचा ढोला इक्को गाईआ। सतिजुग लाए साचा मात, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल देण तेरा साथ, तेरा सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो तैयार, सच सच रहे जणाईआ। सतिजुग तेरा सति विहार, सति पुरख निरँजण रिहा लिआईआ। वारो वार कटदे गए सर्ब वगार, बण वगारी फेरा पाईआ। अन्तिम सारे गए हार, हरि जू आपणी खेल कराईआ। रसना जिह्वा आत्म परमात्म पा ना सकी सार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। एका इष्ट ना सके वखाल, दृष्ट जगत ना कोए खुलाईआ। अन्तिम आया सर्ब ज़वाल, ज़ेर ज़बर करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बणत आप बणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दित्ता साथ, बण साथी संग निभाईआ। श्री भगवान गाए गाथ, सोहँ ढोला आप प्रगटाईआ। कोटन कोटि मन्नण त्रलोकी नाथ, सीस जगदीश अग्गे ना कोए उठाईआ। कोटन कोटि सीस निवाइण राम बेटा दस्राथ, दहि दिशा ना कोए चतुराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद परवरदिगार वखावे आपणी ज़ात, नूर जहूर इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरी वंड वंडाईआ। धन्न भाग मेरी वंडी वंड, सतिजुग साचे सीस झुकाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर चाढ़न रंग, प्रेम रंगण नाल मिलाया। दो जहान श्री भगवान तेरा गावण छन्द, विष्न ब्रह्मा शिव ढोला अलाया। भगत भगवन्त आत्म परमात्म मिले अनन्द, अनन्द अनन्द विच धराया। चौदां लोक चढ़े इक्को चन्द, चौदस चन्द मुख भवाया। करे प्रकाश कोटन ब्रह्मण्ड, अन्ध अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा एको कर, कर किरपा वेख वखाया। सतिजुग कहे मैं तेरा दास, बण सेवक सेव कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेरी पूरी कीती आस, आसा पुन्नी सहिज सुखदाईआ। लोकमात धरत धवल बिन

रूप रंग करां वास, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। लोकमात वेखां आ, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तेरे हुक्म दा मैनूं चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। साचा मार्ग दयां लगा, सच सुच्च मिले वड्याईआ। साचे भगतां चरणी डिगां जा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। ओह मेरी पकड़न बांह, मैं ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। निथाव्याँ देवां साचा थाँ, थान थनंतर इक वखाईआ। बिन पुत्रां रोवे कोई ना माँ, जगत रंडेपा ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। मेरी आसा पूरी कर करतार, मेरा संग निभाया। मैं लख चुरासी करां विचार, घर घर आपणा फेरा पाया। गुरमुखां जा के करां दीदार, नेत्र नैण नैण मिलाया। आपे आपणा जा के दस्सां हाल, गल विच पल्लू एका पाया। तुसां रहिणा मेरे नाल, दूजा संग ना मोहे भाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे संग रखाया। हरि जू कहे बोल जैकार, जै जैकार इक जणाईआ। साचा भगत सच्चा सरदार, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। शहिनशाह खेल करे अपार, हुक्म हाकम आप जणाईआ। चार यारी कर ख्वार, पंचम देवे माण वड्याईआ। पंचम पंच कर परवान, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। पहलों खिच्चे विच्चों आप जहान, दरगाह साची संग रखाईआ। सचखण्ड बणाए आप विधान, नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा राज जोग दए समझाईआ। राज जोग सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। जिउँ ब्रह्मे वंडी वंड, सिँघ पाल सीस छत्र झुलाइंदा। जिउँ शंकर दुआरे चढ़या चन्द, जगत जगदीशा नूर धराइंदा। जिउँ इन्द्र मुकया पन्ध, मनजीता माया ममता मोह चुकाइंदा। जिउँ सवरन माणे इक अनन्द, प्रभ चरण ध्यान लगाइंदा। जिउँ गुरदयाल सचखण्ड जा के पाई वंड, साडी कीती हथ्थ ना क्यों फड़ाइंदा। सतिजुग मंगी तैथों मंग, तिन्न जुग सोया वक्त लंघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच विधान, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। सच विधान श्री भगवान, एका एक बणाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सच संदेसा दए सुणाईआ। विष्नूं बणे बाल अञ्याण, बण सेवक सेव कमाईआ। ब्रह्मा जोती मिले आण, गुरमुख साचा सोभा पाईआ। शंकर कहे मेरी होई कल्याण, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। सुरप्त कहे मेरा लग्गे चरण ध्यान, चरण कँवल मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप चुकाइंदा। पंचम कर दर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। लोआँ पुरीआँ दे ज्ञान, सच संदेसा इक सुणाइंदा। खेले खेल दो

जहान, दोए दोए धारा आप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकट्ठे कीते आण, सब दा लेखा आप मुकाइंदा। कूड़ा झुल्ले ना कोए निशान, कलिजुग कूड़ कुड़यारा रहिण ना पाइंदा। सतिजुग साचे कर परवान, सत्त रंग निशाना इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख्त आप वड्याइंदा। साचा तख्त सच्ची सरकार, साची रय्यत नाल रलाईआ। साचा हुक्म करे विचार, साची सख्सीअत लए प्रगटाईआ। साचा देवे इक आधार, नाम अहिमीअत इक जणाईआ। दूजा अवर ना कोए वपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे माण वड्याईआ। सतिजुग तेरा होए माणा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तख्ते बहे इक्को राणा, दूजा नजर कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथमी गाए साचा गाणा, श्री भगवान आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आप जणाइंदा। साचा मार्ग लाए आप, सतिजुग तैनूं दए वड्याईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, लख चुरासी वेख वखाईआ। नव नौ दा कराए जाप, जीवण जुगत दए जणाईआ। आत्म परमात्म सच्चा पाठ, इक्को अक्खर दए समझाईआ। चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़ सज्जण साक, सगला संग आप अख्वाईआ। निज नेत्र खोल्ह ताक, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। भगत भगवान निभाए साथ, बण संगी सेव कमाईआ। सतिजुग पूरी करे आस, आसा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। सतिजुग कहे मैं बाला निक्का, बलहीण दए दुहाईआ। कवण चलाए साचा सिक्का, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी लख चुरासी रस जाणे फिका, अमृत रस नज़र कोए ना आईआ। हउमे हंगता मस्तक लग्गा टिक्का, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ सुणौण चिट्ठा, चित विच ना कोए वसाईआ। गुरू बण बण बणौण आपणा हिस्सा, घर घर हिंसा करे लड़ाईआ। जगत पीसणी कलिजुग पीसा, बचया कोई नज़र ना आईआ। सच ना पढ़े कोई हदीसा, कलमा नबी ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मैं बाला छोटा, बाहू बल ना कोए रखाइंदा। कलिजुग वेखो कूड़ा मोटा, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। जूठयां झूठयां साधां सन्तां नाल लै के कसी फिरे लंगोटा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन बल ना कोए रखाइंदा। सतिजुग कहे मेरी निक्की जवानी, जोबन नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया होई वैरानी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कर किरपा दे सच निशानी, दर इक्को मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी कर

मेहरवानी, मेहरवान दया कमाईआ। सोहँ अक्खर पढ़नी बाणी, बाण निराला तेरे हथ्थ फड़ाईआ। भगतां उत्तों जावीं कुरबानी, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सतिजुग बाला प्या रो, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जिन्ना चिर मेरे नाल चरण ना देवें छोह, मेरा मन ना धीर धराइंदा। मैं तेरे वैराग आपणा आप लवां कोह, तुध बिन चैन कोए ना पाइंदा। कर प्रकाश दे साची लोअ, निरगुण तेरी जोत आस रखाइंदा। दरस दिखा अग्गे हो, हौका वड्डा भर जणाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कर सच सुणाए सो, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सतिजुग साचे रखणा याद तेरा लहिणा पाए झोली छब्बी पोह, संसा रोग ना कोए वधाइंदा। इक्को देवे ढोआ ढो, धुरदरगाही आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग बाला नेत्र वहाए नीर, अक्ख अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मेरी बदल आप तकदीर, बेपरवाह सचे माहीआ। हथ्थ फड़ा इक शमशीर, शरअ मेटे थाउँ थाईंआ। कलमा दे बेनज़ीर, कलाम तेरी इक इलाहीआ। दीनां मज़्बां तोड़ ज़ंजीर, ज़रा ज़रा दे कटाईआ। चोटी चढ़ इक अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म मनाईआ। सब दी इक्को वार पढ़ तकबीर, मुल्लां शेख़ पन्ध मुकाईआ। मेरे साहिब मेरा होणा दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। दर तेरे कढ्ढां इक लकीर, लाअनत पए सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद चलां तोहे रज़ाईआ। सद चलां तेरी रज़ा, रहमत रहमान इक कमाईआ। नेड़ आए ना कोई कज़ा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। तेरे दरस इक मजा, दीन मज़्ब ना कोए लड़ाईआ। वेले अन्त ना दईं सज़ा, अभुल भुल्ल बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा समझाईआ। सतिजुग दस्सां सच असूल, बीस बीसा राह तकाइंदा। जवाब देवां इक माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जुग जुग लहिणा देणा ना जाए भूल, अभुल आपणा खेल कराइंदा। बिन भगतां किसे हथ्थ ना आए अर्ज़ तूल, आपणा रकबा ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा दे भगवान, इक्को इक जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी देवे धुर फ़रमाण, धुर दी मोहर लगाईआ। बदली करे ना कोई विच जहान, बदला सब दा रिहा चुकाईआ। लेखा लिखाए जगत विधान, नव खण्ड राज जोग कवण धार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे दान, लोकमात करे प्रधान, हथ्थ फड़ाए सच निशान, सीस झुकौण राज राजान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ।

❇ १३ मग्घर २०१६ बिक्रमी जसवन्त सिँघ नाल गोष्ट रमदास ज़िला गुरदासपुर ❇

री सखी दस्स आपणा कन्त, कवण गृह वसे सच्चा माहीआ। कवण चोली चाढ़े रंगत, रंग उतर कदे ना जाईआ। कवण बिध बणाए बणत, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। कवण नाम जणाए मंत, अन्तर आपणी बूझ बुझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म करे रसाईआ। नाता तोड़ लख चुरासी जीव जंत, आपणी सेज लए बहाईआ। कोई भेव ना जाणे पांधा पंडत, ज्ञानी ध्यानी सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण दुआरे मिले वर, वर सच्चा इक्को माहीआ। री सखी दस्स साची बात, मैं पुच्छण घर आईआ। कलिजुग कोझी कमली होई नार कमजात, कन्त कन्तूहल नज़र ना आईआ। मैं फिर फिर थक्की दीन मज़्ब विच ज़ात पात, चारों कुण्ट नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरी झोली किसे ना पाई सच्ची दात, मिले मेल सच्चे माहीआ। अन्दर वड़ वड़ करे मेरे नाल बात, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। बिन रसना जिह्वा सुणाए गाथ, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। मैनूं निरगुण जोत करे प्रकाश, घर साचा चन्द चढ़ाईआ। सद वसे मेरे पास, दिवस रैण विछड़ ना जाईआ। मैं अन्त होई निरास, सखी सहेली मेरा सज्जण नज़र किते ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखीआँ नाल सखीआँ मेला घर इक्को इक रसाईआ। दस्स सखी उह साचा मीत, जिस घर साचे डेरा लाइंदा। आदि जुगादी इक्को रीत, जुग जुग वेस वटाइंदा। सदा सुहेला सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। कोझयां कमल्यां नाल करे प्रीत, फड़ बाहों गोद बहाइंदा। नानक निरगुण दस्सी साची रीत, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। मेरा तेरा साहिब इक अनडीठ, नेत्र जगत नज़र किसे ना आइंदा। जिस दे गाउँदे गए गीत, सो गोबिन्द सचखण्ड डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सखीआँ खेल कराइंदा। सखी कहे आ सुण प्यारी, मैं आपणा हाल सुणाईआ। जुग जुग रही मात कुआरी, कोई कन्त मिल्या ना मेरा माहीआ। आउँदी जांदी रही वारो वारी, लख चुरासी फेरा पाईआ। अज्ज रविदास आई मिलण दी वारी, घर मेला सहिज सुभाईआ। नाता तुटे जगत विभचारी, दुखी दुःख दर्द रहे ना राईआ। मिले महल अटल मुनारी, मिल सन्तां सोझी पाईआ। जिथ्थे वसे मीत मुरारी, निज घर बैठा डेरा लाईआ। मेरी खुल्हण वाली ताड़ी, लहिणा देणा चुके पिच्छे अगाड़ी, अग्गे इक्को नज़री आईआ। सन्तां कोलों पुछे सखी आप बण कुँवारी, मेरा माही देणा मिलाईआ। मैं जा के चरण कँवल करां निमस्कारी, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं कहिन्दे बेअन्त बेऐब परवरदिगारी, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सचखण्ड वसे निरगुण जोत निरँकारी, निरगुण आपणा तख्त बणाईआ। अन्दरे अन्दर मेल मिलाउणा नज़र ना आए जीव संसारी, जीवण जुगत

इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सखी सखीआँ संग रलाईआ। आ सखी वेख मेरा सज्जण, घर घर विच वसे माहीआ। आदि जुगादि परदे कज्जण, जन भगतां सेव कमाईआ। चरण धूढ़ी देवे मजन, दुरमति मैल धवाईआ। एथे ओथे परदे कजण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अनहद नाद अनादी ताल ओथे वज्जण, ताल तलवाड़ा इक्को इक जणाईआ। कूड़ कुड़यार जगत विभचार घर छड्ड छड्ड भज्जण, जिस घर वसे मेरा माहीआ। जुग जन्म दी विछड़ी आपणी गोद बहाए सज्जण, सखी सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखी सखी नाल मिलाईआ। सखी नाल सखी मेला, हरि सतिगुर आप कराइंदा। इक्को घर वखाए गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द राह चलाइंदा। सन्त साजण वेख वखाए धाम नवेला, निज नेत्र भेव जणाइंदा। सखी सखी मिलण दा आया वेला, मग्घर तेरां रुत्त सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग आप निभाइंदा। सखी नाल सखी करे प्यार, मींढी सीस इक गुंदाईआ। दोहां विचोला बणया निरँकार, निरगुण सरगुण मेला लए मिलाईआ। फेरे मारे वारो वार, दो जहानां आवे जावे चाईं चाईंआ। लख चुरासी विच्चों लए उठाल, अन्दर वड़ वड़ बूझ बुझाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल दया कमाईआ। घर विच घर सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा दए वखाईआ। जागत सोवत उठत बैठत वसे नाल, सदा सद अंगीकार आप हो जाईआ। सखी सखी वल वेख हो निहाल, बिन सखीआँ हरि जू घर किसे ना जाईआ। लख चुरासी रही भाल, जीव जंत कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखीआँ नाल सखी रंग सखावत इक्को इक जणाईआ। सखी वेख चढ़या रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। आत्म माणे इक पलँघ, सेज चरणां हेठ दबाइंदा। उत्ते बैठ सूरा सरबँग, आपणा हुक्म मनाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती नूर डगमगाइंदा। ना कोई गीत ना कोई छन्द, ना कोई ढोला राग अल्लाइंदा। आदि पुरख अबिनाशी करता सूरा सरबँग, साहिब सुल्तान सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा डेरा लाइंदा। सखीआँ अन्दर सतिगुर जाए लँघ, चोरी चोरी आपणा कुण्डा लाहइंदा। रहिण ना देवे मात गंढ, घुंडी आपणी हथ्थीं खुलाइंदा। मुख चेहरा वेखे नक्क बलाक मथ्थे चन्द, जोती नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखीआँ घर सखी आपणा फेरा पाइंदा। सखी वेख मेरा सुल्तान, सुत्यां लए जगाईआ। आदि जुगादी सच्चा काहन, साची गोपी लए प्रनाईआ। इक्को मिल्या हाणी हाण, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। नेत्र खोल्ह करो पछाण, बिन नेत्रां नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी जीव जगत होया अञाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए

ब्यान, लिख लिख लेखा मात समझाईआ। साहिब सतिगुर निरगुण दाता पुरख बिधाता गुरमुख विरली सखी मिले आण, जिस सिर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखी नाल सखी साथ, सगला संग आप निभाईआ। हथ्थां नाल मिलाए हथ्थ, सौदा हथ्थो हथ्थ चुकाईआ। अन्दर बाहर पुरख समरथ, हाज़र हज़ूर फेरा पाईआ। जुग जन्म दे विछड़े होया इकठ्ठ, इकठ्ठा पैंडा रिहा मुकाईआ। अन्दर वड़ के गेड़े उलटी लठ्ठ, लठ्ठ लठ्ठ नाल भवाईआ। गोबिन्द मार्ग एका दस्स, नानक निरगुण करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल आया नस्स, जोती जाता वेस वटाईआ। अगला हाल दस्सणों करे बस, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ नाल हथ्थ रिहा मिलाईआ। तेरां मग्घर साची थित, जोगी जुगत हथ्थ ना आईआ। भगत भगवन्त इक्को हित्त, हितकारी वेख वखाईआ। लेखा जाणे नित नवित्त, निज घर बैठा डेरा लाईआ। अग्गे दस्से ते निकले फिक, फिकरा हक़ ना कोए समझाईआ। माणस जन्म जन लए जित्त, गुर सतिगुर दर्शन पाईआ।

जल तरंग उपजे तरंग, जल ही विच समाईआ। तरंग अन्तिम होवे भंग, गुरमुख भंग रूप ना कदे वखाईआ। एथे ओथे सदा रहे अनन्द, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। पुरख अकाल दा सच्चा चन्द, गुरमुख इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन कोटि तरंग, सन्तां दे चरणां हेठां रखाईआ। तरंग तरंग दी देवे कोई की मिसाल तरंग, मातलोक खेल कराइंदा। गुरमुखां चढ़े अगम्मी रंग, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। गुरमुख आवे जावे निशंग, एथे ओथे इक्को घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पूरी करे उमंग, आपणी उमंग भगतां अग्गे रखाइंदा। काल दयाल प्रभ की माया, अचरज खेल आप कराईआ। जप तप हठ, सति संजम नेम बणाया, जोग अभ्यास नाल रलाईआ। टूणा जादू मढ़ी मसाण भूत प्रेत जिन ख़बीस राह चलाया, हुक्मे हुक्म सर्ब भवाईआ। सब दे उत्ते आपणा मंत्र नाम रखाया, पृथ्मी आकाश आपणे हुक्म चलाईआ। बीर बेताल बन्नृ वखाया, हाकन डाकन सिर मुंडवाईआ। अंचनी कंचनी हुक्म जणाया, सकती भुगती भुल्ल कदे ना जाईआ। इक्को डण्डा सन्तां हथ्थ फड़ाया, सब दी करन सफ़ाईआ।

सो सुणे जिस सुणाए आप, रसना जिह्वा कहिण ना जाईआ। काया मन्दिर अन्दर देवे जाप, निरगुण आपणी करे पढ़ाईआ।

आत्म परमात्म सच्चा पाठ, दूसर राह ना कोए जणाईआ। सो नाम सतिगुर पूरा देवे आपणी दात, जिस नाम दी सिफ्त करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा नाम सतिगुर प्यार, सदा सहाई अन्दर बाहर, खेले खेल गुप्त ज़ाहर, बिन गुरमुखां हथ्थ किसे ना आईआ। नाम वस्त सदा अनडिठ, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। अन्दरे अन्दर बदले करवट, आप आपणा पर्दा लाहीआ। दूई द्वैत मेट फट्ट, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। अग्गे वज्जे अनहद सट्ट, सच नगारा इक सुणाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, साचे घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, चरण कँवल वखाए साचा घर, घर सच्चा इक्को नाम वधाईआ। मंज़ल विच ना होए रुकावट, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। दो जहान चलदयां होए ना थकावट, थक्क जाए ना पांधी राहीआ। कूड़ी नेड़ ना आए बनावट, सच सुच्च मिले वड्याईआ। सन्तां कोल इक सख़ावत, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। नौ दुआरे होए ना कोए बग़ावत, पंज चोर ना करे लड़ाईआ। सतिगुर अन्दर वड़या रहे महावत, नाम नेज़ा हथ्थ उठाईआ। नाल रखे सदा सही सलामत, सहिज सहिज आपणा हुक्म मनाईआ। इक वखाए सच अदालत, फ़र्ज ज़ुल्म कोए रहिण ना पाईआ। आपणे घरों कदे ना करे ममानत, आईए जाईए चाईं चाईंआ। इक्को दयो नाम ज़मानत, ज़िमनी लोकमात भराईआ। बिन काग़ज़ां करो पछाणत, अष्टाम कम्म किसे ना आईआ। बिन जाणयां हो जाणत, अन्जाणत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंज़ल मंज़ल रिहा मुकाईआ। ना अष्टाम ना फीस कोरट, कोट हरि जू इक्को इक बणाईआ। शब्द नगारा वज्जे चोट, चोबदार रसना कह ना कोए बुलाईआ। ठग्गां चोरां कढ्ढे खोट, साधां सन्तां गोद बिठाईआ। हिरदे विच लाए नकब, चोरी करे आप करतार। जुग चौकड़ी एहो मर्ज़, गुरमुख विरले रिहा तार। साहिब सतिगुर सदा सदा निभाए आपणा फ़र्ज, दर दर बण के सेवादार, पूरब जन्म दा लाहे कर्ज़, भाउ भगती कीती अपर अपार, मुरीद मुर्शद लभ्भे मर्ज़, अन्दर वड़ के काया माटी खाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दीन दयाल। अन्दरे अन्दर जाए चढ़, सुखमन टेडी पार कराईआ। अमृत जाम प्याला हथ्थ फड़, निझर झिरना दए झिराईआ। पंच विकार सुटे दड़, खण्डा खड़ग इक उठाईआ। बजर कपाटी तोड़ गढ़, दूई द्वैती पर्दा आप उठाईआ। निरगुण जोत प्रकाश कर, घर घर विच करे रुशनाईआ। दरस दिखाए इक्को हरि, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी बन्ने आपणे लड़, पल्लू शब्दी गंढु पवाईआ। सखी कहे मोहे मिल्या वर, घर कन्त कन्तूहल नज़री आईआ। निरभउ चुकाए भय डर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिन हथ्थां पैरां काया मन्दिर अन्दर उच्चे पौड़े जाए चढ़, सच सिँघासण आसण

डेरा लाईआ। बिन कल्मयों कलमा लए पढ़, बिन अक्खरां अक्खर दए सुणाईआ। लेखा जाणे चेतन जड़, चालाकी आपणी ना किसे समझाईआ। जन भगतां उत्ते किरपा कर, किरपन आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र सरवण हिरदा सच, लूं लूं अन्दर जाए रच, जोत प्रकाश जाए मच्च, मवाता इक्को वार लगाईआ। नाम मवाती लाए तीली, आपणी हथ्थीं खेल कराइंदा। प्रभू मिल्या ना किसे दलीली, दलील विच कदे ना आइंदा। इक्को दस्से सच असीली, असल आपणा राह चलाइंदा। बिन हरि नाम ना कोए वकीली, वुकला कोए नज़र ना आइंदा। जिस ने अन्त करी अपीली, बरीख़ाना इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर वड़ वड़ आपणा मेल मिलाइंदा। अन्दर वड़े आप निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। नेत्र जगत ना दिसे संसार, लख चुरासी वेखण कोए ना पाईआ। बणे ठग्ग बेऐब परवरदिगार, ठग्गी इक्को इक कमाईआ। शाह रग उपर चढ़ के दए दीदार, जलवा नूर इक इलाहीआ। मस्त अलमस्त करे गुफ्तार, गुफ्त शनीद खेल कराईआ। वजूद तत्त ना कोए आधार, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। अलख अलख अलख बोल जैकार, अलख निरँजण गुरमुख लए उठाईआ। हो प्रतख दरस देवे काया घर सच्चे घर बार, घर मन्दिर सोभा पाईआ। नेत्र कीता दरस जलवा यार, सरवण सुणया शब्द विहार, आत्म वड़या सांझा यार, जिस ने घड़या सर्ब संसार, फड़यां हथ्थ किसे ना आईआ। फड़यां किसे ना आवे हथ्थ, दो हथ्थ देण दुहाईआ। रसना गा ना सकी गथ, बेअन्त वड वड्याईआ। पन्ध मुके ना नस्स नस्स, कोटन कोटि साध सन्त बणे पांधी राहीआ। कलम शाही गा ना थक्की जस, समुंद सागर देण दुहाईआ। बसुधा कहे मेरी होई बस, वनासप्त मेरी छाती विन्ह विन्ह छानणी दिती कराईआ। मेरा साहिब सदा समरथ, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस जन कर किरपा आपणा मार्ग देवे दस्स, सो जन मिलण दुआरे जाईआ। अग्गों मिले हस्स हस्स, निरगुण आपणा पर्दा लाहीआ। आ आ सख़ी रल के जाईए वस, वसेरा इक्को घर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लवां रस, बिन हरि रस नौ रस कम्म किसे ना आईआ। इक दूजे दी पूरी होए आस, निरास रहिण कोए ना पाईआ। बणे विचोला विच रविदास, लेखा लिख्त नाल दए गवाहीआ। प्रभ दा इक्को कम्म ख़ास, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। जे कोई पुछे किथे करे निवास, घट घट डेरा लाईआ। भगत भगवन्त दी सच्ची शाख़, शनाख़त आपणी दए जणाईआ। कर किरपा करे बंद ख़लास, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हिरदे अन्दर आपे वड़, बिन पौड़ीयों डण्डे जाए चढ़, दरस दिखाए अग्गे खड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जन भगतां चरणी डिगे दड़, आपणा माण ना कोए वखाईआ। साथी होए तन तन, तन

होई कुड़माईआ। साथी होए मन मन, मन वासना जगत समाईआ। साथी होए कन्न कन्न, कन्न कन्नां गोष्ट इक दृढ़ाईआ। साथी होए जन जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। साथी साथीआं बेड़ा रहे बन्ह, आप आपणे नाल मिलाईआ। जिन्हां साथी मिल्या श्री भगवन, एथे ओथे खुशी मनाईआ। साथीआं नाल मिले साथी, सगला संग रखाया। अन्दर बाहर इक्को गाथी, मंत्र हरि हरि नाम ध्याया। जन्म जन्म दी मुके बाकी, पिछला हिसाब ना कोए रखाया। साथी खोल्हे साथीआं ताकी, घर वड़ वड़ कुण्डा लाहया। आओ वेखो मारो झाती, हरि सतिगुर खेल रचाया। अमृत जाम प्याए साकी, निझर झिरना मुख चुआया। जगत नाता तन ख़ाकी, स्त्री पुरुष रूप वटाया। अगला खेल बहु बिध भाती, भाव गुरमुखां हथ्थ फड़ाया। रसना जिह्वा करदी रही इक दूजे नाल बाती, बातन जलवा जलाल हरि ना किसे जणाया। कन्त कन्तूहल नार सेज माणी रातीं, जगत गृहस्त मात हंढ्राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साथी साथीआं संग रखाया। साथी साथी मिल्या जोड़ा, जोड़ी जगत जुगत बणाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा नाम घोड़ा, गुरमुखां उपर रिहा बठाईआ। दो जहानां फिरे दौड़ा, आवण जावण खेल रचाईआ। लख चुरासी वेखे फल मिठ्ठा कौड़ा, घर घर फेरा पाईआ। सच संदेसा देवे नर नरेशा अन्तिम वेला रहि गया थोड़ा, बिन हरि कंम कोए ना आईआ। जोड़ी किसे पैरीं पौण ना देवे जोड़ा, टुट्टी जुती
१४१ पानही चम्म चमड़ दृष्टी कम्म किसे ना आईआ। सस्से उपर लाए इक्को होड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। हँ ब्रह्म १४१
१३ प्रभ आपे बौहड़ा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। स्त्री मर्द अन्त जवाब देण कोरा, अग्गे संग ना कोए जाईआ। पुरख १३
अबिनाशी इक्को कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को घर सुहाईआ। गुरमुख वेख तेरा उच्चे मन्दिर डेरा, विष्न ब्रह्मा शिव थल्ले बैठे सीस झुकाईआ। ओथे इक्को चाउ घनेरा, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। गुरमुख सखीआँ पाया घेरा, विच वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत साथी सदा सदा वड्याईआ। रसना लग्गे प्रेम प्यार भोग, सच वस्त मिले वड्याईआ। जन्म कर्म दा मिटे रोग, कूड़ी क्रिया मोह मिटाईआ। जगत विछोड़ा ना होए विजोग, विछड़ कदे ना जाईआ। सन्त सतिगुर धुर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। अन्दर बाहर दरस अमोघ, जलवा नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म नाम मिले साची चोग, चुग खुशी मनाईआ। सति धर्म दा साचा जोग, जुगती सन्तां हथ्थ फड़ाईआ। लख चुरासी उतरे बोझ, राए धर्म ना दए सजाईआ। जिथ्थे कोई ना सके पहुंच, उस घर डेरा देणा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसना रस इक्को खाईआ। इक्को रस खाए भगवान, रसीआ रस आप हो जाइंदा। प्रेम भगती मंगे दान, जन भगतां अग्गे झोली डाहइंदा। भगत सच्चा होए मेहरवान, भगवन अग्गे भोग लवाइंदा।

भगवन सच्चा देवे दान, जीव जंत तराइंदा। जन्म मरन दी चुके काण, आवण जावण फंद कटाइंदा। लेखा मुके मढ़ी मसाण, गोबिन्द आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसना रस इक्को इक एका वार खाइंदा। शुकर शुकर शुकर गुज़ार, शुकर शाकर इक जणाईआ। मुकर जाए ना फेर गंवार, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। उतर आया आप निरँकार, महाबली फेरा पाईआ। जोत शब्द इक्को धार, शब्दी शब्द डंक सुणाईआ। कलि कल्की लै अवतार, कलिजुग लेखा रिहा मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार, चौदां तबक वेखे थाउँ थाईंआ। चौदां लोक खोल्ह कवाड़, दर दर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले देवे वर, गुर चेले एका घर बहाईआ। ख्वाहिश अन्दर होवे ख्वाहिश, खुशी खुशी नाल मिलाइंदा। रविदास पिच्छे होया दास, लेखा चम्यार हथ्थ फड़ाइंदा। जिस दा मित्र कमलापात, दूजा संग ना कोए जणाइंदा। भगतां पिच्छे हरि जू आपणा करे घात, घाउ आपणे आप लगाइंदा। जन भगतां उत्तम करे ज़ात, आपणी ज़ात ना कोए वखाइंदा। पिच्छों लिखी रहि जाए बात, अग्गे हो दरस कोए ना पाइंदा। चल के आया आपणे घाट, पिछला घाटा पूर कराइंदा। जिस तन्द विच्चों कसीरा दिती दात, सो तन्द तन्द वेख वखाइंदा। दोहां होर मिल के फेर बणे जमात, अगला फेर भेव समझाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग इक्को देवे सच्चा साथ, सन्तां साथी आप वखाइंदा। जिस रविदास रखाई पात, सो रविदास पत पत नाल वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि की पौड़ी लहर, अन्दर वड़ वड़ करे सैर, सैरगाह इक्को इक जणाइंदा। सैरगाह सूरा सरबँगण, जल जलधार आप जणाईआ। कसीरे उत्तों दित्ता कंगण, कांग आपणे नाम चढ़ाईआ। जे कोई हुण जावे मंगण, अग्गों हथ्थ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां संग आपणा खेल रचाईआ। भगतां नाल खेले लुकणमीची, मचला हो हो खेल कराइंदा। ना कोई वेखे ज़ात ऊँच नीची, नीचां अन्दर डेरा लाइंदा। आत्म परमात्म गंढु आपणी हथ्थीं पीची, ना कोई खोल्ह खुल्हाइंदा। रविदास उंगली वट चढ़ाया निक्की चीची, पाहणा खिच सेव कमाइंदा। अन्तिम प्रभू वेखण आया बाग़ीची, फुल फलवाड़ी फोल फुलाइंदा। गुरमुख आत्म प्रेम प्यार दी नीकन नीकी, मन मनसा ना कोए वखाइंदा। सब नूं देंदा पिछली कीती, पिछला लेखा भुल्ल कदे ना जाइंदा। जिस रविदास नाल लाई प्रीती, तिस रविदास दास आपणे नाल मिलाइंदा। जे कोई पुछे पिछली बीती, बनारस थेटा भेव खुल्हाइंदा। जाणे खेल जीअ जी की, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक सेव आप कमाइंदा।

प्रसादि अन्दर प्रसादि, परम पुरख रस भराईआ। आत्म अन्दर परमात्म नाद, सच संदेस रिहा सुणाईआ। याद अन्दर याद, यादासत इक समझाईआ। लेखा लेख बोध अगाध, लिख लिख सके ना कोए मुकाईआ। मेल मिलावा माधव माध, मोहन मोहनी रूप खेल कराईआ। इक दूजे दी सुण फ़रियाद, फ़रमांबरदार फेरा पाईआ। सति प्रसादि साची दाद, दस्त दस्त हथ्थ वड्याईआ। हरि जू रीती जुगादि आदि, जुग जुग वेख वखाईआ। मिले सच सच्चा स्वाद, आपणी सुध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रसादि गुर प्रसादि झोली पाईआ। नाले खावांगे नाले हसांगे। सृष्ट सबाई दसांगे। अन्दर वड़ वड़ वसांगे। दाई सदा लावे दा, अचरज खेल रचाईआ। भगत भगवान दा कदे ना करे वसाह, अछल छलधारी आदि जुगादि अछल छल आपणा वेस वटाईआ। दूसरयां दस्सदा रिहा राह, इशारयां नाल समझाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी लेख दित्ता लिखा, कलम शाही दे वड्याईआ। आप बैठा रिहा मुख छुपा, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। उच्ची कूक कहे कबीर जुलाह, वेखो भगतो हरि जू साडा की की हाल कराईआ। पुठीआं खल्लां दए लुहा, जल विच दए डुबा, हुक्मी आपणा हुक्म ना कोए परताईआ। असीं मन्नदे रहे रज़ा, भाणे विच सीस झुकाईआ। मैं इक्को वार देवां इक सदा, साचा हुक्म जणाईआ। जे मुड़ के आवे फेर खुदा, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। तुसां पहलों लाउणा उहनूं दाअ, साची रीत दयां जणाईआ। फेर आपे तुहाडे उत्तों होए फिदा, फ़ितरत आपणी दए जणाईआ। राह दस्से इक्को सिध्धा, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल के पाओ गिध्धा, घर साचे वज्जे वधाईआ। खाणा पीणा इक्को थाँ रिध्धा, इक्को तशतरी रिहा फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दाओ भगतां आप सिखाईआ। वेखो होया जगत दंगल, दग़ा सब दे नाल कमाइंदा। अन्दर वड़ के करे मंगल, भेव अभेद खुल्हाइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़े संगल, साख्यात, रूप दरसाइंदा। जगत शहादत जल इकठ्ठा कीता नंगल, गुरमुख अन्दर आत्म ताल वहाइंदा। हरिजन किते ना जाए मंगण, घर बैठयां वस्त पुचाइंदा। अठ्ठे पहर नाम रंगण, बिन रंगयां रंग चढ़ाइंदा। जिस रविदास ठग्गया कंगण, तिस ठग्ग लेखा पाइंदा। ग़रीब निमाणयां हरि जू आपे आए पाहणा गंढुण, बण सेवक सेव कमाइंदा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, चौदां रतन मुख शरमाइंदा। जन भगतां दोए जोड़ करे बन्दन, बंदगी आपणी झोली पाइंदा। इक्को डोर इक्को तन्दन, भगत भगवान खेल कराइंदा। सूरबीर सदा बख्शंदन, बखशिश सन्तां हथ्थ फड़ाइंदा। जन्म कर्म पूरब दी टुट्टी आए गंढुण, गंढु आपणे नाम पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता वेख वखाइंदा।

१४३
१३

❋ १३ मग्घर २०१६ बिक्रमी सुन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड रोसे ज़िला गुरदासपुर ❋

समें अन्दर खेल अपार, आदि जुगादि हरि कराइंदा। समें अन्दर गुर अवतार, पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। समें अन्दर वेद चार, शास्त्र सिमरत राह चलाइंदा। समें अन्दर खोल्ह कवाड़, खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। समें अन्दर बोल जैकार, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। समें अन्दर हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। समें अन्दर नौजवान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। समें अन्दर खड़ग खण्डा खिच किरपान, दो जहानां वेख वखाइंदा। समें अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेखे आण, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। समें अन्दर जुग चौकड़ी मन्ने आपणा भाण, सद भाणे विच रहाइंदा। समें अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लेखा जाणे जीव जहान, आत्म परमात्म खोज खुजाइंदा। समें अन्दर शब्द अगम्मी चढ़े बबाण, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराइंदा। समें अन्दर भगत भगवान देवे दान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। समें अन्दर बण अञ्याण, ग़फ्लत आपणी सब ते पाइंदा। समें अन्दर लेखा जाण ज़िमी असमान, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। समें अन्दर चौदां लोक खोल्ह दुकान, चौदां तबक हट्ट चलाइंदा। समें अन्दर दे ज्ञान, गुर उपदेश गुर मंत्र नाम दृढ़ाइंदा। समें अन्दर कर कल्याण, जुग जुग आपणी झोली पाइंदा। समें अन्दर सृष्ट सबाई देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञाता पुरख बिधाता पारब्रह्म आपणा भेव चुकाइंदा। समें अन्दर मेटे अन्धेरी राता, समें अन्दर साचा चन्द चढ़ाइंदा। समें अन्दर लख चुरासी जीव जन्म दवाए घर पिता माता, गोदी गोद गोद बहाइंदा। समें अन्दर बोध अगाध सुणाए गाथा, एका मंत्र नाम दृढ़ाइंदा। समे अन्दर जीवण जुगत बंधाए नाता, साक सज्जण सैण रूप वटाइंदा। समें अन्दर वंड वंडाए ज़ातां पातां, दीन मज़्हब नाउँ धराइंदा। समें अन्दर नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप वेखे खेल तमाशा, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। समें अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा समां आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा समां रिहा बीत, जुग चौकड़ी दए दुहाईआ। थिर रिहा ना कोए अतीत, कलिजुग त्रेता द्वापर सतिजुग कोटन वार फेरा गए पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गा गा गए ढोला गीत, राह मन्दिर मस्जिद शिवदुआल मसीत समझाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लख चुरासी परखणहारा नीत, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे अनडीठ, वेद कतेब भेव ना आईआ। जिस दा नानक गोबिन्द गाउँदे गए गीत, ईसा मूसा मुहम्मद बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब सुल्तान सचखण्ड निवासी हुक्मरान, हुक्मे अन्दर समां रिहा जणाईआ। हुक्मे अन्दर सच जणा, लख चुरासी भेव खुलाइंदा। हरि जू भाणा रिहा वरता, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। वेद व्यासा गया

लिखा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाइंदा। ईसा रिहा ध्यान लगा, परवरदिगार मेरा खुदा, आपणा पूत संग निभाइंदा। मुहम्मद चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का रिहा ला, मेरा अमाम सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। नानक निरगुण बेपरवाह रिहा जणा, निहकलंक एका डंक सुणाइंदा। गोबिन्द सृष्ट सबाई गया समझा, पुरख अकाल आवे बेपरवाह, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लहिणा देणा दए मुका, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी छा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप समझाइंदा। साचा समां लओ तक्क, हरि नेत्र रिहा तकाईआ। कलिजुग अन्तिम गया थक्क, कूड़ी क्रिया संग रखाईआ। ख़ाली दिसे मदीना मक्क, हुजरा हज्ज ना कोए वखाईआ। माया ममता हउमे हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार बूटा गया पक्क, फल इक्को वार झड़ाईआ। हरि का भाणा कोई ना सके डक्क, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां समें नाल टकराईआ। समां समां होए बलवान, वड बलवान आप जणाइंदा। धरनी रहे ना कोए निशान, धवल खेड़ा ना कोए वसाइंदा। नाता टुट्टे बेईमान, कूड़ी वंड ना कोए वंडाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, खेलणहारा दिस ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी करे वैरान, सत्तां दीपां फेरा पाइंदा। गुरमुख साचे करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सन्तां देवे नाम दान, आत्म निधान वेख वखाइंदा। भगत भगवान देवे माण, दरगाह साची रंग रंगाइंदा। कूड़ी क्रिया मिटे निशान, सच सुच्च आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, समां सृष्ट सबाई विच वखाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे समां, सम्मन सब दे रिहा कढ्ढाईआ। नाता तुटे पुत्तरां अम्मां, अमड़ी गोद ना कोए सुहाईआ। जीव जंत नेत्र रोवण छम्म छम्मा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। दीन मज़्हब टुट्टे बन्नां, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। कलिजुग जीव आत्म अन्ना, हरि का भेव ना जाणे राईआ। गुरमुख विरले भाणा मन्ना, तिस समां नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समें अन्दर लख चुरासी गेड़ा रिहा दवाईआ। समें अन्दर देवे गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी पए झेड़ा, घर घर अग्नी अग्ग लगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी खुल्ला होए वेहड़ा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हक़ हकीकत वेख वखाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता अन्त ना लाए देरा, नेरन नेरा वक्त ल्याइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पाए घेरा, शब्द डोरी तन्द उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को समां सच सुल्तान, वेखणहारा दो जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। साचे समें दी रखो उडीक, वेला नेड़े गया आईआ। जिस दी गोबिन्द दस्स के गया तरीक, तहिकीकात

करे बेपरवाहीआ। प्रगट होवे लाशरीक, शिरकत सब दी दए मिटाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। अग्गे क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सारे गौण इक्को गीत, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग वखाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, आत्म मिले इक अतीत, त्रैगुण लहिणा दए मुकाईआ। समें अन्दर गुरमुख विरला माणस जन्म जाए जीत, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां समां करे ख़ाली खीस, सिर ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां जगत नाल प्रनाईआ। रिद्धि सिद्धि की विचारी, गुरमुखां कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां मिले जोत नरायण नर निरँकारी, एथे ओथे होए सहाईआ। नाम ख़ज़ाना भरे पटारी, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। कलिजुग अन्त ना होए ख्वारी, आपणी गोदी लए उठाईआ। हउमे हंगता करे दूर बीमारी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ। जिस ने हरिसंगत करी प्यारी, तिस हरि जू मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रिद्धि सिद्धि गुरमुखां चरणां हेठ रखाईआ। नौ निध अठारां सिध, गुरमुख नैण ना कदे तकाइंदा। गुर का मंत्र आत्म जाए विध, परमात्म मेल मिलाइंदा। दो जहानां होवण कारज सिध, अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। पार लँघण दी इक्को बिध, प्रभ चरण ध्यान लगाइंदा। वेखो कलिजुग अन्त बैठे ना रहिणा कर के ज़िद, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। पुरख अकाल एथे ओथे मात पित, आपणी गोद बहाइंदा। जन भगतां करे सदा हित, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग जुग आवे नित नवित्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। वसे धाम आप अनडिठ, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रिद्धि सिद्धि जन भगतां दासी रूप वखाइंदा। रिद्धि सिद्धि होए दासी, बण दासी सेव कमाईआ। जिन्हां मिल्या पुरख अबिनाशी, दूजा घर ना मंगण जाईआ। अठ्ठे पहर निर्मल जोत नूर प्रकाशी, अन्ध अन्धेर नज़र ना आईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत काशी, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। सतिगुर पूरा करे बंद ख़लासी, जो जन चरण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। रिद्धि सिद्धि मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरी गुरमुखां अग्गे चले कोई ना वाह, जिन्हां मिल्या सतिगुर माहीआ। कर किरपा आपणा नाम दित्ता दृढ़ा, दृढ़ विश्वास इक जणाईआ। साहिब सच्चा बणया मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। राए धर्म दर देवे दुरका, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे नकाह, मुख घूँगट रही पाईआ। रिद्धि सिद्धि नैण रहे शरमा, अक्ख सके ना अग्गे उठाईआ। गुरसिखां गुर सतिगुर पूरा मिल्या आ, आप आपणा रंग वखाईआ। आत्म सेजा

पलँघ बैठा डाह, सेज सुहञ्जणी रिहा हंढाईआ। बिन हथ्थां पकड़े बांह, आप आपणे कंध उठाईआ। दरगाह साची देवे थाँ, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर कुण्डा देवे लाह, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पार लँघण दा इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा दए समझाईआ।

❇ १३ मग्घर २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह पिण्ड शोहन ज़िला गुरदासपुर ❇

नन्हा निक्का तेरा बाल, सतिजुग इक ध्यान लगाईआ। कर किरपा प्रभ दीन दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। साचा मार्ग दे सिखाल, सच सिख्या कर पढ़ाईआ। बण विचोला आप दलाल, इक्को ओट रखाईआ। लेखा दस्स हक़ हलाल, हकीकत मिले वड्याईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, सच सच समझाईआ। चार वरन इक धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। दीप दीआ इक्को बाल, दो जहान कर रुशनाईआ। नाम वस्त सच धन माल, लख चुरासी जीव वरताईआ। ग़रीब निमाणयां सुण हाल, हलत पलत हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मैं निक्का बच्चा, तेरे चरण ध्यान लगाईआ। इक्को दे दे साचा सच्चा, साची वस्त विच टिकाईआ।
१४७ १३ गुरमुख कोए ना रहे कच्चा, कच्ची माटी नज़र ना आईआ। मेरी माता जोत अकालण बैठी ज़च्चा, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। १४७ १३
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। जोत अकालण तेरी माँ, हरि ममता आप जणाइंदा। एका रस रही चुंघा, सीर नज़र किसे ना आइंदा। सो पुरख निरँजण रिहा समझा, बेसमझ आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहां, दोए दोए अक्खर रूप वखाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल रिहा करा, हँ तेरा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जोत अकालण तेरी माता, ममता इक्को इक जणाईआ। सति सतिवादी देवे दाता, दाता दानी दया कमाईआ। निक्के बाले पढ़ना इक जमाता, पट्टी इक्को इक रखाईआ। इक्को गाईं साची गाथा, सोहँ दए वड्याईआ। तेरा नज़री आए पापा, माता मति दे समझाईआ। आदि जुगादी साचा आका, अक्ल इक्को इक वखाईआ। तूं मेरी गोदी सोहें निक्का काका, कुक्ख सुलखणी मिले वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव देणा जणाईआ। जोत अकालण तेरी मइया, घर साचे वेख वखाईआ। आपे पकड़े फड़ फड़ बहीया, बाहू आपणा बल जणाईआ। इक चढ़ाए साची नईया, नौका नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। जोत अकालण मात प्यारी, परम पुरख आप जणाइंदा। तेरी

भरे खेडण वाली सच पटारी, साची वंड आप वंडाइंदा। लोकमात कर तैयारी, त्रैगुण तेरा रंग वखाइंदा। पंज तत्त निभौणी यारी, यारी यारां नाल जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेख क्यारी, लख चुरासी खेती बीज बिजाइंदा। फेरा मारीं वारो वारी, चारे कूटां आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप जणाइंदा। मैं छोटा बाला निक्का बच्चा, बचत आपणी रिहा जणाईआ। तेरा हुक्म मन्नां सच्चा, सच समग्री झोली पाईआ। नव नौ चार फिरां नठ्ठां, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, झोली ख़ाली दे भराईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, माता सुलखणी नाल रलाइंदा। जोत अकालण करे प्रितपाल, प्रितपालक आप समझाइंदा। साचा मार्ग इक सिखाल, साचे धंदे आपे लाइंदा। मेल मिलाए शाह कंगाल, कंगाल शाह रूप वटाइंदा। गोबिन्द सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। जा के वेख सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा हरि जणाइंदा। जिथ्थे हरि जू भगतां नाल करे वसाल, विश्व आपणा राह जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी दे दे गए मिसाल, सो सब दी मिसल मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बच्चे छोटे आप समझाइंदा। बच्चे कच्चे चढ़या चाअ, चचा नज़र इक्को आईआ। हर घट रचया थाँ थाँ, थान थनंतर रिहा समाईआ। जिध्धर वेखां पिता माँ, पुरख अकाल गोद सुहाईआ। सच जणाया इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा दए वड्याईआ। अक्ख खोल्ह वेख्या जन भगतां पकड़ी बैठा बांह, बाज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कराईआ। निक्का बच्चा होए नन्ना, नैनण नैणां हरि दरसाइंदा। उठ मेरे लाडले चन्ना, हरि जू साचा चन्द चढ़ाइंदा। ज़ात पात दीन मज़्हब भन्यां बन्ना, गुरमुख इक्को रंग वखाइंदा। उठ के सुण आपणयां कन्नां, हरि भगतां आप पढ़ाइंदा। नामे पिच्छे छुहाई छन्ना, जन भगतां पिच्छे मन्दिर इक बणाइंदा। जुग चौकड़ी फिरे भंना, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी दिसे हरि जू अन्ना, अन्ध अन्धेरा सर्ब वखाइंदा। गुरमुख विरले आत्म मन्ना, मन मणका आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे चन्न जगाइंदा। सतिजुग चन्न वेख चांद, हरि चमक रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जन चरण बहाए बांध, आपणा हुक्म मनाईआ। दो जहान वखाए आंढ गवांढ, दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम वरतिआ स्वांग, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जो चाहे सो लैणा मांग, देवणहार आप हो जाईआ। चौथे जुग पूरी करे तेरी तांघ, ताहने मारे ना कोई लोकाईआ। सोहँ नाम चढ़ाए कांग, लेखा सब दा दए रुढ़्हाईआ। ना कोई रोज़ा ना कोई बांग, मुसल्ला हेठ ना कोई विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नन्ह्े करे इक पढ़ाईआ। नन्ह्े बच्चे वेख नैण, नैण मुँधारी दया कमाइंदा। रसना

सके ना किसे कहिण, कह कह अन्त ना कोई पाइंदा। भगत भगवान बण के साक सज्जण सैण, सगला संग रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम आया लैण, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या पहली पट्टी, परवरदिगार तेरी सच्ची भाईआ। बाली बुध खट्टी खट्टी, घाटा नज़र कोई ना आईआ। कलिजुग नैणां उत्तों खोल्ह पट्टी, अक्ख प्रतख दए कराईआ। सो पुरख चलाए साची हट्टी, हँ ब्रह्म वणज कराईआ। काया रंगण रंग चढ़्हाए नाम रती, रती रत दए सुकाईआ। चार वरन देवे इक्को मती, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रिहा समझाईआ। जन भगतां वा ना लग्गे तत्ती, अग्नी तत्त ना कोई तपाईआ। गुरमुख वेखे साची सखी, हरि जू सच्चा माहीआ। करे वसेरा बिन छप्पर छन्नी पखी, महल अटल ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे सर्ब पुरख समर्थी, समरथ आपणा वेस वटाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थी, कर किरपा फेरा पाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त, पाए नथ्थी, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम ताए इक्को भठ्ठी, नौ खण्ड जीव रिहा तपाईआ। लख चुरासी एका वार कर इकठ्ठी, जगत कड़ाहे देवे पाईआ। आपे होए सर्ब भक्खी, लख चुरासी खा शुकर ना अजे मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे दए समझाईआ। सुण बच्चे आपणा बचपान, हाल शहिनशाह हरि जणाइंदा। हरि चरण बख्शे इक ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। भगतां कोलों जा के पुच्छ मेरा ज्ञान, बिन पढ़ियां आप पढ़ाइंदा। सतिजुग निउँ निउँ सजदा करे सलाम, बण बरदा सीस झुकाइंदा। परवरदिगार दस्स सच मुकाम, जिस मुकाम तेरा मुरीद डेरा लाइंदा। श्री भगवान बोल कहे बिन ज़बान, सच संदेसा इक सुणाइंदा। भगत दुआरा इक महान, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। ओथे जा के मंगणा दान, साचा मार्ग आप समझाइंदा। मेरे भगत होण मेहरवान, भगवन आपणा गुण जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हणहारा, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। साचा तोल तोलणहारा, तोला इक्को बेपरवाहीआ। लख चुरासी काया पर्दा फोलणहारा, हरि घट वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री साची दात, चरण कँवल बंधाए नात, छोटे बाले पत लए राख, राखी करे हर घट थाईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर सच दए निवास, सदा सुहेला वसे पास, पासा सब दा दए उलटाईआ ।

❇ १३ मग्घर २०१६ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड शोहन ❇

सति सति सति नरेश, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। सति सति सति बण दरवेश, दर आए सीस झुकाईआ। सति सति सति पंज करन अदेस, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। नौ नौ रहे वेख, चार चार नैण शरमाईआ। दोए दोए ना चले पेश, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। पतिपरमेश्वर ना कोई रूप रंग ना रेख, छप्पर छन्न नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी खेलदा रिहा खेड, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। आदि जुगादि किसे ना दस्सया भेत, भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। नौ सत्त कर कर वेखे वेंत, वंडे वंडां बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नर नरेश श्री भगवाना, नर हरि वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सच मकाना, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तख्त निवासी नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। सो पुरख निरँजण मर्द मर्दाना, हरि पुरख निरँजण भेव कोई ना आईआ। आपे खेले खेल महाना, खेलणहार आप अख्वाईआ। आदि निरँजण नूर बेपहचाना, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। अबिनाशी करता हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाईआ। श्री भगवान हुक्मराना, सच संदेसा इक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दे परवाना, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। लेखा जाण दो जहाना, सचखण्ड आपणा पर्दा लाहीआ। थिर घर देवणहारा माणा, शब्दी सुत आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेऐब परवरदिगार, नर नरेश इक अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। निर्मल जोती दीपक उज्यार, दीआ बाती ना कोई रखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। दर दरवेशा बण भिखार, घर घर अलख जगाइंदा। आपे होए देवणहार, दाता दानी दया कमाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह करे खेल परवरदिगार, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। नर नरेश श्री भगवाना, भगवन आपणा खेल कराइंदा। सति सतिवाद गाए सच्चा गाणा, गा गा आपणी खुशी मनाइंदा। दूसर ना कोई संग रखाना, संगी रूप ना कोई वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा इक सुहाइंदा। नर नरेश हो प्रधान, आपणी दया कमाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दौए धार आप चलाइंदा। शब्दी सुत बाल अञ्याण, दे मति आप उठाइंदा। साची वस्त वस्त महान, दस्त बदस्त आप फड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, सो पुरख नाम जणाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंज तत्त मेला मेल मिलाइंदा। लख चुरासी खोल्ह दुकान, मन मति बुध विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सत्त चार आप समझाइंदा। सत्त चार खेल अपारा, सति सतिवादी आप कराईआ। त्रै त्रै मेला अगम्म अपारा, सो साहिब आप लिखाईआ। चारे वेदां दे सहारा, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। चारे बाणी बोल जैकारा, चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे जुग दे सहारा, चार वरन बन्धन पाईआ। चार यारी अन्त किनारा, हरि जू हरि हरि रिहा जणाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी कार आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर खेल खिलाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख्या वारो वार, कोटन कोटि काल बिताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। ईश जीव दे अधार, ईश्वर आपणा पर्दा लाहइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म पावे सार, सगला संग आप हो जाइंदा। शब्द अगम्म सुणाए सची ग़ुफ्तार, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाइंदा। सच दुआरा सति साजा, सति सतिवादी आप खुल्हाईआ। खेले खेल ग़रीब निवाज़ा, भेव अभेव रिहा जणाईआ। शाहो भूप राजन

१५१ राजा, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेंहदा रिहा तमाशा, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। कलिजुग १५१

१३ अन्तिम पूरी करे आसा, आसा आपणे नाल प्रनाईआ। गुर अवतार सेवा करदे गए बण बण दासी दासा, दासी दास दए १३

वड्याईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। पीर पैगम्बर प्रगटाए साची शाख़ा, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरेश बेपरवाहीआ। नर नरेश बेपरवाह, जगत खेल कराइंदा। गुर अवतार मात प्रगटा, प्रगट आपणी कल जणाइंदा। नाम निधाना झोली पा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। रसना जिह्वा ढोला गा, लख चुरासी जीव पढ़ाइंदा। पर्दा ओहला आप रखा, भेव अभेद आप चुकाइंदा। जुग जुग काया चोला बदला, बदली लोकमात कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरेशा इक अख्वाइंदा। नर नरेशा इक अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सरगुण निरगुण करे प्यार, परम पुरख मेल मिलाईआ। कागद कलम कर तैयार, साचा लेखा दए जणाईआ। आपे वसे सब तों बाहर, हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत दे गए दीदार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। दर दुआर दिसे सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण फेरा पाईआ। नर नरेश नर नरायण, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। रसना जिह्वा सारे कहिण, अग्गे हो दरस ना कोई

कराइंदा। नाता जुड़या भाई भैण, साक सज्जण सैण ना कोई तजाइंदा। अन्तिम ख़ाली हथ्थ सारे रहिण, ख़ाली झोली ना कोई भराइंदा। कूड़ी क्रिया कूड़े वहण वहण, अमृत जल ना कोई नुहाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार पन्ध मुकाइंदा। सत्त चार हरि करे निबेड़ा, कलिजुग अन्तिम आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चुकाए डेरा, डेरा आपणे चरण वखाईआ। त्रैगुण माया चुके झेड़ा, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। तेई अवतारां पाए फेरा, घर आपणे आप बहाईआ। अठारां भगत वेखे कर के वड्डा जेरा, ज़ेर ज़बर ना कोई जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करे हक़ नबेड़ा, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। गुरू दस करे मेहरा, हरि दाता दया कमाईआ। पंजां दस्से तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत चार वेख वखाईआ। सत दो वेखे चार, चारों कुण्ट भेव चुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम आई हार, चार यारी ना संग निभाइंदा। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ार, नेतर नैणां नीर वहाइंदा। अल्ला राणी ना कोए प्यार, अल्फ़ी गल ना कोए हंढाइंदा। चौदां तबक होए ख्वार, ख्वाहिश पूरी ना कोए वखाइंदा। उम्मत करे ना कोए अधार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। खेले खेल परवरदिगार, बेऐब नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दा मूल आप चुकाइंदा। अमाम अमामा वड सिक्दार, शाह सुल्तान फेरा पाइंदा। वेखणहारा चन्द सतार, चन्द सतार आपणे चरणां हेठ रखाइंदा। अञ्जील कुरान लिख लिख गई हार, हरि का मकतब हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरेश फेरा पाइंदा। नर नरेश आया मात, मता इक्को इक पकाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रखे साथ, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। रल मिल बहिणा इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। आत्म परमात्म गूढ़ा गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। पिछला लेखा छड्डो त्रलोकी नाथ, राम प्रगट नज़री आईआ। पीर पैगम्बर कलमा पढ़ो इक्को आयत, अल्फ़ ये पन्ध मुकाईआ। ना कोई शरअ शरायत, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार लेखा रिहा मुकाईआ। सत्त चार लेखा मुक्कणा, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोए मेटे मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना कोए कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम किसे ना लुकणा, फड़ बाहों आप उठाइंदा। शाह सुल्तान नौजवान इक्को बुक्कणा, नाम भबक इक लगाइंदा। दो जहानां आपणी हथ्थीं लुटणा, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। कलिजुग कूड़ा बूटा पुट्टणा, शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। सतिजुग उठाए साचा सुतना, सुत दुलारे आप जगाइंदा। भगत सुहाए साची रुतना, रुत्त बसन्ती आप

महकाइंदा। कूड़ी क्रिया फड़ फड़ कुटना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों पुछणा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरेश इक्को इक आइंदा। नर नरेश आया एक, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। लख चुरासी रिहा पेख, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ। जुग जुग मेटणहारा रेख, रेखा आपणी दए समझाईआ। लहिणा देणा चुकाए औलीआ पीर शेख़, मुसायक कोए नज़र ना आईआ। दो जहानां खेल रिहा खेड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्ट सबाई अग्नी लग्गे महीना जेठ, ना सके कोई बचाईआ। घर घर दर दर दिसे बालू रेत, सीस हथ्थ ना कोई टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम सुंञा होया खेत, सतिगुर राखा नज़र कोई ना आईआ। नानक निरगुण गोबिन्द दस्स के गया भेत, भेद अभेद इक रखाईआ। पुरख अकाल अन्तिम करे हेत, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरेश वड्डी वड्याईआ। नर नरेश आया जग, जग जीवण दाता दया कमाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, साचा राणा हुक्म वरताइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लाए अग्ग, अग्नी तत्त आप जलाइंदा। हरि भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, दस्म दुआरी मेल मिलाइंदा। काया अन्दर मक्का काअबा कराए हज्ज, हुजरा सच आप सुहाइंदा। आत्म सेजा बहे सज, सच सिँघासण

१५३ १३ सोभा पाइंदा। गुरमुखां पर्दा लए कज्ज, नाम दोशाला हथ्थ उठाइंदा। मौत लाड़ी रही नच्च, मुख घूँगट ना कोए वखाइंदा। १५३ १३

बिनां गुरमुखां मिले ना हरि का नाम सच, कूड़ी क्रिया आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरि सन्त जनां रिहा जणा, जीवण दाता दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम गया आ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा रिहा छा, वरन बरन करन लड़ाईआ। नारी कन्त ना रिहा हंढा, कन्त नार ना कोई हंढाईआ। माँ पुत्तर रही तजा, धी भैण ना कोई वखाईआ। चारों कुण्ट भुल्लया बेपरवाह, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बिन कल्मयों होए निकाह, कुँवार कन्या दए दुहाईआ। गुर का शब्द ना आवे साह साह, रसना जिह्वा ना कोई हलाईआ। अठसठ तीर्थ नंगी पैरीं तारीआं रहे ला, निरभउ भय ना कोई जणाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ धीआं भैणां रहे तका, नेत्र नैण ना कोई शरमाईआ। कलिजुग भज्जा फिरे वाहो दाह, घर घर आपणा फेरा पाईआ। साधां सन्तां जगत कूड़ा टिक्का रिहा लगा, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां हउमे हंगता रिहा जणा, माया ममता विच फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण फेरा पाए आप, सरगुण संग ना कोए रखाईआ।

लख चुरासी वेखे पाप, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली जाप, अजपा जाप ना कोए कराईआ। नाता जुड़या पिता मात, पुरख अकाल गोद ना कोई सहाईआ। कूड़ी क्रिया वेखे नात, साचा वणज ना कोई वखाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ ताट, दुरमति मैल ना कोई धवाईआ। जन्म जन्म कट कट थक्के वाट, मात गर्भ फेर ना कोई कटाईआ। गुर का शब्द ना मिल्या राथ, बाडी नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सत्त चार लहिणा रिहा चुकाईआ। सत्त चार वेखे वेखणहारा, वेख्यां नज़र ना आईआ। कलि कल्की लै अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। शब्द खण्डा हथ्थ दो धारा, लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। सम्बल वसया धाम न्यारा, महल अटल ना कोई रुशनाईआ। गोबिन्द मिल्या मीत मुरारा, पुरख अकाल सच्चा माहीआ। कलिजुग कूड़ा करे पार किनारा, प्रकृती कोई रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार वरन इक जैकारा, चारों कुण्ट आप सुणाईआ। आत्म परमात्म करे प्यारा, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। हरि का चरण सच्चा गुरदुआरा, मन्दिर इक्को इक रखाईआ। मस्जिद होवे पार किनारा, महल्ला इक्को इक सुहाईआ। नूरी जलवा परवरदिगारा, ख़ाकी तन ना कोई हंढ्ढाईआ। मुकामे हक़ हक़ नगारा, बेनज़ीर दए वखाईआ। सचखण्ड खोल्ह आप कवाड़ा, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। सुन अगम्म कर उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। लेखा जाण चन्द सतारा, चन्द चांदनी इक सुहाईआ। मण्डल मण्डप वेख अखाड़ा, लोआँ पुरीआँ फेरा पाईआ। जुग जुग गुर अवतारां पीरां पैगम्बरां जो देंदा रिहा लारा, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। जुगा जुगन्तर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा कुँवारा, नार कन्त ना कोई प्रनाईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच विहारा, साख्यात वेस वटाईआ। भगतां मेला विच संसारा, गुर चेला रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। नर नरायण हरि खेल अवल्ला, चतुर्भुज नज़र ना आईआ। बिस्मिल धार आपे रला, छुरी करद ना कोई वखाईआ। आपे नाउँ रखाए इल लिला, वेखणहारा आलमीन सर्ब लोकाईआ। आपे तीर आपे चिला, खड़ग खण्डा आप उठाईआ। नानक गोबिन्द धार आपे मिला, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा रिहा छिला, आपणा मुख ना किसे दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे मात, मित्र प्यारा फेरा पाइंदा। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सृष्ट सबाई बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। एका अक्खर सुणाए गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। लहिणा देणा मेटे मस्तक माथ, पूरब लेखा फोल फुलाइंदा। मेट

मिटाए ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोई जणाइंदा। पुरख अकाल पिता मात, लख चुरासी गोद सुहाइंदा। एथे ओथे पुच्छे वात, दो जहानां सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खलाइंदा। खेलण आया खेल, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जगत धड़े आया मेटण, मेल मिलावा इक जणाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेल, प्रभ मिल्या इक्को माहीआ। राए धर्म दी कटे जेल, लख चुरासी फंद कटाईआ। प्रभ मिलण दा इक्को वेल, कलिजुग अन्त दए जणाईआ। लेखा चुके गुरु गुर चेल, गुर चेला एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेखणहारा जगत बसन्तर, हर घट आपणा डेरा लाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म आदि जुगादि साचा मंत्र, इक्को इक समझाइंदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, गृह मन्दिर फेरा पाइंदा। सतिजुग बणाए साची बणतर, कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, हरि हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। नर नरेश हरि सच्चा राणा, रहबर इक्को इक अख्वाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाणा, लोकमात दए वड्याईआ। बीस बीसा
१५५ वक्त सुहाणा, जगदीशा हुक्म सुणाईआ। शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाना, सीस ताज ना कोई रखाईआ। प्रगट होए इक भगवाना, १५५
१३ भगतन वेखे थाउँ थाईंआ। नज़री आए इक्को काहना, नाम बंसरी आप वजाईआ। भेव खुल्हाए साचा रामा, रमईआ आपणा १३
नाउँ धराईआ। नूर इलाही दए पैग़ामा, ईसा मूसा लए उठाईआ। मुहम्मद दस्से सच कलामा, कलमा सच्चा आप जणाईआ। चौदां तबकां वेखे निशाना, निशान इक्को इक दरसाईआ। परवरदिगार वड मेहरवाना, महिबान बीदो बीखैर या अल्ला नज़र किसे ना आईआ। नानक गुण गाए तराना, नाम सति सति सुणाईआ। पुरख अकाल हो प्रधाना, मेहर नज़र इक टिकाईआ। गोबिन्द कहे बली बलवाना, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। योद्धा सूर मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। कलिजुग अन्तिम पहरे बाणा कलि कल्की नाउँ धराईआ। सम्बल वसे इक टिकाणा, टिक्का आपणे मस्तक लाईआ। भगतां बन्ने साचा गाना, मौली तन्द ना हथ्थ उठाईआ। मुल्लां शेख़ करे वैराना, घर घर ढेरी तन बणाईआ। जन सन्तां देवे गुण गुणनिधाना, गुणवन्ता आप जणाईआ। गुरमुखां मारे तीर निशाना, अणयाला तीर उठाईआ। गुरसिख वेखे बाल अंञाणा, फड़ बाहों गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे भगवान, श्री भगवान फेरा पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद होए हैरान, लिख लिख लेख ना कोई जणाइंदा। गीता

दे दे थक्की ज्ञान, अठारां ध्याए पन्ध मुकाइंदा। अठ्ठ दस्स खोल्ह दुकान, दहि दिशा खेल महान, अठ्ठां तत्तां बन्धन पाइंदा। अञ्जील कुरान करे ब्यान, परवरदिगार भेव ना किसे जणाइंदा। हुक्मे अन्दर इक इस्लाम, इस्म आज़म आप अख्वाइंदा। नूरी जलवा इक अमाम, उम्मत आपणे रंग रंगाइंदा। पीर पैगम्बरां दे पैग़ाम, लोकमात साचा सबक पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सत्त चार दर बुलाइंदा। सत्त चार आए नठ्ठे, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म सरन ढठ्ठे, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरे रंग सदा रत्ते, रती रत रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम जिउँ भावे तिउँ रखे, लोकमात चले ना कोई चतुराईआ। ख़ाली दिसण हथ्थ सखे, सच्ची वस्त नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार रिहा मंगाईआ। सत्त चार आए नेड़े, नेरन नेरा खेल कराइंदा। आओ वेखो खुल्हे वेहड़े, हरि ख़ालक ख़लक जणाइंदा। अन्तिम करे हक़ नबेड़े, निज घर वासी फेरा पाइंदा। सारे रल के कहो इक दूजे नूं पारब्रह्म परवरदिगार फड़ फड़ कटे गेड़े, गेड़ा आपणा नाम लगाइंदा। दीन मज़्बां चुक्के डेरे, शरअ करे ना कोई लड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार रिहा दरसाइंदा। सत्त चार आ दुआर, दर इक्को मंग मंगाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हरि पुरख निरँजण हो सहाईआ। एकँकार कर प्यार, बिरहों रोग ना कोए लगाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यार, उज्जल मुख भुल्ल ना जाईआ। अबिनाशी करते तेरा सहार, साह साह समाईआ। श्री भगवान तेरा हुलार, एथे ओथे दए वड्याईआ। पारब्रह्म तेरा वणज वपार, ब्रह्म ल्या हट्ट खुल्हाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, दर तेरे आए चाईं चाईंआ। पिच्छे रिहा ना कोई बाहर, यारी यार ना कोई वखाईआ। लिख लिख लेखा कर कर आए गुफ़तार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सेवा कर जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फेरा पाईआ। अन्तिम सारे आए हार, हरि जू तेरा अन्त नज़र ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे पुकार, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। रसना जिह्वा वाजां रिहा मार, बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। तेरी ख़बर ना आई कोई परवरदिगार, पर्दा सके ना कोई उठाईआ। राह तक्कण सांझे यार, मुखों इक्को इक जणाईआ। शिकवा मेट मेरी सरकार, मेहर मुहब्बत नैण उठाईआ। तुध बिन होए सारे बेज़ार, दरोही दर्द ना कोई वंडाईआ। इकठ्ठे होए गुर अवतार, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करे निमस्कार, चार यारी डेरा ढाहीआ। गोबिन्द नानक जाए बलिहार, महिमा अकथ ना कोई जणाईआ। तेरा सच सच्चा दरबार, सच तख़्त सोभा पाईआ। अन्त वेख आपणी गुलज़ार, कलिजुग गुलशन रिहा वखाईआ। लख चुरासी होए दुहागण नार, हरि जू कन्त ना कोई हंढाईआ। घर घर

दिसे जगत विभचार, सति सन्तोख ना कोई दृढ़ाईआ। धीआं भैणां करन वपार, सौदा हट्टो हट्ट विकाईआ। काग़द कलम शाही लिखे कलिजुग जीवां पढ़ पढ़ सुटे पाड़, पाती कमलापाती हथ्थ ना कोई फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर आए आसण लाईआ। दर आए लाया आसण, इक्को आस रखाईआ। सत चार खेल तमाशण, तमां होर ना कोई वधाईआ। मिल्या मेल पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता आपणी गोद बहाईआ। लहिणा देणा चुके पृथ्मी अकासन, गगन मण्डल ना कोए फेरा पाईआ। सतिगुर मिल्या सच्चा साथन, सगला संग निभाईआ। लहिणा देणा चुक्कया पूजा पाठण, मस्तक तिलक ना कोई वड्याईआ। लहिणा देणा कोई ना तीर्थ ताटन, बिनां घाटन दए चढ़ाईआ। लख चुरासी मुक्की वाटन, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। नाता तुटा आण बाटन, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सत्त चार रिहा जणाईआ। सत्त चार खोल्ह् अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो प्रतख, परम पुरख वेस वटाइंदा। एकँकारा कर प्रकाश, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बण बण दासी दास, सेवक सेवा आप कमाइंदा। श्री भगवान साची सेजा करे भोग बलास, भस्मड़ रूप ना कोए वटाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक नाच नचाइंदा।
१५७ गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सद्दे आपणे पास, कलिजुग पासा आप उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १५७
१३ कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म गुरू अवतार, हरि करता आप जणाईआ। आपणे आपणे लओ निकाल, जो १३
मात नज़री आईआ। पीर पैगम्बर बणो दलाल, उम्मत नबी दए समझाईआ। हकीकत वेखो हक़ हलाल, लाशरीक रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा पाईआ। लेखा लेखे लगाए आप, हरि आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण मार झात, लोकमात नैण उठाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले सति धर्म ना कोई पाठ, हिंसा रोग ना कोए गवाइंदा। जीवां जंतां करन घात, घाउ नाम ना कोए लगाइंदा। नाता जुड़या ज़ात पात, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाइंदा। अन्तर आत्म सुणे ना कोई नाद, ढोलक छैणे सर्ब वजाइंदा। मेल मिले ना माधव माध, मोहणी रूप वेख वखाइंदा। हरि जू सुणी ना किसे फ़रयाद, अग्गे होए ना कोए बचाइंदा। आत्म परमात्म कोई ना करे लाड, फड़ बाहों ना गले लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलिजुग अन्तिम किसे ना देवे दाद, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। घर घर वड़या जगत विवाद, अमृत विख रूप वटाइंदा। रसना जिह्वा लै लै थक्के स्वाद, निझर रस ना कोए चुआइंदा। जीवन जगत पूरी होई ना ख्वाहिश, ख्वाहिशां विच सर्ब भुआइंदा। काज़ी मुल्लां कल्मयों होए बद-मुआश,

माशा अल्ला नज़र किसे ना आइंदा। मुरीद मुर्शद वसे ना पास, मुर्शद मुरीद हथ्थ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सत्त चार देवे वर, धरनी धरत धवल समझाइंदा। धरनी धरत धवल खोल्ह जाग, जागरत अक्ख इक खुल्हाईआ । सम्बल नगर लग्गा भाग, वडभागी फेरा पाईआ। गोबिन्द लग्गा इक वैराग, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। चार जुग दा धोवे दाग़, दुरमति मैल धवाईआ। गुरमुख बणाए हँस काग, कागों हँस उडाईआ। जगत तृष्ना मेटे आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। आपणी हथ्थीं पकड़े वाग, नीले वाला सच्चा माहीआ। लख चुरासी देवे दाग़, तोड़ा इक्को नाम लगाईआ। किसे घर ना बले चराग़, दीवा बत्ती ना कोए रुशनाईआ। कोई नार हंढाए ना कन्त सुहाग, जगत रंडेपा दए वखाईआ। जन भगतां मजन कराए इक्को माघ, चरण धूढ़ी आप नुहाईआ। अन्तिम पर्दा देवे काज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रातीं सुत्यां मारे आवाज, दिने जागदे लए मिलाईआ। सति पुरख निरँजण चलाए जहाज, नाम चप्पू इक लगाईआ। कलिजुग अन्तिम रचया काज, करता पुरख खेल कराईआ। ग़रीब निमाणयां देवे दाज, सोहँ वस्त झोली पाईआ। शाह सुल्तानां मेटे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। कलिजुग अन्त करे वफात, फ़ातिहा इक्को वार पढ़ाईआ। सतिजुग सच बणाए जमात, ज़ामन होए बेपरवाहीआ। कलमा नबी सुणाए कायनात, कातब आपणा लेख लिखाईआ। अमृत प्याए आबेहयात, हयाती सब दी दए बदलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा लैंदे रहे खुआब, सो ख़बर रिहा सुणाईआ। पीर पैगम्बर करन आदाब, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। करे खेल हक़ जनाब, हरि जू आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी होई लाजुआब, रसना जिह्वा दए ना कोई गवाहीआ। चारों कुण्ट वध्या पाप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे घर घर, घर मन्दिर वेख वखाईआ। घर घर हरि जू मन्दिर खोल्हे, गृह गृह वेख वखाइंदा। वसणहारा परदे ओहले, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। अनहद नादी शब्द बोले, अगम्म अगम्मड़ा राग अल्हाइंदा। नाम कंडे तोल तोले, तोलणहारा फेरा पाइंदा। गुरमुख वेखे भाले भोले, भोले भाउ मेल मिलाइंदा। लख चुरासी पाई विच डोले, डोले विच नज़र किसे ना आइंदा। गोबिन्द पूरे करे कीते कौले, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जन भगतां आपणे कंध चुके डोले, बण कहार सेव कमाइंदा। मनमुखां अन्तिम राए धर्म मारे पौले, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता भगत बणाए उत्तम ज़ाता, ज़ात अजाति मेट मिटाइंदा। ज़ात पाती तोड़े नाता, दाता दान इक जणाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता फेरा पाईआ। हरिजन मेले बहु बिध भांता, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। बैठा रहे इक इकांता, सचखण्ड साचे डेरा

लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दस्सदा आया गाथा, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणा सच सुणाए साका, साकी आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर सच्चा इक खुल्हाईआ। साचा घर साढे तिन्न हथ्थ, हरि कलिजुग वेख वखाइंदा। अन्दर वड़ चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। पंच विकारे पाए नथ्थ, आसा तृष्ना नाच नचाइंदा। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, साचे धंदे आपे लाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए हस्स हस्स, सोहँ हँसा रूप वटाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दा गौण जस, जस वेद पुराणां हथ्थ ना आइंदा। साचे सन्त मार्ग गए दस्स, जिस जन आपणा घर वखाइंदा। कलिजुग अन्त गुरसिखो आउणा नठ्ठ, निरगुण आपणा राह जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे करे इकठ्ठ, भगत दुआरा आप बणाइंदा। कलिजुग खेड़ा होए भठ्ठ, पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सत्त चार वखाए इक्को घर, घर साचा आप खुल्हाइंदा। साचा घर गया खुल्ह, हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। दर कोई ना लाए मुल, कीमत करता कोए ना पाईआ। जो जन आए भुल्ल, भुल्लयां मार्ग दए समझाईआ। गुरमुख लख चुरासी विच्चों कढ्ढे फुल्ल, पत डाली आप महकाईआ। हरिजन बूटा जाए ना हुल, लख चुरासी सिम्मल रिहा वखाईआ। भाग लग्गे तिस साची कुल, जिस घर गुरमुख जननी जाईआ। लोकमात ना जाए रुल, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख मेला एका गुर, गुर सतिगुर आप मिलाइंदा। चरण प्रीती गई जुड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। नाम भगती ना रहे थुड़, भरया ख़ज़ाना झोली पाइंदा। हरि जू वेखे चढ़ के घुड़, शब्द घोड़ा इक दौड़ाइंदा। वसणहारा अन्धेर घोर, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। फड़नहारा पंज चोर, डोरी आपणे हथ्थ उठाइंदा। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, तुटी पिछली गंढु वखाइंदा। गुरसिख आपणे अग्गे लए तोर, पिच्छे हो हो सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां आप मिलाइंदा। भगत दुआरा आत्म संग, परमात्म वेख वखाईआ। सेज सुहञ्जणी वेख पलँघ, हरि सतिगुर फेरा पाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग, अनहद सेवा लाईआ। अमृत सरोवर चढ़े कंग, निझर झिरना दए झिराईआ। दूई द्वैती हउमे हंगता ढाहे कंध, बजर कपाटी पर्दा लाहीआ। नज़री आए सूरा सरबँग, घर वसे सच्चा माहीआ। आत्म सेजा दए अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। साचा ढोला गाए छन्द, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। तेरा मेरा चुक्कया पन्ध, घर मेला सहिज सुभाईआ। सुरत सवाणी ना होए रंड, गुर शब्दी लए प्रनाईआ। गुरमुख खुशी बंद बंद, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। भगत भगवान चाढ़े चन्द, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। गुरसिखां मिले आप बख़्शंद,

१५६
१३

गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार देवे वड्याईआ। सत चार मिल्या मौका, मोह मुहब्बत आप जणाइंदा। कलिजुग अन्त ना देवे धोखा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। सोहँ मंत्र दस्सया सौखा, पूजा पाठ ना कोए जणाइंदा। जिस धाम ना कोई पहुंचा, फड़ बाहों आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे बाहों फड़, प्रभ आपणी सेव कमाईआ। ग़रीब निमाणे लाए लड़, पल्लू आपणी गंढु पवाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जो जन सोहँ अक्खर रहे पढ़, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। राए धर्म दा चुक्के डर, चित्तर गुप्त नेड़ ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, आपणी गोदी लए उठाईआ। गुरसिख लोकमात रहिण हो निडर, भय सीस ना कोए जणाईआ। जिस लख चुरासी घाड़न ल्या घड़, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाईंआ। ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन विच ना आईआ। कलिजुग अन्तिम आपणी किरपा कर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। गुरसिख वेखे दर दर, घर घर फेरा पाईआ। बिरहों वैराग अन्दर हरि जू जाए मर, मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल इक महान, हरिजन साचे देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ।

नाम निधान दान अतुट, अतोट आप वरताइंदा। गुरसिख ख़ज़ाना ना जाए निखुट, निखुटयां पार कराइंदा। पुरख अकाल गोबिन्द बणाया पुत्त, गोबिन्द गुरसिख गोद बहाइंदा। वेखो साची मौले रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन साचे माण रखाइंदा। हरिजन तेरा साचा माण, मन का मणका आप भवाईआ। तेरी महिमा गाए जहान, चार चौकड़ी वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाण, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सुरप्त इन्द करे कल्याण, करोड़ तेतीसा खुशी मनाईआ। जिस दा मेला मिल्या श्री भगवान, तिस जन मिले दरगाह वड्याईआ। सचखण्ड बख्शे चरण ध्यान, चरणोदक इक्को जाम प्याईआ। मस्तक टिक्का लाए आण, रूप रेख दए मिटाईआ। दूर दुराडा मिले आण, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, गुरसिख सज्जण लए जगाईआ। दीन दयाला हरि गोपाला लेखा जाणे हाणीआं हाण, बिरध बाल रूप ना कोए वखाईआ। जोबन माणे दो जहान, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण लए फड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। गुरसिख सदा जीवत मरे, जीवण मरन विच ना आईआ। सीस जगदीश कट आपे धरे, धरनी धरत धवल सुहाईआ। इक्की

कुलां फोल फड़े, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मात पित भैण भाई चाचे ताए जो रहिण लड़े, वेले अन्त लए मिलाईआ। नाम कंगण विच जड़े, बाहर निकल कोए ना जाईआ। बिन तन्दीयों डोरीयों आपे फड़े, फड़नहारा दिस ना आईआ। गुरमुख तेरे काज सरे, जिस दा सीस सतिगुर आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द खेल वखाईआ। शब्दी मारे शब्दी रखे, रखणहार इक अख्वाइंदा। जगत कुटम्ब सारा वसे, फड़ बाहों पार कराइंदा। ना कोई रोवे ना कोई हस्से, शब्दी माता मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत फसे, फाँसी सब दे गल लटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वंडे इक्को हिस्से, हिस्सा हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। गुरमुख लथ्था वेखे सीस, सीस धड़ वंड वंडाईआ। करे खेल हरि जगदीश, जीवण जुगत रिहा समझाईआ। कलिजुग लख चुरासी पीसण ल्या पीस, बिन गुरमुखां बच कोए ना जाईआ। राए धर्म तपावणहारा तत्ती सीख़, सलाखां सब दे हथ्थ फड़ाईआ। जिस घर विच गाया सोहँ गीत, सरवण सुणनहारा जन्म मरन विच ना आईआ। तेरे मात पिता भैण भाईआं चाचयां तायां तेरे नाल रखी प्रीत, प्रीत नाल प्रीत लए प्रनाईआ। सदी बीसवीं सारयां मिल के गाउणा इक्को गीत, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। जिस गुरसिख मिल्या सच्चा मीत, सो मित्रां रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर धड़ धड़ सिर निरभउ चुका भय डर, जन्म मरन मरन जम्मण आपणे हथ्थ वखाईआ।

१६१ १३

✻ १४ मग्घर २०१६ बिक्रमी दोस्त पुरा ज़िला गुरदासपुर ✻

कलिजुग तेरा वेला वक्त, हरि व्यक्ति आप जणाइंदा। नव नौ नाता तुटे बूँद रक्त, लख चुरासी भेव चुकाइंदा। त्रैगुण माया साड़े जगत, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। कूड़ी क्रिया आपणा पूरा करे फ़र्ज़, माया ममता मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता हरिजन वेखे साचे भगत, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। कलिजुग तेरा अन्त अन्धेरा, नव नौ नज़र ना आईआ। पुरख अबिनाशी पाऐ फेरा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। परवरदिगार आया नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए घेरा, दो जहानां वेख वखाईआ। सन्त सज्जण वेखे केहड़ा केहड़ा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। घर घर दिसे झूठा झेड़ा, माया ममता करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा अन्धेरा अन्ध, चारों कुण्ट छाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आत्म भुल्ले परमानंद, निजानंद ना कोए वखाईआ।

रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गायण छन्द, शहिनशाह नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी जून अजूनी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना वंडी वंड, हरि मंत्र नाम ना कोए दृढ़ाईआ। सच प्रकाश ना कोए चन्द, चौदां तबक अन्धेरा छाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारी होई नंग, अल्फ़ी तन ना कोए वखाईआ। गुर अवतार चार कुण्ट दहि दिशा वेख विचार हरि सरन सरनाई रहे मंग, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक तेरी ओट रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। झगड़ा प्या गुर गुर चेला, चेला नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख विरले करे मेला, मिल मिल आपणा रंग वखाइंदा। दो जहानां सज्जण सुहेला, सगला संग आप हो जाइंदा। सचखण्ड वसे धाम नवेला, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, वार थित ना किसे जणाइंदा। लख चुरासी घल्ले धर्म राए दी जेला, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा एकँकार, अक्ल कलधारी आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण हो तैयार, हरि पुरख निरँजण भेव खुलाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, अबिनाशी करता रिहा समझाईआ। श्री भगवान दए हुलार, विष्न ब्रह्मा शिव उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो तैयार, त्रैभवन वेखे थाउँ थाईंआ। ब्रह्म नेत्र दए उग्घाड़, ईश जीव पर्दा लाहीआ। लख चुरासी चबाए आपणी दाढ़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। वेखणहार बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी रिहा समाईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर खोज खुजाईआ। हरिजन मेले सच दुआर, दर दरवाजा इक जणाईआ। ग़रीब निवाजा हो तैयार, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। शब्द अगम्मी दे हुलार, हुजरा हक़ इक वखाईआ। लाशरीक परवरदिगार, मुरीद मुर्शद लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग लेखा रिहा मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख हाल, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। फिरे दरोही अन्तिम काल, काल नगारा इक वजाइंदा। सृष्ट सबाई होई बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। चौदां लोक आए ज़वाल, चौदां तबक ना कोए बचाइंदा। काया माटी पंज तत्त अग्नी लग्गे खाल, ख़ालक ख़लक आप जलाइंदा। बिन हरिभगत गृह वज्जे ना किसे ताल, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाइंदा। चार कुण्ट होए वैरान, कलिजुग वैरी फेरा पाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ रहे ना कोए निशान, निशाना सब दा आप मिटाइंदा। इन्सान रूप बणाए हैवान, हवा सब दी आप बदलाइंदा। करे खेल नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे धुर फ़रमाण, धुर

दी बाणी आप सुणाइंदा। हक़ हकीकत करो पहचान, बेपहचान आप समझाइंदा। दोए जोड़ करो सलाम, सलाम अलैकम एका घर वखाइंदा। दोए बन्धन रसना कहो सतिनाम, मंत्र सति सति पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग लेखा आप चुकाइंदा। कलिजुग तेरा लेख मुकाउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। चौथे जुग डेरा ढाउणा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। गुरमुख विरला आप जगाउणा, जिस आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाउणा, मेल मिलावा एका थाईंआ। दूई द्वैती हउमे हंगता माया ममता पर्दा लौहणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। हँ ब्रह्म मम एका घर दसाउणा, ओअँ सोहँ रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी जड़ उखड़ाईआ। कलिजुग तेरी उखड़े जड़, सोहँ चिला हथ्थ उठाइंदा। सचखण्ड निवासी धुर दरगाह आपे खड़, बेपरवाह वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े लए फड़, नाम डोरी इक बंधाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी जीव जंत जिस घाड़न ल्या घड़, घड़न भंनण आपणे हथ्थ रखाइंदा। निष्अक्खर वक्खर बोध अगाध शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस अक्खर ल्या पढ़, सो निष्अक्खर रूप वखाइंदा। कागद कलम शाही गई हर, समुंद सागर नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। बनास्पत भार अठारां गई सड़, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द प्रभ सरनाई डिगे दड़, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त आपणा बल गई हर, मन मति बुध संग ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा आवे डर, भय अवर ना कोए हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरा अन्त कराइंदा। कलिजुग अन्तिम मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारां यारां रिहा ध्या, नेत्र नैण नैण उठाईआ। मुहम्मद मिले दर आ, दर दरवाजा रिहा खुल्हाईआ। ईसा तक्के तेरा राह, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। मूसा पकड़े तेरी बांह, कोहतूर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम रिहा उडीक, नेत्र नैण नैण उठाया। मेरा वेला अन्त नज़दीक, पन्ध नज़र कोए ना आया। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम बण गए सर्ब शरीक, घर घर शिरकत रिहा वखाया। परवरदिगार निशाना मिले ना कोए ठीक, लख चुरासी ठीकर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाया। कलिजुग कूड़ा कर विचार, विचार विचार नाल मिलाईआ। चौथे जुग आई हार, चौका कम्म कोए ना आईआ। इक इकल्ला एक ओंकार, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। दूजी कुदरत कर तैयार, तीजे नैण रिहा दरसाईआ। चौथे पद भगत प्यार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। छेवें

छप्पर छन्न कर तैयार, सति सतिवादी बैठा आसण लाईआ। अठ्ठां तत्तां मारे मार, नौ दर वेखे थाउँ थाईंआ। दसवें खेल करे अपार, इक दस वज्जे वधाईआ। दो दस सांझा यार, तिन्न दस भेव रिहा खुल्हाईआ। चार दस नस्स नस्स, चौदां लोकां डेरा ढाहीआ। पंज दस हस्स हस्स, गुरमुख सज्जण रिहा मिलाईआ। छे दस हो वस, सोलां इच्छया पूर कराईआ। सत्त दस आपे ढठ्ठ, आपणा माण मिटाईआ। दस अठ्ठ बन्न्हे गठ्ठ, भगती भगतां हथ्थ फड़ाईआ। दस नौ नौं खण्ड पृथ्मी रिहा भौं, दो जहानां वेख वखाईआ। दस दस बीस करे खेल हरि जगदीश, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाली ख़ीस, सीस आपणे छत्र झुलाईआ। कलिजुग तेरी अन्त हदीस, फातिआ पढ़े थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम बुढा शेख़, दर साचे सीस झुकाइंदा। परवरदिगार नेत्र खोल्ह वेख, होए निमाणा मंग मंगाइंदा। मेरी मिटदी जाए रेख, लेखा नज़र कोए ना आइंदा। लम्मी दाढ़ी खुलड़े केस, गल्ल पल्लू एका पाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे हो जा के वेख, गुरू दस्मेश दहि दिशा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। बुढ्ढा शेख़ फड़ डंगोरी, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। अन्त करे बौहड़ी बौहड़ी, दूर दुराडा मारे धाहीआ। लख चुरासी होई कौड़ी, अमृत रस ना कोए वखाईआ। प्रभ जू तेरे हथ्थ मेरी डोरी, जिउँ भावे लै चलाईआ। कीती मात ठग्गी चोरी, तेरे हुक्मे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिली इक सरनाईआ। बुढ्ढा शेख़ होए मौलाणा, मौला इक्को इक ध्याईआ। जगत किताब वेख कुराना, कुरा काया काअबा फोल फुलाईआ। चौदां तबक खेल महाना, सबक आपणा आप पढ़ाईआ। खेलया खेल दीन इस्लामा, साहिब सिर तेरा हुक्म मनाईआ। अन्तिम घर घर भुलाई कलामां, कला नबी ना कोए पढ़ाईआ। मोहे बख़्श मेरे अमामां, चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेरा पाटा चीर तेड़ ना कोए पजामा, कुला सीस ना कोए टिकाईआ। हज़रत दे इक पैग़ामा, पैगम्बर नज़र कोए ना आईआ। शाह सुल्तान सच्चे रामां, रहमत तेरी मंग मंगाईआ। नेत्र वेख श्री भगवाना, बेहाल दए दुहाईआ। तेरा भुल्लया इक टिकाणा, टिक्का मस्तक कूड़ा लाईआ। चार वरन जणाया गाणा, अठारां बरन करी लड़ाईआ। अन्तिम मन्नणा प्या भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तख़्तों लैहन्दा जांदा राजा राणा, सिर ताज ना कोए टिकाईआ। सब नूं भुलया पीणा खाणा, ख़ाकी ख़ाक रहे वखाईआ। प्रगट होया हरि मेहरवाना, मेहरवान फेरा पाईआ। मैं बुढ्ढा अन्त अंञाणा, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। प्रभ साचा दस्स टिकाणा, जिस घर तेरा दर्शन पाईआ। लोकमात आया बण महिमानां, जगत महिमानी रिहा खाईआ। अन्त अन्त प्या पछताणा, पिच्छे

नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलिजुग कूक कूक सुणाईआ। कलिजुग कूके करे पुकार, प्रभ अग्गे हाल सुणाइंदा। जुग चौकड़ी उतरी पार, पार उतारा तुध बिन ना कोए कराइंदा। फिर फिर गए तेई अवतार, भगत अठारां सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद मंगदे गए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। चार यार बण पनहार, सेवक साची सेव लगाइंदा। लेखा जाण गुर अवतार, नानक गोबिन्द रंग रंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वार, कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा। मैं डिगा मूँह दे भार, बाहों फड़ ना कोए उठाइंदा। चारों कुण्ट आई हार, जित रूप ना कोए वखाइंदा। कर किरपा दे दीदार, चरण कँवल ध्यान लगाइंदा। मैं मूर्ख मूढ़ गंवार, पतहीण सीस झुकाइंदा। तूं सब दा सांझा यार, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। पतित पापी देवें तार, दुष्ट हँकारी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। दर वास्ता दित्ता घत, दोए दोए जोड़ करे निमस्कारया। मेरी अन्तिम सुक्की रत्त, तत्त नज़र कोए ना आ रिहा। लख चुरासी भुल्ली ब्रह्म मति, मन मति गेड़ चला ल्या। रहिण ना दित्ता धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए रखा ल्या। नार कन्त सत्थर बैठे घत्त, साचा सत्थर ना किसे हंढा ल्या। कूड़ी क्रिया बीज बीज्या वत, कलिजुग अन्तिम सिंमल रुक्ख लहरा रिहा। नाता तुटा तीर्थ तट्ट, सर सरोवर सर ना कोए जणा ल्या। गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, धर्म डेरा ना कोए वखा ल्या। सब दा बेड़ा डोबिआ नठ्ठ नठ्ठ, आपणा पन्ध मुका ल्या। अन्त तेरे दुआरे गया ढठ्ठ, चरण सरन सीस झुका ल्या। सच संदेसा दे मति, बेमती आप जणा ल्या। वेले अन्तिम रख पत, इक तेरी ओट रखा रिहा। अग्गों कहे पुरख समरथ, सच संदेसा इक सुणा ल्या। जन भगतां चरणीं जा के ढठ्ठ, जिन्हां तेरे विच मेरा दर्शन पा ल्या। मैं होया भगतां वस, डोरी भगतां हथ्थ फड़ा रिहा। ओथे मेरा कोई ना चले वस, श्री भगवान आप समझा रिहा। प्रेम प्यार अन्दर गया फस, अन्त बाहर ना कोए कढ्ढ रिहा। मैं गुरसिखां विकया हट्ट, दूजी कीमत ना कोए रखा ल्या। हरिजन तेरा दुखड़ा देण कट, बण दर्दी दर्द वंडा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणा ल्या। सच संदेसा सुण के गीत, कलिजुग इक्को खुशी मनाईआ। नाता तुटा मन्दिर मसीत, बिन भगतां प्रभ जू हथ्थ किसे ना आईआ। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां तबक देण दुहाईआ। निरगुण बदलण आया रीत, सरगुण दए आप समझाईआ। गोबिन्द करे खेल अनडीठ, पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। साहिब सुल्तान साचा मीत, सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। सचखण्ड निवासी इक अतीत, त्रैगुण डेरा रिहा ढाहीआ। जन भगतां कीता ठांडा सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। चरण कँवल बंधाए प्रीत, प्रीतीवान

१६५ १३

इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। कलिजुग उठ उठ तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाया। कवण दुआरे मिले मलाह, भगत भगवन्त रिहा जगाया। इक्को देवे सच सलाह, मेरा बेड़ा पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा सुणाया। कलिजुग वेख अन्तिम धार, धरनी धरत धवल जणाईआ। करया खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। सति सतिवादी हो तैयार, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। आदि जुगादी इक अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग अन्त हो तैयार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका अपर अपार, दो जहानां आप सुणाईआ। साचा बंक कर तैयार, भगत भगवान दए वड्याईआ। छत्ती जुग दा कर्ज उतार, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए समझाईआ। लेखा मंगे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भुल्ल कदे ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे चरण सरन करन निमस्कार, नेत्र नैण सके ना कोए उठाईआ। ओथे करे सच विहार, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा लेखा दए निवार, भुलेखा भगतां कोलों कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक जणाईआ। सच दुआरा वेख अटल, अटल आप जणाइंदा। लख चुरासी कर के वल छल, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। सच सिंघासण बैठा मल्ल, निहचल आपणा डेरा लाइंदा। धुरदरगाही संदेसा घल्ल, भगत भगवान आप मिलाइंदा। लहिणा देणा चुक्के तेरा कलिजुग कल, कालख टिक्का आप धवाइंदा। जन भगतां दी धूढ़ी मस्तक मल, मर जीवत रूप वटाइंदा। चोटी पर्बत समुंद सागर उच्चे टिल्ले जाण हल्ल, हल्का सब दा भार कराइंदा। कूड़ी क्रिया धर्म राज लाहे खल्ल्, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण सरगुण लोकमात चलाए शब्दी हल, सब दी जड़्ह उखड़ाइंदा। वेखे खेल घड़ी पल, थित वार ना कोए जणाइंदा। अन्तिम तेरा मेट सल, सतिजुग साचा आप लगाइंदा। ग़रीब निमाणयां विच जाए रल, रल मिल आपणी खुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप चुकाइंदा। सब दा लेखा मुकाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी मंत्र जाप, नमो नमो समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पाठ, चौदां विद्या करे पढ़ाईआ। सर सरोवर तीर्थ ताट, जलधारा रूप वखाईआ। गुर अवतार दे दे दात, लख चुरासी जीव समझाईआ। पीर पैगम्बर सज्जण साक, सगला बन्धन पाईआ। निरगुण सरगुण पाकी पाक, पुनीत पतित वेख वखाईआ। वरन बरन ज़ात पात, दीन मज़्ह़ब वंड वंडाईआ। बुध मति मन देवे पंज तत्त सुग़ात, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। रवि ससि खेल तमाश, सूरज चन्न करे रुशनाईआ। धरत धवल कर प्रकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जेरज अंड साजण साज, उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रच रच काज, जुग जुग आपणा हुक्म मनाईआ। धर्म दुआरे देवे राज, राए धर्म माण वड्याईआ। चित्रगुप्त दे हिसाब, लेखा सब दा हथ्थ फड़ाईआ। लाड़ी मौत बंधाए नात, नाता सब दा आप जुड़ाईआ। जुग जुग जन भगतां पुछे आप वात, हरि जू बणे पिता माईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, सतिगुर आपणी गोद बहाईआ। दो जहान लडाए लाड, एथे ओथे होए सहाईआ। नाम अनमुल्ला देवे दात, तोल तराज़ू ना कोए तुलाईआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, मात गर्भ फंद कटाईआ। गुरसिख विके ना किसे हाट, सतिगुर आपणे हट्ट विकाईआ। अन्तिम वखाए इक्को ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। कलिजुग तेरा लेखा डूँग्घे ख़ात, ख़ाता तेरे नैण वखाईआ। तेरी इच्छया होई नार कमज़ात, कुलखणी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान आप मिलाईआ। भगत भगवान इक्को घर, घर मन्दिर आप वसाइंदा। कलिजुग अन्तिम खोल्हे दर, दर दरवाजा आप जणाइंदा। सन्त सुहेले सज्जण फड़, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। काया डूँग्घी कन्दर वड़, वड़ वड़ आपणा रंग रंगाइंदा। लख चुरासी रही सड़, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। भगतां संग भगवान रल, रल मिल आपणी ख़ुशी मनाइंदा। पूरब जन्म दा देवे फल, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पिच्छे रिहा घल, अन्तिम आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवे दान, दाता आपणी दया कमाइंदा।

❇ १४ मग्घर २०१६ बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ❇

सांगोपांग तेरा टुट्टा माण, तख्त निवासी आप तुड़ाया। सहँसर मुख बाशक तशक कुरलाण, रो रो नेत्र नीर वहाया। लोकमात मिल्या माण, गुरमुखां हरि हरि आप दिवाया। जड़्ह हिली दो जहान, धीरज धीर ना कोए धराया। गुर अवतार सरनी डिगे आण, गल वास्ता पल्लू पाया। उलटा होया ज़िमी असमान, चौदां तबक देण दुहाया। करया खेल विष्नूं भगवान, जिस दा विशा हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेजा साचा तख्त वड्याईआ। साची सेजा बणया तख्त, हरि सतिगुर आप बणाईआ। आपणा सीस दे के पहलों धड़त, धड़ा भगतां फेर बणाईआ। आपणे सीस ताज जड़े जड़्हत, हीरे लाल माणक मोती जोत सुआईआ। विष्नूं सांगोपांग सेज हंढ्ढाई छोटी, गुरसिख आसण दए वड्याईआ। करे सेवा तेड़ रख लंगोटी, तन वस्त्र ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, घर बंक इक सुहाईआ। चरण मस्तक इक्को जोत, सीस जोत जगत सवाईआ। चरण मस्तक इक्को कोट, गुरमुख मन्दिर रूप वटाईआ। सीस चरण इक्को ओट, चरण ओट सीस रखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण सरूप जन भगतां उत्ते होया आप मोहत, मोह मुहब्बत खेल कराईआ। लख चुरासी ख़ाली कीती फोक, जोती किसे विच रहिण ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां बख़्शे इक्को ओट, ओट आसरा इक जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण सीस मस्तक रंग, विष्नूं लछमी इक्को मंग, लेखा जाणे सूरा सरबँग, लालन लाल रंग इक रंगाईआ। लच्छमी कहे विष्नूं भगवान, की एह खेल रचाया। आदि मिल्या मैंनूं दान, मेरी हथ्थीं चूड़ा पाया। मेरा जोबन नौजवान, नज़र किसे ना आया। मैं तेरी इक रकान, दर बैठी सीस झुकाया। तूं साहिब मेरा सच सुल्तान, सद आपणा संग रखाया। कलिजुग अन्तिम वेख होई हैरान, तूं केहड़ा वेस वटाया। ग़रीब निमाणयां पिच्छे फिरे भगवान, लोक लज्जया आप मिटाया। चरणां उत्ते रख चरण देवें आप पहचान, आपणी चरण धूढ़ी गुरमुखां झोली पाया। बौहड़ी मेरी सुंझी होई दुकान, दरगाह वस्त ना कोई रखाया। कर किरपा दस्स निशान, जिस दुआरे बैठा आपणा रंग चढ़ाया। पुरख अबिनाशी हुक्मरान, उँगली नाल रिहा समझाया। उठ सुलखणी मार ध्यान, लच्छम तेरा वक्त चुकाया। भगतां भगवन्त मिल्या सच्चा काहन, घर गोपी इक हंढुाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि आपणा भेव ना किसे जणाया। तेड़ लंगोटी ढाई गज़, गिराह गिराह नाप नपाईआ। आपणा पर्दा निरगुण कज्ज, सरगुण होए सहाईआ। तख़्त सिँघासण बहे सज, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। जन भगतां दरस करे रज्ज रज्ज, आपणी तृखा बुझाईआ। सेवा करे भज्ज भज्ज, भावी रिहा मिटाईआ। नेत्र पेखे साचा हज्ज, हुजरा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तेड़ लंगोटी पंज हथ्थ, पंजां वेख वखाइंदा। कर खेल पुरख समरथ, समरी आपणी आप जणाइंदा। शुकर धन्न दुआर गाए जस, सोहला सो सो आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तेड़ लंगोटी साढे सत्त फुट्ट, ढाकन को पत इक अख्वाईआ। दो जहानां रिहा लुट, तन आपणा पर्दा लाहीआ। भगतन गोदी रिहा चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। खेले खेल लुक लुक, नज़र किसे ना आईआ। आपणयां आपे रिहा पुच्छ, घर घर फेरा पाईआ। नंगीं पैरीं हथ्थ ना कुछ, खप्परी गुरमुख रिहा उठाईआ। सीस निवाए झुक झुक, आपणा माण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तेड़ लंगोटी गिराह चाली, चाली सब दी आप पुआइंदा। करे खेल हथ्थां ख़ाली, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। जन भगतां देवे आप दलाली, बण

विचोला वेख वखाइंदा। लेखा जाण जोत अकाली, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। दर दरवेश बणे दर पाली, हलत पलत सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। तेड़ लंगोटी नब्बे इंच, नांया सिफ़रा रंग रंगाईआ। जन भगतां काया धरती आपे सिंच, नाम बूटा इक्को लाईआ। आप बणाए आपणी वेंत, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को लंगोटी दए वड्याईआ। इक लंगोटी वेखे छोटी, छोटा आपणा रूप वटाइंदा। बंद करे अन्दर निर्मल जोती, जोत जोत नाल मिलाइंदा। सृष्ट सबाई रही सोती, सुत्यां हरि जू खेल कराइंदा। जन भगत बणाए आपणे गोती, गोत आपणी विच मिलाइंदा। सेवा करे दर बरदा बण के बालण हथ्थीं झोकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। इक लंगोटी बन्न्हे भोथा, गंढु आपणे हथ्थ पुआईआ। दो जहान करे थोथा, फ़ुरना कोई रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवे होका, हुक्म हक़ इक जणाईआ। पहली वार मिल्या मौका, लोकमात भेव चुकाईआ। निरगुण निरवैर आप पहुंचा, परम पुरख फेरा पाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सौखा, औखी घाटी ना कोई चढ़ाईआ। वेले अन्त ना देवे धोखा, धूआं धुखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। भगत कुड़माई होया वेला, हरि मिलणी आप कराईआ। बण विचोला सज्जण सुहेला, जुग विछड़े रिहा मिलाईआ। सेवा करे गुरू बण चेला, चेला गुरू रूप वखाईआ। नंगीं पैरीं फिरे अकेला, मंज़लो मंज़ली पन्ध मुकाईआ। वेखो गरुमुखां दे मिलण दा वेला, बिन मन्दिर मस्जिद मठ्ठ रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची गंढु रिहा पुआईआ। साची गंढु पुआए आप, भगती नाता जोड़ जुड़ाइंदा। बणया विचोला प्रभ जू आप, दूजा भगत ना कोई रखाइंदा। पहलों बणे भगत आप, तृष्ना जगत बुझाइंदा। फेर बणया आप साक, गुरमुखां जोड़ जुड़ाइंदा। गोबिन्द तेरा पूरा करे पहला वाक, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। सरसे कंडे दिती दात, कलिजुग अन्तिम हरस मिटाइंदा। पुरख अकाल प्रितपाले वेखे मार झात, जंगल जंगल जूह रूप वटाइंदा। जिथ्थे कोई ना पुछे वात, ओथे तेरी ओट दसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप मिलाइंदा। मेलण आया श्री भगवान, जगत बन्धन रिहा पाईआ। गुरमुख गुरसिख आप पहचान, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। हरि भगत वेखो मार ध्यान, धी पुत्त नाउँ धराईआ। सौहरे पेईए खेल महान, हरि ख़ालक रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बन्धन जगत तुड़ाईआ। जगत बन्धन तोड़, नाता इक्को इक जणाइंदा। माझा दुआबा इकठ्ठे कीते तोर, तुरत आपणा खेल वखाइंदा । किसे नज़र ना आए होर, होका दे दे आप जणाइंदा। सीस ताज

जो रख्या बांके शोहर, सो शहिनशाह लेखा पूर कराइंदा। जम्मू मालवा जे चाहो लोड़, लिख हाल फेर सुणाइंदा। तख्त चढ़ के पकड़े डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन संग मिलाइंदा। हरिजन वेखो हरिजन आया, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी त्रैगुण लाही माया, पर्दा रिहा उठाईआ। विच्चों इक्को नज़री आया, सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची मंगण रिहा मंगाईआ। सगन मनाए सगला संग, हरि सगली वेख वखाईआ। बण विचोला सूरा सरबँग, सुरती सुरत शब्द कुड़माईआ। लाल सिँघ दुआरे पहलों मंगी मंग, प्रभ विचोला पिच्छे रहि ना जाईआ। पुरख अबिनाशी सब दी चोली रिहा रंग, रंगण आया सच्चा माहीआ। लालो तेरी पिछली भुक्ख नंग, अन्त रिहा मुकाईआ। तेरे घर दा इक्को डंग, डंका दो जहान वजाईआ। ढाई गज़ ढके आपणा नंग, नंगी करे सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल करे बण मलंग, मुलम्मा सब दा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जनहरि संग रखाईआ। हरिजन वेखो भाई भाई, भईआं भैणां मेल मिलाइंदा। गुरमुख मेला गुरमुख चाईं चाईं, गुर सतिगुर आप कराइंदा। इक दूजे दीआं पकड़ो बाहीं, फड़ी बांह ना कोई छुडाइंदा। अन्दरे अन्दरे काया मन्दिर प्रेम प्यारे बणो राही, रहबर साचा राह जणाइंदा। अग्गों मिले सच्चा माही, साची सिख्या इक समझाइंदा। दुआबा माझा कोई भुल्ले नाही, गुरमुखां पिछली भुल्ल सर्ब बख़्शाइंदा। कलिजुग अन्तिम बूटा हुल्ले नाही, फल आपणी हथ्थीं लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण लागी लागण सेव कमाइंदा। लागण लागी बणया नाई, झीवर छींबा आप अख्वाईआ। ब्रह्मण सांसी बणे गोसाईं, गोबिन्द आपणा फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहीं, फड़ बाहों गोद उठाईआ। सचखण्ड लै जाए चाईं चाईं, खेड़ा इक वखाईआ। एका घर वसाए धी जवाई, कुड़म कुड़माई आप कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हरिसंगत देवण आया आप वधाई, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। वाधा वधे वधे पीड़ी, नींह सतिगुर आप रखाइंदा। प्रहिलाद पिच्छे बण के आया कीड़ी, गुरमुखां पिच्छे आपणा रूप वटाइंदा। करे खेल बेनज़ीरी, नज़र ना किसे वखाइंदा। गुरमुख मिलण दा वक्त अख़ीरी, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जिहनूं कहिन्दे प्रभ मिले तकदीरी, बिन तकदीरों तकदीर बणाइंदा। दाता दानी गुणी गहीरी, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। प्रेम प्यार दी दे के नाम जंजीरी, कड़ी कड़ी नाल फसाइंदा। आप कटदा रिहा दिलगीरी, गुरमुखां दुःख उठाइंदा। आप कटदा रिहा फ़कीरी, दर दर घर घर अलख जगाइंदा। गुरमुखां देंदा रिहा अमीरी, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। गोबिन्द छड्डुणी आपणी पीरी, पिता पूत भेंट चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१७० १३

किरपा कर, हरिजन हरिजन हरिजन नाल मिलाइंदा। सच दस्सो मिलोगे नाल, हरि मिलणी आप कराईआ। सच दस्सो बणोगे लाल, बिन तुहाढ्डे पुत्त नज़र ना आईआ। सच दस्सो सुणोगे हाल, मुर्शद मुरीदां हाल सुणाईआ। सच दस्सो चलोगे नाल, जिथ्थे कोई ना जाए पांधी राहीआ। सच दस्सो लओगे भाल, भुल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। सच दस्सो मन्नोगे स्वाल, ख़ाली झोली तुहाढ्डे अग्गे डाहीआ। सच दस्सो प्रेम प्यार दी घालणा लओगे घाल, गुरमुख गुरमुख नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछण आया सच्चा माहीआ।

गुरमुख कदे ना होए मुर्दा, मुर्शद आपणी गोद उठाईआ। गुरमुख कदे ना बेड़ा डुब्बदा, सतिगुर तारे फड़ फड़ बाहींआ। गुरमुख शौह दरयाए कदे ना रुढ़दा, श्री भगवान नईया नाम चढ़ाईआ। अक्खीं वेखो गेड़ा गिढ़दा, करता की की खेल रचाईआ। लेखा जाणे धुर दी पिर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। सृष्टी वेखे पूरन फिरदा, परम पुरख प्रभ नज़र किसे ना आईआ। जुग जुग रखे आपणा पर्दा, प्रितपालक वड वड्याईआ। गुरमुख अन्दर रखे आपणा आप ठरदा, सीने नाल सीना लाईआ। वेखो कलिजुग गेड़ गिढ़दा, लेखा गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। सतिजुग चरण दुआरे आवे रिड़दा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। नेत्र नैण नीर किरना किरना किरदा, कीरत कीरना आपणा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक अतीता, खेल भगतां हथ्थ रखाईआ। गुरमुख कदे ना जाए मर, जन्म मरन विच ना आईआ। पुरख अबिनाशी जिस दी सेवा रिहा कर, सो हरिजन दरगह साची वसे थाईं थाईंआ। जिन्हां कोलों पुरख अकाल रिहा डर, सिर अपणे भय रखाईआ। दूर दुराडे इकठ्ठे करे बाहों फड़, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। सिर आपणयां पट्टां उत्ते धर, धरनी नाता दए तुड़ाईआ। जिन्हां पिच्छे गोबिन्द भाणा गया जर, सो गोबिन्द आया माहीआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां निरगुण निक्कयां वढुयां देवे वर, जिन्हां बख्शी चरण सरनाईआ। दिवस रैण दर दुआरे बण सेवक पाणी रिहा भर, चाकरी चाक इक कमाईआ। आपणे सीस पल्लू बंधा लड़, कन्नी आपणे हथ्थ रखाईआ। लहिणा देणा चुकाए घर घर, आपणा आप तजाईआ। हो के निमाणा गुरमुखां अन्दर गया वड़, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। आओ सिखो फड़ो लड़, पुरख अबिनाशी आया बेपरवाहीआ। मार छाल छाती उत्ते जाओ चढ़, मिले माण जगत वड्याईआ। जिन्हां आपणा आप दित्ता हर, सो हरि की पौड़ी रिहा वखाईआ। धीआं पुत्तर सारे जाओ बण, पिता आया बण के सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे सेव साचा हरि, गुरमुख साचे संग रखाईआ। गुरमुख कदे ना रोवे, नेत्र

नैण नीर वहाईआ। प्रभ चरण दुआरे दुरमति मैल धोवे, मुख उज्जल मात कराईआ। नेत्रीं वेखो गुरमुख गुरमुख जेहा होवे, गुर आपणे लागे निउँ निउँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सगन रिहा मनाईआ। गुरमुखां नाल मनाए सगन, सगला संग दया कमाईआ। आर पार लग्गे इक्को लग्न, लहिणा देणा सर्ब चुकाईआ। जिउँ सतिगुर गुरसिखां वेख रहे मग्न, तिउँ गुरसिख सतिगुर मग्न रखाईआ। आप सड़या पहलों अग्न, गुरमुखां अग्न रिहा बुझाईआ। दो जहान दीपक जगन, पुरख अकाल तेल बाती इक्को पाईआ। आपणी हत्थीं काया भाण्डे आया मांजन, पोच पुचाए सच्चा माहीआ। लालो लाल बणाया साजण, किशन सिँघ घर वज्जे वधाईआ। गुरसिख सारे बणो आंढण गवांढण, नाते नात्यां नाल जुड़ाईआ। हीर विचारी की सार जाणे रांझण, गल बैठी गलवकड़ी पाईआ। दीन दयाल ग़रीब निवाजण, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। अन्तिम रखण आया लाजण, लोकलाज आप गंवाईआ। धन्न गुरसिख धन्न हरिसंगत होए वड भागन, जिस दुआरे वडभागी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मिलाए साचा घर, दर दर घर घर वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई घर सखी, सज्जण पाया मीत। जिस पत मात रखी, सो मिल्या इक अतीत। सृष्ट सबाई रही हक़ी बक्की, कवण ढोला गाए सोहँ गीत। चार खाणी अन्तिम थक्की, नाता
१७२ १३ तुटया मन्दिर मसीत। गुरमुख फुलवाड़ी इक्को पक्की, गोबिन्द चरण लग्गी प्रीत। पुरख अबिनाशी लग्गी चंगी, लख चुरासी १७२ १३
विच्चों कढ्ढी बाह के लीक। जिन्ना पिच्छे कटदा रिहा तंगी, अन्तिम दूर दुराडा आया नज़दीक। एथे बणया मात संगी, अग्गे मेला लाशरीक। बण भिखक मंग इक्को मंगी, चौदां मग्घर गुरसिख गुरसिख मिलण दी तरीक। हरि जू लाए आपणे अंगी, अंगीकार करे हस्त कीट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दयावान दयावान मेहरवान मेहर करे मेहर बंधाए चरण प्रीत। गुरमुख वक्त ना होए दुहेला, जल धार ना कोई रुढ़ाईआ। प्रभ जू मिल्या इक अकेला, अक्ल कलधारी फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बैठा रिहा वेहला, कलिजुग अन्तिम करन आपणा कम्म आईआ। भगतां लभ्भे भगत सुहेला, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखो तरन दा आया वेला, तारन वाला रिहा तराईआ। गोबिन्द माण दे के गया गुरू चेला, सो सतिगुर चेला गुर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा वक्त दुहेला दए कटाईआ। वक्त दुहेला दए कट, कटणहारा आप आया। गुरमुखां मेल पहला फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाया। आपणे सीने उत्ते लए चुक्क, सीना सीना वेख वखाया। लहिणा देणा देवे हक़ो हक़, हक़ निबेड़ा आप जणाया। सतिगुर पूरा कदे ना जाए थक्क, दिवस रैण सेव कमाया। चरण लग्ग जो पिच्छे गए हट, अन्त उहनां नाल मिलाया। जिस ने सोहँ

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाई गाथ, तिस दा वक्त दुहेला ना कोई रखाया। जिउँ सतिगुर पूरन वसया साथ, आत्म सेजा पलँघ विछाया। अन्दर वड़ चलाए राथ, आउँदा जांदा नज़र ना आया। राती सुत्यां देवे दात, दिने जागदयां पंज तत्त गेड़ा रिहा वखाया। हरिसंगत तेरा वड्डा भाग, वड हरि जू आप वंडाया। तुहाढ्डे पिच्छे फिरे कन्त सुहाग, गुरमुख नारी कर प्यारी आपणे अंग लगाया। चौदां मग्घर सारे जाणा जाग, हुण जागण वेला आया। फड़ बाहों रिहा काड, फड़ आपणे गले लगाया। सारे रल मिल कर लओ लाड, पिता पूत गोद बहाया। गोबिन्द भुल्ले ना अजे याद, याददाशत आपणे विच छुपाया। जिस दे हथ्थ ते उडदा बाज़, सो बाज़ां वाला आया। जिस ने सवारने तुहाढ्डे काज, आपणा काज ना कोई वखाया। जिस नूं सारे कहिन्दे गुरू महाराज, सो ग़रीब निमाणा हो के वेखण आया। रल के रचीए इक्को काज, गुरसिख गुरसिख सतिगुर सतिगुर गुरसिख लए प्रनाया। सारे मारो इक्को आवाज़, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साडी सेवा रिहा कमाया। सुण आवाज़ उठे अवतार, गुर गुर नैण रिहा खुल्हाईआ। पीर पैगम्बर होए ख़बरदार, कवण ख़बर रिहा सुणाईआ। भगत अठारां होए बेदार, आलस निंद्रा रहे गंवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण रहे उग्घाड़, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। सारे वेखण वेखो भाग लग्गा उजाड़, श्री भगवान आप लगाईआ। गुरसिख इकठ्ठे कीते लाड़, लाड़ी आपणी
१७३ जोत नाल प्रनाईआ। चारों कुण्ट फड़ फड़ एहनां चरणां हेठां लए वाड़, बाहर सके ना कोई कढ्ढाईआ। रल मिल के ढोला १७३
१३ लाया इक अवाज़, आत्म परमात्म वज्जी वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दित्ता दाज, गुरमुखां झोली आप भराईआ। १३
जिस ने साजण ल्या साज, सो सज्जण वेख वखाईआ। सारे चल के वेखीए किस तरां काज, बिन शरअ नकाह दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवन्त इकठ्ठे कर, चौथी लांव इक्को वार पढ़ाईआ। प्रभ दुआरे बिरख होई पीड़, प्रभ विच ध्यान लगाईआ। हरिसंगत आउँदी घत्त वहीर, चरण कँवल वाहो दाहीआ। नाम दयो दे समें दा मैं दिलगीर, मेरी दर्द ना कोए वंडाईआ। जिन्ना चिर दुआबे विच्चों ना आए वहीर, मेरा दु:ख ना कोई वंडाईआ। मैं पंज साल दस्सदा रिहा मेरी बदल तकदीर, मेरा वेला गया आईआ। पुरख अबिनाशी सम्मत चौदां दस्स के गया पहली वार, जन भगतां कोलों तेरा बन्धन दए कटाईआ। चौदां मग्घर वक्त अख़ीर, तेरा आखर दए मुकाईआ। वेखो गुरसिख तेरे नाल तेरी वंडावण पीड़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रविदास चम्यारा गावे गीत, बेड़ा बन्न्ह वखाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी चलाए जुग जुग रीत, रीतीवान भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उत्भुज लेखा रिहा मुकाईआ। हरि दर करन पुकार, हरि बारिश नाम कराइंदा। तरस कीता करतार, तारनहारा

वेख वखाइंदा। दुआबिउँ पिछले सज्जण ल्यांदे उठाल, उठ उठ आपणी सेव कमाइंदा। उच्चे बिरछ वेखे मेरे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। जिन्हां दी किसे हथ्थ ना आई चाल, कोटन कोटि ध्यान लगाइंदा। पहलों पुछिआ गुरसिखां हाल, फिर गुरमुखां कोलों तेरा हाल पुछाइंदा। नेत्र जलवा कर जलाल, ज़रूरत तेरी पूर कराइंदा। लालो घर आया लाल, पुरख अबिनाशी पिछला हिसाब देणा वखाल, लेखा वक्खो वक्ख जणाइंदा। अन्तिम इकठ्ठे कीते आण, अग्गे वंड ना कोई वंडाईआ। ग़रीब निमाणयां सुघड़ सिआणयां बाल अञाणयां बिरधां देवे इक्को माण, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा। जिस जन गाया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन विच ना आइंदा। गुरमुख आए नाम सद्दे, सद्दा हरि जू हरिजन आप जणाईआ। आत्म रस प्रेम मधे, सो मतिवाले अंग लगाईआ । लख चुरासी विच्चों लभ्भे, दर दर घर घर फोल फुलाईआ। श्री भगवान सदा सुहेला इक अकेला जन भगतां फिर सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे सेव कमाईआ । जगत पार कराए झूठी हद्दे, हद्द आपणी इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढे, साचे मन्दिर दए बहाईआ। साक सज्जण झूठे भैण भाई छड्डे, गुरमुख गुरमुख नाल करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी दोहां हथ्थी गाने बद्धे, नेत्र वेखे चाईं चाईंआ। नाम दुशाले परदे कज्जे, सालू सुब्बर इक्को सीस टिकाईआ। नाता छुटे छोटे वड्डे, इक्को रंग रिहा चढ़ाईआ। विष्नूं वखाए विश्व पर्दे, भगवान भगतां दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सद्दे आए साचे घर, घर सज्जण इक जणाइंदा। जिथ्थे चुक्के जन्म मरन डर, डर सब दा आप मुकाइंदा। निमाणे निताणे निथाव्याँ फड़, दरगाह साची माण दवाइंदा। जिस घर आप बैठा चढ़, तिस दुआरे गुरमुख आप बहाइंदा। रविदास अक्खर रिहा पढ़, एका ढोला गाइंदा। श्री भगवान गया डर, डर डर आपणी सेव कमाइंदा। सन्त सुहेले इकठ्ठे कर, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। सच विचोला आप बण, सोहँ ढोला इक सुणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच्चा दान, गुरमुख गुरमुख घर मंगाइंदा। किशन सिँघ नेत्र नैण नीर तेल रिहा चोअ, हरि सतिगुर सच जणाईआ। अद्धविचकार खलोता आप हो, अन्दर बाहर चरण टिकाईआ। सतिजुग इक प्रहिलाद दित्ता ढोआ ढो, नर सिँघ रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम भगत दुआर जो चरण जाए छोह, सचखण्ड साचे दए बहाईआ। गुरमुख घर गुरमुख करे लो, बाती बाती नाल जगाईआ। गुरमुख घर गुरमुख जाए सौं, आलस निंद्रा जगत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप कराईआ। किशन सिँघ नेत्र नीर सच रस, हरि रसीआ आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी बण विचोला मार्ग रिहा दस्स, दहि दिशा वेख वखाइंदा। भैण भाई इकठ्ठे हो के मिलो हस्स हस्स, हरिसंगत नैनण नैण ना कोई तकाइंदा। जिस गुरसिख मेरी रखणी पत्त, सो गुरमुख

१७४
१३

धी भैण कोई ना अक्ख उठाइंदा। आत्म अन्दर इक्को जत, धीरज तुहाढे हथ्थ फड़ाइंदा। जे मन हो जावे बेवस, चरण दुआरा इक वखाइंदा। कोझे कमले आओ नस्स, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। जगत विकार विच ना जाणा फस, साची सिख्या इक समझाइंदा। सतिगुर पूरे दी छाती उत्ते चढ़ो हस्स हस्स, फड़ बाहों ना कोई हटाइंदा। तुसीं मेरे मैं तुहाढे वस, दूजा कोई नज़र ना आइंदा। तुसीं मेरी करो पूरी आस, मैं तुहाढी ख्वाहिश मिटाइंदा। तुसीं मेरे दास मैं तुहाढा दास, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। मेरा पवण तुहाढा सुआस, मेरे विच समाइंदा। तुहाढे पिच्छे आपणा आप कीता नास, जगत निशाना ना कोई वखाइंदा। पुत्तर धी ना वसे साथ, पिता पूत खेल वरताइंदा। गुरसिख इक्को बणाई शाख़, शनाख़त होर ना कोई जणाइंदा। पत मेरी लैणी राख, रक्षया तुहाढे हथ्थ फड़ाइंदा। नेत्र तक्क कोई ना सके झाक, जो गुरमुख सतिगुर विच समाइंदा। अन्तिम पूरा करना इक्को वाक, गोबिन्द एका आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे आपे खड़, आपणे घर दा हाल सुणाइंदा। घर दा हाल दस्से घर वाला, घर घर आपणा फेरा पाईआ। आपणे घर दा कढु दवाला, गुरमुखां घर वसाईआ। आपे होया फिरे बेहाला, हरिजन देवे माण वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम अवल्लड़ी चाला, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव ना आईआ। गुरमुखां मार्ग दित्ता इक सुखाला, सुखी वसो थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दा भेव आप खुल्हाईआ। घर दा खोल्हे हरि जू भेत, गुरमुख भेती आप बणाइंदा। जिस दे पिच्छे सिर तत्ती पवाई रेत, सो अग्नी तत्त बुझाइंदा। सचखण्ड निवासी आप करन आया हेत, हित आपणा आप जणाइंदा। वेखो ग़रीब निमाणा हरि जू लओ वेख, ख़ाली हथ्थ फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दा पर्दा आपे लाहइंदा। घर दा पर्दा देवे लाह, लाशरीक फेरा पाईआ। गुरमुख दयो इक सलाह, सतिगुर पूरा मंग मंगाईआ। मेरे अन्त बणे मलाह, बेड़ा तुहाढे कंध उठाईआ। तुहाढे पिच्छे सतिजुग दस्से राह, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दा लेखा रिहा जणाईआ। घर विच घर वसे भगवान, घर भगती रंग रंगाइंदा। भगत मीता नौजवान, नव नौ आपणा खेल कराइंदा। अन्तिम वेखे मार ध्यान, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। लख चुरासी दिसे वैरान, वैरी घर घर नज़री आइंदा। गुरमुख विरला गाए साचा गान, आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच खोज खुजाइंदा। घर विच घर खोजणहारा, खोजत खोजत वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच विहारा, बिवहारी फेरा पाईआ। नाल ल्याए रविदास चम्यारा, साढे तिन्न हथ्थ गंड पुआईआ। पहलों चमड़ा गंढे विच संसारा, पाहने गंढु वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच खेल कराईआ। घर विच खेल खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। जिस ने पाणा गंढिआ चम्म, बण चमरेटा सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम फड़ कलम, कायनात लेख मुकाइंदा। लहिणा चुकाए चौदां इलम, आलम नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर राग अल्हाइंदा। घर घर राग धुन जैकारा, घर घर गुरमुख वज्जे वधाईआ। घर घर सच सच कर प्यारा, हरि साजन दए समझाईआ। घर घर गुरमुख गुरसिख इक दूजे नूं देण अधारा, अन्ध आत्म मेल मिलाईआ। सतिजुग चले सच विहारा, सृष्ट सबाई राह वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शाह पातशाह आप निरँकारा, गुरमुख गुरमुख वखाए दुआरा, गुरमुख गुरमुख नाल मिलाईआ। गुरमुख तक्के राह इक, इक ध्यान लगाया। हरिजन मिलण दी साची सिक, आत्म अन्तर वेख वखाया। प्रभ दुआरिउँ मिले भिख, वस्त अमोलक झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो दो आबा मेल मिलाया। दो दो आबा पाए माझा, माझा आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण पीर सब दा सांझा, सगला संग वखाईआ। गुरमुख उठाए मार वाजां, गुरसिख जगाए हुक्म सुणाईआ। रल मिल सारे इक्को घर करो काजा, करता पुरख दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दुआरे हरिजन फड़, फड़ बाहों आप लँघाईआ। हौली हौली सारे लँघो, हरि सतिगुर आप लँघाइंदा। प्रेम प्रीती एका मंगो, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। काया चोली वस्त्र रंगो, रंग इक्को इक वखाइंदा। लोक लज्या मूल ना संगो, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। उठो मेरे साचे चन्दो, हरि सतिगुर चन्द चढ़ाइंदा। पिछली टुट्टी अन्तिम गंढो, गंढु आपणे नाल पुआइंदा। एथे ओथे मेरे नाल हंढो, जगत विछोड़ा आप कटाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्हो, सतिगुर साचा सच जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप लँघाइंदा। हरिजन लँघो इक लकीर, हरि हरि आप लँघाइंदा। कोटन कोटि तरसन पीर फ़कीर, परवरदिगार विचोला नज़र किसे ना आईआ। भगतां नाल भगतां बदले तकदीर, तदबीर आपणी रिहा जणाईआ। इक दूजे दे बणो वीर, भैण भईआ जोड़ जुड़ाईआ। पंज तत्त काया माटी झूठा सरीर, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे राह चलाईआ। हरिजन मंगो वाहो दाह, वाह वाह हरि जू खेल कराइंदा। बणया विचोला बेपरवाह, पर्दा आप चुकाइंदा। सारे ढोला लओ गा, गावणहारा आप सुणाइंदा। उच्ची कूक रौला लओ पा, हरिजन गोबिन्द आपणी गोद बहाइंदा। हौला भार रिहा करा, हौली हौली पार कराइंदा। मौला रूप आप खुदा, मलकलमौत परे हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरसिख गुर गुर गुर धुर धुर धुर दरगाह साची आप बहाइंदा। वेखो

पिंजर हड्ड नाड़ी मास, हरि सतिगुर फेरा पाइंदा। गुरमुख मिलण दी इक्को आस, दूजी आस ना कोए रखाइंदा। रल मिल सारे बुझाओ प्यास, तृष्ना अग्न इक जलाइंदा। सच दुआरे पाओ रास, हरि जू हरि हरि वेखण आइंदा। जिस दे पिच्छे फरीद लगाई तांघ, सो जन भगतां तांघ रखाइंदा। वेखो की की वटाया स्वांग, स्वांगी आपणा स्वांग रचाइंदा। ख़ाली हथ्थी बन्ने तग, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आओ गुरसिख लग्गो अंग, अंगीकार इक जणाइंदा। मेरा कटो विछोड़ा नंग, तंगी आपणी आप जणाइंदा। तुहाढे पिच्छे दो जहाना आया लँघ, लोआँ पुरीआँ चरणां हेठ दबाइंदा। निरगुण नंगी कीती कंड, सिर तुहाढे पर्दा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हड्ड मास नाड़ी चम्म तुहाढे हट विकाइंदा। वेखो चम्म मास नाड़ी हड्ड, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तुहाढे पिच्छे पिता मात छड्ड, अग्गों निरगुण हो के आइंदा। फेर बणाई साची यद, विष्नूं आपणा खेल कराइंदा। गोबिन्द वंडाया विच्चों अद्ध, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। नानक निरगुण गया सद्द, सतिगुर आपणा खेल कराइंदा। मुहम्मद मंगदा गया हज्ज, अमाम आपणा हज्ज कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा घर वखाइंदा। ख़ाली पिंजर वेखो सुक्का, चम्म नज़र कोई ना आईआ।
१७७ बिरहों वैराग अन्दर हरि जू उठा, निरगुण आपणा नूर धराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो रिहा सुत्ता, करवट बदले १७७
१३ ना सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम घर घर करदा पुछा, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। जिहनूं आदि जुगादि कहिन्दे हरि जू १३
लुचा, अछल अछल्ल खेल कराईआ। दर तुहाढे आए सुच्चा, पिच्छे छड्ड कोई ना जाईआ। प्रेम प्यार दा इक्को भुक्खा, दूजी रसन ना रसन लगाईआ। ना वड्डा ना जाणो निक्का, हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आप वड्याईआ। तन पिंजर वेखो ख़ाक, हरि ख़ाकी खेल कराईआ। अन्दर वड़या परवरदिगार पाक, पाक रसूल फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पूरा करे वाक, वकया वेखे थाउँ थाईंआ। मुरीद मुर्शद देण आया नजात, निज घर आपणा रिहा वखाईआ। पिछले पाड़े काग़ज़ात, कलमा अग्गे ना कोई पढ़ाईआ। तुहाढे पिच्छे पाई वफ़ात, फ़तवा आपणे उपर लाईआ। अन्तिम बण के आया साक, निहकलंक नाउँ धराईआ। ना कोई वरन ना कोई ज़ात, बरन वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई वस्त्र ना कोई खाट, भूशन तन ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा शहिनशाहीआ। लतां बाहवां वेखो हथ्थ, हरि जू आप दसाइंदा। सरगुण अन्दर निरगुण वस, निरगुण धार चलाइंदा। गोबिन्द इक्को रख के गया आस, आसा पूर कराइंदा। सम्बल वेखो नगरी ख़ास, ख़ालक ख़लक विच वखाइंदा। अन्दर नूर जोत प्रकाश, प्रकाशवान फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा राह

जणाइंदा। हरिजन राह वेख मीत, मित्र प्यारा आप जणाईआ। तेरी मंगी इक प्रीत, चार वरन दए समझाईआ। तेरी सच्ची इक नीत, नीतीवान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन तेरे दर दुआर, हरि दर्दी फेरा पाइंदा। नंगीं पैरीं हो ख्वार, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। चारे कूटां वेखे वारो वार, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। गुर अवतार लोकमात करन इशार, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा। तेरा खेल परवरदिगार, बेअन्त अन्त कोए ना आइंदा। दस्स के आए विच संसार, लिख लिख लेखा सर्ब समझाइंदा। कलिजुग कल्की लै अवतार, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। आपणी मर्जी करे निरँकार, सब दी मर्ज आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण रखाइंदा। भगतां वेखो मिल्या माण, हरि सतिगुर आप दवाया। लेखा चुकाए दो जहान, दोए दोए आपणा रंग रंगाया। दरगाह साची दे परवान, परवाना इक्को हथ्थ फड़ाया। सोहँ ढोला सो गान, सो आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप चढ़ाया। अन्तिम चढ़या रंग वेख, विष्नूं आपणी अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मे वेख माझे वेस, प्रभ आपणी कल धराईआ। शंकर तेरे नाल जो करदा हेत, अन्त अक्ख रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। विष्नूं कहे शिव किस दा करदा शुकर, शुकर किस दे नाम मनाईआ। कलिजुग अन्तिम गया मुक्कर, पुरख अबिनाशी आपणा मुख भवाईआ। भाग लगाया निक्की नुक्कर, गुरमुख दुआरा इक वखाईआ। तेरा घर वखाए ख़ाना बुच्चढ़, लख चुरासी कोह कोह ढेरी लाईआ। ओथे कोई ना सके उपड़, भज्जी फिरे सर्ब लोकाईआ। जिस भगत बणाए आपणे पुत्तर, पुत्तर धी ना कोई वड्याईआ। जिस नूं नानक कह के गया उत्तों आवे उतर, मात पिता ना कोए जाईआ। तेरी यारी करे छुट्टड़, अन्तिम संग ना कोए निभाईआ। मेरे कोहण आया कुक्कड़, मेरी लछमी रही कुरलाईआ। कलिजुग वेस धरया जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा सलाहीआ । ब्रह्मे वेख आपणा बुढेपा, विष्नूं आख जणाईआ। तेरा मेटणहारा सौहरा पेका, पेका सौहरा नज़र किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी गुरमुखां नाल करन गया एका, इक्को अक्खर रिहा पढ़ाईआ। चरण कँवल रखाए टेका, दूजा इष्ट ना कोई जणाईआ। आपणा दस्स के आए भेता, साडी चले ना कोई चतुराईआ। अन्दर वड़ वड़ करे हेता, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं कहे वेख बुढ्ढे ब्रह्मण, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। जो तेरा बणया रिहा ज़ामन, अन्तिम आपणा पल्लू छुडाइंदा। जिस कोटन कोटि सेवा लाए कृष्न रामण, ईसा मूसा मुहम्मद खेल कराइंदा। जिस नानक गोबिन्द फड़ाया दामन, सो दामनगीर वेस वटाइंदा। जिन

भगतां मेल मिलाए आमणो साहमण, समां आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुरदरगाही देवे इक निशानन, निशाना आपणा नाउँ जणाइंदा। भगत भगवन्त गया पहचानण, फड़ फड़ बाहों आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। ब्रह्मा कहे दस्स प्यारे, हरि जू किस बिध खेल कराईआ। कवण रूप धरे संसारे, धरनी धवल चरण टिकाईआ। विष्नूं दूरों दस्से इशारे, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। वेखो खेल परवरदिगारे, गल अल्फ़ी कोई ना पाईआ। भुक्खा नंगा फिरे गुरमुखां दुआरे, बिन सद्दउँ घर घर जाईआ। आपणा चोला पहलों पाड़े, गुरमुख चोले रिहा सवाईआ। साडे दिन आए माढ़े, वेला अन्त रिहा जणाईआ। चलो चल के कढ्ढीए हाढ़े, चरण कँवल सीस टिकाईआ। फड़ बाहों जे तारे, तारनहार वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। विष्नूं कहे शंकर उठ, तेरी त्रशूल रिहा सुटाईआ। साडा दर दुआरा रिहा लुट, बण लुटेरा बेपरवाहीआ। रल मिल जा के लईए पुछ, क्यों हरि जू खेल रचाईआ। चरण कँवल जाईए झुक, सरन मिले सरनाईआ। गलवकड़ी पाए घुट्ट, प्रेम प्यार वधाईआ। छोटे बाल पैणे मुक्क, माण हँकार ना कोई रखाईआ। जे साहिब जाए तुठ, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म अन्दर सर्ब भवाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव करन दलील, तिन्ने इक्को मता पकाईआ। अन्तिम चल के करो अपील, बरीख़ाना दए वखाईआ। जिस उन्नी कत्तक वस्त्र पहरे नील, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सो सतिगुर छैल छबील, शहिनशाह आपणा रूप वटाईआ। किसे हथ्थ ना आए थाणे तहसील, सो साहिब हर घट रिहा समाईआ। जिस दी अञ्जील कुरान ना बणे वकील, शहादत देवे ना पीर कोई गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। ब्रह्मा कहे मैं मंगां दान, मंगणा मोहे मेरा भाईआ। चार वेद बकता ब्रह्म ज्ञान, चार जुग जगत पढ़ाईआ। चार वरन करन ध्यान, धरनी धरत धवल सुहाईआ। चारे मुख खोल्ह दुकान, चार कुण्ट हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेलणहारा हुक्म वरताईआ। विष्नूं कहे मीट अक्ख, हरि जू अक्ख बंद कराइंदा। मेरा भण्डारा करे सख, सक्खणे हथ्थ वखाइंदा। आदि मैंनूं ल्या दस्स, अन्त नज़र ना आइंदा। भाणे अन्दर रिहा वस, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। सांगोपांग रिहा दस्स, बाशक तुशका सेज हंढ्ढाइंदा। ओह वी आई किशन सिँघ हथ्थ, ख़ाली हथ्थ इक वखाइंदा। मेरे नालों पहलों प्रभ दी चरणी गया ढठ्ठ, मेरा डेरा ढाह वखाइंदा। ओहदे पिच्छे दुआबिउँ आए नठ्ठ, दो दो आबा मेल मिलाइंदा। जिन्हे ब्रह्मे लाहौणी तेरी पत, सो पतिपरमेश्वर आप वखाइंदा। जानणहारा मितगत, गतमित आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी करनी आप कराइंदा। ब्रह्मा कहे उठ भोले नाथ, शंकर रिहा जगाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात दित्ता साथ, जन भगतां संग रखाईआ। साडा अन्तिम वसे घाट, पार किनारा इक जणाईआ। मुकावणहारा दूर दुराडी वाट, पन्ध नेरन नेर मुकाईआ। गुरसिखां देवण आया दात, दाता दानी दया कमाईआ। पंचां बणी इक ज़मात, सचखण्ड साचे रिहा बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द ढईआ ढाई गज़, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। अन्तिम तख्त बहे साचा सज्जण सज, साहिब सच्चा माहीआ। जन भगतां दरस करे आप रज्ज रज्ज, आपणा दरश भगत कराईआ। हक़ वखाए मक्का काअबा हज्ज, हुजरा अमाम इक वड्याईआ। निहकलंक नरायण आए भज्ज, भगवन आपणा फेरा पाईआ। चार वरन मेटे हद्द, पंचम एका राह वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण दुआरे लए सद्द, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बैठे रहे अड्ड अड्ड, अन्तिम इक्को घर वखाईआ। प्रेम प्यार साची डोरी जाइन बज्झ, श्री भगवान आप बन्हाईआ। शरअ शरीअत लौण ना देवे अज पज, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। सन्त सुहेले सन्तन रखे लज, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। काल नगारा जाए वज्ज, डोरू कलिजुग हथ्थ फड़ाईआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां देवे इक्को पद, चौथे दर आप बहाईआ। बण दरवेश लए सद्द, दर दर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ढईआ ढईआ रंग रंगाईआ। एका ढईआ हथ्थ पंज, हरि पंचम खेल कराइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बहे सज, सज्जण आपणा हुक्म वरताइंदा। शाहो भूप पए गज्ज, गरज आपणे नाम सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत मृगावली जाए भज्ज, अग्गे कोई नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ढईआ रंग रंगाइंदा। ढाई गज़ गिराह चाली, चाल वक्खरी आप कराईआ। हर घट जोत जोत अकाली, अक्ल कल खेल खलाईआ। भगतां लेखे लाए पहली घाल घाली, घाली घाल लेखे पाईआ। अग्गे बणे आप स्वाली, हरि जू आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ढईआ खेल कराईआ। एका ढईआ लाए ढाह, तिन्नां वहीर बणाइंदा। विष्नूं विश्व जाए समा, समां आपणा आप समझाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म दए तजा, पारब्रह्म हुक्म समझाइंदा। शंकर मन्ने सच रज़ा, रहमत आपणी इक समझाइंदा। सुरप्त इन्द मुख जाए भवा, करोड़ तेतीसा रंग चढ़ाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार नाता जगत जाण तुड़ा, जुगती जुगत ना कोई जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणन गवाह, सफ़ाई सब दी आप रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम मुकरे कोई ना, हुक्म हुक्म आप दृढ़ाइंदा। सारे वेखो थाउँ थाँ, हरि का नाम ना कोई ध्याइंदा। कलिजुग जीव होए काँ, कूड़ी

क्रिया विश्टा मुख रखाइंदा। कोई खाए सूर कोई गां, गाँ सूर खावण वाला गुर सतिगुर संग ना कोई निभाइंदा। राए धर्म हथ्थ देवे फड़ा, कुम्भी नरक आप भवाइंदा। अग्नी अग्ग दए जला, भुंन कबाब आप वखाइंदा। सीखां उपर लए चढ़ा, सलाखां जमां हथ्थ फड़ाइंदा। हरिजन साचे लए बचा, जिन्हां आपणा मेल मिलाइंदा। विष्नूं तेरी चले ना कोई वाहवा, हरि जू खेल कराइंदा। ब्रह्मे मंग मंग चरण पनाह, चरण दुआरा इक वखाइंदा। शंकर धूढ़ी टिक्का लैणा ला, भोले नाथ आप जगाइंदा। पुरख अबिनाशी सब दा लेखा रिहा मुका, लिख लिख लेख आप समझाइंदा। साचा हुक्म देणा चला, दो जहाना आप जणाइंदा। लोआँ पुरीआँ गुरमुख साचे रिहा बहा, फड़ बाहों आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। गुर अवतार इकट्ठे आए, पिछला पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन हाए हाए, हौका लै लै रहे जणाईआ। पीर पैगम्बर रहे कुरलाए, दरोही इक्को नाम खुदाईआ। भगत अठारां रहे ध्याए, चरण कँवल सीस झुकाईआ। नाल ल्यांदी आदि शक्ति माए, मईआ आपणी खुल्ही गुत्त रही वखाईआ। चतुर भुज आपणीआं बाहां अग्गे डाहे, भार सके ना कोई उठाईआ। अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाए, खुदावंद तरस ना कोई कमाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाए, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। जिस ईसा चढ़ाया फाहे, गल अल्फ़ी तन ना कोई रखाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द गाए, सो अकल्ला हरि जू आईआ। चलो चल के लग्गीए पाए, पाहिन कबीर रूप वटाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहीं, बाहू आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ अग्गे, हरि साचा सच जणाइंदा। आपणे गलों लाहे झग्गे, सीस दस्तार ना कोई रखाइंदा। हुक्मे अन्दर जाओ भज्जे, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। मेरयां भगतां खब्बे फिरो सज्जे, जिन्हां आपणा आप जणाइंदा। जे कोई तुहानूं होर सद्दे, किसे वल ना अक्ख तकाइंदा। किसे दा बणना ना प्यो दादे, पुत्तर आपणी गोद बहाइंदा। तुहाढे पूरे करे वाहदे, वाइदा ख़िलाफ़ ना कदे अख्वाइंदा। जुग जुग बदले आपणे काइदे, कानून आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग द्वापर त्रेता कलिजुग वारो वारी भेजे, नाम वस्त वस्त वरताइंदा। कोई सौं के आए सज्जण सेजे, कोई त्रिलोकी नाच नचाइंदा। कोए तन माटी ख़ाकी वेचे, कोई अक्खरां कीमत पाइंदा। कोई तन दे दे आया मेचे, हथ्थो हथ्थ वंड वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणी कोई ना दस्से रेखे, रूप रंग ना कोई जणाइंदा । जिउँ भावे तिउँ धारे भेखे, कलिजुग अन्तिम नंगी पैरीं खेल कराइंदा। बाल्यां अन्दर बाल बण बण खेडे, बुढिआं विच बुढेपा आप हंढ्ढाइंदा। नौजवाना नौजवान बण बण मेले, आपणा जोबन आप वखाइंदा। गुरमुख मिले सज्जण सुहेले, साचा संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा पर्दा आप रखाइंदा। गुरमुख तेरा ढाई गज़ दुपट्टा, दो पहर आपणे तन लगाईआ। लख चुरासी अक्खीं पावे घट्टा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पिच्छे कहाणी रहि जाए अलबता, मिसल मिसाल ना कोई रखाईआ। गुरमुखां पिच्छे घर घर खवाउदा फिरे भत्ता, सिर आपणे भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ढाई गज़ दुपट्टा वेखे खद्दर, ख़ाहिश सब दी पूर कराईआ। गुरमुखां पूरी करे सधर, आपणी आशा लए समझाईआ। सृष्ट सबाई करे पध्धर, नाम सुहागा इक फिराईआ। चारों कुण्ट पाए गदर, राज राजाना रिहा उठाईआ। करे खेल करीम कादर, करता आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। बेघर होया हाज़र, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख गुरसिख होया उजागर, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए आप मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ ।

दर्शन कीता दर घर आ, नेत्र नैण निहालया। गुरसिख मिल गुरसिख चढ़या चा, गुरमुख गुरमुख रंग वखा ल्या। पैंडा मुकया वाहो दाह, मंज़ल साची इक बहा ल्या। गुरसिख रिध्धा गुरसिख पक्का, गुरसिख खाणा लओ खा, खा पी पी खा गुर गुर शुकर मना ल्या। वलीए छलीए दा की वसाह, अछल अछल्ल आपणा वेस धरा ल्या। जिस विछड़े लए मिला, विछोड़ा अन्त फंद कटा ल्या। सो सेवा रिहा कमा, हरि साहिब दीन दयालया। पंज सिख सेवा लैण कमा, पूरन सिक्खी दी पूरी होवे घालया। इक्की इक्की मेला ल्या मिला, एका अक्खर आपणा नाम रला ल्या। धारों तिक्खी दए वखा, निक्की निक्की भेव चुका ल्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, गुरमुख तेरा सच पकवान, गुरसिखां मुख लगा ल्या।

दर्शन कर खाओ ख़ाणा, ख़ाहिश सब दी पूर कराईआ। वेखो वरते की हरि भाणा, बेअन्त बेपरवाहीआ। तख्तों लाहे राजा राणा, साचा हुक्म वरताईआ। बरदा ग़ुलाम दर दर फिरे निमाणा, फरमांबरदार फेरा पाईआ। तन कपड़ ओडन ना कोई वखाना, भूशन अंग ना कोई लगाईआ । खुशीआं अन्दर गाए भगतां गाणा, गा गा आपणा शुकर मनाईआ। दुआबा माझा जिस साथ रखाना, सथ आपणे नाम पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां देवे साचा दान, पहलों खाणा रिध्धा पकवान, पवित्र गुरमुख घर कराईआ ।

१८२
१३

वड्डे दीआं वड्याईआ, गुरमुख वड्डे दीआं। गुरमुख तेरी वड वड्याई, जोत अकालण जिस प्रनाई, घर घर वज्जे वधाईआ, गुरमुख तेरा वड घर, जिथ्थे हरि जू मंगे वर, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। गुरमुख तेरा सच महल्ला, पुरख अबिनाशी आया इक इकल्ला, दर्दीआं दर्द रिहा वंडाईआ। गुरमुख तेरा वड दरवाजा, जिस घर आए ग़रीब निवाजा, इकठ्ठा कीता दुआबा माझा, गुरमुख वड्डे दीआं वड्याईआ।

जिस कर दरस नानक चढ़या चाउ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। जिस दा आदि जुगादि पसाओ, जुग जुग खेल कराईआ। जुगां जुगन्त जिस दा नाउँ, नाउँ निरँकारा वड वड्याईआ। सो साहिब सुल्तान कलिजुग अन्तिम पकड़े बाहों, गुरमुख आपणे अंग लगाईआ। निरगुण सरगुण करे न्याउँ, सच अदालत इक लगाईआ। तिस साहिब बलि बलि जाओ, दीन दयाल फेरा पाईआ। नेत्र नैण नैणां अक्ख खुल्लाओ, प्रतख रूप वखाईआ। एथे ओथे पिता माउँ, साची गोद दए वड्याईआ। बण सुहेला इक अकेला सिर देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम भगतां कोलों कढ्ढन आया गउँ, आपणी आशा पूर कराईआ। गुरसिख वेखे साचे राओ, रंक आपणा नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चाउ भगतां इक जणाईआ। जिस नानक वेख चढ़या चा, घर साचे खुशी मनाइंदा। सो साहिब फेरा रिहा पा, जन भगत सिफ्त सलाहइंदा। ठाकर बणया दीन दया, दयाल आपणा खेल कराइंदा। सच चलाए इक नईया, नौका आपणा नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चाउ घनेरा इक सुणाइंदा। जिस पेख नानक चढ़या रंग, रंग रंगीला आया माहीआ। इक्को डोर इक पतंग, एका तन्दन तन्द बंधाईआ। इक रस इक अनन्द, एका रसीआ वेख वखाईआ। एका सूरया एका चन्द, एका जोत नूर रुशनाईआ। एका वंडणहारा वंड, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। दीन दयाल ठाकर बख्शंद, बखशिश आपणी गुरमुखां झोली पाईआ। आपे फिरे हो के नंग, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल आपणी दया कमाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। जिस नूं नानक मिल्या अन्तरजामी, सो अन्तर मंग मंगाइंदा। जिस दी सिफ्त करे चार जुग दी बाणी, सो बाण निराला तीर लगाइंदा। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर मात निशानी, सो सच निशाना इक जणाइंदा। जिस दी आदि जुगादि जुगां जुगन्तर लख चुरासी गाए कहाणी, सो भगतां गाथा गा गा खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बखशिश आपणी आप जणाइंदा। बख्शणहारा मीता इक अतीता, त्रैभवन धनी दया कमाईआ। गुरमुख

१८३
१३

दुलारा ठांडा सीता, साहिब सतिगुर वेखे अनडीठा, नेत्र नज़र कोई ना आईआ। लख चुरासी तपे अंगीठा, ना कोई मरया ना कोई जीता, जीवण जुगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल दया समझाईआ। साची दया आप कर, दीनन आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी एका नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। जोत अगम्मी नूर धर, नूरो नूर डगमगाइंदा। सच महल्ले आपे चढ़, सिँघासण आसण सोभा पाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमाइंदा। नौ नौ चार जाए हर, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरसिख सज्जण लए फड़, फड़ फड़ आपणा मेल मिलाइंदा। लेखा जाण दर ब दर, दर दर आपणा फेरा पाइंदा। जगत विकारे नाल लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल आपणी दया आप जणाइंदा। दयाल दया करे हरि मीत, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। लेखा वेख हस्त कीट, कीटन आपणे रंग रंगाईआ। दो जहानां रिहा जीत, बल आपणा लए प्रगटाईआ। जन भगतां देवे वस्त अनडीठ, नाम नामा झोली पाईआ। चरण कँवल कँवल चरण प्रीत, धवल धवल सुहाईआ। सोहँ सो अगम्मी गीत, आपणे जेहा आपे हो रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल आपणी दया कमाईआ। दया कर दित्ता दान, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिल्या आण, मेल मिलावा आप कराइंदा। जिस नूं नानक वेख करे प्रणाम, सो निरगुण आपणी सेव कमाइंदा। भगतन रचया पूरन काम, नेहकामी आप जणाइंदा। आपे बणया रहे अंञाण, सुघड़ स्याणा गुरमुख नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया इक्को प्रेम सिखाइंदा। साची दया हरि का प्रेम, परम पुरख आप जणाईआ। गोबिन्द कीता उपर हेम, कुण्ट वंड ना कोई वंडाईआ। पुरख अकाल कीता नेम, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम आए लैण, गुरमुख सज्जण लए जगाईआ। देवणहारा देवे देण, वहिंदी धार आप वहाईआ। सोहँ ढोला हरिजन सारे कहिण, गुर गोबिन्द अन्त गया समझाईआ। भथा तीर तीर कमान, सोहँ वेखे साचे नैण, नैण नैणां नाल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणे साक सज्जण सैण, सैनापत आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया दीनन हथ्थ फड़ाईआ। दया विचारी मारे धाह, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलिजुग किसे दुआरे मिल्या ना राह, फिर फिर थक्की दए दुहाईआ। चारों कुण्ट मुख दिसे काला छाह, नूर ज़हूर ना कोई निशां, कामी क्रोधी रहे कुरलाईआ। बण पांधी राही कोई ना दस्से तेरा नाँ, रहबर नज़र ना कोई आईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। प्रभ तेरी चरणी डिगी आ, जगत दुहागण रूप वटाईआ। साचे कन्त ना देवे कोई मिला, मैंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। रंगले हथ्थ ना दए कोई वखा, कज्जल

धार ना कोई बंधाईआ। साचा वस्त्र भूशन ना दए कोई सुहा, कंगण नाम ना कोई वड्याईआ। बिन तेरी किरपा, तेरी दया कम्म किसे ना आईआ। दीन दयाल तेरी शरना, दर तेरे झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा समझा, फड़ बाहों आप फड़ाईआ। उठ वेख कर ध्यां, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। जिस दुआरे हरि जू सेवा रिहा कमा, तिस गृह मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप समझाईआ। उठ दया निक्की बाली, हरि बालम आप जणाइंदा। तेरी वेखे अलड़ जवानी, जोबन रंग ना कोई रंगाइंदा। सति पुरख निरँजण देवे सति निशानी, सच तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा भेव ना जाणे कोई विद्वानी, जगत नेत्र नैण ना कोई दरसाइंदा। हरिजन मेरा सच्चा हाणी, हाणीआं हाण नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल आप समझाइंदा। उठ दया भगत कुआरी, जगत दए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारी, घट घट वास रिहा कराईआ। जन भगतां पैज रिहा सवारी, मेल मिलाए वारो वारी, भेव अभेदा आप खुलाईआ। जा तूं सच्चे दरबारी, दर दरवाजा खोले आप निरँकारी, निरगुण आपणा कुण्डा लाहीआ। जन भगतां बण सेवक सच दवारी, घर घर अन्दर दए बहारी, हरि जू साची सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे आपणी वारी, नेत्र नैण खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुघड़ सिआणयां रिहा समझाईआ। सुघड़ स्याणी अक्ख खोल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। मैं भगतां कीता पक्ख, तेरी सेव इक समझाइंदा। तूं जा के चरण ढठ्ठ, साचा मार्ग इक वखाइंदा। ओथे हरि जू कीता इकठ्ठ, अक्ल कल आपणी खेल कराइंदा। तेरी लेखे लावे रत, रती आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाइंदा। दया कहे मैं दीन निमाण, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। भगत भगवन्त तेरा खेल महान, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। कर किरपा दे इक निशान, जन भगतां दयां वखाईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरबान, साची वस्त रिहा समझाईआ। जा के गा इक ज्ञान, सोहँ ढोला रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मति इक समझाईआ। साची लै के हरि दर मति, मति मतिवाली फेरा पाईआ। दूर दुराडी आई नस्स, गुरमुख केहड़ा फेरा पाईआ। बिरहों वैरागण होई बेवस, आपणी सुध भुआईआ। पैरीं छाले पै गए नठ्ठ नठ्ठ, कलिजुग अग्नी रेत बालू नज़री आईआ। लुक लुक बचाई आपणी पत, चारों कुण्ट ठग्ग चोर यार बैठे नैण उठाईआ। दरोही खुदाए बिन भगतां मैनूं कोई ना सके रख, साध सन्त जीव जंत धीरज धीर ना कोई धराईआ। जिध्धर जावां कलिजुग जीव मेरे वल तक्कण कर कर अक्ख, नैण नैणां नाल मिलाईआ। मैं डरदी डरदी पिच्छे आई हट, मुख आपणे घूँगट पाईआ। सोहँ ढोला अन्दरे अन्दर रट, गुरमुखां राह तकाईआ। मेरा

मिटे विछोड़ा फट्ट, दर्दी दर्द दर्द वंडाईआ। दीन दयाल मार्ग दित्ता दस्स, सिँघ नरैण नरायण इक्को आस लगाईआ। जिस दा नानक खुशी होए गा गा जस, सो जन भगतां आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर दया आई नज़दीक, नज़र नज़र उठाईआ। मेरी पूरी होई उडीक, पिछला पन्ध रहिण ना पाईआ। भगत दुआरे भगवन्त प्रीत, दूजा नजर कोए ना आईआ। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, पंडत मुल्लां शेख़ ना कोई सालाहीआ। आत्म परमात्म इक्को गीत, गुर रागी राग अलाईआ। मेरी काया होई सीत, कलिजुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। मेरी लग्गे इक प्रीत, दोए जोड़ मंगे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा इक वखाईआ। भगत दुआरे गई आ, बण पांधी पन्ध मकाया। दया निमाणी रही कुरला, कूक कूक सुणाया। गल पल्लू मूँह विच पा, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाया। दर चरण डिगा आ, आपणा आप भुलाया। मैनूं सच्चे सतिगुरू पाया राह, जन भगतां मेल मिलाया। गुरमुख पकड़ो मेरी बांह, कलिजुग वेला अन्तिम आया। कोई करे ना अग्गों ना, दोए जोड़ वास्ता इक सुणाया। नरायण सिँघ कह दे हां विच हां, हरि जू आपणा खेल रचाया। जिस दी नानक गोबिन्द पकड़ी बांह, सो आपणी बांह गुरमुखां हथ्थ फड़ाया। जिस दा दर्शन कर कर चढ़े चा, सो दर्शन कर कर आपणा रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी बण विचोला करे खेल बेपरवाह, दो जहानां फेरा पाया। आपणी दया गुरमुखां नाल दए प्रना, लाड़ी लाड़ा एका घर वसाया। आत्म सेजा दए सुहा, पलँघ रंगीला इक विछाया। धुन अनादी नाद दए वजा, अनहद रागी राग सुणाया। निर्मल दीआ दीपक जोत लए जगा, अन्ध अन्धेर मिटाया। अमृत झिरना दए झिरा, सच सरोवर इक वखाया। जोत अकालण बणे सच्ची माँ, घर साचा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया निमाणी गुरमुख हाणी, गुर सतिगुर मेल मिलाया। मिल्या मेल घर सोभावन्त, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। नारी मिल्या इक्को कन्त, दूजा संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल गंढु पुआईआ। दया कहे मेरा भगत सुआमी, हरि सुआमी मेल मिलाया। अमृत देवे ठंडा पाणी, तृष्ना जगत बुझाया। बिरहों मारे तीर कानी, अणयाला तीर चलाया। नाता तुटा चार खाणी, खाना इक्को इक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयाल आपणा रंग रंगाया। दया कहे मैं होई सुहागण, घर घर वज्जे वधाईआ। चार जुग दी जगत वैरागण, आपणा वक्त गई मुकाईआ। गृह मन्दिर मिल्या सच्चा साजण, फड़ बाहों गले लगाईआ। हरि जू रचया आपणा काजन, करता आपे खेल कराईआ। सो मेरे पिच्छे देवे दाजन, हरि मुहब्बत झोली पाईआ। ग़रीब निमाणी होई वडभागन, दर मिल्या इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१८६
१३

आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। माही मिल्या इक्को ख़ावंद, मीआं बीवी खुशी जणाइंदा। लेखा चुक्कया गावण बत्ती दन्द, दन्द ददासा ना कोई रखाइंदा। सति सतिवादी चढ़या चन्द, दूज तीज नज़र ना कोई उठाइंदा। मैं निमाणी मिटया रंज, सुख सुख नाल प्रनाइंदा। जुग चौकड़ी मिटया पन्ध, घर साचा इक वखाइंदा। दयाल स्वामी सदा बख़्शंद, बखशिश आपणी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। दया कहे मेरा ठाडां सीना, हरि सतिगुर आप कराया। बिन जल तड़फदी रही जग मीना, सातक सति ना कोई कराया। मिल्या वर हरिसंगत मग्घर महीना, भगत दुआर वज्जी वधाईआ। साहिब दयाल वड प्रबीना, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा रिहा जणाईआ। पिछला लेखा वीह सौ दस, दस बिक्रमी आप जणाइंदा। हरि जू हरि खेल कीता हस्स हस्स, आपणा राह चलाइंदा। हरिसंगत हरि मार्ग दस्स, साची सेवा सेव लगाइंदा। दूर दुराडा आए नस्स, लोकमात खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाइंदा। वीह सौ दस खेल अपारा, पन्द्रां मग्घर आप कराईआ। दूर दुराडा हरि निरँकारा, नेरन नेरा नज़री आईआ। गुरसिख वेखे इक दुलारा, छोटा बाला बाल उठाईआ। मनजीता जितया संसारा, जीवण जुगत दए जणाईआ। पन्द्रां मग्घर आपणी सहेली सख़ीआँ मंगलचारा, हरि गीत गोबिन्द अलाईआ। सिँघ पाल दित्ता नज़ारा, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। रविदास बणाया आप लिखारा, लेखा लेखे लिख्या पाईआ। रैण सबाई कर विहारा, बिवहारा आप जणाईआ। नौ साल सुत्ता रिहा गूढ़ी नींद विच खुमारा, खुद आपणा खेल वखाईआ। जिस वस्त नूं लभ्भदे गए गुर अवतारा, पीर पैगम्बर झोली डाहीआ। सो देवण आया वड संसारा, महासार्थी फेरा पाईआ। इक्को दित्ता हरि भण्डारा, आदि जुगादि रिहा वरताईआ। सोलां मग्घर करे सच विहारा, सिँघ मनजीता राह तकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल देवे दान, दया दरस दया दासी दया भासी दया निशानी, बिन फासिउँ फास कटाईआ।

श्री भगवान करो काबू, कबज़ा हरि जी रिहा जणाईआ। चार जुग गुर अवतारां टिकटां देंदा रिहा बण के बाबू, बाबल आपणा भेव ना किसे जणाईआ। कोटन कोटि जिस रुलाए सन्त साधू, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भुआईआ। साडे पिच्छे गोबिन्द वाइदा कर के गया नाल दादू, सो दर्दी नज़र किते ना आईआ। कलिजुग अन्तिम सचखण्ड विच्चों बण के आया वाधू, आपणा हिस्सा आप वरताईआ। जिस ने खपाए कृष्न कुल यादव यादू, नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं कहिन्दे

मोहण माधव माधू, सो मधुर धुन सुणाईआ। उस दे पकड़ो सारे बाज़ू, बल आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। कर काबू लओ दब्ब, हरि जू हरिजन आप सुणाइंदा। पिछला अगला लेखा मंगो सब, बिन लेखा दित्यां नठ्ठ किते ना जाइंदा। सारे कहो असीं करन नहीं जाणा किते हज्ज, मक्का काअबा नज़र कोई ना आइंदा। तेरी प्रेम सतार साडे अन्दर जाए वज्ज, राग नाद कम्म किसे ना आइंदा। साडी पार करदे हद्द, जिस दुआरे लोकमात कोई ना जाइंदा। साडा पर्दा लैणा कज्ज, ढाकन को पत तूं अख्वाइंदा। लौण नहीं देणा अज्ज पज, वल छल धारी तेरा छल गुरसिखां मूल नहीं भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाइंदा। आया कबज़े करो कबज़ा, मुर्शद कामल रिहा जणाईआ। चौदां लोक चौदां तबक बाग बगीचा रहे ना सबज़ा, हरी ओम हरी रंग हरा रंग रिहा उडाईआ। भगत भगवान इक्को बख़्शा, बख़्शीश आपणी रिहा समझाईआ। रूप रंग ना कोई शख़सा, शख़्सीयत इक्को इक वड्याईआ। जगत वणजारे किसे ना परखा, पारखू नज़र कोए ना आईआ। अग्गे जा के फेर कोई ना परता, प्रतीनिध ना कोई अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा लेखा लिख के गए वरका, वरका वरका धुर संदेसा मात सुणाईआ। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तिम आपणा आप कराए खड़का, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। गुरमुख उठे सच्चा तगढ़ा, फड़ बाहों लए बिठाईआ। पारब्रह्म जे अग्गों अकड़ा, हरिसंगत नाल मिलाईआ। सारयां मिल के प्रेम नाल जकड़ा, हथ्थकड़ी इक्को हथ्थ वखाईआ। चार जुग तूं बैठा रिहों वक्खरा, हथ्थ किसे ना आईआ। हुण तेरा चलण नहीं देणा कोई नख़रा, हरिजन साचे रिहा जणाईआ। ना कोई अशारीआ ना कोई कसरा, ज़ीरो सिफ़र ना कोई जणाईआ। जुग चौकड़ी बणया रहिउँ मसख़रा, लख चुरासी ठग्ग ठग्ग, आपणा खेल जणाईआ। किसे तों भेंट चढ़ाया बक्करा, किसे तों गऊ दी खल्ल्ह लुहाईआ। किसे तों ज़बह कराया छत्रा, छुरी करद हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम सारयां कोलों मुकरा, पल्लू हथ्थ ना किसे जणाईआ। आदि जुगादि बणया रहिउँ नाशुकरा, शुकर कर ना ख़ुशी मनाईआ। कलिजुग अन्तिम पिता घेरे अइउँ पुत्तरां, पिता पूत पई लड़ाईआ। गोबिन्द कह के गया हाल सुणाए मित्रां, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। हुण नहीं लड़ाना बाज़ां तितरां, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जिस दा खाणी बाणी वेद पुराण करदे रहे ज़िकरा, सो ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। पीर पैगम्बरां जिस दा गाया फिकरा, सो फाके कट कट घर गुरमुखां डेरा लाईआ। जिस नूं कहिन्दे बेनज़ीर निक्का निक्का निकड़ा, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल खेल विच वखाईआ। सच मुरारी गोबिन्द राम, रमईआ आपणा खेल कराईआ। साचा सईंआ दो जहान शाह पातशाह फेरा

पाईआ। पूरन रचया पूरन काम, सतिगुर पूरा आप कराईआ। हरि भगत खेड़ा वेख ग्राम, वड ग्रामी दया कमाईआ। मधुर प्याला सोहँ जाम रस, अंमिउँ रस आप चुआईआ। जोत निराली निरगुण भान, चरणोदक मुख चुआईआ। आत्म हरि बोध पंडत ज्ञान, नमो सति दृढ़ाईआ। वस्त अमोलक अगम्मी दान, अलख अगोचर झोली पाईआ। सच संदेसा शब्द ज़बान, श्री भगवान आप सुणाईआ। आत्म परमात्म परम पुरख परखोतम देवे माण, अभिमाण कोए रहिण ना पाईआ। चतुर सुघड़ सुजान सज्जण गुरमुख वेखे बाल अंञाण, बाली बुध दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द फेरा पाईआ। हरि गोबिन्द मीता रमईआ नाउँ, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। पकड़नहारा निरगुण सरगुण बाहों, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणी खेल जणाईआ। सदा मिलण दा रखे चाउ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। रहबर बण करे न्याउँ, सरगुण निरगुण भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द राम मिले वड्याईआ। राम रमईआ इक इकल्ला एक अक्ल कला अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर लख चुरासी रिहा वेख, घट घट आपणी कार कराइंदा। अजूनी रहित अनभव रुशना धर धर भेख, अबचल आपणा डेरा लाइंदा। सति सतिवादी आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुर दी वादी गुरमुखां करे हेत, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम रमईआ आप चलाए साची नईआ, गोबिन्द बेड़ा हथ्थ वखाइंदा। गोबिन्द बेड़ा बन्न्हे राम, रमक रमक आपणी धार जणाइंदा। लेखा जाणे काहन घनईआ कृष्ना शाम, बंसरी इक्को नाम सुणाइंदा। सीता सुरती प्राणायाम, परम परमात्म वेख वखाइंदा। राधा तुरत देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। अन्दर बाहर खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द रंग गोबिन्द राम, राम गोबिन्द गोबिन्द राम राम गोबिन्द समाईआ। लेखा जाणे अमृत धार सागर सिन्ध, गहर गम्भीर गुणी गहीर वड्डी वड्याईआ। भेव चुकाए सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा लेख चुकाईआ। भगत भगवान बणाए बणाए हरिजन बिंद, सति असति दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द रमईआ राम राम गोबिन्द विच समाईआ। राम गोबिन्द इक्को रंग, दूजा रंग ना कोई वटाइंदा। गोबिन्द राम इक्को संग, सगला संग निभाइंदा। राम गोबिन्द इक अनन्द, जन भगतां आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि जू खोल्हे अन्तर आत्म आपे बोले, लहिणा जाणे हौले हौले, पर्दा उहला आप उठाईआ। सुरती शब्दी आपे मौले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम गोबिन्द गोबिन्द राम अमृत प्याए साचा जाम, रस इक्को इक वखाईआ। इक्को रस इक्को रसाइण, रस आपणा आप जणाइंदा। इक्को राम इक्को

काहन, इक्को कर कर हुक्म वरताइंदा। इक्को कृष्न इक्को नैण, कँवल नैण इक अख्वाइंदा। इक्को गोबिन्द इक्को सैण, साजण इक्को इक जणाइंदा। इक्को अन्तिम आए लैण, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राम गोबिन्द कराए पहचान, बेपहचान आपणी नाल मिलाइंदा।

❇ १५ मग्घर २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ❇

पिच्छों हरि जी आया अग्गे, अगली खेल कराईआ। ग़रीब निमाणे लग्गे चंगे, गुरमुख रूप वखाईआ। नाम रंगन इक्को रंगे, बण ललारी रंग रंगाईआ। फड़ फड़ बाहों चुक्के कंधे, हरि काहनी बेपरवाहीआ। दो जहानां छड्डे धंदे, गुरमुखां सेव कमाईआ। लख चुरासी जीव अन्धे, अन्ध अन्धेर वखाईआ। भगत जनां हरि हरि बख्शंदे, बखशिश आपणी रिहा वरताईआ। वेखो वेला आया कन्ढे, कन्ढी वाला आया सच्चा माहीआ। ढोले गाओ साचे छन्दे, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। बिन बंदगीयों बणो साचे बंदे, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। जन्म जन्म जन्म दी टुट्टी गंढे, गंढु चौथे जुग पुआईआ। लग्गी प्रीती अन्तिम हंढे, मिले माण वड्याईआ। जिस नूं गोबिन्द कह के गया तिक्खी धार खण्डे, सो गुरमुखां रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिच्छा दूर अग्गा नेड़े रिहा वखाईआ। पिच्छों नेड़े गया आ, आ आ आपणा खेल कराइंदा। परवरदिगार बेपरवाह परवाह आपणी आप रखाइंदा। जन भगतां बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा इक उठाइंदा। नाम नईआ चपू ला, साचा सईआ सेव कमाइंदा। फड़ फड़ बहींआ गले लगा, दर घर साचा इक वखाइंदा। जोती जलवा कर रुशना, शब्दी शब्द नाद सुणाइंदा। ग़रीब निमाणे सुघड़ स्याणे लए जगा, सुख आत्म इक वखाइंदा। राजे राणे देवे ढाह, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। फिरनहार जल अस्गाह, थल आपणे चरण दबाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूर दुराडा नेड़े हो के मिल्या आ, मिल मिल आपणा राह वखाइंदा। सेज सुहञ्जणी सोहे फूल, हरि छहबर इक लगाईआ। चरण छुहाए कन्त कन्तूहल, बेअन्त बेपरवाहीआ। भाग लगाए गुरमुख कुल, कुलवन्ता दया कमाईआ। हरिजन ना जाए मात रुल, कीमत हरि जू आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेज सुहञ्जणी जोत निरँजणी नूरो नूर करे रुशनाईआ। सेज सुहञ्जणी चिटी चादर, हरि फूलण रंग वटाईआ। जिस दे पिच्छे सीस दित्ता तेग बहादर, सो तेरा नाम लै के आईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दुखियां भुखीआं देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेज सुहाईआ। साची सेज उपर धवल, धरनी दए माण वड्याईआ।

उपर वेख गुरमुख फुल कँवल, कँवल नैण खुशी मनाईआ। जिस नूं कहिन्दे नूर इलाही अव्वल, सो आलमीन फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेजे वेखे चाईं चाईंआ। साची सेज रही हस्स, बिन दन्दां खुशी मनाईआ। मेहर नज़र मेघ गया वस, गुरमुख बस्ती इक फिराईआ। पुरख अबिनाशी आया नस्स, दूर दुराडा धुरदरगाहीआ। दर आयां सब दी पूरी करे आस, आसा आपणे घरों वरताईआ। गुरमुख अन्त ना होए बेआस, अमृत इक्को जाम प्याईआ। चार जुग गुर अवतार बणाउदा रिहा आपणी शाख़, सेवा वक्खो वक्ख समझाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो जुगादि खेल कराईआ। जन भगतां देवे दाद, दादू देहरा लहिणा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूलण सेज रखे याद, जिस प्रभ मिलण दी आस रखाईआ। मैं निमाणा बाबा आदम, दर तेरे गया आईआ। नाल माई हव्वा बणी ख़ादम, ख़ुदी माण गंवाईआ। राग सुणया तेरा कन्न, कन्न अवाज़ अलाहीआ। दूर दुराडे आए चल, बण के पांधी राहीआ। मेहरवान मेहरवान निगह कर साडे वल, वल छल ना कोई रखाईआ। असीं फिर फिर थक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ थल, डूँघे सागर फेरा पाईआ। किसे दवारयों स्वाल ना होया हल्ल, हल्का भार ना कोई कराईआ। चौदां तबक ना मिटया सल, अग्नी अग्ग ना कोई बुझाईआ। आबे हयात ना मिल्या जल, सीर नीर ना कोई प्याईआ।

१६१ १३

नव नौ लहिणी खल्ल्, ख़लक दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर तेरे वड वड्याईआ। फर्श उत्ते वसें कि अर्श, अरूज तेरा नज़र ना आइंदा। मेहरवान कर तरस, महिबूब तेरा राह आदि तकाइंदा। अन्तिम कर के आया आपणा हरज़, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। अञ्जील कुरानां चलाई तर्ज़, तार सतार ना कोई हलाइंदा। पीर पीरां तेरी गर्ज़, गरज़ के तेरी ओट तकाइंदा। घर घर फिरन दी छड्डी मर्ज़, मुर्दा तेरे दर सीस झुकाइंदा। दोए जोड़ करां अर्ज़, आरज़ू आपणी इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे फेरा पाइंदा। अर्श उत्ते तेरा अरूज, बेऐब तेरी रुशनाईआ। नूर नुराना इक महिबूब, वजूद नज़र कोए ना आईआ। तेरा मिल्या ना कोई सबूत, सूरत सच ना कोई वखाईआ। मैं मंगां असल नाल सूद, तेरा लेखा दए मुकाईआ। तेरा चुक्कया हज़ारा दरूद, इलम आलम ना कोई पढ़ाईआ। इक तेरी इक्को दरगाह कूक, तेरी बांग सदा अलाईआ। मेरी अन्तिम चुके चूक, चौकन्ना हो रिहा ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ाली झोली दे भराईआ। आदम कहे मैं आया आदम, अदना हो के सीस झुकाइंदा। दे जलवा इक बातन, बालम तेरी आस तकाइंदा। कलिजुग वेखो अन्धेरी रातन, चौदस चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। नाल आई मेरी साथन, फड़ बाहों आप वखाइंदा। दोए होए नाथ

अनाथन, नाथी नाथ सेव कमाइंदा। घर घर मिल्या साचा साथन, संगी संग ना कोई वखाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा राखण, राखी तेरे हथ्थ वखाइंदा। दे सुनेहड़ा साचा पातन, पाती इक्को मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस लगाइंदा। आस दर परवरदिगार, इक्को इक रखाईआ। वेख निमाणी बुढी नार, बुढेपा रही जणाईआ। जनेपा करया सर्ब संसार, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। पुत्तर धी गए वसार, साचा संग ना कोई रखाईआ । नबी रसूल दे के गए लार, अलामत इक्को इक लगाईआ। कलमा पढ़ पढ़ कट के गए वगार, सरगुण तन मात हंढ्ढाईआ। उच्ची कूक करदे गए पुकार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। अन्तिम आवे सांझा यार, यारी सब दे नाल लगाईआ। तक्कदे रहे राह दोवे कन्त भतार, नारी नर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। बुढी माए गाए ढोला, इक्को इक जणाईआ। मैथों पाया ना जाए रौला, बलहीण दए दुहाईआ। क्यों कर के बैठा उहला, मुख आत्म पर्दा पाईआ। तुध बिन ना कोई विचोला, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। मैं सुण के आई दर दरवाजा खोल्हा, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। मेरा बुढेपा मैनूं देवे झकोला, कदम कदम नाल ठुकराईआ। मेरा वेख पहला जोबन जिस वेले पाई विच डोला, नार सुहागण रूप वटाईआ। परवरदिगार कीता कौला, कौल इक्को इक जणाईआ। अन्तिम आवे आप मौला, मौलवी रूप ना कोई दसाईआ। रंग ना जाणे कोई गोरा सौला, साहिब सच्चा बेपरवाहीआ। हौला करे भार धौला, धरनी आपणी दया कमाईआ। बल रखे आपणे डौला, जवान मर्द वड वड्याईआ। दो जहान वखाए आपणा पौला, कोई ताब ना झल्ले राईआ। शहिनशाह शाह मेरा दूल्हा, दौलत हथ्थ ना किसे वखाईआ। तेरे अग्गे पर्दा फोला, नेत्र नैण नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बुढ्ढी नढ्ढी वेख वखाईआ। माई हवा होई बुढ्ढी, अन्त बुड़ेपा आया। कलिजुग अन्तिम पाए लुड्डी, चारों कुण्ट खेल वखाया। आदम रही कोई ना सुधी, सुध बुध ना कोई जणाया। इक्को रमज़ तेरी सुझी, रहमान फेरा पाया। मैनूं भेव दस्स गुझी, किस बिध आपणा राह चलाया। हथ्थ डंगोरी फड़ के भज्जी, बलहीण दया कमाया। हथ्थ विच ख़ाली लै के आई कुजी, जिस विच दो जहान बंद कराया। जिथ्थे पीर पैगम्बरां गुर अवतारां दी बंद कीती रुची, हौका कोई लैण ना पाया। विच वस्त रखी इक्को सुची, वस्त आपणा नाम वडयाया। मैनूं अन्तिम सारे कहिन्दे लुच्ची, मेरा माण ना कोई रखाया। मैं दर दर फिरदी कुत्ती, वांग कूकरां फेरा पाया। बौहड़ी मेरे खुदा मैं गई लुट्टी, सिर हथ्थ ना कोई टिकाया। गाना रिहा ना मेरी गुट्टी, मैहन्दी रंग ना कोई जणाया। मैं हुण रहिवां क्यों छुपी, मुग्ध मूर्ख क्यों क्यों जाया। मेरी जान निमाणी दी क्यों ना छुट्टी,

तेरे दर उत्ते वास्ता पाया। पुरख अबिनाशी हस्स हस्स कहे हुण वेख आपणी रुत्ती, हरि जू की की खेल रचाया। उम्मत कोलों फिर जा के पुच्छीं, आप आपणा पन्ध मुकाया। जिस चढ़ाई अन्तिम असमाना गुड्डी, सो ख़ाक रिहा मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा रचाया। आदम आया बाहर भाजा, बाबल रिहा जणाईआ। चौदां लोक मारदा रिहों वाजा, आपणा हुक्म मनाईआ। खेल खेलदा रिहों मक्का काअबा, हुजरा हक़ जणाईआ। अन्तिम तेरी कोई ना रखे लाजा, सारे गए पल्लू छुडाईआ। हुण क्यों आया दर भाजा, नंगी पैरीं फेरा पाईआ। किथे गया तेरा उम्मती राजा, उमर आरजू जिस हंढाईआ। उठ उठ मार नबी नूं वाजां, नायर इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। बुढ्ढा कहे मेरा गया बल, बल नज़र कोई ना आईआ। थक्क थक्क मैं आया चल, आपणा पन्ध मुकाईआ। पिच्छे मोड़ मूल ना घल्ल, राह नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, तेरे चरण सीस झुकाईआ। आदम हव्वा करे पुकार, दोए जोड़ सरनाया। खेले खेल अपर अपार, जीव जंत जग जाया। अन्तिम ख़ाली दिसे पासा हार, जित रूप ना कोई वटाया। असीं सुणयां विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, सोया कोई रहिण ना पाया। गुर अवतार कीते कंगाल, पीर पैगम्बर दर वखाया।

दो जहान होए बेहाल, बेहबल चौदां तबक कुरलाया। मैं सब दा वेख्या हाल, खाली हथ्थ रहे वखाया। असीं बुढ्ढे अन्त कंगाल, साचा संग ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। तख्त उत्ते लाया आसण, आसण उत्ते अबिनाशी डेरा लाईआ। खेलणहारा खेल पृथ्मी अकाशन, अकाश अकाशां उत्ते समाईआ। आदि जुगादी खेल तमाशन, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। आदम हव्वा दासी दासन, सेवक सच जणाईआ। जे कटौणी अन्त फासण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सुणो हुक्म सच दलील, तामील आप कराइंदा। हरि भगत बणौंणा इक वकील, अदालत हक़ इक समझाइंदा। जिस वस्त्र पहरे नील, सो ताज सीस टिकाइंदा। दर दवारा करो अपील, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त दुआर इक जणाइंदा। सन्त दुआर वसे करतार, परवरदिगार दया कमाईआ। आदम हव्वा लहिणा देणा दए कर्ज़ उतार, पिछली बाकी झोली पाईआ। अग्गे करे सच विहार, हरि साहिब सच्चा माहीआ। भगत दुआरा भगवन्त दुआर, श्री भगवान आप सुणाईआ। सच दिहाढ़े चल आ करो निमस्कार, वेला वक्त आप जणाईआ। छब्बी पोह खेल अपार, हरि ख़ालक आप कराईआ। आदम हव्वा वेखे दोवें कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर,

महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचा देवे इक्को सद्दा, आदि उपाया अन्तिम बद्धा, आप वसे बाहर दवारी हद्दा, हद्द आपणी सब नूं रिहा वखाईआ। ना वलदीअत ना कोई वली, वली ऐहिद ना कोई जणाईआ। आदि जुगादि बणदा रिहा छली, वल छल सब नूं रिहा पाईआ। किसे नूं कहे तूं नार सवाणी सुलखणी सचखण्ड दी कली, किसे नूं गुलशन रूप वखाईआ। अन्तिम फड़ के सारे पैरां हेठां देवे मली, रगढ़ रगढ़ नाल बदलाईआ। जुगाद इक्को जोत बली, जुग जुग नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। आपे फुल्ल आप फली, आपे पतझड़ वेख वखाईआ। आपे होका देवे गलीओ गली, दो जहान गली आप बणाईआ। आपे होए भलीओ भली, भाल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की दस्से खेल् झल्ली, जिस दा कोई भेव ना पावे राईआ। किसे दस्से मैं हां की, की खेल कराइंदा। किथे रखणी आपणी नींह, खेड़ा किथे वसाइंदा। किथे बीज्या आपणा बी, फुल्ल फुलवाड़ी किथे लाइंदा। ना जीवण ना जी, ना जुगत कोई बणाइंदा। ना धरनी ना सीं, वंडण वंड ना कोई वखाइंदा। ना बक्करी ना शीह, ना भउ भ्यानक आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। की दस्से मैं हां केहड़ा, की की करे पढ़ाईआ। किडा वड्डा मेरा वेहड़ा, जिस घर आपणा चरण टिकाईआ। किड्डा सोहणा लग्गे खेड़ा, जिस गृह आपणी जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना वड्डा ना छोटा ना पतला ना मोटा ना खरा ना खोटा, खोटा खरा आप कराईआ। अग्गे हल्ल की दस्सणा बहुता, पढ़ियां भेव कोई ना पाईआ। आपे जोती आपे जोता, आपे जोतरा लाए वाहो दाहीआ। आपे हाली आपे पंजाली आपे जेवड़ा फड़े सोटा, आपे दो जहान हक़े वाहो दाहीआ। आपे कसे जट्ट बण लंगोटा, अन्तिम कलिजुग सिरों फड़या झूठा, मार ठुड्डे रिहा हिलाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखे फोका, वेद पुराण शास्त्र सिमरत जगत ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बाहरों देंदी रही होका, अन्दर वड़ ना कोई जगाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा चारों कुण्ट प्या सोका, पीर पैगम्बर दे गए धोखा, धूआं घर घर गए तपाईआ। अन्त हार के कह के गए परवरदिगार वेखे आण के मौका, हाज़र हज़ूर सच्चा माहीआ। बिन भगतां किसे काया मन्दिर अन्दर साफ़ ना कीता चौंका, जगत सवाणी सुचज्जी नज़र कोई ना आईआ। गुरसिख तेरा प्रेम पटना पौंटा, गोबिन्द गया ना कदे औंता, गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ। फड़ बाहों फड़ाया पौंचा, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। कलिजुग चारों कुण्ट भौंका, रौला पाए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप मुकाईआ। मेहर हज़ूर दी बड़ी तिक्खी, चीर चीर पवाईआ। जिस दी धार गोबिन्द लिखी, लिख लिख लिखी कलम शाहीआ। बिन पुरख अकाल साची ना कोए बणाए सिक्खी, सिख्या सच

ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि तरसन मुनी रिख़ी, मुन सुन ध्यान लगाईआ। घर जा के प्रभ किसे ना पाई भिखी, दरस कर तरस ना कोए वखाईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगत दुआरे करे खेल अनडिठी, अनडिठड़ी कार कमाईआ। धुरदरगाही बण हल्कारा, लै के आया चिठी, डाकीआ घर घर डाक पुचाईआ। आपणी हथ्थीं प्रभ साचे लिखी, लिखणहारा होर ना कोए जणाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढे पिच्छे घर आए खावण रुक्खी मिसी, टुक्कर हथ्थां उत्ते रखाईआ। ना कोई वार ना कोई थिती, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। आपणी धार रखे निक्की, निक्का वड्डा सच्चा माहीआ। जाणे खेल जीव जीअ की, सिर सिर रिज़क सबाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे खेल ख़ालक ख़लक महान, आदम हव्वा अन्दर हद्द, हुक्मे सद्द बहाईआ। दूर दुराडी आई सद्दी, सद्दा हरि जणाया। हथ्थ विच रोटी दिसे अद्धी, पाणी छन्ना ना कोए फड़ाया। रोवे कुरलावे बौहड़ी मैं अग्गों पिच्छों कढ्ढी, मेरा होए ना कोए सहाया। मैं दुनियां सारी छड्डी, छडया मुल्क पराया। लोकमात फेर ना चढ़ां गड्डी, सफ़री सफ़र ना कोए वखाया। मेरा पिछला लेखा सुट विच रद्दी, आपणी हथ्थीं दे पड़ाया। पुरख अबिनाशी दयावान बणा आपणी बाली नढ्ढी, पुत्तरी पुत्तरां नाल मिलाया। चरण प्रीती तेरे लग्गी, लग्गी तोड़ निभाया। मेरा पर्दा अन्तिम कज्जीं, तूं कज्जणहार अख्वाया। वेखीं लड़ छोड़ ना भज्जीं, भज्जयां हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप रचाया। सारे रल के करो जासूसी, हरि जू की की रिहा लुकाईआ। साडे कोलों करे कंजूसी, वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। अन्तिम साडा हक़ मौरूसी, मुफ्त विच लुट्टणी, ना लग्गे पैसा धेला राईआ। असीं वेंहदे आप पहने तन सूसी, अल्फ़ी चोले रिहा हंढ्ढाईआ। दिन रात लिखदे दर घर बण के मुणशी, चोरी चोरी ध्यान लगाईआ। जिस वेले प्रभ मातलोक दी बदले कुरसी, अर्श कुर्श वेख वखाईआ। ओसे वेले करांगे फुरती, जाच बाहमण रिहा सिखाईआ। ज़रीदार पावांगे कुड़ती, कुड़ीआं मुंडयां रंग चढ़ाईआ। सवरन कटोरे विच दयांगे गुड़ती, रस उंगलां नाल मुख लगाईआ। फिर बदले ना साडी सुरती, शब्द शब्द वज्जे वधाईआ। नज़र आए अकाल मूर्ती, निरगुण बैठा आसण लाईआ। अग्गों आकड़ के लँघांगे मूहर दी, बण बच्चे नठ्ठांगे वाहो दाहीआ। दो जहान कहिणगे वेखो कुल सूरबीर दी, बल आपणा रहे वखाईआ। वाट रहे ना नेड़ दूर दी, घर घर विच वज्जे वधाईआ। रीती चुक्के चम्यार चूहड़ दी, चम्यार सब दा लेखा मुकाईआ। तृष्ना मुक्के बहिश्ती हूर दी, हूरां गुरमुखां दयां चरणां हेठ दबाईआ। इक्को गल सच शऊर दी, शहिनशाह करे पढ़ाईआ। मिलणी होए हक़ महिबूब दी, मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। हुंडी चुकाए असल सूद दी, हुंडीआं वाले चरण लगाईआ। खेल कराए सच हदूद दी, हदूद वंडे थाउँ थाईंआ। सृष्टी रचना

नेसतो नाबूद दी, निशान कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिक्खी उछलदी टप्पदी कुद्दी, कुद्द कुद्द खुशी मनाईआ। जो अन्तिम कलिजुग बुझदी, प्रभ चरणां नाल लुझदी, रुची इक्को ध्यान लगाईआ। अग्गे गल्ल सारी मुक्कदी, जिस नूं घर आ के मिल जाए सच्चा माहीआ। सृष्टी उहदे चरणां उत्ते झुकदी, जिउँ पूरन विच परमेश्वर बैठा आसण लाईआ। हुण गल्ल नहीं रहि गई लुकदी, उच्ची कूको दयो दुहाईआ। गुरसिख वेल कदे ना सुक्कदी, गोबिन्द बूटा गया लाईआ। माई हव्वा आ आ सिखां कोलों पुछदी, मेरा दस्सो सच्चा माहीआ। औह वेखो तुहाढ्ढे पिच्छे लुकदी, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। हथ्थ जोड़ गोडयां ताईं झुकदी, कलमा कलाम रही गाईआ। मेरी ज़बान कहिणों सुक्कदी, मेहरवान तेरी वड्याईआ। कदे बहिंदी कदे उठदी, हथ्थ अगांह अगांह वधाईआ। ख़ैर मंगे आपणी कुक्ख दी, जिस कुख्ख विच्चों भगतां ल्या जाईआ। माँ पुत्तरां कोलों पुछदी, सच दस्सो तुहाढ्ढा पिता तुहानूं मिल्या चाईं चाईंआ। जे मिल्या उहदे वल नट्ठो, फड़ लओ जा के बाहींआ। मेरा हाल तुसीं दस्सो, मोहे कमली लए गल लाईआ। फेर प्रभ चरणां विच वसो, वस्ती बस्ती बादे सहर सुणो बांग इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि कहाणी आप जणाईआ। तेरी कहाणी प्रभ अजीब, सुण सुण होए हैरान। दूर दुराडा आया नज़ीक, होया बेपहिचाण। कलमा बण लाशरीक, कलम नाल चाढ़े तूफ़ान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुदा ना होए कदे जज़बात, जज़ब आपणे विच कराईआ। कहिण सुणन दी पिच्छे रहि गई बात, हुण करनी कर वखाईआ। साहिब देवणहार निज़ात, निछावर आपणा आप कराईआ। कर के घाउ लाया घात, गहरा गवरा आप वखाईआ। जिस चरण बंधाया नात, बन्धन आपणा आप पाईआ। हरिसंगत बणाई जमात, सोहँ पट्टी आप पढ़ाईआ। दिवस रैण देवे साथ, साचा संग रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण पातशाह शहिनशाह सचखण्ड रखे निवास, सचखण्ड निवासी कहे मैं भगतां सेव कमाईआ। कर दीदार हउँ होए निरास, गुरमुख ईद चन्द वखाईआ। प्रभ नूं होर कम्म केहड़ा ख़ास, जिस विच बैठा ध्यान लगाईआ। सिरफ़ इक्को गुरमुख मिलण दी रखे आस, जुग जुग आसा आप वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ चल के आया तुहाढ्ढे पास, आपणा पन्ध मुकाईआ। हुण तुसां देणा साथ, तुहाढ्ढे पिच्छे बणे राही आ। करे खेल अलखना लाख, लेखा लिख्त ना लख्या जाईआ। भेव दस्से विच हास बलास, अन्दर वड़ कन्नां विच ना किछ सुणाईआ। जो कुछ रख्या आपणे पास, सो गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख ना होए वफ़ात, कफ़न दफ़न दफ़ा विच ना किसे लिखाईआ। जमा तफ़रीक वेखे तक्सीम, ज़रब आपणे नाल दिवाईआ। अल्फ़ ये नून नुक्ता मीम, मिसल

हरि जू रिहा बणाईआ। से स्वाद वेखे सीन, सीना चाक आप कराईआ। ज़े ये देवे यकीन, याददाशत इक बणाईआ। तोएं ते करे तलकीन, हे हे हुक्म आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चार चार वड्याईआ। ज़रब कहे मैं कीता सबर, सबर प्याला पीता। गुरमुखां मिल्या शेर बबर, गुरमुख आपणे जिहा कीता। हरिसंगत बणाया टब्बर, पुत्तर धीआं बणया मीता। घर वखाया उत्ते अम्बर, नाता तोड़ मन्दिर मसीता, साचा रच इक सुअम्बर, करया खेल मात अनडीठा। सच स्वामी हरि भरतम्बर, प्रभ बणया इक्को मीता, कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, हरिजन करे ठांडा सीता, जिस दी सिफ्त करदे पीर पैगम्बर, सो भगतां सुणाए आपणा गीता। जिस नूं लभ्भदे डूँघी कन्दर, सो लहिणा चुकाए हस्त कीटा। आओ लँघ के वेखो गुरसिख अन्दर, जिस घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बैठा ना मरया ना जीता। मरे जीए ना खाए कुछ, ख़ालक ख़लक खेल कराईआ। गुरमुखां कोलों लओ पुछ, सच सच देण समझाईआ। ना रूह ना दिसे बुत्त, पंज तत्त ना कोए हंढ्डाईआ। ना धी ना कोई पुत्त, मात पित ना कोए बणाईआ । ग़रीब निमाणयां गोदी रिहा चुक्क, चुक्क चुक्क आपणी ख़ुशी वखाईआ। जुग चौकड़ी बैठा रिहा लुक, अन्तिम आपणा पड़दा लाहीआ। दर आयां अमृत देवे घुट्ट, अमिउँ रस मेघ आप बरसाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां उत्ते होया मोहत, मुनी ऋषी हथ्थ किसे ना आईआ। सम्बल सुहाए साचा कोट, नगरी उजगरी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर वड़ वड़ डेरा लाईआ।

१९७
१३

परवरदिगार चढ़ के आया घोड़ा, दुलदुल अली ना कोए वड्याईआ। पीर पैगम्बर आ के लाहो पैरीं जोड़ा, सच आसण देणा विछाईआ । पुरख अबिनाशी लम्मां चौड़ा, चौदां लोक आसण लए लाईआ। ओहनूं हुक्का दयो चमोड़ा, सूटा खिच्चे वाहो दाहीआ। सूटा खिचिआ अन्दरों रस आया कौड़ा, सब नूं पुच्छे थाईं थाईंआ। क्यों प्रेम तमाकू पाया थोड़ा, सिंच हरी क्यारी ना कोए कराईआ। वेखो तुहाढ्ढी चिलम काया विच टुट्टा रोड़ा, मोरी बंद ना कोए कराईआ। तुहाढ्ढा नेचा ना दिसे कोरा, नड़ी हक़ ना विच फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को सूटा रिहा लगाईआ। सूटा लाए खिच्चे दो जहान, खिच आपणी इक वखाईआ। धूंआँधार करे ज़िमीं असमान, तारा चन्द मुख शरमाईआ। रहिण ना देवे कोई बेईमान, बेवा करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्का इक समझाईआ। मारे सूटा हुक्का करे गुड़गढ़ाहट, चौदां तबक पाणी खौलया। पीर पैगम्बरां पई घबराहट, की करया खेल मौला मौलया।

जिस दी दूर दुराडी सुणदे रहे संनसनाहट, सो आया उपर धौलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस पिछला पर्दा फोलया। फड़ चमोड़ा मारे फूक, आपणा खेल वखाईआ। पीर पैगम्बरां चौदां लोकां देवे फूक, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पंज तत्त ना दिसे भूतक भूत, भेव अभेद आप जणाईआ। रूह बुत्त ना रहे सबूत, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। आपणे चरणां नाल चौदां तबक दए कलबूत, अड़चन कोए रहिण ना पाईआ। खेले खेल वड महिबूब, मोह नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। चमोड़ा हुक्का पितल नड़ी, जुग दाता वेख वखाइंदा। सदी चौधवीं अन्तिम घड़ी, घड़याल आपणे नाम वजाइंदा। अल्ला राणी अन्तिम डरी, नेत्र नैण नैण शरमाइंदा। उम्मत मेरी मात हरी, हाज़र हो ना कोए बचाइंदा। कोई ना दिसे ख़ाना बरी, बरेआज़म सर्ब कुरलाइंदा। हरि जू हुक्म सुणाया आपणा खरी, ख़रीदो फ़रोख़त आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर बण गए शरई, शरीअत शरीअत नाल टकराइंदा। आप बैठा सच महिराबे विछा साची ज़री, सीन आपणा ना किसे दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां हुक्का इक वखाइंदा। पीर पैगम्बरो वेखो हुक्का, हरि हुजरे आप वखाईआ। जिस दा पाणी कदे ना मुक्का, आब हयात वंड वंडाईआ। जिस दे उत्ते देवे कोई ना तुक्का, मुख बंद
१६८ ना कोए कराईआ। जिस दा सूटा लैंदयां साह कदे ना सुक्का, सुक्के हरे दए कराईआ। जिस दे पीत्यां विंगा ना होए १६८
१३ मुखा, रसना धूंआँधार ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। १३
वेखो खेल आओ दुआर, धुर दरबारी आप जणाइंदा। पीओ सुलफ़ा एका वार, सूटा आपणे नाम लगाइंदा। उल्फ़त करो परवरदिगार, सुहबत सच सच जणाइंदा। आपणी उम्मत मारो मार, सुनत सब दी मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौदां तबक सच सिंघासण आप लगाए पुरख अबिनाशण, नील वस्त्र बसन बनवारी खेले खेल अगम्म अपारी, लेखा जाण अन्दर बाहरी, ज़ाहर ज़हूर रूप धराइंदा। ज़ाहर ज़हूर आया ज़ालम, ज़ुल्म सब दा वेख वखाईआ। आपणे हिस्से पहलों वंड के गया आपणा कालम, हद्द आपणी आप बंधाईआ। अन्तिम वेखे सारी आलम, उल्मा पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा रिहा जणाईआ। हुक्के नाल वेखी हुक्की, हुक्म आपणा आप जणाईआ। अल्ला राणी फिरदी चुक्की, चोटी सब दी आप मुंडाईआ। अन्त होई त्याई भुक्खी, तृष्ना अग्न ना कोए बुझाईआ। उम्मत उम्मतीआं नाल होई लुच्ची, आपणी पत ना कोए रखाईआ। दो कन्नां होई बुच्ची, बुचका सिर ते भार उठाईआ। मुल्लां शेखां मुर्शद नाल ना लग्गी रुची, मुरीद मुर्शद

ना कोए मिलाईआ। दाढ़ी मुन्नदे रहे फड़ के कूची, झूठा साबन नाल मिलाईआ। अन्दर वड़ के किसे ना दस्सी साची सूची, सूचना नाम ना कोए जणाईआ। प्रभ मिले ना ताअ दित्यां मुछीं, मुछां सब दीआं रिहा कटाईआ। आपणे गल विच पा के आया नाई गुच्छी, नाम उसतरा तिख़ा रिहा कराईआ। जेहड़ी चोटी परवरदिगार ना झुकी, सो सब दी दए मुंडाईआ। अल्ला राणी जे बणे नार फफ्फणे कुट्टी, कुट्ट कुट्ट बाहर दए कढ्ढाईआ। जिन्हां हुक्का पीता सूटी, तिन्हां दोज़ख़ अग्नी डाहीआ। बहिश्त लए ना कोए हूटी, सच नवाब ना कोए मिलाईआ। जिन्हां पीती भंग बूटी, बूटा तिन्हां रिहा उखड़ाईआ। हरि जू चली चाल कसूती, कसर छड्डे ना कोई राईआ। सब दी भंने फड़ के बूथी, घसुन्न मुक्क रिहा वखाईआ। काया मन्दिर फड़ के हथ्थीं पुटी चूथी, दर दरवाजा दए भंनाईआ। लेखा वेखे ईसा मूसी, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। परवरदिगार पहलों घल्ले करन जासूसी, लोकमात हुक्म सुणाईआ। आपणी असलीअत दस्स ख़ासूसी, ख़सलत सब दी वेख वखाईआ। अन्तिम घर घर होए मायूसी, हँस मुख ना कोए सालाहीआ। करे खेल चीनी रूसी, ची बर जबीं ना कोए वड्याईआ। अर्ज़ीं करे इक हदीसी, सीं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ वंडाईआ। ख़ाली करे सब दी ख़ीसी, खहि खहि मारे लोकाईआ। नाम आपणे मारे इक्को सीटी, गुरमुखां लए जगाईआ। निरगुण बण के आया टीटी, टिकटां सब दे हथ्थ फड़ाईआ। टोपी अन्दर निक्की गीटी, चिलम कोल्यां नाल भराईआ। आपे वेखे पिछली बीती, अगली आपणे हथ्थ रखाईआ। नेड़े आई सदी बीसी, विस्तरा सब दा दए बंधाईआ। आपणी हथ्थीं चक्की पीसी, पीहण आया सच्चा माहीआ। जे कोई बची रहि गई जीती, तिस जीवण जुगत दए जणाईआ। सतिजुग इक्को जेही रीती, दूआ एका मेल मिलाईआ। प्रभ चरण लग्गे सच प्रीती, प्रीती इक सिखाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, परखणहारा सब दी नीती, नीतीवान फेरा पाईआ। हुक्का कहे गुड़ गुड़ कर के दित्ता होका, हौली हौली जगत जणाया। पुरख अबिनाशी अन्तिम सब नाल करना धोखा, अछल छल धारी आपणा वेस वटाया। किसे साह लैण ना देवे सौखा, सौख्यों औखा पन्ध मुकाया। आपणा किसे हथ्थ ना औण देवे मौका, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी कार आपणा आप लाया।

❁ १६ मग्घर २०१६ बिक्रमी आसा सिंघ प्यारा सिंघ दे गृह बाबू पुर ❁

श्री भगवान तेरी चालाकी, परवरदिगार भेव कोए ना पाईआ। जुग जुग माण देंदा रिहा पंज तत्त ख़ाकी, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। अमृत जाम प्याउँदा रिहा बण बण साकी, मधुर प्याला हथ्थ उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां

खोल्हदा रिहा ताकी, जगत झरोखा कुण्डा लाहीआ। आप बण के बैठा रिहा आकी, ज़ेर ज़बर ना कोए जणाईआ। शाह सुल्तानां चढ़ाउदा रिहा उपर हाथी, ऐराप्त ना माण जणाईआ। घोड़यां उपर ज़ीन पाखर पाउदा रिहा काठी, सोलां कलीआं वंड वंडाईआ। अक्खर वक्खर देंदा रिहा दाती, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। घर मन्दिर सवाउदा रिहा ख़ाटी, सच सिँघासण इक सुहाईआ। चौदां लोक वखाउदा रिहा हाटी, रूप अनूप वटाईआ। चौदां तबकां बणदा रिहा साथी, ज़िमी असमानां खोज खुजाईआ। करदा रिहा खेल धरत मात दी उत्ते छाती, सरगुण निरगुण बेपरवाहीआ। गाउँदा रिहा आत्म आरती, घृत दीप कर रुशनाईआ। सुणाउदा रिहा हिंदी उर्दू गुरमुखी फ़ारसी, फ़ासला आपणा ना किसे जणाईआ। पीर पैगम्बर घल्लदा रिहा सफ़ारशी, लेखा आपणे हथ्थ जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बणाउदा रिहा आढ़ती, धड़त आपणा नाम वट्टा लगाईआ। लेखा लिख लिख दस्सदा रिहा इबारती, अदम आपणा ना किसे जणाईआ। दो जहान फिरदा रिहा बण मसालची, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। घर घर चलाउँदा रिहा ख़ाना बाबरची, बावरची आपणा नाउँ धराईआ। जीव जंत बणाउदा रिहा लालची, लालच करे जगत कुड़माईआ। जुग जुग करदा रिहा नालशी, नालश आपणी ना किसे समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदा रिहा मालशी, मसला इक्को इक आपणे हथ्थ रखाईआ। तेई अवतार भगत अठारां दस गुर ईसा मूसा मुहम्मद हथ्थ फड़ाउदा रिहा ख़ाली बालटी, नाम पिच्छों झोली पाईआ। लोकमात आ के दीन मज़्हब बन्न्ह गए पारटी, हरि का पारट अदा ना कोए कराईआ। नाम विहूणा दस्स गए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी गारती, गहर गम्भीर ना कोए मिलाईआ। हकीकत हक़ ना जाणे कोए पादरी, ईसा मूसा ना सिफ्त सालाहीआ। करता कीमत कोए ना जाणे कादरी, कुदरत भेव कोए ना आईआ। सारे आपणी आपणी कर के गए बहादरी, लोकमात बल धराईआ। चार वरन बणा के गए बरादरी, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाउँ धराईआ। सबर प्याला किसे ना दित्ता साबरी, सिदक सच ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। परवरदिगार बड़ा चलाक, चंचल आपणा खेल कराइंदा। कदे पाक कदे ख़ाक, ख़ाक पाक रूप वटाइंदा। कदे सज्जण कदे साक, कदे नाता तोड़ तुड़ाइंदा। कदे गीत कदे गाथ, कदे गोबिन्द नाउँ रखाइंदा। कदे चरण कदे नात, कदे मुखड़ा मुख भुआइंदा। कदे पिता कदे मात, कदे पूत सपूत सुहाइंदा। कदे वरन गोत ज़ात, कदे दीन मज़्हब वंड वंडाइंदा। कदे शरअ शरीअत शाख, कदे शनाख़त वेखण आइंदा। कदे बातन ज़ाहर कर कर बात, कदे बैतल रूप वटाइंदा। कदे पीर पैगम्बरां देवे दात, कलमा कलाम झोली पाइंदा। कदे आपणी हथ्थीं कर वफ़ात, फ़ातया सब दा आप पढ़ाइंदा। कदे खिशत कदे हात,

कदे महल्ला रूप वटाइंदा। कदे खेल खेले कायनात, कदे काया काअबा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हथ्थ किसे ना आइंदा। वड्ड चलाक परवरदिगार, जुग जुग आपणी खेल कराईआ। निरगुण सरगुण दे आधार, सरगुण निरगुण राह जणाईआ। किसे खेह सीस पवाए छार, धूणी अग्न रिहा तपाईआ। किसे जल धारा देवे ठार, हुक्मी हुक्म दए सजाईआ। किसे फड़ फड़ सुट्टे डूँग्घी गार, जोग अभ्यास करे पढ़ाईआ। किसे पढ़न लाया विच संसार, रसना जिह्वा कर कर हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। वड चलाक बेपरवाह, भेव ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि जुगादि आदि लाउदा रिहा दाअ, दाउ आपणा ना किसे समझाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा नाँ, अन्त निशाना सब दा आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी चलाकी बण उच्चक्का, आप कराइंदा। हरि जू होए इक उच्चक्का, वल छल खेल कराईआ। आपणे इरादिउँ होए पक्का, कच्ची करे सर्ब लोकाईआ। आपणा बोल करे सच्चा, सच होर ना किसे समझाईआ। बण मात गोद उठाए ज़च्चा, सीर नीर इक प्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ढाले निक्का निक्का सच्चा, लोकमात वंड वंडाईआ। अन्दर वड़े शब्दी बच्चा, बचपन आपणा दए समझाईआ। सारयां नूं कह के आया अच्छा, भेव अभेद ना किसे बताईआ। इक दस्सया मैं करूँ तुहाढ्ढी रच्छा, रच्छअ आपणे हथ्थ फड़ाईआ। जो मंगे तिस पाए भिच्छा, वड दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खाणी बाणी गाउँदे गए किसा, हरि दी किस्म ना किसे समझाईआ। किरन किरन वंडाया हिस्सा, करामात ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहान वाहो दाहीआ। पुरख अकाल बड़ा लुच्चा, दो जहान खेल कराइंदा। सारयां कोलों ओहले लुका, दिस किसे ना आइंदा। किसे हथ्थ फड़ाया हुक्का, किसे चोटी सीस मुंडाइंदा। किसे फड़ टंगाया पुठ्ठा, किसे खलड़ी तन लुहाइंदा। किसे नीहां हेठ दबाए पुत्ता, किसे तत्ती तवी उत्ते बहाइंदा। किसे धार तलवार नाल टुक्का, किसे अंग अंग कटाइंदा। जे कोई पुछे की खेल करे अबिनाशी अचुता, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। जुग चौकड़ी बैठा रहे रुस्सा, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा। प्रभ साचे अग्गे कोई ना गुसा, भाणा मन्न मन्न सब शुकर मनाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना दस्स सक्या प्रभ दा जुस्सा, वजूद नज़र किसे ना आइंदा। कवण सेजे सच सिँघासण सुत्ता, कँवल नैण डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। वेखो हरि जू लुच्चा ठग्ग, ठग्गी सब दे नाल कराईआ। पंज तत्त ला ला अग्ग, अग्नी तत्त जलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात

भेजे वग्ग, वागी बण बण सच्चे माहीआ। इक्को दस्सया अचार चज्ज, अचरज आपणा वेस ना किसे वड्याईआ। किसे मक्के काअबे कराउँदा रिहा हज्ज, कलमा नबी अमाम पढ़ाईआ। किसे नाम सति दित्ता दस्स, किसे वाहिगुरू सिफ्त सालाहीआ। किसे राम राम दित्ता जस, किसे कृष्न कृष्न समझाईआ। आप दूर दुराडा बहि के रिहा वस, आपणी लुकवीं खेल् रचाईआ। जुग जुग चौकड़ी गा गा गए थक्क, अन्तिम आप वेखण आईआ। चारों कुण्ट लाउदे भक्ख, अग्नी तत्त रही तपाईआ। ख़ाली दिसे चौदां हट्ट, किशन वंड वंड वंडाईआ। चौदां तबक बणे हट्ट, बण स्वांगी स्वांग वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सरनाई गए ढठ्ठ, आपणा आप गंवाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। वेख साडे ख़ाली हथ्थ, दर तेरे देण दुहाईआ। जिन्हां लक्कड़ां उत्ते दित्ते रख, काया माटी रूप ना कोए वखाईआ। धूंआँधार तेरा नूर वेख समरथ, तेरे घर वज्जे वधाईआ। बिन तुध कोई ना रखे पत, पतवन्त मेरे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। हरि जू लुच्चा ठग्ग चोर, चोरी सब दे नाल कराइंदा। वसणहार अन्धेरी घोर, डूँघी खड्ड कुन्दर वेख वखाइंदा। अग्गे लए सारे तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। कोई ना सके अग्गों मोड़, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। निरगुण सरगुण दोवें जोड़, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। अन्दरों बाहरों दिसे होर, भेद अभेद आप छुपाइंदा। तिस अग्गे चले ना कोई ज़ोर, ज़ोर ज़ाबर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच ज्ञान धुर दी बाणी आपणी करनी आप जणाइंदा।

साचे तख्त हरि जू बहिंदा, हरि बहि बहि खेल कराईआ। वेखणहारा चढ़दा लैहन्दा, उतर पहाड़ भेव चुकाईआ। अल्ला राणी तेरा पा के लहिंगा, मुख घूँगट रही वखाईआ। पीर पैगम्बरो उठो वेखो परवरदिगार की की कहिन्दा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। वेले अन्त कौण रहिंदा, चौदां तबक सफ़ा रिहा उठाईआ। चार जुग गुर अवतारां भाणा रिहा सहिंदा, अन्तिम आपणा भाणा इक वरताईआ। जीव जंत दो जहान इक्को गाह गहिंदा, फेरा आपणा नाम लगाईआ। शाह सुल्तान सूरबीर बिन ढाहयों ढहिंदा, मूँह दे भार सुटाईआ। वहण वहा के इक्को नैं दा, नूह नदी ना कोई वड्याईआ। नाता तोड़े भरा भैण दा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। हुण वेला नहीं निंद्रा विच रहिण दा, नेत्र नैण नैण देणा खुल्हाईआ। विखाए खेल लाड़ी मौत डैण दा, डंका आपणा नाम वजाईआ। लेखा चुके साक सज्जण सैण दा, सगला संग तुड़ाईआ। हिसाब मुक्के लैण देण दा, वही ख़ाता रिहा उडाईआ। भेव चुक्कया सुख चैन दा, सुहञ्जणी सेज दए कराईआ। लेखा मुक्कया ऐन

ग़ैन दा, लिख़त सब दी रिहा मिटाईआ। लहू लेखे लग्गा हसन हुसैन दा, पीर पैगम्बरां रिहा समझाईआ। पुत्तर वेखे फ़ातमा भैण दा, मेहरवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कराईआ।

मुश्कल कुशा होए मफ़रूर, मोह मुहब्बत सर्ब तुड़ाईआ। हुक्मे अन्दर ला कसूर, बेकसूर कसूर ठहराईआ। की कीता मनसूर, मनसूर सूली उपर चढ़ाईआ। सब नूं करदा अन्त मज़बूर, मुजरा जलवा इक वखाईआ। आपणी ज़रूरत पूरी करे ज़रूर, ज़हूर आपणा लए प्रगटाईआ। मुश्कल कुशा बड़ा शऊर, शोहरत सब दी दए गंवाईआ। ज़नानी मर्दानी आए तुझानी, तूफ़ान इक चढ़ाइंदा। सिदक सबूरी वेख ईमानी, आमद इक्को घर वखाइंदा। बिरहों तीर वैराग कानी, कलबूत काया आप लगाइंदा। जगत गाए जगत कहाणी, भेव भेव ना कोए समझाइंदा। अन्तिम सब नूं करे फ़ानी, फ़तवा सब दे उत्ते लाइंदा। बैठा इक शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। सदा सुहेला इक लासानी, लाशां सब दीआं आप दबाइंदा। क्या कोई देवे कलम ब्यानी, हरि कलाम कलमे विच कदे ना आइंदा। सब नूं करदा रिहा परेशानी, पर्चा हल्ल ना कोए कराइंदा। नार मर्द मर्द नार कहाणी, कहावत बग़ावत अदावत अलामत आप लगाइंदा।

२०३ १३

सति चित सदा सद चेतन, अनन्द आपणा रस रखाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के सारे भेतन, भेव हथ्थ किसे ना आईआ। चल चल गए नेत्री पेखण, बण बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दुआरिउँ बाहर खेडण, हथ्थ दहिलीजां नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा चित अनन्द, ना कोई रूप ना कोई रंग, ना कोई धार ना कोई गंग, ना कोई नाद ना मृदंग, ना कोई कंगण ना कोई वंग, ना कोई सुहागण ना कोई रंड, ना कोई सूरज ना कोई चन्द, ना कोई गीत ना कोई छन्द, ना कोई बन्धन ना कोई बंध, ना कोई वाट ना कोई पन्ध, ना कोई रसना ना कोई दन्द, ना कोई ब्रह्म ना कोई हं, करे खेल सूरा सरबँग, सद चित आप अनन्द, जीउ पिण्ड जिस दात दिती वंड, खेले खेल कोट ब्रह्मण्ड, जुग चौकड़ी सब दे नाल रिहा हंढु, रसना जिह्वा पाई गंढु, प्रेम प्यार डोरी रखी तन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद चित अनन्द, चर्चा दे पर्चा मात कराईआ।

पूरन परमेश्वर बणया आप, परमेश्वर पूरन विच समाईआ। पूरन करे ना किसे दा जाप, परमेश्वर पढ़न किते ना

जाईआ। पूरन करे ना कोई पाठ, परमेश्वर करे ना कोए पढ़ाईआ। पूरन बणया प्रभ दा साक, परमेश्वर पूरन रिहा प्रनाईआ। पूरन बणया विचोला आप, परमेश्वर करी घर कुड़माईआ। दोहां रल के इक्को मिल गई ज़ात, जुग जुग वंड ना कोए वंडाईआ। रल के इकठ्ठी करन बात, दिवस रैण सलाह पकाईआ। पूरन पिच्छे परमेश्वर पाई वफ़ात, आपणा हक़ रहिण फक्क दित्ता कराईआ। अन्दर वड़ गया लै के डूँग्घा ख़ात, हट्ट साचा दित्ता खुल्हाईआ। परमेश्वर पूरन दिती नज़ात, निशावर परमेश्वर पूरन रिहा कराईआ। क्या कोई करे एथे वज़ाहत, मिसल सके ना कोई लिखाईआ। दफ़ा हरफ़ ज़ेर ज़बर ना जाणे कोई लुगात, लग मात्र ना कोई वड्याईआ। पूरन परमेश्वर इकट्ठे होए पहली वेर पहली रात, पोह छब्बी मिली वड्याईआ। दोहां दा ना कोई पिता मात, साक सज्जण ना कोई बणाईआ। पूरन वल जे कोई लए झाक, परमेश्वर आवे वाहो दाहीआ। परमेश्वर दा जे कोई खोल्हे ताक, पूरन अग्गे हो के बंद कराया। बिन पूरन कोई ना लग्गे घाट, परमेश्वर पूरन हथ्थ दिती वड्याईआ। परमेश्वर पूरन मिलण आया ख़ास, ख़ाहिश गोबिन्द पूर कराया। पूरन परमेश्वर पूरी कीती आस, आस परमेश्वर पूरन रिहा कराया। इक दूजे विच रच के कीता वास, आपणी रचना फेर बणाईआ। पूरन लए परमेश्वर सांस, साह साह परमेश्वर रिहा समाईआ। पूरन खेल पृथ्मी अकाश, परमेश्वर गगन मण्डल फेरा पाईआ। दो जहानां दी विष्न ब्रह्मा शिव रखी आस, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। पूरन प्रभ दी बणया शाख़, परमेश्वर पत डाली रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की गल्ल वड्डी कर वखाईआ। वड्डयों होई निक्की, प्रभ साचे खेल रचाया। निक्कीयों होई वड्डी, वड्ड वडा वेख वखाया। पूरन परमेश्वर दो जहान खेडन कबड्डी, हद्द आपणी ना किसे वखाया। पिछली कीती सब दी रद्दी, रंदा इक्को वार फिराया। अग्गे हुक्मे अन्दरे बद्धी, सिर सके ना कोई उठाया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां ख़ाली कीती गद्दी, गदा चक्र ना कोई फिराया। अग्गे खाण नूं मिले रोटी अद्धी, माहल पूड़े अग्गे ना कोई टिकाया। वेखो सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलदी रही गड्डी, हुक्मे अन्दर सर्ब फिराया। अन्तिम किसे दी नज़र ना आवे हड्डी, पंज तत्त ख़ाकी ख़ाक समाया। ना कोई पुश्त ना कोई यदी, बंस सरबंस ना कोई सहाया। सब दी बीतदी गई सदी, सद्दा हरि जू घर घर आप सुणाया। पिच्छे कथा कहाणी लिखी रहि गई बद्धी, जगत संदेसा इक अल्हाया। अन्तिम ख़ाली बैठी टड्डी, नेत्र नैण नैण उठाया। जिस आदि जुगादि जुगां जुगन्तर आपणी सिख्या विच्चों आपणे कढ्डी, सो साहिब खेल कराया। पूरन परमेश्वर इक दूजे नाल पाई जफ्फी, पर्दा पर्दा मात चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निक्की वड्डी वड्डी निक्की गल्ल आपणे विच रखाया। निक्की कहे ते होए निक्का, निक्का

२०४
१३

नज़र किसे नहीं आइंदा। वड्डी कहे ते होए वड्डा, भय सर्ब जणाइंदा। एसे कर के पुरख अबिनाशी आपणा खेहड़ा छड्डा, पूरन जगत वखाइंदा। कोई कहे बुड्ढा नड्ढा, जट्ट वेस वटाइंदा। कोई कहे मालशां करे हड्डां, दुद्ध पी पी शुकर मनाइंदा। कोई कहे घर आवें दित्यां सद्दा, दर दर फेरा पाइंदा। परमेश्वर कहे पूरन सब दी रखे लज्जा, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जिस मेरा पर्दा कज्जा, सो पूरन हर घट नज़री आइंदा। दिने रातीं फिरे भज्जा, गुरमुखां दरस दिखाइंदा। घर घर अन्दर जा के नच्चा, आपणा नाच नचाइंदा। लूं लूं अन्दर तीर निशाना बण के वज्जा, साढे तिन्न करोड़ आपणी झोली पाइंदा। आत्म सेजा बहि बहि सजा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। गुरमुखां दर्शन कर कर रज्जा, आपणी भुक्ख सर्ब गवाइंदा। परमेश्वर कहे पूरन मेरा बच्चा, बिन बच्चयां प्यो कम्म किसे ना आइंदा। गोबिन्द सूरा होया सच्चा, जो अन्तिम मंग मंगाइंदा। हरि का बचन ना होए कच्चा, काया कच्ची वंग रंग चढ़ाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरन परमेश्वर ढालया इक्को संचा, पारस पारस नाल मिलाइंदा। निक्का कहे होए निकम्मा, निकर्मण आप अख्वाईआ। वड्डा कहे होए श्री भगवना, भगवन आपणा भेव जणाईआ। पूरन वेख्या इक्को चन्ना, हरि चन्द आप चमकाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को हद्द इक्को बन्ना, इक्को वंड रिहा वंडाईआ। परमेश्वर नाल पूरन मन्ना, परमेश्वर पूरन सीस झुकाईआ। लोकीं वेखण बैठा अन्न्हां, अन्दर कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रिहा छुपाईआ। बिन गुरमुखां कोई राग ना सुणे कन्नां, सरवण सब दे बंद कराईआ। वेखो सिखो तुहाड्डे चरण धोवे धन्ना, प्रभ जू देवणहार वड्याईआ। नाम देव आए भंनां, जिस दी छप्परी छन्न छुहाईआ। हरिसंगत तेरा वेख प्यार दर दुआरे उह वी मन्ना, आपणा माण गंवाईआ। की होया मैं भोग लवाया छन्ना, सिख गागराँ रहे रुढ़्हाईआ। जिन्न्हां पिच्छे होया झल्ला, आपणी झलक वखाईआ। औह रोंदी आई राणी अल्ला, गल वास्ता रही पाईआ। दरोही मेरा फड़ पल्ला, मेरी लाज ना कोए रखाईआ। चौदां सदीआं कटया छिला, तेरी इक्को आस तकाईआ। मेरी मींढी पुट्टे बूरा कक्का बिल्ला, बैठा ध्यान लगाईआ। मैं कह कह थक्की इल लिला बिस्मिला, बिस्मिल रूप ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे फ़नाह फ़िला, फ़सील कोए रहिण ना पाईआ। तेरा ऊँचा सोहणा लग्गे टिल्ला, जिस दुआरे आसण लाईआ। जिवें गुरसिखां मिलण दा कीता हीला, हलत पलत फेरा पाईआ। तन वस्त्र पहने काला पीला लाल नीला, चिट्टा सूहा वेख वखाईआ। परवरदिगार साहिब सुल्तान सच गोसाईं तूं छैल छबीला, शाह पातशाह नाउँ धराईआ। जित्थे भगत बणाया कबीला, ओथे मैनूं नाल रलाईआ। मैं तक्क के आई पिछला वसीला, चौंह यारां विच्चों एह नाल लैण मिलाईआ। मैं कीता नहीं कोई वकीला, बण निमाणी फेरा पाईआ। तेरे मिलण दा इक्को हीला, फेर हत्थ किसे ना आईआ। जिउँ

वज़ीर किसत देवे शहिफ़ीला, बादशाह आपणे हुक्म बंद कराईआ। मेरे पिच्छे क्यों होइउँ ढीला, आपणा मुख भुआईआ। मैं चौदां लोक चक्की चलाउँदी रही पा के पीहण गीला, हथ्था हथ्थो हथ्थी फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निक्का वड्डा वड्डा निक्का दोहां लगाए आपणा टिक्का, एक इक्को इक जणाईआ। निक्का कहे होए नाकारा, निकट वरती ना कोए अख्वाइंदा। वड्डा कहे बणे सिक्दारा, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। दोहां तों कीता आप किनारा, पूरन पुरीआँ लोआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आप वखाइंदा। एथे ओथे दे सहारा, साहिब साबर वेख वखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, हाकम हक़ हक़ समझाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जन भगतां करे सच प्यारा, प्यार भगतां नाल प्रनाइंदा। बाहरों दिसे जट्ट गंवारा, अन्दर गूढ़ा रंग चढ़ाइंदा। बाहरों दिसे केस सीस दस्तारा, अन्दर नूरो नूर डगमगाइंदा। परमेश्वर पूरन पूरन परमेश्वर वढुयां निक्कयां नाल करे इक्को विहारा, वड्डा परमेश्वर निक्का पूरन, बिन निक्के पूरन परमेश्वर कम्म किसे ना आइंदा। दोहां मिल के करना कम्म संपूरन, पूरना आपणा आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निक्का वड्डा इक्को राम, वड्डा निक्का आपणा रूप वखाइंदा।

पूरन परमेश्वर कहिणा नहीं दोष, परमेश्वर पूरन रंग वखाईआ। सचखण्ड जो बैठा रिहा ख़ामोश, ख़ाह मख़ाह आपणी कथा सुणाईआ। सृष्ट सबाई टिकाणे ल्या होश, हुशियार होया सच्चा माहीआ। राजे राणे जंगलां विच फिराए ख़रगोश, कलिजुग कूड़ी क्रिया कुत्ते मगर लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों चढ़या जोश, आपणा बल धराईआ। खोजिआं कोई ना कढ्ढे खोज, खोज थक्की सर्व लोकाईआ। किसे हथ्थ ना आए रोज़यां विच रोज़, फ़ाके मर मर देण दुहाईआ। जिस दी नानक सोचदा गया सोच, सोच सोच ना कोए जणाईआ। जिस दी गोबिन्द रखी लोच, दोए लोचण ध्यान लगाईआ। सो साहिब गया पहुंच, पूरन पूरन विच समाईआ। लेखा जाणे लखण करौच, पुष्कर जम्बु वेख वखाईआ। सान सलमल हंढ्ढाए आपणा शौक, शौकीन बणया बेपरवाहीआ। कुशा माणे इक्को मौज, कुशलया बेटा राम आसा पूर कराईआ। करे खेल बिन लशकर फ़ौज, खण्डा तीर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर हुक्म चलाईआ। वशिष्ट कोल गया राम, राम प्या सरनाईआ। राम मंगी दात नाम, नाम राम झोली पाईआ। वशिष्ट कर प्रणाम, प्राणायाम लेख चुकाईआ। राम कहे दे पैग़ाम, हुक्म सच सुणाईआ। वशिष्ट कहे राम जिस तैनूं बणाया राम, सो राम अन्तिम कल

आवे वाहो दाहीआ। जिस दा हड्ड मास नाड़ी ना चाम, दसरथ बिंद ना कोए अख्वाईआ। सो राम बेपहिचाण, रूप रंग ना कोए वखाईआ। मेरी कुशा कर ध्यान, जिस उपर आसण लाईआ। तेरी दिशा करे परवान, दहिसिर मार ना कोए वड्याईआ। हुक्मे अन्दर खेल करे हुक्मरान, बनबास कटण कोए ना जाईआ। हनवन्त रखे ना कोए ध्यान, सुगरीव संग ना कोए रखाईआ। तीर फड़े ना कोए कमान, चिल्ला हथ्थ ना कोए लटकाईआ। कर किरपा मारे इक्को बाण, खाणी बाणी सब दी होश भुलाईआ। आप बणया रहे बेपहचान, पहचान पूरन रूप वटाईआ। जे कोई लभ्भण जाए निशान, निशाना हथ्थ किसे ना आईआ। जे कोई कहे विष्नूं भगवान, विष्नूं बण कार कमाईआ। सब नूं देवे आत्म दान, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। पहलों पूरन रूप बण के जाए राम, पूरन राम रूप वखाईआ। फेर कम्म करे निशकाम, निसचा सब नूं आप दिवाईआ। परापर परापेगंडा ना करे कोई जहान, साध सन्त दूर जा जा ना करे कोए शनवाईआ। सारयां गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों लए लगान, जो आपणी वंडां वंड वंड वंडां गए पाईआ। सचखण्ड बैठा पूरन अन्दर वड़ के दए फ़रमाण, सच संदेसा इक सुणाईआ। सारे चरणीं डिग्गो आण, दसरथ बेटा राम भज्जे वाहो दाहीआ। चलो दर्शन करीए श्री भगवान, जिस साडी बणत बणाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, मनसा आपणी ना कोए रखाईआ। बाहरों दिसे मूर्ख अञ्याण, अन्दर समरथ खेल कराईआ। बिन पूरन कलिजुग अन्त किसे दी ना होवे कल्याण, पुरख अबिनाशी मोहर लगाईआ। फिर के वेखो सारा जहान, साधां सन्तां डेरा रिहा ढाहीआ। सिरफ़ ख़ाली रहि गया पीण खाण, अन्दर जोत ना कोए रुशनाईआ। झूठे नैण सर्ब शरमाण, अग्गे अक्ख ना कोए उठाईआ। दूरों दूर सर्ब डराण, जे अग्गे आवे ते भज्जण वाहो दाहीआ। कबीर नानक होए हैरान, हरि जू की की खेल रचाईआ। पवण पाणी नैण शरमाण, रो रो नैणां नीर वहाईआ। अग्नी अग्ग होई कुरबान, करबला मिले ना कोए वड्याईआ। आरबला चुक्की विच जहान, आरजू कोई नज़र ना आईआ। पूरन परमेश्वर मिल्या आण, आण सब नूं रिहा पाईआ। सृष्ट सबाई दिसे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ नज़र किसे ना आईआ। वेखो बणया हरि शैतान, शरअ उलटी आप चलाईआ। निरगुण वसया आप अमाम, सरगुण पर्दा उत्ते पाईआ। पूरन करया पूरा काम, निहकर्मी कर्म कांड ना कोए जणाईआ। गोबिन्द कीती आप पहचान, पिछला पर्दा रिहा चुकाईआ। सम्बल खेड़ा कर परवान, परवाना घर घर रिहा पुचाईआ। बाला नढ्ढा नौजवान, बुढ्ढा आपणा रूप वटाईआ। एका नांयां हो प्रधान, साल उनीवें खुशी मनाईआ। मुच्छ फुट्ट नौजवान, कुछ कुछ आपणा हाल सुणाईआ। समरथ पुरख पुरख मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। पूरन परमेश्वर श्री भगवान, जगतेश्वर रहेश्वर महेश्वर तम मम मम तम अगम निगम निगह आप रखाईआ।

२०८
१३

मेरे माही सुअम्बर रचया, दो जहान वज्जी वधाईआ। नाता तुटा कूड़यां कच्चयां, कच्ची गंढु रहिण ना पाईआ। मिल्या मेल गुरसिखां सच्चयां, जिन्हां सतिगुर सच्चा मिल्या चाईं चाईंआ। वेखो माण देवे आपणे बच्चयां, गल फूलण हार पुआईआ। लूं लूं अन्दर वड़ के रचया, रच रच आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर हुक्म वड्याईआ। सुअम्बर रचे आप निरँकार, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण सरगुण कर तैयार, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। जोत अकालण कर विचार, शब्द दलालण वेख वखाइंदा। नार कन्त कन्त नार सोहे इक दुआर, दर मन्दिर बंक वड्याइंदा। गुरमुख मेला गुरमुख धार, गुरसिख गुर गुर गोर समाइंदा। बण वचोला एकँकार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। कर किरपा हरिसंगत पाया आपणा हार, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। अग्गे जा के वेखो बहार, शहिनशाह आपणा रंग वखाइंदा। स्त्री पुरुष नारी नर आपणी गोद लए बठाल, सिर ते आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ओथे ना कोई शाह ना कंगाल, कंगालां आपणे संग रखाइंदा। वेखो बणया आप दलाल, बिन पैसिउँ बिन वढ्ढीयों, बिन रिशवत रच्छआ सर्ब कराइंदा। जिउँ परदेसी माँ प्यो पुत्त लैण जाए गड्डीयों, जगत मिसाल दे समझाइंदा। तिउँ सतिगुर सुरत सुआणी विच्चों कढ्ढे हड्डीयों, आत्मा परमात्मा आपणे नाल मिलाइंदा। नाता तोड़े चार खाणी रंडीयों, कन्त सुहागी इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूलण हार हरि के हरि जू हरिसंगत गल पुआइंदा। हरिसंगत हरि जू पाया हार, हरि की पौड़ी आप चढ़ाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कोए ना होए ख्वार, ख्वाब विच नहावण कोए ना जाईआ। घर बैठयां देवे पुन्न सवाब, सबर सन्तोख झोली रिहा भराईआ। कम्म करदयां सिर नवां करो आदाब, घर बैठयां लेखे लाईआ। मौत लाड़ी ना दए अज़ाब, राए धर्म ना अन्त सज़ाईआ। अग्गे वेखो वज्जदी रबाब, बिन तन्दी तन्द वजाईआ। जिस ने लेखे लाया कन्ढी जा उकाब, करनी करता भुल्ल ना जाईआ। सो कन्ढी वाले सद्दे साथ, कन्ढा इक्को घर वखाईआ। वेखो चरपट पाटे कान, मुन्दरा नज़र कोए ना आइंदा। हरि जू सब नूं वेखे इके घाट, पत्तण आपणा इक समझाइंदा। आओ रल मिल करीए सच्ची बात, दीवा बत्ती सब दा गुल कराइंदा। जन भगतां पत लए राख, राखी दिवस रैण कराइंदा। हरिसंगत विच मनमुख रहिण ना देवे नार कमज़ात, जो जन रसना मास शराब चाह लगाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म करे करड़ा, सब नूं लाए रगढ़ा, वेखो घर घर पैंदा झगड़ा, दगढ़ दगढ़ घोड़ा आपणा आप दौड़ाइंदा। दगढ़ दगढ़ दौड़े घोड़ा, घुरकी सब नूं रिहा वखाईआ। चौथे जुग चुक्कया पौड़ा, पौड़ी डण्डा सब दा रिहा सुटाईआ। सब दा मैदान करे रौड़ा, मंज़ल आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम

देवे जवाब कोरा, लेखा मिटे कलम शाहीआ। सब दे कोल रहि जाए झोरा, मिले मेल ना सच्चे माहीआ। जिस ने लेखे लाए सिँघ जुझार फ़तहि ज़ोरा, अजीत जित आपणे हथ्थ रखाईआ। कदी कदी गुरसिखां नूं मार देवे हनोरा, दुःख दुःख नाल लड़ाईआ। रसना जिह्वा पाए शोरा, हरि जू लारयां विच रिहा रखाईआ। पुरख अबिनाशी कहे आत्म परमात्म जुड़या जोड़ा, जोड़ी दो जहान वखाईआ। इक दूजे दी पै गई लोड़ा, लोहड़ा करे सर्ब लोकाईआ। वेखे सस्से उपर लग्गा होड़ा, होका दे दे रिहा सुणाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ वेखे फल मिठ्ठा कौड़ा, रस रसीआ फेरा पाईआ। कलिजुग जीव होया डोरा, कन्नीं सुणन कोए ना आईआ। कलिजुग सब दे नाल करे खोरा, खुदी सब दे विच वसाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल विच फोरा, फुरो मंत्र नाम सति नानक मंगी इक मति, तत्त तत्त नाल बदलाईआ। सारे सत्थर बहिण घत्त, विष्न ब्रह्मा शिव डेरा ढाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा निधान हो मेहरवान सब नूं मारे इक्को लत्त, उठो भाई चलो वाहो दाहीआ। आपणा लहिणा लओ चक्क, सब दे सिर ते भार बन्नाईआ। कमर बंधो आपणा कस, कसम सब नूं रिहा ख़वाईआ। सारे कहो साडी होई बस, अन्त चली ना कोई चतुराईआ। निरगुण ब्रह्म माया ब्रह्म विच गया फस, पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। त्रसूल सुट्टी शिव जी हथ्थ, असूल तेरा ना कोए बदलाईआ। विष्नूं भण्डारा होया सख, सखी सरवर खेल रचाईआ। गुर अवतार हो इकठ्ठ, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। लोकमात वेखण आपणा हट्ट, मन्दिर मसीत शिवदुआले मठ्ठ गुरदुआरे ख़ाली नज़री आईआ। नेत्र रोवण अठ्ठ सठ्ठ, अठोतरी माला दए दुहाईआ। मणका मणका जो रहे रट, रट्टा सब दे घर विच पाईआ। क्यों गुस्से होया गंवार जट्ट, निरगुण सरगुण दोसांघा हथ्थ उठाईआ। बण किरसाण देवे कट, वाढी इक्को वार पाईआ। पिच्छों गाह देवे झट्ट, बूरे संढे उत्ते फिराईआ। फेर इशारे नाल देवे छट्ट, तूड़ी दाना अड्ड कराईआ। गुरमुख दाणे आपणी झोली लए घत्त, तूड़ी भूसा वेखे सर्ब लोकाईआ। आपणे अन्दर लए ढक्क, उत्ते आपणा पर्दा पाईआ। सचखण्ड अन्दर सांभ के लए रख, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाईआ। ओसे अन्दर वड़ के आप जाए वस, वास्ता गुरसिखां अग्गे पाईआ। मैं तुहाडे विच गया फस, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। चार जुग मेरा गाउँदे गए जस, मैं तुहाडा जस गा गा शुकर मनाईआ। आओ इक दूजे नूं हाल देईए दस्स, दस्म दवारी तुहाडे पिच्छे फिर फिर थक्की, नेत्र रोवे मारे धाहींआ। मैं साधां सन्तां कोलों अक्की, जूठयां झूठयां मेरी पत गंवाईआ। जिहड़े कहिन्दे सर्ब भक्खी, सो भुख्यां भुक्ख ना कोए गंवाईआ। मैं नेत्र वेखे अक्खीं, जंगल जूहां फेरा पाईआ। काम वासना कूड़ी क्रिया अंग लाई सखी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बिन परमात्मा कोई ना रिहा जती, आत्मा सब दी आप डुलाईआ। बिन श्री भगवान ना कोई पती, सगला संग ना कोए निभाईआ।

वेखो वा वगदी तत्ती, बिन सतिगुर ना कोए सहाईआ। गुरसिखो दयो प्यार रत्ती, चोली रतड़ी दयो कराईआ। रल के सारे दयो मत्ती, पुरख अबिनाशी लओ समझाईआ। जिस दो जहान तपाई भठ्ठी, जोती अग्नी रिहा डाहीआ। जिस पीर पैगम्बरां बन्नी मौली अट्टी, दाढ़ी रत्तो रत्त रंगाईआ। जिस लख चुरासी पाई नथ्थी, नक्क नकौड़ा ना कोए रखाईआ। जो लुक्या गुरसिखां दी कुली कक्खीं, उच्चे टिल्ले मन्दिर नज़र किते ना आईआ। सब नूं पै जाए उठ के वक्खी, नेज़ा तिखी धार लगाईआ। वेखो की की खेल करे हथ्थो हथ्थी, मन हाथी रिहा ढाहीआ। की करे अल्ला राणी नाँ रखाया रखी, आपणी रक्षया ना अन्त कराईआ। भज्जी फिरे पच्छिमी पच्छी, पछो ता करे लोकाईआ। पिच्छे लग्गदी रही अच्छी, अल्ला मीआं कह कह शुकर मनाईआ। हुण पैण लग्गी ग़शी, गहर गम्भीर आया फेरा पाईआ। जिन्नां खादी फड़ फड़ वच्छी, विस्तरा सब दा रिहा बंधाईआ। वेखो मुहम्मद हथ्थ रस्सी, चार यारां नाल मिलाईआ। मूसे गंढु आपणी कसी, ईसा वटणा रिहा चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी साचा मार्ग दस्सीं, जिस घर विस्तरा देईए लाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा हस्सी, नाल इशारयां रिहा समझाईआ। तुसीं रोवो जिवें थल विच रोंदी सस्सी, पुन्नूं पूरन नज़र किसे ना आईआ। बिन आबों तड़फे मच्छी, अमृत जल ना कोए वखाईआ। श्री भगवान कहे इक गल्ल अच्छी, अच्छी तरां समझाईआ। जिस दुआरे जोत अकालण फिरदी नस्सी, फूलण हार हथ्थ उठाईआ। ओथे बस्ती इक्को वसी, जिन्नां दा बसता पुरख अकाल आपणे सिर उठाईआ। नाता तोड़या भैण भाई चाची ताई मामी फुफी मासी, मासड़ मसख़रा नज़र कोए ना आईआ। ओथे होए बंद खुलासी, जो जन जाए खुदी गंवाईआ। गलों कटे जम की फाँसी, फ़ासला सब दा दए मुकाईआ। वेखो आउँदी राणी झांसी, जिस अन्त ध्यान लगाईआ। किले गवालियर कोल लाहे उदासी, मिटी पाथर समाध वेख वखाईआ। हरि जू सब दी पूरी करे आसी, पिछला लहिणा सर्ब चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन अन्दर पूरन परमाण, पारब्रह्म आप जणाईआ।

लड़ फड़ा बणाई लड़ी, ललचा आपणे नाम पाईआ। ईसा गिरज्यां विच वेखे घड़ी, वेला वक्त गया आईआ। कैथलक रोमन कोए ना करे अड़ी, रूपोश आया फेरा पाईआ। पोप कहिण हू गॉड जिस किरपा करी, भगतां दए वड्याईआ। कवण मैन जो मैन करे बरी, माण सब दा रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। गॉड मेड गॉड गॉड, पूरन रूप वखाईआ। पीर पैगम्बरां कीता बंद बलाक, बेइलम फेरा पाईआ। अग्गे इक्को

लाया लाक, लाक सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। कैथलक वेख रोमन, रूए आलम रिहा जणाईआ। नाल रखाए सारे मोमन, काफ़र देण दुहाईआ। हरि जू होया इक्को सोमन, सुरती सब दी दए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लड़ी घड़ी घड़ी वखाईआ। ईसा कहे पोप करो पड़ताल, पुश्त दर पुश्ती आया माहीआ। जिस दे पिच्छे मेरा होया ज़वाल, किल हथ्थां पैरां विच लगाईआ। उस दे अग्गे जा के करो स्वाल, तुहाढ्डी घड़ी लेखे लाईआ। योरोशलम ना वज्जे ताल, ईसउलसलाम ना कोए चतुराईआ। मूसा होया मुशतबा, मुश्कल हल्ल ना कोए कराईआ। जिस जिस कराई आपणी उल्फ़ता, उल्लू बणाए सच्चा माहीआ। वेखो घर घर फिरदे मुफ़लसा, मंगण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लड़ी इक वखाईआ। लड़ी वेखो रोमन रूम, शाह रूम आप जणाइंदा। जिस ने ईसा मूसा बच्चे भेजे मासूम, नन्न्हे नन्न्हे खेल कराइंदा। अन्तिम सब नूं करे महिरूम, मोहर अग्गे ना कोई लगाइंदा। वेखणहारा हरि मज़लूम, ज़ुल्म ज़ालम रंग रंगाइंदा। इकट्ठे हो जाओ इक्को वार हज़ूम, पीर ज़ाहरा नज़री आइंदा। उहदे बरदे होवो ममनून, ममनून मुश्कल सब दी हल्ल कराइंदा। आपणा दस्सो ना कोए जनून, जलवा इक्को नज़री आइंदा। उहदा चलणा इक कानून, पिछली कीती सब उलटाइंदा। जा के सिखो इक मज़मून, सोहँ कलमा आप पढ़ाइंदा। कोई बणयो ना अग्गे उहदे फ़रऊन, सब नूं ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लड़ी लड़ी नाल रखाइंदा। ईसा कहे रोमन वेख रोम, रोम रोम रिहा समाईआ। जिस मैथों छडाया होम, तुहाढ्डा घर देवे ढाहीआ। हिंदू कहिन्दे उस नूं ओम, सिख एकँकार कहि ध्याईआ। मूसा कहे रूप मोम, ईसा उस दी ज़ात वखाईआ। जिस दी मुहम्मद बणया कौम, सो कौमी फेरा पाईआ। कलिजुग अन्त हुण किसे ना देवे सौण, गिरजे मन्दिर शिवदुआले मठ्ठ सारे रिहा ढाहीआ। उहदे हुक्मे अन्दर चलणी पौण, पाणी अग्नी नाल रलाईआ। जिस ने सब दी भंनणी धौण, मार मार धौलां मूँह दे भार सुटाईआ। उस दी महिमा जाणे कौण, लाशरीक इक खुदाईआ। जिस खेडां लाए राम रौण, कृष्न कंस उंगलीआं उत्ते नचाईआ। सो आपणा ढोला आया गौण, गा गा गुरमुखां रिहा सुणाईआ। साडा लेखा आया खोहण, कताबां बग़लां विच्चों कढ्ढाईआ। चौदां तबक सारे रोण, रोंदयां सार कोए ना पाईआ। सारे कहिण ख़ुदा करे खेल अनहोण, होणी सब दे सिर ते छाईआ। दोए जोड़ वास्ता सारे पौण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कोई ना अग्गे कहे हू गॉड कौण, गॉड तूही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। ईसा कहे पोप सिर वेख हैट, हरि हैट रिहा उठाईआ। निरगुण हथ्थ विच फड़या बैट, बाल

इक्को नाम उठाईआ। सारे बण जाओ रैट कैट, चूहे बिलीआं नाच नचाईआ। बिग थिंग ना कोए फ़ैट, फट्टा सब दा रिहा खिचाईआ। इक्को हुक्म देवे राईट रैट रिटन विच ना कोए लिआईआ। चारों कुण्ट वेखो अन्धेरी नाईट, वन टू थरी फ़ोर फ़ाईव गिणों थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बर होए बलाईंड, डफ डम्ब कन्न सुणन कोए ना पाईआ। हरि जू बैठा वेखे बीहाईंड, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। सब नूं माईनस करे माईंड, मुनाफ़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पढ़न गुरसिखां दुआरे आईआ। हरि जू पढ़े बिन काग़ज़ पेपर शाही इंक, अक्खर आपणा आप प्रगटाइंदा। गुरमुखां कहे थैंकयू थैंक, थेटर आपणा आप वखाइंदा। चिट्टे काले जो करदा रिहा पेंट, वाईट बलैक आल राईट कह सुणाइंदा। किसे हेअर फ़ेस लौण ना देवे सैंट, ख़ाकी ख़ाक सर्ब रुलाइंदा। हुक्म हाकम देवे सैंट, सादर आपणा हुक्म मनाइंदा। अन्तिम सब दा करे ऐंड, इनडैकस आपणे हथ्थ रखाइंदा। मुरग़ीख़ाना बणा विच रखाए काक हैंन, ऐग सब दे भन्न वखाइंदा। लेखा जाणे शी ही मैंन, मैन आपणा भेव खुल्हाइंदा। दी दोज़ दैंन, दैट आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए इक घर, लड़ी लड़ी नाल गंढ्ढाइंदा।
२१२ तालब इलम वेखो तुलबा, तालीम गुरसिखां कोलों पाईआ। ना फिरदा ना तुरदा, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। ना २१२
१३ भज्जे ना रुढ़्दा, इक्को थाँ बैठा आपणा खेल कराईआ। जिस वेले वेखे भगतां बेड़ा रुढ़्दा, आ के बन्न्हे लाईआ। अन्दर १३
वड़ के नाल जुड़दा, बाहरों रूप ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे चक्की पुड़ दा, हथ्था आपणे हथ्थ रखाईआ। एहो साथ सिख गुरू दा, गुर सिख सिख गुर इक्को घर वखाईआ। मेल मिलाए धुर दा, धुर दा संग आप हो जाईआ। जे आपणा घाटा वेखे थुड़ दा, गुरमुखां अग्गे झोली डाहीआ। सतिगुर पूरा किसे दे मोड़यां नहीं जे मुड़दा, कलिजुग आपणा फेरा पाईआ। वर पाओ जिहा लोड़ी दा, गुर अवतार गए समझाईआ। एथे कम्म नहीं ज़ोर ज़ोरी दा, पीआ प्रेम नाल प्रनाईआ। वेखो खेल बांकी छोहरी दा, शौहर खुशीआं नाल रीझाईआ, गानां बद्धा प्रेम डोरी दा, चोरी चोरी सगन मनाईआ। सीस गुंदया साची घोड़ी दा, गुरमुख खुशीआं नाल चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख आपणे लड़ लगाईआ। ईसा कहे मारो झाकी, झाका हरि जू रिहा वखाईआ। बाहरों दिसे बंदा ख़ाकी, अन्दर जलवा नूर रुशनाईआ। मुर्शद मुरीदां देवे जाम साकी, साख्यात नज़री आईआ। पीर पैगम्बर खेल खिलाए जिउँ टीमां खेलण फ़ुटबाल हाकी, जगत मिसाल नाल समझाईआ। अन्तिम गोल करे इक्को बाकी, सीटी आपणे नाम वजाईआ। सारे वेखण आया पासा हार घाटी, परवरदिगार सब दी अक्खीं घट्टा पाईआ। जिस उम्मत दी करदे रहे राखी, उस दी वाड़ रिहा

उखड़ाईआ। साडी चलण ना देवे चालाकी, चालाक बणया बेपरवाहीआ। सारे वेखो किसे कोल है बाकी, अग्गे पिच्छे मारन हथ्थ नज़र कुछ ना आईआ। सारे कहिण तूं परवरदिगार ज़ात सफ़ाती, अजाति रहिण कोए ना पाईआ। तेरी महिफ़ल करनी रहि गई इक्को बाकी, बाकी यार लए हंढ्ढाईआ। कर किरपा खोल्ह ताकी, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। पुरख अबिनाशी परवरदिगार चरण अंगूठे नाल लाहे निक्की जिही टाकी, टुकड़ा परां देवे हटाईआ। अग्गे कोटन कोटि पीर पैगम्बर पए सफ़ाती, सफ़ा हस्ती जगत मिटाईआ। ना कोई दीवा ना कोई बाती, मोम बत्ती ना कोए रुशनाईआ। ना कोई प्याला ना कोई साकी, सुराही हथ्थ ना कोए उठाईआ। ना बुत्त ना तन ख़ाकी, रूए आलम ना कोए जणाईआ। इक परवरदिगार हथ्थ प्याला वखाए आब हयाती, हय्या सब दा रिहा गंवाईआ। पिछली सब दी गई गवाती, लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं अग्गे चाहीए हयाती, दोए जोड़ पओ सरनाईआ। पुरख अबिनाशी वेखो सेज वछाई खाटी, खटका सब दा रिहा गंवाईआ। जिस दा रोज़ा रखो पढ़ो निमाज़ी, मुआशा अल्ला माशूक आशक आशक माशूक ला हदूद सच महिबूब, सबूत आपणा रिहा दिवाईआ। सबूत वेखो हरि हरि साबत, सच सच जणाइंदा। जिस दी करदे रहे इबादत, सो आदम हव्वा चरणां हेठ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम आपणी बदलण आया आदत, अदली बण के रूप वटाइंदा। सब दी फड़ फड़ करे हज़ामत, मुच्छ दाढ़ी हथ्थीं आप कटाइंदा। लबां कट देवे हथ्थ अमानत, मुहम्मद नैण नैण शरमाइंदा। मुख नाल मुख लगा लग्गी अलामत, होंट होंटां नाल टकराइंदा। वेखो सब दी आई शामत, शमा सब दी गुल कराइंदा। बेपीर होया बेपछाणत, बेदर्दी फेरा पाईआ। जिध्धर वेखीए सही सलामत, साबत नूर नज़री आईआ। वेखो साडे हुंदयां घर घर साडे पाए बग़ावत, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं करे अदावत, इस्म आपणा ना किसे समझाईआ। मुर्शद मुरीदां करे सख़ावत, वस्त दस्त इक फड़ाईआ। सच अम्मारी चढ़या महावत, नाम नेज़ा हथ्थ उठाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार कहिण जिस दी दस्सदे रहे कहावत, कह कह जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख लड़ी आपणे नाल बंधाईआ। हरिसंगत सेवा सीस दारी, बरदारी घोली घोल घुमाईआ। करे खेल पहली वारी, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। हरिसंगत पार उतारे सारी, वेले अन्त हो सहाईआ। घर सेहरा लै के जाए सिर चुक्क के खारी, फूलणहार आप गुंदाईआ। गुरमुख कन्यां वेखे कुँवारी, अन्त भगवन्त लए प्रनाईआ। आपणी बीती दस्से सारी, गुरसिखां कीती आपणी झोली पाईआ। हस्त कीटी इक दुआरी, नीच ऊँच ना कोए चतुराईआ। मन्न जित लओ अटारी, अटल पदवी रिहा वखाईआ। सोलां मग्घर लेखा करे शुमारी, बेशुमार दया कमाईआ। दया गुरसिखां घर फेरे बहारी, अन्दर वड़ वड़ कूड़ा किरकट हूंझे

वाहो दाहीआ। फेर पीआ नाल लगाए यारी, प्रीतम आपणा दए मिलाईआ। हीआ करो बण बलकारी, बल आपणा आप धराईआ। साढे तिन्न हथ्थ लहिणा दित्ता रविदास चुमारी, चम्मड़ा गंढु वेख वखाईआ। गुर प्रसादि गुर किरपा धारी, हरि पुस्तक रिहा खुलृाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोए लिखारी, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जुग जुग जन भगतां कटे रोग बीमारी, मरीज़ तबीब वेखे चाईं चाईंआ। नाम पुड़ी देवे कर प्यारी, सच ख़ुमारी दए चढ़ाईआ। कर प्रकाश जोत निरँकारी, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जोत अकालण जाए बलिहारी, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। तूं जितया मैं हारी, तेरी सेवा मैनूं ल्या फसाईआ। धन्न भाग तूं अक्ख उग्घाड़ी, मेरी अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। बिन कजलों होई ठंडी ठारी, सीतल सुरमा नाल पाईआ। पा गलवकड़ी पिछली मेट ख्वारी, खुरक खंघ सिखां दे गंवाईआ। तेरे घर की चले डाकदारी, धनंतर बैठा सीस झुकाईआ। किथों सिखिउँ लौणी यारी, यार सारे देण दुहाईआ। भुख्यां भगतां कटणी औखी होई दिहाढ़ी, दिहाढ़ी कर कर झट्ट रहे लँघाईआ। असां उडीकणी इक्को हाढ़ी, सच तेरी आस रखाईआ। जे साडे सिर ते रहे भारी, तेरी की वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं बणां ज़रूर वगारी, बण सेवक सेव कमाईआ। जो कुछ होऊ मैं करूँ सच्ची दारी, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। लख चुरासी चीर फाड़ी, मच्छ डड्डु हट्टो हट्ट विकाईआ। गुरसिखां देवां इक्को नाम डाली, धुरदरगाही फल खवाईआ। सोहँ बोलो सच जैकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाईआ।

प्रशाद देणा इक्को किणका, हरि जू मंग मंगाईआ। वेखो लहिणा जिन जिन का, दर दर रिहा चुकाईआ। करे खेल छिन्न छिन्न का, छिन्न भंगर फेरा पाईआ। लेखा इन बिन का, इन बिन आपणा रंग रंगाईआ। चौदां पन्द्रां सोलां मेल मिलाया तिन्न दिन का, त्रैलोक वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत प्रसाद लोकमात दी साची दाद, सचखण्ड लै के जाए चाईं चाईंआ। सचखण्ड जा के देवे भोरा भोरा, भोरा आप वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण थोड़ा, क्यों नहीं साडे बुक्क भराइंदा। जिनृां दी पूरी कर के आया लोड़ां, लोहड़ा साडे कोलों क्यों शरमाइंदा। असीं तेरा गा के आए दोहरा, छत्ती रागां गंढु पुआइंदा। की होया जे अन्तिम इक सस्से उत्ते लाया होड़ा, होका सब नूं इक सुणाइंदा। बेपरवाह क्यों सानूं दित्ता जवाब कोरा, साडा लेखा लिख्त पढ़त विच नहीं आइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मेरा आदि जुगादि इक्को जोड़ा, जुग जुग आप रखाइंदा। जो कहे मैं तेरा तूं मेरा, मेरा तेरा भेव कोए ना पाइंदा। चार जुग भाउदा रिहा कर कर हेरा फेरा, हिरस सब दी नाल रलाइंदा। वेखो सारयां दा ख़ाली कीता डेरा, अन्दर वड़

आपणा हुक्म ना कोए सुणाइंदा। चारों कुण्ट होए झेड़ा, झिड़कां सब नूं आप पुआइंदा। पीर पैगम्बर कहिण आपणी मर्ज़ी नाल करे नबेड़ा, मज़ा सब नूं की चखाइंदा। नाँ रख के आपणा वड्डा सिँघ शेरा, हो शेर भब्बक लगाइंदा। दो जहान इक्को वार पाया घेरा, चार कुण्ट राह नज़र कोए ना आइंदा। किन्नां चिर बैठे कर के जेरा, दिने रातीं हुक्म सुणाइंदा। भुख्यां नंगयां उत्ते करें मेहरा, सानूं गल ना कोए सुणाइंदा। की दस्सीए ओथे केहड़ा केहड़ा, पूरब विछड़े मेल मिलाइंदा। बिन बस्तीयों बिन नगरों वसाया खेड़ा, कक्खां कुली भाग लगाइंदा। जगत पीर पैगम्बर आसा तृष्ना लाया झेड़ा, देवर भाबी रूप वटाइंदा। अन्त आपणे हथ्थ रखे बेड़ा, बिन बेड़यों पार कराइंदा। गुरसिखां कीती मेहरा, मेहर आपणी झोली भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत प्रसाद हरि दरगाह देवे दाद, आपणी हथ्थीं आप वरताइंदा। भोरा भोरा सारे खाओ, ख़ालक रिहा समझाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार सारे ढोला गाओ, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। चरण कँवल बहि बहि खुशी मनाओ, आपणा माण मिटाईआ। लोकमात ध्यान लगाओ, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। जिस दुआरे हरि जू हरि भगतां लागे पाउँ, निउँ निउँ आपणा ससि झुकाईआ। तिस दुआरे बलि बलि जाओ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद देवे सति, लड़ना झगड़ना दीन मज़्हब छड्डो अन्त, आपणी पत लओ रखाईआ। सारे कहिण असीं खावांगे। सोहँ ढोला गावांगे। पुरख अबिनाशी मनावांगे। हरिसंगत दर्शन पावांगे। निउँ निउँ सीस झुकावांगे। तेरे गुरसिखां दा राह तकावांगे। अग्गों हो हो गले लगावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा साचा वर, दूजी ओट ना कोए तकावांगे। असीं गीत तेरा गाउणा, इक्को नाम सच ध्याउणा, गुरमुख तेरा नज़री आउणा, प्रेम प्यार इक वधौणा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं लोकमात नस्सांगा। भगतां नूं जा के दस्सांगा। उहनां विच बहि के वसांगा। अन्त पत उहनां दी रखांगा। पर्दा आपणी हथ्थीं ढक्कांगा। तुहाडे कोलों मूल ना झकांगा। ना थक्कांगा ना अक्कांगा। शेर वांगू मार भबक सब नूं मूँह दे भार सुटांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आपे रखांगा। गुरमुखां मैं जावां कोल, कुल आपणी दयां समझाईआ। ध्यान ना करना कोई उपर धौल, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। बिन खंडिउँ अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के अमृत आत्म छका के आवां पौहल, अमृत कोए रहिण ना पाईआ। प्रेम पतासा प्यावां घोल, घोली वारी सदके जाईआ। आपणी हथ्थीं कुण्डा आवां खोल्ह, खिड़की बंद ना कोए कराईआ। जिथ्थे पुजे ना कोई पंडत पांधा रौल, ग्रंथी बाणी ना कोए सुणाईआ। मौलवी करे ना कोई कौल, कलमा रसना ना कोए गाईआ। इके वेर बदल देवां माहौल, मोहर आपणे नाम लगाईआ। वेखो कर कर वेखे घोल, टक्कर

टक्कर नाल टकराईआ। आप बैठा रहे अडोल, अटल मनार सच्चा माहीआ। गुरमुखां देवे सच झकोल, झकोला, इक्को इक जणाईआ। हरिसंगत तेरा प्रसाद अनमोल, हरि जू आपणे हथ्थां उत्ते लगाईआ। सदा रखे आपणे कोल, अन्दर आपणे लए छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहँ ढोला आपे बोल, आत्म परमात्म परमात्म आत्म धर्म समाप्त सब कराईआ। ढाई उत्ते साढे तिन्न, साढे तिन्न तिन्न वंड वंडाईआ। साढे तिन्न ढाई रहे गिण, गिणती मिणती आपे रिहा समझाईआ। छे घर छे गुर वेखणहार छिन्न छिन्न, छे शास्त्र लेखा रिहा मुकाईआ। वक्त लँघाया गिण गिण, घड़ी पल वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे तिन्न जोड़ ढाई उलटा कर वज्जे वधाईआ। सोलां मग्घर समाप्त दिन, छे वजे रात अन्धेरी आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रात दिवस दिवस रात गुरसिखां गुरमुखां हरिसंगत हरि जू अन्दर बाहर आपणे नाल करी कुड़माईआ। घड़ी कहे मेरे वज्ज गए छे, उलटया नौ छे रूप वटाईआ। सारा दिन पीरां पैगम्बरां गुर अवतारां दी लैंदी रही हे भे, प्रभ की की खेल रचाईआ। होई रैण होई शाम सारयां बसते ठप्पे अल्फ़ ये, मकतब खुल्हा नज़र कोए ना आईआ। फट्टीआं उत्ते झाड़न खेह, हथ्थ हथ्थां नाल मिलाईआ। सारे कहिण दरोही खुदाए दी बिन परवरदिगार कोई ना सच्चा नेंह, बिन अकाल ना कोए सहाईआ। सारे पंज तत्त काया माटी कर के आए खेह, खेह जगत नाल उडाईआ। आई रैण मिले सैण सज्जण एह, जिस आपणी खेल रचाईआ। इस हथ्थ लै इस हथ्थ दे, दिवस रात इक्को हुक्म वरताईआ। चार जुग चुप कर के असीं रहे बहे, बीती कहाणी ना किसे सुणाईआ। पीर पैगम्बरां नाल करदे रहे खहि, कलमा शब्द नाल लड़ाईआ। अन्त बिन लंगोटिउँ बिन खाड़यों गए ढह, हरि जू धक्का इक्को लाईआ। आओ भाणा लईए सहि, रैण अन्धेरी नज़री आईआ। गुरमुख विरला लाहा मात लए, जिस सिर आपणी नज़र उठाईआ। नाल हो के अन्दर वड़ के फड़ फड़ बाहों देवे शहि, निरभउ भय रिहा चुकाईआ। जो दिने चरणीं बैठे रहे, सो अन्त रात विछड़ ना जाईआ। आदि जुगादि जुगो जुग इक्को जिहा रहे, वधे घटे ना मेरा माहीआ। छे वजे छैल छबीला कहे, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जो जन मेरा नाम लए, लायक पुत्तर सो अख्वाईआ। सृष्ट सबाई होणी खै, ख़ालक लुट्टे वाहो दाहीआ। गुरमुख तेरे पंघूड़े सचखण्ड डहे, सिँघ पाल सवरन जगदीश मनजीत गुरदयाल राह तकाईआ। पंच परवान कर के फेर बोले जै, पंच प्रधान दए बणाईआ। प्रगट हो के कहे, मैं हँकार विच आया सच्चा माहीआ। सारे कहिण, हैं, की पुरख अकाल वेस वटाईआ। पंडत मुलाणे ग्रंथी सारे करन भैं भैं भैं, भेडां बक्करीआं वांग कुरलाईआ। हरिभगत हरिसन्त गुरमुख गुरसिख कहिण तेरी जै, जै जैकार ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी वस्त गुरसिखां दए, देंदयां तोट कदे ना आईआ। इकट्ठे हो के लौण ज़ोर, मता आपणा इक पकाईआ। चलो रल के पाईए शोर, साडी कीती क्यों रिहा उलटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रखी साडी लोड़, हुण अन्त क्यों ग्यों भुलाईआ। जुग चौकड़ी मंत्र देंदा रिहों होर होर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान कर पढ़ाईआ। आपणे हथ्थ फड़ के डोर, गुडीआ लोकमात नचाईआ। कर प्रकाश पंज तत्त गोर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर नाउँ रख के दित्ते तोर, पिच्छों तोड़ा आपणा नाम लगाईआ। हुण क्यों अन्त साडे अग्गे अटकाए रोड़, रेड़का ऐवें बैठा पाईआ। पुरख अबिनाशी कहे हुण तुहाढ्ढी पै गई लोड़, लोकमात तों खिच आपणे चरण बहाईआ। मैं लग्गा रंग रंगण मढ़ी गोर, घर इक्को इक वखाईआ। अन्त जिस तरां तुहानूं पै गई मेरी लोड़, मेरे बिनां नज़र कोई ना आईआ। मैं चाहुन्दा हां एहो लड़ी लोकमात देवां तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। कोई दीन मज़्ज़ब ज़ात पात पंज तत्त रसना कहे ना पुरख अकाल होर, खुदावंद चोर राम अडोल, कृष्न मुक्ट सीस टिकाईआ। मैं अन्त मिटौणे सारे घोल, घुरकी इक्को नाम वखाईआ। अग्गे वज्जण नहीं देणा रोल, नरोल आपणा नाम जपाईआ। एथे ओथे दो जहान सारे इक्को अक्खर लैणा बोल, बोल बाला इक सुणाईआ। आपणी हथ्थीं तोलणा तोल, कंडा आपणा आप उठाईआ। तुसीं बच्चे अजे अनभोल, मेरी गत किसे ना पाईआ। की होया जे नानक पिच्छे सद्दे कोल, गोबिन्द कीता कौल पूर कराईआ। पूरन अन्दर पूरन हो के गया मौल, मुल्क छड्डया आपणा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हौली हौली सब किछ रिहा समझाईआ। भगत कहिण भगवान पढ़, पट्टी इक्को हथ्थ फड़ाईआ। पहलों साडे अन्दर वड़, फेर लिखणा देईए समझाईआ। अन्दर वड़ के उंगली फड़, बिन उंगलीयों लै फिराईआ। फेर रख साडा डर, नैण अक्ख शरमाईआ। जो दस्सीए सो लैणा कर, साडा कर्म कांड गंवाईआ। जे कहीए दे वर, तूं कहिणा मैं भुल्ल दिती बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे नाम सदा वड्याईआ। गुरसिखो मैं पढ़न आया ऊड़ा, एकँकार रूप वटाईआ। तुसीं रंग चाढ़ो गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। मैं मस्तक लावां धूढ़ा, तुहाढ्ढी होए ना कदे जुदाईआ। जो दस्सो मैं करूँ पूरा, पूरने पूरन रिहा पाईआ। तुहाढ्ढा बचन ना करूँ अधूरा, जो सुणया सो आपणे विच छुपाईआ। मार कुट्ट भावें करो चूरा चूरा, तुहाढ्ढा पिच्छा छड्ड ना जाईआ। गुरसिख उस्ताद मैनूं मंज़ूरा, जिस दी भुल्ले ना कदे पढ़ाईआ। सेवा करां बण मज़दूरा, उजरत मंगां ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ। गुरसिख कहे भगवान लिख, लिखणा इक्को इक जणाईआ। पहलों बणा आपणे सिख, फेर आपणी गोद बहाईआ। चरण

प्रीती पा भिख, इक्को मंग मंगाईआ। जिध्धर वेखीए पएं दिस, तेरा नूर रुशनाईआ। साडा हरफ़ इक अनडिठ, गुरमुख रहे जणाईआ। जे सानूं दिती पिठ्ठ, अग्गे दस्सणी नहीं असीं पढ़ाईआ। तूं कहु तुसीं गए जित, हार आपणे कोल रखाईआ। जिस टिल्ले चढ़ के कबीर जुलाहे मारी छिक्क, याद कीता बेपरवाहीआ। असीं पढ़ाउणा तैनूं ओस स्कूल विच, मकतब होर ना कोए वखाईआ। फड़ बाहों सानूं लै चल खिच, फेर दस्सीए किस तरां पाणी विच घोली दी शाहीआ। जिन्ना चिर ना करें सानूं जिच, आपणी तंगी ना दएं जणाईआ। ओनां चिर लिखणा ना सकें सिख, कलम हथ्थ ना तेरे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरसिख तेरी पाठशाला, श्री भगवान वेख खुशी मनाइंदा। पहलों सुण मेरा अहिवाला, ऐहल आपणा भेव जणाइंदा। मैनूं सौखा दस्सणा स्वाला, जिस दा अंक नज़र कोए ना आइंदा। मैं निक्का बण बाल अञ्याणा, पढ़न दवारे तेरे आइंदा। पहलो हथ्थ फड़ा काना, जिस दा सिर कट कलम रूप वटाइंदा। फेर मैं सुणां तेरा गाणा, तेरा गाणा सोहँ मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआर पढ़न आप आइंदा। नाज़र सिँघ किशन सिँघ अजीत सिँघ चेला सिँघ चार हो इकठ्ठे, प्रभ सीस ताज लाज रखाईआ। हथ्थ उठाओ उपर अठ्ठे, पुरख अबिनाशी तुहाढ्ढी ओट तकाईआ। सरन सरनाई सतिगुर ढठ्ठे, ढै ढै शुकर मनाईआ। गल पा पल्लू वास्ता घत्ते, घत्त वहीर आया बेपरवाहीआ। तुहाढ्ढे पिच्छे बच्चे नीहां हेठां रखे, साची सेव इक कमाईआ। आपणे झुग्गे कीते सखे, तुहाढ्ढे सखणे घर वसाईआ। तुसीं वेखो आपणी प्रेम अक्खे, मेरी अक्ख तुहाढ्ढा राह तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहि जाण हक़े बक्के, अबूबकर बैठा सीस झुकाईआ। सब दी अक्खीं पाओ घट्टे, घाटा इक्को पूर कराईआ। जिस नूं धन्ने पाया विच्चों वट्टे, सो वट्टा देण आईआ। वेखो लोकाई सिआपा घत्ते, गुरमुख उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बीजो नाम हरि के वत्ते, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। बण सवाणी लै के आए भत्ते, नाम कटोरा हथ्थ उठाईआ। सब दे ख़ाली करे छिक्के, वस्त अमोलक विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़े साध सन्त राए धर्म अग्गे हक़े, डण्डा इक्को हथ्थ उठाईआ। जिन्हां मस्तक लाए टिक्के, बण गुरू गद्दी हंढ्ढाईआ। तिन्हां एथे ओथे मूँह फिट्टे, फिट आपणी ज़ात गंवाईआ। अन्दरों रहे निक्के, बाहर वड्डी कीती चतुराईआ। रस सारे हो गए फिके, फिकरा सच ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी चढ़या सब दी हिक़े, साह उपर हेठां रहे खिचाईआ। वेखो वांग मतीरयां फिसे, मता हरि जू ल्या पकाईआ। माण गुरमुखां इक्को दित्ते, गुरसिखां वड वड्याईआ। अन्तिम आया आप हिस्से, हिस्सा आपणा वंड वखाईआ। लख चुरासी किसे ना दिसे, अक्खां वाले देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी साया इक रखाईआ।

गुरमुख तेरे अठ्ठ तत्त, चार जुग अठ्ठ तत्त मेल मिलाया। तुहाडे हेठां वड़या पुरख समरथ, इक्को ओट तकाया। तुसां पत लैणी रख, प्रीत तुहाडे नाल लगाया। बौहड़ी हुण ना होणा वक्ख, विछोड़ा झल्लया ना जाया। घर आ के गया दस्स, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। हुण कोई ना चलणा मेरा वस, जो होणा सो दए वरताया। तुसां पूरी करनी आस, आस रख के इक्को आया। मेरे हो के वसणा मेरे पास, मेरी पग ना देणी रुलाया। वेखो आपणे उच्चे हाथ, हथ्थो हथ्थी सौदा रिहा मुकाया। ना कोई करो पूजा पाठ, बिन पढ़ियां पार लँघाया। जिस मुकाई आपणी वाट, सो तुहाडा पन्ध दए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठां बाहवां हेठ आप आया। बाहवां अठ्ठ अठ्ठ तत्त, तत्त तत्त करे सफ़ाईआ। गुरमुख चार गए दस्स, चौथे जुग खेल रचाईआ। चौंह वरना दा इक्को जस, चारों तरफ़ दए सुणाईआ। चार यारी होई बस, मेरे यार मेरीआं पकड़न बाहींआ। अग्गे पंजां मार्ग देवां दस्स, लाल सिँघ नाल रलाईआ। उठ नाल कर इकठ्ठ, पुरख अबिनाशी दए समझाईआ। तुहाडी चरणीं गया ढठ्ठ, चरण मंगी इक सरनाईआ। तुसीं सारे करो इक्को हठ, बिन प्रभ दूजे सीस ना किसे झुकाईआ। आपणे अन्दर दे लओ गठ्ठ, ना कोई खोल्ह खोल्ह खुल्हाईआ। तुहाडे चरणां हेठां तीर्थ अठसठ, चार जुग दी विद्या तुहाडी करे पढ़ाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान गीता ज्ञान गुरू ग्रन्थ गुर बाणी तुहाडा राह रही दस्स, भगवन इक्को ढोला गाईआ। सारयां जिध्धर जाओ कहिणा हस्स, पारब्रह्म प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। पिछले सारे दित्ते छड्ड, गुरदर मन्दिर मस्जिद कम्म किसे ना आईआ। असीं हो गए सब तों अड्ड, साक सज्जण ना कोए रखाईआ। जिस निशाना दित्ता गड्ड, उस दी इक्को ओट तकाईआ। असीं विष्नूं होए यद, भगवन मिल्या चाईं चाईंआ। दीन मज़्हब पार कीती हद्द, ज़ात पात धक्के दे दे परे हटाईआ। इक्को नाम पीती मध, मधर रस ना कोए रखाईआ। केते गुर अवतार पीर पैगम्बर गए लद्द, कोटन कोटि फेरीआं पाईआ। पिच्छे कथा कहाणी गए छड्ड, लिख वारता जगत समझाईआ। हुक्मे अन्दर पुरख अबिनाशी लए सद्द, बिन भगतां लैण किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, कड़िकी आपणी विच फसाईआ। डूँग्घी वड़या अन्दर खड्ड, खुड्डा आपणा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां अठ्ठां बाहवां हेठां लए कराईआ। अठ्ठे बाहींआं आईआं हेठ, हेठली उत्ते कराइंदा। रुलदे फिरन वड वड सेठ, धक्का सब नूं आप लगाइंदा। अग्नी तपे इक्को जेठ, तत्ती वा वगाइंदा। फेर लभ्भण केते केत, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। अन्तिम सुंञा होणा खेत, पाहरू हो ना कोए बचाइंदा। सब दे सिर विच पैणी रेत, बालू तत्ती आप उडाइंदा। जिन्हां दरसया आपणा भेत, तिन्हां भरा भतीजे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौसठ घड़ी गुरमुखां राह तकाइंदा। चौसठ घड़ी होई कलजोगण, कलिजुग रूप वटाईआ। मूर्ख मुग्ध मूढ़ कूड़ी क्रिया भोग भोगण, भगवन नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई होई रोगण, हउमे रोग ना कोए गंवाईआ। भुक्खी नंगी होई जोगण, जुगती हथ्थ किसे ना आईआ। साध सन्त कहिण असीं नार संजोगण, पुरख अबिनाशी धक्के दे दे बाहर कढ्ढाईआ। आपणी कीती अन्तिम भोगण, ना सके कोए बचाईआ। दर दर घर घर होए सोगण, चिन्ता सब नूं रही खाईआ। पिछला लिख्या लेख पढ़ पढ़ सारे घोखण, घोख्यां हथ्थ किसे ना आईआ। सारे होए अन्दरों थोथण, थोथी मति रखाईआ। पीरां अग्गे चढ़ाउदे बोतल, तन संधूर रंग रंगाईआ। गुरदुआरा मन्दिर मस्जिद शिवदुआला बणाया होटल, नार वेसवा रहे हंढ्ढाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तिम सब दा करन लग्गा टोटल, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चारे एका रंग वखाईआ। माझा जम्मू मालवा दुआबा, सीस जगदीश सुहाया। इस दे अन्दर हो के लुक्या काअबा, मुख़बर हो के हरि जू भेव सुणाया। कदी कदी बाहरों मार जाए दाबा, अन्दर प्रेम प्रेम वधाया। कदी बणे शाह राजा, सीस आपणे ताज टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार चार भेव जणाया। चारे होए साचे मुख, चार मुख ताज वड्याईआ।
२२० पंजवां आपे बैठा विच्चों उठ, सोहँ रूप वखाईआ। गुरमुख सतारे नाल गए जुट, साचे सीस करन रुशनाईआ। धरत २२०
१३ मात विच्चों पुट्ट, आपणे अंग लगाईआ। अन्त सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। नाल गोबिन्द मिल्या पुत्त, १३
पोतरे गुरमुख रिहा वखाईआ। सारे इक्को वार जाओ झुक, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग किसे नूं दस्सदा रिहा कुछ किसे नूं कुछ, आपणा भेव ना कोए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगत दुआरे आया लुक लुक, लुकवीं खेल जणाईआ। अन्तिम मीटी गई पुग, आपणी हथ्थीं गुरसिखां पकड़े बाहींआं। फिर गोदी लए चुक्क, दो जहान फिरे चाईं चाईंआ। गुरसिख सौणा सेज घूक, सुत्यां फेर ना कोए उठाईआ। जिस वेले प्रभ चाहे मैं वेखां आपणा पुत्त, फिर हौली हौली लए जगाईआ। तुसां रहिणा हुण चुप्प, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। इक्को भेत लैणा पुछ, मिलें केहड़ी थाईंआ। गुरमुख कहे अग्गों उठ, प्रभ दे सच समझाईआ। श्री भगवान कहे मैं गया तुठ, दीन आपणी दया कमाईआ। सब नूं वखाई आपणी ठुठ, ख़ाली हथ्थ फिराईआ। तुसीं रल के चरण फड़ लओ घुट, घुट घुट छाती नाल लगाईआ। इक दूजे नूं सारे लओ पुच्छ, की घर घर आवे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। अठ्ठां हथ्थां कीती छाँ, अठ्ठ दस भेव चुकाइंदा। इक्को सिमरे हरि जू नाँ, जन

भगतां ढोला गाइंदा। जिन्हां निथाव्याँ नूं दित्ता थाँ, निथावा शुकर शुकर मनाइंदा। लेखा जाण पिता माँ, बंस सरबंस वेख वखाइंदा। आप मिलाए हां विच हां, तूं मैं भेव जणाइंदा। प्रगट करे एका नाँ, सोहँ ढोला सच्चा गाइंदा। जन भगतां पकड़े बांह, बांह भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। गुरसिख करयो ना अगों नांह, नानक गोबिन्द गुरसिख राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सहिज सहिज सज्जणां मेल मिलाइंदा। काणा कौंटा छड्डीआं गड्डीआं, गाडीवान खेल कराईआ। सिंमल सकोर प्रीतां लग्गीआं, प्रेम आपणा रंग वखाईआ। गुरमुखां जोतां जगीआं, जगत होए रुशनाईआ। तोड़ निभावे पिछलीआं लग्गीआं, अगला पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां नाल मिलाए गुरमुख सखीआं, सखा सुहेला सच्चा माहीआ। भाग लगाए कुली कक्खीआं, कक्खों लख बणाईआ। करे वास विच जा के पक्खीआं, पत्तण आपणी हद्द जणाईआ। नाल लै के जाए प्रेम रस्सीआं, रस्ता सब दा साफ़ कराईआ। वेखणहारा माढ़ीआं अच्छीआं, कोझीआं कमलीआं गले लगाईआ। रूहां पार कराए सच्चीयां, बद रूहां धक्के रिहा लगाईआ। जेहड़ीआं हुण वी रहि गईआं कच्चीयां, हरि संग ना कोए रखाईआ। प्रभ गल्लां दस्से सच्चीयां, वल छल ना कोए जणाईआ। एह निक्कीआं निक्कीआं बच्चीयां, आपणी गोद बहाईआ। जिन्हां दीआं पत्तां आप रखीआं, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सौदा लैण ना जाण किसे हट्टीआं, हट्ट हट्ट ना किसे फिराईआ। गुरमुख विरले खट्टीआं खट्टीआं, खट्टी होई सर्ब लोकाईआ। बचन सिँघ आपणे सीस गुंदौणीआं पट्टीआं, पटने वाला आया माहीआ। वेखो सारे भरदे चट्टीआं, रस अमृत ना किसे चखाईआ। मन्दिरां अन्दर बालदे हथ्थां नाल वट वट वट्टीआं, पा घृत तेल माचस अग्नी लाईआ। धरदे ध्यान अक्खां ते बन्न्ह के पट्टीआं, कन्नां विच उँगलां पाईआ। सुरतीआं धीआं भैणां पिच्छे फिरन नट्ठीआं, मन वासना बंद ना कोए कराईआ। ऐंवें फोकीआं माला रटीआं, सिम्रने कूकण देण दुहाईआ। हीर वांग ना बणीआं जट्टीआं, माही इक ना कोए हंढुाईआ। चारों कुण्ट दीनां मज़्हबां वहीरां घत्तीआं, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले रोवण वाहो दाहीआ। साधां सन्तां काज़ीआं पंडतां इक दूजे नाल रख लईआं पत्तीआं, हिस्सा रहे वंडाईआ। मुल्लां शेख़ां दाढ़ीआं रत्तीआं, रत्ती नाम नज़र कोए ना आईआ। कर पखण्ड तन लावण सीखां तत्तीआं, अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। गुरसिख तेरीआं फ़सलां पक्कीआं, वढुण आए सच्चा माहीआ। आंढणां गवांढणां रहि जाण हक़ीआं बक्कीआं, हरि जू की की खेल रचाईआ। दुनियां रहि जाए बन्न्हदी कट्टीआं वच्छीआं, कटक सब ते रिहा चढ़ाईआ। अग्ग सेकदे रहि जाए फफीआं, पछोतावा सर्ब लोकाईआ। चारों कुण्ट सब नूं पैणीआं ग़शीआं, गशते चढ़या सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख तेरे मिलण दीआं तेरीआं अक्खीआं, तेरे तन छुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां नाल लगाईआं पक्कीआं, पक्की आपणी रिहा

पकाईआ। कछैहरे लंगोटे बन्ने तहिमत, सारे तोहमत रहे लगाईआ। जे तूं करन वाला रहमत, रैहम किथे बैठा छुपाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरे नाल सारे हो जाओ सहिमत, सफ़ल सब नूं दयां कराईआ। जिहड़ा भुलया होया अहिमक, एथे ओथे रिहा शुदाईआ। हरि जू निक्का वड्डा काया अन्दर इक मकैनिक, पुरज़ा पुरज़ा खोल्हे जोड़े वेखे थाउँ थाईंआ। बुड्ढा हो के ला लए ऐनक, अक्खां आपणीआं लए बदलाईआ। आपे सैनक आपे दैनक, दयानिध वड वड्याईआ। गुरमुखां चोरी चोरी मारे आपणी सैनत, पलक पलक नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। सिर दस्तार पगड़ी रखे दोपट्टे, वल विंगे टेडे लाईआ। सारे जट्ट हट्टे कट्टे, बैठे घेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी विचारा किथे नट्ठे, राह नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां प्रेम प्याले पीते लाह के नाम सुराही गटे, खुमारी चढ़ी वाहो दाहीआ। होए मस्ताने आए नट्ठे, प्रभ चरणी डेरा लाईआ। जे कोई पिच्छे धक्के, पिच्छे परत कोए ना जाईआ। अग्गे आ के कहिण असीं तेरे सके, नाता तेरे चरण जुड़ाईआ। तेरे रंग अन्दर रते, रत्ती रत्त सुकाईआ। असीं इकठ्ठयां कीते इक्को पक्के मते, मनमति देणी तजाईआ। वासते प्रभ जू अग्गे घत्ते, कीती घाल लेखे लाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान लेखे लाए हथ्थ अट्ठे, दहि दिशा हथ्थ उठाईआ। पाए कमीज़ गल कुड़ते, फिरन वाहो दाहीआ। चलदयां फिरदयां

२२२
१३

आए मुड़के, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। कोई आया हेरों कोई रुढ़के, कोई बोपारां तजाईआ। कोई गोराया आया छड्ड के, कोई डलेवालों मुख भुआईआ। कोई हरी पुरों आया लड़ के, कोई झण्डेर रिहा तजाईआ। कोई जंडयालिउँ आया यक्के चढ़ के, कोई चीमिउँ फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी ल्यांदे आप फड़ के, करया खेल बेपरवाहीआ। सिंघ गुरमेज मिल्या अज तड़के, तक्कड़ हरि जू आप तुलाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू इक्को जेहे कर के, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। पिछले फोलणे छड्डो वरके, वरका सब दा दित्ता उलटाईआ। खोटे खरे आपे परखे, नाम कसवटी हथ्थ उठाईआ। गुरसिख ना कोई सोग ना कोई हरखे, चिन्ता रोग ना कोए जणाईआ। नित नवित्त करो दरसे, दर्शन आपणा आप वखाईआ। अमृत मेघ इक्को बरसे, सांतक सति सति कराईआ। वड्डयां छोटयाँ नाल इक्को रंग वरते, अमीरां ग़रीबां इक्को राह चलाईआ। खुशी होवे सौं के उत्ते फ़रसे, गुरसिख वछाउणा इक वछाईआ। जिहड़े छड्ड के आया सरसे, गोबिन्द अन्त ल्या मिलाईआ। गुरसिख मेरा कोई ना तरसे, तृखा सब दी रिहा बुझाईआ। जिउँ चाढ़े उपर चरखे, चरख़ड़ी वांग भुआईआ। जिहड़े देग़ां विच उबाले धर के, धरनी खेल वखाईआ। सो वेखो ल्यांदे फड़ के, दयाला सिंघ नसीब रूप वटाईआ। प्रेम प्यार अन्दर जड़ के, जोड़ी जुगत नाल जुड़ाईआ। पिच्छे कोई ना रहि जाए अड़ के, अड़िका सब दा रिहा हटाईआ। पहलों आया

घाड़न घड़ के, फेर आपणी बणत बणाईआ। अस्व घोड़े साचे चढ़ के, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख बणाए बरदे, वरदी आपणे नाम पहनाईआ। सारे गाओ गीत हरि हरि दे, हरिजन हरि जू आप सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे जाणे घर घर दे, क्या कोई रखे भेद छुपाईआ। चोरी यारी जो जन करदे, सब दा लेखा रिहा लिखाईआ। जो जन चरणी सीस धरदे, तिन्हां आपणे नाल मिलाईआ। गुरसिख सो जो सतिगुर कोलों डरदे, सो गुरसिख सतिगुर भाईआ। बाकी सारे जम्मदे मरदे, जो बैठे मुख भुआईआ। माणस जन्म आपणा हरदे, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। पुत्तर मावां नाल लड़दे, क्यों जंम्यां मेरी माईआ। मैनूं क्यों ना घल्लया जिथ्थे भगत पढ़दे, श्री भगवान रिहा पढ़ाईआ। नहीं काइदे कोई हथ्थीं फड़दे, अन्दर वड़ के रिहा समझाईआ। सोहँ गाउँदे डरदे डरदे, कोई सुण ना लए लोकाईआ। पुरख अबिनाशी लख चुरासी विच्चों गुरसिख कढ्ढे तरदे तरदे, तुरंत आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख बणाए हरि दे, हिरदे हरि जू आपणा असण लाईआ। बाकी फोकीआं गल्लां करदे, रसनां नाल चतुराईआ। अन्दर काम वासना नाल लड़दे, क्रोध रिहा टकराईआ। जो सतिगुर पूरे सरनी पड़दे, तिस पर्दा देवे पाईआ। साचे पौड़े गुरसिख चढ़दे, सतिगुर हथ्थां उत्ते उठाईआ। सचखण्ड दुआरे जा के खड़दे, आखण आ मिल मेरे माहीआ। असीं प्यारे तेरे दर दे, तेरे प्यार खेल रचाईआ। पुरख अबिनाशी कहे असीं इक दूजे दे बरदे, सेवक सेवा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां गुरसिख वेखे रखे कला चढ़दे, लहिंदी धार ना कोए वखाईआ।

❇ १७ मग्घर २०१६ बिक्रमी हज़ारा सिँघ बलाका सिँघ बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ❇

ताज कहे मैं सच्चा ताज, ताजर दो जहान अख्वाइंदा। मेरा मित्र गुरू महाराज, शाह पातशाह नाउँ रखाइंदा। जिस ने मेरी रखी लाज, फड़ आपणे सीस टिकाइंदा। फेर निरगुण रच रच काज, करता आपणी खेल कराइंदा। सचखण्ड बहि के मारे आवाज, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। कर किरपा बख्शया राज, साची सेव लगाइंदा। सच चलाउणा इक जहाज, बेड़ा इक्को इक प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण रखणी लाज, लाजावन्त आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा खेल कराइंदा। ताज कहे प्रभ दित्ता माण, नथावें मिली वड्याईआ। किरपा कर श्री भगवान, मेरी बणत बणाईआ। आपणी इच्छया कर प्रधान, भिच्छया झोली पाईआ। निरगुण नूर खेल महान, निराकार

आप कराईआ। सचखण्ड किला कर परवान, सस्सा सतिगुर आप समाईआ। आपणी बिंद सच निशान, सुत दुलारा लए प्रगटाईआ। शब्दी नूर नौजवान, नर नरायण लए धराईआ। हाहा हरि का रूप हरी सन्तान, पीहड़ी आपणी आप वधाईआ। थिर घर खोल्ह विच मकान, सचखण्ड अन्दर रिहा वखाईआ। सस्सा साहिब बण म्यान, हाहा आपणी धार विच छुपाईआ। ईड़ी इष्ट वड मेहरवान, आशक माशूक आपणी खेल कराईआ। ऐड़ा अक्ख प्रतख खोल्ह श्री भगवान, आपणा पर्दा आप उठाईआ। ऊड़ा उपर नीचे ना कोए निशान, सज्जे खब्बे ना कोए वखाईआ। इक्को नूर जोत महान, जोती जाता डगमगाईआ। एकँकारा बणा विधान, ऐड़ा अक्ख आप खुल्हाईआ। ईड़ी एथे ओथे हुक्मरान, दो जहानां हुक्म मनाईआ। सस्सा सच करे कल्याण, सोहला इक्को इक गाईआ। हाहा हरदम कर परवान, बैठा सीस झुकाईआ। साचा मुख मुख मेहरवान, निरगुण निरगुण विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे ताज दए वड्याईआ। सस्से अन्दर हाहा रख, हरि जू आपणा खेल कराया। होड़ा बिंदी कीता पक्ख, हरि मन्दिर दए वडयाया। निरँकार निराकार नूर नुराना कर प्रतख, किरन किरन टपकाया। कल्ही रूप आपणा दस्स, सिर आपणे आप टिकाया। ना कोई महिमा ना कोई जस, ना कोई लेख समझाया। ना कोई ओथे रिहा वस, जिस दर कल्ही आपणा नैण खुल्हाया। आपणे अग्गे आपे कहे बस बस, वास्ता आपणा पाया। मैं थल्ले आवां नस्स, आपणा राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाया। ताज कहे मैं वड वडभागा, हरि भागी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणा बणाया वड वड राजा, राज राजान होया सहाईआ। सचखण्ड दुआर बहि बहि आपणा रचया काजा, भेव अभेद छुपाईआ। आपणा खोल्ह आप दरवाजा, चारों कुण्ट कुण्डा लाहीआ। पहले घर शब्दी साजा, साजण आपणा खेल कराईआ। दूजे घर विष्नूं नाचा, विश्व आपणा राह चलाईआ। तीजे घर ब्रह्मा निउँ निउँ मंगे दाजा, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। चौथे घर शंकर कहे मेरी रखे लाजा, तुध बिन नज़र अवर कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं रचया आपणा सच समाजा, समाज इक्को इक बणाईआ। भूपत भूप शहिनशाह राजन राजा, हुक्म हाकम धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ताज दए वड्याईआ। साचे ताज चढ़या चा, हरि जू आपणा खेल कराया। आपणी हथ्थीं फड़ के ल्या सीस टिका, टिक्का आपणे मस्तक लाया। निक्का वड्डा दित्ता बणा, वड वड्डे बेपरवाहया। सचखण्ड निवासी आपणा सिक्का दित्ता चला, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। घर विच घर दित्ता खुल्हा, सचखण्ड अन्दर थिर घर आप प्रगटाया। सस्सा हाहा इक दूजे नाल जोड़ दित्ता जुड़ा, हाहा अन्दर वड़ वड़ खुशी मनाया । शब्दी कहे मोहे मिल्या मलाह,

मेरा बेड़ा कंध उठाया। विष्नूं कहे मेरे विच गया समा, समाप्त आपणा खेल कराया। ब्रह्मा कहे पारब्रह्म मेरी झोली वस्त दिती पा, सच भण्डार इक वरताया। शंकर कहे मेरी मस्तक धूढ़ी टिक्का दित्ता ला, चरण चरणोदक इक प्याया। ताज कहे मेरे चारे मुख बिन नैणां रहे शरमा, हरि जू की की खेल रचाया। कल्की कहे मैं वेखां थाउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाया। सारे कहो विष्न ब्रह्मा शिव सुत शब्द मेरी इक्को इक माया जिस दा कोई ना नाँ, लिखण पढ़न विच कदे ना आया। जिस दा लभ्भे किसे ना थाँ, मन्दिर मसीत ना कोए वखाया। जिस दी कन्त फड़े ना कोई बांह, फड़ बाहों गले ना कोए लगाया। जिस दी बणत कोई सके ना बणा, घड़नहार ठठयार नज़र कोए ना आया। जिस दा लेखा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाया। कर किरपा आपे बणे पिता आपे माँ, आप आपणा रंग रंगाया। ओथे दूजा कोई ना करे हां, हां नाल हां ना कोए मिलाया। इक इकल्ला शहिनशाह, सच सिँघासण सोभा पाया। साचा मार्ग रिहा जणा, शब्दी सुत सुत उठाया। विष्न ब्रह्मा शिव लए पढ़ा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। सच संदेसा इक जणा, जन जननी लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीश ताज इक्को इक टिकाया। ताज कहे मोहे इक्को ओट, ओट ओट जणाईआ। सच प्रकाश निर्मल जोत, जोत जोत रुशनाईआ। खेलां खेल ओत पोत, पुत्त पोतरे हंढ्ढाईआ। निरगुण सरगुण कर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विष्न ब्रह्मा शिव तेरा लेखा त्रै त्रैलोक, लोक परलोक आपणा रंग वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गीत अतीत सुणाए सलोक, सोहला ढोला इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे ताज दए वड्याईआ। ताज कहे प्रभ साचे मीत, मोहे देणा सच बताईआ। आदि चलाई मेरी रीत, घर सच वज्जी वधाईआ। अग्गे दस्स खेल अनडीठ, किस बिध आपणा राह जणाईआ। पुरख अबिनाशी इक अतीत, तरा तरा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। सुण ताज मेरे साचे संगी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तेरी धार आपे रंगी, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। करे खेल सूरा सरबँगी, हुक्म हाकम आप मनाइंदा। एहो गल मोहे लग्गे चंगी, कल्की तोड़ा सीस टिकाइंदा। सच मंग दर साचे मंगी, दर पर्दा आप खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे भुयंगी, भुयंग आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। सुत दुलारा भुयंगी बाला, अनभव आप जणाईआ। खेले खेल तरंगी दयाला, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। धुर दा संगी बण कृपाला, कृपानिध दया कमाईआ। अग्गे मार्ग दस्से सुखाला, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधाना, लख चुरासी वेख वखाईआ। जगत

जोग राज चलाना, जीवण दए वड्याईआ। माणस मानुख कर प्रधाना, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी खेल महाना, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाईआ। अन्तिम कलिजुग गुर गोबिन्द सुत लोकमात प्रगटा निशाना, शब्दी सुत सिर इक्को कल्गी तोड़ा दए टिकाईआ। गोबिन्द मंगे अग्गे दाना, पुरख अकाल ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म मैं निक्का बाला, तेरी सार कोए ना पाईआ। तूं दो जहान रखवाला, गोबिन्द निक्के घर विच सेव कमाईआ। मेरी निमस्कार कर परवाना, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। साहिब सतिगुर सीस तेरे ताज सुहाना, आदि जुगादि तेरी वड्याईआ। जिस कोटन कोटि घल्ले कृष्न काहना, लोकमात मण्डल रास गए रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे ताज रिहा समझाईआ। सुण ताज मेरे सिर दे सिर, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। लोकमात वखावां तेरी धिर, धुर दरबारा आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी गेड़ा जाए गिढ़, गेड़ा गेड़े विच भुआइंदा। राज राजान शाह सुल्तान तेरे पिच्छे मरन भिड़ भिड़, तेरा भेव ना किसे जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी खिच के ल्यावां विच पिड़, पिण्डी सब दी वेख वखाइंदा। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बत्ती दन्दां नाल तेरी महिमा करदे रहिण किड़ किड़, कड़िकी विच सर्ब फसाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों गल्लां सुण हस्सण हिड़ हिड़, हट्ट हरि ना कोए वखाईआ। अन्तिम सारे दुआरे ख़ाली होण थिड़ थिड़, थिड़क्यां पैर ना कोए टिकाईआ। इक दूजे नाल मरन चिढ़ चिढ़, जिउँ चिड़ीआं बाज़ तुड़ाईआ। गोबिन्द कहे मैं तेरी करां सेवा गरुमुखां वेखां फिर फिर, घर घर सेव कमाईआ। तेरा रस चुआवां झिर झिर, बण झिरना सेव कमाईआ। अगम्मी धार झिर झिर, रस इक्को मुख चुआईआ। दूर दुराडा ज़िमी असमानों गिर गिर, गुरमुखां धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। आपणा नाउँ रखां निर निर, निरगुण निरँकार वेस वटाईआ। साचे ताज फेर हस्सणा खिड़ खिड़, हरि खिड़की दए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट वेखणा तिड़ तिड़, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे ताज दए वड्याईआ। ताज कहे मैं राजन राजा, राजन राज खेल कराईआ। दो जहानां रच रच काजा, करनी आपणी रिहा कमाईआ। भगतीयों देवे भगती दाजा, शक्तीयों शक्ति शक्ति प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सीस जगदीश जगदीश सीस इक्को ताज सुहाईआ। ताज कहे प्रभ तेरी मर्ज़ी, मेरी चले ना कोए वड्याईआ। मेरी इक्को इक तेरे अग्गे अर्ज़ी, बिन लिख्यां रिहा टिकाईआ। मैं सद बणया रहां फ़र्ज़ी, फ़र्ज़ तेरा पूर कराईआ। मोहे आपणी होए ना कोए गर्ज़ी, आसा आस ना कोए जणाईआ। तेरी सेवा करां हरि जी, जिस आपणे सीस दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल वेखां दर दर दी, दो जहानां

फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम मैनूं दिसे मेरी किरन लोकमात जाए बण के वंनगी, वंनगी तेरे सुत वखाईआ। गोबिन्द सिर बन्ने निक्की कल्गी, कल्गीआं वाला दया कमाईआ। किसे होर नज़र ना आवे एहदे वरगी, वरग सब नूं दए लगाईआ। कोटन कोटि राज राजान शाह सुल्तान आपणी बणौण वरदी, वाअदे ख़िलाफ़ अन्त होए सर्ब लोकाईआ। निक्की वंनगी तेरे दरदां मरदी, मरदी मरदी आपणा हाल सुणाईआ। पुरख अकाल तेरा ढोला पढ़दी, सीस ख़ाक नाल छुहाईआ। नेत्र नैण रखे दिशा चढ़दी, गोबिन्द अक्ख उठाईआ। ना कोई गर्मी ना कोई सर्दी, दुःख कोए ना लागे राईआ। मेरा भाणा बहि बहि जरदी, तेरे जल्वे विच समाईआ। दोए जोड़ बेनन्ती करदी, मन्न अरज़ोई मेरे माहीआ। कलिजुग अन्तिम वेख सृष्ट सबाई सड़दी, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। मैं दूर दुराडीआं आसां करदी, बैठी ध्यान लगाईआ। गल पा पल्ला वास्ता करदी, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। कल्गी कहे दस्स भगवान, इकल्ली कल्गी कम्म ना आईआ। गोबिन्द तैथों मंगे दान, तेरा दान गोबिन्द झोली डाहीआ। तेरा खण्डा तेरा म्यान, तेरा नूर तेरी रुशनाईआ। तेरा आत्म मेरा परमात्म खेल महान, दूजा नज़र कोई ना आईआ। तूं आपणे सिर उत्ते रख्या सस्सा हाहा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। क्यों सुत्ता सचखण्ड विच मकान, लोकमात फेरा क्यों ना पाईआ। गोबिन्द अड़ के मंगे दान, अग्गे हो के रिहा सुणाईआ। जिन्ना चिर ना रखें मेरा माण, तेरी मुहब्बत ना मोहे भाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। उठ बाल मेरे बाल निधान, फड़ गोदी लए बहाईआ। कलिजुग अन्तिम आवां निरगुण नूर महाबली बलवान, बल तेरा नाल मिलाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा जणाईआ। गोबिन्द सुत उठ दुलारे, हरि बाहो पकड़ उठाइंदा। तेरी कल्गी वाजां मारे, दिवस रैण ध्यान लगाइंदा। करे खेल अगम्म अपारे, अगम्म अथाह आपणा राह चलाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारे, कलि कल्की वेस वटाइंदा। सिर रखे ताज अपर अपारे, सचखण्ड दी धार धार लोकमात जणाइंदा। सस्सा हाहा लिखे अपर अपारे, सस्सा हाहा हाहा सस्से विच बंद कराइंदा। चारे मुख लए उग्घाड़े, शब्द विष्न ब्रह्मा शिव चरणां हेठ रखाइंदा। फेर करे सच विहारे, साची करनी आप कमाइंदा। तेरे लाहे कर्ज़ उधारे, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। तेरा पिता तेग़ बहादर रखे नाले, नाल माता सोभा पाइंदा। तैनूं आपणी गोद उठाले, आपणे सीने नाल लगाइंदा। तेरे बच्चे नीहां हेठ दब्बे फेर ज्वाले, जवा के नीहां हेठ फेर दबाइंदा। जिन्नां सिर ते बद्धे चक्र दुमाले, तिन्नां दमां दम वेख वखाइंदा। करे खेल पुरख अकाले, अक्ल कल आपणी धार चलाइंदा। किरपा

करे दीन दयाले, दीनन आपणा रंग रंगाइंदा । चार मुख चार कुण्ट करे खेल महाने, महिमां आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे ताज आप समझाइंदा। गोबिन्द कल्ग़ी तेरी रही उडीक, उडीक इक्को इक रखाईआ। हुण नेड़े आई तरीक, तख्ता सब दा दए उलटाईआ । पुरख अकाल बणे मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। तेरी कल्ग़ी धरे आपणे सीस, जगदीश खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं ना मन्नां, तेरी खेल बेपरवाहीआ। जिन्ना चिर ना चल के आएं मेरे बन्नां, घर मेरे फेरा पाईआ। जे भुल्ल जावें मैं कहां पुरख अकाल अन्न्हां, ओहनूं नजर किछ ना आईआ। ऐवें कहिन्दे माल चारदा रिहा धन्ना, नामे छप्परी रिहा छुहाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तेरे पिच्छे फिरां भंनां, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। संच संदेसा सुण ना होवां खुश, खुशी तेरी मोहे ना भाईआ। जिन्ना चिर मेरे गुरसिखां कोलों ना लवें पुछ, गोबिन्द वसे केहड़ी थाँईंआ। तूं जुग चौकड़ी रिहों लुक, जिन्ना चिर प्रगट ना होवें मैं मन्नां ना तेरी रज़ाईआ। बिन तैथों नहीं हुन्दा चुप्प, बण के पिता बैठा मुख छुपाईआ। उठ तकड़ा हो के उठ, की घाटा तैनूं नज़री आईआ। सारे फड़ के कर दे इक गुठ्ठ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मेरे सिखां उत्ते तुठ, जो तेरे पिच्छे आपणा आप गए गंवाईआ। जिन्हां नूं मैं वी रिहा झुक, तेरा राह वखाईआ। तूं वसें अन्धेरे घुप्प, धोखे देण वाली आदत अजे ना तेरी जाईआ। काग़ज़ां उत्ते लिखाया अबिनाशी अचुत, चितू बण के बैठा मुख छुपाईआ। आ मैनूं ला गल घुट्ट, मैं तेरी ओट रखाईआ। जूठी झूठी जड़ पुट्ट, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। वेख मेरे निके पुत्त, नीहां विच तेरा नाम ध्याईआ। मेरे कोल नहीं कुछ, जो कुछ तेरी भेंट चढ़ाईआ। बण के सूम सब कुछ बैठों घुट्ट, साडी वंड ना सानूं फड़ाईआ। जे ना मंनिउँ सारे जावांगे रुठ, तेरी कौण करू वड्याईआ। सचखण्ड कौण करे तेरी पुच्छ, कल्ला रोवें मारें धाहींआ। प्यो कम्म ना आवे बिनां पुत, पीहड़ी चले ना निशान ना कोए झुलाईआ। श्री भगवान डरदा डरदा गया उठ, फड़ बाहों रिहा चुप कराईआ। गोबिन्द बस कर मेरे सुत, मैथों तेरा दुःख झल्लया ना जाईआ । जिन्ना चिर ना होवें खुश, ओनां चिर हरि जू तेरी सेव कमाईआ। तूं सौणा घूक मैं सुहावां तेरी रुत्त, तेरा ज़ोर ना कोए लगाईआ। धोखा दे के नज़र ना आवण देवां तेरा बुत्त, तेरे नाम दयां वड्याईआ। जे कोई बाहरों पुछणा लए पुछ, सारे कहिण पूरन बैठा चुप, गोबिन्द हथ्थ किसे ना आईआ। कर किरपा गुरसिखां पर्दा देवां चुक्क, तेरा मेरा मेरा तेरा इक्को रंग वखाईआ। सारे कहिण वेखो हुण कुछ फेर कुछ, जोती जाता खेल कराईआ। पिछली वस्त जो रखी घुट्ट, अन्त देवे गंढ खुल्हाईआ।

सारयां इकट्ठयां हो के लैणी लुट्ट, लुट्ट इक्को घर पवाईआ। कोई दस्स ना सके माँ नूं पुत, प्रभ जू की की वस्त फड़ाईआ। इक दूजे वल वेख वेख सारे हो जाण चुप्प, हर घट हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सीस जगदीश इक्को ताज सुहाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ कवण वेला, मेरी कल्ग़ी मिले वड्याईआ। साहिब तूं गुरू मैं तेरा चेला, चेला गुर तेरी सरनाईआ। मैं बरदा तूं सज्जण सुहेला, डरदा डरदा मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी कहे कलिजुग अन्त होए वक्त दुहेला, चार कुण्ट कुरलाईआ। तिस वेले तेरा मेरा होए मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरी कल्ग़ी नाल मिलाए ताज, करे खेल वड राजन राज, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। कल्ग़ी नाल जुड़े जोड़ा, जोड़ी निरगुण सरगुण आप जुड़ाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल चढ़े साचे घोड़ा, गोबिन्द आपणी गोद बहाइंदा। पिछलीआं सब दे नालों कढ्ढ खोरां, खोज खोज वेख वखाइंदा। जेहड़े दस्सदे रहे बहिश्ती मिलण हूरां, हुलीआ सब दा आप छपाइंदा। तेरे नाल कीता बचन करे पूरा, पूरी पूरन पूरन आपे पाइंदा। करे खेल अन्त ज़रूरा, ज़ाहर ज़हूर वेस वटाइंदा। नाउँ धराए योद्धा सूरा, बल आपणा आप ल्याइंदा। तेरा रंग चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल्ग़ी ताज नाल मिलाइंदा। कल्ग़ी ताज कर इकठ्ठ, आपणा रंग रंगाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। अग्गे रहिण ना देवे वक्ख, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। सिर आपणे उपर लए रख, रक्षया करे सर्ब थाईंआ। पुरख अकाल तेरा गावे जस, तेरे भगतां दए वड्याईआ। सब दी पूरी करे आस, जिन्हां तेरी चरण धूढ़ी मस्तक लाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, पर्चा आपणी हथ्थीं पाईआ। लेखा जाणे फ़ेल पास, इक्को नज़री आईआ। गुरसिख ना होए कोए उदास, दर घर सुत्यां दरस दिखाईआ। इक्को कम्म होवे ख़ास, ख्वाहिश सब दी आपणी झोली पाईआ। चारे मुख कर आपणे दास, रस्ता सब नूं दए समझाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल तमाश, कल करता वेख वखाईआ। माझा जम्मू दुआबा मालवा लेख लिख्या ख़ास, ख़सूसयत साची दए समझाईआ। सोहँ आत्म परमात्म वसे पास, दर घर साचे बैठा डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण माझा पाया पुरख अबिनाश, दो अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। त्रै अक्खर दुआबा विष्न ब्रह्मा शिव कीते दास, बण दासी सेव कमाईआ। त्रै अक्खर मालवा त्रैगुण माया होई उदास, इक्की जेठ नाथेवाला धक्का लाईआ। जम्मू अक्खर दो जन्म मरन दी मुके ख्वाहिश, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। पंचम मीता वसे साथ, सगला संग निभाईआ। कल्ग़ी वाला कहे मेरी पूरी होई आस, गुरमुख आसा नाल मिलाईआ। ताज कहे शाबाश शाबाश शाबाश, गुरसिख जिस हरि जू दर्शन पाईआ।

गुर गोबिन्द कहे मैं वेखां रास, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सीस ताज देवे दान, लेखा जाण दो जहान, दोए दोए रंग सूरा सरबँग, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म जीव ईश ईश जीव वट कसीस, आपणा खेल रचाईआ।

गोबिन्द कहे क्यों वट्टें कसीस, की कसरत रहि गई बाकी। आपणा नाउँ रख जगदीश, लुकदा फिरें बण के बंदा ख़ाकी। तकड़ा हो के दस्स दो जहानां इक हदीस, मैं बच्चा तेरा साथी। दे हुक्म मैं पीसण देवां पीस, अग्गे रहे ना कोए आकी। पुरख अकाल कहे निक्के बच्चे तूं दस्सें ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाया। गोबिन्द कहे तेरी पिच्छे रखदे रहे उडीक, कवण वेला आएं फेरा पाया। गुरसिखां नूं दे प्याला नाम पीवण ला के झीक, पिछला अगला दुःख मिटाया। की हुण वी बणना ईं साडा शरीक, पिता पूत तेरे पिच्छे भेंट चढ़ाया। पुरख अबिनाशी आपणे नक्क नाल कढ्ढे लीक, लकीर तकदीर दए बदलाया। गोबिन्द तेरा बूटा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आया। तूं मैनूं ल्या जीत, मैं तेरी जित करां रुशनाया।
२३० ११३ मेरा सीना ठांडा सीत, तेरे गुरसिखां दर्शन पाया। जिन्नां नाता छड्डुया मन्दिर मसीत, इक्को पुरख अकाल मनाया। सौंदयां जागदयां गावण सोहँ गीत, गोबिन्द घर घर नज़री आया। श्री भगवान कहे वाक्याई मैं बड़ा ढीठ, दुखियां वेख दुःख ना कदे वंडाया। जिन्ना चिर मेरे चरण ना लाए कोई प्रीत, पर्दा किसे उत्ते ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सहिज सहिज सहिज हौली हौली हौली होका दे दे रिहा सुणाया। हौली हौली क्यों देवें होका, गोबिन्द रिहा जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरे हथ्थ आया मौका, मुख़बर हो के कर लड़ाईआ। बलधारी हो के क्यों देवें धोखा, आपणी पत गंवाईआ। मारना ज्वालणा कम्म सौखा, जे हुक्म देवें छिन्न विच सारे दयां खपाईआ। धरत मात दा पोचिआ रहि जाए चौंका, उत्ते कोई बहे ना ब्राह्मण नाई आ। ब्रह्मा हो जाए औंता, लख चुरासी गोद ना कोए सुहाईआ। जे तूं ग़फ्लत विच लै ल्या ढौंका, कोटन कोटि जुग बीत बीत जाईआ। मैनूं तेरे खेल वेखण दा शौंका, चाउ इक्को इक रखाईआ। घुट्ट हथ्थ नाल फड़या पौंचा, पहुंच आपणी दे जणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द वेख मौजां, मौजूद हो के हरि जू रिहा वखाईआ। करे लड़ाई बिन पलटण फ़ौजां, फ़ौजदार बेपरवाहीआ। ख़ाली करे अमारी हौदा, महावत कोए रहिण ना पाईआ। बिन भगतां एथे ओथे किसे ना देवे औहदा, शाह पातशाह राज राजान ख़ाक विच

मिलाईआ। आपणी हथ्थीं करन आया सौदा, बण वपारी फेरा पाईआ। फिर फिर वेखे लोक चौदां, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। चार कुण्ट नज़र आवण कौडां, करता कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सीस जगदीश इक्को ताज सुहाईआ। ताज रख ना तेरी वड्याई, कोटन कोटि ताज हंढुाइंदा। जिन्ना चिर ना बदलें पिछली शाही, अगला मार्ग लाइंदा। जिन्ना चिर ना वज्जे तेरे नाम वधाई, दो जहान तेरा ढोला गाइंदा। औह वेखो आई आदि शक्ति माई, ठुंमक ठुंमक पैर वखाइंदा। भरी गुस्से दए दुहाई, कूक कूक नाल रलाइंदा। मैनूं दे के अन्त जुदाई, गुरसिखां पिच्छे ठेडे खाइंदा। पहलों बणाया मैनूं आदि माई, आदत पिछली हुण भुआइंदा। ग़रीब निमाणयां जा के वेखे चाईं चाईं, मेरा प्यार ना तैनूं भाइंदा। पुरख अकाल कहे मैं की करां मेरीआं गोबिन्द पकड़ीआं बाहीं, फड़ फड़ बाहों गुरसिखां राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ताज तख्त तख्त ताज सख्ती नाल उलटाइंदा। उलटाए राज जगत तख्त, तख्त निवासी खेल कराइंदा। गोबिन्द वारे ज़िगरे लख़त, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अग्गे गुरसिखां पैण ना देवे वख़त, वक्ख़री धार चलाइंदा। हुक्म विच ना आवे फ़र्क, धुर फ़रमाणा हुक्म मनाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढु अरक, हरिजन आपणे मेल मिलाइंदा। बाकी सारयां कीता तरक, तार सतार ना किसे हलाइंदा। डूँघी गार करे ग़रक, बाहों फड़ ना कोए उठाइंदा। जा के जिहड़ा मुड़ के आया परत, परमेश्र पूरन आपणा भेव जणाइंदा। जन भगतां लई लै के आया ख़र्च, जगत ग़रीबी दूर कराइंदा। किसे सिर रहिण ना देवे कर्ज़, काग़ज़ सब दे आप पड़वाइंदा। आपणा पूरा करे फ़र्ज, फ़रमाबरदार सेव कमाइंदा। गोबिन्द वेले जो हो गया हरज़, पिछला लेखा झोली पाइंदा। अग्गे जन भगतां अग्गे करे आप अर्ज़। आरज़ू आपणी इक समझाइंदा। मैनूं तुहाढे मिलण दी मर्ज़, बिन सिखां रोग ना कोए गवाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो गए असचरज, अचरज हरि जी खेल रचाइंदा। आओ सारे चल के श्री भगवान लईए वर्ज, क्यों ग़रीबां पिच्छे धक्के खाइंदा। जिन्हां नूं गाउणा ना आवे ना कोई ताल ना कोई तर्ज़, जोग अभ्यास ना कोए कमाइंदा। सारे गुरसिख बैठे हो के नधड़क, साडा ख़ौफ़ ना कोए खाइंदा। जे कोई पुछे अगों कहिन्दे कड़क, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साडा संग निभाइंदा। परे लै जाओ आपणी लिख्त पढ़त, सोहँ इक्को ढोला सच्चा भाइंदा। ना कोई नेम ना कोई वरत, नियम होर ना कोए बणाइंदा। आपणे मिलण दी इक्को पक्की कीती शर्त, शरारत होर ना कोए वखाइंदा। अन्तिम सारे होए ग़रक, ग़रूर सब दा आप मिटाइंदा। गुरसिखां दा अन्दर वड़ के पत्रा ल्या परत, पती परमेश्वर आपणी सेव कमाइंदा। इक्को वार इक्को अक्ख गई फरक, फ़ुरना सब दा बंद कराइंदा।

गुरसिख तुहाढ्ढी होवे चढ़त, चढ़दीआं कलां आप कराइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सारे कहिण साडा बंद होया धड़त, साडा हिस्सा ना कोए कढ्ढाइंदा। चलो सारे रल के करीए अर्ज़, चार खाणी मता पकाइंदा। पुरख अबिनाशी सब नूं रिहा वर्ज, बिन गुरमुखां कोए ना मोहे भाइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे खेल इक महान, गल्लीं बातीं दिने रातीं आपणा हाल सुणाइंदा। तेरा हाल बड़ा चंगा, गोबिन्द रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल करदा रिहों बहु रंगा, भेव अभेद छुपाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त अख्वा के बैठा रिहों विच घमण्डा, नज़र किसे ना आईआ। कलिजुग अन्त हुण हो नंगा, दर तेरे मंग मंगाईआ। मासूम रोवण हेठां कंधां, तेरा राह तकाईआ। मैं ना जाणा तेरा लेखा तारा चन्दा, तारा चन्द दे गलों लाहीआ। जिन्ना चिर आप ना आएं हथ्थ फड़ मृदंगा, डौरु डंक वजाईआ। पुरख अकाल आपे मन्ना, मन्न मन्न रिहा जणाईआ। उठ मेरे लाडले चन्ना, तेरा चन्द करे रुशनाईआ। तेरी वसे साची छन्ना, छप्परी सम्बल आप सुहाईआ। तेरा मेरा इक्को बन्ना, हद्द बेहद्द दए मिटाईआ। तेरा मेरा इक्को मुक्कता इक्को कन्ना, टिप्पी बिंदी करे सफ़ाईआ। आह होड़ा कनौड़ा फिरे भंना, सिहारी बिहारी दए दुहाईआ। औंकड़ दुलैंकड़ देवे डंना, डंका नाम वजाईआ। एह लां दोलांव दो धार श्री भगवना, दोहां उपर मुख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द आसा हरि गोबिन्द पूर कराईआ।

❊ १७ मग्घर २०१६ बिक्रमी वरखा सिंघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ❊

तूं कौण ताजां वाला ताजू, सानूं ताज रिहा वखाईआ। रावी कन्ढे फिरें बण के बाबू, बाबल आपणा रूप छुपाईआ। ऐंवें झेड़ा पाया वाधू, सृष्ट सबाई रिहा नचाईआ। हुक्मे अन्दर कर काबू, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पिच्छे गुर अवतार पीर पैगम्बर साडे घल्लदा रिहों चाचू, पिता हथ्थ किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम बण के आएयों बापू, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। वेख निक्के निक्के बाले काकू, कक्के बूरे थाउँ थाईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा हुक्म बणे डाकू, डाका घर घर दए लगाईआ। सब दे तोड़ सज्जण साकू, नाता कोए नज़र ना आईआ। बिन हथ्थां बाहवां कर लै काचू, कुचलदे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्यों ऐंवें रिहा तरसाईआ। ताजां वाले तेरा तजरबा, भेव कोए ना आईआ। लेखा जाणे अरबां ख़रबां, ख़रबां अरबां पदमां विच वटाईआ। दो जहानां निरगुण सरगुण देंदा रहें ज़रबां, तक्सीम आपणे हथ्थ रखाईआ। मरदां नाल मिलाउदा रिहों मरदां, मर्द मर्दानगी इक जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी

आप बैठा रिहों डरदा, लोकमात ना फेरा पाईआ। दूर दुराडा हुक्म रिहों घल्लदा, गुर अवतार सेवा लाईआ। निरगुण हो के सरगुण रिहों सड़दा, अग्नी तत्त भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। दो जहानां फिरें मिणदा, मिणती आपणे हथ्थ रखाईआ। मण्डल मण्डप तारे फिरें गिणदा, गिणती आपणी रिहा कराईआ। भगत दुआरे नीहां आपे चिणदा, चन्द आपणा कर रुशनाईआ। खेल करें छिन्न छिन्न दा, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। तेरा अन्तिम लेखा तिन्न दिन दा, त्रैलोकां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार सर्ब लोकाईआ। लोकाई वेखे मुरब्बा मुसततील, मुंनकिल सब नूं आप कराइंदा। पिच्छे पाउदा रिहा ताअतील, अन्तिम मुसतकल आपणा हुक्म जणाइंदा। किसे दी मन्ने ना कोए दलील, दलेर हो के आपणा हुक्म मनाइंदा। सन्त सुहेले लए मेल, मिलावा इक्को घर जणाइंदा। निरगुण हो के खेले खेल, ख़ालक ख़लक आप उठाइंदा। दो जहानां कर के वेहल, वेहला आपणा रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम जो निहकलंक दुआरे हो गया फ़ेल, तिस मकतब होर ना कोए वखाइंदा। सदा रहे धर्म राए दी जेल, चुरासी गेड़ा गेड़ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। फ़ेल पास इक्को सबक, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। जिस नूं पढ़ ना सके चौदां तबक, चौदां लोक कहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे तभक, तबअ सब दी रिहा बदलाईआ। पढ़ौण वाला जदों शेर मारे भबक, सब नूं मूँह दे भार सुटाईआ । वेखो हरि जू करे आपणा करतब, कुदरत हुक्म विच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़ेल पास बिन सबकों वेख वखाईआ । फ़ेल पास ना कोए पट्टी, इबारत जगत ना कोए लिखाइंदा। कलम शाही ना मंगाए किसे हट्टी, काग़ज़ नाल ना कोए मिलाइंदा। उंगलां नाल ना रिहा दस्सी, अल्फ़ ये ना कोए जणाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर जो फ़सी, तिस कर पास नाता फ़ेल तुड़ाइंदा। ताज वाले तख़्ती शाह, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। इक वार मुख दिखा, नेत्र नैण राह तकाईआ। लुकवीं खेल दे हटा, आपणा पर्दा दे चुकाईआ। इक वखा सच्चा थाँ, जिस थाँ मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवां, मेहर नज़र रिहा टिकाईआ। जन भगतां पकड़े बांह, बाहों फड़ फड़ रिहा उठाईआ। सच बबाणे इक चढ़ा, निशाना इक्को इक जणाईआ। जिस ने सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ल्या नाँ, तिस एथे ओथे आपणे संग रलाईआ। तेरा संग दिसे दूर, दूर दुराडा नज़र ना आइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मैं हाज़र हज़ूर, नेरन नेरा फेरा पाइंदा। अग्गे करो ना मैनूं मज़बूर, मज़बूरी सब दी आप कटाइंदा। पिछला बख़्शो सर्ब कसूर, अग्गे कसर ना कोए रखाइंदा। मैथों कम्म ल्यो घूर घूर, घुरकी मैं ना हुण वखाइंदा। फड़ के अग्गे

लाओ जट्ट मूढ़, मुफ्त तुहाढ्ढी सेव कमाइंदा। सारयां नूं दस्सो श्री भगवान लभ्भा मज़ूर, बिन मज़ूरीयों मुर्शद मुरीदां सेवा कमाइंदा। जे तुहाढ्ढे घर होए हनेरा आपणा जोती देवां नूर, नूर वेख वेख खुशी मनाइंदा। तुहाढ्ढा आपणी झोली पावां कूड़, सच तुहाढ्ढे घर वसाइंदा। तुहाढ्ढी आसा करां पूर, आपणी आसा होर वधाइंदा। आपणा ताज गुरमुखां दे सिर ते रखां ज़रूर, हो मज़बूर खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री इक्को इक वरताइंदा। वल छल तेरा डूँग्घा राज़, राज़क नज़र किसे ना आईआ। जुग जुग करदा रिहों साज़ बाज़, बाज़ीगर नट नटुआ स्वांग वरताईआ। चार वरन बणा समाज, घर घर वंड वंडाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अल्ला वाहिगुरू राम नाम दित्ता दाज, पटारी आपणा नाम फड़ाईआ। लोकमात रच रच काज, कादर आपणी खेल कराईआ। किसे सुत्यां मार आवाज़, किसे जागदयां ल्या मिलाईआ। किसे दा डुब्बदा तारया जहाज़, किसे दा तरदा दित्ता डुबाईआ। धन्न धन्न तैनूं कहिन्दे गए गुरू महाराज, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेंहदा रिहों खेल तमाश, निरगुण आपणा मुख छुपाईआ। भगतां नाल करदा रिहों हास बलास, कबीर जुलाहे गंगा विच रुढ़ाईआ। इक वार कर के सारे नरास, फेर अन्त होएं सहाईआ। असीं तेरी पिछली नहीं मन्नणी बात, अग्गे आपणी रीत जणाईआ । जिन्ना चिर दरस ना देवें साख्यात, साजण तैनूं ना कोए अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी मन्न के कहिणा होया दास, घर घर फेरा पाईआ। डरदा फिरदा सुणाए गाथ, आपणा ढोला गाईआ। उंगलां नाल लगाई फिरे त्रिलोकी नाथ, कृष्न बाल्यां वांग खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल छल धारी, भगत वछल गिरधारी, गिरवर आपणा फेरा पाईआ। गिरवर गिरधार मुकन्द मनोहर लखमी नरायण, नर हरि आपणी खेल कराइंदा। सिफ्त सालाही बेपरवाही कोई ना सके कहिण, कह कह अन्त ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर भाणा सिर ते कहिण, सहि सहि शुकर मनाइंदा। कलिजुग अन्तिम भगत भगवन्त आया लैण, लहिणा देणा मूल चुकाइंदा। आओ वेखो दर्शन नैण, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वल छल आपणा राह चलाइंदा। वल छल धारी, तेरा डूँग्घा सागर, दो जहान नज़र ना आईआ। चार जुग खेल करदा रिहों पंज तत्त काया गागर, गुर अवतार नाउँ धराईआ। आपणा नाम हट्टो हट्ट वेचदा रिहों बण सौदागर, वणजारे गुर गुर रूप वखाईआ। सारे तैनूं कहिन्दे गए करीम कादर, करता पुरख बेपरवाहीआ। तेरा मन्नदे गए सारे आडर, अड्डा बैठा ना कोए जमाईआ। कलिजुग अन्तिम बणयों आप बहादर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जिउँ तेग बहादर दी चिट्टी चादर, तेग़ शमशीर शमस खड़काईआ। जिउँ गोबिन्द दित्ता आदर, पुरख अकाल आदर्श वखाईआ। अन्त कल जन भगतां पिच्छे

होइउँ पागल, आपणी सुध ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट वेख अन्धेरे बादल, आपणा नूर करें रुशनाईआ। अन्त करें सति तबादल, अदला बदली खेल रचाईआ। हरिजन मिले इक्को बाबल, दो जहानां होए सहाईआ। हरिसंगत विच बैठा वली कंधारी जो आया विच्चों काबल, खेल नानक नाल कराईआ। मंगया वर प्रभ मिले आदल, अदालत आपणी दए जणाईआ। गुर नानक कहे पुरख अकाल इक्को काबल, कबज़ा सब दे उत्ते रखाईआ। तेरा लेखा जाणे बातन, ज़ाहर ना कोए चतुराईआ। कलिजुग अन्तिम बणाए साथन, हरि भगतां नाल मिलाईआ। माणस जन्म ढोला गाउणा सोहँ गाथन, गा गा खुशी मनाईआ। मेला सिँघ पंजाबी रूप वटाया विच पंजाबन, पंजा नानक दित्ता लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा हथ्थो हथ्थ चुकाईआ । कन्नीं नत्ती पिछला मुन्दरा, निशानी रिहा जणाईआ। पिच्छे राह तक्कदा रिहा वड़ के डूँघीआं कुन्दरां, कुंडा जिन्दरा बाहरों लाईआ। अन्त बूटा वेखो पुंगरा, नानक दरस आया कराईआ। हुण वेख्या हिसाब कुण्डलां, कुण्डी आपणे नाम पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वली नाल वली कीता अहिद, अहिद नामा परवरदिगार आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखो दर ते आई भावी, भउ इक्को इक डराईआ। डरदी मारी होई पीली सावी, रंग रंग रिहा वटाईआ। बेले विच हरि जू बैठा कन्ढे रावी, कंडा सब नूं रिहा खुबाईआ। भज्जी फिरदी होई फावी, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। दूर दुराडी गुरमुखां कोलों सुण दी श्री भगवान कलिजुग अन्तिम आपणी करन आया लावी, नाम दाती पिठ्ठ पिच्छे लटकाईआ । मैं वी वेखां चावीं चावीं, चाउ घनेरा इक जणाईआ। बण किरसाणा वढ्ढे केहड़ी बाही, किस बिध आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रिहा वखाईआ। भावी कहे मेरे भगवान, दर तेरे सीस झुकाया। तुध बिन मैनूं कोई ना देवे दान, मैं भुक्खी वास्ता पाया। लख चुरासी मेरा पकवान, जे देवें हुक्म ते लवां खाया। मैं फिर फिर होई हैरान, तेरा भेव कोए ना आया। क्यों तूं पहलों चुण चुण आपणे आप कढ्ढें पछाण, अजे हुक्म ना मैनूं सुणाया। श्री भगवान हो मेहरवान, सिर रिहा हथ्थ टिकाया। वेख बच्ची खेल महान, हरि सतिगुर रिहा कराया। चारों कुण्ट वेख मार ध्यान, तेरी नज़र नज़र नाल रिहा मिलाया। इक्को मन्नणा सच फ़रमाण, धुर संदेसा रिहा जणाया। जिस दुआरे ढोला लग्गे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दरवाजा बंद कराया। जा के चरणीं डिगीं भगतां करीं प्रणाम, पल्लू गल विच पाया। मैनूं दयो सच्चा नाम, जिहड़ा सतिगुर तुहानूं वरताया। मैं फिर जावां लख चुरासी खाण, घर घर फेरा पाया। मेरे हथ्थ कुहाढ़ा फड़ाए तरखाण, जट्ट डंडयां नाल रिहा डराया। जे पिच्छे मुड़ी आण, मार चपेड़ां मुख भुआया। मैं अन्त होई हैरान, हरि जू एह की खेल रचाया । जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, रंग आपणा रिहा वखाया। भावी कहे मैं आई भाउदी, चक्र जगत लगाईआ। रावी कन्ढे वेख्या संगत सोहँ ढोला गाउँदी, गा गा शुकर मनाईआ। रात जागदी दिने ना सौंदी, सुत्यां रैण ना कोए विहाईआ। अट्ठे पहर श्री भगवान दीआं औंसीआं पाउदी, इक्को आस रखाईआ। श्री भगवान इक्को गल्ल भाउदी, भगतां होए सहाईआ। मैनूं हुक्म दित्ता जा के दो जहानां पिट्ट डौंडी, सब नूं दे उठाईआ। अन्तिम किसे दा मुल्ल ना पैणा कौडी, कीमत करता ना कोए रखाईआ। बीत दी जाए सदी चौधवीं, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। नाता तुटे मुल्लां मौलवी, मिलख जागीर वैरान वखाईआ। धौल उत्तों लाहे भार हरि जू वड्डा धौलवी, धौलां मार मार परे हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भावी इक्को गल जणाईआ। भावी कहे तेरी सच्ची गल्ल, श्री भगवान मोहे भाईआ। तेरे भगतां संग जावां रल, रल मिल खुशी मनाईआ। बाकी सब दी लाहवां खल्ल, आपणा हुक्म मनाईआ। हुक्मे अन्दर चढ़े दल, दरड़ फरड़ करां लोकाईआ। तेरी भावी क्यों ना करे छल, जिस तेरी पढ़ी पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा राह बहवां मल्ल, अग्गे आ ना कोए छुडाईआ। जे कोई धींगो जोरी करे तेरे वल देवां घल्ल, तूं होणा अन्त सहाईआ। किसे पीण ना देवां जल, थल सब नूं दयां रुलाईआ। मैं तेरा भाणा रही झल्ल, तेरा भाणा मेरा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि रब्बी नूर इलाहीआ। ओ रब्बी रब्ब, की एह खेल रचाया। हुक्म दे झब्ब, मैं सब नूं लवां दबाया। उत्तों लवां दब्ब, सिर सके ना कोए उठाया। दाढ़ां हेठ लवां चब्ब, चकना चूर कराया। ना जाणा वड्डा छोटा कद्द, सारे इक्को राह वखाया। नौ खण्ड पृथमी वेखां फिर फिर हद्द, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। लख चुरासी मेरी मच्छी डड्ड, मेरा पेट ना किसे भराया। मैं खुशीआं नाल चब्बां हड्ड, हाकण डाकण रूप वटाया। तैंथों डरदी तेरे भगत बाहर लवां कढ्ढ, लख चुरासी फोल फुलाया। कोल जा के सुणां सोहँ नद, कन्न कन्नां नाल मिलाया। फिर खुशी हो के ओनां नाल कर के आवां हज्ज, मक्का काअबा डेरा ढाहया। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए लद, भावी सके ना कोए मिटाया। अन्त कल ओ साहिब मेरा सुल्तान शेर हो के मेरे नाल रिहा गज्ज, मैं चाईं चाईं भज्जां वाहो दाहया। बिन सतिगुर पूरन पूरन परमेश्वर कोई पर्दा ना सके कज्ज, अग्गे पिच्छे ना कोए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल, खेल बेपरवाहया। होणी कहे मैं करनी अणहोणी, मेरी कीती ना कोए उलटाईआ। लख चुरासी फड़ के कोहणी, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मैं हथ्थ विच फड़ लई बेसबरी दोहणी, लहू मिझ नाल भराईआ। लख चुरासी मैनूं लग्गे सोहणी, इक्को वार विच छुपाईआ। बिन भगतां घर घर पए

रोणी, रौणक सब दी दयां गंवाईआ। सब नूं भुल्ले सेज सौणी, कन्त नार ना कोए हंढ्ढाईआ। पुरख अबिनाशी दे हुक्म नाल मैं पहलों करनी बौहणी, वंड वेरवे वार फेर समझाईआ। पिच्छों नालों मेरी ताकत हो गई चौणी, क्यों, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरा होया सहाईआ। लत्तां बाहवां मार सृष्ट सबाई ढौणी, धक्को धक्की ख़ाक बणाईआ। किसे शहिनशाह दी बणी ना रहि जाए छौणी, शाह पातशाह करां सफ़ाईआ। मेरा पीआ मेरा प्रीतम मेरा शहिनशाह मैनूं कहे मेरी चंगी होणी, जिस चंगी तरां कीती सफ़ाईआ। जे कोई अड़े फड़ फड़ चाढ़ां तौणी, खलड़ी खल्लू लुहाईआ। इक जोड़ा निशानी रहि जाए काँ कौणी, दूजा कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म मनाईआ।

नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना आवे नेड़े, दूरों दूरों मंग मंगाईआ। जुग जुग प्रभू जी निक्कीआं निक्कीआं छेड़ां छेड़े, डोरी गुर अवतारां हथ्थ फड़ाईआ। फिर अग्गे पिच्छे उह वी रेड़े, काया भाण्डे भन्न वखाईआ। आपे बैठा रहे कर के वड्डे जेरे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भावी कीते खेल बथेरे, लोकमात चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्त हरि जू करे हक़ नबेड़े, हक़ो हक़ रिहा जणाईआ। होणी हुण वी चल के आई भगतां खेड़े, भगतां नाल अंग मिलाईआ। कल्ली ना आवे मेरे वेहड़े, दूर दुराडी वास्ता पाईआ। जिथ्थे गुरसिख ला के बैठे डेरे, पुरख अबिनाशी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, होणी बड़े चिरां पिच्छों संगत विच रला आपणे कोल बहाईआ। चार जुग दी वेखी चौंकी, पावे चार बणाईआ। इस तों अग्गे पारब्रह्म दी सब नूं दिसे कुल औंती, औंतरा रूप वखाईआ। जिथ्थे रूह ना कोई पहुंची, भेव ना कोए खुलाईआ। सारे कहिण पुरख अकाल इक्को फिरे जौंकी, इक इकल्ला डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। जौंकी हुणे होया वेहला, पिछला लेखा तजाईआ। इक्को नाल रलया गोबिन्द चेला, दोहां मिल के खुशी मनाईआ। आपणा वेखण आया वेला, वेहला हो के फेरा पाईआ। जन भगतां बण सज्जण सुहेला, साची खुशी मनाईआ। जिन्हां ख़ादा बक्करा लेला छेला, छिलां सब दीआं रिहा लुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे जंगल बेला, गुर अवतार पीर पैगम्बर बिली मिआऊँ ना कोए कराईआ। क्यों, शेर सिँघ बण के आया वड्डा बघेला, बाघ सारयां रिहा डराईआ। विष्नूं कहे मैनूं गोदी लै ला, मैथों ताब झल्ली ना जाईआ। श्री भगवान कहे ओए ना डर मैं करदां रेला पेला, रोड़ इक्को वार वहाईआ। फिर वी वेहले दा वेहला, कम्म नज़र कोए ना

आईआ। इक्को नाल लिआया निक्का जिहा ठेला, जिन्हां उत्ते गुरमुख लए बहाईआ। कर किरपा आपणा मेल मेला, मिलणी जगदीश आप कराईआ। सच दुआर चाढ़े तेला, सगन इक्को वार मनाईआ। बाहों पकड़ गोदी चुक्क दो जहान गुरमुखां देवे कुछड़ चुक्क लोरी फिर वेहले दा वेहला, वेहले होर कोई कम्म नज़र ना आईआ। सब दा पुठा करे डेला, अन्दर वड़ ध्यान ना कोए लगाईआ। लख चुरासी भंने जिउँ जट्ट गुस्से विच गुड़ दा भेला, डली डली दए कराईआ। जीव जंत साध सन्त शब्द वेलणे पीड़ फेर वेहले दा वेहला, कोई कम्म नज़र ना आईआ। वेहला सोचे हुण करां राखी, होर कोई कम्म नज़र ना आया। श्री भगवान इक्को भाखी, आपणा भेव जणाया। जा के जन भगतां सुणावां आपणी साखी, संसा रोग जगत मिटाया। जिहड़े मन्न लैण मेरी आखी, मैं आखर संग निभाया। दर दरवाज़े खोल्हां ताकी, तकवा इक्को इक जणाया। रातीं सुत्यां देवां झाकी, झाका सब दा दयां मिटाया। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार पाकी, पाक रसूल बेपरवाहया। मुरीदां मुर्शद चुक्के छाती, गुरमुख आपणी गोद बहाया। घर घर जगाए दीआ बाती, कमलापाती सेव कमाया। गुरसिखां सेज वछाउणा वखाए खाटी, खटका सब दा होर गंवाया। आप चढ़ के आपणी घाटी, हरिजन आपणे घाट रखाया। पिछला लहिणा दे बाकी, अगला लेखा फेर समझाया। शाह पातशाह शहिनशाह आपणा खेल कर बहु भांती, परवरदिगार बेमुहताजी रच के काजी, कर काज रच काज करता पुरख फेर वेहले दा वेहला। आपे वेहला आपे रुझे, आपे कार कमाईआ। आपणी करनी आपे बुझे, आपणा भेव खुल्हाईआ। बाकी करे खेल इक दूजे, तीजे चौथे वंड वंडाईआ। जन भगतां कर साची रीझे, रज्ज रज्ज आपणा दरस कराईआ। चला हल्ल किरसाण बीज बीजे, वतर आपणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वतर सांभ फेर सुहागा, ढग्गा वच्छा आपे सांभा, पिछला लाह जगत उलांभा, निरगुण रूप बण के कामां, करता पुरख आपणी करनी कर कार कमा, फेर वेहले दा वेहला।

२३८
१३

❇ १७ मग्घर २०१६ बिक्रमी खेड़ा सिँघ करतार कौर दे गृह बाबू पुरा ❇

जिथ्थे कहो ओथे रहिवांगा। जिथ्थे बहाओ ओथे बहिवांगा। जिथ्थे घलाओ ओथे जावांगा। जिथ्थे सवाओ ओथे सोवांगा। बिन तुहाडे किते ना रहिवांगा। जिथ्थे सद्दो ओथे आवांगा। आ आ के दर्शन पावांगा। जुग जुग दी तृखा बुझावांगा। घर बहि के मंगल गावांगा। नाता जोड़ भैण भ्रावां दा। बल वेखां सच्चीयां बाहवां दा। प्रेम वधावां पुत्तरां मावां दा। सिर रख के हथ्थ ठंडीआं छावां दा। तुहाड्डी चरण धूढ़ी नहावांगा। लख लख शुकर मनावांगा। जे आखो ते सचखण्ड जावांगा।

नहीं ते एथे बहि के तुहाड्डा राग अलावांगा। बिन तन्द सतार तुहाड्डा सतार वजावांगा । ना कुछ पीवांगा ना खावांगा। ना आवांगा ना जावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखावांगा। इक वार जे दयो सद्दा, सदा घर घर आप सुणाइंदा। श्री भगवान निरगुण रूप आए भज्जा, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाइंदा। तुसां मेरी रखी लज्जा, तुहाड्डे उत्ते पर्दा पाइंदा। वेखो ताल इक दूजे दा किस तरां वज्जा, आत्म परमात्म नाल टकराइंदा। गुरसिखां अन्दर वड़ वड़ नच्चा, नटुआ आपणा स्वांग वरताइंदा। सतिगुर हुण नहीं जे कच्चा, पिछली रीती सर्ब गवाइंदा। धुरों आया बण के पक्का, पक्की सब नूं आप कराइंदा। राह विच चलदयां चलदयां पुरख अकाल थक्का, गुरसिख दुआरे आ के आपणा थकेवां सर्ब मिटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहि गए हक़ा बक्का, हरि जू किथे डेरा लाइंदा। पीर पैगम्बर कहिण वेखो छड्डया मदीना मक्का, मुहम्मद मकबरा ना कोए सुहाइंदा। ईसा मूसा फिरे नस्सा, मुशतरी सब नूं आप कराइंदा । जिस ने रंग बणाया बूरा कक्का, सो ग़रीब निमाणयां विच सोभा पाइंदा। सब दी अक्खीं पा गया घट्टा, चारों कुण्ट खेह उडाइंदा। की हुण माण रहि जाए नामा वट्टा, बिन वट्टउँ गुरमुखां घर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा सच सच कमाइंदा। निहकलंक हरि उतरया, प्रभ महाबली अवतार। करे खेल वांग सुथरयां, निरगुण सरगुण दोवें डण्डे फड़े दोवें धार। लहिणा देणा चुकाए मुछ दाढ़ी मुंनयां खुसरयां, खेल करे अगम्म अपार। सच महल्ल इक्को उसरया, गोबिन्द बाले नीहां हेठ स्वाल। साचा बूटा इक्को पुंगरया, पुरख अबिनाशी वेखे दीन दयाल। मृदंग वजाए किंगर किंगरयां, किंगी वज्जे ना कोए ताल। जिस लहिणा देणा चुकाया इन्द्रया, शिव करया अन्त ज़वाल। वेख वखाए सर्ब फुनिन्दरयां, फुन इन्द्र दीन दयाल। जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर बंद कीते आपणे पिंजरयां, करे खेल अगम्म अपार। दो जहान लख चुरासी दीन मज़्हब ज़ात पात वेखे खिण्डरयां, चारों कुण्ट होए बेहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट हो महाबली अवतार । महाबली उतरया उतर, दिशा आपणी आप जणाईआ। नाल मिलाया गोबिन्द पुत्तर, पिता घर वज्जी वधाईआ। इक सुहाए साची रुत्तड़, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। जिन लहिणा चुकाया ब्रह्मे कुक्कड़, बुड़ेपा सब दा लेखे लाईआ। घर घर दर दर लोआँ पुरीआँ आपे उपड़, उपर नीचे वेखे थाउँ थाईंआ। जिस विष्नूं कोलों खोह ल्या टुक्कर, भण्डारा आपणे विच छुपाईआ। जिस लख चुरासी खा ना कीता शुकर, सो नाशुकरा फेरा पाईआ। जिस गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल कर के वाअदे अन्तिम गया मुक्कर, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। पिता पूत उठाए आपणे कुछड़, गोबिन्द मेला चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाबली आपणा फेरा पाईआ। चवीआं

अवतार धरया कसूता, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। मात पित ना कोए पूता, जननी गोद ना कोए वड्याईआ। दो जहानां निरगुण सरगुण करे झूठा, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी करे मूधा ठूठा, आपणी हथ्थीं दए उलटाईआ। बण के शेर फिरे भुक्खा, भुक्खे भुक्ख ना कोए गंवाईआ। जीव जंत कोई रहिण ना देवे लुका, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर फोले थाउँ थाईंआ। भज्जा जांदा किसे कोलों ना रुका, रुकावट नज़र कोए ना आईआ। लहिंदी दिशा सब दा भंने हुक्का, हुक्म आपणा इक मनाईआ। चढ़दी दिशा खेल करे पुठ्ठा, पुठ्ठी सब दी खल्लू लुहाईआ। दक्खण दिशा आपे रुठ्ठा, कोई सके ना मात मनाईआ। उच्चा टिल्ला आपे लुट्टा, पर्बत कूकण देण दुहाईआ। चवीआं अवतार कम्म करे पुठ्ठा, पिछली कीती सब दी दए उलटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सच संदेसा दित्ता रुक्का, एका आपणा हुक्म सुणाईआ। लोकमात पिछला लहिणा सब दा मुक्का, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव टुक्कर देवे रुखा, आपणी हथ्थीं रिहा वरताईआ। किरपा निधान श्री भगवान बिन भगतां किसे दुआर ना झुका, सब नूं आपणे चरण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ चौका मेल मिलाईआ। पहला दूआ निरगुण सरगुण, सरगुण निरगुण खेल कराइंदा। लख चुरासी छाण पुण, आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां दुखियां पुकार सुण, दूर दुराडा नेड़े आइंदा। लख चुरासी विच्चों चुण, चुटकी गुरमुख आप बचाइंदा। वेखो लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां लग्गा घुण, ख़ाली सब दे पेट वखाइंदा। इन्द इन्द्रासण करोड़ तेतीसा सारे रोण, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव ना मिले सौण, सौखा साह ना किसे रखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार दूर दुराडे बैठे गौण, हरि जू की की खेल रचाइंदा। दो जहानां श्री भगवाना भंनण आया धौण, धौल मार मार आपणा ज़ोर वखाइंदा। अग्गे अग्गे भज्जी फिरे डरदी पौण, जल पाणी मुख ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ आपणा खेल कराइंदा। पहला दूआ शब्द जोती, जोती शब्द जणाईआ। निरगुण चढ़या आपणी चोटी, चोटी नज़र किसे ना आईआ। दो जहान पर्दा लाहवे कूड़ी धोती, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। जगत वासना कढ्ढे खोटी, खोवे आपणी वस्त पराईआ। गुरमुख विरले माणक मोती, सत्त चार लए जगाईआ । सिक्खी रखे आपे छोटी, बहत्तर नाड़ी कर रुशनाईआ। सत्तरां हथ्थ नाम सोटी, सति सतिवादी आप फड़ाईआ। ब्रह्मे तेड़ वखाए लंगोटी, चारों मुख दए दुहाईआ। शंकर भंग पोसत रिहा घोटी, बण अवधूत ख़ाक रमाईआ। इन्द्र अन्तिम मारे फड़ बेदोषी, तख्त ताज दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ आपणा अंक बणाईआ। एके उत्तों हो दो, इक दो खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण आपे हो, होका पंज तत्त आप जणाइंदा। आपे

छड्डे पंज तत्त मोह, छब्बी पोह दिवस सुहाइंदा। सरगुण निरगुण जिहा हो, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सचखण्ड दी साची सो, सो पुरख निरँजण लै के आइंदा। हँ ब्रह्म बीज बो, पर्दा आपणा आप चुकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब नूं लए टोह, आप आपणा खेल कराइंदा। लेखा मंगे पिच्छे आए कर जो, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। दूए उत्तों चौका हो, ज़रब ज़रब नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौका एका भेव जणाइंदा। चौका दस्से हरि जू सच, सच सच जणाइंदा। पहलां शेर सिँघ काया माटी कच्च, काया जगत हंढ़ाइंदा। फिर अग्नी रूप मच्च, आपणा आप मिटाइंदा। फिर सचखण्ड दुआरे नच्च, जोती जोत डगमगाइंदा। फिर पूरन अन्दर रच, गोबिन्द रंग चढ़ाइंदा। वेखो खेल काया कच्च, कंचन आपणा नाम जणाइंदा। दो जहानां लख चुरासी कोलों बच, बचपन आपणा आप धराइंदा। दूए नाल चौका बणया सच, चवी आपणा अंक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। निरगुण नूर चवीआं अवतार, चौंह कन्नी वेख वखाईआ। करे खेल बिन छवीआं तलवार, शहिनशाह हरि जू बेपरवाहीआ। लै के फवीआं मेटे सर्ब संसार, भय भउ इक जणाईआ। नईआ सब दी डोले मँझधार, पार किनार ना कोए रखाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए गुफ़तार, ग़रीब निवाज़ फेरा पाईआ। महाबली उतरे आपणी धार, जोती नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल ना कोए मनार, छप्पर छन्न ना डेरा लाईआ। गोबिन्द करे इक प्यार, बेपरवाह सच्चा माहीआ। सम्बल वेख धाम न्यार, संभल आपणा चरण टिकाईआ। सिंमल रुक्ख सर्ब संसार, फुल फल ना कोए वखाईआ। बूटा हुलया अन्तिम वार, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। प्रगट हो चवीआं अवतार, दूआ चौका वेख वखाईआ। बिन कहीआं सब दी जड़्ह दए उखाड़, नाम डूँघा टप्प लवाईआ। जिस दी कोए ना पावे सार, सो साहिब फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर लोचण करन दीदार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग साडे नाल करदा रिहा उधार, लारे दे दे वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाबली आपणा वेस वटाईआ। निहकलंक हरि साचा ढोला, दो जहानां रिहा जणाईआ। ना कोई पर्दा ना कोई उहला, निरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। दर दरवाज़ा इक्को खोल्ह्हा, खोल्ह वखाए ख़लक ख़ुदाईआ। जगत मंत्र ना पाए रौला, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ मंत्र इक सुणाईआ। सोहँ मंत्र सुण के, मनी सिँघ लई अंगड़ाईआ। मैं सिख ल्यांदे तेरे कोल चुण के, घर घर फेरा पाईआ। तूं देंदा रिहों लुक लुक के, पर्दा आपणे उपर पाईआ। तेरे पिच्छे मैं दस्सदा रिहा बुक बुक के, सिँघ शेर शेर आया बेपरवाहीआ। मैनूं जेलीं

घल्लया चुक्क चुक्क के, चक्की जगत पिसाईआ। आपणी ताकत नूं रख्या घुट्ट घुट्ट के, मेरी रसना दए दुहाईआ। मेरी काया नूं लुट पुट के, हुण आपणा खेल रचाईआ। पुराणयां सिखां तों रुठ्ठ के, अगल्यां नाल खुशी रंगाईआ। मैं बैठा रिहा चुप्प कर के, आप आपणा वक्त लँघाईआ। हुण वेले सिर आया उठ के, नाल खीरां वालीयों अतर सिँघ मिलाईआ। वेख माहणा सिँघ बैठा छुप के, सुन्दर सिँघ उंगलां नाल रिहा समझाईआ। गुरमुख सिँघ तेरी सेव कमाई मोढे चुक्क के, बण घोड़ा भज्जे वाहो दाहीआ। बहावल सिँघ वेखे उठ के, जिन आपणा धन दित्ता लुटाईआ। सिँघ बुद्ध तेरे सिर चरणां उत्ते सुट्ट के, चुटकीआं मार रिहा खुशी मनाईआ। हुण क्यों वेहना अक्ख पुट्ट के, पहलों अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साडा गला हथ्थीं घुट्ट के, सानूं हेठों उपर लै के जाईआ। फेर ल्याइउँ लुट पुट के, लुटेरा बणयो सच्चा माहीआ। हुण ला गल घुट्ट के, वेला गया आईआ। असीं तेरी कुख्खों आए फुट्ट के, माता फेर ना कोए बणाईआ। हुण वेखीए फेर इन्द्र सिँघ पहलवान नाल जुट के, दंगल जगत वेखण आईआ। गंजे कोलों रहीए लुक के, चवाती देवे ना किते लाईआ। असीं हुण नहीं धूंणीआँ वाग धुखदे, लम्बू इक्को वार वेख वखाईआ। असीं आए पुछदे पुछदे, हरि जू रावी कन्ढे डेरा लाईआ।

२४२ जिस दे अग्गे गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे झुकदे, निउँ निउँ सजदा सीस कराईआ। कदे बहिंदे कदे उठदे, दोए जोड़ २४२

१३ वास्ता पाईआ। अगली गल ना डरदे पुछदे, हरि जू की की खेल वरताईआ। पिछली कीती नूं झुरदे, दीनां मज़्हबां विच १३

पाई लोकाईआ। वेखो खेल हरी हरि दे, हरि जू आपणी कार कमाईआ। लेखे जाणे घर घर दे, दर दर वेख वखाईआ। जिध्धर वेखे अग्गे कोई ना अड़दे, अड़िके सब दे रिहा हटाईआ। कच्चे बेरां वांगू झड़दे, हलूणा इक्को नाम लगाईआ। अग्गे वहण वहाए हड़ दे, लहर लहर नाल मिलाईआ। गोबिन्द उठ के आया चढ़दे, चढ़दीआं कलां दए समझाईआ। जिस पटणे विच कलिजुग जीव सड़दे, पिछला पटा दए पड़ाईआ। गुरमुख अग्गे बणाए बरदे, बरी ख़ाना इक जणाईआ। साहिब सतिगुर दा जो भाणा मन्नदे, मन्न इच्छया पूर कराईआ। कोई माण ना जोबन धन दे, अन्त संग कोए ना जाईआ। गुरमुख सीस चरणां ते धरदे, चारे इक्को खुशी मनाईआ। नाल पल्लू मनी सिँघ दा फड़दे, प्रभ जी आपणी दया कमाईआ। मनी सिँघ कहे भाई सिखो हुण क्यों डरदे, डंका मारो वाहो दाहीआ। जिस दे पिच्छे रहे मरदे लड़दे, मरना उस नूं दयो सिखाईआ। जिस दे पिच्छे सिआपे रहे करदे, सिआपा उहदे गल पाईआ। आप ख़ाली हथ्थीं हो के बहि जाओ बरदे, जगत रखो ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनी सिँघ वेख आपणी खुशी मनाईआ। मनी सिँघ आ मेरे मुंने, तेरा मन्नया हरि भगवाना। जिस राजे राणे डंने, ख़ाली कीते तख्त निशाना। अन्तिम वेख सारे कीते अन्न्हे,

कोई ना जाणे विष्नूं भगवाना। फड़ बोदीयों गन्यां वांगू भंने, हलूणा मारे दो जहानां, किसे रहिण ना देवे छप्पर छन्ने, उच्चे मन्दिर ना कोए टिकाणा, गढ़ हँकारी भाण्डे भंने, योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, लख चुरासी जीव डंने, शाहो भूप राउ रंक राजाना। गुरमुख विरले बेड़ा बन्ने, जिस जन देवे आपणा चरण ध्याना। मनी सिँघ कहे जे हुण वी मेरी मन्नें, सब दा इक्को वार मेट निशाना। किसे घर ना रहि जाए थाली छन्ने, सृष्ट सबाई होए हैराना। भगत भगवन्त फिर आप जणे, जन जननी बण दो जहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, श्री भगवान होए मेहरवाना। मनी सिँघ दस्स आपणी गल्ल, गलवकड़ी हरि जू पाईआ। हुण नहीं करदा वल छल, वेला गया आईआ। की होया जे जेल दित्ता घल्ल, अग्गे पिच्छे दी जेल कटाईआ। आ हरिसंगत नाल रल, रल मिल इक्को रंग रंगाईआ। प्रभ मिलण दा दस्स वल, पर्दा आपणा आप उठाईआ। जिहड़ा तेरे अन्दर रख्या जल, गुरमुखां दे वरताईआ। आह लै मैथों फल, अमृत रस दयां खवाईआ। फेर आपणी जेल वल चल, जिथ्थे सिआपा दित्ता कराईआ। औह वेख कपूरथला थल, कुपी सब दी रिहा रुढ़ाईआ। आपणा धर के बैठा बल, बल सब दा रिहा खिचाईआ। गुरमुखां कीता आपणे वल, दूजा संग ना कोए निभाईआ। हरि का भाणा कोए ना सके झल्ल, झलक इक्को वार वखाईआ। बण जट्ट किरसाण वौहण लग्गा हल्ल, सब दी जड़ रिहा उखड़ाईआ। बण तरखाण ठोकी फाल, फ़र्क कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ होए बेहाल, हल स्वाल ना कोए कराईआ। दो जहान लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां सब दे सिर ते कूके काल, काल काल पए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दुआरे होण बेहाल, बेहबल हो हो रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मनी सिँघ तेरा कहिणा मन्न, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ ।

मनी सिँघ कहे प्रभ कर सिआपा, इक अरदास सुणाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ज्ञान ध्यान ना कोए दृढ़ाईआ। आपणी हथ्थीं कर पूरा घाटा, वस्त इक्को इक वरताईआ। जन भगतां बण सच्चा राखा, बेमुखां दे डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मनी सिँघ सति सिआपा दए जणाईआ। हाए हाए वेखो आया शेर, गुर अवतार जिस लए घेर, विष्न ब्रह्मा शिव कीते ढेर, त्रैगुण माया लेखा रिहा नबेड़, दरोही आपणा हुक्म सुणाया; हाए हाए वेखो शेर आया। पंज तत्त रहे कुरला, उच्ची रोवण मारन धाह, कोई ना पकड़े मात बांह, इक्को शेर रिहा डरा, किसे नूं लभ्भे ना कोई थाँ, उच्ची कूकण देण दुहाया; हाए हाए इक्को शेर आया। चार कुण्ट होया हनेरा, मन्दिर मस्जिद

गुरदर ढठ्ठा डेरा, सरोवर तट होया नबेड़ा, अग्गे कोई ना बन्ने बेड़ा, सारे कहिण उजड़या खेड़ा, कोए ना होए सहाया; हाए हाए इक्को शेर आया। औह वेखो शेर गया आ, जिस दी पिता ना कोई माँ, दो जहानां रिहा खा, कोई ना छड्डे जिन्नां ख़ादी सूर गां, पीर पैगम्बर अग्गे हो ना कोए बचाया; हाए हाए इक्को शेर आया। वेखो शेर मारे कड़का, संघों अग्गे लँघे ना किसे दा झटका, बेमुख जीव अद्ध विचकारे लटका, पटने वाले सिर ते बद्धा पटका, ना कुड़ी ना लड़का, उच्ची कूक रिहा सुणाया; हाए हाए इक्को शेर आया। वेखो शेर औदा नठ्ठा, पीर पैगम्बर सारा ढठ्ठा, विष्न ब्रह्मा शिव अग्गे कोई ना डटा, त्रैगुण माया ना करे रट्टा, पंज तत्त मारे फट्टा, लख चुरासी दए दुहाया; हाए हाए इक्को शेर आया। वेखो शेर आया जग, सब नूं फड़े शाह रग, हँस बणाए जीव कग, बिन गुरमुखां सोहँ जाप ना किसे जपाया; हाए हाए इक्को शेर आया। इक्को शेर आया बाघ, आपणा मुख खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बुझाए चिराग़, दीवा बत्ती ना कोए जगाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआल कोई ना मारे आवाज़, बांग कूक ना कोए सुणाईआ। हरि जू वरते आपणे स्वांग, भेव ना किसे जणाया; हाए हाए इक्को शेर आया। वेखो शेर हट्टा कट्टा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई ना लग्गे अच्छा, धोती बोदी जंञू टिक्का प्यार ना करे किसे कच्छा, मुछ दाढ़ी वाला लग्गे कोए ना अच्छा, बिन भगतां आपणा राह ना किसे जणाया; हाए हाए इक्को शेर आया, जिस दे नाम पई दुहाईआ। धरती आई लख चुरासी दस्स शेर केहड़ा, जो सब नूं रिहा डराईआ। जिस ख़ाली करना मेरा वेहड़ा, घर घर खेह उडाईआ। मैं कितां बहिवां कर के वड्डा ज़ेरा, मैथों दुःख झल्लया ना जाईआ। असीं की दस्सीए पहलों बंदा बण के नाँ रखाया सिँघ शेरा, फेर शहिनशाह बण के फेरा पाईआ। हुण सिरफ़ गुरमुखां दस्से तूं मेरा मैं तेरा, बाकी सब दी सफ़ा मिटाईआ। जन भगतां लाया डेरा, डेरा सब दा रिहा ढाहीआ। जा भज्ज के हुण वेला आया नेड़ा, जे तेरा होए सहाईआ। धरनी कहे जिन्ना चिर ना करे आपणी मेहरा, मेरा कदम ना चुक्कया जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक शेर हो दलेर, सब नूं रिहा डराईआ। बल वध गया तेरा ए। जिस नूं सच्चा सतिगुर मिल्या, जिस दा नाम सिँघ शेरा ए। झूठा चुक्कया झेड़ा ए। सतिगुर कहे तूं मेरा मैं तेरा, कीता हक़ नबेड़ा ए। गुरसिख वसया खेड़ा ए। अग्गे कुछ नहीं दस्सणा, पिछला दस्सया बथेरा ए। मैं रंग नूं चढ़ावांगा। गुरसिख गोदी चुक्क के, आपणीआं खुशीआं मनावांगा। छड्ड पिछले हावे नूं। अग्गे हरि जू खेल कर, बन्नू आपणे दाअवे नूं। गुरसिख सागर ए, निर्मल कर्म जीहदे दर होए उजागर ने। दिन वेख अज़ादी दे, लहिणे हरि मुकौण आया, बुढ्ढी गुजरी दादी दे। दीदार देवे हरि जू खुल्ला, खुल्ल मखुल्ल रखाईआ। पिछले जन्म दा फड़या सुल्ला, आपणी दया कमाईआ। मोटा

२४५
१३

ताजा वेखो फुल्ला, अन्दर रंग रंगाईआ। की होया जे सिर ते नहीं कुल्ला, पगड़ी हरि बंधाईआ। भुल्लण वाला नहीं भुल्ला, अभुल हथ्थ वड्याईआ। मेहर अन्दर नहीं रुला, रुलदी वेख सर्ब लोकाईआ। बिन कसवटीयों पाया मुल्ला, करता कीमत आप चुकाईआ। ना कोई हुक्का ना कोई चुल्ह्ला, सूटा खिच ना कोए लगाईआ। ना कोई काज़ी ना कोई मुल्लां, ना कोई सुन्नत वखाईआ। ना कोई मुहम्मद ना कोई रसूल लिला, ला शरीअत कलमा रिहा पढ़ाईआ। ना बूरा ना कक्का बिला, काला रंग ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी कदे ना ढिला, आदि जुगादि जुग जुग खेले खेल वाहो दाहीआ। रोज़ा बांग निमाज़ ना कोई कटाया छिला, भोरे विच ना कोए रखाईआ। पहला तत्त कीता फ़नाह फिला, तत्त तत्त फेर बदलाईआ। पहलों पीहण पाया गिला, साधां सन्तां मगर फिराईआ। फिर आपणे ठोकया नाम दा किला, किली सब दी दिती उखड़ाईआ। जिस ने हथ्थ विच फड़या चिला, तीर कमान टंक कंध उठाईआ। सो कलिजुग अन्तिम हिला, हौली हौली आपणी लए अंगड़ाईआ। बणे शौकीन जुतीआं उत्ते कढ्ढा तिल्ला, तिलक सब दे रिहा ढाहीआ। इक अलूणी वखाए सिला, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा चटाईआ। मोटा बण ना चले जिल्ह्ला, निक्का भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरस खुल्ला जन्म जन्म जन्म विच वखाईआ। खुल्ह्ला दरस वेख दीद, दयाल आप वखाइंदा। ना कोई मंगे शरअ बकरीद, सीस भेंट ना कोए वखाइंदा। लहिणा चुक्कया चन्द ईद, ईद आपणा नूर दरसाइंदा। वेखो आपणी आप लिख लिख दे रिहा रसीद, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। नाल गोबिन्द करे ताईद, पुरख अकाल भुल्ल कदे ना जाइंदा। अग्गे होण ना देवे किसे नूं शहीद, शहादत आपणी आपे पाइंदा। करे खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ा राह चलाइंदा। दयाल ठाकर बणे मीत, मित्र प्यारा आप अख्वाइंदा। लेखा चुक्कया जगत मसीत, मसला इक्को वार हल्ल कराइंदा। जिस जन सोहँ ढोला गाया गीत, तिस अल्ला मीआं आ आ सेव कमाइंदा। जिस दी याद करदे रहे विच चीत, सो अचनचेत आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्ह्ला अनमुल्ला दरस आप वखाइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई केहड़ी बात, हरि जू भेव जणाइंदा। अन्दर सब दी इक्को ज़ात, बाहर वंड ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म सदा साथ, सगला संग निभाइंदा। मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीद पुच्छे वात, दर दर वेख वखाइंदा। जिस ने अन्दर वेख्या मार झात, सो दीन मज़्हब विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुसल्यां नाल करे मसला, हिंदू वेखे ना कोई असला, दो फसला आपणा खेल कराइंदा। बिन बंदगी पाए ख़ैर, खैहड़ा सब तों दए छुडाईआ। पुरख अकाल कर के आपणी मेहर, मेहरवान लए मिलाईआ। जूठा झूठा चुके झगड़ा झेड़, झंजट सारे रिहा

मिटाईआ। गुरमुख सज्जण साचे घेर घेर, वस्त अनमुल्ली झोली पाईआ। इक मिसाल भीलणी खादे बेर, हुण वेखो ग़रीब निमाणयां दे टुक्कड़े मंग मंग खाईआ। नाउँ धर शेर दलेर, देर अन्त कोए ना लाईआ। जगत वासना ढाह ढाह करे ढेर, काया मन्दिर ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बंदगी गुरमुखां झोली पाईआ। गुरमुखां पिच्छे करे बंदगी, हरि जू बन्दना आप जणाइंदा। आपणी हथ्थीं तुहाढ्ढे अन्दरों कढ्ढे गंदगी, कूड़ी क्रिया मैल धवाइंदा। दर घर गुरमुखां करे मुशंदगी, मुश्कल सब दी हल्ल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बंदगी इक जणाइंदा। साची बंदगी हरि का चरण, सतिगुर सच सच समझाईआ। बिन नेत्रों खुल्हे नेत्र हरन फरन, भेव अभेव दए जणाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, गेड़ चुरासी दए कटाईआ। साचे पौड़े गुरमुख चढ़न, जिस जन आपणी दया कमाईआ। बिन बंदगीयों दरगाह साची वड़न, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। आत्म परमात्म सोहँ ढोला पढ़न, ढोला हरि जू रिहा जणाईआ। बण विचोला आए खड़न, खिड़की काया कुंडा लाहीआ। नाता तोड़े बरन वरन, सरन आपणी इक तकाईआ। बिन बंदगीयों गुरमुख हरि का दर्शन करन, पिछला लेखा लेखे पाईआ। बंदगी वेख इक नरैण, नरैण हरि जू आप जणाइंदा। दर दरस पेखत नैण, नैण नैणां हरस मिटाइंदा। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्त कहिण, सो तुहाढ्ढी सिफ्त आप सालाहइंदा। बिन सद्दयां पुच्छयां गुरमुखां आया लैण, लहिणा पिछला वेख वखाइंदा। बिन साकों बणया साक सज्जण सैन, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंदगी बंदे इक जणाइंदा। साची बंदगी वेख बंदे, बिन बदनों आप जणाईआ। रसना जिह्वा झूठे धंदे, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। पढ़न वाले सारे अन्धे, आत्म पर्दा कोए ना लाहीआ। दीन दयाल साहिब सतिगुर जिस जन आपणा राग सुणाए कन्ने, काग हँस बणाईआ। सो गुरमुख सच बंदगी इक्को मन्ने, जिस बंदगी नाल प्रभ मिले नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त इक्को इक वरताईआ। बंदगी देवे बंदी तोड़, बंदीख़ाना ना कोए रखाइंदा। नाता चुक्के मढ़ी गोर, अन्ध घोर सर्ब गवाइंदा। आपणे संग लए तोर, तारनहार दया कमाइंदा। नरैण नरायण पै गई लोड़, लोड़ींदा साजण घर विच आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम बंदगी हरिजन झोली पाइंदा। औह आई माई मइया होणी, आपणा रूप वटाईआ। लख चुरासी जिस ने कोहणी, बण बक्करा रूप कसाईआ। लोकीं कहिण करनी अनहोणी, गुरू पीर अवतार छड्ड गए नाता, होणी सब दा गुरू नज़र आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आकार माता दए वखाईआ। कलिजुग बेरी उपर छत्री, छत्र छाया इक

जणाईआ। इस दीआं सीखां तारां ब्रह्मण वैश शूद्र क्षत्री, चार कुण्ट वखाईआ। अन्तिम होणी मौत फल खा जाए बण के बक्करी, पत डाली रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्मे जकड़ी, हिल ना सके राईआ। खड़ी खलोती अकड़ी, सुक्की हो के दए दुहाईआ। विच रहे कोई ना मकरी, फ़रेब सब दे रिहा मिटाईआ। जिस दे सिर उत्ते छत्तड़ी, तिस दी जड़ रिहा उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रिहा जणाईआ।

❇ १८ मग्घर २०१६ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ❇

साहिब सतिगुर इक्को डंका, एकँकारा आप वजाईआ। धर्म दुआरे सुणया जनका, अष्टाबक्कर नैण शरमाईआ। करे बन्दना बार अनका, अक्ल कल वेख वखाईआ। बिन फेरयां फिरया मन का मणका, मन वासना रहिण ना पाईआ। लालच चुका झूठे धन का, धनाढ इक्को नज़री आईआ। लेखा चुक्कया सूरज चन्द का, चानण मिल्या सच्चा माहीआ। वसेरा चुक्कया छप्पर छन्न का, महल अटल ना कोए सुहाईआ। राग सुणया एका कन्न का, अनादी नाद वजाईआ। लेखा चुक्कया माटी तन का, तार सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक वजाईआ। साचा डंका एका नाम, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। जिस नूं सुण के रघपत राम, रमईया निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जिस डंके पिच्छे करे काम, जनक सपुत्तरी मात प्रनाइंदा। जिस डंके अन्दर बणे गुलाम, आपणा माण गवाइंदा। जिस डंके पिच्छे छड्डे अस्थान, अयुध्या रूप ना कोए वखाइंदा। जिस डंके पिच्छे गया बियाबान, जंगल जूह उजाड़ बियाबान फेरा पाइंदा। जिस डंके पिच्छे होया हैरान, सीता सवाणी मुख भवाइंदा। जिस डंके पिच्छे हनवन्त मिल्या आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक वजाईआ। साचा डंका साहिब समरथ, आदि जुगादि वजाइंदा। हरि पुरख निरँजण रखे आपणे हत्थ, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। काहना कृष्ना मार्ग दस्स, किणका किणका भेव खुल्हाइंदा। आपे वेखे खेल हस्स हस्स, हँस मुख साचे तख्त सोभा पाइंदा। सति संदेस सुणाए जस, भेव अभेद खुल्हाइंदा। तिन्नां लोकां अन्दर कर के वस, आपणा वसल ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक सुणाइंदा। साचा डंका पीर पैगम्बर, परवरदिगार आप सुणाईआ। नूरी नूर लाए तनका, तन रबाब इलाहीआ। खेले खेल अलख अगम्म का, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक वखाईआ। साचा डंका सुणया नानक, निरँकार आप वजाया। करया खेल इक अचानक, अचरज आपणा भेव खुल्हाया।

नानक निरगुण वेखे हरि का डंका सही सलामत, सब नूं रिहा समझाया। आदि जुगादि सदा सदा सब नूं करे ममानत, सिर सिर आपणा हुक्म मनाया। कोई ना सक्या मात पछाणत, पछोताव सब नूं रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका हथ्थ रखाया। साचा डंक श्री भगवान, एका आपणे हथ्थ रखाईआ। शाह पातशाह नौजवान, साचे तख्त आप उठाईआ। दो जहानां हुक्मरान, भय भउ इक जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण आण, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ। तेई अवतार कर कर गए ध्यान, ध्यान विच ना आईआ। पीर पैगम्बर कलमा पढ़दे रहे ईमान, आप आपणा राह जणाईआ। नानक निरगुण निरगुण डंका वखाया कर ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। नानक निरगुण वेख्या डंका, सति सतिवादी हथ्थ रखाइंदा। ना कोई घाड़त ना कोई बणता, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। ना कोई आदि ना कोई अन्ता, मध नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई सोग ना कोई चिन्ता, हरख़ ना रूप वटाइंदा। ना कोई उसतत ना कोई निन्दा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। ना कोई कुंजी ना कोई जिंदा, अन्दर बंद ना किसे कराइंदा। ना कोई सागर ना कोई सिन्धा, जल धार ना कोए रुढ़्हाइंदा। करे खेल गुणी गहीर गहर गहिंदा, मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी नज़र उठाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हथ्थ किसे ना देंदा, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर मंग मंगाइंदा। अग्गों हरि जू हस्स के कहिन्दा, एस डंके अन्दर सब नूं मात फिराइंदा। एह डंका मेरे चरणां कोल बहिंदा, दिवस रैण सीस निवाइंदा। होए निमाणा सरनी पैंदा, दर इक्को मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक प्रगटाइंदा। साचा डंका तेरा भगवान, नानक वेख वेख बिगसाईआ। दर तेरे दर्शन कीता आण, तरस दित्ता कमाईआ। दोए जोड़ करां प्रणाम, चरणीं सीस झुकाईआ। तेरा डंका तेरे हथ्थ सोहे मेहरवान, वेख्यां नज़र कोए ना आईआ। ख़ाली झोली मंगां दान, दर तेरे अग्गे डाहीआ। ग़रीब निमाणयां वल वेख मार ध्यान, मोहे ग़रीब इक्को मंग मंगाईआ। चुग चौकड़ी करया खेल महान, गुर अवतार सेवा लाईआ। मैं बाली बुध अञ्याण, तेरा अन्त ना पाया जाईआ। तेरा डंका वेख नौजवान, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। मैं लोकमात तेरे हुक्मे अन्दर दे के जावां ब्यान, लेखा लिख्त नाल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। डंका वजाए दो जहान, फ़तहि आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरी जोती तेरी सेवा करे आण, गोबिन्द तेरा रूप वखाईआ। पिता पूत नाता जुड़े जहान, तागा सूत एका वट्ट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका रिहा चमकाईआ। साचा डंका फड़ हथ्थ, हरि जू नानक आप वखाइंदा। आ नानक तैनूं दयां

दस्स, मेरा डंका की की खेल कराइंदा। वेख थल्ले उपर दो जहानां एहदे वस, पीर पैगम्बर दोए दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। एह सारयां वल वेख के रिहा हस्स, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जुग जुग जिध्धर चाहे ओधर देवे धस्स, मार हुज्जां अग्गे लाइंदा। एहदे अग्गे किसे दा चले ना कोए वस, अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। करवट बदल वेखे सारे जाण ढठ्ठ, मूँह दे भार आप सुटाइंदा। आप हुक्म देवे डट, भय भउ इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे डंके आप वखाइंदा। वेख नानक डंका वज्जे, डौरु नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड अग्गे पिच्छे फिरन भज्जे, भाजड़ सब नूं रिहा पाईआ। कोई ना रखे किसे दी लज्जे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। हुक्मे अन्दर सारे बद्धे, इक्को हुक्म वड्याईआ। पीर पैगम्बर औह वेख एहदे हुक्मे नच्चे, बण मलँघ नाच वखाईआ। फिर वी कहिण असीं कच्चे, साडी चली ना कोई चतुराईआ। औह वेख नानक सारे दिसण बच्चे, बाली बुध वखाईआ। वेख मेरे अन्दर एन्हां दे संचे, जिथों बाहर लवां प्रगटाईआ। उंगली ला ला वेखां फिरन भज्जे, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिस वेले मेरा डंका गज्जे, सारे मूँह दे भार सुटाईआ। सारे कहिण जिउँ भावे तिउँ रखें, तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी फड़ डंका आपे फबे, आपणे हथ्थ रिहा उठाईआ। जे कोई अक्खां चुक्क के लभ्भे, नज़र किसे ना आईआ। नानक तेरे उत्ते किरपा कीती झब्बे, झुंम झुंम आपणा मेघ बरसाईआ। जिस नूं कहिन्दे पीर पैगम्बर उह रब्ब रब्बे, रम्बीआं नाल सब दीआं खोपरीआं रिहा लाहीआ। वेख मकबरयां विच दब्बे, तन ख़ाकी विच समाईआ। आह वेख निक्के निक्के डब्बे, जिथ्थे गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते बठाईआ। आप फिरे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे आपणा हुक्म वरताईआ । जे कोई सिर चुक्के उत्तों दब्बे, आपणा भार पाईआ। सारे कहिण प्रभ साडी रख लज्जे, तेरे बिन अवर ना कोए सहाईआ। ओस वेले मेरा डंका वज्जे, डर सब दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक डंका दित्ता वखाईआ। वेख डंका गुर नानक होया हैरान, सतिगुर घाड़त किवें घड़ाईआ। बिन सचखण्ड दुआरिउँ होर किसे थाँ हो ना सके एहदी पछाण, नज़र किसे ना आईआ। सच दस्स पिता पुरख किस रखें विच म्यान, आदि जुगादि छुपाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सच सच रिहा जणाईआ। एकँकार नौजवान, इक इकल्ला बेपरवाहीआ। जिस दा सति नाम, सति सति समाईआ। एहो मेरा सच्चा म्यान, जिथों आपणा मंत्र प्रगटाईआ। फेर लेखा चले जहान, करता पुरख कार कमाईआ। निरभउ हो श्री भगवान, निरवैर आपणी धार बंधाईआ। अकाल मूर्त वेख मार ध्यान, अजूनी रहित जून विच ना आईआ । सैभं ना होए मेहरवान, नानक गुर आपणा प्रसादि तेरी झोली पाईआ। सृष्ट सबाई दे जा ज्ञान, आपणा

डंका तेरे हथ्थ फड़ाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा हुक्म सुणाईआ। नानक चरणीं डिगा श्री भगवान, प्रभ तेरा डंका तोहे भाईआ। मैं हुक्मे अन्दर करां कल्याण, सरगुण बण बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे डंके नानक एकँकार सतिनाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूर्त अजूनी सैभं गुर प्रसादि आपणा भेव दित्ता जणाईआ। अग्गे लिखी गुरू ग्रंथ दी गाथ, जे कोई पुछे समझ किसे ना आईआ। दस्सण सुणन दी नहीं एह बात, बिन वेख्यां तृप्त कोई ना आईआ। सोचयां सोचण वाली नहीं गाथ, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका डंका दए वड्याईआ। साचा डंका तेरा प्रधान, सच प्रधानगी रिहा कमाईआ। दो जहानां रखे आण, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म मनाईआ। गुर अवतारां दए ज्ञान, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी सेव कमाण, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। अन्तिम सारे होण हैरान, तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। कर किरपा बेनन्ती कर परवान, सच परवाना मेरे हथ्थ फड़ाईआ। कवण वेला डंका वजाएं विच लोकमात जहान, ज़ाहर ज़हूर आपणा वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी कर परवान, परम पुरख दए समझाईआ। कलिजुग अन्तिम आए नौजवान, आपणा डंका नाल लिआईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, करे खेल आप महान, ताल ताल नाल वजाईआ। अन्तिम डंका कल वज्जे मात, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। दो जहानां वेखे डूँग्घे ख़ात, ख़तरा सब नूं इक जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखण मार झात, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाइंदा। लै अंगड़ाई अन्धेरी रात, आलस निंद्रा सर्ब मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखे पैंदी रास, साधां सन्तां अन्दर बाहर रस्ता वेख वखाइंदा। गुर प्रनाली वेखे जगत शाख़, गद्दी गद्दीदार कौण हंढ्ढाइंदा। नेत्र लोचण खुल्ही वेखे आंख, निष्अक्खर कवण पढ़ाइंदा। सर सरोवर वेखे ताट, अमृत जल कवण वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान वेखे पाठ, पाठशाला कवण वड्याइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश फोल फुलाए ज़ात पात, अजाति रंग कवण रंगाइंदा। एथे ओथे पन्ध मुकाए दुराडा वाट, दूरों नेड़े नज़री आइंदा। लख चुरासी जीव जंत काया मन्दिर अन्दर वेखे सुहञ्जणी खाट, आसण सिँघासण कवण सोभा पाइंदा। मस्तक जोत निरँजण दीपक वेखे ललाट, बिन तेल बाती कवण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आपणा डंका इक प्रगटाइंदा। कलिजुग डंका लै के आए आप, आपणी हथ्थीं लए वजाईआ। भज्जा फिरे जगत पाप, पापियां नाल रिहा मिलाईआ। उच्ची कूके किसे कम्म ना आया पाठ, रसना जिह्वा कूड़ी करी पढ़ाईआ। वेखो सब दा हुन्दा घात, घाउ हरि जू रिहा लगाईआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण कोई ना दए नज़ात, नज़ाम कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका डंका रिहा उठाईआ। दस्स डंके की तेरा कम्म, हरि जू अन्त सुणांवदा। डंका कहे मैं सब दा लाहवां चम्म, चमड़ी तन ना कोए रखांवदा। घर घर पावां ग़म, सुख नज़र किते ना आंवदा। जो घड़या सो देवां भन्न, आपणी हथ्थीं ठोकर लांवदा। पुरख अबिनाशी कहे शाबाश मेरे चन्न, तेरी गल सुण के मैं खुशी मनांवदा। इक मेरा कहिणा लैणा मन्न, मैं हुक्म नाल समझांवदा। जिथ्थे बैठा होवे मेरा जन, ओथे जा के सीस नवावणा। डंका कहे मेरे भगवान मैं कहां धन्न धन्न धन्न, जो महाराज शेर सिँघ दर्शन पांवदा। इक सुनेहड़ा देवां जा के कन्न, हौली हौली समझांवदा। वेख्यो सिखो एह ना जाणयो अक्खां तों अन्न्ह, अन्दर वड़या नज़र किसे ना आइंदा। सब दे बेड़े रिहा बन्न्ह, बिन चप्पूउँ आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे डंके आपणा खेल वखाइंदा। डंका कहे दस्स बापू, औह वेखे चाचे गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे कुरलाईआ। किसे ने हथ्थ फड़या तमाकू, कोई छुरीआं नाल झटके रिहा कराईआ। तेरे नाम लुट्टण नूं सारे बण गए डाकू, हट्टो हट्ट विकाईआ। मेरे हथ्थ तेरे नाम दा इक्को चाकू, सब दे पेट चाक कराईआ। हथ्थ फड़या वड्डा बाटू, दो जहान विच छुपाईआ। जिस धरती भुआई वांग लाटू, भम्बीरी आपणे हथ्थ रखाईआ। मैं तेरा डंका नाढू, सब दा माण गंवाईआ। दो जहान कोई ना छाडूं, संसा कोए रहिण ना पाईआ। वेहला हो के फिर फिरां वाधू, आ तैनूं सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी कहे आह लै मेरा इक जादू, गुरसिखां सिर धूढ़ी पाईआ। सारे कहिण उच्ची कूक हाए बापू हाए बापू, तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। श्री भगवान कहे आओ बच्चे मेरे निक्के काकू, आपणे कुड़ते हेठां लवां छुपाईआ। तुहाढ्ढे वल कोई ना झाकू, नैण सब दे दयां कढ्ढाईआ। इक चढ़ावां सच्चे राथू, रथ आपणा नाम वखाईआ। सारे वाजां मारन ओए आ दातू आ दासू, ओ दादू देहुरे वाला गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डंका इक्को इक वखाईआ। इक्को डंका राजन राजा, रय्यत दो जहान वखाइंदा। अन्तिम चल के आया विच देस माझा, बण मज़दूर सेव कमाइंदा। ग़रीब निमाणयां सुत्यां जागदयां मारे वाजां, आपणा भेव खुलाइंदा। आओ वेखो रचया काजा, पिता पूत गोद सुहाइंदा। तुहाढ्ढे पिच्छे आया भाजा, भज्जड़यां पिटी अल्ला राणी गलों लाहइंदा। वेखो ईसा मूसा मुहम्मद पढ़न निमाजां, निमाज़ीआं वल ना नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डंका इक्को नाम सुणाइंदा। मिस्तरख़ाने वेख रविदास हथ्थ रम्बी, रमता रमता खेल कराईआ। पिछली करतूत रही कम्बी, कांबा लग्गा वाहो दाहीआ। जरनैल जट्ट रिहा झम्बी, नाल बंदूक लिआया उठाईआ। हुण आया रावी कन्ढी, कानयां विच भुआईआ। जिथ्थे ना कोई राह ना कोई डण्डी, औझड़ राह वखाईआ। ना सवाणी ना कन्न

डण्डी, हथ्थ मैहन्दी ना कोए वखाईआ। कंगण ल्यांदा मंगी, वासना हो गई गंदी, गुरबत नाल मिलाईआ। करया खेल बण पखण्डी, परख परख ना कोए रखाईआ। दीन दयाल सतिगुर पूरा सदा सदा बख़्शंदी, मिस्तरख़ाने आयां सब नूं जाए रंदी, सिध्धा लाए सूत्र तन्दी, जगत विकार वाधू सिकड़ देवे लाहीआ। आ वेख कारख़ाना, ख़ाना सब दा रिहा बदलाईआ। पिच्छे नालों हुण बदलया ज़माना, बदली जन्म जन्म वखाईआ। जिस ने कंगण दित्ता गाना, सो घूँगट रिहा उठाईआ। ना मर्द ते ना ज़नाना, गंगा माई ना कोए वड्याईआ। इक्को हथ्थ समरथ वखाना, वस्त अतोट अतुट वरताईआ। लख चुरासी घड़े भंने बण तरखाणा, चरख़े गुड्डीआं नाल मिलाईआ। जो जन आ जाए सतिगुर दे सच्चे कारख़ाना, तिस दा कालख़ टिक्का देवे लाहीआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवाना, सच्चा कारख़ाना आपणा नाम चलाईआ। कारख़ाने विच बैठा कारीगर, करता आपणी खेल कराइंदा। दारी करे दर बदर, दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। जिस नूं बाहों लए फड़, तिस दा पुरजा पुरजा साफ़ कराइंदा। जे कोई अग्गे जाए अड़, चाढ़ चरखड़ी दो जहानां बाहर कढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग जुग सदा सदा सद आपणा कारख़ाना ज़रूर चलाइंदा। कारख़ाने विच नहीं कोई मज़दूर, हज़ूर आपणी सेव कमाईआ। आवे जावे नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कला कुदरत आप भरपूर, आपणा इंजण आप चलाईआ।

✻ १८ मग्घर २०१६ बिक्रमी बीबी बाजी दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ✻

सतिगुर डंका खोल्हे जाग, जगत निंद्रा दए चुकाईआ। गुरमुखां देवे इक वैराग, बिरहों चोट लगाईआ। जन्म कर्म दा कटे दाग़, दुरमति मैल धवाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन माघ, अमर अमृत मेघ बरसाईआ। पूरब लहिणा रखे लाज, लाजावन्त बेपरवाहीआ। नाता तोड़ जगत समाज, समग्री आपणा नाम वखाईआ। धुरदरगाही सच्चा दाज, नाम अनमोला झोली पाईआ। जगत बेड़ा पार जहाज़, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां वेखे ग़रीब निवाज़, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डंका इक्को नाम सुणाईआ। डंका बोले सच जैकार, जै जैकार सुणाइंदा। गुरमुखां करे ख़बरदार, धुरदरगाही ख़बर आप पुचाइंदा। मेल मिलावा सांझे यार, सगला संग रखाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अथाह आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाइंदा। हरि डंका नाम सुणाए संदेस, संसा सब दा रिहा चुकाईआ। आओ वेखो नर नरेश, निरगुण

आपणा फेरा पाईआ। जोती जाता वसया माझे देस, सम्बल आपणा देस सुहाईआ। खेल करे गुरू दस्मेश, गुर गुर आपणा नाउँ वड्याईआ। बिन लिख्यां लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ जणाईआ। आपणे अन्दर आपणा दस्से भेत, घर घर विच कुण्डा लाहीआ। रल मिल के सतिगुर पूरे नाल लओ खेड, हसंदयां खडंदयां विचे मुक्त कराईआ। नाम हथ्थ फड़ाई गेंद, बाला बाल्यां रिहा परचाईआ। गुर गोबिन्द चार वरनां ला के गया पेंद, फल पुरख अकाल लगाईआ। लख चुरासी सुत्ती गूढ़ी नींद, सोयां मात ना कोए उठाईआ। गुरसिख रल के झूटो इक्को पींघ, दो जहान हुलारा वखाईआ। दूरों वेख सिंगी ऋषी पए हींग, आपणी तपसिआ माण गंवाईआ। जिस नूं बरस बरखां रहे ढींड, ढाबू नजर किसे ना आईआ। आत्म परमात्म इक बींद, बन्धन रिहा पाईआ। दस्म दुआरी दी सच्ची बोली ईद, दीद शनीद लिख के रसीद किसे हथ्थ ना फड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ वड्डा ढाबू, टब्बर दो जहान बणाइंदा। निरगुण हो के रखे काबू, सरगुण नाच नचाइंदा। जिस दा किसे ना लभ्भा जादू, जादू अन्दर कोटन कोटि नाम प्रगटाइंदा। फिर वी इक इकल्ला सब तों हो जाए वाधू, वेहला हो के खुशी मनाइंदा। उह साहिब सच्चा ढाबू, ढोलक छैणे ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत बाणी भगतां विच्चों प्रगटाइंदा। छुटी देह लग्गा नेंह, देह देह विच्चों पलटाईआ। अमृत बरसिआ सतिगुर मेंह, दुरमत्त मैल रुढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया सिर पाई खेह, इक्को आपणा नाम समझाईआ। सच वस्त हरि दस्ती दे, दोए हथ्थां सफल कराईआ। लेखे लाई बुढड़ी बे, पर्दा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कर्म नाल वटाईआ। कर्म नाल वटया कर्म, पिछला कर्म मिटाया। सतिगुर होया घर जरम, सतिगुर सच्चा पाया। एहो गुरसिख सच्चा मरन, गुर चरणी सीस निवाया। सतिगुर पूरा तरनी तरन, तारनहार अख्वाया। राए धर्म वरगे की वचारे करन, चित्तर गुप्त हिसाब सुटाया। जिन्ना मिल गया करनी करन, करता पुरख फेरा पाया। तिन्हां चुक्कया मरन डरन, जन्म गेड़ ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दे दे शुकर मनाया। उडीक रखी बीबी बाज़ी, बचत हरि जू आप जणाईआ। लेखे लाए खादी पीती दाल रोटी सब्जी भाजी, लूण मिर्च हलदी नाल मिलाईआ। कर के जावे सब नूं राज़ी, आसा आसा पूर कराईआ। अग्गे आपणा नाम दे के जावे भाजी, अमृत खाण पीण झोली पाईआ। सारे कहो हरिसंगत हो गई राज़ी, घर कृष्न राधा की चले चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नजर इक उठाईआ।

❇ १८ मग्घर २०१६ बिक्रमी सन्त सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ❇

हरि डंका कहे मेरा नाउँ सार, मेरी सार किसे ना पाईआ। मेरा रूप एकँकार, आकार नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि तिक्खी धार, लुहार तरखाण ना किसे घड़ाईआ। मैं आपणे विच्चों कढुया इक प्यार, प्यार शब्द रूप वटाईआ। मेल मिला के बण गया शब्द सार, शहिनशाह बणया बेपरवाहीआ। जिस विच्चों मेरी निकली आप आपणी धार, असुते प्रकाश कराईआ। जगमग जोत जगी अपार, वेखण वाला कोए नज़र ना आईआ। आपे वेखे पावे सार, अक्ख नैण ना कोए रखाईआ। आपे फड़ करे प्यार, हथ्थ बांह ना कोए वड्याईआ। आपे अंगीकार करे करतार, अंग रंग ना कोए चढ़ाईआ। आपे सेज सुहञ्जणी कर तैयार, वस्त्र भूशन ना कोए विछाईआ। आपे बणे शहिनशाह शाहो भूप सिक्दार, आपणा हुक्म मनाईआ। आपे बण के सेवक सेवादार, आपणी सेव आप कमाईआ। आपे बण पुरख सिरजणहार, मेरी धार नार रूप वटाईआ। विचोला बण सच दरबार, पर्दा उहला दित्ता चुकाईआ। सार शब्द सार करे प्यार, सार आपणे विच रखाईआ। रसना कह के कलम लिख के इक ऊड़ा उत्तों मूँह गए खलार, अन्दर वड़ ना कोए वखाईआ। हरि जू आपणी वड्डी रखी डूँग्घी गार, हाथ किसे ना आईआ। आपे ओथे बैठा रहे बण के हुशियार, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। आपणे प्रेम दी वजाउदा रहे आप सतार, तार आपणी आप हिलाईआ। आपे करे सच गुफ्तार, आपणी सोभा आप सुणाईआ। रफ़ता रफ़ता आहिस्ता आहिस्ता हौली हौली आपणे विच्चों आप निकलया बाहर, बाबल बण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका शब्द सार, साजण इक अख्वाईआ। सार शब्द प्रभ का शौंक, शौकीन आप हंढुाइंदा। ओथे कोई ना सके पहुंच, मस्कीन हो हो सर्ब गाइंदा। बिन सार शब्द सारे होण औंत, औंतरा जगत वखाइंदा। सार शब्द आदि जुगादि जुग जुग कदे ना आई मौत, मौत सब दे नाल प्रनाइंदा। सार शब्द जुगा जुगन्तर इक्को बहुत, बौहड़ी बौहड़ी सब तों कराइंदा। सार शब्द प्रकाश निर्मल जोत, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सब दी पावणहार सरोत, सरोत आपणी आप जणाइंदा। जिस बणाया सचखण्ड कोट, सो सार शब्द अख्वाइंदा। एकँकार वसे आपणे लोक, लुक्या नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप आप प्रगटाइंदा। सार शब्द करे उसारी, उसरे महल्ल मनारा। आदि अन्त खेल न्यारी, खेले खेलणहारा। जुगा जुगन्तर जोत न्यारी, निरगुण सरगुण दस्से धारा, विष्न ब्रह्मा शिव दए आधारी, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक सहारा। पंज तत्त पंज तिन्न दे आधारी, करे खेल अगम्म अपारा। लख चुरासी बण वणजारी, खोल्हे हट्ट संसारा। नाम वस्त रख पटारी, ताला लाया भारा। कोई ना वेखे जीव गंवारी, नज़र किसे

ना आया। सार शब्द शब्द गुर करे प्यारी, गुर गुरसिख दए जगाया। दीआ बाती इक्को वारी, कमलापाती नूर टिकाया। लेखा जाण धुर दरबारी, हरिजन करे सच प्यारी, परम प्रीती इक सिखाया। गुर सतिगुर गुरसिख सोहे इक दुआरी, आत्म परमात्म पावे सारी, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। सार शब्द आदि जुगादि तिक्खी कुहाढ़ी, दो जहानां दो फाड़ कराया। डरदा ब्रह्मा बुड्ढा चरण छुहाए दाढ़ी, आपणा सीस निवाया। विष्नूं चरणीं डिगे वारो वारी, सांगोपांग तजाया। शंकर कहे मेरी शंकया हारी, शाह शंकर इक वडयाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर जाइण बलिहारी, बलि बलि ढोला गाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान बाणी खाणी बण लिखारी, लिख लिख लेख जणाया। सार शब्द कहे मेरी सच निशानी, जुग चौकड़ी नाम संदेस सुणाया। एथे ओथे मेरा कोए ना सानी, लाशरीक इक अख्वाया। पीर पैगम्बरां मारे कानी, अणयाला तीर चलाया। दोज़ख़ बहिश्त दोहां तों मंगे कुरबानी, बचया कोए रहिण ना पाया। सचखण्ड खेल महानी, सचखण्ड आपणा घर सुहाया। घर विच जगे जोत नुरानी, नूरो नूर डगमगाया। मेरा पद पद निरबाणी, चौथा पद इकीवां हिस्सा एह पहली वंड वखाया। एदूं अग्गे किसे ना दिसा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त बेपरवाह आप अख्वाया। आदि जुगादि आप अनडिठा, अनडिठड़ी कार कमाया। कलिजुग अन्तिम हो के पुट्ठा, पुट्ठी पैरीं लोकमात आया। पैरीं ना पाया जुत्ता, राह खैहड़ा ना कोए वखाया।
२५५
१३
गुरसिख दे प्यार विच्चों उठा, रूप रंग ना कोए जणाया। जिस नूं कोई ना कहे माँ मेरा पुत्ता, सो पतिपरमेश्र आया। गुरसिखां दे अन्दर वड़ के सुत्ता, गूढ़ी नींद आपणा आसण लाया। नाल लै के आया आपणा रुक्का, सोहँ साचा लेख पढ़ाया। पिछला लेख सब दा मुक्का, मुकीआं नाल रिहा डराया। हथ्थीं भन्यां सब दा हुक्का, हकीकत आपणे हथ्थ रखाया। जिहड़ा गुर अवतारां पीरां कोलों रिहा लुका, सो पर्दा रिहा उठाया। दो जहान दा आया भुक्खा, सिंघ शेर आपणा नाउँ रखाया। ओथे खांदा रिहा चंगा चोखा, एथे भुख्यां कोलों टुकड़े मंगण आया। जेहड़ा देंदा रिहा धोखा, गुरसिख धूएं धुखदे अग्नी जोत करे रुशनाया। उज्जल करे मुखा, मुख आपणे नाल सलाहया। भगत भगवन्त दोवें ना औण मात गर्भ कुक्खा, दस दस मास ना अग्न तपाया। वेला अन्तिम ढुका, झुक झुक आपणा दरस वखाया। सारे कहिण दो जहान पुरख अबिनाशी राहों घुथा, भुख्यां नंगयां पिच्छे फिरे वाहो दाहीआ। शाह सुल्तान राज राजान बण हँकारी कहिण श्री भगवान लुच्चा, जिस सब दा माण गंवाया। गुरमुख गुरसिख कहिण हरि सतिगुर सच्चा सुच्चा, सुच्च सच रिहा वरताया। प्रेम भगती अन्दर जुटा, दिवस रैण घोल कराया। दो जहान जिस ने लुट्टा, लुट्ट आपणे नाम जणाया। सिंघ हो के आप बुक्का, बुकल सब दी पाड़ वखाया। धरत मात दी ख़ाली करे कुक्खा, लख चुरासी मुख रखाया। श्री भगवान उत्ते क्या कोई करे गुस्सा, फड़या

हथ्थ किसे ना आया । इक दूजे तों लैंदे फिरदे पुछां, जगत अन्धेरा छाया। दीन दयाल ठाकर स्वामी सब तों रुसा, रस्ता सब दा बंद कराया। लेखा चुक्के मूसा ईसा, ईस मूस दए दुहाया। काला पाया गल विच सूसा, नीला आपणा रंग रंगाया। कलिजुग खेह उडाए कूड़ी क्रिया भूसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सार शब्द शब्द सार निरगुण रूप आप करतार, सरगुण गुर शब्द दए आधार, शब्द गुर पंज तत्त डेरा लाया। फेर करे सति जैकार, जै जैकार सुणाया। जै जैकार बण लिखार, अक्खर रूप वटाया। अक्खर होए सेवादार, सिफ्त करे बेपरवाहया। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सार सांझा यार, गुर अवतार जिस दी धार, पीर पैगम्बर जिस दी कार, करनी करता आप कमाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सच विहार, बण बिवहारी आपणा राह चलाया। जुग जुग सब दे हथ्थ फड़ाया डबरू, नाम लोकमात जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुरू अवतार पीर पैगम्बर बण के गए गभ्भरू, आपणा बल रखाईआ। पुरख अकाल सब नूं कहे एह निक्के निक्के बचढू, बच्चयां वांग नाच नचाईआ। अन्तिम सब दा खेड़ा उजड़ू, थिर कोए रहिण ना पाईआ। बाहों फड़ सब नूं रगढू, रगढ़ा इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अग्गे अग्गे अग्गे लाईआ। अग्गे वाल्यां चुक्कया पिच्छा, पिच्छा नज़र ना आया। जिन्हां दी पुरख अकाल करे रिच्छा, सो गुरसिख क्यों रिहा घबराया । वंडण आया इक्को हिस्सा, हिरस सब दी रिहा मिटाया। अन्दरे अन्दर मारे खिचा, रसन ज़बान ना कोए हिलाया। पिच्छे रविदास फड़या नीचा, नीचों ऊँच बणाया। हुण रखे चरणां विच दलीजा, दिलबर आपणा मेल मिलाया। कर प्यार करे रीझा, बच्चे ख़ुशी नाल पढ़ाया। तिन्हां दा खुल्लया जाणो नैण तीजा, जिन्हां नूं रातीं सुत्यां दरस दिखाया। सतिगुर साहिब ओन्हां उत्ते पतीजा, जिस घर जा फेरी पाया। पिछला नाता छुटया चाचा भतीजा, बापू इक्को नज़री आया। घर विच ख़ुशी कराए गुरसिख सवाणी वेखे मेरा मैनूं मिल्या जीजा, आप आपणा रंग वटाया। इक दूजे दा ख़ुश होए कर के दीदा, दीद ईद चन्द चढ़ाया। जिस राह दस्सया सिध्धा, चरण कँवल ध्यान लगाया। गुरसिख हरिसंगत सारे रल के पाओ गिधा, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, घर आप मिलण आया। पिच्छे वाली छड्डी चालाकी, चालाण सब दे फाड़ वखाईआ। हुण देण आया बाकी, बन्नू विस्तर सिर उठाईआ। ना कोई पिनसल ना कोई कापी, कुतबख़ाना ना कोए जणाईआ। कोट जन्म दे उधारे पापी, जो जन आए सरनाईआ। अठ्ठे पहर करे राखी, सिर आपणा हथ्थ उठाईआ। एहो जिहा पिच्छे किसे नूं नहीं लभ्भा साथी, जो डिगयां फड़ के नाल आपणे चलाईआ। वेखो कोटन कोटि रोंदे पाठी, पढ़ियां हथ्थ किसे

ना आईआ। जिन्नां घर धूआं धुखे ईंधन मिले पाथी, सो ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। छड्ड दित्ते बैठे उपर हाथी, ताज ख़ाक विच मिलाईआ। गुरसिखां उत्ते पाई काठी, शाह सवार बणया सच्चा माहीआ। ना कोई वेखी ज़ात पाती, वरन बरन ना कोए चतुराईआ। सेवा करे सुत्यां रातीं, प्रभ नूं रत्ती शरम ना आईआ। डूंग्घी कन्दर अन्दर वड़ जाए फड़ के खोल्हे ताकी, ना जाणे बुड्ढा जवान नढ्ढा ना बिरध माईआ। सारयां दा इक्को बणयां साकी, नाम प्याला रिहा प्याईआ। फेर देवण आया नवीं हयाती, हया आपणा रिहा मिटाईआ। गुरसिख पिच्छे वाली पिच्छे रहि गई वाटी, अग्गे आपणा हाल जणाईआ। जे अजे वी रहि जाए बाकी, फड़ बाहों लैणा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप रिहा लुटाईआ। गुरसिखो हरि नूं लैणा लुट्ट, वेला वक्त आया। जे आकड़े ते लैणा घुट्ट, आपणा ज़ोर लगाया। पिच्छे गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच पाउदा अइउँ फुट, असां इक्को राह रखाया। ओदों गोबिन्द दित्ता जाम घुट्ट, हुण क्यों गोबिन्द आपणे विच छुपाया। पुरख अकाल कहे मैं गया तुठ, तुहाड्डा गोबिन्द तुहाड्ढे नाल मिलाया। जे मैथों सच लओ पुछ, जो कुछ रख्या सो तुहाड्ढी भेंट चढ़ाया। लारे दे ना करां पुच पुच, पहुंच आपणी दयां समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाया। घुंडी अन्दर इक होर घुंडा, घूँगट मुख ते पाईआ। बड़ा सोहणा सोशील मुंडा, नज़र किसे ना आईआ। बड़ा डराउणा वढ्ढयां सिंगां वाला कुंढा, जिस कोटन कोटि नर सिँघ आपणे विच छुपाईआ। आदि जुगादि जुगो जुग वड्डा गुंडा, अछल अछल्ल बेपरवाहीआ। लंगढ़ा लूला बणे टुंडा, फिर वी भज्जे वाहो दाहीआ। कलिजुग अन्तिम बण के जट्ट हथ्थ विच फड़या खूंडा, दो जहान रिहा डराईआ। बण तरखाण सब दा मुन्ने चूंडा, कुहाढ़ा इक्को नाम चलाईआ। किसे हथ्थ ना आवे ढूंडा, ढूंड थक्के कोटन कोटि जीव लोकाईआ। आप सुत्ता रहे मूधा, मुख आपणा रिहा छुपाईआ। कर प्यार प्रेम जिस आपणी धार देवे बूँद बूँदा, वखाए मिठ्ठा रस जिउँ गुरसिखां घर तेजा सिँघ खाए मठिआईआ। ना हस्सदा ना कूंदा, ना बोले ना शरमाईआ। ना जूड़ा ना चोटी चूंडा, सीस पट्टी ना कोए वखाईआ। ना कोई खेल हां हूं दा, तूं मैं ना कोए समझाईआ। लेखा जाणे तू ही तू दा, दूजा अवर ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे अग्गे पिच्छे वाली जूह दा, गुरसिख सखी कोलों पुच्छे थाउँ थाईंआ। घविंडों अग्गे पिण्ड सच्ची रूह दा, जिउँ घविंडों चल पूरन जेठूवालों ल्या प्रनाईआ। एह खेल छूं छाँ दा, छिन्न विच आपणी धार चलाईआ। चीचा भकना राम पुरा पिण्ड सरस्स नूंह दा, बासर का गुमान पुरा गुमान पुरे विच्चों इक्को नरायण नज़री आईआ। जीहदे नाल नाता जुड़या मैं तूं दा, मैं तूं इक्को रंग वखाईआ। भैण ने

सच्चा किहा नारली ते नारला, ते अमीं शाह खालड़ा, अग्गे बैठा वड्डा धारड़वा, डाके सब नूं रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला पिण्ड अग्गे अग्गे दए दसाईआ। गुरसिख वेख अगला पिण्ड, हरि सतिगुर आप वखाइंदा। जिथ्थे दिसे ना कोए चिन्द, चिन्ता ना कोए रखाइंदा। ना कोई सुरप्त ना कोई इन्द, विष्न ब्रह्मा नज़र ना आइंदा। इक्को इक साहिब गुणी गहिंद, आपणा आसण लाइंदा। गुरसिख बणा आपणी बिंद, आपणे घर ल्याइंदा। जेहड़े कर के बैठे रहे ज़िद, तिन्हां राए धर्म हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर अगला पिण्ड पिण्डां विच्चों पिण्ड वसाइंदा। लग्गी ठोकर नाम, नाम मतिवाल्या। पूरन होया काम, सेवा घालया। विसरया जीव जहान, मिल्या प्रितपालया। मिल्या सच्चा दान, धर्म निशानया। नरायण नेत्र खोल्हया आण, बिन अक्खां रंग वखानया। गोबिन्द सूरे कर पहचान, पिछला लेखा लेख चुकानया। आपणयां कन्नां उत्ते रख के कान, गुरसिखां अग्गे दए ब्यानयां। गुरमुख गुरसिख धुरदरगाही इक महिमान, हरि सतिगुर करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे सद्द पिच्छे धक्क कीता नबेड़ा हक़ो हक़, दो जहान पूरा करे सवाल्या। पिच्छे सुट्ट कराए याद पिच्छा, पिछली याद कराईआ। पहलों गाउँदा रिहा जगत कहाणीआं किसा, रसना पढ़ पढ़ पाठ सुणाईआ। हुण साहिब सतिगुर दिसा, वेंहदयां वेंहदयां आपणा आप गंवाईआ। सतिगुर कहे मैं गुरसिखां नाल किवें नजिठां, जिन्हां फड़ के विच ल्या बहाईआ। हो मजूर कहे मैं देवां आपणा नाम चिट्ठा, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। जिथ्थे कोई ना पुज्जा मुन रिखा, अग्गे जा ना दर्शन पाईआ। ओथे मिलां तैनूं गुरसिखा, आपणा दुआर खुल्हाईआ। फेर एथे ओथे दो जहान दा हाल पुच्छां, पिछली गल्ल भुल्ले अग्गे इक्को नज़री आए माहीआ। भगत भगवान कदे ना होए गुसे, गुसे होयां नूं लैण मनाईआ। बाहरों दिसण चलदे फिरदे लत्तां बाहवां सुक्के, अन्दर समरथ रिहा समाईआ। सतिगुर गुरमुखां घर घर पुच्छे, गोबिन्द आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गा पिच्छा पिच्छा अग्गा आपणा हुक्म जणाईआ। दास राम राम दास, दास इक्को इक जणाईआ। जिस दे कोलों आए उस दे जाणा पास, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जिस ने अग्नी हवन पवण पाणी दित्ता स्वास, पंज तत्त आपणा रंग चढ़ाईआ। आत्म परमात्म चलाई शाख़, साख्यात रूप वटाईआ। री सखी उठ सुण भाख, हरि भाख्या रिहा जणाईआ। फड़ के लै जाए आपणे पास, तेरी कटे सर्ब जुदाईआ। चल के कर सच्चा साथ, घर आया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दसावणहारा आपे दिसे, दृष्ट इष्ट इक्को इक जणाईआ। सतिगुर कहे तूं सोहणी सुचज्जी, सुचज्जड़ा रूप वटाया। प्रेम प्यार अन्दर आई भज्जी,

पिछला नाता सर्ब तुड़ाया। माँ प्यो भैण भ्रावां कोलों आई अज्जी पज्जी, लुक लुक सतिगुर दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि साचे रंग रंगाया। साचा रंग सुभर सालू, प्रेम रतना आप रंगाईआ। दीन दयाल होया दयालू, दिल जानी सच्चा माहीआ।. . . . .

✻ १८ मग्घर २०१६ बिक्रमी मुनशा सिंघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ✻

साहिब सतिगुर हरि सच्चा साहिब, सर्ब कला अख्वाईआ। आदि जुगादि ना कोए ऐब, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जुगा जुगन्तर रहे ग़ाइब, नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी बणया रहे वैद, हिकमत आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन भगतां किसे ना देवे भेत, पर्दा ना दूई उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस कल्लर कंध ढाही रेत, कलिजुग अन्तिम वेखण आईआ। जिस धरत धवल ख़ाली करना खेत, चिढ़ीआं बाज तुड़ाईआ। सो साहिब सतिगुर धरया भेख, भेखाधारी रूप वटाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, तत्त रत्त ना कोए जणाईआ। जन भगतां करे सच्चा हेत, हितकारी दया कमाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र दरस दिखाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के केतन केत, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिले देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच कहाणी आप समझाईआ। सच कहाणी सच दरगाह, हरि सतिगुर सच रखाइंदा। आदि जुगादी जुग मलाह, जुगती नाल समझाइंदा। सार शब्द शब्द गुर लए पढ़ा, पढ़ पढ़ आपणा राग अलाइंदा। घड़ घड़ अक्खर दए बणा, जड़ जड़ वेख वखाइंदा। धड़ धड़ लेखा दए चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर भेव जणाइंदा। सार शब्द शब्द अनमोला, अनमुलड़ी खेल कराईआ। जुग चौकड़ी रखे उहला, पर्दा इक्को इक रखाईआ। कर किरपा गाए ढोला, नाम निधान गुण प्रगटाईआ। सच्चो सच सुणाए सोहला, सुहबत आपणी आप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण हो के पाए रौला, रौणक आपणी आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सार शब्द सच तौफ़ीक, दो तरफ़ी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण बण रफ़ीक, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बण फ़रीक, फ़िरका सब दा मेट मिटाइंदा। नाउँ रख लाशरीक, जलवा नूर इक दिखाइंदा। हुजरा हक़ सुहाए ठीक, महिराब आपणा रंग रंगाइंदा। मीआं बीवी करे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सार आपे पाइंदा। पाए सार साहिब सुल्तान, साहिब साहिब वड्याईआ। करे खेल दो जहान, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम

खेल महान, श्री भगवान आप समझाईआ। मुफ़लस हो के फिरे विच जहान, धन दौलत ख़ज़ाना गुरमुख रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महासार्थी वड वड्याईआ। गुर शब्द शब्द गुर, गुर गुरू अख्वाईआ। गुर सिख सिख गुर लेखा धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जोत शब्द शब्द जोत निरगुण जुड़, सरगुण दए वड्याईआ। परमात्म आत्म लोड़ लोड़, आत्म परमात्म इक वखाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म डोर डोर, पारब्रह्म ब्रह्म रिहा जणाईआ। ओनां चले ना कोए ज़ोर, ज़ोर ज़ोर विच समाईआ। विचोला बणाए मंत्र फोर, जुग जुग नाम प्रगटाईआ। अन्धेरे विच अन्धेरा घोर, घोर अन्धेरिउँ करे रुशनाईआ। ठग्गां विच रलाए चोर, चोर ठग्गां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवन्त जाए बौहड़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरगुण वेखे कर के ग़ौर, सरगुण आपणा राह जणाईआ। कलिजुग अन्तिम एका सीस छत्र झुले चौर, चौका कूके दए दुहाईआ। बाकी सब नूं पए वछोड़ा औहर, मर्ज़ नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख लख चुरासी विच्चों कढ्ढे आपणा जौहर, कुठाली आपणे नाम पाईआ। पिच्छे रिहा होर अग्गे होया होर, होका देवे वाहो दाहीआ। गुरमुखां चुक्के आपणी मौर, बोझा आपणे कंध उठाईआ। बाकी सब दा लेखा कर जाए चौड़, चुल्हा चौंका देवे ढाहीआ। लख चुरासी वखाए ढोर, माणस नज़र कोए ना आईआ। जिनां पारब्रह्म प्रभ मिल्या निरगुण बांका छोहर, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। सो गुरमुख सब नूं दस्सण आपणा ज़ोर, विष्न ब्रह्मे शिव देण डराईआ। सानूं नहीं तुहाढ्ढी लोड़, बिन सतिगुर संग ना कोए रखाईआ। वेखो तुहानूं अग्गे पिच्छे रिहा तोर, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। शहिनशाह चढ़ के आया घोड़, घोड़ा आपणा नाम दौड़ाईआ। चार जुग चारे वागां फड़ीआं डोर, तुणका इक्को इक लगाईआ। धुरदरगाही घोड़ा पावे शोर, लख चुरासी दाणा मंगे समुंद सागर पी ना तृखा, बुझाईआ। पिच्छे गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि का नाम खांदे रहे देंदे रहे भोर भोर, किणका किणका वरताईआ। हुण पुरख अकाल नूं पई गुरमुखां दी लोड़, खुल्हे गफ्फ़े वरताईआ। पहलों पंज तत्त रख के फेर निरगुण हो के पौण आया दोहर, दोहरी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख देवे इक्को माण, चरण सरन मिले सरनाईआ।

हरि जू वरताए खुल्हा गफ्फ़ा, दीन दयाल दया कमाईआ। मिल के मारो जट्ट जफ्फ़ा, आपणा दाअ लगाईआ। सब कुछ लै के दो हत्थीं मारो मूँह विच फक्का, नज़र किसे ना आईआ। हरिसंगत बण जाओ भाई भैण सका, भगती इक्को

इक वखाईआ। आदि जुगादि देंदयां कदे ना थक्का, तोट ना कोए रखाईआ। वेखो तुहाढ्ढे साहमणे खोल्या हट्टा, आपणा हट्ट जणाईआ। किसे ना तोले तक्कड़ी वट्टा, अनमुल्ली दात झोली पाईआ। चूंकि चुनांचे ना कोई कहे अलबता, हब्ब कुछ रिहा लुटाईआ। प्रभू कहे मैं देणा दित्ता, एहसान ना कोए चढ़ाईआ। गुरसिख कहे मैं सतिगुर डिठा, हरि जू नज़री आईआ। अन्त दोहां दा निकले इक्को सिट्टा, इक्को रंग वखाईआ। गुरसिख निर्मल दुद्ध कदे ना फिट्टा, कूड़ी क्रिया जगत कांजी आपणा मुख भुआईआ। गोबिन्द दादू किहा इट्ट चुक्कदे नूं मारो वट्टा, इक्को इक जणाईआ। किसे नाल ना करो धक्का, निवण सो अक्खर पढ़ाईआ। साहिब सतिगुर मन्नो पक्का, पक्कीआं पकाईआं झोली पाईआ। जे धोखा देवे भज्जे जांदे दा फड़ लओ गिट्टा, गिटिउँ कढु नकाल उपरों कढु ठुकाईआ। जिन्ना चिर ना कहे गुरसिख वड्डा, छड्डो ना मिल के भाईआ। नित नित नहीं हुन्दा रट्टा, इक्को वार लैणा मनाईआ। आपणी हथ्थीं करा लओ पटा, फिर मुक्कर कदी ना जाईआ। जे काग़ज़ देवे चिट्टा, कदे ना मन्नो उच्ची रौला दयो पाईआ। सच गल्ल एह नहीं जे ठठ्ठा, हरि जू जुग जुग वल छल धारी आपणा खेल कराईआ। क्यों आप जू होया हट्टा कट्टा, सब नूं ठेडयां नाल रिड़्हाईआ। ईसा चाढ़या फाँसी उत्ते फट्टा, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द रत्त नाल रत्ता, रत्ती रत्त सुकाईआ। बाल्यां नीहां हेठां रखा, रख रख ख़ुशी मनाईआ। फिर वी कहे अच्छा, तेरी वड वड्याईआ। हुण सच दस्सां, अग्गे मन्नो ना मेरे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरसिख गुरसिख गुरसिख दए वड्याईआ।

❇ १६ मग्घर २०१६ बिक्रमी मेला सिंघ दे गृह ज़िला गुरदासपुर ❇

सचखण्ड दुआरे प्या हासा, सो पुरख निरँजण ख़ुशी मनाईआ। हरि पुरख निरँजण खेले खेल तमाशा, एकँकारा वेखे चाईं चाईंआ। रास रचाए बिन गोपी काहना, मेहरवान बेपरवाहीआ। ढोल ढमक्का वज्जे दो जहानां, डौंडी हरि पटाईआ। कलि कल्की कल पहरया जामा, निहकलंक वड्याईआ । शब्द अगम्मी इक तराना, बोध अगाध दृढ़ाईआ। अमृत सरोवर जाम महाना, रस इक्को इक प्याईआ। गुरसिखां प्याए बीना दाना, दाना बीना हरि रघुराईआ। ठांडा करे घर घर सीना, अग्नी तत्त बुझाईआ। लेख चुका मक्का मदीना, नाबीना आपणा रंग रंगाईआ। पीर अवतार गुरु गुर कठ्ठा कीना, सद्दा इक्को नाम दिवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हो अधीना, दर बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्म देवे लोक तीनां, चौदां पर्दा लाहीआ। घोड़यां उत्ते पाओ ज़ीना, हने हथ्थ रखाईआ। आपणा आपणा वेखो दीना, दीन मज़्हब रिहा जणाईआ।

अन्तिम रमज़ान मुक्कण वाला महीना, रैहम परवरदिगार ना कोए कमाईआ। नाता तुटण लग्गा जल मीना, मछली जल नज़र ना आईआ। साहिब सतिगुर गुरमुखां रंग चढ़ाया इक्को भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। अन्दर वड़ वड़ नाम वजाए साची बीना, आप आपणा खेल कराईआ। लख चुरासी कोलों सब कुछ छीना, जन भगतां दया कमाईआ। लख चुरासी नालों वक्ख कीना, वक्खरी धार चलाईआ। अठ्ठे पहर पीणा खाणा, खा खा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रास आप रचाईआ। साची रास रचे करतार, हरि करता खेल कराइंदा। ढोल अगम्मी डंक डफार, श्री भगवान आप वजाइंदा। छिटी डंका मारे वारो वार, ताल ताल नाल मिलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण खुशीआं नाल, खुशहाली रूप वटाइंदा। गुरमुख छालां रहे मार, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। बुढ्ढे नढ्ढे हो तैयार, इक्को रंग रंगाइंदा। सद्दे दित्ते माझे दुआबे जम्मू वारो वार, आपणा हुक्म सुणाइंदा। इकठ्ठे होए यार यार, यार यारी खेल वखाइंदा। इक दूजे नूं रहे ललकार, उच्ची बांह कढ्ढ कढ्ढ सद्दा होका आप दिवाइंदा। वेखो आया सांझा यार, सब दा मेल मिलाइंदा। नारद भज्जा आया दुआर, बोदी उत्ते हिलाइंदा। नंगीं पैरीं हो ख्वार, गुरमुखां दर तकाइंदा। अग्गे वेखी खिड़ी गुलज़ार, हरि जू गुलशन आप महकाइंदा। मिल सखीआं मंगलाचार, सतिगुर पूरा राग अल्लाइंदा। प्रेम सच मारे छणकार, छण छण छण छण सारा जहान कराइंदा। सारे नैण रहे उग्घाड़, वेखो हरि की खेल कराइंदा। भाग लग्गा विच उजाड़, जिथ्थे नज़र कोए ना आइंदा। गुरसिखां टप्पे नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ी रंग रंगाइंदा। इक दूजे दे फिरे पिच्छे अगाड़, पिच्छा अगाड़ नज़र किसे ना आइंदा। उच्ची कूक वाजां रहे मार, आओ हरि जी खेल कराइंदा। वारो वारी लँघण चार चफार, चारों कुण्ट खोज खुजाइंदा। जिस कूटे लुक्या गुरसिख मेरा सरदार, राती सुत्यां आप उठाइंदा। तुहाढ्ढे पैरां दी घमघार, घर घर आप जणाइंदा। तुहाढ्ढी धूढ़ी उडी छार, ब्रह्मा विष्न शिव मस्तक लाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखे खुशीआं नाल, घर साचे खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। पैर वज्जे नाल अड्डी, अड्डा सब दा रिहा उखड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो बैठे निशाना गड्डी, निशाने सब दे रिहा मिटाईआ। अग्गढ़ पिछड़ जांदे भार लद्दी, वेखो वाहो दाहीआ। कोई कहे मेरी बीतदी जाए चौधवीं सदी, सद्दा घर घर रहे सुणाईआ। कोई कहे हुक्मे बद्धी, चले ना कोए चतुराईआ। कोई कहे साडी ख़ाली हुन्दी दिसे गद्दी, सिँघासण उपर कोए ना लाईआ। अल्ला राणी फिरे भज्जी, गुरसिख पैरां नाल डराईआ। आदि शक्ति कहे नीं उह खेडण कबड्डी, चतुर्भुज कहे, नहीं, उह आपणा नाच नचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कहिण प्रभ साचे दी वेल वधी, ओस वधी वेल विच खुशी

मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, बुढ्ढी दादी खुशी वखाईआ।

पैर नाल उठे बाज़ू, बाज़ीगर आपणा स्वांग वखाइंदा। दो जहानां तोले फड़ तराज़ू, कंडा आपणे हथ्थ वखाइंदा। सृष्ट सबाई आ गई काबू, कबज़ा सब दे उत्ते रखाइंदा। कोई बचया रहे ना जगत साधू, साधना सब दी ख़त्म कराइंदा। इक्को गुरमुख सब नालों वक्खरा कीता वाधू, वाधा आपणे नाल मिलाइंदा। ख़ुशी मनाए फड़ के बाज़ू, बाबल आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। बांह नाल उठे हथ्थ, हरि आपणा राह जणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाईआ। गुरमुखां कोलों पवाए नथ्थ, मनमुखता किल्यां नाल बंधाईआ। गुरसिख तेरे धमाके नाल कूड़ कुड़यारे बुरज जाण ढठ्ठ, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जिउँ घुंमर विच दित्ता गेड़ा गुरसिख झट्ट, सन्ता सिँघ इशारयां नाल समझाईआ। भाग सिँघ भुआए सोटी प्रभ उलटी गेड़े लठ्ठ, लख चुरासी पीस पिसाईआ। सिँघ दलीप डग्गे उत्ते लाई सट्ट, ढोल दए दुहाईआ। वेखो हरि जू सारयां दे अन्दर वड़ गया झट्ट पट्ट, चेला सिँघ किशन सिँघ जीत सिँघ वरगे मोटे मोटे नाल नचाईआ। सिँघ इन्द्र दी पग्ग गई ढठ्ठ, हस्स हस्स रिहा वखाईआ। सिँघ जरनैल ऐंवें रिहा नठ्ठ, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। सुखदेव तम्बी पा के रिहा नच्च, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। नौजवान सिख रहे टप्प, हेठां उपर इक्को धार वखाईआ। दोंह पैरां दी मारन जोड़ के सट्ट, धरती थल्ले दए दुहाईआ। प्रभ अग्गे वास्ता रही घत्त, गुरसिखां कोलों लैणा बचाईआ। मेरी छाती उत्ते रहे नच्च, तेरा हाल ना कोए सुणाईआ। जे तूं मिल्यों ओहनां नूं सच, मैनूं लै मिलाईआ। मैं वी नाल मिल के लवां नच्च, आपणा घुंघट लाहीआ। मैं अग्गे अक्ख चुक्क के वेंहदी रही बच, नैण शरम नाल शरमाईआ। हुण मेरी लथ्थी लोक लज्ज, पुरख अबिनाशी आपणी हथ्थीं खेल कराईआ। जे कहें मैं संगत विच आवां भज्ज, जो तेरा दर्शन पाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, मेरा सिख मोहे भाईआ। मैं अमृत दित्ता रस, पी रस खुशीआं विच आपणे ढोले रहे गाईआ। एन्हां दा नहीं कुछ वस, करन करावणहारा बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी पिच्छों पूरी होई आस, आसा बिरथी कदी ना जाईआ। उच्चे टिल्ले वाला वली कंधारी आया पास, प्रभ पासा दित्ता उलटाईआ। कर खेल खेल तमाश, नानक वट्टा दित्ता लाहीआ। सारे कहो मिल के शाबाश, सिँघ मेला तेरा पिछला कर्ज़ लाहीआ। अग्गे देवे चरण वास, चरणां विच बहाईआ। नाच नचौण दा एहो कम्म ख़ास, तेरी दुरमति मैल धुआईआ , गुरसिखां

दयां पैरां नाल कीता साफ़, रगढ़ा रगढ़ रगढ़ रगढ़ाईआ। पत्थर वाला होया कसूर मुआफ़, पंजां आपणा नाम वखाईआ। अग्गे वेखो इक्को रात, नच्चदी टप्पदी गुरसिखां घर आईआ। भिन्नड़ी कहे प्रभ देवे दात, मेरी ख़ाली झोली भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। भिन्नी रैनड़ी चढ़या चा, चाउुं घनेरा इक जणाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या बेपरवाह, बेपरवाही धार वखाईआ। अड्डी मार गुरसिखां मेरी जाग दिती खुल्हा, आलस निंद्रा दित्ता मिटाईआ। मैं उठ के तक्कया नैण उठा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई अन्धेरा गया छा, चन्द नज़र कोए ना आईआ। अचन अचानक मैनूं किसे दित्ता सुणा, अगम्मी वाज लगाईआ। उठ सवाणी वेख मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरिसंगत विच बैठा डेरा ला, डेरे आपणे रिहा तजाईआ। अन्दर वड़ वड़ खेल रिहा खला, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रला, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा मंगाईआ। आओ वेखो खेल रिहा जणा, जानणहार वड वड्याईआ। घुंगरू पैरां नाल रिहा बन्हा, तन शृंगार वखाईआ। चौदां तबक रिहा हिला, हल्ला इक्को वार बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ।
२६४ भिन्नी रैण नेत्र खोल्हु, आपणा ध्यान लगाईआ। वजदा दिस्या इक्को ढोल, गुरमुख गुर गुर आप वजाईआ। सन्त सज्जण २६४
१३ वसे कोल, घर मेला सहिज सुभाईआ। लेखा चुके धरनी धौल, धवल दए वड्याईआ। गुरमुखां अन्दर निरगुण मौल, फुल १३
फलवाड़ महकाईआ। सद सुहागी इक्को बोल, साचा ढोला रिहा जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे घोल, गुरमुखां अखाड़ा इक लगाईआ। भिन्नड़ी रैण उठ कर तैयारी, आपणा राह तकाइन्दी। भज्जी आए वारो वारी, नठ्ठ नठ्ठ पन्ध मुकाइन्दी। दर्शन पावां जोत निरँकारी, दूजी आस ना कोए रखाइन्दी। केसीं जा के चरण देवां बहारी, धूढ़ टिक्का मस्तक लाइन्दी। वेखो औह चल के आई दुआरी, खुली मींढी गल पल्लू वास्ता पाइन्दी। मैं भुक्खी त्याई तेरे दरस मुरारी, दर इक्को आस तकाइन्दी। दूर दुराडी दोए जोड़ करे निमस्कारी, नेत्र नैणां नीर वहाइन्दी। पुरख अबिनाशी कर प्यारी, प्रेम कहाणी इक जणाइन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे मेल मिलाइन्दी। भिन्नी रैनड़ीए आ दर ते वेख, हरि सतिगुर रिहा जणाईआ। पुरख अकाल वटाया वेस, अक्ल कल बेपरवाहीआ। गुरमुखां नाल रिहा खेड, खेड आपणी इक जणाईआ। अन्दर वड़ वड़ दित्ता भेत, भेव आपणा रिहा समझाईआ। पैरां नाल उडाओ रेत, मनमुखां सिर पए छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नी रैण रिहा जणाईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, आप आपणी ख़ुशी मनाइंदी। पुरख अबिनाशी मिल्या मलाह, पिछला दुःख कटाइन्दी। गुरसिखां फड़ाए मेरी

बांह, अन्तर इक्को आस तकाइन्दी। मैं वी लवां उहदा नाँ, जिस नूं हरिसंगत बहि बहि गाइन्दी। मेरे सिर ते रखे ठंडी छाँ, तारयां भरी नैण शरमाइन्दी। जिस मेरा चन्द आपणी छाती उत्ते ल्या टिका, मैं उहदे दर ते वास्ता पाइन्दी। मेरी पिछली बख्श ख़ता, कसूर आपणे आप जणाइन्दी। मैं होई रही बेवफ़ा, गुरसिखां कोलों मुख भवाइन्दी। कलिजुग अन्तिम दोए जोड़ फड़ी पनाह, गल्ल पल्लू एका पाइन्दी। गुरसिखो आपणी रैण आपणी रात राती सुत्यां पारब्रह्म दयां मिला, साची सेवा सेव कमाइन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह इक जणाइन्दी। सिख कहिण आ भिन्नड़ी रैणे, भिन्ना भिन्ना रंग चढ़ाईआ। वेख असीं इकठ्ठे हो के बैठे भाई भैणे, तूं वी भैण साडे नाल मिल मिल सतिगुर दर्शन पाईआ। असीं ढोले इक्को कहिणे, तैनूं देईए सुणाईआ। जे तूं लोकां दे झल्लणे मेहणे, फेर साडा संग रखाईआ। साडी हथ्थीं कोई नहीं गहिणे, इक्को सतिगुर रंग चढ़ाईआ। ना कोई ढोलकी ना कोई छैणे, शहिनशाह आपणा ताल वजाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं मंनूं कहिणे, भैण भाईआं नाल आपणा नाता जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरे साचे वीर, विरड़ा कर सुणाईआ। धन्न भाग तुसां मेरी कटी भीड़, पिछला पन्ध मुकाईआ। मेरा शरअ दा कटया ज़ंजीर, रातीं सुत्यां उठ के मुल्लां शेख़ पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी अड्डो अड्ड रहे सताईआ। हरि की किसे ना वेखी रेख, रौला सारे रहे पाईआ। बिन सतिगुर नानक हरि जू किसे ना दित्ता भेत, भावी सब दे उत्ते छाईआ। मैं चार जुग जुग चौकड़ी रही वेख, जुग जुग आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मेरे अन्दर कोटन कोटि कामी क्रोधी रहे खेड, ठग्ग चोर यार आपणा राह चलाईआ। कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कन्दर प्रभ दा लभ्भदे फिरदे भेत, लभ्भदयां हथ्थ किसे ना आईआ। मैं होई हैरान जट्टां नूं किवें मिल गया फिरदयां विच खेत, हल वाहुंदयां रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खुशी वखाईआ। वीर मैनूं सच दस्सो, भिन्नड़ी रैण आख सुणाया। इकठ्ठे हो के किस तरां वसो, दुखड़ा जगत गंवाया। इक दूजे नूं मिल मिल हस्सो, प्रेम प्यार किवें वधाया। मैं नहीं वेख्या तुसीं ख़ुशीआं विच किवें नच्चो, नच्च नच्च आपणा कन्त मनाया। मैं गल्ल दस्सी सच्ची, सच्चो सच सच दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह चलाया। सिख कहिण सुण भैण निक्की, तैनूं भेव देईए जणाईआ। गोबिन्द बूटा लाया सिक्खी, पुरख अकाल वेखण आईआ। जिस दी धार रखी तिक्खी, तिख्यां दंदयां उत्तों लँघाईआ। पिछली रेख सारी मिटी, एसे खुशी विच असीं मिटी घट्टा रहे उडाईआ। थल्लउँ धरत कढ्ढी चिटी, चिटी चादर गुर तेग बहादर रूप वटाईआ। कदे ना जाए भिटी, ऊँचां नीचां एका घर वखाईआ।

भैण जी एह सतिगुर बणाई सिक्खी, सिख्या होर ना किसे सिखाईआ। पिछल्यां जन्मां दे इकठे कीते मुनी ऋषी, मुश्कल हरि जू हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दर वखाईआ। भैण कहे वड्डे भाई, सच सच सुणाया। पीर पैगम्बर सारे कहिण हरि जू बणया राही, गुरसिखां पिच्छे फेरा पाया। विष्न ब्रह्मा शिव रहे गाई, साहिब सतिगुर लोकमात रंग रंगाया। हुण वेख्या अक्खीं आई, अक्ख प्रतख दर्शन पाया। जिहनूं कहिन्दे रहे साईं गोसाईं, सो बीठलो आपणा रूप वटाया। मैं दर्शन कीता चाईं चाईं, आपणी तृखा बुझाया। तुसीं पकड़ो मेरीआं बाहीं, बाज़ू अग्गे इक वधाया। नाता जुड़या भैण भाई, भाई भैण इक्को माँ प्यो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रचाया। भैण माँ प्यो साडा बाप, पुरख अकाल अख्वाईआ। जिस ने जणाया सोहँ जाप, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। कोट जन्म दे मिटे पाप, पतित पुनीत कराईआ। कर किरपा मिल्या आप, आपणी गोद उठाईआ। कोई रिहा ना रोग संताप, संसा दित्ता चुकाईआ। नज़री आया रसूल पाक, वड अमाम बेपरवाहीआ। जिस साथों उडाई ख़ाक, चरण चरण नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भिन्नड़ी रैण गुरमुखां नाल मिलाईआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा गुरसिख सुहेला, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। भैण भाई दे मिलण दा आ गया वेला, बिन भाईआं भैण दी पत्त ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वक्त दुहेला, दो जहान सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे मेल मिलाइंदा।

२६६
१३

❈ १६ मग्घर २०१६ बिक्रमी बाबू पुरा ❈

सार कहे मेरी साची धार, तुरीआ राह चलाईआ। सुफ़न सखोपत जागरत सब तों वसे बाहर, बस्ती आपणी इक वसाईआ। औण जाण दा नहीं आम विहार, खुल्ही गली ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार, बेपरवाह वेख वखाईआ। आदि जुगादि जिउँ भावे तिउँ चलाए कार, करनी करता आप जणाईआ। जिस वेले मारे सति अवाज़, सति सतिवादी दया कमाईआ। ना कोई लेखा बोध अगाध, अगाध बोध ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुरिया आपणी धार जणाईआ। तुरिया संदेसा देवे तुरत, सार सार जणाइंदा। मेल मिलावा अकाल मूर्त, मूर्त अवर ना कोए वखाइंदा। इक इकल्ला आसा पूरत, असल आपणा आप जणाइंदा। किसे ना लभ्भे साची सूरत, हुसीन आपणा मुख छुपाइंदा। जिउँ भावे तिउँ आपणी पूरी करे ज़रूरत, ज़ाहर आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका धार जणाइंदा। तुरिया कहे मैं तेरा राग, अनरागी तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि रही जाग, नेत्र नैण खुल्हाईआ। जुगा जुगन्तर सुणा आवाज़, बिन कन्नां ध्यान लगाईआ। कवण वेले हरि करे याद, सच संदेस सुणाईआ। चरण कँवल डिगां भाज, मस्तक टिक्का लाईआ। वेखां खेल हरि का काज, किस बिध रिहा कराईआ। सचखण्ड दा सच समाज, शहिनशाह बणाईआ। शहिनशाह बण के करे राज, आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अन्दर सिर ते पहने ताज, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। तख्त निवासी रखे लाज, आप आपणी दया कमाईआ। दया कमा साजे साज, साजणहारा ख़ुशी मनाईआ। फेर मारे सच आवाज़, सार शब्द लए उठाईआ। सार शब्द गाए राग, तुरिया राग वजाईआ। तुरिया होए आप विस्माद, बिस्मिल रूप समाईआ। ना कोई खेल ना तमाश, तमाशबीन ना कोए जणाईआ। पत डाली ना कोए साख़, शख्सीयत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुरिया आपणी धार जणाईआ। तुरिया कहे मैं तेरी तार, तारनहारे तेरी आस रखाईआ। तुध बिन करे ना कोए प्यार, दुहागण वेखी सृष्ट सबाईआ। उच्ची कूक कूक वाजां रही मार, बिरहों वैरागण दए दुहाईआ। कवण वेला प्रभ नेत्र लए उग्घाड़, नैण नैण नैण उठाईआ। मेरी पावे सार, मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। सिर पल्लू देवे डार, कर किरपा बेपरवाहीआ। मैं जावां सच दरबार, घर सच्चे चाईं
२६७ चाईंआ। ओथे वजावां आपणा ताल, ताल इक्को इक रखाईआ। सच सुणावां आपणा राग, अनरागी राग अल्हाईआ। उच्ची २६७
१३ कूकां मारां आवाज़, आ मिल मेरे सच्चे माहीआ। मेरा अगला पिछला धो दाग़, तेरे नाम मिले वड्याईआ। तूं साहिब कन्त १३
सुहाग, घर तेरे वज्जे वधाईआ। कर किरपा गुरू महाराज, तेरी इक्को ओट तकाईआ। मैं वखावां आपणा नाज़, नाज़क रूप वटाईआ। मेरे साहिब सतिगुर तेरे दर ते करां नाच, मुख घूँगट इक उठाईआ। जिस तुरिया नूं किसे ना पाया हाथ, तुरिया गा गा गए सुणाईआ। सो तुरीया त्रिया बण के आई तेरे पास, तृष्ना तृप्त दे बुझाईआ। तूं साहिब अलखणा लाख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। अगम्म अथाह बेपरवाह मैं तेरी होई दास, दासी आपणा नाउँ धराईआ। मेरी पिछली पुंनी आस, अग्गे ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी किहा हस्स, हँस मुख सालाहीआ। आ साचा मार्ग देवां दस्स, दहि दिशा वखाईआ। जा के मेरे भगतां कोल वस, जिथ्थे मेरे नाम वड्याईआ। आपणा जा के राग दस्स, बण वैरागण फेरा पाईआ। मूँह दे भार जा के ढठ्ठ, आपणा ताण गंवाईआ। जिथ्थे होया सति इकठ्ठ, साचा सोहला देणा सुणाईआ। मैं धुर दरगाहों आई नठ्ठ, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। सच सच्ची देवां दस्स, जो साहिब मेरे सतिगुर भाईआ। पुरख अबिनाशी मेरा चलण ना दित्ता कोई वस, हुक्मे अन्दर फिराईआ। इक्को किहा जिस घर होवे मेरा जस, ओथे जाणा चाईं चाईंआ। गुरमुख

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला लाउदे होण हस्स हस्स, सो मेरा ढोला तुरिया तेरा अन्त वखाईआ। तुरिया अग्गों पई रो, नैणां नीर वहाया। हाए, ए की गया हो, पुरख अबिनाशी की की खेल रचाया। जुग जुग मेरा राग सुणदा रिहा सो, सो हुण आपणा राग गुरमुखां रिहा सुणाया। मेरे नालों होया निरमोह, मुहब्बत भगतां नाल वधाया। मैं वेख्या अग्गे हो, जो वेख्या सो आख सुणाया। मेरा ताल सुणे ना को, राग नाद ना कोए जणाया। श्री भगवान जन भगतां रिहा कह मैं तुहाढ्ढे जोगा गया हो, जुगती इक्को इक जणाया। अन्दर इक बाहरों दिसण दो, दोहां दा इक्को घर मेल मिलाया। जो जन चरण कँवल गया छोह, सो शहिनशाह आपणे घर मंगाया। तुरिया राग आपणे हथ्थ रही धो, गुरमुखां धूढ़ी साबण लाया। जुग चौकड़ी मैनूं कोई ना सक्या टोह, मेरा अन्त किसे ना पाया। अन्त श्री भगवान मैथों सब कुछ ल्या खोह, जन भगतां मुश्कल हल्ल कराया। मेरी सेवा लाई गुरसिखां अन्दर लै के जा ढोआ ढो, सोहँ ढोला मेरे सिर चुकाया। मैं किहा किरपा निधान, श्री भगवान मैं जावां छब्बी पोह, जिस वेले तेरा तख्त सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार बंधाया। तुरीया कहे मेरी तरल जवानी, जोबन बेपरवाही दा। चार जुग मेरी दस्सदे रहे निशानी, निशाना तीर ना कोए लगाइंदा। काग़ज़ कलम शाही लिखदे रहे ब्यानी, पर्दा चुक्क ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे रहे कहाणी, कह कह शुकर मनाइंदा। मैं सार शब्द दी बण के बैठी रही राणी, मैनूं हथ्थ ना कोए लाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मेरी रही अल्लड़ जवानी, अग्गे हो मेरी सेज ना कोए हंढ्ढाइंदा। दूर दुराडे सारे होए कुरबानी, कोटन कोटि शमा दीपक उत्ते जलाइंदा। कलिजुग अन्तिम पुरख अकाल करी खेल महानी, खेलणहारा आप खलाइंदा। निरगुण वेखे मार ध्यानी, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। बिन हरि कन्त सब दी बिरथा जाए जवानी, जोबन कम्म किसे ना आइंदा। तुरिया तेरी तर्ज़ महानी, तरां तरां समझाइंदा। तेरा भेव ना पाया किसे विद्वानी, विद्या रंग ना कोए चढ़ाइंदा। आ वेख इक सच निशानी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जिन्हां मिल्या साहिब सतिगुर सच सुल्तानी, सो तेरा राग कोए ना गाइंदा। सार शब्द सार सार बणे दरबानी, दर साची सेव कमाइंदा। उठ सुचज्जी सुघड़ सवाणी, हरि करता भेव खुलाइंदा। नेत्र वेख सच्चा हाणी, हरि सच सच जणाइंदा। जिन्हां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्हां सुफ़न सखोपत जागरत तुरिया तुरिया तेरा पन्ध मुकाइंदा। तुरिया कहे मैं सदा वचोली, सन्त भगत मिलाईआ। पीर पैगम्बरां चुक्की डोली, दर तेरा रही वखाईआ। गुर अवतारां घोल घोली, आपणी सेव कमाईआ। बिन रसना जिह्वा मैं सदा बोली, बत्ती दन्द ना कोए रखाईआ। श्री भगवान हुण क्यों करदा एं गुरसिखां दी गोली, क्यों तूं गुरसिखां अन्दर वड़ के आपणा राग सुणाईआ। मैनूं तेरी समझ

ना आई बोली, तूं की की करें पढ़ाईआ। किस बिध आपणी हट्टी खोल्ही, तक्कड़ी वट्टा ना कोए रखाईआ। मैं वेख होई हैरान, किस तरां पूरन बदली चोली, परमेश्र अन्दर बैठा डेरा लाईआ। मैं वारी मैं घोली, मैं आपणा माण गंवाईआ। मैं आपणी गठड़ी फोली, पूरन वरगा पूरा नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखां मेरी पाटी चोली, साधां सन्तां मेरीआं तणीआं दितीआं तुड़ाईआ। मेरी वेख खाली डोली, चार जुग चार कहार भज्जे जांदे वाहो दाहीआ। मैं पौण आई रौली, उठो सिखो नठ्ठो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान खेल रचाईआ। जन भगतां घर करन आया बौहणी, मुख आपणे सगन लगाईआ। फिर सब नूं चाढ़े तौणी, मेरा राग भुलाईआ। करे सो जो साहिब भौणी, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। चौदां विद्या सुरत भुलौणी, छत्ती राग ना कोए वड्याईआ। अग्गे हो छाती किसे ना डौहणी, शहिनशाह सब नूं रिहा ढाहीआ। बण के जट्ट करे रौणी, हल्ल आपणा फेर चलाईआ। आपे जाणे हाढ़ी सौणी, वड किरसाणा बेपरवाहीआ। जिस ने बीजी ओसे गौहणी, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जिस गाही ओस उडौणी, हवा आपणी आप चलाईआ। जिस उडाई ओन आपणे अन्दर पौणी, भुक्खी मरे सर्ब लोकाईआ। फेर वेखे अवणी गवणी, अवण गवण डेरा ढाहीआ। मेरी सुर किसे ना मिले सुणौणी, सुरत सब दी दए भुआईआ। क्यों पिच्छे लाई सब दे होणी, हुक्मे हुक्म भुआईआ। गुरमुखां खुशी इक वखौणी, पिछली खुशकी देवे लाहीआ। पुश्त दर पुश्त पुशटी आप करौणी, पुछण आया बेपरवाहीआ। प्रेम नाल कुशती प्रेम करौणी, गुरसिख गुरसिख नाल मिलाईआ। दूती दुष्टी सृष्टी सर्ब खपौणी, इष्टी इक्को इक बचाईआ। दोज़ख़ बहिस्ती खेल रचौणी, बचया कोए रहिण ना पाईआ। फ़रिशत्यां फ़रिसत इक वखौणी, आपणे हथ्थीं कर लिखाईआ। चार कुण्ट सेवा लौणी, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। आपणी ईन दीन इक मनौणी, मिहबान बीदो वड वड्याईआ। लोक तीन तार हलौणी, सतार आपणी दए जणाईआ। चौदां लोक धार वखौणी, धार आपणे नाम प्रगटाईआ। दो जहान सार पौणी, सार शब्द वज्जे वधाईआ। सचखण्ड कार कमौणी, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। बेहंगम चाल इक रखौणी, राह विच ना कोए अटकाईआ। भुक्ख नंग सर्ब कटौणी, भुख्यां भुक्ख गंवाईआ। तुरिया तरंग आप चढ़ौणी, तुरत देवे समझाईआ। सूरे सरबँग खेल करौणी, मृदंग आपणा नाम वजाईआ। सब दी मंग पूर करौणी, गुर अवतार पीर पैगम्बर जो बैठे ध्यान लगाईआ। सदा चित अनन्द आपणी जोत दर वखौणी, दूजी होर ना कोए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे कोए रहिण ना देवे अड़ौणी, अड़िके सब दे रिहा मिटाईआ। तुरिया कहे प्रभ तेरी रहमत, मैं वेख होई हैराना। ग़रीबां नाल होइउँ सहिमत, आपणा दित्ता धुर परवाना। सारे आखण गुरसिख अहिमक, जिन्हां मिल्या विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान कहे मैं तारां जिन्हां तेड़ बद्धी तहिमत, सिर

टेडी पग्ग वखाना। ओनां नूं अग्गे कोई ना आवे ज़हिमत, दुःख सुख विच उलटाणा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे अन्दर वड़ के मार सैनत, रसना बोल ना कोए सुणाना। जे कोई विद्वान वेखे ला के ऐनक, हरि जू शीशे भन्न वखाना। जे कोई लेखा लिखे नाल सवैनइंक, कलम शाही पन्ध मुकाना। जे कोई कहे साध सन्त मैं वड्डा मकैनक, थीउरी सब दी फ़ेल कराना। जन भगतां मिल्या हरि जू हरि हरि वड्डा सैनक, सैनापती श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहानां। तुरिया कहे मैं होई हैरान, बेवस दयां दुहाईआ। तेरी हरि जू खेल महान, अन्त कोए ना आईआ। जिनां नूं कोई ना पुच्छे तूं ओनां दा बणया आण, की तेरी चतुराईआ। मैं तुरिया तेरे दर नौजवान, बैठी आपणा रूप वटाईआ। तूं अक्ख पुट के ना वेख्या मार ध्यान, तेरी बेपरवाहीआ। मैं रट रट थक्की तेरा नाम, बिन रसना जिह्वा गाईआ। तूं पिच्छे हट हट आएयों भगवान, लोकमात फेरा पाईआ। गट गट जो पींदे रहे मधरा पान, तिनां मेला रिहा मिलाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं सदा सदा मेहरवान, जन्म जन्म विच बदलाईआ। पिछला लेखा दित्ता आण, क्यों, गोबिन्द छड्डे ना मेरी बाहींआ। तूं बाली नढ्ढी अंञाण, तुरिया तोहे भेव कोए ना आईआ। आ वेख मार ध्यान, किरपा निधान कोटन कोटि जन्म दे विछड़े इक्को वार वखाईआ। वेख खेल लग्गी पछताण, पसचाताप कर कर दए दुहाईआ। किरपा कर श्री भगवान,

२७० तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। मैं आख्या गुरसिख बाल अंञाण, मोटी बुध रखाईआ। तेरी किरपा मैं वेख्या इक निशान, गुरसिख २७०

१३ बैठा सचखण्ड डेरा लाईआ। मैनूं उहदी दस्स पहिचाण, मैं वेखां चाईं चाईंआ। अगों कहे श्री भगवान, आ तैनूं दयां वखाईआ। १३

जिस दा नाम सिँघ पाल, तेग़ बहादर वज्जी वधाईआ। औह वेख गोबिन्द मेरे नाल, उंगली लग्गा फिरे वाहो दाहीआ। आ दस्सां खेल होर कमाल, दादा पोतरे नाल लिआईआ। जेहड़े नीहां हेठां दित्ते स्वाल, सो मनजीत जगदीश नाउँ धराईआ। जिनां खाए कदे ना काल, महाकाल सिर निवाईआ। तुरिया तेरा सुणया नहीं ओनां ताल, सिर इक्को चरण निवाईआ। दो जहानां हल्ल होया स्वाल, हल्का भार कराईआ। हरिसंगत दस्स के आए हाल, बाली बुध मिली वड्याईआ। सोलां मग्घर वज्जा ताल, उन्नी कत्तक खुशी वखाईआ। होर वेख मेरा लाल, सवरन सवरन रूप वटाईआ। जिस सतिजुग घालण लई घाल, सो बल आपणा लेखा ल्या आपणी थाईंआ। पंज परवान होए बहाल, प्रधान पंजे पंज बणाईआ। पंजे सोहण दर राजान, दरगाह मिली वड्याईआ। पंजां दा इक्को ध्यान, श्री भगवान नज़री आईआ। पिच्छे हरिसंगत नूं देण ज्ञान, लोकमात समझाईआ। वीरो भैणो छेती आउणा सचखण्ड मकान, सतिगुर मिले चाईं चाईंआ। एथे ना कोई पीण ना कोई खाण, तृष्ना अग्ग ना कोए रखाईआ। ना कोई पवण ना मसाण, जल पाणी ना कोए वड्याईआ। ना कोई राग ना कोई गाण, तुरीया

चले ना कोए चतुराईआ। जदों मिले मिले भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख नच्चण कुद्दण टप्पण गाण, इक्को ढोला गाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक पछाण, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। अगों हस्स के कहे भगवान, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। तेरे बिनां मेरा सुंञा दिसे मकान, सचखण्ड कम्म किसे ना आईआ। जे भगत ना होवे तां मैं औंतरा जावां विच जहान, मेरी पीहड़ी ना कोए चलाईआ । भगत कहे जे तूं ना देवें माण, सानूं धर्म राए दए सजाईआ। सुण के गल्लां तुरिया होई हैरान, वेखो की करे सच्चा माहीआ। मेरी ख़ाली होई दुकान, सौदा लैण कोए ना आईआ। हट्ट खोलूया विष्नूं भगवान, मेरी निक्की हट्टी बैठी मुख छुपाईआ। जिस नूं कर किरपा सौदा दित्ता आपणा दान, दयावान दया कमाईआ। तिस नाता तुटा जहान, हरिसंगत मेल मिलाईआ। अग्गे सतिगुर की दए ब्यान, लेखा लेख विच ना आईआ। जे सच दस्से ते सारे कहिण शैतान, शरअ सब दी रिहा मिटाईआ।

❇ १६ मग्घर २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ❇

सत्तरां मेला सरबँग, सरबँग दया कमाईआ। सत्तरां मिल्या संग, संग निभाईआ। सत्तरां चढ़या रंग, रंग रंगाईआ। सत्तरां पूरी करी उमंग, उमंग झोली पाईआ। सत्तरां चढ़या चन्द, चन्द रुशनाईआ। सत्तरां मिल्या अनन्द, अनन्द वड्याईआ। सत्तरां मिल्या गोबिन्द, गोबिन्द होई कुड़माईआ। सत्तरां मेला गुणी गहिंद, गहर गम्भीर सेव कमाईआ। सत्तरां लेखे लग्गी जिंद, जिंद वारी घोल घुंमाईआ। सत्तर सरसे गए खिण्ड, अन्तिम इकठ्ठे आप कराईआ। गोबिन्द पहलों सम्बल नगर बद्धा पिण्ड, पुरी अनन्द तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां देवे माण वड्याईआ। सत्तरां जोगा होया आप, सति सति समझाईआ। सत्तरां बणयां माई बाप, पिता पूत समझाईआ। सत्तरां कोलों करा आपणा नाप, हरि आपणी वंड वंडाईआ। आपे कर खेल तमाश, प्रभ वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतरां होया आपे जोगा, जीवण जुगत जुगत जणाइंदा। गोबिन्द बदलया आपणा चोगा, चोला ना होर हंढाइंदा। निरगुण हो के देवे होका, सरगुण खेल कराइंदा। अन्त नदेड़ जो दे के गया धोखा, अद्धविचकार रखाइंदा। अन्तिम वेखण आया मौका, मोतबर आपणा नाउँ धराइंदा। जिस ने छड्डुया पटना पौंटा, सो पोह छब्बी रंग रंगाइंदा। एका ढय्या सुत्ता रिहा ला के ढौंका, फिर आपणी करवट बदलाइंदा। गोबिन्द कदे ना जाए औंता, पूत पोतरे वेख ख़ुशी मनाइंदा। धरती मात साफ़ रख्या कर के चौंका, ख़ाकी ख़ाक साफ़ कराइंदा। गोबिन्द करे उसारी नाल शौंका, गोबिन्द आपणा ख़ून

भेंट चढ़ाइंदा। जन भगतां आपे पहुंचा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां आपे दया कमाइंदा। सत्तरां देवे माण, माण वड्याईआ। सत्तरां देवे ज्ञान, ज्ञान चतुराईआ। सत्तरां देवे ध्यान, ध्यान लगाईआ। सत्तरां देवे पीण खाण, अमृत रस वखाईआ। सत्तरां देवे गान, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। सत्तरां देवे दान, नाम अनमुल्ला झोली पाईआ। सत्तरां खेल करे महान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सत्तरां चाढ़े आपणे उपर मकान, बेमकान खेल कराईआ। सत्तरां कोलों आपणे चार जुग दी चार कुण्ट दी उजाड़ देवे दुकान, सत्तर इट्टां दए उखड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ भगत दवारे चोटी उत्ते ला भगवान, भगतां खुशी मनाईआ। गुरमुख तुहाड्डा झुल्ले निशान, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले सर्ब मिट जाण, लोकमात रहिण ना पाईआ। इक गोबिन्द दूजा रहे भगवान, तीजी संगत नाल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी श्री भगवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाण, दोए जोड़ पैण सरनाईआ। तख्त निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्को वार गुरमुखां वल करे ध्यान, इक्को पौड़े दए चढ़ाईआ। जिथ्थे झुल्ले धर्म निशान, दूजा निशाना ना कोए रखाईआ। जिथ्थे इक्को इष्ट नौजवान, बुढ्ढा बाल ना कदे हो जाईआ। जेहड़ा गुर अवतारां देंदा रिहा दान, सो दाता दानी इक्को मंगो जिस दे मंगयां भुक्ख रहे ना राईआ। उस दे चरणां हेठां लुको, शहिनशाह शेर इक्को इक अवखाईआ। उस दे साया हेठ बांह कढ्ढ के बुक्को, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। आपणे निशान्यौं कदे ना उको, गोबिन्द पिच्छे धार सिखाईआ। हुण नेड़े आ के ढुको, देवे दरस दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। सारे इकठ्ठे हो के पुछो, किथे लुक्या रिहों नज़र किसे ना आईआ। अग्गे हो के फड़ लओ गुटों, जिस हथ्थ नाल फड़ी तलवार, तिस हथ्थ नाल गुर सतिगुर लओ मनाईआ। कर प्यार प्रभ चरणी झुको, झुकवीं खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्तरां याद, याद जणाया। सत्तरां सुण फ़रयाद , फ़रियादी फेरा पाया। सत्तरां देवे दाद, वस्त वंडाया। सत्तरां वज्जे नाद, नाद अलाया। सत्तरां हो विस्माद, विस्मादी खेल रचाया। सत्तरां खोली जाग, जागरत रूप जणाया। सत्तरां सुणी आवाज़, दूर दुराडा नठ्ठ के आया। सत्तरां रचया काज, करनी करता आप कमाया। सत्तरां नाल रलाए पंज राज, मिस्तरी आपणा हुक्म मनाया। पिच्छे जो संगत रहि गई छब्बी पोह सब नूं इकठ्ठा कर के देवे दाज, इक्को जेही झोली दए भराया। गुरसिख नाल सत्तर सत्तर इट्टां प्रभ साचे लई लै के आउणा दाज, धर्म दुआरे तुहाड्डा मन्दिर दए बणाया। ओथे इक्को इक समाज, दूजी वंड ना कोए वंडाया। उत्ते लिख दए सिर संगत पहनाया ताज, सिर आपणा भेंट चढ़ाया। जिस ने करना सच्चा

२७२
१३

राज, दरगाह साची वेख वखाया। जिहने सत्तरां उत्तों सिफ़रा कर के सारा संसार जाणा खाज, खा खा आपणा शुकर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां हरिसंगत संग इक्को रंग वखाया। सत्तरां वाला इक्को सतिगुर, सति सतिवाद अख्वाईआ। साता सिफ़रा गए जुड़, अंक अंक नाल मिलाईआ। सति सरूप सिफ़रा हो के रिहा दौड़, नज़र किसे ना आईआ। सिफ़रा घर घर रिहा बौहड़, सति सति सुणाईआ। सत्त कहे सति गया दौड़, सति सिफ़र रूप हो जाईआ। बिन सतिगुर सिफ़र सति ना करे कोई मिठ्ठा कौड़, रस अमृत ना कोए भराईआ। सो सतिगुर चढ़या साचे घोड़, जिस दी सिफ्त कर कर थक्के लिख लिख लेख कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच सच सच अख्वाईआ। सच सतिगुर इक्को सतर, आदि जुगादि समाइंदा। सति सतिगुर खोल्हे पत्र, आपणा वरका आप उलटाइंदा। सति सतिगुर धार दुतर, दोए दोए रूप धराइंदा। सति सतिगुर पिता पुत्तर, गोबिन्द अकाल रंग रंगाइंदा। सति सतिगुर लुक्या रहे आपणी नुक्कर, नज़र किसे ना आइंदा। सति सतिगुर हरिजन करे शुकर, शुकरीआ इक मनाइंदा। सति सतिगुर बिन माँ प्यो बिन जननी आए उतर, कुक्खीं भाग ना कोए लगाइंदा। सति सतिगुर जैंह वेखो तैंह जाए उपड़, दूर नेड़े ना कोए जणाइंदा। सति सतिगुर सरसे वाला ना गया मुकर, पिछला लेखा आप मुकाइंदा। जिन्हां पिच्छे वारे जिगरे टुकड़, लख़ते जिगर भेंट चढ़ाइंदा। तिन्हां पिच्छे प्या उपड़, अगला पन्ध मुकाइंदा। अल्ला राणी नूं कोई ना कहे फुफ्फी मीआं बणे ना कोई फुफ्फड़, भैण भाईआं अग्गे लाइंदा। किसे ज़ोर ना चले जिन्हां दाढ़ी रती कीती बण के चिट्टे कुक्कड़, चितू सब नूं आप बणाइंदा। वेले सिर आ के गया पुक्खर, आपणा खेल वखाईआ। जिस दीआं घर घर सुक्खणां सुक्खण, सो बिन गुरसिखां मिले ना किसे माहीआ। सृष्ट सबाई भरी दुखण, धूंआँधार लोकाईआ । बाहों फड़ कोए ना आए चुक्कण, सारे बैठे मुख भुआईआ। दूर दुराडे बहि बहि बुक्कण, अग्गे वेखण शेर पिच्छे सब मुड़ जाईआ। इक दूजे नूं कहिण चलो रल के चलीए कुट्टण, आपणा बल धराईआ। जिस वेले श्री भगवान मार भब्बक आपणी खोल्हे बुकल, सारे भज्जण वाहो दाहीआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां थाँ ना लभ्भे लुकण, बिन हरि चरणां ओट नज़र कोए ना आईआ। सारे इक दूजे नूं दस्सण, साडा पैंडा आया उत्ते मुक्कण, अगला लेखा रहे ना राईआ। श्री भगवान नौजवान मेहरवान दीन दयाल ठाकर स्वामी कोझयां कमल्यां आप गया चुक्कण, चुक चुक आपणी गोद बहाईआ। गोबिन्द नाल रख्या पुत्तण, पिता पूत फेरा पाईआ। गुरमुख दुआरे गया झुकण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लख चुरासी गया फूकण, इक फुंकार लगाईआ। दो जहानां गया सूतण, नाम वटणा रिहा चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम सारे भूतन, बीर बेताल नाच नचाईआ। श्री भगवान

२७३
१३

सब दे सिर विच मारे जूतन, जो बैठे नाम भुलाईआ। लेखा जाणे चारे कूटन, दहि दिशा वेख वखाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठण, जूठयां झूठयां थुक्कां मुख भराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेखे अवधूतन, जो तन बैठे ख़ाक रमाईआ। गुफ़ा अन्दर वेखे सुत्ते घूकन, जो अक्खां कर बंद कन्नां विच उंगलां पाईआ। जो सूरां वांगू सूकण, सारे साध उठाईआ। जो पीवण भंग बूटन, सब दी जड़ उखड़ाईआ। जो सुलफ़िआं लावण सूटन, तिन्नां करे सफ़ाईआ। जो तमाकु पी पी नशा झूटण, झटका सब दा दए कराईआ। जो उच्ची बोल बोल मन्दिर मस्जिद शिवदआले मठ्ठ कूकण, कूकर सूकर जून भुआईआ। हरि भुल्यां दे सिर विच अन्त कुत्ते मूतण, किते ना मिले थाईआं। जामा भुआए हाकन डाकन बेताल भूतन, अंचनी कंचनी नाउँ धराईआ। कलासोदरी होए ऊतन, इजीआ बिजीआ दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई वेखे रोगण, सुख नज़र किते ना आईआ। आपणा कीता सारे भोगण, लेखा सब दी झोली पाईआ। लाड़ी मौत बणे कलजोगण, मास चुंजां नाल तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया होए वजोगण, चारों कुण्ट फिरे हल्काईआ। सिर दिसे ना कोई ओढण, खुल्ही मींढी पत लुहाईआ। चोर उच्चक्के राह विच बोचण, लुट खसुट मचाईआ। जिस नूं सतिगुर नानक किहा ओहदा खेल विच ना आए सोचण, बिन सोचयां रिहा रचाईआ। जिस ने माण दिवाया धन्ने तरलोचण, नामा नाल मिलाईआ। जिस ब्रह्मे समझाया कपाल मोचण, पुष्कर भेव खुल्हाईआ। सो सृष्ट सबाई आया झोकण, अनझक्क फेरा पाईआ। गुरसिखां नूं आया रोकण, कूड़ी क्रिया छड्डो जूठा झूठा नाता तुड़ाईआ। जिस दा खेल लोक परलोकण, ब्रह्मण्ड खण्ड समाईआ। जिस दा गुर अवतार गायण सलोकण, पीर पैगम्बर राग अल्हाईआ। जिस दा खेल कोट कोटन, कोट कोटी वेस वटाईआ। जिस दा रूप निर्मल जोतन, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जिस ने खेल बणाया गोबिन्द पुत्त पोतन, पतवन्त बेपरवाहीआ। सो देवण आया मोखण, मुक्ती चरणां हेठ दबाईआ। खेल कराया सत्तरां वेंहदयां लोचण, लोचां पूर कराईआ। पिछला मिटावण आया रोसण, रुसयां लए मनाईआ। टिकाणे करन आया होशन, होछयां मति गंवाईआ। गुरसिखां अन्दर लौण आया आपणा नाम रोशन, रोशनी इक्को नूर रुशनाईआ। देण अया दरगिह सच्ची दा सच्चा परमोशन, सीस ताज इक टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे रहिण ख़मोशन, अग्गे बोल ना कोए सुणाईआ। करे खेल हरि बेहोशन, मख़मूर मख़मूरी इक्को नाम रखाईआ। लेखा जाणे दोष बदोषण, दोषीआं देवे दंड बदोश्यां लए बचाईआ। समुंद सागर वेखे ओशन, श्री भगवान आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर सेवा सति दुआर। सत्तर इट्टां हट्ट वणजार। इट्ट इट्ट नाल करे प्यार। चिट लाए नाल चरण धूढ़ी छार। देवे सिट, गुरमुखां थल्ले कर प्यार। गुरसिख चलदे फिरदे पैरां नाल मारन हिट्ट, नींह उखड़े जीव गंवार।

कदम कदम तुरदे तुरदे उत्ते रहे पिट्ट, हाहाकार करे संसार। करे खेल आप अनडिठ, कोई ना पावे सार। गुरमुख माणस जन्म लए जित, जिस जितया हरि निरँकार। धर्म दुआरे करना हित, भगतां होए प्यार। सत्तरां बहत्तरां चुहत्तरां विच्चों जो रहि गए पिच्छे, पिच्छों करे अग्गे सत्तर इट्टां कर विहार। आप फिरे पिच्छे अग्गे, अग्गे पिच्छे ख़बरदार। सति सरनाई जो जन लग्गे, सति पुरख निरँजण मेल मिलाए आपणी धार। सिफ़रा रूप सब रहि जाण हक़े बक्के, नज़र ना आए नर निरँकार। सत्तर भगत होए पक्के, पक्कीआं इट्टां दितीआं उखाड़। बहत्तरां छत्ती जुगां मारे धक्के, महल अटल सुहाया इक दुआर। चुहत्तरां किहा असीं भैण भाई सके, सतिजुग साची बन्न्ही धार। पंज पंज पंज विच्चों रखे, चार चार वणज वपार। हरिसंगत निक्के वड्डे बुड्ढे नढ्ढे माई भाई धी जवाई पिच्छों फड़ करे अग्गे, अग्गे लाए आप निरँकार। सत्तरां इट्टां नाल एथे ओथे पर्दा कज्जे, एथे फर्श ख़ाकी ओथे मिले आप निरँकार। इस सेवा तों पिच्छे कोई ना बचे, तुहाड्डा महल्ल रिहा उसार। हरि का बचन सच सच्चे, सच सच करे गुफ्तार। जो एथे रहि गए कच्चे, अग्गे कोई ना मददगार। बिन सतिगुर लख चुरासी जीव नच्चे, अन्त कोई ना उतरे पार। गोबिन्द गुरसिखां कदी ना देवे धक्के, जिन्नां उत्तों आपणा आप दित्ता वार। पहली चेत वखाए आपणा खेल इकट्ठे, अर्श फर्श हो तैयार। फेर कहे गुरसिख तुसीं मेरे बच्चे, मैं तुहाड्डा पिता, पुत्तरा करां प्यार। जो साहिब मैनूं हुक्म दित्ता, मैं तुहानूं दित्ता सुणा। तुहाड्डे प्यार अन्दर निक्का, हँकार अन्दर वड बलकार। अग्गे चलाउणा आपणा सिक्का, साची सिक्खी कर तैयार। सत्तरां इट्टां नाल वंड लओ हिस्सा, सचखण्ड बणे तुहाड्डा दरबार। जेहड़ा अजे किसे ना डिट्ठा, उस दी सेवा करे आप निरँकार। सौं ना जाणा दे के पिठां, बेख़बर करे ख़बरदार। वेखो अन्तिम की निकले सिटा, सारे आपो आपणी थाईं दाउ रहे मार। कोई कहे जट्ट फिट्टा, जूठ झूठ रिहा मार। कोई कहे मन्दिरां लवावे इट्टां, आपणा करे विहार। कोई कहे बाणा रखे चिट्टा, सीस सोहणी दस्तार। कोई कहे पावे पीला खट्टा, सीस ताज रख करे शृंगार। कोई कहे चूहड़यां चमारां नालों मिटाई भिटा, कीता जन्म ख्वार। कोई कहे वड्डा हो के बणया निक्का, ग़रीब निमाणयां घर जा जा मंगे बणे दर भिखार। पुरख अकाल कहे मैं जन भगतां माता पिता, बिन पुतां पिता होए ख्वार। मेरा आदि जुगादी हिता, नित नवित्त मेरी कार। जिस नूं मैं पहलों डिठ्ठा, सो मैनूं करे निमस्कार। बाकी सारा रस फिका, अमृत वहे ना कोई धार। की होया जे गोबिन्द कहे आ मेरे पुत्ता, गुरसिख गोदी लए उठाल। गुरसिख गोबिन्द दी गोदी रहे सुत्ता, पुरख अकाल चले नाल नाल। सच एदूं होर नहीं चंगी रुत्ता, ना कोई जलवा ना कोई जलाल। श्री भगवान गुरमुख सच्चे हरिसंगत विच कीते इकट्ठे जिउँ अंगूरां वेल गुछा, मुढ्ढ टाहण इक्को इक रखाईआ। कोई ना भुलिउँ

उत्ते लै के बैठा धुस्सा, एह वी धुस्सा चेला सिँघ वड्याईआ। मैं फिर सुक्के दा सुक्का, हथ्थ ना किछ रखाईआ। जे कोई मैथों खोण आवे अग्गों वखावां मुक्का, सब नूं मूँह दे भार सुटाईआ। दो जहान दा आया भुक्खा, सिँघ शेर बेपरवाहीआ। जे हो के वेखे उच्चा, अग्गों गुरसिख नज़री आईआ। गुरसिख सब दे नालों सुच्चा, जिस गोबिन्द मिल्या चाईं चाईंआ। गोबिन्द देवे साचीआं पुच्छां, सच सच समझाईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा लुका, आओ तुहाढ्ढे नाल दयां मिलाईआ। जिन भंनणा टोपी हुक्का, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। जिस हटाउणा खाणा कुठ्ठा, सीस धड़ ना कोए कटाईआ। सो साहिब सतिगुर तुट्ठा, दीन दयाल फेरा पाईआ। रल मिल हो जाओ इक्को मुठा, गोबिन्द कर के गया पढ़ाईआ। फेर टंगे ना कोई पुठा, राए धर्म ना दए सजाईआ। जमदूत जे आयण नेड़े सिर विच मारो जुत्ता, ढोला गाओ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साडा होए सहाईआ। गुरसिखो तुहाढ्ढा पैंडा मुक्का, मुक्कया पन्ध लोकाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुक्खा, दस मास ना अग्न तपाईआ। जिस दा सीस जगदीश झुका, तिस चुक खुशी मनाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर सुहाए इक्को रुत्ता, हरिसंगत फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान किसे कोलों ना जाए लुट्टा, क्यों आपणा हट्ट ना किसे वखाईआ। हट्ट लुट्टण दे पए झेड़े, चार वरन दुहाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणे लुटेरे, शरअ कुहाढ़ी हथ्थ उठाईआ। पीर पैगम्बर दस्सां केहड़े केहड़े, जिहड़े गए फेरीआं पाईआ। अन्त कोई ना पुजा डेरे, अद्धविचकार थक्क थक्क आपणीआं ढेरीआं ढाहीआ। सारे कलम शाही नाल टेटीआं रहे रेड़े, टिक्का मस्तक ना कोए लगाईआ। इक नानक आया खेड़े, गोबिन्द उंगली हरि फड़ाईआ। कबीर वेख्या आ के वेहड़े, आपणा कुण्डा लाहीआ। नानक गोबिन्द कहिण प्रभ करे हक़ नबेड़े, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। कबीर कहे अग्गे भगतां नाल पाए झेड़े, तेरी भगती लोकमात ना किसे सखाईआ। जे किरपा करनी आं रातीं सुत्यां आ जाईं वेहड़े, औदयां जांदयां तेरा की घट जाईआ। पिच्छे भगत रुलाए बथेरे, भाणे विच रखाईआ। अग्गे ना करीं झेड़े, झिड़कां दे ना जान सुकाईआ। पुरख अबिनाशी आ गया घेरे, किछ कह ना सके राईआ। कबीर मैं इक दस्सां जो जन ढोला गाए मेरे तेरे, तूं मेरा मैं तेरा उस दा होवां सहाईआ। कबीर कहे कोई ना जाणे तेरे केहड़े गेड़े, तुध बिन तेरा नाम कवण ध्याईआ। मैं नहीं मन्नणे तेरे हेरे फेरे, सच साची दे सुणाईआ। श्री भगवान कहे मैं जाऊँ कर के वड्डे जेरे, लोकमात फेरा पाईआ। पिछले मेटूं सारे झेड़े, अग्गे झगड़ा ना कोए रखाईआ। वसां जा के गोबिन्द खेड़े, सम्बल दयां माण वड्याईआ। ओथे शब्दी लावां डेरे, सोहँ ढोला गाईआ। फेर वेखां केहड़े केहड़े, जो मैनूं रहे ध्याईआ। दिने रातीं मारां फेरे, बण मरासी जजमानां घर जाईआ। घर जा के जां वेखां मैनूं सोहणे लग्गे चेहरे,

गुरसिख चन्द करे रुशनाईआ। मैं खुश हो के कहां वीह सौ उन्नी बिक्रमी जेहड़े मिल गए ओहो बथेरे, जिन्हां आपणे नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, दाता दानी वड मेहरवान, हरि भगतां मिले आपे आण, आपणी सेवा आप कमाईआ।

❇ १६ मग्घर २०१६ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह वज़ीर पुरा ज़िला गुरदासपुर ❇

सति पुरख निरँजण सर्ब गुण तास, सति सतिवादी खेल कराइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, नूर नुराना नूर धराइंदा। नाउँ रख पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी धार चलाइंदा। साचे मण्डल पावे रास, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण शहिनशाह शाबाश, राजन राज आप अख्वाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा इक इकल्ला बुलाए आप इजलास, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप
२७७ कराईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, एकँकारा नाल मिलाईआ। आदि निरँजण कर पसारा, अबिनाशी करता वेखण २७७
१३ आईआ। श्री भगवान सच हुलारा, दो जहानां आप दिवाईआ। पारब्रह्म प्रभ खोल्ह किवाड़ा, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। १३
करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। साचा मन्दिर कर तैयारा, सचखण्ड वासी डेरा लाईआ। दीआ बाती इक उज्यारा, कमलापाती आप टिकाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, जलवा नूर नूर इलाहीआ। मुकामे हक़ हक़ अखाड़ा, लाशरीक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी आदि जुगादि, जुग करता आप कराइंदा। लेखा जाण ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाइंदा। सतिगुर त्रेता द्वापर कलिजुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान देवणहारा दाद, खाणी बाणी आप जणाइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, निरगुण दाता पुरख बिधाता सरगुण मारनहार आवाज़, भेव अभेद खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत्त लख चुरासी रच रच काज, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म निरगुण सरगुण देवे दाज, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। मन मति बुध साजण साज, दर घर साचे आप बहाइंदा। सच समग्री दे ग़रीब निवाज़, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, घर घर विच डेरा लाइंदा। जोत निरँजण कर प्रकाश, नूरो नूर वखाइंदा। शब्द नाद धुन सर्ब गुणतास, अनहद रागी राग अल्हाइंदा। करे खेल जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी श्री भगवान, सति सति आप कराईआ। आदि पुरख नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर आपणे चरण टिकाईआ। सुन अगम्मी खोल्ह दुकान, भेव अभेद खुल्हाईआ। दाता सूरा योद्धा बीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। इक इकल्ला हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। आप उठाए सुत अंञाण, बाला बाली बुध वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता आप कमाईआ। करनी करता हरि करतार, आदि पुरख आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर सच विहार, बिवहारी आप चलाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सार, निराकार खेल खलाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा । ईश जीव दे आधार, ईश्वर आपणा रंग रंगाइंदा। खोल्हणहारा बंद कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अलखना आपणी अलख जगाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, धुन आत्मक नाद सुणाइंदा। आपणी किरपा आपे धार, किरपन आपणा वेस वटाइंदा। शब्द वचोला एकँकार, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, थिर घर आपणा राग अल्हाइंदा। जोती जोत

२७८ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाइंदा। आपणी करनी हरि जू कर, अक्ल कल वरताईआ। २७८

१३ सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। राज राजान आपे बण, निरगुण आपणा हुक्म सुणाईआ। दर १३

दरवेश होए दर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपणा कारज आपे कर, करता पुरख खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए खुल्हाईआ। आपणा पर्दा खोल्हे आप, हरि वड्डा वड वड्याईआ । आपे जाणे आपणा प्रताप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आपे माई आपे बाप, पिता पूत आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह दए जणाईआ। आपे मात पित पतवन्ता, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। आपे आदि आपे अन्ता, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। आपे नार आपे कन्ता, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। आपे दाई आपे दाया आपे सेव कमंता, सेवक सेवा आप जणाइंदा। आपे साची गोद सुहंता, शब्दी बेटा एका जाईआ। सचखण्ड दुआरे अन्दर थिर घर आप बणंता, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। करे प्रकाश जोत अनन्ता, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। निरगुण दाई निरगुण दाया, नार कन्त हरि अख्वाइंदा। पूत सपूता एका जाया, शब्दी नाउँ वड्याइंदा। थिर घर साचे आप बहाया, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। साची सिख्या इक समझाया, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। साचा मार्ग इक वखाया, बिन नेत्रां आप जणाइंदा। साचे धंदे आपे लाया, धुर

मस्तक लेख लिखाइंदा। अक्खर वक्खर आप पढ़ाया, निष्अक्खर नाउँ रखाइंदा। सच संदेसा इक सुणाया, श्री भगवान आप जणाइंदा। गुर गुर तेरा नाउँ धराया, सतिगुर आपणा भेव जणाइंदा। तेरा मेरा इक्को साया, एका घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू आप प्रगटाइंदा। शब्द गुरु गुर थिर घर, सचखण्ड निवासी आप बहाईआ। सो पुरख निरँजण देवे वर, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। एकँकार फड़ाए लड़, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। श्री भगवान लगाए तेरी जड़, अबिनाशी करता सगन मनाईआ। पारब्रह्म तेरी सेवा लए कर, आदि जुगादि सेव कमाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, अजूनी रहित दए वड्याईआ। अकाल मूर्त तेरा नाउँ धर, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि किरपा गुर धर प्रसादि झोली पाईआ। शब्दी गुर चढ़या चा, थिर घर वज्जी वधाईआ। हरि जी मिल्या इक मलाह, बेड़ा आप चलाईआ। इक्को देवे सच सलाह, सिफ्ती सिफ्त वड्याईआ। इक जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा रिहा दृढ़ाईआ। इक वखाया सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक जणाया चरण ध्यान, सरन मिले सरनाईआ। दोए जोड़ मंगां दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर श्री भगवान, इक तेरी ओट तकाईआ। मैं सेवा करां महान, पूत सपूता सोभा पाईआ। अबिनाशी करता हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। निरगुण निरगुण कर प्रधान, सच प्रधानगी दए जणाईआ। विष्नूं प्रगट कीता आण, विश्व आपणी कल जणाईआ। विष्नूं अन्दर खेल महान, अमृत रस इक भराईआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए धार आप चलाईआ। विष्नूं नाभी कर परवान, एका गुल खिलाईआ। एका गुल नौजवान, पारब्रह्म ब्रह्मा लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, विष्न ब्रह्मा झोली पाईआ। विष्न ब्रह्मा वेख सुत, हरि साचा दया कमाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा राह चलाइंदा। आप सुहाई आपणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। आपणी धारों आपे उठ, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। सुन अगम्म धूंआँधार पए तुठ, शंकर आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। शब्द गुरु गुर दया कमा, मेहर नज़र उठाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव लए उपा, उपमा आपणी दए जणाईआ। वचोला बण बेपरवाह, सोहँ ढोला दए सुणाईआ। करे कौला थाउँ थाँ, आप आपणा बन्धन पाईआ। हौली हौली दए पढ़ा, धुर संदेसा इक सुणाईआ। विष्नूं दोए जोड़ पए सरना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा नेत्र रोवे मारे धाह, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। शंकर धूढ़ी ख़ाक रिहा रमा, मस्तक टिक्का एका लाईआ। श्री भगवान सहिज सुभा, साचा हुक्म आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि सतिगुर

आप कराइंदा। आदि पुरख इक इकल्ला, शब्दी धार राह चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, पल्लू आपणा नाम वखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। सच संदेस नर नरेश इक्को घल्ला, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी कार कमाइंदा। गुर शब्दी करे साची साया, साहिब आपणी दया कमाईआ। विष्नूं मेला सहिज सुभाया, ब्रह्मे दए वड्याईआ। शंकर आपणा राह वखाया, भेव अभेद खुल्हाईआ। तिन्हां विचोला बण के आया, एका माई लए बणाईआ। साचा सोहला इक सुणाया, निरगुण निरगुण ढोला गाईआ। नाम भण्डार इक वरताया, विष्नूं झोली दए भराईआ। ब्रह्मे ब्रह्म वंड वंडाया, लख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। शंकर हथ्थ त्रसूल फड़ाया, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां निउँ के सीस निवाया, प्रभ चरण धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा चलाया, साडी चले ना कोए चतुराईआ। पुरख अबिनाशी होए सहाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त मेला लए मिलाईआ। निरगुण सरगुण खेल कराया, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। लख चुरासी रंग चढ़ाया, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा बन्धन पाईआ। चारे खाणी राह जणाया, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैख़री ढोला गाया, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ब्रह्मा वेता आप समझाया, नेतन नेता हरि रघुराईआ। आपणा चेता आप कराया, चारे मुख सिफ्त सालाहीआ। चारे वेदां भेव चुकाया, चारे जुग वंड वंडाईआ। चारों कुण्ट कर रुशनाया, चार यारी बन्धन पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल कराया, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। गुर अवतार सेवा लाया, भगत भगवान कर पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर दे मति समझाया, कलमा नबी रसूल जणाईआ। आयत शरायत आप पढ़ाया, लाशरीक बेपरवाहीआ। सबक हदीस इक सुणाया, इक्को हुक्म मनाईआ। बोध अगाध मंत्र नमो सति सति दृढ़ाया, दृढ़ विश्वास इक वखाईआ। आदि जुगादी जुग जुग इष्ट आप बणाया, कर खेल बेपरवाहीआ। तेई अवतार नाच नचाया, पंज तत्त काया वेख वखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गंढ खुल्हाया, चौदां तबक पर्दा लाहीआ। नानक निरगुण मेला सचखण्ड दुआरे आप कराया, नाम सति झोली पाईआ। साचा मंत्र इक दृढ़ाया, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। निरगुण नानक सोहँ सोहला इक्को गाया, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। चारे खाणी वचोला बण के आया, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। तोला बण के सेव कमाया, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। पर्दा उहला दित्ता उठाया, गुर सतिगुर शब्द इक्को नज़री आईआ। अन्तिम बोला इक सुणाया, कलिजुग अन्त निहकलंक आवे वाहो दाहीआ। गोबिन्द मेला सहिज सुभाया, पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। चेला गुर रूप वटाया, सज्जण सुहेला वड वड्याईआ। आपणा वेला लए सुहाया, वार थित ना

कोए जणाईआ। इक इकेला फेरा पाया, दो जहान वेखे थाउँ थाईंआ। चार जुग दी पिछली कहाणी फोल फुलाया, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी सिफ्त रहे सुणाया, सो सिफ्त विच कदे ना आईआ। अन्तिम सब नूं गरिफ़त लए कराया, हुक्म आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी दए वड्याईआ। गुर शब्दी आदि अन्त, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी मणीआं मंत, मंत्र नाम दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए नार कन्त, सीता सुरती राम मिलाइंदा। माण दिवाए लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत जणाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। इक्को मेला साची संगत, हरि रंगत नाम चढ़ाइंदा। लोकमात वखाए जनत, स्वर्गी इक स्वर्ग रखाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, चौदां विद्या पढ़ियां हथ्थ ना आइंदा। चौदां लोक ना जानण अन्त, तरलोकी नाथ आपणे विच छुपाइंदा। आदि अन्त सदा बेअन्त, बेपरवाह आपणी खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दी करनी, हरि करता वेख वखाइंदा। चार जुग दी करनी क्रिया, निरगुण दाता वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर फिरया, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ । चारों कुण्ट अन्धेरा झूठा गेड़ गिड़या, सच सुच्च नज़र ना आईआ। पीरां नाल पीर भिड़या, शरअ नाल शरअ करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
२८१ आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह शब्द गुर दाता, जुग जुग वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर २८१
१३ वेख तमाशा, गोपी काहन आप नचाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद चार यारी दित्ता साथा, सगला संग निभाइंदा। नानक गोबिन्द १३
पिता पुरख अकाल बंधाया नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप मुकाइंदा। जुग जुग लेखा मुक्के जग, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्त सूरा सरबग्ग, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखे कग्ग, काग वांग रहे कुरलाईआ। शाह सुल्तानां घर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, कूड़ी सिआसत करे लड़ाईआ। भाई भाईआं नालों होए अड्ड, माँ पुत्त ना मेल मिलाईआ। कोई ना सोहे साची यद, जिस घर गुरमुख हरि हरि ढोला गाईआ। उच्चे लम्मे दिसण कद्द, निक्का हो के सेव ना कोए कमाईआ। कलिजुग झूठी पीती मध, अमृत रस ना कोए चखाईआ। गुर का नाता गए छड्ड, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। ख़ाली दिसण मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, शिवदुआले देण दुहाईआ। कामी क्रोधी कपटी माला रहे रट, हरी हरि हिरदे ना कोए वसाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लग्गा फट्ट, तीर्थ अठसठ गुंडे तारीआं रहे लाईआ। साध सन्त धीआं भैणां रहे तक्क, गुरू सिख्या ना कोए समझाईआ। पुरख अबिनाशी प्रभ नूं सारयां ते पै गया शक़, फ़तवा सब

दे उत्ते लाईआ। अन्तिम करे नबेड़ा हक़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरि का भाणा कोई ना सके डक्क, नानक गोबिन्द गया लिखाईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, बेपरवाह बेपरवाहीआ। दो जहानां पाए नथ्थ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा बन्धन पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां जीआं जंतां मार्ग दए दस्स, दहि दिशा कर रुशनाईआ। सन्तां भगतां मेल मिलाए हस्स हस्स, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। धरत धवल ज़िमीं असमान पृथ्मी आकाश होए बेवस, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। रवि ससि चरणी डिगण ढठ्ठ, जोती किरन ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलिजुग अन्तिम हुक्म वरते जग, शहिनशाह आपणा आप चलाइंदा। जन भगतां देवे दरस उपर शाह रग, बेमुखां नज़र ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे बैठे बज्झ, दर सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। हरि जू वेखे मक्का काअबा , उच्चे हुजरे फोल फुलाइंदा। सच महिराबे ना कोई हज्ज, दो दो आबा ना मेल मिलाइंदा। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, मुल्लां शेख़ मुसायक सर्ब कुरलाइंदा। बिस्मिल रूप हो मीआं घर कोए ना लए सद्द, अल्ला राणी मुख घूँगट ना कोए उठाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद राह तक्कण अड्डो अड्ड, पीर ज़ाहरा कवण कूटे फेरा पाइंदा। नानक निरगुण गोबिन्द सुत दुलारा गया दस्स, कलिजुग अन्तिम पुरख अकाल वेस वटाइंदा। सम्बल नगर जाए वस, साचा खेड़ा आप सुहाइंदा। निरगुण जोत करे प्रकाश, दीवा बाती ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा । कलिजुग अन्तिम वेखण आया, गुर शब्दी नौजवान। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, देवे धुर फ़रमाण। त्रैगुण माया डेरा ढाया, लेखा चुके विच जहान। पंजां तत्तां रिहा गाया, देवे धुर फ़रमाण। लख चुरासी रिहा मिटाया, झूठा दिसे ना कोए निशान। ख़ाली ठूठा रिहा कराया, सृष्ट सबाई होए हैरान। अन्तिम गुठ्ठा रिहा लगाया, लोकमात रहे ना कोए बेईमान। पुरख अबिनाशी तुड्डा फेरा पाया, नाल मिलाया गोबिन्द सूरा नौजवान। चार वरन रुक्का आप सुणाया, सच संदेसा धुर फ़रमाण। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाया, आत्म परमात्म देवे दान। सोहँ ढोला इक सुणाया, पीर पैगम्बर गुर अवतार विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाया, जन भगतां भगवन मिल्या आण। पूरी आस आप कराया, आसा तृष्ना मिटे जहान। सांतक सति सति वरताया, घर सखी सहेली मिले काहन। गृह मन्दिर फेरा पाया, आत्म सेज करे परवान। सच सिँघासण डेरा लाया, निर्मल जोती जोत जगाए महान। कूड़ी क्रिया डेरा ढाहया, करे खेल श्री भगवान। ख़ालक ख़लक वेख वखाया, परवरदिगार नौजवान। बिरध बाल ना रूप वटाया, चौदां लोकां चौदां तबकां चढ़ाए इक तुफ़ान। तोहफ़ा इक्को इक वरताया, नाता

तुट्टे अञ्जील कुरान। काया कुरा खोज खुजाया, शास्त्र सिमरत वेद पुराण प्रभ दी चरणीं डिगण आण। दोए दोए जोड़ वास्ता पाया, सानूं पढ़ पढ़ कलिजुग जीव होए शैतान। संसा रोग ना कोए चुकाया, निरगुण सरगुण दे दे गए ब्यान। ब्याना आपणा नाम धराया, अन्तिम ख़ाली होए मकान। काया मन्दिर अन्दर दरस किसे ना पाया, नाता जुड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार शैतान। कूड़ी क्रिया अन्दर डेरा लाया, कलिजुग चारों कुण्ट होया प्रधान। डौरु डंका रिहा वजाया, शाह सुल्तानां करे वैरान। वैरी दर दर आप रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराया। साची खेल करे भगवान, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी मार ध्यान, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। सन्त सुहेले लए पहचान, गुर चेले मेल मिलाईआ। मुरीद मुर्शद वेखे आण, बेपरवाह फेरा पाईआ। भगत भगवन्त करे कल्याण, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मात, निरगुण निरगुण रूप वटाइंदा । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोल्ह ताक, बंद कवाड़ा कुण्डा लाहइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लहिणा चुकाए हथ्थो हाथ, समरथ आपणी खेल रचाइंदा । भगत भगवन्त इक दूजे दे दास, दासी दास रूप वटाइंदा। साचे सन्तां वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल फोल फुलाइंदा। घर विच घर करे प्रकाश, जोती नूर नूर जगाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, हरि सज्जण मेल मिलाइंदा। नाता तोड़े जम का फ़ास, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। चित्रगुप्त ना कोए हिसाब, लाड़ी मौत दर दुरकाइंदा। पिछला लेखा करे बरख़ासत, आस गुरमुखां पूर कराइंदा। प्रभ मिलण दी जिन्हां आस, निज नेत्र दरस कराइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। आत्म परमात्म भोग भोगे इक बलास, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त गुरु गुर चेला, चेला गुर वड वड्याईआ। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सति सतिवादी आप सुहाया आपणा वेला, रुत्त रुतड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल कराईआ। नर हरि नरायण खेल अगम्मा, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। ना मरे ना कदे जम्मां, जीवण मरन ना कोए रखाइंदा। जुग चौकड़ी करे आपणा कम्मां, करनी किरत आप कमाइंदा। गगन रहाए बिन थम्मां, धरनी जल उपर टिकाइंदा। देवे प्रकाश सूरज चन्ना, मण्डल मण्डप आप चमकाइंदा। दीन मज़्हब भंनणहारा बन्नां, गुर अवतार सेव लगाइंदा। साचा राग सुणाए कन्नां, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल श्री भगवंना, चार वरनां एका नाउँ दृढ़ाइंदा।

क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आत्म परमात्म सब ने मन्ना, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। सोहँ देवे नाम धना, सच ख़ज़ीना आप लुटाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान फिरे भंना, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। कलिजुग कुड़यारा अन्तिम अन्नां, नेत्र नैण ना कोए खुलाइंदा। बीस बीसा देवे डंना, जगदीशा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम कल, हरि करता आप कराईआ। सृष्ट सबाई कर वल छल, अछल छल धारी रिहा भुलाईआ। जन भगतां अन्तर गया रल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, गुर गुर नाद वजाईआ। धाम वखाए इक अटल, महल्ल करे रुशनाईआ। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, पलक पलक नाल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कूड़ी क्रिया लाहे खल्ल, नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। जीव जंत फुल्ल फुलवाड़ी वेखे पत डाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाया श्री भगवन्त, वेद व्यासा लेख जणाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वड महंत, उच्चे टिल्ले पर्बत नज़र किसे ना आइंदा। मूसा जिस दे अग्गे कढ्ढे मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। ईसा जिस तों मंगे सुख जंनत, सो साहिब फेरा पाइंदा। मुहम्मद जणाए जिस दी उम्मत, सो अमाम वेस वटाइंदा। जिस नूं नानक गोबिन्द किहा बेअन्त, सो सतिगुर हुक्मे हुक्म चलाइंदा। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार, चार चार पन्ध मुकाइंदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। पाए वंडा अगम्म अपार, लेखा लेख ना कोए समझाइंदा। कागद कलम शाही लिख लिख गई हार, अन्तिम सब दा मुख भुआइंदा। रोवण नेत्र ज़ारो ज़ार, समुंद सागर नैण शरमाइंदा। बनास्पत कहे मैं होई ख्वार, चौंदा भार मेरा कम्म किसे ना आइंदा। तूं सिफ्त सालाहों वसया बाहर, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। कर किरपा दे दीदार, मुरीद मुर्शद राह तकाइंदा। साचे सन्त करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। भगत मंगे धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का इक्को इक लाइंदा। गुरमुख गुर गुर करे प्यार, गुरसिख गुर विच समाइंदा। गुरसिख राह तक्के मीत मुरार, मित्र प्यारा कवण वेला दया कमाइंदा। श्री भगवान वेखणहार, लोचण नैण ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड निवासी पावे सार, शब्द स्वासी आप बचाइंदा। अन्दर मन्दिर करे गुफ्तार, तार सतार इक हिलाइंदा। निज नेत्र दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। चार वरनां करे प्यार, रामा कृष्ना रूप वखाइंदा। मुकन्द मनोहर लखमी नरैण राम रमईया हो तैयार, रघपत आपणा वेस वटाइंदा। हक़ हकीकत ला शरीकत वेखे विगसे वेखणहार, पर्दानशी मुख नकाब पर्दा लाहइंदा। खाणी बाणी जीव प्राणी ब्रह्म ज्ञान शब्द निशान, आत्म परमात्म एका राग सुणाइंदा। आदि जुगादी सच कहाणी, सो पुरख निरँजण

आप वखाणी, हँ ब्रह्म देवे पद निरबाणी, निरबाण पद आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धार आप जणाइंदा। साची धार सोहँ ढोला, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। चार वरन दा बणे वचोला, सतिजुग राह चलाईआ। बजर कपाटी लाहे उहला, पर्दा दूई रहिण ना पाईआ। दूर वसया दिसे कोला, नेतन नेत नज़री आईआ। काया बदली करे चोला, चोली काया रूप वटाईआ। पंज तत्त ना पाए रौला, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। आत्म परमात्म आपे मौला, मिल मिल खुशी वखाईआ। प्रेम प्यार दए झकोला, सुरती शब्द चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण चुक्के डोला, आपणे कंध उठाईआ। पिच्छे रहि जाए कलिजुग गोला, हरि जू आपणा धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका करे पढ़ाईआ। चार वरन एका अक्खर पढ़ना, कलिजुग आख़र आप जणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वड़ना, महल अटल जणाइंदा। आत्म परमात्म पौड़े चढ़ना, सुखमन टेडी पार कराइंदा। ईड़ा पिंगल आपे डरना, रिद्धि सिद्धि ना कोए अटकाइंदा। अनहद नाद अनादी शब्द सुणना कन्नां, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। मन मनुआ ना फिरे भंना, जगत वासना बंद कराइंदा। आत्म जो हो के बैठा अन्ना, सतिगुर पूरा प्रकाश कराइंदा। करे प्रकाश कोटन सूरज चन्ना, चन्द सूरज सर्ब शरमाइंदा। जो माल चराए धन्ना, सो सतिगुर सिँघ बूड़ घर फेरा पाइंदा। जिस लेखे लाया थाल छन्ना, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां घर आपे मन्नां, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। नामा कहे मेरा भगवना, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। कबीर कहे मोहे फड़ाया पला, पल्लू आपणी गंढु पुआइंदा। ऐनल हक़ कहे मेरा मिले अल्ला, आलमीन नज़री आइंदा। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला, इलाही नूर आप प्रगटाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अवल्ला, वेद कतेब भेव ना आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण दाता फिरे इक इकल्ला, जोती जोता वेस वटाइंदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर उच्चे टिला, पर्बत सागर फोल फुलाइंदा। दो जहान ज़िमीं असमान शब्द हलूणे हिल्ला, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्लाइंदा। गोबिन्द हथ्थ विच फड़या चिला, नाम कमान इक उठाइंदा। सब दा अंगण हो गया ढिल्ला, कंगण हथ्थ ना कोए छणकाइंदा। अन्तिम नेत्र रोवे बूरा कक्का बिला, रूसा चीना संग ना कोए रखाइंदा। नव नौ होए फ़नाह फिला, फ़िकर घर घर आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नव नौ चार खेल अपार, लेखा जाण गुरु गुर अवतार, पीर पैगम्बर वेख विचार, धार शब्द शब्द धार इक्को राह वखाइंदा।

❊ २० मग्घर २०१६ बिक्रमी मुनशा सिँघ दे गृह नोशहरा ज़िला गुरदासपुर ❊

आदि शब्द कहे मैं तेरा सुत, सुत दुलारा नाउँ रखाइंदा। वेख खेल अबिनाशी अचुत, तेरा हुक्म मनाइंदा। साहिब सुहौणी मेरी रुत्त, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। सचखण्ड दुआरिउँ वेख उठ, दरवेश इक्को मंग मंगाइंदा। ना कोई काया ना कोई बुत्त, पंज तत्त ना कोए रखाइंदा। नाउँ नगारा तेरे चोट, दूजा रूप ना कोए जणाइंदा। तेरा प्रकाश निर्मल जोत, नूर नुराना नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। शब्द सुत सुत बलवान, बल तेरे हथ्थ वखाईआ। दो जहानां तेरी आण, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां तेरे हुक्म फिराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे दान, तेरा हट्ट चलाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार वेख्या आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा छोटे बाल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सुत दुलारे सच्चे लाल, तेरा गोबिन्द रंग रंगाइंदा। थिर घर तेरी धर्मसाल, धर्म दुआरा इक बणाइंदा। ना कोई शाह ना कंगाल, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। इक्को शब्द इक्को ताल, इक्को राग नाद सुणाइंदा। इक्को वेखे वेखणहार बेमिसल, साची मिसल आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द बणाए साचा मुर्शद, पीर पैगम्बर मुरीद रूप वटाइंदा। मुर्शद बणया बेपरवाह, मुर्दा रूप ना कदे वखाईआ। तुरदा फिरदा ना करे गुनाह, उठदा बहिंदा नज़र किसे ना आईआ। पीर पैगम्बरां देवणहार पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रहबर बणे विच जहान, दो जहानां वाली बेपरवाहीआ। नाउँ निरँकारा दए दृढ़ा, इष्ट दृष्ट दए खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग ला, गुर अवतार धंदे लाईआ। सबक अगम्मी आप पढ़ा, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। साची वंनी लए प्रना, हरि कन्त कन्तहूल सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी कन्नी लए बंधा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरी वंड वंडाईआ। शब्द सुत वड बलकारे, बल हरि जू आप जणाइंदा। आदि जुगादि तेरे खेल न्यारे, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। गुर अवतार बण पनिहारे, दर तेरे सेव कमाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर लावण तेरे नाअरे, रसना जिह्वा सर्ब गाइंदा। खण्ड ब्रह्मण्ड लोक परलोक जीव जंत लख चुरासी तेरे सहारे, तुध बिन जीवण मरन ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप वड्याइंदा। साचे सुत तेरे हथ्थ वड्याई, हरि सतिगुर आप फड़ाईआ। निरगुण सरगुण कर कुड़माई, लख चुरासी बन्धन

पाईआ। सच संदेसा लोक परलोक सुणाई, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। इक्को ओट हरि सरनाई, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस नूर गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे ध्याई, सो सब दा पिता माईआ। जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ फड़ाई, फड़ बाहों अग्गे लाईआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा चलाई, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सुत दुलारे खुशी मनाई, घर साचे वज्जी वधाईआ। मैं कलिजुग अन्तिम वेखां चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक वधाईआ। भज्जा फिरां बिन लत्तां बांहीं, हथ्थ पैर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द दए जणाईआ। शब्द सूरा इक्को नच्चे, आपणा ताल वजाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हरि जू भाण्डे दित्ते कच्चे, जो घड़या भन्न वखाइंदा। अन्तिम मैनूं किहा उठ लाडले बच्चे, तेरी साची सेव लगाइंदा। प्रभ दे हुक्म मैनूं लग्गे चंगे, चंगी तरां आपणे विच छुपाइंदा। लोकमात लख चुरासी विच्चों वेखां माढ़े चंगे, घर घर फेरा पाइंदा। जिस ने छड्डी पुरी अनन्दे, अनन्द उस नूं इक वखाइंदा। आप चुक्क के आपणे कंधे, लोकमात पुचाइंदा। दो जहानां वेखे धंदे, धरत धवल दया कमाइंदा। साहिब दयाल ठाकर स्वामी पुरख अकाल जिस दी मन्ने, सो भय क्यों रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी गुर डंक वजाइंदा। शब्द कहे मैं जावांगा, निरगुण निरगुण लै अवतार। पुरख अकाल नाल ल्यावांगा, करां खेल अगम्म अपार। गोबिन्द डंका इक वजावांगा, दो जहानां करे ख़बरदार। रंउ रंकां आप उठावांगा, सच सुनेहड़ा दयां एका वार। जो घड़या भन्न वखावांगा, प्रभ लाई सच्ची कार। दो जहानां आपणा हुक्म मनावांगा, मैं होया वड बलकार। गुर अवतार पीर पैगम्बर फड़ फड़ चरणीं लावांगा, सच संदेसा देवां एका वार। जो अड़या भन्न वखावांगा, सुट्टां मूँह दे भार। डंका इक्को नाम वजावांगा, जै जैकार करे करतार। साचा ढोला इक्को गावांगा, जिस दी कोए ना पाए सार। विष्न ब्रह्मा शिव नाच नचावांगा, उंगलीआं नाल कर इशार। अन्तिम सब नूं फड़ के तख्तों लाहवांगा, कोई रहे ना सिक्दार। दो जहानां इक्को राह चलावांगा, शाह पातशाह हो तैयार। प्रभ सच्चे दा सच्चा सुत फेर अख्वावांगा, कूड़ी क्रिया कर ख्वार। बिन खंडिउँ सब नूं मार मुकावांगा, कोई रहे ना मूर्ख मुग्ध गंवार। साची उतपत फेर करावांगा, गुरमुख खिड़ी सच्ची गुलज़ार। पत्त डाली आप महकावांगा, गुलशन वेख सच बहार। सच भँवरा इक बणावांगा, सोहँ रूप आप निरँकार। एका दूजा भेव मिटावांगा, दूई द्वैत पर्दा उतार। जिध्धर कोई वेखे ओधर नज़री आवांगा। हर घट वसे एकँकार। फिर बहि के शुकर मनावांगा, खुशी होया मेरा गुरसिख सरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फेर अख्वावांगा, जिस वेले दो जहान करन निमस्कार।

❇ २० मग्घर २०१६ बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड चेबे ❇

सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, सति सतिवादी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। एकँकारा वड बलवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वाली दो जहान, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह अख्वाइंदा। श्री भगवान सति निशान, राज राजान आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। नूर इलाही सच मुकाम, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। बेऐब खुदाई दीन दयाल, नूरी जलवा नूर उपाइंदा। दरगाह साची खेल महान, हरि ख़ालक आप कराइंदा। राम रमईया मेहरवान, नज़र किसे ना आइंदा। आपणी इच्छया कर प्रधान, सचखण्ड दुआरा आप बणाइंदा। साचे तख्त हुक्मरान, धुर दी धार आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता निरगुण निरवैर आपणा खेल कराइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, हरि वडा वड वड्याईआ। नूरी जलवा सति जलाल, ज़हूर इक रुशनाईआ। सचखण्ड वसणहार सच सच्ची धर्मसाल, चार दीवार ना कोए बणाईआ। इक इकल्ला एकँकार, अक्ल कल धारी आसण लाईआ। साची करनी कर तैयार, करता पुरख आपणा खेल कराईआ। थिर घर दुआरा खोल्ह कवाड़, शब्दी सुत दए वड्याईआ। शब्दी सुत कर प्यार, विष्नूं रूप वटाईआ। विष्नूं अन्दर अमृत धार, रस रसीआ इक वखाईआ। रस साचा कँवल कर उज्यार, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। नूरी जलवा कर उज्यार, ब्रह्मा लए प्रगटाईआ। लेखा जाणे धूंआँधार, सुंन अगम्म समाईआ। करे खेल अपर अपार, शंकर मीता ठांडा सीता, भोले नाथ दए वड्याईआ। सच संदेसा जणाए साची रीता, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। श्री भगवान खेल अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करतारा, आदि आदि कराइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड खोल्ह दुआरा, थिर घर आपणा बंक सुहाइंदा। पूत सपूता सुत दुलारा, हरि शब्दी नाउँ वड्याइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, त्रैगुण अतीता आपणा मेल मिलाइंदा। पंज तत्त कर तैयारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाइंदा। रजो तमो सतो पसारा, एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचना पारब्रह्म, हरि आपे आप रचाईआ। लेखा जाणे खेल अगम्म, भेव कोए ना पाईआ। करनी करता करे कम्म, करता पुरख वड वड्याईआ। मात पित बिन कुखों पए जम्म, असुते प्रकाश करे रुशनाईआ। शाहो भूप राज राजान सति सुल्तान मेहरवान आपणा बेड़ा

आपे बन्नू, निरगुण आपे रिहा चलाईआ। आपे जननी आपे जन, धन्न जणेंदी आपे माईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव खेल करे श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रखाईआ। आपे देवे साचा धन, विष्न भण्डार इक भराईआ। आपे ब्रह्मे राग सुणाए साचा कन्न, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, त्रै त्रै होए इक्को दाता, वेखणहारा खेल तमाशा, आपणी इच्छया सच त्रसूल भोले नाथ फड़ाईआ। सच हथ्थ दे त्रसूल, त्रैगुण अतीता खेल कराइंदा। आदि बणाया आप असूल, असलीअत आपणे विच रखाइंदा। आपणा हुक्म देवे माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। आदि अन्त ना जाणा भूल, जुग जुग सेव लगाइंदा। बरसणहारा साचे फूल, हरि बरखा इक बरसाइंदा। सच पंघूड़ा लैणा झूल, नाम हुलारा इक वखाइंदा। मेल मिलावा कन्त कन्तूहल, हरी हरि इक्को नज़री आइंदा। मस्तक टिक्का देवे धूल, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त देवे दस्त, बदस्त आपणी दया आप कमाइंदा। करे खेल बेपरवाह, पर्दा आपणा दए उठाईआ। तिन्नां देवे इक सलाह, साचे मार्ग लाईआ। लख चुरासी घाड़त लए घड़ा, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुका, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। तुध बिन ना कोए सहा, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान मेहर निगह उठा, आपणा गुण दए जणाईआ।
२८६ १३ साचा संग दए वखा, सतो रजो तमो बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। धुर फ़रमाणा त्रैगुण अतीता, ठांडा सीता आप सुणाइंदा। बैठा रहे धाम अनडीठा, नज़र किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव शब्दी धार चले रीता, अनभव प्रकाश कराइंदा। लख चुरासी बणना मीता, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। पंज तत्त अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाए बग़ीचा, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा पुरख अकाल दीन दयाला, पारब्रह्म प्रभ आपणा राह वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण संदेस, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। शहिनशाह तूं सच नरेश, बेअन्त तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि रहें हमेश, ना मरे ना जाईआ। सति भुमका तेरा देस, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। बिन नेत्रां रिहों वेख, बिन कन्नां राग अल्हाईआ। सद रखें साया हेठ, तेरी इक्को ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी करे हेत, हितकारी वेख वखाईआ। नेत्र लोचण नैण लैणा पेख, पेखत आपणा रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण धारे भेख, लख चुरासी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सुण संदेसा ब्रह्मा मीता, नेत्र नैण इक उठाइंदा। सति सतिवादी तेरी रीता, तुध बिन कोए ना मोहे समझाइंदा। हउँ बालक नंन्हा छोटा ना जाणा तेरा

कीता, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त निशान, हरि जू आपणा रंग रंगाईआ। मन मति बुध देवे गुण निधान, निक्की वस्त झोली पाईआ। साची वंड करे महान, आपणा अंग कटाईआ। ब्रह्म रूप नौजवान, पारब्रह्म दए समझाईआ। आत्म करे खेल महान, परमात्म आपणी दया कमाईआ। ईश जीव रंग रंगान, जगदीश हुक्म मनाईआ। लख चुरासी दस्से निशान, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। ब्रह्मे सुण ला कन्न, हरि साचा सच जणाइंदा। वस्त अमोलक इक्को धन, ब्रह्म तेरी झोली पाइंदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, पंज तत्त अन्दर आप टिकाइंदा। लेखा जाणे बुध मति मन, मन वासना नाल रलाइंदा। नौ दुआरे हथ्थ मूँह नक्क कन्न, नेत्र सरवण खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। सुण संदेसा मंगे मंग, ब्रह्मा प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। काया चोली चाढ़ रंग, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। कर किरपा दे अन्दर अनन्द, निज घर मेला सहिज सुभाईआ। जिथ्थे कोई ना चढ़े सूरज चन्द, तेरी जोत करे रुशनाईआ। जिथ्थे नाद वज्जे अनहद, शब्दी आपणा राग अलाईआ। तेरा खेल सूरे सरबग्ग, दूसर नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा आपणी दे अन्तर अक्ख, जिस लोचण वेखण कोए ना पाईआ। काया अन्धेरी डूँघी खड्ड, आपणा घर दे वसाईआ। अमृत आत्म सच सरोवर देणी साची मध, मधुर प्याला इक प्याईआ। नौ दुआरे चुक्के हद्द, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। एका धाम वसे जो बैठा अड्ड, घर घर विच मेल मिलाईआ। बिन तेरे ख़ाली रहि जाए मास नाड़ी हड्ड, फेर कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे रिहा आप समझाईआ। ब्रह्मे सुण छोटे बाले, पारब्रह्म आप जणाया। लख चुरासी शाह कंगाले, काया रंग रंगाया। अन्दर मन्दिर इक धर्मसाले, जिस घर डेरा लाया। नौ दुआरे खेल निराले, मन मनसा मोह वधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार चले नाल नाले, आसा तृष्ना मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाया। ब्रह्मा हथ्थ दोवें जोड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सतिगुर जे ब्रह्म नूं पै जाए तेरी लोड़, किस बिध लएं मिलाईआ। आदि जुगादि हथ्थ तेरे डोर, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। तूं वसें अन्धेरे घोर, नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट ठग्ग चोर, बैठे डेरे लाईआ। अग्गे हो सके ना कोए होड़, होका दे ना कोए जगाईआ। आपणे हुक्मे अन्दर सारे छड्डे तोर, बिन तेरे हुक्म पन्ध ना कोए पाईआ। पुरख अबिनाशी हस्स के कहे ब्रह्मे मेरा मंत्र नाम फोर, फुरना सब दा बंद कराईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या दए जणाईआ। ब्रह्मा कहे तेरा मंत्र फोर, फुरना सब दा बंद कराइंदा। पारब्रह्म कहे मैं बाहरों होर अन्दरों होर, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात देवां तोर, तुरत संदेसा इक सुणाइंदा। अन्तिम आपणे हथ्थ विच रखां सब दी डोर, जिउँ भावे तिउँ चलाइंदा। अग्गे हुक्म ना सके कोई मोड़, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। सदा सदा सद मेरी रहे लोड़, अबिनाशी करता आप जणाइंदा। मैं दो जहानां लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां चढ़ के वेखां अगम्मी घोड़, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज फोल फुलाइंदा। मेरा नाम सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खाणा भोर भोर, भोरा भोरा सब दे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक सुणाइंदा। साची सिख्या दर घर सिख, ब्रह्मे लख लख शुकर मनाया। पुरख अबिनाशी पा भिख, दर मंगण मंगता आया। बिन कलम शाही लेख लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। तूं आत्म परमात्म वन्डया हिस्स, हिस्सा आपणे हथ्थ रखाया। बिन तेरे नेत्र किसे ना पए दिस, दो लोचण कम्म किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे सच रिहा समझाया। ब्रह्मे सच सुण लै मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाइंदा। आदि बणाई आपणी रीत, जोती शब्द खेल कराइंदा। शब्दी धार इक अनडीठ, विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वखाए धाम अनडीठ, नेत्र नैण नैण खुल्लाइंदा। तिन्ने मिल के गाओ सच्चा गीत, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म पढ़ाइंदा। सोहँ शब्द आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहे ठीक, लख चुरासी काया ठीकर सब दा भन्न वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी चले रीत, शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मसीत नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल दस्से भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण दए ज्ञाना, गुर मंत्र नाम दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, जीवण जुगत जगत जणाईआ। सिफ्ती सिफ्त सालाहन नौजवाना, बेअन्त बेपरवाहीआ। लख चुरासी इक निशाना, सारे रहे समझाईआ। पढ़ पढ़ थक्के रसन वखाना, वाक्यात नज़र किसे ना आईआ। ढोले लावण गावण गाणा, गावणहारा गीत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कर, करनी करता आप जणाईआ। चार जुग दा सच्चा राह, हरि साचा सच जणाइंदा। गुर अवतार कर मलाह, बेड़ा खेवट खेट चलाइंदा। नाउँ निरँकारा दए सुणा, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा । तेई अवतारां हुक्म मना, हुक्मी हुक्म आप फ़रमाइंदा। भगत अठारां जोत जगा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा लाह, सच प्रकाश इक वखाइंदा। ईसा मूसा

२६१
१३

मुहम्मद खेल करा, ख़ालक ख़लक नूर दरसाइंदा। मुकामे हक़ इक दृढ़ा, हकीकत इक्को इक वड्याइंदा । लाशरीक बण खुदा, कलमा नबी रसूल सुणाइंदा। अल्फ़ ये दए पढ़ा, भेव अभेद ना कोए समझाइंदा। चौदां तबक रंग रंगा, ज़िमीं असमान नाच नचाइंदा। तारा चन्द कर रुशना, सूरया इक्को गंढु पुआइंदा। अञ्जील कुराना दए पढ़ा, तीस बतीसा आप सुणाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक लए प्रगटा, तसबी माला गल लटकाइंदा। पंज वक्त निमाज़ रिहा पढ़ा, रोज़ा बांग नाल रलाइंदा। लेखा जाण दो जहान, कुदरत आपणे विच रखाइंदा। अन्त संदेसा देवे इक्को सच्चा नाँ, इलाही नूर नूर दरसाइंदा। सच अमाम इक खुदा, अमन इक्को घर वखाइंदा। सम्मण सब दे रिहा कढ्डा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। अवण गवण फेरा पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, लख चुरासी राह चलाइंदा। लख चुरासी पीर पैगम्बर, पारब्रह्म प्रभ दए वड्याईआ। गुर अवतार रच सुअम्बर, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। आत्म परमात्म वेखे अडम्बर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। सर्ब कला आपे भरतम्बर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नरायण निहकर्मी आपणा कर्म जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुण बात, हरि बातन आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, दो जहानां वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चार खाणी चार बाणी कर प्रकाश, परा पसन्ती मद्धम बैख़री राग अल्लाइंदा। रसना जिह्वा पवण स्वास, बत्ती दन्दां सिफ्त सालाहइंदा। गुर अवतार कर कर दासी दास, सेवा सच सच जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जुग चौकड़ी होए पार, थिर कोइ रहिण ना पाईआ। नव नौ चार खेल न्यार, निरगुण दाता आप कराईआ। धुर दा लेखा जाणे सर्ब संसार, लिख्या लेख ना कोए वखाईआ। कागद कलम शाही पा ना सके सार, बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा आकार, निराकार सर्ब समाईआ। आत्म ब्रह्म तेरा आधार, वरन गोत ना कोए रखाईआ। दीन मज़्हब झूठ अखाड़, माया ममता जगत कुरलाईआ। अन्तिम सर्ब दा इक्को परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। जिस ने कलमा कीता तैयार, नाम मंत्र सति दृढ़ाईआ। जिस दा फ़तहि करे जैकार, सो साहिब बेपरवाहीआ। जिस ने घल्लया राम अवतार, सो राम हर घट आसण लाईआ। जिन कृष्न असुर दित्ते सँघार, सोलां कलां बल वखाईआ। सो काहन वसे धाम न्यार, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर फिरन जुग चार, जुग जुग आपणा पन्ध मुकाईआ। सो विष्न ब्रह्मा शिव लेखा दए वखाल, बिन नेत्र नैण जणाईआ। कलिजुग अन्तिम होए दयाल, दीन दयाल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

२६२
१३

खेल साचा हरि, सच सच करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव रखणा याद, हरि हरि जी आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों कलिजुग अन्तिम सब दी पुछे वात, दो जहान खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड मण्डल मण्डप वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वजाए नाद, धुर दी धार आप जणाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे दाद, दाता दानी दया कमाइंदा। सति सतिवादी इक्को रचे साचा काज, गुर अवतार पीर पैगम्बर एका घर बहाइंदा। पिछली छड्डो जगत निमाज़, रोज़ा बांग ना कोए रखाइंदा। सतिजुग सारे प्रभ साचे नूं मारो इक अवाज़, दीन मज़्हब ना वंड वंडाइंदा। शहिनशाह हरि शाह नवाब, पातशाह आपणा खेल कराइंदा। झुक झुक सीस करो आदाब, अलैकम सलाम इक समझाइंदा। जिस नूं ईसा कहे मेरा बाप, बेनकाब पर्दा लाहइंदा। जिस नूं मुहम्मद किहा अमाम आवे आप, अमाम मैहन्दी रंग रंगाइंदा। जिस नूं वेद व्यास कहे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिले पर्बत होए वड प्रताप, बेअन्त खेल कराइंदा। जिस दा आदि जुगादि जुग जुग जपदे रहे जाप, अल्ला वाहिगुरू राम राम नमो सति सति समझाइंदा। सो साहिब सुल्तान कलिजुग अन्तिम इक जणाए साचा पाठ, सोहँ ढोला आप अल्लाइंदा। कोट जन्म दे लाहे पाप, दुरमति मैल धवाइंदा। नज़री आए आपा आप, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर एथे ओथे पत्त लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा।
२६३ १३ दरस कराए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। चरण कँवल बंधाए नात, नाता तोड़ ना कोए तुड़ाइंदा। जे कोई बाहरों पुछे गल्ल बात, अन्दरला भेत ना किसे समझाइंदा। कलिजुग अन्त अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। शाह सुल्ताना राज राजाना देवणहारा भविख्त वाक्, साची सच सच जणाइंदा। अन्तिम सब ने होणा ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक नाल मिलाइंदा। सतिजुग खुल्लणहारा ताक, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वखाए इक्को घाट, इक्को दर दए वड्याईआ। खेले खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, नव सत आप नाच नचाईआ। चारों कुण्ट उब्बले रत्त, सीतल धार ना कोए वखाईआ। सब दी उलटी करे मति, पढ़ पढ़ बैठे मुख भुआईआ। अन्तिम तत्त नाल लड़ाए तत्त, तिक्खी धार चलाईआ। लख चुरासी विच्चों श्री भगवान सन्त सुहेले लए रख, दूर नेड़ा ना कोए वखाईआ। जुग जुग भगतां करदा आया पक्ख, धू प्रहिलाद दए वड्याईआ। बाकी भाण्डे करे सक्ख, ख़ाली हथ्थ फिरे लोकाईआ। अन्तिम सब नूं दस्से इक्को मति, मध आपणा भेव खुल्लाईआ। शब्द वजाए साची सट्ट, अनहद आपणा राग अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, कलिजुग अन्तिम वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। ख़ालक वेखे हरि जू

खलक, मख़लूक खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे हलत पलत, जुग जुग नाच नचाइंदा। धुर दा लेखा होण ना देवे गलत, जो लिख्या पूर कराइंदा। किसे ना बदलण देवे आपणी पलक, अक्ख अक्ख नाल वटाइंदा। जिस नूं देवे आपणी नूरी झलक, सो जन चरणी सीस निवाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ना कोई सोग ना कोई हरख़, जो घड़या भन्न वखाइंदा। हरि साचे दी क्या कोई करे परख, परीख्या विच कदे ना आइंदा। जो करना चाहे दरस, आत्म अन्तर मंग मंगाइंदा। घर घर विच वखाए अर्श, कुर्श काया कुरा खोज खुजाइंदा। जिस जन उपर करे आपणा तरस, तिस त्रैगुण माया पर्दा लाहइंदा। हरि मेघ देवे बरस, सांतक सति सति कराइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, अग्गे हवस ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, चार वरनां इक्को राह चलाइंदा। चार वरनां इक्को मीता, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जिस लेख लिखाया अठारां ध्याए गीता, पुराण अठारां करे पढ़ाईआ। जिस दा लेखा शास्त्र सिमरत वेद अतीता, चारे जुग करे कुड़माईआ। जिस दा नूर अञ्जील कुरान बाईबल ईसा मूसा मुहम्मद सिख्या साची सीखा, सो मकतब इक जणाईआ। जिस नानक गोबिन्द पाई भीछा, सो बेअन्त बेअन्त बेपरवाह सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुगो जुग करे खेल अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी तपे अंगीठा, जगत ज्ञान ना कोए बुझाईआ। हरि का भाणा सब नूं मन्नणा पए मीठा, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। सतिजुग साची चले रीता, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी मिले मीता, घर घर दरस दिखाईआ। ना मरया ना कदे जीता, इक्को नूर रुशनाईआ। वसणहारा हस्त कीटा, घट घट डेरा लाईआ। भगत भगवान दस्से सच प्रीता, प्रीतीवान इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नव नौ वेखे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर वेखे नव नौ, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। ग़फ्लत विच ना रहिणा सौं, धुर फ़रमाणा हुक्म मनाइंदा। अन्तिम वंडी सीआं साढे तिन्न हथ्थ भौं, भाण्डा सब दा ख़ाली कराइंदा। बीजे रहि जाण कणक ते जौं, वाढी कोए ना पाइंदा। पिच्छा फिर वेखण भौं भौं, हरि जू की की खेल कराइंदा। कोई ना कहे कीता हौं, सब हरि दुआरे सीस झुकाइंदा। जन भगतां प्रभ मिलण का चाउ, गुरमुख इक्को आस रखाइंदा। चाहे मारे चाहे जवाओ, आपणा आप ना कोए वखाइंदा। जो देवे सो पीओ खाओ, घर घर रिज़क पुचाइंदा। किसे दा लग्गण ना देवे दाओ, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे हुक्म फिराइंदा। हुक्म ना चले अग्गे नाओ, नईया सब दी आप रुढ़ाइंदा। दो जहानां लाए पाउँ, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म मनाइंदा। सन्त सतिगुर उठाए फड़ फड़ बाहों, रातीं सुत्यां आप जगाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा चोग

चुगाइंदा। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एथे ओथे करे हक़ न्याउँ, लहिणा सब दा सब दी झोली पाइंदा। जे कोई मंगे होर अगाऊँ, हरिसंगत नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण संदेसा सच सच सुणाइंदा। सच संदेसा निरगुण बेअन्त, बेपरवाह आप जणाईआ। सृष्ट सबाई इक्को कन्त, कन्त कन्तूहल शहिनशाहीआ। चतुर्भुज महिमा अगणत, निक्का वड्डा खेल कराईआ। आदि जुगादी जुग जुग मंत, मंत्र राम नाम पढ़ाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस सतिगुर बूझ बुझाईआ। जुग जुग मेला भगत भगवन्त, लोकमात कराईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। जिस ने रचना रची आदि उह वेखे खेल अन्त, खेलणहारा नूर खुदाईआ। चौदां तबक रहे तभक़, चौदां लोक कूक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण की रिहा वरत, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक पुरख अबिनाशी प्रगट होया विच भारत, भरम सब दा दए गंवाईआ। कोई ना जाणे पंडत पांधा मुल्लां शेख़ मुसायक आरफ़; चौदां विद्या हथ्थ ना आईआ। निरगुण निरँकार निराकार बैठा सब तों हो के फ़ारग़, फ़तवे सब दे उत्ते लाईआ। इक्को जोती किरन सुट्टे सपारक, नव सत दए जलाईआ। शाह सुल्तानां श्री भगवान पहली चेत्र सब नूं करे तुआरफ़, तोहफ़ा घर घर दए पुचाईआ। अगले सम्मत कोई ना करे किसे दी सिफ़ारश, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। पहली चेत्र काया मन्दिर सब नूं होए ख़ारश, रातीं सुत्यां नींद ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन दा इक्को दाता, इक्को नाम इक्को गाथा, इक्को मन्दिर इक्को माठा, इक्को पूजा इक्को पाठा, इक्को इष्ट देव वखाईआ। इक्को इष्ट वखाए सृष्ट, ईशर आपणी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म खेल सर्ब सृष्ट, सृष्टी आपणे राह चलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म सच वखाए दृष, आदर्श इक्को इक जणाइंदा। पिछली मुक्के सब दी हिरस, अग्गे इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरन इक सरन जन भगतां खोल्ह़े नेत्र हरन फरन, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। दूई द्वैती पर्दा करे चाक, चाकर आपणी सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया करे ख़ाक, सच सुच दए वड्याईआ। आदि जुगादि कलमा पाक, पाक रसूल करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी देवे नाम दात, दाता दानी फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दी पुछे वात, ग़रीब निमाणे कोझे कमले वेख वखाईआ। सदा सुहेला देवे साथ, सगला संग निभाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी पहली चेत्र धर्म बणाए इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। रल मिल सारे करन इक्को पाठ, सोहँ ढोला रसना गाईआ। पहलों कोई ना सुणे साज, सब बैठे मुख भुआईआ। जिस वेले ख़ाली रहि गए हाथ, सारे देण दुहाईआ। शाह सुल्तान होण ख़ाक, तख्त ताज ना कोए हंढ्ढाईआ। नौ खण्ड

सत्त दीप करन याद, इक्को इक खुदाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां ज़ातां पातां कीता घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। जिस गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दिती वफ़ात, पंज तत्त काया ख़ाक मिलाईआ। जिस आत्म देणी नजात, सो परमात्म बेपरवाहीआ। रल मिल सारे पढ़ीए इक जमात, अग्गे पिच्छे रहि कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल पारब्रह्म ब्रह्म सति स्वामी आदि जुगादि सदा निहकामी, कर्म कांड प्रकृती फिरती फिरती आपणी झोली पाईआ।

✻ २० मग्घर २०१६ बिक्रमी तरलोक सिँघ तरलोक सिँघ पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✻

सचखंड निवासी साचे देसा, दरगाह साची हुक्म जणाइंदा। निरगुण वेख आपणा लेखा, सरगुण पन्ध चुकाइंदा। जुग चौकड़ी कढ्ढे भरम भुलेखा, सच सुच दृढ़ाइंदा। इकठ्ठे हो जाओ धारी केसा, मूंड मुंडाए नाल मिलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करे हेता, हद्द आपणी पार जणाइंदा। चुक्कणहारा जुगा जुगन्तर शाह नरेसा, शहिनशाह आपणा भेव चुकाइंदा। दीन मज़्ब दा छड्ड दयो पेशा, मार्ग इक्को इक समझाइंदा। जिस नूं करदे रहे आदेसा, सो साहिब हुक्म सुणाइंदा। नौ खण्ड
२९६ ९३ पृथ्मी सत्त दीप घर घर जा के दयो संदेसा, श्री भगवान खेल कराइंदा। ना कोई रहे मुल्लां औलीआ पीर शेखा, मुसीबत सब दे सिर ते पाइंदा। कोई ना पंडत पांधा वेखे रेखा, पत्री सब दी बंद कराइंदा। कोई ना करे झूठा भेखा, भेखाधारी सर्ब मिटाइंदा। दो जहानां देवे नेंता, सच सच जणाइंदा। लोआँ पुरीआँ कर कर वेंता, साची वंड वंडाइंदा। श्री भगवान खेवट खेटा, लख चुरासी बेड़ा आप चलाइंदा। अन्तिम मेल होया पिता बेटा, पुरख अकाल गोबिन्द रंग रंगाइंदा। जिस भाग लगाया रविदास गंगा थेटा, सो गहर गम्भीर खेल कराइंदा। पिछला सब नूं याद कराए चेता, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जिस भाग लगाया जट्ट धन्ने खेता, सो आपणा खेल कराइंदा। निरगुण दरसण आया भेता, पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। धुर संदेसा धुर दरबारी, धुर धुर आप जणाईआ। सारे उठो एका वारी, एका हुक्म जणाईआ। लोकमात आउँदे रहे वारो वारी, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। सेवा करदे रहे नाम जैकारी, जै जै सोहला गाईआ। धुर फ़रमाणा धुर दी दारी, दीन दुनी जगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सारे उठो एका वार, एकँकार जणाइंदा। नेत्र खोल्हो करो प्यार, परम पुरख दया कमाइंदा। सरगुण नाता तुटा विच संसार, निरगुण जोती जोत मिलाइंदा। पंज तत्त काया दीन मज़्ब बाज़ार,

लोकमात हट्ट खुल्हाइंदा। सौदा विकया वारो वार, जीव जंत जगत राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाइंदा। धुर दा लेखा श्री भगवाना, हरि हरि जू आप जणाइंदा। सारे उठो वेखो मारो ध्याना, हरि जू आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी गाउँदे रहे राग तराना, तरा तरा समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणदे रहे मात प्रधाना, सच प्रधानगी आप जणाइंदा। अन्तिम दस्स के आए इक निशाना, सच निशाना आप जणाइंदा। हुक्मे अन्दर करे खेल श्री भगवाना, दूजा राह ना कोए चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुणो मीत, हरि मित्र आप जणाईआ। इक्को ढोला इक्को गीत, इक्को राग अल्हाईआ। इक्को तोला सदा अतीत, दरगाह साची सोभा पाईआ। एका आद जुगादि रिहा जीत, जुग जुग हुक्म वरताईआ। एका वसे हस्त कीट, ऊँच नीच रिहा समाईआ। एका दस्से सच प्रीत, प्रीतीवान बेपरवाहीआ। एका राह चलाए शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मसीत, गुरदुआर आपणा रंग रंगाईआ। एका खेल करे प्रभ ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सच सुनेहड़ा साचे देस, परदेसी आप जणाइंदा। नेत्र लोचण नैण लओ पेख, दीन दयाल आप वखाइंदा। दो जहान श्री भगवान लेखा जाणे नेतन नेत, नित नवित्त वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा गुर इक जणाइंदा। गुर अवतार वेखो गुर, हरि सतिगुर आप जणाईआ। पीर पैगम्बर लेखा जाणो धुर, धुरदरगाही आप समझाईआ। पंज तत्त काया नाल जुड़, आत्म परमात्म खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म साचा गुर, हरि सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल चढ़या साचे घोड़, दो जहानां फेरा पाईआ। वेखणहारा अन्धेर घोर, डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। लेखा जाणे ठग्ग चोर, सच नालश आप कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मार्ग दस्सदा रिहों होर होर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। पंज तत्त काया खेल अपारा, गुर अवतार वंड वंडाईआ। जगत नाम बोल जैकारा, जीव जंत समझाईआ। दीन मज़्ब कर पसारा, शरअ शरीअत वंड वंडाईआ। तिलक बोदी जंञू खेल अपारा, धोती टिक्का नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया गोबर चौंका, काया माटी पोच पुचाईआ। हरि मिलण दा कोई ना रखे शौंका, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। सच सरोवर साचा अमृत कोई ना देवे तौंका, सच सुच ना कोए जणाईआ। कूड़ी रसना कूड़ भौंका, कूक कूक सुणाईआ। अन्तिम गया लोकमात औंता, पत डाली ना कोए नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वंड वेख वखाईआ।

जगत वंड मुन लब, लब इक्को इक जणाइंदा। आपे दोषी आपणा कर करतब, करनी आपणा राह वखाइंदा। आपे नूर अलाही आपे रब्ब, रहमत आपणी आप कमाइंदा। शरअ शरीअत सब, आपणी उम्मत राह चलाइंदा। एका मक्का काअबा हज्ज, हुजरा हज्ज ना कोई वड्याइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी परवरदिगार आपणी करनी खेल करे सब, सद सद आपणा राह चलाइंदा। पीर पैगम्बर वेखो मार ध्यान, पंज तत्त काया चोला माटी अन्दर देणा दब्ब, दरगाह नाल ना कोई ल्याइंदा। जगत क्रिया जगत आए छड्ड, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। हुण क्यों बैठे अड्डो अड्ड, सब नूं इक्को घर जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप अल्लाइंदा। शरअ शरीअत जगत नाता, छुरीआं नाल वंड वंडाईआ। अञ्जील कुरान रसना जिह्वा गाथा, अल्फ़ ये करे पढ़ाईआ। मन मति बुध दस्से दाता, सिख्या सिख इक जणाईआ। हरि का रूप ना किसे पछाता, पेशीनगोई दे दे रहे सुणाईआ। सारे कहिण बैठा रहे इक इकांता, दरगाह साची आसण लाईआ। दरगाह सुणाए आपणीआं गलां बातां, सच संदेसा आप जणाईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वाता, परवरदिगार बेपरवाहीआ। रूह बुत्त दए निज़ाता, पाकी पाक इक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब नूं रिहा जणाईआ। गुर गुर लेखा हरि जू दस्स, दहि दिशा खेल कराइंदा। नानक निरगुण प्या हस्स, दर साचे ख़ुशी मनाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरा मेरा भेव ना कोई आइंदा। मैं दस्सया इक्को हक़, हक़ हकीकत फोल फुलाइंदा। सर्ब जीवां दा मीता पुरख समरथ, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। जिस दे अग्गे असीं डाहीए हथ्थ, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मार्ग रिहा दस्स, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। निरगुण जोत दए प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। आत्म सेजा करे भोग बिलास, नारी कन्त आप हंढाइंदा। सेवा करे बण बण दासी दास, सेवक आपणा राह चलाइंदा। गुर अवतार तेरी शाख़, तेरी शनाख़त करन कोई ना आइंदा। कर किरपा जिस देवे दात, सो नानक गोला दर तेरे सेव कमाइंदा। तूं पिता मात, हउँ बालक रूप वटाइंदा। चरण सरन सरन चरण इक्को नात, नाता बिधाता मंग मंगाइंदा। आत्म परमात्म तेरी ज़ात, दूजा रूप ना कोई वखाइंदा। तेरा जलवा वेख आपणे अन्तर पेख ना कोई रंग ना कोई रेख, सोहँ ढोला इक्को गाइंदा। सति सतिवादी कर हेत, हितकारी तेरे हथ्थ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रहबर इक्को इक अख्वाइंदा। इक्को रहबर इक्को ख़ुदा, निरगुण हरि अख्वाइंदा। इक्को मेला इक जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाइंदा। इक्को होए सर्ब फिदा, बिस्मिल आपणा आप कराइंदा। आपणा मार्ग लाए सिध्धा, पीर पैगम्बर आप उठाइंदा। हरि चरण दुआर सारे रल मिल पाओ गिध्धा, पुरख अबिनाशी ख़ुशीआं नाच नचाइंदा। निरगुण निरवैर साचा

भोजन इक्को रिध्धा, कड़छा आपणा नाम फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी गोबिन्द धार, गोबिन्द हरि गोबिन्द जणाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। चौथे जुग दी अन्तिम कार, करनी करते तेरी इक वड्याईआ। मैं बण के बाला दस्स के आया विच संसार, सृष्ट सबाई मात समझाईआ। पुरख अकाला एकँकार, अक्ल कल वडी वड्याईआ। इक्को इष्ट सच्ची सरकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस सेवा लाए गुर अवतार, पीर पैगम्बर माण दिवाईआ। किरपा करी इक अपार, सिर मोहे हथ्थ टिकाईआ। पिता पूत करे प्यार, आपणा भेद रिहा जणाईआ। कलिजुग अन्तिम सच विहार, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वेखणहार, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। कलि कल्की लै अवतार, निहकलंक वज्जे वधाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, धमकी सब नूं रिहा वखाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट हो परवरदिगार, जलवा नूर करे रुशनाईआ। पीर पैगम्बर इकठ्ठे करे इक दुआर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। रल मिल सारे बोलो इक जैकार, जै जैकार सर्ब सुणाईआ। पिछला नाता तोड़ो विच संसार, सगला संग तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सज्जण साचे आप उठाईआ। सज्जण सच्चे गए उठ, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी गया तुठ, सब नूं रिहा समझाईआ। लोकमात इक दूजे नाल जो रहे रुठ, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। मार्ग दस्सया हलाल झटका खाणा कुठ, कुठ्ठा खाधा कम्म किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ अन्तर वेखो पई लुट्ट, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। घर घर पई दिसे फुट्ट, साचा संग ना कोए जणाईआ। भाई भाईआं रहे कुट्ट, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। साधां सन्तां अन्दर भरया खोट, जगत वासना करे लड़ाईआ। शाह सुल्तानां भरी ना पोट, हवस दिनो दिन वधाईआ। पुरख अकाल सब नूं वखाए इक्को निर्मल जोत, आदि जुगादि डगमगाईआ। शब्द वखाए साचा जुग जुग लाए चोट, गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत्त नगार बणाईआ। वसणहारा थिर घर कोट, सच सिँघासण आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को बहुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुर इक दृढ़ाईआ। आदि जुगादि सतिगुर एक, गुर गुर आप जणाइंदा। इक्को शब्द देवे टेक, नित नित वेस वटाइंदा। पंज तत्त तत्त काया खेत, लोकमात हंढ्ढाइंदा। गुर शब्दी जिस नूं देवे भेत, सो गुर अवतार अख्वाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेडे आपणी खेड, खेलणहारा खेल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखो सज्जण, हरि सतिगुर आप जणाईआ। दीन मज़्हब भाण्डे भज्जन, पुरख अबिनाशी आप भंनाईआ। कोई ना करे किते

मजन, तट किनारे सरोवर देण दुहाईआ। अन्त ना दीसे कोई परदे कज्जन, नौ खण्ड होए हल्काईआ। ताल नगारे घर घर वज्जण, नव नौ दए दुहाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हरि जू शब्दी शब्द संदेसा देवे सद्दन, सदा आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक प्रगटाईआ। सारे वेखो शब्दी धार, दूजा रूप नज़र ना आईआ। इक्को गुर इक अवतार, पीर पैगम्बर इक अख्वाईआ। पंज तत्त दा जगत विहार, सचखण्ड इक्को नूर रुशनाईआ। आदि जुगादि दए वखाल, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस दीपक तुहाडु दित्ता बाल, सो सच दए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर लेखा रिहा जणाईआ। पीर पैगम्बर होए हैरान, हरि जू आपणा खेल कराया। आदि जुगादी इक निशान, आपणा नाम झुलाया। जुग चौकड़ी सेवा लाए विच जहान, निक्के बाले मात घलाया। कर किरपा देवे शब्दी दान, दाता दानी आप अख्वाया। बिन शब्द कोई ना बणे काहन, सीता राम ना कोई प्रनाया। बिन शब्द बणे ना कोई अमाम, कलमा नबी ना कोई सुणाया। बिन शब्द ना प्रगटे सतिनाम, नानक निरगुण रिहा जणाया। बिन शब्द गोबिन्द पिता मिले ना आण, पुरख अकाल ना गोद उठाया। बिन शब्द खेल चले ना दो जहान, विष्न ब्रह्मा शिव ना सेव कमाया। बिन शब्द ना होए कोई ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, कम्म किसे ना आया। बिन शब्द ना मिले किसे माण, लख चुरासी जीव हल्काया। इक्को शब्द गुर अवतार पीर पैगम्बर करो पहचान, सतिगुर सार रूप वटाया। जुग चौकड़ी दए ध्यान, बिन अक्खां अक्ख मिलाया। जिस दा दीन मज़्ब ना कोई ईमान, सो शब्द तुहाढे विच टिकाया। पंज तत्त करदे रहे निशान, निशान जुग जुग झुलाया। सचखण्ड इक्को इक दुकान, वणज वणजारा इक्को नज़री आया। सारे उठ के दयो ब्यान, पिछला लेखा सर्ब मुकाया। इक्को मन्नो सर्ब ईमान, इक्को इष्ट हरि वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा जगाया। गुर अवतार गए जाग, निरगुण निरगुण आप उठाईआ। दर घर साचे लग्गा भाग, वज्जी नाम वधाईआ। रल मिल सारे गाइन राग, वाह वाह तेरी वड वड्याईआ। तूं साहिब कन्त सुहाग , हउँ नारी सेव कमाईआ। तुध बिन काया मन्दिर अन्दर ना धरे कोई चराग, बिन चराग गुरू पीर ना कोई अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब नूं दए समझाईआ। सारे उठ के गावण गीत, इक्को ढोला गाईआ। जिहड़ी गोबिन्द दस्स के आया रीत, सो सब दे मन्न नूं भाईआ। पुरख अकाल साहिब अतीत, ना मरे ना जाईआ। किसे हथ्थ ना आवे मन्दिर मसीत, हर घट बैठा डेरा लाईआ। शब्दी गुर सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ । निरगुण निरगुण सच प्रीत, सरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। गोबिन्द कहे मैं इक्को कहिणा, दूजा कहिण ना जाईआ। मैं पिता पुरख वेख्या आपणयां नैणां, बाकी सुण सुण रहे गाईआ। मैं मन्नणा उस दा कहिणा जिउँ भावे तिवें चलाईआ। अदि जुगादि चरणां विच बहिणा, दूजी ओट ना कोई रखाईआ। नानक दस्स के गया भाणा कहिणा, सीस होर ना कोई झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। पीर पैगम्बर कहिण गोबिन्द वाह वाह, वाह गुरू तेरी वड्याईआ। निरगुण आदि जुगादि मलाह, सरगुण बेड़ा पार कराईआ। तूं सब तों निक्का वढुयां दिती सच सलाह, पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। पंज तत्त काया कर के नार कन्त आए हंढ्ढा, आपणा वक्त सुहाईआ। पीर पैगम्बर करदे रहे जुनाह, कूड़ी क्रिया रस वखाईआ। सो काया अन्त होई सुआह, तत्त नज़र ना आईआ। निरगुण निरगुण पकड़ी बांह, निरगुण दाता वड वड्याईआ। असीं बख़्शाईए सर्ब गुनाह, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। गोबिन्द अग्गों प्या हस्स, हस्स हस्स जणाइंदा। जे मन्नो किसे दा फेर ना चले वस, वस आपणे हथ्थ रखाइंदा। चरणां विच्चों कोई ना जाए नस्स, फड़या जगत कोई ना जाइंदा। सब दे ख़ाली कीते हथ्थ, हथ्थां ज़ोर ना कोई जणाइंदा। जे पुठ्ठी करदा अक्ख, उलटी खल्ल लुहाइंदा। जे चरण जाए ढठ्ठ, भुल्यां गले लगाइंदा। सारे मिल के लओ रख, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। आपणा आपणा दुखड़ा दयो दस्स, साचा राह समझाइंदा। ऊँची कूक बोलो अनझक्क, हरि जू रहमत आप कमाइंदा। परवरदिगार लोकमात असीं मार्ग दस्स के आए थक्क, साडा मुल्ल ना कोई पाइंदा। साडा कलमा कीता फक्क, हक़ कोई नज़र ना आइंदा। सानूं सब ते पै गया शक़, उम्मत विच बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जिउँ भावे तिउँ दे धक्क, अग्गे हो ना कोई छुडाइंदा। पिच्छे असीं बैठे रहे अड्ड अड्ड, हुण गोबिन्द मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। पुरख अबिनाशी दस्से बात, बारमबार जणाईआ। कलिजुग वेखो अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा छाईआ। सच ना दिसे कोई जमात, हकीकत हक़ ना कोई पढ़ाईआ। नज़र ना आए कोई रूह बुत्त पाक, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। सच ना दिसे कोई घाट, घाटा प्या सर्ब लोकाईआ। आत्म परमात्म किसे ना मुक्की वाट, भज्जे फिरदे पांधी राहीआ। अन्दर बाहर कोई ना पुछे वात, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। मन मति होई नार कमज़ात, दुहागण घर घर दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच दृढ़ाईआ। दीन दयाल पुरख समरथे, समरथ तेरी वड्याईआ। शब्दी सुत दुलारा गोबिन्द दस्से, प्रभ अग्गे आप सुणाईआ। पीर पैगम्बर हो इकठ्ठे, आए तेरी सरनाईआ। सारे कहिण असीं पिछले नाम कटे, साडी चले

३०१
१३

ना कोई चतुराईआ। दीन मज़्ब मेट रट्टे, जो नानक आया समझाईआ। साडे चीथड़ पुराणे फटे, लीरो लीर नज़री आईआ। सौदा लभ्भे ना किसे हट्टे, चौदां तबक देण दुहाईआ। चार कुण्ट फिरदे नट्ठे, पन्ध मुकावण वाहो दाहीआ। किसे ना आए कुछ हथ्थे, ख़ालक ख़लक गई भुलाईआ। किरपा कर पहले पाड़ पटे, लेखा कोए रहे ना राईआ। सच मार्ग इक्को दस्से, दहि दिशां तेरी सरनाईआ। हुण नहीं मंगदे होर हिस्से, पहला ख़ाता तेरी झोली पाईआ। गोबिन्द कोलों गुर इक्को सिक्खे, पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। जिस ने साडे लेख लिखे, हुक्मे विच भुआईआ। जिस दी याद अन्दर वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिखे किस्से, किस्मत सब दी आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत रस कीते फिके, फिकी होई लोकाईआ। शब्द सुत गुर गोबिन्द हाल दस्से निक्के, निक्यों वड्डे रिहा कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तिम सारे जिते, हार सब नूं नज़री आईआ। दो जहान लेखा ना कोई नजिठे, सारे बैठे मुख भुआईआ। मस्त प्याले सब ने पीते, नैण कोई ना सके खुल्हाईआ। बौहड़ी साडी पिछली चुक्की रीते, पिछली देवे ना कोए सफ़ाईआ। अग्गे पढ़ीए इक हदीसे, हरि जू इक्को नज़री आईआ। जे हथ्थ पाईए ते ख़ाली खीसे, धन दौलत बैठे सर्ब लुटाईआ। उम्मत नबी रसूल होई पलीते, पाक रूह नज़र कोए ना आईआ। झूठा वुज़ू करदे कर कर चीते, चित विच हरि ना कोए वसाईआ। जोती
३०२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर पीर अवतार तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे ३०२
१३ आ बाल, तेरा बचपन मोहे भाईआ। जिस नीहां हेठां बाले दित्ते स्वाल, गुर पीरां राह वखाईआ। भाणा मन्नया इक अकाल, १३
आपणी रखी ना कोए चतुराईआ। एका अक्खर दित्ता सिखाल, वाहिगुरू हथ्थ वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि बणे दलाल, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। मेरी निमस्कार सति श्री अकाल, अकाल अकाल रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, दूजा राह ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाला, दयानिध जणाइंदा। आदि जुगादी गुर गोपाला, शब्दी नाउँ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, नूर नुराना आप दरसाइंदा। सचखण्ड निवासी साची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक वड्याइंदा। गुरमुखां दस्से राह सुखाला, साची सिख्या इक पढ़ाइंदा। जो पीर पैगम्बरां कढ्ढ दवाला, ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरी धार बंधाइंदा। गोबिन्द कहे साहिब समरथ, समरथ तेरी वड्याईआ। लहिणा देणा चुका हथ्थो हथ्थ, अग्गे उधार ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी लारे दे दे गुर अवतार आपणे चरणां हेठां रख, सिर सके ना कोए उठाईआ। जगत जुगत मार्ग आए दस्स, कलम शाही कर लिखाईआ। अन्तिम सारे कर के गए बस, बसता आपणा आप बन्हाईआ। तूं दूर दुराडा बैठा वेखें हस्स,

आपणी ख़ुशी मनाईआ। असीं गाउँदे रहे तेरा जस, तूं बाल्यां सीस धड़ अड्ड कराईआ। हुण दस्स किथे जाएं नठ्ठ, तेरा मेरा इक्को घर नज़री आईआ। जिन्ना चिर मेरी पत ना लएं रख, मैं छड्डां ना तेरी बांहीआ। सृष्ट सबाई मैं आया दस्स, कलिजुग अन्तिम कलि कल्की आवे सच्चा माहीआ। साचे खेड़े जाए वस, सम्बल देवे माण वड्याईआ। बाकी सारे जाण ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी सरन सरनाईआ। पुरख अबिनाशी बोल जैकारा, एका एक सुणाइंदा। पीर पैगम्बरां दे दे लारा, जुग चौकड़ी वक्त लँघाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मैं बणया रिहा कुआरा, मेरी सेज ना कोए हंढ्ढाइंदा। इक नानक वसया सच दुआरा, उह वी चरणी सीस झुकाइंदा। इक कबीरा दित्ता हुलारा, हुजरा एका इक वखाइंदा। दोए जोड़ करे निमस्कारा, नेत्र अक्ख ना उपर उठाइंदा। जमाल वेख तेई अवतारा, अद्धविचकारे सर्ब लटकाइंदा। पीर पैगम्बर रोवण ज़ारो ज़ारा, जलवा नूर नज़र किसे ना आइंदा। गोबिन्द तूं लग्गा मैनूं इक प्यारा, तेरा कल्ग़ी तोड़ा मोहे भाइंदा। तेरा लेख अगम्म अपारा, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। मैं तेरा बणां वणजारा, तेरा हट्ट चलाइंदा। सम्बल वेखां धाम न्यारा, नज़र किसे ना आइंदा। तेरयां गुरमुखां करां प्यारा, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। गोबिन्द कहे मैं ना मन्नां, अछल अछल्ल तेरी वड्याईआ। जिन्ना चिर चौदां लोक ना भंनें बन्नां, चन्द तारा आपणे सीने उपर रखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सब दा ख़ाली कर दे थाली छन्ना, जल थल सारे देण दुहाईआ। जे तूं बैठा रिहों बण के अन्ना, गोबिन्द तानयां नाल तेरा सीना पार कराईआ। हुण कोई ना घोड़ा ना काठी दा फड़ाया हंना, तरकश तीर ना तन छुहाईआ। मैं शब्दी सुत तेरा चन्ना, ना कोई पिता ना कोई माईआ। दो जहान फिरां भंनां, नित नवित्त सेव कमाईआ। तेरा हुक्म सुणां बिन कन्नां, बिन अक्खां दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण सच्चे बच्चे, तेरे बचपन दयां वड्याईआ। पिछले भाण्डे जो रहि गए कच्चे, हुण बिन आविउँ दयां पकाईआ। फड़ के ढालां इक्को सच्चे, सच्चा एका नाम वखाईआ। लूं लूं अन्दर तेरा प्यार रचे, प्रेम प्यार नाल प्रनाईआ। ओहो मैनूं लग्गे अच्छे, जिहड़े सरसे दित्ते रुढ़ाईआ। भावें लंगोटे भावें तेड़ कछिहरे कच्छे, कुछड़ चुक्कां जिउँ पुत्त पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मैं ना करां हां, हां हां विच ना कदे मिलाईआ। जिन्ना चिर गुरमुखां उपर ना करें छाँ, आपणा नाम छहबर लाईआ। फड़ फड़ हँस बणा काँ, कागों हँस उडाईआ। मेरी फेर फड़ बांह, नेत्र

३०४
१३

नैण दे वखाईआ । मन्नां फेर तेरी रज़ा, राज़क रहीम बेपरवाहीआ। पहलों सब दी मुका कज़ा, लाड़ी मौत ना सके प्रनाईआ। राए धर्म ना दए सजा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। फेर गोबिन्द आवे उह मज़ा, जिहड़ा अमृत रस चखाईआ। दो जहान पी पी रज्जा, तृष्ना भुक्ख ना लागे राईआ। जे लावें अजा पजा, हां विच हां ना कदे मिलाईआ। हुण मेरे पुरख अकाल जा लोकमात फेर भज्जा, तेरी कदर कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट फिरें भुक्खा नंगा, तेरे हत्थ रोटी ना कोए फड़ाईआ। निरगुण हो के टक्करां मार नाल कंधां, निरगुण तेरा संग ना कोए रखाईआ। बिन सरगुण तेरा कोई ना धन्दा, तेरी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वेख वेख खुशी मनाईआ। भगवान कहे गोबिन्द दलेर, भय ना कोए रखाईआ। जिध्धर भज्जां लवे घेर, नौजवान अग्गों घेरा पाईआ। बाहों फड़ कहे मेरा हक़ नबेड़, हकीकत तेरे हत्थ वड्याईआ। पहलां साडे कोलों छेड़ां छेड़, हुण बैठा मुख छुपाईआ। कर किरपा आपणा गेड़ा गेड़, झेड़ा चुक्के दीन मज़्ह़ब लड़ाईआ। इक्को वार सब नूं दे नबेड़, मुड़ मुड़ लेखा लिख्या ना जाईआ। वेख लोकमात गुर अवतार पीर पैगम्बर फिरदे वांग बकरीआं छेड़, सतिगुर सच्चा नज़र कोई ना आईआ। रसना पढ़ पढ़ तैनूं करदे झेड़ां झेड़, लज्यावन्त तैनूं हय्या नज़र कोई ना आईआ। जे मेरे हत्थ देवें सब दीआं जड़ां देवां उखेड़, दूत दुष्ट कोई रहिण ना पाईआ। ख़ाली टिंड वांगू देवां रेड़, रेड़का सब दा आप मुकाईआ। मैं ना जाणा तूं क्यों कीती ऐड्डी देर, डूँग्घे दब्बे बच्चे नीहां हेठ देण दुहाईआ। ऐंवें आपणा नाँ रखा ल्या सिँघ शेर, शेर भबक ना कोए लगाईआ। पुरख अबिनाशी कहे गोबिन्द तेरे उत्ते करां मेहर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गा पिच्छा वेखे राह नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द कहे मैं ना मन्नां दलासा, तेरा सुत डोल कदे ना जाईआ। जिन्हां चिर आपणा सच ना दस्सें खुलासा, भेव अभेद खुल्हाईआ। मैं आपणीं नेत्रीं वेखां तमाशा, दो जहान खुशी रखाईआ। सब दा मूधा करदे कासा, किस्मत घर घर करे लड़ाईआ। जिहड़े तैनूं करदे हासा, हस्ती सब दी दे मिटाईआ। फेर पुच्छां अगली बाता, हरि जू की की खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गोबिन्द रिहा समझाईआ। गोबिन्द सुत साचे लाल, हरि लालन आप जणाइंदा। औह वेख तेरा महाकाल, भ्यानक रूप वटाइंदा। पैरीं टुम्ब उठावे काल, आपणा हुक्म जणाइंदा । धर्म राए रलाए नाल, इक्को संग बणाइंदा। चित्रगुप्त रिहा सिखाल, सब दा लेखा फोल फुलाइंदा। लाड़ी मौत पाए धमाल, दर दर नाच नचाइंदा। तेरा इक्को वार हल्ल करे स्वाल, सब दा लेखा आप मुकाइंदा। गुरमुख सज्जण साचे भाल, दरगाह साची मेल मिलाइंदा। आपे सुण मुरीदां हाल, मुर्शद आपणे रंग

३०४
१३

रंगाइंदा। अन्त चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक रखाइंदा। सृष्ट सबाई होए हाल बेहाल, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। तूं वेखें चल के नाल, तेरा साचा संग रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे ताल, सत्त दीप डौरु डंक सुणाइंदा। किसे कम्म ना आए काया माटी ख़ाल, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। करे खेल बेमिसाल, अग्गे पिच्छे मिसल ना कोए बणाइंदा। तेरी लग्गी निभे नाल, प्रीतीवान आप निभाइंदा। अग्गे मार्ग दए सखाल, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो दयाल, आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। तेरा भथ्था तीर कमान, शस्त्र सोहँ रूप वटाइंदा। लेखा जाण दोए जहान, दूजी कुदरत वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। पूरी आस करांगा। गोबिन्द रूप धरांगा। गुरसिख सज्जण वरांगा। सरगुण अन्दर वड़ांगा। साचे पौड़े चढ़ांगा। महल अटल खड़ांगा। पंच विकारे नाल लड़ांगा। सब दे अग्गे अड़ांगा। फेर आपणा ढोला पढ़ांगा। सृष्ट सबाई जित्तांगा। ना किसे कोलों हरांगा। निर्भय हो भउ विच ना डरांगा। हरिसंगत सच्चा घाड़त घड़ांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुरख अकाल लड़ फड़ांगा। गोबिन्द आया होए सहाया, गले लगाया गोद उठाया, बणे माया देवे छाया, जोत जगाया अन्धेर मिटाया, शब्द सुणाया राग अलाया, मन्दिर सुहाया ताल वजाया, प्रेम वधाया नेंह रखाया, पुरख अकाल मिलाया, आप अन्दर हो के हस्सांगा। अन्दर वड़ के हस्सांगा। अगला मार्ग दस्सांगा। प्रेम अन्दर वसांगा। गुरसिख बिन ढाहयों तुहाढ्ढे अग्गे ढठ्ठांगा। पल्ला छोड़ कदे ना नठ्ठांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल मेल मिला, नेड़े हो के वसांगा। नेड़े आवांगा। दरस दिखावांगा। पुरख अकाल मिलावांगा। जोती नूर रुशनावांगा। बाहों फड़ गले लगावांगा। रुठयां आ मनावांगा। भुख्यां भुक्ख मिटावांगा। दुखियां दुःख वंडावांगा। सुक्कीआं कुक्खीआं हरीआं करावांगा। उज्जल मुखीआं मात वखावांगा। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। फेर सोहँ ढोला गावांगा। घर नानक रंग रंगावांगा। पुरख अकाल मनावांगा। फेर गोबिन्द रूप अख्वावांगा। गोबिन्द आप अख्वाएगा। पिछली रीती सर्ब मिटाएगा। साची सिक्खी इक उपाएगा। तिक्खी धार वखाएगा। निक्की नज़र किसे ना आएगा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाएगा। जो घड़या भन्न वखाएगा। घर घर चिराग़ जगाएगा। फेर आपणी जोत जगाएगा। फड़ उंगली नाल चलाएगा। दीन दयाल नाल मिलाएगा। पिता पूत गोद सुहाएगा। फेर गोबिन्द आप अख्वाएगा। गोबिन्द फेर अख्वावांगा। पुरख अकाल दी गोद सुहावांगा। जुग विछड़े मेल मिलावांगा। भुल्लयां भट्टकयां राहे पावांगा। अमृत जाम प्यावांगा। दुखड़े दर्द मिटावांगा। कागां तों हँस बणावांगा। रातीं सुत्तयां आप उठावांगा। जिस किहा चिढ़ीआं तों बाज़ तुड़ावांगा। दो

जहानां चरणां हेठ दबावांगा। लोआँ पुरीआँ माण गंवावांगा। ब्रह्मा विष्न शिव निवावांगा। गुर पीर अवतार समझावांगा। पुरख अकाल मिलावांगा। फेर सच्चा ढोला गावांगा। रल मिल गुरसिखां विच आपणी खुशी मनावांगा। आपणी खुशी मनाऊँगा। आपा भेंट चढ़ाऊँगा। बच्चे नीहां हेठ रखाऊँगा। गुरमुख उत्ते महल्ल वसाऊँगा। गंगधार रंग चढ़ाऊँगा। छत्ती जुग दा कर्जा लाहूंगा। बहत्तरां माण दवाऊँगा। सत्तरां नाल रलाऊँगा। चुहत्तरां गोद बहाऊँगा। पंज पंज पंज डंक वजाऊँगा। चार चार संग रखाऊँगा। हरिसंगत रंग चढ़ाऊँगा। सत्तरां दी वंड वंडाऊँगा। पिछली कीती झोली पाऊँगा। सच्ची सेवा इक समझाऊँगा। भगत दुआरे सेवा इक समझाऊँगा। भगत दुआर इक बणाऊँगा। धुर दरगाह दी साची चिट, आपणी हथ्थीं नाम फड़ाऊँगा। लोकीं वेंहदे रहि जाण बिट बिट, नज़र किसे ना आऊँगा। लख चुरासी जीव जंत जित, सेहरा गुरमुखां सिर पहनाऊँगा। कर कर साचा हित्त, पिछला लेखा लेख मुकाऊँगा। आपे बण के मात पित, आपणी गोद बहाऊँगा। पुरख अकाल मिलाऊँगा। घर बहि बहि खुशी मनाऊँगा। सचखण्ड दुआर फेर वसाऊँगा। दीपक जोती इक जगाऊँगा। बिन गुरसिखां थाँ ना कोई पाऊँगा। बिन गुरसिखां थान कोई ना पावांगा। कर धूढ़ी अशनान, आपणी खुशी मनावांगा। जिन्हां पिच्छे बच्चे कीते दान, तिन्हां आपणे सीस उठावांगा। दो जहानां पार लै के खुशी खुशी जावांगा। ओथे वखा सच सच्चा दरबार, आपणा रंग चढ़ावांगा। निर्मल जोत जगे निरँकार, तेल बाती ना कोए पावांगा। कर सचा सच प्यार, सच्ची गोद उठावांगा। गुरसिख निक्का बच्चा कर प्यारा लाल, लालन आपणा रूप वखावांगा। गुरमुखां पिछला हल्ल होए स्वाल, पट्टी अग्गे होर पढ़ावांगा। पुरख अकाल मिलावांगा। ते दुःख दर्द मिटावांगा। फेर गोबिन्द रूप अख्वावांगा। सब दी लाज रखांगा। सृष्ट सबाई नथ्थांगा। शेर वांगूं गज्जांगा। जिध्धर घल्लो पिच्छे ना भज्जांगा। इट्ट चुक्कदे नूं पत्थर वांग वज्जांगा। गुरसिखां परदे कज्जांगा। कर दरस एथे ओथे रज्जांगा। प्रेम प्यार अन्दर बज्झांगा। बिन तन्द सतारों ताल हो के वज्जांगा। अन्दर वड़ वड़ नच्चांगा। जोत वांगूं मच्चांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखावांगा। फड़ बाहों राहे पावांगा। पुरख अकाल गल लगावांगा। आप थापीआं दे के गोद सवावांगा। गोद विच देवे थापी, थप्पक थप्पक सवाइंदा। कोट जन्म दे उधरे पापी, जो जन सरनाई आइंदा। मिटे रैण अन्धेरी राती, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाइंदा। नवीं गुरसिखां फेर देवे हयाती, आपणा मेल मिलाइंदा। गृह मन्दिर करे प्रकाश दीआ बाती, जोत निरँजण डगमगाइंदा। भर प्याला जाम प्याए साकी, गोबिन्द एका रस वखाइंदा। बंद कवाड़ा खोल्हे ताकी, द्वैती पर्दा आपे लाहइंदा। बिन पुछयां देवे बाकी, पिछला हिसाब झोली पाइंदा। गुरसिख अग्गे वेखण मार झाती, हरि जू की की खेल रचाइंदा। निरगुण सरगुण

३०६
१३

बणे साथी, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त गुरमुखां झोली पाइंदा। ना कोई नरदी ना कोई नरद, नर नरायण खेल रचाईआ। किसे नूं वखाई किसे दी फ़रद, आपणा हुक्म मनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लोकमात वंडाए दरद, दर्दीआं दुःख गंवाईआ। आपणा पूरा करे फ़र्ज़, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। निक्की जिही तार छोटा जिहा ढोला पंज तत्त सुणाए तर्ज़, नाम नगारा इक जणाईआ। गुर अवतार नाउँ रख कूड़ी क्रिया कोलों देण वर्ज, सच संदेसा इक सुणाईआ। दोए जोड़ सारे करदे रहिण अर्ज़, बेपरवाह बेपरवाह बेपरवाह तेरी वड्याईआ। पारब्रह्म नूं आदि तों पै गई मर्ज़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाल लै के आए आपणा नाम ख़र्च, सिर आपणे पंड उठाईआ। जिस तरा जीव जंत जाण परच, ओसे तरां लिख लिख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रद इक्को इक वखाईआ। कलिजुग रख्या आपणा ढंग, बे ढंगा खेल कराईआ। प्रभ कोलों वस्त लई मंग, हो निमाणा झोली डाहीआ। अन्त गोबिन्द बणे मेरा संग, मेरा अंग वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग कहे प्रभ मस्तक धूढ़ी दे ख़ाकी, दर तेरे ख़ाक रमाईआ। मेरे विच भर इक चालाकी, गुर अवतारां दयां लड़ाईआ। उह सारे मंगण मैनूं आ के मिले पाक रसूल पाकी, तेरा लहिणा दए मुकाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल तेरी लेखे लाए हयाती, तेरा हया आपणे विच छुपाईआ। कलिजुग कहे गोबिन्द तूं ज़रूर बणीं मेरा साथी, तुध बिन पुरख अकाल मेरे हथ्थ ना आईआ। मैं कूड़ कुड़यारा सद्द तेरी तक्कां वाटी, नेत्र नैण खुल्हाया। गोबिन्द कहे मैं ज़रूर अन्तिम मारां झाती, तेरा पर्दा आप उठाया। कलिजुग कहे मैं चारों कुण्ट करां अन्धेरी राती, चन्द नज़र कोए ना आया। गोबिन्द कहे मैं तेरा बणां ज़रूर साथी, तेरा संग निभाया। कलिजुग कहे मैं रहिण ना देवां कोई आकी, साधां सन्तां मूँह दे भार डिगाया। गोबिन्द कहे मैं पुरख अकाल कोलों चुकावां बाकी, दोए जोड़ वास्ता पाया। कलिजुग रुची खुशी खुशी हो के नाची, नौ खण्ड नौ दर कूड़ी क्रिया नाच नचाया। धन्न वेला सोहे वक्त जिस वेले मिले पुरख अबिनाशी, मेरा दुखड़ा दर्द मिटाया। गोबिन्द कहे मैं तेरी कटावां अन्त फाँसी, फाँसी सब दे गल लटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल गया रल, इक्को ओट अकाल रखाया। कलिजुग कहे मैं वडा बलवान, प्रभ सिर मेरे हथ्थ टिकाया। अन्तिम मैनूं लैण आवे भगवान, मेहर नज़र इक उठाया। मैं चार कुण्ट फिरां बण के काहन, आपणा हुक्म मनाया। जूठ झूठ करां प्रधान, कूड़ी क्रिया डंक वजाया। घर घर फेरां शैतान, शरअ शरअ नाल टकराया। साबत रहिण ना देवां किसे दा ईमान, धीरज

३०७
१३

धीर ना कोए रखाया। इक दूजे दीआं धीआं भैणां सर्ब तकाण, नेत्र नैण ना कोए शरमाया। काम क्रोध दी चले दुकान, लोभ मोह हँकार होए हल्काया। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैनूं कहिण तूं वड्डा प्रधान, जिस साडा लेखा लोकाई कोलों भुलाया। पढ़दे सुणदे गाउँदे होए बेईमान, गुर का भय ना किसे रखाया। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले सारे जाण, जानणहारा नज़र किसे ना आया। कलिजुग कहे मैं मंगया इक्को दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। मैं किसे दी ना मन्नां आण, आपणा खेल रचाया। जिस वेले मेरा साहिब मैनूं देवे फ़रमाण, मैं सब कुछ दयां तजाया। चल के चरणी डिगा आण, आपणा सीस झुकाया। अग्गों गोबिन्द मिले मेहरवान, मेरा दुखड़ा दर्द वंडाया। फड़ वखाए इक निशान, गुरमुख साचे मात प्रगटाया। भगत भगवन्त खेल महान, निरगुण सरगुण रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग लहिणा देणा सुणना कहिणा मन्नणा आपणा हुक्म रखाया।

❇ २१ मग्घर २०१६ बिक्रमी अतर सिँघ चतर सिँघ लखा सिँघ दे गृह ओगरा ज़िला गुरदासपुर ❇

आदि जुगादि सच प्रधान, सो पुरख निरँजण इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि सति विधान, सति सतिवादी आप बणाइंदा। आदि जुगादि राज राजान, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। आदि जुगादि धुर फ़रमाण, सच संदेसा आप अल्हाइंदा। आदि जुगादि खेल महान, निरगुण निराकार आप खलाइंदा। आदि जुगादि सच मकान, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। आदि जुगादि खोल्ह दुकान, थिर घर आपणा हट्ट चलाइंदा। आदि जुगादि देवे माण, सुत दुलारे शब्द उठाइंदा। आदि जुगादि हुक्मरान, धुरदरगाही इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि सच ईमान, चरण कँवल हरि जणाइंदा। आदि जुगादि सच निशान, धर्म निशाना इक वखाइंदा। आदि जुगादि जोती नूर महान, नूर नूराना डगमगाइंदा। आदि जुगादि विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। आदि जुगादि त्रै पंज खेल महान, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। आदि जुगादि सतिगुर सच्चा बलवान, सति पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि गुर गुर रूप प्रगटाए दो जहान, शब्दी नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आदि जुगादि शब्द गुर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि शब्द धुर, सच संदेसा दए सुणाईआ। आदि जुगादि चढ़े घोड़, दो जहानां वेख वखाईआ। आदि जुगादि निरगुण सरगुण लए जोड़, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादि शब्द गुर दाता, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। आदि जुगादि शब्द गुर

३०८
१३

पिता माता, गोदी गोद आप सुहाइंदा। आदि जुगादि बन्ने नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आदि जुगादि वसणहारा इक इकांता, निरवैर आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादि लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार झाता, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। आदि जुगादि जन भगतां पुच्छे वाता, नित नवित्त वेस वटाइंदा। आदि जुगादि जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर शब्द आप समझाइंदा। शब्द गुरू गुरु गुरदेव, आदि जुगादि समाया। अलख निरँजण अलख अभेव, बेपरवाह आपणा राह चलाया। सदा सद सद करे सेव, बण सेवक सेव कमाया। एका देवे नाम सच्चा मेव, रस आपणा आप चखाया। गोबिन्द मेला कुण्ट हेम, उच्चे टिल्ले मेल मिलाया। शब्द गुर गुर शब्द कीता नेम, मता इक्को इक पकाया। तेरा मेरा लहिण देण, देणा लहिणा एका वणज कराया। निरगुण सरगुण बणया सज्जण सैण, सरगुण निरगुण एका घर बहाया। इक्को नेत्र इक्को लोचण नैण, एका अक्ख प्रतख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक वडयाया। आदि जुगादि शब्द गुर दाता, दाता दानी दया कमाइंदा। आदि जुगादि शब्द गुर गाथा, गुर मंत्र नाम दृढ़ाइंदा। आदि जुगादि चलाए राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आदि जुगादि खेले खेल तरलोकी नाथा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां नाच नचाइंदा। आदि जुगादि पिता माता, लख चुरासी गोद बहाइंदा। आदि जुगादि

३०६
१३
मेटे अन्धेरी राता, सच सुच चन्द इक चढ़ाइंदा। आदि जुगादि बन्ने नाता, सुरत शब्द मेल मिलाइंदा। आदि जुगादि दरस दिखाए बहु बिध भांता, गुर अवतार पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। आदि जुगादि सगला साथा, निरगुण सरगुण संग निभाइंदा। आदि जुगादि तीर्थ ताटा, सरोवर मजन इक कराइंदा। आदि जुगादि गुर गोबिन्द दित्ता नाम बाटा, सच प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। तेरी मेरी इक्को जाता, ज़ेर ज़बर ना वंड वंडाइंदा। तेरा मेरा इक्को साका, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। तेरा मेरा इक्को ख़ाका, निरगुण साची वंड वंडाइंदा। तेरा मेरा इक्को घाटा, घाटा नज़र किसे ना आइंदा। तेरा मेरा इक्को राखा, पुरख अकाल दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर खेल खलाइंदा। शब्द गुर गुरु गुर रूप, इक्को इक वड्याईआ। आदि जुगादि सति सरूप, सति सति समाईआ। जुगा जुगन्तर वसे चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। नित नवित्त जाए तुट्ठ, हरिजन साचे लए मिलाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द गुर भण्डार अतुट, बेअन्त आप वरताईआ। पुरख अकाल बणाया पुत्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। सच दुआरे सोही रुत्त, हेम आपणा कुण्ट वखाईआ। इक दूजे नूं रहे पुच्छ, शब्द गोबिन्द गोबिन्द शब्द इकट्ठे करन सलाहीआ। इक दूजे दे अन्दर जाईए लुक, लुकयां नज़र किसे ना आईआ। शब्द गुर वेखे गोबिन्द हुण तेरी रुत्त, तेरे पंज तत्त मिले वड्याईआ। अन्तिम

३०६
१३

नाता तुटे जगत बुत्त, बुत्त परसती रहिण ना पाईआ । मैं फेर पवां उठ, तेरी धार चलाईआ। कोई माँ मैनूं ना कहे पुत्त, गुजरी गोद ना कोए सुहाईआ। कोई पिता पंज तत्त गोदी लए ना चुक्क, लोरीआं दे ना कोए खडाईआ। कोई बाहों फड़ के लए ना कुट्ट, रुस्सयां घर ना कोए मनाईआ। ना किसे सीस निवावां झुक, ख़ाकी तन ना कोए हंढ्ढाईआ। इक सुहावां साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर इक वखाईआ। गोबिन्द कहे शब्द रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। शब्द कहे गोबिन्द तेरी सेज पलँघ, आसण इक्को मोहे भाइंदा। अठ्ठे पहर पुरख अकाल वजाए मृदंग, तार सितार आप हिलाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को जिही मंग, पुरख अकाल इक्को वस्त झोली पाइंदा। तेरा नीला घोड़ा तुध बिन सोहे ना नंगी कंड, पाखर ज़ीन ना कोए सुहाइंदा। तेरा अस्व जगत जहान सृष्ट सबाई करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक खड़काइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाइंदा। गोबिन्द कहे शब्दी मीता, शब्द कहे गोबिन्द रीता, इक्को इक वखाईआ। तेरा मेरा साहिब अनडीठा, देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं चलावां साची रीता, रीतीवान दया कमाईआ। गुरसिखां सीनां करां ठांडा सीता, मात गर्भ ना फेर तपाईआ। मेरा कोई ना फोले अंगीठा, मेरा रूप शब्द शब्द विच समाईआ। साची दस्सां इक प्रीता, पुरख अकाल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर गोबिन्द शब्द गुर गुर इक्को रंग वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं गुर शब्दी पूरा, शब्द गुर मेरा नाउँ अख्वाईआ। सदा सद हाज़र हज़ूरा, हज़ूर आपणा रंग रंगाईआ । साचा बचन करां पूरा, पूरन पूरना आपे पाईआ। वसणहारा नेड़े दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिन्हां मेरा हुक्म मन्नया कूड़ा, तिन्हां मुख ना कदे वखाईआ। हथ्थीं बाहीं लोहे कड़े पा पा बैठे चूड़ा, कूड़ कुड़यार श्रृंगार हंढ्ढाईआ। जिस जन मेरी मस्तक लाई धूढ़ा, मैं आपणी धूणी विच्चों ख़ाक गुरमुखां टिक्का लाईआ। दाता योद्धा सूरबीर सूरा, गुर शब्द वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक वखाईआ। शब्द गुरू ना कोई क्रिया, गोबिन्द बन्धन विच ना आइंदा। दो जहान निरगुण सरगुण हो के फिरया, आउँदा जांदा आपणा मुख छुपाइंदा। आपणे अन्दर आपणे मन्दिर आपणे पौड़े आपे चढ़या, चढ़ चढ़ खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया सच जणाइंदा। चन्नण देही नूं, चन्नण लगाया सी। भाणा मन्नण नूं, भगवान मनाया सी। बेड़ा बन्न्हण नूं, बेड़ा रुढ़ाया सी। नाम वंडण नूं, सिर ताज टिकाया सी। दुष्ट खण्डण नूं, हरि हथ्थ खण्डा फड़ाया सी। नाम रंगण नूं, रंग इक्को इक चढ़ाया सी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा लाया सी। चन्दन

३११ १३

चन्दन लग्गी अग्ग, चन्द निरगुण निरगुण चमकाया। फिरी दरोही विच जग, गोबिन्द ख़ुशी मनाया। मेरे सिर ते रहि गई मेरी पग्ग, लख लख शुकर जणाया। पुरख अकाल तेरा कर्ज़ा लथ्था अज्ज, पिछला लेखा रहे ना राया। विच चिख़ा वड़या भज्ज, सच सिँघासण आसण लाया। उच्ची कूक दित्ता दस्स, गुरसिख गोबिन्द आप जणाया। तुहाड्डा मेरा कोई ना चले वस, श्री भगवान हुक्म सुणाया। आओ रल मिल लईए हस्स, हसदयां हसदयां ढोला गाया। पुरख अकाल दा गाओ जस, जै जैकार कराया। मैं दित्ता अमृत रस, रस तुहाड्डी झोली पाया। अन्तिम वेखो ख़ाली हथ्थ, गोबिन्द नाल कुछ ना लै जाया। बच्चे नीहां हेठां दित्ते दब्ब, महल अटल इक बणाया। जो कुछ सो तुहाड्डी झोली पाया सब, आपणा हक़ ना कोए रखाया। जिस वेले सद्दो आवां भज्ज, आउँदा जांदा डेर ना लाया। गोबिन्द भाण्डा जाए ना भज्ज, गुर गोबिन्द गोबिन्द शब्द रूप समाया। तुसां मेरा पर्दा लैणा कज्ज, मेरी हड्डी हड्डी कोए ना फोल फुलाया। की स्वाह विच्चों गोबिन्द नूं कोई लए लभ्भ, तन ख़ेह पुरख अबिनाशी आपणे नेंह लगाया। मन्नणा हुक्म दरस करना रज्ज रज्ज, नित नवित्त फेरा पाया। जे इकरार कर गए भज्ज, मैं बैठा मुख भुआया। फेर निरगुण हो के आवां सम्बल नगर बहिवां सज, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। ना कोई जाणे लम्मा उच्चा कद्द, मोटा वड्डा छोटा ना वेख वखाया। मैं सब तों हो जां अड्ड, अडरा राह चलाया। पुरख अकाल आपणे दुआरे लवां सद्द, प्रेम प्रेम नाल वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द शब्दी रूप धराया। अंगीठा फोलण कोई ना फोले, सतिगुर गुरमुखां आप जणाईआ। गोबिन्द सदा वसे आपणे चोले, चोला गोबिन्द आप हंढाईआ। शब्दी करे परदे ओहले, ना मरे ना जाईआ। सच दुआरा इक्को खोल्हे, चार कुण्ट वेख वखाईआ। गुरसिख मेरा कदे ना डोले, चले हुक्म रजाईआ। मन्न कहिणा जो बणे गोले, गुलशन तिन्हां दयां खिलाईआ। बाकी कीमत कोई ना पए जिउँ भो छोले, भूसा गध्यां अग्गे पाईआ। सारयां उच्ची कूक कूक कहिणा गोबिन्द अक्खां अग्गों होया ओहले, साडे अन्दर वड़ के गया समाईआ। मेरा अंगीठा कोई ना फोले, फोल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर गुर शब्द शब्दी वंड वंडाईआ। वजूद विच वसल, वसल विच वड्याईआ। वसल विच्चों असल, असलीअत दए समझाईआ। शब्दी रुत्त संसारी फसल, लख चुरासी बीजे वढ्ढे अन्दर वड़ वड़ हरी सिंच कराईआ। जिस वेले करे आपणा फ़ज़ल, फ़ज़ूल कहाणी ना कोए सुणाईआ। गुरसिख चढ़ाए आपणी मज़ल, मंज़ल आपणी आप जणाईआ। जिथ्थे कोई ना आवे अज़ल, अलामत कोए रहिण ना पाईआ। ओथे कोई ना दिसे फुल्ल कँवल, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए चतुराईआ। ओथे इक्को नूर अव्वल, ज़हूर ज़हूर रुशनाईआ।

३१२
१३

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखाए हक़ वज़ूद, आदि अन्त ना होए नेसतो नाबूद, किसे ना आए विच हदूद, साची रखे मंज़ले मकसूद, गुरसिखां असल नाल गोबिन्द देवे सूद, लेखा सब मुकाईआ। जिस वेल मुरीद मुर्शद दा वेखे सच अरूज, उल्फ़त कह ना सके राईआ। मारे धाह मिल्या महिबूब, मेरी हस्ती रही ना राईआ। एहो वजूद एहो सबूत ना कोई रूह ना कलबूत, पारब्रह्म इक्को नज़री आईआ। वज़ूद वसल दा रंग, बिस्मिल धार चलाइंदा। शब्दी धार डोर पतंग, सुरती बन्धन पाइंदा। काया माटी पंज तत्त देह जाए हंढु, जगत हुंडी सब दी आप लुटाइंदा। अग्गे खेल सूरा सरबँग, आपणे हथ्थ रखाइंदा। राह विच सुणाउदा जाए ढोल मृदंग, अनहद राग अलाइंदा। अग्गे जा के एह वी हो जाए नंग, आपणा माण ना कोए वखाइंदा। फेर सतिगुर गुर गुरसिख लगाए अंग, आपणी गोदी उठाइंदा। आपणा दुआरा आपे लँघ, मन्दिर सच वखाइंदा। सच सेज सुहञ्जणा पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। बिन वजूदों बिन वसलों दए अनन्द, अनन्द इक्को इक वखाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। ना कोई ढोला ना कोई गीत ना कोई छन्द, रागी राग ना कोए सुणाइंदा। सार शब्द धार जोत सदा अखण्ड, जन भगतां प्रभ पाई वंड, आपणे चरण कोल बहाइंदा। बिन वेख्यां डिठयां सारे पौण डण्ड, साची ख़बर ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वज़ूद वज़ाहत नाल जणाइंदा। इक मिक हो के रहि जाए इक, इक इक वड्याईआ। इक इक लेखा देवे लिख, लिख लिख बणत बणाईआ। इक इक पाए भिक्ख, इक झोली लए भराईआ। इक इक चार कुण्ट दहि दिशा थल्ले उपर पए दिस, बेपरवाह बेपरवाहीआ। इक इक वंडे हिस्स, हिस्सा आपणा आप कढ्ढाईआ। इक इक करे हित्त, जन जननी गोद सुहाईआ। इक इक सब नूं लए आप जित्त, हार आपणे हथ्थ रखाईआ। इक इक आपणा करे हित्त, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। इक इक जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक आकार इक पसार, इक विहार इक आधार, इक जैकार इक फुलवाड़, इक बूटा शब्दी झूटा लख चुरासी मूधा करे ठूठा, फिर आपे लए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक इक इक्को इक समाईआ।

❇ २१ मग्घर २०१६ बिक्रमी चन्नण कौर दे गृह ओगरा ज़िला गुरदासपुर ❇

शब्द ब्रह्म शब्द ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड शब्द वड्याईआ। शब्द धुन शब्द राग, नाद शब्द शनवाईआ। शब्द सुन शब्द समाध, शब्द शब्दी जोत रुशनाईआ। शब्द बिस्मिल शब्द विस्माद, शब्द बेपरवाहीआ। शब्द सन्त शब्द साध, शब्द गुरमुख रूप

वटाईआ। शब्द जैकारा शब्द आवाज़, शब्द ढोला गाईआ। शब्द सज्जण शब्द साज़, शब्द तलवाड़ वजाईआ। शब्द रंग शब्द नाच, शब्द रास रचाईआ। शब्द खेल शब्द तमाश, शब्द स्वांगी वेस वटाईआ। शब्द आस शब्द निरास, बेवफ़ा शब्द अख्वाईआ। शब्द बेनन्ती शब्द अरदास, शब्द सीस झुकाईआ। शब्द दाता शब्द बंद ख़लास, शब्द बंदीख़ाना रूप वटाईआ। शब्द उतपत शब्द घात, घाउ शब्द इक लगाईआ। शब्द दिवस शब्द रात, शब्द सूरज चन्द रुशनाईआ। शब्द गुरु गुरदेव पाठ, शब्द पूजा नाउँ वड्याईआ। शब्द तीर्थ शब्द ताट, शब्द जल थल महीअल रिहा समाईआ। शब्द वणजारा शब्द हाट, शब्द इक्को वस्त वखाईआ। शब्द पत्तण शब्द घाट, आर पार शब्द समाईआ। शब्द नेड़े शब्द दूर वाट, शब्द नेत नेत अख्वाईआ। शब्द काग़ज़ शब्द दवात, शब्द शाही लेख जणाईआ। बिन शब्द किसे दी बणे ना कोई ज़ात, जलवा नूर ना कोए वखाईआ। शब्द पिता शब्द मात, शब्द पूत गोद सुहाईआ। शब्द चरण शब्द नात, शब्द नाता जोड़ जुड़ाईआ। शब्द ओहले शब्द साख्यात, पारजात शब्द बणाईआ। शब्द क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जाट, शब्द नीचों नीच समाईआ। शब्द खटोला शब्द खाट, शब्द वस्त्र ओढण दए वड्याईआ। शब्द अमृत शब्द रस चाट, शब्द रस फिक्का रूप धराईआ। बिन शब्द सारे पत्तण डूँग्घे ख़ात, करता कीमत कोए ना पाईआ। शब्द महल्ल शब्द अटल, शब्द राग रंग रंगाइंदा। शब्द नकल शब्द असल, असलीअत शब्द आप जणाइंदा। शब्द वजूद शब्द वसल, गुर गोबिन्द आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द इक्को घर वखाइंदा। शब्द गृह इक्को स्वामी, हरि मन्दिर आप बणाइंदा। जिस घर वसे अन्तरजामी, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। शब्द गुरू शब्द बाणी, शब्द संदेसा आप जणाइंदा। शब्द महिमा अकथ कहाणी, कथनी कथ ना कोए जणाइंदा। शब्द राजा शब्द राणी, शब्द रईअत रूप वटाइंदा। शब्द अग्नी अग्ग पवण पाणी, जल बिम्ब रूप समाइंदा। शब्द लेखा चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। शब्द नाद चार बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैख़री शब्द अलाइंदा। शब्द सुरत सुघड़ सुचज्जी सवाणी, शब्द मन मती फेर भुआइंदा। शब्द बुध मति करे मतिवाली, शब्द बबेकी रूप धराइंदा। शब्द किरसाणा शब्द हाली, शब्द साचा बीज बजाइंदा। शब्द देवे सच्चा पाणी, प्रेम कूआं इक चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द इक्को घर वखाइंदा। शब्द घर इक्को दर, दर दरवाजा आप जणाईआ। शब्द वर इक्को नर, नर नरायण करे कुड़माईआ। शब्द मेल इक्को हरि, हरि बिन अवर ना कोए ध्याईआ। शब्द भय शब्द डर, भउ शब्द रिहा वखाईआ। शब्द जम्मे शब्द मरे, शब्द मरन जीवण विच ना आईआ। शब्द विष्न ब्रह्मा शिव बणाए धड़े, हुक्मी हुक्म आप भुआईआ। शब्द भंने शब्द घड़े, घड़न भंनणहार शब्द अख्वाईआ। शब्द

सिफ्ती नाउँ रखाए बड़े, कोटन कोटि रसना गाईआ। आदि अन्त शब्द रूप प्रभ इक्को धरे, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। बिन भगतां किसे ना वसे घरे, घर सुहञ्जणी सेज वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सृष्ट सबाई पढ़े, उच्ची ककू कूक सुणाईआ। सतिगुर शब्द जिस जन कर किरपा आप फड़े, आपणा बन्धन पाईआ। सो जन कहे पुरख अकाल हरे, ओअँ सोहँ एकँकार विच समाईआ। शब्द गुर परे तों परे, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। अन्दर बाहर आपे वड़े, आपणा खेल रचाईआ। लख चुरासी भंने घड़े, हुक्मे हुक्म मनाईआ। कलिजुग अन्तिम गोबिन्द सूरा शब्दी योद्धा लड़े, बल आपणा आप प्रगटाईआ। लख चुरासी वेखे खोटे खरे, गृह गृह फोल फुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी नौजवान, शब्दी गुर शब्दी घोड़े चढ़े, दो जहानां फेरा पाईआ।

❇ २१ मग्घर २०१६ बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे गृह ओगरा ज़िला गुरदासपुर ❇

सतिगुर शब्द सच प्यार, हरि नाम वड्याईआ। जन्म मरन दुःख लाहे भार, आवण जाण मुकाईआ। दुःख दलिद्र दए नवार, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। रसना जिह्वा इक जैकार, इक्को गुण वखाईआ। किरपा कर आप निरँकार, हरिजन मेल मिलाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाईआ।

❇ २१ मग्घर २०१६ रावी कंढे ज़िला गुरदासपुर ❇

अमृत रोटी मिठ्ठा गुड़, गुर किरपा आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी निकल के आया विच्चों कुड़, आपणा पर्दा लाहीआ। गुरमुखां नाल गया जुड़, रस रस नाल मिलाईआ। अन्तिम अन्त गया बौहड़, बेपरवाह दया कमाईआ। हरि गोबिन्द लग्गी औड़, हरि सतिगुर आप बुझाईआ। ना कोई दिसे सीस चौर, छत्र कोए नज़र ना आईआ। इक्को धरती मंगे धूर, नेत्र नैण उठाईआ। साहिब सतिगुर आसा पूर, इक्को आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। हरिगोबिन्द खाधा रुक्खा मिसा, कन्ढे लख लख शुकर मनाया। पुरख अबिनाशी कढे तेरा हिस्सा, निरगुण अन्तिम फेरा पाया। मैं लै के आया चिठ्ठा, धुर संदेस सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रचाया। धरनी कहे गोबिन्द हरि, हरि गोबिन्द तेरी वड्याईआ। कर किरपा दे साचा वर, कोझी कमली दए दुहाईआ। कन्ढी कन्ढे आ के खड़, कन्ढा पार कराईआ। रंडी सुहागण आ के कर, सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा जणाईआ। गोबिन्द कहे सुण धरनी धवल, धुर दरबारी दया कमाइंदा। नूर इलाही एका अव्वल, बेपरवाह फेरा पाइंदा। जिस नूं सीस झुकाए काहना कृष्ना सवल, रामा राम विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछला लेखा आप जणाइंदा। पिछला लेखा गोबिन्द रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। धरनी कहे मेरी पूरी करनी मंग, इक्को आस तकाईआ। हरि जू कहिणा आवे निसंग, घर मेरे फेरा पाईआ। मेरी चोली चाढ़े रंग, रंग मजीठ इक वखाईआ। नाल ल्याए आपणा संग, संगी साथी मेल मिलाईआ। मैं भुक्खी नंगी टुकड़ा लवां मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिगोबिन्द रिहा सुणाईआ। हरिगोबिन्द कर अरदास, पुरख अकाल ध्यान लगाइंदा। सच प्रभ सच तेरी रास, अन्त कोई ना आइंदा। धरनी लग्गी इक प्यास, जल प्यास ना कोए बुझाइंदा। थल ना होए कोए निरास, जो जन तेरा ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच बेनन्ती आप जणाइंदा। श्री भगवान सच संदेसा, एका एक जणाईआ। हरिगोबिन्द तेरा लेखा, बिन लिख्यां दए तराईआ। पुरख अकाल धारे भेसा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भाग लगाए साचे देसा, चरण कँवल कँवल चरण आप छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सति संदेसा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। अन्तिम वेखां मार ध्यान, कलिजुग वक्त सुहाइंदा। लेखा चुकावां दर घर आण, कन्ढी आपणा डेरा लाइंदा। हरिसंगत मेला मिले महान, निक्के वड्डे छोटे बाले नाल मिलाइंदा। कर किरपा देवे दान, साची वस्त इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप कमाइंदा। हरिगोबिन्द धरनी दस्स के जा, हरि जू हुक्म सुणाया। कलिजुग अन्तिम आवे बेपरवाह, निरगुण जोत नूर वेस वटाया। जन भगतां बणे आप मलाह, बेड़ा तेरे कंध रखाया। तेरी भुक्खी दी भुक्ख दए गंवा, साचा लंगर इक लगाया। रुक्खे सुक्के टुक्कर खा, गुरमुख लख लख शुकर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा रिहा सुणाया। धरनी दोए जोड़ करे पुकार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द दस्स सच विहार, हरि कवण वेला फेरा पाईआ। सतिगुर कहे बोल जैकार, इक्को इक सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम आवे आपणी धार, जोती जामा वेस वटाईआ। शब्दी गुर खेल अपार, गुर करता आप कराईआ। हरिसंगत लै के आए दुआर, थित वार दए समझाईआ। इक्की मग्घर वजे ढाई, जोती शब्द दा लेख प्यार, बचन बचनां नाल प्रनाईआ। जिस जन किरपा देवे तार, मेहर नज़र उठाईआ। धरनी गुरमुखां करे प्यार, जल

नाता रही तुड़ाईआ। गुर गोबिन्द हरि गोबिन्द रुक्खा गुड़, रस अमृत रूप वखाईआ। धन्न भाग हरि हरिसंगत गई बौहड़, मेरी पिछली आस पुचाईआ। अग्गे सदा रहे प्रभ साचे दी लोड़, भुल्ल कदे ना जाईआ। गुरसिख लंगर खाणा निक्का निक्का भोर, सृष्ट सबाई टुक्कड़े दए कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल कर के ग़ौर, लहिणा देणा सर्ब चुकाईआ।

❊ २१ मग्घर २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह सिंमल सकोर ज़िला गुरदासपुर ❊

सो पुरख निरँजण इक इकेला, आदि जुगादि खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी शेर बघेला, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। दो जहान वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बेला, पुरीआँ लोआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। जुगा जुगन्तर वसणहारा धाम नवेला, निरगुण नूर डगमगाइंदा। जुग चौकड़ी जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए रखाइंदा। भगत भगवान कराए मेला, मिल मिल आपणा रंग चढ़ाइंदा। एका घर सोहे गुरु गुर चेला, गोबिन्द आपणा रंग रंगाइंदा। सति पुरख निरँजण सज्जण सुहेला, सदा सद सगला संग निभाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, लख चुरासी आवण जावण फंद कटाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, भेव अभेद ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुरदरगाही रंग रंगाइंदा। सचखण्ड निवासी एकँकार, अक्ल कल वड्याईआ। जोती जाता हो उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। थिर घर साचे हो तैयार, साची रीता आप चलाईआ। ठांडा सीता कर प्यार, विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखाईआ। अनडीठा खेल करे करतार, कुदरत कादर रंग रंगाईआ। भगतन मीता कर प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग हरि दा खेल अवल्ला, एकँकारा आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी गुर फड़ाए पल्ला, सरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशी डेरा लाइंदा। जीव जंत जुग जुग भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी आपणा राह तकाइंदा। वसणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी डला, समुंद सागर खोज खुजाइंदा। नूर इलाही बेपरवाही इक इकल्ला, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर बिस्मिला, बिस्मिल आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। लख चुरासी खोजे आप, घट घट रिहा समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दस्सदा आया जाप, गुर अवतार पीर पैगम्बर करी पढ़ाईआ। भगतां देंदा रिहा साथ, भगवन आपणा संग निभाईआ। आत्म

सेजा भोग बिलास, सेज सुहञ्जणी इक हंढाईआ। दाता दानी सर्ब गुणतास, त्रैभवन धनी बेपरवाहीआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल लोअ पुरी लोक परलोक चौदां तबकां वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण आपे हो, हरि जू आपणा राह चलाईआ। आत्म परमात्म जाए छोह, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। धुरदरगाही देवे ढोआ ढो, नाम ख़ज़ाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। उच्चे टिल्ले वेखे जंगल, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द जणाए इक्को मंगल, मंगलाचार आप कराइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त जीव जंत साध सन्त नाम निधाना मारे संगल, आत्म परमात्म बन्नृ वखाइंदा। जुग चौकड़ी लोकमात मार झात जन भगत दुआरे आए मंगण, धू प्रहिलाद आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूह उजाड़ वेख वखाइंदा। कलिजुग वेखे जंगल जूह, चार कुण्ट फेरा पाईआ। लेखा जाणे अल्ला हू, हू हू आपणा रंग रंगाईआ। भेव खुलृाए तू ही तू, तेरी मेरी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन जुग जुग तारदा, सो पुरख निरँजण मीत। हरि पुरख निरँजण पैज स्वारदा, एकँकार खेल अनडीठ। आदि निरँजण खेल करे जोत उज्यार दा, अबिनाशी करता लख चुरासी लेखा जाणे जिउँ जल मीन। श्री भगवान सच निशाना इक उठाल दा, आप झुलाए चौदां लोक त्रैभवन तीन। पारब्रह्म रंग वेखे नूर जोत महान दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि बे दीन। बे दीन हरि एकँकार, अक्ल कला वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण पुराणी कर तैयार, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान खोलृ किवाड़, मक्का काअबा वेख वखाईआ। नूर इलाही परवरदिगार, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। नानक गोबिन्द साची धार, शब्दी जोत जोत कुड़माईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कलि कल्की लै अवतार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार सुणाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, पूरब कर्मा वेख वखाईआ। आत्म परमात्म दीन दयाल, दयानिध आपणा पर्दा लाहीआ। हरिजन वेखे साचे लाल, लालन आपणी गोद बहाईआ। काया मन्दिर अन्दर इक वखाए सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता निरगुण सरगुण वसे नाल, अन्दर बाहर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्त अवल्लड़ी चाल, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब दे सिर ते कूके काल, कलिजुग आपणा डंक वजाईआ। सुरती सुरत होई बेहाल, शब्दी गुर ना कोए मिलाईआ।

दीन मज़्हब ज़ात पात वजावण ताल, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साची खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार, पर्दानशीं पर्दा आप उठाइंदा। लेखा जाण दो जहान नौजवान श्री भगवान इक्को अमृत बरसे मेंह, जन भगतां सीतल सीत कराइंदा। हरिजन हरि हरि लग्गा नेंह, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाइंदा। लख चुरासी पंज तत्त काया माटी अन्तिम खेह, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा चुक्के अल्फ़ ये, चौदां विद्या पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत मिलावा आप कराइंदा। भगत मिलावा डूँघे सागर, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। नाम वणज कराए सच सौदागर, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। कलिजुग अन्तिम क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरनां देवे इक्को आदर, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन इक्को राह जणाईआ। भगत जणाए इक्को राह, भगती हरि समझाइंदा। पुरख अबिनाशी इक मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आप उठाइंदा। जुग चौकड़ी सच सलाह, नाउँ निरँकार आप बुझाइंदा। एथे ओथे फड़े बांह, फड़ बाहों पार कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढा, गुर अवतार पीर पैगम्बर साची सेवा लाइंदा। अन्त संदेसा नर
३१८ ३१८
१३ १३
नरेसा इक जणा, लख चुरासी आप उठाइंदा। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण जावे आ, जोती जाता नूर धराइंदा। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, काया जंगल बेला खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। काया अन्दर वड्डा सर, नज़र किसे ना आईआ। पंच विकारा रिहा लड़, दिवस रैण करे लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विद्या सारे रहे पढ़, आत्म परमात्म ना कोइ पढ़ाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद सारे रहे वड़, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जुग चौकड़ी खेल कर, हरि सज्जण लए जगाईआ। कलिजुग अन्तिम मेल दर, दर दरवाजा इक खुल्हाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। भगत भगवन्त लए फड़, सुरती शब्दी बन्धन पाईआ। घर विच वखाए साचा घर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। आत्म सेजा देवे वर, शब्द वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त लए उठाईआ। भगत भगवन्त जाए जाग, जागणहार आप जगाइंदा। जुग चौकड़ी लग्गे भाग, वडभागी खेल कराइंदा। गुरमुखां धोवे दुरमति मैल दाग़, अमृत सच सीर प्याइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, काग बुद्धि ना कोए रखाइंदा। अन्तर देवे इक वैराग, बण वैरागी वेख वखाइंदा। चरण धूढ़ी मजन माघ, मस्तक टिक्का इक्को लाइंदा। हरिजन मेला कन्त सुहाग, श्री भगवान मेल मिलाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर भगतां रंग रंगाइंदा। भगतां चाढ़े रंग, दया कमाइंदा। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच सिँघासण आसण लाइंदा। अनहद शब्द वजाए मृदंग, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाइंदा। नौ दुआरे जाए लँघ, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा , दसवें खेल सूरा सरबँग, सतिगुर आपणा पर्दा लाहइंदा। पंच विकार ना पाए डण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मूँह दे भार सुटाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंड, गुर शब्दी मेल मिलाइंदा। नज़री आए जो सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट आप बदलाइंदा। भगत भगवान इक दूजे कोलों इक्को वस्त रहे मंग, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। प्यार अन्दर सच प्यार, प्रीतम प्यारा आप जणाईआ। भगत अठारां दे आधार, भगवन आपणा राह चलाईआ। लेखा जाण तेई अवतार, ईसा मूसा मुहम्मद कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द वेखे कार, करनी करता आप कमाईआ। सारे मंगण दोए जोड़ करन निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलि कल्की लै अवतार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। चार वरनां दे इक आधार, इक्को अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतन मीता बेपरवाहीआ। भगतन मीता पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराइंदा। निरगुण सरगुण बेड़ा बन्न्, बिन थम्मां गगन रहाइन्दा। लेखा जाण सूरज चन्न, मण्डल मण्डप आप सुहाइंदा। भगत भगवान इक्को राग सुणाए कन्न, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। भाग लगाए पंज तत्त तन, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। वसणहारा छप्पर छन्न, महल अटल आप तजाइंदा। जिस उपर साहिब जाए मन्न, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। एथे ओथे दो जहान बेड़ा देवे बन्न्, श्री भगवान आपणे कंध उठाइंदा। इक्को देवे नाम धन, सच ख़ज़ाना आप वरताइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल श्री भगवन, अबिनाशी करता आप कमाइंदा। लेखे लाए गुरमुख जन, जन जणेंदी माई वेख वखाइंदा। नज़र ना आए नेत्र अन्न्, ज्ञान नेत्र इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़े चोटी, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। जन भगतां कढ्ढे वासना खोटी, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। करे प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अज्ञान मिटाइंदा। हथ्थ फड़ाए नाम सोटी, पंजां चोरां दर दुरकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाइंदा। भगत भगवान वेखे आप, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दस्सया जाप, जीवण जुगत जणाईआ। रसना जिह्वा ढोला जाप, बत्ती दन्द करे पढ़ाईआ। जन भगतां भेव चुकाए आत्म परमात्म बंधाए नात, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाईआ। सोहँ शब्द सुणाए गाथ, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेल मिलावा हरि रघुनाथ, रघुपत आपणी

गोद सुहाईआ। लहिणा देणा मस्तक माथ, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण आप चुकाईआ। पीर पैगम्बर देवे दात, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। एथे ओथे दए नज़ात, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। सूफ़ी होए ना कदे वफ़ात, मसला हक़ हक़ जणाईआ। नानक कहे निरगुण कमलापात, कन्त इक्को इक अख्वाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पिता मात, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। श्री भगवान कहे मेरी इक्को ज़ात, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, करनी करता आप कमाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत दए वड्याईआ। भगत भगवान इक्को देस, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। भगत भगवान इक्को वेस, जोती शब्दी मेल खेल कराइंदा। भगत भगवान इक नरेश, शहिनशाह हरि अख्वाइंदा। भगत भगवान इक आदेस, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। भगत भगवान लेखा चुक्के विष्न ब्रह्मा महेष, त्रैगुण माया बंद कटाइंदा। भगत भगवान जाणे रेख, पिछली रेखा आप मुकाइंदा। भगत भगवान करे हेत, नित नवित्त दया कमाइंदा। भगत भगवान इक्को मन्दिर रहे खेड, काया बंक आप सुहाइंदा। भगत भगवान इक्को भेत, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। भगत भगवान इक्को नेत, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक अतीता त्रै भवण, धनी आपणा वेस वटाइंदा। भगतन मीता पारब्रह्म, ब्रह्म वेखे चाईं चाईंआ। आदि जुगादि ना पए जम्म, जीवण मरन विच ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर राग सुणाए कन्न, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण बेड़ा बन्न्ह, साचा राह चलाईआ। लेखा जाण छप्पर छन्न, शहिनशाह आपणा चरण छुहाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका राग सुणाए कन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप मिलाईआ। हरिजन मेला अन्तिम कल, हरि करता आप कराइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छल, अछल छल धारी आपणा भेव छुपाइंदा। गुरमुखां अन्दर गया रल, जोती जोत जोत समाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए साची गल्ल, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। सतिजुग दा साचा फल, श्री भगवान झोली पाइंदा। वसणहारा नगर अबचल, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। लेखा जाण जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघे सागर थल, जल आपणा चरण छुहाइन्दा। दो जहान जाए हल्ल, हल्ला इक्को नाम बुलाइंदा। भगत भगवान दीपक जोती जाए बल, बल आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले संसार, सतिजुग साची धार बंधाईआ। लेखा जाण गुर अवतार पीर पैगम्बरां लैणा झोली पाईआ। सदी चौधवीं वेख विचार, चौदां

तबकां कुण्डा लाहीआ। दो जहानां करे ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड नैण खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। चार वरनां हल्ल करे स्वाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आप मिलाईआ। भगत भगवान मन्ने बचन, बचपन आप बणाइंदा। काया चोली चाढ़े रंगण, रंग इक्को इक वखाइंदा। ख़ाकी माटी करे कंचन, नाम पारस नाल छुहाइंदा। लख चुरासी जीव जंत मच्चण, हिरस हवस ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आप तराइंदा। हरिजन तारे लोकमात, बेपरवाह खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम देवे दात, सोहँ वस्त झोली पाइंदा। आत्म परमात्म बन्हे नात, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सति सतिवादी सुणाए साची गाथ, जीव जंत आप पढ़ाइंदा। लेखा जाण तरलोकी नाथ, लहिणा देणा झोली पाइंदा। बेटा वेख राम दसराथ, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। चतुर्भुज चले साथ, आदि शक्ति रंग रंगाइंदा। दो जहानां वेख तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। भगत भगवान कर प्रकाश, निर्मल जोती जोत जगाइंदा। दर दुआरे होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, खेले खेल पृथ्मी आकाश, अकाश आकाशां डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। हरिजन मेल सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण आप मिलाईआ। हरि पुरख निरँजण लै मृदंग, लोकमात रिहा सुणाईआ। एकँकारा चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। अबिनाशी करता दस्से ढंग, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। श्री भगवान इक जणाए सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए साचा छन्द, इक्को अक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग औध रही हंढ, वेला अन्तिम आईआ। फिरे दरोही नौ खण्ड, चार कुण्ट होए हल्काईआ। तीर्थ तट होए भंग, अठसठ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को भगत लए जगाईआ। इक्को भगत जगाए श्री भगवान, साची सिख्या सच जणाइंदा। जंगल बेला वेख बियाबान, कन्ढी आपणा डेरा लाइंदा। धर्म संदेसा नौजवान, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। सतिजुग सच बणे विधान, साचा मार्ग इक लाइंदा। लेखा चुक्के राज राजान, शाह सुल्तान सीस ताज ना कोए हंढाइंदा। कूड़ी क्रिया होए वैरान, माया ममता मोह मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए इक इस्लाम, इस्म आज़म आप जणाइंदा। परवरदिगार दे पैग़ाम, कलमा नबी आप सुणाइंदा। नज़री आए इक्को राम, रमईया हर घट डेरा लाइंदा। इक घनईया देवे दान, नाम बंसरी इक वजाइंदा। नानक गोबिन्द खेल महान, मंत्र सति सति दृढ़ाइंदा। अन्तिम मंगण सारे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहइंदा। कलिजुग अन्तिम निहकलंक आए बली बलवान, महाबली आपणा खेल

३२१
१३

कराइंदा। सम्बल वेखे सच मकान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाइंदा। हरि सिँघासण कोए ना जाणे लम्मा चौड़ा, बेअन्त बेपरवाह आपणा खेल कराइंदा। सन्त सुहेले लए उठा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। निर्मल जोत इक जगा, जागरत रूप वखाइंदा। हरिजन मेला सहिज सुभा, सुब्हा शाम दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन, भगतन मीता आप जणाईआ। खेले खेल छप्परी छन्न, सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त दोवें गए मन्न, घर साचे वज्जे वधाईआ। लख चुरासी देवे डंन, जो घड़या भन्न वखाईआ। लेखे जाणे तारा चन्न, सूरज नूर आप चमकाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक वखाईआ। मार्ग लाए दो जहान, जगत समाज रहिण ना पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मुस्लिम हिंदू सिख ईसाई आत्म परमात्म देवे ज्ञान, बंसरी इस्म इक पढ़ाईआ। दीद शनीद ईद नूर नूर महान, काया मन्दिर अन्दर साचा हुजरा दए प्रगटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कर परवान, रविदास चुमारा लहिणा पूर कराईआ। भगत भगवान इक्को माण, अभिमान ना कोए वखाईआ। छप्पर छन्न डूँग्घी कन्दर निरगुण सरगुण वेखे आण, बेऐब फेरा पाईआ। भगत भगवान कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा इक वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश सीस झुकाण, विष्न ब्रह्मा शिव चरण ध्यान लगाईआ। सतिजुग सति सतिवादी खेल करे महान, महिमा अगाध बोध पढ़ाईआ। बचन सिँघ बचपन कर परवान, जंगल उजाड़ जूह आपणा दरस दिखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतन मीता इक अतीता ठांडा सीता, जुग जुग चलाए आपणी रीता, रीतीवान इक अख्वाईआ। रीतीवान भगत भगवन्त, सच साची खेल कराइंदा। घर मिलावा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक हंढ्ढाइंदा। आत्म सेजा चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, मुल्लां शेख़ मुसायक सर्ब कुरलाइंदा। हरिजन लेखा जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दे बणन मंगत, इच्छया भिच्छया आप वरताइंदा। साचा मेला हरि हरिसंगत, हरिसंगत संग रखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक अखण्डत, खड़ग खण्डा सार वखाइंदा। जन भगतां चरणां हेठ दबाए स्वर्ग जंनत, चरण कँवल इक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगती आपणा नाम दृढ़ाईआ। हरि भगती नाम अनमुल्ल, कीमत करता कोए ना लाईआ। आदि जुगादि सदा अतुल, ना कोई तोले तोल तुलाईआ। गुरमुख उठाए साची कुल, कुलवन्ता हरि रघुराईआ। लेखा जाणे कँवल फुल्ल, नाभी रूप आप उलटाईआ। आत्म परमात्म जाए मवल, मौला आपणी खेल कराईआ। देवे वड्याई उपर

धवल, धरनी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवन्त इक्को घर वसाईआ। भगत भगवन्त घर इक वसेरा, विसर कदे ना जाइंदा। करे खेल नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे झेड़ा, सच सुच समझाइंदा। आत्म परमात्म बन्ने बेड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वसे गुरमुख खेड़ा, बंद खिड़की बज़र कपाटी आपे लाहइंदा। दरस दखाए नज़री आए तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला इक सुणाइंदा। श्री भगवान वड दलेरा, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी पाए घेरा, शब्दी हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त मेले दर, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। भगत भगवान मेटे दरद, दर्दी दर्द वंडाईआ। आदि अन्त करे मंज़ूर अर्ज़, आरज़ू इक्को इक जणाईआ। सदा सुहेला पूरा करे फ़र्ज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत भगवान इक्को ग़रज़, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। हरिजन ढोला ना कोई राग ना कोई तर्ज़, छत्ती राग ना सिफ्त सालाहीआ। आत्म परमात्म वेखे मर्ज़, मुरीद मुर्शद लए जगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता देवे वर्ज, नाम खण्डा इक वखाईआ। सोहँ ढोला इक्को ताल इक्को तर्ज़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे साची दात, भगत भगवन्त इक जमात, इक्को अक्खर लए पढ़ाईआ। भगत भगवान इक्को अक्खर पढ़ना, हरि सतिगुर राह जणाइंदा। निरगुण सरगुण अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सुरत सवाणी शब्दी फड़ना, एका बन्धन पाइंदा। नाता तोड़े मरना डरना, जन्म मरन फंद कटाइंदा। नेत्र खोल्हे हरना फ़रना, जगत फुरना बंद कराइंदा। नाता तोड़े चार वरनां अठारां बरनां, इक्को रंग रंगाइंदा। साचे पौड़े गुरमुख चढ़ना, चौथे पद डेरा लाइंदा। पुरख अकाल इक्को सरना, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। भगत भगवान इके मन्दिर वड़ना, मन्दिर मसीत शिवदुआला मठ्ठ गुरुदुआर इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका घर मिलाए मेला, दरस होए गुरु गुर चेला, चेला गुर इक्को नज़री आइंदा। चेला गुर भगवन्त भगत, हरि सतिगुर धार चलाइंदा। जगत मिलावा जुगा जुगन्त, जीवण जुगत समझाइंदा। तन माटी बणाए साची बणत, घाड़न घड़नहार वेख वखाइंदा। दरस दिखाए रूप अनन्त, अक्ल कला जणाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत जगाइंदा। आत्म परमात्म बणाए साची संगत, सगला संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त गोद उठाइंदा। भगत भगवान गोदी चुक्क, सचखण्ड वेखे चाईं चाईंआ। लोकमात दरस देवे लुक लुक, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। अन्दर वड़ के सतिगुर पूरा शब्दी शेर पए बुक्क,

नाम आपणी भबक लगाईआ। साजण मीता इक अतीता त्रै भवन धनी जोत निरँकार पए उठ, आप आपणा बल धराईआ। भगत भगवान जाए तुठ, दीनन आपणी दया कमाईआ। अमृत सरोवर जाम प्याए घुट, घुट घुट गले लगाईआ। काया मन्दिर सच बसन्ती सोहे रुत्त, पत डाली फुल्ल आप महकाईआ। भगत भगवान इक दूजे नूं रहे पुच्छ, कलिजुग अन्तिम वेला कवण घर वसे गुरु गुर चेला, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी देवे दान, सति सतिवादी वखाए इक निशान, निशाना दो जहान उठाईआ। भगत भगवान इक दूजे नूं मिले आण, जंगल जूह लेखे लगा, दरस दिखाए उपर शाह रगा, आत्म परमात्म देवे इक अनन्दा, गुरमुख चढ़ाए साचा चन्दा, कलिजुग अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सर्ब गुणवन्त श्री भगवन्त सदा सुहेला इक इकेला दो जहान सदा बख्शंद, बखशिश आपणे हथ्थ रखाईआ। ढाई वजे वेखे ढय्या, पूरब लेख जणाइंदा। सतिगुर गुर सतिगुर चलाए साची नईया, नौका नाम चपू एका लाइंदा। भगत भगवान पकड़े बहीआ। फड़ बाहों गले लगाइंदा। राए धर्म ना कढ्ढे वहीआ, चित्रगुप्त लेख ना कोए जणाइंदा। जिस जन हरि जू मिल्या पिता मईआ। हरिजन बालक गोद उठाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवान सदा सद रहीआ, लख चुरासी भाण्डा सर्ब भंनाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान भगत भगवन्त देवे दान, आप आपणे घर वसाइंदा।

३२४
१३

❇ २२ मग्घर २०१६ बिक्रमी चरण सिँघ दे गृह सिम्मल सकोर ज़िला गुरदासपुर ❇

किरपा करी पुरख समरथ, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। इट्टां पत्थर रोड़े मिट्टी धरत लेखे लाए कक्ख, कक्ख आपणे अंग लगाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी निरगुण दाते पारब्रह्म पत लई रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक दूजे नूं वेख वेख बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्दां रहे हस्स, लख लख शुकर मनाइंदा। आओ रल मिल करीए जस, साहिब सतिगुर नज़री आइंदा। चरण कँवल कँवल चरण जाईए ढठ्ठ, रोगीआं रोग मिटाइंदा साडी पूरी करन आया आस, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहरवान होया मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। कोझयां कमल्यां ग़रीब निमाणयां देवे माण, निमाणयां गले लगाईआ। निरगुण निरगुण निरवैर निरवैर चल के आया श्री भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। नेत्र लोचण नैण दर्शन करीए आण, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पत्थर रोड़ा कहे पुकार, ऊँची कूक सुणाया।

३२५
१३

सस्से उपर होड़ा हँ ब्रह्म दए आधार, सोहँ इक्को राग सुणाया। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, दो जहानां वाली चल के आया। घर बैठयां आपे बौहड़ा, आप आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मिट्टी रेत करे विचार, हरि विचार विच ना आईआ। साडे नाल कीता हित, हितकारी फेरा पाईआ। असां आपणा आप ल्या जित्त, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। साडे वासते लिआया किछ, वस्त अमोलक सोहँ रिहा वरताईआ। इक्को पाए अगम्मी भिच्छ, भिच्छया आपणे हथ्थ रखाईआ। आओ रल के हरिसंगत कोलों सिख्या लईए सिख, बिन हरि अवर ना कोए सहाईआ। जिध्धर वेखीए आए दिस, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाईआ। फेरा पाए पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। लेखा जाणे दमो दम, बिन दमां रिहा तराईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोए चम्म, तन वजूद ना कोए वखाईआ। अन्दर वड़ वड़ वसल करे श्री भगवन, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। रल मिल करीए जशन, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। इक दूजे नाल करन बचन, बचत आपणी वेख वखाईआ। साहिब सतिगुर आया रखण, साडी राखी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह बेपरवाहीआ। इट्ट पत्थर रोड़ा मिटी कक्ख मारन धाह, नेत्र नैणां नीर वहाया। जुग चौकड़ी गए विहा, साडा लेख ना किसे मुकाया। पारब्रह्म तेरा तक्कदे रहे राह, नेत्र नैण नैण उठाया। कवण वेला पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाया। सिर देवे ठंडी छाँ, दुखियां दुःख मिटाया। इक जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाया। आपे बणे पिता माँ, ग़रीब निमाणे गोद उठाया। निथाव्याँ देवे थाँ, चरण कँवल सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग चढ़ाया। कक्ख कहे मेरी वेख कुल्ली, हरि कलमा इक पढ़ाईआ। देवे दात दात अनमुल्ली, करता कीमत कोए ना पाईआ। आपणे उत्ते लै के जुल्ली, दुखियां दुःख रिहा वंडाईआ। मैं वेख वेख हस्सी कुद्दी फुल्ली, मन चाउ घनेरा आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। रेत कहे मैनूं आउँदा हासा, हस्स हस्स खुशी मनाइंदी। रातीं सुत्यां मेरे दुःख अन्दर बदलदा रिहा पासा, पासे पासे नाल बदलाईआ। मैं नेड़े हो के वेंहदी रही तमाशा, प्रभ जू की की खेल रचाईआ। ग़रीब निमाणयां होया दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। साडी पूरी करी आसा, पिछला दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। मिट्टी कहे मोहे चढ़या चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ दुखड़े रिहा उठा, हां हूं कर के आपणी वस्त मंगाईआ। कोई भेव ना जाणे रा, करे खेल बेपरवाहीआ। सारे कहिण ताप रिहा सता, दीन

अधीना निमाण निमाणयां आपणी छाती उपर टिकाईआ। जन्म जन्म दा दुखड़ा लाह, दु:ख आपणे विच टिकाईआ। करे खेल आप खुदा, नूर ज़हूर बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिहड़ा वसदा रिहा जुदा, सो अन्तिम मेल मिलाईआ। एका मार्ग दस्से सिध्धा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। रल मिल सारे पावण गिध्धा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रोड़ा कहे मोहे चढ़या रंग, रंग रंगीला इक रंगाईआ। साडे पिच्छे निरगुण सरगुण हो के सुत्ता उत्ते पलँघ, पल पल आपणी दए दुहाईआ। असीं नेड़े हो के सारे मंगां रहे मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी निरगुण जोत कर प्रकाश साचा चन्द, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गंढ आपणे नाल पुआईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पत्थर कहे मैं होया पत्थर, पाहन मिले ना कोए वड्याईआ। नेत्र रोवे सुट्टे अथ्थर, हन्झूआं नीर वहाईआ। धन्ने वेले जो रहि गई कसर, कलिजुग अन्तिम पूर कराईआ। जिस ने पसारा ल्या पसर, सो वेखण आया सच्चा माहीआ। चरणां विच बहि के आपणा आप करीए बसर, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार अन्दर लए जकड़, आपणा बन्धन पाईआ। अग्गे पिच्छे दा चुक्के फ़िकर, फ़िकरा सोहँ ढोला गाईआ। रल मिल सारे करन ज़िकर, गल्ल गल्ल नाल मिलाईआ। भज्जे फिरन इधर ओधर, ओधर इधर खुशीआं राग अलाईआ। श्री भगवान जिउँ लेखा जाणे बिदर, तिउँ गुरमुखां कुल्ली कक्खां दए वड्याईआ। असीं हो गए सारे निडर, भय सिर ना कोए रखाईआ। आउँदयां ही सारे घरे अन्दर गए वड़, फड़ के पुरख अकाल ल्या ढाहीआ। छाती उत्ते गए चढ़, निक्के बाल लत्तां बाहवां मार मार खूब हिलाईआ। अग्गों पिच्छों सारयां ल्या फड़, चम्बड़े वाहो दाहीआ। जिन्ना चिर ना बन्ने लड़, पल्लू छड्ड कोए ना पाईआ। श्री भगवान गया डर, रात हौकयां विच लँघाईआ। क्यों मैनूं सर सरकड़यां विच्चों आवे डर, कक्ख प्रतख रूप वटाईआ। तुहाडे प्यार अन्दर गया हर, चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, दुखियां दु:ख दर्दीआं दर्द भुख्यां भुक्ख नंगयां नंग आदि जुगादि आपणा पर्दा पाईआ।

हरि जू विच बड़ा वैराग, वैरागी आपणा खेल कराया। जिंन्हां पिच्छे आया भाग, नठ्ठ नठ्ठ आपणा पन्ध मुकाया। तिन्हां धोवे पिछला दाग़, मल मल आपणी सेव कमाया। रैण सबाई आप जाग, दुखियां दु:ख दर्द वंडाया। नेत्र नीर वहे गुरमुख

हरिजन विछड़यां मिल्या आज, जुग जन्म दा लेख मुकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना रचे सच्चा काज, सौहरे पेईए गंढु ना कोए पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नीर गुणी गहीर दर्दीआं वंडे दुःख पीड़, पीड़ आपणे विच छुपाईआ। गुरमुखां घर वस्तू खेस, दुशाला नज़र कोए ना आईआ। खेस नाल हरि जू हेत, प्यार गंढु पुआईआ। पाटी चादर ओढण रुत्त बसन्ती चेत, खुशीआं विच वखाईआ। टुट्टी रस्सी अन्दरे अन्दर भेत, प्यार प्यार नाल बंधाईआ। हरि जू हरि हरि सतिगुर खेड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। गुरसिख गुर का रंग, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। गुरसिख गुर का चन्द, दो जहान करे रुशनाईआ। गुरसिख गुर का अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख गुर का तारा, तारनहार दया कमाइंदा। गुरसिख गुर का प्यारा, प्रेम प्यार इक जणाइंदा। गुरसिख गुर का दुलारा, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। गुरसिख गुर का वणजारा, नाम वस्त झोली पाइंदा। गुरसिख गुर का श्रृंगारा, शहिनशाह इक्को रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिख गुर का मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। गुरसिख गुर की रीत, जुग जुग मात वखाईआ। गुरसिख गुर का देहुरा शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर मसीत, जिस अन्दर सतिगुर डेरा लाईआ। गुरसिख गुर का गीत, बिन गुरसिख लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। गुरसिख गुर का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख गुर गुर रूप वखाईआ। गुरसिख गुर का मृदंग, हरि सतिगुर आप वजाइंदा। गुरसिख गुर का छन्द, ढोला सोहला एका गाइंदा। गुरसिख गुर का तन, बिन गुरसिख चोली ना कोए हंढ़ाइंदा। गुरसिख गुर का मन, मन वासना गुर जपाइंदा। गुरसिख गुर का जन, जन जननी गुर अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका राह चलाइंदा। गुरसिख गुर का राह, रहबर इक अख्वाईआ। गुरसिख गुर का मलाह, लोकमात मिले वड्याईआ। गुरसिख गुर की सलाह, सिफ्ती सिफ्त भराईआ। गुरसिख गुर का नाँ, बिन गुरसिख गुर का नाउँ ना कोए ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख गुर का सज्जण, सगला संग निभाइंदा। गुरसिख गुर का मजन, अन्दर वड़ वड़ सतिगुर पूरा सच सरोवर तारी लाइंदा। गुरसिख गुर का परदे कज्जण, गुरसिख काया ओढण आप हंढ़ाइंदा। गुरसिख गुर का जहाज़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बेड़ा आप चलाइंदा। गुरसिख गुर का ताज, सीस जगदीश दए वड्याईआ। गुरसिख गुर का राज, हुक्म मन्ने चाईं चाईंआ। गुरसिख गुर का समाज, दूजी

वंड ना कोए वंडाईआ। गुरसिख गुर दी रखे लाज, बिन गुरसिखां गुरू देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नाता जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिख गुर का नाता, चरण कँवल चित लाइंदा। गुरसिख गुर का साथा, सगला संग निभाइंदा। गुरसिख गुर का माथा, मस्तक वेख वखाइंदा। गुरसिख गुर का पाठा, पूजा गुरमुख रूप वटाइंदा। गुरसिख गुर का पूरा करे घाटा, बिन गुरसिखां झोली ना कोए भराइंदा। गुरसिख गुर की ज़ाता, वरन बरन ना कोए जणाइंदा। गुरसिख गुर का गाए साका, शब्दी ढोला इक अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिख गुर का नाद, अनहद राग सुणाईआ। गुरसिख गुर का स्वाद, रस इक्को इक चखाईआ। गुरसिख गुर का ब्रह्माद, जिस गृह गुर फिरे चाईं चाईंआ। गुरसिख गुर का साज, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। गुरसिख गुर का नाज़, बिन गुरसिख सतिगुर नाच ना कोए नचाईआ। गुरसिख गुर की आवाज़, बिन गुरसिख जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, राम नाम ना कोए ध्याईआ। गुरसिख गुर का अंगण, अंगीकार कराइंदा। गुरसिख गुर का कंगण, हथ्थीं बाहीं आप लटकाइंदा। गुरसिख गुर का तन्दन, डोरी नाम तन्द बंधाइंदा। गुरसिख गुर इक दूजे तों दोवें मंगण, बिनां प्यार गुरसिख गुर कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख वड्डा वड वड्याइंदा। गुरसिख गुर का जाप, जपत जपत सुख पाईआ। गुरसिख गुर का पाठ, पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। गुरसिख गुर का ठाठ, सर सरोवर दए वड्याईआ। गुरसिख गुर का हाट, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख एका घर वखाईआ। गुरसिख गुर का घर, हरि मन्दिर नाउँ रखाइंदा। गुरसिख अन्दर गुर सतिगुर जाए वड़, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। गुरसिख गुर सुरती शब्दी बन्ने लड़, पल्लू गंढु पुआइंदा। गुरसिख गुर दर्शन देवे अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। अन्त गुरसिख गुर दोवें जाण रल, सीस धड़ ना कोए वखाइंदा। इक दूजे दा मिले इक्को जिहा फल, काणी वंड ना कोए वंडाइंदा। अग्गे पिच्छे जाण चल, राह विच ना कोए अटकाइंदा। दोवें सचखण्ड दुआर बहिण मल्ल, जिथ्थे दूजा नज़र कोए ना आइंदा। दोहां दा स्वाल होए हल्ल, बाकी रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणयां गुरसिखां गुरमुखां शब्दी देवे दान, बिन शब्द गुर पार ना कोए कराइंदा।

३२८ १३

❇ २२ मग्घर २०१६ बिक्रमी चरण सिंघ दे घर पिण्ड अनतोर ज़िला गुरदासपुर ❇

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, बेअन्त बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी खेल महान, शहिनशाह इक्को इक वड्याईआ। तख्त निवासी मेहरवान, दरगाह साची रंग रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। श्री भगवान सच निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाईआ। दो जहानां हुक्मरान, सति संदेसा इक सुणाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल रचाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, अक्ल कला अख्वाइंदा। मुकामे हक़ नूर उज्यार, मिहबान बीदो रूप धराइंदा। परवरदिगार सांझा यार, सही सलामत खेल कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर फुरमाणा हुक्म सुणाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदार, विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा। त्रैगुण माया दे आधार, पंज तत्त पर्दा आपे लाहइंदा। देवत सुर करे विचार, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी खोल्ह कवाड़, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा भेव जणाइंदा। लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। भगतन देवे सच सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अन्त कोए ना आइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता इक इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग चलाए राह, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, दो जहानां बेड़ा कंध उठाईआ। एकँकार दए सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। आदि निरँजण नूर धरा, जोती जोत डगमगाईआ। अबिनाशी करता बेपरवाह, बेऐब नाउँ खुदाईआ। श्री भगवान साचे तख्त चरण छुहा, सीस जगदीश वड वड्याईआ। पारब्रह्म भेद अभेद खुल्हा, पर्दा उहला ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची खुशी मनाईआ। दरगाह साची खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराइंदा। श्री भगवान इक इकल्ला, सच सिँघासण लाइंदा। सच संदेसा इक्को घल्ला, जुग जुग आपणा हुक्म मनाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढ्ढ दवाइंदा। दीपक जोती एका बला, शब्दी नाद नाद वजाइंदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी

खेल अपार, श्री भगवान आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे अधार, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। एका नाम सति जैकार, सति सति ढोला दए सुणाईआ। सच्चा सेवक सेवादार, ख़ाक ख़ाकी मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। जुग चौकड़ी उतरे पार, अन्त रहिण कोए ना पाया। सेवा कर गुर अवतार, पीर पैगम्बर चोला पंज तत्त हंढाया। नाम संदेसा दे संसार, भेव अभेव खुल्हाया। ऊँची कूक कूक पुकार, ब्रह्म पारब्रह्म नाद वजाया। आत्म परमात्म खोल्ह कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहया। लेखा लिख्त अगम्म अपार, कलम शाही रंग चढ़ाया। अन्तिम सारे गए हार, बेअन्त भेव ना किसे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा रंग रंगाया। जुग जुग हरि जू रंगे रंग, रंगणहारा नज़र ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आत्म सेज हंढाए पलँघ, सच सिँघासण आसण लाईआ। अमृत सरोवर सच धार वहाए गंग, गंगा सुरस्ती जमना गोदावरी मुख शरमाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। ईश जीव चाढ़े चन्द, निरगुण सरगुण जोत रुशनाईआ। पंज विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी सेवा लाईआ। जुग चौकड़ी सेवादार, गुर अवतार जणाइंदा। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर आपणा रंग वखाइंदा। भगत वछल हरि गिरधार, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण नैण आपणा इक खुल्हाइंदा। कलिजुग खेल करे परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। ईसा मूसा करे खबरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा जुगो जुग, जुग करता आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम औध रही पुग, पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई लग्गा दुःख, हँस मुख ना कोए वड्याईआ। माया ममता हउमे हंगता आसा तृष्ना लग्गी भुक्ख, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सुफल ना दिसे कोई कुख्ख, भगत भगवन्त ना कोई मिलाईआ। चारों कुण्ट लग्गा दुःख, दुखियां दुःख ना कोई गंवाईआ। मात गर्भ उलटा रुख, दस दस मास अग्न तपाईआ। जगत विकारा रिहा लुट्ट, ठग्ग चोर यार देण दुहाईआ। होए प्रकाश ना निर्मल जोत, शब्द नाद ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेखे सर्ब लोकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, पारब्रह्म करतार। लख चुरासी त्रैगुण माया, पंज तत्त करे ख्वार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पढ़ पढ़ ऐवें वक्त लँघाया, मिल्या मेल ना श्री भगवान। खाणी बाणी तीर निशाना ना किसे लगाया, बजर कपाटी ना कोई पार। अठसठ तीर्थ नहावण नहाया, दुरमति मैल ना देवे कोई उतार। आत्म परमात्म रंग ना किसे

चढ़ाया, साध सन्त हुन्दे फिरन ख्वार। पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा ना किसे उठाया, निर्मल जोत ना कोए उज्यार। अनहद नादी नाद ना किसे वजाया, काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर खोलृ किवाड़। गुर अवतार पीर पैगम्बर नज़र किसे ना आया, राती सुत्तयां होए ख्वार। स्वच्छ सरूपी रूप ना कोए धराया, शाहो भूपी मिले ना एकँकार। चारे कूटी फेरा पाया, दहि दिशा होए हैरान। जूठा झूठा वणज कराया, सच सुच ना कोए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा खेल न्यारा, निरगुण सरगुण रिहा जणाईआ। लेखा जाण गुर अवतारा, पीर पैगम्बरां रिहा मनाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। निहकलंक श्री भगवान वड सिक्दारा, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। चारों कुण्ट मेटे अन्ध अँध्यारा, रैण अन्धेरी दए मिटाईआ। सच सुच करे वरतारा, सच संदेसा इक सुणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए अधारा, चार वरन एका रंग रंगाईआ। अठारां बरन खोलृ किवाड़ा, अभेव अभेद समझाईआ। अग्नी तत्त ना लग्गे हाढ़ा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जलवा नूर नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी सच दरबार, घर साचे आप लगाइंदा। इकठ्ठे कर तेई अवतार, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। नेत्र खोलृ वेखो संसार, कलिजुग आपणा रंग वटाइंदा। सृष्ट सबाई धूंआँधार, हरि का नाम चन्द ना कोई चमकाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, पढ़ियां नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा हरिजन भगत, श्री भगवान आप सुणाईआ। नेत्र वेखो लोकमात जगत, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। लख चुरासी उब्बले बूँद रक्त, धीरज धीर ना कोई धराईआ। काम क्रोध चढ़या कटक, आसा तृष्ना होए हल्काईआ। साध सन्त रहे भटक, मन वासना ना कोई मिटाईआ। अद्धविचकारे रहे अटक, महल अटल चढ़ दरस कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन भगतां रिहा जणाईआ। पीर पैगम्बर खोलृो अक्ख, परवरदिगार आप जणाया। सदी चौधवीं लाउदे भक्ख, चौदां तबक रहे कुरलाया। कलमा नबी रसूल किसे नज़र ना आया हक़, हकीकत रंग ना कोई चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाया। सच संदेसा गुर गुर दस, हरि जू हरि हरि आप सुणाया। लोकमात जो मार्ग आए दस्स, आत्म परमात्म कर पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा ना मिल्या रस, नेत्र नाम ना कोई वड्याईआ। माया ममता हउमे हंगता सब दा सिर रही झस्स, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। कूड़ी क्रिया रहे नस्स, हरि जगत पन्ध ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

गुरु गुर इक्को इक संग जणाईआ। विष्नूं उठ कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। चारों कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर नज़री आइंदा। कोई ना देवे किसे माण, घर घर रिज़क ना कोए पुचाइंदा। ग़रीब निमाणे सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। दो जहान खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। सति संदेसा पारब्रह्म, ब्रह्म वेते आप जणाईआ। लख चुरासी तेरा दम, दम दमां विच समाईआ। निरगुण सरगुण करे कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त चम्म, मन मति बुध कर कुड़माईआ। वस्त अमोलक नाम धन, गृह मन्दिर इक टिकाईआ। होए वसेरा बिन छप्परी छन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे बणत वखाईआ। शंकर उठ भोले नाथ, भोले भाउ जणाइंदा। चारों कुण्ट दिसे घात, घाउ कलिजुग अन्त लगाइंदा। सच ना दिसे कोए जमात, अक्खर आख़र ना कोए पढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई अन्धेरी रात, जलवा नूर ना कोए दरसाइंदा। धूढ़ी ना रमाए कोई ख़ाक, मस्तक टिक्का ना कोए लाइंदा। पई लड़ाई ज़ात पात, वरन गोत आपणा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर एका हुक्म सुणाइंदा। त्रैगुण माया कर ध्यान, सतो रजो तमो आप जणाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया होई प्रधान, घर घर आपणा डंक वजाईआ। शाह पातशाह होए बेईमान, राज राजान ना कोए वड्याईआ। नव नौ कूड़ी क्रिया आया तूफ़ान, ग़रीब निमाणयां रिहा रुढ़ाईआ। हरि का मंत्र कोई ना सके पछाण, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। अन्तर आत्म किसे ना मिल्या श्री भगवान, भगवन नज़र किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले खेले खेल महान, बेपहचान वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया रिहा जगाईआ। पंज तत्त वेख विचार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम अन्तिम धार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। आकाश प्रकाश ना कोए उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ ना कोए उज्यार, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम भेव अभेद जणाइंदा। पंज तत्त अन्दर मन मति बुध, बुद्धि एका हुक्म सुणाईआ। मन वासना रही कुद्द, मति मतिवाली दए दुहाईआ। बुध बबेकी पए उठ, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जगत जीव दर घर साचिउँ गए रुठ्ठ, सच ध्यान ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आत्म कहे परमात्म जाग, जग जीवण दाता आप जगाइंदा। कलिजुग लग्गा कूड़ा दाग़, बिन सतिगुर पूरे ना कोए धवाइंदा। मन वासना होई काग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। निर्मल जोत ना जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाइंदा। नाता जुड़या जूठे झूठे सज्जण साक, गुर शब्दी संग ना कोए निभाइंदा। मस्तक

३३३
१३

टिक्का कोए ना लाए धूढ़ी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक ना कोए रमाइंदा। गृह गृह लग्गी माया आग, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म आप जगाइंदा। परमात्म कहे आत्म मीत, मित्र प्यारे आप जणाईआ। तेरी मेरी सच प्रीत, प्रीतीवान रिहा समाईआ। तेरा मेरा इक्को गीत, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। तेरा मेरा धाम अनडीठ, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। तेरा मेरा इक्को सीस, जगदीश रिहा समझाईआ। तेरी मेरी इक हदीस, इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ईश जीव वेख विचार, ईश्वर आप जणाइंदा। कूड़ा नाता जगत संसार, अन्त संग ना कोए जाइंदा। तेरा मेरा इक वणज वपार, इक्को हट्ट खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। आत्म ब्रह्म जीव पए रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। कलिजुग तेरी कोई ना देवे सो, जगत अन्धेरा छाया। साचा बीज ना देवे कोई बो, अमृत फल खवाया। घर विच घर ना करे कोई लो, अज्ञान अन्धेर मिटाया। साचा देवे ना कोई ढोआ ढो, नाम निधाना झोली पाया। तेरे नाल ना सके छोह, कलिजुग आपणा घेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाया। आत्म ब्रह्म ना मार धाह, धुरदरगाही आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम गया आ, पुरख अबिनाशी फेरा पाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे थाँ थाँ, नव सत आपणा पर्दा लाहइंदा। भगत भगवन्त लए जगा, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। साचा रंग दए चढ़ा, उतर कदे ना जाइंदा। दुरमति मैल दए धवा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। सच प्रकाश दए करा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अनहद नादी नाद दए सुणा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप जणाइंदा। विस्मादी विस्माद रिहा अख्वा, बिस्मिल आपणी धार जणाइंदा। रहबर बण आप खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आत्म आप जणाइंदा। ब्रह्म आत्म प्या हस्स, हस्स हस्स खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी होया वस, घर मिल्या बेपरवाहीआ। दूर दुराडा आया नस्स, लोकमात फेरा पाईआ। नाम निधाना तीर मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, करे सच पढ़ाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाईआ। इक्को दस्से पूजा पाठ, निःअक्खर नाम पढ़ाईआ। इक सरोवर मारे ठाठ, अठसठ माण गंवाईआ। मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण दया कमाईआ। साचा मिले सज्जण साक, हरि सज्जण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। आत्म ब्रह्म दयावान, आपणी दया कमाइंदा। शब्द अगम्मी देवे दान, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। इक्को मन्दिर इक मकान, इक्को घर वखाइंदा। इक्को इष्ट श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। इक्को

३३४
१३

शहिनशाह शाह राज राजान, पातशाह इक्को इक अख्वाइंदा। इक्को हुक्म इक्को हुक्मरान, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। त्रैगुण माया सोई उठ, सुत्यां रैण विहाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी गया तुठ, बेपरवाह फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट, माया ममता दए मिटाईआ। जगत वासना लए लुट्ट, आप आपणा बल रखाईआ। सृष्ट सबाई कढ्ढे फुट्ट, भाण्डा भरम भंनाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, इष्ट देव इक अख्वाईआ। भगत भगवान इक दूजे उत्ते होण मोहत, मोह मुहब्बत आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण तेरा रंग वखाईआ। पंज तत्त खोल्ह अक्ख, हरि अक्खर आप जणाइंदा। श्री भगवान हो प्रतख, साची धार चलाइंदा। सन्त सुहेले लए रख, गुर चेले मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम डेरा ढाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि जू रिहा जणा, जानणहार वड्डी वड्याईआ। नेत्र खोल्ह मारो ध्यान, लोकमात रिहा वखाईआ। सृष्ट सबाई होई बेईमान, बेवा रूप खुदाईआ। सच ना दिसे कोई ईमान, घर घर शरअ करे लड़ाईआ। नाता तुटा अञ्जील कुरान, काया कुरा ना कोए फुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सर्ब शरमाण, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। खाणी बाणी होई हैरान, हरि का भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह रिहा जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर गए आ, हरि हरि जू आप बुलाइंदा। उठो वेखो रिहा समझा, समझ समझ नाल मिलाइंदा। साचा मंत्र अन्तर ना रिहा कोई दृढ़ा, बसन्तर मात ना कोए बुझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे ना बणे कोई गवाह, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। राए धर्म नैण रिहा उठा, नेत्र निज खुलाइंदा। चित्रगुप्त लेखा रिहा वखा, पूरब लेखा खोल्ह जणाइंदा। लाड़ी मौत हथ्थीं मैहन्दी रिहा रंगा, लालन इक्को रंग चढ़ाइंदा। काल डोरू रिहा वजा, डंका आपणे हथ्थ वखाइंदा। महाकाल भुलया फिरे दयो राह, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कार कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम जीव जंत सृष्ट सबाई झूठा नाता दए तुड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख हरिसज्जण लए मिला, मेल मिलावा आप जणाइंदा। डुब्बदे पाथर पाहन लए तरा, जिस जन आपणा चरण छुहाइंदा। आत्म परमात्म साचा राग दए सुणा, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म पर्दा दए उठा, घर घर विच मेल मिलाइंदा। अनहद रागी राग दए सुणा, छत्ती राग मुख शरमाइंदा। मेल मिलावा सहिज सुभा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। सेज सुहञ्जणी इक हंढा, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक जणाइंदा। सच संदेसा श्री भगवान, आदि पुरख जणाईआ। कलिजुग अन्त मिटे निशान, गुर अवतार पीर पैगम्बर कोए ना सके अटकाईआ। सतिजुग

३३४
१३

साचा बणे विधान, सच सुच वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई इक्को नज़री आए काहन, राम रमईया इक वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे इक अमाम, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी नज़र उठाईआ। दो जहानां इक्को हुक्मरान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतारां मेले आण, मेल मिलावा एका थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सच संदेसा सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म आपे हो, ब्रह्म पारब्रह्म वंड वंडाइंदा। प्रकाश अन्धेर आपे हो, सुंन अगम्म आप समाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपे हो, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज आपे वेख वखाइंदा। आत्म शक्ती परमात्म सब दी लए खोह, डोर आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां करे सच मोह, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। दुरमत्त मैल दर घर धो, द्वैती रंग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग मार्ग लग्गे जग, जग जीवण दाता आप लगाईआ। जन भगतां दरस देवे उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। अनाद अनादी वजाए नद, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाईआ। मक्का काअबा कराए इक्को हज्ज, हुजरा हक़ वखाईआ। श्री भगवान निरगुण सरूप दो जहान सदा सुहेला
३३५ रिहा भज्ज, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां पर्दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ ३३५
१३ टिकाइंदा। जो घड़या सो अन्तिम जाए भज्ज, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कलिजुग काल नगारा रिहा वज्ज, सृष्ट १३
सबाई आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग कलंक आप मिटाइंदा। निहकलंक नरायण नर, नर हरि वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा वर, सतिजुग आपणा राह वखाईआ। कलिजुग अन्तिम लए फड़, हथ्थकड़ी इक्को नाम उठाईआ। साचा घाड़न लए घड़, सच सुच करे रुशनाईआ। जन भगतां अन्दर जाए वड़, आपणा पर्दा लाहीआ। सोहँ अक्खर लए पढ़, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म ना जन्मे ना जाए मर, लख चुरासी खेल कराईआ। कूड़ी क्रिया चुके डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। सतिगुर पूरा समरथ स्वामी, जिस जन उपर किरपा दए कर, सो जन दर्शन पाए चाईं चाईंआ। सृष्ट सबाई माया ममता अग्नी रही सड़, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुगा जुगन्तर जुग चौकड़ी देवणहारा दान, दाता दानी इक अख्वाईआ।

❇ २३ मग्घर २०१६ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड सदा ज़िला गुरदासपुर ❇

शब्दी सुत गुर अवतार, पीर पैगम्बर कलमा नबी पढ़ाईआ। बसन्ती रुत्त सति गुलज़ार, दो जहानां आप महकाईआ। निरगुण सरगुण कर उज्यार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। बोध अगाधी नाद अनाद धुनकार, अनरागी राग सुणाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, नूरो नूर रुशनाईआ। साचा साकी परवरदिगार, आबे हयात प्याईआ। हक़ हकीकत पावे सार, लाशरीक इक खुदाईआ। इक इकल्ला एकँकार, अक्ल कला वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। थिर घर दुआरा खोल्ह कवाड़, मार्ग धन्दा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। शब्दी रंग, गुरू अवतार पीर पैगम्बर नाल रलाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण वंड वंडाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे नाम मृदंग, एकँकारा संग रखाइंदा। आदि निरँजण जोत सरूपी चाढ़े चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दो जहान लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, लोकमात फेरा पाइंदा। श्री भगवान धुरदरगाही सच मलाही नाम निशान झुलाए सत्त रंग, रंग रंगीला इक जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे कराए साची वंड, वंडणहारा आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुर अवतार खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वारा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण दए हुलारा, अञ्जील कुराना वंड वंडाईआ। गीता ज्ञान जगत वणजारा, आत्म परमात्म संग रखाईआ। अञ्जील कुरान कर उज्यारा, रूह बुत्त बन्धन पाईआ। बोध अगाधी शब्द उज्यारा, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोई जणाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त बेपरवाह नर निरँकारा, दर साचे बैठा आसण लाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग गुर अवतार सेव लगाईआ। गुर अवतार देवे माण, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, बिन रसना जिह्वा सुणाइंदा। अन्तर आत्म कर पहचान, परमात्म रंग चढ़ाइंदा। दिवस रैण इक धुन्कान, अनहद नादी राग सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। धुर संदेसा नर नरेशा देवे आण, धरनी धवल वड्याइंदा। लेखा जाण ज़िमी असमान, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। पृथ्मी अकाश खेल महान, रवि ससि सूरज चन्न मण्डल मण्डप आप वड्याइंदा। लख चुरासी खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार मार्ग लाइंदा। गुर अवतार सेवादार, सद सद आप जणाईआ। जुग चौकड़ी कर तैयार, लोकमात लए प्रगटाईआ। धुर संदेसा देवे आपणी धार, शब्दी शब्द

राग अलाहीआ। जीवां जंतां दए सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म दए प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। ईश जीव वखाए खिड़ी गुलज़ार, गुलशन इक्को इक महकाईआ। रोशन करे काया मुनार, महिराब इक्को डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार हुक्म मनाईआ। गुर अवतार हुक्मे अन्दर, सतिजुग त्रेता हुक्म मनाइंदा। पीर पैगम्बर कर अडम्बर, उम्मत उम्मती रंग चढ़ाइंदा। लख चुरासी रच सुअम्बर, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अन्दर पैगम्बर पीर, पारब्रह्म प्रभ हुक्म मनाईआ। हुक्मे अन्दर दस्तगीर, दस्त बदस्त दए वड्याईआ। हुक्मे अन्दर शरअ ज़ंजीर, लाशरीक खेल कराईआ। हुक्मे अन्दर हक़ तौफीक, तोहफा लोकमात वखाईआ। हुक्मे अन्दर बणे फरीक, बेअन्त वड वड्याईआ। हुक्मे अन्दर मेटे अन्धेरा तारीक, चौदां तबक करे रुशनाईआ। हुक्मे अन्दर चौदां लोक वेखे ठीक, निरगुण आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म मनाईआ। जुग जुग हुक्म हरि निरँकारा, इक इकल्ला आप जणाइंदा। मन्न मन्न गए तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद निउँ निउँ करदे गए निमस्कारा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। नानक गोबिन्द नाम हट्ट चलाउँदे रहे बण वणजारा, जीव जंत जगत समझाइंदा। लिख लिख थक्के काग़ज़ कलम शाही अन्त ना पारावारा, बेअन्त आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणहारा धाम न्यारा, नेहचल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा राह चलाइंदा। आदि अनादि चलाए राह, रहबर इक राम बणाईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। गुर अवतार लए उठा, फड़ बाहों गले लगाईआ। शब्दी वस्त झोली पा, साचा बंक खुल्हाईआ। निरगुण जोती कर रुशना, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। नाता जोड़ बेपरवाह, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक इकल्ला अक्ल कल आपणी खेल रचाईआ।

❊ २३ मग्घर २०१६ बिक्रमी गुरचरण सिँघ दे घर पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदासपुर ❊

सो पुरख निरँजण साचा सज्जण, आदि जुगादि दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण चरण धूढ़ कराए मजन, सति सरोवर इक नुहाइंदा। एकँकारा परदे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि निरँजण दीपक जोती आया जगण, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अबिनाशी करता रखे लज्जण, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। श्री भगवान नाम निधान पाए सगन, हथ्थ

हथ्थ नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म देवे वस्त अमोल भगत किते ना जाए मंगण, पूरी आसा तृप्त कराइंदा। आत्म चाढ़े साची रंगण, रंग इक्को इक वखाइंदा। करे खेल सूरा सरबँगण, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। नाद अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी वज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, घर साचे मेल मिलाइंदा। दर घर साचा सच दुआर, प्रभ सरन मिली सरनाईआ। सतिगुर दाता देवणहार, जुग जुग वेस वटाईआ। गुर गुर खेल अगम्म अपार, गुर करता आप कराईआ। भगत भगवान लए उभार, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। साचे सन्तां करे प्यार, सति सतिवादी इक्को करे पढ़ाईआ। गुरमुखां खोल्ह्े बंद कवाड़, बजर कपाटी पर्दा लाहीआ। गुरसिखां देवे सच दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। चरण कँवल सचखण्ड हरि सतिगुर आप जणाइंदा। चरणां हेठां दबाए कोटन ब्रह्मण्ड खण्ड रवि ससि नज़र कोए ना आइंदा। इक्को इक जणाए सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा । जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, आप आपणा मेल मिलाइंदा। शब्द अगम्मी साचा छन्द, ढोला सोहला आप सुणाइंदा। खुशी करे बंद बंद, बहत्तर नाड़ी खोज खुजाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंड, हरि शब्दी गुर प्रनाइंदा। दूई द्वैती माया ममता हउमे हंगता ढाहे कंध, सच सुच इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण प्रीती साची रीती जुग जुग आप चलाइंदा। चरण प्रीती सच टिकाणा, दो जहान मिले वड्याईआ। शब्दी गुर मिल्या माणा, गुरमुख साचे लए उठाईआ। किसे हथ्थ ना आवे राजा राणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जगत विद्या होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहाना, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। अन्दर वड़ वड़ ध्यान लगाणा, ध्यानी ध्यान ना कोए जणाईआ। नैण मूंद ना मिले भगवाना, अठ्ठे पहर दिवस रैण हरि मन्दिर रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सरन दए सरनाईआ। चरण कँवल साची सरनाई, सरनगति आप जणाइंदा। सुरत शब्द होए कुड़माई, घर साचे मेल मिलाइंदा। एका मन्दिर धी जवाई, सौहरे पेईए खेल कराइंदा। आत्म सेजा वेखे चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। निर्मल दीआ इक जगाई, जोती जोत डगमगाइंदा। अनहद रागी राग अलाई, छत्ती राग ना कोए अल्ह्ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सच प्रीती इक समझाइंदा। सच प्रीती साची ओट, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, माया ममता मोह मिटाइंदा। पंज तत्त नगारे लाए चोट, शब्दी डंका हथ्थ उठाइंदा। पावे सार साचे कोट, महल अटल वेख वखाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। आदि जुगादि जुगा

जुगन्तर सतिगुर पूरा इक्को बहुत, बिन गुर शब्दी सतिगुर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल उपर धवल, सच प्रीती इक बणाइंदा। सच प्रीती बणे मात, हरि मनसा पूर कराईआ। आत्म परमात्म देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे मार झात, सेज सुहञ्जणी इक्को खाट, बिन पावा चूल टिकाईआ। निरगुण सुत्ता कमलापात, नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए आपणा घर, घर घर विच पर्दा लाहीआ। गुरमुख तेरा साचा घर, घर घर विच आप बणाया। नौ दुआरे पार कर, सुखमन टेडा पन्ध मुकाया। ईड़ा पिंगल डिगे दड़, सिर सके ना कोए उठाया। डूँघी भँवरी खेल कर, काया कवरी खोज खुजाया। सतिगुर पूरा एका हरि, आप आपणी दया कमाया। निझर झिरना जाए झिर, बूँदी बूँद बूंद टपकाया। जोत निरँजण प्रकाश कर, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण प्रीती साची रीती, नाता तोड़े मन्दिर मसीती, जिस जन हरि हरि नज़री आया। हरि हरि सच्चा इक्को दाता, आदि जुगादि समाईआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां सुणावे आपणी गाथा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। नाता तोड़े कलम दवाता, शाही मिले ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म वेखे ख़ाता, पारब्रह्म ब्रह्म फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण पुछे वाता, घर मन्दिर फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, गुरसिख उठाए गोद जिउँ बालक पिता माता, सिर समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। एथे ओथे बज्झे सच्चा नाता, ना कोई तोड़े ना तोड़ तुड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुरमुख तैनूं टेकण मथ्था, अद्धविचकार बैठे सीस निवाईआ। थिर घर तेरा खेल तमाशा, गुर शब्दी रंग चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे पुरख अकाल भरवासा, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। आवण जावण लख चुरासी मात गर्भ जून अजूनी टुट्टे साका, जगत साक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, चरण सरन इक जणाईआ। भाणा वरते बेपरवाह, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। नूरी नूर नूर खुदा, जलवा ज़हूर रिहा वखाईआ। कादर करीम खेल करा, कुदरत वेखे थाउँ थाईंआ। बैऐब खुदाई फेरा पा, पीर पैगम्बर रिहा उठाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक रिहा हिला, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। तेई अवतारां रिहा समझा, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। भगत अठारां रिहा जगा, हुक्मी हुक्म इक सुणाईआ। गुर दस नाल मिला, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर बहा, दर्दी दर्द रिहा वंडाईआ। त्रैगुण माया डण्डा ला, रजो तमो सतो रिहा जगाईआ। पंज तत्त वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, चारे वेदां आप जगाइंदा।

शास्त्र सिमरत खोल्ह कवाड़ा, भेव अभेदा आप समझाइंदा। लेखा जाण पुराण अठारां, अठारां ध्याए वंड वंडाइंदा। अञ्जील कुराना वेख अखाड़ा, उम्मत उम्मती नाच नचाइंदा। खाणी बाणी हो उज्यारा, धुर संदेसा इक जणाइंदा। गुर का शब्द ना किसे विचारा, सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अन्धेरा छाइंदा। तीर्थ अठसठ रोवण ज़ारो ज़ारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पर्दा कोए ना पाइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआला धूंआँधारा, नूरी नाम नज़र किसे ना आइंदा। मस्जिद मसीत हाहाकारा, हक़ मसला ना कोए पढ़ाइंदा। गुरुदुआर ना कोए जैकारा, नानक गोबिन्द रंग ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग खेल हरि अवल्ला, आदि जुगादि कराईआ। कलिजुग अन्त चार कुण्ट पए तरथल्ला, धरनी धरत धवल हिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे ना पकड़े कोई पल्ला, सगला संग ना कोए निभाईआ। नाता तुटे राणी अल्ला, हू हू नाअरा ना कोए लाईआ। साध सन्त होए झल्ला, हरि जू झलक ना किसे वखाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा शब्द अगम्मी बोलणहारा हल्ला, दो जहानां लए हलाईआ। हरि का भाणा किसे ना रोका ना मल्ला, हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग नित नवित्त फेरा पाईआ। नित नवित्त श्री भगवान, आदि जुगादी खेल कराइंदा। कलिजुग कूड़ होया प्रधान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। ना कोई रय्यत ना राज राजान, ग़रीब निमाणयां गले ना कोए लगाइंदा। घर घर अन्दर वड़या शैतान, मन वासना जगत नचाइंदा। नानक गोबिद दे के गया ब्यान, सच संदेसा जगत जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, महाबली नज़र किसे ना आइंदा। सम्बल वसे धाम मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। सृष्ट सबाई होए वैरान, वैरी घर घर आप उठाइंदा। बिन सतिगुर पूरे किसे ना करे कोई पहिचाण, सीस हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। वेखो छेती छेती खेल करे भगवान, दूर पैंडा नेड़े हो हो जीव जंत समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग कूड़ पसारा वीह सौ वीह बिक्रमी करे पार किनारा, सतिजुग साचा सच सच दृढ़ाइंदा। हरिसंगत तेरा सच सिँघासण, दो जहान मिले वड्याईआ। हरिसंगत तेरा मेल पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता रंग रंगाईआ। हरिसंगत तेरा निरगुण होया साथण, सरगुण वज्जे वधाईआ। हरिसंगत तेरा पूजा पाठण, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। हरिसंगत तेरा तीर्थ ताटन, गुर चरण सरोवर सच्चा नुहाईआ। हरिसंगत लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी अकाशण, मण्डल मण्डप डेरा ढाहीआ। हरिसंगत लेखा लग्गे पवण सुआसण, नित नवित्त जो रहे गाईआ। हरिसंगत सतिगुर वसे तेरे पासण, अन्दर बाहर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

३४० १३

आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सगला संग, सतिगुर पूरा आप निभाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े रंग, रंग नज़र किसे ना आइंदा। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, हरि मन्दिर आप टिकाइंदा। शब्द अनादी इक मृदंग, बिन तार सितार वजाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। चाल रखी इक बिहंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वड वड्याइंदा। हरिसंगत तेरा वड महल्ला, महिफ़ल हरि जू आप लगाइंदा। नूर इलाही इक्क इकल्ला, परवरदिगार फेरा पाइंदा। वसणहारा जला थला, समुंद सागर डूँग्घी कन्दर फोल फुलाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले फड़ाए पल्ला, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। सच संदेस नर नरेश एको घल्ला, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत दुआर इक वसाइंदा। संगत दुआरा उच्च अगम्म, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, तारा मण्डल ना कोए वड्याईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए वखाईआ। ना कोई जननी ना कोई जन, ना कोई पिता ना कोई माईआ। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई खाणी बाणी करे पढ़ाईआ। ना कोई तत्त ना कोई तन, मन मति बुध ना वखाईआ। ना कोई राए धर्म देवे डंन, चित्रगुप्त ना हिसाब लगाईआ। ना कोई काल देवे भन्न, लाड़ी मौत ना कोई प्रनाईआ। महाकाल सेवा कर कहे धन्न धन्न, हरिसंगत तेरी वड वड्याईआ। जिन्हां हरि का नाउँ सुणया अन्तर आत्म कन्न, दोए सरवण सार ना राईआ। कूड़ी क्रिया ठीकर दित्ता भन्न, भाण्डा भरम तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरी लोड़े सच सरनाईआ। सतिगुर पूरा हरिसंगत सरन, सरन संगत आप जणाइंदा। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नैण पर्दा लाहइंदा। नाता तोड़ मरन डरन, चरण कँवल जोड़ जुड़ाइंदा। दीन दयाल ठाकर सुआमी तरनी तरन, तारनहारा खेल कराइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँचां नीचां एका घर जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत नाता आप बणाइंदा। हरिसंगत नाता सर्ब सुखवन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरमुख सखी सतिगुर पूरा मिले कन्त, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। इक्को नाउँ इक्को निरँकार इक्को मंत, इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लेखा देवे धुरदरगाहीआ। हरिसंगत लेखा धुर दरगाह, धुरदरगाही आप चुकाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, गुर शब्दी फेरा पाइंदा। सतिगुर शब्द शहिनशाह, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सेवा ला, पंज तत्त माण वड्याइंदा। अन्तिम सब नूं करे सुआह, तन ख़ाकी नज़र कोए ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिगुर सच्चा इक अख्वा, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, नाम

डंका इक वजाइंदा। जन भगतां सोई सुरती दए जगा, नाद तूरत आप सुणाइंदा। अकाल मूर्ती रूप वखा, माया ममता मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग निभाइंदा। हरिसंगत तेरा साचा मीत, मित्र प्यारा हरि अख्वाईआ। सतिजुग चलाए साची रीत, चार वरन दए सरनाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ ध्यान ना कोए लगाईआ। इक्को इष्ट हस्त कीट, पुरख अकाल नज़री आईआ। खेल कराए साहिब अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। आदि जुगादी रहे अतीत, त्रैगुण अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लहिणा दए चुकाईआ। हरिसंगत लेखा पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश दया कमाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी मेल मिलाइंदा। अन्दर वड़ के जाणे मित्तगत, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। नाम बीजे साचे वत, पत डाली फुल्ल महकाइंदा। मेल मिलाए कमलापति, कँवल नैण अंग लगाइंदा। अन्त भगवन्त गुरमुख सन्त सचखण्ड दुआरे जाइण वस, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे आत्म दान, परमात्म करे अन्त कल्याण, ब्रह्म पारब्रह्म आपणे विच समाइंदा।

सन्त साध मंगण भिक्ख, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सीस निवाइण मुन रिख, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। कर किरपा जिस देवे आपणा हिस्स, इक किणका नाम झोली पाईआ। उह जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर मारन धाही पिट पिट, आपणा आप गंवाईआ। मन वासना वेखण चित, सुरती शब्द ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा कर किरपा जे देवे लिख, लेखा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, सो भिखारी श्रृंगार कोए ना लाईआ। साध सन्त धूढ़ी रमाइण ख़ाक, भस्म तन हंढाईआ। गुफ़ा अन्दर वड़ वड़ रहे झाक, झाकी नज़र कोए ना आईआ। मन्दिरां अन्दर बैठे कर के बंद ताक, बंद ताकी ना कोए खुल्हाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा कर किरपा बणाए आपणा साक, झाती आत्म परमात्म पाईआ। तिस देवे तन नज़ात, निज लेखा इक वखाईआ। सो साध सन्त रसना जिह्वा प्रभ दी सिफ्त सलाही गायण बात, तन श्रृंगार ना कोए लगाईआ। जुग चौकड़ी साध सन्त, कोटन कोटि ध्यान लगाइंदा। जुग चौकड़ी मणीआं मंत, मंत्र नाम सर्ब दृढ़ाइंदा। कर किरपा जिस नूं मेले हरि जू कन्त, सो सुघड़ सुआणी गल लगाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक समझाइंदा। हरि का भेव ना पाए कोई पंडत, चौदां विद्या हथ्थ ना आइंदा।

सो साध सन्त दोए जोड़ प्रभ अग्गे करे मिन्नत, हार शृंगार ना कोए लगाइंदा। जो साध सन्त करे अरदास, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। अठ्ठे पहर रखे प्यास, प्रभ मिलण दी तांघ जणाईआ। जिस किरपा कर बणाए आपणा दास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखे लाए पवण सुआस, पवण पवणां वेख वखाईआ। माणस जन्म करे रास, मनुख देवे आप वड्याईआ। सो साध सन्त प्रभ दुआरिउँ ख़ाली झोली डाह मंगे दात, हार शृंगार ना कोए लगाईआ। जो साध सन्त करे अर्ज़, आरज़ू इक्को इक रखाइंदा। गोबिन्द ढोला गाए बिन ताल तर्ज़, आत्म परमात्म ध्यान लगाइंदा। सतिगुरू पूरा आपणा करे हक़ फ़र्ज़, हकीकत दए जणाईआ। नाता तोड़ अर्श फर्श, काया कुरा दए वखाईआ। आबेहयात मेघ बरस, हिरस हवस दए मिटाईआ। दीन दयाल कर तरस, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। सो साध सन्त प्रभ सरनाई डिगे निधड़क, लोक लाज ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हार शृंगार हथ्थ ना किसे रखाईआ। साध सन्त कोटन कोटि, जुगा जुगन्तर माण दिवाइंदा। आपे वेखे आलणयों डिग्गे बोट, कर किरपा गोद बहाइंदा। नंन्ही नंन्ही निर्मल जोत, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। इक्को शब्द दे के कहे बहुत, बौहड़ी हाल ना कोए सुणाइंदा। सो सन्त जिस दा निकलया अन्दरों खोट, प्रभ चरणां ढह ढह शुकर मनाइंदा। लेखा जाणे ओत पोत, साधू हार शृंगार ना कोए वड्याइंदा। हार शृंगार ना किसे हथ्थ, साध सन्त रहे कुरलाईआ। इक्को इक पुरख समरथ, शहिनशाह शाह सच्चा पातशाहीआ। सचखण्ड दुआरे ताज सीस लए रख, लोकमात वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गौण जस, सो हार शृंगार आप लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द लख चुरासी जिस दे वस, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। बोध अगाध महिमा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील करान अन्त ना पाईआ। सो साहिब सुल्तान वड मेहरवान सदा अनडिठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, सच शृंगार आप कराईआ। सच शृंगार करे भगवान, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। सब नूं देवणहारा दान, दाता दानी आप अख्वाइंदा। भूपत भूप राज राजान, सच संदेसा नर नरेशा ज़िमी असमानां आप सुणाइंदा। सो जाणे जिस अन्तर पेखा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेडा, खेल अवल्लड़ी आप समझाइंदा। आपे जाणे आपणा लेखा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। सीस ताज जगदीश आदेसा, हार शृंगार नर निरँकार इक्को इक लगाइंदा।

❈ २४ मग्घर २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह कतोवाल ज़िला गुरदासपुर ❈

दाता दानी दयावान, श्री भगवान इक अख्वाइंदा। भगतां भगती देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जुग चौकड़ी सच निशान, निरगुण सरगुण मात झुलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महान, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, हरिजन मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म दे ज्ञान, भेव अभेद खुल्हाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर पहिचाण, नाम रंगण इक चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत भगवान सच्चा संग, सदा सदा रखाईआ। जुग चौकड़ी देवे अनन्द, अनन्द अनन्द वड्याईआ। माणस जन्म ना होए भंग, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नंगी होण ना देवे कंड, समरथ बेपरवाहीआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ ढोला इक जणाईआ। जगत विकार करे खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा नाम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा थाउँ थाईंआ। हरिजन लेखा अगम्म अथाह, हरि सतिगुर आप चुकाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, जुग जुग बेड़ा मात चलाइंदा। नाम निधाना दए सलाह, साची सिख्या इक समझाइंदा। आत्म परमात्म भेव खुल्हा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। अमृत जाम सच प्या, सरोवर इक्को इक नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला एका एक, एकँकार आप मिलाईआ। एथे ओथे साची टेक, समरथ पुरख वड्याईआ। काया बुद्धि करे बबेक, ववेकी रूप वखाईआ। माया अग्नी तत्त ना लाए सेक, त्रैगुण पोह ना सके राईआ। निर्धन सरधन करे हेत, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाउ मेला गुर, गुर सतिगुर आप मिलाइंदा। लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर मस्तक खोज खुजाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त पुरख अबिनाशी जाए बौहड़, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़े घोड़, दो जहानां आप दौड़ाइंदा। दरगाह साची लावे सच्चा पौड़, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। वेखणहारा मिठ्ठा कौड़, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन जागे वड वड भाग, वडभागी दया कमाईआ। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हँस बुद्धि ना होए काग, काग हँस रूप वटाईआ। जगत तृष्ना विच्चों काढ, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। अन्तर अन्तर करे लाड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। हरिजन लेखा सदा अलेख, लिख्त विच ना आइंदा। जिस दे पिच्छे पुरख अबिनाशी धरे भेख, लोकमात वेस वटाइंदा। पूरब जन्म दी मेटे रेख, रेखा आपणी फिर बदलाइंदा।

वेखणहारा काया खेत, गृह मन्दिर फोल फुलाइंदा। डूंग्घी कन्दर जाणे भेत, पर्दा आप चुकाइंदा। सदा सुहेला करे हेत, नित नवित्त वेख वखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म खेले खेड, घर घर विच साची खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव जणाइंदा। हरिजन हरि जू खोल्हे भेव, पर्दा आप उठाईआ। दरस दखाए वड देवी देव, देवत सुर सीस झुकाईआ। लेखा जाणे धुर दी सेव, फल इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाहो हरि हरि मेला, हरि मिलणी आप कराइंदा। खेले खेल गरू गुर चेला, चेला गुर वेख वखाइंदा। सति स्वामी सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। वसणहारा सदा नवेला, निज घर आपणा डेरा लाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, आवण जावण फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा पार कराइंदा। हरिजन उतरे पार, पार उतारा आप कराईआ। किरपा कर हरि निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। गृह मन्दिर जोत उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मेल मिलावा कन्त भतार, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख चाढ़े रंग चलूल, चिहन् चक्र ना कोए बणाइंदा। आदि जुगादि ना जाए भूल, अभुल खेल कराइंदा। पूरब जन्म चुकाए मूल, पिछला लेखा झोली पाइंदा। प्रेम वैराग बरसे फूल, बरखा इक्को नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन सच सच वड्याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। घर मन्दिर वज्जे वधाई, सोभावन्त सोभा पाइंदा। सुरत शब्द होए कुड़माई, कुड़म कुड़मेटा इक्को नज़री आइंदा। सौहरे पेईए रंग वखाई, रंगण आपणे नाम चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचा आप मिलाइंदा। हरिजन मिल्या अन्दरे अन्दर, घर घर मेल मिलाया। बजर कपाटी तुटा जन्दर, पर्दा द्वैती आप उठाया। भाग लगाए अन्धेरी कन्दर, निरगुण नूर जोत रुशनाया। मन वासना मारे बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन वेखे आपणे नैण, नैण मुँधारी दया कमाइंदा। रसना कोए ना सके कहिण, कह कह अन्त कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि चुकाए लहिण देण, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणा घर वखाइंदा। हरिजन वेख हरि का घर, घर घर विच करे रुशनाईआ। आदि जुगादि चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। कृपाल किरपा देवे कर, दयाल दया कमाईआ। काल

३४५ १३

ना अग्गे सके खड़, बैठा मुख भुआईआ। महाकाल मंगे दर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अबिनाशी करता सब नूं देवणहारा वर, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। हरिजन विच्चों लए फड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, महल अटल करे रुशनाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, पर्दा उहला ना कोए जणाईआ। सोहँ अक्खर जो जन रहे पढ़, पढ़या सुणया लेखे लाईआ। हरिजन हरि हरि वसण इक्को घर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल कर, निहकलंक वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा दए चुकाईआ। हरिजन तेरा चुक्के लहिणा, पूरब वेख वखाइंदा। सति सरूपी वस्त्र गहिणा, तन भूशन इक जणाइंदा। सतिगुर पूरे मन्नणा कहिणा, भुल्ल कदे ना जाइंदा। सरन सरनाई साची बहिणा, ग़रीब निमाणयां दया कमाइंदा। लख चुरासी खाए डाइणा, लाड़ी मौत रंग चढ़ाइंदा। कूड़ी क्रिया कूड़े वहण वहणा, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। प्रभ का भाणा सब ने कहिणा, सिर उपर ना कोए उठाइंदा। भगत भगवान घर साचे बहिणा, जिस घर दूजा नज़र कोए ना आइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कीती करनी ज़रूर चुकाए लहिणा, बिन दित्यां आपणा मुख ना गुरमुखां वखाइंदा। जिन्ना चिर ना देणा दित्ता, दो जहान ना कोए वड्याईआ। अन्त कोई ना निकले सिट्टा, साचा राह ना कोए वखाईआ। हज़ूर ज़रूर वांग मनसूर करे हित्ता, फ़ज़ूल गल्ल ना कोए सुणाईआ। दूई द्वैती आपणे विच छुपाए सब दा पता, हँकार विकार आपणी झोली पाईआ। गुरमुख प्यार करे मिठ्ठा, मिठत आपणा रंग चढ़ाईआ। पिछला देवे हिस्सा अनडिठा, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस भगवान दा गाउँदे रहे किसा, किस्मत आपणी उस दे हथ्थ फड़ाईआ। सो दीन दयाल ठाकर कृपाल जन भगतां वसे इक्को चिता, चित आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे दे आपणा शुकर मनाईआ। आपणी देवे वस्त नाम, सो नाम जो लिखण पढ़न विच ना आईआ। जिस नाम दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी होई ग़ुलाम, माण अभिमाण सर्ब मिटाईआ। जिस दा सिफ्त सालाही पीर पैगम्बर अमाम, नूरी जलवा दस्सदे गए निशान, निशाना हक़ ना कोए जणाईआ। सो नाम निधान जन भगतां प्याए अमृत जाम, काया जामा दए बदलाईआ। जिस नूं हुक्मे अन्दर जंगलां विच लभ्भदा फिरया राम, राम राम आपणा मुख छुपाईआ। सो साहिब देवे पैग़ाम, जिस दा परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी सार ना पाईआ। जिस दी साध सन्त भगत भगवन्त सूफ़ी करदे रहे कलाम, सो कलमे विच कदे ना आईआ। जिस दा हुक्मे अन्दर सर्ब नज़ाम, सो नाम इक्को हुक्म मनाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा देवे बिन दित्यां आपणी अक्ख ना सके

उठाईआ। बिन दित्यां शरमाए अक्ख, गुर नेत्र ना उपर उठाइंदा। जिंना चिर दरस ना देवे प्रतख, सतिगुर मात ना कोए अख्वाइंदा। जिन्ना चिर दो जहान ना लए रख, रखणहारा आप अख्वाइंदा। जिन्ना चिर आपणे अन्दर ना लवे ढक, स्वच्छ सरूपी पर्दा पाइंदा। सतिगुरू लोक लाज विच कदे ना कटावे आपणा नक्क, नकेल सब नूं नाम पाइंदा। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, अग्गे उधार ना कोए रखाइंदा। जिस नूं मार्ग दित्ता दस्स, तिस फड़ बाहों उपर चढ़ाइंदा। माला मणका कोई गुरमुख ना लए रट्ट, रट्टा सब दा आप मुकाइंदा। मेहरवान मेहर नज़र नाल निर्मल जोत करे प्रगट, प्रगट आपणा रूप वखाइंदा। वसणहारा घट घट, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। कोटन कोटि साध सन्त जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रहे नठ्ठ, बण पांधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कोटन कोटि अन्दर वड़ वड़ वासते रहे घत्त, वस्तू झोली ना किसे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बिन भगतां भेव ना किसे समझाइंदा। गुरसिख कहे प्रभ देवें की, तेरे हथ्थ की वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं रखां नींह, सतिजुग साचा राह चलाईआ। गुरसिख कहे लेखे लग्गे साढे तिन्न हथ्थ सीं, रविदास चम्यार मिले वड्याईआ। सतिगुर कहे मैं अमृत बरसां मींह, रुत्त बसन्ती इक वखाईआ। गुरसिख कहे की निर्मल करें जीअ, दुरमत्त मैल धवाईआ। सतिगुर कहे गुरसिख इक जाम प्याला पी, जिस पीत्यां एथे ओथे सुध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा खेल कराईआ। भगत कहे प्रभ तूं बड़ा झूठा, तेरा अन्त किसे ना पाया। शाह सुल्तानां हथ्थ फड़ाएं ख़ाली ठूठा, दर दर धक्का लाया। जुग चौकड़ी सब तों रिहों रूठा, अंगीकार ना किसे कराया। ठोकर मारें चारे कूटा, दहि दिशा डेरा ढाहया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पंज तत्त काया दे झूटा, अन्तिम फेर ख़ाक मिलाया। नाम बीज मंत्र सच्चा बूटा, निरगुण सरगुण राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक दस्स साचा वर, किस बिध आपणा खेल वखाया। पुरख अबिनाशी कहे भगत मीत, सच सच दृढ़ाईआ। मेरा खेल सदा अनडीठ, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव भेव ना राईआ। जिउँ भावे तिउँ चलावां आपणी रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। जगत नाता शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर मसीत, इट्टां पत्थर जोड़ जुड़ाईआ। इस दे अन्दर सब नूं रिहा घसीट, लुकवीं खेल ना किसे समझाईआ। जिस पाया तिस अन्तर बैठ अतीत, त्रै भवन धनी आपणा रंग चढ़ाया। कलिजुग अन्तिम दस्सी सच प्रीत, प्रीती इक्को इक समझाया। सोहँ ढोला गाउणा गीत, आत्म परमात्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वखाए इक्को घर, दूजा नज़र कोए ना आया। हक़ जाण ना कहे बेअन्त, अन्त हक़ विच आईआ। गुर अवतार बण नारी मिलदे रहे कन्त, चरण ध्यान

लगाईआ। दोए जोड़ करदे रहे मिन्नत, बेपरवाह बेअन्त तेरी वड्याईआ। उपर चढ़ के वेखण दी किसे ना पई हिम्मत, आपणा बल ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक़ इक्को इक नूर ज़हूर, जलवा आप खुदाईआ। दुद्ध लस्सी ना कोई पाणी, खाण पीण विच पातशाह कदे ना आईआ। जिस बणाई चार खाणी, अण्डज जेरज उतभज सेत्ज वंड वंडाईआ। सो पातशाह इक्को खावे पीवे प्रेम प्यार बण शब्द गुर हाणी, दूजी वस्त नेड़ कोए ना आईआ। खाणा पीणा लेटणा सौणा जागणा उठणा बहिणा एह खेल पुराणी, पंज तत्त होए कुड़माईआ। जिस जन सच्चे पातशाह दी जाणी, सच निशाना सो शहिनशाह सदा सद भरपूर रिहा सब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माझा गोका कोई ना दुद्ध, आपणा आप कर के बैठा सुद्ध, बुरा चंगा चंगा मंदा माढ़ा अच्छा बिन वच्छी वच्छा, आपणा सीर आपणे विच्चों आप प्रगटाईआ। जगत दुद्ध रसन स्वाद आत्म रस ना कोए वखाईआ ।

❇ २४ मग्घर २०१६ बिक्रमी नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर ❇

हरि ओट सतिगुर सरन, गुर मिले वड्याईआ। नाम चोट नेत्र हरन फरन, नाद धुन शब्द शनवाईआ। दीन दयाल ठाकर करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी जाणे जीवन मरन, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से तरनी तरन, भव सागर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। हरि भरवासा सतिगुर मीत, गुर गुर रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म खेल तमाशा पारब्रह्म ब्रह्म वेखे अतीत, सुरती शब्दी नाच नचाइंदा। पंज तत्त काया मन्दिर अन्दर खेल अनडीठ, कवरी भँवरी काज रचाइंदा। अमृत सरोवर निझर झिरना झिराए अतीत, कँवल नाभी आप छुपाइंदा। जिस जन बख्शे सच प्रीत, तिस आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरि जू आस सतिगुर मेल, गुरु गुर दया कमाईआ। जन्म जन्म दी बुझे प्यास नाता जुड़े गुरु गुर चेल, सज्जण सुहेल इक्को नज़री आईआ। जुगा जुगन्तर अचरज करे हरि जू खेल, बेअन्त बेपरवाह भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाईआ। आपणी करनी हरि करतार, आदि जुगादि कराइंदा। भगत वछल गिरवर गिरधार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए उभार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुगा जुगन्तर भगतन मीता, श्री भगवान दया कमाईआ। वखाए धाम इक अनडीठा,

३४८
१३

अनडिठड़ा पर्दा लाहीआ। एका नाद सुणाए शब्द अनादी लेखा जाणे अठारां ध्याए गीता, ज्ञान ध्यान ना कोए वड्याईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर ठांडा सीता, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। भगत भगवान सच प्रीता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग रंगाईआ। निरगुण हरि सरगुण दीन, दीनन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण खेल जिउँ जल मीन, जल मीन आपणा भेव खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण लेखा लोक तीन, त्रै त्रै आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण सरगुण आत्म परमात्म लए चीन, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग महीन, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। निरगुण सरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण खोल्ह दरवाजा, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। शब्द अगम्मी इक्को वाजा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सुरती शब्दी एका रागा, एका ताल वजाईआ। एका कन्त इक सुहागा, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। एका सोया एका जागा, एका आलस निंद्रा दए मिटाईआ। एका धोवे दुरमति दाग़ा, अमृत सरोवर इक नुहाईआ। एका हँस बणाए कागा, सरोवर इक नुहाईआ। इक्को भूप इक्को राजा, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जन भगतां रच रच आप काजा, करनी करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण रच रच काज, करता पुरख खेल कराइंदा। भगत भगवन्त शब्द अगम्मी मार आवाज़, बिन रसना जिह्वा सुणाइंदा। सच सुच दा सच समाज, साची सिख्या इक पढ़ाइंदा। मेल मिलावा मोहण माधव माध, मधुर धुन राग अल्हाइंदा। दूर दुराडा धुरदरगाही भगत दुआरे आए भाग, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जन्म कर्म दी बुझाए आग, तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कर, हरिजन हरिभगत भगवन्त आपणे रंग रंगाइंदा।

❉ २४ मग्घर २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह नया शाला ज़िला गुरदासपुर ❉

आत्मा उठ जाग, परमात्मा रिहा जगाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया धो दाग़, स्वच्छ सरूप वटाईआ। घर अन्धेरे जगे चिराग़, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। सुरती रूप ना रहे काग, कागों हँस रूप वटाईआ। लख चुरासी लग्गी आग, नव नौ सृष्ट हल्काईआ। कूड़ी क्रिया भरया जहाज़, माया ममता धक्का लाईआ। किसे ना उपजे सति वैराग, साध सन्त देण दुहाईआ। तीर्थ तटां अठसठां रहे भाग, आत्म सरोवर नहावण कोए ना जाईआ। वेख वेख खुशी मनावण जगत काज,

ब्रह्म पारब्रह्म सगन ना कोए मनाईआ। सुण सुण थक्के सरवण राग, शब्द अनादी धुन ना कोए सुणाईआ। अन्तर अन्तर कोई ना रखे लाज, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के कोई ना सुणाए शब्द बोध अगाध, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा सदा सद देवे इक्को दाद, दाता दानी हरि अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों काढ, आप आपणा मेल मिलाईआ। साची सेजा करे लाड, सुहञ्जणी सेज इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परमात्म आत्म रिहा उठाईआ। आत्म उत्तम उठ, उतर पूरब पच्छिम दक्खण हरि जणाइंदा। दहि दिशा पई लुट्ट, जगत अन्धेरा छाइंदा। गुर शब्द नालों सारे गए रुठ, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। अमृत जाम ना पीए कोए घुट, गोबिन्द रंग ना कोए चढ़ाइंदा। खाली भाण्डे नाम वस्त नहीं कुछ, पंज तत्त काया माटी खेह वखाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी सतिगुर पूरा आपे रिहा पुच्छ, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आप हिलाइंदा। आत्म परमात्म दए हिला, हिरस हवस सर्ब मिटाईआ। सच सुच्च दस्से इक्को राह, रहबर बणे नूर खुदाईआ। परवरदिगार पर्दा लाह, मुख नकाब दए उठाईआ। साचा सजदा दए करा, मुकामे हक़ इक रुशनाईआ। महिबूब मेला लए मिला, मिल मिल खुशी मनाईआ। सच सबूत दए जणा, वसल आपणे घर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म रिहा समझाईआ। आत्म परमात्म नेत्र खोल्ह, निज नेत्र आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे ढोल, सच सुच्च नज़र कोए ना आइंदा। आत्म परमात्म कोई ना जाए मौल, मल मल रंग ना कोए चढ़ाइंदा। उलटा करे ना कोई नाभ कौल, अमृत झिरना ना कोए झिराइंदा। चारों कुण्ट भेख पखण्ड धरनी धवल, धरत माण ना कोए पाइंदा। आदि जुगादी नूर इक अव्वल, आलमीन वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा देवण योग, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण मेल मिलाए धुर संजोग, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। एकँकारा भाग लगाए काया कोट, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश अन्दर कन्दर फेरा पाईआ। आदि निरँजण करे प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अबिनाशी करता कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। श्री भगवान आपे होए मोहत, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। पारब्रह्म लेखा जाण लोक परलोक, सच सलोक रिहा सुणाईआ। शब्द अगम्मी इक्को ओट, सचखण्ड निवासी भेव खुल्हाईआ। थिर घर खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परमात्म आत्म आत्म परमात्म पर्दा रिहा उठाईआ। आत्म परमात्म पर्दा चुक्क, दीन दयाल हुक्म मनाइंदा। पतिपरमेश्वर वेख मुख, कँवल नैण सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा

जुगन्तर नाम प्याला प्याए सदा मदहौश, खुमारी इक्को इक वखाइंदा। जिस दर्शन नूं जगत नेत्र रहे लोच, नैणां नज़र किसे ना आइंदा। जिहड़ा किसे ना आवे सोच, सोचयार भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म अन्तर आप उठाइंदा। आत्म उठ खोल्ह अक्ख, आख़र आप जणाईआ। निरगुण नूर वेख प्रतख, पारब्रह्म जोत रुशनाईआ। सब नालों हो के बैठा वक्ख, वक्खरी धार चलाईआ। रसना जिह्वा ना सके दस्स, बेअन्त वड वड्याईआ। इक्को देवे सच्चा रस, नव रस कम्म किसे ना आईआ। लख चुरासी कटे फास, मात गर्भ ना कोए भुआईआ। जुग जन्म दी पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए जणाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। सदा सुहेला इक इकेला एकँकारा हरि निरँकारा वसे पास, सदा स्वामी विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक जणाईआ। सच संदेसा नर नरेश, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया मिटे रेख, कलिजुग अन्त रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी सुंञा होए खेत, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। किरपा निधान सतिगुर पूरा जन भगतां देवे अन्तर भेत, बोध अगाध समझाइंदा। अन्तिम ढहे कलिजुग कूड़ी क्रिया कल्लर रेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, परमात्म इक्को इक जणाईआ। परमात्म वेख पंज तत्त नाता, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घेरा पाईआ। मन मति बुध करे हासा, सच सच ना कोए दृढ़ाईआ। आसा तृष्ना खेल तमासा, माया ममता नाच नचाईआ। मन वासना वड भरवासा, गुरमति ना कोए पढ़ाईआ। सच सुच्च ना पूजा पाठा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। बजर कपाट ना किसे पाटा, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट आया घाटा, कलिजुग आपणा बल वखाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार छड्ड गए साथा, सगला संग ना कोए निभाईआ। अग्गे कोई ना मेटे वाटा, जन्म मरन ना कोए कटाईआ। कलिजुग खेल बाज़ीगर नाटा, हरि स्वांगी स्वांग रचाईआ। जन भगतां देवे इक्को दाता, नाम निधान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म होए मेला, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। घर साचे सोहे गुरु गुर चेला, चेला गुर आप अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी आपे जाणे वक्त वेला, थित वार ना किसे समझाइंदा। भगत भगवन्त सज्जण सुहेला, नित नवित्त संग निभाइंदा। कलिजुग अन्तिम फिरे इकेला, अक्ल कल धारी वल छल आपणी धार जणाइंदा। दो जहान वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बेला, समुंद सागर पुरी लोअ आकाश मण्डल मण्डप खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, सोई आत्म सति परमात्म

सच संदेसा दे आप जगाइंदा। सतिगुर पूरा करे पार, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे श्रृंगार गुरसिख प्रनावण कदे ना आईआ। गुर सतिगुर सच्चा अन्तिम आपणी गोद लए उठाल, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। दरगाह साची दए बहाल, थिर घर आपणा चरण छुहाईआ। सचखण्ड वखाए सची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याईआ। एथे ओथे दो जहान करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। चरण प्रीती निभे नाल, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी गुर बणया दलाल, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। मेहर नाल मिटे दुःख, दर्द रहिण ना पाईआ। घर विच आए साचा सुख, सुख दुःख नाल वटाईआ। उज्जल करे जगत मुख, मुखड़ा नाम ध्याईआ। लेखे लग्गे मात कुक्ख, माणस जन्म मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चिन्ता सोग रोग तन कलेश दए गंवाईआ।

❇ २४ मग्घर २०१६ बिक्रमी सरूप सिँघ दे गृह मंगू पुर ❇

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप अल्लाइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वड मेहरवान, मेहर नज़र आप उठाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशान, सच दुआरे आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह दुकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। महल अटल ना कोए मकान, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा। इक इकल्ला नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेपहचान, जलवा नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी सो पुरख निरँजण, धुर दरबारी आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण आपे बणे सच्चा सज्जण, एकँकारा गंढ पुआईआ। आदि निरँजण एका नूर देवे साचा अञ्जण, अज्ञान अन्धेर ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता दर्द दूक्ख भय भञ्जण, श्री भगवान आदि जुगादि होए सहाईआ। पारब्रह्म दर घर साचे मनाए आपणा सगन, दूजा संग ना कोए रखाईआ। करे खेल सूरा सरबँगन, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे अगम्म, भेव कोए ना पाइंदा। आपणे अन्तर आपे जम्म, मात पित ना कोए बणाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। आपणा हुक्म आपे मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे जननी आपे जन,

दाई दाया रूप आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची खेल कराइंदा। दरगाह साची सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। परवरदिगार इक इकल्ला, नूरो नूर करे रुशनाईआ। निरगुण धार फड़ाए पल्ला, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। दो जहानां पावे सारा, भेव अभेद आप जणाइंदा। लेखा जाणे आपणी करनी कारा, करता पुरख आप अख्वाइंदा। आपे वणज आप वणजारा, हट्ट आपणा आप चलाइंदा। आपे वेखे विगसे वेखणहारा, आपे नज़र कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी सचखण्ड दुआर, सति सतिवादी आप कराईआ। वंडे वंड अगम्म अपार, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। जुग चौकड़ी कोए ना पाए सार, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्हे निरँकार, निरगुण आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। तख्त निवासी हो उज्यार, शाहो भूप हुक्म चलाईआ। हुक्मे अन्दर आपणा आप करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाईआ। दर घर मेला मेल मिलाए कन्त भतार, नारी नर रूप वटाईआ। पूत सपूता जाए सुत दुलार, शब्दी नाउँ रखाईआ। थिर घर साचा खोल्ह कवाड़, गुर शब्द दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर शब्दी सुत बहाईआ। शब्दी सुत छोटा बाला, थिर घर साचे आप बहाइंदा। आदि पुरख पुरख गोपाला, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाइंदा। आपणा मार्ग कर सुखाला, आपणी धार आप बणाइंदा। जोती नूर नूर उजाला, शब्दी शब्द रूप वटाइंदा। दोहां विचोला बण गोपाला, आप आपणा भेव चुकाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक सुहाइंदा। थिर घर करे खेल निराला, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाइंदा। दरगाह साची परवरदिगार, बेऐब नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक आसण लाईआ। दूसर ना कोए मीत मुरार, रफ़ीक नज़र कोए ना आईआ। करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड निवासी खोल्ह कवाड़, थिर घर देवे माण वड्याईआ। सुत दुलारा आप उठाल, सच संदेसा दए सुणाईआ। उठ मेरे लाडले लाल, हरि लालन लए जगाईआ। तेरी करां सदा प्रितपाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत रिहा समझाईआ। शब्द सुत कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सच्चा दातार, हउँ बालक तेरा अन्त कोए

ना पाइंदा। तूं वसें सचखण्ड धाम न्यार, मैं थिर घर तेरे चरणां डेरा लाइंदा। मैं धूढ़ी मंगां ख़ाक छार, मस्तक टिक्का इक रमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। सुत दुलारे साचे मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाईआ। तेरी चलावां साची रीत, रीतीवान आप अख्वाईआ। करां खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक समझाईआ। धुर संदेसा देवे आप, घर आपणे हुक्म मनाइंदा। सुत शब्द तेरा माई बाप, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। सच संदेसा सुण लै जाप, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सचखण्ड दुआरे थिर घर वणजारे नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए वखाइंदा। चरण कँवल तेरा साचा डेरा, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। थिर घर वसदा रहे खेड़ा, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हकीकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाइंदा। साची सिख्या श्री भगवान, आदि आदि आप जणाईआ। शब्दी सुत बाल अंञाण, अंञाणी बुध दए वड्याईआ। चरण कँवल बख्शे इक ध्यान, दूजी ओट ना कोए सरनाईआ। तेरे अन्दर मेरा मकान, मेरा मकान तेरा घर नज़री आईआ। निर्मल दीप जोत जगे महान, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। साहिब सतिगुर इक्को काहन, दूजा रूप ना कोए वटाईआ। दरगाह साची सच निशान, सति पुरख निरँजण इक वखाईआ। तख्त निवासी मेहरवान, सीस जगदीश एका ताज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव रिहा खुलाईआ। सुत कहे सुण मेरे दाते, हथ्थ तेरे वड्याईआ। थिर घर बज्झे सच्चे नाते, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। तेरी गावां इक्को गाथे, सोहँ सच पढ़ाईआ। ठाकर स्वामी पुरख समराथे, मेहरवान तेरी मंगां इक सरनाईआ। जुग चौकड़ी मेरे पूरे कर के घाटे, तोट कोए रहिण ना पाईआ। सदा सदा मेरे वसें साथे, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहरवान हरि दातार, दयावान दया कमाइंदा। शब्द सुत दे प्यार, माण ताण इक रखाइंदा। तेरा वखाए सच निशान, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी अंस बणाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी खोल्ह दुकान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी बन्धन पाइंदा। चारे बाणी बोल कल्याण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी झोली पावां दान, पंज तत्त काया चोला भाग लगाइंदा। आत्म परमात्म दे ज्ञान, बोध अगाधा राग सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पहिचाण, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। शब्द सुत तेरा सच मकान, घर घर अन्दर आप बणाइंदा। नाद धुन

सच्ची धुन्कान, अनरागी राग सुणाइंदा। अमृत रस पीण खाण, निझर झिरना आप झिराइंदा। निर्मल जोती कर परवान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाइंदा। सुत दुलारे चढ़या चा, चाउ घनेरा इक रखाईआ। श्री भगवान मिल्या सच मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जुग चौकड़ी देवे सच सलाह, मार्ग धंदे आपे लाईआ। नाउँ निरँकारा दए समझा, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। अक्खर अक्खर रूप वटा, लेखा लिख्त दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए जगा, जीवण जुगत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, सोहँ हँसा रूप वटाइंदा। तेरा मेरा इक रस दूजा रस ना कोए वटाइंदा। तेरा मेरा खेल अकथ, कथनी कथ ना कोए गाइंदा। तेरा मेरा इक्को रथ, जुग जुग वेस वटाइंदा। तेरा मेरा पूजा पाठ, मंत्र इक्को नाम दृढ़ाइंदा। तेरा मेरा तीर्थ ताट, चरण सरोवर इक नुहाइंदा। तेरा मेरा खेल तमाश, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां रंग चढ़ाइंदा। तेरा मेरा भोग बलास, लख चुरासी आत्म सेजा सेज सुहञ्जणी इक हंढ्ढाइंदा। तेरा मेरा खेल मण्डल रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। साची वस्त शब्दी सुत, आदि आपणी झोली पाईआ। सीस निवा अबिनाशी अचुत, ढह प्या सरनाईआ। जुग चौकड़ी मौले रुत्त, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। भाग लगाए त्रैगुण माया पंज तत्त काया बुत्त, मन मति बुध अंग लगाईआ। सरगुण अन्दर निरगुण उठ, निराकार करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। साची कार करां जग, हरि शब्दी आख सुणाइंदा। सरन सरनाई तेरी गया लग्ग, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। लख चुरासी वासा रखां उपर शाह रग, नौ दुआरे जगत वासना फिराइंदा। त्रैगुण पोह ना सके अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए जणाइंदा। नित नवित्त तेरा करां हज्ज, हुजरा इक्को नजरी आइंदा। शब्द अगम्मी ताल जाए वज्ज, बिन तन्द सतार हिलाइंदा। कवण वेला हरि जू पर्दा लए कज्ज, दोए जोड़ मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सुण सुत मेरे साचे लाल, हरि तेरे वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी चलां तेरे नाल नाल, सरगुण निरगुण खेल कराईआ। हुक्मे अन्दर तेई अवतार, सेवा सच सच लगाईआ। हुक्मे अन्दर भगत अठार, अठ्ठ दस दए वड्याईआ। हुक्मे अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद यार, यारी यारां नाल रखाईआ। हुक्मे अन्दर नानक गोबिन्द धार, शब्दी शब्द रंग चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी थिर रहे ना विच संसार, आवे जावे वाहो दाहीआ। वेद पुराण शास्त्र

सिमरत लेखा लिख्त लेख महान, गीता ज्ञान नाल मिलाईआ। अञ्जील कुराना दे दे दान, हदीस तीस बतीस पढ़ाईआ। खाणी बाणी धुर निशान, नाम निशाना इक्को लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ सारे मंगण इक्को दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो श्री भगवान, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। सुत शब्द कर ध्यान, सच सच दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी आपणा राह जणाईआ। शब्दी सुत सच जणाई, जानणहारा आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल बेपरवाही, पर्दानशीं आपणा पर्दा आप उठाइंदा। लोकमात आए चाईं चाईंआ। जोती जामा वेस वटाइंदा। नानक गोबिन्द आसा पूर कराई, तृष्ना सब दी आपणे विच छुपाइंदा। मुहम्मद अहिमद रिहा ध्यान लगाई, चौदां तबकां डेरा ढाइंदा। ईसा कहे मेरा खुदावंद सच्चा माही, पिता इक्को नज़री आइंदा। मूसा रोवे मारे धाहीं, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। वेद व्यासा लेखा लिख लिख गया समझाई, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सद चले आपणी सच रज़ाई, हुक्मे विच कदे ना आइंदा। भगतां फड़े श्री भगवान बांही, फड़ बाहों गले लगाइंदा। सन्तां देवे साचा थाईं, चरण कँवल इक जणाइंदा। गुरमुखां रखे ठंडीआं छाईं, अग्नी तत्त ना कदे वखाइंदा। गुरसिखां बणे पिता माई, बाल अंञाणे गोद बहाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, उतर
३५६ १३ पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाइंदा। सुत ३५६ १३
शब्द दोए जोड़ सीस, चरणां उपर टिकाईआ। तेरा खेल हरि जगदीश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर सरगुण रूप पीसण लैणा पीस, जीवण जुगती चक्की मात चलाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात कलमा नबी बणा रफ़ीक, लेखा लिख लिख देण जणाईआ। तेरा निशाना इक्को इक ठीक, हरि ठाकर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जिस वेले मेला लएं मिलाईआ। शब्द सुत तेरा चुक्के लहिणा, कलिजुग अन्तिम आप चुकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां फड़ वखाए साचे नैणां, नैण नैण नाल मिलाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब कूड़ी क्रिया डेरा ढहिणा, अन्त रहिण ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन इक दुआरे रल के बहिणा, पुरख अकाल इक्को इष्ट वखाईआ। गोबिन्द मन्नणा पए सब नूं कहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरि का भाणा सिर ते कहिणा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। लख चुरासी डेरा ढहिणा, घर घर डंक वजाईआ। अञ्जील कुरान इक दूजे दे नाल खहिणा, शास्त्र सिमरत करन लड़ाईआ। गुरमुख विरला लोकमात रहिणा, जो हरि चरण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत देवे वर, तेरे घर वज्जे वधाईआ। शब्द सुत तेरा वज्जे डंक, डंका

तेरे हथ्थ फड़ाईआ। एका माण वखाए राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म जोती शब्दी लाए तनक, रसना जिह्वा राग ना कोए सुणाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के आप भुआए मन का मणक, मन वासना दए खपाईआ। गुरसिख मिलाए जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाईआ। लेखा जाणे वासी पुरी घनक, निहकलंक वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, पिता पूत रिहा समझाईआ। पूत कहे मैं तेरा पुत्त, तेरी ओट रखाईआ। कवण वेला मेरी सार लएं पुच्छ, पछोतावा रहे ना राईआ। मेरे हथ्थ नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। चरण कँवल सीस रिहा झुक्क, मिले सच सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तेरी धारों पवां उठ, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। मेहरवान हो के जावां तुठ, अनमुलड़ी दात वरताईआ। लोकमात सुहावां तेरी रुत्त, नव नौ ख़ुशी मनाईआ। पूजा रहे ना पंज तत्त काया बुत्त, शब्दी गुर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा श्री भगवान वड मेहरवान, इक्को इक जणाईआ।

३५७
१३

✻ २५ मग्घर २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह हरनाम पुरा ✻

श्री भगवान तेरा हुक्म सति, शब्द सुत सीस झुकाईआ। दो जहानां दे इक्को मति, सृष्ट सबाई सच पढ़ाईआ। भाग लगा साचे तत्त, तत तत नाल मिलाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त दे सुकाईआ। इक सुणा साची गाथ, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वसे साथ, सगला संग निभाईआ। एथे ओथे चलाए सच्चा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दास, बण सेवक सेव कमाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे तेरी आस, नेत्र नैण नैण उठाईआ । सचखण्ड निवासी तेरा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। परवरदिगार तेरा सच प्रकाश, जलवा नूर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्दी गुर सीस निवाईआ। शब्दी गुर मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तख़्त निवासी सूरे सरबँग, तेरा धुर फ़रमाणा मोहे भाइंदा। नाम अगम्मी वज्जे मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। लेखा जाण जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भेव चुकाइंदा। कलिजुग मेट भेख पखण्ड, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। ज़ात पात वरन बरन कूड़ी वंड, आत्म परमात्म घट घट खेल कराइंदा । सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी एका छन्द, अक्खर वक्खर मोहे भाइंदा। निज घर देणा सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, दोए जोड़ मंग मंगाइंदा।

लख चुरासी पए ठंड, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाइंदा। पंज तत्त काया चोली रंग, तुध बिन अवर ना कोए रंगाइंदा। अन्दर बाहर वस संग, इक्को ओट तकाइंदा। तुध बिन जीव जंत होए नंग, पर्दा नाम ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्दी सुत दर तेरे झोली डाहइंदा। ख़ाली झोली दे भर, कलिजुग अन्तिम आस रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए वर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। निरभउ चुका भय डर, भ्यानक रूप रहे ना राईआ। साचा घाड़न लैणा घड़, गगन मण्डल तेरी वड्याईआ। घट घट अन्दर वेखणा चढ़, घर घर कुण्डा लाहीआ। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा साचे दर, दर दरवाजा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे इक अलख, अलख अगोचर मंग मंगाइंदा। निरगुण रूप हो प्रतख, जलवा तेरा मोहे भाइंदा। कलिजुग अन्तिम पत्त लैणी रख, तेरे चरण ध्यान लगाइंदा। गुर अवतार मार्ग दए दस्स, पीर पैगम्बर भेव खुल्हाइंदा। निरगुण निरवैर अजूनी रहित परवरदिगार अन्तिम आए नठ्ठ, बेमुकाम हक़ मुकामे खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। श्री भगवान हो मेहरवान, शब्दी सुत जणाईआ। किरपा करे नौजवान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी वेख वखाए दो जहान, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। भगत भगवान लए पहचान, जोती जाता मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म देवे दान, दाता दानी होए सहाईआ। घर घर नज़री आए काहन, सीस जगदीश मुक्ट सुहाईआ। दो जहान ढोला एका गाण, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या देवण जोग, हरि जुगती आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ी क्रिया भोगया भोग, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। सृष्ट सबाई होया विजोग, हरि सतिगुर कन्त ना कोए हंढ्ढाइंदा। घर घर लग्गा हउमे रोग, माया ममता नाच नचाइंदा। बिन भगत पुरख अकाल कोई ना रखे ओट, लख चुरासी जीव जंत पढ़ पढ़ वक्त लँघाइंदा। किसे ना निकले मन वासना खोट, मन का मणका ना कोए भुआइंदा। अनहद शब्द ना वज्जे चोट, धुन आत्मक राग ना कोए अलाइंदा। होए प्रकाश ना निर्मल जोत, जोती नूर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जणाइंदा। सुत दुलारे शब्दी रूप, तेरा रंग नज़र ना आईआ। शाह पातशाह शहिनशाह तेरा इक्को भूप, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार जिस सुहाई रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी मात महकाईआ। अन्तिम निरगुण सरगुण लए पुच्छ, बचया

कोए रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया बीस बीसा लए लुट्ट, हरि जगदीशा वड वड्याईआ। भगत भगवान इक दुआरे पए उठ, मार्ग सच्चा सच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप समझाईआ। साचा मार्ग लग्गणा मात, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दात, एकँकार झोली भराइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। अबिनाशी करता बण बण दासी दास, सेवक सेवा रूप वटाइंदा। श्री भगवान शाहो शाबास, साचे तख्त सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे खेल तमाश, निरगुण सरगुण पर्दा लाहइंदा। भगत भगवन्त पूरी करे आस, आसा आसा विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे जग, जग जीवण दाता वड वड्याईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटे कग्ग, सतिजुग साचा हँस रूप वटाईआ। माया ममता जूठा झूठा ठीकर जाए भज्ज, सच सुच्च दए वड्याईआ। मक्का काअबा कोई ना करे हज्ज, हुजरा हक़ इक वखाईआ। चार वरनां पर्दा कज्ज, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। सच वखाए सरोवर तट्ट, दुरमत्त मैल धवाईआ। लेखा चुकाए चौदां लोक चौदां तबक निरगुण सरगुण हट्ट, बेपरवाह फेरा पाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, सृष्ट सबाई एको ढोला गाईआ। आत्म परमात्म आवे रस, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। हिरदे अन्दर हरि जू वस, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। भगत मिलावा नठ्ठ नठ्ठ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, शब्दी तेरा डंक वजाईआ। शब्द गुर वज्जे डंक, डौरु हरि जू हथ्थ उठाइंदा। एका रंग रंगाए राउ रंक, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। भगत भगवान सुहाए बंक, बंक दवारी सोभा पाइंदा। लेखा जाणे बार अनक, अक्ल कल आपणी धार चलाइंदा। फेरनहारा मन का मणक, मन का मणका आप भवाइंदा। जोती जाता लाए तनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, बीस बीसा कूड़ी क्रिया चुक्के डर, सति सति सति साचा राह जणाइंदा। कर किरपा लाए सतिगुर लड़, लड़ी नाम नाल बंधाईआ। सुरत सवाणी लए फड़, गुर शब्दी बन्धन पाईआ। काया मन्दिर जाए चढ़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। नज़री आए बिन सीस धड़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जो जन सोहँ ढोला रहे पढ़, तिन्ह एथे ओथे दए वड्याईआ। राए धर्म दा चुक्के डर, चित्तर गुप्त नेड़ ना आईआ। लाड़ी मौत चरणीं डिगे दड़, गुरमुख निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सतिगुर पूरा अन्तिम निरगुण निरगुण लए फड़, फड़ आपणे विच मिलाईआ। पंज तत्त काया जाए सड़, माटी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लग्गी प्रीत तोड़ निभाईआ।

❇ पहली पोह २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

सचखण्ड निवासी वेख सचखण्ड, सच सच सच दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर पाई वंड, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। दो जहान श्री भगवान ब्रह्मण्ड खण्ड लेखा जाण सूरज चन्द, नूर ज़हूर किरन किरन रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर इक अनन्द, बोध अगाध आत्म परमात्म साचा छन्द, जीवण जुगत जगत पढ़ाईआ। लोक परलोक खेल सूरा सरबँग, ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड वज्जे मृदंग, पुरी लोअ राग अलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म बख्शंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि रचना सच रचाईआ। आदि सच हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण बण वणजारा, एकँकारा हट्ट चलाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, घर दीआ बाती डगमगाइंदा। श्री भगवान खोल्ह कवाड़ा, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। अबिनाशी करता कर पसारा, दर साचे खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म बण वरतारा, वस्त अमोलक हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप जणाइंदा। साची वस्त आदि जुगादि, जुग करता आप वरताईआ। कोटन कोटि जुग गए लाद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार गा गा थक्के साध, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। कोटन कोटि पीर पैगम्बर कर कर थक्के याद, याददाशत ना किसे बणाईआ। कोटन कोटि कह कह गए गॉड, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि वजा वजा गए नाद, राग रागनीआं नाल मिलाईआ। कोटन कोटि लभ्भदे गए कन्त सुहाग, सीस कन्त ना कोए टिकाईआ। कोटन कोटि फिरदे रहे विच वैराग, बण वैरागी फेरा पाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बिन नेत्र रहे जाग, आलस निंद्रा अन्त ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साची खेल पुरख अथाह, जुग जुग आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी बण मलाह, निरगुण सरगुण सेव लगाइंदा। नाम निधाना झोली पा, लोकमाती मेल मिलाइंदा। जोत इकांती इक जगा, दीआ बाती डगमगाइंदा। कमलापाती वेस वटा, काया चोला रंग हंढाइंदा। आत्म सेजा आसण ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शब्द अनाद धुन अल्ला, गीत गोबिन्द सुणाइंदा। अमृत आत्म जल प्या, सांतक सति कराइंदा। आपे बैठे मुख छुपा, नज़र किसे ना आइंदा। धुर संदेसा धुर जणा, धुर आपणा हुक्म मनाइंदा। गुर अवतार बैठण सीस झुका, पीर पैगम्बर सजदा सर्ब कराइंदा। कलमा नबी रसूल सर्ब पढ़ा, आयत शरायत आप जणाइंदा। काग़ज़ शाही मेल मिला, कलम आपणा बन्धन पाइंदा। सृष्ट सबाई धंदे ला, धवल लेखा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साची खेल आपणे विच छुपाइंदा। साची खेल आदि जुगादि, जुग करता भेव छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दे दे दाद, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ । लख चुरासी गृह मन्दिर अन्दर वज्जदा रहे नाद, बिन तन्दी तन्द सतार वजाईआ। आत्म परमात्म सति निशाना देवे गाड, निरगुण सरगुण आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी खेल खलाया, खेलणहार करतारा। गुर अवतार सेवा लाया, पीर पैगम्बर बरखुरदारा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत लेख जणाया, लेखा लिख विच संसारा। ज्ञान ध्यान इक दृढ़ाया, देवे धीरज जीव गंवारा। अञ्जील कुरान मसला गाया, मुश्कल जाणे आप परवरदिगारा। खाणी बाणी तीर चलाया, अणयाला नज़र किसे ना आया। दो जहानां खेल रचाया, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाया, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढ्ढाया, कलिजुग वेस वटाया, तेई अवतार हुक्म मनाया, भगत अठारां धंदे लाया, ईसा मूसा मुहम्मद इलाही कलमा इक पढ़ाया, बिन रसना जिह्वा गाया, नानक गोबिन्द एका घर वखाया, महल अटल उच्च मनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुच्च दी साची कारा। सच सुच्च दी करे कार, करता आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह कवाड़, सच दरबार इक लगाईआ। तख्त निवासी एकँकार, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। हुक्मे अन्दर हुक्मरान,
३६१ १३ एका हुक्म जणाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, धुर दा बाण लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करो ध्यान, नेत्र सब दा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार दयो ब्यान, पीर पैगम्बर लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। भगत वखाओ भगवन्त निशान, कवण दुआरे रिहा झुलाईआ। त्रैगुण मारे एका बाण, पंज तत्त नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे रिहा मंगाईआ। सच दुआरे आओ चल, हरि निहचल धाम इक जणाइंदा। कोई ना करे वल छल, अछल छल आपणे हथ्थ रखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार इक दूजे नाल जाओ रल, पिछली वंड ना कोए वखाइंदा। अन्दर बाहर बहि के करो गल्ल, ग़लबा होर ना कोए वखाइंदा। अन्तिम दीन मज़्हब ज़ात पात कूड़ा बूटा जाणा हल्ल, सब दी जड़्ह आप उखड़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी किसे डाल ना रहिणा फल, पत्त डाली खोज खुजाइंदा। सच संदेसा दे दे जो रिहा घल्ल, घड़ी घड़ी पल पल वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा इक अल्हाइंदा। शब्द संदेसा सुण कन्न, सर्ब ध्यान लगाईआ। धुर फ़रमाणा ल्या मन्न, दर आए वाहो दाहीआ। एका घर चरण ध्यान, कँवल ओट तकाईआ। ना कोई माण ना कोई ताण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग होया वड बलवान, आपणा बल रिहा रखाईआ। साडी चले ना कोए काण, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। उम्मत भुल्ली अञ्जील

कुरान, तीस बतीस मसला हक़ हकीकत ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार होए बेपहिचाण, गुर का शब्द ना कोए वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हिरदे वसे ना किसे भगवान, हरि मन्दिर रूप ना कोए वटाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव शैतान, शरअ जड़ ना किसे उखड़ाईआ। साबत मिल्या ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढ्ढाईआ। सच हदीस ना सुणी कान, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ। सच महिराब ना मिल्या अमाम, महिबूब नज़र कोए ना आईआ। मुकामे हक़ ना कोए पैग़ाम, पैगम्बर करे ना कोए पढ़ाईआ। अन्तिम सब ते लग्गा इलज़ाम, बरी नज़र बेनज़ीर सके ना कोए कराईआ। दर बरदे होए गुलाम, सीस ताज ना कोए वखाईआ। हज़रत हक़ ना दिसे इस्लाम, मासूम रहे कुरलाईआ। तेरा विगड़या होया नज़ाम, ना सके कोए बणाईआ। चौदां तबक अन्धेरा शाम, शमा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वेख वखाईआ। दर तेरे आए दरवेश, आपणा दर्द सुणाईआ। नेत्र रोवे विष्न ब्रह्म महेष, साडी चले ना कोए चतुराईआ। चारों कुण्ट ख़ाली देस, दसन्तर मिले ना कोए वड्याईआ। पारब्रह्म तेरा भुल्लया हेत, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। नज़र ना आए नेतन नेत, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ।
३६२ आत्म परमात्म देवे ना कोए भेत, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। चारों कुण्ट अग्नी जेठ, पंज तत्त काया रही जलाईआ। ३६२
१३ कोई ना रखे साया हेठ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गुर अवतारां सिर पई रेत, जीवां जंतां कवण बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर गुर धार शब्दी बोल, बोल बोल सुणाया। पुरख अकाल तेरा कोई ना जाणे तोल, तोलणहारा नज़र कोए ना आया। चार कुण्ट दहि दिशा नव खण्ड सत्त दीप दो जहान गए डोल, धीरज धीर ना कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आया। तुध बिन नज़र ना आए बेनज़ीर, रहमत रहमान ना कोए कमाईआ। पीर पैगम्बर ना बदले कोई तकदीर, तदबीर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। कलिजुग वज्जा शरअ ज़ंजीर, शरीअत सके ना कोए तुड़ाईआ। साचा दिसे ना कोए फ़कीर, फ़िकरा इक्को दए पढ़ाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, अल्फ़ ये नज़र ना आईआ। रंग वखाए शाह हकीर, हकीकत एका घर मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को आए तेरे दर, बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर इकठ्ठे हो, इक्को नाअरा लाया। तुध बिन करे ना कोई सच लो, जगत अन्धेरा छाया। पंज तत्त काया तुटा मोह, मुहब्बत तन ना कोए रखाया। असीं दे दे आए ढोआ ढो, कलम शाही लेख लिखाया। कलिजुग अन्तिम किसे अन्तर ना सके छोह, रसना जिह्वा रहे सर्ब गाया। सूर गाँ रहे कोह, तेरी कीमत कोए ना पाया। परवरदिगार १३

पुरख अकाल दीन दयाल लख चुरासी आपणी आपे जाए टोह, तेरे हथ्थ तेरी वडयाया। जिस आदि बीज ल्या बो, सो अन्त आपे वढ्ढुण आया। असीं लांभे बैठे हो, साडी चले ना कोए चतुराया। साडे वेख ख़ाली हथ्थ दो, पल्ले गंढु ना कोए बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरण ध्यान लगाया। गुर अवतार रखो याद, पीर पैगम्बर आप समझाइंदा। जिस ने खेल रचाया आदि, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। जिस ने रचना रची ब्रह्माद, सो ब्रह्म ब्रह्मांड खोज खुजाइंदा। जिस ने नाम सुणाया नाद, सो रागी राग अल़ाइंदा। जिस ने लख चुरासी रचया स्वांग, बण स्वांगी वेख वखाइंदा। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर नव नौ चार रखदे रहे तांघ, सो सब दी तांघ पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आप समझाइंदा । गुर अवतार बहि जाओ गुट्ठे, हरि सतिगुर आप बहाईआ। सब नालों लोकमात रहिणा रुट्ठे, प्रेम प्यार ना कोए जणाईआ। वेखो सब दे मूधे हुन्दे हुक्के, मुल्लां शेख़ मुसायक सईयद कोए रहिण ना पाईआ। पंडत पांधे हुन्दे पुट्ठे, ना सके कोए बचाईआ। ग्रंथी पन्थी जाइण लुट्टे, घर घर पए दुहाईआ। लख चुरासी भाग निखुट्टे, साचा भाग ना कोए वंडाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह प्रभ आपे पुट्टे, जिस बूटा दित्ता लाईआ। निरगुण धार निरँकार एका उठे, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द उठाए साचे सुत्ते, पूत सपूते दए वड्याईआ। सम्बल वखाए इक्को रुत्ते, दो जहान महक महकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिण ना सुत्ते, सब दे नेत्र दए खुल्ह़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जो राह लभ्भदे फिरदे राहों घुथ्थे, औझड़ राह दए वखाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां विच जहानां ख़ाली हथ्थ फड़ावे ठूठे, मंगयां भिक्ख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। गुर अवतार खोल्ह़ो अक्खां, हरि अक्खां नाल वखाइंदा। जिस दीआं लख चुरासी करदी रक्खां, सो रक्षया सब दी आपणे हथ्थ वखाइंदा। जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म पाए नथ्थां, डोरी आपणे हथ्थ उठाइंदा। जीव जंत लख चुरासी गेड़नहारा उलटी लठ्ठा, गेड़ा इक्को इक गिढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्ह़ब ज़ात पात कलमा नबी खाणी बाणी कोए ना पाए रट्टा, सब दा रट्टा आप मुकाइंदा। धुर फ़रमाण श्री भगवान दो जहान देवे इक्को पक्का, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। शब्दी हुक्म धुर फ़रमाणी धक्का, दो जहानां मूँह दे भार सुटाइंदा। करे खेल पुरख समरथा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। खेलण आया आपणा भलथ्था, आपणा दाउ ना किसे समझाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब दी अक्खीं पाए घट्टा, घाटा सब दा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सुणो एक, एकँकार जणाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मन्नो टेक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अक्ख चुक्क जे किसे ल्या वेख, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। निरगुण करे निरगुण खेड, सरगुण सरगुण नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म सच वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ कहिण, प्रभ सच तेरी वड्याईआ। अन्तिम तेरा वेखीए नैण, इक्को मंग मंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देवणहारा लहिण देण, लहिणा देणा रिहा जणाईआ। नाता तोड़ो साक सज्जण सैण, संग नज़र कोए ना आईआ। इक्को मन्नो हरि जू कहिण, दूजी कथा ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक समझाईआ। तेरा हुक्म हरि जू मन्नांगे। आपणी कीती पिछली आपे भंनांगे। आपणयां भुल्लयां नूं आपे डंनांगे। आपणयां घड़यां नूं आपे भंनांगे। तेरा हुक्म मन्नांगे। तेरा हुक्म मन्नीए भगवान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। तेरा फड़ीए इक निशान, दो जहान झुलाईआ। तेरा जणाईए इक नाम, जिस दी वंड किसे ना आईआ। तेरा वखाईए इक मकान, जिस दी छप्पर छन्न ना किसे छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। तेरा नाम दस्सांगे। घर घर जा के दस्सांगे। दो जहानां नस्सांगे। बिन ढाहयों तेरे अग्गे ढठ्ठांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर ते बहि बहि हस्सांगे। तेरे गीत गावांगे। लख लख शुकर मनावांगे। दो जहान जा सुणावांगे। आत्म परमात्म मेल मिलावांगे। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलावांगे। इक्को राह वखावांगे। दूजा इष्ट ना कोए जणावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगावांगे। तेरे नाम दा वज्जे नाअरा, नाअरा ला ला ख़ुशी मनावांगे। तेरे हुक्मे अन्दर दे दे पहरा, निउँ निउँ सीस नवावांगे। जे कोई हुन्दा फिरे गंवारा, तेरा नाम खण्डा चमकावांगे। चारों कुण्ट इक जैकारा, जै जैकार सर्ब सुणावांगे। पुरख अकाल अकाल, अकाल तेरा नाम सदावांगे। तूं दीनां बंधू दीन दयाल, तेरी दया अन्दर तेरा हुक्म वजा ल्यावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकावांगे। दर तेरे इक्को झुके सीस, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साहिब सुल्तान सच्चा जगदीश, बेअन्त तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण साडे ख़ाली ख़ीस, साडे हथ्थ कुछ नज़र ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चक्की लई पीस, बण सेवक सेव कमाईआ। तेरे नाम दी पढ़ पढ़ आए हदीस, कलिजुग जीव गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर इक्को इक मंगाईआ। पुरख अबिनाशी सच संदेसा, हरि सद्दा आपणे नाम जणाइंदा। इक्को वेख राज राजान

शाह नरेशा नर नरायण आप समझाइंदा। हुक्म फ़रमाण दर दर देणा दर दरवेशा, घर घर आप जणाइंदा। अन्तिम सब दा मुक्कण वाला लेखा, लिख्या लेखा सब दा पूर कराइंदा। सदी बीस रहे ना कोए भुलेखा, पर्दा सब दा आप उठाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी उजड़नहारा खेता, किरसाण नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर फ़रमाणा इक सुणाइंदा। जाओ दस्सो लोकमात, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। आपणी आपणी वेखो जमात, जो कर के आए पढ़ाईआ। किसे घर रहे ना कलम दवात, कागज़ शाही कम्म किसे ना आईआ। वेले अन्त कोई ना पुछे वात, जीव जंत देण दुहाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, मात्र भूमी रही कुरलाईआ। दो जहान तुटे नात, नाता बिधाता ना कोए रखाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, सैण नज़र कोए ना आईआ। शाह पातशाह होणे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। किसे घर ना खुल्ले ताक, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दस्सो भविख्त वाक्, प्रभ आया बेपरवाहीआ। जिस दी ना कोई मज़्हब ना कोई ज़ात, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जिस ने खेल करना साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर, उठो नट्ठो वेला गया आईआ। मुरीदां मुशर्दां गुरसिखां नूं जा जा दस्सो, उच्ची कूको दयो दुहाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना फसो, फाँसी सब दे गल लटकाईआ। इक्को इक पुरख अकाल दा गाओ जसो, जिस गायां अन्त होए सहाईआ। सरन सरनाई साहिब सतिगुर दी ढट्ठो, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। नाता तोड़े तीर्थ तट्टो, तट्ट किनारा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्को इक जणाईआ। पीर पैगम्बर करन सलाह, आपणा मता पकाईआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण कवण चंगा राह, कवण कूटे डेरा लाईआ। कवण मिले सचा थाँ, जिस दुआरे ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दिवस रैण रैण दिवस राती रुती, बिन रुत्तड़ी आपणी रुत्त सुहाईआ। संगत वछोड़ा वड्डा दुःख, दुःख सके ना कोए मिटाईआ। उह जाणे जिहड़ा वेखे लुक लुक, घट घट डेरा लाईआ। प्रेम प्यार दा पैंडा कदे ना जाए मुक्क, जुग चौकड़ी चल चल थक्के पांधी राहीआ। गुरमुखां गुर उज्जल करे मुख, मुख आपणे ना कोए वड्याईआ। सुफल कराए जन जननी कुख्ख, धन्न धन्न कहे जणेंदी माईआ। आदि जुगादि जुगो जुग सतिगुर पूरे नूं इक्को दुःख, बिन गुरमुखां दुःख ना कोए मिटाईआ। सच्चा दुःख गुरसिख विछोड़ा, विछड़यां सुख कोए ना आईआ। सतिगुरु गुरसिख जुगा जुगन्तर जोड़ा, जोड़ी इक्को घर सुहाईआ। इक दूजे दी सदा लोड़ा, बिन गुरसिखां सतिगुरू कम्म किसे ना आईआ। प्रेम प्यार

अन्दर बज्झीआं डोरां, ना कोई तोड़े ना तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुःख रिहा समझाईआ। गुरसिख दर्द तिक्खी कानी, अणयाला तीर जणाइंदा। सृष्ट सबाई दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाइंदा। गुरसिख सतिगुर दी दो जहान निशानी, एथे ओथे झण्डा नाम झुलाइंदा। जीव जंत गाथा गा पढ़े कहाणी, कलम शाही काग़ज़ बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख आपणा आप जणाइंदा। गुरसिख वड्डा वड वड्डा, वड्डी वड्याईआ। गुर सतिगुर सदा सदा बाला निक्का नढ्ढा, शब्द रूप नज़र ना आईआ। बण सेवक गुरमुखां फड़ फड़ बाहों राह पाए सिध्धा, दिवस रैण सेव कमाईआ। आप गुरसिखां पिच्छे कराउँदा रहे निन्दा, वड्याई विच कदे ना आईआ। जुग जन्म मेलण दी आपणे हथ्थ रखे विधा, पुछण किसे कोलों ना जाईआ। जे कोई सतिगुर कोलों पुछे तेरा गुरसिख किड्डा, सतिगुर कहे महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एसे कर के कलिजुग विच वंडाया हिस्सा, हिस्सा इक्को झोली पाईआ। दूजे नैण ना गोबिन्द दिसा, शब्द गुर ना कोए कुड़माईआ। घर दा बिखड़या खेल आप नजिठा, बण विचोला फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे घर घर, घर गुरसिख इक वड्याईआ। गुरसिख सोए पैर पसार, सतिगुर गूढ़ी नींद सुआईआ। सतिगुर पूरा पहरा देवे आपणी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिख दुःख अन्दर जे होए बेदार, आत्म सुख दे सांतक सति कर सुआईआ। सति सरूपी तन पहना प्रेम हार, लड़ी आपणे नाल बंधाईआ। निर्मल जोत कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। अनहद सुणा सच्ची धुनकार, रागी राग अलाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, दूर नेड़े चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। गुरसिख आपणी गोदी विच बठाल, काल महाकाल धक्का देवे लाईआ। सदा सुहेला इक इकेला गुरु गुर चेला चेला गुरू करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। सतिगुर पूरा सदा गुरसिखां पिच्छे घाले घाल, गुरसिख हौले भार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरसिख गुरसिख रूप आप वटाईआ। गुरसिख अन्दर सतिगुर वड़या, नज़र किसे ना आइंदा। बिन पौड़ीयों डण्डे आपे चढ़या, महल अटल वेख वखाइंदा। बिन विद्या अक्खर पढ़या, निष्अक्खर आप जणाइंदा। निरभउ हो कदे ना डरया, भय अवर ना कोए मनाइंदा। कर किरपा सतिगुर गुरसिख आपणे जिहा करया जिस जन आपणा रंग रंगाइंदा। गुरसिख गुर ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन दोहां विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन फड़ाए आपणा लड़या, पल्लू इक्को गंढु वखाइंदा।

❋ १० पोह २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ❋

भगत कहे प्रभ खोल्ह अक्ख, तेरी आखर ओट तकाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, बेअन्त बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जन्म पूरी कर आस, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। लहिणा देणा चुक्के अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। आत्म परमात्म वसे साथ, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। साचा मंत्र इक्को पूजा पाठ, निअक्खर कर पढ़ाईआ। चरण सरोवर तीर्थ ताट, तट किनारा इक सुहाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सरगुण साहिब पुछे वात, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। तेरी मेरी इक्को ज़ात, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। साचा मेला पत्तण घाट, कन्ढ़ा कलिजुग नज़री आईआ। सति अगम्मी शब्दी दए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। नाता तुटे त्रिलोकी नाथ, लोआँ पुरीआँ भेव ना राईआ। एका बज्झे सच्चा नात, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। प्रभ मिले कमलापात, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। साडा पूरा कर दे घाट, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। पूरब लहिणा भर दे ख़ात, ख़ाता इक्को इक जणाईआ। कर किरपा पुच्छ वात, मेहरवान तेरी वड्याईआ। नाम अमोलक दे दात, दाता दानी दया कमाईआ। गृह मन्दिर घर साचे पा रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। दिवस रैण वसीं पास, विछड़ कदे ना जाईआ। आवण जावण लख चुरासी होए बंद ख़लास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया होवे नास, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। पुरख अकाल अग्गों हस्स, हँस मुख दया कमाइंदा। आदि जुगादि मैं भगतां वस, भगती आपणा रंग रंगाइंदा। दूर दुराडा आवां नस्स, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। अन्तर आत्म जावां वस, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। तीर निराला मारां कस, अणयाला आप चलाइंदा। आत्म परमात्म गावां जस, सोहला ढोला इक सुणाइंदा। जन भगतां लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना मोहे सुखाइंदा। शब्द अगम्मी दे वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जन्म जन्म दी दुरमत्त मैल कट, निर्मल नीर सीर प्याइंदा। काया अन्दर वखा चौदां लोक हट्ट, चौदस चन्द इक चमकाइंदा। निरगुण नूर कर प्रगट, जोत ललाटी डगमगाइंदा। लेखे ला रत्ती रत्त, रत्त आपणे रंग रंगाइंदा। एका दे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी मार सट्ट, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। नाता तोड़ मनमति, गुरमति इक्को इक समझाइंदा। निझर झिरना देवां रस, रस इक्को मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान आप जणाइंदा। भगत कहे प्रभ मेरे मीत, मित्र प्यारे तेरी वड्याईआ। मैं तेरा तूं मेरा दोहां ढोला इक्को गीत, रसना होर ना कोए जणाईआ। त्रैभवन धनी त्रैगुण

अतीत, त्रै त्रै लेखा दए मुकाईआ। आदि जुगादी ठंडा सीत, सातक सति सति कराईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, चरण कँवल दे सरनाईआ। माणस जन्म लईए जीत, जग जीवण दाते तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी ना कोए जणाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक होए पलीत, पाक रसूल नज़र ना आईआ। आत्म परमात्म गाए ना कोए गीत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सरन सच्ची सरनाईआ। पारब्रह्म प्रभ दस्से खोल्ह, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। अनाद अनादी शब्दी बोल, ब्रह्म ब्रह्मादी आप जणाइंदा। आत्म परमात्म वसे कोल, बिन सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। अनहद अनादी वज्जे ढोल, नाम मृदंगा आप सुणाइंदा। सच समग्री कुण्डा खोल्ह, जोत इकग्गरी इक चमकाइंदा। साची नगरी तोले पूरा तोल, तोलणहारा नाम कंडा हत्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत आप समझाइंदा। भगत कहे मेरे शाह सुल्तान, तेरे हत्थ वड्याईआ। तूं आदि जुगादी साचा काहन, सचखण्ड तेरी रुशनाईआ। थिर घर तेरा चरण मकान, शब्दी सुत दुलारा आसण लाईआ। सुन अगम्मी खेल महान, मिहबान बीदो नूर ज़हूर ना कोए जणाईआ। मुकामे हक़ हो प्रधान, परवरदिगार आपणी खेल खलाईआ। ख़ालक ख़लक इक निशान, मखलूक दए वखाईआ। राम रहीम हो प्रधान, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। मुर्शद मुरीद मिले आण, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। रवि ससि नैण शरमाण, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। भगत भगवान खेल महान, मेहरवान आप वखाईआ। महल अटल उच्च मकान, सच महिराब करे रुशनाईआ। दीवा बाती ना कोए निशान, कमलापाती खेल वखाईआ। लेखा जाण दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवन्त आप जणाईआ। सुण भगत जन छोटे बाले, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। आदि जुगादि करे खेल पुरख अकाले, अक्ल कला धराइंदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाले, दूसर नज़र किते ना आइंदा। सेवा लाए काल महाकाले, महाकाल आपणा हुक्म मनाइंदा। दो जहानां वेख वखाले, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां खोज खुजाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणा मंत्र नाम सखाले, साची सिख्या इक समझाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल नाले, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाले, राज राजानां भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत आप जगाइंदा। हरि भगत जाणा जाग, श्री भगवान आप जगाईआ। अन्तर आत्म मार आवाज़, सोई सुरती आप उठाईआ। शब्दी गुर गुर रच रच काज, करनी करता आप कमाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। जन

भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वासां रिहा समाईआ। निरगुण सरगुण बण बण दासी दास, गुर चेला सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता इक अख्वाईआ। भगतन मीता इक भगवन्त, भगवान आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी साचा कन्त, नारी नर नरायण प्रनाइंदा। साचा चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। एका मंत्र मणीआं मंत, मंत्र नाम सति पढ़ाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, जीवण जुगत आप समझाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक पढ़ाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, चौदां विद्या हथ्थ ना आइंदा। आदि जुगादि सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। भगत सुहेला इक इकेला सदा सदा प्रेम भिच्छया बणे मंगत, मंग इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतां रीती इक जणाइंदा। भगतन रीती श्री भगवान, परम पुरख आप जणाईआ। चरण कँवल सच ध्यान, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। आत्म परमात्म इक ज्ञान, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी इक धुन्कान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत झिरना झिरे महान, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। निर्मल जोती जगे महान, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, पारब्रह्म ब्रह्म मेला चाईं चाईंआ। साची सखी मिले काहन, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। धर्म झुलाए इक निशान, सति दुआरे हथ्थ उठाईआ। करे खेल नौजुआन, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। मरे ना जम्मे विच जहान, आदि जुगादि इक्को रंग समाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। जन भगतां श्री भगवन्त मिले आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला सहिज सुभाउ, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। गुरमुख मिलण दा सदा चाउ, गुर सतिगुर आप रखाइंदा। जुग चौकड़ी करे न्याउँ, आदल अदल आप कमाइंदा। गुरमुख सज्जण पकड़े बांहों, फड़ बाहों गले लगाइंदा। गोद उठाए जिउँ पुत्तरां माउँ, पिता पूत वेख वखाइंदा। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त नेड़ ना आइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे थाउँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां गोद उठाइंदा। जन भगतां गोदी हरि जू चुक्क, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। दरस दिखाए जो बैठा लुक, पर्दा उहला आप उठाईआ। निरगुण नूर निरगुण मुख, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल आपे उठ, जोती जोत करे रुशनाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी तुठ, दीनन होए सहाईआ। करे खेल अबिनाशी

३६८
१३

अचुत, चेतन आपणी धार चलाईआ। भगत भगवान सुहाए रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जुग जन्म दे जो गए रुठ्ठ, जग विछड़े मेल मिलाईआ। अमृत जाम प्याए घुट, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचा मेल मिलाईआ। हरिजन मेला आत्म रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। सति सरूपी सेज पलँघ, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। बोध अगाधी नाद मृदंग, शब्द अनादी आप वजाइंदा। अमृत धार सरोवर गंग, साचा झिरना आप झिराइंदा। आत्म परमात्म इक अनन्द, निजानंद रस चखाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सोहँ ढोला साचा छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, आपणी हथ्थीं जोड़ जुड़ाइंदा। सुरत सवाणी ना होवे रंड, गुर शब्दी आप प्रनाइंदा। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। जिस जन उपर मेहरवान आप होए बख्शंद, बखशिश आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसे घर एक, एकँकारा आप वसाईआ। सो पुरख निरँजण साची टेक, हरि पुरख निरँजण दए समझाईआ। आदि निरँजण निरगुण जोत प्रवेश, परम पुरख रूप समाईआ। अबिनाशी करता रिहा वेख, करनी आपणी आप कमाईआ।

श्री भगवान धार भेख, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्म करे साचा हेत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। दरस दिखाए नेतन नेत, निज घर आपणा पर्दा लाहीआ। रुत्त बसन्ती मौले चेत, पतझड़ ना रूप वटाईआ। भगत भगवन्त इक्को खेड, जगत खलारी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला एका थाईंआ। भगतन मेला थान थनंतर, दरगाह साची आप जणाइंदा। लहिणा देणा तोड़ गगन गगनंतर, गृह मन्दिर आप बहाइंदा। आदि जुगादी इक्को मंत्र, आत्म परमात्म साची सिख्या इक समझाइंदा। ईश जीव बणाए बणतर, जगदीश खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे घर वसाइंदा। भगत वसे हरि जू मन्दिर, मन्दिर हरी हरि आप जणाईआ। ना कोई वासना मन बन्दर, दहि दिशा ना कोए वड्याईआ। ना अन्धेरा डूँग्घी कंधर, अन्ध घोर ना कोए वखाईआ। ना वसेरा साढे तिन्न हथ्थ खण्डर, बज़र कपाटी पर्दा कोए ना लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां इक्को घर वखाईआ। भगतां घर सचखण्ड, सचखण्ड वासी आप वखाइंदा। आदि जुगादी वंडी वंड, जुग जुग झोली पाइंदा। सदा सुहेला इक इकेला देवे सति अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। भगत भगवान

इक्को रंग, दूसर रंग ना कोए वखाइंदा। भगवान भगत इक पलँघ, साची सेज इक हंढाइंदा। भगत भगवान इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सच्चा गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे घर आप वसाइंदा। साचा भगत घर साचे वसे, हरि जू वक्खरा धाम वखाईआ। त्रैगुण माया विच ना फसे, ममता मोह ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया कोलो नस्से, कर्म कांड लेखा दए चुकाईआ। पारब्रह्म दा गाए जसे, जस वेद पुराण कहिण ना पाईआ। लेखा जाणे पूरब लेख मस्तक मथ्थे, लहिणा देणा झोली पाईआ। नाता तोड़ तत्त अठ्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध डेरा ढाहीआ। एको विके नाम हट्टे, दूजा हट्ट ना कोए रखाईआ। साचा लाहा हरि दा खट्टे, खट्टी इक्को इक समझाईआ। जिउँ धन्ने पाया विच्चों वट्टे, वटा सब दा रिहा मुकाईआ। जिउँ नामे छप्पर छाया मिट्टी घट्टे, तिउँ भगतां हरि मन्दिर रिहा वखाईआ। श्री भगवान जन भगतां पिच्छे नट्ठे, नठ्ठ नठ्ठ आपणा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम कर इकठ्ठे, इक्को सिख्या करे पढ़ाईआ। पूजा पाठ मुक्के रट्टे, जोग अभ्यास ना कोए जणाईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्ते, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। इक्को देवे साची मत्ते, मत्त आपणी नाल जणाईआ। जानणहारा मित गते, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। भगत भगवान आपणे रंग रत्ते, रंग इक्को नाम चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे चरण दुआरे बहि बहि वसे, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सोहँ ढोला गा गा हस्से, हस्ती मिटी जगत पंज तत्त ना कोए शाही आ। पारब्रह्म प्रभ दित्ता इक्को रसे, रस होर ना कोए चखाईआ। प्रेम प्यार अन्दर फसे, फाँसी राए धर्म तुड़ाईआ। भगत भगवान रहिण इकठ्ठे, एका घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। घर इकठ्ठे साचे रहिणा, भगत भगवान मता पकाया। इक दूजे दा दर्शन कर कर नैणां, नित नित आपणा रंग रंगाया। प्रेम वस्त्र पा पा गहिणा, भूशन इक्को इक वडयाया। सदा सदा सद भाणा कहिणा, हुक्मे अन्दर खेल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे साचे मन्दिर आप बहाया। साचे मन्दिर इक्को नूर, नूर ज़हूर रुशनाईआ। साचे मन्दिर इक्को तूर, तुरीआ राग सुणाईआ। साचे मन्दिर इक सरूर, अठ्ठे पहर खुमार वखाईआ। साचे मन्दिर इक ज़हूर, ज़ाहर आपणी कल जणाईआ। साचे मन्दिर मेला सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। साचे मन्दिर पन्ध मुक्के नेड़े दूर, दूर नेड़ा ना कोए वखाईआ। साचे मन्दिर आसा होए पूर, मनसा होर रहे ना राईआ। साचे मन्दिर हरि सतिगुर मिले ज़रूर, ज़रूरत पूरी दए कराईआ। साचे मन्दिर जन भगतां बख्शे आप कसूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्ह निरँकार,

निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त दे आधार, सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा। इक्को घर इक्को दर इक्को मन्दिर हरी दुआर, धर्म दवारा इक जणाइंदा। इक्को गुर इक अवतार, पीर पैगम्बर इक अख्वाइंदा। इक्को शाह भूप सिक्दार, हुक्म हाकम इक जणाइंदा। इक्को जुग चौकड़ी खेले खेल वारो वार, वारता आपणे नाम पढ़ाइंदा। इक्को वड्डा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप रखाइंदा। इक्को नाम खड़ग खण्डा कटार, तिक्खी धार बणाइंदा। इक्को चण्ड प्रचण्ड लए उभार, दो जहानां आप चमकाइंदा। इक्को लख चुरासी करे आर पार, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। इक्को विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, नाम हुलारा इक जणाइंदा। इक्को गुरुआं अवतारां पीर पैगम्बरां कर पसार, पीसण पीस साची सेव कमाइंदा। इक्को शब्द अगम्मी वजाए सतार, नौबत आपणे नाम सुणाइंदा। एका सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लै अवतार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। एका भगत भगवन्त लए उठाल, उठ उठ आपणे नाल मिलाइंदा। एका लेखा जाणे शाह कंगाल, ग़रीब निमाणयां वेख वखाइंदा। एका एकँकारा बणे दलाल, दो जहानां दलाली आप कमाइंदा। एका वेखणहारा हक़ हलाल, लाशरीक हकीकत खोज खुजाइंदा। एका जलवा नूर जलाल, जोबन आपणा आप प्रगटाइंदा। एका वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। एका मुरीद मुर्शद लए भाल, उम्मत उम्मती खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए जणाइंदा। भगत भगवन्त चुकाए भउ, भय अवर ना कोए रखाईआ। इक जपाए साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। नज़री आए हर घट थाउँ, घट घट रिहा समाईआ। फड़ फड़ पार कराए बाहों, नईया आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, आदि अन्त होए सहाईआ। हरि भगत तेरा आदि अन्त, श्री भगवान आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम मेला जिउँ नार कन्त, कन्त कन्तूल सेज सुहाइंदा। मेल मिलावा साचे सन्त, सतिगुर आपणी गोद बहाइंदा। गुरमुख बणाए बणत, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। माणस जन्म ना होए भंगत, भाण्डा भरम भउ तुड़ाइंदा। नाता तोड़ जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज मूल मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देवे दान, भगत भगवन्त इक निशान, निशाना आपणा नाम रखाइंदा।

३७२ १३

❇ २५ पोह २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

भगत दुआर तेरा हिस्सा, हरि हरि जू आप वंडाईआ। चार जुग दा झूठा हो जाए किस्सा, कहाणी नज़र कोए ना

आईआ। पुरख अकाल जिस नेत्र डिठ्ठा, घर साचे खुशी मनाईआ। दो जहान निरगुण सरगुण जिता, मिले माण वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ पाया माता पिता, पतिपरमेश्वर पूरन बेपरवाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर फ़रमाणा जो देंदा रिहा चिठ्ठा, सच संदेस सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआर तेरी वंड वखाईआ। तेरी वंड मार्ग अलग्ग, अवल्लड़ी खेल कराइंदा। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख हँस बणा कग्ग, सोहँ आपणा नाम जपाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म बहे सज, कूड़ी क्रिया पर्दा लाहइंदा। पंझी पोह नंगी पैरीं गुर संगत तेरा करन जाए हज्ज, मक्का काअबा ना कोए वखाइंदा। आओ दर आओ पर्दा लओ कज्ज, सीस जगदीश गुर संगत अग्गे आप झुकाइंदा। तुहाढ्ढे पिच्छे सच मुकाम आया तज, ताजर आपणा फेरा पाइंदा। दर दुआर दर्शन दयो रज रज, बिन तुहाढ्ढे दरस हरि जू दूजा दर ना मंगण जाइंदा। वेला अन्त ना करना अज पज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भेव आप खुल्लाइंदा। अगला भेव साढे तिन्न हथ्थ, भगत दुआरे दए वड्याईआ। वेखो भगवान गाए भगतां जस्स, अगम्मी कार कमाईआ। बण निमाणा रिहा नठ्ठ, आपणा बल ना कोए रखाईआ। पाल सिँघ बुढ्ढा जे हथ्थ ना फड़ावे आपणी लठ्ठ, गेड़ा गेड़ा ना कोए भुआईआ। जिस ने नौ साल रुपया रख्या रख, हुक्मे अन्दर हुक्म समाईआ। कलिजुग अन्त त्रैगुण माया वेखो उडदे कक्ख, चारों कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। हरिसंगत हरि का मेला हस्स हस्स, हरि दुआर वज्जे वधाईआ। जे आए अग्गे मार्ग जाणा दस्स, हरि सतिगुर चले तोहे रज़ाईआ। प्रेम प्यार अन्दर गया बज्झ, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। आपणे विच्चों लैणा कढ्ढ, अन्दर लुक्या बेपरवाहीआ। झूठ ना जाणना मास नाड़ी हड्ड, पुरख अकाल आपणी कार कमाईआ। जो आपणा घर आए छड्ड, हरि दुआर देणा सुहाईआ। भगत भगवान रहिण ना अड्ड, इक्को रंग वखाईआ। अग्गे वेखो चलदी यद, पिता पूत एका तागा एका सूत, एका तन्द बंधाईआ। आप पार कर के आया हद्द, जन भगतां हद्द पार दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेखे साचे घर, घर संगत हरि जू फेरा पाईआ। घर वसदयां कोलों पूरन भुक्खा, घरदयां सार ना आईआ। हरिसंगत दीआं सुखदा रहे सुखां, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। जिन्नां कोलों खावे टुक्कर सुक्का, खा खा आपणा शुकर मनाईआ। आपणे भाणे विच कदे ना रुका, भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखो अन्तिम लहिणा सब दा मुक्का, ख़ाली झोली दए वखाईआ। बिन भगतां किसे ना रखे आपणी कुखा, ख़ाली भाण्डे सर्ब कराईआ। जो हरि सरनाई आ के झुका, तिस निउँ निउँ सीस झुकाईआ। रातीं सुत्यां दवाबे जा जा दित्ता रुक्का, आपणा हुक्म मनाईआ। वेखो वेला सोहणा ढुक्का, घर साचे होई कुड़माईआ। नज़री आया

३७३
१३

जो बैठा लुका, लुकवीं आपणी खेड हटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन वजूद ना कोई जुस्सा, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। हरिसंगत तेरा सोहणा पकवान, हरि सतिगुर सच्चे भाया। सच दुआरे आ के दित्ता दान, ख़ाली झोली रिहा भराया। ग़रीब निमाणा हरि जू बणया महिमान, महिमां भगतां रिहा गाया। आपणा देवे इक निशान, सोहँ नाम झोली पाया। बाली बुध अजे अञ्याण, हरि जू आपणी मति सर्ब गंवाया। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, बिन नेत्र दर्शन पाया। भगत भगवन्त इक्को दर इक्को घर इक्को पकवान बहि के खाण, अड्डरी वंड ना कोए वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दवाबा संगत तेरा लंगर बिन लागत आप चलाया। वेखो वड्डा होया निक्का, आपणा आप मिटाईआ। जन भगतां मस्तक लाए टिक्का, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। बाकी रस वेख्या फिका, गुरमुख प्यार इक वखाईआ। बण सज्जण मिल्या पिता, पुत्तर यार गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वड्डा देवे वड वड्याईआ। आदि पुरख प्रभ आया अग्गे, हरि अगली खेल जणाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबग्गे, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। हरिजन मेले उपर शाह रगे, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आत्म परमात्म बन्न्हे डोरी नाम तग्गे, सूत्र वट्ट ना कोए चढ़ाइंदा। त्रैगुण अग्नी कोई ना दगे, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्गे, कागद कलम भेव ना आइंदा। अमृत जाम प्याए मधे, मदरा रस इक वखाइंदा। हरि सन्त साजण आए सद्दे, सद्दा इक्को इक समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर फिरन भज्जे, दो जहानां खेल वरताइंदा। मक्के काअबे कोई ना रहिणा हज्जे, हज़रत इक्को रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। अग्गे वाला अग्गे गया आ, आपणा भेव जणाईआ। नव नौ चार रख्या छुपा, रूप रंग ना किसे वखाईआ। सचखण्ड वसाया एका थाँ, थिर घर देवे माण वड्याईआ। निरगुण सरगुण जोत जगा, गुर अवतार कर रुशनाईआ। बोध अगाधा शब्द पढ़ा, निष्अक्खर भेव खुल्हाईआ। कागद कलम लेखा छाह, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अग्गे वाला अग्गे आया, भेव कोए ना पाइंदा। आपणा भेव रिहा खुल्हाया, निरगुण पर्दा आप चुकाइंदा। आदि जुगादि जो बणदा रिहा दाई दाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी गोद बहाइंदा। जुगा जुगन्तर त्रैभवन धनी त्रैगुण खेले खेल माया, छाया आपणी ना किसे समझाइंदा। अक्ल कल कल हरि अख्वाया, बेअन्त बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। शाहो भूप सिक्दार अख्वाया, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाया। नेत्र नैण अक्ख मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया, बन्धन इक्को इक पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी करने योग, हरि करनहार करतारा। निरगुण भोगे निरगुण भोग, दूसर संग ना मीत मुरारा। आत्म परमात्म धुर संजोग, विछोड़ा कोई ना जाणे अलख अगोचर अगम्म अपारा। जिस जन देवे सोहँ चोग, दो जहानां देवे आप सहारा। आवण जावण पतित पावण लख चुरासी कूड़ी क्रिया कटे रोग, इक कराए वणज वपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि करतारा। हरि करतारा अगला खेल, निरगुण निरगुण आप कराईआ। सरगुण सरगुण साचा मेल, सच सच वड्याईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण चाढ़े तेल, गृह मन्दिर सगन मनाईआ। आत्म परमात्म सज्जण सुहेल, सच संग अख्वाईआ। वसणहारा धाम नवेल, घर बैठा आसण लाईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेल, गुर गोबिन्द लए उठाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आपे मेल, मिलणी जगदीश आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि शाह अस्वारा, असल आपणा आप जणाइंदा। नूर खुदाई परवरदिगारा, बेऐब पर्दा लाहइंदा। मुकामे हक़ हक़ वणजारा, हकीकत आपणा हट्ट खुल्लाइंदा। लाशरीक एकँकारा, अक्ल कला धराइंदा। जुग चौकड़ी लै अवतारा, लोकमात वेख वखाइंदा। अवण गवण पावे सारा, त्रै भवन खोज खुजाइंदा। लेखा जाण सूरज चन्न सतारा, मण्डल मण्डप सोभा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखणहारा,
३७५
१३
जेरज अंड फोल फुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करनहार, हरि करता वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी धार आप चलाईआ। शब्द विचोला कर तैयार, साचा सोहला दए सुणाईआ। पर्दा उहला देवे पाड़, दूई नज़र कोए ना आईआ । घर विच मेला साचे लाड़, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि सज्जण आप कराइंदा। महल अटल उच्च मनारा, नज़र किसे ना आइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी सच जैकारा, धुन अनादी नाद सुणाइंदा। रागां नादां वसे बाहरा, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। आपणा नाम जणाए धुरदरगाही वारा, वारता आपणी आप समझाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग जुग देंदा आया लारा, लहर लहर ना कोए प्रगटाइंदा। दर दरवेश कोटन कोटि मंगदे रहे बण भिखारा, भिखक संग ना कोए निभाइंदा। पीर पैगम्बर दे सहारा, सति सतिवादी आप समझाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए महाबली अवतारा, अवतर आपणा नाउँ समझाइंदा। आदि जुगादि जिस दा

उच्चा वड दरबारा, सच दरबारी फेरा पाइंदा। जिस दा खेल सदा सद न्यारा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। सद आवे आपणी धारा, मात पित ना कोए बणाइंदा। जननी जणे ना सुत दुलारा, रसना सीर ना कोए लगाइंदा। सीस बन्हे ना कोए दस्तारा, चूंडी मूंड ना कोए मुंडाइंदा। इक इकल्ला एकँकारा, अक्ल कल आपणा खेल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अगला लेखा रखे हथ्थ, हथ्थो हथ्थ जणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जिस दी गाउँदे आए गाथ, गहर गम्भीर आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। जिस ने प्रगटाए त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां होए सहाईआ। जिस मेल मिलाया रामा बेटा दसराथ, दहि दिशा वेखे चाईं चाईंआ। जिस दी पीर पैगम्बर करदे गए याद, याददासत मात बणाईआ। जेहड़ा जुगा जुगन्तर सुणदा रहे फ़रयाद, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां होए सहाईआ। सो साहिब सतिगुर कलिजुग अन्तिम जन भगतां बणयां पिता मात, सुत दुलारे लए उठाईआ। रातीं सुत्यां देवे दात, हरि जू साची वंड वंडाईआ। अन्दरे अन्दर चरण कँवल बंधाए नात, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जे कोई बाहरों पुछे बात, रसना कह ना भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। अगला लेखा हथ्थ साढे तिन्न, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाइंदा। जिस दा सत्त दीप नौ खण्ड मिले ना कोई चिन्ह, रूप नज़र कोए ना आइंदा। जिस ने चार जुग दा लहिणा लैणा गिण गिण, गुर अवतार, पीर पैगम्बर बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जिस दा लेखा अन्तिम होणा तिन्न दिन, तिन्नां लोकां डेरा ढाइंदा। जिस दा रूप सदा भिन्न भिन्न, अनभव आपणी धार चलाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख गुरु गुर चेले मेल मिलाए गिण गिण, गिणती आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला हिस्सा आप वंडाइंदा। अगला हिस्सा साढे तिन्न हथ्थ मनारा, मेहरवान आप वंडाईआ। दो जहान होई हाहाकारा, हरि जू एह की खेल रचाईआ। चार जुग दे गुर अवतारा, पीर पैगम्बरां आपणे विच छुपाईआ। निरगुण हो होया उज्यारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। निहकलंक लै अवतारा, कलि कल्की रूप वटाईआ। गोबिन्द मेला सुत दुलारा, घर साचे चाईं चाईंआ। एका सेजा सुत्ते पैर पसारा, दूजा सके ना कोए उठाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा अन्त करन सच विहारा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आत्म परमात्म खोल किवाड़ा, घर मन्दिर इक वखाईआ। ना कोई ठाकर शिवदुआला मन्दिर मठ्ठ ना गुरुदुआरा, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। ज़ात पात ना कोए पसारा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं दा पिता एका एकँकारा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। भगतां बणाए सच दुआरा, दर दरवाज़ा

३७६
१३

आप खुल्हाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा सर्ब सहारा, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। छब्बी वेखे ढय्या दो अद्धा खेल न्यारा, निरगुण आपणा भेव जणाईआ। तीजी छत्ते सच सिँघासण सोहे करतारा, करनी आपणी दए जणाईआ। त्रैभवन धनी एका हुक्म इक वरतारा, इक संदेसा दए सुणाईआ। जो मिल्या सो पार उतारा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड लै के जाए वारो वारा, वारी सब दी लए बन्हाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बोलया जैकारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर राह विच बैठे सचखण्ड जांदे घुट घुट जफ्फीआं पाईआ। पुरख अबिनाशी हस्से, जन भगतां हिरदे अन्दर वसे, अग्गे पिच्छे आपे नस्से, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो उठो वेखो नेत्र अक्खे, बिन भगतां दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भाण्डे सखे, साची वस्त ना कोए टिकाईआ। बिन साहिब सतिगुर कीमत कोई ना पाए कक्खे, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। अन्तिम कलिजुग हरि सरनाई सारे ढट्ठे, आपणा बल ना कोए जणाईआ। ठाकर स्वामी दीन दयाल तेरे हुक्म अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्ह़ब करदे आए रट्टे, बिन तेरे अन्तिम रट्टा ना कोए मुकाईआ। तूं सब दी अक्खीं पाए घट्टे, घाटा गुरमुखां झोली पाईआ। की होया जे धन्ने प्रगट कीता विच्चों वट्टे, बिनां वट्टउँ नज़री आईआ। जिन्हां दे चोले दिसण फटे, पाटे चीथड़ आपणे तन छुहाईआ। सब दे अन्दर ब्रह्म मत्ते, पारब्रह्म मिली सरनाईआ। साहिब सतिगुर नाल रत्ते, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। बिन फाहीयों फसे, फांदकी नज़र किसे ना आईआ। दूसरयां गुरसिख की की दस्से, की की हाल सुणाईआ। रातीं सुत्यां साडे पिच्छे फिरे नट्ठे, नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाईआ। दुहाई लोको करो ठट्ठे, ठोकर हरि जू सब नूं रिहा लगाईआ। बिन गुरसिख सवाणी कोई लै के ना जाए भत्ते, ठंडा जल ना कोए प्याईआ। वेखो गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहि गए हक्के बक्के, पुरख अकाल की आपणी बणत बणाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर असीं नच्चे, सो गुरमुखां हुक्म अन्दर फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले सारे सच्चे, जो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रहे ध्याईआ। लूं लूं अन्दर हरि जू आपे रचे, साढे तिन्न करोड़ गिणती ना कोए कराईआ। ग़रीब निमाणयां दे घर जा जा नच्चे, आपणा नाच नचाईआ। ब्रह्मा कोलों बणे पंज तत्त सच्चे, अन्दर आपणी वस्त टिकाईआ। बिन गुरसिखां सारे कच्चे, काया काची माटी कम्म किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सचखण्ड जा के गुरुआं दस्से, पीर पैगम्बरां नाल रलाईआ। सारे वेखो जो भगत दुआरे वसे, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को वार कीते इकट्ठे, फड़ आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा छब्बी पोह, धुरदरगाही देवे सो, गुरमुखां जिहा आपे हो, आप आपणी बूझ बुझाईआ।

❇ २६ पोह २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ❇

हरि जू आया आपणे पौड़े, पौड़ा नज़र किसे ना आईआ। इक्को मेला ब्रह्मण गौड़े, गहर गम्भीर अख्वाईआ। गोबिन्द हरि हरि आपे बौहड़े, सम्बल डेरा लाईआ। गुरसिख शब्दी साचे जोड़े, जोड़ी आप बणाईआ। वेखे रस मिठ्ठ कौड़े, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप खुल्हाईआ। साचा पौड़ा एकँकार, अक्ल कल धारी आप लगाइंदा। जिस दी गुर अवतार ना पाई सार, पीर पैगम्बर भेव ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, नर हरि नरायण आप कराइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, सच साचा रूप दसाइंदा। कलि कल्की लै अवतार, कल आपणी आप जणाइंदा। बेऐब खुदाई परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी हो तैयार, शाहो शाबासी फेरा पाइंदा। जगत उदासी लाहे एका वार, जम की फाँसी तोड़ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। साचे पौड़े चढ़या भगवान, पौड़ा आपणा आप लगाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब पछताण, शहिनशाह करया खेल वड वड्याईआ। बैठे सारे होए हैरान, मेरी करनी रहे जस गाईआ। तेरे दर रहे दरबान, दरवेश अलख जगाईआ। तेरा नज़र ना आया निशान, निशाना तीर ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे रहे दान, साडी झोली ना कोए भराईआ। बाली बुध रहे अञ्याण, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। तेरी कर ना सके पछाण, बेअन्त गा गा शुकर मनाईआ। तेरे चरण करदे रहे ध्यान, कँवल कँवल सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ। साचे पौड़े चढ़या आप, आपणी खेल कराइंदा। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे रहे जाप, सच संदेसा नाम सुणाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे माई बाप, पूत सपूता रूप धराइंदा। सो साचे मन्दिर सच दुआर हरि निरँकार निरगुण सरगुण आप, पुरख बिधाता आप अख्वाइंदा। जन भगतां करे जाप, जपणहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। उच्चे पौड़े चढ़या नर, नरायण वड्डी वड्याईआ। वेखो सारे रहे डर, दो जहान नैण शरमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे कन्न रहे फड़, उच्ची कूक देण दुहाईआ। तेरे पिच्छे जन्मे गए मर, जन्म मरन खेल वखाईआ। अन्त चरणी डिगे दड़, मूँह दे भार सुटाईआ। सचखण्ड दुआरिउँ बाहर बैठे अड़, बिन नानक घर कोए ना जाईआ। होए हैरान बेपहिचाण तेरा कोए ना आए सर, तेरी सार कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम जोती जाता वेस कर, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। सन्त सुहेले भगत भगवन्त लए फड़, आपणा मेल मिलाईआ। बौहड़ी दरोही खुदावंद अन्दर गया वड़, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जिस ने घाड़न ल्या घड़, सो वेखे

चाईं चाईंआ। जिस ने लाई आदि जड़, सो अन्त रिहा उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल रचाया, महिमा अगणत गणत जणाइंदा। जिस दी सेवा आप कमाया, सेवक नज़र किसे ना आइंदा। जिस दा रंग आप रंगाया, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। जिस दा ढोला आप सुणाया, गावणहारा राग ना कोए अलाइंदा। जिस दा माण आप दिवाया, वेद पुराण भेव ना पाइंदा। जिस दा नकशा आप खिचाया, गुर अवतार सार ना पाइंदा। पीर पैगम्बर रिहा कुरलाया, मुकामे हक़ तेरा खेल नज़र ना आइंदा। बेनज़ीर तेरा नूर नज़र कोए ना आया, बेआब बेआब देण दुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जी पौड़ा आप लगाइंदा। साचा पौड़ा उच्च मिनार, ऊँचो ऊँच आप कराईआ। सेवा करे एकँकार, अक्ल कल आपणा खेल कराईआ। बरदा बणे परवरदिगार, बरखुरदार नज़र किसे ना आईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। सतिजुग दी साची धार, सच सच जणाईआ। सचखण्ड कहे कोटन कोटि जुग मेरा किसे ना बणाया कोई मिनार, मेरा भेव ना किसे जणाईआ। कोई कहे मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआर, कोई मसीत गुरदुआर ठाकर दुआर रिहा जणाईआ। बिना पुरख अकाल थिर रिहा ना कोई विच संसार, जो आया सो उठ उठ चल जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कर, सच मुनारे सोभा पाईआ। सच मुनारा इक बणा, आपणी खेल बणाइंदा। छब्बी पोह सारी रात दए समझा, हरी हरि जू भेव खुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट सेवा ला, हरिसंगत विच रखाइंदा। बिन नेत्र नैणां दए विखा, नूर ज़हूर आप जणाइंदा। बिन रसना जिह्वा दए बुला, सोहला ढोला इक सुणाइंदा। नैणां वेंहदयां पिछला पैंडा दए मुका, पांधी आपणा नाउँ धराइंदा। आपणा कर्म कांड नेहकर्मी सद दए मिटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साची सरन दए वखा, सरनगति इक जणाइंदा। कोट जन्म दे विछड़यां लए उठा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। एका अक्खर नाल लए समझा, दूजा पाठ ना कोई पढ़ाइंदा। जिस जन सोहँ ढोला ल्या गा, तिस गुर अवतार पीर पैगम्बर संग निभाइंदा। महाराज शेर सिँघ हुक्म रिहा सुणा, बिन मेरे भगतां मेरे दर ना कोई आइंदा। मेरा भगत अगम्म अपार, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान पढ़ ना कोई सुणाइंदा। मेरा कोई ना करे वसाह, अछल अछल्ल देणा रूप वटा, आप उसारे आपे देवे ढाह, आपणी खेल खिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतारां दसाउदा रिहा राह, आपणा भेव ना कोए जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम जोती जामा आवे भेस वटा, अगम्मी कल धराइंदा। गोबिन्द सूरा लए जगा, हाज़र हज़ूर मेल मिलाइंदा। बचन पूरा दए करा, कीता कौल ना कोई भुलाइंदा। नेत्र नैणां दरस दए वखा, सच

सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रुत्त सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। रुत्त सुहञ्जणी सच महल्ल, हरि महिफल आप लगाईआ। आदि जुगादि रखे अटल, बेअन्त बेपरवाहीआ। भेव खुलाया अन्तिम कल, कलिजुग पर्दा लाहीआ। निरगुण दाता आया चल, निरवैर फेरा पाईआ। दो जहान गए हल्ल, पुरी लोअ थर थराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कोई कर ना सके गल्ल, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिस लेखा लैणा जल थल, महीअल आपणा फेरा पाईआ। जिस लख चुरासी अन्दर वौंहणा हल, बण किरसाणा आपणी धार जणाईआ। जिस लेखा मुकाणा अग्नी पवण पाणी जल, हुक्म हुक्म हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुनारा दए वड्याईआ। मुनारा कहे मोहे चढ़या चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या आ, मिलनी आप कराईआ। जुग चौकड़ी सिधाउदे रहे साह, साहा साह समझाईआ। लिख लिख लेखा बणदे रहे गवाह, शहादत इक्को नाम पाईआ। अन्तिम आवे निरगुण नूर खुदा, खुदी सब दी दए मिटाईआ। निहकलंका नाउँ धरा, डंका इक्को शब्द वजाईआ। राउ रंका लए उठा, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द बंका लए सुहा, सम्बल आपणा रूप धराईआ। मंगल साचा लए गा, आत्म परमात्म इक पढ़ाईआ। जीवण जुगत दए जणा, जन्म जन्म विच बदलाईआ। मर्द मर्दान फेरा पा, सच मर्दानगी आप वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा देवे ढाह, लोकमात करे सफाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जन्म दा लेखा दए वखा, लिख्त पड़त हथ्थीं दए फड़ाईआ। काग़ज़ कलम शाही मुख रिहा शरमा, शहिनशाह अग्गे अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल दए वड्याईआ। सच महल्ले तेरी छत्त, हरि छत्र छाया आप रखाइंदा। भगतां रखण आया सति, अग्गे पिच्छे डेरा लाइंदा। पहलों लख चुरासी नालों कीते वक्ख, आपणा मेल मिलाइंदा। निरगुण हो के मार्ग दस्स, साचा राह सुणाइंदा। सोहँ ढोला इक्को जस, मंत्र होर ना कोई पढ़ाइंदा । पकड़ बाहों पए हस्स, बण सेवक सेव कमाइंदा। दो जहानां वाली आया नस्स, बिन सद्दयां फेरा पाइंदा। हरिजन वेख इक इकठ्ठ, इकत्तर एका एक कराइंदा। आपणी नीहां हेठ दबाई रत्त, गोबिन्द लख लख शुकर मनाइंदा। अन्तिम बैठा सत्थर घत्त, यारड़ा ध्यान इक लगाइंदा । पुरख अबिनाशी इक जाणे मित गत, गति मित आप समझाइंदा। कलिजुग अन्तिम रखे पत्त, पतिपरमेश्वर दया कमाइंदा। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, समरथ वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल आप रुशनाइंदा। सच महल्ल सच मुनारा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण कीता आप किनारा, सरगुण रंग रंगाईआ। सचखण्ड दी साची धारा, लोकमात प्रगटाईआ। मेल मिलावा भगत संसारा, भगवन आपणा राह जणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर दए वड्याईआ।

सत्तरां मेलण आया मेला, हरि गुर गुर हुक्म जणाइंदा। एका घर वखाए गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द रंग चढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, बण विचोला खेल खिलाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े तेला, घर साचा सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप वसाइंदा। घर वसे साचा सोभनीक, हरि देवे माण वड्याईआ। गुरमुख तेरा दिसे ना कोई शरीक, शरकत नज़र कोए ना आईआ। साची सिक्खी धार बरीक, गोबिन्द दए वड्याईआ। अन्तिम वेखण आए ठीक, शब्दी आपणा रूप वटाईआ। एका ढईआ दे के तारीख, तारीक आपणी दए समझाईआ। आत्म परमात्म सच प्रीत, साची सिख्या इक जणाईआ। पुरख अकाल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा लगाईआ। गोबिन्द आया चल हज़ूर, पुरख अकाल दया कमाइंदा। गुरमुखां मिल के जाए ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराइंदा। जिहनूं कहिन्दे रहे दूर दूर, सो नेरन नेर फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणयां आसा करे पूर, आपणी आसा नाल वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साचा खेल कराइंदा। गोबिन्द आया लोकमात, शब्दी रूप धराईआ। गुरमुखां देवे साची दात, इक्को वंड वंडाईआ। नाता तुटा ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोई रखाईआ। पुरख अकाल गाओ साची गाथ, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। जिस ने दित्ता तेरा साथ, सगला संग रखाईआ। जिस ने भेजे त्रिलोकी नाथ, जुग जुग जन्म जणाईआ। सो साहिब सदा समराथ, बेअन्त वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आए आप, आपणी दया कमाईआ। हरिजन मेले हस्स हस्स, हँस मुख सिफ्त सालाहीआ। तीर निशाना रहे कस, तेरा चिला नाम उठाईआ। दोहां विचोला बण के जाए दस्स, गुर चेला गुरू समाईआ। सच मुनारे कर इकठ्ठ, एका इक्की वड वड्याईआ। एका इक्की ना होए रंड, नार कन्त अन्त सुहाईआ। नाता तोड़ भेख पखण्ड, साचे मार्ग रिहा लाईआ। लेखा चुकाए बत्ती दन्द, रसना करे ना कोई पढ़ाईआ। आत्म परमात्म देवे हरि अनन्द, निजानंद इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया ढाह कंध, पर्दा दूई दए उठाईआ। गीत सुहागी इक्को छन्द, सोहँ दए सुणाईआ। जुग जन्म दा चुक्के पन्ध, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गुरमुख रंग रंगाईआ। गुर गोबिन्द आया निरगुण धार, कलिजुग वेस वटाईआ। पुरख अकाल कर प्यार, आपणी उंगली लाईआ। करे खेल विच संसार, नज़र किसे ना आईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, त्रै भवन आपणा डेरा लाईआ। काग़ज़ कलम ना पावे सार, लिख

लिख लेख ना जाणे शाहीआ। बेअन्त बेअन्त सारे कहिण पुकार, तूही तू तेरी वड्याईआ। तूं मैं कोई करे ना साची कार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करता हो आप तैयार, निरगुण आपणा वेस धराईआ। जोती जामा पुरख करतार, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द लेखा दए वखाईआ। गोबिन्द वेख साचा मित्र, मित्र प्यारा आप मिलाइंदा। जिस ने खेल कराया बाज़ तित्तर, त्रैगुण माया डेरा ढाइंदा। कलिजुग अन्तिम आया नितर, सीस आपणे ताज टिकाइंदा। लख चुरासी वेखे वत्तर, वत्तर वेंहदा नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि ना होवे भिट्ड़, जूनी रहित खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द आपणे रंग वखाइंदा। रल के कर लओ मेरा साथ, कलिजुग अन्तिम डेरा ढाहीआ। पुरख अबिनाशी बणया साक, सज्जण बेपरवाहीआ। घर दर आया रसूल पाक, परवरदिगार फेरा पाईआ। जिस बाल्यां लेखे लाई ख़ाक, नीहां हेठ रत्त डुल्हाईआ। सो अन्तिम उतरया पार घाट, पूरा घाटा दए कराईआ। सच मुनारे आ के मेटे अगली वाट, पिछला पन्ध मुकाईआ। एथे ओथे दए निज़ात, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाल लै के आया वड्डा ख़ात, आपणा ख़ाता इक खुल्हाईआ। रातीं सुत्यां सदा पुछे वात, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। कोझयां कमल्यां पुछे वात, ग़रीब निमाणयां लए उठाईआ। बिन सेवक होए दास, दासी आपणा रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रखाए शाख़, शनाख़त हक़ो हक़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां लेखा दए लिखाईआ। सत्तरां मेला गोबिन्द मीता, हरि सज्जण आप जणाईआ। वेखो अग्गे चलाई रीता, पिछली ढेरी देवे ढाहीआ। लख चुरासी परखे नीता, घट घट रिहा समाईआ। कोई रहिण ना देवे मन्दिर मसीता, गुरदुआर ना कोई वड्याईआ। एह नज़री आए साहिब रीता, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। सब ने भरना आपणा कीता, अग्गे हो ना कोई छुडाईआ। गुरमुख गुरसिख ना मरया ना जीता, गुर सतिगुर विच समाईआ। अन्तिम पास आपे कीता, फेल पट्टी ना कोई पढ़ाईआ। वेख धाम इक अनडीठा, बण सेवक बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर आपणे लेखे लाईआ। सत्तर सत्त दो सतिवाद, सति सति जणाइंदा। सिफ़रा रूप बणाया आदि, सति आपणा नाउँ धराइंदा। सत्त सिफ़रे दी इक्को याद, पुरख अकाल आप रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम दिती दाद, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। भगत सुहेले कर कर लाड, अन्त आपणा मेल मिलाइंदा। शब्द अगम्मी इक्को नाद, ब्रह्म ब्रह्मादि अन्त सुणाइंदा। एका नांयां रच रच काज, करता पुरख वेख वखाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत प्रभ लई लै के आया दात, सिर खारी आप उठाइंदा। सत्तरां पिच्छे बण जाए राज, बण मिस्तरी कांडी तेसी हथ्थ उठाइंदा। सचखण्ड दुआरे बहि बहि मारे

आवाज़, गुर अवतार आप उठाइंदा। उठो सारे सेवा करो आज, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। जिस ने सीस रखाया ताज, सो सब दा डेरा ढाइंदा। जिस दी पिच्छे पढ़दे आए निमाज़, सो आपणी नज़म आप सुणाइंदा। जिस दी सुणदे रहे अवाज़, सो ढोला आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर लेखे आपे लाइंदा। सत्तरां लेखा अन्त लगाया, पिछली लग्गी तोड़ निभाईआ। सरसे लहिणा झोली पाया, अर्शी प्रीतम फेरा पाईआ। बण दरसी आपणा दरस कराया, हरस रहे ना राईआ। अमृत मेघ इक बरसाया, छब्बी पोह अद्धी रात जाम प्याईआ। बूँद बूँदी दए टपकाया, किरन किरन वखाईआ। झिरन झिरन हरि रिहा जणाया, सरन सरन वड्याईआ। फरन फरन प्रभ पूरन आया, पूरन विच समाईआ। गोबिन्द रूप आप धराया, गोबिन्द संग दए वड्याईआ। पर्दा उहला दए चुकाया, उच्ची कूक कूक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां मीता आप अख्वाईआ। सत्तरो वेखो गुर गोबिन्द, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। अन्तिम लाहे झूठी चिन्द, लेखा अवर ना कोई रखाइंदा। नाल रलाया गहर गम्भीर गुणी गहिंद, बेपरवाह संग निभाइंदा । डिग्गे चरणी विष्न ब्रह्मा शिव इन्द, बाहों फड़ ना कोई उठाइंदा। जिस दी पीर पैगम्बर बणे बिंद, सुत नादी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाइंदा। आपणा हुक्म कुण्ट चार, चार चार चार मनाईआ। चार चार चार दी खिच्च लकार, चारों कुण्ट वखाईआ। चलदा फिरदा करे विहार, बण वणजारा वपारी बेपरवाहीआ। ऊँची कूके वारो वार, कूक कूक सुणाईआ। उठो होवो ख़बरदार, ख्वाब सब दे पूरे कराईआ। प्रगट होया हक़ जनाब, हकीकत पर्दा देवे लाहीआ। अन्तिम सब नूं करना पए आदाब, सिर सके ना कोई उठाईआ। आदि जुगादी गुरू महाराज, शहिनशाह इक्को जणाईआ। जिस ने सीस रखाया ताज, ताजां वाले दए खपाईआ । जन भगतां अन्तिम रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे पिच्छे साढे तिन्न हाथ सिँघासण पुरख अबिनाशी शब्दी मारे अवाज़, सुत्तयां आप जगाईआ। इक नौ दा रचया काज, करनी करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ एका नाल मिलाईआ । दूए नाल मिले एका, एका रंग वखाईआ। एका रखे दूआ टेका, दूआ एका आप हो जाईआ। भगत भगवन्त लिखाए लेखा, भेव अभेद खुल्हाईआ । पहली वेर पहली रात लोकमात कढ्ढ के जाए भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट दी साची धार, अन्दर वड़ करे हरी दुआर, भगत दुआरे आप वड्याईआ। चार कुण्ट दा भगत दुआरा, हरि भगवन करे खेल कराइंदा। उतर पूरब पच्छिम दक्खण दस्सी जाए सच किनारा, निरगुण आपणा पन्ध मुकाइंदा। गावत गाए दया कमाए ढोला गाए जै जैकारा, शब्दी शब्द अल्हाइंदा । निरगुण सरगुण करे

विहारा, भेव कोए ना पाइंदा। दर दरवेश नर नरेश साचे तख्त बहे सिक्दारा, भूपत भूप नाउँ धराइंदा। राज जोग दा इक विहारा, इक्को घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सत्तरां लेखा आ के लाइंदा। सत्तर लेखा अन्दर रख, एकँकार आप कराईआ। मेल मिलाए करे ना बस, बिस्मिल आपणा रूप जणाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, चार चार भेव खुल्ह्राईआ। चार वरन दा इक्को हट्ट, चार कुण्ट रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूआ एका एका घर बहाईआ। दूआ एका साची इकी, इकीआं आप जणाइंदा। सम्मत पन्द्रां जिन्ह्रां धार रखी तिक्खी, अठसठ खेल कराइंदा। गंगा जमना सुरस्ती वहाई निक्की, निक्की बाली नाल मिलाइंदा। तिन्नां सालां पिच्छों होई वड्डी, गुरमुखां आप वखाइंदा। सन्त अन्त सवाणी बणी नढ्ढी, सीस महिंढ्ढी इक गुंदाइंदा। जिस गंग लख चुरासी हड्डी, अन्त हड्डीआं भन्न वखाइंदा। जिस दे अन्दर मच्छी डड्डी, डण्डा आपणा इक रखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। इक्की सिख रहिणा तैयार, हरि तैयारी आप कराईआ। जिन्ह्रां पिच्छे लख चुरासी पैणी मार, बचया कोई नज़र ना आईआ। शाह सुल्तानां करे ख्वार, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। कलिजुग जगत दुहागण नार होए विभचार, नर हरि कन्त नज़र ना आईआ। सुहञ्जणी सेज रोवे ज़ारो ज़ार, रैण अन्धेरी सिर ते छाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरार, ना कोई दिसे सका भाईआ। पिता पूत ना कोई अधार, साक सज्जण ना कोई वड्याईआ। बिन हरि भगतां मिले ना कन्त भतार, फड़ बाहों गले ना कोई लगाईआ। सतिजुग दा सच विहार, सम्मत वीह सौ उन्नी दए समझाईआ। चार साल सुत्ता रिहा पैर पसार, आपणी लई ना मात अंगड़ाईआ। तीजी छत्ते हो तैयार, भगत दुआरे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां एका बन्धन पाईआ। तीजी छत्ते चढ़ भगवाना, हरि भगवान खेल कराइंदा। जमना सुरस्ती बन्न्हे गाना, गंगा नाल मिलाइंदा। अन्तिम मेटे आप निशाना, तीर निशाना आप लगाइंदा। छब्बी पोह सब दे वेंहदयां जन भगतां देवे माणा, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप उठाइंदा। पुरख अबिनाशी हुक्मराना, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। पंजां प्यारयां बन्न्हे गाना, मौली तन्द नाल रखाइंदा। खण्डा खिच्चे विच्चों म्याना, दो जहानां वंड वंडाइंदा। अल्ला राणी होए हैराना, हरि जू की की खेल कराइंदा। मुहम्मद निउँ निउँ करे सलामा, सजदा सीस झुकाइंदा। ज़बराईल ना कोई ध्याना, धुर संदेस ना कोई सुणाइंदा। ईसा बणे बाल नादाना, अग्गे झोली आपणी डाहइंदा। मूसा होए अन्त हैराना, तेरा भेव ना कोई खुल्ह्राइंदा। गोबिन्द कहे मैं तैनूं मिलां भगवाना, जिस दा अन्त कोए ना पाइंदा। भगत दुआरा जिस सुहाना, सच महल्ले डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

३८४
१३

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार चार दा इक विहार, इक्कीआं नाल करे प्यार, प्रेम प्यारा फेरा पाइंदा। प्रेम प्यारा गया आ, आया निरगुण धारा। जन भगतां बणे मलाह, फड़ बाहों करे पारा। साची देवे इक सलाह, शाह पातशाह गुर अवतारा। एका नईआ दए चढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे सर्ब संसारा, चार चार दा सच विहारा, विवहारी आप कराईआ। सच सुच्च दा सच वणजारा, घर साचे फेरा पाईआ। सच सच दी खिच्च कटारा, एका रंग वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शाही मिले ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तरां देवे इक्को माण, चुहत्तरां फड़ाए सच निशान, हरिसंगत अग्गे अग्गे लाईआ।

सचखण्ड निवासी आया थिर घर, धुर दा हुक्म जणाईआ। शब्द सुत रिहा डर, भय भउ इक रखाईआ। निउँ निउँ चरणी डिगा दड़, आपणा माण गंवाईआ। श्री भगवान किरपा कर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कहे भाणा जर, सच संदेस सुणाईआ। गुर गोबिन्द कलिजुग दे के आया वर, लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। साचे मन्दिर बहे चढ़, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गुरमुख सज्जण लए फड़, सरगुण निरगुण मेल कराईआ। लेखा जाणे सीस धड़, जगदीश हथ्थ वड्याईआ। आपणी करनी लए कर, दूजा संग ना कोई रखाईआ। आ दुलारे देवां वर, पुरख अकाल रिहा समझाईआ। मर्द मर्दाना जाए बण, मिले माण वड्याईआ। एका राग सुणाए कन्न, बिन कन्नां रिहा जणाईआ। अन्तिम छड्डणा पंज तत्त तन, त्रै त्रै बन्धन ना कोई पाईआ। ना दुहेरा ना छप्परी छन्न, मन्दिर मसीत ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दुआरे आप सुहाईआ। शब्द सुत प्रभ दए दिलासा, हरि हरि जू खेल खिलाइंदा। गुरमुख कदे ना होए निरासा, गुरसिख गुर गुर आप उठाइंदा। गोबिन्द दे के गया भरवासा, पुरख अकाल गोद सुहाइंदा। निज घर बहि बहि करे वासा, काया मन्दिर डेरा लाइंदा। जोती नूर करे प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। आत्म परमात्म देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। सो पुरख निरँजण पढ़ो इक्को गाथा, सोहँ राग अल्लाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। प्रेम प्यार दी इक्को मंगे दाता, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। लेखा जाणे भविख्त वाक्, भेव अभेद इक खुलाइंदा। पूत सपूता पिता माता, बाल अञ्याणा गोद उठाइंदा। एथे ओथे पुछे वाता, दो जहानां वेख वखाइंदा। जिस दी खाणी बाणी गाए

गाथा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान, राग अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे आप उठाइंदा। सुत दुलारे आखे लग्ग, आखर आप जणाईआ। गोबिन्द सिर रख पग्ग, मिले माण वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां पर्दा ढक, चूंडी नज़र किसे ना आईआ। चौदां लोक वखाए इक्को हट्ट, बण वणजारा फेरा पाईआ। चौदां तबक तुड़ा नत्त, नाता इक्को इक समझाईआ। नाम बीज साचे वत, बण किरसाणा हल्ल चलाईआ। भगत भगवान मार्ग दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। तीर निराला मारे कस, गोबिन्द चिला हथ्थ फड़ाईआ। प्रेम प्यार अन्दर वस, नाम अनमोला रंग चढ़ाईआ। साचा लाहा लैणा खट्ट, खट्टी हरि जू झोली पाईआ। एका मंत्र लैणा रट, रट्टा दीन मज़्ब मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे दए समझाईआ। शब्द दुलारा हो तैयार, आपणा सीस झुकाइंदा। मैं सेवा करां अगम्म अपार, तेरी ओट रखाइंदा। पुरख अबिनाशी दए सहार, साचा मार्ग अन्त लगाइंदा। ना गुरू ना अवतार, पीर पैगम्बर ना कोई रखाइंदा। मेरा तेरा इक विहार, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। भगत साचे लए उठाल, सच सेवा इक समझाइंदा। कोई ना वेखे शाह कंगाल, शाह कंगालां आपणे दुआर सुहाइंदा। सम्मत उनीवें जिहड़े लभ्भ जाण लाल, लालन आपणी गोद बहाइंदा। फेर हरि दे नाम दा पै जाए काल, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। तीर्थ सोहे ना कोई ताल, सरोवर मात ना कोई वड्याइंदा। गुर अवतार ना घाले घाल, अन्तिम मुखड़ा सर्ब छुपाइंदा। संगी साथी ना चले नाल, दीनां दर्द ना कोई वंडाइंदा। चार कुण्ट होए बेहाल, हाल मुरीदां ना कोई सुणाइंदा। शब्द सुत तेरी अवल्लड़ी चाल, जिस दा भेव कोई ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी तैनूं बणाया लाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। तूं जा के गोबिन्द गुरसिख साचे भाल, जिन्हां पिच्छे बाले नीहां हेठ दबाइंदा। ओहनां वेखो हरि जू मिले आण, हस्स हस्स काया पर्दा लाहइंदा। आपणी दस्स के जाए पहचान, बेपहचान फेरा पाइंदा। आप बणया रहे बेज़बान, जन भगतां ज़बान सोहला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। थिर घर आपणा डेरा तज, हरि जू दए सुणाईआ। भगत दुआरे अन्दर वड़ना भज्ज, साढे नौ वक्त लिखाईआ। गुरसिख दर्शन करना रज्ज रज्ज, गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। मक्के वाल्यो करो हज्ज, मदीने वाला फेरा पाईआ। मन्दिरां वाल्यो आओ नट्ठ, आपणा वेला लओ बचाईआ। गुरदुआरयां वाल्यो चरणी जाओ ढठ्ठ, प्रभ खेल आप खिलाईआ। आपणे हुक्म दे नाल देवे कर के दसखत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लूं लूं विच जाए रच, रचया नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं नानक निरगुण किहा सच, सो सच्चा आया माहीआ। जिहड़ा एहदे कोलों गया बच, दो जहानां ना मिले थाँईआ। लख चुरासी रिहा नच्च,

जन्म मरन गेड़ भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख दुआरे आए चाईं चाईंआ। भगत दुआरे आउणा हाज़ी, हज़रत आपणा खेल वखाईआ। गुरसिख लत्तां मारन मुल्ला काज़ी, शरीयत कोई रहिण ना पाईआ। जिस दा नाम ऐली दुलदुल ताजी, रसूल देवे वड वड्याईआ। शाह पातशाह बेनिमाज़ी, रोज़ा बांग ना कोई सुणाईआ। आदि जुगादि साची वरदी, आपणी आदत पूर कराईआ। महिफ़ल विच रहे विस्मादी, मशगूल आपणा नाम जणाईआ। जिस नूं गा गा थक्के ढाडी, अन्त कहिण ना पाईआ। सो गुरसिखो तुहाड्डा गवांढी, फड़ बाहों लओ उठाईआ। तुहाड्डे अन्दर रखी निक्की हाण्डी, सच सुच्च रिहा पकाईआ। गुरसिख आत्म खुशीआं नाल खांदी, लख चुरासी मरे भुक्खी तिहाईआ। किसे सिर ना दिसे परांदी, सुहाग नथ्थ ना कोई हंढ्डाईआ। अल्ला राणी हुक्मे बांदी, नेत्र रो रो दए दुहाईआ। मेरी कन्त बिनां पत जांदी, मेरी लथ्थी शरमाईआ। वेखो हरि जू आया स्वांगी, आपणा स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे आवे बेपरवाहीआ। भगत दुआरे आवांगा। आपणा हाल सुणावांगा। अगला पिछला लेख चुकावांगा। कूड़ा पर्दा उठावांगा। नूरी दरस दिखावांगा। महल अटल वसावांगा। अन्दर वड़ वड़ मंगल गावांगा। गोबिन्द मेल मिलावांगा। साचा राह चलावांगा। चार वरनां एका घर बहावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पिछला लेख चुकावांगा।
३८७ १३ सृष्ट सबाई इक्को नाम जपावांगा। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। सिर आपणे ताज टिकावांगा। ऊँची कूक ३८७ १३
कूक सुणावांगा। सब दे डेरे ढावांगा। जे कोई अग्गे अड़े, ख़ाकी ख़ाक मिलावांगा। उत्ते आपणा आसण लावांगा। विष्नूं चरणां विच बहावांगा । भगवन आपणा नूर चमकावांगा। दीपक इक्को इक वखावांगा। लख चुरासी गुल करावांगा। गुरसिख साचे आप उठावांगा। फड़ बाहों गले लगावांगा। लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढावांगा। इक्को नाम जपावांगा। सरनी लगयां लाज रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्को इक गुर अख्वावांगा।

साचे भगतो तुहाड्डा सद्दा, सचखण्ड दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्मे बद्धा, डोरी प्रेम बंधाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहाना जिस पर्दा कज्जा, निरगुण रूप बेपरवाहीआ। भगत हित्त फिरे भज्जा, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। शब्द अनादी हो के गज्जा, बोध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचे भगत तेरी अवाज़, अवण गवण हिलाईआ । पकड़ उठाया ग़रीब निवाज़, ग़रीबां दए गवाहीआ। जिस ने आदि साजण ल्या साज, अन्तिम वेखे थाउँ थाईंआ। दो जहानां रचया काज, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा

रंग वखाईआ। दहि दिशा चार कुण्ट रिहा भाज, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। रचया खेल देस माझ, बेपरवाह बेपरवाहीआ। गोबिन्द पुरख अकाल रखाई सांझ, सांझीवाल इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे भगत तेरी कूका, दर घर साचे हुक्म जणाया। पुरख अबिनाशी उठाया सुत्ता, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दी आलस निंद्रा लाहया। तैनूं सद्दे तेरा पुत्ता, पिता एका ओट रखाया। तूं वेखणहारा चारे कूटा, घट आपणा पर्दा लाहया। नाता छुटया पंज तत्त भूता, भविख्त आपणा हाल जणाया। सरगुण कूड़ी मुक्की चूका, निरगुण आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। साचे भगत तेरा फ़रमाणा, फुरना सब दा बंद कराईआ। तख्त निवासी उठे एका राणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ । आदि आदि जिस खेल रचाया, सो अन्तिम वेख वखाईआ। नर हरि नरायण जिस नाउँ धराया, नर निरँकार ख़ुशी मनाईआ। असुते प्रकाश जिस आप वखाया, घर साचे करे रुशनाईआ। श्री भगवान जिस वेस वटाया, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। अबिनाशी करता सच सीस जिस ताज टिकाया, कुदरत कादर सर्ब समझाईआ। पारब्रह्म दरगाह साची हो प्रधाना सच प्रधानगी इक कमाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरि भगत तेरा सच संदेसा, सुणया हरि करतारा। उठ उठ निउँ निउँ करे अदेसा, दोए दोए जोड़ सच निमस्कारा। आदि जुगादी इक्को वेसा, जुग चौकड़ी सच विहारा। आत्म परमात्म बणे नेता, नित नवित्त करे कारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। साचे भगत तेरी धार, हरि जू हरि हरि भाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड करे विचार, विचार विचार नाल रलाईआ। निरगुण जोत उज्यार, नूरो नूर नूर धराईआ। अजूनी रहित खेल अपार, अलख अगोचर आप कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा हो तैयार, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन नैनण नैण खुल्हाईआ। भगत तेरी साची अक्ख, हरि आखर दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे कर प्रतख, पारखू मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, साचे पन्ध चलाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, हँस मुख ख़ुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां वेस आप वटाइंदा । भगत कहिण उठ भगवान, वेला अन्तिम आईआ। तूं सचखण्ड दुआरे बण के बैठों काहन, आपणा मन्दिर बंद कराईआ। तेरी गोपी होई वैरान, लोकमात रही कुरलाईआ। उठ जवानी बाल अञ्याण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरा मिले ना कोई निशान, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। खाणी बाणी ना सकी पछाण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। तुध बिन मिले ना कोई माण, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ । जोती जोत सरूप

३८६
१३

हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन पूरी आस कराईआ। साचे भगत लओ सद्द, हरि सतिगुर सति सुणाइंदा। मैं कर के आया पार हद्द, दो जहानां चरणां हेठ दबाइंदा। लख चुरासी नालों कर के अड्ड, साचा संग निभाइंदा। काया अन्दर वड़ां अन्धेरी खड्ड, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। अमृत जाम प्यावां मध, रस इक हथ्थ वखाइंदा। शब्द अगम्मी सुणावां नद, अनहद राग अल्लाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। आत्म परमात्म कर कर वास, सेव सच कमाइंदा। साची सेजा भोग बिलास, एका रस वखाइंदा। आत्म परमात्म होवां दास, विछड़ कदे ना जाइंदा। शब्द अगम्मी सुणावां बात, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। आदि जुगादी पिता मात, साहिब सुत गोद बहाइंदा। चरण कँवल बंधावां नात, बिधाता इक समझाइंदा। उत्तम रखां साची ज़ात, अजाति रूप ना कोई वखाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप समझाइंदा। साचे भगत कहिण तेरी रखी उडीक, नव नौ चार ध्यान लगाईआ । जुग चौकड़ी देंदा रिहा तारीख, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। तेरा मार्ग इक बारीक, चल चल थक्के कोटन कोटि पांधी राहीआ। तेरा घर ना लभ्भया ठीक, पंज तत्त ठीकर गए भंनाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्सदा रहिउँ लाशरीक, शरकत घर घर दएं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। भगत कहिण सुण साचे पिता, मित्र प्यारा आप जणाइंदा । आदि जुगादी मेरी रीता, नित नवित्त खेल खिलाइंदा। सद वसां धाम अनडीठा, दूजा रूप ना कोई वटाइंदा। ना मरया ना जीता, साह साह ना कोई समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण भगत, भगवन रिहा जणाईआ । वेला तेरा आया वक्त, जो वक्त गया समझाईआ। कोई ना चले दूसरी शक्ति, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोई वड्याईआ। किरपा धार आपणी कढ्ढ फुरसत, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तेरे बिनां साडी काया कोए ना पावे बरकत, मेहर नज़र ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। साहिब सतिगुर प्या हस्स, आपणी खुशी मनाइंदा। वाह वाह भगतो मार्ग दित्ता दस्स, तुहाढे राह चल चल खुशी मनाइंदा। जुग चौकड़ी मैं मिलण दी रखी आस, आसा नाल आप प्रगटाइंदा। बण सेवक सेवा करां दासी दास, आपणी इच्छया आप जणाइंदा। जन भगतां मिलण दा कम्म ख़ास, दूजा होर ना भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा इक सुणाइंदा। तेरा शब्द संदेसा सुण सुण थक्के, थकावट कोए ना मात गंवाईआ। कलिजुग अन्तिम असीं होए पक्के, पक्कीआं इट्टां तेरी भेंट चढ़ाईआ। साडे बिनां प्रभ जी तेरा पर्दा कोई ना ढके, बिन तेरे साडी

ना कोई वड्याईआ। विछोड़े दिन औखे कटे, अन्तिम रैण अन्धेरी छाईआ। कर किरपा प्रभ तेरे बच्चे, तेरे चरण ध्यान लगाईआ। तेरे प्रेम अन्दर नच्चे, मुख घूँगट दित्ता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मंगी इक सरनाईआ। मेरी सरनाई जो जन लोड़े, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। आप चढ़ाए साचे घोड़े, घोड़ा इक्को नाम रखाइंदा। जोती शब्दी आपे बौहड़े, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जिउँ ससे उपर लाए होड़े, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म आपे बौहड़े, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। बाकी सब नूं जवाब देवे कोरे, पल्लू हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। साचे भगत करो ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाईआ। सचखण्ड बैठा बण के काहन, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सति सति झुलाए निशान, निशाना इक्को इक वखाईआ। करे खेल नौजवान, बल आपणा आप धराईआ। प्रगट होए श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वखाईआ। सुत दुलारा बाल अञ्याण, थिर घर आपे लए जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे फ़रमाण, सच संदेसा इक जणाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां करे सवाधान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा सुणो भगत, श्री भगवान आप जणाइंदा। लख चुरासी खेल जगत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। नाता जोड़ बूँद रक्त, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म साची शक्ति, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा लाहे आप, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी वड प्रताप, भेव अभेद जणाईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाश, खेलणहार इक हो जाईआ। पुरीआँ लोआँ पाए रास, मण्डल मण्डप गोपी काहन रचाईआ। आदि जुगादी निरगुण नूर जोत प्रकाश, रूप अनूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां एका राह हुक्म जणाईआ। साचे भगत तेरा राह रहे तक्क, तकवा इक रखाया। कवण वेला प्रभ सिर ते रखे हथ्थ, समरथ फेरा पाया। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, पांधी बण बेपरवाहया। नज़री आए घट घट, घर घर डेरा लाया। चौदां लोकां ख़ाली करे हट्ट, चौदां तबकां पन्ध दए मुकाया। गुरसिखां देवे इक ब्रह्म मति, पारब्रह्म आप पढ़ाया। अन्तिम पत्त लए रख, सिर सीस जगदीश हथ्थ टिकाया। आपणी सच ज्ञानी देवे दस्स, भेव अभेद किसे ना पाया। जुग जन्म दी पूरी करे आस, हर घट लहिणा मात चुकाया। आत्म सेजा करे भोग बिलास, भस्मड़ आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरण ध्यान लगाया। चरण कँवल रखो सीस, जगदीश रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी पीसन

ल्या पीस, गुर अवतार सेवा लाईआ। आत्म देवे इक हदीस, इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतन लहिणा आप चुकाईआ। भगतन लहिणा देवे भगवाना, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दा सच निशाना, लोकमात वखाइंदा। योद्धा सूरबीर बलवाना, बल आपणा आप धराइंदा। वसणहारा सच मकाना, सच मकान आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां खातर आपणा हुक्म सुणाइंदा। साचा हुक्म दए फ़रमाणा, फुरना आपणा आप प्रगटाईआ। करवट बदले नौजवाना, थिर घर वेखे चाईं चाईंआ। सुत दुलारा कर परवाना, सच परवाना हथ्थ फड़ाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी भेव रखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे नव नौ चार, जुग जुग खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कर विहार, बिवहारी राह चलाइंदा। शब्द अनादी कर तैयार, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां महल्ल उसार, एका नाम बन्धन पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर तैयार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त वेख सच अखाड़, तिन्न पंज खेल खिलाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, नाम निधान झोली पाइंदा। आत्म परमात्म मेला खास, आपणा भेव चुकाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म खोल्ह किवाड़, घर घर विच सोभा पाइंदा। करनी क्रिया कर विचार, कुदरत कादर खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण कर तैयार, साचा ढोला राग सुणाइंदा। बण विचोला एकँकार, पर्दा उहला आप उठाइंदा। शब्दी शब्द गुरु गुर धार, गुरु गुर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग लहिणा आप चुकाइंदा। जुग जुग चुकाए आपणा लहिणा, लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे जिस ने बहिणा, बहि बहि खुशी मनाईआ। आपणा भाणा जिस ने कहिणा, आपणे भाणे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां देवे साचा सद्दा, निरगुण रूप आवे भज्जा, बण पांधी फेरा पाईआ। पांधी बणया बेपरवाह, बेपरवाही खेल कराइंदा। मुकामे हक़ नूर कर रुशना, परवरदिगार दया कमाइंदा। मेहरवान सदा वेखे थाउँ थाँ, लाशरीक वेस वटाइंदा। जोती जामा नूर धरा, जलवा ज़ाहर ज़हूर रखाइंदा। भेद अभेद भेव जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप जगाइंदा। भगतो जागो हरि रिहा जगा, जगावणहारा आईआ। आपणा राग रिहा सुणा, दूसर राग ना कोई अल्हाईआ। एका काज रिहा रचा, दो जहानां वज्जे वधाईआ। झूठा काज दए मिटा, समग्री इक्को वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा लेखा रिहा चुकाईआ। चार जुग दा लेखा चुक्के, चुकावणहार निरँकार। पूरब लहिणा सब दा मुक्के, मुक्के विच संसार। कूड़ी क्रिया बूटा सुक्के,

हरया होवे ना दूजी वार, गुरमुख आपणी गोदी चुक्के, प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार। महाबली प्रभ आपे उठे, करे खेल अगम्म अपार। रुत्त सुहाए अबिनाशी अचुते, सद वेखे शब्द बहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगती मेला विच संसार।

सुत शब्द उठ लाल, लालन आप जगाइंदा। तेई अवतार सुरत लओ संभाल, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। भगत अठारां करो ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद वेखो इक दुकान, दर दरवाज़ा आप जणाइंदा। गुरू दस देवे आप ज्ञान, नाम संदेसा इक अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताइंदा। साचे सुत सच विचार, हरि साचा सच जणाईआ। विष्नूं नाल कर तैयार, ब्रह्मे अक्ख खुल्हाईआ। शंकर जटा जूट लए उठाल, बाशक तशका वेख वखाईआ। सहँसर मुख ना कोई धार, दो सहँसर जिह्वा जिह्वा गुण ना कोई जणाईआ। करोड़ तेतीसा होए ख़बरदार, सुरप्त इन्द दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा त्रैगुण माया, त्रैभवन धनी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी जिस ने खाया, खा खा शुकर ना कोई मनाइंदा। लख चुरासी जिस बन्धन पाया, बन्धन कोए ना मात तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म पुरख अगम्म, एका एक जणाईआ। एका गुर अवतार पीर पैगम्बर बेड़ा लओ बन्न्ह, एका देवे सच सलाहीआ । धुर फ़रमाणा सुण लओ कन्न, ना कोई लिखे कागद कलम शाहीआ। आपे बणे वेखो जन, जनणी कवण गोद सुहाईआ। कवण दए नाम धन, कवण ख़ज़ाना रिहा लुटाईआ। लख चुरासी होए अन्न्ह, दोए दोए लोचण बंद कराईआ। कर कर वड्डी वासना मन, मन वासना ना कोई मिटाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गा डंन, काया तन तपाईआ। भाण्डा भरम कौई ना देवे भन्न, कूड़ा गढ़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां रिहा समझाईआ। गुर अवतार उठे पीर, पीर वड्डा फेरा पाइंदा। चारों कुण्ट वज्झा शरअ, ज़ंजीर, ना कोई तोड़ तुड़ाइंदा। नाता तुटया शाह हकीर, हकीकत सच ना कोए वखाइंदा। तेरी महिमा कोई ना दस्से बेनज़ीर, नज़र सब दी आप बदलाइंदा। सच दस्से ना कोई तहिरीर, तसबी गल ना कोई लटकाइंदा। तेरी चोटी चढ़े ना कोई अख़ीर, मुकामे हक़ ना दर्शन पाइंदा। साची पढ़े ना कोए तकबीर, तालब नज़र कोई ना आइंदा। ना कोई होए दामनगीर, सति सुहेला सपूत ना कोई अख्वाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ी फड़ी हथ्थ शमशीर, छुरी सब दे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर खोल्हो ताक, ताकतवर आप जणाइंदा। नूर नुराना

पाकी पाक, एका हुक्म जणाइंदा। चौदां तबक लैणा झाक, झाकी इक्को वार वखाइंदा। कोई ना करे किसे साथ, मुहम्मद पल्लू ना कोई फड़ाइंदा। कोई ना देवे अन्त निज़ात, पार किनारा ना कोई लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर लए अंगड़ाई, नेत्र नैण उठाईआ। चारों कुण्ट उम्मत दए दुहाई, अमन नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द बूटा पुटया काई, सब दी जड़् उखड़ाईआ। अल्ला राणी मुख शरमाई, मुख घूँगट रही पाईआ। खुलड़े केस रही वखाई, सज्जण साक ना कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां रिहा बुलाईआ। पीर पैगम्बर आत्म खोल् अक्ख, आखर हरि जणाइंदा। करे नबेड़ा हक़, हकीकत वेख वखाइंदा। चौदां तबकां वेखे नस्स, शाह अस्वार ना कोई जणाइंदा। फड़ नड़ी सारे हुक्का पींदे गट गट, गट्टा काया ना कोई खलाइंदा। मणकयां माला लई रट, मन का मणका ना कोई भुआइंदा। सजदा कोई ना करे सिर चरणां उत्ते रख, ऐवें बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहबर आप अल्लाइंदा। पीर पैगम्बर ईसा मूसा, मुहम्मद नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी साचा शेर तन वखाए काला सूसा, साहिब नज़र कोई ना आईआ। फिरनहारा गली कूचा, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। पीर पैगम्बर मारन धाह, चार कुण्ट वेखो कुरलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी पकड़े बांह, ख़ाली पल्लू रिहा जणाईआ। मेरी उम्मत मैनूं करदी नाह, साचा संग ना कोई निभाईआ। माई हव्वा ना कोई माँ, आदम संग ना दए जणाईआ। सिर देवे ना कोई ठंडी छाँ, चारों कुण्ट कूक कूक सुणाईआ। बेपरवाह नज़र ना आए किसे थाँ, मुख नकाब ना कोई उठाईआ। उम्मत उम्मती भरी गुनाह, अन्त ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां रिहा वखाईआ। पीर पैगम्बर नेत्र रो, नैणां नीर वहाया। हाए एह की गया हो, दरोही दरोही करे खुदाया। जिस दी सुणदे रहे सो, सो साहिब फेरा पाया। जिस दे नाल रखदे रहे मोह, सो मुहब्बत रिहा तुड़ाया। करया खेल छब्बी पोह, जिस दा अन्त किसे ना पाया। चौदां तबकां आपणी हथ्थीं रहे टोह, पल्लू हथ्थ ना किसे फड़ाया। कलिजुग अन्तिम साडे कोलों सब कुछ ल्या खोह, ख़ाली हथ्थ देण दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। पीर पैगम्बर नेत्र नीर, छहबर इक लगाईआ। चार यारी विछड़े वीर, भाई भाई ना कोई मिलाईआ। उम्मत बदले ना कोई साडी तकदीर, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। परवरदिगार बेपरवाह आपणी हथ्थीं फड़के पावे जंजीर, सके ना कोई तुड़ाईआ। सदी चौधवीं होए दिलगीर, दिलबर मिल्या ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ।

पीर पैगम्बर वेखण हुजरा, आपणा नैण उठाईआ। अग्गे सच दस्से ना कोई मुजरा, कूड़ी क्रिया नाच नचाईआ। पिछला वक्त जो पिच्छे गुजरा, अग्गे आपणा हुक्म मनाईआ। सब नूं सिर ते चुक्कणा पए बुचका, आपणा आपणा भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा लिखाईआ। पीर पैगम्बर करन सजदा, चरण सीस निवाया। परवरदिगार तेरे होए बरदा, बरीख़ाना दए वखाया। तूं दर्दीआं वटाए दरदा, बेदर्द तेरी वड वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। गुर अवतार वेखो हाल, हरि जू हाल रिहा जणाईआ। उंगली लाया महाकाल, महाबली दया कमाईआ। कलिजुग जीव होए बेहाल, बहिबल हो देण दुहाईआ। मार्ग मिल्या ना किसे सुखाल, साचे घर ना कोई मिलाईआ। पढ़ पढ़ घालणा गए घाल, पढ़ियां हथ्थ किसे ना आईआ । ठर ठर थक्के रुत्त सिआल, ठोकर नाम ना कोई लगाईआ। सड़ सड़ थक्के अग्नी विच जहान, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा वखाईआ। तेई अवतार करन सलाह, हरि जू की की खेल रचाया। जुग जुग देंदे आए सलाह, आपणा नाम जपाया। निरगुण सरगुण दस्सदे आए राह, ऐं पर हथ्थ किसे ना आया। जीव जंत करन गुनाह, फड़ बाहों ना किसे बचाया। लिख लिख अक्खर रहे सुणा, होका दे दे राग अलाया। जिन्ना चिर सतिगुर पूरा सौंदयां जागदयां रोंदयां हस्सदयां अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर फड़े ना बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। आपणा भेव जणाए हरि, हरि आपणी दया कमाईआ। जिस घाड़न ल्या घड़, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर आपे चढ़, आपे वेख वखाईआ। निरगुण नूर जोत धर, पंज तत्त ना कोई वड्याईआ। शब्द अगम्मी आपे वर, आपणे नाम दए वड्याईआ। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बरां जो देंदा रिहा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम सारे लए फड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। उठो नेत्र वेखो खड़, तीर तुफंग खड़ग चमकाईआ। लोकमात जो धर्म दी लाए जड़, कलिजुग जीवां हथ्थीं कट वखाईआ। तुहाड्डा रखे ना कोई डर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तुसीं आपणी कीती गए हर, हरि जू आपणे हथ्थीं डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे चरणी डिगे दड़, मूँह दे भार नैण शरमाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा कर, साडी चले ना कोई चतुराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान लिख लिख आए धर, धरनी धरत धवल दए दृढ़ाईआ। मन मति बुध रहे हर, आत्म परमात्म करी ना सच पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया आपे हर, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। असीं जा के लोकमात ना सके फड़, दर तेरे बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

३६४
१३

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ तेरी सर्ब रज़ाईआ। तेरी रज़ा सानूं मंज़ूर, इक्को ध्यान लगाया। लख चुरासी करे कसूर, तेरा हुक्म बेपरवाहया। कलिजुग होए असीं मज़बूर, बैठे मुख शरमाया। तेरा भाणा वरते ज़रूर, ना कोई मेटे मेट मिटाया। वेद व्यास लिख के आया प्रभ आसा करे पूर, निरगुण आपणा रूप धराया। मूसा मंगे दर हज़ूर, मुख नैणां नैण शरमाया। ईसा कहे मेरा बाप मुआफ़ करे कसूर, लेखा सब दा दए मुकाया। मुहम्मद कहे मेरा आवे शाह ग़फ़ूर, अमाम आपणा नाउँ प्रगटाया। नानक कहे सर्ब कला भरपूर, कल आपणी धार जणाया। गोबिन्द कहे मेरी आसा मनसा पूर, पुरख अकाल पिता माया। कलि कल्की नेड़े आए जो वसया दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। मेरी सम्बल करे आसा पूर, पूरना पूरा इक्को पाया। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी गुरू अवतार पीर पैगम्बर लेखा मंगे घर घर जरूर, छुपया कोई रहिण ना पाया। लोकमात त्रैगुण माया आए सरूर, अग्नी तत्त ना कोई बुझाया। लख चुरासी होए चूर चूर, कलिजुग सन्त ना कोई बचाया। बाहरों चाढ़न काया चोली रंग गूढ़, अन्दर रूप ना कोई वखाया। अन्दर दिसे ना साचा नूर, अन्ध अन्धेरा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक घलाया। सच सुनेहड़ा देवे मीता, इक्को इक जणाईआ। भगतां दस्सदा रिहा रीता, करे सच पढ़ाईआ। कबीर जुलाहा कहे प्रभ
३९५ मिले ना किसे मसीता, शिवदुआले मठ्ठ ना डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया तपे अंगीठा, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। सब दा ख़ाली ३९५
१३ वेखो ख़ीसा, नाम झोली ना कोई भराईआ। कलिजुग वेला अन्तिम बीता, बीती कहाणी दए सुणाईआ। गुर अवतार पीर १३
पैगम्बर इकठ्ठा कीता, छब्बी पोह खुशी मनाईआ। हुक्म अन्दर जो पीसन पीसा, नेत्र नैण दए वखाईआ। उठो वेखो जिस दीआं करदे रहे उडीकां, सो आया सच्चा माहीआ। जन भगतां नाल लगाए प्रीता, दूजा संग ना कोई रखाईआ। गुरमुख आपणे जेहा कीता, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। हरिजन कोए ना जाणे मन्दिर मसीता, सब दा डेरा एका इक जणाईआ। हस्त कीटा इक्को जेहा कीता, राज राजान ना कोई वड्याईआ। सब दा बणे साचा मीता, ओथे एथे होए सहाईआ। गुरमुख कोए ना रहे कौड़ा रीठा, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या साचा मीता, गुरमुखां घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा सुणा, इक्को गुर समझाईआ। लोकमात वेखो नैण उग्घाड़, परवरदिगार जणाइंदा। लहिंदी दिशा कूके काल, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा। अल्ला राणी सिर दे पुट्टे वाल, सीस मींढी ना कोई गुंदाइंदा। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाल, हरि जू भेव कोई ना पाइंदा। गोबिन्द सुणन आया हाल, मुरीदां मुर्शद आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर चरणां हेठ दबाइंदा। चरणां

हेठ बणे सुहेले, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी अन्तिम रहि गए अकेले, संग ना कोई रखाईआ। लहिंदी दिशा ख़ाली महल्ले, मक्का काअबा ना कोई वड्याईआ। जिस ने सुनेहुड़े पहलों घल्ले, अन्तिम लेखा रिहा लिखाईआ। ख़ाली करे सब दे ख़ीसे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर कढ्ढण हाढ़ा, ऊँची कूक कूक सुणाया। परवरदिगार अगम्मी लाड़ा, तरस ना ज़रा कमाया। फिरनहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाया। पावे सार डूँग्घी गारा, अन्ध अन्धेर फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एकँकारा। एकँकार खेल अवल्ला, हरि आपणा आप कराईआ। इक वखाए सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। दो जहानां फड़ाया पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पुआईआ। जन भगतां पिच्छे निरगुण होया झल्ला, आपणी झलक वखाईआ। करे खेल अछल अछल्ला, वल छल धारी भेव ना राईआ। निरगुण जोत आपे बला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दए वड्याईआ। गुर अवतार रखे नाल, हरि नालस आप कराइंदा। वेखो चार जुग दे विछड़े लए संभाल, कीते कौल तोड़ निभाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए भाल, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। नाम ख़ज़ाना देवे धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोई ना जाइंदा। घर विच अमृत भरे ताल, सरोवर इक्को इक सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम करी आण प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। गुरमुखां विछड़यां थाए पाई घाल, आपणी घाल ना कोई जणाइंदा। गोबिन्द फल लग्गा डाल, पुरख अबिनाशी वेख ख़ुशी मनाइंदा। जिस नीहां हेठां बाले दित्ते स्वाल, सो सोहणी बणत बणाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ इक निशान, सति सतिवादी इक झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ना कोई पुरख ना कोई नार, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। निरगुण नूर होए उज्यार, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे सांझा यार, भेव अभेद खुल्हाईआ। सीस ताज इक टिकाया सिरजणहार, शहिनशाह बेपरवाहीआ। गुर अवतार चरणां हेठ रखाया पीर पैगम्बर गुर अवतार, उंगली उंगली नाल मिलाईआ। एका घर सुहाए दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां दए इक आधार, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। एका एक मिले सच्चा शाहकार, शाह शहाना सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दहि दिशा दए वड्याईआ। भगत दुआरा वेख पटना, गोबिन्द ख़ुशी मनाइंदा। अन्तिम जेउड़ा सब दा कटना, कल काती वेख वखाइंदा। आपणा मले आपे वटना, आपणा सगन आप मनाइंदा। हरि का नाम गुरसिख रटणा, सोहँ सो आप पढ़ाइंदा। अमृत रस एका चक्खणा, अंमिउँ रस मुखड़े मुख चुआइंदा। कलिजुग अन्तिम जिस ने उठणा, तिस दा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणी दिशा वेख वखाइंदा। आपणी दिशा वेखणहारा, वेख्यां नज़र ना आईआ। गुर अवतारां दए सहारा, साचा हुक्म मनाईआ। दोए जोड़ करन सर्ब निमस्कारा, सीस सके ना कोई उठाईआ। तेरा खेल बेऐब परवरदिगारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चौथे जुग सच विहारा, प्रभ सच्चा आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा हथ्थो हथ्थ मुकाईआ। हथ्थो हथ्थ चुके लेखा, लिख्या लेख मिटाइंदा। वेले अन्त रहिण ना देवे कोई भुलेखा, पर्दा उहला सर्ब मिटाइंदा। साहिब सतिगुर जाणे लेखा, वेख वेख खुशी मनाइंदा।

. . . .

(तकरीबन ८ पेज)

वेखो भगतो भगती रंग, हरि सतिगुर आप रंगाया। लोकमात सेज सुहञ्जणी सच पलँघ, पारब्रह्म प्रभ आप विछाया। उपर चढ़या लै मृदंग, नाम डंका इक सुणाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो वंडां गए वंड, कलिजुग द्वापर त्रेता सतिजुग हिस्सा, हिस्सा विच समाया। अन्तिम करे खण्ड खण्ड, खण्डा इक्को नाम चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
३६७ किरपा कर, हरि भगतां रिहा जणाया। हरि भगत करे प्यार, चरण ध्यान लगाईआ। तेरा नज़री आए इक दरबार, दूजा ३६७
१३ इष्ट ना कोई वखाईआ। तेरा नूर निरगुण धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तेरा नाम शब्द जैकार, जुग जुग रिहा १३
जणाईआ। गुर अवतार तेरी धार, पीर पैगम्बर तेरा रंग वटाईआ। बंस सरबंस तेरा खेल अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम दए दीदार, बण दर्दी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत एका मंग मंगाईआ। भगतां मंग करे पूरी, भगवान दया कमाइंदा। तुहाड्डी भुल्ल ना जाए मज़बूरी, मुश्कल सब दी हल्ल कराइंदा। कलिजुग सृष्टी होई कूड़ी, जूठ झूठ सर्ब प्रनाइंदा। पीर पैगम्बर लारा दे के गए बहिश्ती मिलण हूरी, हूर ज़हूर ना कोई वखाइंदा। गुरमुखां देवे सति सरूरी, इक्को नाम झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। भगत वड्डा होया मात, हरि सतिगुर आप बणाईआ। जिस नूं वखाई आपणी ज़ात, ज़ेर ज़बर ना कोई लड़ाईआ। ऐन ग़ैन ना कोई लुगात, हमज़ा रूप ना कोई छुपाईआ। गुंना नून ना कोई निज़ात, अल्फ़ नूर ना कोए रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को साक, हरि सज्जण फेरा पाईआ। जिस दा आदि जुगादी सोहँ पाठ, गुर अवतार गए ध्याईआ। सच सरोवर मारे ठाठ, अमृत इक्को घर वखाईआ। हरि भगत दुआरे बहिणा घाट, गुरमुख आए पांधी राहीआ।

घर मिले पुरख समराथ, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां नाल मिलाए हाथ, गलवकड़ी आपे पाईआ। नाता जुड़या पिता मात, पूत सपूत गोद बहाईआ। आओ रल मिल इक्को गाईए गाथ, जिस गायां विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दुआरे फेरा पाईआ। भगतो सेवा करो कबूल, हरि साचा मंग मंगाइंदा। जुग चौकड़ी मेरा इक असूल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। होए अभुल ना जावां भूल, भुल्यां मार्ग लाइंदा। मैं सूलीयों करां सूल, बिना उजाड़ा सूल आपणे नाल मिलाइंदा। जिस जन चरणां देवां धूढ़ धूल, धवल हौला भार कराइंदा। वेखो सूद नाल चलया असल मूल, पिछला लेखा आप मुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा पूरा करो घूर घूर, बिन घूरयां हरि जू हथ्थ किसे ना आइंदा। सारे इकट्ठे होए बणाओ आपणा मज़दूर, कर मज़दूरी खुशी मनाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बणया रिहा मफ़रूर, गुर अवतारां हथ्थ किसे ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी प्या फ़तूर, सत्त दीप सर्ब कुरलाइंदा। गोबिन्द रखी आस दोए जोड़ बेनन्ती करे ज़रूर, नेत्र नैण ध्यान लगाइंदा। पुरख अबिनाशी तुध बिन बख़्शे ना कोई कसूर, दीनन दया ना कोई कमाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया होई मूल, सति धर्म ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आप मिलाइंदा। भगतो बांह फड़ो नाल घुट्ट, आपणा बल धराईआ। घर आया ना जाए छुट्ट, जिन्ना चिर ना वास्ता पाईआ । जिस गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अन्दर पाई फुट्ट, फड़ बाहों लओ मनाईआ। सानूं नाम प्याला दे के जा घुट्ट, जिस पीत्यां दुःख रहे ना राईआ । नहीं ते मिल जा गोबिन्द सुत, साख्यात नज़री आईआ। जिस दे कोलों तेरा राह लईए पुच्छ, आपणा पर्दा मात चुकाईआ। असीं ख़ाली हथ्थ साडे कोल नहीं कुछ, इक्को तेरी ओट तकाईआ। कर किरपा पा सच भिच्छ, तुध बिन भिच्छया ना कोई पाईआ। ख़ाली बूटे गए सुक्क, बिन माली सिंच हरा ना कोई कराईआ। कलिजुग वेखो सिंमल रुक्ख, लख चुरासी रही लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ । वेखो आया घर भगवान, आपणा वेस वटाया। सारे फड़ लओ बण बलवान, आपणा बल धराया। डांगां सोटे फड़ो नौजवान, क्यों आपणा हौंसला ढाहया। नौ दुआरे खड़े सिख निशान, जिन्हां विच्चों नठ्ठ कदे ना जाया। बारां वेखण कर ध्यान, एका दूआ जोड़ जुड़ाया। इक नूर नूर महान, दूजा पूरन विच समाया। जिस दा कोई ना जाणे निशान, सो गोबिन्द रूप धराया। सिर रख ताज भगवान, भगवन आपणा घर जणाया। सारे मिल के मंगो दान, अग्गे आपणी झोली डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या रिहा समझाया । सारे उठो धारो बल, बल बावन गया समझाईआ। जिहड़ा पूरन अन्दर गया रल, तुहाढे विच डेरा लाईआ। ना कोई करे

३९८
१३

वल छल, सच कहाणी रिहा समझाईआ। पहलों चार कुण्ट संदेसा रिहा घल्ल, फिर आपणा फेरा पाईआ। तिस साहिब जाओ बलि बलि, जो विछड़े रिहा मिलाईआ। पिछला लेखा चुक्कया अज्ज कल, अज्ज रुत्तड़ी रुत्त सुहाईआ। सारे रल के दर लओ मल्ल, जिस महल्ले वसे सच्चा माहीआ। घर देवण आया फल, आपणी झौली लओ भराईआ। फिर जा वड़े आपणी झल्ल, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार जुग जुग सुनेहड़ा रहे घल्ल, सच संदेस सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम होया भगतां वल, दो जहानां वाली आपणा फेरा पाईआ। जिस ने नगर वसाया अबचल, गुरमुख खेड़ा रिहा वसाईआ। जिस दा मन्दिर इक अटल, आदि जुगादि ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां रिहा उठाईआ। गुरमुख उठो फड़ो सोटे, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। माझे मालवे दुआबे दे सिँघ मोटे, कमरकसे ना कोई खुल्हाइंदा। जिन्हां सूर गाँ वढ्ढे झोटे, तिन्हां पैरां हेठ दबाइंदा। पीरां कोई ना खवाए परौंठे, खीर मन्दिर ना कोई चढ़ाइंदा। अन्तिम गुरमुखां पुराणे कढ्ढे रोसे, रुसयां आप मनाइंदा। कलिजुग जीव वेखो होछे, हरि का भेव किसे ना आइंदा। बाहरों दिसण भाण्डे पोचे, अन्दर कूड़ी आप भराइंदा। जे कोई हरि दीआं सोचां सोचे, सोच विच कदे ना आइंदा। कर किरपा शब्दी आपे पहुंचे, फड़ बाहों गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उतर पूरब पच्छिम दक्खण जन भगतां आया आपे रखण, लख चुरासी विच्चों विरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाइंदा। नाम मुधाणा एका हथ्थ, नीर सीर हथ्थ किसे ना आईआ। लख चुरासी देवे मथ, दोवें हथ्थीं सेव कमाईआ। दुरमति मैल देवे कट, गुरमुख रंग चढ़ाईआ। आओ वेखो खुल्हा हट्ट, प्रभ साचा रिहा खुल्हाईआ। बाहरों दिसे गंवार जट्ट, अन्दर वड़या बेपरवाहीआ। जिस दी गोबिन्द पत लए रख, हरिगोबिन्द ख़ुशी मनाईआ। आओ रल मिल वेखो कमलापति, कँवल नैण फेरा पाईआ। सारे इक्को गाओ जस, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी वड्याईआ। जिध्धर जाओ देणा दरस, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा उठाईआ। उठो भगतो हो दलेर, हरि दलेरी इक जणाइंदा। दर आया घर लओ घेर, घेरा इक समझाइंदा। दो जहानां फिरे बण के शेर, तुहाढ्ढे अग्गे सीस झुकाइंदा। तुसां करनी आपणी मेहर, पुरख अकाल झोली डाहइंदा। कलिजुग अन्तिम करां ना डेर, जगत जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। चार जुग करदा आया हेर फेर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सद्दा आप सुणाइंदा। सद्दा देवे आपणे रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। निरगुण हो बणया मलँघ, आपणा नाच नचाईआ। लोक परलोक आए लँघ, अवण गवण डेरा ढाहीआ। दो जहान सुणाए इक मृदंग,

३६६
१३

नाम डंका इक वजाईआ। लेखा जाणे नौ खण्ड, सत्त दीप जगाईआ। हरिजन मंगां रिहा मंग, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। जन भगतां देवे निजानंद, आत्म परमात्म करे रसाईआ। पिछली तुट्टी देवे गंढु, अग्गे सके ना कोई तुड़ाईआ। बण तरख़ाण देवे रंद, रंदा आपणा नाम उठाईआ। हरिसंगत विच रहिण ना देवे गंद, बेमुखां डेरा ढाहीआ। जो गाइन सोहँ छन्द, तिन्नां सचखण्ड दए पुचाईआ। ना कोई दिसे नार दुहागण रंड, हरि जू गुरमुख कन्त इक हंढाईआ। लेखा जाणे सर्ब ब्रह्मण्ड, कोटन कोटि रूप धराईआ। जे कोई कलिजुग अन्तिम मिल्या सूरा सरबँग, बिन भगतां झूठी डण्ड पाईआ। सब दा तोड़े आप घुमण्ड, नाम डण्डा हथ्थ उठाईआ। ना कोई तारा ना कोई चन्द, सूरज किरन ना कोई रुशनाईआ। जिन्नां उपर होए दयाल आप बख़्शंद, बखशिश आपणी झोली पाईआ। सो हरिसंगत विच होए सुहञ्जणे चन्द, तिस आपणा भेव खुल्हाईआ। ख़ुशी कराए बंद बंद, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। दोए दोए जन्म मिटे पन्ध, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां हाल रिहा सुणाईआ। भगतां हाल दस्से निमाण, निवण सो अक्खर धार चलाइंदा। सच दुआरा सच निशान, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। नाम जणावे एका कान, नेत्र अक्ख ना कोई खुलाइंदा। अन्तिम नूर श्री भगवान, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। प्रभ दा भेव किसे ना आया , गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। सो अन्तिम कल देवे माण, भगतां बख़्शे चरण ध्यान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। भगतो पौड़े चढ़ो आप, हरि जू राह जणाईआ। जिस नूं मिले सच्चा बाप, सो पूत क्यों शरमाईआ। जिस दा करदे रहे पाठ, सो तुहाडा ढोला गाईआ। तुसीं सारे कहो असीं इक्को पट्टी पढ़ी जमात, दूजा अक्खर नज़र ना आईआ। नारी मिल गई कमलापात, सेज सुहञ्जणी लए बिठाईआ। चरण कँवल बंधाया नात, नाता इक्को इक जणाईआ। लेखा चुकाए पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। सचखण्ड दुआरे करे नूरी प्रकाश, सदा सुहेला वसे पास, जोती जामा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जगाईआ। जागो भगतो जाणा जाग, हरि साचा सच जणाइंदा। जिस दा करदे रहे वैराग, सो वैरागी फेरा पाइंदा। जिस दा करदे रहे त्याग, सो त्यागी फेरा पाइंदा। जिस दा गाउँदे रहे राग, सो रागी ढोला एका गाइंदा। जिस दा रचदे रहे काज, सो तुहाडा काज रचाइंदा। जिस दा अवतार गुर पीर पैगम्बर समाज, सो भगतां राह चलाइंदा। लख चुरासी तेरा चले जहाज़, सूरा सरबँग आपणे कंध उठाइंदा। जिस दी शब्द अगम्मी अवाज़, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। सो तुहाडे अग्गे नाच, बण स्वांगी नटुआ खेल कराइंदा। बाहरों जाणो ना माटी ख़ाक, गोबिन्द आपणा खेल कराइंदा। अन्दर

४०१
१३

नूर पुरख अबिनाश, जलवा इक्को इक प्रगटाइंदा। भगतां मिलण आया खास, दूजी खाहश ना कोई वखाइंदा। भगतां रखे सदा पास, साचे घर बहाइंदा। भगतां पूरी करे आस, निरास नज़र कोए ना आइंदा। भगतां देवे साचा साथ, सगला संग आप निभाइंदा। एकँकार लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। भगतां पार कराए आपणा घाट, पत्तण इक्को डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सौगात इक वरताइंदा। सच सौगात दए प्रीत, प्रीतीवान दया कमाईआ। भगत भगवान दी इक्को रीत, दूजा दर ना कोई वखाईआ। नारी खौंत ना करे उडीक, बीवी राह ना कोई तकाईआ। करीम कादर करता जाणे ठीक, दुआर बंक फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां भेव रिहा खुल्हाईआ। वेखो भगतो खोल्हे भेव, हरि अभेद आप जणाइंदा। तुहाडी करे आ के सेव, सेवक आपणा नाम धराइंदा। रहिणा प्रेम आपणा सच्चा मेव, हरि सतिगुर झोली आप भराइंदा। जुग जुग सदा नेहकेव, नेहचल आपणा धाम सुहाइंदा। वड दाता देवी देव, देवत सुर ना कोई सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मेला इक कराइंदा। भगतां मेला इक इकठ्ठ, हरि एका घर कराईआ। दूर दुराडा आए नठ्ठ नठ्ठ, रातीं सुत्यां भुल्ल ना जाईआ। अन्दर वड़ मार्ग दस्स, आपणा राह समझाईआ। हिरदे अन्दर वस वस, पर्दा रिहा उठाईआ। आपणा खेड़ा कर के भठ्ठ, भगतां खेड़ा दित्ता प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। आपणा खेड़ा दित्ता ढाह, शेर सिँघ नज़र किसे ना आइंदा। भगतां बणया फेर मलाह, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सचखण्ड दुआर दए सुहा, नूरो नूर डगमगाइंदा। सीस रख ताज बेपरवाह, पर्दा किसे ना कोई रखाइंदा। सोहँ धरया आपणा नाँ, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। जिस ने करया ना कोई गुनाह, शेर आपणा बल वखाइंदा। सिँघ इक्को भबक दए लगा, दो जहान मूँह दे भार सुटाइंदा। विष्नूं झोली रिहा डाह, भगवन आपणी हथ्थीं आप भराइंदा। जै जैकार करे सर्ब सुणान जिस थाँ, रचना आप रचाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादी इक्को नाँ, बिन पुरख अकाल भेव कोई ना पाइंदा। आपणा नाम ना दस्सया सारा, भोरा भोरा गुर अवतारां रिहा वरताईआ। आप बैठा रिहा कर के किनारा, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। निरगुण देंदा रिहा शब्दी धारा, सति शब्द आप समझाईआ। जोती किरन कर उज्यारा, इक इक लड़ी नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन कोटि नाम प्रगटाईआ। कोटन कोटि सिफ्ती नाम, हरि जुग जुग आप चलाइंदा। आपणा नाम रखे निशकाम, निष्अक्खर रूप धराइंदा। जिस नूं सारे करन सलाम, सजदा नूर इक वखाइंदा। जिस नूं करन दर प्रणाम, पर्दा उहला ना कोई रखाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम नाम आपणा आप सुणाइंदा। महाराज बणया आप विचोला, शेर सिँघ पंज तत्त मिलाईआ। विष्नूं दुआरे होया गोला, बण सेवक सेव कमाईआ। भगवान साचा तोल तोला, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह इक्को एक, आदि जुगादि अख्वाइंदा। सचखण्ड दुआरे बैठा रहे बिबेक, बिबेकी आपणा रूप वटाइंदा। आपणा आप आपे वेख, आपे ख़ुशी मनाइंदा। निरगुण हो करे हेत, निरगुण हेत लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आपणे विच छुपाइंदा। आपणा नाम अन्तर अन्तर, आपे आप टिकाईआ। आपे जाणे आपणा मंत्र, सच सुच्च पढ़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लिख के देंदा रिहा जंतर, जगत जुग जणाईआ। जिस दे नाल जीव पंज तत्त बुझे बसन्तर, अग्गे भेव कोई ना आईआ। जिस दा लेखा उपर गगन गगनंतर, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाईआ। आदि जुगादि सदा भरतम्बर, पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। कलिजुग अन्तिम वेखो भगतां रचया सुअम्बर, हरि जू आपणा फेर पाइंदा। चार जुग दा पिछला मेटे सर्ब अडम्बर, पिछली रीती दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम जपाईआ। एका नाम आदि अन्त जणाए अनमोल, अनमुलड़ी खेल कराईआ। जिस दे पिच्छे गुर अवतार पीर पैगम्बर वजाउदे रहे ढोल, होका सच जणाईआ। किसे दे हथ्थ फड़ाई पौहल, किसे दे न्याज़ दिती घोल, किसे नूं खीरां नाल रजाईआ। जन भगतां किसे ना दस्सया खोल्ह, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम वेखो हो आया अडोल, निधड़क फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। निरगुण रंग उपाया आप, भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार कहिण साडा साक, हरि जू होर ना किसे बणाइंदा। अन्तिम सारे इकठ्ठे कीते आप, दर मन्दिर इक सुहाइंदा। सब दी पुच्छण आया वात, वातावरन फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। भगतो उठो लओ लुट्ट, वेला वक्त इक सुहाइंदा। जिस ने गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात कढ्ढे कुट्ट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। तुसी मेल मिलाया गोबिन्द सुत, पूत सपूता रंग चढ़ाइंदा। इस दे कोलों आपणा पिछला कीता लओ पुच्छ, जो सरसे विच रुढ़ाइंदा। इस दे हथ्थ सब कुछ, दीन दयाल दया कमाइंदा। भर जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना इक झिराइंदा। बाकी सब नूं ख़ाली हथ्थ वखाए ठुठ, चारों कुण्ट हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। जन भगतां वड्डा दर, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जिस दे कोलों हरि जू रिहा डर, निउँ निउँ आपणी भुल्ल बख़्शाइंदा। मैं तुहाढ्ढे अन्दर गया वड़, दूजे दर ना

सोभा पाइंदा। तुहाड्डा पल्लू ल्या फड़, फड़या पल्लू ना कोई छुडाइंदा। तुहाड्डे पिच्छे पहलों गया मर, आपणा आप गवाइंदा। तुहाड्डी करनी रिहा कर, करता कीमत आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। की सानूं मिलावण आया, तेरी की वड्याईआ। चार जुग दित्ता भुलाया, लख चुरासी रिहा भुआईआ। कौटन कोट नाम जपाया, जपया नाम किसे कम्म ना आईआ। ठंडे जल जल नुहाया, सीतल धार वहाईआ। वस्त्र कपड़े रंग चढ़ाया, आत्म रंग ना कोई वखाईआ। पढ़ पढ़ लेखा लेख ना कोई समझाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी डरदा कहे अच्छा, अच्छी तरा समझाइंदा। मैं ठीक तुहाड्डी करदा आया रिछा, लुक लुक वक्त लँघाइंदा। किसे दी गाँ जवाई किसे दा बंनया वच्छा, किसे हट्ट चलाईआ। कहे बौहड़ी अन्तिम तुहाड्डे विच फसा, फसिआ नठ्ठ किते ना जाईआ। जिस ने माण दिवाउणा भगतां थाँ थट्टा, समुंद सागर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक रघुराईआ। मस्जिद मठ्ठ ना कोई देहुरा, हरि वड्डा वड जणाइंदा। गुरमुख तेरा सुच्चा वेहड़ा, जिस दर हरि जू फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी छेड़ां रिहा छेड़ा, छेड़ख़ानी आप कराइंदा। पुरख अबिनाशी होया आप दलेरा, सब दा डेरा ढाइंदा। जिस ने रसना किहा तूं मेरा मैं तेरा, तिस नूं आपणे अंग लगाइंदा। कर किरपा तारे आपणी मेहरा, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां ख़ुशी मनाइंदा। भगतां ख़ुशी इक वखाणी, वेखो नज़र किसे ना आईआ। भगत दुआरे जोत जगौणी, होए घट रुशनाईआ। हरिसंगत साची नाल मिलौणी, बचया कोई रहिण ना पाईआ। इक्को वार वेखे हाढ़ी सौणी, जट्ट आपणा संग निभाईआ। इकठ्ठी कर के सारी गौहणी, अग्गे आपणा राह चलाईआ। कलिजुग अन्तिम वीह सौ वीह बिक्रमी करे बौहणी, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे घर लाए इक्को जोता, जोतरा इक्को इक जणाईआ। किसे दा रहिण ना देवे हुक्का लोटा, लोटी सब दी भन्न वखाईआ। मनमुख जीव ना दिसे खोटा, खोटी वासना दए कढ्ढाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे सोका, हरे रुक्ख सुक्के दए कराईआ। कलिजुग जीव आपणा कीता भार उठावणा जिउँ भार उठाए खर खोता, सिर सके ना कोई लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दर सद्दे तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद लए फड़, एका घर वखाए दस गुर नाल मिलाईआ। वेखो इक वखाए महल अटल, जिथ्थे वसे सूरा सरबग्ग, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जुग जन्म दे विछड़े सद्द, सिर सदका आप निभाइंदा। जिहड़े पिच्छे

बैठे रहि गए अद्ध, अन्तिम पूरा पन्ध कराइंदा। भगत दुआर निशाना दित्ता गड्ड, छत्ती छत्ती वंड वंडाइंदा। जिस ने लेखे लौणे हड्ड, तिस इक्को हुक्म मनाइंदा। रल मिल चाईं चाईं सारे सद्द, विश्व धार इक चलाइंदा। अमृत नाम पीओ मध, कूड़ी मध आप तजाइंदा। कोई जीव ना लैणा वढ्ढ, मन वासना सीस धड़ कटाइंदा। कर किरपा हरि जू हरि मन्दिर चौथे घर लए सद्द, सद्दा देण घर घर फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा राह चलाइंदा। आपणे राह चले चलाए साचा पन्थ, मार्ग इक्को इक समझाईआ। पारब्रह्म दा वज्जे संख, नाम धुन इक शनवाईआ। गुरमुख विरले आई अणख, उठे भज्जे वाहो दाहीआ। अग्गे हरि जू करे परख, नाम घसवटी हथ्थ उठाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। जिस जन अमृत मेघ देवे बरस, तत्ती वा ना लागे राईआ। लख चुरासी विच्चों वेखो हरि जू कीता तरस, गुरमुख थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां विच रहि गया फरक, पहली चेत लए मिलाईआ। बाकी सारे होवन गरक, राए धर्म दए सज़ाईआ। जिहड़ा जा के आया परत, सब दे पत्रे दए उलटाईआ। जिस दा इक्को सच्चा वरत, सच्चा हुक्म समझाईआ। जिस ने गुरु गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दिती शर्त, शरअ करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक कलि कल्की आया माहीआ। माही आया कल्गीआं वाला, कल्गी आपणे सीस टिकाइंदा। जिस ने कढ्ढणा सब दा दवाला, ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। आदि जुगादी जगत खेल निराला, नज़र किसे ना आइंदा। जिस ने माण दित्ता सिँघ पाला, साची पालकी विच बहाइंदा। जिस ने सवरन दित्ता राह सुखाला, साचे मार्ग लाइंदा। जिस ने गोबिन्द फल लगाया पत्त डाला, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वाड़ी वेख वखाइंदा। जगत वाड़ी वेखे वेहड़े, वेहला हो के हरि जू आईआ। अन्तिम करे हक़ नबेड़े, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर जगत घल्ले जिहड़े जिहड़े, सच साचा लए उठाईआ। भगत दुआरे पाए घेरे, घेरा इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। भेव खुल्हा होए प्रतख, प्रतख रूप वटाइंदा। सच कहाणी रिहा दस्स, साचा राह चलाइंदा। जिस ने सतिगुर नाल मिलाए हथ्थ, ओह गोबिन्द हथ्थ फड़ाइंदा। छब्बी पोह होया इकठ्ठ, इक इकल्ला आप कराइंदा। जो सरनाई गया ढठ्ठ, तिस ठोकर ना कोई लाइंदा। नाता तुटा तीर्थ अठसठ, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी सम्मत पन्द्रां आप प्रनाइंदा। इक्की सिख त्रबैणी उत्ते बहि के पए हस्स, हरि जू की की खेल वरताइंदा। कुँवार कन्यां रही नठ्ठ, मुख नैण नैण शरमाइंदा। जिहड़ा मिल के आया तट्ट, सो पर्दा सर्ब उठाइंदा। दोए जोड़ वास्ता रही घत्त, गल्ल

४०४
१३

पल्लू इक पवाइंदा। जिस कंगन दित्ता चम्यार दा ब्रह्मण दे हथ्थ, तुहाढ्डी नज़र ना कोई आइंदा। तूं एहनां पिच्छे मेरी रख पत, दर इक्को मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, अगला भेव खुल्हाइंदा। तूं भगत दुआरे आउणा लँघ, हरि जू सच महल्ल बणाइंदा। गुरसिखां चरण जाईं ढठ्ठ, तेरा बेड़ा पार कराइंदा। सुरस्ती जमना रही ना कोई मति, सब दी मति गवाइंदा। गोबिन्द इक्को पूजो कमलापति, दूसर सीस ना कोई निवाइंदा। नक्कों लाह सुहाग दी नथ्थ, जगत प्यार इक बणाइंदा। नेत्र रोवे मैनूं फड़या हथ्थ, पल्लू गंढु ना कोई छुडाइंदा। चारों कुण्ट रही भज्ज, सज्जण नज़र कोई ना आइंदा। साध सन्त कूड़ी क्रिया फस, नारी पुरुष मेरे विच नंगा तारीआं लाइंदा। कलिजुग रैण अन्धेरी होई मस्स, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। बौहड़ी मैं काम क्रोध हँकार विच गई फस, अभेव भेव ना कोई खुल्हाइंदा। महाराज शेर सिँघ सिर हथ्थ देवे रख, मैं निमाणी पार कराइंदा। विच्चों सागर लए कढु, आपणी गोद बहाइंदा। जिस ने आदि जुगादि कीता अड्ड, सो अन्तिम मेल मिलाइंदा। मेरे थोथे होए हड्ड, मेरे नैणां नूर नज़र ना आइंदा। मेरे कोलों शंकर गया नठ्ठ, शिव जी आपणा मुख छुपाइंदा। कहिन्दा मेरी होई बस, मेरे थाँ गुरमुख फेरी पाइंदा। किरपा करी पुरख समरथ, जगत जगदीशा इक वड्याइंदा। नीहां हेठां दित्ता रख, उत्तों मेरा आसण लाहइंदा। मेरा कोई ना चलया वस, होए निमाणा सीस झुकाइंदा।
४०५ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत नाल रखाइंदा। गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रोवे, नैणां ४०५
१३ छहबर लाईआ। तुध बिन दुरमति मैल कोई ना धोवे, जिहड़ा भरया दोवें बाहींआ। तेरे जिहा कोई ना होवे, कोटन कोटि १३
गुर अवतार गए फेरीआं पाईआ। सारे मेरे विच वड़ वड़ आपणे बदन तन दी मैल धोवे, मेरी मैल ना कोई धुआईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जिस वेले करे मेहर नज़रे, मेरी दुरमति रहे ना राईआ। मैं तेरी तूं मेरा तूं मेरे जिहा होवें, निरगुण नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जमना सुरस्ती रिहा वखाईआ। जमना सुरस्ती गंगा वेख कलिजुग, साध साधना आपणी बैठे गंवाईआ। एहनां तेरी की रखणी लाज, आपणी पत ना कोई वड्याईआ। कूड़ी क्रिया बणया खाज, धीआं भैणां रहे तकाईआ। तेरे जल दा रिहा ना कोई स्वाद, जो अमृत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सब दी सत्तया रिहा खिचाईआ। सब दी खिच्ची सतिआ होया सतिआनास, सतह नजर कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए उदास, उदासी सब दे मूँह ते छाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, बेपरवाह वड वड्याईआ। जन भगतां देवे साथ, सगला संग निभाईआ। इक्को दुआरा प्रगट आप, आप आपणी सेव कमाईआ। इक्को सतिगुर सच्चा दस्से जाप, अल्फ ये ना कोई पढ़ाईआ। घर मन्दिर खोल्हे ताक,

दीवा बत्ती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे आ होवे सहाईआ। अग्गे आया दूर दुराडा, पिछला पन्ध मुकाईआ। गुरमुख वेख्या बणया साका, साका रिहा समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को आका, अक्ल कला अख्वाईआ। सन्त सुहेले जुड़या नाता, निरगुण मेल मिलाईआ। सोहँ ढोला गाओ गाथा, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं सद्दा रिहा जणाईआ। आपे सद्दे सद दुआर, दुआरका आपणा घर वखाइंदा। लग्गे भाग विच उजाड़, साची रुत्त सुहाइंदा। लेखा चुक्के पुरख नार, बिरध बालां माण दवाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। सुणे आप मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्को काहन, देवणहारा दो जहान, लेखा जाणे ज़िमी असमान, गुरमुख चतुर सुघड़ सुजान, मन मति बुध ना कोई वड्याइंदा। मन मति बुध ना कोई चतुराई, मेहर नज़र उठाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म करे कुड़माई, सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा। एका घर वसे धी जवाई, सौहरे पेईए इक्को रंग वखाइंदा। इक्को गृह करे रुशनाई, दीवा बाती डगमगाइंदा। इक्को घर दए सफाई, साची ज़ामनी आप उठाइंदा। भगत जनों तुहाढ्ढी अन्त मंगे ना कोई गवाही, बिन गवाहीयों पार कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाई, चरणां राह तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अगों मिलण चाईं चाईं, थिर घर कुण्डा आपे लाहइंदा। श्री भगवान अग्गों पकड़न आए बाहीं, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्को दान, अठ्ठसठ्ठ टुट्टा माण, गुरमुखां झोली आप भराइंदा।

❇ २७ पोह २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ❇

तिन्नां लोकां इक जैकारा, सतिगुर आप जणाइंदा। सत्त रंग निशाना दए हुलारा, सति पुरख निरँजण आप हिलाइंदा। जो गुरमुख चढ़ के बैठे निक्के दरबारा, तिन्हां आपणे रंग रंगाइंदा। जो चढ़ के बैठे लहिंदी धारा, तिन्हां आपणी गोद बहाइंदा। जो पिच्छे आ के देण सहारा, तिन्हां माण आप दवाइंदा। जो थल्ले रहि गए रोवण ज़ारो ज़ारा, अग्गे धीर ना कोई धराइंदा। हरि का हुक्म डण्डा भारा, गुरमुख भुल्ल कोए ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। आपणा हुक्म मनावण आया, कलि कल्की लै अवतार। जो जन बैठे मुख भुआया, दर दुआरिउँ दए दुरकार।

एथे ओथे ना कोई सहाया, साचे घर ना कोई प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी करे तैयार। साची सिक्खी त्रैलोक, त्रैभवन धनी आप प्रगटाईआ। शब्द जणाए इक सलोक, इक जैकारा लाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा जो जन मन्ने, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। गढ़ हँकारी कूड़ी क्रिया भंने, भाण्डा भरम नज़र ना आइंदा। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्ने, तिन्नां लोकां चन्द इक चमकाइंदा। आओ वेला दर्शन करो जिस दर खेल कराया धन्ने, धन धनाडी फेरा पाइंदा। नेत्र जगत जीव जो अन्ने, अन्नया ज्ञान दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तिन्नां लोकां इक्को नाअरा, भगत दए वड्याईआ। रसना बोलण वारो वारा, वारता इक्को इक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी लग्गे प्यारा, परम पुरख बेपरवाहीआ। नेत्र वेख दए सहारा, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, साचा भेव आप चुकाईआ। नेत्र वेखो त्रैलोक, हरि सतिगुर आप वखाईआ। साचा मन्दिर किला कोट, गढ़ बंक आप वड्याईआ। पंच धारा एकँकारा निर्मल जोत, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। प्रभ मिलण दा जिन्हां दा शौक, सो उपर चढ़ के दर्शन पाईआ। जिन्हां जाणा अन्तिम औंत, ओह थल्ले बैठे देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी आया खौंत, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। पिछली रहिण ना देवे रौंस, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। आपणी मारे सच्ची धौंस, दो जहानां दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जै जैकार तीन लोक, लोक परलोक सुणाईआ। मेरी भगतो सोचो सोच, निरगुण सरगुण रिहा सुणाईआ। नेत्र नैण लोचण पूरी करो लोच, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। अगले सम्मत किसे रहिण ना देवे सोच, सोच सब दी दए गंवाईआ। शाह सुल्तानां करे बेहोश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। त्रैलोक वज्जे ताल, हरि साचा भेव चुकाइंदा। गुरमुखां रखे नाल नाल, सगला संग निभाइंदा। लेखा जाणे काया माटी काची हाण्डी खाल, ख़ालक ख़लक रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा । तिन्नां लोकां पए पुआड़ा, कूक कूक देण दुहाईआ। बण तरखाण फड़या कुहाढ़ा, दोहां हथ्थां रिहा उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कढ्ढण हाढ़ा, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वेखणहारा इक अखाड़ा, ख़ाकी ख़ाक नज़र ना आईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां, डूँग्घे सागर सर्ब कुरलाईआ। बाकी इक्को रहि जाए गावण वाली वारा, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल बेपरवाहीआ। तिन्न लोक उठ खलोते, नेत्र नैण खुल्हाईआ। गुरमुख आपणे लोचे, लोचण नैण खुल्हाईआ। जिन्हां हरि जू देवे ओटे, ओट अकाल रखाईआ। थल्ले डिगे उठाए पोते, आपणे उपर लए चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे गुरसिख आपणे बेटे, बाकी लख चुरासी जून भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्हां लोकां वेख वखाईआ। तिन्हां लोकां लेख अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। गुरमुख कढ्ढे हरि जू बाहरा, उपर लेख लिखाइंदा। नज़री आए एकँकारा, निरगुण रूप धराइंदा। मिल मिल गाओ इक जैकारा, सच जैकार सुणाइंदा। जो जन भुलया रहे विच संसारा, अग्गे भुल्ल ना कोई बख्शाइंदा। आवण जावण होए वारो वारा, लेखा लेख ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन उत्ते गए चढ़, सुणया धुर फ़रमाणा। मूर्ख थल्ले रहे खड़, भुलया हरि भगवाना। हरिजन सोहँ अक्खर रहे पढ़, ढोला इक्को गाणा। पुरख अबिनाशी मेले आपणे दर, निरगुण नूर हो मेहरवाना। त्रैगुण मीता ठांडा सीता साचा पल्लू लए फड़, एका गंढु पवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिन्नां लोकां पन्ध मुकाना। तिन्नां लोकां मुकया पन्ध, हरि सतिगुर आप मुकाईआ। जिन्हां रसन तजाया मधरा मास गंद, जोती रूप वखाईआ। जिन्हां चाह तजाई बत्ती दन्द, तिन्हां एका चाउ वखाईआ।
४०८ १३ बाकी सब नूं देवे रंद, रंदा इक्को नाम उठाईआ। लख चुरासी पावे डण्ड, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हरिसंगत विच रहिण ना देवे भेख पखण्ड, भेखी नज़र कोई ना आईआ। पिछली कीती सब दी गई हंढु, अग्गे चले ना कोई चतुराईआ। जिस दुआरे दर्शन पाउणा सूरे सरबँग, तिन्नां तिन्हां दे तजाईआ। बाकी सब नूं बाहों फड़ के बाहर देवे कढ्ढ, फेर विच ना रखे कोई सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म देवे खरड़ा, करखत हरि जू आया। जिन गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लाया रगढ़ा, कलिजुग अन्तिम बचया कोई रहिण ना पाया। हरिसंगत विच मास शराब चाह दा रहिण ना देवे झगड़ा, झगड़ा कोई रहिण ना पाया। पारब्रह्म प्रभ होया तकड़ा, आपणा बल धराया। गुरमुख हिरदा आपे पकड़ा, आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां लोकां चरणां हेठ दबाया। तिन्न लोक चरण हेठ दब्बे, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। गुरमुख नेत्र वेख सभे, हरि जू रिहा वखाईआ। साचे मन्दिर उत्ते चढ़ के बैठे सारे फब्बे, नेत्रां उत्ते नेरन नेर नज़री आईआ। नाम प्याले पीते मधे, मधुर धुन इक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी प्यार लभ्भे, सोहँ ढोला गाईआ। अन्तिम परदे सब दे कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दिवस रैण फिरे सज्जे खब्बे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकावण थाउँ थाईंआ। लेखा देवे थान थनंतर,

दहि दिशा खोज खुजाइंदा। जिन्नां गाया इक्को मंत्र, ब्रह्मा मनवन्तर माण गवाइंदा। चले कोई ना वड्याई किसे धनंतर, जिस जन नाम जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन अन्दरों कढ्ढे बाहर, तिन्नां लोकां दए वखाईआ। पुरख अबिनाशी कीते ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर रूप धराईआ। सच लगावण इक जैकार, सोहँ ढोला गाईआ। तिन्नां पिच्छों हरि जू आपणी रखी वार, घर साचे खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप समझाईआ। तिन्नां लोकां होए जै, जै जैकार सुणाया। भगत भगवान सद रहे, ना मरे ना जाया। सचखण्ड दुआरे साचे बहे, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाया। इक्को नाम आदि जुगादि लए, दूजा मंत्र ना कोए पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप समझाया। साचा लेखा उत्ते छत्त, छत्ती जुग पार कराईआ। जिन्नां लई ब्रह्म मति, हरिसंगत रूप वखाईआ। भज्ज भज्ज उपर चढ़े नठ्ठ, प्रभ मिलीए चाईं चाईंआ। जिस दा गाए इक्को जस, जस वेद पुराण कहिण ना पाईआ। सो साहिब दर्शन देवे हस्स, हँस मुख पर्दा आप उठाईआ। कँवल चरण दुआरे जाईए वस, घर सच मिले सरनाईआ। तन पहनाए नाम पट्ट, दुरमत्त मैल धुआईआ। लेखे लग्गे तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध भेव चुकाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, ब्रह्म मति करे पढ़ाईआ। पिछला लहिणा होए बस्स, अग्गे मार्ग दए वखाईआ। ग़रीब निमाणयां मिले नस्स नस्स, सचखण्ड दुआरा आप तजाईआ। हरि सन्त सुहेले कर प्रगट, पगड़ी आपणी सीस धराईआ। लख चुरासी खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी स्वांग ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख थल्लउँ लए उठाईआ। थल्लउँ कराए गुरमुख उत्ते, उतला राह जणाइंदा। अग्गों मूल ना रहिण सुत्ते, सुत्यां अक्ख खुल्लाइंदा। बिन श्री भगवान कोए ना पुच्छे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। सम्मत उन्नी जो रहि गए रुस्से, रुस्सयां फेर ना कोए मनाइंदा। लख चुरासी विच फिराए करदे रहो गुस्से, गुस्सा आपणा ना किसे समझाइंदा। जूनी जून वटाए जुस्से, जुसतजू ना कोए समझाइंदा। मात गर्भ टंगे पुठ्ठे, दस दस मास अग्न लगाइंदा। गुरमुख आपणी गोदी चुक्के, फड़ बाहों गले लगाइंदा। अग्गे जा जा आपे पुच्छे, पिच्छे अग्गे हो हो आइंदा। करे खेल आपणे सुच्चे, धुर दी धार आपणी आप जणाइंदा। किसे ना मिलणी तीर निशाने तुक्के, मार्ग सब दा आप भुलाइंदा। सिँघ बघेला इक्को बुक्के, भबक आपणे नाम लगाइंदा। निरगुण दाता हो के बुक्के, सरगुण दान झोली पाइंदा। गुर गोबिन्द लै के नाल आपणे बच्चे, सोहणी खेल रचाइंदा। हरि सरनाई जो जन झुके, सीस जगदीश लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै त्रै आपणा मेल मिलाइंदा। त्रै त्रै मेला हरि जगदीश,

४०६
१३

एका वार कराईआ । नाम निधाना सच हदीस, हरि मंत्र करे पढ़ाईआ। दो जहानां शाह सुल्तानां ख़ाली करे ख़ीस, घर घर मंगण भिच्छया कोए ना पाईआ। जन भगतां दस्से इक प्रीत, प्रीतीवान होए सहाईआ। सदी चौधवीं जाए बीत, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। चौदां लोक आपणीआं लत्तां रहे घसीट, नट्ठया जाए ना वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी आपणी बदली पीठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया होई ढीठ, ठोकर नाम ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे उपर लए उठाईआ। हरिजन साचे उपर चुक्क, पिछली चूक मुकाईआ। अग्गे सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। सन्त साजण सतिगुर बणाए आपणे सुत, पूत सपूत दया कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच जैकारा देणा लाईआ। निरगुण नूर जोत अकाली, हरि अक्ल कला अख्वाइंदा। दो जहानां बण बण वाली, रूप अनूप वटाइंदा। गुरमुखां मगर लग्गा पाली, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी दए दलाली, आपणा वणज कराइंदा। हकीकत वखाए हक़ हलाली, लाशरीक फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाली, भेव किसे ना आइंदा। हरिसंगत तेरे मुख ते चमके लाली, लख चुरासी ख़ाक रलाइंदा। वेखो तम्बु कनातां कीते ख़ाली, गुरसिखां आपणे उपर उठाइंदा। जन्म जन्म जिस घाल घाली, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। हरि संगत लोकमात किसे अग्गे ना होए फेर स्वाली, साचा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। ख़ाली दिसे तम्बु कनात, लोकमात दए दुहाईआ। बौहड़ी भगतां नालों छुटया साक, सम्मती नज़र कोए ना आईआ। कोई ना पुछे अन्तिम वात, कूकण देण दुहाईआ। सिर ते आई अन्धेरी रात, चौधवीं चन्द ना कोई चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी करया खेल तमाश, थलिउँ कढ्ढ उपर लए बिठाईआ। साम्हणे बहि के आपे मारे आवाज़, आपणी झाकी आप दिखाईआ। वेखो छत्तां उत्ते कोई नज़र ना आए सज्जण साक, गुरमुख विरले नाल मिलाईआ। जिन्हां इक नौ जपया सोहँ पाठ, तिन्हां आपणी गोद बिठाईआ। बाकी सारे होए नार कमज़ात, कुलखणी कदर कोई ना पाईआ। एथे ओथे पुच्छे कोई ना वात, सौहरे पेईए ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। उठे धरत मात नेत्र रोए, नैणां नीर वहाईआ। मेरे साहिब मेरे उत्ते कवण सोहे, तेरे भगत ख़ाली वसदे गए कराईआ। तेरा जिहा कोई ना होवे, मैं जुग जुग वेख्या थाउँ थाईंआ। तेरा प्रकाश त्रै त्रै लोए, लोचण नज़र कोए ना आईआ। साचा बीज इक्को बोए, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। तेरे भगत छड्ड गए नाता, नाता तेरे नाल जुड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम लग्गीआं

रहि जाण तम्बु कनाता, शाह सुल्तान रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण बहि बहि साका, वाह वाह हरि जू खेल कराईआ। जिस दा दस्सदे आए भविख्त वाक्, सो साहिब फेरा पाईआ। दो जहानां मारे डाका, आउँदा जांदा नज़र कोई ना आईआ। जन भगतां पूरा करे घाटा, पहली मंज़ल आप चढ़ाईआ। दूजी वार पुछे वाता, अन्दरे अन्दर कर रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हौली हौली नाल रलाईआ। पहली वेखे चढ़ के मंज़ल, मज़ा दए चखाईआ। नेड़ ना आए कोई अज़ल, अलामत नज़र कोई ना आईआ। आत्म परमात्म गाओ गज़ल, इक्को नाम सुणाईआ। परवरदिगार करे फ़ज़ल, रहमत आपणी आप जणाईआ। हरि जू तोलण आया वज़न, इक्को नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जिन्हां मन्यां सच्चा बचन, सोहँ ढोला रहे गाईआ। तिन्हां काया करे कंचन, ख़ाकी माटी लेखे पाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाशन, निरगुण नूरो नूर रुशनाईआ। घर आया दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। सच सरोवर कराए मजन, तट इक दृढ़ाईआ। गुरमुख साचे मन्दिर चढ़ चढ़ गज्जण, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। धरत मात मंगी मंग, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। ना तोड़ मैथों भगतां संग, बिन भगतां मेरी पत्त ना कोई रखाईआ। कलिजुग सन्त नंगे नच्चदे वेखे मलँघ, उत्ते पर्दा ना कोई रखाईआ। कूड़ी क्रिया भंनी टंग, साबत नज़र कोई ना आईआ। अन्दरों हो के बैठे अन्ध, बाहरों चानण मुनारे रहे रुशनाईआ। जे हरि जू पुच्छे दस्सो छन्द, अगों नानक कबीर दे ढोले देण सुणाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तिम इक्को मारे नाम चण्ड, मूँह विच बत्ती दन्द रहिण ना पाईआ। जाओ तुहाड्डा मिटया ना पन्ध, कोटन कोटि जन्म दी खाहश रखाईआ। जिनां चिर मैनूं मिल के मेरा ना गाओ छन्द, ओनां चिर अन्दर करे ना कोई चढ़ाईआ। ऐवें झूठा कहिन्दे जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड खोज ना कोई खुजाईआ। सच पुछो कलिजुग धार वहे सागर सिन्ध, कूड़ी क्रिया रही रुढ़्हाईआ। अन्तिम औखी हो जाए छडौणी ज़िंद, पुरख अबिनाशी डूँघे ख़ात सुटाईआ। औह वेखो गुरमुख साची बिंद, जिन्हां छत्तां उत्ते बहाईआ। एहनां दी चरणी लग्गे सुरप्त इन्द, शंकर आपणा माण गंवाईआ। ब्रह्मा कोई करे ना ज़िद, आपणा बल मिटाईआ। जिन्हां दा तन मन धन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दित्ता विध, दूजा तीर ना कोई चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। धरत मात तूं कर सिआपा, हरि जू आख सुणाइंदा। लख चुरासी ना कोई भाई भैण संग बापा, सज्जण तोड़ ना कोई निभाइंदा। पुरख अबिनाशी सचखण्ड दा सच दुआर खोल्हे ख़ाता, भगत दुआर अग्गे सुहाइंदा। जन भगतां पिच्छे खोल्हया ताका, बाकी सब नूं आप वखाइंदा। पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह परवरदिगार आया आका, आपणा हुक्म जणाइंदा।

आपे बणे निक्का काका, आपे चिट्टे वाल वखाइंदा। आपे नीले उत्ते चढ़े मार पलाका, सीस धड़ आप वटाइंदा। आपे भगतां वल फिरे नाठा, नट्ठ नट्ठ आपणा पन्ध मुकाइंदा। आपे वेखे आण बाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लहिणा आप चुकाइंदा। आओ जिस लहिणा लैणा, देवणहार पुरख आया। आओ जिस मन्नणा कहिणा, पिछला मूल दए चकाया। आओ जिस भाणा कहिणा, गुर गोबिन्द अंग दए लगाया। आओ जिस हरिसंगत विच बहिणा, सचखण्ड दुआरा दए दृढ़ाया। आओ जिस नाता वेखणा भाई भैणा, गुरमुख गुरसिख मेल मिलाया। आओ जिन्नां साचे सज्जण मिलणा सैणा, सतिगुर फेरा पाया। आओ जिन्नां मिलणा लाड़ी मौत डैणा, राए धर्म दए हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दयाल काल काल दयाल आपे वेखे हरि जू महाकाल, काल रिहा समझाया। वेखो हरि जू बणया दयाल, गुरमुख रिहा जगाईआ। दोहां विचोला बेमिसाल, आपणी मिसल ना किसे वखाईआ। कलिजुग खेल करे कमाल, कमाले आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा दए सुणाईआ। सच संदेसा सुणे कोई कोई, भेव कोई ना पाइंदा। वेखो मगर लग्गी आउँदी कबीर दी लोई, लोचण लोचण नाल मिलाइंदा। सुणाउदी आउँदी मैनूं मिले ना ढोई, विष्नूं भगवान गोद उठाइंदा। सुरती जन्म जन्म दी उठाए सोई, शब्दी हुक्म वरताइंदा। छब्बी पोह मैं उहदे जोगी होई, दूजा कन्त नज़र कोई ना आइंदा। दर आए भज्जी भज्जी रोई, नेत्र नीर ठल्लया ना जाइंदा। मेरी पिछली कीती मेहर नाल धोई, तेरे धोत्यां मैल ना कोई लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाइंदा। सुण लोईए वेख पाया लोहड़ा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। इक सस्से उत्ते लाया होड़ा, आपणी धार जणाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, हाहा सस्से विच समाइंदा। निरगुण हो के फिरे दौड़ा, सरगुण आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा।

निक्कयों हो गए वड्डे, हरि वड्डा आप वड्याइंदा। आपणी धारों जिहड़े कढ्ढे, सो आपणी धार मिलाइंदा। आप पार कर के आया आपणी हद्दे, गुरसिखां हद्द पार आप कराइंदा। भगत भगवान जिस वेले सद्दे, बण निमाणा दर दर फेरा पाइंदा। वसणहारा काया अन्धेरी डूँग्घे खड्डे, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। सन्त सुहेला साहिब सतिगुर कदे ना छड्डे, इक अकेला वेख वखाइंदा। नाम प्याए अमृत रस मधे, मधुर धुन इक उपजाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर गए लद्दे, थिर

कोई रहिण ना पाइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त ग़रीब निमाणयां पर्दा कज्जे, नाम दुशाला उपर पाइंदा। वेखो ताल दो जहान वज्जे, तलवाड़ा घर इक्को इक समझाइंदा। श्री भगवान हो मेहरवान भगत दुआरे आपे नच्चे, नच्च नच्च आपणा खेल कराइंदा। सारयां नालों लग्गे अच्छे, जिन्हां आपणा भेव चुकाइंदा। बेशक गुर गोबिन्द गुरसिख बणा के गया निक्के बच्चे, पुरख अकाल आपणे सीस टिकाइंदा। हरि दे कोई ना जाणे सचे, जिस सचे विच्चों गुर अवतार पीर पैगम्बर बाहर कढ्ढाइंदा। सच पुच्छो विष्न ब्रह्मा शिव कच्चे, बिन भगतां सच सच ना कोई समाइंदा। जिन्हां दे लूं लूं अन्दर हरि जू रचे, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। पीर पैगम्बरां आपे पुच्छे, भगतां भगवान आप वड्याइंदा। निक्यों होए वड्डे, वड्डा निक्कयां विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग वखाइंदा। गुरमुख कदे ना होए निक्का, निक्की हरि जू धार चलाईआ। जिस दा लेखा किसे ना लिखा, भेव पाए ना कलम शाहीआ। जिस दा रूप किसे ना दिसा, रंग नज़र कोए ना आईआ। सो भगतां वंडावे आप हिस्सा, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। करे खेल इक अनडिठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो आपणा नाम देंदा रिहा मिठ्ठा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां उपर तुठ्ठा, दीन दयाल दया कमाईआ। लुक्या कोई रहिण ना देवे गुठ्ठा, जोत सरूप जन्म कर्म ध्यान लगाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुता, गुरमुख चन्नण दए कराईआ। नाल रलाए गोबिन्द पिता, पुत्त पोतरे खुशी मनाईआ। सचखण्ड दुआरे जो रिहा सुत्ता, कलिजुग अन्त लए अंगड़ाईआ। वेखणहारा चारे गुठ्ठां, दहि दिशा फोल फोलाईआ। आपणा कम्म करे पुठ्ठा, अगम्मी धार चलाईआ। पैरीं कोई ना पाए जुत्ता, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दस्सदी गई पुच्छां, बिन पुच्छयां आपणा वेस वटाईआ। गोबिन्द तेरा रहिण ना देवे पिछला गुस्सा, ग़मी रूप ना कोई वखाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा भुक्खा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। ग़रीबां घरों जाए टुक्कर खा के सुक्का, सुकयां हरे कराईआ। वेखो कलिजुग पैंडा मुक्का, कल वाट पन्ध मुकाईआ। सिँघ शेर साहिब सतिगुर इक्को बुक्का, भबक दो जहान लगाईआ। किसे दी टोपी रहे ना उपर हुक्का, नेचे सब दे भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख निक्का वड्डा आप कराईआ। गुरमुख हुण ना कहे असीं निक्के, घर घर खुशी वखाईआ। बाकी रस कीते फिक्के, गुरमुख रस अमृत नाल भराईआ। जिध्धर वेखां भगत भगवान रूप दिसे, भगवान भगतां विच समाईआ। जिस दे गाउँदे गए किसे, लिख लिख लेखा जगत जणाईआ। सो आया साहिब समरथे, समरथ आपणा फेरा पाईआ। निक्के निक्के सारे हो गए इकठ्ठे, वड्डी जमात बणाईआ। पुरख अबिनाशी तुहाढ्ढी चरणी ढठ्ठे, आपणा

माण गंवाईआ। लहिणा देवे हथ्थो हथ्थे, ख़ाली झोली दए भराईआ। अग्गे वासते हो जाओ पक्के, बिन गुर गोबिन्द पुरख अकाल सीस ना किसे झुकाईआ। सतिजुग साचे चलणे सिक्के, पिछले सिक्के दए खपाईआ। आपणी हथ्थीं एथे ओथे अद्धविचकार हरि निरँकार आपणी हथ्थीं लाए बूटे, गुरसिख गुरमुख लए बणाईआ। लख चुरासी कलिजुग मेदनी आपे जिते, सृष्टी सृष्ट चरणां हेठ दबाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणे अन्दर सट्टे, कोटन कोटि गुर अवतार खा खा शुकर मनाईआ। बिन भगतां साचा करे ना किसे नाल हित्ते, हितकारी इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्कयां वढुयां कर वखाईआ। निक्के कहिण सानूं मिल्या वड्डा, जिस विच वड्डी वड्याईआ। वड्डा कहे मैं निक्कयां लडावां लड्डा, आपणी गोद बहाईआ। दो जहान खैहड़ा छड्डा, छड्डी सर्ब लोकाईआ। भगत दुआरे लाया अड्डा, ना सके कोए उखड़ाईआ। सचखण्ड दी साची हद्दा, हद्द हदूद आप कराईआ। आप प्रेम भगती दा बद्धा, दूजे दर कदे ना जाईआ। पहलों देंदा रिहा सद्दा, कलिजुग अन्तिम वेखण आईआ। जे कोई बाहरों वेखे बुढ्ढा, अन्दर वड़या नढ्ढा, साल वीहवें खुशी मनाईआ। इक तों दो हो के गज्जा, दो तों सिफ़रा रूप वखाईआ। सचखण्ड दुआरे बहि के सजा, सीस आपणे ताज टिकाईआ। निरगुण हो के लोकमात आया भज्जा, गुर गोबिन्द लए उठाईआ। अन्दर वड़ के ताल नगारा हो के वज्जा, राग रागनी ख़ाक मिलाईआ। करे खेल सूरा सरबग्गा, आपणा बल धराईआ। ना घड़या ना कदे भज्जा, जन्म मरन विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्कयां अन्दर हो के निक्का, निक्की निक्की धारों आईआ। निक्की निक्की वेख धार, हरि करता आप वखाइंदा। सब दे अन्दर डूँग्घा प्यार, हरि करतार आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हरि साचा वेस वटाइंदा। मुकामे हक़ ना कोए उजाड़, गुलशन लोकमात खलाइंदा। मुहब्बत करे पहली वार, सुहबत आपणी आप समझाइंदा। उल्फ़त विच ना आए, कलमा आपणा हक़ जणाए, हकीकत हर घट खोज खुजाइंदा। लाशरीक फेरा पाए, फ़रमांबरदार आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख निक्के तेरा सोहणा रंग, हरि सज्जण सच्चे भाया। तेरे अन्दर इक मृदंग, नाम डंका रिहा सुणाया। तेरे महल्ल इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाया। तेरे गृह इक चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाया। तेरा मेला सूरे सरबँग, शहिनशाह आपणी गोद बहाया। तेरा इक्को ढोला छन्द, आत्म परमात्म पर्दा रिहा उठाया। तैनूं वेख श्री भगवान नूं पए ठंड, दो जहान दी तपत लए बुझाया। पा गलवकड़ी आपणे नाल पाए गंढ, सच्ची गंढ ना कोए खुल्हाया। साची वस्त देवे वंड, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की निक्की गल्ल आप समझाया।

निक्की निक्की करे बात, बातन आप जणाईआ। भगत भगवन्त दी इक्को ज़ात, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। आपणी वखाए सच करामात, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। अन्दर वड़ के देवे साची दात, नाम निधाना झोली पाईआ। सच सुणाए इक्को गाथ, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की निक्की निक्की दए वखाईआ। निक्की अन्दर रखी वस्त, वस्तू नज़र किसे ना आईआ। ना कोई जाणे कीट हस्त, हस्त कीट भेव चुकाईआ। जन भगत दुआरे रहे मस्त, मस्ताना बण बेपरवाहीआ। कलिजुग सन्त दस्त नाल मिलाए दस्त, बदस्त आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख निक्का वड्डा सब थाँ दए बणाईआ। निक्के वड्डे गए हो, हरि होका आप जणाया। प्रेम प्रीती जो गए छोह, शहिनशाह रंग चढ़ाया। दुरमति मैल दिती धो, अमृत जाम प्याया। नाम जपाया सोहँ सो, सो पुरख निरँजण वेख वखाया। हरि का भेव ना जाणे को, दो जहान रहे कुरलाया। कलिजुग अन्तिम लै के आया ढोआ ढो, साची वस्त आप वरताया। निरगुण निरगुण करे मोह, सरगुण नाता आप तुड़ाया। कर प्रकाश साची लो, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जन भगतां जोगा आपे हो, आपणा आप छुपाया। लेखा जाणे छब्बी पोह, तन माटी ख़ाक मिलाया। लख चुरासी रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। गुरसिख गुरमुख भगत सन्त हरिसंगत बांह सरहाणे दे जावे सौं, सतिगुर सतिवादी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। निक्कयो तुहाड्डा निक्का जाप, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। दूजा ना कोई पूजा ना कोई पाठ, अठसठ तीर्थ ना कोई नुहाईआ। अन्दर मिल्या बण के साक, सज्जण बेपरवाहीआ। फड़ हथ्थीं खोल्या ताक, बजर कपाटी रहिण ना पाईआ। फड़ बाहों पार कराया घाट, अद्धविचकार ना कोई रखाईआ। सचखण्ड निवासी दिती इक्को दात, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। अग्गे मिले कमलापात, शहिनशाह आपणे आसण बैठा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा समझाईआ। निक्कयो सारे गाओ ढोला, ढोलक छैणा ना कोई रखाइंदा। निरगुण बदलया निरगुण चोला, सरगुण वेख वखाइंदा। गोबिन्द चुकाए तेरा उहला, मुख नूर ज़हूर जणाइंदा। निझर देवे अमृत पौहला, रस इक्को इक वखाइंदा। निकिओ तुहाड्डा भार होया हौला, वड्डे मूँह दे भार सुटाइंदा। हरिसंगत तेरा इक्को बोला, बोली आपणी आप जणाइंदा। शब्दी गुर बण विचोला, निरगुण रंग रंगाइंदा। लख चुरासी वेखे होला, हुलीआ सब दा आप बदलाइंदा। भगत दुआरा इक्को खोल्हा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्कयां वड्ढयां वेस वटाइंदा। निक्कयो निक्कयो बदलो वेस, हरि वेस आप वटाईआ। एथे मेला माझे देस, अग्गे सांझा घर बणाईआ। आपे रखे चरणां

हेठ, सिर आपणा हथ्थ उठाईआ। खोल्ह के जाए साचा भेत, पर्दा दए चुकाईआ। आओ वेखो नेतन नेत, नेत्र दर्शन दरस कराईआ। लख चुरासी सुंञा ख़ेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के वड्डे दए बणाईआ। निक्कयो वड्डा तुहाड्डा प्रताप, हरि हरि आप ताल जणाइंदा। जिस ने जाणया आपणा आप, घर आपणे मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया करे घात, घाउ आपणे नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। गुरमुख कहे मैं निक्का बाला, बालक रूप वखाईआ। तूं साहिब सतिगुर दीन दयाला, हथ्थ तेरे वड्याईआ। श्री भगवान कहे मैं सदा रखवाला, जुग जुग सेव कमाईआ। निरगुण हो के बणां दलाला, सरगुण वणज कराईआ। गुरसिख कहे मैं होया बेहाला, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। फल ना दिसे मेरे डाला, तुध बिन कली ना कोई महकाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं मिलां नाल नाला, विछड़ कदे ना जाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाला, जिस घर बैठा आसण लाईआ। गुरसिख कहे तेरा खेल निराला, भेव कोए ना आईआ। तेरी नज़र ना आए सच्ची माला, मन का मणका रहे भुआईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं दस्सां राह सुखाला, साची सिख्या करां पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेरी माला, मणका कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्कयां एका रंग वखाईआ। निक्कयां चाढ़े रंग चलूल, तन चोला आप रंगाइंदा। श्री भगवान ना जाए भूल, भुल्यां आप उठाइंदा। आपे जाणे आपणा सच असूल, असलीअत आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरिजन साचे कर कबूल, कर्म कांड मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्कयां आपणा भेव खुल्हाइंदा। निक्कयां खोल्हे आपणा भेव, अभेद आप जणाईआ। प्रगट होवे वड देवी देव, देवत सुर सीस झुकाईआ। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम आसण लाईआ। हरिजन तेरी करे साची सेव, सेवक बण बेपरवाहीआ। सोहँ देवे अमृत मेव, रस इक्को इक चखाईआ। नाता तुटे रसना जेहव, बत्ती दन्द ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के उच्चे घर बहाईआ। निक्के उच्चे हो के बहिणा, सो पुरख निरँजण आप बहाइंदा। हरि का दर्शन करना नैणां, नेत्र नैणां आप खुल्हाइंदा। एका पाउणा साचा गहिणा, श्री भगवान आप घड़ाइंदा। महल अटल साचे रहिणा, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा। साचा ढोला इक्को कहिणा, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। पूरब जन्म दा चुक्के लहिणा, जन्म कर्म झोली पाइंदा। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाइंदा। निक्का कहे मैनूं तेरी ओट, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। मेरी आत्म परमात्म तेरी जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। नाता जुड़े पिता पूत, दूजा संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पकड़ वड्डे दए बणाईआ। पहलों जम्मे निक्का पुत्त, पिता आपणी गोद बहाइंदा। फिर वेखे साची रुत्त, जोबन जवानी नाल मिलाइंदा। हो के जवान पए उठ, आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। निक्के उठो धारो बल , बल बावन ध्यान लगाईआ। जिस ने खेल खलाया रामा रावण, लंका गढ़ तुड़ाईआ। जिस ने माण रखाया प्रहिलाद थामन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो काहना कनसा खेल करे भगवानन, बेपरवाह फेरा पाईआ। जो ईसा मूसा दए पैग़ामण, कलमा नबी आप सुणाईआ। जो मुहम्मद दस्से हुक्मरानन, हुक्म हाकम शहिनशाहीआ। जो नानक निरगुण वखाए सच्चा धामन, सचखण्ड दुआरा कुंडा लाहीआ। जो गुर गोबिन्द बणाए बाल अंञानण, सुत दुलारा गोद सुहाईआ। सो कलिजुग अन्तिम प्रगट होए नौजवानन, नौजवान जोबन आपणा आप वखाईआ। करे खेल विच जहानन, दो जहानां डेरा ढाहीआ। लख चुरासी देवे एका नामन, नाम निधाना करे पढ़ाईआ। जन भगतां होए ज़ामन, ज़ामनी आपणी आप रखाईआ। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी शामन, शमा इक्को करे रुशनाईआ। लेखे लाए क्षत्री शूद्र ब्रह्मण, वैश सचखण्ड दए बहाईआ। जन भगतां मेल मिलाए आम्हणो साम्हण, पर्दा विच ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार दा पकड़े दामन, दामन नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
४१७ १३ आपणी किरपा कर, निक्के वड्डे वेखे थाउँ थाईंआ। निक्कयां चढ़या सच्चा चा, हरि वड्डे रिहा बणाईआ। गोबिन्द मिल्या इक मलाह, पुरख अबिनाशी बेड़ा दए वखाईआ। वीह बिक्रमी पहले दिन सारे कर लओ इक सलाह, बिन पुरख अकाल ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कर जाण ना, सगला संग ना कोए रखाईआ। प्रभ चरणां हेठां छड्डे दबा, सिर सके ना कोए उठाईआ। दोए जोड़ मंगण दुआ, गल्ल पल्लू वास्ता पाईआ। तेरी कुदरत बेपरवाह, तेरी झोली पाईआ। जिउँ भावे तिउँ लै चला, हथ्थ तेरे वड्याईआ। सृष्ट सबाई भरी गुनाह, गुरबत सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच्ची दए जणाईआ। निक्कयो जे हरि दस्से सच, सच मन्नण कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया लूं लूं गई रच्च, बिन सतिगुर पूरे बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। पढ़ पढ़ जीव जंत गए थक्क, पढ़ियां समझ किसे ना आईआ। नहावण नहा नहा गए अक्क, आकल सब दी अक्ल गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। निक्के कहिण वेखो हाल, हरि जू आपे रिहा सुणाईआ। अन्दर बाहर इक्को चाल, अवल्लड़ी धार आप जणाईआ। सृष्ट सबाई सिर ते कूके काल, कलिजुग डोरू डंक वजाईआ। गुरमुख विरला दिसे खुशहाल, जिस हरि जू आपणी खुशी जणाईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, बेवा रूप रही वखाईआ।

जीवदयां कोई ना वसे नाल, मरयां कम्म कोए ना आईआ। गुरमुख सच्चे नच्चण कुद्दण टप्पण वजावण ताल, दोहां हत्थां ताड़ी रहे लगाईआ। घर आ के मिल्या श्री भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। की होया जे असीं बाल अंञाण, साडा पिता बेपरवाहीआ। आपणी गोदी लए उठाल, फड़ बाहों गले लगाईआ। थापड़ थापड़ लए स्वाल, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे आपणे रंग रंगाईआ। सचखण्ड लै के जाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। जिध्धर वेखीए चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। साडे पिच्छे घाले घाल, घाली घाल ना किसे समझाईआ। साडा विंगा होण ना देवे वाल, वाली दो जहान फेरा पाईआ। जिस ने सचखण्ड वखाया सिँघ पाल, सवरन जोत करी रुशनाईआ। जिस मनजीत जगदीश उठाए लाल, सिँघ गुरदयाल नाल रलाईआ। सो अन्तिम सब नूं करे बहाल, जिन्हां आपणे चरण लगाईआ। गुरसिख तेरे नेड़ ना आए काल, महाकाल तैनूं सीस झुकाईआ। निक्के निक्के लए उठाल, हौली हौली आपणी उंगली लाईआ। साचा अक्खर ल्या सिखाल, सोहँ नाम करे पढ़ाईआ। दूजा बणे ना कोई दलाल, विचोला नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द वेखे आपणे लाल, जो बैठे आसण लाईआ। घर आ के देवे दान, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। बेशक तुसीं निक्के आप अञ्याण, पुरख अबिनाशी दए वड्याईआ। तुहाडे बिनां किसे कम्म ना आए भगवान, इकल्ला रोवे मारे धाहींआ। जिन्ना चिर पिता दी गोदी बहे ना बाल, पिता खुशी कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विच निक्कयां बहि बहि आपणा रंग वखाईआ। निक्कयो तुहाडा सोहणा वेहड़ा, दरगाह साची रूप वखाइंदा। भगत दुआर इक्को खेड़ा, दूजा होर ना कोए जणाइंदा। जिथ्थे ज़ात पात दा चुक्के झेड़ा, ऊँच नीच ना कोए बणाइंदा। जिथ्थे होवे हक़ नबेड़ा, हक़ो हक़ झोली पाइंदा। जिथ्थे श्री भगवान हरिजन कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा ढोला गाइंदा। ना कोई सञ्झ ना सवेरा, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। ना कोई दिसे घुप्प अन्धेरा, रैण अन्धेरी ना कोए जणाइंदा। ना कोई साधां सन्तां डेरा, माला तसबी ना हत्थ वखाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हरि जू कर के आपणी मेहरा, नाल मेहर नज़र तराइंदा। अन्त अन्त ना करे डेरा, दर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा। जिन्हां पारब्रह्म नूं पाया घेरा, तिन्हां हरि जू वेख वखाइंदा। निक्कयों वड्डे दा बन्नह लओ बेड़ा, बिन चप्पू आप चलाइंदा। तुहाडे पिच्छे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सचखण्ड बैठा रिहा कर के वड्डा ज़ेरा, आपणा रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। सब तों निक्का निहकलंक, जिस दा रूप नज़र ना आईआ। भगतां अन्दर वड़ के वजावे आपणा डंक, डंका इक्को इक सुणाईआ। एथे की करे विचारा जनक, अष्टाबक्कर माण गंवाईआ। पुरख

अबिनाशी बिन जोग अभ्यास लगाई तनक, आत्म परमात्म तन्द हिलाईआ। रातीं सुत्यां देवे दरस बार अनक, नामा बैठा नैण शरमाईआ। वार बहत्तर मेरी मेटी शंक, शहिनशाह कलिजुग अन्तिम बेअन्त रूप धराईआ। राम कहे मेरी कोई नहीं वड्याई चुक्कया धनश, धन्ना कहे मेरा भोग ला ला आपणी खुशी मनाईआ। वेखो कलिजुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां दी इक्को वार बणाई बणत, घाड़त साची लए घड़ाईआ। फड़ के कढ्ढे विच्चों जीव जंत, लख चुरासी फोल फुलाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, चरण सरन दए सरनाईआ। जिउँ नानक अंग लगाया अंगद, तिउँ गुरमुख आपणी गोद सुहाईआ। कर के इकठ्ठे नाँ रखाया हरिसंगत, हरि संगी बणया सच्चा माहीआ। काया चोली अन्दर चढ़े रंगत, बाहरों कमले रमले दए वखाईआ। निक्कयो तुहाड्डा भेव ना जाणे कोई पंडत, मुल्लां मुसायक शेख़ ग्रंथी पन्थी सार कोए ना पाईआ। तुहाड्डा नाता तुटया जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के वड्डे कर वखाईआ। निक्कयो वेखो वड्डा घर, घर घर विच आप वखाइंदा। जिस दा खोल्हे सतिगुर दर, कुंजी हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। कलिजुग साध रहे डर, बिन हरि पर्दा कोई ना लाहइंदा। निहकर्मी आपणी करनी कर, करता पुरख वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले साचे फड़, आपणा मेल मिलाइंदा। रातीं सुत्यां अन्दर जाए वड़, नौ दवारे पन्ध मुकाइंदा। साची सेजा बहे चढ़, नार कन्त आप हंढाइंदा। अक्खर दो अक्खर रहे पढ़, निष्अक्खर राह जणाइंदा। सच भण्डारा देवे भर, ख़ाली भाण्डे ना कोए वखाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। फड़ बाहों लगाए आपणे लड़, कन्नी गंढु पुआइंदा। हौली हौली सच दुआरे जाए वड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के वड्डे कर बहाइंदा। निक्का वड्डा खेल अपार, अपरम्पर रिहा जणाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नर अवतार, निक्का हो हो वेख वखाईआ। गुरसिखो जे तुहाढ्डे नालों ना होवे निक्का, तुहाढ्डे अन्दर किस बिध जाईआ। सारे कहो पुरख अबिनाशी डिठा, जिस डिठयां जन्म मरन रहिण ना पाईआ। सारे कहो ज़ात पात दी चुक्की भिट्टा, आत्म परमात्म भिटया कदे ना जाईआ। सारे कहो पुरख अबिनाशी अमृत मारया छिट्टा, छुट्टी सर्ब लोकाईआ। सारे कहो सोहँ नाम इक्को दित्ता, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। सारे कहो मिल्या माता पिता, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। सारे कहो साचा करे हित्ता, गुस्से विच कदे ना आईआ। सारे कहो वसया साडे चित्ता, चितवित ठगौरी कदे ना पाईआ। सारे कहो श्री भगवान निक्का, गुरमुख वड्डे रिहा बणाईआ। सारे कहो कलिजुग अन्तिम साडे उत्ते विसा, बाकी संग ना कोए जणाईआ। बिन कीमतों भगत दुआरे आ के विका, आपणी कीमत ना कोए जणाईआ। सारे कहो असीं श्री भगवान जित्ता, साडे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। सारे कहिण जिन्ना चिर दस्स

के ना जाए आपणा भेता, भज्जया जाण कोए ना पाईआ। सारे आखो क्यों अर्जन सीस पुआई रेता, तेग़ बहादर सीस भेंट चढ़ाईआ। सारे कहो क्यों बाले दब्बे नीहां हेठां, क्यों तीर तलवार चमकाईआ। पुरख अबिनाशी डरदा डरदा कहे मैं तुहाढ्ढा देवां लेखा, पिछला मूल चुकाईआ। सारे कहो असीं कढुया भरम भुलेखा, गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। पहली वार कराए पिछला चेता, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। तुहाढ्ढी गोदी बहि बहि खेडा, पुरख अकाल निक्का हो के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निक्का निक्का नंन्हा नंन्हा निक्की निक्की गुफ्तार बिन रफ़तार आप जणाईआ ।

४२० ९३ गुरसिख रहिण ना देवे गंदा, कल गंदगी दए मुकाईआ। अन्दर वड़ गया फड़ के नाम रंदा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। बिन बंदगीयों बणा दए बंदा, बंदीख़ाना आप तुड़ाईआ। गुरसिख तैनूं वेख शरमाए चौधवीं चन्दा, चन्द नूर ना कोए वड्याईआ। कर किरपा सीतल धार कर दए ठंडा, ठंडक इक पुचाईआ। हरिसंगत विच रहिण ना देवे कोई आंडा गंदा, कूड़े भन्न वखाईआ। हरि भगत ना रहे रंडा, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। हथ्थ विच फड़ लए सच्चा डण्डा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार भज्जण वाहो दाहीआ। नेत्र रोवण सिर दे वाल खोवण कहिण असीं सोहँ गाईए छन्दा, तेरी मिले वड्याईआ। गुरसिख सानूं लग्गे चंगा, चंगी तरा दित्ता समझाईआ। जिस नाता तोड़या बत्ती दन्दा, रसना जिह्वा बंद कराईआ। जिन्हां नूं पुरख अकाल मिल्या नेत्रों अन्धा, ज्ञान नेत्र दए खुल्हाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर एथे ओथे नाल हंढ्ढा, घड़ी घड़ी कट ना सके जुदाईआ। क्यों गुरसिखां कोलों मंग के खाए मण्डा मण्डा, आपणी भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। गुरसिख तेरी हूंजे गंदगी, श्री भगवान सेव कमाईआ। दे दरस तेरी पूरी करे बंदगी, बन्दना आपणे चरण कराईआ। तुसां किसे दी ना करनी मुशंदगी, मुश्कल हल्ल वखाईआ। एह खेल सूरे सरबँग दी, जुग चौकड़ी किसे हथ्थ ना आईआ। इक्को रुत्त गुरमुख तेरे अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच जणाईआ। गठ्ढड़ी चुक्के तेरे पाप भार पंड दी, सिर आपणे लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा मुखड़ा आप धुआईआ। गुरसिख गंदा ना होवे पलीत, दुरमत्त मैल ना कोए रखाइंदा। जिन्हां साहिब मिल्या अतीत, त्रैगुण डेरा आपे ढाइंदा। अन्दर वड़ के दस्से रीत, मन्दिर मसीत पन्ध मुकाइंदा। अनहद शब्द प्रभ तों डरदा गुरसिख अन्दर मारे चीक, रो रो हाल सुणाइंदा। मैनूं वी तेरी सदा उडीक, तेरे बिनां कम्म ना आइंदा। मैं मन्न गया तूं गुरमुखां ४२० ९३

मिलें ठीक, ठीकर सब दे भन्न वखाइंदा। गोबिन्द मिलण दी आ गई तरीक, तरीका आपणा आप समझाइंदा। जिन्हां नेत्र नैण कर दरस प्रेम प्याला ला के पीता झीक, तिन्हां उज्जल मुख कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी गंदगी आप धुआइंदा। धोवण आया सच्चा ठाकर, निरगुण रूप वटाईआ। जिस विच कोटन कोटि गुर अवतार बणाईआ। कुंदन सिँघ तेरे अन्दर वड़ गया काया गागर, गागर उलटी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख दुरमत्त मैल धुआईआ। अन्दरों धोवे जाए धुप, आपणी हथ्थीं साफ़ कराईआ। जे कोई पुच्छे तां हो जाए चुप्प, रसना बोल ना कोए सुणाईआ। जे कोई लभ्भण जाए तां वड़ जाए अन्धेरे घुप्प, काया कवरी मुख भुआईआ। जे कोई कहे मैं तेरा सुत, प्रगट हो के दरस दिखाईआ। भरे भण्डारे ख़ाली बुत्त, नाम धन वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। अन्दर वड़ जाए नीकन नीका, आपणी खेल कराइंदा। दूर दुराडा आए नज़दीका, निज घर आपणा फेरा पाइंदा। गुरसिख आपणे जिहा कीता, गुरमुख कीती ना कोए उलटाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण हो के बण गया ढीठा, बिन सद्दयां घर घर फेरा पाइंदा। मिठ्ठा कौड़ा कौड़ा मिठ्ठा कर के जाए रीठा, रस इक्को इक वखाइंदा। हरिजन तेरा तपे ना तत्त अंगीठा, अग्नी अग्ग बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख कंचन रूप वटाइंदा। वड्डा दाता वड्डा कंजूस, हथ्थ ना किसे आइंदा। वड्डा भेती वड्डा जासूस, घर घर वेख वखाइंदा। घर वसाए घर घर देवे फूक, अग्नी अग्ग लगाइंदा। घर घर रोवे घर घर मारे कूक, घर घर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गंढु ना कदे खुल्हाइंदा। कंजूस बणया शहिनशाह, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे थाउँ थाँ, दो जहानां फेरा पाईआ। गुर अवतारां दे दे आपणा नाँ, किणका किणका दित्ता वरताईआ। भेव सके ना कोई पा, हरि जू ख़ज़ाना ना किसे वखाईआ। जो जन सरनी डिगे आ, तिस ख़र्चा हथ्थ फड़ाईआ। थोड़ा थोड़ा कर के लैणा खा, बहुता मंगयां आदत विगढ़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कंजूस इक्को नज़री आईआ। कंजूस होया सतिगुर सज्जण, आपणी गंढु ना किसे वखाइंदा। चारों कुण्ट सारे भज्जण, बण पांधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जुग जुग लाउदा रिहा अज पजण, हेरा फेरी नाल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल अछल खेल वखाइंदा। कंजूस हो के वट्टी चुप्प, आपणा हाल ना किसे जणाईआ। जे कोई मंगण आए पए रुठ्ठ, आपणा मुख भुआईआ। कर किरपा जिस वेले पए तुठ, अनमंगी दात दए वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो रखी घुट्ट, आपणे विच छुपाईआ। उस दा कुण्डा देवे पुट्ट,

४२१
१३

खिड़की दए भंनाईआ। सारी संगत नूं कहे इक्को वार लैणी लुट्ट, इकल्ला लुट्टण कोए ना आईआ। इकल्ले लुटयां पैंदी फुट्ट, कोई वड्डा कोई निक्का साचा संग ना कोए बणाईआ। प्रभ नूं सारे इक्को जेहे पुत्त, पिता पुत्त दए वड्याईआ। जा के गोबिन्द कोलों लए पुच्छ, देवण आया सच गवाहीआ। श्री भगवान अबिनाशी अचुत, मात्रेआ हो ना कोए वखाईआ। हरिसंगत तेरी सोहे रुत्त, रुतड़ी नाल आप महकाईआ। जो ख़ज़ाना रख्या दब्ब के गुझ, छब्बी पोह चारे गुठ्ठां रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणी दया कमाईआ। कंजूस वेखो हरि जू सूम, आपणी गंढु छुपाइंदा। पहलों गुर अवतार पीर पैगम्बर करे महिरूम, ख़ाली हथ्थ वखाइंदा। अग्गे बणाए फेर सच कानून, हुक्म हाकम आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची गंढु आप रखाइंदा। उहदे नाल गया ओह, आपणा वक्त लँघाईआ। उहदे नाल मिल्या ओह, आप आपणा मेल मिलाईआ। नेहों लगाया छब्बी पोह, जो शेर सिँघ पंज तत्त चोला रिहा हंढाईआ। आपणा नाम रखा के आया सो, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। हरिसंगत लई लै आया ढोआ ढो, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। घर घर बीज देवे बो, पत्त डाली आप महकाईआ। धीआं भैणां नालों तोड़या मोह, गुरसिखां नाल बन्धन पाईआ। इन्हां दी आत्म गया छोह, परमात्म रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शेर सिँघ ना रिहा ओह, आह वेख की की खेल रचाईआ। नाम तख़ल्लस जगत तालब, तुलबा रूप वटाईआ। निरगुण हो के बणे मुख़ातब, सरगुण सर्ब गंवाईआ। लेखा जाणे सर्ब आलम, उल्मा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख़ल्लस असलीअत विच प्रगटाईआ। तख़ल्लस विच आया असल, आशक आप जणाइंदा। हकीकत विच कराया वसल, वजूद ना कोए बणाइंदा। निरगुण हो के आया दस्सण, सरगुण आप पढ़ाइंदा। अन्दर वड़ के आया वसण, आपणी सेज सुहाइंदा। कूड़ी क्रिया आया झस्सण, चरणां हेठ दबाइंदा। सन्त सुहेले आया रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेग़ बहादर बेड़ा पार लगाया इक मक्खण, हरिसंगत मक्खण नालों अग्गे आप कराइंदा। अग्गों कोई ना आए डक्कण, भय सब नूं आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख़लस्स मुफ़लस रूप वटाइंदा। तख़ल्लस होए जगत मुफ़लस, मुफ्त ख़ोरा नाँ रखाईआ। पंज तत्त जो करे उल्फ़त, अर्श कुर्श ना कोए चढ़ाईआ। प्रभ नूं कदे ना मिले फ़ुरसत, जो तत्तां करे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तरां तरां तरां नाल समझाईआ। खुदाई दाअवे दा दस्सां हक़, असलीअत आपणी आप जणाईआ। जिन्ना चिर शेर सिँघ बवन्जा साल बूटा ना गया पक्क, पत्त डाली जगत वखाईआ। सृष्ट सबाई विच्चों ना

गया अक्क, धीआं पुत्तर संग रखाईआ। ओनां चिर निरगुण रूप ना खोल्ही अक्ख, सरगुण रूप जगत दसाईआ। वेले अन्तिम करया आपणा पक्ख, इक्को राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शेर सिँघ शेर शेर जणाईआ। शेर नाल मिल्या सिँघ, भगवान शेर रूप वटाईआ। दोहां दी वज्जी इक्को किंग, मृदंगा इक समझाईआ। ना कोई वड्याई ना कोई चिन्द, चिन्ता रूप ना कोए वखाईआ। निरगुण मेला निरगुण गुणी गहिंद, सरगुण शेर सिँघ नाता गया तुड़ाईआ। ना कोई पिंजरा ना कोई पिंज, बंदीख़ाना ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा साचा हक़, आपे पंज तत्त काया चोला करे फ़क्क, आपणी हथ्थीं कलम फिराईआ। हक़ देवे ओसे वेले, जिस वक्त दया कमाइंदा। लेखा जाण गुरु गुर चेले, चेला गुर आप हो आइंदा। सरगुण निरगुण आपे मेले, मेल मिलावा आप वखाइंदा। अचरज खेल हरि जू खेले, खेलणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया तन देवे हक़ सरीर, अन्तिम मेला करे अख़ीर, अख़ीर इक्को इक वखाइंदा। हक़ फ़क्क होया बै, रहिणनामा नज़र कोए ना आईआ। शेर सिँघ शेर दुआरे शहिनशाह विच होया लै, पिछला लेखा गया मुकाईआ। पा गलवकड़ी अग्गे बहि, आपणा हाल सुणाईआ। मैं वेख के आया दीन मज़्ह्ब मरदे खहि खहि, गुर अवतारां कराई लड़ाईआ। तेरी सरनी ना कोई ढहे, कोई राम कोई कृष्न कोई मुहम्मद रिहा ध्याईआ। कोई ईसा मूसा कहे, उच्ची कूक कूक अल्ह्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप आपणे नाल मिलाईआ।

४२३
१३

❇ २८ पोह २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

आई घटा वेखे घटा, घनघोर नाम जणाईआ। निरगुण सरगुण प्या रट्टा, मुनसफ़ नज़र कोए ना आईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश होया खट्टा, अमृत रस ना कोए भराईआ। पीर पैगम्बर फिरे नट्ठा, दोज़ख़ बहिस्त वेख वखाईआ। गुर अवतार भुल्ली मत्ता, श्री भगवान भय जणाईआ। चौथे जुग दा राज चुगत्ता, चारों कुण्ट दुहाईआ। ना कोई जाणे ठंडा तत्ता, अग्नी पवण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घटा इक्को इक चढ़ाईआ। साची घटा आई चढ़, चार कुण्ट अन्धेरा। दीन मज़्ह्ब रहे लड़, कोई ना कहे तूं मेरा मैं तेरा। करे खेल नरायण नर, निरगुण रूप निरँकार सिँघ शेरा। सब दी वेखे चोटी जड़्ह, दो जहानां ढाहे ढेरा। गुरमुख विच्चों लए फड़, मेहरवान कर के आपणी मेहरा। ग़रीब निमाणयां देवे वर, देवणहार ना लाए देरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

घुंमण घोर घटा, चारों कुण्ट पाए घेरा। घट आए रंग काला, कलिजुग कूक सुणाईआ। नव नौ होए बेहाला, जीव जंत सर्ब कुरलाईआ। साधां सन्तां हड्डीं लग्गा पाला, अन्दरे अन्दर देण दुहाईआ। किसे ना जापे हाढ़ सिआला, रुतड़ी रुत्त ना कोए वखाईआ। पवण अगम्मी मारे उछाला, इक्को लहर वहाईआ। सब दा अन्तिम कढ्ढे दवाला, ख़ाली हथ्थ फिराईआ। भणवईए नज़र ना आए साला, सगला संग ना कोए रखाईआ। गुर अवतारां कोलों मंगे हाला, पिछला लहिणा आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची घटा इक चढ़ाईआ। साची घटा चढ़े बदल, हरि बदली आप कराइंदा। निरगुण करन आया अदल, अदालत इक्को इक वखाइंदा। इक तराना इक्को नाम इक्को नग़मा इक्को ग़ज़ल, ग़रज़ इक्को इक वखाइंदा। सब दे सिर ते कूके अज़ल, उज़र अग्गे ना कोए जणाइंदा। मुरीदां उत्ते मुर्शद करे फ़ज़ल, अर्शी आपणी मेहर बरसाइंदा। लख चुरासी होए पज़ल, पुश्त हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। बिन हरि भगत कोई ना चढ़े साची मज़ल, मुश्कल विच सर्ब फसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारों कुण्ट घटा इक वखाइंदा। चारों कुण्ट इक्को घट, घाटा रही पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे नठ्ठ, लोआँ पुरीआँ फेरा पाईआ। इन्द्र कहे मेरा कोए ना रस, करोड़ छिआनवें मुख भुआईआ। करे खेल पुरख समरथ, आपणे नाम कांग चढ़ाईआ। जिस दे अग्गे कोई ना सके बच, कोटन कोटि इन्द्र आपणा आप गए रुढ़ाईआ। वेखो खेल करे सच, साचा रूप आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को घटा रिहा वखाईआ। घटा चढ़ आई असमान, ज़िमीं ख़ाक ना कोए वखाइंदा। दो जहान होए हैरान, हरि जू की की खेल वखाइंदा। चौदां लोक ना सके पछाण, चौदां तबक नैण शरमाइंदा। गुर अवतार सुणन कान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां इक्को घनघोर सुणाइंदा। पीर पैगम्बर सर्ब पछताण, खवाजा ख़िज़र मूँह विच घाह रखाइंदा। दरोही खुदाए दी खुदाए चाढ़े इक तुफ़ान, तोहफ़ा सब नूं आप पुचाइंदा। किसे दा रहिण ना देवे दीन इस्लाम, दुनियां एहदे विच रुढ़ाइंदा। दूजा सुणे ना कोए पैग़ाम, पैगम्बर नज़र कोए ना आइंदा। सजदा सीस ना करे कोए सलाम, अलैकम रूप ना कोए वटाइंदा। दो जहान करे गुलाम, बन्नू बरदे अग्गे लाइंदा। इक्को मेघ बरसे आण, मेहरवान दया कमाइंदा। गुरसिखां हरस मेटे अमृत देवे पीण खाण, अमिउँ रस आप चुआइंदा। जो जन सोहँ ढोला गाण, तिस दुआरे घटा काली फड़ फड़ गुरसिखां नाच वखाइंदा। हरि जू हरिजन करे पहिचाण, बेपहिचाण फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घटा इक्को इक उठाइंदा। उठी घटा चारों दिशा, एका वार उठाईआ। नव नौ दा इक्को हिस्सा, चार चार समझाईआ। चार चार दा पिछला किसा, नौ नौ मिटाईआ। दीन

दयाल किसे ना दिसा, दहि दिशा वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घटा साची रिहा जगाईआ। घटा कहे प्रभ तेरा खेल अपार, मैं वेख होई हैराना। निरगुण सरगुण तेरी धार, खेलें खेल दो जहानां। गुर गुर रूप लै अवतार, देवें धुर फ़रमाणा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, गाए इक तराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तू ही दित्ता मैनूं वर, मैं आपणा हाल सुणाना। आपणा हाल दस्सां की, भेव अभेद जणाया। धरनी अन्दर मेरी नींह, जल जल रूप समाया। मेरी उडीक रखे सीं, नेत्र नैण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे वास्ता पाया। पाणी नाल मेल हवा, सरगुण निरगुण रूप जणाईआ। मेरा उज़र ना चले रवा, रवादार ना कोए अख्वाईआ। बाहों फड़ ल्या उडा, आपणे चरण ध्यान जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। पाणी मिल हवा धार, आपणी धार जणाइंदा। राह तक्कां तेरा साचे यार, नेत्र नैण कुरलाइंदा। धरनी धवल तों आई बाहर, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। उत्ते आ बदली मेरी नुहार, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। काले बादल हो तैयार, अदल बदल बदल अदल आपणी खेल जणाइंदा। अन्दर भरया इक भण्डार, रस नज़र किसे ना आइंदा। हुक्मे अन्दर हो तैयार, ना ज़िमी ना असमान, अन्दरे अन्दर आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे दर, घर साचे आप कराइंदा। हवा पाणी बादल रूप, एका एक जणाईआ। करे खेल सति सरूप, सति सति वड्याईआ। लेखा जाणे चार कूट, दहि दिशा रंग चढ़ाईआ। शहिनशाह हरि भूपन भूप, राजन राज आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हवा पाणी मिल के बादल, बादल घटा रूप वटाईआ। मैं घटा निमाणी कोझी कमली, तेरे चलां हुक्म रज़ाईआ। तेरे हुक्म उत्ते करां अमली, इक्को अमल झोली पाईआ। बिरहों वैरागण होई बवली, कूक कूक सुणाईआ। नेत्र रोवां लभ्भां साँवल सवली, साँवल शाह दए वड्याईआ। गरज़ गरज़ के होवां कमली, मध मती देवां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा रिहा सताईआ। तेरे विछोड़े मारी तेग़, मेरा दुःख वधाया। जे नेत्र रोवां ते लोकी कहिण मेघ, मेरा दुःख ना किसे मिटाया। मैं तेरयां जीवां जंतां मिटावां अग्नी सेक, मेरी अग्ग ना कोए बुझाया। मैं घट्टे मिट्टी मेटां रेख, उपर ठंडी धार वहाया। तूं बेपरवाह नज़र ना अइउँ नेतन नेत, नित नित आपणा मुख भुआया। मैं सुक्के करां हरे खेत, तूं मेरी खेती रिहों सुकाया। प्रभू इक वार वेख, मैं तेरे बिन दिवस रैण रही कुरलाया। श्री भगवान कहे नेड़े आउँदा पहली चेत, तेरा दुखड़ा दए मिटाया। आपणे पल्लू लए लपेट, फड़ आपणी गोद बहाया। तेरा सोहणा मुखड़ा

लए वेख, मुख नकाब उत्तों उठाया । फेर दस्से आपणा लेख, निरगुण की की खेल कराया। आदि जुगादि जो रहे हमेश, जुगा जुगन्तर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घटा काली दए जणाया। घटा काली लै अंगड़ाई, चारों कुंट नैण उठाया। धन्न भाग मेरी कीती घाल प्रभ थाएँ पाई, वेला नेड़े आया। मैं निउँ निउँ लागां पाईं, प्रभ आपणा लवां मनाया। गल मिलां चुक्क के दोवें बाहीं, आपणा दु:ख मिटाया। ढह चरणीं कहां तूं मेरा साईं, तुध बिन साहिब नज़र कोए ना आया। होएं सहाई सभनी थाईं, घट घट तेरा रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या रिहा दृढ़ाया। घटा काली होई उच्ची, आपणी अड्डी रही उठाईआ। प्रभ नाल मेरी लग्गी रुची, पिछला ध्यान मुकाईआ। मैं हुण होण वाली सुच्ची, कलिजुग चौथे आपणा नहावण नहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मैं बणी रही कन्नां तों बुच्ची, मेरे नक्क नथ्थ सुहाग किसे ना पाईआ। जिध्धर गई देवत्यां फड़ फड़ कुट्टी, ख़्वाजा ख़िज़र मगर मतिहरा रिहा लगाईआ । साधां सन्तां मेरी मीढी पुट्टी, खुल्ह्ली गुत्त वखाईआ। मैं हुण हो के जावां बलवान साहिब कोलों लवां छुट्टी, गल्ल पल्लू वास्ता पाईआ। तेरी लख चुरासी जो अंगूरी फुट्टी, मैं पाणी दित्ता थाउँ थाईंआ। तूं वेख अक्खीं सारी होई खोटी, कर्म कांड ना कोए चतुराईआ। किसे सूर किसे गाँ दी खादी बोटी, कोई हड्डीआं रिहा चबाईआ। बिन तेरयां भगतां कोई ना चढ़या तेरी चोटी, सारे रोवण देण दुहाईआ। मैं तेरे हुक्मे अन्दर खड़ी खलोती, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तेरे हुक्मे अन्दर मैं सब दे हथ्थों खोहणी रोटी, भुख्यां देवां मराईआ। शाह सुल्तानां तेड़ वखावां इक लंगोटी, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। बेशक मैं तेरे दर ते छोटी, बाकी सब दी जड़ उखड़ाईआ। मेरी धार इक्को बहुती, समुंद सागर कोए रहिण ना पाईआ। कर किरपा तूं दे आपणी जोती, जिस जोत नाल करें रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी इशारा करे नाल सोटी, उंगलां नाल समझाईआ । मार हुलारा सब दे तेड़ों लाह दे धोती, कुल्ह्ला सिर रहिण ना पाईआ। किसे दी बणी रहे ना कोठी, मन्दिरां विच ना कोए वसाईआ। किसे दे हथ्थ ना रहि जाए पोथी, बग़ल कुरान ना कोए टिकाईआ। चौदां विद्या कर दे थोथी, घर घर पए लड़ाईआ। पवण पाणी तेरी इक अहूती, हरि जू दए वखाईआ। पैरीं ना पौणी जुत्ती, नंगी पैरीं सेवा लाईआ। वेखी हुण ना रहि जाईं सुत्ती, हरि जू सुत्तयां रिहा जगाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया कुत्ती, भौंके वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी इक्को शौंकी, शौंक गुरसिखां नाल हंढाईआ। आपणी घटा विच्चों अमृत मेघ इक तरौंकी, मेरे भगतां सीस छहबर लाईआ। ओन्हां दे चरणां जा के पहुंचीं, आपणी भुल्ल बख्शाईआ। भगतो मैं तुहाढे बिना रही औंती, औंतरापन वखाईआ। मैं तुहाढा साहिब वेख के आई बेपरवाह वड्डा जौकी, ज़ेर ज़बर आपणा इक जणाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची घटा दए समझाईआ। घटा कहे प्रभ तेरी घाटी, मोहे नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं कटदी रही वाटी, रूप अनूप धराईआ। कृष्न बणया गवाल्यां साथी, गवर्धन आपणी उंगली उठाईआ। बाल्यां करदा रिहा राखी, सेवा सच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सेवा अन्दर सुत दुलारा, हरि शब्दी शब्द लगाया। सेवा अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव कर तैयारा, साचा हुक्म जणाया। सेवा अन्दर रजो तमो सतो भर भण्डारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाया। सेवा अन्दर लख चुरासी बण वणजारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रूप धराया। सेवा विच निरगुण सरगुण खेल कर निरगुण चोला, सरगुण आप हंढ्ढाया। सेवा अन्दर नाम निधान अगम्मी बोला, धुर फ़रमाणा राग सुणाया। सेवा अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वारो वारी खोल्हा, दो जहानां वेख वखाया। सेवा अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआँ लोआँ जणाया होला, आपणा रंग रंगाया। सेवा अन्दर अमृत भरया नाभ कौला, रस इक्को इक धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा सच आप जणाया। सेवा अन्दर गुर अवतार, जुग जुग आप घलाईआ सेवा अन्दर वेद चार, शास्त्र सिमरत नाल मिलाईआ। सेवा अन्दर गीता ज्ञान, अठ्ठ दस करे पढ़ाईआ। सेवा अन्दर भगत भगवान गाण, आत्म परमात्म ध्यान लगाईआ। सेवा अन्दर पीर पैगम्बर कुरलाण, कलमा नबी सिफ्त सालाहीआ। सेवा अन्दर अञ्जील कुरान, चौदां तबक भज्जण वाहो दाहीआ। सेवा अन्दर ज़िमीं असमान, बैठे सीस झुकाईआ। सेवा अन्दर सूरज चन्न तारा मण्डल ख़ाक रहे छाण, आपणा बल मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाईआ। सेवा अन्दर लोक परलोक, अवण गवण आप जणाइन्दा। सेवा अन्दर सच सलोक, आदि जुगादि राग सुणाइंदा। सेवा अन्दर बणवाए किले कोट, भेव अभेद जणाइंदा। सेवा अन्दर लगाए साची चोट, नाम नगारा इक उठाइंदा। सेवा अन्दर निर्मल जोत, दीपक घर घर आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक रखाइंदा। सेवा अन्दर सिँघ सिँघासण, शहिनशाह वखाईआ। सेवा अन्दर इन्द इन्द्रासण, बैठे ध्यान लगाईआ। सेवा अन्दर मण्डल रासण, गोपी काहन नाच नचाईआ। सेवा अन्दर पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल रिहा भुआईआ। सेवा अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। सेवा अन्दर गहर गम्भीर, गुण करता खेल कराइंदा। सेवा अन्दर लग्गा लख चुरासी तन सरीर, बिन सेवा ख़ाली नज़र कोए ना आइंदा। सेवा करे शाह हकीर, बेनज़ीर राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्को इक वखाइंदा। साची सेवा जगत जुग, जग जीवण दाता आप

४२७ १३

जणाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत चुग, आपणा भेव खुल्हाईआ। जन्म कर्म दा कट रोग, चिन्ता सोग गंवाईआ। साची सेवा देवे आपणा नाम जोग, जुगती हथ्थ फड़ाईआ। मेल मिला निर्मल जोत, जोती कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा दए वड्याईआ। साची सेवा साची धार, हरि करता आप जणाइंदा। साची सेवा सतिगुर प्यार, दूजा राह ना कोए वखाइंदा। साची सेवा धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का इक वखाइंदा। साची सेवा हरि निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। साची सेवा आत्म परमात्म प्यार, परम पुरख रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक जणाइंदा। साची सेवा शब्द विचोला, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जिस परदे अन्दर पुरख अकाल कीता उहला, उह पर्दा पूरन रूप वटाईआ। जिस दे अन्दर वसे मौला, मौलया हर घट थाईंआ। ला सेवा तुहाडे पिच्छे पाए रौला, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। सेवा पिच्छे करे पूरा कीता कौला, गोबिन्द आपणा रूप वखाईआ। सेवा पिच्छे तुहाडा भार करया हौला, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। सेवा पिच्छे प्रगट होया उपर धौला, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। सेवा पिच्छे सति दुआरा खोल्हा, भगत भगवान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्को इक कराईआ। साची सेवा कर संसार, सेवा नजर किसे ना आईआ। साची सेवा भगतां दए आधार, भगवन हो सहाईआ। साची सेवा करे हरि करतार, करनी करता आप कमाईआ। सेवा अन्दर ग़रीब निमाणयां दा चुक्कया भार, थलां विच फेरा पाईआ। जलां विच फिरे सचखण्ड दा साचा यार, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आपे लाईआ। सेवा कर कर गया थक्क, गुरसिख तेरी घाल कमाईआ। कर खेल पुरख समरथ, इट्टां रोड़े पत्थरां सेज बणाईआ। उत्ते पूरन परमेश्वर दित्ता रख, पंज तत्त हड्डीआं रिहा दबाईआ। हरिसंगत दित्ता दस्स, सतिगुर पूरा गुरसिखां भार किवें सिर उठाईआ। दु:ख अन्दर रिहा नठ्ठ, सुख रूप वटाईआ। नाले रोवे नाले रिहा हस्स, आपणा खेल जणाईआ। क्यों हो अधीन होया भगतां वस, आपणा आप गंवाईआ। प्यार अन्दर गया फस, हरि जू आपणा घर तजाईआ। जिध्धर चाहो ओधर दयो धक्क, धक्का मगरों लाईआ। हूंगदे हांगदे नूं मंजी उत्ते दयो सट्ट, आप गूढ़ी नींद सौं जाईआ। तुहाडे सुत्यां उह तुहाडे मेटे फट्ट, पिछला दु:ख गंवाईआ। ताप सराफ ना कोई तत्त, दु:ख दर्द ना कोए रखाईआ। गल विच जो दिती गठ्ठ, जम की फ़ासी दिती कटाईआ। गुरसिखो तुहाडे सामणे मंजी उत्ते ढठ्ठ, तुहाडा विस्तरा उत्ते दित्ता लगाईआ। जे ओस वेले तुहानूं सच्ची देंदा दस्स, तुहाडी खुशी तुहाडे विच वस ना कोए कराईआ। एहो वल छल खेल पुरख समरथ, अन्दरों होर ते बाहरों होर, गुस्सयां नाल डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुरसिखो तुहाढ्ढी सेवा इक्को वार झोली पाईआ। बखशिश कर करे बख्शीश, पिछली भुल्ल बख्शाईआ। अग्गे देवे इक असीस, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। तेरी सेवा करे जगदीश, जगदीश्र फेरा पाईआ। हरिजन तेरी कोई ना करे रीस, गुरसिख बेपरवाह . . . .

✻ ३० पोह २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✻

भगत कहे प्रभ सज्जण सुहेला, इक्को नज़री आईआ। गुर अवतारां दा चुक्कया वेला, चाचा कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी सच्चा बापू इक इकेला, दो जहानां वड वड्याईआ। वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेला, चेला गुर लए जगाईआ। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर निरगुण सरगुण चाढ़े तेला, सगला सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत कहे प्रभ मिल्या साचा, साची वड वड्याईआ। नाता तुटया पिछले चाचा, चर्चा करे सर्ब लोकाईआ। बेअन्त स्वामी इक्को आका, अक्ल कला अख्वाईआ। गुर अवतारां जो दस्सदा रिहा आपणा साका, साख्यात रूप वटाईआ। पीर पैगम्बरां खोल्दा रिहा ताका, तकदीर सब दी रिहा बदलाईआ। जुग चौकड़ी पूरा करन आया घाटा, भगत भगवान लए उठाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी राता, सति सति करे रुशनाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर करे बातां, बातन इक्को इक जणाईआ। एथे ओथे देवे साथा, सगला संग निभाईआ। पुरख अकाल दी अगम्मी गाथा, निष्अक्खर आप पढ़ाईआ। नाता तोड़ ज़ाता पाता, ज़ाहरा ज़हूर दए दरसाईआ। चरण कँवल उपर धवल बंधाए नाता, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सदा सुहेला पिता माता, भगत भगवान गोद उठाईआ। आत्म परमात्म देवे दाता, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सदा सुहेला करे बंद खुलासा, बन्धन आपणा इक रखाईआ। पिर धन होण ना देवे निरासा, समरथ बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यासा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। लेखा जाण पृथमी आकासा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। भगत सुहेला दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। काया मन्दिर साचे अन्दर पावे रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक्को देवे धुर भरवासा, धुर दी धार बंधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग प्रभ दी निक्की शाखा, शनाखत आपणी दए जणाईआ। एथे ओथे सदा सुहेला होवे इक्को राखा, रक्षया रक्षक आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। भगत भगवन्त आपे जण, जण जननी आप अख्वाइंदा।

सदा सुहेला बेड़ा बन्न, आपणे कंध उठाइंदा। इक सुणाए राग कन्न, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। आप भुआए मणका मन, मन वासना आप मिटाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त तन, त्रैगुण माया फोल फुलाइंदा। निरगुण जोती कर प्रकाश साचा चन्न, चन्द चांदनी वेख वखाइंदा। भाण्डा भरम भउ हँकारी भन्न, कूड़ी क्रिया गढ़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन इक्को घर वखाइंदा। भगत कहे प्रभ तेरा दुआर, इक्को नज़री आईआ। चाचे बण के मार्ग दस्सदे रहे गुरू अवतार, दीन मज़्ब वंड वंडाईआ। शिरकत शरीक करी विच संसार, शरारत शरकत हुक्म जणाईआ। ग़फ्लत विच ना होए बेदार, उल्फ़त रूप ना कोए वटाईआ। सदाकत करे ना कोए विहार, ल्याकत चले ना कोए चतुराईआ। तुआकब करे ना परवरदिगार, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। कोटन कोटि नाम बणाए मददगार, मुदा हथ्थ ना कोए रखाईआ। सिफ्त सालाही कर विचार, बेपरवाही ढोला गाईआ। हुक्मे अन्दर कर जैकार, सेवा सेव कमाईआ। अन्तिम सारे गए हार, वरासत सच ना कोए बणाईआ। हिरासत विच लए आप करतार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। सफ़ारश करे ना कोई अन्तिम वार, सानी लासानी वेख कोए ना पाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, बेऐब बैठा आसण लाईआ। जलवा नूर नूर उज्यार, महिबूब सच गुसाईंआ। सिफ्त सालाही वसया बाहर, कलमा नबी ना कोए चतुराईआ। कातब करे ना कोई विचार, लेखा लिख ना कोए जणाईआ। चौदां तबक ना कोए अखाड़, तारा चन्द ना कोए चमकाईआ। सूरज किरन ना कोए पसार, तार तार ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह दस्से भगत, भगवान आपणा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखां जगत, जग जीवण दाता आपणा रूप वटाइंदा। लख चुरासी लेखा जाणा बूँद रक्त, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जिस दी याद गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे रहे सो अन्तिम आया वक्त, वेला आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई माण आदि शक्ति, शिकवा सब दा दए गंवाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता निरवैर स्वामी आपणी करे इक्को हरकत, हरारत सब नूं दए चढ़ाईआ। किसे विच रहिण ना देवे कोई बरकत, ख़ाली भाण्डे दए वखाईआ। परवरदिगार अग्गे क्या कोई करे शिरकत, लाशरीक इक अख्वाईआ। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, ना कोई कागद कलम शाहीआ। अजूनी रहित फिरे निधड़क, दो जहानां फेरा पाईआ। अद्धविचकार कदे ना जाए अटक, राह विच ना कोए अटकाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी शहिनशाह सुल्तान आपणी जणाए इक्को मटक, मेहरवान वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे दरस नूं रहे भटक, अद्धविचकार डेरा लाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद रहे लटक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलिजुग अन्तिम श्री भगवान निरगुण रूप

४३०
१३

इक्को होया सब तों चटक, लोकमात आया वाहो दाहीआ। नाल लिआया सोहँ शब्द सच्चा कटक, खण्डा खड़ग तीर तलवार ना कोए उठाईआ। लख चुरासी सब नूं देवे झटक, झट्टका इक्को वार बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रिहा जणाईआ। भगत कहे प्रभ मेरे पिता, तेरी वड वड्याईआ। हउँ बालक नादान नीकन नीका, अन्त कहिण ना पाईआ। तूं लेखा जाणे जीव जी का, घट घट रिहा समाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरीआं रखदे रहे उडीकां, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। गुर अवतारां दस्सदा रिहों तारीकां, आपणा तरीका ना किसे समझाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी वेखे नीतां, नीतीवान वड्डी वड्याईआ। सदा सदा सद रहे अतीता, त्रैगुण आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला बीता, बीती कहाणी सब दी दएं सुणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चलाई रीता, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ करी पढ़ाईआ। आत्म परमात्म नर हरि नरायण वसया किसे ना चीता, चातृक तृखा ना कोए बुझाईआ। किसे वेद पुराण पढ़ाया किसे पढ़ाई गीता, अञ्जील कुरान किसे सुणाईआ। किसे राह जणाया हस्त कीटा, किसे ऊँचो ऊँच वखाईआ। किसे खेल दसाया सद अनडीठा, रूप रंग ना कोए जणाईआ। बिन भगतां बणया ना किसे दा मीता, मित्र प्यारा ना कोए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला बीता, बेपरवाह फेरा पाईआ । जोती
४३१ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह प्रभ मेरे बाप, भगत भगवान रिहा ४३१
१३ दृढ़ाईआ। आदि जुगादी तेरा जाप, इक्को मोहे जणाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, किनारा नज़र कोए ना आईआ। १३
ना कोई लेखा चौदां लोक हाट, चौदां तबक ना कोए चतुराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भिन्न भिन्न तेरी दस्सदे गए गाथ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। भगत कहे तूं साहिब सुल्तान आदि जुगादी इक रघुनाथ, रघुपत तेरा बंस सुहाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म देवें दात, ब्रह्म पारब्रह्म वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण सच्चा नात, सरगुण सरगुण कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम लेखा तेरा वाक्, वाक्य वेखे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार लिख लिख गए कलम दवात, पंज तत्त चोला जगत हंढुाईआ। कलिजुग अन्तिम श्री भगवान सब नूं दए नज़ात, निज घर वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगतन एका मंग मंगाईआ। साची मंग फड़ा हथ्थ, भगत रिहा जणाईआ। तूं साहिब सच्चा समरथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरा दुआर मिल्या नस्स नस्स, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। बिन दन्दां मिलणा हस्स हस्स, बिन नैणां नैण मटकाईआ। साडी पूरी करनी आस, आसा आसा विच समाईआ । जुग चौकड़ी रहे उदास, सीतल धार ना कोए

वहाईआ। कलिजुग अन्तिम मिटे प्यास, तृष्ना तृप्त कराईआ। ना कोई पवण ना स्वास, रसना जिह्वा ना कोए समझाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म तेरी सच्ची शाख, पंज तत्त काया चोली तेरा पर्दा रूप वटाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, हउँ ढह प्या सरनाईआ। तेरा जपया इक्को पाठ, पाठशाला नज़र कोए ना आईआ। सरोवर मारे इक्को ठाठ, ठोकर अवर ना कोए लगाईआ। मैं पत्तण मल्लया घाट, दर तेरे डेरा लाईआ। आ मिल सज्जण साचे साक, सगला संग निभाईआ। लख चुरासी रुलदी वेखी ख़ाक, तेरा जलवा नूर ना कोए जणाईआ। बी पिहरबान मिहबान बीदो इक रसूल सच्चा पाक, तेरा असूल मोहे भाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरे नाल मिलण दा होया इतफ़ाक, निफ़ाक कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मुरीद मुर्शद रिहा समझाईआ। मुर्शद कहे सुण मुरीद, हाल मुरीदां वेख वखाइंदा। जिस दी गोबिन्द करी दीद, सो दर्दी दर्द वंडाइंदा। आपणी हथ्थीं कट के देवे रसीद, रस्ता इक्को इक जणाइंदा। जिस ने प्रभ नूं मिलणा ठीक, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। दूजी रखणी ना कोए उडीक, नेत्र नैण ना कोए खुल्लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नाल लाउदे गए प्रीत, सो प्रीतीवान दया कमाइंदा। भगत भगवान लैणा जीत, बिन भगतां भगवान हथ्थ किसे ना आइंदा। सारे रल मिल नाता छड्डो मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा काया विच रखाइंदा। बिन रसना जिह्वा गाओ ढोला गीत, गीत गोबिन्द आप जणाइंदा। चाचयां दा वेला गया बीत, पिता पुरख अकाल वड फेरा पाइंदा। जन भगतां कदे ना देवे पीठ, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। दूर दुराडा आया नज़दीक, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। चार वरन इक दूजे दा रहिण ना देवे शरीक, शरअ सब दी मेट मिटाइंदा। आपणे हथ्थ रखे इक तौफ़ीक, तोहफ़ा नग़मा सर्ब सुणाइंदा। वेखणहारा हकीकत हकीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। भगत कहे मोहे चढ़या चाउ, हरि सतिगुर सज्जण पाया। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याउँ, दो जहानां वेख वखाया। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहों, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाया। हरिजन बणाए हँस काउँ, सोहँ हँसा जाप जपाया। गुरमुख उठाए जिउँ बालक माउँ, पिता पूत गोद सुहाया। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, थान थनंतर इक वखाया। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, बेपरवाह वड वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए तराया। हरि कहे हरिजन तारांगा। सचखण्ड साचे वाड़ांगा। लेखा चुक्के मित्रां यारां दा। लहिणा मुक्के गुर अवतारां दा। भगतां भगवान आपे चुक्के, कम्म करे सेवादारां दा। निरगुण हो के शेर बुक्के, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाए अगम्मी कम्म करे ना कोए अख़बारां दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे डूँग्घीआं गारां दा। बिन

चरणां चढ़े ना कोई उत्ते, भुल्ली भरम लोकाईआ। श्री भगवान जिस गोदी चुक्के, चुक्क चुक्क उपर उठाईआ। उपर चुक्क फिर चरणां उत्ते सुट्टे, सुट्ट सुट्ट खुशी मनाईआ। सो गुरमुख एथे ओथे दो जहानां रस लुट्टे, रस इक्को इक जणाईआ। करे प्यार प्रभ जिउँ प्यो पुत्ते, पिता पूत खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन चरणां हरन फरन ना किसे खुलाईआ। बिन चरणां मिले ना चरणामत, मित्र नज़र कोए ना आइंदा। बिन चरणां मिले ना साचा हित्त, हितकारी ना कोए दसाइंदा। बिन चरणां माणस जन्म ना कोई लए जित्त, सचखण्ड ना कोए पुचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरणां नाल उपर चुक्क, चुक्क आपणा मुख दिखलाइंदा। थल्ले ल्या कहे शाबाश मेरे पुत्त, सुत तेरी वंड ना कोए वंडाइंदा। दे हुलारा कहे उठ, डिगयां आप उठाइंदा। जिस उपर जाए तुठ, फड़ चरणां उपर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल कँवल सहारा, थल्ले उपर करे प्यारा, प्यार आपणी वंड रखाइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे बाल अंञाण, बाला आपणे रंग रंगाइंदा। हरि का खेल अगम्म अपार, भेव अभेद रखाइंदा। ना पुरख ना दिसे नार, निरगुण धार चलाइंदा। इक बुढड़ी ते इक मुटयार, दोहां मेल मिलाइंदा। माई हव्वा मुख ते चिट्टे वाल, अल्ला राणी जोबन इक सुहाइंदा। दोहां कराए इक गुफ्तार, गुफ्त
४३३ शनीद पढ़ाइंदा। रफ़ता रफ़ता खोल्ह किवाड़, आहिस्ता आहिस्ता भेव चुकाइंदा। करे खेल सिरजणहार, हरिजन दया कमाइंदा। ४३३
१३ जिस दीआं हरि जू अक्खां दए उग्घाड़, बिन अक्खां पर्दा लाहइंदा। नौ जन्म दे पिछले ठग्ग नूं मिलण आईआं कर प्यार, १३
भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराइंदा। हवा बोले हौली हौली, इक्को मंग मंगाईआ। गुरमुख वेख मेरी चोटी होई धौली, चिट्टा रंग वटाईआ। मेरे हथ्थ ना मैहन्दी मेरी मींढी ना रतड़ी मौली, मौला नज़र किते ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मैं होई बौली, बवला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद जणाईआ। अल्ला राणी कर शृंगार, वस्त्र तन सजाईआ। नेत्र नैणां कजला धार, नैण नैण मटकाईआ। सीस गुंदया पहली वार, पट्टी इक चमकाईआ। माई नाल कर प्यार, करी सच सालाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, परवरदिगार रिहा आपणे हथ्थ रखाईआ। साडा लहिणा देणा अन्तिम रिहा विचार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। साडा कोई ना दिसे सहार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अल्ला राणी कहे वेख माई मैं करां दीदार, ठग्ग इक्को नज़री आईआ। जा के ओहनूं दस्सीए हाल, सानूं मार्ग दए समझाईआ। जिस बिध मिलीए पुरख अकाल, आपणा पन्ध मुकाईआ। हव्वा कहे मेरा एहो ख्याल, जो दित्ता तूं सुणाईआ। जिस ठग्गी कीती नाल चम्यार, गंगा माई होश भुलाईआ।

कंगण लै के मुख भुआया पिछले यार, आपणा राह तकाईआ। उस मेला अन्तिम वार, श्री भगवान ल्या मिलाईआ। चम्यार बणया नाल लिखार, लिख लिख लेखा लेखे विच बदलाईआ। जे साहिब सच्चे दी ठग्ग सानूं दस्से हुनार, दर्शन पाईए चाईं चाईंआ। जा के डिगीए चरण दुआर, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। मैं बुढड़ी खोवां सिर दे वाल, खुल्हा झाटा दयां वखाईआ। तूं आपणा लाहवीं हार शृंगार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। इक्को वार कहीए प्रभ तेरे बिनां कम्म ना आए बुढड़ी मुटयार, जोबन सच ना कोए हंढ्डाईआ। कर किरपा दे दीदार, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। उह आपणी करन गुफ़तार, तारा सिँघ समझ ना पाईआ। ओन्हां नूं मार्ग देणा सुखाल, जिस नाल कसीरिउँ कंगण ल्या वटाईआ। उंगलां नाल दस्सणा भगत दुआरे बैठा दीन दयाल, शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। जो दर डिगे आ हो कंगाल, कंगालों शाह दए बणाईआ। मुर्शद सदा सुणे मुरीदां हाल, गोबिन्द इक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल नरायण नर, दूजी वार फेर मिलाईआ। नानक सद्दया सचखण्ड दुआर, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सिँघ बिशन हरि जू मिल्या विच संसार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जिस जन जागत सोवत इक वार देवे दीदार, तिस गुरमुख नानक रूप वखाईआ। निरगुण नानक निरँकार नाल प्यार, निरँकार निराकार निरवैर ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण बिशन निरगुण अन्तर नानक रूप समाईआ। नानक निरगुण मिल्या सोहँ गा, सोहँ रूप वटाईआ। हँ चोला ल्या बदला, तन नानक पर्दा पाईआ। दोहां विचोला बेपरवाह, नज़र किसे ना आईआ। जिस ने नानक सतिगुर ल्या पढ़ा, सो साहिब सतिगुर गुरसिखां पढ़ावण आईआ। गुरसिख इक्को अक्खर दए सुणा, जिस दी सिफ्त नज़र ना आईआ। सो बणया शहिनशाह, हँ हरि की अंस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ रूप निरगुण निरगुण धार, सरगुण इष्ट ना कोए विचार, आत्म परमात्म एका घर वसाईआ। आत्म परमात्म पा अनन्द, नानक आपणा आप मिटाया। गाया ढोला सोहँ छन्द, जिस वेले हरि का दर्शन पाया। ना कोई रसना ना बत्ती दन्द, पवण स्वास ना कोए जणाया। इक्को इक नज़री आया सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणे आसण डेरा लाया। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाया। ना कोई गर्मी ना कोई ठंड, दिवस रात ना कोए वखाया। दीन दयाल साहिब बख्शंद, बखशिश इक्को झोली पाया। तूं मेरा मैं तेरा तूं मेरा चन्द, चन्द चांदना तेरा जगत रुशनाया। नाम सति पाई वंड, झोली इक्को वार भराया। सो साहिब कलिजुग अन्तिम प्रगट हो सूरा सरबँग, आपणा वेस वटाया। जन भगतां आपणे मिलण दा दस्सया ढंग, बेढंगी चाल चलाया। बिन ललारीयों चाढ़या रंग, रंग आत्म आप

रंगाया । बिन तन्द सतार वजाया मृदंग, तार अगमंड़ी आप हिलाया। बिन नीरों पाए ठंड, अमृत मेघ बरसाया। इक सुणाया साचा छन्द, सोहँ ढोला आप गाया। जुग जन्म दा मेट पन्ध, गुरसिख आण मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अन्तर निरगुण प्यार, सरगुण अन्दर खेल अपार, साखी साख्यात आप पढ़ाया। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, जिस नानक कीआ परवान, सो हँ ब्रह्म सिंँघ बिशन विश्व आपणा रूप वखाया।

❃ पहली माघ २०१६ बिक्रमी भगवान सिंँघ बूड़ सिंँघ दे गृह जेठूवाल ❃

पीर पैगम्बरां प्या रोणा, नेत्र नैण वहाईआ। वेखो अग्गे की कुछ होणा, हरि जू खेल कराईआ। ग़रीबां घर लग्गे सोहणा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। साडे कोलों सब कुछ खोहणा, ख़ाली हत्थ वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत कोहणा, छुरी नाम हत्थ उठाईआ। दिवस रैण ना मिले सौणा, सेज सुहञ्जणी ना कोए वड्याईआ। ढोला नबी ना मिले गाउणा, गीत सुहाग ना कोए सुणाईआ। सो करे जो हरि जी भाउणा, भावी सब दे सिर ते छाईआ। चार जुग दस्सदा रिहा आपणा आउणा, लिख्त भविख्त समझाईआ। कलिजुग अन्तिम आओ जिस दर्शन पाउणा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा फेरा

४३५
१३
पाईआ। गया वक्त फिर हत्थ ना आउणा, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। शाह सुल्तानां जिस ने ढाउणा, आपणा बल धराईआ । ४३५
१३
नौ खण्ड पृथवी हल्ल चलाउणा, चार कुण्ट जड़ उखड़ाईआ। दो जहानां जिस दा ढोला गाउणा, सोहँ वज्जे नाम वधाईआ। लेखा जाणे अवणा गवणा, पवणां हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर मारन झाकी, निउँ निउँ वेख वखाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशी, भेव कोए ना आइंदा। निरगुण जोत नूर प्रकाशी, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां बणया साथी, राज राजानां दर दुरकाइंदा। धुर दी सुणाए सच्ची साखी, साख्यात रूप वटाइंदा। गुरमुखां देवे लहिणा बाकी, नाम भण्डार वरताइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कोई रहिण ना देवे आकी, अक्ल सब दी आप गवाइंदा। जन भगतां बणया सच्चा साकी, अमृत जाम प्याला आप प्याइंदा। फड़ चढ़ाए औखी घाटी, घाटा पिछला पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। पीर पैगम्बर खोल्ह दरवाजा, आपणा नैण उठाईआ। करे खेल ग़रीब निवाज़ा, इक दूजे रहे समझाईआ। लोकमात परवरदिगार सिर धरया ताजा, तख्त निवासी फेरा पाईआ । जन भगतां रचया इक्को काजा, करता आपणी खेल वखाईआ। आदि जुगादि फिरे भाजा, बण पांधी फेरी पाईआ। सम्बल डेरा लग्गा माझा, गोबिन्द गीत अल्हाईआ। हरिजन सच्चे मारे अवाज़ां, सुत्यां रिहा

उठाईआ। सदा सुहेला इक इकेला समरथ पुरख स्वामी रखे लाजा, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड वड्याईआ। वड वडयाई हरिजन मीत, हरि सतिगुर आप दिवाइंदा। त्रैभवण धनी इक अतीत, त्रैगुण लेखा आप चुकाइंदा। आत्म परमात्म करे ठंडा सीत, सीतल धारा इक वहाइंदा। बोध अगाध सुणाए गीत, गीत सुहागी इक जणाइंदा। नव नौ चार जो सुत्ता रिहा दे कर पीठ, आपणी करवट आप बदलाइंदा। पीर पैगम्बरां दए हदीस, गुर अवतारां पर्दा लाहइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाली ख़ीस, दर दर घर घर आप मंगाइंदा। एका ताज सोहे सीस जगदीश, जगदीश्र आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। पीर पैगम्बर रहे दस्स, इक दूजे ध्यान लगाईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना आईआ। ग़रीब निमाणयां होया वस, बेवस फिरे सच्चा माहीआ। अन्तर आत्म दे दे रस, रस आपणा दए चखाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। भगतां गाए हरि जू जस, जस वेद पुराण कहिण ना पाईआ। दर दरवेश मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, विष्न ब्रह्मा महेष सीस झुकाईआ। शंकर चरणी डिगे ढठ्ठ, ढह ढह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। पीर पैग़बंर आओ नठ्ठो, एका एक जणाईआ। कलिजुग अन्तिम जो

४३६ १३ वट्टया जांदा सोई वट्टो, अन्तिम लेखा रिहा मुकाईआ। जे बचया जांदा नीवें हो के बचो, हँकारी कोए रहिण ना पाईआ। ४३६ १३

जे रज्जया जांदा चरण प्रीती रज्जो, साची रीत रिहा समझाईआ। जे ढिआ जांदा हरि सरनाई ढठ्ठो, डिगयां लए उठाईआ। जे कोई दुःख ते आपणा हाल दस्सो, दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर खोल्ह्ण अक्ख, नेत्र नैण उग्घाड़या। परवरदिगार पत्त लए रख, सिर झुके सच दुआरया। असीं अन्तिम कलिजुग होए लखों कक्ख, कलमा कम्म किसे ना आ रिहा। दीन मज़्ह्ब कीता वक्ख, शरअ वंड ना कोए वंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक समझा रिहा। पीर पैगम्बर पकड़ो राह, रहबर हरि जणाईआ। आबरू इज़्जत लए बचा, साबर सबर बेसबर प्याला जाम प्याईआ। रहमत करे आप ख़ुदा, रहीम सच्चा शहिनशाहीआ। सहिमत होवो ना होवो जुदा, जुज़ अड्ड ना कोए कराईआ। कदमां उपर हो फ़िदा, फ़ितरत आप गंवाईआ। सहिजे सहिजे लए मिला, विछड़े गोद उठाईआ जिस ने करबला दित्ता वखा, कायनात फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक समझाईआ। पीर पैगम्बर वेखो दरवेश, इक्को इक आइंदा। चार यारी ना रहे हमेश, कलमां नबी ना कोए पढ़ाइंदा। परवरदिगार इक आदेस, आदि जुगादि रखाइंदा। जुग

चौकड़ी अवल्लड़ा वेस, निरगुण सरगुण धार बन्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार ल्या वेख, कलिजुग अन्तिम वेला आइंदा। दर दर घर घर होया भेख, प्रभ का भेव कोए ना पाइंदा। किसे मुच्छ दाढ़ी रख्या केस, कोए सीस मुडाइंदा। पारब्रह्म बिन भगतां किसे ना रखे साया हेठ, लख चुरासी सर्ब कुरलाइंदा। अन्तिम सुंञा होया खेत, पीर पैगम्बर राखा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर वेखो तमाशा, हरि तरां तरां समझाईआ। जिस दी रखदे गए आसा, सो आसा पूर कराईआ। चौदां तबक ना कोए दिलासा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। हूर बहिश्ती ना कोए भोग बिलासा, रंग रंग ना कोए बदलाईआ। सब दा ख़ाली करे कासा, रहमत मेहर ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर दए वखाईआ। साचा दर वेखण पीर, पीरन पीर वखाइंदा। बेपरवाह कलिजुग अन्तिम खेल अख़ीर, आख़र आप समझाइंदा। भगत भगवान बदले तकदीर, तसबी माला ना कोए फड़ाइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लाशरीक मेल मिलाइंदा। दरस दखाए बेनज़ीर, नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह आपणा घर वखाइंदा। चार जुग दी मेटे लकीर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। जन भगतां कटे हरि जू भीड़, औझड़ राह ना कोए वखाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण देवे धीर, धीरज इक्को नाम धराइंदा। अमृत आत्म साचा सीर, श्री भगवान जाम प्याइंदा। हरिजन हरिजन मेले साचे वीर, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। किरपा कर गहर गुण गम्भीर, डूँग्घे सागर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव चुकाइंदा। हरिजन वेखे कोझा कमला, कमली वाला फेरा पाईआ। दो जहानां जाणे अमला, फोल फुलाए थाउँ थाईंआ। बाहरों बणे जट्ट यमला, अन्दर शहिनशाह शहिनशाहीआ। दो जहानां इक्को वार करे हमला, सिर सके ना कोए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी काची माटी गमला, लख चुरासी बूटे विच टिकाईआ। दो जहान वजाए तबला, एका डंका हथ्थ उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि का निशाना दस्सदे रहे मार के टपला, पूरन भेव ना कोए खुल्हाईआ। कोई कहे उपर रहिंदा अम्बरां, नज़र किसे ना आईआ। कोई कहे वड़या विच पैगम्बरां, दूजा रूप ना कोए वटाईआ। कोई कहे वड़या मसीतां मन्दिरां, गुरदुआरे डेरा लाईआ। कोई कहे रहे डूँग्घी कन्दरां, कोई कहे उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा सच्चा माहीआ। श्री भगवान कहे बिन भगतां मेरा किसे ना फड़या पलड़ा, पल्लू बन्ह ना किसे जणाईआ। आदि जुगादि फिरां इकल्लड़ा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम पाया झगड़ा, फ़ैसला सके ना कोए कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर लाया रगढ़ा, फड़ फड़ वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरे कर ध्यान सारे

कहिण श्री भगवान तकड़ा, जिस दा अन्त कोए ना आईआ। गुरू अवतार पीर पैगम्बर कोई लूला कोई लंगढ़ा, कोई निउँ निउँ कदम उठाईआ। अबिनाशी करता सतिजुग त्रेता द्वापर बणया रिहा मकरा, आपणा रूप ना किसे वखाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण दाता पुरख बिधाता छैल छबीला वखावण आया आपणा नख़रा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जे कोई लभ्भण जाए हो जाए सब तों वक्खरा, जे कोई चरणीं डिगे भगतां विच समाईआ। इक्को इक सुणाए आपणा फ़िकरा, फिकर सारे दए गंवाईआ। गुरसिखां घर घर करे ज़िकरा, ज़िकरीआ बैठा सीस झुकाईआ। शाह सुल्तान इक्को नित्तरा, निरवैर फेरा पाईआ। गोबिन्द नाता तोड़या बाजां तित्तरां, हरिजन साचे अन्त मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ग़रीब निमाणे गुरमुख सज्जण सहिज सहिज सुख सागर विच मिलाईआ। सुख सागर हरि सच्चा आप, अवर ना कोए जणाइंदा। भगत वछल जन माई बाप, पिता पूत वंड वंडाइंदा। जिस जन जपया सोहँ जाप, सो सतिगुर विच समाइंदा। आत्म दरसी उतरे पाप, दुरमत्त मैल धुआइंदा। मुर्शद मुरीदां करे पाकी पाक, पतित पुनीत आप कराइंदा। गृह मन्दिर खोल्ह ताक, पर्दा दूई आप उठाइंदा। हरि सज्जण मेला आपणे माघ, जगत माघी गुरसिख कदे ना नहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धोवण आया दाग़, आपणी हथ्थीं मल मल आप नुहाइंदा।

४३८
१३

❇ पहली माघ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल ❇

भगत मेला भगवन्त मिलावा, भावी भरम मिटाईआ। साहिब मिलण दा इक्को दाअवा, हरिजन चरण ध्यान लगाईआ। सतिजुग वेले पक्कया आवा, प्रहिलाद मिली वड्याईआ। द्वापर लेखे लग्गा नांवां, बिदर होए सहाईआ। कलिजुग अन्तिम मिल्या थाँ जगत निथावां, थान थनंतर इक सुहाईआ। श्री भगवान पकड़े बाहवां, आपणे आप उठाईआ। नाता तुटा हँसां कावां, काग हँस वखाईआ। समरथ देवे सिर ठंडीआं छावां, शहिनशाह बेपरवाहीआ। हरिजन मेला जिउँ पुत्रां मावां, पिता मात गोद सुहाईआ। तेरवें महीने बदलया परछावां, साढे बारां मास घरदयां अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। सोहण सिँघ अज्ज फिरे चावां चावां, प्रभ आया बेपरवाहीआ। चरण कँवल बहि बहि ढोले गावां, पिछला चेता रिहा कराईआ। दिवस रैण साहिब साईं सच्चा इक्को गावां, गुण गोबिंद इक्को गाईआ। जिध्धर वेखां जिध्धर जावां, नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन रंग वखाईआ। सोहण सिँघ कहे मोहे चाउ घनेरा, चौ कन्नी आख सुणाइंदा। प्रभ मिल्या जिस नाता जोड़या तेरा मेरा, मेरा तेरा एका रूप वखाइंदा। भाउदा फिरदा दो जहानां ला के आया

गेड़ा, उच्च महल्ले जा जा गुरमुखां दरस दिखाइंदा। धरत धवल लोकमात वसाए कुल्ली कक्खां खेड़ा, कुल आपणा आप बणाइंदा। जगत वलों तन ख़ाक ढाह के कीता ढेरा, आत्म आपणी आपणी गोद बहाइंदा। धन्न भाग प्रभ कीती मेहरा, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान दीन दयाल, दया इक्को इक वखाइंदा। दया वखाए हरि गोबिन्द, दया नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा जिस दी मेटे चिन्द, भरम भुलेखा दए गंवाईआ। तिस नज़री आए गुणी गहीर गहर गोबिन्द, भव सागर पार कराईआ। जिस रसते विच्चों गया अग्गे सीस निवावण विष्न ब्रह्मा शिव इन्द, करोड़ तेतीसा चरण ध्यान लगाईआ। सारे कहिण वेखो पारब्रह्म दी बिंद, पुरख अबिनाशी आपणी उंगली लाईआ। जिस ने तजाया जीव इंड, ब्रह्मण्ड पैरां हेठ दबाईआ। होए हैरान सारे गए खिण्ड, बिन गुरमुख हरि का संग ना कोए निभाईआ। लख चुरासी राए धर्म कढे जिंद, जन भगतां भगवान आपणी गोद बहाईआ। अमृत धार प्याए सागर सिन्ध, रस इक्को इक वखाईआ। साहिब सतिगुर सदा बख्शंद, बखशिश आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला सहिज सुभाईआ। मेला मिल्या सोहण, सिँघ सोहण सोहणी बणत बणाईआ। जीवां जंतां सारे रोण, गुरमुखां गुरसिख वेख खुशी रखाईआ। जिन्हां आपणा धोता धोण, सो पिछल्यां गए समझाईआ। हरि का भेव जाणे कौण, कीमत करते किसे ना पाईआ। जिस लेखा आपणे हथ्थ रख्या राम रौण, कंस काहना वंड वंडाईआ। सो कलिजुग अन्तिम किंगरा किंगरा आया ढौण, चार कुण्ट फेरा पाईआ। पिछले जुग दे विछड़े आया मनौण, अन्दर वड़ वड़ रिहा समझाईआ। रातीं गुरसिखां ना देवे सौण, सुत्यां लए जगाईआ। स्नेहुड़ा देवे ना किसे हथ्थ पौण, नंगीं पैरीं फेरा पाईआ। सिर निवाए फड़ के धौण, चरण कँवल दए सरनाईआ। अमृत जाम आया पिऔण, नाम सुराही हथ्थ उठाईआ। मन हँकारी आया ढौण, खण्डा इक्को इक चमकाईआ। निरगुण रूप सति सरूप आया वखौण, चार जुग जो कोई वेखण ना पाईआ। हरिसंगत वड्डे छोटे निक्के इक्को थाँ आया बहौण, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। ग़रीब निमाणयां शाह सुल्तानां आया समझौण, समझ सब दी रिहा गंवाईआ। नौ खण्ड पृथमी विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान इक्को ढोला गौण, सोहँ वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहण सिँघ तों कीता सिँघ सोहण, मोह आपणे नाल रखाईआ। रख्या मोह संग प्यार, परम पुरख दया कमाइंदा। सच दुआरे दित्ता आधार, आदत इक्को इक जणाइंदा। भगतां संग भगत विहार, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सचखण्ड दुआर दित्ता बहाल, बाबल आपणा घर वखाइंदा। सौहरे पेईए ना कोए विचार, बापू इक्को नज़री आइंदा। मुख तों पर्दा दए उठाल, दूजी वार घुंड ना कोए

वखाइंदा। अग्गों नज़री आया पुरख अकाल, जोती जाता डगमगाइंदा। गुरमुख वेख होए निहाल, वाहवा सतिगुर दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवन्त आपे फड़, बिन पौड़ीयों डंडिउँ जाए चढ़, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। आउँदा जांदा ना जाए थक्क, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। करे नबेड़ा हक़ो हक़, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जुग जुग सन्त सुहेले लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी नालों करे वक्ख, वक्खरी धार समझाईआ। जन भगतां गाए हरि जू जस, जस भगतां कोलों आपणा आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता तोड़ तत्त अठ्ठ, लहिणा चुकाया हथ्थो हथ्थ, साचा मार्ग शब्दी दस्स, उच्चे मन्दिर अन्दर दित्ता बहाईआ। हरि जू तेरा मन्दिर सोहणा, गुरमुख वेख खुशी मनाइंदा। एथे किसे ना सुझे आउणा, चारों कुण्ट इक्को हँस मुख, तेरा मुख सालाहइंदा। ना कोई कुण्ट ना कोई कोणा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई जागणा ना कोई सौणा, नार कन्त ना कोए हंढाइंदा। ना कुझ वढ्ढणा ना कुझ बोणा, किरसाण हल्ल ना कोए वहाइंदा। तेरी किरपा तेरे जिहा होणा, दूजा रूप नज़र कोए ना आइंदा। साहिब सुल्तान शहिनशाह तूं सब तों सोहणा, तेरा सुहप्पण सिफ्त विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाया सच्चा घर, जिस घर बिन भगतां नज़र कोए ना आइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच्चा दान, भगत भगवन्त इक निशान, हरिजन आपणे घर वसाइंदा।

❇ पहली माघ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल हरि भगत दुआर विच ❇

सो पुरख निरँजण शहिनशाह, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त धार चलाईआ। एकँकारा सिफ्त सालाह, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। श्री भगवान सच निशान, निरगुण आपणा आप वखाईआ। अबिनाशी करता वसे साचे थाँ, सच दुआरे सोभा पाईआ। पारब्रह्म वेस अवल्लड़ा आप वटा, भेव अभेद खुल्हाईआ। पुरख अगम्मा अगम्म अगम्मड़ी कार कमा, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। समरथ पुरख प्रभ पर्दा लाह, परवरदिगार नूर ज़हूर रुशनाईआ। मुकामे हक़ इक खुदा, बेऐब वड्डी वड्याईआ। आपणी इच्छया लए प्रगटा, साची भिच्छया आप वरताईआ। लेखा जाणे धुरदरगाह, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दुआरा इक सुहा, छप्पर छन्न ना कोए वखाईआ। शहिनशाह प्रभ आप अख्वा, करे खेल वड वड्याईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, नाउँ

निरँकारा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि अवल्ला, एकँकारा आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। निरगुण जोत आपे बला, असुते प्रकाश कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, महल अटल सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक वड्याइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड सच्ची वड्याईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, आपणी बणत बणाईआ। लेखा जाण आदि अन्त, मध आपणे विच छुपाईआ। भेव रखाए सदा बेअन्त, अन्त कहिण ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, भेव अभेद रखाइंदा। आदि करे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाइंदा। सचखण्ड निवासी सच दुआरे बेड़ा बन्न्, खेवट खेटा कंध उठाइंदा। करे खेल श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हो तैयार, हरि पुरख निरँजण लए उठाईआ। एकँकार वेखे विगसे वेखणहार, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसे ठांडे दरबार, श्री भगवान छत्र झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ सेवादार, सेवक आपणी सेव कमाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। करे खेल अपर अपार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। महल अटल इक मनार, ऊँचो ऊँच सुहाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, साचे घर करे कुड़माईआ। बण विचोला एकँकार, ओंकार बन्धन पाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, रूप रंग ना कोए वखाईआ। सति सतिवादी एका धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई बुढ्ढा नढ्ढा नौजवान, कुड़ी मुटयार रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई वस्त्र तन श्रृंगार, भूशन अंग ना कोए वखाईआ। करे खेल सिरजणहार, घर सच्चे सच्चा माहीआ। बन्धन पाया आपणी वार, साचा सगन मनाईआ। छन्दन गाए नाउँ निरँकार जैकार, जै जैकार सुणाईआ। साची सखीआं मंगलचार, आप आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साची करनी रिहा कमाईआ। सचखण्ड दुआरे सच विहारा, बिवहारी आप कराइंदा । सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, नूर ज़हूर आप प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सारा, पर्दा आपणा आप चुकाइंदा। एकँकारा जाणे धारा, धार धार विच समाइंदा। आदि निरँजण कर पसारा, आपणी कल धराइंदा। अबिनाशी करता सेवादारा, श्री भगवान निउँ निउँ सीस झुकाइंदा । पारब्रह्म बेख़बर होए ख़बरदारा, ख़बर आपणी आप प्रगटाइंदा। सच संदेसा नर नरेशा इक प्रगटाए एका वारा, दूजी बणत ना कोए बणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक वसाइंदा। सच दुआरा पुरख अबिनाश, अबिनाशी आप

वसाईआ। आपे करे खेल तमाश, बेअन्त बेपरवाहीआ। निरगुण देवे निरगुण साथ, सरगुण नज़र कोए ना आईआ। निरगुण नूर निरगुण ज़ात, निरगुण आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे खुशी मनाईआ। साचे घर चढ़या चाउ, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाहो, बेअन्त खेल कराईआ। आपे पिता आपे माउँ, आप आपणा रूप धराईआ। आपे सगन मनाए फड़ फड़ बाहों, आपे तन्दन तंध बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचन रचाईआ। आदि पुरख खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे सच विहार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। लेखा जाण पुरख नार, कन्त कन्तहूल रूप वटाइंदा। साची सेजा अगम्म अपार, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। रंग रलीआं माणे एकँकार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा चढ़या, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। दरगाह अन्दर आपे वड़या, दर्दी दर्द वंडाईआ। ना छन्नयां ना मरया सड़या, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। आपणा नूर आपे धरया, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी खुशी मनाईआ। सचखण्ड दुआर पुरख समरथ, आपणी खेल कराइंदा। निरगुण रूप कर प्रगट, प्रगट आपणा वेस वटाइंदा। आपे वस्त इक अकथ, कथनी कथ ना कोए जणाइंदा। आप चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, बण पांधी वेख वखाइंदा। आपे गाए आपणा जस, जस आपणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वड्याइंदा। सच दुआर श्री भगवान, आदि आदि वड्याईआ। निरगुण नूर कर प्रधान, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। परवरदिगार नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। करे खेल इक महान, महिमा आपणे विच छुपाईआ। सति सतिवादी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। दाता देवणहारा दान, दानी आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड इक वसाईआ। सचखण्ड वसया घर, सो पुरख निरँजण आप वसाया। जिस दा नज़र ना आवे दर, दर दरवाज़ा ना किसे खुल्हाया। कोई ना सके अन्दर वड़, कुण्डा हथ्थ ना कोए लाहया। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वडयाया। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, हरि सतिगुर आप वंडाइंदा। निरगुण विच्चों निरगुण कढ्ढ, निरगुण खेल कराइंदा। निरगुण घर निरगुण सद्द, सद्दा इक रखाइंदा। निरगुण जाणे निरगुण हद्द, बेहद्द रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा सोभा पाइंदा। दर

घर साचे सोभावन्त, सो पुरख निरंजन बेपरवाहीआ। करे खेल नार कन्त, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा गाए छन्द, सोहला इक्को इक अल्लाईआ। आदि निरँजण खेल करे बेअन्त, जोत नूर नूर रुशनाईआ। श्री भगवान लेखा जाण आदि अन्त, आपणा भेव चुकाईआ। अबिनाशी करता देवे सच सुगन्त, वासना इक्को रूप वटाईआ। पारब्रह्म करे डण्डौत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल इक्को बहुत, अक्ल कला अख्वाईआ। वसणहारा साचे कोट, महल अटल इक रुशनाईआ। निरगुण नूर निरगुण जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि अन्त इक्को ओट, एका आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिला, आपणी झलक वखाइंदा। निरगुण मेला मेल मिला, नार कन्त रूप वटाइंदा। सेज सुहञ्जणी लए हंढा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत जोत मिला, मिल मिल आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी सच दुआर, हरि सच्चा सच कराइंदा। खेल खेल अपर अपार, आप आपणी कल वरताइंदा। नारी पुरख बण निरँकार, जन जननी रूप वटाइंदा। दाई दाया सेवादार, बण सेवक सेव कमाइंदा। सुत उपजाया एका वार, शब्दी नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाइंदा। साचे घर छन्नयां पुत्त, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पिता बणया अबिनाशी अचुत, निरगुण जोत सच्ची माईआ। दरगाह साची सोही रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। आपणे अन्तर आपे उठ, आप आपणा ल्या प्रगटाईआ। भाग लगाया साचे कोट, किला बंक मिली वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंस आप बणाईआ। साचा बंस सुत दुलारा, सो पुरख निरँजण जाया। करे खेल आप निरँकारा, निरगुण निरगुण वेख वखाया। सीस जगदीश दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। महल अटल इक मनारा, ऊँचो ऊँच वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप जगाया। शब्दी सुत खुल्ली जाग, जागरत रूप वटाईआ। सचखण्ड दुआरे लग्गा भाग, हरि भाग आप वंडाईआ। निरगुण देवे निरगुण दात, दाता दानी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द रिहा उठाईआ। शब्द सुत गया उठ, हरि सतिगुर आप उठाया। किरपा निधान गया तुठ, मेहर नज़र इक टिकाया। गोद बहाया आपणा पुत्त, पिता पूत वेख वखाया। छोटा बच्चा रिहा पुच्छ, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। मेरी कुछ ना आवे सोच, सोच सोच तेरा राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध आपणी गोद बहाया। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, आपणा हाल जणाईआ। मेरा प्यार तेरा

रस, रस इक्को इक वखाईआ। चरण दुआर जाणा वस, देवां माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाईआ। सुत कहे तेरा चरण दुआरा, प्रभ साचे मोहे भाइंदा। दोए जोड़ करां निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा । मस्तक धूढ़ी लावां छारा, इक्को टिक्का सोभा पाइंदा। मैं बालक रूप न्यारा, निरगुण तेरी अंस अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारे देवां दान, तेरी झोली दयां भराईआ। चरण धूढ़ कर अशनान, सर सरोवर इक नुहाईआ। तेरी मेरी इक पहचान, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा सुत पुत्त बलवान, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। करां खेल इक महान, भेव अभेद जणाईआ। बण विचोला नौजवान, नर नरायण रिहा जणाईआ। आ मेरे बाल अंञाण, बाली बुध समझाईआ। तूं कह श्री भगवान, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। मैं देवां तैनूं माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा श्री भगवाना, एका एक जणाइंदा। साचे सुत सच बन्न्हां गानां, तेरा सगन मनाइंदा। थिर घर देवां इक मकाना, बेमुकाम आप समझाइंदा। जिथ्थे झुल्ले नाम निशाना, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। इक्को राग इक तराना, नाद अनादी इक वजाइंदा। इक्को नूर श्री भगवाना, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त आप वरताइंदा। सच वस्त प्रभ तेरी चंगी, शब्द सुत रिहा जणाईआ। देवां दात आप अनमंगी, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तेरे दर होए कोए ना तंगी, दुःख दर्द रहिण ना पाईआ। तेरा नाम इक्को चण्डी, चण्डका रूप वटाईआ। मेरी आसा होए ना रंडी, निरासा रूप ना कोए वखाईआ। तूं दीन दयाल बख्शंदी, बखशिश तेरी मोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रेम रस मुख चुआईआ। प्रेम रस देणा भगवान, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मैं बाला बाल अंञाण, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तोहे चरण डिगा आण, मोहे आसरा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। दर तेरे वास्ता दित्ता पा, बाली बाल जणाईआ। जिउँ भावे तिउँ लै चला, तेरे हत्थ वड्याईआ। आपणा मार्ग दे समझा, मेरी समझ समझ मिलाईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मोहे इक्को रस वखाईआ। इक्को रस हरि निरँकार, आपणा आप जणाइंदा। सुत दुलारे चरण प्यार, चरण प्रीती इक समझाइंदा। अन्तर मिले अमृत धार, अमृत रस वखाइंदा। सर सरोवर ठांडे दरबार, ठंडक एका पाइंदा। मेल मिलावा सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरोवर इक वखाइंदा। सच सरोवर चरण दुआर, चरणोदक आप जणाईआ। आदि जुगादि भरया रहे भण्डार, अतोट अतुट वखाईआ। सदा रखे ठांडे दरबार, सचखण्ड दुआर रिहा टिकाईआ। आपणा दस्से सच विहार, पहला जाम तोहे प्याईआ। तूं होणा ख़बरदार, बेअन्त रिहा समझाईआ। तेरा लेखा अपर अपार, लिख्त लेख ना कोए जणाईआ। तेरे अन्दर मेरी धार, धार तेरा रूप वटाईआ। तूं शब्दी सुत दुलार, डंका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अमृत जाम प्याईआ। एका अमृत दे प्याला, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। सुत दुलारे नज़री आए दीन दयाला, सिर दीनन हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड दुआर अवल्लड़ी चाला, थिर घर आपणी कार कमाइंदा। आदि पुरख बणया आदि रखवाला, अगला मार्ग आप जणाइंदा। सच सच दी सच्ची धर्मसाला, धुर दरबारी आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप उठाइंदा। साचे सुत हो तैयार, हरि सतिगुर आप जगाया। करे खेल आप निरँकार, निरगुण तेरी सेवा लाया। विष्नूं विश्व कर तैयार, अमृत तेरे हथ्थ फड़ाया। कलस लै एका वार, नज़र किसे ना आया। झिरना झिरे अगम्म अपार, धारी धार धार प्रगटाया। कँवल खिले इक गुलज़ार, आप आपणी दया कमाया। वंडे वंड वंडणहार, आप आपणा हिस्सा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा जणाया। सुत दुलारे तेरी वंड, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हुक्म देवे सूरा सरबँग, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। ब्रह्मा देवे इक अनन्द, परमानंद विच समाइंदा। विष्नूं घर चढ़े चन्द, निरगुण जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा खेल खलाइंदा। शब्दी खेल सुत दुलारा, जन जननी रूप वटाईआ। विष्नूं देवे आप हुलारा, ब्रह्मा गोद उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो तैयारा, निरगुण निरगुण रंग रंगाईआ। वसणहारा सुन अगम्म धूंआँधारा, शनाख़त आपणी ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सुत दुलारे दए वड्याईआ। सुत दुलारे तेरा माण, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा दे ज्ञान, गोझ ज्ञान आप जणाइंदा। शंकर मेला खेल महान, हरि सतिगुर आप कराइंदा। तिन्नां विचोला नौजवान, नज़र किसे ना आइंदा। धुर संदेसा श्री भगवान, शब्द अगम्मी आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा अगम्मी गीत, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। शब्दी शब्द तेरी रीत, विष्न ब्रह्मा शिव गंढु पवाईआ। करे खेल आप अनडीठ, नज़र किसे ना आईआ। सचखण्ड सुत्ता दे कर पीठ, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक अतीत, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। त्रैगुण मेला त्रै त्रै

४४५
१३

धार, त्रै काल दरसी इक चलाइंदा। करे खेल अपर अपार, सचखण्ड दुआरे वंड वंडाइंदा। शब्द सुत करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरा सच सच्चा दरबार, साहिब सतिगुर मोहे भाइंदा। तुध बिन कोई ना होए उज्यार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया कमाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड महल अटल दए उसार, लोआँ पुरीआँ तेरा राह चलाइंदा। किरन किरन किरन कर उज्यार, नूर नूर नूर प्रगटाइंदा। सूरज चन्द कर श्रृंगार, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। मण्डल मण्डप हो तैयार, तारा चन्द चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी तेरा हुक्म वरताइंदा। शब्द सुत हो बलवान, हरि सतिगुर आप जणाया। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण तेरा निशान, पंज तत्त देवे नाल मिलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड हो प्रधान, तेरा डंका दए वजाया। प्रगट कर ज़िमी असमान, ज़ामनी विच लए रखाया। देवणहार अगम्मी दान, अलख अगोचर बेपरवाहया। तख्त निवासी हुक्मरान, धुर संदेसा इक सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताया। साचा हुक्म पारब्रह्म, एका एक जणाईआ। विष्नूं तेरा विश्व कम्म, घर घर होए सहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लए जम्म, आपे बणे पिता माईआ। एका राग सुणाए कन्न, बिन कन्नां करे पढ़ाईआ। निरगुण नूर चाढ़े चन्न, बिन चन्दों करे रुशनाईआ। करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, महल अटल इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर लहिणा हथ्थ फड़ाईआ। साचा लहिणा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, धुर फ़रमाणा हुक्म मनाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज हो मेहरवान, मेहरवान आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण सरगुण कर निशान, सच निशाना आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप वड्याइंदा। सुत दुलारे तेरा रंग, हरि सतिगुर आप जणाईआ। लख चुरासी सेज पलँघ, घर घर आप विछाईआ। नाउँ निधान वज्जे मृदंग, तेरा राग सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, घट घट आप समाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, चन्द चांदना इक रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सुणाए छन्द, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। दो जहानां वंडे वंड, ब्रह्मण्ड खण्ड करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत निरगुण धार सरगुण महल्ल दए उसार, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रजो तमो सतो एका गंढु पवाईआ। महल्ल उसरे उसारे आप, नज़र कोए ना आइंदा। लख चुरासी बणे माई बाप, पिता पूत खेल कराइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्से जाप, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। बिन रसना जिह्वा सोहँ पाठ, ओंकारा आप पढ़ाइंदा। निरँकारा वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। निरगुण देवे निरगुण साथ, तेरा नाउँ वड्याइंदा। पंज तत्त चोला देवे दात, वस्त अमोलक

आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म हरि का भाणा, हरि हरि आप जणाईआ। तख्त निवासी इक्को राणा, शहिनशाह बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर खेल कराणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाणा, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। बोध अगाधी इक तराना, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। लख चुरासी देवे माणा, घर घर होए सहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आप पछाणा, पर्दा दए उठाईआ। शंकर अन्तिम लेख मुकाणा, लेखा लेखे लाईआ। शब्द सुत तेरा सच निशाना, लोकमात दए झुलाईआ। तेरा रूप करे महाना, मेहरवान वड वड्याईआ। गुर गुर तेरा नाउँ प्रगटाना, एका डंका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, गुरू गुरू समझाईआ । शब्द सुत बणया गुर, हरि सतिगुर आप बणाया। दो जहानां नाता गया जुड़, श्री भगवान आप जुड़ाया। निरगुण चढ़या साचे घोड़, घोड़ा अस्व आप दौड़ाया। लख चुरासी जाए बौहड़, घर घर फेरा पाया। आत्म परमात्म बुझाए औड़, अमृत मेघ बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी सेव लगाया। गुर शब्दी नेत्र खोल्ह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सच दुआरे तोलणा सच्चा तोल, कूड़ी क्रिया ना कोए जणाइंदा। तेरा मेरा चुक्के पर्दा ओहल, मुख नकाब ना कोए रखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वसां कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। दो जहान वजाउणा ढोल, मृदंगा तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जुग चौकड़ी दरवाजा देणा खोल्ह, दर दरबान तोहे बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव अनभोल, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। तूं बोलणा सच्चा बोल, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप समझाइंदा। सुत दुलारा खोल्ह अक्ख, नैण नैण खुल्हाईआ। बेअन्त बेपरवाह पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। साचा मार्ग दित्ता दस्स, मैं जावां चाईं चाईंआ। लख चुरासी अन्दर वस, तेरा भेव खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी नाद अनादी मारां सट्ट, अनहद राग दृढ़ाईआ। गृह मन्दिर अन्दर खोल्हां हट्ट, घर घर दीप जगाईआ। तेरी जोत कर प्रकाश, तेरा महल्ल वखाईआ। आत्म सेजा भोग बिलास, परमात्म गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। साची वस्त देवां अनमोल, श्री भगवान आप जणाइंदा। आदि आदि पर्दा दित्ता खोल्ह, ख़ालक ख़लक रूप वखाइंदा। घट घट आपे रिहा मौल, मौला आपणी धार जणाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण सचखण्ड दुआरे इक्को लई साची पौहल, पहली बौहणी आप कराइंदा। अमृत देवे उपर धौल, कँवल नाभी आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आप समझाइंदा। शब्द सुत सुण साचे लाल, हरि लालण आप सुणाया। मेरी इच्छया महाकाल, तेरा संग रखाया। तेरी इच्छया नाल काल, जुग जुग संग निभाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा समझाया। भेव अभेद दस्से मीत, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। शब्दी शब्द चले रीत, नाद अनादी आप सुणाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट डेरा लाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को गीत, आत्म परमात्म ढोला सच सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आप वंडाइंदा। साची वंड हरि करतारा, शब्दी शब्द जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल न्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वारा, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। तेरा रूप वखाए गुर अवतारा, गुर गुर बन्धन पाईआ। नाम निधाना बोल जैकारा, लख चुरासी दए समझाईआ। काया मन्दिर अन्दर खोल कवाड़ा, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। साची हाटी बण वणजारा, वणज इक्को इक वखाईआ। मिले मेल हरि मीत मुरारा, घर सज्जण सच्चा माहीआ। आत्म परमात्म दए हुलारा, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। धुर संदेसा एका वारा, एकँकारा करे पढ़ाईआ। ब्रह्मा वेता खोल्ह कवाड़ा, चारे वेदां दए जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिखे ना जगत शाहीआ। विष्नूं देवे इक भण्डारा, विश्व रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करनी दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग धार, धरनी धरत धवल जणाइंदा। तेरा रूप तेई अवतार भगत अठारां नाल मिलाइंदा। तेरा नाउँ शब्द जैकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण प्रगटाइंदा। तेरा हुक्म अगम्म अपार, गीता ज्ञान गोझ समाइंदा। तेरा लेखा अपर अपार, बेपरवाह नज़र ना आइंदा। तेरी महिमा विच संसार, वेद व्यासा ढोला गाइंदा। तेरा ढोला सच जैकार, लोक परलोक आप जगाइंदा। लोक परलोक ख़बरदार, आलस निंद्रा सब दी लाहइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, रूप अनूप आप धराइंदा। निरगुण सरगुण कर प्यार, सरगुण निरगुण रंग वखाइंदा। अन्दर बाहर इक्को धार, गुप्त ज़ाहर भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द दुलारे, तेरा रंग चढ़ाइंदा। तेरा रंग इक चलूल, चार जुग वखाईआ। साचे सुत ना जाणा भूल, भुल्यां मार्ग पाईआ। तेरे अग्गे शिव जी सुट्टे त्रसूल, ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। विष्नूं मन्ने तेरा असूल, चले हुक्म रज़ाईआ। तेरा साहिब कन्त कन्तूहल, पुरख अकाल वड वड्याईआ। पंज तत्त पंघूड़ा लैणा झूल, गुर अवतार रूप धराईआ। तेरा आदि पुरख मूल, अन्तिम आपणा रंग वखाईआ। देवे संदेसा इक माकूल, मुहब्बत तेरे नाल पाईआ। तूं बणना जगत रसूल, रहबर रूप नाम खुदाईआ। परवरदिगार तैनूं करे कबूल, तेरा कलमा करे पढ़ाईआ। चौदां लोक वेख हज़ूम, हुजरा इक्को इक जणाईआ। तूं बणया रहीं मासूम, परवरदिगार तेरा सच्चा माहीआ। जिस दा चलणा इक कानून, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उह पढ़ावे सच मज़मून, मसला आपणा हल्ल कराईआ। तूं बरदा बण

४४८
१३

ममनून, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। सुत दुलारे कह मेरा खुदा, खुदी विच कदे ना आइंदा। मेरा प्यार ना करे जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाइंदा। तैनूं राह दस्से सिध्धा, फड़ बाहों मार्ग लाइंदा। मैं तीर निशान्यों बिन्नां विधा, अणयाला तीर इक चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत इक वड्याइंदा। शब्द सुत चढ़या चा, चाउ घनेरा इक रखाईआ। बेपरवाह मिल्या इक मलाह, बेड़ा कंध उठाईआ। जिस दिती सच सलाह, कलमा करे पढ़ाईआ। साचा हुजरा दित्ता वखा, महिराब नज़र कोए ना आईआ। मीआं बैठा नैण उठा, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह मुर्शद मुरीद, कलमा आप जणाइंदा। उठ सुत कर मेरी दीद, दीदा दानिस्ता नूर वखाइंदा। आपणी हथ्थीं कट के दयां रसीद, मेरा लेखा ना कोए मिटाइंदा। मेरा नूर साची ईद, आदत इक्को इक समझाइंदा। मेरा मेल निशाना ठीक, काया ठीकर भन्न गवाइंदा। लोकमात रखणी उडीक, साचा हुक्म सुणाइंदा। मेरा दिसे ना कोई शरीक, शिरकत सब दी आप गवाइंदा। मैं वेखां हक़ हकीक, हकीकत सब दी फोल फोलाइंदा। मैं वसां सदा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। मेरा ढोला इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। मैं वसां काया विच मसीत, मुसल्ला इक्को इक वछाइंदा। मैं होवां ना कदे पलीत, पाकी पाक रूप वटाइंदा। मेरा खेल सदा अनडीठ, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी कलमा रूप वटाइंदा। शब्दी कलमा इलाही कलाम, एका एक जणाईआ। धुर संदेसा दए अमाम, आपणा भेव खुल्हाईआ। दर दरवेश करे सलाम, अलैकम सीस निवाईआ। बरदा बण गु़लाम, दर बदर फिर फिर वक्त लँघाईआ। साची शरअ इक ईमान, चरण कँवल सरनाईआ। पीर पैगम्बरां देवां दान, तेरा नाउँ वरताईआ। मेरी सच भूमका सच अस्थान, दरगाह साची सोभा पाईआ। ना ज़िमीं ना असमान, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। साचा लेखा परवरदिगार, बेपरवाह आप समझाइंदा। सुत शब्द तेरा मददगार, निरगुण नूर इक अख्वाइंदा। ज़ाहर ज़हूर सांझा यार, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। मूसे करे आप बेदार, बेदर्दी दर्द वंडाइंदा। जलवा दे के एका धार, मूँह दे भार सुटाइंदा। ईसा कर इक प्यार, आदत इक्को इक वखाइंदा। दर दरवेश बणो भिखार, अल्फ़ी चोला तन रंगाइंदा। काला सूसा कर श्रृंगार, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। उच्ची कूको बांह उठाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा डंक वजाइंदा। ईसा मूसा तेरा डंका, हरि हरि आप जणाईआ। तेरा खेल आदिन अन्ता, बेअन्त वडी शहिनशाहीआ। लेखा

जाणे साचे सन्ता, मुरीद मुर्शद आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईसा मूसा मात वड्याईआ। ईसा मूसा सच संदेसा सति सतिवादी आप जणाइंदा। तिस साहिब को करो आदेसा, जो लख चुरासी अन्दर डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण करे वेसा, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज फिरे देस परदेसा, लोआँ पुरीआँ चरणां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलमा कलाम आप अख्वाइंदा। कलमा कलाम कायनात, कातब आपणा भेव जणाईआ। दो जहानां वेखे मार झात, झाकी इक्को वार पाईआ। देवणहार सर्ब नज़ात, फ़तवा सब ते सादर दए कराईआ। सब नूं देवणहार वफ़ात, फ़ातया पढ़े सर्ब लोकाईआ। वेखणहारा जगत बाग़ात, बाग़बान बेपरवाहीआ। प्यावणहारा आब हयात, हयाती सब दी आपणे हथ्थ वखाईआ। पीर पैगम्बर आपणे रखे डूँघे ख़ात, हुक्मे हुक्म भुआईआ। रसूललिला माकूल सुणाई गाथ, महिबूब करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं करे लाजवाब, अल्फ़ ये कम्म किसे ना आईआ। अल्फ़ ये ना कोई नुक्ता, हमज़ा रूप ना कोए वटाइंदा। परवरदिगार एको हुक्म देवे पुख़ता, पुश्त पुश्त आप चलाइंदा। किसे नूं रहिण ना देवे सोया सुस्ता, सुस्ती सब दी आपे लाहइंदा। शब्द सुत तेरा भाणा कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। पीर पैगम्बरां पैंडा मुकदा, अग्गे आपणी धार चलाइंदा। जा के फेर मुहम्मद पुछदा, सुत्ती कला जगाइंदा। दिन दीवीं सब नूं लुट्टदा, लुट्टणहारा नज़र ना आइंदा। ऐधर लावे ऐधर पुटदा, सब दी जड़् उखड़ाइंदा। पंज तत्त काया अन्दर धस्सदा, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। पीर पैगम्बरां कोलों पुछदा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जे कोई नेत्र वेखे सब दे कोलों लुकदा, लख चुरासी अन्ध कराइंदा। आपणी धारों आपे उठदा, मात पिता ना कोए बणाइंदा। लेखा जाणे सच सुच्च दा, कूड़ कुड़यारा आप प्रगटाइंदा। आपणे विहार अन्दर जुटदा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा राह चलाइंदा। शब्द सुत तेरा राह बरीक, हरि मार्ग इक लगाईआ। तेरा पन्ध रखे नज़दीक, दूर दुराडा नेड़े आईआ। तेरा लेखा लाशरीक, लहिणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह मुहब्बती नूरा, ज़हूर इक जणाईआ। बेऐब खुदाई सूरबीरा, शहिनशाह रूप प्रगटाईआ। मुहम्मद सिर बन्ने चीरा, चीर चीर नाल रखाईआ। हथ्थीं मैहन्दी गुट्ट कलीरा, साचा सगन मनाईआ। मौली मैहन्दी दए धीरा, मैहन्दी वत रंग वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे जुग चार यार करे कुड़माईआ। चार यार कुड़म कुड़मेटा, घर घर मंगल गाया। ना कोई प्यो ना कोई बेटा, अद्धविचकार सर्ब रखाया। चौदां तबक खेडां खेडा, चौदां तबक प्रभ निक्कयों निक्की वंड

वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया चोले शब्दी तेरीआं करदा रिहा झेडां, लोकमात राह चलाया। मुहम्मद दित्ता इक कलाम, कलमा नबी पढ़ाईआ। नज़र ना आए हक़ अमाम, भेव ना कोए जणाईआ। ज़बराईल दए पैग़ाम, करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेकाईल असराईल असराफ़ील हुक्मे विच भुआईआ। हुक्मे अन्दर खेल अवल्ला, आलमीन कराइंदा। प्रगट हो नूरी अल्ला, नूरी झलक वखाइंदा। निरगुण फड़ाए सरगुण पल्ला, सरगुण निरगुण पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इस्म आज़म एका एक वखाइंदा। इस्म आज़म आलमीन, उल्मा करे पढ़ाईआ। चौदां लोकां कर तक्सीम, आपणी शान अज़ीम ना किसे समझाईआ। ना कोई जाणे डण्डा मीम, नुक्ता नून ना कोए हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अल्फ़ ये दित्ता समझाईआ। अल्फ़ ये जगत जग नाता, अक्खर अक्खर पढ़ाईआ। वेखणहारा हरि तमाशा, तमाशबीन फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया भरे कासा, इक्को जाम प्याईआ। कलिजुग दे सच भरवासा, सगला संग निभाईआ। चौदां सदीआं भोग बिलासा, क्रिया कूड़ी कर कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा रूप वटाईआ। शब्दी सुत तेरा चोला, चोली नाल बदलाइंदा। पंज तत्त रखे आपणा उहला, हड्ड मास नाड़ी पर्दा पाइंदा। अन्तर सुणाए साचा ढोला, मंत्र इक्को इक पढ़ाइंदा। पीर पैगम्बर बण विचोला, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दुआर इक्को खोला, सच सिँघासण बहि बहि वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल हरि जू मौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, तेरा माण वधाइंदा। शब्द सुत रखणा याद, हरि हरि आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर सुणे तेरी फ़रयाद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ऐधरों कढु ऐधर देवे दाद, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाउँ रखाईआ। तेरा नाम सुणाए सन्त साध, भगत भगवन्त करे पढ़ाईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ। साचा खेल अन्तिम धार, हरि करता आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, पंज तत्त काया चोला जगत हंढाइंदा। सरगुण नानक नाम रख संसार, सृष्ट सबाई आप समझाइंदा। अन्तर अन्तर इक सतार, सति सतिवादी आप वजाइंदा। नाद अनादी बोल जैकार, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाइंदा। धुर दी वादी धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वटाइंदा। नानक निरगुण सचखण्ड, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। नानक सरगुण लोकमात वंड, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण नानक गाए सोहँ छन्द, प्रभ चरण मिली सरनाईआ। सरगुण नानक काया अन्दर बंद, नज़र किसे

ना आईआ। नानक निरगुण मिल्या मेल सूरे सरबँग, शहिनशाह आपणी गोद बहाईआ। सरगुण नानक बत्ती दन्द पाए डण्ड, जीव जंत रिहा उठाईआ। दोहां विच्चों श्री भगवन, आपणा राह चलाईआ । नानक जोत साचा चन्न, दो जहान करे रुशनाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्ब ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी इक सलोक, सतिनाम करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल इक्को ओट, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नानक सरगुण विच समाईआ। निरगुण नानक निरवैर, अजूनी रहित अख्वाइंदा। सरगुण नानक सृष्ट सबाई दा झल्ले कहर, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। ना कोई जाणे ऐर ग़ैर, घर घर इक्को रंग वखाइंदा। इक्को राग इक्को तर्ज इक्को बैहर, सोहला ढोला इक सुणाइंदा। छत्ती राग बणाए मुशायर, मुशायरा लोकमात लगाइंदा। सचखण्ड दुआरे कोई ना दूजी दिसे लहर, राग नाद ना कोए सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे करे आपणी मेहर, मेहर नज़र इक टिकाइंदा। सरगुण निरगुण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। निरगुण नानक सचखण्ड दुआर, सच सच मिली वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, सच प्रीती दए जणाईआ। नानक ढह प्या दुआर, दोए जोड़ मंगे सरनाईआ। कर किरपा दे अमृत ठंडा ठार, जिस पीत्यां तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत इक्को इक रखाईआ। नानक लै अमृत रस, पुरख अकाल आप जणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला गाइंदा। तेरी झोली मेरा हथ्थ, अतोट अतुट वरताइंदा। किरपा करे पुरख समरथ, अमृत जाम इक प्याइंदा। अन्तर अन्तर आपे वस, आपणा रंग वखाइंदा। लोकमात जाणा नस्स, साची सेवा इक लगाइंदा। सृष्ट सबाई नौ दुआरे गई ढठ्ठ, आसा तृष्ना ना कोए मिटाइंदा। मन्दिर शिवदुआले होया इकठ्ठ, काया मन्दिर ना कोए फोल फुलाइंदा। फिर फिर थक्के तीर्थ तट, घर सरोवर नज़र किसे ना आइंदा। माला मणका रहे रट, मन का मणका ना कोए भुआइंदा। पढ़ पढ़ विद्या गए थक्क, गुरमति ना कोए समझाइंदा । फिर फिर थक्के चौदां हट्ट, सतिगुर हट्ट ना कोए वखाइंदा। कूड़ी क्रिया खेल बाज़ीगर नट, साचे मार्ग ना कोए लगाइंदा। मंत्र नाम जा के दस्स, सति सति आप जणाइंदा। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चढ़ा साचे रथ, रथ रथवाही आप समझाइंदा। जो तेरी चरणी जाए ढठ्ठ, तिस पुरख अकाल मिलाइंदा। नौ दुआरे प्या रट, रट्टा जगत ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक देवे एका वर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। लोकमात नौ दर, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। आसा तृष्ना हउमे हंगता गई वड़, माया ममता करे कुड़माईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा लड़, आपणा बल धराईआ। साचे मन्दिर कोए ना

सके चढ़, सुखमन टेडी पार ना कोए कराईआ। ईड़ा पिंगल बैठे खड़, अग्गे लै अंगड़ाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे पार कर, डूँग्घी भँवर ना पार कराईआ। अमृत भरया घर घर, झिरना निझर ना कोए झिराईआ। साचा नाद ना सुणे कोई कन्न, शब्द अनहद नादी नाद सुणाईआ। हरि जू कन्त ना लए कोई वर, पारब्रह्म ब्रह्म मेला ना कोए कराईआ। दस्म दुआरी कोई ना सके वड़, बजर कपाटी कुंडा लाहीआ। आपणी किरपा करे हरि, तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। तूं आ के मिल्या मेरे दर, प्रभ सच्चा दए समझाईआ। दसवां जामा तेरा रूप धर, गोबिन्द दए वड्याईआ। मैं लोकमात जा के लवां फड़, आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाईआ। दसवां गुर दसवीं धार, दहि दिशा आप जणाइंदा। नौ दुआरे कर कर पार, घर साचे मेल मिलाइंदा। गुजरी सुत सुत दुलार, हरि साचा माण दिवाइंदा। सुहाए रुत्त इक गुलज़ार, पत्त डाली आप महकाइंदा। पूत सपूता कर तैयार, सीस जगदीश आप सुहाइंदा। कल्ग़ी तोड़ा कर शृंगार, जोती जोड़ा शब्द मिलाइंदा। थोड़ा थोड़ा लेखा सृष्ट सबाई दए वखाल, बाकी भरम भुलेखा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द आपणे रंग रंगाइंदा। सुत दुलारे तेरा नाउँ गोबिन्द, कलिजुग अन्त शब्द वड्याईआ। ना कोई सोग हरख रहे ना चिन्द, चिन्ता रूप कोए ना वटाईआ। श्री भगवान बणाए आपणी बिंद, लोकमात माता दए वड्याईआ। किरपा करे गहर गम्भीर गुणी गहिंद, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल नाथ, अनाथां आप जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां रखे साथ, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। इक सुणाए अगम्मी गाथ, पुरख अकाल मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दया कमाइंदा। दर घर साचा खोल्ह दरवाजा, भेव अभेद खुल्हाईआ। श्री भगवान ग़रीब निवाज़ा, निवाज़े थाउँ थाईंआ। शाहो भूप वड राजन राजा, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। आदि आदि जिस साजण साजा, जुग जुग वेखे बेपरवाहीआ। गोबिन्द नाल रचया काजा, आपणा बन्धन पाईआ। चार जुग दा बदल समाजा, सच समग्री इक वखाईआ। जिउँ साहिब सिर सच्चा ताजा, तेवें गुरसिखां सिर साबत सूरत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मूर्त अकाल अन्त वखाईआ। नानक पढ़ाया सति नाम, मंत्र इक जणाया। करता पुरख हो मेहरवान, मेहर नज़र इक टिकाया। निरभउ होया आप प्रधान, भय सब नूं रिहा जणाया। अकाल मूर्त अजूनी रहित नौजवान, ना मरे ना जाया। गोबिन्द मिल्या आण, हरि जू आपणा फेरा पाया। नानक अमृत सच प्याला दित्ता आण, अंमिउँ रस इक्को इक वखाया। योद्धा सूर बली बलवान, बल आपणा आप समझाया। नाम खण्डा

तेज किरपान, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ फड़ाया। ब्रह्मण्डां वेखे मार ध्यान, जेरज अंडां फोल फोलाया। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सच संदेसा आख सुणाया। पंजां देवणहारा माण, अमृत आत्म जाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्याला दीन दयाला गोबिन्द हथ्थ फड़ाया। गोबिन्द हथ्थ अमृत धार, अमर रिहा कराईआ। पंजां कर इक प्यार, पंचम वंड वंडाईआ। पंजां सीस बन्नृ दस्तार, पंचम सगन मनाईआ। पंचम खिच तेज़ कटार, नाम शहीदी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि गोबिन्द देवे माण वड्याईआ। हरि गोबिन्द माण खेल निरँकार, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, करनी करता आप कराइंदा। साचा मन्दिर कर तैयार, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। पूत सपूता भेव न्यार, भेद ना कोए जणाइंदा। लेखा जाणे सरसा किनार, हिरस सब दी आप मिटाइंदा। सत्तरां कराए सच वणजार, सति सतिवादी लेख मुकाइंदा। छोटे बाले नीहां हेठां दित्ते स्वाल, कलिजुग तेरी जड़ उखड़ाइंदा। वड्डे बाले कर हलाल, मुग़ल हलाली मेट मिटाइंदा। सूलां सेजा सुत्ता नौजवान, आपणा शुकर मनाइंदा। देवे संदेसा सच फ़रमाण, श्री भगवान जणाइंदा। पुरख अबिनाशी मिले आण, फड़ बाहों गले लगाइंदा। गोबिन्द तेरा अमृत जाम, डुल्ल कदे ना जाइंदा। कलिजुग तेरा पूरा करां काम, घाटा कोए नजर ना आइंदा। मेरा नाउँ श्री भगवान, जुग जुग वेख वखाइंदा। तूं बाला बाल अंञाण, तेरी करनी विच समाइंदा। तैनूं दस्सां सच हवाल, आपणा पर्दा लाहइंदा। कलिजुग अन्तिम आवां विच जहान, नानक निरगुण राह तकाइंदा। करां खेल बेपहचान, बेपहचान रूप रंग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत इक प्याइंदा। गोबिन्द अमृत पीता घुट्ट, घुट्ट के जफ्फी पाईआ। पुरख अकाल ना जावे छुट, बन्धन इक रखाईआ। चारे सुत चार जुग दा बूटा देण पुट्ट, जड़ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जिउँ भावे तिस वेले पैणा उठ, तेरी वड वड्याईआ। तूं पिता मैं तेरा पुत्त, चलां सदा रज़ाईआ। मेरे वेख ख़ाली हथ्थ कोल नहीं कुछ, तेरे उत्तों सब कुछ वार तेरी झोली पाईआ। मेरे सिखां कोलों पुच्छ, जिन्हा दिती माण वड्याईआ। जिस पीता मेरा अमृत घुट्ट, सो सूरबीर अख्वाईआ। आवण जावण लख चुरासी गई छुट्ट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गोबिन्द आस तकाईआ। गोबिन्द मंगे साची मंग, सूलां सत्थर सोभा पाइंदा। आ वेख सुत्ता गुजरी चन्द, नंगी पैरीं तेरी सेव कमाइंदा। बाले नीहां हेठ रख के पाई ठंड, फिर तेरा शुकर मनाइंदा। अजीत जुझार ना दिती कंड, तेरे भाणे विच रखाइंदा। हुण मैं खुश हो के गावां तेरा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। मेरी टुट्टी लैणी गंढ, गंढु तेरे नाल पुआइंदा। मेरा पंज तत्त चोला जाणा हंढ, थिर

कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। पुरख अबिनाशी प्या रो, गोबिन्द दर्द दर्द वंडाईआ। मैं तेरे जोगा गया हो, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं चार जुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी लई जोह, तेरे वरगा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरे नाल ग्यों छोह, मैं तेरे विच जावां समाईआ। आपणा नाँ रख के सो, हँ ब्रह्म करां कुड़माईआ। धुर दा लै के आवां ढोआ ढो, तेरे सिखां झोली पाईआ। मेरा भेव ना जाणे को, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। गोबिन्द रखणा याद, मैं प्रगट होवां छब्बी पोह, वदी सुदी कोए रहिण ना पाईआ। सब दे कोलों पिछली कीती लवां खोह, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। राह तक्कण पुरीआँ लोअ, ब्रह्मण्ड खण्ड नीर नीर वहाईआ। तेरयां भगतां तेरयां गुरसिखां दुरमति मैल देवां धो, अन्दर वड़ वड़ सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। गोबिन्द सतिगुर प्या हस्स, हस्स हस्स ख़ुशी मनाइंदा। पुरख अकाल मैं वेखां तेरा हथ्थ, किस बिध सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी धोखा दे के जाएं नस्स, तूं हथ्थ किसे ना आइंदा। बिन भगतां किसे ना पाई तैनूं नथ्थ, लख चुरासी डोरी तूं बंधाइंदा। मैं सूरबीर रखण वाला हठ, आपणा बल धराइंदा। मैं तेरे अग्गे खलोणा फेर डट, पिछला कीता याद कराइंदा। मेरे गुरमुखां गुरसिखां कर आपणे वस, जोती
४५५ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। गुर गोबिन्द सिँघ तेरा अमृत ४५५
१३ जाम, प्रभ इक्को इक जणाईआ। चार जुग जिस दी पढ़दे रहे कलाम, कलमा नबी सिफ्त सालाहीआ। शास्त्र सिमरत १३
वेद पुराण जिस दा दस्सदे रहे निशान, सो निशाना दए झुलाईआ। गुर अवतार जिस दे कोलों मंगदे रहे दान, सो दाता फेरा पाईआ। कलि कल्की प्रगट होवे आण, निहकलंक रूप वटाईआ। सीस रख ताज भगवान, भगवन आपणा हुक्म मनाईआ। गोबिन्द रखे तेरी पहचान, बेपहचान भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरा रूप इक निशान, निशाना सब नूं दए वखाईआ। तेरा नाम इक प्रधान, शब्द प्रधानगी इक कमाईआ। जोती नूर श्री भगवान, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जन भगतां लेखा चुकाए आण, पकड़ उठाए थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत तेरा दए वखाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। निहकलंक कल जामा पाउणा, जिस दी ज़िमनी ना कोए लिखाइंदा। पिछला लेखा सर्ब मुकाउणा, अग्गे आपणा मार्ग लाइंदा। गोबिन्द मेला मेल मिलाउणा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। तेरे बच्चे मार फेर जवाउणा, जीवण जुगत इक समझाइंदा। जींवदयां फिर लेखे लाउणा, शब्दी रंग रंगाइंदा। शब्दी रंग इक चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाइंदा। छत्ती जुग दा पन्ध मुकाउणा, नानक लेखा पूर कराइंदा। भगत दुआरा इक बणाउणा,

जिस दुआरे भगवन सोभा पाइंदा। तेरे सुत साचे दर टिकाउणा, उपर आपणा खेल कराइंदा। गोबिन्द तेरी रत मस्तक धार आप चवाउणा, त्रैगुण माया डेरा ढाइंदा। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, कोझयां कमल्यां आपणा घर वखाइंदा। रातीं सुत्तयां दरस दखाउणा, दर दर आप जगाइंदा। सरसे विछड़े मेल मिलाउणा, सत्तरां जोड़ जुड़ाइंदा। भर प्याला अमृत जाम अमृत आत्म आप पिआउणा, डुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक वखाइंदा। सच दुआर हरि निरँकारा, एका एक बणाईआ। नव नौ चार पार किनारा, लेखा दए मुकाईआ। प्रगट हो नर अवतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द नाल सुत दुलारा, आपणे घर बहाईआ। भगतां करे इक प्यारा, प्रेम प्रेम नाल वंडाईआ। अमृत देवे सच भण्डारा, आपणे हथ्थ उठाईआ। दर सद्दे तेई अवतारा, भगत अठारां लागण पाईआ। कबीर कूके करे पुकारा, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। नामदेव रोवे ज़ारो ज़ारा, वेखो जिन मेरी छप्परी छाईआ। भगतां बणाया छत्ती छत्ती छत्ती इक दुआरा, नौ दुआर उत्ते दए लिखाईआ। दसवें बैठ आप गिरधारा, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत प्याला हथ्थ उठाईआ। अमृत प्याला हरि भगवान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आप प्याए गुण निधान, गुणवन्ता दया कमाइंदा। पीर पैगम्बर मंगण दान, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा।
४५६
१३
विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, हरि जू की की खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां मिल्या आण, भगतां भाग लगाइंदा। सुत दुलारा नाल बलवान, शब्दी गुर रखाइंदा। गोबिन्द गुर गुर कर पहचान, हरिजन आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म देवे अन्त, अन्त अन्त जणाईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, कलि कल्की फेरा पाईआ। सम्बल नगर बन्ना नात, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। भेव ना आए जीव जंत, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। नाता तुटा ना हउमे हंगत, साची संगत ना कोए वखाईआ। काया चोली ना चढ़े रंगत, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। सच्चे घर कोई ना बणे मंगत, शिवदुआले मन्दिर मठ्ठ, मसीतां गिरजे उच्ची कूकण देण दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दे पारब्रह्म प्रभ कीते ख़ाली हथ्थ, सौदा हट्ट ना कोए विकाईआ। गुरदुआरे धीआं भैणां रहे तक्क, नानक गोबिन्द सिख्या गए भुलाईआ। गुर अर्जण लेख लिखाया गुरू ग्रन्थ सच, सच सच वज्जे वधाईआ। कलिजुग दर दर घर घर रिहा नच्च, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। साध सन्त त्रैगुण अग्नी गए मच्च, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। चारों कुण्ट रहे नठ्ठ, वासना कूकर वांग हल्काईआ। जिन्ना चिर मिले ना पुरख समरथ, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। नानक निरगुण मार्ग गया दस्स, गोबिन्द पुरख अकाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सच दुआरे कर इकठ्ठ, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां हरि जू दए माण, अभिमाण सर्ब मिटाइंदा। जुग जन्म दे विछड़े इकठ्ठे कीते आण, गुर गोबिन्द सेव कमाइंदा। आओ सिखो करो पहिचाण, पिछली रीती आप सुणाइंदा। चार वरन बठाए इक मकान, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। आत्म परमात्म ढोला सारे गाण, गुर शब्द विचोला मेल मिलाइंदा। पर्दा उहला चुक्के विच जहान, ज़ाहर ज़हूर रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन इक्को अमृत इक सरोवर सर इक्को इक वखाइंदा। एका सर सच्चा तालाब, किनारा नज़र कोए ना आईआ। जिस विच रख्या हयात आब, अव्वल आपणा नाम खुदाईआ। ना कोई रहिण देवे पुन्न ना कोए पाप, इक्को इक रंग वखाईआ। सब नूं गोदी चुक्के बण के बाप, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। जिस ने जपया सोहँ जाप, तिस आपणे संग रखाईआ। सतिजुग दी साची गाथ, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। सीस निवाए त्रिलोकी नाथ, रामा दसरथ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अमृत आप प्याईआ। गुरमुख अमृत पीओ रज्ज, गुर शब्दी आप प्याइंदा। हरिसंगत विच बहिणा सज, सज्जण राह वखाइंदा। इक जैकारा लाउणा गज्ज, जो गज दे फंद कटाइंदा। दो जहान नगारा रिहा वज्ज, श्री भगवान आप सुणाइंदा। नाता तुटा मक्का काअबा हज्ज, हुजरा घर घर आप वखाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले टुट्टे मठ्ठ, मठ्ठ इक्को इक प्रगटाइंदा। जिस काया अन्दर बैठा पुरख समरथ, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। खाणी बाणी वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत हरि का मार्ग रहे दस्स, अक्खर अक्खर नाल प्रगटाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, हट्ट आपणा आप खुलाइंदा। बाहरों वेखो दिसे जट्ट, अन्दर श्री भगवान डेरा लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे चरणी गए ढठ्ठ, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। प्रभ तेरा अमृत पीए गट गट, बिन पीत्यां सबर किसे ना आइंदा। पहली माघ गुर गोबिन्द गुरसिख रत्ते आपणी रत्त, रत्ती रत्त नाल रंगाइंदा। महा सिँघ दिती मति, मनमति सर्ब गवाइंदा। गुर गोबिन्द चरणी ढठ्ठ, आपणी आस ना कोए रखाइंदा। आपणे सिखां दी पत्त रख, तेरे अग्गे वास्ता पाइंदा। मेरे पिच्छे पिच्छे चढ़ौणे रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। तूं वसें घट घट, घट घट तेरा रूप नज़री आइंदा। गोबिन्द कहे मैं मेला करां अन्त इकठ्ठ, श्री भगवान नाल रखाइंदा। निहकलंक होए प्रगट, गुर चेला गंढु पुआइंदा। चार वरन दा मेटे फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाइंदा। प्रेम नाल रंगाए रत्त, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाइंदा। गुरसिखो मुक्ती तुहाढ्ढुयां पैरां हेठां देवे झस्स, सचखण्ड दुआरा इक वखाइंदा। अग्गों सतिगुर नानक मिले हस्स हस्स, फड़ बाहों गले लगाइंदा। कबीर जुलाहा हथ्थ मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, भगत भगतां संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, गुर सतिगुर खेल वखाइंदा। गुर सतिगुर खेल करे अगम्म, कलिजुग अन्तिम कार कमाईआ। सब नूं देवण आया डंन, डंका आपणा नाम वजाईआ। दो जहान सुणन ला के कन्न, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। हरि जू भगतां बेड़ा रिहा बन्नृ, बाकी सब दे विस्तरे गोल वखाईआ। किसे रहिण ना देवे विच छप्पर छन्न, उच्चे टिल्ले मन्दिर देवे ढाहीआ। लख चुरासी देवे डंन, डौरु डंका इक वजाईआ। कलिजुग जीव नेत्र अन्नृ, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां चोरी चोरी ला लई संनृ, नाम संधेवा हथ्थ उठाईआ। अन्दर वड़ के सतिगुर पूरा ल्या बन्नृ, प्रेम डोरी इक्को पाईआ। ऐधर वेखण नज़री आए गुजरी चन्न, ओधर पुरख अकाल नज़री आईआ। गुरसिख सच्चा जाए मन्न, जिस जन आपणा पर्दा लाहीआ। रसना कहे धन्न धन्न धन्न, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी वड्याईआ। सर्ब जीआं दा जननी जन, पुरख अकाल पिता माईआ। किसे नज़र ना आवे पंज तत्त तन, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। सो पुरख निरँजण एका आया, अक्ल कला अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण फेरा पाया, होका हरि हरि नाम सुणाइंदा। एकँकारा गेड़ा रिहा गिढ़ाया, दो जहानां आप भुआइंदा। आदि निरँजण करे रुशनाया, जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता उठ उठ वेखे थाउँ थांया, सचखण्ड कुण्डा आपे लाहइंदा। श्री भगवान सति निशान रिहा झुलाया, दरगाह साची आप हिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए सालाहया, धुर फ़रमाणा हुक्म मनाइंदा। निहकलंक प्रभ आपे आया, दूजा होर ना कोए वखाइंदा। चार वेद जिस दा रहे जस गाया, सो आपणी धार चलाइंदा। वेद व्यासा जिस दा ध्यान लगाया, ईसा मूसा नैण उठाइंदा। मुहम्मद सजदा जिस सीस झुकाया, सो परवरदिगार अमाम आपणा रूप वखाइंदा। नानक निरगुण महाबली जो मंग मंगाया, सो आपणी वार फेरा पाइंदा। गुर गोबिन्द भविख्त वाक् पूरा दए कराया, पुरख अकाल सेव कमाइंदा। निरगुण हो के त्रैगुण मेटे माया, गुरमुख साया परे कराइंदा। भगत भगवन्त आप जणाया, जागरत जोत इक वखाइंदा। अक्खर वक्खर आप पढ़ाया, निअक्खर रंग रंगाइंदा। कंकर कंकर मृदंग वजाया, घट घट डेरा लाइंदा। पुरी अनन्द जिस वसाया, सो अन्तिम सम्बल फेरा पाइंदा। राज राजाना शाह सुल्तानां ख़ाक दए मिलाया, बीस बीसा राह तकाइंदा। ख़ाली ख़ीसा सब दा दए वखाया, घर घर मंगण भिच्छया कोए ना अग्गों पाइंदा। गुरमुख साचे लए तराया, तारन तरन तरनी इक्को इक तराइंदा। कर किरपा जन भगतां हरन फरन खुलृाया, निज नेत्र पर्दा लाहइंदा। अनहद नादी नाद सुणाया, छत्ती रागां माण गवाइंदा। निर्मल जोती डगमगाया, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाइंदा। सुरती सोई लए उठाया, शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। साची चोटी लए बहाया, वासना खोटी

बाहर रखाइंदा। वरन गोती ना कोए बणाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को ब्रह्म समझाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखण आया, वेखो सारे नैण उग्घाड़े, नेत्र आपणा भेव चुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दुआरे जिस दे कढ्ढुण हाढ़े, हौका सब नूं इक वखाइंदा। लख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़े, खा के शुकर ना फेर मनाइंदा। गुरमुख बणाए साचे लाड़े, मस्तक टिक्का तिलक लगाइंदा। प्रेम जोती व्याहे इक्को नारे, नर नरायण जांञी बण के सच्चा आइंदा। कर के जाए आपणी कारे, पिछली कार ना कोए कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कटदे गए वगारे, वरग सब नूं अन्तिम लाइंदा। पंज तत्त जिस चोले श्रृंगारे, तत्तव तत्त आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह बेऐब परवरदिगारे, पर्दा आपणा आप चुकाइंदा। आओ गुरसिखो वेखो नज़ारे, बेनज़ीर आपणी मेहर नज़र इक टिकाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर कोटन कोटि चलण नाल इशारे, गुर पीर अवतार निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। सारे कहिण कलिजुग अन्तिम असीं हारे, अग्गे बल ना कोए रखाइंदा। कागद कलम शाही नाल लिख लिख लोकमात पा के आए पुआड़े, दीन मज़्हब ज़ात पात वंड वंडाइंदा। कोई ना लग्गा किसे किनारे, नईया भँवर सर्ब वखाइंदा। गोबिन्द सूरा इक ललकारे, ऊँची कूक कूक अल्हाइंदा। आओ चल प्रभ सच्चे दे सच दुआरे, जिस दुआरिउँ पिच्छे ना कोए हटाइंदा। भगतां करे भगवान प्यारे, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आइंदा। गुरसिखां अग्गे सतिगुर कढ्ढे हाढ़े, गुरसिखो तुहाढ्ढे बिनां मेरी पत्त ना कोए रखाइंदा। तुहाढ्ढे पिच्छे बाले नीहां हेठ स्वाले, उत्ते तुहाढ्ढा महल्ल वसाइंदा। तुहाढ्ढे अन्दर काया मन्दिर गुर गोबिन्द चले नाल नाले, नानक विछड़ कदे ना जाइंदा। पुरख अकाल दे सच्चे लाले, लाल आपणे रंग रंगाइंदा। नाते तुट्टे काल महाकाले, गुरसिख काल कदे ना खाइंदा। जिन्हां सिर ते बद्धे चक्र दुमाले, तिन्हां भेव ना कोए समझाइंदा। सारे फिरन आले दुआले, अग्गे हो दरस कोए ना पाइंदा। साहिब सतिगुर शाह पातशाह श्री भगवान सचखण्ड बैठा सच धर्मसाले, सच दवारा सोभा पाइंदा। लेखा चुकाए शाह कंगाले, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। गुरसिख सज्जण आपे भाले, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाले, जंजाल आपणे नाम पाइंदा। जिस ढाब कन्ढ्ढे मुख पूंझे नाल रुमाले, सो सतिगुर रोम रोम विच समाइंदा। जिन्हां सतिगुर पिच्छे घालण घाले, घाली घाल लेखे लाइंदा। गुरसिख सच्चे सतिगुर आपणी गोदी विच स्वाले, बाले नींहां हेठ रखाइंदा। करया खेल इक कमाले, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जिस छड्डे पलँघ रंगील दुशाले, सूलां सत्थर सेज आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शब्द गुर गुर गोबिन्द मिले आण, गोबिन्द गुरसिखां संग निभाइंदा।

हरि की माधी गुरमुख मजन, सतिगुर अशनान कराइंदा। पुरख अकाल मिल्या सज्जण, निरवैर राह वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां परदे कज्जण, नाम दुशाला उपर पाइंदा। घर घर अन्दर शब्द दमामे वज्जण, अनहद रागी राग सुणाइंदा। गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख हरिभगत हरिभगत हरिजन हरिजन एथे ओथे दो जहान गज्जण, ढोला सोहला बंद ना कोए कराइंदा। लख चुरासी भाण्डे भज्जण, काया माटी कच्च कम्म किसे ना आइंदा। मनमुख जीव जगत दुआरे नच्चण, गुरमुख गुर सतिगुर वेख खुशी मनाइंदा। सन्त सुहेले कूड़ी क्रिया कोलों बचण, जो गुर का बचन कमाइंदा। अग्नी अग्ग कदे ना मच्चण, सीतल धार इक वहाइंदा। सतिगुर प्यार अन्दर रचण, रच रच आपणी खुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, सच अशनान आप कराइंदा। होया अशनान सतिगुर धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाया। चतुर सुघड़ बणया मूर्ख मूढ़, अज्ञान अन्धेर चुकाया। शब्द अगम्मी सुणाए तूर, तुरीआ बैठी मुख भवाया। सार शब्द जो होया रिहा मफ़रूर, आपणा पर्दा दए उठाया। दर आई संगत माफ़ करे कसूर, पिछला लेखा दए चुकाया। अग्गे नज़र आए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा मेल मिलाया। वेले अन्त मिले ज़रूर, गुरसिख जम नेड़ कदे ना आया। नेत्र वेखो किवें दो जहानां मचाए फ़तूर, फ़तवा सादर दए कराया। नौ खण्ड पृथ्मी होए मज़बूर, मुजरम सब नूं लए बणाया। सर्ब गुणां आपे भरपूर, भरपूर रिहा सब थाया। नव नौ तोड़े माण ग़रूर, ग़ुरबत सब दी दए गंवाया। कलिजुग मेटे क्रिया कूड़ी कूड़, कूड़ कुड़यारा दए खपाया। जन भगतां आवण जावण पतित पावण लख चुरासी कटे जूड़, मात गर्भ उलटा रुख दस दस मास ना अग्न तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां दुआरे बणया आप मज़दूर, मुस्तबा बण बण सेव कमाया। जन भगतां अन्त हरि जू बद्धा, डोरी प्रेम उठाईआ। घर देण आया सी सद्दा, फसिआ बेपरवाहीआ। दो जहानां कर के पार हद्दां, गुरमुखां हद्द इक वंडाईआ। प्रेम भगती अन्दर मधा, मधुर धुन रिहा सुणाईआ। जिस दुआरे हरि आपणा निशाना गड्डा, सो दुआरा सोभा पाईआ। बाकी सब दे ख़ाली कीते हड्डा, साध सन्त श्री भगवन्त मिलण कोए ना जाईआ। रूप बणाए मच्छां डड्डां, सागराँ विच भुआईआ। जून भुआए रखाए डूँग्घी खड्डां, सर्पणी रूप वखाईआ। जिन्हां सिर ते रखीआं झण्डां, सूकर देण दुहाईआ। बिन श्री भगवान जीव जंत सर्ब रंडा, जगत रंडेपा ना कोए कटाईआ। घर घर अन्दर वड़या घमण्डा, निवण सो अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। सतिगुर दुआरा सदा ठंडा, गुरमुखां सीतल धार वहाईआ। नैण शरमाए चौधवीं चन्दा, नव चन्द नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, बरीख़ाना इक वखाईआ। बरीख़ाना गया खुल्ह, खलक खुदा जणाइंदा।

ओथे कोई ना लग्गे मुल्ल, बिन कीमतों करता पार कराइंदा। जो चरण प्रीती जाए घुल, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवान दा सच्चा फुल्ल, जिस कोलों ब्रह्मे दा कँवल मुख शरमाइंदा। हरिजन बूटा कदे ना जाए हुल्ल, एथे ओथे आप महकाइंदा। पवण सुगंधी जाए झुल, जिस जन आपणी झलक वखाइंदा। गुरसिख कदी ना जाए रुल, जिस सतिगुर गोद बहाइंदा। सन्त सुहेला सद वसे कोल, आप आपणा संग रखाइंदा। नित नवित्त रहे अडोल, डुल कदे ना जाइंदा। जिस जन प्याए आपणे अमृत नाम पौहल, पलक पलक दरस वखाइंदा। हरि का भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ मुसायक हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस गोबिन्द नाल करया कौल, कीता कौल पूर कराइंदा। प्रगट होया उपर धौल, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई प्रभ नूं करे मख़ौल, मुफ्त सब दा बेड़ा रुढ़ाइंदा। किसे कोल नाम रहिण ना देवे रती चौल, ख़ाली भाण्डे सर्ब कराइंदा। सदी बीसवीं साधां सन्तां पए हौल, हौली हौली सब दे परदे लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी करे घोल, कुशती इक्को वार वखाइंदा। वेखण आए हरि जू कुशती, कुशा लखण करौच फेरा पाईआ। लेखा जाणे पुश्त दर पुश्ती, पिछली कीती आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे वड़न ना देवे विच बहिस्ती, दोज़ख़ों सब नूं दए कढ्ढाईआ। किसे दा रहिण ना देवे इष्टी, ईशर आपणा राह जणाईआ। बाहों
४६१ पकड़ उठाए राम नाल वशिष्टी, कृष्न उँगलां उत्ते नचाईआ। बिन पुरख अकाल बिन सतिगुर पूरे खुल्हे ना किसे दी दृष्टी, ४६१
१३ जिन्ना चिर आपणी दृष्ट ना किसे उत्ते पाईआ। जन भगतां होए निकटी, निकटवरती बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई होए बिन टिकटी, कलिजुग अन्तिम साचे बेड़े ना कोए चढ़ाईआ। नेत्र रोवण लैण हिटकी, हौके भरे ख़लक ख़ुदाईआ। पीर पैगम्बर अग्गे हो के खोल्हे ना कोए खिड़की, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। सारे ला ला थक्के बिरती, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी लेखे लाए जट्ट किरती, अनपढ़ियां ज्ञान दिवाईआ। चरण प्रीती बख़्शी हिरसी, हिरस होर ना कोए वधाईआ। लेखा जाणे अर्शी फ़र्शी, फ़लक आपणा रंग रंगाईआ। प्रभ साचे दी साची बरसी, थित वार घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। निरगुण रूप आया अर्शी, अर्शी प्रीतम सच्चा माहीआ। जिस विष्नूं हथ्थ फड़ाई कड़छी, अन्तिम ख़ाली हथ्थ कराईआ। ब्रह्मे दी ब्रह्म आत्मा रही धड़की, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोत अकालण इक्को कड़की, कड़का आपणा दए सुणाईआ। हो मज़बूर आपे बड़्हकी, भबक इक्को इक लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे मज़्हबां दे भज्जे जाण उपर सड़कीं, नठ्ठण वाहो दाहीआ। अन्तर सब नूं चढ़े घरकी, साह लैण कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को पलक फ़रकी, फ़िरका सब दा दए बदलाईआ। दो जहानां नईया जरकी, सईया नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान चढ़या वड्डा कटकी, अग्गे

सके ना कोए अटकाईआ। आपणी दिशा सब ने तरकी, तुरत पल्ला ल्या छुडाईआ। श्री भगवान आपणी नज़र परती, प्रतिनिध बण के आया सच्चा माहीआ। वेखो सचखण्ड बणाया उत्ते धरती, भगत दुआरा नाउँ रखाईआ। एहदे विच झाड़ू देवे आदि शक्ती, शिकवा कोए रहिण ना पाईआ। पीर पैगम्बरां उत्ते आई सख्ती, सकता हथ्थ उठाईआ। सारे कहिण होए कमबख़ती, रो रो कमली अल्ला राणी मारे धाहीआ। बिन भगतां किसे दी कम्म ना आई भगती, जिन्हां भुलया बेपरवाहीआ। मैं फिरदी रही चौदां तबक मटकी मटकी, आपणा जोबन हुलारे विच चलाईआ। भेव ना जाता खेल अगम्म पुरख समरथ की, जिथ्थे चले ना कोए चतुराईआ। जिन दिती नथ्थ सुहाग दी, सो साहिब फेरा पाईआ। मुख पर्दा चुक्क चुक्क झाकदी, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। पीर पैगम्बरां उठ उठ आखदी, उठो वेखो वेला गया आईआ। मैनूं इक्को गल्ल भाखदी, तुहाढ्ढी करे सफ़ाईआ। उहदे कोल वस्त इक नज़ात दी, सब नूं लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। मलावण आए आप भगवन्त, आपणा फेरा पाईआ। हरिजन नारी मिले हरि जू कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। सेज सुहञ्जणी वखाए सोभावन्त, सति सतिवादी फूलण बरखा लाईआ। जिस रचना रचाई आदि सो वेखण आया अन्त, बेअन्त फेरा पाईआ। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव सुणाया ढोला मंत, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करी पढ़ाईआ। जो घट घट वसया लख चुरासी जीव जंत, खाणी आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां रखे उत्तम ज़ाता, नाम भगती दए सुग़ाता, अमृत जाम प्याए बाटा, पुरख समराथा दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे खेल कमलापाता, कमले रमले कोझे आपणे गले लगाईआ। कोझे कमले लग्गे छाती, शहिनशाह आप लगाइंदा। देवे दरस सुत्यां रातीं, गुरसिखां दुःख ना कोए वखाइंदा। घर घर जा जा पुच्छे वाती, आपणा फेरा पाइंदा। फड़ बाहों चढ़ाए उच्ची घाटी, घाटा सब दा पूर कराइंदा। अग्गे नेड़े आई वाटी, पिछला पन्ध मुकाइंदा। जिस दा गोबिन्द बणया साथी, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। भगतां लहिणा चुक्के बाकी, देवणहार फेरा पाइंदा। गुरसिख तेरा मन ना रहे आकी, मति मतिवाली डेरा ढाइंदा। दरस दिखाए साख्याती, शनाख़त आपणी आप समझाइंदा। जन्म जन्म विच्चों देवे लहर हयाती, कर्म धर्म शरम वरन बरन हया सर्ब मिटाइंदा। अठ्ठे पहर रखे प्रभाती, प्रभू आपणा रंग वखाइंदा। नाता तोड़े मामी फुफ्फी मासी, भैण भय्या चाचा ताया नज़र कोए ना आइंदा। अन्तर आत्म परमात्म सच्चा साकी, भर प्याला जाम प्याइंदा। लेखा चुक्के तन ख़ाकी, पाकी पाक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेला इक इकेला गुरु

४६२
१३

गुर चेला, एका घर बहाइंदा। गुर चेला वसे इक्को घर, एका घर वड्याईआ। जिथ्थे देवे ना कोई डर, भउ भय ना कोए रखाईआ। एका सेजा बहिण चढ़, एका आसण सोभा पाईआ। इक दूजे दा पल्लू लैण फड़, अग्गे होए ना फेर जुदाईआ। गुरसिख गुरू दुआरे जाए मर, गुरू सतिगुरु गुरसिख आपणे विच मिलाईआ। दोहां दा मेला इक्को घर, जिस दुआरे वसे पुरख अकाल बेपरवाहीआ। शब्द गुरु गुरमुखां निरगुण रूप हो के लए फड़, आवे जावे वाहो दाहीआ। जिस जन उपर किरपा दिती कर, तिन्हां आपणे संग रखाईआ। जो जन सोहँ अक्खर रहे पढ़, डुब्बदे पत्थर पार कराईआ। धन्ना कहे मैं वट्टउँ पाया हरि, गुरसिख कहो बिन वट्टउँ नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आ के फड़या लड़, भगतां ओट इक तकाईआ। भगतां रखी ओट अकाल, आपणी कल ना कोए जणाइंदा। मेरे उत्ते हो दयाल, तुध बिन मेरा संग ना कोए निभाइंदा। नौ खण्ड पृथमी होई बेहाल, सत्त दीप सर्ब कुरलाइंदा। सति दिसे ना किसे धर्म दुआर, वेसवा रूप सर्ब वटाइंदा। मन्दिर मस्जिद कूड़ी क्रिया जगत विचार, धीआं भैणां नाच नचाइंदा। पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी मुल्लां शेख़ गए हार, हरि का नाम ना कोए ध्याइंदा। कूड़ कुड़यारा करन शृंगार, सच शृंगार ना कोए हंढाइंदा। नारी छड्डया कन्त भतार, भतार कन्त नारी ना अंग लगाइंदा। दोहां वरया इक विभचार, विभचारी रूप सर्ब वखाइंदा। आपणा आप गए हार, हरि मन्दिर सोभा कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता कलिजुग वेख अन्धेरी राता, आपणा फेरा पाइंदा। काली रैण अन्धेरी अन्ध, भिन्नड़ी आपणा रूप वटाईआ। चारों कुण्ट पैंदी डण्ड, बत्ती दन्द रहे कुरलाईआ। जिध्धर वेखो भेख पखण्ड, सृष्ट सबाई होई हल्काईआ। बिन सतिगुर पूरे गुरमुखां मिले ना इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा ढोला गायण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी होई कुड़माईआ। पिच्छे वंडदा रिहों वंड, अग्गे वंड कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दा इक्को चढ़े चन्द, धीरज धीर नाल वखाईआ। प्रभ मिल्या दीनन बख़्शंद, दीन दयाल दया कमाईआ। जन भगतां मिल के प्रभ नूं पए ठंड, दो जहानां विछोड़े दी अग्न बुझाईआ। आओ रल मिल के इक दूजे नाल पल्लू लईए गंढु, अग्गे सके ना कोए खुल्हाईआ। मार के छाल मेरी चढ़ जाओ उपर कंड, सचखण्ड लै के जावां चाईं चाईंआ। ओथे जा के वेखां आपणे चन्द, जिन्हां मुखड़ा नूर रुशनाईआ। पीर पैगम्बरां खट्टे करां दन्द, इक्को वार उठाईआ। आओ वेखो जिन्हां दे नाल गुजरी चन्द, तुहाढ्डा माण गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां जन भगतां अग्गे वास्ता पाईआ। जन भगतां अग्गे पाए वास्ता, बिन भगतां वसल ना कोए कराईआ। गुरसिखो प्रेम दा खवाओ नाशता,

प्रभ भुक्खा दर दर फेरा पाईआ। आपणा आपणे विच रख्या कर के ज़ाबता, ज़ेर ज़बर तुहाढ्ढे नाल मिलाईआ। जिन खेल करया बुढ्ढे बाल दा, बाहरों बुढ्ढा अन्दरों नढ्ढा रूप वखाईआ। लेखा लाए शाह कंगाल दा, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। गुरसिखां फड़ फड़ बाहों आप बहालदा, साची पालकी विच बहाईआ। साचा मार्ग इक सिखालदा, सिख्या सिक्खी भुल्ल कदे ना जाईआ। आपणा दरस फेर वखालदा, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। जन भगतां पिच्छे घालण घालदा, दर दरवेश आप अख्वाईआ। लेखा जाणे पत्त डाल दा, कली कली फूल फूल गुंचा गुंचा फोल फुलाईआ। वेखो खेल बेऐब बेहाल दा, आपणा हाल तुहानूं रिहा सुणाईआ। लोकमात बिन भगतां भगवान ना कोए ज्वाल दा, मरया रहे सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। एसे कर के गुरमुखां फिरे भालदा, मेरा नाम करन रुशनाईआ। क्यों आपणे सांचे जिस नूं ढालदा, आपणी तलवार लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अग्गे रो रो आपणा हाल सुणाईआ। नेत्र रोवे मारे आह, उह नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां जलवा दए वखा, जलवागर फेरा पाईआ। सारे कहिण मेरा खुदा, घर मिल्या बेपरवाहीआ। इस दे उत्तों हो जाओ फ़िदा, फ़ितरत कोए रहिण ना पाईआ। रल मिल दोंह हथ्थां दा पाओ गिध्धा, निरगुण सरगुण रंग चढ़ाईआ। जे कोई पुच्छे पारब्रह्म किडा, सके ना कोए समझाईआ। श्री भगवान कहे मैं निक्का

जिहा इड्डा, गुरमुखां अन्दर डेरा लाईआ। बाहरों मेरा दो जहान दा वड्डा विढ्ढा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड आपणे विच छुपाईआ। कलिजुग अन्तिम खेडण आया खेडां, गुरमुख हाणी नाल लिआईआ। बेशक सृष्ट सबाई करे झेडां, बेशरम बणया सच्चा माहीआ। गुरसिखां दस्से आपणा भेता, विचली घुंडी दए खुल्हाईआ। अग्गे किसे दे सिर ते पैण ना देवे तत्ती रेता, देग़ां विच ना कोए उबलाईआ। सब नूं रखे साया हेठां, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द अगम्मी देण आया नेंदा, निन्दकां निन्दया मुख भराईआ। गोबिन्द भज्जा गया पिच्छे गेंदा, जगत विहारा खेल कराईआ। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तिम निरगुण हो के सरगण वेंहदा, हरिजन विछड़े लए मिलाईआ। पिछला लहिणा सब दा देंदा, बाकी कोए नज़र ना आईआ। बाहों फड़ फेर कहिन्दा, उठो गुरसिखो मिलो भाईआं भाईआ। जो हरिजन हरि का भाणा सहिंदा, तिस मिले माण वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद इक दूजे नाल खैहन्दा, गुर अवतार करन लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच सिँघासण इक्को बैहन्दा, हुक्मे खेल वरताईआ। इस दे अग्गे बिन ढाहयों सब ढहिंदा, आपणी पिठ्ठ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अग्गे आपणा दुःख सुणाईआ। जन भगतो हरि नूं लग्गा दुखड़ा, दुखी हो कुरलाया। जिन्ना चिर वेखां ना तुहाढ्ढा मुखड़ा, मैनूं सुख कोए नज़र ना आया। जुग चौकड़ी रखे आपणी कुखड़ा,

अन्दर आपणे बंद कराया। तुहाढ्ढे प्रेम प्यार दा भुक्खड़ा, सचखण्ड दुआरिउँ चल के आया हौली हौली थक्का मांदा एथे अपड़ा, तुहाढ्ढा दर्शन कर के आपणा थकेवां दए गंवाया। जिउँ खुशी होवे माँ प्यो मिल के पुत्तरा, बिन पुत्तरां सीने ठंड ना कोए रखाया। मैं अर्शा उत्तों उतरां, नानक लेखा गया लिखाया। मेरा लेखा लिख्या ना जाए विच सत्तरां, पैंती अक्खर देण दुहाया। मेरा किसे ना परता पत्रा, वरका सके ना कोए उलटाया। मैं इक्को दस्सदा रिहा आपणे नाम दा खटका, खण्डा खड़ग चमकाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारा राह विच अटका, बिन नानक घर कोए ना आया। कलिजुग अन्तिम सब दा मिटावे हलाल झटका, छुरी आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अग्गे आपणा हाल सुणाया। की दस्सां किधर जावां, हरि जू रिहा जणाईआ। भगत मेरीआं भुजां बाहवां, बिन भगतां कम्म किसे ना आईआ। भगतां बिनां मैं होवां निथावां, लोकमात पुछां किसे ना मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला भगतन मीता, भगतन वसे सदा चीता, चेतन चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। भगत कहिण तूं वड्डा ठग्ग, एतबार तेरे उत्ते ना आईआ। तूं वसें उपर शाह रग, आपणा मुख छुपाईआ। जुग जुग लाउदा रिहों अज पज, गुर अवतारां हुक्म मनाईआ। कलिजुग अंतम आएयों भज्ज, भजड़यां पिट्टी सृष्टी ख्वाहिश दए दुहाईआ। सब ने लोकमात जाणा तज्ज, आसण सिँघासण कोए रहिण ना पाईआ। प्रभ सरन चरण जो गए बज्झ, बचत आपणी लैण कराईआ। जट्ट धन्ने दस्सी जाच , याचक दान इक वरताईआ। घर आ के मिले सच, मेहरवान मिहबान इक गुसाईंआ। हुक्मे अन्दर पए नच्च, भगत इशारयां नाल नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन अग्गे आपणा सीस झुकाईआ। भगतन अग्गे सीस गया झुक, साहिब सतिगुर आप झुकाइंदा। गुर अवतारां पैंडा गया मुक्क, भगवान इक्को राह वखाइंदा। पीर पैगम्बर गए उठ, जो गया फेर ना आइंदा। दीन मज़्ब मच्ची लुट्ट, ठग्ग चोर यार आपणा दाअ लगाइंदा। साध सन्त बैठे रुट्ठ, रुठ्ठयां मूँह ना कोए भुआइंदा। अन्तिम इकठ्ठे कर के इके गुठ्ठ, जिउँ अम्बां गुठलीआं ज़मीन विच दबाइंदा। सब दे कोलों लेखा लए पुच्छ, सिर सिर हुक्म मनाइंदा। किसे कोल ना दिसे कुछ, बग़ल कुरान ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत दुआर हरि निरँकार कर निमस्कार, निमख निमख आपणा आप कटाइंदा।

✻ ३ माघ २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुंडी जुमाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

भगत भगवन्त साची रीत, हरि सतिजुग सच चलाइंदा। ना कोई मन्दिर ना मसीत, गुरुदुआर ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म रहे अतीत, त्रैगुण रंग ना कोए रंगाइंदा। काया करी ठंडी सीत, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। माणस जन्म लैणा जीत, साची सिख्या इक पढ़ाइंदा। साहिब सतिगुर सदा अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। सोहँ ढोला इक्को गीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपे गाइंदा। जिस दा निशाना सदा सदा सद ठीक, सो साहिब मार्ग लाइंदा। सति सतिवादी इक प्रीत, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। मित्रां नाल मिले मीत, मित्र आपणा भेव खुल्हाइंदा। लेखा जाण हस्त कीट, ऊँच नीच पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म आत्म मेल मिलाइंदा। आत्म आत्म जुड़े जोड़, सो सतिगुर आप जुड़ाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़ चढ़ घोड़, गुरमुख लाड़ा दूल्हा सोभा पाइंदा। नाता तुटे अन्ध घोर, प्रकाश प्रकाश रूप चमकाइंदा। लेखा जाणे ज़ोरो ज़ोर, ज़बर चरणां हेठ दबाइंदा। लख चुरासी पाए शोर, कूड़ी क्रिया जगत कुरलाइंदा। भगतां भगवन्त जाए बौहड़, बौहड़ी हाल ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। मन्दिर मस्जिद छड्डे मठ्ठ, गुरुदुआर नज़र कोए ना आइंदा। करे खेल पुरख समरथ, साची धार चलाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मुस्लिम हिंदू सिख ईसाई देवे एका मति, गुरमत्त आप जणाइंदा। जगत नेत्र पंज तत्त, सो पुरख निरँजण नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। तन नाल तन शृंगार, पंज तत्त कराईआ। आत्म नाल आत्म आधार, परमात्म रंग चढ़ाईआ। ब्रह्म नाल ब्रह्म विचार, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। धुर दा मार्ग सच संसार, महासार्थी आप लगाईआ। जिस दी मंग मंगदे गए गुर अवतार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। दीन मज़्हब कर ख्वार, ख्वारी सब दी दए कराईआ। इक्को नजरी आए एकँकार, इष्ट देव इक जणाईआ। सृष्ट सबाई कराए सच विहार, बिवहारी आपणी धार चलाईआ। सतिजुग दूजी कोई ना करे कार, मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग लग्गे मात, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लख चुरासी इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। पिछला सब दा टुट्टे साक, अगला बन्धन आपे पाइंदा। भगत मिलाए भगतां साथ, गुरमुख गुरमुख गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई वखाए एका वरन, सरन इक्को इक जणाइंदा। साची सरन देवे ठाकर, ठोकर नाम लगाईआ। लख चुरासी काया गागर, घट घट रिहा समाईआ। बण वणजारा वणज कराए सौदागर, सौदा हट्टो हट्ट विकाईआ।

निर्मल कर्म करे उजागर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। दर आयां घर देवे आदर, जिन्हां देवे सरन सरनाईआ। चुगत्तयां नेड़ रहिण ना देवे करता कादर, कुदरत आपणी आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धारा भगत भगवन्त दा इक विहारा, दूजा कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा चढ़े रंग, हरि साचा आप चढ़ाइंदा। गुरमुख गुर गुर वज्जे मृदंग, मनमुख रूप ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म सदा संग, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले संसार, हरि संसारी आप चलाईआ। सति सति कर प्यार, सति सतिवादी झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहार, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। साची लाव पढ़े एका वार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जिस दी सिफ्त करदे गए गुर अवतार, कलमा नबी अलाईआ। जिस दा दर मंगदे गए बण भिखार, ख़ाली झोली आपणी डाहीआ। जिस दी निरगुण नानक बणया नार, सो कन्त हुक्म मनाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया रहि जाए विच संसार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। पहलों सतिगुर पूरा गुरमुखां सोई सुरती लए उठाल, जुगती आपणी दए जणाईआ। मुक्ती चरणां हेठां दए स्वाल, उत्ते हरिजन भार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मरयादा, पुरख अबिनाशी सब दा दादा, अगला लेखा रिहा जणाईआ। सच मरयादा चले मात, हरि साचा आप जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख देवे साथ, दूजा संग ना कोए निभाइंदा। एका पत्तण एका घाट, माही इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरिजन मेल मिलाइंदा। हरिजन पुरख हरिजन नारी, हरि सतिगुर आप प्रगटाइंदा। लेखा जाणे वारो वारी, वेरवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। क्या कोई जाणे जीव गंवारी, भाण्डा भरम ना कोए भंनाइंदा। पुत्तर धीआं करे प्यारी, प्रेम प्याला जाम प्याइंदा। जगत जिज्ञासू जगत विहारी, जग जीवण दाता आप कराइंदा। गुरसिख गुरसिख गुरमुख गुरमुख आत्म आत्म कर प्यारी, परमात्म आपणा रंग चढ़ाइंदा। सतिजुग तेरा सच विहारी, हरि सच सच समझाइंदा। पल्ला फड़े साची नारी, कन्त पल्लू गंढु दिवाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकारी, अनन्द कारज पूर कराइंदा।

❇ ४ माघ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल हरि भगत दुआर विच ❇

सो पुरख समरथ, आदि पुरख अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। एकँकार चलाए रथ, आदि जुगादि खेल कराइंदा। आदि निरँजण हो प्रगट, निरगुण जोती डगमगाइंदा। श्री भगवान वसे सचखण्ड,

धर्म दुआर इक वड्याइंदा। अबिनाशी करता वंडे वंड, भेव अभेद आप रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक अनन्द, दूसर रंग ना कोए रंगाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे धर, हरि करता खेल कराइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे वड़, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमाइंदा। निरगुण जोत निरगुण वर, सगला बन्धन पाइंदा। आपे पुरख आपे नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप कराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण जाणे साचा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा बेड़ा आपे बन्न्, बण खेवट खेटा आप चलाईआ। सदा सुहेला जननी जन, पिता पूत भेव खुल्हाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, सचखण्ड सच्ची रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल इक वड्याईआ। महल अटल सच मुनारा, हरि साचा आप उपाइंदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणा राह चलाइंदा। सचखण्ड निवासी वसे साचे धाम न्यारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। हुक्मी हुक्म सच वरतारा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। ना कोई मेटे मेटणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर एकँकार नूर ज़हूर आप प्रगटाइंदा। नूर ज़हूर प्रगटाए एक, एकँकार आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवे टेक, सगला संग ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। वसणहारा साचे देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। सेवा लाए कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शंकर आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप वड्याइंदा। हरि पुरख निरँजण आप बणाए बणत, मात पित ना कोए बणाइंदा। एकँकारा आपे मणीआं आपे मंत, मंत्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। आदि निरँजण निरगुण जोत नूर ज़हूर लहिणा जाणे नार कन्त, सेज सुहजणी आप हंढाइंदा। श्री भगवान जुग चौकड़ी मेल मिलावा साचे सन्त, सन्त सतिगुर आपणे रंग रंगाइंदा। अबिनाशी करता लख चुरासी वेखे जीव जंत, घट घट अन्तर डेरा लाइंदा। पारब्रह्म श्री भगवन्त, भगत भगवान एका घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआर सच महल्ला आप सुहाइंदा। सच महल्ला श्री भगवान, एका एक सुहाईआ। आप झुलाए सच निशान, सति पुरख निरँजण हथ्थ उठाईआ। वेखणहारा दो जहान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। जोती

किरन चन्द सूरज रवि ससि भान, कोटन कोटि मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल ज़िमी असमान चौदां तबक खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आसण लाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा आसण, निरगुण निरगुण आप लगाइंदा। खेले खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता नज़र किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे दासी दासण, सिर सिर हुक्म मनाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा जाणे पवण स्वासण, आत्म परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सोभावन्त, आप बणाए श्री भगवन्त, जिस गृह मन्दिर अन्दर आपणा डेरा लाइंदा। साचा मन्दिर सचखण्ड, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाई वंड, आपणा हिस्सा आप कढ्ढाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ना कोई ढोला ना कोई छन्द, अक्खर वक्खर ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई चिला तीर कमंद, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। इक इकल्ला सूरा सरबँग, शहिनशाह बैठा असण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साची धार, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। साची धार सो पुरख निरँजण, इक्को इक जणाइंदा। करे खेल दर्द दुःख भय भंजन, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर एका नाम देवे अंजन, नेत्र ज्ञान इक वखाइंदा। काया माटी पंज तत्त रूप वटाए कंचन, पारस इक्को रंग चढ़ाइंदा। सर सरोवर साची धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल ना कोए रखाइंदा। सदा सुहेला परदे कज्जण, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शब्द नगारे दो जहान वज्जण, पुरीआँ लोआँ ब्रह्मण्डां खण्डां एका राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, जुगा जुगन्तर मण्डल रासी, गोपी काहन आप नचाइंदा। गोपी काहन वेखे स्वांग, पुरख अबिनाशी आपणा राह जणाईआ। लख चुरासी चढ़े कांग, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्टां लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत साध सन्त श्री भगवान आपणे हथ्थ पकड़े वाग, डोरी नज़र किसे ना आईआ। निर्मल जोती कर प्रकाश, मेट मिटाए अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर इक्को इक जणाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, निरगुण सरगुण वसे साथ, ब्रह्म पारब्रह्म एका घर वखाईआ। आत्म ढोला शब्द विचोला अगम्मी गाए गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सचखण्ड दुआरे कोटन कोटि खड़े त्रिलोकी नाथ, प्रभ चरणां सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। ना कोई दूसर मीत मुरारा, परवरदिगारा आपणा रूप धराइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यारा, जलवा हक़ हक़ दृढ़ाइंदा। बेऐब खुदाई सांझा यारा, साची करनी आप

४६९
१३

कराइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दा पर्दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर हरि का रंग, हरि हरि आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे सच पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। उपर बैठ शहिनशाह शाह वजाए मृदंग, ताल तलवाड़ा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण धारा जोत उज्यारा दए सहारा, थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, शब्दी सुत दए वड्याईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर खोल्ह, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण तोले साचा तोल, तोला इक्को इक अख्वाइंदा। नाम निधाना शब्द अगम्म आपे बोल, नाउँ निरँकारा, आप प्रगटाइंदा। निरगुण वसे निरगुण कोल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता जाए मौल, मौला आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अन्दर साचे वड़, थिर घर आपणा पर्दा लाहइंदा। थिर घर पर्दा देवे लाह, आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारा एका जा, शब्दी नाउँ रखाईआ। थिर घर साचे दए बहा, आपणा हुक्म मनाईआ। गुर अवतार तेरा नाउँ धरा, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण दए जणा, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां तेरी रचन रचा, रवि ससि करे रुशनाईआ। लख चुरासी निरगुण सरगुण घाड़त लए घड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो एका घर वसाईआ। नौ दुआरे दए खुल्हा, मन मति बुध डेरा देवे ला, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म साचा हिस्सा देवे पा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। शब्द अनादी अनहद राग दए सुणा, राग रागणी मुख शरमाईआ। अमृत आत्म साचा जाम दए प्या, निझर झिरना इक झिराईआ। जोत निरँजण कर रुशना, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। आत्म सेजा सोभा पा, घर साचे खुशी मनाईआ। दीपक दीआ इक जगा, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। साचा सईया फेरा पा, मइया आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत देवे वर, दर दरवाजा इक खुल्हाईआ। दर दरवाजा आत्म ताक, बिन ताकी आप खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म सच्चा साक, सगला संग निभाइंदा। एका पत्तण एका घाट, एका सोभा पाइंदा। एका डेरा एका वाट, एका वार पन्ध मुकाइंदा। एका रस एका अमृत लैणा चाट, तृष्ना तृखा भुक्ख गवाइंदा। पुरख अकाल दा सच्चा हाट, दो जहानां वणज कराइंदा। सचखण्ड निवासी खेल तमाश, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप कराइंदा। जन भगतां करे पूरी आस, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण जोती नूर उज्यारा, शब्द अगम्मी इक जैकारा, रसना

४७० १३

जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। बाहरों दरस पंज तत्त, तत्तव तत्त जणाइंदा। अन्तर दरस नाम सति, सति सति समझाइंदा। बण विचोला पुरख समरथ, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। शब्द अगम्मी देवे वथ, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। वसणहारा घट घट, घट भीतर डेरा लाइंदा। मणका मणका जो नाम रहे रट, मन का मणका आप भुआइंदा। जन भगत वखाए इक्को हट्ट, श्री भगवान आप खुल्हाइंदा। सति सतिवादी मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा खोज खजाइंदा। जिस सतिगुर दर्शन कीता हस्स हस्स, सो गुरमुख सोभा पाइंदा। गुर गोबिन्द अमृत देवे रस, घर झिरना इक झिराइंदा। मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जन्म जन्म दी दुरमति मैल कट, उज्जल मुख कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सच्चा दरस कराइंदा। साचा दरस पुरख अकाल, अक्ल कला वड्याईआ। सतिगुर साहिब दीन दयाल, दीनन होए सहाईआ। हरिजन वेखे साचे लाल, बाल अंञाणे गोद उठाईआ। अन्दर बाहर चले नाल नाल, दिवस रैण सेव कमाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। आपे घाले आपणी घाल, गुरमुख सज्जण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म दरसी दरस दिखाईआ। आत्म दरस सीतल सीत, सांतक सति कराइंदा। बिन रसना जिह्वा गुरमुख गाए गीत, अजपा जाप जपाइंदा। लेखा जाणे पापी करे पतित पुनीत, पतित पावण सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, सो काया मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। गुरमुख तेरे मिलण दी रखे सदा उडीक, नित नित नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस इक वखाइंदा। साचा दरस निज नेत्र अक्ख, आखर आप जणाईआ। सतिगुर साहिब हो प्रतख, आपणा रूप वटाईआ। कखों करनहारा लख, लखों कक्ख दए बणाईआ। जन भगतां रखे जुग जुग पत, पत पतवन्ता सच्चा माहीआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। जिस जन देवे सच्ची गुरमति, गुरमुख रूप वखाईआ। गुर दर्शन देवे नठ्ठ नठ्ठ, रातीं सुत्यां लए जगाईआ। वेखणहारा धीरज जत, सति सन्तोख फोल फुलाईआ। जो तेरा नाम रहे रट, तिन्हां लख चुरासी रट्टा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे नेतन नेत, गुरमुखां करे हरि जू हेत, हितकारी फेरा पाईआ। दरस करन दा जिस जन चाउ, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। सदा सुहेला पकड़े बाहों, फड़ बाहों गले लगाइंदा। लेखा जाणे जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस रूप वटाइंदा। इक जपाए साचा नाउँ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। एथे ओथे दो जहानां करे सच न्याउँ, आदल अदालत इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साचा दरस आप कराइंदा। साचा दरस निज घर पेख, पेख खुशी मनाईआ। जन्म कर्म दा जाणे लेख, लेखा आपणे हथ्थ जणाईआ। जुग चौकड़ी धारे भेख, अवल्लड़ा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेड, जोती जाता बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर भेज, नाम संदेसा इक सुणाईआ। घट घट अन्दर सब दी माणे सेज, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस इक्को घर वखाईआ। साचा दरस आत्म घर, घर मन्दिर आप वखाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वटाइंदा। इक नुहाए साचे सर, सरोवर इक्को इक उपाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। गुरमुख गुर गुर आपे फड़, आपणी गंढु पवाइंदा। लेखा जाणे सीस धड़, जगदीश वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन मीता ठांडा सीता, सीतल धार इक वहाइंदा। सीतल धार ठंडी पवण, हरि सतिगुर आप वहाईआ। लेखा जाणे अवण गवण, त्रैभवण खोज खुजाईआ। जन भगतां दिवस रैण ना देवे सवण, सालस बण बण लए उठाईआ। लेखा चुकाए दीप घृत हवण, अग्नी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। देवे दरस खोल्हे ताकी, बंद किवाड़ी आप खुल्हाइंदा। जन्म जन्म दी देवे बाकी, लहिणा झोली पाइंदा। सतिगुर साहिब सच्चा साकी, नाम प्याला जाम प्याइंदा। पंज तत्त रहिण ना देवे आकी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मूँह दे भार सुटाइंदा। आसा तृष्ना मेटे वाटी, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। फड़ चढ़ाए अगम्मी घाटी, जिस दा कन्ढा नज़र ना आइंदा। अग्गे रखे नेड़े वाटी, पिछला पन्ध मुकाइंदा । साहिब सतिगुर देवे दाती, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए कमलापाती, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। दरस कराए सच्चा ठाकर, आपणा भेव चुकाईआ। देवे नाम रती रत्नागर, रतन अमोलक झोली पाईआ। लेखा जाणे काया गागर, काची माटी फोल फुलाईआ। वणज वणजारा बण सौदागर, इक्को हट्ट खुल्हाईआ। जन भगतां देवे सच्चा आदर, आपणा आदर्श इक वखाईआ। होए सहाई करीम करता कादर, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस इक जणाईआ। साचा दरस बिन नेत्र नैण, लोचण नज़र कोए ना आइंदा। श्री भगवान मिले सच्चा साक सज्जण सैण, रूप रंग ना कोए रखाइंदा । जिस दा ढोला सारे कहिण, कह कह शुकर मनाइंदा। सो कलिजुग अन्तिम जन भगतां देवे पिछला देण, पूरब लेखा झोली पाइंदा। भगत भगवन्त इक्को धाम इकट्ठे बहिण, सच दुआर सोभा पाइंदा। जिस जन दर्शन कीता नैण, सो निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। नाता तुटे भाई भैण, नार कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। देवे दरस दीन दयाला, दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। नाता तोड़ काल महाकाला, महिफ़ल आपणी दए वखाईआ। सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरे वज्जे वधाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अवल्लड़ी चाला, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कढ्ढणा अन्त दीवाला, दीवा बत्ती ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दरस, जन्म जन्म दी मेटे हरस, लेखा चुक्के अर्श फ़र्श, काया कुरा एका रंग रंगाईआ। मेहरबानी करे मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। गुर गोबिन्द इक निशान, गुर सतिगुर आप झुलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म मनाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। सत्त दीप सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नैण शरमाण, नेत्र अक्ख ना कोए उठाइंदा। करोड़ तेतीसा बाल अञ्याण, बुध बबेक ना कोए वड्याइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारे जुग सर्ब पछताण, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। पीर पैगम्बर करन ध्यान, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल नगर सच मकान, बेमुकाम आसण लाइंदा। लोकमात सके ना कोए पहिचाण, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। रसना जिह्वा सारे गाण, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाइंदा। जन भगतां उत्ते होया आप मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा । आत्म परमात्म दित्ता दान, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर इक्को घर वखाइंदा। मेहर नज़र हरि सच सहारा, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। जन भगतां देवे इक किनारा, नईया मात ना कोए डुबाईआ। आत्म परमात्म कर प्यारा, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। साचा लेखा धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। अणयाला तीर मारे एका वारा, चिला आपणे हथ्थ उठाईआ। कूड़ी क्रिया सुट्टे मूँह दे भारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। मेहर नज़र करे परवरदिगारा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। मेल मिलाए साचे यारा, यारड़ा सत्थर इक वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, मस अन्त ना कोए जणाईआ। समुंद सागर रोवे ज़ारो ज़ारा, बसुद्धा आपणी सुद्ध भुआईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जिस जन उपर मेहर करे आप निरँकारा, तिस मुहब्बत दए समझाईआ। मुहब्बत मिले सच दरबारा, उल्फ़त इक्को इक वखाईआ। बेनज़ीर बदल तकदीर तोड़ ज़ंजीर मिलाए सच दुआरा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। कलि कल्की लै अवतारा, कूड़ी क्रिया कलिजुग दए खपाईआ। वरन बरन इक सहारा, साची सरन दए समझाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक निरँकारा, जुग जुग गुरमुखां मेहर नज़र नाल तराईआ।

सम्बल नगर हरि का मकान, इट्ट गारा पत्थर ना कोए लगाइंदा। जिस गृह वसे श्री भगवान, सो सम्बल नाउँ धराइंदा। बिन गुर गोबिन्द कोई ना सके पहिचाण, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। जिस हरिमन्दिर हरि का झुल्ले निशान, सो सम्बल नाउँ धराइंदा। ना ज़िमी ना असमान, चौदां तबक ना वंड वंडाइंदा। चौदां लोक हौए हैरान, वेद व्यासा मुख शरमाइंदा। ईसा मूसा राह तकाण, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। मुहम्मद वेखे मेरा अमाम, किस मन्दिर डेरा लाइंदा। नानक निरगुण दस्स के गया ज्ञान, सच संदेसा इक सुणाइंदा। निहकलंक महाबली उतरे आपे आण, मात पित ना कोए बणाइंदा। गोबिन्द कहे कलि कल्की योद्धा सूरबीर बली बलवान, जिस दा अन्त कोए ना आइंदा। सो सम्बल वसे आण, जिस घर गोबिन्द आसण लाइंदा। गोबिन्द शब्द रूप महान, जगत नेत्र वेख कोए ना पाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ देवे दान, लेखा जाण दो जहान, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड चरणां हेठ दबाइंदा। सो सम्बल होए परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगर गोबिन्द खेड़ा, जिथ्थे करे ना कोई झेड़ा, वेहड़ा नज़र किसे ना आइंदा। सम्बल नगर उच्च मनारा, हरि सतिगुर आप बणाईआ। निरगुण दीपक बाती जोती कर उज्यारा, इक्को डगमगाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, भूपत भूप आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, सच संदेसा दए सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग लग्गे विच संसारा, सहिब सतिगुर होए सहाईआ। चार वरन दा इक विहारा, एका सरन तकाईआ। एका मन्दिर एका मस्जिद एका मठ्ठ शिवदुआला इक्को गुरुदुआरा, जिस घर गुर गोबिन्द आपणा चरण छुहाईआ। हरि मन्दिर खेले खेल न्यारा, डूँग्घी कन्दर फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर बहे आपे वड़, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। अनन्द अन्दर मिले अनन्द, अनन्द अमरदास गुरू समझाईआ। जिस जन सतिगुर गाया छन्द, शंका कोए रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मुक्के झूठा गंद, सच सुच्च मिले वड्याईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, सुरती सतिगुर सरन प्रनाईआ। लहिणा देणा चुक्के बत्ती दन्द, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, सो गुरमुख अनन्द विच समाईआ। अनन्द विच मिले अनन्द, अनन्द सतिगुर हथ्थ रखाया। गुरमुख घर गुरसिख चन्द, गुर सतिगुर आप चढ़ाया। हरिजन नाम इक्को वंड, वस्त अमोलक झोली पाया। गृह मन्दिर घर निज आत्म मिले परमानंद, सुख आत्म अनन्द रूप वटाया।

४७४
१३

✻ माघ २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर ✻

सचखण्ड वसे साहिब प्रभ एक, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। करे खेल सदा अनेक, अक्ल कल अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण आप आपणा जाणे भेत, भेव होर ना कोए जणाईआ। हरि पुरख निरँजण निरगुण निरगुण लए वेख, नूर नूराना नूर रुशनाईआ। एकँकारा करे हेत, आप आपणा मेल मिलाईआ। आदि निरँजण जोती जोत लए पेख, पेख पेख खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता कर कर हेत, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। श्री भगवान खेडे खेड, खेल आपणा आप रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा करे लेख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह इक इकल्ला, निरगुण निरवैर आप अख्वाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, दरगाह साची सोभा पाइंदा। आपणा फड़ाए आपे पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाइंदा। जोती धार जोती रला, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणे अग्गे आपे खला, आपे आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर करतार, आपणी खेल खलाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया झोली पाईआ। सचखण्ड रच दुआर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीआ बाती एका बाल, कमलापाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेलणहारा नज़र ना आईआ। खेले खेल अगम्म अथाह, बेऐब नाउँ धराइंदा। सचखण्ड दुआर आप बणा, मुकामे हक़ सुहाइंदा। सच सिँघासण इक वछा, सेवक सेवा आप कमाइंदा। आपणा बल आप धरा, बल आपणे विच प्रगटाइंदा। आपणा हुक्म आपे जणा, आपणे सिर मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक इकल्ला वेस वटाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, एका एक जणाईआ। निरगुण नूर नूर महाना, नूर नुराना डगमगाईआ। शाहो भूप बण सच्चा राणा, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। तख्त निवासी हो प्रधाना, साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आपे खेले खेल तमाशा, आपणी करनी आप कमाईआ। साचे तख्त शाहो भूप, हरि भूपत सोभा पाइंदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख भेख ना कोए वखाइंदा। वसणहारा साची कूट, दिशा वंड ना कोई वंडाइंदा। ना कोई तागा ना कोई सूत, ताणां पेटा ना कोए पाइंदा। ना कोई तत्त ना कलबूत, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। आपणा जणाए आप सबूत, साबत रूप आप हो आइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड बणे सच महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल प्रनाइंदा। ना कोई हद्द ना कोई हदूद, किनारा नज़र ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आपे चढ़, धुर दरबारी

हुक्म सुणाइंदा। धुर दरबारी शाह सुल्ताना, आपणा हुक्म जणाईआ। योद्धा सूर मर्द मर्दाना, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड करे खेल महाना, आप आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण निरगुण कर परवाना, नार कन्त सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। नार कन्त बण भतारा, भगवन आपणा संग निभाइंदा। दाई दाया अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी खेल वरताइंदा। सुत दुलारा एका जाया, जननी जन गोद सुहाइंदा। पूत सपूता वेख वखाया, आपणे रंग रंगाइंदा। कृपानिधान ठाकर स्वामी नाउँ रखाया, शब्दी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराइंदा। शब्दी पुत्त एका जम्म, जननी जन आप अख्वाइंदा। करे खेल श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रखाइंदा । देवणहारा सच्चा दान, दाता दानी दया कमाइंदा। सचखण्ड अन्दर आपणी इच्छया बणाए मकान, थिर घर साची बणत बणाइंदा। बाल बाला बठाए नादान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सच संदेसा देवे आण, राग नाद ना कोए अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। शब्द सुत कर तैयार, हरि सतिगुर खेल कराईआ। एका वस्त दए अधार, सच प्रीती झोली पाईआ। तेरा मेरा इक विहार, बिवहारी दए समझाईआ। तेरा मेरा इक विचार, बिन विचार दए जणाईआ। तेरा मेरा इक श्रृंगार, शोभा रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा मेरा इक दीदार, रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। साची सिख्या सुत दुलारे, हरि हरि आप जणाइंदा। दए संदेसा धुर दरबारे, धुर दी धार जणाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारे, अतोट अतुट वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराइंदा । साची करनी करने योग, हरि करता आप कराइंदा। शब्दी शब्द कर संजोग, साचा सगन मनाइंदा। अन्तर अन्तर इक्को भोग, भोगी आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। साची वस्त पुरख अगम्म, एका एक वरताईआ। शब्द सुत तेरा कम्म, करता पुरख दए समझाईआ। तेरी धारों विष्नूं पए जम्म, विष्नूं अन्दर ब्रह्मा आसण लाईआ। एका राग सुणाए श्री भगवन, बिन तन्दी तन्द हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सुंन अगम्म बेड़ा बन्न्ह, धूंआँधार शंकर एका नूर रुशनाईआ। त्रै त्रै मेला इक इकेला, गुर चेला वंड वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, शब्दी गुर गुर बणत बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव चढ़े तेला, घर साचे सगन मनाइंदा। चारे वेखो पुरख अबिनाशी सचखण्ड

बैठा वेहला, कम्म कार ना कोए कमाइंदा। वेहले दी कीमत पए ना पैसा धेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। पुरख अबिनाशी हाल दस्से, अहिवाल रिहा जणाईआ। चारे रहे हक़े बक्के, भेव कोए ना आईआ। बिन नेत्रां रहे तक्के, तकवा इक्को इक रखाईआ। जिध्धर वेखण पुरख अलखे, अलख अलखणा नज़री आईआ। दोए जोड़ सरनाई ढठ्ठे, प्रभ चरण धूढ़ी मस्तक लाईआ। दर दुआर होए इकठ्ठे, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। श्री भगवान कर किरपा आपणी वस्त घत्ते, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्दी नाम बीजणा आपणे वत्ते, वत्तर इक्को इक वखाईआ। मेरे प्यार जो रत्ते, बिन रत्ती रत्त लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी गुर रिहा समझाईआ। शब्दी गुर नेत्र खोल्ह, नैण ध्यान लगाया। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे कोल, बेवस रहे कुरलाया। श्री भगवान कर किरपा आपणा पर्दा खोल्ह, भेव अभेद जणाया। बेअन्त बेपरवाह आपणी धार अगम्मी बोल, हौली हौली रिहा समझाया। सचखण्ड दुआरे बैठा इक्को तोला तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाया। निरगुण हो के सरगुण जावां मौल, मौला आपणा खेल वखाया। तुहाढ्डे नाल करां कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाया। आपणी इच्छया रचां धौल, धरनी धरत धवल वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक समझाया।
४७७ १३ साची सेवा जाणा लग्ग, हरि हरि आप जणाइंदा। शब्द उठ सूरे सरबग्ग, तेरा बल धराइंदा। विष्नूं सिर ते रख पग्ग, ४७७ १३
सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मा रहिण ना देवे अलग्ग, एका राह चलाइंदा। शंकर प्रेम प्रीती जाए दग, प्रेम प्यार इक वखाइंदा। सच दुआरे इक्को हज्ज, हाजत सब दी पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मे शिव आप समझाइंदा। साची सिख्या दे भगवान, एका गुण जणाईआ। तिन्ने बाले कर सुजान, सोझी इक वखाईआ। शब्दी शब्द शब्द निशान, हरि साचा सच झुलाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म फ़रमान, धुर संदेसा इक अल्हाईआ। वस्त अमोलक देवे दान, तिन्नां झोली आप भराईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम लेखा दए वखाईआ। नित नित कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए समझाईआ। तिन्न पंज नाता जोड़, हरि हरि आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पारब्रह्म दी पई लोड़, नेत्र नैण ध्यान लगाइंदा। दूसर सके ना कोई बौहड़, सगला संग ना कोए निभाइंदा। निरगुण दाता पुरख बिधाता सुत अगम्मी चढ़े घोड़, सति पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। वेखणहारा कर के ग़ौर, बिन नैणां अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करता पुरख, हरि आपणा आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। दर दुआर

देवे दरस, दर्दी दर्द वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मेटे हरस, हवस ना होर वधाईआ। लेखा जाणे अर्श फ़र्श, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म दए समझाईआ। साचा हुक्म एकँकार, एका वार जणाया। लख चुरसी करो तैयार, त्रैगुण मेला मेल मिलाया। पंज तत्त कर आकार, निरगुण सरगुण वेख वखाया। विष्न ब्रह्मा शिव रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। तुध बिन वज्जे ना कोए सतार, सति सरूप ना कोए समाया। असीं किरन किरन उज्यार, तेरा अन्त किसे ना आया। कर किरपा आप निरँकार, दर बैठे सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ हो तैयार, त्रैभवन धनी आपणा भेव खुल्हाया। वंडे वस्त आप करतार, करता कुदरत रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाया। साचा हिस्सा वंड भगवान, आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म सेवा लाई आण, सेवक सेवा इक समझाईआ। किरन किरन विच्चों किरन निशान, किरती किरत किरत कमाईआ। आदि आदि दित्ता दान, ब्रह्माद गया समाईआ। लख चुरासी कर प्रधान, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। आत्म ब्रह्म कर परवान, ईश जीव करी कुड़माईआ। रूह बुत्त कर कल्याण, कलमा आपणा इक समझाईआ। जिस रूह देवे आपणा ज्ञान, सो गुरबत विच कदे ना आईआ। थिर घर दुआरिउँ ब्रह्मण्ड विच भेजे महान, बणा पांधी सफ़र कराईआ। नाल जगत निशाना दित्ता महान, नव दुआरे संग रखाईआ। आसा तृष्ना कर बलवान, हउमे हंगता मेल मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार करा अशनान, जगत चोटी दित्ता चढ़ाईआ। बाल बिरध नौजवान, जोबन अवस्था रंग वखाईआ। धुर संदेसा सदा सदा सद देवे आण, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शब्द गुरु गुर कर प्रधान, गुर प्रणाली आप चलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका मन्दिर इक मकान, एका घर दए वसाईआ। एका मति एका बुध करे ध्यान, दर खोल आपणी कार चलाईआ। एका मन शरअ शैतान, शिरकत घर घर रिहा वखाईआ। एका बोध अगाध ज्ञान, गुर मंत्र करे पढ़ाईआ। एका राग नाद धुन्कान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। एका जोत निरँजण नूर महान, घर दीपक करे रुशनाईआ। एका लख चुरासी आवण जाण, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। घर घर अन्दर बैठा दिवस रैण देवे ज्ञान, घड़ी पल भुल्ल ना जाईआ। नाल माया कर प्रधान, प्रकृती करे कुड़माईआ। जगत विद्या जगत विधान, सृष्ट सृष्ट नाल प्रनाईआ। इष्ट इष्ट नौजवान, आदि जुगादि इक रखाईआ। आत्म परमात्म मेला दो जहान, तोड़ विछोड़ा थाउँ थाईंआ। करे खेल आप भगवान, आपणी रीती आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी सेव कमाण, बण बरदे सीस झुकाईआ। नित नवित्त देंदे रहिण पैग़ाम, कलमा कलाम नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव

आप समझाईआ। आदि बख्शी आपणी रूह, बुत्त नज़र कोए ना आइंदा। सरगुण दिती साची सूह, भेव अभेद खुल्हाइंदा। अन्दर वड़ के कहे हू, अन्हा हू ना कोए समझाइंदा। जिस दा नाता तूही तू, तोबा तोबा सो कराइंदा। जिस नूं वखाए आपणा मूँह, मुहब्बत आपणे नाल बंधाइंदा। तिस नाल कोई ना सके छूह, अंग नाल अंग ना कोए मिलाइंदा। सो दूजे वड़े ना दूजी जूह, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। पार कराए दो जहानां डूँग्घा खूह, पुरी लोअ आकाश पाताल लोक तबक गार विच ना कोए डुबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूह बुत्त मेला, करे खेल इक इकेला, अक्ल कल आपणा राह चलाइंदा। अक्ल कल खेल अपार, अपरम्पर आप जणाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, साख्यात दए जणाईआ। निरगुण सरगुण दए अधार, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी ना पाए सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी लख चुरासी, हरि करते खेल रचाया। आवण जावण जम की फाँसी, राए धर्म हुक्म मनाया। कोटन विच्चों जन भगतां लाहे उदासी, आपणा दरस कराया। सो रूह सदा अबिनाशी, जिस अबिनाशी आपणा रंग चढ़ाया। आदि जुगादि करे बंद ख़लासी, बन्धन कोए रहिण ना पाया। वेखणहारा खेल तमाशी, ख़ालक ख़लक वंड वंडाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चलदी रही हाटी, गुर अवतार पीर पैगम्बर बण वणजारा हट्ट चलाया। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म किसे ना कीती सच शनाख़ी, शनाख़त कोई ना गया समझाया। सारे कहिन्दे गए पुरख अबिनाशी दी हो के दासी, बण दासी सेव कमाया। कोटन कोटि मण्डल मण्डप पाउदे रहे रासी, गोपी काहन नाच नचाया। बिन भगत भगवान बणया ना किसे दा साथी, अद्धविचकार पीर पैगम्बर रहे कुरलाया। कर किरपा जिस चाढ़े आपणी घाटी, घाटा पूरब पूरा दए कराया। जिस दी रूह ओसे दा बुत्त ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक नाल मिलाया। कोई रहिण ना देवे अग्गे आकी, अक्ल सब दी दए भुलाया। जिस जन खोल्हे आप ताकी, पर्दा पर्दा दए उठाया। प्याए जाम बण के साकी, तृष्ना भुक्ख मिटाया। सो सज्जण मिले साहिब हरि कमलापाती, कर दरस इक्को नज़री आया। सो रूह होई पाक पाकी, पतित पुनीत आप कराया। जुग चौकड़ी जिस दा लहिणा रहि गया बाकी, कलिजुग अन्तिम झोली पाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवान सचखण्ड दी खोल्ही हाटी, सच वस्त इक वरताया। हरिजन तेरी उत्तम रखे जाति, ज़ात पात ना कोए जणाया। मेटे रैण अन्धेरी राती, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाया। पिच्छे वाली छड्डो गाथी, अगला राह रिहा वखाया। जिस रूह लैणी नजाति, निज घर साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आप विछोड़े आपे जोड़े आपे सद्दे आपे तोरे, आवण जावण आपणा खेल रचाया। जिस घल्ले मात, मता आपणे नाल पकाईआ। जिस लख चुरासी दिती दात, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। जिस त्रैगुण बद्धा नात, पंचम पंच करी कुड़माईआ। सो साहिब अन्तिम पुछे वात, वितकरा सब दा रिहा मिटाईआ। पत्तण आया आपणे घाट, बेपरवाह बेपरवाहीआ। इक रसूल परवरदिगार पाक, पाकी पाक इक खुदाईआ। जिस रूह बुत्त बणाया साक, अन्तिम साक दए तुड़ाईआ। लोकमात विच रहि जाए ख़ाक, कलबूत कम्म किसे ना आईआ। रूह पीए आब हयात, हया आपणा दए मिटाईआ। लेखा लग्गे पुन्न सवाब, सुहबत इक्को इक वड्याईआ। परवरदिगार आपणे मुख तों चुक्क नक़ाब, पर्दानशीं बेपर्दा हो आपणा दरस वखाईआ। सो रूह कहे हक़ जनाब, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। निउँ निउँ सजदा करे आदाब, अदल आदल इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, आदि जुगादि जणाए गाथा, पीर पैगम्बर गुर अवतार करे पढ़ाईआ।

४८०
१३
गुर गोबिन्द होया वेहला, पुरख अकाल ध्याईआ। लोकमात सच्चा रिहा ना कोई चेला, चेरा रूप ना कोए वटाईआ। सिँघ हो गया बक्करी लेला, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी हुण तेरा वेला, दूजी चले ना किसे चतुराईआ। तूं साहिब सज्जण सुहेला, तेरी इक्को ओट तकाईआ। आपणी गोद अन्तिम लै ला, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दो जहान दिसे जंगल जूह उजाड़ बेला, बण शेर भबक ना कोए सुणाईआ। जुगा जुगन्तर आदि अन्त तूं रहें इकेला, आपणी कल वरताईआ। हुण मैं वेखणी तेरी खेला, ख़ालक किवें ख़लक रुलाईआ। श्री भगवान कहे मैं चाढ़नहारा तेला, सगन इक्को वार मनाईआ। हुक्मे अन्दर कर के रेल पेला, फेर वेहला हो के तेरा रंग चढ़ाईआ।

❇ ६ माघ २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर ❇

आदि जुगादि खेल समरथ, समरथ पुरख आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी साचा रथ, बण रथवाही वेख वखाइंदा। वस्त अगम्मी एका वथ, वस्तू आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी वेखे तत्त, तत्तव आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवान इक्को मति, मति भेद ना कोए जणाइंदा। सति सतिवादी साचा सति, सतो गुण रूप समाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावा कमलापति, पतिपरमेश्वर नज़री आइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग दस्स, रहबर आपणा राह चलाइंदा। ईश जीव मेला हस्स हस्स, जगदीश

आपणी खुशी वखाइंदा। निझर सरोवर एका रस, अमृत अमर बूँद बरसाइंदा। सदा सुहेला मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, इक इकेला खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी कल धराइंदा। समरथ पुरख अगम्म अथाह, अक्ल कला अख्वाईआ। मेल मिलावा सहिज सुभा, बिन सुबह शाम कराईआ। वेखणहारा थाउँ थाँ, बिन ज़िमी असमान फिरे वाहो दाहीआ। जपावणहारा एका नाँ, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। वसावणहारा सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणे रंग रंगाईआ। समरथ पुरख पुरख बेअन्त, महिमा अकथ, कथी ना जाईआ। आदि जुगादि खेल खलंत, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। लेखा जाण जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म मणीआं मंत, मंत्र इक्को इक दृढ़ाईआ। मेल मिलावा साजण सन्त, सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण बणाए बणत, घड़न भंनणहार वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी खुशी वखाईआ। समरथ पुरख दीन दयाल, दयानिध अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण खेल कमाल, कमली चोला तन हंढ्ढाइंदा। जोती नूर बेमिसाल, मिसल विच ना लेख लिखाइंदा। सदा सुहेला घाले घाल, घाली घाल वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी मुर्शद मुरीदां सुणे हाल, मुरदे रूह आप जवाइंदा। अंमिउँ रस जाम दए प्याल, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। भाग लगाए काया खाल, माटी इक्को नूर चमकाइंदा। कूड़ा तोड़ क्रिया जंजाल, जीवण जुगत इक समझाइंदा। नाद अनादी वजाए ताल, ताल तलवाड़ा आप हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी कार कमाइंदा। समरथ कार अबिनाशी अचुत, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे रूह बुत्त, बातन ज़ाहर वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण प्यो पुत्त, पिता पूत वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर गोदी चुक्क, दो जहान रिहा उठाईआ। गुरमुख विरला पए उठ, लख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। सति सरूप बैठा चुप्प, अनबोलत राग ना कोए अल्हाईआ। जन भगतां उत्ते होए खुश, खुशी आपणी दए समझाईआ। आओ मैनूं लओ पुच्छ, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को घर वसाईआ। जिस ने दर्शन कीता झुक, निरगुण दाता नज़री आईआ। नाम ख़ज़ाना लए लुट्ट, बिन हथ्थां झोली दए भराईआ। करे प्रकाश अन्धेरे घुप्प, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। पूरब जन्म जो गए रुस, बिन कर्मां लए मिलाईआ। वेखणहारा चौदां लोक, पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। शब्द अगम्मी इक सलोक, सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। जिस साध सन्त लैणी मोख, आओ चल सच्ची सरनाईआ। आत्म अन्तर वज्जे चोट, नगारा इक्को नाद सुणाईआ। बाकी आहलणयों डिगे बोट, बिन पुरख अकाल गोद ना कोए उठाईआ। गुर पीरां दी कोई ना मिले वोट, बक्से सब दे भन्न वखाईआ।

अक्खर नाम जिन्नां रसना लए घोट, घूक सुत्ते लै ना सके अंगड़ाईआ। जिन्नां प्रभ मिल्या निर्मल हो के जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख कोई ना सोचे सोच, बिन सोचयां पार कराईआ। धुरदरगाही सच मलाही निरगुण दाता गया पहुंच, पूरी आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख समरथ समरथ अकाला, दीनां बंधप दीन दयाला, दीनन आपणे गले लगाईआ। दीन दयाल दयानिध सागर, सगला संग निभाइंदा। खेले खेल करीम कादर, करता कुदरत वेख वखाइंदा। करन आया सच्चा आदल, अदली इक्को फेरा पाइंदा। कलिजुग घटा वेखे बादल, बदली सब दी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा रंग वखाइंदा। समरथ रंग चाढ़े एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आत्म परमात्म साची टेक, टिक्का मस्तक ना कोए वखाईआ। बिन कलम शाही लिखे लेख, लेख सके ना कोए मिटाईआ। नज़री आए नेतन नेत, नित नित दरस वखाईआ। भगत भगवन्त करे हेत, हितकारी फेरा पाईआ। गुरमुख सज्जण लैण वेख, सृष्ट सबाई नेत्र अन्ध बणाईआ। जिस जन देवे आपणा भेत, सो भज्जे वाहो दाहीआ। ग़रीब निमाणे फड़ फड़ उठाए विच्चों खेत, खेत्रपाल मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिवें आपणी रुत्त बदलाईआ। पहलों जंम्यां महीने जेठ, अग्नी तत्त तपाइंदा। सरगुण हो के खेडी खेड, भेव कोए ना पाइंदा। लख चुरासी कर के गया झेड, चौदां विद्या माण मिटाइंदा। अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ काया विच्चों गया लेट, आपणा पासा आप बदलाइंदा। गोबिन्द कीता इक्को हेत, हित आपणे नाल मिलाइंदा। पिछला जाणे साचा लेख, लेखा आपणे रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी रुत्त आप बदलाइंदा। जेठ महीना छड्डी रुत्त, रुतड़ी आप बदलाईआ। छब्बी पोह गया उठ, गर्मीयों होई सर्दी, सर्दीयों दर्दीआं दर्द वंडाईआ। वड़ गया अन्धेरे घुप्प, नज़र किसे ना आईआ। चार जुग दे विछड़या रिहा पुच्छ, घर जा जा रिहा जगाईआ। मैं तुहाढ्ढे पिच्छे लोकां कोलों रिहा लुक्क, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। सब नूं वखाउदा रिहा ठुट्ठ, ठोकर नाम ना किसे लगाईआ। बिन भगतां गलवकड़ी पाए ना किसे घुट्ट, दूर दुराडे देवे धक्के लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रुत्त रुत्तड़ी दए वटाईआ। आपणी बदली रुत्त आप, हरि साचा खेल कराइंदा। जन भगतां बण माई बाप, पिता पूत गोद उठाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो के दस्सया जाप, दो अक्खर सोहँ आप पढ़ाइंदा। पार लँघण दा इक्को घाट, निक्का पत्तण आप सुहाइंदा। दूर दुराडी नेड़े आंदी वाट, वट्टा पिछला आपे लाहइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरगुण निरगुण हो के दिती दात, निरगुण सो हँ ब्रह्म आपे हो ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा।

❋ ६ माघ २०१६ बिक्रमी जसबीर सिँघ, जागीर सिँघ, दिलबाग सिँघ पिण्ड भोले के ज़िला गुरदासपुर ❋

परवरदिगार पर्दा चुक्कया, मुख नकाब ना कोए रखाइंदा। अबिनाशी करता रहे ना लुकया, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। बेपरवाह एका उठया, मुकामे हक़ खेल कराइंदा। श्री भगवान साहिब तुठया, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। शाह सुल्तान एका बुकया, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। परवरदिगार पर्दा लाह, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण खेल करा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। दरगाह साची धाम सुहा, थिर घर देवे माण वड्याईआ। अलख अलखणा अलख जगा, सदा इक्को आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही खेल अवल्ला, एकँकार आप कराइंदा। सच सिँघासण साचा मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। नूर नुरानी जोती अल्ला, बिस्मिल आपणी धार वखाइंदा। सच प्रकाश आपे बला, सति दुआरे डगमगाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, उच्च महल्ल सोभा पाइंदा। आदि जुगादी इक इकल्ला, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक सुहाइंदा। दर घर साचा सोभनीक, नूर नुराना आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण लाशरीक, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। सच निशाना लाए ठीक, दो जहानां वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण सति प्रीत, सति सतिवादी आप लगाइंदा। वसणहारा दूर नज़दीक, ज़ाहर ज़हूर खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा देवे चुक्क, नूरो नूर नूर दरसाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो बैठा रिहा लुक, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। शब्द अगम्मी हो के रिहा बुक्क, भबक आपणे नाम लगाईआ। निरगुण सरगुण वेखे उठ, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि परवरदिगारा, बेऐब नाम अख्वाइंदा। मुकामे हक़ सांझा यारा, लाशरीक सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण वसे धाम न्यारा, हरि पुरख निरँजण आपणा दर सुहाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दे सहारा, समरथ आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान कर पसारा, बेपरवाह वेख वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर तैयारा, निरगुण आपणा राह चलाइंदा। जन भगतां वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे आप, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। दोज़ख़ बहिश्त कर कर वास, खण्ड ब्रह्मण्ड आपणा

रंग रंगाईआ। लख चुरासी कर कर दासी दास, सेवक सेवा इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सति सतिवादी दे दे साथ, सगला संग निभाईआ। अक्खर वक्खर देवे गाथ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। किरपा कर चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आत्म परमात्म देवे पाठ, पूजा इक्को घर वखाईआ। लेख अलेख त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै आपणी गंढु पुआईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करनहारा हेत, ईश जीव करे कुड़माईआ। पंज तत्त वेखणहारा खेत, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे नेतन नेत, नित नवित्त कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार बेपरवाह करे खेल अगम्म अथाह, भेव अभेदा आप जणाईआ। मुख नक़ाब पर्दा लाह, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। सच संदेसा इक सुणा, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। रसूल रसूलां लए जगा, इस्म आज़म इक वखाइंदा। मुकामे हक़ कर रुशना, नूर ज़हूर आप प्रगटाइंदा। कलमा कलाम आप पढ़ा, कातब संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा, हरि निरँकारा आप सुणाइंदा। सति संदेसा एकँकार, इक इकल्ला आप जणाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, निरगुण निरगुण राग अल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर इक सुणाईआ। लोआँ पुरीआँ दे हुलार, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नूर आपणा कर रुशनाईआ। नूर ज़हूर कर रुशना, जलवा इक्को इक जणाइंदा। प्रगट हो हक़ ख़ुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। रुतबा जाणे दो जहान दोए दोए आपणी धार जणाइंदा। पीर पैगम्बर लए जगा, ईसा मूसा संग मुहम्मद हुक्म सुणाइंदा। चार यारी डंक वजा, एका राह वखाइंदा। अल्ला राणी पर्दा लाह, मुख घूंघट ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। खोल्ह लथ्थी नक़ाब, नुक्ता सब नूं आप जणाईआ। पीर पैगम्बर करो आदाब, सिर सजदा सीस झुकाईआ। प्रगट होया हक़ जनाब, अमाम अमामा वड वड्याईआ। जिस नूं ईसा कह के गया मेरा बाप, सो पुरख पुरखोतम फेरा पाईआ। जिस दा आदि जुगादि जपदे रहे जाप, जीवण जुगत रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान जिस दा दस्सदी रही पाठ, सो पाठशाला इक वखाईआ। वेखणहारा सर सरोवर तीर्थ ताट, गंगा सुरस्ती जमना इक्को धार वहाईआ। चौदां लोक चौदां तबक त्रैभवण अवण गवण खोल्हे हाट, ब्रह्मण्ड खण्ड एका घर वखाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। शब्द संदेसे रिहा दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। दर दुआरे मिलणा हस्स हस्स, धुर दरवाज़ा रिहा खुल्हाईआ। मुहम्मद पूरी करे आस, अमाम आपणा फेरा पाईआ।

तारा चन्द करे प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। मुरीद मुर्शद वेखे ख़ास, खाहश सब दी पूर कराईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दात, ख़ाली झोली दए भराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मुक्की वाट, पांधी नज़र कोए ना आईआ। अन्त होई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, पुत्तर धी ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया सज्जण साक, हरि का नाउँ ना कोए वखाईआ। नज़र आए ना रसूल पाक, पाकी पाक ना कोए जणाईआ। आत्म खोले ना कोए ताक, दीवा बत्ती ना कोए रुशनाईआ। शब्द अगम्म ना लाए साट, कपाटी बजर ना कोए तुड़ाईआ। लख चुरासी सुत्ती कूड़ी खाट, आत्म सेज ना कोए हंढ्ढाईआ। चार कुण्ट किसे ना मिल्या कमलापात, कँवल नैण नैण ना कोए मिलाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार प्रभ चरण दुआरे बैठे रहे झाक, आपणी झाकी ना कोए वखाईआ। पूरब लेखा करन याद, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। साहिब सुल्तान सुणे फ़रयाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्त आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दी महिमा बोध अगाध, ना कोई लिखे कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा इक्को एक, इक इकल्ला आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर साची टेक, परवरदिगार हुक्म मनाइंदा। जिस उपजाए मुल्लां शेख़, सो मसला हल्ल कराइंदा। लख चुरासी रिहा वेख, घट घट आपणा आसण लाइंदा। कलिजुग अन्तिम धरया भेख, भेखाधारी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक सुणाइंदा। सच सुनेहड़ा देवे संगी, हरि सच सच दृढ़ाईआ। करे खेल खेल बहुरंगी, रंगराता बेपरवाहीआ। दो जहान वजाए सरंगी, सारंगा इक्को इक उठाईआ। लख चुरासी कंड नंगी, पर्दा उपर कोए ना पाईआ। गोबिन्द सूरा इक भुयंगी, भुयंगम आपणा राह जणाईआ। पुरख अकाल कोलों वस्त मंगी, श्री भगवान झोली पाईआ। कलिजुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी आए तंगी, दस्त दस्त ना कोए मिलाईआ। सृष्ट सबाई होए पखण्डी, हरि का रूप ना कोए दसाईआ। मन वासना होए गंदी, सुगंधी सच ना कोए जणाईआ। दीन मज़्हब दी चले डण्डी, पुरख अकाल साचा मन्दिर ना कोए दरसाईआ। गा गा थक्कण बत्ती दन्दी, रसना जिह्वा कर हल्काईआ। आत्म लए ना कोए अनन्दी, निजानंद ना कोए चखाईआ। चढ़े चन्द ना नूर नौचन्दी, चौदस रूप ना कोए बणाईआ। वेले अन्त ना कटे कोई बंदी, बंदीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। राए धर्म दी पई फंदी, फाँसी गल ना कोए छुडाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां प्रभ अग्गे वस्त इक्को मंगी, वेले अन्त होणा सहाईआ। करे खेल सूरा सरबँगी, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढी, ढारस सके

ना कोए बन्नाईआ। जीव आत्मा होई रंडी, हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। आत्म परमात्म कोए ना गाए छन्दी, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पर्दा आप उठाईआ। पर्दा चुक्क चुकाया उहला, आलमीन आप जणाइंदा। प्रगट होया इक्को मौला, हर घट वेख वखाइंदा। चार कुण्ट जिस दा पाउदे गए रौला, अक्खर अक्खर नाल मिलाइंदा। सो साहिब पूरा करन आया कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। प्रगट होया उपर धौला, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। जिस ने घल्लया कृष्ना सौला, राम रामा सेवा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नूरो नूर डगमगाइंदा। नूरो नूर नूर नुराना, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण पर्दा लाहीआ। शब्द अगम्मी इक तराना, बिन तर्ज़ ताल सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव होए हैराना, हरि जू की की खेल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, पीर पैगम्बर रिहा उठाईआ। बल धराए मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी इक कमाईआ। गुर अवतारां देवे दाना, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच संदेसा इक फ़रमाणा, धुर संदेसा आप अलाईआ। वेले अन्त सर्ब पश्ताणा, पसचाताप जगत लोकाईआ। जिन्नां भुलया हरि भगवाना, भगवन देवणहार सज़ाईआ। वेखणहारा जगत जहाना, जीवण जुगत ना किसे जणाईआ। प्रगट होया इक्को काहना, नाम बंसरी हथ्थ उठाईआ। राम रमईया हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बन्ने गाना, अल्ला राणी सगन मनाईआ। चौदां तबक नैण शरमाणा, अक्ख अक्ख ना कोए रखाईआ। अञ्जील कुरान ना कोए ध्याना, तीस बतीस ना कोए पढ़ाईआ। नज़री आए इक अमामा, बेनज़ीर शहिनशाहीआ। कलमा कलाम जिस पढ़ाणा, उल्मा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा आपणा दए उठाईआ। पर्दा लाह वखाए मुख, मुख नज़र किसे ना आइंदा। मुर्शद मुरीदां मेटे भुक्ख, तृष्ना अग्नी आप बुझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी रखे कुक्ख, आप आपणे विच छुपाइंदा। नव नौ चार जो रिहा लुक, लोकमात वेस वटाइंदा। भगत भगवान जाए तुठ्ठ, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। सच सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाइंदा। लेखा जाणे काया बुत्त, पंज तत्त आपणा भेव जणाइंदा। आत्म परमात्म लए पुच्छ, पूरब लहिणा फोल फुलाइंदा। बिन भगतां किसे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। वेखो खेल चार जुग, चार यारी नाल मिलाईआ। तेई अवतारां औध गई पुग, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। भगत अठारां गए झुक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बूटे रहे सुक्क, हरे सिंच ना कोए कराईआ। गुर

दस रहे पुच्छ, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलिजुग ख़ाली हथ्थ किसे कोल नहीं कुछ, नौ खण्ड पृथ्मी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी श्री भगवाना, एका हुक्म जणाइंदा। रल मिल सारे बन्नो गाना, साचा सगन मनाइंदा। कलिजुग मिटे अन्त निशाना, निशाना कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा चुक्के वेद पुराणा, शास्त्र सिमरत विच समाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को दाना, आत्म परमात्म झोली पाइंदा। लख चुरासी साचा गाणा, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। सतिजुग साचा राह वखाणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। इक्को पीणा इक्को खाणा, इक्को मन्दिर सोभा पाइंदा। इक्को इष्ट देव गुरू मनाणा, गुरदेव इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर एका राहे लाइंदा। साचे राह लगाए हरि, हरि जू दया कमाईआ। चार जुग दे लए फड़, फड़ फड़ बन्धन पाईआ। एका अक्खर लओ पढ़, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। साचा मन्दिर वेखो चढ़, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस बणाया तुहाढ्ढा घर, सो धरनी धरत दए वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम किरपा कर, लोकमात वेख वखाईआ। भगत भगवान लगाए जड़, ना सके कोए उखड़ाईआ। लेखा जाणे सीस धड़, पंज तत्त माण रखाईआ। प्रगट हो नरायण नर, निर इच्छया पूर कराईआ। गोबिन्द दित्ता इक्को वर, पुरख अकाल वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा पर्दा आप चुकाईआ। पर्दा चुक्क आए नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया चुक्कण झेड़े, झेड़ा होर ना कोए वधाइंदा। भगवान भगत दे वसे खेड़े, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। भगतां मन चाउ घनेरे, घर मंगल एका गाइंदा। नाते जुड़े मेरे तेरे, मेरा तेरा संग ना कोए तुड़ाइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर हेरे फेरे, अछल छल आपणा खेल कराइंदा। गुरमुख सज्जण चाढ़े बेड़े, फड़ बाहों आप उठाइंदा। अन्तिम करे हक़ नबेड़े, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। भगतन मीता एकँकारा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी लै अवतारा, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती नूर कर उज्यारा, शब्दी डंक सुणाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदारा, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। प्रगट होया महाबली अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। नानक गोबिन्द करे प्यारा, चरण सरन सरन चरण सरनाईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ईसा दर बणे भिखारा, गल अल्फ़ी रिहा वखाईआ। मूसा डिगा मूँह दे भारा, जलवा नूर ना तक्कया जाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी इक अवतारा, जन्म मरन विच ना आईआ। वसणहारा

ठांडे दरबारा, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। कलिजुग प्रगट हो परवरदिगारा, चौदां तबकां वेखे थाउँ थाईंआ। दीन इस्लाम दए सहारा, करे खेल बेपरवाहीआ। राग रागनी वसे बाहरा, छत्ती राग नज़र ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करन निमस्कारा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, हरि ख़ालक ख़लक वखाईआ। मज़लूमा देवे जगत किनारा, ज़ुल्म ज़ालम आप मिटाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। रवि ससि सूरज चन्न करे पुकारा, पुनह पुनह तेरी सरनाईआ। गुर अवतार कढ्ढण हाढ़ा, हाए हाए करे सर्ब लोकाईआ। कलिजुग लुट्टी जाए दिन दिहाढ़ा, आपणा बल आप वधाईआ। गुरमुख विरला दिसे लाड़ा, जिस सतिगुर शब्द घोड़ चढ़ाईआ। लख चुरासी होए ख्वारा, विभचार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला आत्म घर, परमात्म रंग रंगाइंदा। सुरत सवाणी शब्दी फड़, फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। सच सुहञ्जणी सेजा चढ़, सोभावन्त सुहाइंदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, निवण सो अक्खर इक पढ़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लए वर, नारी कन्त रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त इक्को घर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पर्दा आपे लाहइंदा। हरिजन पर्दा गया लथ्थ, द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। नज़री आया इक समरथ, समरथ मिल्या बेपरवाहीआ। पंच विकार तोड़ी नथ्थ, डोरी आपणे तन्द बंधाईआ। आत्म परमात्म इक दूजे दा गायण जस, सोहँ करे पढ़ाईआ। श्री भगवान सचखण्ड निवासी आए नठ्ठ, काया मन्दिर मेल मिलाईआ। नाता तोड़े तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल के पए हस्स, सोहँ हँसा राग सुणाईआ। भगत भगवन्त इक दूजे दे होए वस, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। भगवान भगत दुआरे गया ढठ्ठ, आपणा आप मिटाईआ। भगत कहे तूं पर्दा ढक, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। भगवान कहे तूं मेरा साक, लोकमात करी कुड़माईआ। भगत कहे तूं मेरा खोल्ह्या ताक, जिध्धर वेखां तूही नज़री आईआ। तेरा नूर इक्को पाक, रसूल दूसर ना कोए दसाईआ। मेरी अगली पिछली चुक्की वाट, प्रभ मिल्या पांधी राहीआ। मेरा पर्दा गया पाट, पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। लहिणा टुट्टया ज़ात पात, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर सारे फड़, इक्को घर वखाईआ। पीर पैगम्बर वेखो दरवाजा, हरि हरि जू आप वखाइंदा। जिस गृह वसे ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। आदि अन्त जिस साजण साजा, जुग जुग वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, सच सुअम्बर आप बणाइंदा। प्रगट होया देस माझा, सम्बल

आपणा डेरा लाइंदा। नव नौ चार फिरे भाजा, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। शाहो भूप वड राजन राजा, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। जन भगतां एथे ओथे रखे लाजा, दो जहान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां मारे वाजां, बिन रसना जिह्वा आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां शाह नवाबा, देवणहार हयात आबा, वखावणहार सच महिराबा, वजावणहार तन रबाबा, अहिबाब आपणा मेल मिलाइंदा। रसूलां नाल बणे रसूल, रसम आपणी आप जणाइंदा। रसूल करे आप कबूल, कामल आपणा हुक्म मनाइंदा। जो रसूल जाए भूल, तिस अन्दर रसूल हो हुक्म मनाइंदा। आपणा हुक्म देवे माकूल, महिबूब आपणा खेल वखाइंदा । बण रसूल देवे चरण धूल, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। बण साहिब कन्त कन्तूहल, शहिनशाह आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसूल रसूलां विच समाइंदा। निरगुण सरगुण दो अक्खर, बिन अक्खरां आप बणाइंदा। प्रेम प्यार विच रख्या सत्थर, दोहां बंद कराइंदा। लेखा लिखे ना कोई पत्र, कातब कलम ना कोए उठाइंदा। जिस जन देवे ज्ञान निज अन्तर, अन्तर आत्मा आप पढ़ाइंदा । सो जाणे ढाई अक्खर मंत्र, सो मंत्र ढय्या गोबिन्द झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को ढय्या जगत नईया पुरख अकाल पकड़े बहीआ, दूजा सईया नज़र कोए ना आइंदा। ढाई अक्खर बोध अगाधा पंडत लिखण पढ़न विच ना आईआ। आदि जुगादा सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। भेद ना पाए कोई जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज पर्दा ना सके लाहीआ। जिस प्रभ आप बणाए बणत, आपणी करे पढ़ाईआ। सो साहिब अग्गे करे मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तिस इशारा मार समझाए सैनत, साह साह समाईआ। उह अक्खर वखाए बिन अक्खां ऐनक, पैंती अक्खर अल्फ़ ये सार कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अक्खर निरगुण धार निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण दए समझाईआ।

✻ १० माघ २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ मोहण सिँघ दे गृह भोले के ज़िला गुरदासपुर ✻

सचखण्ड खेल हरि जगदीश, जगदीश्र आप कराइंदा। आदि जुगादि इक हदीस, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे झुका सीस, निउँ निउँ सजदा सर्ब जणाइंदा। जुग चौकड़ी पीसण पीस, दो जहानां वेख वखाइंदा। छत्र सोहे एका सीस, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। छत्र सीस सोहे ताज, तख्त निवासी वड वड्याईआ । पुरख अकाल गुरू महाराज, महिमा अगणत गणी

ना जाईआ। निरगुण रच रच आपणा काज, करता पुरख वेखे चाईं चाईंआ। आदि जुगादी इक्को साथ, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जुगा जुगन्तर दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे माही महिबूब, नूर नुराना नज़र किसे ना आइंदा। ना कोई तन ना वज़ूद, ख़ाकी ख़ाक ना रूप वटाइंदा। परवरदिगार आपणा जाणे आप सबूत, सुहबत आपणे हथ्थ रखाइंदा। वसणहारा सच अरूज, शहिनशाह आपणा आसण लाइंदा। आपे जाणे सति हदूद, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे विच रहे महिदूद, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। भेव अभेद ना खोल्हे हाल, असलीअत हथ्थ किसे ना आईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर सुआमी सचखण्ड दुआरे रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। सुत दुलारा खेल अपारा एकँकारा लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। धर्म बहाए सच्ची धर्मसाल, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। अबिनाशी करता वसे नाल, निराकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म चलाईआ। सचखण्ड अन्दर खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो तैयारा, निरगुण आपणी धार प्रगटाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण दीपक जोत जगाइंदा। श्री भगवान सच हुलारा, अबिनाशी करता इक निशान उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उच्च महल्ला इक इकल्ला अनभव प्रकाश पुरख अबिनाश अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप कराइंदा। बेपरवाह सदा बेअन्त, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार प्रगटाईआ। आदि जुगादी नार कन्त, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। बणावणहारा साची बणत, घाड़न घड़त लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख परमेश्वर जुगादि आपणा बन्धन पाईआ। आदि पुरख आपणी रचना रच, रच रच वेख वखाइंदा। जुगादि करे सच्चो सच, जुग जुग सेव कमाइंदा। निरगुण हो के निरगुण रिहा नच्च, सरगुण रंग ना किसे चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनासा, वेखणहारा खेल तमाशा, जोती जाता आपणा नूर धराइंदा। जोती जाता नूर अवल्ला, रूप नज़र किसे ना आईआ। मुकामे हक़ वसाए इक महल्ला, महिफ़ल आपणी आप लगाईआ। निरगुण जोती दीपक बला, प्रकाश प्रकाश लए चमकाईआ। आदि जुगादि अछल अछल्ला, वल छल आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड आपणा पर्दा आप उठाइंदा। सचखण्ड दुआरा एकँकारा, नर निरँकारा

एका धार चलाइंदा। रूप अनूप बेऐब परवरदिगारा, रेख रंग ना कोए रखाइंदा। शब्दी शब्द शब्द अपारा, लेखा जाणे सुत दुलारा, जन जननी गोद वड्याइंदा। दाई दाया सेवादारा, वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। अंस बंस सरबंस कर तैयारा, सहँसर सहँस रूप वटाइंदा। देवणहारा सति भण्डारा, अगम्मड़ी दात वरताइंदा। वजावणहारा तत्त सतारा, नाद अनादी राग अल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, त्रै पंज आपणा रंग चढ़ाइंदा। गुर अवतार कर प्यारा, पीर पैगम्बर गंढु पुआइंदा। खाणी बाणी खोल्ह कवाड़ा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी नव नौ चार वेखे वारो वारा, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। कागद कलम शाही कर वणजारा, अक्खर अक्खर वणज कराइंदा। जगत विद्या भर भण्डारा, चौदस चौदस घर बहाइंदा। लेखा जाण रवि ससि सूरज चन्द सितारा, मण्डल मण्डप पर्दा लाहइंदा। बोध अगाध ज्ञान ज्ञान गुरदेव इष्ट निरँकारा, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म बण सहारा, शाह पातशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। जुग चौकड़ी लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा सोभावन्त वेखणहारा एका कन्त, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। पुरख अकाल श्री भगवान परवरदिगार ना मरे न पए जम्म, जननी जन ना रूप वटाइंदा। सदा सुहेला इक इकेला गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण बेड़ा देवे बन्न्ह, बण मलाह खेवट खेटा करे हित्त माँ प्यो बेटा, पूत सपूता गोद उठाइंदा। एथे ओथे दो जहान दा बणे नेता, नित नित आपणा वेस वटाइंदा। भगत वछल करे सदा सद सच्चा हेता, हितकारी फेरा पाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा काया खेता, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पर्दा आपे लाहइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीन मज़्ब दा देंदा रिहा ठेका, छोटी छोटी वंड वंडाइंदा। लोकमात कराउँदा रिहा पेशा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाउँ धराइंदा। आपणा सच ना दस्सया किसे लेखा, उंगलीआं उत्ते सब नूं अक्खर पढ़ाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त निरगुण सरगुण पाया भुलेखा, भाण्डा भरम ना कोए तुड़ाइंदा। कोई मूंड मुंडाए कोई धारी केसा, कोई लबां जगत कटाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि इक नरेशा, निरगुण नूर ज़हूर जणाइंदा। सृष्ट सबाई लख चुरासी जीव जंत साध सन्त ऊँच नीच राउ रंक सब नाल करे हेता, वड्डा छोटा ना कोए रखाइंदा। जिस जन खोल्हे आपणा भेता, भेव अभेद आप चुकाइंदा। लेखा जाणे औलीआ पीर शेखा, पीर पैगम्बर आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

४६१
१३

खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। ठेका देवे ठेकेदार, ठोकर इक्को हक़ लगाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। सच संदेसा दे संसार, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर बोल जैकार, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। नूर नुराना परवरदिगार, ख़ाकी तन ना कोए हंढुाईआ। साकी बणे दीन दयाल, सच आब इक प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी खेल कराया, निरगुण सरगुण धार। धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया, शब्द अगम्मी बोल जैकार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिखाया, गीता ज्ञान दे आधार, अञ्जील कुराना रंग चढ़ाया, नबी रसूलां दे विचार। बाणी तीर निराला बाण लगाया, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका घर पावे सार। चारे खाणी धंदे लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। साचा खेल जुग जुग कर कर, हरि करता वेख वखाइंदा। निरगुण रूप सरगुण धर धर, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी एका पढ़ पढ़, लख चुरासी जीव जंत पढ़ाइंदा। पंज तत्त काया अग्नी सड़ सड़, ख़ाकी तन ना कोए वखाइंदा। साचे मन्दिर आपे चढ़ चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। आपणी मरनी आपे मर मर, मर जीवत एका घर बहाइंदा। लेखा जाणे नारी नर नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। नाउँ जपाए हरी हरि हरि, हरि विष्नूं भगवान एका नाम प्रगटाइंदा। लेखा जाणे दरवेश दर दर, विष्न ब्रह्मा शिव अलख जगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर फड़ फड़, फड़ बाहों हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अकाला, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सच दुआरे आसण लाइंदा। सच दुआरे लग्गा आसण, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता धार चलाईआ। लख चुरासी कर कर वासन, घट घट रिहा समाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी अकाशन, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। गोपी काहन पाए रासन, बंसरी इक्को नाम वजाईआ। भगत भगवन्त बणे साथन, सगला संग निभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर झाकण, नेत्र नैण नैण उठाईआ। अग्गे रहे ना कोई आकन, सीस सब दे रिहा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म मनाईआ। सचखण्ड दुआरे सच फ़रमाणा, हरि साचा सच जणाइंदा। तख्त निवासी इक्को राणा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सब नूं मन्नणा पए भाणा, भाणे अन्दर आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण लओ एक, एकँकार जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ साची टेक, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। पिछला सारे छड्डो हेत, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। कलिजुग नेत्र लओ वेख, सृष्ट सबाई दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होया भेख, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। गुरू

ज्ञान ना कोए उपदेश, मंत्र हरि ना कोए दृढ़ाईआ। कोई पूजे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, कोई शंकर सीस निवाईआ। कोई पंज तत्त करे आदेस, इष्ट ईशर ना कोए रखाईआ। कोई ईसा मूसा मुहम्मद करे हेत, सजदा सीस रहे झुकाईआ। कोई नानक गोबिन्द गोदी रिहा खेड, आपणा माण मिटाईआ। पुरख अकाल दा किसे ना पाया भेत, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस दे पिच्छे सीस विच पई रेत, कलिजुग तत्ती अग्ग लगाईआ। प्रगट होया इक नरेश, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। चलण देवे ना किसे दी कोई पेश, पुश्त सब दी रिहा हलाईआ। नेत्र लोचण लैण देख, बिन अक्खां दए वखाईआ। कोई रहिण ना देवे मुल्लां शेख़, पीर पैगम्बर पन्ध मुकाईआ। पंडत पांधा कोई ना देवे पिछली टेक, सब दा लेखा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ा सुंञा करे खेत, सच किरसाणा इक्को फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया चुक्के चूक, हरि सतिगुर आप चुकाइंदा। माया ममता देवे फूक, नाम फुंकारा इक्को लाइंदा। चार वरन वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। नाम अगम्म इक अतोट, वरन बरन आप वरताइंदा। हउमे हंगता कढ्ढे कुट्ट, शब्द खण्डा इक चमकाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना आप झिराइंदा। बजर कपाटी जाए फुट्ट, द्वैती पर्दा आपे लाहइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। शब्द अगम्मी लाए चोट, अनहद राग सुणाइंदा। गुरमुख उठाए आहलणयों डिगे बोट, सतिगुर साची गोद बहाइंदा। आत्म परमात्म खोल्हे सोत, सुरती शब्द नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे ओत पोत, पुत्त पोतरे सोभा पाइंदा। माण मुकाए चौदां लोक, चौदां तबकां डेरा ढाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पढ़न इक सलोक, सोहँ ढोला इक सुणाइंदा। सर्ब जीआं दी सच्ची मोख, मुक्ती मुफ्तो मुफ्त वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण धारा लोकमात वेख वखाइंदा। लोकमात वेखे पाख़ाक, ख़ाकी ख़ाक दया कमाईआ। जन भगतां दस्से सच हालात, अहिवाल दए समझाईआ। लख चुरासी नाता तुटा कायनात, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई इक्को आब हयात, सच प्याला दए प्याईआ। भेव चुकाए बातन बात, ज़ाहर ज़हूर वड वड्याईआ। दरस दिखाए साख्यात शनाख़त आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरेश दो जहानां रिहा वेख, एथे ओथे निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को करे पढ़ाईआ। सो कलन्दर जो हुक्मे नच्चे, नच्च नच्च नाच वखाईआ। बिन हुक्मे सारे दिसण कच्चे, कोटन कोटि वेस वटाईआ। दरगाह साची सोई सजे, जिन्हां सच्चा मिल्या बेपरवाहीआ। पैगम्बरां विच्चों ओहो अच्छे, जिन्हां अच्छी तरां समझाईआ। प्रेम रस विच साची रत्ते, रत्ती रत्त सुकाईआ। मनसूर शमस तबरेज़ रस साचे चट्टे, सृष्ट सबाई गए वखाईआ। दोवें होए पक्के,

पक्की पुरख अकाल कराईआ। मूसा मूँह दे भार ढठ्ठे, अद्धा अद्धविचकार रहि जाईआ। कलन्दरां विच आप कलन्दर वड़ के हस्से, अन्दरे अन्दर नूर रुशनाईआ। दूजी गल जे होर कोई दस्से, झूठी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, कला कुदरत कादर करीम रहीम रहमान रहमत आप कमाईआ।

❇ १० माघ २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह भोले के ज़िला गुरदासपुर ❇

साचा हुक्म हरि निरँकार, दो जहान रिहा डराईआ। शब्दी सुत करे निमस्कार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ब्रह्मा कूक कूक करे पुकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। शंकर सिर विच पाए छार, शहिनशाह भुल्ल कदे ना जाईआ। त्रैगुण माया होई ख्वार, सांतक सति ना कोए कराईआ। पंज तत्त ना कोए आधार, रंग सूरा सरबँग ना कोए चढ़ाईआ। गुर अवतार गए हार, हरि का भेत कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर फिर फिर थक्के वारो वार, वारता लिख ना किसे मुकाईआ। लेखा जाणे ना कोए धुर दरबार, धुर दी आवाज़ सर्ब शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म मन्नणा पैणा, मनसा सब दी आप गवाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे नैणां, नेत्र अक्ख आप खुल्हाइंदा। तिन्न पंज अन्तिम डेरा ढहिणा पैणा, बुरज रहिण ना पाइंदा। गुर अवतारां भाणा कहिणा पैणा, सिर सिर भाणा आप मनाइंदा। अन्तिम रल के सब ने इक दुआरे ढहिणा, सच दुआरा इक वड्याइंदा। सोहँ ढोला दो जहानां कहिणा, कह कह शुकर मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाइंदा। साचा हुक्म देवे सख्त, सख्ती इक जणाईआ। लेखा जाणे कीट हस्त, हस्त कीट रिहा समाईआ। दो जहानां इक्को वस्त, वस्तू आपणा नाम वरताईआ। लहिणा देणा चुकाए दस्त बदस्त, दस्त बरदार करे लोकाईआ। लेखा जाण अर्श फ़र्श, फेरा आपणा आपे पाईआ। दो जहान निरगुण दरस, सरगुण चले ना कोए चतुराईआ। भगत भगवन्त मेटे हरस, हवस तृष्ना दए गंवाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। चार जुग रहे भटक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कोटन कोटि साध सन्त अद्धविचकारे रहे लटक, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर कलिजुग वेखण अन्तिम वक्त, पुरख अबिनाशी आवे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप जणाइंदा। ना कोई दीसे राजा राणा, रईअत रंग ना कोए वखाइंदा। राग नाद ना कोए गाणा, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाइंदा। योद्धा

सूरबीर ना कोए माणा, बली बल ना कोए वधाइंदा। सब नूं मन्नणा पए भाणा, सिर ताज ना कोए रखाइंदा। बिन हरि नामे होया अन्धा काणा, जगत जीवण जुगत नेत्र ना कोए खुल्हाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपहिचाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक अल्हाइंदा। साचा हुक्म इक अल्हा, अलहिदगी सब दी दए कराईआ। लहिणा देणा दए मुका, मुक्का आपणा नाम वखाईआ। सब दे हथ्थ टुक्कर रुक्खा दए वखा, घर घर मधूकड़ी रिहा मंगाईआ। हुक्का टोपी दए भंना, भाण्डा सब दा साफ़ कराईआ। जो लुका दरस दए वखा, आपणा पर्दा लाहीआ। दो जहान दा भुक्खा पुरख अबिनाशी जाए आ, लख चुरासी आपणे अन्दर लए लुकाईआ। जो जन सरनाई झुका, तिस लए बचा, बचत इक्को इक वखाईआ। हरिजन रखे आपणी कुक्खा आपणा पर्दा पा, तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाए जगत जुग, जीवण जुगत आप जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों चुग, आपणा मेल मिलाइंदा। आपे जाणे डाल मुढ्ढ, पत डाली वेख वखाइंदा। जन भगतां अन्दर आत्म सेजा चढ़े कुद्द, सच सिंघासण आसण लाइंदा। डेरा ढाहे मन मति बुध, साची सिख्या इक समझाइंदा। त्रैभवण दी देवे सुद्ध, अवण गवण मिटाइंदा। लेखा जाणे आपणा गुज्झ, भेव अभेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग चाढ़े रंगीला, रंगत आपणा नाम वखाईआ। गुर शब्दी बणया मात वसीला, वसल इक्को नाम जणाईआ। हरि भगत बणाए जगत कबीला, भगवन दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम हरिजन मिलण दा कीता हीला, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे सोहँ दान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका गंढु पवाईआ।

❇ १० माघ २०१६ बिक्रमी गिरधारी लाल दे गृह भोले के ज़िला गुरदासपुर ❇

हरि का ढोला साचा गीत, आदि अन्त इक्को नाम दृढ़ाइंदा। भेव खुल्हाए साहिब अतीत, त्रैगुण पर्दा आपे लाहइंदा। आत्म परमात्म करे ठांडी सीत, सीतल धारा इक वहाइंदा। काया अन्दर वखाए मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ सोभा पाइंदा। नज़री आए हरि अनडीठ, जलवा नूर इक धराइंदा। वसणहारा सदा चीत, चेतन हरिजन आप कराइंदा। आदि जुगादी अवल्लड़ी रीत, जुग करता आप कराइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां तबकां वेख वखाइंदा। पीर पैगम्बरां निशाना दस्से ठीक, ठीकर सब दे भन्न वखाइंदा। अन्तिम नेड़े आई तरीक, तहिकीकात आप कराइंदा। वेखणहारा हक़ हकीक, हाज़त

सब दी फोल फुलाइंदा। नूर इलाही लाशरीक, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। वेखणहारा सच प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला इक जणाइंदा। साचा सोहला नाम मृदंग, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। हरि पुरख निरँजण सूरा सरबँग, एकँकारा कारे लाइंदा। आदि निरँजण करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सच दुआरे बैठा लँघ, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान चढ़ाए रंग, रंग रंगीला इक अख्वाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मंगे मंग, आपणे अग्गे आपणी झोली डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। मंगे मंग बण भिखारा, भिखक आपणी दया कमाईआ। लेखा जाण धुर दरबारा, धुर दी धार जणाईआ। जुग चौकड़ी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, मेल मिलावा सहिज सुखदाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग देंदा रिहा नाम सहारा, नाउँ निरँकारा कर पढ़ाईआ। आदि शक्ति नूर उज्यारा, चतुर्भुज नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्को इक सुणाईआ। धुर संदेसा हरि का नाउँ, हरि सज्जण आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहों, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। भगत भगवान मिलण दा रखे चाउ, चाउ घनेरा इक समझाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। लख चुरासी पाए राहो, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे धंदे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक दृढ़ाइंदा। साचा मंत्र नाम अगम्म, हरि अगम्मड़ा आप जणाईआ। जणावणहारा आपणा कम्म, करनी करता आप कमाईआ। सदा सुहेला बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतारां देवे सच्चा धन, धन ख़ज़ीना इक वरताईआ। लेखा जाणे जननी जन, बणें जणेदी माईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा डंन, नित नवित्त वेस वटाईआ। भगत भगवान राग सुणाए कन्न, अक्खर वक्खर ना कोए पढ़ाईआ। कर प्रकाश साचे चन्न, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाईआ। साचा नाम सो पुरख निरँजण, हँ ब्रह्म आप जणाइंदा। बजर कपाटी तोड़े पत्थर, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। पंच विकारा लाहे सत्थर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। आप पढ़ाए आपणा निष्अक्खर, निज नेत्र दरस कराइंदा। कोई ना फोले दूजा पत्र, पाती कमलापाती आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक प्रगटाइंदा। साचा नाम आदि अन्त, इक्को करे जणाईआ। जुग चौकड़ी महिमा अगणत, गुर अवतार

रहे जस गाईआ। सारे कहिण प्रभू बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन मन्नत, दोए दोए बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर नाता तुटा बहिश्ती जंनत, ज़ाहर ज़हूर इक्को हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक समझाईआ। साचा मंत्र सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम धरया वेसा, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। वसणहारा सम्बल देसा, देस दसन्तर फेरा पाइंदा। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाए नज़र ना आइंदा। लेखा जाणे विष्न ब्रह्म महेष गणेशा, गणपति आपणे रंग रंगाइंदा। भेव खुल्हाए तेई अवतार अठारां भगत जाणे लेखा, ईसा मूसा मुहम्मद आपणी गंढु पवाइंदा। दस गुर जाणे हेता, हितकारी खेल कराइंदा। आपे बणया सब दा नेता, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण रूप सरगुण वेखा, सार आपणी ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक्को नाम, दो जहानां प्याए जाम, ब्रह्मण्ड खण्ड आप वरताइंदा। दो जहान खोल्हे अक्ख, नेत्र नैण खुल्हाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, परम पुरख वेख वखाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। अन्तर आत्म आपे वस, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। ईश जीव देवे रस, जगदीश ख़ुशी मनाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। साचे मन्दिर बहे सज, सच सिँघासण आसण लाईआ। ताल तलवाड़ा इक्को जाए वज्ज, अनहद राग सुणाईआ। शरअ शरीअत भाण्डा जाए भज्ज, धर्म अधर्म ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम दए वड्याईआ। इक्को नाम वड्डा वड, हरि वडा आप वड्याइंदा। आपणे विच्चों आपे कढ्ढ, थिर घर डेरा लाइंदा। दो जहान वजाए नद, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। विश्व बणाए आपणी यद, विष्न ब्रह्मा शिव गोद सुहाइंदा। लख चुरासी देवे दाद, त्रै पंज मेला आप कराइंदा। शब्द जणाए बोध अगाध, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जगत निशाना देवे गाड, रीती नीती लेखा लाइंदा। आपे बैठा रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को नाउँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आपणा नाउँ एका एक, एक एक वड्याईआ। जुग चौकड़ी दे दे टेक, गुर अवतार सेवा लाईआ। गृह मन्दिर हरि जू आपे वेख, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। भगत भगवान दस्से भेत, पर्दा दूई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री जोत इकग्गरी, इक्को इक वखाईआ। सच समग्री साची दात, हरि साचा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवन्त बन्न्हे नात, दूजा संग ना कोए निभाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे साथ, सगला

संग आप हो जाइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शाही वंड ना कोए वंडाइंदा। कर किरपा पार कराए जगत घाट, साचा पत्तण इक सुहाइंदा। धुर दी देवे अगम्मी दात, नाम वणजारा हट्ट खुल्हाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। नाता तोड़े ज़ात पात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर वखाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, कन्त कन्तूहल कँवल नैण मुक्ट बैण मुकन्द मनोहर लख़मी इक्को नज़री आइंदा। सच सुहञ्जणी गाए गाथ, सोहँ ढोला इक्को गाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी मुक्की वाट, पांधी होर ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को ढोला सोहँ रूप सच विचोला, आदि पुरख प्रभ बोलया बोला, बोला हथ्थ किसे ना आइंदा। सोहँ बोला निरगुण तोला शब्द विचोला, जुग जुग वेस वटाईआ। कोटन कोटि नाम सिफ्ती पावण रौला, रंग रलीआं रहे मनाईआ। बिन सतिगुर पूरे किसे ना पर्दा खोल्हा, घर करी ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त नाम डंका राउ रंकां रिहा सुणाईआ। नाम डंका वज्जे जग, जागरत जोत जगाइंदा। निरगुण सरगुण खेल समरथ, समरथ धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां मार्ग दस्स, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाइंदा। अन्तिम पंज तत्त खेड़ा सब दा होया भठ्ठ, थिर रहिण कोए ना पाइंदा। लिख लिख लेखा जगत गए दस्स, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। आपणी करनी पिच्छे गए छड्ड, करता आपणा हुक्म मनाइंदा। दीन मज़्हब अड्डो अड्ड, रहबर राह वखाइंदा। आख़र वेखण इक्को यद, आदि इक्को नज़री आइंदा। पीर पैगम्बर जिस उपजाए तिस आपणे कोल लए सद्द, सदा आपणा हुक्म मनाइंदा। कोटन कोटि काल गए लद्द, काल सब दा डेरा ढाइंदा। कलिजुग अन्तिम पुरख अबिनाशी वेखण आया हद्द, हदूद आपणी ना किसे समझाइंदा। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लए लभ्भ, भगत भगवान आपणा मेल मिलाइंदा। रातीं सुत्यां सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द आप जणाइंदा। कर प्रकाश निरगुण चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा । जुग जन्म दे विछड़यां पाए ठंड, अमृत धारा मुख चुआइंदा। भगत भगवान मिटे रंडेपा रंड, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, पर्दा मुख तों आपे लाहइंदा। बंदीख़ाना तोड़े बंद, बन्धन आपणे नाम पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ढोला इक सुणाइंदा। सतिजुग ढोला साचा मंत, मंत्र आप दृढ़ाईआ। लेखा जाण आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल कराईआ। हरिजन मेला नार कन्त, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। नाता तुटे जीव जंत, जीवण जुगत दए जणाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। सति सतिवादी साची संगत, चार वरन इक सरनाईआ। बरन अठारां इक्को पंगत, एका रस दए चखाईआ।

नाता तोड़े भुक्ख नंगत, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व आपणा खेल कराईआ। विष्नूं धार विश्व भगवाना, एका एक रखाइंदा। सतिजुग साचा बन्ने गाना, सगला संग निभाइंदा। आत्म परमात्म राग तराना, तुरीआ डेरा ढाइंदा। सुफ़न सखोपत जागरत खेल महाना, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। कलमा नबी इक पढ़ाना, कायनात आप समझाइंदा। सच्चा राम हो प्रधाना, रमईया आपणा डंक वजाइंदा। एका कृष्ना वड बलवाना, सीस जगदीश सोभा पाइंदा। एका बंसरी सुणाए दो जहाना, नाम गाणा एका गाइंदा। एका चिल्ला तीर कमाना, धनुश इक्को इक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब वखाए इक सुअम्बर, दूजा नूर ना कोए जणाइंदा। दूजा नूर ना कोए चानण, निरगुण वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी इक्को ज़ामन, वेले अन्त दए छुडाईआ। जिस उपजाया कृष्ना राम रामन, ईसा मूसा मुहम्मद करी कुड़माईआ। जिस नानक गोबिन्द खेल वखाया दो जहानन, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। सो साहिब समरथ श्री भगवानन, भगवन एका रंग वखाईआ। भगतां बन्ने साचा गानन, मौली तन्द ना कोए जणाईआ। आत्म अन्तर कराए अशनानन, अठ्ठसठ्ठ नहावण कोए ना जाईआ। मन हँकारी मारे रावण, सति सतिवादी दए मिटाईआ । दरस दिखाए आमणो
४९९
१३
सामणे, पर्दा परदे विच्चों चुकाईआ। लेखा जाणे क्षत्री ब्रह्मण, शूद्र वैश पर्दा दए उठाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग फड़ाए साचा दामन, दामनगीर फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर करन सलामन, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरी इक्को सदा आवाज़ बांगन, कूक कूक अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाउँ इक समझाईआ। साचा नाउँ सतिजुग रुत्त, सोहँ रूप वटाइंदा। खेल खलाए अबिनाशी अचुत, चेतन धार आप चलाइंदा। निरगुण अन्दर निरगुण उठ, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। लेखा जाणे पिता पुत्त, गुर चेला वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ आपणा हुक्म मनाइंदा। सोहँ शब्द अनमंगी मंग, आदि आदि वरताईआ। अन्त वेखे सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ । भगत भगवान सुणाए छन्द, संसा रोग चुकाईआ। जन्म जन्म दा कटे बंध, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन इक्को अक्खर करे पढ़ाईआ। इक्को अक्खर हरिजन पढ़ना, हरि साचा आख सुणाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे वड़ना, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। लहिणा चुक्के मरना जम्मणा, जन्म मरन विच ना आइंदा । साची तरनी गुरमुख तरना, तारनहारा दया कमाइंदा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म

प्रभ पल्लू फड़ना, फड़या लड़ ना कोए छुडाइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़ना, जिस दा डण्डा नज़र किसे ना आइंदा। पुरख अकाल इक्को वरना, दूजा कन्त ना कोए हंढ्ढाइंदा। साहिब सच्चे दी साची सरना, भय भ्यानक सर्ब चुकाइंदा। भगत भगवान आप आपणे जिहा करना, जिस जन आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे देवे वर, सोहँ ढोला लैणा पढ़, बिन पढ़ियां पार कराइंदा।

❇ १० माघ २०१६ बिक्रमी भगवान सिँघ महिता चौक ज़िला अमृतसर ❇

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मर्दाना, सूरबीर आपणा बल धराइंदा। एकँकारा नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता धुर फ़रमाणा, सच संदेसा आप सुणाइंदा। श्री भगवान सच निशाना, दो जहानां आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। सचखण्ड वसे सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। शाहो भूप बण राज राजाना, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची

५०० १३
करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतारा, इक इकल्ला आप कराइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द अगम्मी कर उज्यारा, सच जैकारा इक सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे राणा, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। पहलों मन्ने आपणा भाणा, सद भाणे विच समाईआ। लेखा जाण दो जहानां, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म मनाईआ। तख्त निवासी नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, भेव कोए ना आइंदा। आदि आदि आपणा प्यार आपे ल्या ला, पीर पैगम्बर गुर अवतार आप समझाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, त्रैगुण माया पंज तत्त बन्धन आपे पाइंदा। लख चुरासी घाड़त लए घड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। बोध अगाधा शब्द जणा, धुर संदेसा नर नरेशा एका एक अल्लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अंस बंस सरबंस आप सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी करने योग, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। लेखा जाणे निरगुण सरगुण सच संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा

साची चोग, नाम रस आपणा आप चखाइंदा। वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। नाम निधान लगाए चोट, सच नगारा इक वजाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वंडण वंडे आप, आपणी दया कमाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ दाता बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी नव नौ चार चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, साचे धंदे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी खेल अपारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, पीर पैगम्बर आपणा हुक्म मनाइंदा। शब्द अगम्मी सच जैकारा, दो जहानां आप सुणाइंदा। लिखण पढ़न तो वसे बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। कागद कलम नाल शाही करदा रिहा इशारा, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। पुरख अकाल सब तों वसे बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक जणाइंदा। साचा हुक्म हरि का भाणा, सद भाणे आप समाईआ। जुग चौकड़ी खेल महाना, नव नौ चार रिहा हंढ्ढाईआ। योद्धा सूर मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाईआ। लेखा जाणे दो जहाना, दोए दोए आपणी कार कमाईआ। देवणहारा सच फ़रमाणा, गुर अवतार पीर पैगम्बर घर साचे करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक मनाईआ। हुक्मे अन्दर रख अवतार, आपणा हुक्म जणाइंदा। हुक्मे अन्दर नाद धुनकार, शब्दी राग अलाइंदा। हुक्मे अन्दर कर पसार, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। हुक्मे अन्दर करे कार, कार करनी करता आप कमाइंदा। हुक्मे अन्दर कटे वगार, बण वगारी फेरा पाइंदा। हुक्मे अन्दर लेखे लाए तेई अवतार, भगत अठारां बन्धन पाइंदा। हुक्मे अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद करया ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आपणी आप जणाइंदा। हुक्मे अन्दर खेल करे मुकामे हक़ सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर साचा भाणा, भाणे अन्दर साचा राणा, राणा रय्यत वेख वखाइंदा। हुक्मे अन्दर खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हुक्मे अन्दर सच संदेसा घल्ला, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाईआ। हुक्मे अन्दर पीर पैगम्बर मेटणहारा सल्ला, सलल इक्को इक जणाईआ। हुक्मे अन्दर खेल खलाए इलाही नूर अल्ला, आलमीन करे पढ़ाईआ। हुक्मे अन्दर धार होए बिस्मिला, बिस्मिल आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भाणा इक दृढ़ाईआ। साचा भाणा समां

समां, समां आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी बणया रहे नकम्मा, कम्म करने आइंदा। ना मरया ना जम्मा, जन्म मरन विच ना आइंदा। ना घड़या ना भंना, घड़न भंनणहार आप हो जाइंदा। ना सूरज ना चन्ना, चन्द चांदनी ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाइंदा। साचा भेव पीर पैगम्बर, पुरख अबिनाशी आप खुलाईआ। परवरदिगार वेख अडम्बर, चौदां तबक लेख चुकाईआ । एका जोती रच सुअम्बर, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर गुर लेखा शब्दी रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, लोकमात वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म दे अनन्द, अनन्द आत्म विच समाइंदा। गीत सुहागी साचा छन्द, ढोला सोहला आपे गाइंदा। नानक गोबिन्द चढ़या चन्द, चन्द चांदना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद भाणे अन्दर समाइंदा। भाणे अन्दर हरि करतारा, आपणी खेल रचाईआ। भाणे अन्दर खेल न्यारा, आपणी कार कमाईआ। भाणे अन्दर हो उज्यारा, गुर अवतार करे रुशनाईआ। भाणे अन्दर शब्द जैकारा, बोध अगाधा करे पढ़ाईआ। भाणे अन्दर बण लिखारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे पढ़ाईआ। भाणे अन्दर बण वणजारा, चौदां लोक हट्ट चलाईआ। भाणे अन्दर खोल किवाड़ा, चौदां तबकां कुण्डा रिहा लाहीआ। भाणे अन्दर बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। भाणे अन्दर दस्सदा रिहा जगत विहारा, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। भाणे अन्दर लेखा लिखदा रिहा अगम्म अपारा, बेअन्त बेअन्त आपणा भेव ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो भाणा रिहा जणाईआ। सो भाणा सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप जणाया । गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे रहे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहया। कवण वेला मेलें आण, निरगुण आपणा फेरा पाया। वेद व्यासा लेख महान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा राह तकाया। मूसा मंगे एका दान, चरण कँवल सीस झुकाया। ईसा करे इक प्रणाम, हरि आपणा फेरा पाया। मुहम्मद कलमा पढ़े ईमान, पीर पैगम्बरां मेरा मुर्शद होए सहाया। नानक मंगे इक्को आण, तुध बिन नज़र कोए ना आया । गोबिन्द कहे पुरख अकाल आदि जुगादी इक्को घर इक्को दर इक्को आसण इक सिँघासण, शहिनशाह आपणा फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम खेल करे महान, प्रगट जोत निहकलंक बली बलवान, दो जहाना वेख वखाया। चार जुग दी पिछली मेटे आण, अग्गे आपणा मार्ग लाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच राउ रंक देवे ज्ञान, अन्तर मंत्र इक पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता जुग चौकड़ी आप सुणाया। साचा भाणा दस्से भगवान,

५०२
१३

भगवन रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे रहे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कूड़ी क्रिया मेटे निशान, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। चार वरन वखाए आपणी सरन एका राग सुणाए कान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। राज राजान शाह सुल्तान सारे होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक इकल्ला वेख वखाईआ। इक इकल्ला हरि जू आया, नजर किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उठाया, नेत्र नैण सर्ब खुल्ाइंदा। नाता तोड़े त्रैगुण माया, पंज तत्त रहिण कोए ना पाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। सम्मत उन्नी एका नाया जोड़ जुड़ाया, नौ दुआरे खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े लए मिलाया, जुग जन्म विछड़े मेल कराइंदा। बीस बीसा दए दुहाया, पहली चेत्र वंड वंडाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होए हल्काया, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। गोबिन्द लेखा पूर कराया, लेखा लेख ना कोए मिटाइंदा। शाह सुल्तानां रिहा जगाया, हुक्मी हुक्म इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीस वेस वटाइंदा। बीस बीसा हरि जगदीशा, जुगती सब दी दए बदलाईआ। राज राजानां ख़ाली ख़ीसा, घर घर मंगण वाहो दाहीआ। ना कोई मन्ने किसे हदीसा, शरअ चार कुण्ट लड़ाईआ। पन्द्रां कत्तक सब ने वेख लैणा शीशा, पुरख अबिनाशी रिहा वखाईआ। किसे घर ना दिसे जीजा, धी जवाई ना कोए कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया जिन्हां कीती रीझा, चारों कुण्ट देण दुहाईआ। श्री भगवान जिन्हां उपर पतीजा, सो गुरमुख लए मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चाचे छड्ड दयो भतीजा, पुरख अकाल इक्को पिता लैणा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा दए समझाईआ। जगत उनीसा जाए लँघ, लोकमात रहिण ना पाईआ। अगले सम्मत सृष्ट सबाई होए नंग, ब्रह्मण्ड खण्ड पए दुहाईआ। शाह सुल्तानां नंगी कंड, भज्जे फिरन वाहो दाहीआ। किसे साध सन्त आत्म आवे ना परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे खण्ड खण्ड, खण्डा इक्को नाम चमकाईआ। फिरे दरोही विच वरभण्ड, भंडी पए सर्ब लोकाईआ। नार दुहागण होए रंड, हरि कन्त ना कोए मिलाईआ। लेखा चुक्के तारा चन्द, चार यार देण दुहाईआ। मुहम्मद अन्तिम मुक्के पन्ध, नबी रसूल ना कोए गवाहीआ। चौदां तबक जवानी गई हंढु, अन्त बुड़ेपा रिहा छाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, परवरदिगार नूर इलाहीआ। सब दा मेटणहार घमण्ड, खुदी कोई रहिण ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म इक इकीसा इक्को गाउणा छन्द, सोहँ करन सर्ब पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला समां बड़ा नकम्मां,

बिन हरि नामे पार ना कोए लँघाईआ। अगला समां आया नेड़े, नेरन नेर वखाइंदा। चार वरन दे मेटे झेड़े, झगड़ा सर्ब मिटाइंदा। धरत मात दे खुल्हे वेहड़े, एका वार वखाइंदा। देवणहारा उलटे गेड़े, कलिजुग इक्को लट्ठ भवाइंदा। जन भगतां मेले काया डेरे, मन्दिर मठ्ठ शिवदुआले नज़र किते ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां आपणे विच रखाइंदा। अगला समां रिहा घूर, सब नूं रिहा डराईआ। शाह सुल्तान होए मज़बूर, सिआसत कम्म किसे ना आईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे दूर, नेरन नेरा नज़री आईआ। बीस बीसा बख्शे ना कोए कसूर, कसर अशारीआ सब नूं दए लगाईआ। आपणा भाणा वरते हरि ज़रूर, ज़रूरत भगतां पूर कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग निरगुण जो बणया रिहा मफ़रूर, हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा लेखे दए लगाईआ। अगला लेखा बड़ा औखा, औखी घाटी हरि जणाइंदा। सज्जणां देणां सज्जणां धोखा, भाई भाईआं ना मेल मिलाइंदा। हथ्थों गुरमुख जाण ना दयो मौका, गया वक्त हथ्थ ना आइंदा। गोबिन्द एका ढय्या सुत्ता रिहा ला के ढौंका, अन्तिम कलिजुग फेरा पाइंदा। हथ्थ नाल मिलाए हथ्थ, गुट्ट नाल फड़ाए पौंचा, धार धार नाल रलाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणा समां वेखे नाल शौंका, जो घड़या भन्न वखाइंदा। बिन भगतां जगत जहान जाए औंता, सच निशान ना कोए धराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला समां दस्से जगदीश, ताज रहे ना किसे सीस, शाह सुल्तान नज़र कोए ना आइंदा। दिल अन्दर सतिगुर प्यार, गुर गोबिन्द रंग चढ़ाईआ। दिल अन्दर काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना डेरा लाईआ। दिल अन्दर नाम शब्द जैकार, जै जैकार अलाईआ। दिल अन्दर हउमे हंगता हँकार, कूड़ी क्रिया गढ़ बणाईआ। दोहां विचोला एकँकार, साचा सोहला रिहा सुणाईआ । पंज तत्त काया माटी बाहर श्रृंगार, अप तेज वाए पृथमी आकाश बन्धन पाईआ। त्रैगुण माया दे आधार, उदर अदर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन अन्तर एका बुज्झे, जो साहिब प्रीती लुझे, गुर चरण सेव रुज्झे, झूझ आपणा मेल मिलाईआ। दिल अन्दर मन हँकार, आपणा गढ़ बणाइंदा। दिल अन्दर ब्रह्म प्यार, ब्रह्म हस्ती इक दसाइंदा। दोहां विच सच सिँघासण कर तैयार, त्रैभवन धनी वेख वखाइंदा। निर्मल दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, नूर उजाला इक वखाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर प्याला जाम प्याइंदा। जो गुरमुख सतिगुर संग रख्या नाता कन्त भतार, सो आपणा मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अन्दर खेल अनेका, अनक कल आपणी धार जणाइंदा। दिल अन्दर दृढ़ विश्वास, विश्व इक्को इक जणाईआ। दिल अन्दर खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप जणाईआ। दोहां

विचोला वसे पास, आप आपणा पर्दा लाहीआ। गृह मन्दिर साची रास, गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अन्दर रख्या दिल, दिल अन्दर गया मिल, मिल के आपणा मेल मिलाईआ। दिल अन्दर डूँघा सागर, नज़र किसे ना आइंदा। काया साढे तिन्न हथ्थ गागर, काची गागर वंड वंडाइंदा। मन वासना जगत सौदागर, तृष्ना तृप्त ना कोए कराइंदा। सतिगुर रत्ते कर्म उजागर, जीवण जुगत इक समझाइंदा। आसा मनसा हउमे हंगता माया ममता भुक्खा नंगता सज्जण सुहेला इक इकेला वक्त दुहेला कोए ना देवे आदर, आदर्श नजर कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं घट अन्तरजामी घर घर वेखे अगम्मी बाणी, मन वासना खेल शैतानी, उठ उठ दहि दिशा धाईआ। मन वासना मन उडारी, मन मन ही विच रखाइंदा। छिन्न छिन्न खेल करे न्यारी, न्यारापन इक जणाइंदा। आत्म परमात्म जिन हउमे मारी, सो सज्जण एका घर सोभा पाइंदा। दरसण बुझण दी ना कोई लथ्थे वारी, वारता इक्को इक गाइंदा। सच्चा गुरमुख हरि नाउँ वपारी, मनमुख दर दर धक्के खाइंदा। जिस दिल अन्दर इक प्यारी, प्रेम प्रीती बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा काया घर, गृह मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर, आत्म परमात्म निज घर पर्दा फोल फुलाइंदा। साध संगत तेरा साचा रंग, हरि संग वड वड्याईआ। नाम शब्द अगम्मी मृदंग, घर घर वज्जे वधाईआ। आत्म सेजा सोहे पलँघ, सेज सुहञ्जणी इक वड्याईआ। दिवस रैण घड़ी पल इक अनन्द, थित वार ना वंड वंडाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना पाए ठंड, सर सरोवर इक नुहाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, आकाश प्रकाश सोभा पाईआ। साहिब सतिगुर मिलण दी इक्को मंग, उमंग होर ना कोए रखाईआ। दीन दयाल ठाकर सुआमी जुग जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढु आपणे नाम पाईआ। जगत जवानी रही हंढु, कलिजुग बुड़ेपा छाईआ। सतिजुग सृष्ट सबाई इक्को गाउणा छन्द, पुरख अकाल इक्को इष्ट मनाईआ। लेखा जाणे सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बिन गुर अवतार पीर पैगम्बर दूजा कोई ना वजाए मृदंग, मर्द मर्दाना नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल लगाया अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। हरिसंगत हरिजन बणया रहे संग, बिन हरिसंगत हरि जू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला इक्को घर, जिस गृह वज्जदी रहे नाम वधाईआ।

❉ १० माघ २०१६ बिक्रमी मसा सिँघ दे गृह थान सिँघ कोटली ❉

परमेश्र मिल्या प्रभ पूरन आप, परम पुरख दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी वड प्रताप, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ।

दो जहानां दस्से सच्चा जाप, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बंधे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण सज्जण साक, सगला संग रखाईआ। हरिजन मेला कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। प्रभ मिल्या एकँकारा, एका घर वज्जी वधाईआ। सो पुरख निरँजण वखाए ठांडा दरबारा, दरगाह साची कुण्डा लाहीआ। हरि पुरख निरँजण दे सहारा समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एकँकारा पावे सारा, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। आदि निरँजण हो उज्यारा, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। अबिनाशी करता मीत मुरारा, सगला संग आप अख्वाईआ। श्री भगवान दए हुलारा, नाम हुलारा इक वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, निरगुण सरगुण वेखे चाईं चाईंआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक अवतारा, पूर रिहा सर्ब ठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा इक सुहाईआ। प्रभ पाया पुरख सुल्तान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, दरगाह साची सोभा पाईआ। परवरदिगार इक अमाम, नूर ज़हूर जलवा रुशनाईआ। मुकामे हक़ सच निशान, लोक परलोक आप झुलाईआ। साचा कलमा दे कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। प्रभ पाया पुरख समरथ, भेव कोए ना आइंदा। आदि जुगादि चलाए रथ, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, गुर अवतार सेवा लाइंदा। भगत भगवान मेला हस्स हस्स, हँस मुख एका रंग रंगाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। तीर अणयाला मारे कस, शब्द अगम्मी आप चलाइंदा। सति सतिवाद सुणाए जस, वेद पुराण बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। प्रभ पाया श्री भगवान, सिरजणहार वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, ना मरे ना जाईआ । तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप इक अख्वाईआ। सदा सुहेला हुक्मरान, धुर फ़रमाणा इक समझाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार दे ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म निष्अक्खर दए समझाईआ। धुर दा लेखा सच संदेसा देवे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। प्रभ पाया दीन दयाला, दीनन आपणी दया कमाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक बणाइंदा। लेखा जाणे काल महाकाला, महाबीर भेव ना आइंदा। आदि जुगादि मार्ग लाए इक सुखाला, सुख आत्म विच समाइंदा। पावणहारा त्रैगुण माया जगत जंजाला, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। प्रभ पाया पारब्रह्म, ब्रह्म लेखा रिहा मुकाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाईआ। हरख सोग ना कोए ग़म, चिन्ता

दुःख ना कोए जणाईआ। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, बत्ती दन्द ना मुख सालाहीआ। सदा सुहेला आपे जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। लख चुरासी बेड़ा बन्न्ह, निरगुण सरगुण कंध उठाईआ। देवणहारा नाम धन, चौदां लोक हट्ट चलाईआ। चौदां तबकां लेखा जाणे सूरज चन्न, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाता जोड़े पंज तत्त तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश एका गंढु पवाईआ। करे खेल श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। प्रभ पाया सर्ब गुणा भरपूर, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। दाता दानी योद्धा सूर, सूरबीर आप अख्वाईआ। दो जहान वजाए अगम्मी तूर, राग नाद ना कोए सुणाईआ। नव नौ हाज़र हज़ूर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ आपणा रंग वखाईआ। प्रभ पाया रंग रंगीला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दुआरे गुर अवतार पीर पैगम्बर आप बणाए सच कबीला, कादर करता वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण मिलण दा बणे वसीला, वसल आपणा आप जणाइंदा। शब्दी धार कर कर हीला, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। वसणहारा उच्चे टीला, डूँघी कन्दर सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर छैल छबीला, बाल बिरध ना रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ एका नज़री आइंदा। प्रभ पाया गहर गम्भीर, गुणवन्त वड्डी वड्याईआ। अमृत देवे ठांडा सीर, गुरमुख अग्नी तत्त बुझाईआ। बजर कपाटी देवे चीर, द्वैती पड़दा दए हटाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अखीर, आखर आपणा मेल मिलाईआ। बदलणहार हरि तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। दीन मज़्हब शरअ दा कट ज़ंजीर, सच शनाखत इक रखाईआ। लेखा जाण शाह हकीर, राउ रंकां फोल फोलाईआ। देवणहारा दरगाह धीर, धीरजवान वड वड्याईआ। प्रगट होया पीरन पीर, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाईआ। हथ्थ पकड़े नाम शमशीर, खण्डा इक्को इक उठाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत ना होए दिलगीर, दिलबर मिल्या सच्चा माहीआ। जुग जन्म दी मेटे पीड़, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। अमृत बख्शे साचा सीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे फेरा पाईआ। प्रभ मिल्या ठाकर सुआमी, ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर वेख वखाइंदा। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहचल आपणा आसण लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणावणहार अकथ कहाणी, महिमा कथ आप जणाइंदा। शब्दी धार अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। आपे होए जाण जाणी, जानणहारा नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख सज्जण रिहा पछाणी, पसचाताप सर्ब मिटाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, निझर झिरना इक झिराइंदा। नाता तुटे चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाइंदा। सुरत सवाणी शब्द मिलाए

५०७ १३

साचा हाणी, घर मन्दिर मेल मिलाइंदा। देवे पद इक निरबाणी, निरबाण पद इक अख्वाइंदा। हरिजन होए सुघड़ सुचज्जी सवाणी, दर घर साचे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप कराइंदा। प्रभ पाया बेअन्त, बेअन्त रिहा समझाईआ। घर सज्जण मिल्या कन्त, गृह मन्दिर खुशी वखाईआ। गढ़ तुटा हउमे हंगत, माया ममता रहिण ना पाईआ। मेल मिलाया साची संगत, हरिसंगत विच समाईआ। नाता तुटे जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रहे ना राईआ। एका अक्खर पढ़ाए आत्म बोध साचा पंडत, चौदां विद्या माण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे चाईं चाईंआ। प्रभ पाया वड बलवाना, बल इक्को इक जणाइंदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग वेस वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुर अवतारां राग तराना, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार होए प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। शाहो भूप राज राजाना, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। हुक्मे अन्दर देवे सच फ़रमाणा, धुर दी धार आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम पहरया बाणा, जोती जाता डगमगाइंदा। नाउँ रख विष्नूं भगवाना, विश्व आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, साहिब सतिगुर साचा सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ इक्को नज़री आइंदा। प्रभ पाया सागर सिन्ध, सच सुहञ्जणी रुत्त सुहाईआ। लेखा चुक्के करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द, इन्द इन्द्रासण रिहा तजाईआ। हरिजन बणाए नादी बिंद, सुत साचे लए उठाईआ। वड दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। प्रभ पाया कलिजुग अन्त, अन्तष्करन शुध कराइंदा। जिस तत्त बणाई बणत, सो ब्रह्म मति समझाइंदा। जिस दा नाम कोटन कोटि अगणत, गणत विच ना आइंदा। सो साहिब साचा कन्त, गुरमुख सखी आप प्रनाइंदा। नाम निधाना इक्को मंत, मंत्र हरि हरि आप दृढ़ाइंदा। नाता तोड़ जीव जंत, जागरत जोत इक जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ इक्को फेरा पाइंदा। प्रभ इक्को आया ठाकर, वड वड्डा वड वड्याईआ। कलिजुग बणया मात सौदागर, दर दर आपणी अलख जगाईआ। करे खेल करीम कादर, करता कुदरत वेखे चाईं चाईंआ। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। दर आयां दर देवे आदर, दरगाह साची होए सहाईआ। शब्द अगम्मी पाए चिट्टी चादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मिल्या चाईं चाईंआ। प्रभ मिल्या चाउ घनेरा, चिन्ता कोए रहिण ना पाईआ। दूर दुराडा आया नेरा, नेरन नेरे नज़री आईआ। एका रंग वखाए सञ्झ सवेरा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ।

५०८
१३

जन भगतां कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना राईआ। गुरमुख तेरे अन्दर निरगुण डेरा, सच सिंघासण आसण लाईआ। लख चुरासी भुलाए कर कर हेरा फेरा, भेव अभेद ना किसे समझाईआ। जिस जन उपर करे मेहरा, मेहर नज़र इक टिकाईआ। भाण्डा भरम भउ करे ढेरा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। प्रभ पाया उच्च अगम्म, अगोचर खेल कराइंदा। सदा सुहेला बेड़ा देवे बन्नृ, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। लेखा चुक्के छप्परी छन्न, सचखण्ड दुआरे इक वसाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, जोती जाता डगमगाइंदा। एका राग सुणाए बिन कन्न, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे वेख वखाइंदा। प्रभ पाया नीकन नीका, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। आदि जुगादी लाशरीका, शरकत विच कदे ना आईआ। आपणा मार्ग दस्से बरीका, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दीआं दस्सदे रहे तरीकां, लेखा लिख लिख कलम शाहीआ। भगत सन्त जिस दीआं करदे रहे उडीकां, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। सो साहिब सतिगुर आपणे वेले आया ठीका, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। लख चुरासी रस दिसे फीका, अमृत सरोवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ।
५०६
१३
प्रभ पाया पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग सुणाए साची साखी, साख्यात दरस वखाइंदा। दो जहानां पाए मण्डल रासी, गोपी काहन नचाइंदा। जन भगतां पूरी करे आसी, आसा तृष्ना विच मिटाइंदा। एथे करे बंद ख़लासी, अग्गे आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। प्रभ मिल्या चतुर सुजान, मन मति बुध ना कोए वड्याईआ। अनपढ़ां देवे आप ज्ञान, नाम अमोलक झोली पाईआ। घर मन्दिर वेखे आण, गृह साचे होए सहाईआ। नाद शब्द सुणाए सच्ची धुन्कान, छत्ती राग मुख शरमाईआ। दीपक जोती बाले आण, तेल बाती ना कोए रखाईआ। आत्म सेजा कर परवान, नाम परवाना दए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे एका माहीआ। प्रभ मिल्या सच्चा माही, मुहब्बत इक्को इक जणाइंदा। दरगाह साची पांधी राही, बण मुसाफ़र सेव कमाइंदा। मुरीद मुर्शद वेखे चाईं चाईं, चारे कुण्टां फोल फुलाइंदा। भगत भगवान उठाए बांहीं, फड़ बाहों गले लगाइंदा। लख चुरासी मारे धाहीं, साध सन्त सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। प्रभ पाया पुरख अकाल, अक्ल कल खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख वेखे सच्चे लाल, लालन आपणा रंग रंगाइंदा। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। त्रैगुण माया

तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। रातीं सुत्यां दरस दिखाल, भेव अभेदा आप खुल्ाइंदा। करे खेल विष्नूं भगवान, भगवन आपणा राह चलाइंदा। आत्म परमात्म सच्चा दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सोहँ ढोला दो जहान, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेस अवल्ला आप वटाइंदा। वेस अवल्ला श्री भगवाना, कलिजुग अन्त कराईआ। गुरमुख दुआरे हो प्रधाना, नाम प्रधानगी दए समझाईआ। हरिजन लेखा चुक्के दो जहानां, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नाम आपणा इक दृढ़ाईआ। भगत भगवान जुग जुग लभ्भे, लोकमात सेव कमाईआ। दर दुआरे साचे सद्दे, सद्दा इक्को नाम जणाईआ। कूड़ी क्रिया पार कराए हद्दे, राह विच ना कोए अटकाईआ। नाम प्याए साची मधे, मधुर रस इक वखाईआ। सदा सुहेला पर्दा कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख गुर रखे लज्जे, लाजावन्त इक हो जाईआ। निरगुण हो के सरगुण पिच्छे भज्जे, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां दरस कर कर रज्जे, आपणी तृखा बुझाईआ। दिवस रैण रहे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे कार कमाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे प्यार नाल बज्झे, ना कोई सके तोड़ तुड़ाईआ। करे प्यार जिउँ मावां पुत्तर लड्डे, गोद सुहञ्जणी इक सुहाईआ। निक्यों करे आपे वड्डे, वडिउँ निक्के लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे थाउँ थाईंआ। भगतां पिच्छे फिरे आप, हरि आपणा आप गवाइंदा। बणया रहे माई बाप, पूत सपूता वेख वखाइंदा। घर घर जा जा देवे जाप, अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नात, साचा संग वखाइंदा। उत्तम रखे हरिजन ज़ात, ज़ात अजाति ना कोए रखाइंदा। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। गृह मन्दिर सुणाए भविख्त वाक् भेव अभेदा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन साचे वेख वखाइंदा। भगत दुआरे आए नट्ठा, जुग जुग सेव कमाइंदा। नाता तोड़ तीर्थ अठसठा, अठ्ठ त्रै आपणा पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां देवणहारा साची मता, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण चोले रत्ता, रत्ती रत्त इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखण आपे आइंदा। हरिजन वेखण आए मात, मिसल आपणी लए बणाईआ। भगत भगवान बणाए जमात, जुमला इक्को इक पढ़ाईआ। फड़ वखाए साचा घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहरवान कदे ना भुल्ले, भुल्लयां मेल मिलाइंदा। गुरमुख मात कदे ना रुल्ले, रुल्यां अंग लगाइंदा। चरण प्रीती जो जन घोल घुल्ले, घाली घाल लेखे पाइंदा। हरिजन बूटा कदे ना हुल्ले, अमृत फल इक

लगाइंदा। जिउँ लेखा जाणे यार बुल्हे, भुल्ले आपणे रंग रंगाइंदा। भाग लगाए साची कुले, कुलवन्ता दया कमाइंदा। करता कीमत पाए मुल्ले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे दर मंगाइंदा। हरिजन भुल्ले जगत जग, प्रभ भुल्ल कदे ना जाईआ। त्रैगुण बुझाए लग्गी अग्ग, अग्नी तत्त गंवाईआ। फड़ फड़ बणाए हँस कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। दरस दखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पर्दा लाहीआ। घर विच वखाए साचा हज्ज, मक्का काअबा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। भुल्ला रुल्ला जाए उठ, जिस आपणी दया कमाइंदा। साहिब सतिगुर जाए तुठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। अन्तर जाम देवे घुट्ट, सच प्याला इक प्याइंदा। आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे संग रखाइंदा। सगला संग सज्जण मीत, मित्र प्यारा आप रखाईआ। जिस जन गाया सोहँ गीत, तिस लेखा रहे ना राईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ ना कोए वड्याईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। काया करे ठंडी सीत, सति सतिवादी होए सहाईआ। पुरख अकाल इक प्रीत, पतित पावण वेख वखाईआ। माणस जन्म लैणा जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन लेखा रिहा मुकाईआ। भगतन लेखा गया लथ्थ, सिर भार ना कोए रखाइंदा। हरि का नाम मिली वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। श्री भगवान गाए जस, भगवन ढोला इक अलाइंदा। भगत अग्गों पए हस्स, सोहँ हँसा राग अलाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां मेला इक इकठ्ठ, घर मन्दिर इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसी आपणा दरस कराइंदा। भगवन पाए भगत दरस, आपणी खुशी वखाईआ। भगत मेटे आपणी हरस, हवस ना कोए वधाईआ। भगवन करे साचा तरस, मेहर नज़र उठाईआ। भगत वेखे अर्श फ़र्श, श्री भगवान रिहा समाईआ। श्री भगवान अमृत मेघ देवे बरस, सीतल धार इक चुआईआ। भगत भगवान वेख होए नधड़क, भय भउ ना कोए डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। भगवान भगत मिलण दा चाउ, जुग जुग वेस वटाइंदा। भगत भगवान पकड़े बाहों, फड़ बाहों गले लगाइंदा। सदा सुहेला करे सच न्याउँ, आदल अदल इक वखाइंदा। तिस साहिब बलि बलि जाओ, जो भुल्यां मार्ग पाइंदा। कलिजुग रुल्यां जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे वेख वखाइंदा। दर घर साचे वेखण योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे धुर संजोग, बण संजोगी मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त आत्म परमात्म देवे सोहँ साची चोग, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जन्म

जन्म दा कटे रोग, दोखी दुःख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। जगत पन्ध मिटे विछोड़ा, विछड़यां मिलाइंदा। सस्से उपर लग्गा होड़ा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। हँ ब्रह्म मम आपे बौहड़ा, मोह मुहब्बत इक वधाइंदा। शब्द अगम्मी साचा घोड़ा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भगत दुआरा इक सुहाइंदा। भगत दुआरा सच महल्ला, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण इक इकल्ला, हरि पुरख निरँजण सोभा पाईआ। एकँकारा वसणहारा जलां थलां, घट घट रिहा समाईआ। आदि निरँजण आपणे प्रकाश आपे बला, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। श्री भगवान सच संदेसा दो जहान घल्ला, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। अबिनशी करता फड़ाए पल्ला, पल्लू एका नाम गंढु पुआईआ । पारब्रह्म ब्रह्म आत्म रला, लख चुरासी ईश जीव वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला लेखा जाण गुरु गुर चेला, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। चेला गुरू सोहे बंक, बंक दुआरी वेख वखाइंदा। प्रभ प्रगट होया कलिजुग अन्त, निहकलंकी जामा पाइंदा। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटि सन्त, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जन भगत बणाए साची बणत, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत आधारी जोत निरँकारी, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण रंग अपर अपारा, अपरम्पर आप जणाइंदा। प्रगट हो चवीआं अवतारा, आपणा पन्ध मुकाइंदा। पिछला दूआ निरगुण सरगुण धारा, एका चौंका वंड वंडाइंदा। साचा चौका चारे वेदां बणे लिखारा, ब्रह्मा चारे मुख सालाहइंदा। चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैख़री एका गाइंदा। चारे खाणी कर आकारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे जुग कर पसारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाइंदा। चार वरन ला अखाड़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाच नचाइंदा। चार यारी कर ख़बरदारा, चारों कुण्ट डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। दूआ चौका उतरे पार, पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाईआ। प्रगट हो हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठाल, लख चुरासी फोल फुलाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, राए धर्म दर दुरकाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत नैण शरमाईआ। जन भगतां उत्ते होए आप दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाल, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। दीपक दीआ इक्को बाल, जोती जोत करे रुशनाईआ। अनहद वज्जे अगम्मी ताल, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे इक्को

५१२
१३

मंत्र, जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त ना कोए वखाइंदा। अग्नी तत्त ना कोए संताप, संसा रोग ना कोए जणाइंदा। जन्म कर्म दा लथ्थे पाप, पतित पुनीत आप कराइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को जाप, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म दे साथ, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। भगत भगवान दी इक्को गाथ, सिफ्त सालाही रंग चढ़ाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा भेव खुल्हाइंदा। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना कोए कराइंदा। जिस जन पाए नाम अगम्मी नथ्थ, पंच विकारा बन्न्ह वखाइंदा। मनमति दुआरे मूर्ख रिहा नठ्ठ, दहि दिशा उठ उठ धाइंदा। जो सतिगुर चरण दुआरे जाए ढठ्ठ, आपणा माण मिटाइंदा। तिस मार्ग देवे दस्स, भुल्लयां राहे पाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा। भगत भगवान दी सच्ची शाख़, जुग चौकड़ी राह जणाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लए राख, सद भाणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन आपणे रंग वखाइंदा। रंग वेख हरि करतार, करता पुरख आप जणाईआ। जिस जन विसरया निरँकार, तिस मिले ना कोए थाईंआ। कलिजुग अन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर गए हार, आपणा बल गंवाईआ। सारे बैठे प्रभ चरण दुआर, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, साडी चली ना कोई वड्याईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। खाणी बाणी करे पुकार, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। अञ्जील कुरान धाहां रही मार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मुल्लां शेख़ करन विभचार, सच रसूल ना कोए मनाईआ। सीस झुके ना परवरदिगार, सजदा हक़ ना कोए कराईआ। मुकामे हक़ ना कोए प्यार, परवरदिगार ना कोए मिलाईआ। अल्ला राणी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, कज्जल धार ना कोए वखाईआ। खुल्ही मींढी ना कोए श्रृंगार, सीस पट्टी ना कोए गुंदाईआ। चौदां तबकां वेखे वारो वार, साचा सबक ना कोए सुणाईआ। ख़ालक खलक करी ख्वार, मख़लूक मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हुक्म रिहा मनाईआ। आलमीन मारन धाह, कूक कूक सुणाया। मुहम्मद नाता गया तुड़ा, सगला संग ना कोए निभाया। अल्ला राणी रही शरमा, मुख घूंघट एका पाया। ईसा मूसा बैठे मुख भवा, करवट सके ना कोए बदलाया। दोए जोड़ करन दुआ, परवरदिगार तेरी ओट तकाया। प्रगट हो सच्चे शहिनशाह शाह पातशाह, तुध बिन होए ना कोए सहाया। रहबर बण इक खुदा, ख़ुदी सब दी दे मिटाया। अमाम अमामां वड फेरा पा, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाया। तेरा जलवा नूर अला, बेनज़ीर तेरा लेख ना किसे लिखाया। सदी चौधवीं बण मलाह, बेड़ा तेरे हथ्थ फड़ाया। पीर पैगम्बर मंगण इक पनाह, पुनहि पुनहि सीस झुकाया। उम्मत भरी सर्ब गुनाह, चार यारी रंग

५१३
१३

ना कोए वखाया। अन्तिम गुल होणी शमा, नूर नूर ना कोए धराया। घर घर होई झूठी तमा, चौदां तबक रहे डराया। बिन तेरे भगतां सब नूं होए ग़मा, खुशहाल कोए नज़र ना आया। नेत्र रोवण छम्म छम्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाया। साची करनी परवरदिगार, शाह पातशाह आप कराईआ। मुरीद मुर्शद लए उठाल, नाद अनाद इक सुणाईआ। हरिजन तेरा ना होए ज़वाल, ज़ेर ज़बर लेख मुकाईआ। वेखण आया मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी काया माटी वेखे खाल, ख़ालक आपणा पर्दा लाहीआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत दलाली इक कमाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाल, लाशरीक वेस वटाईआ। हरिजन विच्चों लभ्भे लाल, लाल आपणे रंग रंगाईआ। जिस जन उपर होए दयाल, दयावान दया कमाईआ। एथे ओथे करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भुल्ले रुल्ले आपणी झोली पाईआ।

❇ १७ माघ २०१६ बिक्रमी बलदेव सिँघ दे गृह हरी पुर ❇

सचखण्ड हरि खेल महान, तख्त निवासी हरि कराइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सच संदेसा हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, एका एक जणाईआ। तख्त निवासी नौजवान, राजन राज वड वड्याईआ। जुग जुग खेल महान, करनी करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, एकँकारा रंग चढ़ाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खोल्ह कवाड़ा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान सच हुलारा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। इक इकल्ला हो तैयारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार आपणी धार चलाइंदा। परवरदिगार इक इकल्ला, अक्ल कला अख्वाईआ। वसणहारा सच महल्ला, हक़ मुकामे डेरा लाईआ। नूर धर बिस्मिल बिस्मिला, रंग नज़र कोए ना आईआ। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, कलमा कलमा नबी पढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, अलख अगोचर खेल कराइंदा। साचा भूप बण शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाइंदा। सच संदेसा दए सुणा, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लए जगा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। दूर दुराडे नेरन नेरा दर घर साचे लए बुला, घर इक्को इक वखाइंदा। गुर अवतार पए सरना, दोए जोड़ चरण सीस सर्ब झुकाइंदा। पीर पैगम्बर मंगण दुआ, निउँ निउँ सजदा सर्ब कराइंदा। करे खेल इक ख़ुदा, ग़फ्लत सब दी आप मिटाइंदा। निरगुण निरगुण वेख वखा, रूप रंग ना कोए जणाइंदा। नूरी जलवा नूर धरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। थिर घर कुण्डा आपे लाह, साचा मन्दिर आप वखाइंदा। सूरज चन्द ना कोए रुशना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण दुआर सारे सद्द, दो जहान मुकाए हद्द, हदूद आपणी इक वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच संदेसा, सति सतिवादी इक सुणाईआ। शाहो भूप हरि नर नरेशा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। लोक परलोक दो जहान श्री भगवान बिन नेत्र पेखा, रूप रंग ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जुग जुग धारनहारा भेखा, तत्तव तत्त खेल रचाईआ। लख चुरासी बण बण नेता, हुक्मी हुक्म आप भुआईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करनहारा हेता, सच समग्री झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर एकँकार, गुर अवतार लए बुलाईआ। गुर अवतार सद्दे चरण, सरन मिले वड्याईआ। हरि करता पुरख करनी करन, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लेखा जाणे जन्म मरन, मरन जन्म आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्ह दरवाजा, करे खेल ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निवाज़े हो ग़रीब निवाज़ा, हो दयाल आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार सद्दे लाल, बाले आपणे रंग रंगाइंदा। पीर पैगम्बर वेखे हक़ हलाल, हकीकत सब दी खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी करदा रिहा बेहाल, बिहबल आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। शब्द अगम्म बिन दमां दम बणदा रिहा दलाल, सच दलाली इक रखाइंदा। पंज तत्त काया अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध खाए काल, महाकाल आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी खोल्ह दुआर, करे खेल आप करतार, आपणी करनी आप समझाइंदा। गुर अवतार कर इकठ्ठ, एका एक जणाईआ। पीर पैगम्बर कोए ना चले वस, बेवस देण दुहाईआ। परवरदिगार रिहा दस्स, लाशरीक रिहा समझाईआ। चौदां लोक चौदां तबक वेखो नस्स नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी कोई ना दिसे हठ, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। शिवदुआला मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर रसना जिह्वा बत्ती दन्द

५१५
१३

रहे रट, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। बण नट्टूआ नट्टूआ रिहा नच्च, स्वांगी आपणा स्वांग वखाईआ। गुर का शब्द बोध अगाध महिमा गाए ना कोई अकथ, अनहद नाद ना कोए सुणाईआ। अमृत आत्म सरोवर नुहाए ना कोई साचे तट, अठसठ फिर फिर थक्की सर्ब लोकाईआ। निर्मल जोत ना करे कोई प्रकाश, अज्ञान अन्धेर ना कोए चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे ना कोए साथ, ईश जीव ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा समझाईआ। पीर पैगम्बर वेखो खोल्ह अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कूड़ी क्रिया उडदे कक्ख, सच सुच्च नज़र कोए ना आइंदा। अन्तर आत्म सतिगुर नज़र ना आए प्रतख, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जगत तृष्ना हउमे हंगता दीन मज़्ब रिहा नठ्ठ, आसा तृष्ना ना कोए मिटाइंदा। यारड़ा सत्थर कोई ना बहे घत्त, मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीद आपणा रंग ना कोए रंगाइंदा। साचा बीज ना बीजे नाम वत, पत डाली फुल फलवाड़ी ना कोए महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आप जगाइंदा। गुर अवतार जाओ जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाईआ। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत होया काग, हँस रूप ना कोए वटाईआ। सुरती शब्द ना कोए वैराग, वैरागी वैराग ना कोए कमाईआ। त्रैगुण माया लग्गी आग, पंज तत्त करे लड़ाईआ। नर नरायण कन्त कन्तूहल साहिब सुल्तान किसे ना मिले कन्त सुहाग, सेज सुहञ्जणी ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया दुरमति मैल लग्गा दाग़, अमृत रस मुख ना कोए चुआईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर गुर पीर अवतार कोई ना पकड़े वाग, अन्त होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां रिहा वखाईआ। गुर अवतार मारन झाकी, लोकमात वेख वखाईआ। किसे ना खुल्ही बंद ताकी, बजर कपाट ना कोए तुड़ाईआ। जूठ झूठ विके हाटी, साचा वणज ना कोए जणाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी राती, सतिगुर चन्द ना कोए चढ़ाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर कोई ना पुच्छे वाती, समरथ मेल ना कोए मिलाईआ। जीव जंत साध सन्त रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्के गाथी, गा गा आपणा वक्त लँघाईआ। गृह मन्दिर नज़री आई सच प्रभाती, प्रभ आपणा सोहला दए सुणाईआ। अन्तिम सब दी औझड़ वाटी, साचा पन्ध ना कोए मुकाईआ। लहिणा देणा लख चुरासी चुक्के ना फाँसी, जम का डण्ड ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। गुर अवतार वेखण उठ, नेत्र नैण उग्घाड़या। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलिजुग जीव गए रुठ्ठ, गुर का शब्द ना किसे विचारया। घर ना आए अबिनाशी अचुत, चेतन रूप ना कोए वखा रिहा। नाता जुड़या पंज तत्त काया बुत्त, आत्म परमात्म मेल ना कोई मिला रिहा। इक दूजे नूं रहे

पुच्छ, हरि जू हुक्मे किस चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक जणा रिहा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़, प्रभ अग्गे पए सरनाईआ। साहिब सुल्तान सच सुआमी आदि जुगादि तेरी लोड़, तुध बिन चले ना कोई चतुराईआ। शब्द अगम्मी चढ़ के घोड़, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। हउँ बाले निक्के तेरे छोहर, तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। सदा हथ्थ तेरे डोर, जिउँ भावे लै चलाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरी लोड़, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान दए दुहाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपे जाए बौहड़, निरगुण निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखे रीठा मिठ्ठा कौड़, कूड़ी क्रिया थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखणहारा तेरा सुअम्बर, तेरी रचना तेरे विच समाईआ। पीर पैगम्बर करन सजदा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सारे कहिण हउँ तेरा बरदा, बरीख़ाना नज़र कोई ना आईआ। लख चुरासी अन्दर तूं साहिब वड़दा, दर दर अलख जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तैथों डरदा, तेरी सेव कमाईआ। दो जहान तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, चौदां तबक सलामा अलैकम रहे बुलाईआ। आपे भंने आप घड़दा, घड़न भंनणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ जुग जुग करदा, जुग करता इक रघुराईआ। साचे तख्त सचखण्ड दुआरे आपे चढ़दा, दूजा संग ना कोई रखाईआ। शब्द अगम्मी हो हो लड़दा, तिक्खी धार इक चलाईआ। करे खेल नरायण नर दा, नारी पुरख वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे सीस जाए झुक, बेपरवाह मेहरवान मेहरवाना। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जाणा लुक, सचखण्ड वसें सच मकाना। कलिजुग अन्तिम निरगुण हो के बुक्क, महाबीर वड बलवाना। गुर अवतार तेरी बैठे रहे कुक्ख, तेरी सिफ्ती सिफ्त सलाहना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक सुहाना। दर तेरा इक सुहञ्जणा, सोभावन्त अनडिठ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, आदि जुगादी बणया मित। नैण विहूणा दर्द दुःख भय भंजना, करना साहिब साचा हित्त। चरण धूढ़ कराउणा मजना, आप करवट बदल वखाईं ना पिठ्ठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लख चुरासी लैणी जित्त। पुरख अबिनाशी साहिब समरथ, इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो नठ्ठ नठ्ठ, दो जहानां वाली आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मार्ग रिहा दस्स, इक्को इक शब्द शनवाईआ। अन्तिम सब दी करे बस, बसता सब दा बन्नृ वखाईआ। डोरी रखे आपणे हथ्थ, लहिणा देणा पिछला रिहा चुकाईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा दस्से मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चुक्के रीत, रीतीवान आप समझाइंदा। पारब्रह्म पुरख पुरखोतम इक अतीत, त्रैगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड निवासी हरि कमलापात वसणहारा धाम अनडीठ, ठांडा दर आप इक वड्याइंदा। आत्म परमात्म आदि जुगादी साचा मीत, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म आप जणाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान एका घर बहाइंदा। सदा सुहेला इक इकेला वसणहारा चीत, चेतन आपणी धार जणाइंदा। काया अन्दर वखाए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान हरि नज़र इक उठाइंदा। मेहरवान हरि सच्चा दाता, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी इक ज्ञाता, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई पिता माता, लख चुरासी गोद बहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बन्ने नाता, ईश जीव गंढु पुआईआ। एथे ओथे दो जहान होवे राखा, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मिल के पढ़ो इक्को गाथा, सो पुरख निरँजण रिहा पढ़ाईआ। निरगुण रूप सति सरूप होए सहाई नाथ अनाथा, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक जणाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार वेखो जग, जग जीवण दाता आप वखाइंदा।
लख चुरासी बूँद रक्त, हड्ड मास नाड़ी बन्धन पाइंदा। कलिजुग अन्तिम आया वक्त, वक्त दुहेला आप चुकाइंदा। आदि जुगादी इक्को शक्ति, शक्ति सब नूं आप दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, नर नरायण इक्को इक जणाइंदा। सच संदेसा सुणो मीत, हरि सतिगुर आप जणाईआ । सचखण्ड दुआरे इक्को गीत, थिर घर वज्जे नाम वधाईआ। मातलोक दी पिछली रीत, चार जुग दी करनी रिहा मिटाईआ। करे खेल सृष्ट सबाई जीत, जित हार ना किसे जणाईआ। निरगुण निरगुण सच प्रीत, प्रीतीवान इक वखाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी ना कोई वड्याईआ। गोबिन्द रखी इक उडीक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। वेद व्यासा लिख गया ठीक, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आवे चाईं चाईंआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखे नीत, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूँघी गागर फोल फुलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां आपणा हुक्म मनाईआ। साचा हुक्म मन्नणा जग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम लग्गे अग्ग, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। कलिजुग जीव होए कग्ग, सिर हथ्थ ना कोई टिकाइंदा। गुरमुख विरला जाए बच, जिस आपणी दया कमाइंदा। जिस हिरदे जाए वस, सो सच मेल मिलाइंदा। श्री भगवान दीन दयाल पुरख

अकाल लूं लूं अन्दर जाए रच, रचना आपणी आप जणाइंदा। वेखणहारा पंज तत्त काया माटी कच्च, काची गगरीआ खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग लेखा आप मुकाइंदा। जुग चौकड़ी चुक्के लेखा, शक़ विच ना कोई लिआईआ। अछल अछल्ल पावणहारा भरम भुलेखा, भउ भय सब नूं रिहा जणाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, घट घट घर घर अन्दर डेरा लाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसा, मूंड मुंडाए ना कोई वखाईआ। ना मैं जाणा बासक सेजा, दो सहँसर जिह्वा रिहा हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन आदेसा, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द सिर झुकाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे आपणा पेशा, पेशवा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर धार धार विच्चों उपाए रेखा, रेखा सब दी अन्त मिटाईआ। देवणहार शब्द अगम्म बोध अगाध संदेसा, अक्खर अक्खर वक्खर वक्खर करे मात पढ़ाईआ। सदा सदा प्रभ रहे हमेशा, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। पीर पैगम्बर वेखणहारा मुल्लां शेखा, मुसायक आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वसणहारा साचे घर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। गृह मन्दिर वसे सचखण्ड, चार दीवार ना कोए जणाइंदा। निहकर्मी प्रकाश सूरज चन्द, नूर ज़हूर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वंडे वंड, गुर शब्दी सेवा लाइंदा। आपे दस्से सदा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दुआर हरि निरँकार एका घर आप मंगाइंदा। एका घर इक दरवाजा, इक्को इक जणाईआ। एका भूप एका राजा, इक्को एक शहिनशाहीआ। इक्को तार सतार इक वजावणहारा वाजा, इक्को राग अलाईआ। इक्को लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भाजा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। इक्को देवणहारा दाजा, नाम निधान श्री भगवान वस्त अमोलक काया गोलक गुर अवतारां पीर पैगम्बरां झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच स्नेहुड़ा इक्को इक घलाईआ। सच सुनेहड़ा देवे घल्ल, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। नगर वेखणा अबचल, आप आपणा दर खुल्हाइंदा। जुग विछड़े जाणा रल, जगत विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। निरगुण मेल निरगुण बल, सरगुण संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर हरि निरँकार दरगाह साची आप सुहाइंदा। दरगाह साची सच अमाम, आपणा खेल कराईआ। बदलणहारा अन्त नज़ाम, धुर फ़रमाणा दए सुणाईआ। पीर पैगम्बर बरदे करे गुलाम, ग़फ़लत सब दी दए मिटाईआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणा रंग वखाईआ। कलमा नबी इक पैग़ाम, पीर पैगम्बर

दए सुणाईआ। नज़री आए इक्को राम, बेनज़ीर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, जुग विछड़े लए फड़, फड़ डोरी नाम बंधाईआ। डोरी नाम पाए बंध, बन्धन इक जणाइंदा। भगत भगवन्त इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ ढोला इक पढ़ाइंदा। जगत विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंड, हरि शब्दी कन्त मिलाइंदा। निरगुण जोत चढ़े चन्द, सच प्रकाश आप वखाइंदा। कूड़ी क्रिया मुक्के गंद, अमृत रस इक चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जिस जन वखाए आपणा घर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। कूड़ी क्रिया टुट्टे नाता, माया ममता रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म देवे साथा, सगला संग निभाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए गाथा, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। पूरब जन्म दा पूरा करे घाटा, लहिणा सब दा रिहा मुकाईआ। आत्म सेजा सुहाए साची खाटा, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। अमृत जाम प्याए बाटा, निझर झिरना इक झिराईआ। सतिगुर पूरा सदा सदा सद देवे साथा, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती तिलक ललाट वखाए माथा, मस्तक धूढ़ी इक्को लाईआ। अगला पन्ध मुक्के वाटा, लख चुरासी ना कोए भुआईआ। मेल मिलाए जोत में जाता, जोती जोत जोत समाईआ। वेले अन्त श्री भगवन्त घर घर जा जा पुच्छे वातां, जन भगतां आप जगाईआ। जिन्हां जुड़या सच्चा नाता, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। घर विच घर वखाए खुल्हा हाता, हरि मन्दिर इक समझाईआ। सौंदयां जागदयां बहिंदयां उठदयां सुणाए आपणा साका, साखी इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाईआ। भगत भगवन्त चाढ़े रंग, रंग रंगीला इक अख्वाईआ। अनहद नाद वजाए मृदंग, छत्ती राग नैण शरमाईआ। अमृत आत्म देवे रस, जगत रस फिके नेड़ ना आईआ। भगवान भगतां होए वस, वस भगतां आप कराईआ। इक दूजे नूं मिल के पैण हस्स, काया मन्दिर अन्दर वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को जस, सोहँ ढोला जै जैकार सुणाईआ। नाता वेखण तत्त अठ्ठ, मन मति बुध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गंढुण जगत पुआईआ। अन्तिम खेड़ा होए भठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जिस जन मिल्या मेल पुरख समरथ, सो जन सचखण्ड जाए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां रखे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ज़ात पात ना कोए रखाईआ।

❇ १७ माघ २०१६ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ❇

सचखण्ड दुआरे सच जैकार, जै जैकार इक कराइंदा। सचखण्ड दुआरे सच विहार, बिवहारी आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे सच प्यार, पीआ प्रीतम आप वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे सच शृंगार, सति सतिवादी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा रंग, हरि साचा सच चढ़ाइंदा। सचखण्ड दुआरे सच अनन्द, हरि साचा सच वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची मंग, हरि साची भिच्छया झोली पाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा चन्द, श्री भगवान आप चढ़ाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा चा, चाउ घनेरा इक वखाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा नाँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे पिता माँ, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरे साचा थाँ, दरगाह साची सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे सच मलाह, श्री भगवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा संग, सगला आप निभाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा चन्द, बिन चन्द आप चमकाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची वंड, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा मीत, हरि सज्जण वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे साची रीत, दो जहानां वाली आप चलाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। सचखण्ड दुआरे खेल अनडीठ, बिन नेत्र रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दुआरे योद्धा सूर, वड बीर आप अख्वाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा नूर, नूर नुराना आप धराइंदा। सचखण्ड दुआरे आसा पूर, पूरी आसा आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची कार, हरि करता आप कमाईआ। सचखण्ड दुआरे साची धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे सच जैकार, शब्द अगम्मी इक शनवाईआ। सचखण्ड दुआरे सच विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे साचा खेल, हरि करता आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा मेल, जन भगतां आप मिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे सज्जण सुहेल, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरे करे प्रकाश बिन बाती तेल, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा

सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा मेल मिलावा हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा एका मंत, मंत्र इक्को नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा राणा, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा भाणा, हरि जू आपे मन्न मन्न खुशी मनाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा गाणा, गा गा आपणा राग अलाइंदा। सचखण्ड दुआरे इक ज्ञाना, अक्खर वक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। सचखण्ड दुआरे इक टिकाणा, दो जहानां पार वखाइंदा। सचखण्ड दुआर साचा माणा, भगत भगवन्त आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआरा वेखण योग, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरे सच संजोग, धुरदरगाही आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे साची चोग, सो पुरख निरँजण आप चुगाईआ। सचखण्ड दुआरे दरस अमोघ, निरगुण दाता आपणा पर्दा दए उठाईआ। सचखण्ड दुआरे साचे कोट, घर मन्दिर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा जन भगतां दए वखाईआ। सचखण्ड दुआरा भगतन घर, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड दुआर एका नर, नर नरायण आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआर गुरमुख सज्जण जाए चढ़, दूसर राह ना कोए पाइंदा। सचखण्ड दुआर सो पुरख निरँजण दरस दखाए खड़, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे सच महल्ला, महिफ़ल आपणे नाम लगाईआ। सचखण्ड दुआरे नूरी अल्ला, इक्को नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे हो बिस्मिला, आपणा इस्म ना किसे वखाईआ। सचखण्ड दुआरे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह आपणा भेव जणाईआ। सचखण्ड दुआर मुकामे हक़, हकीकत आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआर हो प्रतख, प्रतख रूप वटाइंदा। सचखण्ड दुआरे सन्त सुहेले लए रख, गुर चेले मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर वक्ख, वक्खरा राह वखाइंदा। कर किरपा खोल्हे तीजी अक्ख, नेत्र आपणे रंग रंगाइंदा। करनहारा लखों कक्ख, कक्खों लख आप बणाइंदा। जन भगतां सदा सदा करदा आया पक्ख, लख चुरासी ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे इक अलख, इक्को नाअरा लाइंदा। इक्को नाअरा बोले बोल, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। निरगुण तोले आपणा तोल, तोला बणे बेपरवाहीआ। दो जहानां पर्दा फोल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। भगत भगवन्त एथे ओथे रखे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। लोकमात शब्द सरूप सुणाए ढोल, मृदंगा आपणा इक जणाईआ। सचखण्ड बैठा रहे अडोल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तर आत्म

जाए मौल, मौला आपणी खेल कराईआ। कलिजुग अन्तिम गोबिन्द संग कर के गया कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। लेखा जाणे धरनी धरत धौल, धौला हौला भार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे आपणा आसण लाईआ। सचखण्ड साचे हरि का आसण, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशण, अबिनाशी आपणी कल वरताइंदा। निरगुण सरगुण दासी दासन, बण सेवक सेव कमाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। लोआँ पुरीआँ पाए रासन, गोपी काहन नाच नचाइंदा। लख चुरासी लहिणा देणा जाणे दस दस मासन, आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी जुगो जुग सचखण्ड निवासी आप कराईआ। भगत भगवन्त लए चुग, दर दर घर घर फेरा पाईआ। पंज तत्त काया औध सब दी जाए मुक्क, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख गुर गुर चुक्के कुक्ख, गोदी गोद लए सुहाईआ। उज्जल करे मात मुख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन्म जन्म दा मिटे दुःख, लख चुरासी पन्ध कटाईआ। सचखण्ड दुआर हरि इक्को सुख, पंचम मीता करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वड्याईआ। पंचम मीता हरि निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। योद्धा सूरबीर करे खेल अपर अपारा, भेव अभेव ना किसे जणाइंदा। जन भगतां देवे इक आधारा, चरण कँवल कँवल चरण ध्यान जणाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। खाणी बाणी वसे बाहरा, वेद पुराण भेव ना कोए जणाइंदा। अञ्जील कुरान देंदा रिहा इशारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम आपणा रंग रंगाइंदा। पंचम मीता पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सन्त सुहेले भगत भगवन्त गृह मन्दिर लए सद्द, सद्दा इक्को नाम दिवाईआ। जगत विकारा करे पार हद्द, किनारा आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पंचम धारा, तख्त निवासी आप चलाइंदा। पंच परवान करे सच दरबारा, दर दरवाज़ा इक खुल्हाइंदा। पंच प्रधान करे सचखण्ड निरँकारा, निरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। पंच सोहण इक दुआरा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। पंजां मिले एका गुर अगम्म अपारा, जन्म मरन विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, साचा मार्ग आपे लाइन्दा। साचा मार्ग पंचम संग, हरि संगी आप रखाईआ । सचखण्ड दा सति मृदंग, पंचम हथ्थ फड़ाईआ। पंचम मंगण एका मंग, दोए जोड़ सरनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या साहिब सुल्तान, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। पंचम देवे इक ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा । सच भूमिका सति अस्थान, साची वंड वंडाइंदा। सच नाउँ सच ज्ञान, साचा मंत्र इक दृढ़ाइंदा। साचा इष्ट सच ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्ह़ाइंदा। साचा भेव हरि जू खोल्हे, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। सचखण्ड निवासी निरगुण बोले, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। लख चुरासी लेखा जाणे काया चोले, पंज तत्त फोले थाउँ थाईंआ। भगत भगवन्त उठाए आपणे डोले, बण कहार सेव कमाईआ। जीवां जंतां कोलों रखे ओहले, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सोहँ ढोला कलिजुग अन्तिम जो जन बोले, सचखण्ड दुआरे जाए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म एका वार सुणाईआ। साचा हुक्म एका वार, एकँकार आप जणाया। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, पूरब लेखा सर्ब मुकाया। कलिजुग कूड़ी क्रिया करे पार, साचा मार्ग इक जणाया । चार वरनां दए आधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाया। आत्म परमात्म सच प्यार, दूजा नाता नज़र कोए ना आया। मात पित भाई भैण साक सज्जण कूड़े यार, धीआं पुत्त अंग ना कोए लगाया। मूर्ख मुग्ध रोवण ज़ारो ज़ार, हउमे ममता रोग वधाया। गुरमुख सज्जण बोलण सति सति जैकार, साचा ढोला एका गाया। सचखण्ड दुआरे सति पुरख निरँजण वाजां रिहा मार, गुरमुखां राह तकाया। आओ भगतो मेरे दुआर, तुध बिन मेरा संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विधान इक बणाया। सच विधान हरि बणा, आपणा आप जणाईआ। पिछला लहिणा दित्ता मुका, गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे ना कोए गवाहीआ। फड़ फड़ सारे दर लए मंगा, सीस सके ना कोए उठाईआ। दोए जोड़ पए सरना, सरनगति इक तकाईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरी मन्नीए इक रज़ा, कज़ा सब दे सिर ते छाईआ। पंज तत्त काया चोला आए हंढा, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। बिन तुध मिले ना कोई पनाह, एथे ओथे होए ना कोए सहाईआ। तूं शहिनशाह सच्चा पातशाह, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम तेरा साचा तक्कया राह, दो जहानां रिहा वखाईआ। भगत भगवान लए जगा, जागरत जोत इक जणाईआ। भुल्ले भटके मार्ग ला, साचा पन्थ इक वखाईआ। गुरू ग्रन्थ बणे गवाह, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आत्म परमात्म विच जाए समा, जो हरिजन हरि हरि रहे ध्याईआ। जिन्हां सोहँ ढोला ल्या गा, घर साचे वज्जे वधाईआ। श्री भगवान आपणी गोदी लए उठा, जिउँ बालक पिता माईआ। चरण कँवल कँवल चरण सचखण्ड दुआरे लए बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भैण भ्रावां नाल दए मिला, भैणां भईआ एका रंग रंगाईआ। साचा सईआ

बण खुदा, ख़ालक वेखे थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बरां गुर अवतारां दए जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप चलाईआ। साची रीत चलाई मात, हरि मता आप पकाईआ। धुरदरगाही साची दात, जन भगतां झोली पाईआ। आत्म परमात्म बद्धा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। हरिजन एथे बणी जमात, अग्गे इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वसे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। सगला संग रखे आप, आपणी दया कमाइंदा। कोट जन्म उतारे पाप, पतित पापी आप तराइंदा। तन ख़ाकी करे पाकी पाक, पाक रसूल वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह ताक, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहइंदा। गुरसिख लँघाए आपणे घाट, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाइंदा। कहिण सुणन दी नहीं बात, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। साचे भगत कदे ना रोणा, रोयां हथ्थ किछ ना आईआ। पुरख अकाल दी गोदी सौणा, जिथ्थे सुत्यां ना कोए उठाईआ। आपणा आप आपे धोणा, दुरमति मैल गंवाईआ । जो प्रभ करना सोई होणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अग्गे जा संग ना किसे छोहणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। गुरमुख वगे ना नेत्र नीर, नीर नीर ना कोए जणाइंदा। जिन्हां साहिब सतिगुर मिल्या गहर गम्भीर, दुखियां दुःख आप मिटाइंदा। एथे पंज तत्त लेखे लग्गा सरीर, अग्गे आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। हस्स हस्स इक दूजे दे पिच्छे घत्त घत्त जाओ वहीर, सो पुरख निरँजण राह तकाइंदा। लख चुरासी तोड़ो ज़ंजीर, शरअ बन्धन आप कटाइंदा। अन्तिम चोटी चढ़ो अख़ीर, जिस घर हरि जू सोभा पाइंदा। मात पित भैण भाई नार कन्त ना होए दिलगीर, दिलदार एका हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक वसाइंदा। गुरमुख वसाउणा साचा मन्दिर, प्रभ बैठा ध्यान लगाईआ। एथे कोठा पंज तत्त कन्दर, अग्गे निरगुण जोत रुशनाईआ। भेव ना जाणे कोई पंडत, ज्ञान ध्यान ना कोए समझाईआ। नाता तुटे जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत रिहा समझाईआ। हरिसंगत सुणना ला कर कन्न, हरि साचा सच जणाइंदा। जिस ने साहिब सतिगुर ल्या मन्न, मन मनसा मेट मिटाइंदा। एथे ओथे बणे जननी जन, गोदी गोद आप सुहाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भंनणहार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे दर बुलाइंदा। आओ दर मेरे नठ्ठ, हरि जू ध्यान लगाईआ। कूड़ कुटम्ब आओ छड्ड, सगला संग ना कोए जणाईआ। लख चुरासी नालों होवो अड्ड, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। किसे कम्म नहीं औणे हड्ड, काया माटी अग्नी आंच लगाईआ। विष्नूं भगवान दी विश्व

यद, इक्को जोती जोत रुशनाईआ। सृष्ट सबाई पार करो हद्द, मार्ग आपणा दए वखाईआ। कर किरपा जन भगतां लए सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त सोहँ सो, सो पुरख निरँजण झोली पाइंदा। गुरमुखां दुरमति मैल धो, पतित पुनीत कराइंदा। अमृत आत्म सच्चा चो, निझर रस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला अन्तिम वार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जिस जन नेत्र दर्शन कीता दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। एथे ओथे लए संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरिजन कदे ना होए कंगाल, नाम ख़ज़ीना झोली रिहा भराईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा इक्को वणज कराईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त भगत भगवन्त दे लाल, भावी नेड़ किसे ना आईआ। जिस दुआरे बैठा सिँघ पाल, तिस दुआरे हरिसंगत सारी लए बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल दयानिध ठाकर सुआमी अन्तरजामी हर घट घट वेख वखाईआ।

माघ सतारां चमके सतारा, सति पुरख निरँजण दए वड्याईआ। नरैण घर नरायण उज्यारा, नरायण खुशी वखाईआ। रछपाल करया हरि प्यारा, परम पुरख बेपरवाहीआ। संसार रहि गया दूर किनारा, हरी दुआर नज़री आईआ। सचखण्ड प्रभ खोल्ह किवाड़ा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। चरण कँवल दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत बोलण जै जैकारा, वाह वा वज्जे वधाईआ। हरिसंगत अग्गे तेरा इक विहारा, पिछला लेखा सर्ब चुकाईआ। कर किरपा लै जाए सचखण्ड दुआरा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करनी करता करनेहारा, कार आपणे हथ्थ रखाईआ।

५२६
१३

✻ १८ माघ २०१८ बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✻

भगत भगतां रहे उडीक, सचखण्ड ध्यान लगाईआ। अन्तिम वेला आया नज़ीक, नेरन नेर नज़री आईआ। साहिब सतिगुर मिले ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। माणस जन्म सुहञ्जणा लैणा जीत, जीवण जुगत मिले वड्याईआ। घर मिले इक अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। आत्म होए ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। श्री भगवान चलाए रीत, रीती इक्को इक वखाईआ। एका दर बहाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। चरण कँवल जणाए सच

प्रीत, प्रीती इक्को इक दरसाईआ। साचा चाढ़े रंग मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। रल मिल ढोला गाओ गीत, गीत गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। भगत भगत तक्कण राह, नेत्र नैण उठाया। इक दूजे दी पकड़ो बांह, हरि गलवकड़ी रिहा पवाया। सब नूं मिले इक्को थाँ, थान थनंतर इक सुहाया। सब दा बणे इक्को पिता माँ, पुरख अकाल वड वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा कमाया। भगत भगत रहे दस्स, दास्तान सुणाईआ। प्रभ चरण कँवल रहे वस, जो गए जगत तजाईआ। अठ्ठे पहर इक्को जस, इक्को राग अलाईआ। दिवस रैण इक्को प्रकाश, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। साहिब सतिगुर दे होए दास, बण दासी सेव कमाईआ। साडी पुंनी पूरी होई आस, तृष्ना कोए रहिण ना पाईआ। श्री भगवान वसे साथ, साचा संग निभाईआ। रल मिल सारे चढ़ो इक्को घाट, घाटा कोए नज़र ना आईआ। सेज सुहञ्जणी सौणा खाट, वस्त्र भूशन ओढण सिर ढाकण कु पत सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। भगत भगतां दस्सण हाल, साची बीती रहे जणाईआ। प्रभ मिल्या दीन दयाल, सिर दीनन हथ्थ टिकाईआ। साडे नेड़ ना आया काल, महाकाल सीस झुकाईआ। साडा विंगा ना होया वाल, दुःख दर्द नजर कोए ना आईआ। असीं घालण आए घाल, प्रभ कीती घाल लेखे पाईआ। साडा होया हल्ल स्वाल, सोहला इक्को ढोला गाईआ। सचखण्ड मिली सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत भगतां रहे जणा, भेव अभेद जणाईआ। वेखो हरिजन नैण उठा, बिन नैणां रिहा दरसाईआ। तख्त निवासी शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाईआ। भगत भगवन्त रिहा मिला, मेल मिलावा एका घर जणाईआ। सच दुआरे साचा संग हरिसंगत मेला भैण भ्रा, दूजी अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धंदे आपे लाईआ। साचे धंदे गए लग्ग, दूसर आस ना कोए जणाईआ। हरि मिल्या सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। लोकमात बुझी अग्ग, सचखण्ड सांतक सति सति वरताईआ। दिवस रैण रैण दिवस हरि दर्शन करीए रज्ज रज्ज, पर्दा उहला ना कोए जणाईआ। असीं पन्ध मुकाया भज्ज भज्ज, दो जहानां चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। मुक्कया पन्ध दूर दुराडा, नेरन नेरा नजरी आईआ। श्री भगवान सज्जण साका, सगला संग रखाईआ। आपणी हथ्थीं खोल्या ताका, पर्दा आपणा आप चुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आया इक्को आका, हुक्म हाकम रिहा सुणाईआ। सचखण्ड दुआरे रल मिल सारे गाओ साका, शाह पातशाह तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। ना कोई

ज़ात ना कोई पाता, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। ना कोई वही ना कोई ख़ाता, हिसाब किताब ना कोए रखाईआ। भगत भगवान खेल दासी दासा, सेवक सेव दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर रिहा वसाईआ। हरि का घर वसे खेड़ा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। भगत भगवान बन्ने बेड़ा, खेवट खेटा आपणा राह चलाईआ। लख चुरासी आवण जावण कटे गेड़ा, तन्दी तन्द कटाईआ। मेहरवान तारे कर कर आपणी मेहरा, नज़र इक्को इक उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हरिजन कर के बैठे रहे वड्डा जेरा, सबर सबूरी इक हंढाईआ। अन्तिम प्रगट होया सिँघ शेरा, बल आपणा आप धराईआ। जीव जंत साध सन्त लख चुरासी विच्चों लभ्भे केहड़ा केहड़ा, जो आत्म परमात्म बैठा ध्यान लगाईआ। रातीं सुत्तयां पाए घेरा, दिने जागदयां लए मिलाईआ। सचखण्ड वखाए खुल्हा वेहड़ा, जिस दुआरे बिन भगतां कोए लँघ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। भगतन वेख भगतन चढ़या रंग, रंग इक्को इक वखाईआ। सचखण्ड दी साची सेज पलँघ, सति सतिवादी आप विछाईआ। हरिजन वेखे अग्गे लँघ, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कर किरपा लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। साचा देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, कर्म कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जो जन गावे सोहँ छन्द, सो पुरख निरँजण वेखे थाउँ थाईंआ। हँ ब्रह्म बन्धन पाए बंध, डोरी तन्द नाम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक इकेला भगतन मेला मेल मिलाईआ। भगत भगतां बण विचोला, विचला भेव जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रखदा रिहा उहला, आपणा रूप ना किसे वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा सोहला, सोहणा राग सुणाइंदा। वडयाउदा रिहा पंज तत्त काया चोला, निरगुण आपणा नाम ना कोए जपाइंदा। कलिजुग अन्तिम सब दा करे भार हौला, हौली हौली पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पर्दा एका खोल्हा, ख़ालक आपणा रूप वखाइंदा। भगतां पर्दा खोल्ह अक्ख, आपणा रंग वखाईआ। हिरदे अन्दर गया वस, घर बैठा डेरा लाईआ। दूजे नूं कोई ना सके दस्स, कवण रूप प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। भगत भगतां वेख रहे हस्स, घर घर खुशी मनाईआ। भगवान करे भगतां जस, दिवस रैण राग अल्हाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां होई बस, बसता सब दा बन्न्ह वखाईआ। नव नौ चार उलटी गेड़े लट्ठ, गेड़ा आपणा आप भुआईआ। हरिजन तेरा इक्को हठ, प्रभ सरन सच्ची सरनाईआ। अन्तिम मेला करे इकठ्ठ, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख सुख सुख दुःख एका घर वखा मुख उज्जल आप कराईआ।

५२८
१३

❇ १८ माघ २०१८ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ❇

साधो सन्तो सुणो गल्ल, हरि भगत रिहा जणाईआ। श्री भगवान अछल अछल्ल, वल छल आपणा खेल चलाईआ। निरगुण रूप जोत सरूप जोती गया रल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। हरिजन साचे देवे फल, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कलिजुग अन्तिम जिन्हां होया वल, वलवले सब दे मेट मिटाईआ। शब्द संदेसा देवे घल्ल, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। सच सिँघासण लैणा मल, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। वसणा निहचल धाम अटल, उच्च महल्ल दए समझाईआ। दीपक जोत रिहा बल, तेल बाती ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। साध सन्त सुणो मीत, हरि भगत इक जणाइंदा। सति सति दी साची रीत, सति पुरख निरँजण आप चलाइंदा। ढोला गाओ इक्को गीत, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म होए अतीत, दर घर साचे आप बहाइंदा। पिछली सब ने छड्डणी रीत, अगला मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। साध सन्त करो ध्यान, हरि भगत रिहा समझाईआ। आदि पुरख दा आदि ज्ञान, हरि मंत्र नाम दृढ़ाईआ। सति पुरख दा सति मकान, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। अलख अगम्म अथाह बेपरवाह नौजवान, सच सिँघासण डेरा लाईआ। कलिजुग अन्त करे परवान, हरिजन परवाने वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। साध सन्त जाणा जाग, हरि जागरत आप दिवाइंदा। नव नौ चार लग्गी आग, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। लख चुरासी होई काग, कागों हँस ना कोए बणाइंदा। साचा मजन ना कोए माघ, दुरमति मैल ना कोए धुआइंदा। धुर दी बाणी सुणाए ना कोई आवाज़, साची सिख्या ना कोए रखाइंदा। वेले अन्त ना पकड़े कोई वाग, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। कलिजुग अन्तिम सारे गए भाज, आपणा बल ना कोए वखाइंदा। कूड़ी क्रिया होया राज, रय्यत सुख ना कोए वखाइंदा। श्री भगवान आपणा रचया काज, सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध सन्त आप उठाइंदा। साध सन्त जाओ उठ, सोयां नींद किसे ना आईआ। पिछला खेड़ा रिहा लुट्ट, अगला घर वसाईआ। प्रभ साचे कोलों लओ पुच्छ, की की बणत बणाईआ। दर दवारयों क्यों बैठे रुस्स, रुस्सयां हथ्थ कुछ ना आईआ। आपणे आप विच रहे कुस, जिउँ बक्करा हथ्थ कसाईआ। ख़ाली हथ्थ ईसा मूस, संग मुहम्मद दए दुहाईआ। तन वस्त्र नज़री काला सूस, काली धार इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शब्द रिहा जणाईआ। साध सन्त लैण अंगड़ाई, आपणा आप संभालया। चारों कुण्ट पई दुहाई, हरि का नाम ना किसे विचारया। प्रभ मिले ना सच सरनाई,

गढ़ तुटा ना कोए हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारया। साध सन्त नेत्र खोल्हण, चार कुण्ट वेख वखाईआ। इक दूजे नूं दस्स दस्स बोलण, दहि दिशा भेव ना आईआ। कवण दुआरे हरि जू आया तोल तोलण, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। लख चुरासी आया वरोलण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साधां सन्तां सुणाए नाद, अनादी आप वजाइंदा। जिस दा खेल कोट ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जिस लहिणा देणा देणा सन्त साध, सो साधना सब दी आप कराइंदा। हर घट वसया रखो याद, याददासत आप जणाइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आइंदा। आपणे विच्चों साचे भगत लए काढ, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। वेखो सन्तो एथे ओथे दो जहानां करे लाड, मेहरवान आपणी मेहर नज़र उठाइंदा। सो जन सज्जण सच्चे होए साध, जिन्हां आपणा भेव खुल्हाइंदा। घर मिले माधव माध, गृह आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साध सन्त पए रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी बौहड़ी की गया हो, हरि का भेव कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी प्रगट होया सो, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हँ ब्रह्म करी लो, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। शब्दी जोती जिस नाल गया छोह, वरन गोती तोड़ तुड़ाईआ। साची चोटी लै के आया ढोआ ढो, वस्त अमोलक इक वरताईआ। कलिजुग ग़फ्लत विच आपणा आप सारे गए खोह, ख़ाली हत्थ देण दुहाईआ। श्री भगवान भगतां नाल रखाया मोह, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। अमृत मेघ रिहा चो, झिरना निझर इक झिराईआ। आप भगतां जोगा गया हो, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक वरताईआ। साची वस्तू वस्त अमोलक, अमुलड़ी दात वरताइंदा। नाद सुणाए बिन जगत ढोलक, अनरागी राग अल्हाइंदा। गीत सुणाए साहिब अनबोलत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। घर वखाए इक अडोलत, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा माण रखाइंदा। हरिजन साचा माण, हरि हरि जू आप रखाईआ। देवे वडयाई दो जहान, दोए दोए रंग वटाईआ। साचा मन्दिर सच मकान, साचा हुजरा दए वखाईआ। अन्तिम मेला नौजवान, नर नरायण करे कुड़माईआ। पूत सपूत वेख सन्तान, सुत दुलारे गोद उठाईआ। जिस जन मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिस भगती भगवन लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लेखा देवे थाउँ थाईंआ।

❋ १८ माघ २०१६ बिक्रमी बलवन्त सिँघ हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ❋

सचखण्ड नगारा इक्को वज्जा, निरगुण डंका नाम शनवाईआ। सो पुरख निरँजण फिरे भज्जा, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। एकँकार आप मिटाई आपणी लजा, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। श्री भगवान पार कराए आपणी हद्दा, अबिनाशी करता वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे सद्दा, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। भगत भगवान प्रेम बद्धा, नाम बिधाता झोली पाईआ। आदि जुगादि पर्दा कज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। आदि जुगादी जाणे कम्म, करनी करता आप कराइंदा। सदा सुहेला इक इकेला भगत भगवान बेड़ा बन्न्, खेवट खेटा आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करने योग, करता पुरख वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण सच संजोग, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म भोगे भोग, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। सुणावणहारा सच सलोक, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म देवे मोख, वस्त अमोलक इक वरताईआ। लेखा जाण चौदां लोक, चौदां तबकां पर्दा रिहा उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवणहारा साची ओट, सरनगति इक जणाईआ। सचखण्ड वसे साचे कोट, शहिनशाह दाता सोभा पाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। निरगुण जोत श्री भगवन्त, नूर नुराना डगमगाइंदा। आदि जुगादी साचा कन्त, नर हरि आपणा आसण लाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। शब्द अगम्मी एका मंत, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, साधना आपणे हथ्थ वखाइंदा। पर्दा लाहे लख चुरासी जीव जंत, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। तोड़नहारा गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी सचखण्ड निवासी, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। करे खेल बहुबिध भांती, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण पुच्छे वाती, भगवन भगतां लए उठाईआ। नाम अगम्म देवे साची दाती, वस्त अमोलक आप वरताईआ। मिटावणहार अन्धेरी राती, साचा चन्द करे रुशनाईआ। अमृत देवे बूँद स्वांती, निझर झिरना आप झिराईआ। बंद कवाड़ा खोल्हे ताकी, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। घर विच घर वखाए साची हाटी, चौदां तबकां भेव जणाईआ। लेखा जाण कमलापाती, कँवल नैण करे रुशनाईआ। सदा सुहेला

बण बण साथी, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, हरि पुरख निरँजण हुक्म चलाइंदा। एकँकारा कर पसारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, लख चुरासी दीवा बाती जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान सच सहारा, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। अबिनाशी करता सुहाए बंक दुआरा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, ब्रह्म आपणा हट्ट वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप चुकाइंदा। साचा पर्दा हरि जू चुक्क, त्रैभवन धनी दया कमाईआ। सच दुआरिउँ आपे उठ, सति सतिवाद वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण नर हरि तुठ, दीनन आपणी दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार रिहा पुच्छ, सति सति भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखाईआ। साचा रंग रंग रंगीला, दरगाह साची आप रंगाइंदा। अबिनाशी करता छैल छबीला, शहिनशाह आपणा रूप धराइंदा। परवरदिगार बणाए सच कबीला, खेल आपणा ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव परवरदिगार, बेपरवाह आप खुल्हाईआ। मुकामे हक़ हो तैयार, हकीकत इक्को इक जणाईआ। लाशरीक सांझा यार, शिरकत विच कदे ना आईआ। कलमा नबी कर तैयार, अमाम करे पढ़ाईआ। साचे हुजरे बोल जैकार, नाद अनाद इक सुणाईआ। बिस्मिल हो के बिस्मिल धार, विश्व आपणा भेव चुकाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। हज़रत खेल करे अपार, बेऐब रूप ख़ुदाईआ। वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता सदा सदा ख़बरदार, साची ख़बर आप सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत्त काया बण दलाल, शब्द रागी अनादी ताल वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारे हुक्म मनाईआ। सच दरबारा एको एक, इक इकल्ला आप जणाइंदा। सति सतिवादी साची टेक, दर घर साचा इक वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त लओ वेख, भगत भगवन्त आप जगाइंदा। अबिनाशी करता रूप रंग ना कोए रेख, नूर नुराना नूर डगमगाइंदा। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र ना आइंदा। वसणहारा साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। एथे ओथे निरगुण सरगुण नर नरेश, नर निरँकारा इक अख्वाइंदा। कलिजुग अन्तिम धरया भेख, निहकलंका नाउँ प्रगटाइंदा। लख चुरासी वेखे खेड, घट घट अन्दर डेरा लाइंदा। गुरमुख विरले देवे आपणा भेत, गुरसिख सज्जण पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी

आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर, इक्को कार कमाईआ। लख चुरासी मारे जन्दर, पर्दा नज़र किसे ना आईआ। मन वासना सृष्ट सबाई भाउदी बन्दर, आसा तृष्ना ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप समझाईआ। साची धार कलिजुग मात, बिन लग्ग मात्र आप जणाइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, अक्खर शाही ना वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर दास, करोड़ तेतीसा बन्धन पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद्दे पास, सच संदेसा हुक्म जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम सारे होए निरास, आपणा बल ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करने आया, करता पुरख करतार। लेखा जाणे दाई दाया, वेखणहार सर्ब संसार। मेटणहारा कूड़ी माया, त्रैगुण मारे शब्दी मार। पंज तत्त पर्दा रिहा लाहया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोल्ह किवाड़। आत्म परमात्म मेल मिलाया, भगत भगवन्त आप उठाल। साचे सन्त लए जगाया, दीनां बंधप दीन दयाल। गुरमुख आपणे अंग लगाया, गुर गुर किरपा कीती आण, गुरसिख साचा रंग चढ़ाया, नाद सुणाए शब्द धुन्कान। दीपक जोती डगमगाया, मेट मिटाया अन्ध अंध्यान। चरण धूढ़ी अशनान कराया, फड़ बणाया चतुर सुजान। सोहँ ढोला इक्को गाया, प्रभ मिल श्री भगवान। शब्द विचोला नाल रलाया, दो जहान करे कल्याण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे जीव जहान। जीव जहान जाणे लेखा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। वसणहारा साचे देसा, देस दसन्तर खोज खुजाईआ। कलिजुग अन्तिम धारे भेसा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुर अवतार करे आदेसा, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाईआ। भगत भगवान करे नेता, नित नित मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेखे थाउँ थाईंआ। हरि सज्जण साहिब सुहेला, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। महाबली इक इकेला, दो जहानां खोज खुजाइंदा। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुर चेला एका रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण चाढ़े तेला, जोत निरँजण सगन मनाइंदा। प्रभ मिलण दा अन्तिम वेला, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मीत इक अख्वाइंदा। साचा मीत मित्र प्यारा, मुरीद मुर्शद वेखण आईआ। करे खेल अगम्म अपारा, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार करन निमस्कारा, पीर पैगम्बर बैठे सीस झुकाईआ। भगत भगवान सुहाए दुआरा, सोभावन्त वज्जी वधाईआ। विष्न बृहमा शिव रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रैगुण माया हाहाकारा, पंज तत्त धीर ना कोए धराईआ। आत्म

परमात्म वसे न्यारा, घर घर विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भगतन मेला थाउँ थाईंआ। भगतन मेला पंज तत्त, काया मन्दिर वेख वखाइंदा। इक्को देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। चौदां विद्या उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाइंदा। हरि का नाम किसे ना आवे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। जीव जंत साध सन्त लभ्भण नठ्ठ नठ्ठ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर, दिस किसे ना आइंदा। ख़ाली दिसण मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, गुरदुआरे गुर गुर रंग ना कोए रंगाइंदा। हर घट वसया पुरख समरथ, गृह गृह आपणा डेरा लाइंदा। सतिगुर सरनाई जो जन जाए ढठ्ठ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। बीज बीजे साचे वत, फुल्ल फलवाड़ी पत डाली आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द विचोला साचा ढोला इक्को बोला आप सुणाइंदा। इक्को बोला सोहँ सो, नानक निरगुण करी पढ़ाईआ। गोबिन्द ढोआ दित्ता ढो, भथ्था तीर ना कोए रखाईआ। आपणे जिहा आपे हो, आपणी करनी आप कमाईआ। करे प्रकाश ब्रह्मण्ड खण्ड साची लो, लोआँ पुरीआँ आप जणाईआ। पिछली करनी सब तों लए खोह, ख़ालक ख़लक परवरदिगार वड वड्याईआ। कूड़ी क्रिया तोड़े मोह, मुहब्बत इक्को नाम जणाईआ। निरगुण निरगुण जाए छोह, सरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। अमृत रस देवे चो, निझर झिरना इक झिराईआ। हरि का भेव ना जाणे को, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच दुआरा एकँकारा चार वरनां इक सहारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप जणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, विश्व इक्को धार चलाइंदा। लख चुरासी वसे काया देस, पंज तत्त चोला आप हंढ्ढाइंदा। निज नेत्र निज आत्म निज घर निज दाता लए वेख, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। सति सतिवादी सदा सुहेला करे सच्चा हेत, नित नवित्त आपणा फेरा पाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बोध अगाधी खुल्हाए भेत, अनुभव आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जुग जन्म दे विछड़े फड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। साचे पौड़े जाए चढ़, काया मन्दिर अन्दर फेरा पाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। नाता तोड़ बहत्तर नड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी लहिणा दए मुकाईआ। आपणी किरपा आपे कर, करनी आपणी दए जणाईआ। घर विच घर मिले वर, घर मेला सच्चे माहीआ। निरभउ चुकाए भय डर, जूनी जून ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन संग आप निभाईआ। सन्तन संग पुरख समरथ, सदा सदा समाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलाए

रथ, जुग जुग वेस वटाया। नाम जणाए महिमा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान खाणी बाणी भेव ना आया। भगत भगवान मार्ग देवे दस्स, सति सतिवादी राह जणाया। सतिजुग साचा होए प्रगट, प्रगट आपणा रंग रंगाया। कलिजुग कूड़ा मिटे हट्ट, हटवाणा रहिण ना पाया। लहिणा चुक्के तीर्थ अठ्ठसठ्ठ, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैण नैण रिहा शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा इक वखाया। भगत दुआर खोल्हे आप, आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण साचा जाप, चार वरन पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म मेटे संताप, सच सुच्च समझाईआ। मेल मिलावा रसूल पाक, पाकी पाक ख़ाक वड्याईआ। नज़री आए साख्यात, हरि सज्जण सच्चा माहीआ। पीर पैगम्बर मुर्शद मुरीद प्याए आब हयात, हयाती सब दी दए बदलाईआ। मक्का काअबा वेखे मुख खोल्ह नक़ाब, पर्दानशीं पर्दा आप उठाईआ। नज़री आए इक जनाब, साचे तख्त सोभा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चार यार अल्ला राणी करे आदाब, बण बरदा सीस झुकाईआ। तुध बिन देवे ना कोए ख़ताब, ख़ता मुआफ़ ना कोए कराईआ। तूं साहिब सच्चा बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। आदि जुगादि जुग जुग दरगाह साची तेरा इक्को जाप, इक्को कलमा नबी पढ़ाईआ। तूं सिफ्त सालाही सदा सफ़ात, सिफ्त विच कदे ना आईआ। मरे ना जम्मे ना होए वफ़ात, मकबरा रूप ना कोए वखाईआ। तेरा लेखा कायनात, कातिल मकतूल, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। तेरी अगम्मी बातन इक्को बात, बैतल तेरा दर नज़री आईआ। एथे ओथे देवें नज़ात, निज घर आपणे होएं सहाईआ। लेखा लिखें बिन कलम दवात, कातब हथ्थ ना कोए वखाईआ। तेरी नज़र ना आई किसे लुग़ात, बेनज़ीर नज़र नज़र नाल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आएयों खेल तमाश, अमाम अमामा रूप वटाईआ। मुहम्मद पूरी करें ख्वाहिश, चौदां सदीआं पन्ध मुकाईआ। अल्ला राणी होई नरास, खुल्ही मींढी रही वखाईआ। मीआं कोए ना पुच्छे वात, बीवी रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। मुरीद मुर्शद वेखे हुज़रा, हाज़त सब दी पूर कराइंदा। आपणी धारों आपे उँगरा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि सदा सदा रहे नाशुकरा, शुकरीआ अदा ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महिबूब वसणहारा हद्द हदूद, हदूद अरबा ना किसे जणाइंदा। हदूद हद्द ना कोए वंड, रकबा नज़र कोए ना आईआ। चौदां तबकां पई डण्ड, डंका इक्को नाम सुणाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, वेला गया हथ्थ ना आईआ पीर पैगम्बर बणे मलँघ, दर दर अलख जगाईआ। प्रगट होया सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। साचे अस्व घोड़े पाखर ज़ीन कसे तंग, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआँ पुरीआँ

५३५
१३

आए लँघ, लोकमात फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखे रैण अन्धेरी अन्ध, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्तर भरया गंद, कूड़ी क्रिया करी कुड़माईआ। अठसठ तीर्थ किते ना दिसे ठंड, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। सृष्ट सबाई होई रंड, हरि जू कन्त ना कोए हंढ़ाईआ। घर घर वड़या भेख पखण्ड, सच सुच्च ना वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए नंग, पर्दा सके ना कोए पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान पढ़दे बत्ती दन्द हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चलदयां फिरदयां आउँदयां जांदयां किसे ना मुकया पन्ध, अद्धविचकार बैठे डेरा लाईआ। गोबिन्द इक्को मंगी मंग, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहीआ। कलिजुग तेरा मिले संग, दूजा नज़र कोए ना आईआ। हुण बणया गुजरी चन्द, फिर तेरा सुत अख्वाईआ। मेरा खुशी बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। तेरा ढोला सोहँ छन्द, नानक निरगुण सरगुण गया गाईआ। वेद व्यासा मंगे मंग, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्को एक फेरा पाईआ। इक्को आया हरि समरथ, समरथ समरथ दया कमाइंदा। कलिजुग गेड़े उलटी लठ्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, सतिजुग साची धार चलाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दे होण वस, वसीकार आप हो आइंदा। काया मन्दिर साचे अन्दर हरी दुआर बहि बहि जाणा हस्स, मक्का काअबा दो दो आबा मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रगट घर विच घर वखाए हट्ट, बण वणजारा तोला इक्को तोल तुलाइंदा। गुरमुख सज्जण लाहा लैणा खट्ट, मनमुख ख़ाली हथ्थ भुआइंदा। अमृत आत्म इक्को रस लैणा चट्ट, जिस चट्टयां दु:ख नेड़ कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले गोद बहाइंदा। गुर चेला सोहे साची गोद, गोबिन्द वज्जे नाम वधाईआ। प्रगट होया योद्धन योद्ध, महाबली बेपरवाहीआ। जन भगतां हिरदे लए सोध, नाम कुठाली इक्को ताईआ। देवे ज्ञान अगाध बोध, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक जणाए साचा मंत्र, कलिजुग बुझाए लग्गी बसतंर, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। अन्तर आत्म लए खोज, हर घट घट वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी सोचयां विच ना आवे सोच, सोच सब दी आप भुलाइंदा। कलिजुग अन्त भुलाई सब दी होश, होछापन कराइंदा। आप बणया रिहा निर्दोष, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीन मज़्हब वंड वंडाइंदा। सचखण्ड बैठा रिहा ख़मोश, ख्वाहिश आपणी ना किसे जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग होया रिहा रूपोश, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। भगत प्यार अन्दर होया रिहा मदहोश, महिफ़ल इक्को घर लगाइंदा। कलिजुग अन्तिम श्री भगवान

चढ़या जोश, जोबन आपणा आप जणाइंदा। गोबिन्द पूरी करे लोच, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। वेखणहारा लखण पुष्कर दीप करौंच, सान सलमल आपणा फेरा पाइंदा। दो जहानां जाए पहुंच, आप आपणा बल वखाइंदा। लख चुरासी लए नोच, नौका नईया सब दी आप डुबाइंदा। जन भगत वखाए साचा कोट, किला बंक इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर निर्मल जोत, प्रकाश प्रकाश विच प्रगटाइंदा। पुरख अकाल साहिब सतिगुर इक्को बहुत, आदि जुगादि इष्ट गुरदेव देव गुर इष्ट सृष्ट दृष्ट आप खुल्ह्इंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा सचखण्ड सच मकान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेतज लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जगदीश हदीश इक्को इक पढ़ाइंदा।

सिख धर्म साची सिक्खी, नानक गोबिन्द वंड वंडाईआ। जिस दी धार सदा अनडिठी, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जिस आत्म परमात्म गोबिन्द पाए भिक्खी, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी दए समझाईआ। साची सिक्खी चार वरन, नानक निरगुण शब्द जणाया। नेत्र खोल्हे हरन फरन, पर्दा दूई दए चुकाया। नज़री आए इक्को सरन, दूजा रंग ना कोए वखाया। नाता चुक्के मरन डरन, भय भ्यानक रूप ना कोए वखाया। सो गुरसिख साची तरनी तरन, जिन्हां नानक निरगुण सतिगुर नज़री आया। सिक्खी सो परवान, जिन्हां सिख्या सतिगुर भाईआ। सो सिक्खी कूड़ निशान, दुरमति मैल ना सके धुआईआ। रसना जिह्वा करन ज्ञान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जिन्हां अन्तर मिल्या आण, सो सिख रूप वड्याईआ। अनपढ़ियां देवे ज्ञान, पढ़ियां मति दए भुआईआ। गोबिन्द सूरबीर नौजवान, अमृत आत्म साचा जाम प्याईआ। साचा खण्डा देवे किरपान, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। रखे काया विच म्यान, अठ्ठे पहर बंद वखाईआ। गोबिन्द गुण गाए वज्जे शब्द धुन्कान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सो गुरमुख गुरसिख चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन सतिगुर सिक्खी नज़री आईआ। सतिगुर सिक्खी डाहढी निक्की, नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां देवे धुर दरगाहों चिठ्ठी, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। तिन्हां आपणे नेत्र पेखी, सीस धड़ बंद बंद गए कटाईआ। कलिजुग अन्त धीआं पुत्रां भैणां भाईआं नाल करन हेती, जगत कुटम्ब पालण माया ममता होई हल्काईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा मारन शेख़ी, बाहरों चिन्न रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू गोबिन्द सिँघ दी वडयाए साची सिक्खी, जिस दी धार किसे ना डिठी, धार आपणे विच गया छुपाईआ।

❇ १८ माघ २०१६ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ❇

भगत भगवान इक्को आस, आसा आसा नाल टकराईआ। भगत भगवान इक्को प्यास, तृष्ना इक्को रंग वटाईआ। भगत भगवान इक्को शाख़, शनाख़त नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान इक दूजे दे दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। भगत भगवान कम्म करन ख़ास, ख्वाहिश आपणी पूर कराईआ। भगत भगवान पाइण रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। भगत भगवान इक्को ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म वखाईआ। भगत भगवान इक जमात, इक्को अक्खर करन पढ़ाईआ। भगत भगवान साचा साथ, साचा संग रखाईआ। भगत भगवान इक दूजे दी सुणन बात, दूजा सुणन कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन वेखे चाईं चाईंआ। भगत भगवान इक्को रंग, रंग रंगीला इक रंगाइंदा। भगत भगवान इक पलँघ, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। भगत भगवान इक मृदंग, नाम मृदंगा इक वजाइंदा। भगत भगवान इक अनन्द, अनन्द अनन्द आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा खेल वखाइंदा। भगत भगवान इक मकान, बेमुकाम रिहा जणाईआ। भगत भगवान इक निशान, सच निशाना दए वखाईआ। भगत भगवान इक कलाम, एका कलमा दए जणाईआ। भगत भगवान इक अमाम, एका तख्त सोभा पाईआ। भगत भगवान इक नज़ाम, एका हुक्म मनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे होण गुलाम, बण बरदे सेव कमाईआ। भगत भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल जणाईआ। भगत भगवान एका सज्जण, सज्जण अवर ना कोए जणाईआ। भगत भगवान एका मजन, इक सरोवर दए वखाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे परदे कज्जण, आप आपा ना कोए वड्याईआ। भगत भगवान जुग जुग इक दूजे नूं सद्दण, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान मिल के ताल साचे वज्जण, तलवाड़ा इक्को घर शनवाईआ। साचे घर वज्जे ताल, भगत भगवन्त आप वजाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल दया कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक समझाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, सतिगुर साचा आसण लाईआ। भगत होए ना कदे बेहाल, बहिबल रूप ना कोए वटाइंदा। भगवन बणे आप दलाल, बण विचोला मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे हक़ हक़ हलाल, हकीकत साची खोज खुजाइंदा। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखाइंदा। भगवन्त भगत लए भाल, आप भाल्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान आप सलाहइंदा। भगत भगवान इक सलाह, सलाहगीर ना कोई वखाईआ। भगत भगवान इक मलाह, बेड़ा

इक्को इक चलाईआ। भगत भगवान इक्को राह, रहबर इक्को इक दरसाईआ। भगत भगवान इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। इक दूजे दी पकड़न बांह, पल्लू छुट्ट कदे ना जाईआ। भगत भगवान वसण साचे थाँ, थाँ थनंतर मिले वड्याईआ। भगत भगवान माणण ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। भगत भगवान नाता पिता माँ, पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। भगत रखण भगवान ओट, इक्को ओट रखाईआ। मेल मिलाए निर्मल जोत, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। लेखा चुक्के ओत पोत, पुत्त पोतरा ना रूप वटाईआ। नाता तुटे वरन गोत, मिले सच सरनाईआ। लेखे चुक्के लोक परलोक, एका घर बहाईआ। नाम सुणाए सति सलोक, साचा ढोला गाईआ। चरणां हेठ दबाए मुक्ती मोख, मुफ्त आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन होए आप सहाईआ। भगत सहाई होए प्रभ, आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी लए लभ्भ, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। दरस दिखाए प्रगट झभ्भ, झलक इक्को नूर जणाइंदा। जगत विकारा मेटे हब्ब, हउमे रोग गवाइंदा। अमृत जाम प्याए मध, इक्को रस चखाइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, घर मन्दिर कुण्डा लाहइंदा। आत्म सेजा साची सद्द, आपणी गंढु पुआइंदा। धर्म निशाना देवे गड्ड, शब्द निशान झुलाइंदा। तेरी मेरी इक्को यद, साचा सोहला राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे घर वसाइंदा। भगतन वसे साचा खेड़ा, श्री भगवान आप वसाईआ। नाता तुटे तेरा मेरा, सोहँ वज्जे सच वधाईआ। आवण जावण चुके गेड़ा, राए धर्म ना दए सजाईआ। लख चुरासी चुके झेड़ा, जून अजून ना कोए भुआईआ। साहिब सतिगुर करे मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। तारनहारा ना लाए देरां, दूर दुराडा नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान लए उठाईआ। भगत भगवान लए उठाल, आपणा हुक्म जणाइंदा। दीपक जोती इक्को बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अनहद सुणाए सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद अलाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई वखाइंदा। सतिगुर पूरा दीन दयाल, फड़ बाहों पार कराइंदा। चरण दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याइंदा। हरिजन साचे वेखे लाल, लालन आपणे कोल बहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन कलिजुग अन्त जिस उपर होया आप दयाल, आवण जावण जन्म मरन मरन जन्म दुःख मिटाइंदा।

✻ १८ माघ २०१६ बिक्रमी बेला सिँघ पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✻

भगत मारे सच्चा ताअना, बिरहों तीर चलाईआ। श्री भगवान तेरा मिटदा जाए निशाना, नाम निशान ना कोए झुलाईआ। सृष्ट सबाई रसना जिह्वा गाए गाणा, बत्ती दन्द वज्जे वधाईआ। आत्म नाद ना कोई सुणाना, छत्ती राग मिली चतुराईआ। साचा मिले ना किसे टिकाना, मन्दिर हक़ नज़र ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़े कुराना, अञ्जील तफ़सील रही वखाईआ। खाणी बाणी हथ्थ ना आया नौजवाना, मर्द मर्दाना ना फेरा पाईआ। शाहो भूप वड राजाना, शहिनशाह सच्चा ताज ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन सुंञी सर्ब लोकाईआ। भगत कहिण तेरी उडीक, नित नित ध्यान लगाया। तूं दाता लाशरीक, शिरकत विच कदे ना आया। तेरा मार्ग इक बारीक, दो जहानां खेल कराया। तेरा धुर फ़रमाणा ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाया। तेरे अन्दर इक्को झीत, झाकी आपणी दे वखाया। तेरी नज़र ना आए प्रीत, प्रीतीवान क्यों बैठा मुख छुपाया। कलिजुग अन्तिम गया बीत, बीती सदी दे वडयाया। पिछली चुके कूड़ी रीत, सतिजुग सच्चा राह वखाया। तेरा साहिब इक्को मीत, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आया। कोई मन्दिर कोई मसीत, शिवदुआले मठ्ठ राह तकाया। तूं बैठा रिहा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगत रहे मंग मंगाया। तेरी करनी सदा महान, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख दुकान, दर साचा रहे तकाईआ। सृष्ट सबाई नार विभचार, हरि कन्त ना कोई हंढ्ढाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, दहि दिशा पई दुहाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक होए ख्वार, पंडत पांधे धीरज धीर ना कोए धराईआ। ग्रन्थी पन्थी रोवण ज़ारो ज़ार, ज़ाहर ज़हूर नज़र किसे ना आईआ। दुक्खां भरया सर्ब संसार, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। ग़फ्लत होए ना अजे बेदार, सुरती शब्द ना कोई मिलाईआ। कलिजुग जीव रले कागां डार, हँस रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया चुभ्भीआं रहे मार, माणक मोती हथ्थ किसे ना आईआ। गुर का शब्द ना सके पाल, प्रितपाल करे ना सच्चा माहीआ। नौ खण्ड पृथमी थक्के भाल, बेपरवाह नज़र ना आईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, साची धीर ना कोई धराईआ। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कर किरपा बण दलाल, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। हउँ बाले, बाल निधान, मन मति बुध ना कोई वड्याईआ। वेला अन्त अन्त संभाल, इक्को तेरी ओट तकाईआ। तूं मुरदे लए ज्वाल, जीवण मरन दएं सिखाईआ। गोबिन्द पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। तुध बिन हल्ल ना करे कोई स्वाल, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

५४० १३

इक वखाउणा साचा घर, भगतन साची मंग मंगाईआ। भगत वेखण खोल्ह अक्ख, नैण नैण उठाया। कृपाल ठाकर सुआमी अन्तिम रख, तेरी ओट तकाया। साचा मार्ग देणा दस्स, जिस मार्ग कबीर जुलाहा तेरे दर ते आया। श्री भगवान कहे हस्स हस्स, हस्स आपणा भेव खुल्हाया। कलिजुग अन्तिम मैं लोकमात आवां नस्स नस्स, निरगुण आपणा फेरा पाया। जन भगतां अन्दर जावां वस, नज़र किसे ना आया। मन्दिर बहि के गावां जस, सोहँ ढोला इक सुणाया। तीर निराला मारां कस, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया। मेल मिलावा पुरख समरथ, समरथ आपणा घर वखाया। लहिणा देणा चुकावां हथ्थो हथ्थ, पूरब लहिणा झोली पाया। सरन सरनाई जो जन जाए ढठ्ठ, एथे ओथे पन्ध मुकाया। नाम बन्न्हे साची गठ्ठ, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाया। पिच्छे तारया इक्को धन्ना जट्ट, कलिजुग अन्तिम कोटन आपणे विच समाया। सतिजुग दा खोल्हया साचा हट्ट, बण वणजारा फेरा पाया। घर घर देंदा फिरे वथ, वस्तू इक्को इक वरताया। अन्त चढ़ाए आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाया। दरगाह साची देवे रख, सचखण्ड दुआरे आप बहाया। ओथे भगतां करे इकठ्ठ, दूजा रहिण कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा जणाया। साचे भगत रखो याद, सो पुरख निरँजण आप समझाईआ। कलिजुग अन्त सुणे फ़रियाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। शब्द अगम्म सुणाए नाद, अनादी धुन जणाईआ। गुरमुख बणाए सच्चे साध, जिस साधना आप समझाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। लख चुरासी विचो काढ, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। लेखे लाए तन माटी हाड, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। दर घर देवे साची दाद, अतोट अतुट आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन होवे आप सहाईआ। भगत सुहेले साचे मित्र, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जिस खेल खेलया नाल बाजां तित्तर, जो त्रिलोकी चरणां हेठ दबाइंदा। कलिजुग अन्तिम आए नित्तर, सूरबीर आपणा पर्दा लाहइंदा। लख चुरासी वेंहदी रहे बितर बितर, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जिस दे पिच्छे ज़िकरीए चलाया ज़िकर, सो जन भगतां आपणा ज़िकर सुणाइंदा। गुरमुखां लाहे पिछला फ़िकर, अग्गे आपणी गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां माण दवाइंदा। साचे भगत रहो तैयार, त्रैभवण धनी आप जणाईआ । अग्गे मिले इक प्यार, दूजी वंड ना कोए रखाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मारे मार, मारनहारा इक्को आईआ। ग़रीब निमाणयां देवे पैज स्वार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस रसना गाया सोहँ सच जैकार, जै जैकार विष्न ब्रह्मा शिव शनवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेल मिलाए अन्तिम नाल, नालश सब दी दए मिटाईआ। सतिजुग मार्ग रिहा सखाल, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। शाह रूप बणाए कंगाल, कंगाल शाह रूप वटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सोए रिहा उठाईआ। भगत उठाए सुहञ्जणी रैण, भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। दरस दिखाए एका नैण, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। भगत भगवान इकठ्ठे रहिण, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। नज़री आए साचा सैण, सज्जण बणे शहिनशाहीआ। अन्तिम चुक्के लहिण देण, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। सोहँ सोहला जो जन कहिण, वेले अन्त ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई रिहा पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई सोहँ अक्खर पढ़ना, सतिजुग सच सच जणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वड़ना, नौ दुआरे पन्ध मुकाइंदा। डूँग्घी भँवर कदे ना डरना, सुखमन टेडी बंक पार कराइंदा। ईड़ा पिंगल अग्गे ना अड़ना, मूँह दे भार सुटाइंदा। कूड़ी क्रिया कदे ना सड़ना, अमृत सरोवर इक नुहाइंदा। साचा खेल सतिगुर करना, गुर करता वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म पल्लू फड़ना, शब्दी सुरती गंढु बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन दस्से साची रीत, सतिजुग नाता तुटे मन्दिर मसीत, काया बंक इक सुहाइंदा। काया बंक हरी का मन्दिर, हरी दुआर आप जणाईआ। नज़री आए अन्दरे अन्दर, अन्तष्करन वेख वखाईआ। करे प्रकाश डूँग्घे खण्डर, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। मन वासना मेटे बन्दर,
५४२ दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। लेखा चुक्के सूरज चन्द्र, सूरया चन्न ना कोए रुशनाईआ। करे प्रकाश जोत निरँजण, ५४२
१३ निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। साहिब सतिगुर दर्द दुःख भय भंजन, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। तीजे नेत्र पाए अञ्जण, अक्ख १३
प्रतख खुल्हाईआ। लेखे लाए काया कंचन, माटी काची ना कोए विकाईआ। पूरा करे आपणा बचन, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जन भगतां मार्ग आए दस्सण, दहि दिशा वेख वखाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी मसण, किशना सुखला वंड वंडाईआ। लेखा जाणे उतर पूरब दक्खण पच्छिम, पसचाताप करे लोकाईआ। सन्त सुहेले भगत भगवन्त आए रखण, रक्षया करे हर घट थाईंआ। लख चुरासी विच्चों विरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बहि बहि तक्कण, श्री भगवान की की खेल रचाईआ। ग़रीब निमाणयां आया चुक्कण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जूठयां झूठयां आया पुछण, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। किसे थाँ ना लभ्भे लुक्कण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर वेख वखाईआ। बण के शेर आया बुक्कण, शब्दी इक्को भबक लगाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह आया पुट्टण, गोबिन्द बूटा पुट्टया इक्को काहीआ। जन भगतां सुखणां आया सुखण, सुख वसे खेड़ा जिस दुआरे भगत आसण लाईआ। उज्जल करन आया मुखण, जगत दुरमति मैल धुआईआ। बेवफ़ाई आया कुट्टण, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। सृष्ट सबाई आया लुट्टण, बण लुटेरा सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भगत

भगवन्त नार कन्त सोभावन्त, सच महल अटल मनार दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सच श्रृंगार, सोभावन्त छैल छबील, वस्त्र भूशन ना कोए नील, बसन बनवारी जोत निरँकारी, अक्ल कल भरपूरा हाज़र हज़ूरा, नेरन दूरा ज़ाहर ज़हूरा, गहर गम्भीर बेनज़ीर, नज़र मेहर इक उठाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कट शरअ ज़ंजीर, शख्सीयत इक्को इक जणाईआ। सतिजुग साची पाए आदत, अदल इक्को इक जणाइंदा। चार वरन इक इबादत, एका नाम पढ़ाइंदा। जन भगतां देवे आप शहादत, शहिनशाह आपणी सेव कमाइंदा। एथे ओथे करे तुआकब, अग्गे पिच्छे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच सौदागर, सिदक सबूरी सादर तोड़ निभाइंदा। सादक सदीक दए भरोसा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। पिछला रहिण ना देवे रोसा, रुसयां लए मनाईआ। अग्गे मार्ग दस्से सौखा, सुहबत करे लोकाईआ। किसे नाल ना करे धोखा, उच्ची कूक कूक जणाईआ। प्रभ मिलण दा इक्को मौका, वेला गया हथ्थ ना आईआ। धरत मात दा पोचिआ रहि जाए चौंका, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बैठण कोए ना पाईआ। बिन हरि भगत सर्ब जहान जाए औंता, जगत निशान ना कोए रखाईआ। बिन हरि कन्त दूजा नज़र ना आए खौंता, रंडी दिसे सर्ब लोकाईआ। साहिब सतिगुर जिस दर दुआरे पहुंचा, तिस मन्दिर वज्जे वधाईआ। भगत भगवान मिलण दा रखे शौंका, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई कलिजुग अन्तिम सुत्ती ला के ढौंका, सोयां ना कोए उठाईआ। अन्तिम सब दी डुब्बे नौका, नईया पार ना कोए कराईआ। जिस ने छड्ड्या पटना पौंटा, सो पट्टी रिहा पढ़ाईआ। साहिब सतिगुर इक्को बहुता, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। शब्द गुर लोक परलोका, दो जहान करे शनवाईआ। हरि भगत भगत हरि दोवें रल गावण सोहँ सलोका, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरे नैणां तेरी झोली पाईआ।

❇ १८ माघ २०१६ बिक्रमी मुहिंदर सिंघ पिण्ड बोपा राए ज़िला अमृतसर ❇

जुग चौकड़ी खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। परवरदिगार इक इकल्ला, दो जहानां खेल खलाइंदा। हरि पुरख निरँजण फड़ाए आपणा पल्ला, आदि निरँजण नूर धराइंदा। एकँकारा सच सिघांसण एका मल्ला, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। जलवा नूर इलाही अल्ला, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा जला थला, महल अटल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी

खेल अपारा, हरि करता वेख वखाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, दर घर साचे करे रुशनाईआ। आदि जुगादी इक अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। लख चुरासी खोल्ह कवाड़ा, घर घर सेज हंढाईआ। नाद धुन शब्द जैकारा, रागी राग सुणाईआ। निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखारा, गीता ज्ञान इक दृढ़ाईआ। अञ्जील कुराना बोल नाअरा, हक़ हकीकत दए समझाईआ। लाशरीक परवरदिगारा, बेपरवाह वड वड्याईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर नाद सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वारा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। भगत भगवन्त मेल मिलावा कन्त भतारा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। सन्तां देवे सच प्यारा, चरण प्रीती इक सिखाईआ। गुरमुखां कराए हट्ट वणजारा, वस्तू इक्को नाम विकाईआ। गुरसिखां देवे चरण धूढ़ी छारा, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, दो जहानां रिहा जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारा, करोड़ तेतीसा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि सच सिँघासण, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल वेख वखाइंदा। गोपी काहन पाए रासण, लोआँ पुरीआँ नाच नचाइंदा। जन भगतां करे पूरी आसण, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। निरगुण जोत करे प्रकाशन, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सतिजुग साची, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी साहिब सुल्तान, सति सतिवादी आप कराईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह नौजवान, बेपरवाह बेअन्त वड्डी वड्याईआ। दो जहानां हुक्मरान सच संदेसा इक सुणाईआ। चौदां लोकां दए ज्ञान, चौदां तबक रिहा उठाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, माया ममता मोह दए चुकाईआ। सतिजुग साचा बणे विधान, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई इक्को नज़री आए राम, रहीम इक्को फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बरदे करे ग़ुलाम, माण ताण ना कोए वड्याईआ। निउँ निउँ सजदा करन सर्ब सलाम, अलैकम वेखे थाउँ थाईंआ। प्रगट होए हक़ अमाम, अमानत सब दी देवे थाउँ थाईंआ। चौदां तबक बदले नज़ाम, नज़म इक्को नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा डंका नाम ख़ुदाईआ। डंका नाम सुणाए मख़लूक, ख़ालक आपणी खेल खलाइंदा। ना कोई तत्त काया कलबूत, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। देवणहार सच सबूत, साख्यात नज़री आइंदा। नाता तोड़े पंज तत्त भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन ना कोए पाइंदा। भगत भगवान इक्को ताणा पेटा सूत, साचा नाम रंग रंगाइंदा। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया

नाता तोड़े जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। कलिजुग कूड़ा होए दूर, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। प्रगट होए योद्धा सूर, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी वेखे नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मुरीदां मुर्शद हाज़र हज़ूर, हज़रत एका रंग वखाईआ। एका देवे सति सरूर, नाम खुमारी आप चढ़ाईआ। जन भगतां आसा करे पूर, भगवन आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नाम डंका राउ रंकां रिहा सुणाईआ। नाम डंका वज्जे दो जहान, दो जहानां वाली आप वजाइंदा। गुर अवतार करन ध्यान, पीर पैगम्बर नैण उठाइंदा। खाणी बाणी होई हैरान, शास्त्र सिमरत वेद सर्ब कुरलाइंदा। अञ्जील कुराना आई हाण, शरअ शरीअत ना कोए जणाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक बेईमान, बेवा सब दा रूप जणाइंदा। नज़र ना आए इक भगवान, कोटन कोटि नैण उठाइंदा। सृष्ट सबाई तुटा माण, अभिमान घर घर डेरा लाइंदा। आत्म ब्रह्म सके ना कोए पछाण, परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जीवण जुगत ना कोए समझाइंदा। आत्म धुन ना वज्जे नाद धुन्कान, अनहद ताल ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, सृष्ट सबाई वक्त दुहेला, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। धीरज धीर ना देवे धीर, धरत धवल रही कुरलाईआ। ना कोई सहाई पैगम्बर पीर, फ़कीर फ़िकरा ना कोए पढ़ाईआ। किसे सच ना मिले तदबीर, तकदीर सब दे सिर ते छाईआ। करे खेल बेनज़ीर, मेहरवान नज़र किसे ना आईआ। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, दीन मज़्ब पन्ध मुकाईआ। अमृत बख्शे ठंडा सीर, आब हयात आब प्याईआ। चोटी चाढ़े फड़ अखीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया जाए मुक्क, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। हरि का भाणा कदे ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। माया ममता हउमे हंगता बूटा जाए सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराइंदा। भगत भगवान लए पुच्छ, सन्त सुहेले आप जगाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, द्वैती पर्दा आपे लाहइंदा। गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले गुरु गुर चेले बणाए साचे सुत, जन जननी गोद सुहाइंदा। सतिजुग सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। प्रगट हो अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाइंदा। जन भगतां उपर जाए तुठ, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट, निझर झिरना इक झिराइंदा। नाम भण्डारा दए अतुट, सोहँ सो आप वरताइंदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाइंदा। हरिजन आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी पन्ध चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस

जन वखाए साचा घर, गृह मन्दिर मेल मिलाइंदा। गुरमुख समां सदा चंगा, चंगी तरा समझाईआ। सतिगुर प्रेम जो जन रंगा, रंगत इक चढ़ाईआ। ना भुक्खा ना कदे नंगा, जीवण मरन ना कोए वड्याईआ। अठ्ठे पहर इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच समाईआ। घर विच घर चढ़ाए साचा चन्दा, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। तोड़णहारा बंदीख़ाना बंदा, जिस जन आपणी बंदगी दए समझाईआ। गुरसिख कदे ना होवे गंदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को गाए छन्दा, मिल मिल सखीआं मंगल गाईआ। गुरसिख गुरमुख सन्त सुहेला सदा ठंडा, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समां मनमुखां उत्ते लगाईआ। गुरमुख समां सदा सोहणा, सोहणी रुत्त वखाईआ। मिल सतिगुर कदे ना रोणा, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। गुर का शब्द साचा गाउणा, गा गा खुशी वखाईआ। ग़फ्लत विच कदे ना सौणा, सोवत जागत इक्को रंग वखाईआ। आपणे घर विच आपणा सतिगुर पाउणा, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। देवणहारा ठंडी पाउणा, पवण उणंजा सेव लगाईआ। कटणहारा अवणा गवणा, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा समां, सो गुरसिख ना होए निकम्मा, निज घर आपणे आपणी खुशी मनाईआ। गुरसिख समां सतिगुर संजोग, गुर शब्द होए कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया चुक्के रोग, दुःख सुख नेड़ ना आईआ। दरस करे इक अमोघ, आत्म जोत परमात्म विच समाईआ। एथे ओथे सदा मोख, मुक्ती चरणां हेठ रखाईआ। गुरसिख ना हरख ना कोए सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जिस हरि का नाउँ चुगी चोग, तृष्ना भुक्ख ना लागे राईआ। अठ्ठे पहर काया मन्दिर अन्दर लग्गे चोट, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सृष्ट सबाई बिन गुर शब्द रही रोत, रोंदयां चुप्प ना कोए कराईआ। समें अन्दर सारे होए बेहोश, आपणी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अन्तिम मारे जाणे निर्दोष, दोष सब ते रिहा ठहराईआ। किसे कम्म ना आउणा काया माटी चम्मड़ा पोश, पुश्त हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जिस नूं सतिगुर देवे साची सोच, तिस समां इक्को जिहा नज़री आईआ। गुरमुख समां इक रंग, इक्को घर वखाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, सोभावन्त आप जणाइंदा। दिवस रैण वज्जे मृदंग, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। गुर का समां गुरमुख वेखे लँघ, मनमुख नेड़ कोए ना आइंदा। लहिणा देणा चुके बत्ती दन्द, रसना जिह्वा लेखे पाइंदा। कलिजुग औध गई हंढु, अग्गे गंढु ना कोए पुआइंदा। सतिजुग साचा जन भगतां पाए ठंड, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। बीस बीसा दए हदीसा इक इकीसा सृष्ट सबाई वखाए इक अनन्द, अनन्द आत्म परम पुरख परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणा आप जणाइंदा।

❈ १८ माघ २०१६ बिक्रमी सविन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड भुलर ज़िला अमृतसर ❈

सो पुरख निरँजण धरया बल, बल बावण नैण शरमाईआ। हरि पुरख निरँजण अछल अछल्ल, वल छल आपणी धार चलाईआ। एकँकारा वसणहारा निहचल धाम अटल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आदि निरँजण दीपक जोत गया बल, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे दो जहान, निरगुण दाता वड वड्याईआ। श्री भगवान सच संदेसा देवे घल्ल, अगम्म अगम्मड़ा हुक्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणी धार गया रल, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। साचा घर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। निरगुण रूप अलख निरँजणा, अलख अगोचर अगम्म अथाह नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, दर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा। सचखण्ड दुआरे सच कराए मजना, निर्मल निर्मल रूप वखाइंदा। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भंनण आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त हरि साचा सोभा पाइंदा। तख्त निवासी सच सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, साचा हुक्म इक प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो तैयारा, नर निरँकारा वेस वटाइंदा। आदि निरँजण सच चमकारा, श्री भगवान सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता इक दुआरा, पारब्रह्म प्रभ आप सुहाइंदा। सचखण्ड खोल्हे आप कवाड़ा, दिशा वंड ना कोए वंडाइंदा। निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, धुर फ़रमाणा हुक्म अल्हाइंदा। आदि अन्त हरि वेखणहारा, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, अदि जुगादि कमाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता दुःख ना कोए जणाईआ। आपणी करे आपे परख, वड पारखू सच्चा माहीआ। निरगुण देवे निरगुण दरस, आदरस इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि सच महल्ला, इक्को इक वसाइंदा। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, सोभावन्त सोभा पाइंदा। जोती नूर आपे रला, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। निरगुण फड़ाए निरगुण पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, करनी करता आप कमाईआ। आदि पुरख हो प्रतख, जुगादि वेखे चाईं चाईंआ।

सदा सुहेला हो समरथ, समरथ आपणा रंग रंगाईआ। बोध अगाध महिमा अकथ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। साचा मार्ग दरगाह साची दस्स, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा रखे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। निरगुण नूर कर प्रगट, जोती जाता डगमगाइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह हट्ट, साचा वणज इक कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपे माई आपे बाप, पिता पूत आप हो जाईआ। आपे सज्जण आपे साक, सगला संग आप निभाईआ। आपे खोल्हणहारा ताक, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। आपे बोलणहारा सच्चा वाक, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। आपे होए कमलापात, नारी कन्त आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। सचखण्ड दुआर छैल छबीला, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। निरगुण धार रंग रंगीला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। ना कोई संग रखे कबीला, किबल आपणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया श्री भगवान, आदि आदि प्रगटाईआ। निरगुण देवे निरगुण दान, दाता दानी दया कमाईआ। नार कन्त चतुर सुजान, सो पुरख निरँजण करे कुड़माईआ। हरि पुरख निरँजण मेल मिलाए आण, एकँकारा जननी जन रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे खेल वखाईआ। सचखण्ड दुआरे खेल अपारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। लेखा जाणे पुरख नारा, कन्त कन्तूहल भेव ना आइंदा। जननी जन बणे निरँकारा, सुत दुलारा एका जाइंदा। पूत सपूता कर प्यारा, शब्दी शब्द रंग रंगाइंदा। थिर घर खोल्हे आप दुआरा, दर दरवाज़ा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। सुत दुलारा इक्को जाया, पुरख अकाल दया कमाईआ। आपणी उँगली आपे लाया, वेखे चाईं चाईंआ। साचे मन्दिर आप बहाया, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्को साचा राग सुणाया, एकँकार करे पढ़ाईआ। चरण प्रीती नाता जोड़ जुड़ाया, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। साचा मन्दिर इक वसाया, थिर घर मिले वड्याईआ। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाया, सीस जगदीश होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे दया कमाईआ। सुत दुलारा छोटा बाला, थिर घर साचे खुशी मनाइंदा। सचखण्ड वेखे सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक्को नज़री आइंदा। जोत सरूप बैठा पुरख अकाला, अक्ल कला भेव ना आइंदा। दोए जोड़ दर करे स्वाला, ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। आपणा दस्स सच अहिवाला, हउँ भिखक मंग मंगाइंदा।

श्री भगवान मार्ग दस्से इक सुखाला, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। तेरी मेरी इक्को चाला, चाल अवल्लड़ी इक समझाइंदा। सोहँ रूप होए निराला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर दुआरे सुत दुलारे एका राग सुणाइंदा। सुत शब्द सुण के नाउँ, घर आपणे खुशी मनाईआ। श्री भगवान पकड़े बाहों, फड़ बाहों गले लगाईआ। चरण कँवल देवे थाउँ, सरन मिले सच्ची सरनाईआ। तिस साहिब बलि बलि जाउँ, जिस मेरी बणत बणाईआ। साचा दस्सया इक्को राहो, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड सच सिँघासण साचे सोभा पाईआ। श्री भगवान रिहा दस्स, शब्दी शब्द जणाइंदा। तेरा चले ना कोई वस, मेरा हुक्म तोहे भाइंदा। सरन सरनाई जाणा ढठ्ठ, माण ताण ना कोए वधाइंदा। मेरा नूर तेरा रूप प्रतख, ज़ाहर ज़हूर आप वखाइंदा। बिन नेत्र खोल्हे अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। तूं मेरा गाउणा जस, जस तेरा आप वड्याइंदा। पन्ध मुकाउणा नठ्ठ नठ्ठ, हरि पांधी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे आप जगाइंदा। शब्द दुलारा गया जाग, थिर घर साचे खुशी मनाईआ। धन्न धन्न मेरा वड्डा भाग, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जिस सुणाया साचा राग, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। चरण प्रीती रहे वैराग, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मेरी सदा सदा सद रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं बालक ग़रीब निमाणा तूं ग़रीब निवाज़, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। तूं साहिब सतिगुर दीन दयाल तेरा सच्चा इक समाज, तेरी इक्को नीत नज़री आईआ। तूं आदि रचया काज, तेरी महिमा कथ ना कोए सुणाईआ। सचखण्ड दुआरे तेरा राज, शहिनशाह तेरी शहिनशाहीआ। मोहे भाई तूं सच लगाई आवाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। सुत शब्द देवे साचा दान, सच भण्डार आप वरताइंदा। दो जहानां बणावां तैनूं काहन, सिर तेरे ताज टिकाइंदा। मेरा नाम तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान हुक्म समझाइंदा। सच संदेसा इक फ़रमाण, फ़रमांबरदार आप मनाइंदा। मुकामे हक़ हुक्मरान, हक़ हकीकत तेरी झोली पाइंदा। तेरा साहिब इक अमाम, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। साचा कलमा दए कलाम, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। सुत दुलारा करे सलाम, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। मैं बरदा तेरा ग़ुलाम, चाकर चाक अख्वाइंदा। साचा देणा इक निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक वखाइंदा। वस्त अमोलक सच प्यार, परम पुरख आप जणाईआ। सुत दुलारा करे विचार, हरि विचार विच ना आईआ। सोच सोच गया हार, सोच समझ ना सके राईआ। सचखण्ड वसे

एकँकार, थिर घर शब्द मिली वड्याईआ। पिता पूत इक सतार, तन्दी तन्द ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा छोटे बाल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरा संग महाकाल, महाबली आप बणाइंदा। तेरी वसाए सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा रंग रंगाइंदा। सदा सदा चले तेरे नाल, चाल निराली इक जणाइंदा। करे साहिब तेरी प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेरी गोदी देवे लाल, विष्नूं आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप समझाइंदा। सुत दुलारे तेरा बेटा, बिन मात पित कुड़माईआ। पुरख अकाल करे हेता, निरगुण निरगुण जोत रुशनाईआ। अन्दर बाहर खेवट खेटा, साचा बेड़ा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व आपणा रूप धराईआ। विश्व रूप विष्नूं धार, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण हौ उज्यार, सरगुण सरगुण गंढु पुआइंदा। जोती जोत जोत उज्यार, शब्दी शब्द डंक सुणाइंदा। चरण चरण चरण आधार, कँवल कँवल कँवल वड्याइंदा। किरपा कर आप करतार, कुदरत आपणा रंग वटाइंदा। ना कोई दूजा मीत मुरार, साथी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया देवे वर, ब्रह्म नेत्र नीर इक वहाइंदा। ब्रह्म नेत्र वहे नीर, वहण नज़र किसे ना आया। पुरख अबिनाशी करे खेल गुणी गहीर, गम्भीर आपणा नाउँ धराया। विष्नूं आपे मार ज़ंजीर, आपणा बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह अगम्म अथाह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड निवासी शहिनशाह, भूप आपणा हुक्म जणाईआ । सुत दुलारा लए जगा, शब्दी वंड वंडाईआ। विष्नूं लेखा दए लिखा, अन्तर बूझ बुझाईआ। साचा जाम दए प्या, रस इक्को इक रखाईआ। कँवली कँवल लए खिला, अव्वल आपणा नूर दरसाईआ। माँ प्यो बेटा बणे खुदा, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। ब्रह्मा वेता लए जणा, पारब्रह्म आपणी वंड वखाईआ। सुंन अगम्म जाए समा, धूंआँधार करे रुशनाईआ। आपणी इच्छया इक धरा, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला एका घर वखा, एका मइया नाता जोड़ जुड़ाईआ। साचा सईया बेपरवाह, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दर दर बैठे अलख जगाईआ। दर बैठे अलख, अलख अलख जणाया। शब्दी शब्द हो प्रतख, निरगुण निरगुण वेस वटाया। हरि का भेव बिन हरि कोई ना सके दस्स, लेखा लिख्त विच ना आया। चारे गावण इक्को जस, सोहँ ढोला राग अल्लाया। तूं मेरा मैं तेरे वस, तुध बिन नज़र कोए ना आया। करे खेल पुरख समरथ, साचा राह जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द सेव लगाया। शब्दी

शब्द सेवा अपार, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। त्रै त्रै मेला विच संसार, वड संसारी आप कराईआ। लख चुरासी कर तैयार, त्रैगुण माया वेख वखाईआ। लेखा जाण गुरू अवतार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्द अनाद बोल जैकार, साची धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर निश रूप, नज़र किसे ना आया। आप प्रगटाए साचा भूप, लोआँ पुरीआँ वेख वखाया। आदि जुगादी सति सरूप, सचखण्ड साचे डेरा लाया। वेखणहारा दिशा कूट, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाया। जुग चौकड़ी गुर अवतार, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। शब्द अगम्मी देवे धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद बण लिखार, कातब इक्को कलम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह शब्दी गुर, गुर शब्दी दया कमाइंदा। दो जहानां इक्को सुर, इक्को ताल वजाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जाए जुड़, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी आप हंढाइंदा। जुग चौकड़ी सेवादार, गुर अवतार हुक्म मनाईआ। पीर पैगम्बर कर तैयार, कलमा नबी आप समझाईआ। दीन मज़्ब बन्ने धार, इस्म आज़म भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म मनाईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, नव नौ चार रहिण ना पाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, बेअन्त वड वड्याईआ। लेखा जाणे तेई अवतारा, भगत भगवन वेख वखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्णहार किवाड़ा, अञ्जील कुराना रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी वंड वंडाईआ। गुर गुर वंड विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड दया कमाइंदा। आदि जुगादी इक्को छन्द, आत्म परमात्म राग सुणाइंदा। कलिजुग औध गई लँघ, वेला अन्तिम आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण मंग, प्रभ अग्गे झोली सर्ब डाहइंदा। लख चुरासी भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया ना कोए मिटाइंदा। सृष्ट सबाई रसना जिह्वा गाए बत्ती दन्द, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। साचा नूर ना चढ़या चन्द, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ पई वंड, हरि मन्दिर नज़र किसे ना आइंदा। दूई द्वैती भरमां ढाहे ना कोए कंध, भाण्डा भरम ना कोए भंनाइंदा। सृष्ट सबाई नार दुहागण होई रंड, सतिगुर कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां वेख वखाइंदा। दो जहानां हरि जू वाली, सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी खेल निराली, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाईआ। कलिजुग अन्तिम चले चाल निराली, भेव कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर होए स्वाली, दर

५५१
१३

बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वखाईआ। आपणा बल दए वखाल, कलिजुग अन्तिम आया। प्रगट होया दीन दयाल, दरगाह साची पर्दा लाहया। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक जणाया। गुर अवतार लए उठाल, पीर पैगम्बर नाल मिलाया। अन्तिम सारे होए बेहाल, नेत्र रोवण देण दुहाया। सृष्ट सबाई सिर ते कूके काल, कलिजुग आपणा डंक वजाया। कोई ना चले किसे नाल, साचा संग ना कोए निभाया। गुरदर मन्दिर माया राणी वज्जे ताल, सच तस्वीर ना कोए वखाया। साध सन्त होए बेहाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण इक्को फेरा पाया। निरगुण इक्को पाए फेरा, फेरी आपणे नाम दिवाईआ। चार कुण्ट पाए घेरा, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग इकावन बावन लग्गा डेरा, पांजा, दूआ पर्दा दए उठाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कर के वेखे आपणी नज़र मेहरा, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला इक्को नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हक़ जनाब, साचे धाम सोभा पाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद करे आदाब, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। ना कोई पुन्न ना सवाब, ख़तरा सब दे सिर ते छाइंदा। हथ्थ दिसे ना हयात आब, हयाती सब दी मेट मिटाइंदा। साचा चरण दए रक़ाब, आसण इक्को इक तंग कसाइंदा। प्रगट होए हक़ नवाब, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। चौदां तबकां पूरा करे ख्वाब, ख़ाह मख़ाह आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वड अमाम फेरा पाइंदा। प्रगट होया वड अमाम, आपणी दया कमाईआ। चौदां लोकां बदले नज़ाम, नज़र सब दी दए बदलाईआ। पीर पैगम्बर करे गुलाम, गुरबत कोए नज़र ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करे सलाम, दर मंगण इक्को अलख जगाईआ। तेरी सच्ची सच कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होवे बेपरवाहीआ। बेपरवाह वड मेहरवाना, बेनज़ीर खेल कराइंदा। पहलों देंदा रिहा हक़ परवाना, पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा। दस्सदा रिहा जगत कलामा, कलमा इक्को इक पढ़ाइंदा। अन्तिम आउणा इक अमामा, मैहन्दी सब दे रंग रंगाइंदा। सारे करो चल सलामा, मक्का काअबा चरणां हेठ रखाइंदा। निरगुण रूप पहरे जामा, पंज तत्त ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक़ हकीकत इक समझाइंदा। हक़ हकीकत लाशरीक, वाहद इक्को इक जणाईआ। चौदां तबक मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं निशाना तीर मारे ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। ईसा मूसा आए नज़ीक, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। मुहम्मद

टुट्टदी जाए प्रीत, साची प्रीत ना कोए रखाईआ। उम्मत उम्मत नबी शरीक, शिरकत घर घर डेरा लाईआ। जिस दी रखदे गए पीर पैगम्बर उडीक, सो पैगम्बर फेरा पाईआ। सदी चौधवीं जाए बीत, सालस बणे सच्चा माहीआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई आत्म परमात्म सब ने ढोला गाउणा इक्को गीत, सोहँ अक्खर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पीर पैगम्बर लए फड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मुकामे हक़ तख्त निवासी, साचे तख्त सोभा पाइंदा। करे खेल शाहो शाबासी, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां विष्न ब्रह्मा शिव लाहे उदासी, सुपत इन्द नाल मिलाइंदा। गृह मन्दिर निरगुण सरगुण घट घट अन्दर पावे रासी, गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाइंदा। सच दुआरे बैठा हरि, आपणी खेल कराईआ। गुर अवतार सद्दे दर, दर दरवेश हुक्म मनाईआ। इक दूजे दा पल्लू लओ फड़, इक्को रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा जाऐ झड़, झिड़कां दे रिहा समझाईआ। सतिजुग अग्गे कोई ना सके अड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब ने ढोला लैणा पढ़, पिछली छड्डो सर्ब पढ़ाईआ। साचे मन्दिर वेखो चढ़, कबीर जुलाहा रिहा समझाईआ। नानक निरगुण मिल्या वर, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। गुर गोबिन्द सरनी गया पढ़, प्रभ मेला चाईं चाईंआ। वरन बरन चुक्के डर, भय भउ ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को हरि, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर हरि करतार, गुर अवतार पीर पैगम्बर रिहा बहाईआ। पीर पैगम्बर आए सद्दे, हरि सद्दा नाम दिवाया। हुक्मे अन्दर सारे बद्धे, बैठे सीस झुकाया। वड्डे छोटे कोई ना कद्दे, पंज तत्त ना कोए वखाया। हरि चरण प्यार इक्को बद्धे, मधुरा रस ना कोए वखाया । जिस साहिब आपणी धार विच्चों कढ्ढे, सो आपणे विच समाया। एथे ओथे करे लड्डे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या रिहा जणाया। साची सिख्या सच दुआर, हरि सति करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो विचार, हरि विचार विच ना आईआ। पंज तत्त नाता तुटा संसार, सगल सृष्ट तजाईआ। जुग चौकड़ी लाया अखाड़, लख चुरासी नाच नचाईआ। हुक्मे अन्दर हो उज्यार, डंका शब्द सुणाईआ। लिख लिख लेखा अपर अपार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण करी पढ़ाईआ। खाणी बाणी दे ज्ञान, आत्म परमात्म वंड वखाईआ। अन्तिम मेला श्री भगवान, लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। दीन मज़्हब जगत दुकान, शरअ करे लड़ाईआ। सर्ब जीआं दा इक ईमान, इस्म इक्को इक वखाईआ। सच हदीस करे कुरान, तीस बतीस रिहा समझाईआ। सिफ्त करे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत दए गवाहीआ। गुर अवतार करन

५५३
१३

ध्यान, बैठे ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर मंगण दान, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। भगत भगवान ढोला गाण, इक्को राग अल्ाईआ। सन्त निज नेत्र करन पहचान, बेपहचान वेख वखाईआ। गुरमुख चरणी डिगण आण, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ । गुरसिख कहिण बाल अञ्याण, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, घट घट रिहा समाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द मेला वड बलवान, सूरबीर होए सहाईआ। सम्बल वसे सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। उच्चा झुल्ले इक निशान, निशाना नज़र किसे ना आईआ। शाहो भूप बण राजान, शहिनशाह एका हुक्म सुणाईआ। तख्त निवासी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। कलिजुग बदले अन्त विधान, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। साचे भगतां करे कल्याण, मुरीदां मुर्शद लए मिलाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोज़ख़ बहिश्त ना कोए वड्याईआ। पीर पैगम्बर निउँ निउँ करन सलाम, सजदा सीस रहे झुकाईआ। तेरा लेखा कोई ना सक्या जाण, लिख्या नाल ना कलम शाहीआ। असीं अन्त हौए हैरान, परवरदिगार की खेल रचाईआ। निरगुण प्रगट होया आण, रूप रंग रेख नज़र ना आईआ। गुरसिख सज्जण लए पछाण, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी सच दुकान, लोकमात आप खुल्ाईआ। सचखण्ड दा सच विहारा, बिवहारी आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम अन्त किनारा, नईया कूड़ी आप डुबाइंदा। भगत भगवन्त दए सहारा, चप्पू आपणा नाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। लख चुरासी खोजण आया, बेअन्त बेपरवाह। घर घर वेखे त्रैगुण माया, पीर पैगम्बर गुर अवतार सके ना कोए बचा। पंज तत्त खेड़ा ना किसे वसाया, हरि मन्दिर रूप ना सके वटा। नाद अनादी ना किसे सुणाया, अनहद राग ना कोए अला। अमृत जाम ना किसे प्याया, तृष्ना भुक्ख ना सके बुझा। निर्मल दीपक जोत ना किसे जगाया, अन्ध अन्धेर ना सके गवा। पढ़ पढ़ कलिजुग जीवां वाद वधाया, तीर निराला कोई ना सके चला। गोबिन्द मेल ना किसे मिलाया, नानक अंग ना ल्या लगा। राम कृष्न किसे नज़र ना आया, लख चुरासी बैठी मुख भवा। ईसा मूसा किसे कलमा नबी ना कोए पढ़ाया, वाहद मिल्या ना इक खुदा। उम्मत उम्मती दए दुहाया, अन्त होए ना कोए फ़िदा। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, चौधवीं चन्द ना कोए रुशना। रोज़ा बांग किसे कम्म ना आया, पीर ज़ाहरा ना ल्या मना। मन्दिर मस्जिद शिवदआले मठ्ठ पुरख अबिनाशी ना फेरा पाया, पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी मारन धाह। बिन हरि भगत भगवन्त किसे नज़र ना आया, आत्म कुण्डा सके ना कोई लाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचे जाणा

जाग, भिन्नड़ी रैण जगावण आईआ। श्री भगवान लगाया भाग, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरमुख हँस बणो काग, काग हँस रूप वटाईआ। दुरमति मैल धोवो दाग, निर्मल नीर सीर प्याईआ। आत्म जोती जगे चिराग, तेल बाती ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। हरिजन साचे जाणा उठ, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। सतिगुर पूरा गया तुठ, दीन दयाल वेख वखाइंदा। लुक्या रहिण ना देवे कोई किसे गुठ, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाइंदा। घर घर वड़ वड़ रिहा पुच्छ, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। किसे पास ना दिसे कुछ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा रिहा बुक्क, आपणी भबक लगाइंदा। साध सन्त बैठे लुक्क, सिर उपर ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले आप जगाइंदा। जागो सन्तो जगाए हरि, वेला अन्तिम आईआ। पारब्रह्म दा खुल्ह्या दर, कीमत करता कोए ना लाईआ। निथाव्याँ देवे साचा घर, निमाणयां होए सहाईआ। डुबदयां बाहों लए फड़, भवसागर पार कराईआ। जिस जन लगाए आपणे लड़, राए धर्म ना दए सजाईआ। जो सोहँ अक्खर लए पढ़, चित्रगुप्त हिसाब ना कोए वखाईआ। जन्म मरन चुक्के डर, आवण जावण दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत रिहा उठाईआ। उठे भगत मिल्या भगवन्त, भाण्डा भरम भंनाया। घर नारी पाया इक्को कन्त, गृह मन्दिर इक सुहाया। चोली चढ़या रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। नाम मिल्या मणीआ मंत, मन वासना दए खपाया। नाता तुट्टे जीव जंत, सतिगुर इक्को नज़री आया। गढ़ रहे ना हउमे हंगत, निवण सो अक्खर रिहा जणाया। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ियां हथ्थ किसे ना आया। वेखणहारा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाया। गुरमुख दूजे दर ना होणा मंगत, जिस घर परमेश्वर पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा जगाया। हरिजन जागे खोल्ही अक्ख, नेत्र नैण उठाया। निरगुण नूर आया प्रतख, सतिगुर दाता बेपरवाहया। सतिजुग मार्ग रिहा दस्स, सोहँ अक्खर इक पढ़ाया। इक दूजे दे होणा वस, भगत भगवान रिहा समझाया। जुग जन्म दी पूरी करे आस, तृष्ना तृखा दए बुझाया। लेखे लाए पवण स्वास, स्वास स्वासां डेरा ढाहया। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाया। भिन्नड़ी रैण आई कहिण, कह कह खुशी मनाईआ। उठो सन्तो वेखो नैण, निज घर दाता फेरा पाईआ। जन भगत बणाए साक सैण, सज्जण होर ना कोए रखाईआ। चुकावण आया लहिण देण, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। साध संगत नाता जुड़े भाई भैण, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी लाड़ी मौत खाए डैण, कलिजुग कूड़ा डंका रिहा

वजाईआ। मैं अनभोल सुत्ती प्रभ प्रेम उठी गुरसिखां आई कहिण, कह कह शुकर मनाईआ। श्री भगवान निरगुण हो के आया लैण, सरगुण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर खुशी रिहा वखाईआ। भिन्नड़ी रैण चाउ घनेरा, चार कूटां वेख वखाईआ। श्री भगवान जन भगत दुआरे लाया डेरा, डंका इक्को नाम वजाईआ। मार्ग दस्से तूं मेरा मैं तेरा, तेरी मेरी इक पढ़ाईआ। बिन भगवान भगत बन्ने ना कोई बेड़ा, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण खेडे खेडां, बण खलारी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रिहा मिलाईआ। भगत कहिण भिन्नड़ी रात, तेरी रुत्त सुहाईआ। हरि भगत बणे इक जमात, इक्को अक्खर नाम पढ़ाईआ। नाता तुटया ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। मनमति रहे ना नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक जणाईआ। साहिब नज़री आया साख्यात, सखी आपणी लए प्रनाईआ। भर प्याला प्याए हयात आब, आब दो आब मेल मिलाईआ। पर्दा लाहे मुख नकाब, नुक्ता आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी दया कर, भगतां आपे रिहा मिलाईआ। भगत कहिण सुण साची राती, रत्ती रत्त रंगाया। श्री भगवान मिल्या साथी, आपणे अंग बंधाया। लहिणा देणा चुक्कया पूजा पाठी, मंत्र इक्को नाम दृढ़ाया। मन मारया वड्डा हाथी, खण्डा तेज़ इक चमकाया। जाम प्याया बण के साकी, सच सुराही हथ्थ उठाया। बंद कवाड़ा खोल्ही ताकी, तकवा इक्को इक जणाया। जीवण विच बदलया जीवण दिती सच हयाती, हज़रत आपणा मेल मिलाया। वेख्या बाग़ इक बाग़ाती, बाग़ीचा सोहणा नज़री आया। भिन्नड़ी रैण तेरी चंगी लग्गी प्रभाती, प्रभ सज्जण दरस दिखाया। तेरा बिरहों तीर निराला वज्जी काती, कलमा पिछला दित्ता भुलाया। परवरदिगार नज़री आया पाकन पाकी, पतित पुनीत दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन साचा संग रखाया। भिन्नड़ी रैणे तेरे चन्द सतारे, कूकण देण दुहाईआ। भगत भगवान करे प्यारे, फड़ बाहों गले लगाईआ। कलिजुग जीव सुत्ते पैर पसारे, अन्त लए ना कोए अंगड़ाईआ। अबिनाशी करता दर दरवेश ग़रीब निमाणयां वाजां मारे, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। भिन्नड़ी रैनड़ीए तेरा रोवे चन्द, कलिजुग चन्द नज़र ना आया। सृष्ट सबाई प्या बंध, बंदीख़ाना ना कोए तुड़ाया। रसना जिह्वा लग्गा गंद, हिरदे हरि ना कोए वसाया। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाया। कलिजुग क्रिया खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक चमकाया। कलिजुग जीव भागां मंद, घर परमेश्र किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाया। भिन्नड़ी रैण कहे मेरे साचे वीर, मैं वीरां रही जणाईआ। मेरा

प्रभ वड पीरन पीर, लोकमात फेरा पाईआ। जिस दे पिच्छे बैठे रहे दिलगीर, सो धीरज रिहा धराईआ। पहलों कट शरअ ज़ंजीर, फेर आपणा दरस दिखाईआ। रातीं सुत्यां मेरे वेंहदयां बदल देवे तकदीर, तदबीर नज़र किसे ना आईआ। मैं वेख्या चोटी चढ़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जिस नाता छड्डुया शाह हकीर, कोझयां कमल्यां आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरे भाई, भाणा हरि जू आप वरताइंदा। तुसां वेखणा चाईं चाईं, वेला अन्तिम नेड़े आइंदा। नाता तुटणा पुत्तरां माई, भैण भाई संग ना कोए निभाइंदा। किसे घर दिसे ना धी जवाई, कन्त सुहाग ना कोए हंढाइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई रोवण थाउँ थाईं, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। जन भगतां श्री भगवान पकड़े बाहीं, फड़ बाहों आप उठाइंदा। चार जुग दे भुल्ले राही, आपणे मार्ग लाइंदा। कर्म धर्म दी कटे फाही, जन्म जन्म दा रोग गवाइंदा। दुरमति मैल धोवे शाही, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाइंदा। एथे ओथे करे सच नयाई, अदल अदालत इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। भगत कहिण भिन्नड़ी रैणे, रहबर इक्को नज़री आईआ। मुरीद मुर्शद भगत भगवान दोवें रहिणे बाकी ख़ाकी ख़ाक समाईआ। तेरे अंगण सोहण साचे गहिणे, गंगा माता भेंट चढ़ाईआ। रविदास चुकाए हरि जू लहिणे, चम्यारा गंढु पुआईआ। साढे तिन्न हथ्थ बुरज सब दे ढहिणे, शाह सुल्तान ख़ाक समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे नूं देण मेहणे, आपो आपणे सक्या ना कोए बचाईआ। हरि के भाणे कहिणे पैणे, सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतां देवे आपे देणे, दे दे ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मोहे चढ़या चाउ, चन्द इक्को नज़री आया। जिस दा खेल अगम्म अथाहो, गुर अवतार भेव कोए ना पाया। सो प्रगट हो के करे सच न्याउँ, गोबिन्द आपणे नाल मिलाया। जिस कीता सच पसाउ, सो अन्तिम ढावण आया। सारे चलो इक्को राहो, पुरख अकाल रहबर इक्को नज़री आया। एथे ओथे पिता माउँ, पूत सपूते गोद बहाया। सोहँ ढोला आत्म परमात्म गाओ, नानक शब्द विचोला इक जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पर्दा उहला आपणा दए उठाया।

❊ १६ माघ २०१६ बिक्रमी बीबी प्यारो दे गृह पिण्ड भुलर ज़िला अमृतसर ❊

भगतां भगती प्रभ देवे भाउ, भगवन दया कमाईआ। प्रभ मिलण दा साचा चाउ, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। अबिनाशी करता एका गाओ, गुण अवगुण लेखे लाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाओ, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। साचा मन्दिर इक

वसाओ, घर वज्जे तत्त वधाईआ। ढोला अगम्मी एका गाओ, गीत गोबिन्द अलाईआ। आपणा पर्दा आप उठाओ, मुख घूँगट रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ। साची भगती आत्म रस, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण होए वस, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। इक इकेला मार्ग दस्स, गुर चेला मार्ग लाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर सज्जण फेरा पाइंदा। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। नाम अगम्मी देवे वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, साचा वणज आप कराइंदा। कूड़ी क्रिया देवे मथ, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जगत वसूरा जाए लथ्थ, दुखियां दर्द दर्द वंडाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ, अठ्ठ अठोतरी आपणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक समझाइंदा। साची भगती सतिगुर सरन, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। नेत्र खुल्हे हरन फरन, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। नाता तुटे जन्म मरन, लख चुरासी फंद कटाईआ। साहिब मिले करनी करन, करता पुरख होए सहाईआ। लहिणा देणा चुके वरनी वरन, वरन गोत ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक समझाईआ। साची भगती सतिगुर एक, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। निज नेत्र निज रूप लैणा पेख, भेव अभेद खुल्हाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई औलीआ पीर शेख़, पंडत पांधा सर्ब कुरलाइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, नित नवित्त वेस वटाइंदा। वेखणहारा काया खेत, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। आप सुहाए सुहञ्जणी रुत्त बसन्ती चेत, चेतन आपणा पर्दा लाहइंदा। जिस जन खोल्हे सच्चा भेत, तिस आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। लख चुरासी लए वेख, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। भगती भाउ हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। भगत भगवान दी साची बिंद, सुत नादी रूप वटाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जन्म कर्म दी मेटे चिन्द, चिन्ता रोग रहिण ना पाईआ। अमृत धार वगाए सिन्ध, रस इक्को इक चवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक वड्याईआ। साची भगती सतिगुरू दुआर, दर दरबारा इक वखाइंदा। जिस घर मिले सच प्यार, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को वणज इक वपार, इक्को हट्ट चलाइंदा। इक्को वेखे वेखणहार, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार जिस करया पार, सो साहिब आपणा वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोए जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा नेत्र नैण होए शरमशार, अक्ख प्रतख ना कोए उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश मंगण हमेश, ख़ाली झोली

सर्ब वखाइंदा। श्री भगवान नौजवान आदि जुगादी इक नरेश, नर नरायण तख्त निवासी दर घर साचे सोभा पाइंदा। भगत भगवान रसना जिह्वा बत्ती दन्द कहिण, कह कह शुकर सर्ब मनाइंदा। सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप चुकाए लहिण देण, लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती इक जणाइंदा। साची भगती साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंग, धुन अनादी नाद सुणाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, सुहञ्जणी रुत्त आप वड्याईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर वेखे लँघ, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म लाए अंग, अंगीकार इक हो जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे अनन्द, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। ईश जीव गाए छन्द, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। नाता तुटे भेख पखण्ड, भाउ भगती इक जणाईआ। खुशी कराए बंद बंद, साची बंदगी इक्को लाईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, पंडत पांधा नज़र कोए ना आईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर दया कमाईआ। लेखा चुक्के सुरप्त इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए चतुराईआ। जिस मिल्या साहिब बख्शंद, बखशिश इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रिहा जणाईआ। साची भगती हरि का संग, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जगत दुआरा वेखणा लँघ, सतिगुर इक्को नजरी आइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। ना कोई जीउ ना कोई पिण्ड, ब्रह्मण्ड ना खोज खुजाइंदा। ना कोई सुरप्त ना कोई इन्द, ब्रह्मा विष्न शिव ना रूप वखाइंदा। ना कोई पिता ना कोई बिंद, जननी जन ना कोए सालाहइंदा। सच दुआर इक्को इक गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मार्ग इक वखाइंदा। साचा मार्ग दे आप, आपनड़ी बूझ बुझाईआ। इक्को सतिगुर इक्को पाठ, इक्को अक्खर करे पढ़ाईआ। इक्को सरोवर इक्को ताट, इक्को अमृत रस वखाईआ। इक्को मन्दिर इक्को हाट, इक्को वणज रिहा जणाईआ। इक्को सज्जण इक्को साक, इक्को नाता रिहा बंधाईआ। इक्को सेजा इक्को खाट, इक्को भूशन रिहा जणाईआ। इक्को पांधी इक्को वाट, इक्को पैंडा रिहा मुकाईआ। इक्को पत्तण इक्को घाट, इक्को बेड़ा चलाए सच्चा माहीआ। इक्को नूर इक्को ज़ात, इक्को जलवा करे रुशनाईआ। इक्को साहिब कमलापात, कँवल नैण रिहा खुल्लाईआ। इक्को वसे आस पास, सदा सुहेला संग निभाईआ। इक्को पवण इक स्वास, इक्को हर घट रिहा चलाईआ। इक्को मण्डल इक्को रास, इक्को गोपी काहन नचाईआ। इक्को गुर इक्को अवतार इक्को होए दासी दास, पीर पैगम्बर इक्को इक अख्वाईआ। इक्को भगत इक भगवान उपजाए साची शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को नाम इक्को अवाज़, इक संदेसा दए सुणाईआ। इक्को दाता ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ।

इक्को देवणहारा दाज, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। इक्को हंढ्ढावणहारा साचा राज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। इक्को धोवणहारा दाग़, जुग जुग दुरमति मैल गंवाईआ। इक्को पकड़नहारा वाग, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ । इक्को हँस बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। इक्को भगतां देवणहारा दाद, दस्तगीर इक हो जाईआ। इक्को रचणहारा काज, करता करनी आप कमाईआ। साची भगती भगतां देवे भगत समाज, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची भगती इक प्रगटाईआ। साची भगती नीकन नीका, हरि निरगुण आप जणाइंदा। बिन हरि नामे रस सब फ़ीका, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। सतिगुर भेव जाणे जन जी का, जीवण जुगत आप जणाइंदा। प्रभ मिलण दा इक्को तरीका, तरां तरां समझाइंदा। जिस दीआं रखदे रहे उडीकां, सो साहिब फेरा पाइंदा। नाम निधान जिस जन पीता, दिवस रैण खुमार चढ़ाइंदा। पिछलीआं मेटे सर्ब लीकां, अग्गे मार्ग इक रखाइंदा। बिन हरि चरण झूठीआं जगत प्रीतां, वेले अन्त कम्म कोए ना आइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सोहँ गाया सच्चा गीता, बिन सोहँ धार निरगुण विच निरगुण हो ना कोए समाइंदा। भगत भगवान इक्को डीठा, अनडिठड़ा मेल मिलाइंदा। भगवान भगत ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। भगत भगवान ना मरया ना जीता, जीवन मरन दोवें पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवान सदा अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। भगत भगवान मिले ना किसे मसीता, मन्दिर शिवदुआले मठ्ठ सर्ब कुरलाइंदा। जिस दी सिफ्त करे अठारां ध्याए गीता, वेद पुराण शास्त्र सिमरत सिफ्त सालाहइंदा। सो सतिगुर चलाए आपणी रीता, रीतीवान फेरा पाइंदा। भगवान भगत आपणे जिहा कीता, आप आपणा मेल मिलाइंदा। पिछला वेला पिच्छे बीता, अग्गे आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां राह जणाइंदा। आत्म परमात्म ज्ञान दृढ़ीता, दृढ़ विश्वास आप वखाइंदा। कौड़ा रीठा मिठ्ठा कीता, जिस जन आपणे चरण लगाइंदा। साचा छत्र सोहे सीसा, सीस जगदीश सोभा पाइंदा। भगत भगवान दी कोई ना करे रीसा, खाणी बाणी भगतां गीत सुणाइंदा। सिफ्त सालाही राग छतीसा, छत्ती राग अन्त ना आइंदा। जो जन मन्ने प्रभ दी सच हदीसा, हज़रत आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग पतित पुनीता, पतित उधारन आपणी दया कमाइंदा।

✻ १६ माघ २०१६ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह मानांवाला ज़िला अमृतसर ✻

साचा मार्ग इक्को एक, आदि जुगादि रखाया। गुर अवतार रखण टेक, पीर पैगम्बर सीस झुकाया। खाणी बाणी

लिखे लेख, वेद पुराण ढोला गाया। भगत भगवान साचा हेत, नित नवित्त मेल मिलाया। निरगुण सरगुण खेले खेड, दो जहानां फेरा पाया। कर किरपा जिस जन देवे आपणा भेत, पर्दा उहला दए चुकाया। लख चुरासी जून अजून अन्तिम होए प्रेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे अंग रखाया। साचा मार्ग इक्को इक, एकँकार दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा कोई ना सके लिख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सो साहिब पाए भिख, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। जहि वेखो तहि पए दिस, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ। हरिजन साची सिख्या लैणी सिख, सिखावणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्को लाईआ। साचा मार्ग पुरख समरथ, जुगा जुगन्तर आप लगाइंदा। नाम निधाना दे दे वथ, गुर मंत्र इक दृढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। जन भगतां हिरदे अन्दर वस, हरि आपणा भेव जणाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। जगत विकारा देवे मथ्थ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह इक चलाइंदा। साचा राह पतित पुनीत, हरि सतिगुर आप चलाईआ। जुग चौकड़ी वेखे रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढुाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्से सच प्रीत, मिले इक सरनाईआ। सब दा ढोला इक्को गीत, सोहँ करे पढ़ाईआ। जिस बणाया मन्दिर मसीत, सो वेखे थाउँ थाईंआ। कलिजुग अन्तिम सारे होए पलीत, पल्लू सके ना कोए धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। साचा मार्ग सच्चो सच, सच सच दृढ़ाइंदा। काया माटी भाण्डा कच्च, कंचन रूप आप वटाइंदा। अन्तर आत्म आपे रच, रोम रोम समझाइंदा। गुरमुख गुर गुर दोवें जाण बच, बचत सब दी झोली पाइंदा। जगत विकार विच ना जाणा फस, कूड़ी क्रिया कम्म ना कोए आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाइंदा। साचा मार्ग सतिगुर दुआर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। थिर रहे ना कोए विच संसार, पंज तत्त काया माटी ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। निर्मल जोत इक आकार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर, दर दरवाज़ा इक खुल्ाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, भावी सब दे सिर तों लाहीआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक लिखाईआ। साचा लेखा लेख अलख, लिख्त विच ना आइंदा। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा भेव चुकाइंदा। नाता तोड़ तत्त अठ्ठ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सर सरोवर वखाए तीर्थ तट्ट, किनारा आपणा पार कराइंदा। तन पहनाए नाम पट्ट, सच दोशाला ओढण रूप वटाइंदा। एथे ओथे रखे पत्त,

सो साहिब सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। निरगुण निरगुण गाए जस, सरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे धंदे आपे लाइंदा। सच्चा धन्दा हरि की सेवा, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। अमृत आत्म मिले मेवा, अंमिउँ रस आप चुआईआ। प्रगट होया वड देवी देवा, कोटन कोटि देवत सुर ढह पए सरनाईआ। आदि जुगादि अलख अभेवा, अगम्म अगोचर बेपरवाह बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। सदा सुहेला सद निहकेवा, निहचल बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। खेलण आया पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले करे वक्ख, वक्खरी धार चलाइंदा। नाम अमोलक देवे रस, दस्त बदस्त आप फड़ाइंदा। अमृत चोवे साचा रस, निझर धार वहाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, अन्तर आत्म खोज खुजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे पक्ख, साची वंड वंडाइंदा। सतिगुर सरनाई साचा हठ, मन वासना ना कोए भटकाइंदा। जगत खेल बाज़ीगर नट, लख चुरासी नटुआ स्वांग वखाइंदा। गुरसिख विके ना किसे हट्ट, करता कीमत आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह इक वखाइंदा। साचा राह दस्से नज़दीक, नेरन नेरा फेरा पाईआ। हरि का कोई ना दिसे शरीक, लाशरीक इक खुदाईआ। डूँग्घा पन्ध बड़ा बरीक, गुरसिख संभल संभल पैर टिकाईआ। दो जहानां अन्दर प्रभ रखी इक्को निक्की जिही झीत, जिस विच्चों भगत वेखे चाईं चाईंआ। आत्म परमात्म बिन झूठी प्रीत, बिन सतिगुर पूरे प्रीत तोड़ ना कोए निभाईआ। पारब्रह्म दा इक्को गीत, गोबिन्द ढोला सहिज सुभाईआ। जिस जन हिरदे वसया चीत, मन चित ठगौरी कोए ना पाईआ। हरि का मन्दिर हरी दुआर इक्को ठीक, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। कर किरपा काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण रूप सदा सुरजीत, सर्ब घट रिहा समाईआ।

❇ १६ माघ २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड लेलीआं ज़िला अमृतसर ❇

सो पुरख निरँजण सच संदेसा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। आदि जुगादी नर नरेशा, एकँकार हरि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी धारे भेखा, वेस अनेका रूप वटाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, जोती जाता डगमगाइंदा। रूप रंग ना कोए रेखा, अजूनी जून ना कोए भुआइंदा। निरगुण सरगुण करे साचा पेशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाण श्री भगवान, एका एक जणाईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड

वेख वखाईआ। लोआँ पुरीआँ दे ज्ञान, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सति पुरख निरँजण नौजवान, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। हुक्म हाकम देवे गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। सच सुनेहड़ा शब्द मृदंग, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। लोक परलोक आपे लँघ, चौदां तबक खोज खुजाइंदा। लख चुरासी आत्म परमात्म देवणहार अनन्द, अनन्द इक्को इक जणाइंदा। जुग चौकड़ी मेटणहारा पन्ध, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहार सुहागी छन्द, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। शाहो भूप वड राज राजाना, शहिनशाह इक अख्वाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। योद्धा मर्द मर्द मर्दाना, सूरबीर इक हो आईआ। पीर पैगम्बर बन्नृणहारा गानां, तन्दी तन्द इक उठाईआ। सुणावणहारा शब्द ज्ञाना, नबी रसूलां करे पढ़ाईआ। पहनणहारा अगम्मी बाणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सुणावणहारा साचा गाणा, गीत गोबिन्द इक अलृाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक समझाईआ। सच संदेसा देवे अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। निरगुण जाणे आपणा कम्म, सरगुण आप समझाइंदा। गुर अवतारां बेड़ा बन्नृ, साचा मार्ग इक वखाइंदा। पीर पैगम्बरां देवे नाम धन, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे बणे जननी जन, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। लेखा जाणे काया पंज तत्त तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा रंग रंगाइंदा। देवे दात बुध मति मन, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। वसणहारा धाम न्यार, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा खोलृ किवाड़, साचे तख्त डेरा लाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, हुक्म हाकम इक दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, अपरम्पर धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। प्रगट हो वड मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सत्त दीप नौ खण्ड देवणहार ज्ञान, अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। कागद कलम शाही होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी बणया रहे बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोए दसाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, सिफ्त सालाही सिफ्त वड्याइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे दान, नाम अमोलक झोली पाइंदा। पीर पैगम्बरां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच नज़ाम, नज़म नग़मा इक्को नाम सुणाइंदा। इक्को नाम पुरख समरथ, आदि जुगादि समाईआ।

नाउँ निरँकार चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, दहि दिशा दए वड्याईआ। गुर अवतार मेल मिलावा नस्स नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म वेखे हस्स हस्स, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। अनहद शब्द गाए जस, ढोला सोहला इक सुणाईआ। अमृत देवे आत्म रस, रस रसीआ बेपरवाहीआ। तीर अणयाला मारे कस, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। साची कार करे करतारा, करनहार आप अख्वाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप जणाइंदा। त्रैगुण वसणहारा बाहरा, त्रैभवन धनी आपणा फेरा पाइंदा। सचखण्ड दा वणज वपारा, लोकमात कराइंदा। लख चुरासी दे सहारा, जीव जंत गोद बहाइंदा। साध सन्त खोल्ह कवाड़ा, रूप अनूप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हकुम आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होया सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग कूड़ी बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। गुरसिख हँस बणाए कग्ग, कागों हँस उडाईआ। दरस दखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दा बन्न्हे तग, चार वरन ना कोए तुड़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर कराए साचा हज्ज, मक्का काअबा इक्को नज़री आईआ। नूर इलाही आलमीन रब्ब, रय्यत वेखे सर्ब लोकाईआ। चौदां तबकां चरणां हेठां लए दब्ब, पीर पैगम्बर सलामाअलैकम रहे बुलाईआ। आब हयात प्याए साची मधु, मधुर रस रस इक वखाईआ। पार किनारा करे हद्द, हदूद आपणी दए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम जाए लद, सिर आपणा भार उठाईआ। लोकमात जाए छड्ड, धरनी धरत खुशी मनाईआ। लख चुरासी ख़ाली करे हड्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। विश्व चले इक्को यद, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहाईआ। आत्म परमात्म वज्जे नद, धुन अनादी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक जणाईआ। सच संदेसा गाओ गीत, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। भगत भगवन्त इक्को रीत, साचा मार्ग हरि जू लाइंदा। दरस दखाए नर नरायण अनडीठ, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। चरण कँवल बंधाए प्रीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण माया पर्दा लाहइंदा। करे खेल लाशरीक, परवरदिगार आपणा फेरा पाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दी रखदे रहे उडीक, सो अमाम उल्मा सब दा पर्दा लाहइंदा। नज़री आए आप नज़दीक, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म सुणाए आप, आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई इक्को जाप, गुर मंत्र इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल माई बाप, बणे धन जणेंदी माईआ। निरगुण निरगुण सज्जण

५६४
१३

साक, सगला संग निभाईआ। भगत खोल्ह के वेखो ताक, भगवन घर विच नज़री आईआ। तुहाढे पिच्छे बणया चाक, चाकरी रिहा कमाईआ। प्रगट होया रसूल पाक, पतित पापी लए तराईआ। नाम धन देवे दात, ठग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। पूरा करे गुर गोबिन्द दा भविख्त वाक, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। हरिजन विके ना किसे हाट, करता कीमत इक्को पाईआ। लेखा जाणे बातन बात, बैतुल आपणा धाम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। साची सिख्या चार वरन, बरन अठारां आप जणाइंदा। श्री भगवान करनी करन, करता पुरख खेल वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पाणी भरन, करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर डरन, अग्गे सिर ना कोए उठाइंदा। हरि का भाणा सारे जरन, बिन भाणे नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवान प्यार अन्दर मरन, मरन जीवण इक समझाइंदा। साहिब सतिगुर तरनी तरन, तारनहारा फेरा पाइंदा। लोक परलोक सच सलोक इक्को अक्खर पढ़न, पाठशाला इक वड्याइंदा। साचे मन्दिर उच्चे टिल्ले गुरमुख साचे चढ़न, डण्डा नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी माया कूड़ी करनी लड़न, सच सुच्च ना कोए समझाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हउमे हंगता आया फड़न, शब्द डोरी तन्द उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा हुक्म इक जणाइंदा। साचा हुक्म अन्त कल, कलकाती आप जणाईआ। करे खेल अछल अछल्ल, वल छल धारी भेव ना राईआ। सच सिँघासण बैठा मल, सम्बल बंक सुहाईआ। जोती शब्दी आपे रल, नूर ज़हूर रुशनाईआ। सच संदेसा रिहा घल्ल, शाह सुल्तानां रिहा उठाईआ। कलिजुग अन्धेरा डूँग्घी डल, टिल्ला चोटी पर्बत कोए नज़र ना आईआ। श्री भगवान होया भगतां वल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म मन्नो कहिणा, कह कह आप जणाइंदा। कलिजुग अन्त मात ना रहिणा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। प्रभ का भाणा सब ने कहिणा, सिर सिर आप मनाइंदा। बिन हरि नामे लाड़ी मौत खाए डैणा, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। कूड़े वहण कूड़ कुड़यारा वहणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गीत इक अल्हाइंदा। साचा गीत इक गोबिन्द, हरि गोबिन्द इक जणाईआ। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, चिन्ता सोग ना कोए वखाईआ। हरिजन बणाए हरि जू बिंद, इक्को एक मेल मिलाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गवर वड वड्याईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, लहर लहर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक उपजाईआ। सच संदेसा उपजे मात, लग्ग मात्र ना कोए वखाइंदा। मिटे अन्त अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। लेखा जाणे कायनात,

५६५
१३

कलमा नबी फोल फुलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को आयत, लाशरीक आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह इक्को इक, एकँकार जणाईआ। सचखण्ड दुआरे मंगो भिक्ख, भिखक झोली रिहा भराईआ। माणस जन्म लओ जित, हार नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कदे ना देवे पिठ, जन भगतां होए सहाईआ। इक बणाओ मात पित, पिता पूत गोद उठाईआ। दरस करो नित नवित्त, काया मन्दिर अन्दर पर्दा लाहीआ। परम पुरख दा साचा हित्त, साची सिख्या इक समझाईआ। घर विच घर दीन दयाल पए दिस, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं दा इक्को हरि, इक्को घर वखाईआ। इक्को घर वेखो खोल्ह ताक, ताकी हरि जू आप तुड़ाइंदा। प्रभ मिले सच्चा साक, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। पार किनारा करे घाट, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। साचे मण्डल पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाइंदा। राम रमईया वसे पास, सीता सुरती आप प्रनाइंदा। नानक गोबिन्द दासी दास, सेवक साची सच जणाइंदा। समरथ पुरख सिर रखे दे कर हाथ, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिजुग साचे चलणी इक्को गाथ, सोहँ ढोला आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक वखाइंदा। सच संदेसा देवणहारा, जुग जुग करे शनवाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती शब्दी हो उज्यारा, डंका नाम वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। बीस बीसा बण वणजारा, दो जहानां वणज कराईआ। लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, हाहाकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। साचा लेखा दस्से हरि, हरिजन आप जगाइंदा। भगत भगवान मिलाए दर, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्के डर, भय भउ ना कोए आइंदा। आत्म परमात्म लए फड़, आप आपणी गोद उठाइंदा। करता पुरख करनी कर, कर्म कांड मेट मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां लाए लड़, पल्लू आपणा नाम फड़ाइंदा। डूँग्घी कन्दर काया मन्दिर जाए चढ़, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। चोटी चढ़ सोहँ अक्खर लए पढ़, वरन गोती मेट मिटाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा इक दूजे दा वसे घर, घर ठाकर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दा साचा राह, शब्द सरूपी गुरू मलाह, गुर गुर आपणी सेव कमाइंदा। गुर सेवक सेवादार, सतिगुर साची सेव कमाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्तां रिहा जगाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां इक्को सिख्या दए सिखाल, सिक्खी सिख्या भुल्ल ना जाईआ। सतिजुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक

जणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणे दलाल, दिलबर बणे सच्चा माहीआ। लेखा जाणे काल महाकाल, महाबीर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाह बेपरवाह, बेअन्त हरि अख्वाइंदा। सतिजुग साचा दए लगा, साध सन्त आप उठाइंदा। नार कन्त दए मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। हँ ब्रह्म दए समझा, पारब्रह्म आपणा पर्दा लाहइंदा। दमां दम लए जपा, स्वास स्वासां वंड वंडाइंदा। नेत्र खेत्र दए खुल्हा, चेत्र रुत्त बसन्त आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे अकाल, अक्ल कला अख्वाईआ। लख चुरासी इक्को धर्मसाल, धर्म दुआरा दए वखाईआ। जिस दुआरे पोह ना सके काल, महाकाल नेड़ ना आईआ। इक्को नज़री आए दीन दयाल, शहिनशाह सज्जण सच्चा माहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणी गोदी लए उठाल, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन वजाए ताल, तलवाड़ा नज़र किसे ना आईआ। मुर्शद मुरीदां पुच्छण आए हाल, बण पांधी फेरा पाईआ। गुर गोबिन्द बण दलाल, साचा हट्ट इक खुल्हाईआ। बाले नीहां हेठां दित्ते स्वाल, रुतड़ी रुत्त आप महकाईआ। कलिजुग अन्तिम आए ज़वाल, ज़रा ज़रा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच कहाणी इक बणाईआ। सच कहाणी इक कहावत, इक्को नाम दृढ़ाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हरी नाम जपण दी साची आदत, आदल इक्को इक समझाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ सच इबारत, अव्वल आपणा नूर दरसाइंदा। सतिजुग साचे करे सख़ावत, सख़ी आपणा फेरा पाइंदा। दूजी रहे ना कोए अदावत, दीन मज़्हब ना वंड वंडाइंदा। इक्को नाम लिखाए सच इबारत, कातब आपणा लेख जणाइंदा। अग्गे हो करे ना कोए सफ़ारश, सफ़ा सब दी मेट मिटाइंदा। नज़री आए ना कोई आरफ़, उल्मा इलम ना कोए पढ़ाइंदा। जन भगतां कराए आपणा तुआरफ़, तोबा तोबा कह कह सर्ब कुरलाइंदा। वसीला बणाए ना किसे दी मारफ़त, महिफ़ल आपणी आप लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण सब सदाकत, सजदा सीस झुकाइंदा। दरोही खुदाए चौदां तबक सब दे सिर ते आई कयामत, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लख चुरासी होणी हज़ामत, साबत नज़र कोए ना आइंदा। हरि का शब्द पाए बग़ावत, बग़ल कुरान सर्ब छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, मन्दिर मसीती इक्को रीती, इष्ट गुरदेव गुरदेव इष्ट दृष्ट सृष्ट आप खुल्हाइंदा।

५६७
१३

❇ १६ माघ २०१६ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर ❇

तरन तारन पुरख अकाल, आदि जुगादि दया कमाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त वेखे साचे लाल, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, चले नाल नाल, जग जीवण दाता विछड़ कदे ना जाइंदा। आत्म परमात्म देवे नाम सखाल, साची सिख्या इक समझाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी विच्चों भाल, गुरमुख आपणा भेव खुल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तरन तारन इक हो जाइंदा। तरन तारन पुरख समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। देवणहारा साची वथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण मार्ग देवे दस्स, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। हरि भगत अन्तर रिहा वस, लख चुरासी रिहा समाईआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा इक रघुराईआ। तारनहारा पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी दया कमाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेखणहारा खेल तमाश, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाइंदा। गोपी काहन पावे रास, रूप अनूप आप धराइंदा। सदा सुहेला इक इकेला हरिजन वसे पास, सन्त साजण आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, तारनहारा आपणी दया कमाइंदा। तारनहारा ठाकर सुआमी निहचल आपणा धाम सुहाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। जुगा जुगन्त शब्द अगम्म सुणाए अकथ कहाणी, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सच संदेसा देवे धुर दी बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, निझर झिरना इक झिराईआ। सुरत सवाणी शब्द मिलावे सतिगुर हाणी, घर साचे सोभा पाईआ। शाहो भूप हरि वड सुल्तानी, एकँकारा हरि निरँकारा निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी करनी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा देवे वर, नाम अमोलक झोली पाईआ। तारनहारा पारब्रह्म प्रभ एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण देवे टेक, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जन भगतां करे बुध बबेक, ववेकी आपणा रूप दसाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत्त ना अग्न जलाईआ। निज आत्म लए वेख, घर मन्दिर सोभा पाईआ। गुर सतिगुर गुरमुखां संग करे हेत, नित नवित्त फेरा पाईआ। सदा सुहेला रखे साया हेठ, मेहरवान मेहरवान बेनज़ीर नज़र आपणी इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

तारनहारा इक शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि तारनहारा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, एकँकारा वेख वखाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दए सहारा, सगला संग रखाइंदा। श्री भगवान इक हुलारा, दो जहानां आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, ब्रह्म आपणा वणज वखाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। परवरदिगार नूर उज्यारा, हक़ मुकामे डेरा लाइंदा। लाशरीक वेखे विगसे वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। तारनहारा एको पुरख, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जन भगतां देवे सतिगुर दरस, दीनन दया आप कमाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, माण अभिमान ना कोए वड्याईआ। जुग जन्म दी मेटे हरस, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाईआ। अग्नी तत्त बुझे लोक, परलोक मिले वड्याईआ। नाम सुणाए सच सलोक, सोहला ढोला इक्को गाईआ। आत्म परमात्म मिले मोख, मुक्ती चरणां हेठ दबाईआ। तारनहारा तारे कोटन कोटि, कोटी कोट आपणी सेव लगाईआ। ताल नगारा तन लगाए चोट, अगम्मी नाद वजाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आहलणयों डिग्गे उठाए बोट, कलिजुग
५६६ १३ अन्तिम सेव कमाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ५६६ १३
देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। तारनहारा इक्को आया, आदि अन्त वेस वटाइंदा। नाता तोड़े त्रैगुण माया, त्रैभवण धनी खेल खलाइंदा। आदि जुगादी दाई दाया, जननी जन रूप वखाइंदा। खेले खेल बेपरवाहया, बेअन्त आपणा भेव चुकाइंदा। गुरमुख गुरसिख सज्जण लए उठाया, फड़ बाहों गले लगाइंदा। आत्म पर्दा दए खुल्हाया, बंद कवाड़ी ताकी आपे लाहइंदा। आत्म सेजा सोभा पाया, घर सुहञ्जणा इक सुहाइंदा। दीन दर्द दु:ख भय भंजन भव सागर तारन आया, कलिजुग बेड़ा पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, नर नरायण वेस वटाइंदा। तारनहारा नर नरायण, नर हरि वड्डी वड्याईआ। रसना जिह्वा सारे कहिण, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले सतिगुर सरनाई बहिण, बहि बहि खुशी मनाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। कूड़ी क्रिया जूठे झूठे वहण ना वहण, सच सुच्च मिले वड्याईआ। प्रभ पारब्रह्म मिले साक सज्जण सैण, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा इक स्वामी, आदि जुगादि सदा निहकामी, निहचल बैठा आसण लाईआ। निहचल धाम अगम्म, अगम्मड़ी खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा बेड़ा

आपे बन्नू, आपणे कंध उठाइंदा। पंज तत्त ना दीसे तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा इक्को एकँकारा आदि जुगादी खेल न्यारा, जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा नाम दृढ़ाइंदा। तारनहारा सहिज सुख सागर, सति सति वड्डी वड्याईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। लख चुरासी वणज कराए नाम सौदागर, चौदां लोक हट्ट खुल्हाईआ। चौदां तबकां देवे आदर, पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। कलमा कायनात देवे सादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहार दया कमाईआ। तारनहार दीनन दीन, दयाल आपणा रंग रंगाइंदा। हरिजन मेला जिउँ जल मीन, घर घर विच मेल मिलाइंदा। लहिणा चुके लोक तीन, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म देवे सच यकीन, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाइंदा। पंच विकार करे तलकीन, सच हदीस इक सुणाइंदा। लेखा लेख जाणे आलमीन, उल्मा आलम आप अख्वाइंदा। मिहबान बीदो हरि मबीन, मुफ़लस रूप ना कोए वटाइंदा। नज़री आए ना नुक्ता सीन, ऐन अक्ख ना कोए दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहार खेल कराइंदा। तारनहारा सच ठाकर, ठोकर नाम लगाईआ। जन भगतां देवे इक्को आदर, आपणा आदर्श वखाईआ। जिन सेव लगाया सतिगुर तेग़ बहादर, सच बहादरी इक समझाईआ। सो तारनहारा शब्द सरूपी नाम अगम्मी देवे चादर, हर घट पर्दा रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतन तारे पैज स्वारे, हरि निरँकारे, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मेला निरगुण चेला, निरगुण सतिगुर गुर गुर रूप वटाइंदा। निरगुण सज्जण निरगुण सुहेला, निरगुण इक इकेला डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण चाढ़े तेला, आदि निरँजण जोत निरँजण सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा खेले खेला, ख़ालक खलक विच समाइंदा। ख़ालक खलक तारन योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। भस्मड़ हो के भोगे भोग, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। सन्त सुहेले धुर संजोग, गुर शब्दी मेल कराईआ। जन्म कर्म दा कटे रोग, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। लोकमात ना होए वजोग, अग्गे मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल दी इक्को ओट, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। अन्त मिलणा निर्मल जोत, हरि का शब्द कमाईआ। होए निवासा सचखण्ड साचे कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा देवे तार, जो जन हिरदे करे प्यार, अन्तश आपणा कर्म कमाईआ। तारनहारा आए जग, जुग जुग वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले लए लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। अमृत झिरना झिराए नभ, उलटा कँवल आप कराइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, हदूद आपणी इक वखाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे

५७०
१३

नद्द, अनहद राग अलाइंदा। सच दुआरे लए सद्द, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। भगत जणाए आपणी यद्द, विश्व खेल कराइंदा। सज्जण सुहेल लडाए लड, आपणी गोद बहाइंदा। जगत दवारयों लए कढ्ढ, थिर घर आपणा पर्दा पाइंदा। सुन अगम्म चरणां हेठां जाए छड्ड, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाइंदा। सच दुआरे धर्म निशाना देवे गड्ड, दो जहानां आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा तार तार आपणी खुशी मनाइंदा। जुग जुग तारे साचे भगत, भगवान दया कमाईआ। लेखे लाए बूँद रक्त, पंज तत्त दए वड्याईआ। आप जणाए आपणी शक्ति, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। आपे जाणे साचा वक्त, वार थित घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। गुरमुख सज्जण माणस जन्म जाण जित, जिस सतिगुर मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तारन तरन खोलणहारा नेत्र हरन फरन, मंत्र फुरना सोहणा इक समझाईआ। साचा फुरना दस्से मंत्र, नमो सति पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, गृह गृह खोज खुजाइंदा। नव नौ दुआरे नव खण्ड लेखा जाण गगन गगनंतर, नव नौ चार आपणा रूप दरसाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक बुझावणहारा तत्त बसन्तर, रत्ती रत्त आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा। तारनहार खोले जाग, जीवण जुगत दए जणाईआ। ५७१
हरिजन उपजे इक वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया देवे त्याग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आत्म अन्तर सुणे नाद, छत्ती राग मुख भवाईआ। बिन रसना जिह्वा आए स्वाद, रस मिठ्ठा इक दरसाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, सतिगुर आपणी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तारनहारा फेरा पाईआ। तारनहारा पूरा सतिगुर, हरि शब्दी इक जणाइंदा। लेखा जाणे लिख्या धुर, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सच सरूपी चढ़े घोड़, सोलां कलीआं आसण पाइंदा। पुरीआँ लोआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे दौड़, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी रीठा भंने मिठ्ठा कौड़, कूड़ी क्रिया पार कराइंदा। जन भगतां भगवन्त जाए बौहड़, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी पावे शोर, उच्ची कूक कूक अलाइंदा। तारनहार पुरख समरथ करे बिध अवर की और, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। जन भगतां हरिजू जाए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तरनी तरन इक अख्वाइंदा। सो तारे जो तरया आप, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सच शब्द दा दस्से जाप, नाम सति करे पढ़ाईआ। काया अन्दर वखाए तीर्थ ताट, अठ सठ लहिणा देणा गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

इक वखाए साचा घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। तारनहारा देवे गुरमति, गुरमुख मिले वड्याईआ। नाता तुटे मनमति, मन वासना दए खपाईआ। सति बुझाए शब्दी तत्त, ततव तत्त ना कोए लड़ाईआ। लेखे लाए आपणी रत्त, रत्ती रत्त रुत्त महकाईआ। मेल मिलाए कमलापति, पारब्रह्म सरनाईआ। लहिणा चुके हथ्थो हथ्थ, देणा कोए नज़र ना आईआ। हरि सरनाई जो जन गए ढठ्ठ, डिगदयां लए उठाईआ। हरि सचखण्ड दुआर कर इकठ्ठ, जन भगतां दए वड्याईआ। तारनहारा मार्ग दस्स, तृष्ना तृप्त सर्ब कराईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, पूरी आसा आप कराईआ। हिरदे अन्दर निरगुण वस, सरगुण लए जगाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा दोवें गावण जस, जस वेद पुराण कहिण ना पाईआ। तारनहारा तार तार कदे करे ना बस्स, जुगा जुगन्तर आपणी सेव कमाईआ। तिस साहिब नूं मिलो नठ्ठ नठ्ठ, जो सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। सतिगुर शब्द लओ रट, रट्टा जगत दए गंवाईआ। घर विच घर खुल्हाए हट्ट, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। नानक गोबिन्द गुर सतिगुर इक्को मति, मतलब सब दा हल्ल कराईआ। श्री भगवान जानणहारा मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, तारनहारा आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ।
५७२ सति पुरख निरँजण दया कमा, सच सच जणाइंदा। सीस जगदीश ताज सुहा, शहिनशाह रूप वटाइंदा। दो जहानां पर्दा ५७२
१३ लाह, भेव अभेद खुल्हाइंदा। सब दा लहिणा रिहा मुका, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा कहिणा रिहा मना, धुर संदेसा १३
इक सुणाइंदा। नेत्र नैणां रिहा वखा, अक्ख प्रतख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचे हो तैयार, सति सतिवादी आप उठाईआ। पुरख अबिनाशी दए प्यार, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे बाले रिहा जगाईआ। सतिजुग उठ उठ बल धार, सतिगुर साचा सच जणाइंदा। तेरी आई सच्ची वार, वारता इक दृढ़ाइंदा। भगतां जा जा कर प्यार, सच प्यार इक रखाइंदा। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, धवल धीर ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। सतिजुग साचा छोटा बाला, बाली बुध रिहा कुरलाईआ। मार्ग देणा इक सुखाला, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सच सुच दी चले चाला, तेरी चाल मोहे भाईआ। एथे ओथे बण रखवाला, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सति धर्म दी दे धर्मसाला, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग रिहा समझाईआ। सतिजुग वेख कलिजुग रोंदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दिवस रैण कदे ना सौंदा, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। कूड़ा ढोला इक्को गाउँदा, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, वेखणहार थाउँ थाईंआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब सुल्तान, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हउँ बालक बाला बाल अंञाण, ना चले कोए चतुराईआ। इक्को देणा आपणा दान, बण दाता झोली पाईआ। तूं साहिब सतिगुर सच्चा काहन, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। कलिजुग दूर दुराडा आया नठ्ठा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चार यारी बन्ना गठ्ठा, आपणा बन्धन पाईआ। सब दा सत्थर अन्तिम लथ्था, यारड़ा सेज ना कोए हंढ्ढाईआ। दूर दुराडा प्रभ सरनाई ढठ्ठा, बौहड़ी बौहड़ी कूके दए दुहाईआ। चारों कुण्ट उडदा घट्टा, दहि दिशा खेह वखाईआ। तेरे भाणे तपया भठ्ठा, अग्नी तत्त रही तपाईआ। अन्तिम गेड़नहारा उलटी लठ्ठा, ना सके कोए बचाईआ। पीर पैगम्बर तेरा पठ्ठा, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। कलिजुग सुण साची बात, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरे अन्त अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान खाणी बाणी लिख लिख गए नाल कलम दवात, जगत ब्याना आप रखाइंदा। पीर पैगम्बर औलीआ गौंस कुतब कोए ना चले साथ, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर नज़र कोए ना आइंदा। साचा कलमा नबी रसूल कोई ना पढ़े आयत, हज़रत रूप ना कोए वटाइंदा। सति सतिवाद

५७३ ५७३
१३ १३

ना कोई दस्से शरअ शरायत, शरीअत रंग ना कोए रंगाइंदा। पारब्रह्म दी इक हदाइत, साचा हुक्म इक सुणाइंदा। वेखणहारा कायनात, दो जहानां फोल फुलाइंदा। चौदां तबक बिन फलों दिसे बाग़ात, बाग़बान कोए नज़र ना आइंदा। अन्तिम वेले औणी वफ़ात, फ़तवा सब दे उत्ते लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा खेल जणाइंदा। कलिजुग रोवे मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। तूं परवरदिगार बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। चौदां सदीआं चौदां तबक पीर पैगम्बर तक्कदे रहे तेरा राह, तकवा तेरे उत्ते तकाईआ। तसबी माला मणके रहे भवा, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मंगण इक सरनाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, हस्स हस्स आख सुणाइंदा। कलिजुग, तेरा चले कोई ना वस, मेरी कीती ना कोए बदलाइंदा। अन्तिम खेड़ा होणा भठ्ठ, थिर कोए नज़र ना आइंदा। सच दुआरे इक इकठ्ठ, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाइंदा। साचा हुक्म सुणे कन्न, सतिजुग ध्यान लगाईआ। साहिब समरथ जाए ना मन्न, कलिजुग रिहा कुरलाईआ। ना होए सहाई कोए साचे जन, जननी रूप ना कोए वटाईआ। कर किरपा जो घड़या देवे भन्न, भंनणहार इक अख्वाईआ। सतिजुग साचे सच चढ़ावे चन्न, चन्द चांदना इक चमकाईआ। कोई रहिण ना देवे

नेत्र अन्न्ह, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सब नूं देवे इक्को नाम धन, सच ख़ज़ाना इक लुटाईआ। ग़रीब निमाणयां राजे राणयां बेड़ा देवे बन्न्ह, ऊँच नीच करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा आए नेड़े, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। श्री भगवान औह वेख कलिजुग उजड़े खेड़े, तेरे भगत रहे कुरलाईआ। तुध बिन बन्न्हे ना कोई बेड़े, भार सिर ना कोए उठाईआ। तूं बैठा रिहों कर के वड्डे जेरे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतार सेवा लाईआ। लख चुरासी भुलाउदा रिहों कर कर हेरे फेरे, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। हुण कह दे तूं मेरा मैं तेरा तेरे मेरे, इक्को घर डेरा लाईआ। मैं वसां खेड़े खेड़े, जो तैनूं रहे ध्याईआ। गलों कट कूड़े जेड़े, जेड़ा कोई रहिण ना पाईआ। जेहड़े तेरे पिच्छे होए बेरे बेरे, निमख निमख आपणा आप कटाईआ। कलिजुग अन्त छेड़ां छेड़े, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई डोबे बेड़े, मँझधार इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। सतिजुग सुण सच कहाणी, हरि साचा सच जणाइंदा। सतिजुग दी साची बाणी, तेरे नाल मिलाइंदा। आत्म परमात्म देवे पद निरबाणी, निरबाण पद इक वखाइंदा। लख चुरासी होए जाण जाणी, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिलाए हाणीआं हाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मेहर आप कराइंदा। सतिजुग कहे मैं ना मन्नां, मेरे मन्नण विच ना आईआ। तेरा लेखा तारा चन्ना, ईसा मूसा मुहम्मद चिन्ह गए वखाईआ। जिन्ना चिर ना तोड़या बन्ना, ज़ात पात मेट मिटाईआ। ओनां चिर मैं उंगलां पावां विच कन्नां, तेरी आवाज़ सुणन ना आईआ। तेरी खेल हंना बन्ना, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं किसे ना वसणा छप्पर छन्ना, शिवदुआले मन्दिर मस्जिद मठ्ठ फेरा कोए ना पाईआ। पहलों कलिजुग दे डंना, फेर मैनूं उंगली लाईआ। तेरा नाउँ श्री भगवना, भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। की हो गया जे तारया जट्ट धन्ना, धन्ना तार ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग ख़ाली झोली रिहा भराईआ। सतिगुर सच्चा श्री भगवान, सच सच जणाइंदा। उठ वेख सतिजुग, कलिजुग मिटे निशान, हरि करता आप मिटाइंदा। ना कोई दीसे बेईमान, बेवा रूप सर्ब उठाइंदा। कूड़ी क्रिया तुटे माण, अभिमान नज़र कोए ना आइंदा। शरअ शरीअत ना रहे शैतान, शहिनशाह इक्को हुक्म मनाइंदा। सृष्ट सबाई वखाए इक ईमान, अदल आदल इक कमाइंदा। लेखा तोड़ ज़िमी असमान, इस्म आपणा इक समझाइंदा। साचा कलमा दए कलाम, नबी रसूलां आप पढ़ाइंदा। पीर पैगम्बर करे ग़ुलाम, ग़ुरबत सब दी आप गवाइंदा। नज़री आए इक अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। चौदां तबक करन सलाम, सही सलामत वेख वखाइंदा। अन्तिम बदल देवे नज़ाम,

५७४
१३

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। कलिजुग सुणया हरि संदेस, आपणी लए अंगड़ाईआ। चलणी अन्त ना कोई पेश, पसचाताप रिहा कराईआ। मातलोक छड्डणा पैणा देस, नव खण्ड ना कोए चतुराईआ। नाता तुटे मुल्ला शेख़, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। करे खेल प्रभ जो रहे हमेश, आदि अन्त ना मरे ना जाईआ। जिस उपजाया सो मेटणहारा रेख, रेखा सब दी रिहा गंवाईआ। मैं तक्कया सतिजुग संग करे हेत, छोटे बाले रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा कमाईआ। सतिजुग उठे खोल्हे अक्ख, नेत्र नैण उग्घाड़या। पारब्रह्म प्रभ नज़री आया प्रतख, दरस पाया अगम्म अपारया। दोए जोड़ सरनाई गया ढठ्ठ, चरण कँवल कँवल निमस्कारया। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, मेरे साहिब सिरजणहारया। सति सतिवादी देणी मति, तेरी ओट इक तका रिहा। वस्त अमोलक देणी घत, ख़ाली झोली अग्गे डाह रिहा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, लख चुरासी तत्त बुझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक मना रिहा। सतिजुग सुण मेरे लाल, लालन रिहा जणाईआ। तेरा बणे शब्द दलाल, गुर सतिगुर आप वखाईआ। तेरा लेखा हक़ हलाल, हकीकत थाउँ थाईंआ। तेरा लहिणा बेमिसाल, हरि जू मिसल आप बणाईआ। अदालत करे दो जहान, वकालत इक्को इक अख्वाईआ। सही सलामत नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त दए वरताईआ। साची वस्त वस्त अपार, प्रभ तेरी झोली पाइंदा। निरगुण निरगुण हो तैयार, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, लेखा सब दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम करे अन्त, प्रगट हो श्री भगवन्त, पूरब लहिणा मुक्के जीव जंत, जागरत जोत इक जगाइंदा। सतिजुग तेरा जोड़े नाता, नाता इक्को इक जणाईआ। करे खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा चुक्के बिधना माता, मस्तक रेखा रिहा गंवाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा, सरोवर नहावण कोए ना जाईआ। ना कोई अमृत ना कोई बाटा, आब हयात ना कोए प्याईआ। ना कोई अनाथ ना कोई नाथा, त्रैलोकी नाथ ना कोए अख्वाईआ। ना कोई खाणी बाणी गाए साका, कहाणी कथ ना कोए जणाईआ। ना कोई चाकर ना कोई आका, शहिनशाह रूप ना कोए रखाईआ। ना कोई माई ना कोई बापा, पिता पूत ना गोद बहाईआ। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी धार जणाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे वाटा, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्को लाईआ। साचा मार्ग लग्गे मात, सो पुरख

निरँजण आप लगाइंदा। देवणहारा देवे दात, अनमुलड़ी आप वरताइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, बरन अठारां बन्धन पाइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शाही काग़ज़ रंग ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरे हथ्थ तेरी डोर, इक्को इक फड़ाईआ। नाता तोड़े कूड़ी क्रिया चोर, ठग्ग नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवान तेरे संग देवे तोर, तुरत आपणी दया कमाईआ। एका मंत्र देवे फोर, पिछला फुरना सब दा बंद वखाईआ। सन्त सुहेले चाढ़े आपणे घोड़, घोड़ा इक्को शब्द दौड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे पहला पौड़, लहिंदी दिशा वेख वखाईआ। चारों कुण्ट होए शोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शोरश इक्को इक जणाईआ। कलिजुग सुण हरि का गीत, इक ध्यान लगाईआ। अन्तिम नाता छुटणा मन्दिर मसीत, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। मेरा वेला गया बीत, बीती कहाणी ना कोए वड्याईआ । मेरी नंगी होई पीठ, पीर पैगम्बर बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी परखण आया नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग वेखे चार चुफेरा, चार चार नैण उठाईआ। दरोही खुदाए डुब्बदा जाए बेड़ा, बेड़ा बन्ने ना कोए लगाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीन मज़्ह़ब पाया झेड़ा, माणस माणस वंड वंडाईआ। बिन श्री भगवान कोई ना कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा लहिणे रिहा पाईआ। कलिजुग जीव जाणा बच, हरि बचपन रिहा जणाईआ। हिरदे वसाउणा इक्को सच, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। मन वासना ना जाणा नच्च, गुर का शब्द कमाईआ। किसे कम्म ना आउणा पंज तत्त काया माटी कच्च, बिन हरि नाम ना कोए सहाईआ। सतिगुर सरनाई जाओ ढठ्ठ, डुबदयां लए तराईआ। प्रभ मिलण दा करो हठ, नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। सति सन्तोख धीरज देवे जत, पल्लू इक्को गंढ्ढ वखाईआ। मेल मिलाओ कमलापति, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। दर्शन करो नेत्र रज्ज, दुखड़ा दुःख मुकाईआ। पिच्छा दे जे जाओ भज्ज, भज्जयां राह कोई ना आईआ। उच्ची कूक कहो गज्ज, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर आया तज, लोकमात आसण लाईआ। जिस दा पीर पैगम्बर करदे रहे हज्ज, सो हाजत सब दी पूर कराईआ। जन भगतां लौण ना देवे अज पज, रातीं सुत्तयां लए उठाईआ। कलिजुग काल नग़ारा रिहा वज्ज, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। जो घड़या सो जाणा भज्ज, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कोलों रिहा बचाईआ । कलिजुग दूर दुराडा नट्ठे, गुरसिख तेरे नेड़ ना आइंदा। श्री भगवान पत आपे रखे, जो तेरी बणत बणाइंदा। बिन पारब्रह्म कम्म ना औणे टेके मथ्थे,

५७६
१३

मस्तक रेख ना कोई मिटाइंदा। किसे कम्म ना औणे चिठे लिखे, बिन भगतां गोद ना किसे बहाइंदा। गुरसिख गुर सरनाई जो जन ढठ्ठे, डिगदयां आप उठाइंदा। प्रगट हो के मार्ग दस्से, भुल्यां राहे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कोलों आप बचाइंदा। कलिजुग कोलों बचे हरिसंगत, हरि देवे माण वड्याईआ। तन चोली चाढ़े रंगत, रंग भिन्ना इक वखाईआ। दूजे दर ना जाणा मंगत, पुरख अकाल होए सहाईआ। नाता तोड़े जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आपणे लेखे पाईआ। जिस निवण साचे सन्त, मन्नो इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आपणे दर बहाईआ। गुरमुख तैथों कलिजुग डरदा, नैण ना सके उठाईआ। हरि भगत दुआरे कदे ना वड़दा, बैठा मुख भवाईआ। जो जन साहिब सच्चे दा होया बरदा, बंदीख़ाना दए मिटाईआ। एथे ओथे दो जहान आपे फड़दा, फड़ बांहों पार कराईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला सचखण्ड दुआरे वड़दा, अद्ध विचकार ना कोई अटकाईआ। सोहँ अक्खर जो जन पढ़दा, प्रभ पर्दा देवे पाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, जीवण मरन मरन जीवण इक्को रंग वखाईआ। वेखो खेल हरी हरि दा, हरि के पौड़े रिहा चढ़ाईआ। एह लेखा नरायण नर दा, नरद पुठी सिधी दए कराईआ। श्री भगवान जो जन वरदा, जगत अंदेसा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीवां कलिजुग कोलों लए बचाईआ।

✻ २० माघ २०१६ बिक्रमी समां सिँघ दे घर पिण्ड मोधे अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण सति सरूप, सति सति सतिवाद समझाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल अनूप, अनभव आपणी धार चलाइंदा। एकँकार वसणहारा साची कूट, सो सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता कार कमाइंदा। आदि निरँजण नूर उजाला, नूर ज़हूर इक अख्वाइंदा। श्री भगवान खेल निराला, नज़र किसे ना आइंदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वसणहारा सच सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, निरगुण सरगुण खेल जणाइंदा। लख चुरासी पावे सारा, घट घट वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाउँ धराइंदा। नाम अगम्मी सति जैकारा, शब्दी नाद सुणाइंदा । विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारा, सच संदेसा इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि

आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, इक अकल्ला आप कमाईआ। वसणहारा सचखण्ड धाम न्यार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। साचे धाम बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सुत दुलारा बोले सति जैकार, जै जै जैकार जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल खेलणहारा, नज़र किसे ना आइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे दर दुआरा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखारा, हरि कातब आपणी कलम चलाइंदा। खाणी बाणी दे सहारा, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस अवल्ला, निरगुण निरगुण आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, मूर्त अकाल नज़री आईआ। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, घट घट रिहा समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्द संदेस एका घल्ला, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जुग करता वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। सरगुण बेड़ा निरगुण बन्न्, दो जहान पन्ध मुकाइंदा। देवणहारा नाम धन, पंज तत्त काया चोला भाग लगाइंदा। कर प्रकाश रवि ससि सूरज चन्न, चन्द चांदना इक चमकाइंदा। लख चुरासी जो घड़या सो देवे भन्न, ठीकर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी रखे हथ्थ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, पीर पैगम्बर आप समझाईआ। आत्म परमात्म करे वस, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नित नवित्त आपणा फेरा पाईआ। नित नवित्त पाए फेरा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, आपणी दया कमाईआ। भगत भगवन्त मेल मिलाए कर कर आपणी मेहरा, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जुग जुग आपणा नाउँ रख, कोटन कोटि नाम प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतख, साख्यात रूप प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच स्नेहुड़ा गए दस्स, लख चुरासी जीव जंत कर पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम नेहकंलक नरायण नर आवे नठ्ठ, रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। निरगुण जोत करे प्रगट, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप

उठाईआ। आपणा पर्दा चुक्के उहला, दूई द्वैत नज़र कोए ना आईआ। नाम सुणाए सच्चा सोहला, छत्ती राग भेव ना आईआ। दो जहानां इक्को बोला, ब्रह्मण्ड खण्ड इक शनवाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां लख चुरासी खेले होला, हरि का भेव नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण बणे तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। सतिगुर शब्द गुरु गुर बणे विचोला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। दो जहानां पर्दा लाह, निरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार ध्यान रहे लगा, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। कवण वेला प्रभ प्रगट होवे सच मलाह, साख्यात आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग कूड़ा दए खपा, साचा मंत्र इक दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई आत्म परमात्म मेला दए मिला, घर मन्दिर इक वखाइंदा। दीआ बाती कमलापाती साची जोत दए जगा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। अमृत बूँद स्वांती दए प्या, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। रातीं सुत्यां लए उठा, जागदयां आपणे नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा खेल खलाइंदा। जुग जुग खेल करे अपार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। कलिजुग अन्तिम कलि कल्की लै अवतार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार रिहा सुणाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, करोड़ तेतीसा रिहा जगाईआ। पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ मसायक करे बेदार, ग़फ्लत सब दी रिहा गंवाईआ। गुर अवतार मार आवाज़, नाम संदेसा इक सुणाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे लाल, लालन आपणा फेरा पाईआ। सन्त सज्जण लए भाल, दर दर घर घर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा पुरख अकाल, अक्ल कला अख्वाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर घर आपणा दर वखाइंदा। सुंन अगम्मी करे प्रितपाल, प्रितपालक आपणी दया कमाइंदा। दीना बंधप दीन दयाल, दीनां अनाथां गले लगाइंदा। लख चुरासी जीव जंत वेखे पत्त डाल, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सति संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण देवे दाद, वस्त इक्को इक वरताईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, साचा चन्द इक चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखे साथ, सगला संग निभाईआ। चार जुग दा वेखे पूजा पाठ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाल मिलाईआ। दो जहानां जणाए आपणा घाट, बेपरवाह दया कमाईआ। वेखणहारा मस्तक जोत ललाट, नूरो

नूर नूर रुशनाईआ। सोभणहारा आत्म सेजा साची खाट, पलँघ रंगीला इक वछाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव खोल्हे अन्तिम कल, अक्ल कलधारी वेस वटाइंदा। शब्दी जोती गया रल, रल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। सच सिँघासण बैठा मल्ल, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। लहिणा देणा चुकाए अज्ज कि कल, पिछला मूल सर्ब मुकाइंदा। वेखणहारा जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया पार कराइंदा। कलिजुग कूड़ा तुटे नाता, लोकमात रहिण ना पाईआ। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा राह चलाईआ। पकड़ उठाए त्रिलोकी नाथा, वेखणहारा राम बेटा दसराथा, दहि दिशा खोज खुजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वखाए इक्को घाटा, चौदा तबक कुण्डा लाहीआ। नानक गोबिन्द फड़ाए बाटा, अमृत जाम इक वखाईआ। कलिजुग अन्तिम नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप लख चुरासी जीव जंत कोई ना चले साथा, साचा संग ना कोए निभाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ झगड़ा प्या जात पाता, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ना किसे पछाता, छप्परी छन्न ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को साका रिहा सुणाईआ। इक्को साका सुणाए बात, बातन आपणा भेव खुल्हाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। नाता तुटणा ज़ात पात, दीन मज़्हब कोए रहिण ना पाइंदा। सृष्ट सबाई दस्से इक्को जाप, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। कूड़ी क्रिया होए वफ़ात, फ़तवा सब ते इक्को लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार वरन बणाए इक जमात, बरन अठारां पन्ध मुकाइंदा। साचा ढोला सुणाए गाथ, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक इकल्ला हुक्म मनाइंदा। इक इकल्ला धुर फ़रमाणा, सच संदेसा हरि जणाईआ। कलिजुग अन्तिम सब नूं मन्नणा पए भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तख़्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जीव जंत साध सन्त काया मन्दिर अन्दर गाउणा इक्को गाणा, इष्ट देव इक जणाईआ। इक्को अमृत पीणा खाणा, दूजी विख नज़र कोई ना आईआ। इक्को वस्त्र ओढण मिलाणा भगवाना, भूशन इक्को इक समझाईआ। इक्को शब्द ओट रखाणा, इक्को गृह दए वड्याईआ। इक्को रंग सृष्ट सबाई रंगाणा, दूजा रंग ना कोए वखाईआ। इक्को शब्द अगम्मी दए बबाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग लेखा चुके अन्त, सो पुरख निरँजण आप चुकाइंदा। कूड़ी क्रिया लग्गे सन्त, साचा राह ना कोए समझाइंदा। माया ममता होई

बेअन्त, पर्दा दूई ना कोए उठाइंदा। आत्म परमात्म मिले ना साचा कन्त, नारी सेज ना कोए सुहाइंदा। भरमे भुल्ला जीव जंत, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। हिरदे वसया ना हरि का मंत, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सर्ब सालाहइंदा। गढ़ तुटा ना हउमें हंगत, निवण सो अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। साचा भेव ना जाणे कोई पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आप चुकाइंदा। कलिजुग लेखा चुकणा मात, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे मिले दात, सतिगुर पूरा झोली आप भराईआ। इक्को नाम देवे सौगात, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई पिता मात, लख चुरासी गोद उठाईआ। दो जहानां निरगुण सरगुण गाथ, ढोला इक्को इक दृढ़ाईआ। चौदां लोक वखाए हाट, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना नटुआ नाट, मुख घूँगट दए उठाईआ। सतिजुग साचा सुत दुलारा जाए जाग, श्री भगवान आप जगाईआ। जन भगत फड़ाए वाग, डोरी इक्को नाम रखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, काग हँस रूप वटाईआ। आत्म जोती जगे चिराग़, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरा लहिणा दए मुकाईआ। तेरा लेखा रहे ना को, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सतिजुग साचा लै के आए ढोआ ढो, धरत धवल झोली आप भराइंदा। साचा बीज सति पुरख निरँजण जन भगतां अन्दर देवे बो, नाम आपणे हथ्थ रखाइंदा। जाप जपाए इक्को एक सोहँ सो, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म आपणे विच मिलाइंदा। निझर झिरना अमृत रस कँवल नाभी देवे चो, तृष्ना तृखा भुक्ख गवाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार देवे खोह, साची खोज आप समझाइंदा। निज नेत्र आत्म नूर करे लो, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म जाए छोह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आप मुकाइंदा। कलिजुग लेखा जाए मुक्क, बाकी कोए नज़र ना आईआ। सतिजुग साचा पए उठ, उठ उठ खुशी मनाईआ। साहिब सतिगुर जाए तुठ, श्री भगवान दए वड्याईआ। छोटा बाला गोदी चुक्क, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए वखाईआ। कलिजुग रोवे मेरा बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। चार यारी गई लुक, उम्मत संग ना कोए निभाईआ। नव नौ तृष्ना लग्गी भुक्ख, अग्नी तत्त रिहा जलाईआ। अन्तिम वेला आया ढुक, सदी चौधवीं सद्दा देवे थाउँ थाईआ। परवरदिगार बेपरवाह बेनज़ीर शाह हकीर रिहा पुच्छ, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा खलाईआ। कलिजुग अन्तिम नेत्र रोवे, नैणां नीर वहाईआ। दुरमति मैल कोए ना धोवे, सगला संग ना कोए रखाईआ। बौहड़ी दरोही खुदाए मेरे जिहा कोई ना होवे, मेरी चले ना कोए चतुराईआ।

५८१
१३

श्री भगवान लोकमात लै के आए ढोए, साचा ढोला इक्को गाईआ। अनहद शब्द सुणाए साची सोए, सुरती सब दी रिहा बदलाईआ। दीन ईमान अञ्जील कुरान सब दे हथ्थों खोहे, ख़ालक ख़लक मख़लूक वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग साचा बीज बोए, चार वरन इक्को तागे दए परोए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्को आत्म ज़ाता रिहा वखाईआ। इक्को ज़ात आत्म पारब्रह्म, वरन गोत वंड ना कोए वंडाइंदा। आत्म परमात्म साचा धर्म, अधर्मी रूप ना कोए रखाइंदा। हरि सरनाई साचा कर्म, कर्म कांड मेट मिटाइंदा। नाता तुटे मरन डरन, भय भउ भ्यानक रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे आप, आपणी दया कमाईआ। कोटन कोटि उतारे पाप, पतित पापी पार कराईआ। जिस जन आत्म परमात्म जपया जाप, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एथे ओथे दो जहान निभाए साथ, सगला संग आप रखाईआ। सदा सुहेला इक इकेला पतिपरमेश्वर पत लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वक्त दुहेला ना कोई सज्जण ना सुहेला, साचा संग ना कोए रखाईआ। संग सुहेला ना कोई भाई, भय्या नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ी क्रिया जगत कुड़माई, साचा नाता ना कोए जुड़ाइंदा। प्या झगड़ा धी जवाई, पिता पूत ना मेल मिलाइंदा। चारों कुण्ट रही कुरलाई, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। शाह सुल्तान पकड़े कोए ना बांहीं, ग़रीब निमाणे ना कोए उठाइंदा। दुरमति मैल ना देवे कोए धोई, सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी पई फाही, त्रैगुण नाता ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्को आपणा फेरा पाइंदा। इक्को फेरा पाए हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सच सुच दा खोल्हे दर, दर दरवाज़ा इक दृढ़ाईआ। चार वरन देवे वर, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म लए फड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। काया मन्दिर डूँघे अन्दर जाए चढ़, साचे पौड़े चरण टिकाईआ। उच्च मुनारे वेखे खड़, रूप अनूप इक दरसाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोए जणाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, घट घट रिहा समाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस कर, निहकलंका नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आसा सब दी पूर कराईआ। आसा रखी गौड़ ब्रह्मण, ब्रह्म इक्को इक जणाइंदा। श्री भगवान होए ज़ामन, ज़ामनी आपणी आप निभाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए दामन, दामनगीर फेरा पाइंदा। नाता तोड़ काम कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गवाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी शामन, साचे पर्बत डेरा लाइंदा। उच्चा टिल्ला इक वखानन, वेख्यां

नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे प्रकाश कोटन भानन, कोटन भान आपणे विच छुपाइंदा। पूरी आसा करे ईसा, दीन दयाल दया कमाईआ। सीस ताज सुहाए इक जगदीशा, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। साचा कलमा पढ़े हदीसा, हज़रत इक्को करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे एका नांयां उनीसा, वीह सौ उन्नी बिक्रमी करे कुड़माईआ। ख़ाली करे सब दा खीसा, राजे राणे सर्ब कुरलाईआ। लेखा चुके बीस इकीसा, सदी बीसवीं नेड़े आईआ। मुहम्मद रखदा रिहा उडीका, अमाम अमामां फेरा पाईआ। करे खेल लाशरीका, शिरकत सब दी दए गंवाईआ। जगत अन्धेर मिटाए तारीका, कलिजुग वेखे थाउँ थाईंआ। सति धर्म दा इक तरीका, तरा तरा समझाईआ। मुकामे हक़ वसया ठीका, दरगाह साची आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा वेख वखाईआ। लेखा वेखे चौदां तबक, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। पीर पैग़ंम्बर रहे तभक, भय भउ सर्ब जणाइंदा। पिछला भुल्लो सारे सबक, साबक इक्को नज़री आइंदा। दीन ईमान करो तरक, हरि इक्को ओट जणाइंदा। अग्गे रहे ना कोए फरक, रूह बुत्त ना वंड वंडाइंदा। कलिजुग अन्तिम सब ने होणा ग़रक, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार ला के गए शर्त, निहकलंक अन्तिम वेस वटाइंदा। निरगुण नूर पुरख बिधाता आया परत, प्रतिनिधि
५८३
१३
इक अख्वाइंदा। हौला भार करे धरनी धौल धरत, सिर आपणे भार उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नाता बिधाता वेख वखाइंदा। नाता बिधाता वेखण योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। करनहार संजोग विजोग, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। कटणहारा कूड़ी क्रिया रोग, हउमें दुःख रहिण ना पाईआ। वेखणहारा चौदां लोक, चौदां तबकां फोले थाउँ थाईंआ। सुणावणहारा सच सलोक, साहिब सुल्तान सच्चा माहीआ। देवणहारा अन्तिम मोख, मुक्ती चरणां हेठ रखाईआ। सतिजुग जणाए राज जोग, जोग जोगीशर ना कोए वड्याईआ। नाम नगारे लाए चोट, धौंसा इक्को नाम सुणाईआ। पुरख अकाल प्रगट कर निर्मल जोत, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। अग्गे रहे ना कोए परोहत, मुल्ला शेख़ रूप ना कोए जणाईआ। श्री भगवान दी इक सरोत, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। जन भगतां उत्ते होवे मोहत, हँ ब्रह्म लए मिलाईआ। सरगुण देवे निरगुण ओट, दूजा इष्ट ना कोए जणाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया कढ्ढे वासना खोट, सच सुच इक भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, महाबली फेरा पाईआ। महाबली धराए बल, बल बावन रिहा शरमाईआ। करे खेल अछल अछल्ल, वल छलधारी भेव ना राईआ। करनहारा जल थल, थलों जल रिहा वखाईआ। टिल्ले पर्बत रहे हल्ल, धीरज धीर ना कोए

धराईआ। शाह सुल्तानां दूई द्वैती लग्गा सल्ल, तीर अणयाला इक चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी देवे जड़ उखड़ाईआ। कलिजुग तेरी उखड़े जड़, बूटा नज़र कोए ना आईआ। अग्गे सके कोई ना अड़, श्री भगवान हुक्म सुणाईआ। कूड़ी क्रिया डिगे दड़, उच्चे मन्दिर देवे ढाहीआ। माया ममता जाणा सड़, लम्बू अग्नी इक्को लाईआ। ज़ात पात जाए हर, दीन मज़्ब ना कोए चतुराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ वेखे खड़, घर घर आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त लए फड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। सन्त साजण चुकाए डर, निरभउ होए सहाईआ। गुरमुखां नुहाए अमृत सर, दुरमति मैल धवाईआ। गुरसिखां अन्दर जाए रल, रल मिल आपणा रंग वखाईआ। सतिजुग साचा देवे फल, फुल्ल फुलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, साचा नाम दृढ़ाए इक्को मंत्र, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणे अंग लगाईआ।

❋ २० माघ २०१६ बिक्रमी हज़ारा सिंघ दे गृह पिण्ड काउँके ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाइंदा। तख्त निवासी हो प्रधान, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। शब्दी सुत उठ नादान, थिर घर कुण्डा आपे लाहइंदा। विष्नूं नेत्र खोल्ह अञ्याण, अबिनाशी करता पर्दा लाहइंदा। ब्रह्मा चरण कँवल कर ध्यान, पारब्रह्म प्रभ आप जगाइंदा। शंकर नेत्र खोल्ह वेख श्री भगवान, हरि पुरख निरँजण खेल कराइंदा। तेई अवतार दयो ब्यान, ब्याना सब तों मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचे तख्त हरि जू चढ़या, तख्त निवासी खेल कराइंदा । भगत अठारां रिहा फड़या, फड़ फड़ आपणा हुक्म मनाइंदा। डूँग्घी कन्दर आपे वड़या, नज़र किसे ना आइंदा। निष्अक्खर रूप आपे पढ़या, दो जहानां आप समझाइंदा। ना जन्मे ना कदे मरया, मरन जन्म आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म परवरदिगार, धुरदरगाही आप जणाईआ। मुकामे हक़ खेल न्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। पीर पैगम्बर लए उठाल, हुक्म हाकम इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक दृढ़ाईआ। धुर संदेसा परवरदिगार, इक्को इक जणाइंदा। लाशरीक सांझा यार, निरवैर फेरा पाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद रहिणा खबरदार, अल्ला राणी मुख घूँगट आप उठाइंदा । चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, साचा सबक इक पढ़ाइंदा। तुलबा तालब वेखे तलबगार,

आलम उल्मा आलमीन चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी गुर गुर धार, एका दात वंड वंडाईआ। एकँकार खेल अपार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। दहि दिशा करे ख़बरदार, आलस निंद्रा सब दी रिहा गंवाईआ। नानक गोबिन्द सुरत संभाल, मूर्त अकाल दए वड वड्याईआ। जोती जाता हो कृपाल, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जिस दी करदे रहे भाल, भाल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी देंदे रहे मिसाल, सो सब दी मिसल वेख वखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि तख्त निवासी, एकँकारा वड वड्याईआ। आदि जुगादि पुरख अबिनाशी, जुग जुग वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान बणाए दास दासी, सेवक सेवा इक जणाईआ। मण्डल मण्डप गोपी काहन पृथ्मी आकाश पाए रासी, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म साथी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। बोध अगाधी शब्द अनादी धुर दी बाणी सुणाए साची गाथी, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण बणे राथी, बण रथवाही फेरा पाईआ। सर्ब कला आपे समराथी, समरथ पुरख वड वड्याईआ। इक्को पूजा इक्को पाठी, एका मंत्र रिहा दृढ़ाईआ। वेखणहारा मार झाती, दो जहानां कुण्डा लाहीआ। धुर दरगाही सच्चा साकी, पीर पैगम्बरां गुर अवतारां आब हयात अमृत मधुर रस इक्को इक चखाईआ। कलिजुग अन्तिम सब तों मंगण आया बाकी, लेखा सब दा रिहा वखाईआ। अग्गे रहिण ना देवे कोई आकी, आकी बणया हरि रघुराईआ। जिस दी सुणदे रहे साखी, सो साख्यात रूप दरसाईआ। कँवल नैण मधर बैण, प्रगट होया सगला सैण, मेहरवान बेपरवाह बेनज़ीर, ला तस्वीर बेपरवाहीआ। लेखा जाणे शाह हकीर, प्रगट होया वड पीरन पीर, मुकामे हक़ लाशरीक, वाहद आपणा संग रखाईआ। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, पढ़नहारा सच तकबीर, तदबीर आपणी दए जणाईआ। अठारां भगतां बदल देवे तकसीर, चौटी चढ़ वेखे अख़ीर, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कलमा साचा नग़मा इक्को इक जणाईआ। साचा नग़मा हरि तौफ़ीक, तोहफ़ा लख चुरासी आप वरताइंदा। करे खेल लाशरीक, शरकत सब दी मेट मिटाइंदा। वेखणहारा हक़ हकीक, हकीकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम मेटे अन्धेरा तारीक, साचा चन्द इक चढ़ाइंदा। नज़री आए आप नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दी दस्सदे गए प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाइंदा। जगत अन्धेरा चौधवीं सदी तारीक, चौदस चन्द ना कोए चकमाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच सिंघासण पुरख अबिनाशन इक इकल्ला डेरा लाइंदा। इक इकल्ला एकँकार, अक्ल कला वड्डी वड्याईआ। लेखा मंगे गुर अवतार, पर्चा सब दे अग्गे पाईआ। नेत्र खोल्ह वेखो किवाड़, लोकमात ध्यान लगाईआ। राम कृष्न ना कोए प्यार, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। नानक गोबिन्द ना कोए आधार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ धूंआँधार, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तीर्थ तट अठ सठ होए ख्वार, जमना गोदावरी सुरस्ती गंगा रोवे नेत्र नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं वेखणहारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव उठाए नाल इशारा, नाम इशारा इक जणाइंदा। तेई अवतारां खोल्हे किवाड़ा, बंद अक्ख ना कोए कराइंदा। भगत अठारां मेल मिलाए वारो वारा, दर घर साचा इक सहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। तेई अवतार ढह ढह पैण चरण दवारा, तेरा अन्त ना पारावारा, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड तेरा मनारा, महल अटल इक रुशनाइंदा। आदि जुगादि तेरा पसारा, तेरी कुदरत तूं ही वेख वखाइंदा। हउँ चाकर सेवक पाख़ाक सेवादारा, साची सेव तेरी कमाइंदा। तूं मुकामे हक़ बैठों पीर ज़ाहरा, तेरा जलवा तक्कया ना जाइंदा। तेरा खेल गुप्त ज़ाहरा, बातन तेरा राह नज़र ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बैठा रिहों कुआरा, तेरा पल्लू गंढु ना कोए पवाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होइउँ विच संसारा, नूर ज़हूर इक दरसाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, कातब कलम ना कोए चलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद डिगे मूँह दे भारा, कलमा नबी ना कोए सुणाइंदा। मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला तेरा इक नज़ारा, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। चौदां तबक देवे ना कोए सहारा, ज़िमीं असमान धूंआँधार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठा चढ़, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। चढ़या तख्त आप भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। शाहो भूप वड राज राजाना, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। सच संदेसा देवे दो जहानां, नाम निधाना इक जणाईआ। कलिजुग अन्त होए प्रधाना, महाबली वड वड्याईआ। निहकलंक नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। शब्दी राग इक तराना, ताल तलवाड़ा ना कोए वखाईआ। बदलणहार सदा ज़माना, ज़मानत सब दी बंद कराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहारा दाना, दाता इक्को फेरा पाईआ। लख चुरासी समझावणहारा ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक रखाईआ। अमृत आत्म देवणहारा चतुर सुजाना, चतुर्भुज वेस वटाईआ। खेले खेल निरगुण सरगुण मर्द मर्दाना, आपणी मर्दानगी आप कमाईआ। साचा चिल्ला

तीर कमाना, नाम खण्डा इक चमकाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटे निशाना, जूठ झूठ दए गंवाईआ। चारों कुण्ट होए वैराना, वैरी वैर ना कोए कमाईआ। चढ़ के वेखे शब्द बबाणा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डा खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। भाग लगाए सम्बल इक मकाना, हुजरे सब दे फोल फुलाईआ। चारे खाणी दए ज्ञाना, चारे बाणी आप जणाईआ। चारे जुग करे महाना, चारों कुण्ट वंड वंडाईआ। नव नौ खेल करे महाना, नौ दर खोजे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे खड़, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सच संदेसा सुणावे गीत, गोबिन्द धार चलाइंदा। प्रभ पारब्रह्म इक अनडीठ, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम नाता तोड़े मन्दिर मसीत, मुसल्ला हेठ ना कोए विछाइंदा। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण माया डेरा आपे ढाइंदा। मेल मिलावा हस्त कीट, ऊँच नीच एका घर वसाइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, अगला लेखा आप समझाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, गृह गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई होई पलीत, ठीक अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिंघासण बैठा चढ़, साहिब आपणा हुक्म मनाइंदा। तख्त चढ़या शाहो भूप, भूपत भूप हुक्म जणाईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख नज़र किसे ना आईआ। ना कोई दिशा ना कोई कूट, ज़िमीं असमान ना कोए वड्याईआ। ना कोई सच ना कोई झूठ, निरगुण आपणा खेल रचाईआ। पंच तत्त ना कोए भूत, अप तेज वाए पृथमी आकाश ना बन्धन पाईआ। ना कोई ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी वड वड्याईआ। ना कोई रूह बुत्त कलबूत, कलमा नबी ना कोए जणाईआ। परवरदिगार आपणा देवे आप सबूत, सूरत सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त चढ़या आप महिबूब, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। सच महिबूब करो आदाब, आदर्श इक जणाइंदा। सदा सुहेला सच जनाब, जानणहारा खेल कराइंदा। पीर पैगम्बरां पकड़े हथ्थ वाग, मुल्ला शेख़ मसायक आप नचाइंदा। जुग चौकड़ी धोवे दाग़, निर्मल नीर सीर प्याइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। काया मन्दिर अन्दर जगाए चिराग़, दीवा बाती इक रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, समरथ पुरख वेस वटाइंदा। वेस वटाए पुरख अकाला, अक्ल विच किसे ना आईआ। करे खेल दीन दयाला, दीनन मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म खेल निराला, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाला, महिफ़ल आपणी दए समझाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाला, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाया जोती धार, धार धार जणाइंदा। जिस दी

पूजा करदे गए गुर अवतार, सो सतिगुर नज़री आइंदा। जिस दी खाणी बाणी करे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलदा रिहा रफ़तार, आहिस्ता आहिस्ता आपणा पन्ध मुकाइंदा। सब दे पिच्छे लाया शब्द सार, सार सब दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। दो जहानां वजदी रहे तार, बिन तन्दी तन्द सुणाइंदा। घट घट अन्दर अनहद नाद अगम्मी वजाए वजावणहार, सारंग सरंगा ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तख्त निवासी खेल कराइंदा। तख्त निवासी राजन राजा, रयत्त दो जहान वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। प्रगट होया देस माझा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। सृष्ट सबाई पाए भाजा, घर मन्दिर दए तजाईआ। भगत भगवन्त मारे वाजां, साचे सन्तां लए जगाईआ। गुरमुखां रखे आपे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिखां चढ़ाए नाम जहाज़ा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। अग्गों नज़री आए ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर भाणा रिहा मनाईआ। हुक्मे अन्दर मन्नणा भाणा, भावी सब दी आप जणाइंदा। कोई ना रहसी राजा राणा, ख़ाली तख्त वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिटे निशाना, कूड़ी क्रिया आप मुकाइंदा। सृष्ट सबाई गाए इक्को गाणा, आत्म परमात्म साचा ढोला सोहला आप सुणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी साचा मन्दिर इक वखाना, घर मन्दिर खोज खुजाइंदा। सुरत सवाणी शब्दी मिले सच्चा हाण हाणा, घर नार कन्त सुहाग वेख वखाइंदा। अन्तरजामी अन्तर आत्म पहरे बाणा, मंत्र आपणा आप समझाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द होए हैराना, पवण स्वास ना कोए मिलाइंदा। आत्म सेजा खेले खेल श्री भगवाना, शब्द अगम्मी वाजा आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या सर्ब गुणवन्त, सति सति जणाईआ। सृष्ट सबाई एका मंत, मंत्र इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म खेल जीव जंत, ईश जीव करे कुड़माईआ। सतिजुग सच बणाए बणत, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। सो गुरमुख सोहे सच्चा सन्त, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। गढ़ तुटे हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। नारी मिले नरायण कन्त, घर साचे मंगल गाईआ। चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। धुर संदेसा सुण लवो कन्न, धुरदरगाही आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर कहिणा लवो मन्न, अगला लेखा आप मुकाइंदा। लख चुरासी देवणहारा डंन, डण्डा इक्को हथ्थ उठाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। अन्तिम छुपणा चौधवीं चन्न, तारा नूर ना कोए वखाइंदा। सृष्ट सबाई होई नेत्र अन्न्ह, ज्ञान नेत्र ना कोए खुल्हाइंदा। काम क्रोध वसया

तन, सतिगुर शब्द ना कोए कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाइंदा। साचा मन्नो अन्तिम कहिणा, सो पुरख निरँजण इक जणाईआ। अन्तिम भाणा सब ने कहिणा, हरि पुरख निरँजण रिहा वरताईआ। बिन एकँकार किसे ना रहिणा, निरगुण सरगुण करे सफ़ाईआ। आदि निरँजण सच दुआरे साचे बहिणा, जोत निरँजण करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी धाम अवल्लड़े साचे तख्त इक्को बहिणा, बहि बहि हुक्म सुणाईआ। श्री भगवान वखाए नेत्र नैणां, लोचन सब दे बंद कराईआ। पारब्रह्म प्रभ नाता तोड़े भाई भैणा, साक सज्जण नज़र कोए ना आईआ। लाड़ी मौत सब नूं खाए डैणा, बिन गुरमुख बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग देवे अन्त संदेसा, तख्तो लहे राज नरेशा, निरगुण इक्को हुक्म मनाईआ। सच संदेसा सुणो बात, अकथ कथा जणाइंदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ाइंदा। दीन मज़्हब होए वफ़ात, फ़तवा सब नूं इक्को लाइंदा। करन आया निरगुण सरगुण घात, घाउ आपणे नाउँ लगाइंदा। रल मिल बण जाओ इक जमात, अक्खर इक्को इक पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म दा सच्चा साक, सगला संग इक अख्वाइंदा। सोहँ ढोला गाओ गाथ, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ, राम किशन सेव कमाइंदा। सो साहिब पुरख समराथ, पीर पैगम्बर राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहुड़ा इक घलाइंदा। सच स्नेहुड़ा दस्से राह, रहबर इक खुदाईआ। परवरदिगार हक़ पनाह, समरथ वेख वखाईआ। बिन सतिगुर बख्शे ना कोए गुनाह, पतित पावण ना कोए कराईआ। वेले अन्त ना बणना कोई गवाह, लोकमात ना छड्डे लोकाईआ। कलिजुग तत्ती वगे हवा, सृष्ट सबाई रही जलाईआ। जूठ झूठ दी पई वबा, मरीज़ होई सर्ब लोकाईआ। उम्मत भुलया इक खुदा, हिंदू राम ना कोए ध्याईआ। नानक गोबिन्द नाता ल्या ना किसे जुड़ा, साची सिख्या सिख ना झोली पाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले धीआं भैणां रहे तका, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाईआ। माया राणी डौरु डंका रही वजा, दर दर पई लड़ाईआ। गोबिन्द सूरा वेखणहारा थाउँ थाँ, तख्त निवासी आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दवारा खोल्ह दर, दर दरवाज़ा इक दरसाईआ। कलिजुग अन्त खोल्हो नेत्र, नेतन नेत जणाइंदा। लख चुरासी रण भूमी बणना खेत्र, खिज़ां रुत्त सर्ब वखाइंदा। पुरख अबिनाशी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अग्गे रख्या आपणा पेपर, हल्ल स्वाल ना कोए कराइंदा। सारे चरणी डिगण पहली चेत्र, चेता पिछला आप जणाइंदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणा वेंतर, दो जहानां वेख वखाइंदा। सारे रल के श्री भगवान दे बण जाओ हेतड़, बिन भगतां हित ना किसे रखाइंदा। अन्त रहिण

ना देवे किसे दी हैंकड़, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाइंदा। कलिजुग बदलण आया पैंतड़, सतिजुग साचा नाल ल्याइंदा। एहो वेला अन्तिम छेकड़, वेला हथ्थ किसे ना आइंदा। पुरख अबिनाशी बणया सब दा भेतर गृह गृह मन्दिर फोल फुलाइंदा। आपणी अक्खीं वेखो नेत्र, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सेजा आपे चढ़, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। सेज सुहञ्जणी सोभावन्त, सो साहिब दए वड्याईआ। भगत भगवन्त मिलावा नार कन्त, नर नरायण खुशी वखाईआ। कलिजुग लेखा चुके अन्त, अन्तष्करन सब दा आपणे हथ्थ रखाईआ । जिस बणाई आदि बणत, सो मध अन्त वेख वखाईआ। भरमे भुल्ले जीव जंत, सन्त सति धर्म ना कोए धराईआ। बोध ज्ञान ना दिसे कोई पंडत, मस्तक तिलक कूड़ी धार वखाईआ। नाता तुटे ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पल्लू ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी इक्को धार चलाईआ।

❇ २० माघ २०१६ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड काउँके ज़िला अमृतसर ❇

५६० १३

सच दवारे कलिजुग ढठ्ठा, खुल्हे केस दए दुहाईआ। मेरा नाता तुटे ना तत्त अठ्ठा, अठ्ठ दस ना कोए वड्याईआ। क्यों गुर अवतार पीर पैगम्बर कीता इकठ्ठा, प्रभ आपणे दर बहाईआ। मैं तेरी सिक्खी मता, मति सब दी रिहा गंवाईआ। नौ खण्ड पृथमी पाणी वखाया तत्ता, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया नाल रत्ता, जूठ झूठ रंग रंगाईआ। अल्ला राणी मेरा लै के आवे भत्ता, बण सवाणी फेरा पाईआ। मुहम्मद कहे मैं तेरा बच्चा, तेरे विच समाईआ। मेरे भगवान मेरा कम्म ना कोई कच्चा, दिवस रैण तेरी सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई नार वखाई यच्चा, सति सरूप ना कोए समाईआ। मेरे कोलों कोई ना बचा, घर घर आपणा डंक वजाईआ। उठ के वेख साध सन्त कोई रहिण ना दित्ता सच्चा, सब दे उत्ते पर्दा पाईआ। चारों कुण्ट ख़ाक छानण उडे घट्टा, ख़ाकी ख़ाक ना कोए रमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच पाया रट्टा, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। मैं बल धार के आया हट्टा कट्टा, तेरी ओट तकाईआ। दोज़ख बहिश्त तपाया भठ्ठा, अग्नी तत्त तपाईआ । चार जुग मैनूं करदे रहे ठठ्ठा, तेरा नाम ठोकर लाईआ। तूं आपणी हथ्थीं मैनूं लिख के दित्ता पटा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जे कोई कहे हुण अलबत्ता, आलम इलम ना कोए चतुराईआ। मैं तेरा नाम चलाया सिक्का, कूड़ा डंका इक वजाईआ। शाह सुल्तानां घर वखाया निक्का, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। अमृत रस कीता फिका, रस रस

ना किसे चखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरे हट्ट विका, अन्तिम तेरी ओट गए तकाईआ। पारब्रह्म तूं साहिब ठाकर चारों कुण्ट दिसा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरी झोली पा दे मेरा हिस्सा, ढह प्या सरनाईआ । वेद पुराण शास्त्र सिमरत अंजील कुरान जो देंदा रिहों चिठ्ठा, गुर अवतार पीर पैगम्बर हल्कारा रूप बणाईआ। मेरा भाणा ना किसे नजिठ्ठा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। अन्तिम वेख सारे दे गए पिठा, करवट सके ना कोए बदलाईआ। मैं तेरे सहारे सब नूं जिता, बल आपणा आप वखाईआ। तूं मेरा मात पिता, मैं तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलिजुग ढै प्या सरनाईआ। कलिजुग डिगा मूँह दे भार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। श्री भगवान तेरा डूँग्घा संसार, तुध बिन भेव कोए ना आईआ। कोटन कोटि साध सन्त जीव जंत मैं कर कर छड्डे ख्वार, ख्वारी सब दे सिर ते छाईआ। पिच्छा दे गए चार यार, यारी यार ना कोए निभाईआ। ना कोई सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद बैठे मुख छुपाईआ। चारों कुण्ट प्या काल, भुक्खयां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। साचा बणे ना कोए दलाल, जगत वचोला नज़र कोए ना आईआ। मैं सब दी लाही खाल, शमस तबरेज़ सूलीआं उत्ते चढ़ाईआ। मनसूर होया बेहाल, बेआब दए दुहाईआ। अर्जण तत्तीआं लोहां उत्ते दित्ता बठाल, बलिहारी आपणे रंग रंगाईआ। बाले नीहां हेठां दित्ते स्वाल, मेरी वेख वड्डी चतुराईआ । मैं तेरा अन्तिम छोटा निक्का बाल, चौथा जुग नाउँ धराईआ। मैं शाहों कीते कंगाल, घर घर फिरी दुहाईआ। अन्तिम मेरा मन्न लै इक स्वाल, तोबा तोबा रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई एका वार धरत मात दी गोदी दे स्वाल, फेर सके ना कोए जवाईआ। विच्चों रख लै आपणे लाल, जेहड़े तेरा नाउँ ध्याईआ। मेरे नाल रला दे काल, मैं भज्जां चाईं चाईंआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण मारां इक्को छाल, शहिनशाह तेरा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा बच्चा तेरे दवारे नच्चा, नच्च नच्च आपणा नाच वखाईआ। कलिजुग बच्चा तेरा नच्चे, मुख घूँगट ना कोए रखाईआ। मेरी क्रिया अन्दर सारे फसे, चारों कुण्ट बचया कोए नज़र ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे नठ्ठे, पंज तत्त ख़ाक मेरे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे जगाई इक अलख, अलखना अलख तेरी वड्याईआ। ख़ाली झोली ना मोड़ीं सक्ख, सुक्खां सुखदयां घड़ी नेड़े आईआ। मेरे विच होइउँ प्रतख, मेरा संग निभाईआ। मेरी फरकणों हटी अक्ख, आखर तेरा दर्शन पाईआ। मैं तेरी किरपा शाह सुल्ताना घर उडौणे कक्ख, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आपणे इशारे नाल आपणे दे दस्स, जो तेरे चरण ध्यान लगाईआ। फड़ बाहों लवां रख, निउँ निउँ लागां पाईआ। चारों कुण्ट वेखीं उडणे भक्ख, भाख्या

५६१
१३

५६२
१३

तेरी मोहे भाईआ। मैं सेवा करां नठ्ठ नठ्ठ, इक्को साची बणत बणाईआ। किसे दा रहिण ना देवां धीरज जत, सति रखे ना कोए टिकाईआ। चौदां विद्या मारां मति, पढ़ पढ़ होण जीव हल्काईआ। शाह सुल्तानां घर चुक्कां अत, दर दर पए लड़ाईआ। विद्वाना नक्क पावां नथ्थ, कलन्दर वांग नचाईआ। जो तेरा गाउँदे जस तिन्नां ढै पवां सरनाईआ। मेरा वेला अन्तिम होणा बस, मैं सब दा बसता दयां बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। दर्दी मेरा वंड दरद, दुःख तेरे अग्गे सुणाया। मैं कलिजुग जीवां हथ्थ छुरी फड़ाई करद, कोई हलाल कोई झटका कर वखाया। तूं आएयों बण के मर्द, सब दा लेखा दे मुकाया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिछली वखा कढु के फरद, जिस दे उत्ते हिसाब जणाया। जीवां जंतां सारे गए वर्ज, नानक लिख लिख लेख गणाया। पुरख अकाल अग्गे करो अर्ज़, वेले अन्त होए सहाया। तूं कर लै आपणा पूरा फर्ज, तेरे अग्गे वास्ता पाया। मैनूं लख चुरासी मारन दी अन्तिम मर्ज़, दारू नज़र कोए ना आया। प्रभ तेरा होवे कोई ना हर्ज, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मैं लाहवां पिछला कर्ज़, अगला लेखा तेरी झोली पाया। ना कोई गर्म ना कोई सर्द, हुक्म इक्को रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाया। तेरे दर दिती दलील, साहिब सच मेरी अरज़ोईआ। मेरी सुण अन्त अपील, मेहरवान मिले किते ना ढोईआ। मेरा कोई नज़र ना आए वकील, वुकला बैठे मुख छुपाईआ। तूं साचा शाह छैल छबील, तेरा हुक्म मेरी रज़ाईआ। तूं वस्त्र पहरे नील, बसन बनवारी आपणा वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई होई कुचील, कुचल देवीं थाउँ थाईंआ। किसे नज़र ना आए मानसरोवर झील, हँस रूप ना कोए वटाईआ। लेखा चुके ज़बराईल मेकाईल असराफील, इज़राईल दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ढाह दे फ़सील, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। जिउँ कृष्न अर्जण लहिणा चुकाया कोलों भील, तिउँ पीर पैगम्बर नठ्ठण वाहो दाहीआ। तेरा शस्त्र ना कोए तीर, कमान नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा तोड़ मेरा ज़ंजीर, ज़रा ज़रा दे कटाईआ। मैं अन्त तेरे कोल आया अख़ीर, इखतैयार दे मेरे गोसाईंआ। अठसठ तीर्थ सुकावां नीर, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाईआ। सब दे वस्त्र लाहवां चीर, भूशन तन ना कोए पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी ख्वाहिश पूर कराईआ। मेरी पूरी कर दे ख्वाहिश, ख़ासतगार दर ते आया। नौ खण्ड पृथ्मी कर अज़माइश, बिन तेरे भगतां सच्चा कोए रहिण ना पाया। मैं करके आया पैमाइश, पैमाना इक्को हथ्थ उठाया। कलिजुग जीवां धीआं भैणां लाई नुमाइश, जगत फैशन हट्ट विकाया। तैनूं वेख मेरे साहिब ना आया तैश, क्यों बैठा मुख छुपाया। मेरी चले ना कोए पेश, पेशतर तेरे अग्गे हाल सुणाया। माण

तुटा ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति बैठा सीस झुकाया। पीर पैगम्बर बण गए दरवेश, दर ब-दर ना कोए फिराया। तूं रहें सदा हमेश, आदि जुगादि वड वडयाया। मेरे वेख खुलड़े केस, सीस दस्तार ना कोए टिकाया। फिरी दरोही मुल्ला शेख़, शेख़ी सब दी दे मिटाया। मैं आपणी खेल लई खेड, जगत कूड़ अडम्बर इक रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा सुणाया। कलिजुग सच दस्सांगा। तेरे विच आ के हस्सांगा। दो जहानां नस्सांगा। एका तीर निराला कसांगा। सृष्ट सबाई झस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साचे मन्दिर बहि के वसांगा। कलिजुग वेख वेखी जा, वखावणहारा दया कमाईआ। भेखाधारी भुल्ले राह, भरमी भरम वड्याईआ। मायाधारी रुले थाँ थाँ, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। मांवां पुत्रां कोए ना छाँ, पिता पुत्त ना कोए वड्याईआ। नार कन्त ना सके हंढा, विभचार सर्ब लोकाईआ। तेरी अन्तिम पकड़ां बांह, बल आपणा इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खेल खेल रिहा वखाईआ।

❊ २० माघ २०१६ बिक्रमी अर्जण सिँघ दे गृह भरोभाल ज़िला अमृतसर ❊

गुलाम बरदे आए बद्धे, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर फिरन भज्जे, चौदां तबक देण दुहाईआ। साहिब सुल्तान इक्को सद्दे, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। पार कराए पिछली हद्दे, अगला लेखा रिहा समझाईआ। कलिजुग विच बाल नढ्ढे, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा समझाईआ। गुर अवतार सद्दे नेड़े, नेरन नेरा आप जणाइंदा। कलिजुग वेखो उजड़े खेड़े, काया खेड़ा ना कोए वसाइंदा। दीन मज़्हब पए झेड़े, झगड़ा हक़ ना कोए दृढ़ाइंदा। सति धर्म ना बन्न्हे बेड़े, बेड़ा कंध ना कोए उठाइंदा। पुरख अकाल सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वेंहदा रिहा कर के वड्डे जेरे, भेव अभेदा आप छुपाइंदा। कोई ना जाणे तेरे मेरे, मेरा तेरा राह ना कोए वखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार हुक्मे अन्दर हरि जू घेरे, धुर फ़रमाना इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। पीर पैगम्बर सजदा सीस, इक्को इक झुकाईआ। तेरा खेल साहिब जगदीश, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरा कलमा तेरी हदीस, हज़रत सच तेरी पढ़ाईआ। अन्तिम ख़ाली होए खीस, वस्त नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं पीसण ल्या पीस, चौदां तबक देण दुहाईआ। तेरा निशाना दस्स के गए ठीक, अल्फ़ ये कर पढ़ाईआ। तेरे हथ्थ इक तौफ़ीक, लाशरीक बेपरवाहीआ। तेरी करदे रहे उडीक, ईसा मूसा

मुहम्मद ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार नेत्र खोल्ह, नैण नैण दरसाइंदा। लोकमात सच वस्त ना किसे कोल, लख चुरासी ख़ाली भाण्डे आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता वज्जा ढोल, सच सुच्च वणज ना कोए वखाइंदा। त्रैगुण माया पाया घोल, तत्तव तत्त नाल लड़ाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, पर्दा हक़ ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। पीर पैगम्बर मारन धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेला अन्तिम गया आ, दीसे अन्त ना कोए सहाईआ। अल्ला राणी तुट्टणहारा नकाह, मुख पर्दा ना कोए टिकाईआ। करे खेल आप ख़ुदा, ख़ुदी सब दी मेट मिटाईआ। रूह पाक करे जुदा, वजूद कम्म किसे ना आईआ। सारे होए बेवफ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा कमाईआ। गुर अवतार करन विचार, विचार विच हरि ना आइंदा। जुग चौकड़ी जिस चलाई धार, धरत धवल खेल खलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड खोल्हणहार किवाड़, पुरीआँ लोआँ राह चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव जिस बणाए सेवादार, साची सेवा इक समझाइंदा। सो साहिब लेखा मंगे अन्तिम वार, पूरब लहिणा आप चुकाइंदा। सब दे नेत्र होए शरमसार, अक्ख प्रतख ना कोए उठाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए लाचार, अञ्जील कुरान काया कुरा ना कोए वखाइंदा। खाणी बाणी तीर निराला मारे ना कोई मार, धार दो धार ना कोए जणाइंदा। कूड़ा नाता सर्ब संसार, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाइंदा। चौदां लोक वेखे हट्ट बाज़ार, श्री भगवान फोल फुलाइंदा। कागद कलम शाही रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर धीर ना कोए धराइंदा। दरोही ख़ुदाए साडी सुणी ना किसे आवाज़, गुर का शब्द रिदे ना कोए वसाइंदा। सृष्ट सबाई होई विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ धूंआँधार, जोत उजाला ना कोए कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलिजुग अन्तिम सारे गए हार, आत्म परमात्म ब्रह्म मति इक तत्त सति सति नजर किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप समझाइंदा। साची करनी दस्से मूसा, मसला इक्को इक जणाईआ। अन्तिम पाउणा काला सूसा, नूर ज़हूर दए छुपाईआ। ईसा सीस ना रहे कोई हदीसा, हज़रत इक्को हुक्म सुणाईआ। मुहम्मद तेरा अन्तिम पीसण पीसा, कलिजुग चक्की जगत चलाईआ। चार यारी ख़ाली खीसा, ख़लकत रोवे मारे धाहींआ। प्रगट होया बीस बीसा, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सच संदेसा पीर गुर, सतिगुर साचा इक समझाइंदा। साचा लेखा वेखो धुर, धुर दा लेखा आप जणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत स्वच्छ सरूपी कवण गया जुड़, शब्दी ढोला कवण अल्हाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण

सरगुण वेखणहारा चढ़ के साचे घोड़, जोती जोड़ा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करनेहारा, एकँकार वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण करे कराए साची कारा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। एकँकारा देवणहार आधारा, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता सति सतवादी दए सति हुलारा, श्री भगवान वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, ब्रह्म वेखे थाउँ थाईंआ। विष्नूं देवे इक इशारा, ब्रह्मा आपणे हुक्म नचाईआ। शंकर खोल्हे बंद कवाड़ा, नेत्र बंद ना कोए जणाईआ। हुक्मे अन्दर सद्दे तेई अवतारा, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ। साचा खेल सचखण्ड, सो पुरख निरँजण आप रचाइंदा। जुग चौकड़ी वंडणहारा वंड, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। लेखा चुकाए तारा सूरज चन्द, चन्द चांदना इक चमकाइंदा। लख चुरासी देवणहारा दंड, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। नाता तोड़े जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मूल मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्ड, कलिजुग लहिणा झोली आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। गुर अवतार करो ध्यान, हरि साचा सच समझाइंदा। चार वरन किसे कोल ना रिहा ज्ञान, सच ध्यान ना कोए लगाइंदा। क्षत्री
५६५ ब्रह्मण शूद्र वैश होए बेईमान, नाम अमानत गृह मन्दिर ना कोए टिकाइंदा। पंच विकारा अन्दर वड़या शैतान, काम क्रोध ५६५
१३ लोभ मोह हँकार सर्ब हल्काइंदा। नज़र ना आए श्री भगवान, बंद ताकी कुण्डा कोए ना लाहइंदा। अमृत आत्म किसे ना १३
मिल्या पीण खाण, निझर झिरना ना कोए झिराइंदा। जोती जोत जगे ना नूर महान, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। बत्ती दन्द रसना जिह्वा गा गा थक्की गाण, गावणहारा आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी करनी आप जणाइंदा। गुर अवतार करन महिसूस, वेला अन्तिम अन्त आईआ। पुरख अबिनाशी बणया आप जासूस, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सब दी वरासत करे मनसूख, हक़ आपणा दए जणाईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, कूड़ी क्रिया झूठ, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। लख चुरासी पंज तत्त काया जाण कलबूत, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। आपणा देवे आप सबूत, शहिनशाह इक्को फेरा पाईआ। आपणे हथ्थ रखे हकूक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा देवे आप, सदा आपणे नाम लगाईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत वेख वखाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस दा जपदे रहे जाप, सो साहिब वेखण आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जीव जंत वेखे पूजा पाठ, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। पावे

सार तीर्थ ताट, तट किनारा फोल फुलाईआ। चौदां लोकां खोल्ले हाट, वणजारा नज़र कोए ना आईआ। चोदां तबक वेखे ज़ात, ज़ात सब दी दए गंवाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। गोपी काहन कोई ना पावे रास, मण्डल मण्डप नाच ना कोए नचाईआ। चार जुग दी इकठ्ठी करे शाख़, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दी भाख्या रहे भाख, भविख्त वाक् सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नर हरि इक्को वेस वटाईआ। नर हरि एकँकारा, अक्ल कला अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड आपणे सोभा पाइंदा। कमलापाती हो उज्यारा, दीआ बाती ना कोए जगाइंदा। साचा साकी नर निरँकारा, साचा जाम हथ्थ उठाइंदा। देवणहारा धुर दरबारा, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, वाहद आपणा रंग चढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान सांझा यारा, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो तैयारा, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिफ्त सालाही वसे बाहरा, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। सिफ्त सालाही एको एक, एक एक जणाईआ। आदि जुगादि साची टेक, जुग जुग हुक्म मनाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, भेख आपणा आपणे विच छुपाईआ। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर दए वड्याईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। जिस
५९६ सुत बणाया श्री दशमेश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस नानक निरगुण करी आदेस, अलख अलख ढोला गाईआ। ५९६
१३ जिस पीर पैगम्बर बणाई रेख, रेखा आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जो भगतां संग करे हेत, नित नवित्त फेरा पाईआ। जिस १३
नाउँ निरँकार आपणा दित्ता भेत, विष्न ब्रह्मा शिव कर पढ़ाईआ। सो कलिजुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे करे आपे पेश, आपणा लेखा आपणे विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करनहार निरँकारा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। कलि कल्की लै अवतारा, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। वेद व्यासा जिस दा लेखा लिख दा रिहा बण लिखारा, सो ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता उच्चे टिले पर्बत फेरा पाइंदा। जिस दा जलवा तक्क मूसा डिगा मूँह दे भारा, नेत्र नैण ना अक्ख खुल्लाइंदा। जिस नूं ईसा कहिन्दा मेरा परवरदिगारा, पिता पूत रंग वखाइंदा। जिस नूं मुहम्मद कहे मेरा अमाम सिक्दारा, सिर मेरे हुक्म मनाइंदा। जिस नूं अल्ला राणी कहे पीर ज़ाहरा, ज़ाहर जहूर खेल कराइंदा। जिस दा हक़ो हक़ नाअरा, नोबत आपणे नाम वजाइंदा। जिस दा पीर पैगम्बर करदे गए मुशारा, सो मुश्कल सब दी हल्ल कराइंदा। सचखण्ड दुआर बैठा रिहा हो के बहिरा, कलिजुग अन्तिम आपणा हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। वेखो खेल

पैगम्बर पीर, पारब्रह्म जणाईआ। वेला अन्तिम इक अख़ीर, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। कटण आया शरअ ज़ंजीर, शरीअत कोए रहिण ना पाईआ। हयात आब देवे इक्को नीर, निर्मल जाम प्याईआ। चौदां तबक बदल देवे तकदीर, तस्वीर आपणी दए वखाईआ। पिछली मेटे सर्ब लकीर, हुक्मे अन्दर हुक्म जणाईआ। नाम खण्डा खिच शमशीर, शमा सब दी गुल कराईआ। वेख वेख सारे होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। करया खेल हरि बेनज़ीर, नज़र विच ना आईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह इक्को फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। पीर पैगम्बर वेखो हयाती, हरि साहिब आप जणाइंदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी राती, रुत्ती आपणी इक वखाइंदा। साची सच देवे प्रभाती, परम पुरख दया कमाइंदा। बिरहों तीर निराला मारे काती, काया सब दी आप उलटाइंदा। सचखण्ड दवारे खोल्ले ताकी, पर्दा दूई आप चुकाइंदा। किसे दा कुछ रहि ना जाए बाकी, उम्मत उम्मतीआं झोली पाइंदा। वेले अन्तिम देवे फ़ासी, फाह सब दे हथ्थ वखाइंदा। हज़रत बहि बहि करे हासी, ईसा मूसा ना कोए छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद गए जाग, जागण वेला आया। कोई ना धोवे झूठा दाग़, दुरमति मैल कोए ना लाहया। मकबरे जगे ना कोई चिराग़, मस्जिद नूर ना कोए रुशनाया। मसला हल्ल ना हक़ जनाब, अल्ला राणी नैण शरमाया। ना कोई मेटे वाद विवाद, सादक सिदक ना कोए रखाया। परवरदिगार चरण घोड़े दित्ता रक़ाब, दुलदुल इक्को तंग कसाया। जिस दा लैंदे रहे ख्वाब, सो ख़ाह मख़ाह आपणा हुक्म चलाया। चलो रल के करीए दर आदाब, सजदा सीस झुकाया। कलिजुग अन्तिम लख चुरासी भरी पाप, पतित कोए ना रूप वटाया। जिस दा जपदे आए जाप, नूरी अल्ला नूर रुशनाया। सो मीआं आया बाप, पिसर पिदर ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा मनाया। अन्तिम हुक्म मन्नणा पैणा, सो साहिब आप जणाईआ। आपणा कीता वेखो नैणां, निज नेत्र रिहा जणाईआ। दीन मज़्हब दा बुरज अन्तिम ढहिणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। चार वरन बणाए भाई भैणां, साक सैणा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक जणाईआ। सच संदेसा देवे अमाम, कायनात समझाइंदा। पीर पैगम्बर करन सलाम, अलैकम हुक्म ना कोए जणाइंदा। अन्त भगवन्त तोड़े माण, अभिमान नज़र कोए ना आइंदा। बरदे बणाए फड़ गुलाम, गुरबत सब दी आप गवाइंदा। चरण धूढ़ वखाए इक हमाम, दर मन्दिर पर्दा लाहइंदा। बदल देवे आप नज़ाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक घलाइंदा। सच स्नेहुड़ा देवे घल्ल, शब्द अगम्म पढ़ाईआ। वसणहारा

निहचल धाम अटल, अटल हुक्म जणाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार इक दूजे नाल जाओ रल, पिछला झगड़ा सर्ब मुकाईआ। श्री भगवान करदा रिहा वल छल, जुग चौकड़ी सरगुण हुक्म जणाईआ। दाता योद्धा सूरबीर वड प्रबल, परम पुरख बेअन्त वड्याईआ। अन्तिम मेटे सब दा सल, दूई कोए रहिण ना पाईआ। प्रभ सरनाई लैणी मल्ल, दूजी ओट नज़र ना आईआ। कलिजुग मेटे अज्ज कि कल, काल सब दे सिर ते छाईआ। जन भगतां देवे पूरब फल, लहिणा नाम झोली पाईआ। नौ खण्ड पृथमी वाहे हल, कूड़ी किरआ जड़ उखड़ाईआ। वेखणहारा जल थल, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा रिहा समझाईआ। अगला लेखा आया नेड़े, नेरन नेरा आप जणाइंदा। दीन मज़्हब दे छड्डो झेड़े, झगड़ा कोए रहिण ना पाइंदा। जिस ने दित्ते सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गेड़े, सो गेड़ा आप गिढ़ाइंदा। धरत मात दे खुल्हे करे वेहड़े, दीपां लोआँ खोज खुजाइंदा। जन भगतां पिच्छे जिस सरगुण हो के मारे फेरे, निरगुण आपणा नाउँ वड्याइंदा। अन्तिम सारे आ गए हरि दे घेरे, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। करन ना देवे हेरे फेरे, हेरी फेरी सर्ब मिटाइंदा। सारे कहो तूं मेरा हम तेरे, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शाहो शाबाशी असीं आए तेरे डेरे, तेरा डंका नाम इक्को नाद वजाइंदा। असीं लोकमात झगड़े कर के आए बथेरे, तेरे हुक्मे खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक सुणाइंदा। सच संदेसा देवे नाद, एका राग जणाईआ। वेखणहारा आदि जुगादि, जुग जुग फेरा पाईआ। जिस रचन रचाई ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जिस नाम जणाया बोध अगाध, अगाध बोध करी पढ़ाईआ। जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर दिती दाद, दात इक्को झोली पाईआ। जिस दीन मज़्हब बणाई जमात, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जिस पीर पैगम्बर नाता बंधाया चरण नात, नित नवित्त खेल कराईआ। जिस नूं मन्नया रसूल पाक, सच असूल रिहा वखाईआ। माअकूल अग्गों दयो जवाब, परवरदिगार पुच्छ पुछाईआ। आपणे मुख तों पड़दा लाहे नक़ाब, पर्दानशीं आपणा मुख दिखलाईआ। चौदां तबक वेखे बाग़, ख़िज़ां रुत्त सब ते छाईआ। वेले अन्त ना करे किसे मुआफ़, दोषी दोष रिहा लगाईआ। सृष्ट सबाई पाए वफ़ात, फ़तवा इक्को नाम लगाईआ। लेखा लिख के गए कलम दवात, पीर पैगम्बर देण गवाहीआ। कलिजुग आए अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। प्रगट होए पुरख अबिनाश, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक जणाईआ। साचा हुक्म सुणो कन्न, बिन रसना आप जणाइंदा। इक्को हुक्म लैणा मन्न, मनसा सब दी पूर कराइंदा। इक्को चढ़ना सच्चा चन्न, नूर ज़हूर इक दरसाइंदा। इक्को बेड़ा देवे बन्ह, खेवट खेटा नाउँ वड्याइंदा। इक्को घड़े

देवे भंन॒, पंज तत्त ठीकर नज़र कोए ना आइंदा। इक्को नाता जोड़े छप्परी छन्न, इक्को सचखण्ड सोभा पाइंदा। इक्को देवणहारा डंन, डंका नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को कलमा आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर कर असीस, सरन पए सरनाईआ। तेरी पढ़ीए इक हदीस, दूजा कलमा ना कोए सुणाईआ। छत्र झुल्ले प्रभ तेरे सीस, तेरे हुक्म सद रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मंगी मंग बण दरवेश, माण अभिमान ना कोए रखाया। साडी अन्त चले ना कोई पेश, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाया। नाता तुटा मुल्ला शेख़, मसायक नज़र कोए ना आया। इक्को तेरे चरणां हेत, प्रीती सच सच बंधाया। कर किरपा साहिब वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाया। साचा हुक्म पीर पैगम्बर, पारब्रह्म जणाईआ। कलिजुग मेरा अन्त सुअम्बर, इक्को घर वखाईआ। लख चुरासी कूड़ अडम्बर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब कला आपे भरतम्बर, घट घट रिहा समाईआ। जिस बणाए ज़िमीं असमान अम्बर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा फ़रमाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, धुरदरगाही आप जणाइंदा। गोबिन्द लिख के गया परवाना, परम पुरख आप समझाइंदा। नानक निरगुण दे के गया ज्ञाना, मंत्र सति नाम दृढ़ाइंदा। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवाना, जिस दा अन्त कोए ना आइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ नाच नचाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे ध्याना, करोड़ तेतीसा धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गावण गाणा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी जिस दी सिफ्त सालाहइंदा। सो साहिब वड मेहरवाना, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। गोबिन्द कहे मेरा पुरख अकाल नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। मेरी हथ्थीं बन्न॒े गाना, साचा सगन आप मनाइंदा। ना कोई चिल्ला तीर कमाना, कल्ग़ी तोड़ा ना कोए जणाइंदा। करे खेल खेल महाना, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सम्बल वसे इक मकाना, संभल संभल आपणा चरण टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर आप उठाइंदा। पीर पैगम्बर उठो भागो, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। परवरदिगार सरन सरनाई लागो, पिछला लहिणा दए चुकाईआ। धुरदरगाही सुणो आवाज़ो, बांग सदा ना कोए अल्लाईआ। पिछला झेड़ा चुक्के निमाज़ो, हुजरा हक़ इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब नूं रिहा जणाईआ। साहिब तेरा लेखा सोहणा, लिख्त विच ना आइंदा। जो करना सो सच होणा, ना कोई मेट मिटाइंदा। तेरे दर ते सब ने रोणा,रोन्दयां सब नूं गले लगाइंदा। दुरमति दाग़ जगत धोणा, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग

अन्तिम साची सेज किसे ना मिले सौणा, ख़ावंद ख़वातीन ना कोए हंढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरा इक्को भाइंदा। दर तेरा इक्को सति, सति तेरी वड्याईआ। दर तेरा इक्को हक़, हक़ो हक़ नज़री आईआ। लोकमात सिख्या दे दे गए थक्क, तेरी सृष्टी चले ना तेरी रज़ाईआ। असीं कलिजुग अन्तिम पिच्छे गए हट, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। कलमा पढ़ के लग्गदा द्वैती फट, बाणी पढ़ के नाम पट्टी ना कोए बंधाईआ। सृष्ट सबाई विक गई कलिजुग दे हट्ट, कौडी कीमत कोए ना पाईआ। जिध्धर वेखीए खेड़ा दिसे भठ्ठ, भांबड़ त्रैगुण अग्नी रही लाईआ। नाता तुटा तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खुल्ली मींढी सीस पट्टी ना कोए गुंदाईआ। कलिजुग जीवां मेरी ना रखी पत्त, मेरे अन्दर वड़ वड़ नंगे तारीआं लाईआ। दीन मज़्ह्ब दी उबली रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाईआ। नानक गोबिन्द दी भुल्ली सब नूं मति, मनमति होई हल्काईआ। किसे घर ना दिसे धीरज जत, नेत्र नैण धीआं भैणां रहे तकाईआ। गुर अवतार सारे गए छड्ड, खैहड़ा छड्डया अन्त लोकाईआ। श्री भगवान कलिजुग अन्तिम जिस भावे तिस तूं लैणा रख, गुर अवतार देवे ना कोए गवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत सिम्मल रुक्ख ख़ाली पत्त, फल फुल नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता रसना जिह्वा मणका मणका माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। गुर का सत्थर कोए ना बहे घत्त, यारड़ा मेल ना कोए मिलाईआ। अमृत गोबिन्द कोई ना लए झट्ट, तृष्ना भुक्ख ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, लेखा जाणे गुरु गुर चेला, चेला गुर खेल खलाईआ। गुर बणया पुरख अकाल, भेव कोए ना पाइंदा। चेला बणया गोबिन्द लाल, गुजरी गोद ना कोए सुहाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, दो जहानां वेख वखाइंदा। नाम जणाए हो कृपाल, कृपानिध आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम हल्ल करे स्वाल, ज़ेर ज़बर सर्ब मिटाइंदा। चौदां विद्या होए हैरान, हरि जू की की खेल कराइंदा। नाता तोड़े बे-ईमान, शरअ शैतान ना कोए लड़ाइंदा। बग़लों खिच्चे आप कुरान, मसला हक़ आप समझाइंदा। लेखा जाणे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत फोल फुलाइंदा। पर्दा खोल्हे अठ्ठ दस अठारां ध्याए गीता ज्ञान, गोझ आपणा रंग रंगाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुरू ज्ञान, गुर शब्दी वंड वंडाइंदा। पुरख अकाल सब दा जाणी जाण, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाइंदा। कलिजुग भुल्ले जीव नादान, हरि का नाम ना कोए ध्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता उत्तम रखे आपणी ज़ाता, निरवैर पुरख आपणा फेरा पाइंदा। निरवैर पुरख बेपरवाह, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सति सरूपी बण मलाह, शाहो भूपी फेरा पाईआ। दहि दिशा चारों कुण्ट वेख वखा, उतर पूरब पच्छिम

दक्खण आपणा हुक्म जणाईआ। लेखा जाणे थाउँ थाँ, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। लहिणा देण चुकाए पुत्रां माँ, पिता पूत गोदी इक जणाईआ। भगत भगवान इक दूजे नाल करन हां, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणयां अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सूचना इक समझाईआ। साची सूचना हरि का नाउँ पत्र, पत पतवन्ता आप जणाइंदा। सतिजुग बीज बीजे साचे वत्तर, भगत भगवान हल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। इकावन बावन सुणो गीत, गहर गम्भीर जणाईआ। पुरख अकाल दी अगम्मी रीत, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सच सरनाई इक प्रीत, दो जहान वड्याईआ। जिस बणाया मन्दिर मसीत, सो अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैभवण धनी फेरा पाईआ। ताज सोहे साचे सीस, जगदीश वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे राग छत्तीस, नाद आपणा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्को लाईआ। सच जैकारा गाए सलोक, सोहला इक्को इक दृढ़ाइंदा। वज्जे वधाई लोक परलोक, परम पुरख आप अलाइंदा। लख चुरासी देवे मोख, मुफ्त आपणा नाम लुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाइंदा। साचा नाउँ हरि निरँकार, इक्को इक जणाईआ। पीर पैगम्बर लैणा उच्चार, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हर घट रिहा समाईआ। बण वचोला विच संसार, शब्दी गुर फेरा पाईआ। पर्दा उहला दए नवार, चोला आपणा आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक समझाईआ। साचा नाउँ आदि निरँजण, आदि पुरख समझाइंदा। दानी दाता दुःख दर्द भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। नाम निधान नेत्र पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सदा सुहेला इक्को सज्जण, जुग जुग वेस वटाइंदा। चरण धूढ़ कराए मजन, निर्मल नीर सीर प्याइंदा। कलिजुग अन्तिम परदे आया कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कूड़े भाण्डे सारे भज्जण, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। शाह सुल्तान तख्त ताज तजण, दर दर आप फिराइंदा। काल नग़ारे सिर ते वज्जण, वजाहत नाल समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को मंत्र आप दृढ़ाइंदा। इक्को मंत्र सब ने गाउणा, गा गा खुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ नज़री आउणा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया बुरज ढाउणा, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। अबिनाशी करता घर विच पाउणा, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम दए वरताईआ। इक्को नाम वरते जग, जग जीवण दाता आप वरताइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, जन भगतां आप मिलाइंदा। फड़ फड़ हँस

बणाए कग्ग, सोहँ हँसा जाप जपाइंदा। दरस कराए रज्ज रज्ज, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा । नव दवारे पार हद्द, दसवें आपणा कुण्डा लाहइंदा। अनहद नाद जाए वज्ज, सुर ताल ना कोए बणाइंदा। अमृत जाम प्याए मध, मधुर रस इक जणाइंदा। सुरत सवाणी सेजा सद्द, शब्द हाणी मेल मिलाइंदा। जगत माया विच्चों कढ्ढ, आप आपणे रंग रंगाइंदा। इक वखाए विश्व यद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक पढ़ाइंदा। साचा नाम इक्को पढ़ना, नाउँ निरँकार वड्डी वड्याईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़ना, गुरसिख कुण्डा लाहीआ। साची तरनी हरिजन तरना, तारनहारा रिहा समझाईआ। नाता तुटे वरनां बरनां, बरन अठारां ना कोए कुड़माईआ। मेल मिलावा प्रभ के चरणा, धूढ़ी मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। निरभउ चुकाए भय डरना, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। ना जम्मणा ना कदे मरना, मरन जन्म गेड़ रहिण ना पाईआ। सतिगुर घर चाईं चाईं वड़ना, दर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम दए सिखाईआ। साचा नाम लैणा सिख, सिख्या साख्यात जणाइंदा। निरवैर पुरख पाए भिख, पुरखोतम आपणी दया कमाइंदा। जिस नूं ध्यांउँदे मुन रिख, जोग जोगीशर ध्यान लगाइंदा। नज़र नाल ना आए दिस, नैण नैण ना कोए मिलाइंदा। जुग जुग भगतां होए वस, आपणा वस ना कोए रखाइंदा। अन्दर वड़ के मार्ग जाए दस्स, धू प्रहिलाद आप पढ़ाइंदा। दो जहानां पन्ध मुकाए नठ्ठ नठ्ठ, पांधी आपणा फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ धराइंदा। चार वरन दा खोलया हट्ट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्को इक जणाइंदा। साचा नाम नाम धनवन्त, धन साचा इक समझाईआ। हरि का शब्द गुर का मंत, मंत्र नमो नमो पढ़ाईआ। जिस दा लेखा कोई ना जाणे आदि अन्त, गुर अवतार बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। सो मेल मिलाए सच भगवन्त, भगतन साचे रिहा उठाईआ। नेत्र खुल्हाए निरगुण सन्त, सतिगुर आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग बणाए साची बणत, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। चारे वेद तोड़े माण कोई ना जाणे पंडत, जीउ पिण्ड सब दा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्को अक्खर आखर दए समझाईआ। इक्को अक्खर आखर चोटी, चोट नगारे आप लगाइंदा। लख चुरासी वासना कढ्ढे खोटी, सच सुच्च इक समझाइंदा। पारब्रह्म दे बण जाओ गोती, ब्रह्म आपणी अंस वखाइंदा। इक्को नूर निर्मल जोती, जोत निरँजण नाउँ धराइंदा। नाम डंका फड़ो सोटी, पंच विकारा मेट मिटाइंदा। गुरमुख बण जाओ माणक मोती, कूड़ा कच्च कम्म किसे ना आइंदा। सुरत उठाओ कलिजुग सोती, शब्द हुलारा इक लगाइंदा। चढ़ के वेखो आपणी चोटी, सतिगुर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

६०२
१३

आप आपणी किरपा कर, साचा नाम जिस सिखाइंदा। साचा नाम पुरख अगम्म, अलख अगोचर इक जणाईआ। आप वसाए दमां दम, पवण स्वासी सेवा लाईआ। भगत भगवान कराए कम्म, निहकर्मी कर्म कांड दए मिटाईआ। सति सतिवादी बेड़ा देवे बन्न्ह, भार आपणे कंध उठाईआ। गुरमुख वड्डा कहीए धन्न, जिन मिल्या सच्चा माहीआ। लख चुरासी नेत्र अन्न्ह, गुर का दरस कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम विरला सन्त गया मन्न, मन मनसा जगत वलों हटाईआ। सोहँ ढोला गाए छन्द, वचोला इक्को नज़री आईआ। खुशी कराए बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। राए धर्म ना देवे डण्ड, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। सच दवारे चाढ़े चन्द, गुरमुख नाउँ करे रुशनाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शंद, बखशिश इक्को झोली पाईआ। गुरसिख सतिगुरू दवारे इक अनन्द, दूसर हट्ट ना किसे वखाईआ। रसना छड्ड झूठा गंद, रस आत्म इक दृढ़ाईआ। किसे कम्म ना औणे बत्ती दन्द, जिह्वा जगत होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना श्री भगवाना विच जहानां जुगो जुग जगत जुगत आप जणाईआ। ब्रह्म दृष्टी सतिगुर दरस, नेत्र नैण नैण रुशनाईआ। नज़री आए इक्को इष्ट, ईश जीव करे कुड़माईआ। कूड़ी दिसे सर्ब सृष्ट, नाता तुटे भैण भाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया होई भृष्ट, भावी सब दे सिर ते छाईआ। लेखा जाण रामा वशिष्ट, विश्व आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ ।

❇ २१ माघ २०१६ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ❇

साचे तख्त हरि निरँकार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाईआ। तूं ख़ालक ख़लक परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप हरि निंरकार, निरवैर खेल कराईआ। दो जहानां पावें सार, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म चलाईआ। जुग चौकड़ी सच संदेसा देवें विच संसार, हउँ बाले सेव लगाईआ। लिख लिख लेखा अपर अपार, अलख अगम्म अगोचर दएं समझाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दर खड़े तेरे दुआर, दोए जोड़ पए सरनाईआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा तार, तारनहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम सारे गए हार, आपणा बल ना कोए रखाईआ। सृष्ट सबाई तेरा मंत्र तेरा शब्द तेरा नाउँ आए सखाल, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। सरगुण निरगुण बण दलाल, बण विचोला फेरा पाईआ। हकीकत वेख हक़ हलाल, लाशरीक इक खुदाईआ। चारों कुण्ट होए वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। कलमा

पढ़े ना कोए कलाम, कायनात रही कुरलाईआ। हिरदे किसे ना वसे राम, रमया नज़र किसे ना आईआ। नाता तुटा गोपी काहन, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। गुर का शब्द ना सके पछाण, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शरअ होई शैतान, घर घर पई लड़ाईआ। नज़र ना आए इक भगवान, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ दुकान, साचा हट्ट ना कोए चलाईआ। मिल्या मेल ना नौजवान, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। खाणी बाणी सुण सुण थक्की कान, कानी तीर निराला बाण ना कोए लगाईआ। आत्म परमात्म सके ना कोए पछाण, पर्दा आपणा ना कोए उठाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, आत्म रस रस ना कोए चुआईआ। नज़र ना आए गुण निधान, जगत नेत्र देण दुहाईआ। सच दवारे मिल्या किसे ना माण, साध सन्त रहे कुरलाईआ। तेरा रूप सक्या ना कोए पछाण, इष्ट इक्को नज़र किसे ना आईआ। पीर पैगम्बर होए हुक्मरान, लोकमात फिर फिर फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चार वरन अठारां बरन चलदी रही दुकान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर वसें बेपरवाहीआ। गुर अवतार तेरे बरदे, तेरे दर ते अलख जगाईआ। पीर पैगम्बर तैथों डरदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर लोकमात करनी करदे, नाउँ संदेसा इक सुणाईआ। लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड फिरदे, चौदां तबकां वेख वखाईआ। जुग जुग तेरे गेड़े गिढ़दे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम गुर अवतार इक दूजे नाल भिड़दे, दीन मज़्हब पई लड़ाईआ। कोई ना मन्ने हुक्म सच्चे पिर दे, पीआ प्रीतम गए भुलाईआ। अमृत झिरने किते ना झिरदे, पी पी थक्की अमृत जगत लोकाईआ। बिरहों अंझू किते ना किरदे, रो रो नेत्र नैण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखौंणा साचा घर, जिस घर तेरी वड्याईआ। पीर पैगम्बर तेरे गुलाम, आकी नज़र कोए ना आईआ। दोए जोड़ करन सलाम, सलाम अलैकम इक बुलाईआ। तुं साहिब सच्चा अमाम, तेरा अन्त कोए ना आईआ। पकड़या इक्को तेरा दाम, दामनगीर तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कर के आए काम, तेरा नाउँ डंक वजाईआ। अन्त पई अन्धेरी शाम, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कलिजुग छुपण वाला भान, सदी चौधवीं रही शरमाईआ। साचा रहे ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढुाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जगत कुरान, काया कुरह ना कोए फोलाईआ। अन्तर आत्म मिल्या ना सच हमाम, नहावण नहा नहा शुकर ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस दवारे डेरा लाईआ। गुर अवतार तक्कण राह, नैण नैण उठाया। पुरख अबिनाशी मिले इक मलाह, निरगुण आपणा फेरा पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दस्सदा रिहा सलाह,

नाम अक्खरां विच पढ़ाया। दीन मज़्ब शरअ शरीअत पाउदा रिहा राह, रहबर आपणा हुक्म मनाया। आपणा आप निरगुण दाता पुरख बिधाता सति सरूपी रिहा छुपा, रूप रंग रेख ना कोए जणाया। इक्को बख़्शे चरण पनाह, पुनहि पुनहि सब ने सीस झुकाया। लख चुरासी भरी गुनाह, गुरबत घर घर डेरा लाया। हरि का नाउँ गए भुला, नाम सति मंत्र ना किसे दृढ़ाया। आत्म ताकी कोई ना सका खुला, अन्तर आत्म दरस किसे ना पाया। अनहद नाद धुन कोए ना सका गा, छत्ती राग सुण सुण शुकर मनाया। आत्म जोती कोई ना सका जगा, दीआ बाती कमलापाती हथ्थ ना किसे फड़ाया। साचा साकी बण के जाम सक्या ना कोई पिला, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। मन आकी वेख्या थाँ थाँ, मन का मणका ना कोए भवाया। साची सिख्या कलिजुग जीव सारे गए भुला, अभुल्ल तेरा भेव किसे ना आया। तीर्थ तट रोवण मारन धाह, नेत्र नैणां नीर वहाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले सारे कर गए ना, साचा संग ना कोए निभाया। नाता तुटा पुत्रां माँ, पिता पूत ना रंग चढ़ाया। वेले अन्त कोए ना पकड़े बांह, बौहड़ी बौहड़ी सर्ब कुरलाया। नौ खण्ड पृथमी वेख्या थाँ, सत्त दीप पर्दा लाहया। सृष्ट सबाई भरी गुनाह, पुनीत रूप ना कोए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
६०५ इक वखाउणा साचा घर, जिस दवारे नूर धराया। पीर पैगम्बर चरणी ढठ्ठ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। उम्मत नबी सुक्की ६०५
१३ रत, रती रत ना कोए वखाईआ। कलिजुग मारी सब दी मति, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। तीस बतीस सच हदीस १३
आए दस्स, अन्त दस्तबरदार होई लोकाईआ। साडा कोई ना चले वस, ख़ालक तेरी ख़लक भुल्यां नाउँ खुदाईआ। एसे कर के असीं तेरी रख के गए आस, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। कलिजुग अन्तिम परवरदिगार आवे ख़ास, ख्वाहिश साडी पूर कराईआ। तुध बिन चौदां तबक होए निरास, निराशा आपणा रूप वटाईआ। पीर पैगम्बर असीं तेरी निक्की निक्की शाख़, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तुध बिन सारे बैठे उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साडे दोवें खाली हाथ, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। बिन तेरे वेले अन्त कोई ना होवे पास, पर्चा हल्ल ना कोए कराईआ। जो दीसे सो होसी नास, नास्तिक होई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। गुर अवतार सारे कहिण, होका हक़ जणाया। असीं नेत्र वेख्या नैण, कलिजुग आपणी कल धराया। नाता तुटा भाई भैण, साचा संग ना कोए रखाया। कूड़ी क्रिया वगया वहण, मनमति आपणा राह चलाया। हरि जू नज़र ना आए साक सैण, सज्जण अंग ना कोए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाया। पीर पैगम्बर तेरी ओट, इक ध्यान लगाईआ। उँमत नबी आलणयों डिगी बोट,

ना सके कोए उठाईआ। दरोही ख़ुदाए लग्गी चोट, मिहबान बीदो तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। मक्का काअबा कोई ना होश, दो दो आबा मेल ना कोए मिलाईआ। साचे हुजरे बैठे बेदोष, बेदर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। अन्तिम सब दा लथ्थणा पोश, पुश्त हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कूड़ी क्रिया होए मदहोश, आबे हयात प्याला ना कोए प्याईआ। परवरदिगार चढ़या इक्को जोश, जोबन आपणा रिहा जणाईआ। चौदां तबक वेखणहारा नाम सलोक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर तेरा नूर रुशनाईआ। गुर अवतार कढ्ढुण हाढ़ा, हौका नाम भराया। नौ खण्ड पृथ्मी होई उजाड़ा, हरिमन्दिर हरि ना किसे वसाया। गुरमुख मिले ना कोई सच्चा लाड़ा, जिस सेहरा सीस नाम बंधाया। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया लग्गा अखाड़ा, आसा तृष्ना नाच नचाया। काया चोली साची डोली कोई रंग ना चाढ़े गाड़ा, दुरमति मैल ना कोए धवाया। नाता तुटा पुरख नारा, विभचार करे लोकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस मन्दिर तेरा नूर रुशनाया। पीर पैगम्बर मारन झाकी, झाका तेरा नज़री आईआ। असीं तन हंढ्ढाया ख़ाकी, अन्तिम ख़ाक विच मिलाईआ। तेरा सबर प्याला पीता साकी, साबर तेरी ओट तकाईआ। परवरदिगार साहिब आकन आकी, अक्ल तेरे अग्गे चले ना चतुराईआ। तूं लहिणा देणा देणा अन्तिम बाकी, लेखा आपणा देणा मुकाईआ। तुध बिन कोई ना चढ़े तेरी घाटी, अद्धविचकार बैठे ढेरीआं ढाहीआ। कलिजुग आई अन्धेरी राती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई बणया सच्चा जमाती, अल्फ़ अक्ख ना किसे खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर वज्जे तेरी वधाईआ। गुर अवतार चरण आस, इक्को इक रखाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। तेरा लेखा मण्डल रास, गोपी काहन नचाईआ। तेरा नाउँ शहिनशाह शाबाश, शख्सीयत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार कर कर दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। साची वस्त दिती पास, नाउँ निरँकारा झोली पाईआ। निरगुण सरगुण लेखा लेख लिखास, अक्खर वक्खर जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म दे दे साथ, सगला संग निभाईआ। हुक्मे अन्दर कर त्रिलोकी नाथ, सच संदेसा इक जणाईआ। हुक्मे अन्दर खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा दर, जिस दर दूजा नज़र कोए ना आईआ। पीर पैगम्बर लाह लाह चीर, ख़ाकी तन रहे वखाईआ। तूं साहिब दस्तगीर, तेरी दास्तान जुग जुग जगत पढ़ाईआ। तूं शहिनशाह अमीर, आमद तेरी इक्को नज़री आईआ। पीर पैगम्बर मार ज़ंजीर, शरअ विच बंधाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। तूं वसें शाह हकीर, हर घट डेरा लाईआ। चौदां लोक चौदां तबक तेरी निक्की

जिही लकीर, मुहम्मद वेख खुशी मनाईआ। अन्त बदल देवें तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। तुध बिन कोए ना कटे भीड़, दुःख दर्द ना कोए मिटाईआ। साडी होई अन्त अखीर, झल्ली जाए ना तेरी जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार लैणा मिलाईआ। गुर अवतार जपण नाम, इक्को ढोला गाईआ। तुध बिन पूरन होए ना काम, पूरी इच्छया ना कोए कराईआ। तेरा लेखा दो जहान, गुर अवतार तेरा हुक्म सुणाईआ। तूं शहिनशाह सुल्तान, भूपत भूप राज राजान अख्वाईआ। तेरा हुक्म सति फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हउँ बाले नढ्ढे बाल अञ्याण, तेरा भेव कोए ना आईआ। तेरे दर तों मिल्या ज्ञान, तेरे घर दा ढोला गाईआ। तेरी दस्स के आए पहिचाण, निरगुण रूप सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी आदि जुगादि कलाम, पीर पैगम्बर रहे सुणाईआ। जिस दा सचखण्ड सच मकान, थिर घर आपणा चरण रखाईआ। जिस दी महिमां करे अञ्जील कुरान, खाणी बाणी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर तू ही नज़री आईआ। तू ही पाक तू ही रसूल, रहमत तेरी इक खुदाया। तू ही करना अन्त कबूल, दोए जोड़ वास्ता पाया। तेरा सच्चा सच असूल, ना कोई मेटे मेट मिटाया। लख चुरासी गई भूल, भुल्यां मार्ग लाया। आपे कातिल बण मकतूल, सच अदालत आप कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा दर, दरगाह साची कुण्डा लाहया। तेरा नाउँ नाउँ निरँकार, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हउँ सेवक सेवादार, गुर अवतार रहे सुणाईआ। तूं आदि जुगादी मददगार, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कट के आए वगार, लोकमात फेरा पाईआ। चारे खाणी कर के आए हुशियार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज इक जणाईआ। अन्तिम प्रगट हो के आवे निहकलंक नरायण नर अवतार, जिस दा ना कोई पिता ना कोई माईआ। दो जहानां पावे सार, लोआँ पुरीआँ वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, आलस निंद्रा सर्ब मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इकट्ठे हो के रहे सुणाईआ। इकट्ठे हो के डिगे दर, दर वास्ता इक्को पाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, किरपन तेरी ओट तकाया। तेरे कोलों आवे डर, सिर सके ना कोए उठाया। उम्मत नबीआं नाल रही लड़, सिख गुर माण ना कोए वधाया। कलिजुग वेखे अद्धविचकार खड़, वाह वा आपणा हुक्म मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आया। श्री भगवान कहे आओ बच्चे, सब दा बचपन दयां जणाईआ। पंज तत्त भाण्डे रखे कच्चे, कच्चे भन्न वखाईआ। वाक् भविख्त जो लिखे, सो सब दे पूर कराईआ। मेरे शस्त्र सदा तिक्खे, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। बिन नानक गोबिन्द किसे ना वेखे, पीर

६०७ १३

पैगम्बर नज़र किसे ना आईआ। सब नूं करावणहारा चेते, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कोई घल्ले अगेते कोई पछेते, पर्चा सब दे हथ्थ फड़ाईआ। आपणा दस्सदा रिहा निका निका भेते, नाम संदेसा इक जणाईआ। जे कोई उपर चढ़ के वेखे, बेअन्त आपणी धार प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निक्कयां बालां नाल खेडे, पिता बणे बेपरवाहीआ। जुगो जुग हुक्मे अन्दर भेजे, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। अन्तिम लाए आपणे लेखे, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। मेल मिलाए कर कर हेते, नित नवित्त वड्डी वड्याईआ। कोई कहे असीं पुत्त जेठे, पारब्रह्म प्रभ सब दा पिता माईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल दे गोबिन्द बेटे, बेटा गोबिन्द कोई जन्मे ना जननी माईआ। नाम दुशाले आप लपेटे, बण दाई दाया सेव कमाईआ। ना कोई रूप रंग ना रेखे, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे रिहा जणाईआ। आओ वेखो घर निंरकार, निरगुण इक्को आसण लाइंदा। जोती जोत जोत उज्यार, नूर नूराना डगमगाइंदा । लाशरीक परवरदिगार, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। जिस नूं लभ्भदे रहे चार जुग कर विचार, सो विचार विच किसे ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम हो तैयार, लोकमात वेस वटाइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। दूर दुराडे अद्धविचकारे चरण दवारे लए उतार, धरत धवल आप सुहाइंदा। नेत्र वेखो आपणा संसार, हरि संसारी आप वखाइंदा। लेखा हथ्थ किसे ना दिसे वेद चार, शास्त्र सिमरत रंग ना कोए रंगाइंदा। गीता ज्ञान ना कोए आधार, अठ दस बन्धन ना कोए तुड़ाइंदा। अञ्जील कुरान ना कोए प्यार, पीआ प्रीतम मेल ना कोए मिलाइंदा। बाणी तीर निराला मारे ना कोई बाण, अणयाला तीर ना कोए वखाइंदा। सृष्ट सबाई कूड़ी करे विहार, सच बिवहारी नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी माया ममता तन शृंगार, साचा वस्त्र ओढण भूशन हथ्थ ना कोए उठाइंदा। अन्दर वड़ के वेखो पंज तत्त सतिगुर करे ना कोए प्यार, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई काम क्रोध लोभ मोह भरया हँकार, दुरमति मैल ना कोए धवाइंदा। पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुल्ला शेख़ मसायक उच्ची उच्ची वाज़ां रहे मार, अन्तर आत्म राग धुन शब्द नाद ना कोए सुणाइंदा। कुड़ी क्रिया वणज वपार, माया राणी दर शृंगार दर्दी दर्द ना कोए वंडाइंदा। गुर अवतार सारे होए हैरान, मन्दिर मस्जिद वड़या शैतान, जगत शैतानी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, इक महल्ला रिहा जणाईआ। आओ वेखो हरि महल्ला, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, निरगुण दाता आसण लाइंदा। गुर अवतार जिस ने घल्ला, सो आपणे चरण मंगाइंदा। रल मिल सारे फड़ लओ पल्ला, पल्लू इक्को गंढु पवाइंदा। जिस ने धार चलाई बिसमिल्ला, बिस्मिल

आपणा रंग वखाइंदा। जिस दा तीर कमान साचा चिल्ला, खण्डा खड़ग कटार इक चमकाइंदा। सो बैठा उच्चे टिल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम किरपा कर के निरगुण हो के मिला, मिल मिल आपणा रंग वखाइंदा। जो हुण वी रहि गया ढिल्ला, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। किसे कम्म नहीं आउणा चौदां सदीआं कटया छिला, चौदां तबकां डेरा ढाइंदा। जिस ने वस्त्र पहरया नीला, छैल छबीला फेरी पाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद बणा लओ इक वसीला, वसल हक़ हक़ कराइंदा। अन्तिम बदल देवे दलीला, साचा हुक्म इक मनाइंदा। फेर सुणे ना कोए अपीला, आखर आपणा फेरा पाइंदा। फड़ के गले लगाए मस्कीना, मुश्कल ग़रीबां हल्ल कराइंदा। साचे अस्व पाए पाखर ज़ीना, आप आपणा तंग कसाइंदा। वेखो की खेल करे रमज़ान महीना, रमज़ आपणी नाल समझाइंदा। सब नूं घर घर आए पसीना, ठंडा साह ना कोए वखाइंदा। जिस ने दित्ता ओसे सब कुछ छीना, छीनणहारा आप अख्वाइंदा। सारे हो जाओ दर अधीना, अदना रूप इक वखाइंदा। श्री भगवान जो बणया रिहा नाबीना, अन्तिम आपणी अक्ख खुल्हाइंदा। कलिजुग अन्तिम भगवान भगतां करे ठांडा सीना, सीन आपणी झलक जणाइंदा। गुरमुख बणाए सच नगीना, करता कीमत आपे पाइंदा। नाता तुट्टा मक्का मदीना, हुजरे आवाज़ ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक वखाए साचा घर, जिस घर बहि बहि आपणा हुक्म मनाइंदा।

❈ २१ माघ २०१६ बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ❈

आओ वेखो घर सोहणा, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। ना मरना ना कोए रोणा, नेत्र नीर ना कोए वहाइंदा। ना जागणा ना सौणा, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। निर्मल जोत निर्मल रूप होणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को घर वखाइंदा। आओ वेखो घर अगम्म, अगम्म मिले वड्याईआ। वसणहारा श्री भगवन, भगवन आपणा डेरा लाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई जननी ना कोई जन, पूत सपूत गोद ना कोए उठाईआ। ना कोई नाम ना कोई धन, वणज हट्ट ना कोए चलाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए वखाईआ। ना कोई तत्तव ना कोई तन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक समझाईआ। आओ वेखो सच दरवाज़ा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जिथ्थे वसे ग़रीब निवाजा, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। ना कोई प्यो ना कोई दादा, मात गोद ना कोए वखाइंदा। आदि जुगादी इक्को राजा, पुरख अकाल सोभा पाइंदा। ना कोई राग ना कोई नाद ना कोई वज्जे वाजा, सुर

ताल ना कोए रखाइंदा। ना कोई सन्त ना कोई साधा, रूप अनूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक जणाइंदा। आओ वेखो हरि टिकाणा, निरगुण निरगुण रिहा जणाईआ। जिथ्थे देवे सब नूं माणा, जिस जन आपणे चरण लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। जोत सरूप खेल महाना, जोती जाता डगमगाईआ। निरभउ निरवैर मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी इक कमाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाना, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। जिस दा नाउँ साचा गाणा, गा गा पीर पैगम्बर खुशी मनाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्ताना, परवरदिगार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए जणाईआ। साचा मन्दिर सोहणा चंगा, वाह वा इक्को इक बणाया। ना कोई ढोल ना मृदंगा, ताल सतार ना कोए सुणाया। ना कोई भुक्खा ना कोई नंगा, भिखारी नज़र कोए ना आया। ना कोई माणस ना कोई बंदा, ख़ाकी रूप ना कोए दरसाया। ना कोई सारंगी ना सारंगा, साचा खेल इक वखाया। इक्को नज़री आए सूरा सरबँगा, शहिनशाह आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर रिहा खुल्हाया। साचा घर गया खुल्ह, हरि ख़ालक आप खुल्हाईआ। करता कीमत कोए ना लाए मुल, अनमुलड़ी दात इक जणाईआ। आदि जुगादि सदा सदा सुल्हाकुल, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए आपणी कुल, कुलवन्ता वड वड्याईआ। सो तोलणहारा तोल, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना कदे कोए डोले डोल डुलाईआ। हर घट अन्दर रिहा मौल, मौला आपणी खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तुहाढ्ढे नाल कर के आया कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। पहलों लहिणा चुकाया उपर धरनी धरत धौल, पंज तत्त काया वेख वखाईआ । नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मारदा रिहा रोल, सच्चा भेव ना किसे खुल्हाईआ। किसे नूं दात दिती रत्ती चौल, बेअन्त आपणा नाउँ जणाईआ। गोबिन्द इक्को दिती बूँद रस पौहल, अमृत आपणा जाम प्याईआ। आपणा पर्दा दित्ता फोल, नूर इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह रिहा जणाईआ। वेखो गृह हरि का सुच्चा, सच साजण आप जणाइंदा। जिस दे अन्दर रिहा लुका, नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी सति प्यार दा रिहा भुक्खा, दूजी तृष्ना ना कोए वधाइंदा। कलिजुग अन्तिम सब दा पैंडा मुक्का, फड़ बांहों दर बहाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र कर के तुट्ठा, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाइंदा। चौदां तबक किसे दा बणया रहे ना कोठा, खिड़की कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी जो लिख्या पोथा, अक्खर अक्खर वेख वखाइंदा। बिन पुरख अकाल दीन दयाल सब कोई होया थोथा, दुरमति मैल ना कोए

धवाइंदा। पारब्रह्म नाल किसे दा क्या कोई चले रोसा, रुसयां हथ्थ किसे ना आइंदा। नेत्र रोवे मूसा ईसा, मुहम्मद नैणां नीर वहाइंदा। जिस ने पहनया काला सूसा, सो कलिजुग कालख टिक्का मेट मिटाइंदा। इक जणाए सच हदीसा, मुकामे हक़ अक्खर निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। वसणहारा चारे कूटा, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव निरगुण धारों लाया बूटा, पत डाली लख चुरासी बाग़ महकाइंदा। सो अन्तिम देवणहारा इक्को हूटा, दो जहानां हुलारा इक वखाइंदा। पहलों सब नूं कर लए झूठा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। फेर खाली कर दए ठूठा, दर दर घर घर मंग मंगाइंदा। जे कोई अग्गों अड़े नाम खण्डे नाल भंने बूथा, मूँह सब दा आप भवाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम चुक्का, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। कूड़ी क्रिया कलिजुग अन्तिम आपणी हथ्थीं देवे फूका, नाम फुंकारा इक्को लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कठे हो के इक दूजे नूं मारन कूकां, कूक कूक सुणाइंदा। जिस नूं सारे कहिन्दे सुत्ता घूका, सो आपणी करवट आप बदलाइंदा। जिथ्थे कदे कोए ना पहुंचा, सो आपणा भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला इक जणाइंदा। सच महल्ला सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंडी वंड, वंड वंड आपणी खेल कराईआ। नाम निधान श्री भगवान गुण गोबिन्द गवाउदा रिहा छन्द, बंद बंद ख़ुशी वखाईआ। नाता

६११
१३

जोड़ बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। आत्म परमात्म देवणहारा अनन्द, अनन्द आत्म विच रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म चाढ़नहारा चन्द, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। करनहारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग आप उठाईआ। वेखणहारा सर्ब ब्रह्मण्ड, लोआँ पुरीआँ फेरा पाईआ। लेखा चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाईंआ। करे खेल सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। लहिणा देणा चुके तारा चन्द, किरन किरन ना कोए रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण पाइण डण्ड, डंका हरि जू रिहा वखाईआ। जिस ने मेटणा भेख पखण्ड, सो साहिब आपणा हुक्म चलाईआ। जिस दित्ता जीउँ पिण्ड, पंज तत्त करी कुड़माईआ। सो साहिब गहर गम्भीर गुणी गहिंद, गवर आपणा राह चलाईआ। मारे धाह सुरप्त इन्द, कूक कूक रिहा जणाईआ। बिन साचे भगत प्रभ दी कोई ना रहे बिंद, हरिभगत मेरा खेड़ा रहे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्को इक दरसाईआ।

❇ २१ माघ २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह सोहल ज़िला अमृतसर ❇

पीर पैगम्बर वेख वेख कम्बा, धीर नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार तेरा मुकाम बड़ा लम्बा, अन्त कोए ना पाईआ।

ना कोई नूर ना कोई बंदा, ख़ाक ख़ाक ना कोए समाईआ। ना कोई गीत ना कोई छन्दा, राग तर्ज़ ना कोए अलाईआ। ना कोई खड़ग ना कोई खण्डा, कटार नज़र कोए ना आईआ। ना कोई तारा ना कोई चन्दा, लोक परलोक ना कोए वखाईआ। ना कोई नेत्र ना कोई अन्धा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बिन तेरे तेरे दर ना कोए पुचाईआ। तेरा मन्दिर वड्डा डूँग्घा, हद्द नज़र कोए ना आईआ। पीर पैगम्बर बणया सूंघा, सुंघ सुंघ खुशी मनाईआ। तूं सब नूं रख्या चरणां हेठा उूंधा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं किसे हथ्थ ना आएं ढूंडा, ढूंड थक्की सर्ब लोकाईआ। ना बोलें ना कदे कूंदा, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। ना कोई जाणे किथे सौंदा, कवण आसण डेरा लाईआ। जो तेरा बरदा सो तेरा ढोला गाउँदा, गा गा खुशी मनाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद दूर दुराडा तेरी चरण धूढ़ी नहाउदा, नेड़ बहिण कोए ना पाईआ। आदि जुगादि जुग जुग कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड बणाउदा ढौदा, ढाह ढाह आपणी खेल वखाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ीआं आपणे नाल हंढ्ढाउदा, आपणा जोबन ना किसे जणाईआ। कोटन कोटि पीर अवतार आपणे हुक्म चलाउँदा, हुक्मी गेड़ा रिहा दिवाईआ। बेअन्त बेपरवाह सो करे जो तोहे भाउदा, सब तेरी मन्नण रज़ाईआ। तेरे घर दा अन्त ना आउँदा, बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वखाउणा साचा दर, दरवेश बैठे अलख जगाईआ। तेरा घर उच्चा लम्मां, नज़र किसे ना आया। आदि जुगादि बेड़ा बन्न्हा, बन्न्ह बन्न्ह आपणे कंध रखाया। जिस ने तेरा भाणा मन्ना, तिस उंगली ला इशारा इक जणाया। ना वजूद ना कोए तना, वसल तेरा हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर तुध बिन नज़र कोए ना आया। घर तेरा वड्डा वड, वड्डी तेरी वड्याईआ। जिस विच्चों सानूं दित्ता कढ्ढ, हुक्मी हुक्म भवाईआ। कर किरपा अन्तिम लए सद्द, सद्दा नाम सुणाईआ। पिछली तोड़ बीती हद्द, अगला राह जणाईआ। केते केते गए लद, तेरी कहाणी गए सुणाईआ। कर किरपा करा आपणा हज्ज, हाजत अन्तिम पूर वखाईआ। जिस दवारे बहें सज, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा आपणा दर, जिस दर दूजा नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार प्या हस्स, हस्स हस्स आप जणाइंदा। इक्को वार घर देवां दस्स, पर्दा सर्ब उठाइंदा। पहलों सारे कहो साडी होई बस, बसता सब दा बन्न्ह वखाइंदा। लोकमात विच्चों आए नस्स, पिच्छे लेखा ना कोए रखाइंदा। साडी पूरी कर आस, आसा इक्को इक वधाइंदा। तेरे मिलण दी सच्ची ख्वाहिश, ख्वाहिश ख्वाहिश नाल प्रगटाइंदा। बरदे गुलाम होए दास, सेवक सेवक रूप वटाइंदा। तेरा नाउँ पुरख अबिनाश,

अबिनाशी धार चलाइंदा। तेरे सद्दे आए तेरे पास, तुध बिन हुक्म ना कोए मनाइंदा। ना कोए देवे सच नजात, निज मन्दिर सोभा कोए ना पाइंदा। पंज तत्त काया होई वफ़ात, नाता जगत तोड़ तुड़ाइंदा। आपणा लेखा लिख दे बिन कलम दवात, तेरा लिख्या ना कोए मिटाइंदा। तेरी पढ़ीए इक्को जमात, जिस दा भेव अल्फ़ ये ना आइंदा। आपणी खोल्ह वखा उह लुग़ात, जिस दा अन्त कोए ना पाइंदा। असीं सारे मन्नीए तेरी बात, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। साडा पिछला ना फोल खात, खाता नज़र कोए ना आइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र नाल झाक, झाकी तेरी तलब रखाइंदा। तूं दाता कमलापात, गहर गम्भीर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर इक्को मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मैं दस्सांगा, भेव अभेद अपार। सब दे अन्दर वड़ के वसांगा, खोल्हां आप कवाड़। निरगुण हो के सरगुण आखे लग्गांगा, सरगुण निरगुण कर प्यार। जोती जाता हो के जगांगा, जगमग जोत जगे अपार। शाह पातशाह शहिनशाह हो के भज्जांगा, सेवा करां बण बण ख़िदमतगार। प्रेम प्रीती नाल रज्जांगा, साची सिख्या कर विचार। ग़रीब निमाणयां विच बहि बहि सजांगा, कलि कल्की लै अवतार। नाम नगारा हो के वज्जांगा, दो जहानां करां ख़बरदार। जन भगत सच्चे लभ्भांगा, लख चुरासी वेख डूँग्घी धार। मनमुखां कोलों बचांगा, लुक लुक फिरां विच संसार। फिर पीर पैगम्बरां सब नूं सच्ची गल्ल दसांगा, निहकलंक हो ख़बरदार। भगतां अग्गे नीवां हो हो ढठ्ठांगा, धूढ़ी मंगां चरण छार। पत गोबिन्द दी अन्त रखांगा, कल्गी तोड़ा सीस दस्तार। सृष्ट सबाई सारी भखांगा, जुग चौकड़ी आपणी भुक्ख लवां उतार। विच्चों विच्चों सन्त सुहेले रखांगा, जिन्हां करया सच प्यार। कूड़ी क्रिया कोलों नठ्ठांगा, दूर दुराडा होवां बाहर। गुरमुखां लूं लूं अन्दर रचांगा, साढे तिन्न करोड़ करां ख़बरदार। माया ममता अग्नी हो हो मच्चांगा, त्रैगुण देवां साड़, भगत दवारे नटुआ बण के नच्चांगा, आपणा घूँगट दयां उतार। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को नाम दस्सांगा, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक विहार। सच पुच्छो हर हिरदे विच वसांगा, जगमग जोत जगे अपार। हरि मन्दिर इक्को रखांगा, नौ खण्ड पृथ्मी पावां सार। फिर सचखण्ड जा के वसांगा, आप आपणी किरपा धार। पीर पैगम्बरां गुर अवतारां सदा चरणां हेठा रखांगा, चरण प्रीती दस्सां अपर अपार। अगला हाल फेर दस्सांगा, दस्सदयां कोए ना आवे हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार।

✻ २१ माघ २०१६ बिक्रमी मंगल सिँघ, दरबारा सिँघ दे गृह सोहल ज़िला अमृतसर ✻

घर साचा सच वखावांगा। जिस मन्दिर आसण लावांगा। सीस ताज इक सुहावांगा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। दो जहानां हुक्म जणावांगा। पिछली कीती सर्ब उलटावांगा। अग्गे इक्को मार्ग लावांगा। सोहँ ढोला गावांगा। सेज सुहञ्जणी इक वखावांगा। आत्म परमात्म प्रनावांगा। गलवकड़ी साची पावांगा। भगत प्रेम ख़ुशीआं नाल हंढावांगा। इक्को थाँ वखावांगा। जिस घर बहि के गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणा नाम पढ़ावांगा। कलि कल्की फेरा पावांगा। आपणी वंनगी इक वखावांगा। जो बणया सब कुछ ढाहवांगा। आपणा बल आप रखावांगा। किसे दर ना मंगण जावांगा। जो भुलया मार्ग पावांगा। जो रुल्लया गले लगावांगा। जो हुलया मेल वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गल्ल साची इक सुणावांगा। गल्ल सच्ची इक्को दस्सांगा। निक्का हो के गुरमुखां अन्दर वसांगा। वड्डा हो के शाह पातशाहां सिर ख़ाक घत्तांगा। जे कोई पुच्छे आपणा भेव सच्चा दस्सांगा। भगत दवारे उपर चढ़ चढ़ हस्सांगा। लख चुरासी जीव जंत चरणां हेठां झस्सांगा। कूड़ी क्रिया विच ना फसांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां कोलों पिच्छे ना हटांगा। जन भगतां कोलों पिच्छे ना हटणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर रल के मलो वटणा, साचा सगन आप जणाइंदा। पहलों जीव इक्को नाम इक्को रटणा, रट्टा सब दा आप मुकाइंदा। इक्को घर बहि बहि वसणा, खेड़ा इक वड्याइंदा। अमृत रस इक्को चट्टणा, विख रूप ना कोए वखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ खेड़ा गोबिन्द बणया पटना, इट्टां गारा कम्म कोए ना आइंदा। सृष्ट सबाई पहली चेत्र सब कुछ दस्सणा, दहि दिशा हुक्म मनाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को हट्ट विकणा, बंद दरवाजे सर्ब कराइंदा। राज राजानां पए पिटणा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सारे कहिण सब नूं इक्को अक्खर पए सिखणा, जो गोबिन्द आप सिखाइंदा। पुरख अकाल नूं पए लिखणा, लेखा लिख लिख अग्गे धराइंदा। सृष्ट सबाई होए मिथना, मिथ्या रूप सर्ब जणाइंदा। नव नौ चार आपणे भार पिसणा, कलिजुग चक्की गेड़ भवाइंदा। जीव जंत दाढ़ां हेठ चिथणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। जो करना सो करांगा। भगत सुहेले वरांगा। डूँग्घी कन्दर वड़ांगा। साचे पौड़े चढ़ांगा। विकार नाल लड़ांगा। प्रेम अग्नी सड़ांगा। जीवदयां ही मरांगा। बिन तारयां तरनी तरांगा। जन भगतां आपणे जिहा करांगा। किसे कोलों मूल ना डरांगा। सचखण्ड बहि के लड़ांगा। नाम सद्दा सच्चा घलांगा। जोत शब्द शब्द जोत रूप रलांगा। हिलायां किसे कोलों ना हल्लांगा। आपणी करनीयों कदी ना टलांगा। कर आपणी करनी आपणा आसण मल्लांगा। फिर

६१४
१३

नाम संदेसा घल्लांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सिँघासण आपे मल्लांगा। सिँघासण मल्ल बणां मलंग, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। वेखां आपणा आपे रंग, रूप रंग ना किसे जणाइंदा। जो उपज्या सो होए भंग, भंगड़ा काल रूप वखाइंदा। जन भगत बिन मिले ना किसे अनन्द, अनन्द नज़र किसे ना आइंदा। प्रभ गाया आपणा छन्द, सोहँ ढोला इक अलाइंदा। आपणा छड्ड के बंद बंद, सो रूप आप समाइंदा। हँ फेर चढ़ाए चन्द, भगत भगवन्त जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जगत पखण्ड मेट मिटाइंदा।

❃ २१ माघ २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ❃

साहिब तेरा सच मकाना, पुरख सुल्तान इक्को नज़री आईआ। सति सतिवादी झुल्ले निशाना, शाह पातशाह सीस झुकाईआ। तख्त निवासी वड मेहरवाना, इक्को नज़री आईआ। भूपत भूप राज राजाना, वड सिक्दारा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। तेरा खेल अगम्म अथाह, भेव कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी आए हंढ्ढा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा नाम दृढ़ाइंदा। नव नौ पन्ध दित्ता मुका, पांधी नज़र कोए ना आइंदा। अन्तिम ढह पए सरना, सरनगति इक रखाइंदा। पीर पैगम्बर मंगण पनाह, ईसा मूसा मुहम्मद सीस झुकाइंदा। तुध बिन कोई ना मिले थाँ, दरगाह साची ना कोए वखाइंदा। नबी रसूलां पकड़ी बांह, पल्लू आपणी गंढ्ढ पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे ध्यान लगाइंदा। तेरे दर लग्गा ध्यान, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मेहरवान तूं मिहबान, बीदो तेरा नूर रुशनाईआ। पढ़ पढ़ आए तेरी कलाम, कलमा कायनात सुणाईआ। तूं साहिब सच्चा अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। तेरा ऊँचो ऊँच निशान, निशाना इक्को इक दरसाईआ। तेरे उत्ते साडा ईमान, अमानत तेरी झोली पाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर सिफ्त करे कुरान, काया कुरा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर बैठे सीस झुकाईआ। दर बैठे दरवेश, दर्दी दर्द जणाईआ। भरमे भुल्ले मुल्ला शेख़, मसायक आपणा आप गंवाईआ। तेरे नाल करे ना कोई हेत, प्रेम बन्धन ना कोए पाईआ। चौदां सदीआं लिख्या लेख, कातब आपणी कलम चलाईआ। चौदां तबक खेडी खेड, पंज तत्त काया दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। परवरदिगार नौजवान, नईया इक्को इक जणाइंदा। शाहो भूप राज राजान, सच

संदेसा इक अल्लाइंदा। उठो वेखो मार ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुलाइंदा। साचे तख्त बैठा इक भगवान, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। सो पुरख निंरजण मेहरवान, हरि पुरख निरँजण कार कमाइंदा। एकँकार चलावणहार विधान, आदि निरँजण जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा दान, वस्त अमोलक नाम वरताइंदा। श्री भगवान खेल करे महान, महिमा अकथ कथ जणाइंदा। पारब्रह्म झुलाए निशान, सच हुलारा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। पीर पैगम्बर खोल्हो ताक, ताकी सब दी रिहा खुल्हाईआ। पहलों देंदा रिहा भविख्त वाक्, कलिजुग अन्तिम पूर कराईआ। उम्मत उम्मती वेखे साक, पुरीआँ लोआँ पर्दा लाहीआ। अन्तिम इक जणाए घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। अन्तिम मुक्के पन्ध वाट, पैंडा नज़र कोए ना आईआ। नज़री आए इक्को ज़ात, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। साचा हुक्म सुण भगवान, नेत्र नैण नीर वहाईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान, मक्का काअबा दए दुहाईआ। सो साहिब प्रगट होया आण, बेपहचान फेरा पाईआ। चौदां तबक पाए आण, चौदां विद्या माण गंवाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लए उठाल, बांहों पकड़ रिहा जगाईआ। लेखा जाणे हक़ हलाल, हकीकत खोजे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक दृढ़ाईआ। पीर पैगम्बर सच संदेसा, सच सच सुणाइंदा। प्रगट होया इक नरेशा, नर नरायण वेस वटाइंदा। कोटन कोटि सीस निवाइण ब्रह्मा विष्न महेषा, कोटन कोटि गुर अवतार अलख जगाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन ना खेल कराइंदा। घड़न भंनणहार आपणा जाणे इक्को पेशा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम पीर पैगम्बर गुर अवतार बणे नेता, नाउँ आपणा इक समझाइंदा। चार जुग दा पिछला करो चेता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पर्दा आप उठाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड दुआरे जा किसे ना वेखा, इक्को नानक नज़री आइंदा। अद्धविचकार ज़िमीं असमान खेडदे रहे खेडां, जगत खलारी आप खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा पर्दा आप उठाइंदा। आप उठाए पर्दा उहला, पीर पैगम्बर आप जगाईआ। गुर अवतार हरि का रूप ना जाणे कला सोल्ह, अनक कल वड्याईआ। जुग चौकड़ी बदलणहारा चोला, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। सच दुआरे बणया रहे तोला, अतोल अतुल आपणी धार चलाईआ। देवणहारा नाम अनमोला, अनडिठड़ी वस्त वरताईआ। सचखण्ड दवारा जिस ने खोल्हा, ख़ालक खलक विच समाईआ। गुर अवतारां चुक्के डोला, बण कहार सेव कमाईआ। शब्द अगम्मी इक्को बोला, सति सति करे पढ़ाईआ। गुरु गुर सतिगुर बण वचोला, सरगुण

निरगुण मेल मिलाईआ। पूरा करे आपणा कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। आपे बणे साचा मौला, मवल रिहा सब थाईंआ। लेखा जाणे धरनी धरत धौला, आकाश प्रकाश करे रुशनाईआ। आपणा नाउँ रखाए अल्ला, अवल्ला मेहरवान बेपरवाहीआ। आपणा फड़े आपे पल्ला, पल्लू आपणे नाल रखाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आदि जुगादी अछल अछल्ला, वल छल आपणी कार कमाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण दाता नूर रुशनाईआ। सच संदेसा जुग जुग घल्ला, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पीर पैगम्बरां इक्को घर वखाईआ। वेखो घर उच्चा टिल्ला, सच सिँघासण आप जणाइंदा। आदि जुगादि कदे ना हिल्ला, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। ना कोई पत्थर ना कोई सिला, इट्ट गारा ना वंड वंडाइंदा। ना कोई रंग सूहा नीला लाल पीला, चिट्टी धार ना कोए जणाइंदा। ना कोई रखे गुर अवतार भगत भगवन्त कबीला, वसीला होर ना कोए जणाइंदा । शाहो भूप शहिनशाह वड छैल छबीला, आपणा बल आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक खुल्हाइंदा। साचा घर खोल्ह आप, आपणी बूझ बुझाईआ। जिस दा करदे रहे जाप, सो साहिब नज़री आईआ। जिस नूं सारे कहिन्दे रहे बाप, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जिस दे कोलों लैंदे रहे दात, ख़ाली झोली रिहा भराईआ। जिस ने नाम दिती सच सोग़ात, जुग जुग ढोला राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक दरसाईआ। साचे मन्दिर करो दरस, श्री भगवान आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मिटे हरस, हवस होर ना कोए वधाइंदा। नाता तुटे अर्श फ़र्श, घर इक्को नज़री आइंदा। पूरब लाहे सब दा कर्ज़, मकरूज़ आपणी सेव कमाइंदा। शहिनशाह पूरा करे फ़र्ज़, फ़रमांबरदार सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी जो करदा रिहा हर्ज, अन्त हर्जाना आप भराइंदा। सदा सदा जो देंदा आपणा राग नाद नाम तर्ज़, सदा बांग जो सिखाइंदा। सो साहिब खेल करे असचरज, अचरज आपणा राह चलाइंदा। लोकमात विच्चों गुर अवतार पीर पैगम्बर ल्यांदे वर्ज, आप आपणा हुक्म मनाइंदा। इक्को मारे अन्तिम गर्ज, भबक आपणे नाम सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मकान इक वखाइंदा। सच मकान बेमुकाम, आपणा आप बणाईआ। बेनज़ीर बैठा इक अमाम, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सारे सजदा करो इक सलाम, साख्यात रिहा समझाईआ। नग़मा नज़म पढ़ो इक कलाम, करीम कादर रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। साचा खेल कर इकट्ठे, इक्को वार जणाइंदा । पीर पैगम्बर आए नट्ठे, गुर अवतार मेल मिलाइंदा। इक दूजे नूं कोई ना दस्से, हरि जू की की खेल कराइंदा। प्रगट

हो पुरख समरथे, समरथ आपणी धार बंधाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जिस दे नाम दे गाउँदे रहे किस्से, कथा कहाणी राह जणाइंदा। जिस दे हुक्म अन्दर दीन मज़्हब वंड के आए हिस्से, हिस्सा इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक समझाइंदा। साचा हुक्म लैणा सिख, सो पुरख निरँजण आप सिखाईआ। साहिब सतिगुर इक्को आए दिस, दूजा कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम लग्गे पिठ, मूँह दे भार सुटाईआ। फेर सके ना कोई उठ, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। बिन नानक कोई ना वेखे चढ़ के चोट, सच दर सोभा कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर आहलणयों डिगे बोट, बिन परवरदिगार सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम आपणा दर दरसाईआ। आओ वेखो खुल्हा दर, दरवाज़ा आप जणाइंदा। जिस घर मिले साचा वर, गृह मन्दिर वेस वटाइंदा। निरभउ चुकाए पिछला डर, अगला राह वखाइंदा। इक दूजे दा पल्लू लओ फड़, विछड़यां मेल मिलाइंदा। इक्को ढोला लैणा पढ़, पीर पैगम्बरां गुर अवतारां आप सुणाइंदा। पुरख अकाल आपणी करनी रिहा कर, करता आपणी कार कमाइंदा। सिर ते भाणा लैणा जर, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सच महल्ले वेखणा चढ़, इक्को नज़री आइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। ना जन्मे
६१८ ना जाए मर, जून अजून ना कोए भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आपणा घर ६१८
१३ वखाइंदा। वेखो घर उत्ते चढ़, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गए डर, नैण सके ना कोए उठाईआ। १३
मूसा कहे मैं तेरा जलवा वेख डिगा दड़, सुध रहे ना राईआ। ईसा कहे मैं दूर वेखां खड़, चरण ध्यान लगाईआ। मुहम्मद कहे मैं अद्धविचकार बैठा अड़, मेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेई अवतार कहिण असीं गए हर, हार जित तेरे हथ्थ वखाईआ। निरगुण नानक कहे जिउँ भावें तिउँ लैणी कर, मैं चलां तेरी रज़ाईआ। गोबिन्द कहे मैं तेरा सुत नरायण नर, पूत सपूता इक अख्वाईआ। मैं तेरी छाती उत्ते जाणा चढ़, उत्ते बहि बहि खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आए गोसाईंआ। पुरख अकाल कर प्यार, इक्को इक जणाइंदा। गोबिन्द मेरा सुत दुलार, दूल्हा नज़री आइंदा। जिस दा लोकमात कर ना सक्या कोई सतिकार, भेव कोए ना पाइंदा। आपणा नाता तोड़ संसार, मात पित पूत भेंट चढ़ाइंदा। इक्को मन्नया पुरख अकाल, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। उठ गोबिन्द निक्के काके, पुरख अकाल जणाईआ। तेरी सोहणी लग्गे बाते, जो नंन्ही नंन्ही गाईआ। मेरा तेरा इक्को साथे, इक्को घर वज्जे वधाईआ। वेख चरणी डिगे कोटन त्रिलोकी

नाथे, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कोई ना वड़े मेरे हाते, दूर दुराडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। गोबिन्द नंन्हा निक्का बच्चा, श्री भगवान आख जणाइंदा। शब्दी हो के हुण नहीं रिहा कच्चा, पंज तत्त काया कच नज़र ना आइंदा। गुजरी बणे ना मात यच्चा, इक्को तेरी गोद सुहाइंदा। पुरख अकाल तेरे विच रचा, दूजी ज़ात ना कोए बणाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर नच्चा, लोकमात फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम दे प्यार इकठ्ठा, सिर तेरे अग्गे डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। पुरख अकाल वड मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आ सुत सुत अंञाण, बाले गोद सुहाईआ। सचखण्ड देवां साचा माण, माण माण वड्याईआ। अठ्ठे पहर दरस महान, घड़ी पल वंड ना कोए जणाईआ। तेरा मेरा मेला विच जहान, लोकमात करां कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म सुणया गोबिन्द, हरि हरि आख जणाईआ। कर दरस मिटी मेरी चिन्द, चिन्ता मैनूं रही सताईआ। जिन्ना चिर ना बदलें विष्न ब्रह्मा शिव इन्द, आदत पिछली आप बदलाईआ। तैनूं मैं नहीं कहिणा गहर गम्भीर गुणी गहिंद, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे मंगां इक्को मंग, इक ध्यान लगाया। तूं दाता सूरा सरबँग, बेअन्त बेपरवाहया। आपणा नाम दे मृदंग, दो जहानां नाद सुणाया। आपणी सेजा दे पलँघ, जिस उपर आसण लाया। आपणा नाम आपणा काम आपणा ग्राम आपणा निशान आपणा वखा इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाया। आ गोबिन्द लग्ग छाती, शहिनशाह जणाईआ। तेरा लहिणा देवां बाकी, पूरब झोली पाईआ। निरगुण हो के निरगुण सुणाए बाती, आपणा हुक्म समझाईआ। तेरी अन्तिम पुछे वाती, सिर रखे हथ्थ माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। आ चढ़ साचे सीने, सीना हरि जू आप वखाइंदा। तैनूं रंग वखाए भीन्ने, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाइंदा। तेरे चरणां हेठ लोक परलोक कीने, उपर तेरा आसण लाइंदा। पीर पैगम्बर होण अधीने, अदना रूप सर्ब जणाइंदा। लहिणा चुक्के मक्के मदीने, काअबा होर ना कोए बणाइंदा। तेरे घोड़े पावे ज़ीने, नीला नीली धारों पार वखाइंदा। करे खेल चेत महीने, महिमा आपणी आप समझाइंदा। पिछली करनी सब तों छीने, छीनणहारा वेस वटाइंदा। किसे दे चलणे ना कोई हीले, हुक्म आपणा हरि मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सीने उत्ते बहाइंदा। सीने चढ़ पै गई ठंड, सांतक सति जणाया। कर किरपा मेहरवान बख्शंद, तेरी ओट तकाया। पहलों कीता गुजरी चन्द, हुण

आपणा लाल बणाया। इक्को नाम दे कमंद, दो जहानां दयां हलाया। लख चुरासी तेरा गाए छन्द, मेरा ढोला ना कोए वडयाया। कूड़ी क्रिया भंनां दन्द, बद्दी दन्द ना कोए जणाया। तैनूं वेंहदयां जुग चौकड़ी गए लँघ, तैनूं तरस अजे ना आया। दर तेरे मंगी मंग, माछूवाड़ा सेज हंढाया। तूं खोल्ही अज्जे ना गंढ, क्यों सूम बण के आपणा वक्त लँघाया। मैं बच्चे दित्ते हेठा कंध, तलवार नाल तेरी भेंट चढ़ाया। फिर वेख्या तेरा रंग, रंग इक्को नज़री आया। मैं सुत्ता तेरी सेज पलँघ, गलवकड़ी सच्ची पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाया। तेरे अग्गे झुकया सीस, पुरख अकाल बेपरवाहया। तेरा पीसण ल्या पीस, बण सेवक सेव कमाया। तेरी साची सिख्या लई सीख, तुध बिन ओट ना कोए तकाया। खाली झोली पा दे भीख, बच्चा दर ते मंगण आया। मेरी कोई ना करे रीस, तेरी सिर ते छत्र छाया। मैं दस्स के आया अन्तिम लेखा चुकाउणा बीस इकीस, सच संदेसा इक अल्हाया। हुण ना बदल मेरी तरीक, तरीका तेरे हथ्थ रखाया। नित नवित्त तेरी उडीक, नेत्र नैण ध्यान लगाया। मेरी आसा पूरी करदे ठीक, ठोकर होर ना कोए जणाया। तेरा प्याला पीता ला के झीक, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाया। तेरे नाल लग्गी प्रीत, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। जे कोई पिच्छे विथ रहि गई झीत, हुण आपणी हथ्थीं बंद दे कराया। जे ना मन्नें बच्चे दी पूरी करें ना रीझ, तैनूं प्यो ना किसे बणाया। तूं सचखण्ड बैठा रिहों अन्दर दहिलीज, लोकमात लुक लुक वक्त लँघाया। तेरा बणया ना कोए शरीक शरकत सब दे विच भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाया। दर तेरे आस रखी निक्की, वड्डी मंग ना कोए मंगाईआ। चार वरन बणौणी इक्को सिक्खी, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहिण कोए ना पाईआ। सब दे उत्ते चादर देणी नाम चिट्टी, तेग बहादर गया समझाईआ। आपणे नाम दी दे दे चिठी, लोकमात जावां चाईं चाईंआ। तेरी सेवा पिच्छे बथेरी कीती, की तूं सेवा दा भुक्खां तेरी भुक्ख ना कोए मिटाईआ। दुःख देणा तेरी बणी रीती, सुख तेरा हथ्थ किसे ना आईआ। किसे वाड़ छडया विच मसीती, किसे मन्दिरां विच बहाईआ। किसे बणाया जगत शरीकी, किसे मज़्बां नाल टकराईआ। विच रखी निक्की जिही गीटी, जिस नूं पार ना कोए कराईआ। पिछली जे सुणावां कहाणी बीती, तैथों दुःख झल्लया ना जाईआ। तेरे पिच्छे अर्जण चढ़या विच अंगीठी, आपणा आप जलाईआ। तूं सारीआं गल्लां कीतीआं अनडीठी, अनडिठी आपणी कार कमाईआ। मैं तेरे कोलों सिख्या सिक्खी, जो गोदी विच बहा दित्ता समझाईआ। बिन पुरख अकाल सृष्ट सबाई फिकी, साचा रस ना कोए जणाईआ। बिन गोबिन्द कोई ना पाए इकी, दूइउँ एका रूप बणाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार तेरे बणदे रहे हिती, तूं आपणा भेव ना किसे जणाईआ।

तेरी कहाणी वेद पुराण सब ने लिखी, अन्त नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे दे साचा वर, तुध बिन ख़ैर कोए ना पाईआ। पा दे ख़ैर ख़ैरख़ाह, ख़ाह मखाह क्यों मुख भुआया। हुण नहीं लग्गण देणा तेरा दाअ, पिछला चेता मोहे आया। हुण नहीं खाणा तेरा वसाह, अछल अछल्ल तेरी वडयाया। जिन्ना चिर बणें ना नाल मलाह, तेरा पल्ला सके ना कोए छडाया। आपणी दे दे सच सलाह, सुलाकुल तेरी सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंगण आया। मंगण आया मंगता, दे प्रभू जजमान। एह मंगता ना भुक्खा ना नंगता, तेरा पुत्त जवान। तेरे दर दरवाज़े आपे लँघदा, कुण्डा खोल सचखण्ड मकान। नेड़े आ के मूल ना संगदा, उछले कुदे हो के नौजवान। तेरा प्रेम आपणे रंग रंगदा, तूं हो मेहरवान। तेरा वेला जाए लँघदा, दरोही फिरी दो जहान। हुण वेला वेख पौण ठंड दा, अग्ग लग्गी ज़िमीं असमान। क्यों नहीं टुट्टी सब दी गंढुदा, राम रहीम तूं रहमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा झुले सच निशान। मंगण आया ना बणे ग़रीब, हक़ आपणा मंग मंगाईआ। पिता पुत नूं कर वसीअत, हक़ आपणा हथ्थ फड़ाईआ। मैं तेरी मन्नां सच नसीहत, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरा मेरा नाता इक असलीअत, असल तेरा नाउँ नजरी आईआ। हुण छड्ड दे पिछली ख़सलीअत, गुर अवतार पीर पैगम्बर जो पिच्छे रिहों टकराईआ। बिन गोबिन्द तेरी अग्गे चले ना कोए वलदीअत, तेरा नाउँ ना कोए सुणाईआ। बेशक तेरी सचखण्ड विच हैसीअत, लोकमात तेरा गुण कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंगण आईआ। मेरा दे दे आपे हक़, अदल आदल इक अख्वाया। जे कोई पिछला प्या शक़, मैनूं मूँह ते दे समझाया। तुध बिन मैनूं कोई ना सके डक्क, दो जहान चरणां हेठां दयां दबाया। औह वेख पीर पैगम्बर दूर दुराडे तेरा चरण सरोवर रहे लक्क, बूँद बूँद मुख चुआया। चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा राह रहे तक्क, तकवा तेरे उत्ते रखाया। असीं वी तेरे कोलों गए अक्क, तूं आपणा भेव ना किसे जणाया। पिच्छे मंगते बण बण मंगदे गए थक्क, सानूं मंगणा अज्जे ना आया। हुण वी मैं इरादा कीता पक्क, पक्की इक्को इक पकाया। जिन्ना चिर ना खोलें आपणा हट्ट, ओनां चिर मेरी जिद ना सके कोए छुडाया। जां अग्गों कह मैं नहीं पुरख समरथ, मैनूं खाली हथ्थ दे वखाया। जां सचखण्ड दुआर दे छड्ड, क्यों बैठा आसण लाया। नहीं ते साडे नालों हो जा अड्ड, आपणा नाता लै तुड़ाया। फेर तेरा पुत्त निशाना देवे गड्ड, ना कोई सके आदि अन्त हिलाया। बौहड़ी तेरे इन्साफ़ दी हो गई हद्द, तैनूं रैहम ज़रा ना आया। असीं तेरे कोलों सिख्या चज्ज, तूं चंगी तरा समझाया। लोकमात

धरती उत्ते वखाउदे रहे तेरा हज्ज, इट्टां पत्थरां मथ्थे टिकाया। कलम शाही काग़ज़ां उत्ते लाउदा रिहों अज्ज पज्ज, आपणी सिफ्त कर सालाहया। हुण तेरी छाती उत्ते चढ़या भज्ज, गोबिन्द आपणा बल रखाया। नहीं ते मेरा पर्दा कज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, बण दर्दी दर्द वंडाया। छाती उत्ते चढ़ के लाल, हरि लालन रिहा जणाईआ। साहिब तेरा नूर बेमिसाल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तेरा सच सच जमाल, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। सदा सदा सद चलीं नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। पहलों नाता जुड़या महाकाल, चण्ड प्रचण्ड मात चमकाईआ। हुण साहिब हो दयाल, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दूजे दर ना मंगण जाईआ। दूजा दर ना दिसे को, नज़र कोए ना आइंदा। गोबिन्द तेरे जोगा गया हो, होका हक़ सुणांवणा। मैं कर के ज़िद तेरे कोलों आपणी वस्त लैणी खोह, खुलम खुल्ला हाल जणांवणा। मैं बाल बण के पैणा रो, तूं पिता तरले कढु फेर मनावणा। तूं सुण लै मेरी सो, सोहबत आपणी इक समझावणा। मैं दूर दुराडे हो, अग्गे नठ्ठ नठ्ठ फेर वखावणा। जे भज्ज के लवें छोह, मैं हस्स के मुख मुसकरावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड तेरा रंग सुहावणा। जे ना देवें आपणे आप, आपणी ज़िद रखाईआ। मैं सृष्ट सबाई कहिणा कोई ना करयो एहदा पाठ, जीव जंत दयां भुलाईआ। मैं चौदां लोक बंद करावां हाट, चौदां तबक ना तेरी शनवाईआ। तेरी नज़र ना आए ज़ात, सचखण्ड बैठा रोवें मारें धाहीआ। फेर आपे करें मेरी तलाश, लोआँ पुरीआँ खोज खोजाईआ। बिन पुत्रां पिता होए उदास, सांतक सति ना कोए कराईआ। साहिब तेरी शब्द साची रास, शब्द गोबिन्द नाउँ जणाईआ। जिन्ना चिर तेरे ना वसे पास, तेरे गीत कोए ना गाईआ। मुढ कम्म ना आवे बिनां शाख़, पत डाली फुल ना कोए लगाईआ। फेर जे मेरे वल लवें झाक, मैं पिच्छा लवां बदलाईआ। जिन्हां चिर ना कहें गोबिन्द मेरा साक, नाता जुड़या इक्को थाईंआ। पिच्छे फेर ना पुछें वात, मगर नठ्ठें ना वाहो दाहीआ। ओन्हां चिर ना आवां तेरे पास, रुस्स रुस्स आपणा वक्त लँघाईआ। फेर साहिब तूं मैनूं कहिणा पुत्त मेरा बदमास, बिन मेरे हुक्मों लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दे दे आपणा वर, निमणी ठिमणी रहिण कोए ना पाईआ। निमणी ठिमणी ना कोई डर, भय अवर ना कोए जणाइंदा। मैं छन्नयां तेरे घर, हक़ इक्को नज़री आइंदा। जिस वेले चाहवां लवां फड़, तूं मेरा पिता अख्वाइंदा। क्यों, ना जम्में ना जाएं मर, नाल मेरा जन्म मरन कटाइंदा। क्यों सुत्ता मार के दड़, नधड़क आप उठाइंदा। मैं हुण अग्गे जाणा अड़, अड़िका इक्को इक वखाइंदा। क्यों सब तों पहलों शब्द दा घाड़न ल्या घड़, घड़

के थिर घर आप बहाइंदा। फिर दित्ता सच्चा वर, विष्न ब्रह्मा शिव उपजाइंदा। फेर वसाया मेरा घर, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात घल्ल, बोध अगाध ज्ञान दृढ़ाइंदा। तूं बैठा रिहों निहचल धाम अटल, आपणा मुख छुपाइंदा। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वाहया हल्ल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम पंज तत्त गोबिन्द नाम रख के अन्तिम तेरे विच गया रल, आपणी ज़ात ना कोए वखाइंदा। की हुण वी नहीं देंदा फल, तेरे घर घाटा नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अकाल कहे उठ मेरे नाल चल, साचा राह इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, अगली दस्से फेर गल्ल, गुसा गिला ना कोए रखाइंदा।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे गृह गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ❇

बच्चे नाल सोहे बाप, पिता पूत वड्याईआ। बच्चे देवे आपणा जाप, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। सुत शब्द वेख आपणा आप, निरगुण निरगुण रिहा जणाईआ। आपे मंत्र आपे पाठ, इष्ट देव आप धराईआ। आपे सज्जण आपे साक, आपणा संग आप रखाईआ। आपे तीर्थ आपे ताट, तट किनारा आप सुहाईआ। आपे लोक परलोक खोल्हे हाट, वसणहार आप हो जाईआ। आपे बोध अगाध जणाए गाथ, निष्अक्खर करे आप पढ़ाईआ। आप चलावणहारा साचा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपे होए पुरख समराथ, समरथ आपणा नाउँ जणाईआ। आपे सुत दुलारा कर प्रगट, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। आपे खोल्हणहारा थिर घर सच्चा हट्ट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिता पूत वेस वटाईआ। आपे पिता आपे माता, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे खेले खेल तमाशा, खेलणहारा इक रघुराईआ। आपे देवे साची दाता, दाता दानी दया कमाईआ। आपे जननी जन जणे काका, बाल बाला गोद उठाईआ। आप बंधाए आपणा नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आपे सचखण्ड निवासी पुछे वाता, थिर घर मेहर नज़र टिकाईआ। आपे होए पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणा राह जणाईआ। आपे निरगुण अन्दर निरगुण करे वासा, निरवैर आपणा रंग वटाईआ। आपे आपणी पूरी करे आसा, आसा आसा विच समाईआ। आप उपाए आपणा आपा, सुत दुलारा इक उपाईआ। आप वखाए आपणा डूँग्घा खाता, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिता पूत सोभा पाईआ। पिता पूत सोभनीक, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। दूसर ना कोए दिसे शरीक, लाशरीक डेरा लाइंदा।

ना कोई अन्धेरा ना तारीक, नूरो नूर डगमगाइंदा। आपणा नाम जणाए ठीक, सच निशाना इक लगाइंदा। चरण बंधाए कँवल प्रीत, प्रीतीवान दया कमाइंदा। थिर घर वखाए अतीत, त्रैगुण रंग ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल छोटे बाले, सुत दुलारे आप जणाईआ। करे खेल पुरख अकाले, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। तेरी प्रीती निभे नाले, नाता साहिब आप जुड़ाईआ। सचखण्ड तेरी धर्मसाले, थिर घर तेरा मन्दिर सुहाईआ। मेल मिलाया हरि गोपाले, गोबिन्द वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच करे जणाईआ। सच जणाई लैणी जाण, जानणहार जणाइंदा। थिर घर तेरा इक मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। सति धर्म दा सति निशान, सति सतिवादी आप वखाइंदा। ना ज़िमीं ना कोए असमान, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। इक इकल्ला नौजवान, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। शाहो भूप बण मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। देवणहार अगम्मी दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। नज़री आए इक अकाल, पुरख रूप ना कोए वटाइंदा। गोबिन्द इक्को सच्चा लाल, हरि शब्दी रंग रंगाइंदा। आदि जुगादि करां प्रितपाल, प्रितपालक आप जणाइंदा। जुगो जुगन्तर चलां नाल, सदा सुहेला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। निक्का बच्चा छोटा बाला प्या हस्स, हँस मुख सालाहीआ । तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को घर होया इकट्ठ, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, हउँ सेवक सेव कमाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान इक्को नज़री आईआ। तेरा नाउँ मेरी रास, तेरा चरण हट्ट वड्याईआ। मैं रहिवां तेरा दास, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तूं पूरी करनी आस, बेअन्त बेपरवाहीआ। कर किरपा देणी दात, देंदयां तोट रहे ना राईआ । तेरी मेरी इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वखाईआ। मैं वसां तेरे साथ, तेरा संग ना कोए छुडाईआ। इक्को साची दे गाथ, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। निरगुण पिता निरगुण मात, निरगुण पुत्त मंग मंगाईआ। बण विचोला पुरख समराथ, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। इक्को पत्तण इक्को घाट, एका डेरा रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्के बच्चे रिहा जणाईआ। निक्के बच्चे जाणा जाग, सुत दुलारे हरि उठाइंदा। चरण प्रीती इक वैराग, बिरहों चोट लगाइंदा। दीपक जोत जगे चिराग़, नूर नुराना डगमगाइंदा। थिर घर तेरा खोल्ह्या ताक, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। साहिब साहिब पकड़े वांग, सतिगुर सतिगुर वेख वखाइंदा। सरन सरनाई जाणा लाग, लागत मूल ना कोए लगाइंदा। सुत अगम्मी सुण आवाज़, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। पारब्रह्म दा सच समाज, साचा खेड़ा इक वसाइंदा। शब्द दुलारे

तेरी रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सति सतिवादी तेरा रचे काज, करनी करता आप कमाइंदा। वेखणहार गुरू महाराज, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। जिस साजण ल्या साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। साचा बच्चा अग्गे हो, हो हो खुशी मनाईआ। नालो हस्से नाले पए रो, रोवण हासा इक्को रंग वखाईआ। कर किरपा प्रभ आपणा अमृत चो, चरण चरण नाल रगढ़ाईआ। फड़ उंगली उंगली नाल दे छोह, छोहरा बांका मंग मंगाईआ। मैं तेरे जोगा जावां हो, जुगत इक्को इक जणाईआ। तेरा नाम लवां ढोआ ढो, दूजी वस्त ना मोहे भाईआ। जे ना देवें रुस्स के लवां खोह, आपणी बाली बुध वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साचे बाले सच खिलाउणा, हरि तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा रोणा मोहे भाउणा, भय रूप ना कोए जणाइंदा। मेरी छाती चढ़ के सौणा, पलँघ रंगीला इक वछाइंदा। उत्ते चढ़ के सोहँ ढोला गाउणा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। मन इच्छया फल इक्को पाउणा, आदि जुगादि मुक ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। सुत दुलारा कहे मैं रुसांगा। रुस्स रुस्स साहिब तैथों पुछांगा। तेरी डूँग्घी बुक्कल अन्दर लुकांगा। चढ़ कंधाड़े शेर वांगू बुक्कांगा। योद्धा सूरबीर हो के उठांगा। बापू तेरा ख़ज़ाना अन्दर वड़ के लुट्टांगा। फिर तेरी करनी करन वासते जुटांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आ के पुछांगा। श्री भगवान दे प्यार, खुशी खुशी जणाईआ। उठ सुत सुत दुलार, प्रभ दूल्हा दए बणाईआ। तेरे सीस करे श्रृंगार, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। आपणी हथ्थीं बन्न्ह दस्तार, कल्गी तोड़ा लए लगाईआ। जोती जोड़ा अगम्म अपार, पन्ध वछोड़ा दए गंवाईआ। इक्को होड़ा होए दरकार, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। साचा घोड़ा ख़बरदार, अगम्म अगम्मड़ा आप बणाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए वपार, दमां दम ना कोए समाईआ। मिट्ठा कौड़ा ना कोई खार, रस इक्को इक भराईआ। लम्मा चौड़ा ना कोए दुआर, अगम्म अथाह दए समझाईआ। साचा पौड़ा कर तैयार, अन्दर बाहर दए लगाईआ। थिर घर नाल मिलाए सचखण्ड दुआर, आप आपणा बन्धन पाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, थिर घर शब्दी सुत बहाईआ। साजण सच करे प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे वस्त इक अपार, अगोचर इक्को इक वरताईआ। सोचयां सोच ना आए विचार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सुत अनादी लए उठाल, ब्रह्म ब्रह्मादी दए समझाईआ। गोबिन्द इक्को सच्चा लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दी साची कार, आपणे हथ्थ रखे निरँकार, दूसर भेव ना कोए जणाईआ।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे गृह गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ❇

पुरख अकाल तेरा होया संजोगा, विजोग नज़र कोए ना आइंदा। गोबिन्द बदलया पिछला चोगा, चोली तन ना कोए हंढ्ढाइंदा। अन्तिम मिल्या सच्चा मौका, घर साचे सोभा पाइंदा। हुण हो गया मंगण जोगा, मंग आपणी आप मंगाइंदा। मैं दे के आया होका, लोकमात मात समझाइंदा। हरि जू अग्गे मार्ग लाउणा सौखा, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। किसे नाल नहीं करना धोखा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। इक्को पढ़ना हरि के नाउँ दा पोथा, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। गुरसिख कोई रहि ना जाए थोथा, होछी मति सर्ब गवाइंदा। सम्बल तेरा इक्को कोठा, जिस घर गोबिन्द डेरा लाइंदा। अग्गे पिच्छे दा रिहा ना कोए रोसा, इक्को रंग रंग चढ़ाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साचे पिता कर प्यार पुत्त दा लै ला बोसा, प्रेम प्रेम नाल टकराइंदा। इक वेरां खोल्ह आपणयां होटां, तेरा अग्गे मंग मंगाइंदा। तेरी झल्ली ना जाए चोटा, बिरहों रोग सताइंदा। तेरे घर भण्डार अतोटा, क्यों ना साहिब तूं वरताइंदा। मैं तेरयां भगतां दस्स के आया हरि का नाम लओ लोटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाया। मंगण वाला होया जवान, जोबन आपणा रिहा वखाईआ। नाता तोड़ जगत जहान, तेरा संग रखाईआ। बाला बच्चा नहीं हुण नादान, समझ समझ नाल बदलाईआ। तेरा सुण सुण सच ज्ञान, ज्ञान ज्ञान मिली चतुराईआ। तेरा कर कर हक़ ध्यान, ध्यान ध्यान ल्या उठाईआ। प्रभ दे दे इक्को माण, निमाण करे अरज़ोईआ। तेरा सच्चा सच बबाण, जो चढ़या उतर कोए ना पाईआ। तेरा हक़ हक़ मकान, मुहब्बत इक्को नज़री आईआ। तूं लाशरीक मेहरवान, शायर तेरी सिफ्त सालाहीआ। बण रफ़ीक दे दान, तौफ़ीक तोहे इक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मंगण वाला मंग मंगाईआ। जो मंगें सो देवां दात, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। तेरे अन्दर वड़ के खोल्हां ताक, आपणा मन्दिर दयां वखाईआ। पूरा करां भविख्त वाक्, जो लेखा लिख्त लिख्त जणाईआ। एथे ओथे पर्दा देवां ढाक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा तन मिटाया ख़ाक, गोबिन्द शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच समझाईआ। जो मंगें सो झोली पां, पा पा खुशी मनाइंदा। गले लगावां फड़ फड़ बांह, फड़ फड़ गले आप लगाइंदा। सदा सदा सद देवां ठंडी छाँ, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग तक्कां राह, कवण वेला मेरा बच्चा मेरी आस रखाइंदा। कर किरपा जणावां इक्को नाँ, जिस दी वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बणत आप बणाइंदा। साचा नाम लै जा सो,

सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हँ ब्रह्म रिहा रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जा के दुरमति मैल धो, दोहां जोड़ा दे जुड़ाईआ। तुध बिन अवर ना जाणे को, कूके सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त इक इक दरसाईआ। वस्त लै जा सच सो, साहिब सच जणाया। हँ ब्रह्म आपे हो, होका इक सुणाया। सो पुरख निरँजण सो नाल गया छोह, हँ आपणे विच दबाया। साचा बीज ल्या बो, निरगुण निरगुण हल चलाया। पिछली वस्तू सब तों लई खोह, खाली हथ्थ फिराया। सतिजुग साचा नाम चले सोहँ सो, गोबिन्द डंका तेरे हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाया। तेरा नाउँ वस्त सच, सच साचे मोहे भाईआ। मार्ग आपणा देणा दस्स, कवण बिध करां कुड़माईआ। श्री भगवान प्या हस्स, हस्स हस्स रिहा जणाईआ। भगतां अन्दर जा के वस, भगवन कुण्डा लाहीआ। पन्ध मुकाउणा नठ्ठ नठ्ठ, बण पांधी पांधी राहीआ। तेरे नाल चले पुरख समरथ, पुरख अकाल जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। शब्द सुत कहे मैं जावांगा। तेरा लख लख शुकर मनावांगा। निउँ निउँ सजदा सीस झुकावांगा। दोए जोड़ कर बन्दना, तेरा नाम ध्यावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड तजावांगा। लोआँ पुरीआँ चरणां हेठ रखावांगा। लख चुरासी नाता तोड़ तुड़ावांगा। तेरे भगतां अन्दर वड़ वड़, तेरा ढोला गावांगा। साचा मन्दिर इक वखावांगा। नूरो नूर डगमगावांगा। पिछले कीते कसूर सर्ब बख्शावांगा। पुत्रां मांवां नाल मिलावांगा। इक्को नाम जपावांगा। सोहँ ढोला सुणावांगा। जुग विछड़े मेल मिलावांगा। कागों हँस बणावांगा। साची चोग चुगावांगा। फड़ बांहों गले लगावांगा। दर तेरे ते फड़ के ल्यावांगा। थिर घर दवारा खुल्हावांगा। सचखण्ड आप बहावांगा। तेरा दरस आप करावांगा। पुरख अकाल तैनूं मिलावांगा। फेर गोबिन्द गुर अख्वावांगा। आपणी कल्गी तेरी भेंट चढ़ावांगा। तेरा ताज वेख खुशी मनावांगा। तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग अलावांगा। दो जहानां बण जवाना, तेरा हुक्म सुणावांगा। जो ना मन्ने अन्तिम भन्न वखावांगा। ख़ाकी ख़ाक रलावांगा। शाह सुल्तानां तख्त गंवावांगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। शौह दरयाए रुढ़ावांगा। उच्चे टिल्ले मन्दिर ढावांगा। ग़रीब निमाणे गले लगावांगा। चार वरन इक्को रंग चढ़ावांगा। अमृत जाम प्यावांगा। सुक्के हरे करावांगा। जुग विछड़े मेल मिलावांगा। नाता जोड़ भैण भ्रावां दा। हरिसंगत रूप बणावांगा। फिर दर ते खुशी मनावांगा। आ के दर्शन पावांगा। पुरख अकाल तेरा जस गावांगा। गुरसिख तेरी चरणी पावांगा। अग्गे हो हो तिलक लगावांगा। जे तूं सुत्ता मैं उठावांगा। जे रुसें ते फेर मनावांगा। जे पुछें ते हाल सुणावांगा। तेरे उत्तों हो कुरबान, आपणा आप मिटावांगा। बच्चे नीहां हेठ रखावांगा। उत्ते धर्म निशान झुलावांगा। भगत दवारा इक सुहावांगा। सतिजुग

दा रंग वखावांगा। उत्ते बहि के आसण लावांगा। राज राजाना शाह सुल्तानां चरणी ढावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को हुक्म मनावांगा। सत्तां दीपां राहे पावांगा। सत्त रंग निशान झुलावांगा। सम्बल धाम सुहावांगा। गोबिन्द नाउँ धरावांगा। पुरख अकाल मनावांगा। अटल धाम बणावांगा। चार जुग रुशनावांगा। छत्ती जुग सुणावांगा। कोटन जुग मनावांगा। जे सद्दें फिर घर आवांगा। आ के फेर मातलोक विच जावांगा। जो विछड़े मेल मिलावांगा। पहली चेत्र चौथी मंज़ल चढ़ के तेरा हुक्म मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा घर, दूजी आस ना कोए रखावांगा।

❋ २२ माघ २०१६ बिक्रमी जागीर सिंघ दे गृह गग्गो बूआ जिला अमृतसर ❋

पुरख अकाल तेरा सुत अख्वावांगा। अबिनाशी अचुत तेरा राह चलावांगा। निरगुण धारों उठ, उठ उठ सेव कमावांगा। गुरसिखां उपर तुठ, आपणे रंग रंगावांगा। बंस सरबंस लवां पुछ, विछड़े जोड़ जुड़ावांगा। आपणे हथ्थ ना रखां कुछ, तेरे भगतां सर्ब कुछ फड़ावांगा। तैथों नहीं कुछ लुक, पर्दा उहला आप उठावांगा। कलिजुग पैंडा जाए मुक्क, सतिजुग साचा राह चलावांगा। गुरमुखां नेत्रां नाल वखावांगा। गीत गोबिन्द सोहँ ढोला सच सुणावांगा। इष्ट गुरदेव आत्म राह दरसावांगा। जगत विचोला बण के आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाम ध्यावांगा। तेरा नाम ध्यावांगा। भगत भगवान हरी गुण गावांगा। साची रीत चलावांगा। मन्दिर मसीत ढावांगा। शिवदुआले पन्ध मुकावांगा। तीर्थ तटां ख़ाक मिलावांगा। जन भगतां आप उठावांगा। अन्दर वड़ के हाल सुणावांगा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ावांगा। आत्म जोती जोत जगावांगा। सुरती सोती आप उठावांगा। शब्द अनादी नाद वजावांगा। बोध अगाधी भेव खुल्हावांगा। विस्मादी विस्माद हो जावांगा। तेरे नाल शादी सब दी आप करावांगा। कन्त कन्तूहल इक वखावांगा। साची सेजा फूल बरसावांगा। पीआ प्रीतम इक मनावांगा। गलवकड़ी घुट के पावांगा। गोबिन्द फिर आपणा नाम दसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरयां सिखां तेरे नाल मिलावांगा। तेरे नाल मिलाऊँगा। साची सेव कमाऊँगा। घर घर फेरा पाऊँगा । निरगुण सरगुण रूप वटाऊँगा। बिन तेरयां भगतां नज़र किसे ना आऊँगा। उच्चे टिल्ले पर्बत चोटीआं चरणां हेठ रखाऊँगा। जल थल अस्गाह डूँघी कन्दर वेख वखाऊँगा। तेरयां सन्तां सुत्तया आप उठाऊँगा। जुग जन्म दयां रुठयां फड़ मनाऊँगा। ओहले लुक्या गुठयां फड़ हलाऊँगा। जिन्हां खादा कुठया, सब दा सीस कटाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा डंका नाम वजाऊँगा। तेरा डंका नाम वजावांगा।

दो जहान सुणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। सब दे सीस मुंडावांगा। इक्को हुक्म जणावांगा। निउँ निउँ चरणी लावांगा। तेई अवतार समझावांगा। भगत अठारां उठावांगा। ईसा मूसा मुहम्मद पन्ध मुकावांगा। चौदां तबकां फोल फुलावांगा। साचा सबक इक सुणावांगा। कलिजुग दा पत्रा आप उलटावांगा। सतिजुग साचा राह चलावांगा। सत्तरां आप जणावांगा । बहत्तरां नाल जोड़ जुड़ावांगा। चुहत्तरां अक्ख खुल्हावांगा। पंजां पंजां राह वखावांगा। पंच प्रधान आप जणावांगा। साचे दर बहावांगा। हुक्म इक रखावांगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां तेरा नाउँ सब दा राग जणावांगा। सिर तेरे सीस छत्र झुल्लदा वेख, आपणी खुशी मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा रहबर इक अख्वावांगा। तेरा रहबर नाम धराऊँगा। निरगुण हो के फेरा पाऊँगा। लख चुरासी जीव उठाऊँगा। गुरमुख सज्जण नाल मिलाऊँगा। मनमुख शौह दरयाए रुढ़ाऊँगा। नाम खण्डा इक चमकऊँगा । दोहरी धार आप रखाऊँगा। जिध्धर वेखां ओधर तेरी ओट रखाऊँगा। ना कुछ पीऊँ ना कुछ खाऊँगा। बिन खादयां पीत्यां तेरी सेव कमाऊँगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे तेरी खुशी रखाऊँगा।

✻ २२ माघ २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ✻

सच मृदंग वजावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड हलावांगा। इक्को रंग वखावांगा। अस्व तंग कसावांगा। ज़ीन पाखर पावांगा। शाह अस्वार वखावांगा। वागां हथ्थ उठावांगा। तीर तफ़ंग चलावांगा। तलवार कमच चमकावांगा। चण्ड प्रचण्ड रूप वटावांगा। खण्ड खण्ड कर वखावांगा । दे दंड सर्ब समझावांगा। भेख पखण्ड मुकावांगा। सूरा सरबँग अख्वावांगा। साचा अनन्द जणावांगा। परमानंद समावांगा। टुट्टी गंढु वखावांगा। शब्दी बाज़ लड़ावांगा। लख चुरासी चिड़ियाँ वांग तुड़ावांगा। गोबिन्द नाम कहावांगा। पुरख अकाल तेरा ढोला इक्को गावांगा। तेरा ढोला गीत सुणाऊँगा। साची रीत चलाऊँगा। लख चुरासी परख नीत, गुरमुख बाहर कढ्ढाऊँगा। तेरा नाउँ सति अतीत, त्रैभवण धनी इक जणाऊँगा। एका रंग रंग हस्त कीट, ऊँच नीचां पन्ध मुकाऊँगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग चाढ़ मजीठ, ज़ात पात मेट मिटाऊँगा। इक्को नज़री आए ठाकर दवारा मन्दिर मसीत, गुरुदुआर तेरा घर बणाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाऊँगा। दर तेरे अलख जगावांगा। जो मंगया सो फल पावांगा। दो जहानां नट्ठ नट्ठ जावांगा। लोकमात वेख वखावांगा । सच सलोक सुणावांगा। जो तेरा दर्शन रहे लोच, तिन्हां नेत्र नैण खुल्हावांगा। जिस दी करदे रहे सोच,

बिन सोचयां आण मिलावांगा। कलिजुग अन्त कोई मारया ना जाए निर्दोष, दोषीआं दंड लगावांगा। माया ममता अन्दर जो होए मदहोश, सब दी मति गंवावांगा। पुठी खल्ल लुहावां पोश, अग्नी विच सड़ावांगा। चौदां लोक चौदां तबक देवां झोक, आपणा बल जणावांगा। जो तेरा गायण सलोक, तिन्हां आपणी गोद उठावागा। आत्म परमात्म मेल मिलावांगा। पुरख अकाल वखावांगा। तेरी चरणी पावांगा। तेरे डिठयां रोग मिटावांगा। जगत भिटयां सुच्चे आप करावांगा। वरनां बरनां राह चुकावांगा। अमृत जाम प्याला प्यावांगा। गुर गोबिन्द फेर अख्वावांगा। दो जहानां भज्जांगा। सेवा कर कर मूल ना रज्जांगा। भगत दवारे बहि बहि सजांगा। सति सरूप हो के गज्जांगा। ग़रीब निमाणयां पर्दा कज्जांगा। ताल नगारे हो के वज्जांगा। लख चुरासी मूँह दे भार सट्टांगा। योद्धा सूरबीर हो के डटांगा। कलिजुग जड़ पट्टांगा। डूँग्घे खाते सट्टागां। डर के किसे कोलों ना नठ्ठांगा। इक्को तेरी ओट रखांगा। सृष्ट सबाई झोक, तेरे खाते घत्तांगा। जो गाए गोबिन्द सलोक, सो नर नारी मात रखांगा। बिन मंगयां देवां मोख, मुक्ती चरणां हेठां झसांगा। घर घर जावां अन्तिम पहुंच, आउँदा जांदा मूल ना संगांगा। तेरे नाम दी इक्को रखां धौंस, सिर सिर हुक्म मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा बल, तेरे हुक्मे अन्दर वसांगा।

६३०
१३

❋ २२ माघ २०१६ बिक्रमी गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ❋

सूरबीर हो के नठ्ठांगा। दो जहानां डटांगा। पिच्छे मूल ना हटांगा। सृष्ट सबाई भखांगा। हुण वेला गया भट्टां दा। राग इक्को चले जट्टां दा। नाता चुके कूड़ीआं सट्टां दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी ओट इक्को तक्कांगा। तेरी ओट इक रखावांगा। लख चुरासी फोल फुलावांगा। गुरमुख सज्जण आप जगावांगा। फड़ बांहों मेल मिलावांगा। तेरे दर बहावांगा। भगत दुआर वडयावांगा। सच सिँघासण इक सुहावांगा। तेरी लई थाँ बणावांगा। आपणा मकान ढावांगा। दर दरबान अख्वावांगा। शाह सुल्ताना तेरा दर्शन पा पा खुशी मनावांगा। निहकलंक तेरा नाउँ वडयावांगा। बण गोबिन्द तेरी चरणी पै पै शुकर मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा सिँघासण चौथी छत्ते डाह के, शौंकां नाल हंढ्ढावांगा।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह भुच्चर ज़िला अमृतसर ❇

सचखण्ड थान सुहावांगा। शहिनशाह इक्को इक अख्वावांगा। धुर फ़रमाना हुक्म जणावांगा। दो जहानां पकड़ उठावांगा। शब्दी डंका इक वजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव हलावांगा। त्रैगुण माया पर्दा ढावांगा। पंज तत्त तत्त वेख वखावांगा। गुर अवतार नाल रलावांगा। पीर पैगम्बर अक्ख वेख वखावांगा। लख चुरासी फोल फुलावांगा। चार कूटां दहि दिशा एका हुक्म मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म सुणावांगा। साची कार करांगा। साचे सन्त वरांगा। निरगुण सरगुण हो के फड़ांगा। आत्म परमात्म नाल लड़ांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल करांगा। साचा खेल कराउणा एं। निरगुण आपणा वेस वटाउणा एं। जोती जामा नाउँ धराउणा एं। एका डंका शब्द वजाउणा एं। कलिजुग लेखा आप मुकाउणा एं। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा राग सुणाउणा एं। कूड़ी क्रिया भेख पखण्ड, शौह दरया रुढ़ाउणा एं। राजा राणा तख्तों फड़ के लौहणा एं। ग़रीब निमाणयां सोयां लभ्भ उठाउणा एं। चार वरनां एका इष्ट वखाउणा एं। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नज़र ना आउणा एं। साचा ढोला सब ने गाउणा एं। सोहँ अक्खर इक पढ़ौणा एं। सतिजुग मार्ग लाउणा एं। भगत भगवान मिलाउणा एं। पारब्रह्म ब्रह्म वखाउणा एं। सुरती शब्दी रंग चढ़ाउणा एं। आत्म नाद वजाउणा एं। बोध अगाध इक पढ़ाउणा एं। पीर पैगम्बर कलमा इक सिखाउणा एं। नबी रसूलां मार्ग एका पाउणा एं। मुकामे हक़ आसण लाउणा एं। लाशरीक आप अख्वाउणा एं। जलवा नूर डगमगाउंणा एं। सच सिँघासण डेरा लाउणा एं। सचखण्ड साचा इक वसौंणा एं। थिर घर कुण्डा लौहणा एं। गुर अवतार दर बुलाउणा एं। पिछला लहिणा मूल चुकाउणा एं। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वेख वखाउणा एं। अञ्जील कुराना पन्ध मुकाउणा एं। चौदां तबकां डेरा ढाउणा एं। चौदां लोकां रंग वखाउणा एं। चौदां विद्या माण मिटाउणा एं। साचा मंत्र इक समझाउणा एं। गगन गगनंतर वेख वखाउणा एं। पृथ्मी आकाश फोल फुलाउणा एं। करोड़ तेतीसा नेत्र नीर रवाउणा एं। सुरप्त इन्द तख्तों लौहणा एं। शंकर तेरा पन्ध मुकाउणा एं। ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाउणा एं। विष्नूं साची सेव कमाउणा एं। पुरख अबिनाशी कम्म चलाउणा एं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक वडयाउणा एं। साचा मन्दिर इक वडयावांगा। सचखण्ड दुआर वसावांगा। सच तख्त आसण लावांगा। निरगुण नूर जोत जगावांगा। साचा डंका नाम वजावांगा। सो पुरख निरँजण नाम ध्यावांगा। हरि पुरख निरँजण रंग रंगावांगा। एकँकार निरँकार अख्वावांगा। आदि निरँजण जोती डगमगावांगा। श्री भगवान सच निशान झुलावांगा। अबिनाशी करता आपणा नाउँ

प्रगटावांगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लावांगा। पीर पैगम्बर जगावांगा। कलमा इक सिखावांगा। हक़ हकीकत फोल फुलावांगा। नेरन नेर नज़दीक नज़दीक नज़री आवांगा। सन्त सुहेले आप उठावांगा। फड़ कागों हँस बणावांगा। सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगावांगा। कलिजुग दी रेख मिटावांगा। सतिजुग साचा चन्द चढ़ावांगा। वरन बरन गंवावांगा। गोबिन्द सूरा इक उठावांगा। नाम खण्डा हथ्थ फड़ावांगा। लोआँ पुरीआँ आप फिरावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजावांगा। जेरज अंडां डेरा ढाहवांगा। उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहवांगा। सूरज चन्न नैण शरमावांगा। ज़िमीं असमानां खेह उडावांगा। जन भगतां अंग लगावांगा। नथाव्याँ थाँ दवावांगा। निमाणयां आप उठावांगा। हँकारीआं ख़ाक मिलावांगा। कलिजुग आप बदलावांगा। बीस बीसा हुक्म चलावांगा। दिल्ली तख्त चरण टिकावांगा। नौ खण्ड हलावांगा। सत्तां दीपां ख़ाक मिलावांगा। फिर आपणा नाम जपावांगा। निहकलंक नज़री आवांगा। साचा डंक सुणावांगा। राउ रंक समझावांगा। दुआर बंक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक दृढ़ावांगा। साचा हुक्म दृढ़ाऊँगा। जोती जामा वेस वटाऊँगा। कलि कल्की अवतार अख्वाऊँगा । सम्बल आपणा चरण टिकाऊँगा। उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाऊँगा। पूत सपूते पकड़ उठाऊँगा। ब्रह्मण गौड़े भेव चुकाऊँगा। मूसा ईसा चरणां हेठ रखाऊँगा। मुहम्मद पिछली अक्ख खुल्ह़ाऊँगा। अल्ला राणी दर दर भीख मंगाऊँगा। नानक गोबिन्द संग निभाऊँगा। सूरबीर हो के आपणा नाँ जपाऊँगा। अमृत जाम प्याऊँगा। चार वरनां एका घर वखाऊँगा। बरन अठारां मेट मिटाऊँगा। हरि मन्दिर चरण टिकाऊँगा। भगत भगवन्त आपणा बंक सुहाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाऊँगा। आपणा खेल वखावांगा। शाह सुल्तानां उठावांगा। इक्को हुक्म मनावांगा। पहली चेत्र राह चलावांगा। पिछला पन्ध मुकावांगा। अग्गे मार्ग पावांगा। घर घर हुक्म समझावांगा। सुत्तयां आप उठावांगा। रुसयां फेर मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमावांगा। आपणी कार करे करतार, करनहार अख्वाया। निरगुण निरगुण हो तैयार, निरवैर आपणा वेस वटाया। सचखण्ड दवारा खोल्ह़ कवाड़, थिर घर मन्दिर इक सुहाया। सुन अगम्मी कर कर पार, भेव अभेदा आप जणाया। शब्दी शब्द शब्द प्यार, सच वणजारा इक रखाया। सुत दुलारा करया ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाया। उठ बाले हो तैयार, हरि गोपाले राह जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची साचा राह चलाया। दरगाह साची परवरदिगार, इक्को हुक्म जणाईआ। आदि जुगादी सांझा यार, शिरकत विच कदे ना आईआ। कलमा हक़ दए सिखाल, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। करे खेल बेमिसाल, पिछली

मिसल ना कोए वखाईआ। जलवा नूर धर जलाल, जौहर आपणा दए कढ्ढाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाल, लाशरीक आप खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक अल्लाईआ। सच स्नेहुड़ा साचे थान, श्री भगवान आप जणाइंदा। गुर अवतार करो ध्यान, पीर पैगम्बर आप उठाइंदा। लोक परलोक देवणहार ज्ञान, सच सलोक इक जणाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा दान पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा लाहइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, बेमुकाम फेरा पाइंदा। चौथे जुग बदल देवे नज़ाम, धुर फ़रमाना इक समझाइंदा। आपणे हथ्थ हुक्म रखे हुकाम, हकीकत सब दी वेख वखाइंदा। सारे बरदे बणो गुलाम, सजदा सीस इक जणाइंदा। पुरख अबिनाशी सच अमाम, साचे तख्त सोभा पाइंदा। दामनगीर पकड़ो दाम, दस्त दस्त नाल मिलाइंदा। दूर दुराडा वखाए सच निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे महान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे विच जहान, सच सुच्च आप धराइंदा। चौदां तबक वेखे दुकान, ज़िमीं असमान फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। निरगुण नाउँ रखावांगा। इक्को पुरख अकाल मनावांगा। दूजा इष्ट ना कोए जणावांगा। सुरती सोई
६३३ सर्ब उठावांगा। मन वासना मैल धवावांगा। अमृत जाम प्यावांगा। निझर झिरना इक झिरावांगा। बजर कपाट खुल्लावांगा। ६३३
१३ आत्म ताकी लाहवांगा। बण साकी जाम प्यावांगा। बंदा ख़ाकी ख़ाक रलावांगा। आकी अन्त सर्ब मिटावांगा। गोबिन्द बाकी १३
मात चुकावांगा। सतिजुग साखी आप सुणावांगा। जन भगतां राखी, बहि बहि अन्दर कमावांगा। जो गुर अवतारां पहलों भाखी, सो अन्तिम पूरी कर वखावांगा। दो जहान इक्को खुल्ले हाटी, दूजा राह ना कोए जणावांगा। निरगुण जोत हरि प्रकाशी, कलिजुग अन्ध अन्धेर मुकावांगा। मेल मिलावा कमलापाती, नार कन्त घर वखावांगा। जन भगतां कर के उत्तम जाति, ब्रह्म आपणी अंस बणावांगा। गलों कट जम की फाँसी, सचखण्ड दुआर वखावांगा। सतिजुग कोई ना रहसी मदिरा मासी, गुरमुख इक्को रंग रंगावांगा। लहिणा देणा चुक्के पंडत कासी, काया मन्दिर इक वखावांगा। मुल्ला शेख़ मसायक होए उदासी, सफ़ा सब दी मात उठावांगा। इक्को गोबिन्द इक्को दासी, इक्को पुरख अकाल मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच सच जणावांगा। सच सच जणाऊँगा। पिछली कीती सब उलटाऊँगा। जो घड़या भन्न वखाऊँगा। लख चुरासी ख़ाक मिलाऊँगा। गुरमुख साचे आप उठाऊँगा। वड़ अन्दर राह जणाऊँगा। हरि मन्दिर इक बहाऊँगा। अनहद नादी नाद वजाऊँगा। बण स्वांगी स्वांग रचाऊँगा। बिन भगतां नज़र किसे ना आऊँगा। लख चुरासी मुख भवाऊँगा। जो करनी कर वखाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, साची लिख्त लेख लिखाऊँगा। साचा लेखा मस्तक लिखावांगा। गुर गोबिन्द नाल मिलावांगा। सिर कल्गी तोड़ा सजावांगा। दो जहानां राह जणावांगा। सतिजुग मार्ग पावांगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा पन्ध मुकावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव रुलावांगा। गुरमुख सच्चयां माण दिवावांगा। सोहँ ढोला इक सुणावांगा। बण विचोला सेव कमावांगा। कलिजुग होला इक वखावांगा। घर घर रौला पावांगा। वीह सदी नाल रलावांगा। चौधवीं सदी पन्ध मुकावांगा । बुड्ढी नढ्ढी दर दर आप फिरावांगा। अल्ला राणी नैण शरमावांगा। मुहम्मद मूँह दे भार सुटावांगा। ईसा शहिनशाह नाल रलावांगा। मूसा इक्को हुक्म मनावांगा। काला सूसा तन छुहावांगा। चीना रूसा मेल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी कर वखाएगा। सो आपणा नाम जपाएगा। हरि पुरख निरँजण फेरा पाएगा। एकँकार हुक्म सुणाएगा। आदि निरँजण नूर धराएगा। श्री भगवान सेव कमाएगा। अबिनाशी करता घर घर फेरा पाएगा। पारब्रह्म आपणी वंड वंडाएगा। ब्रह्म लेखा सर्ब चुकाएगा। सच दुआर इक वखाएगा। सचखण्ड दुआर सुहाएगा। श्री भगवान आसण लाएगा। निरगुण जोत नज़री आएगा। किला कोट ना कोए बणाएगा। नगारे चोट इक लगाएगा। लख चुरासी खोट बाहर कढ्ढाएगा। गुरमुख आहलणयों डिगे बोट उठाएगा। वरन गोत सर्ब मिटाएगा। पुरख अकाल निर्मल जोत नाल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाएगा। साचा मार्ग इक वखावांगा। इक्को रंग रंगावांगा। इक्को घर वसावांगा। इक्को मन्दिर बणावांगा। इक्को नाद वजावांगा। इक्को साक हंढ्ढावांगा। पाकी पाक अख्वावांगा। इक्को ताक खुल्ावांगा। इक्को लाट जगावांगा। इक्को हाट वकावांगा। इक्को ताट दृढ़ावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेस सुणावांगा। सच संदेस दस्सांगा। दो जहानां फिर फिर हस्सांगा । जन भगतां पिच्छे नस्सांगा। तीर निराला कसांगा। दो जहानां झसांगा। गुरमुखां अग्गे नीवां हो के ढठ्ठांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी अन्दर आपे हो के वसांगा। आपणे अन्दर वसेरा करांगा। ना किसे कोलों डरांगा। लख चुरासी जीव जंत फड़ांगा । जन भगतां काया मन्दिर सच महल्ले चढ़ांगा। इक्को अक्खर आखर आपणा पढ़ांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी हरि हरि करांगा। साची करनी करे पुरख समरथ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलाया रथ, नव नौ चार वेस वटाईआ। बोध अगाध महिमां दस्सदा रिहा अकथ, लिख लिख लेखा जगत जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा मति, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। गुर अवतारां पावणहारा वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पीर

पैगम्बरां वखावणहारा तट, पत्तण इक्को इक जणाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दी वेखे वाट बण पांधी फेरा पाईआ। जगत वासना नटुआ नाट, मन चंचल रिहा नचाईआ। किसे ना मिल्या कमलापात, सुंञीं सेज सर्ब लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा थक्के गाथ, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। नाता जुड़या कूड़ कुड़यारा सज्जण साक, सतिगुर चरण ना कोए सरनाईआ। जोत जगी ना मस्तक ललाट, घर घर दीपक रहे जगाईआ। जन्म मरन दी मुक्की ना किसे वाट, हवन धूप दीप घृत रहे पाईआ। कलिजुग होई अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। दीन मज़्हब बणे जमात, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान लै लै हाथ, हथ्थो हथ्थ रहे वखाईआ। सब नूं भुल्ली पारब्रह्म दी ज़ात, अजाति रूप सर्ब वटाईआ। जिस दी सिफ्त करदी रही कलम दवात, काग़ज़ शाही नाल मिलाईआ। जिस गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पंज तत्त चोले दिती वफ़ात, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। सो साहिब साख्यात, निरगुण आपणा वेस धराईआ। वेखणहारा कायनात, सृष्ट सबाई खोज खुजाईआ। मधुर प्याला आबे हयात, अमृत जाम रिहा वखाईआ। कलिजुग जीव पए सफ़ात, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। गुरमुख विरला सज्जण दास, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। चारों कुण्ट वेख प्रभास, पीर पैगम्बर देण दुहाईआ। कलमा नबी ना किसे साथ, हकीकत नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद पढ़े ना कोए आयत, शरीअत करे जगत लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हुक्म इक जणाईआ। साचा हुक्म सच संदेसा, श्री भगवान आप जणाइंदा। पकड़ उठाए नर नरेशा, नरायण आपणा वेस वटाइंदा। लेखा जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए भेव खुल्हाइंदा। निहकलंक कर के वेसा, वेस अवल्ला आप वखाइंदा। चार जुग दा वेखे पेशा, वरन बरन खोज खुजाइंदा। लहिणा देण चुकाए मुल्ला पीर शेख़ा, दस्तगीर दर्द वंडाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी प्रगट होवे इक्को नेता, निहकलंक नाउँ धराइंदा। गुर गोबिन्द करे साचा हेता, हितकारी फेरा पाइंदा। जिन्ह धन्ना तारया जट्ट फिरदा विच खेतां, सो खेल रिहा कराईआ। जिस नूं कलिजुग जीव करदे रहे झेडां, उंगलां वल उंगलां कर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम हो गया टेडा, सब नूं ख़ाक मिलाईआ। टेडा होया आप भगवान, नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी वेखे मार ध्यान, निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। सृष्ट सबाई होई शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर नज़री आइंदा। साबत दिसे ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाइंदा। मिल्या मेल ना नौजवान, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सुणावे मात, मता आपणे नाल पकाईआ। सारे बण जाओ इक जमात, दो जहानां करे पढ़ाईआ।

सर्ब जीआं दा पुरख अबिनाश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को पवण इक स्वास, इक्को अन्तर रिहा समाईआ। इक्को शब्द इक्को नाद, इक्को धुन रिहा वजाईआ । इक्को जोत इक प्रकाश, इक्को नूर रिहा दरसाईआ। इक्को सेवक इक्को दास, इक्को सेवा सच कमाईआ। इक्को शहिनशाह शाहो शाबाश, साचे तख्त सोभा पाईआ। इक्को करे पूरी आस, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। इक्को लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। इक्को निरगुण सरगुण देवे साथ, जुग जुग संग निभाईआ। इक्को दूर दुराडी मेटे वाट, जन्म मरन पन्ध मुकाईआ। इक्को देवणहारा दात, सतिगुर दाता इक रघराईआ। इक्को साहिब कमलापात, घर वसे सच्चा माहीआ। इक्को नूर इक्को ज़ात, ज़हूर इक्को इक रुशनाईआ। इक्को कलमा इक्को बात, इक्को नाम रिहा पढ़ाईआ। इक्को भविख्त रिहा भाख, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। इक्को पूजा इक्को पाठ, इक्को मंत्र रिहा सुणाईआ। इक्को चरण इक्को नात, इक्को हरि जू नज़री आईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। श्री भगवान भुल्ल क्यों बणे बदमाश, बुध सब दी रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा डंका इक वजाईआ। साचा डंका वज्जे सद्दा, हरि सदा नाम लगाइंदा। दो जहानां पार करे हद्दा, हदूद वंड ना कोए वंडाइंदा। जुग चौकड़ी फिरे भज्जा, सेवक साची सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण हो के सजा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। भगत प्यार आया बद्धा, आपणा बल मिटाइंदा। ना बुढ्ढा ना दिसे नढ्ढा, बिरध बाल ना रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग देवे सच सोग़ाता, इक्को अक्खर कर कर वक्खर नाम सोग़ात झोली पाइंदा।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी मोता सिंघ दे गृह कल्सीआं ज़िला अमृतसर ❇

आपणा पर्दा चुकांगा। निरगुण हो के उठांगा। साहिब बण के तुठांगा। ग़रीब निमाणे चुकांगा। लुकायां किसे कोलों ना लुकांगा । शेर हो के बुकांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, लख चुरासी कोलों पुछांगा। लख चुरासी वेखांगां। लेखा जाण देस परदेसां दा। लेखा चुका ब्रह्मा विष्न महेष गणेशां दा। गाउणा चुक्के सहँसर जिह्वा बाशक शेशां दा। हुक्म चले इक नरेशा दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आपणे वेसां दा। अगम्मी वेस वटावांगा। निहकर्मी कर्म कमावांगा। दो जहान सरन लगावांगा। श्री भगवान निशान

झुलावांगा। सचखण्ड मकान वसांवांगा। चढ़ उपर आसण लावांगा। दो जहान डरावांगा। भुख्यां भुक्ख गंवावांगा। साचा सुख वखावांगा। कालख टिक्का लाहवांगा। सतिजुग राह चलावांगा। बाल्यां गोद उठावांगा। रुस्सयां फेर मनावांगा। हुस्सयां फेर जगावांगा। गुसयां मेट मिटावांगा। बिरहों कुठयां राग सुणावांगा। जग लुट्टयां फेर वसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कर वखावांगा। आपणी करनी कर वखाएगा। साचा खेल इक रचाएगा। चौदां तबकां ख़ाक मिलाएगा। ग़रीब निमाणयां तिलक लगाएगा। फड़ आपणे गले लगाएगा। दो जहानां वेख वखाएगा। सच सिँघासण सोभा पाएगा। इक्को डंका नाम वजाएगा। राउ रंकां आप उठाएगा। दुआर बंका इक सुहाएगा। जो पिच्छे रहि गए ओनां अग्गे लाएगा। भुक्खे नंगे साचे सुख समाएगा। दुखियां दुःख गंवाएगा। आपणी कुक्ख हरी कराएगा। उज्जल मुख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फलवाड़ी इक लगाएगा। सच फलवाड़ी बूटा लावेगा। सतिजुग आप झुलावेगा। फल अमृत इक खवावेगा। विख रूप सर्ब मिटावेगा। जोती जोत जोत रुशनावेगा। दो जहानां इक्को नज़री आवेगा। दूजा इष्ट ना कोए मनावेगा। सोहँ ढोला विष्न ब्रह्मा शिव गावेगा। गुर अवतार सरनी पै पै शुकर मनावेगा। पीर पैगम्बर धूढ़ी टिक्का मस्तक लावेगा। भगत भगवान इक्को जस सुणावेगा। ग़रीब निमाणयां हो के वस, आपणा माण तजावेगा। सर्ब कला समरथ, समरथ आपणा राह वखावेगा। सतिजुग मार्ग दस्स, कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नस्स नस्स कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अकथनत अकथ, पिछला लेखा सर्ब चुकावेगा। पिछला लेखा चुकेगा। कलिजुग पैंडा मुकेगा। गुरमुख सच्चा उठेगा। साहिब ठाकर तुठेगा। गोदी आपणी चुकेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निशाने आपणयो कदे ना उकेगा।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी बीबी बीरो दे गृह कल्सीआं ज़िला अमृतसर ❇

दर घर साचे पाया दरस, दुःख दर्द गंवाईआ। जन्म जन्म दी मिटी हरस, हरि सतिगुर नज़री आईआ। कर किरपा कीता आपणा तरस, मेहर नज़र इक उठाईआ। अमृत मेघ जाए बरस, सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे वड वड्याईआ। गुरसिख आसा करे पूर, पूरी आसा आप कराइंदा। देवे दरस हाज़र हज़ूर, हरि जू आपणा रंग वखाइंदा। सर्ब कला आपे भरपूर, ख़ाली भाण्डे आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे लेखे आपे लाइंदा।

❇ २२ माघ २०१६ बिक्रमी सिधवां मनी राम दे गृह ज़िला अमृतसर ❇

सति सति सति कार कमावांगा। साची करनी कर वखावांगा। सो पुरख निरँजण नाम प्रगटावांगा। हरि पुरख निरँजण इक जणावांगा। एकँकार नज़री आवांगा। आदि निरँजण नूर धरावांगा। अबिनाशी करता खेल रचावांगा। श्री भगवान सच निशान उठावांगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा लेख लिखावांगा। सचखण्ड साचा इक बणावांगा। सच सिँघासण इक वछावांगा। शाहो भूप नाम धरावांगा। राजन राज जोग सिखावांगा। सीस आपणे ताज टिकावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। साची इच्छया इक प्रगटावांगा। शब्दी सुत बणावांगा। थिर घर कुण्डा लाहवांगा। आपणा भेव जणावांगा। विष्नूं रंग रंगावांगा। ब्रह्मा जोत जगावांगा। शंकर अंग लगावांगा। साचा खेल करावांगा। अनडिठड़ा धाम वसावांगा। जोती जोत डगमगावांगा। त्रैगुण पर्दा आपे लाहवांगा। पंज तत्त साची वंड वंडावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम वेख वखावांगा। तेई अवतार फड़ उठावांगा। ब्रह्मा सुत नाल मिलावांगा। बराह आपणा हाल जणावांगा। हाव ग़रीब भेव चुकावांगा। नरायण इक्को नाउँ जणावांगा। कपल मुन बणावांगा। दत्तात्रै मिलावांगा। रिखप देव एका मार्ग लावांगा। पिरथू संग निभावांगा। मत्तस चोली हंढावांगा। कछप भार उठावांगा। धनंतर वैद जगावांगा। मोहणी रूप वटावांगा। हँसा चोग चुगावांगा। बावन खेल करावांगा। हरी हरि आप अख्वावांगा। नर सिँघ वेस वटावांगा। नरायण धार चलावांगा। वेद व्यास जगावांगा। रामा वेस वटावांगा। पंडत इक मनावांगा। सीस जगदीश इक सुहावांगा। काहना कृष्ना फेर अख्वावांगा। अन्तिम कल डंक वजावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड उठावांगा। लोआँ पुरीआँ वेख वखावांगा। मूसा पर्दा लाहवांगा। ईसा नैण खुल्ह्वावांगा। मुहम्मद राह जणावांगा। चार यारी नाल मिलावांगा। नानक रंग रंगावांगा। गोबिन्द तेल चढ़ावांगा। चारे वेदां वेख वखावांगा। शास्त्र सिमरत पुराण संग जणावांगा। गीता ज्ञान इक दृढ़ावांगा। अञ्जील कुरान फोल फुलावांगा। बाणी तीर निराला इक वखावांगा। आपणा हुक्म सच मनावांगा। पिछली कीती सब उलटावांगा। दो जहानां आप पढ़ावांगा। मुल्ला शेख़ मिटावांगा। साचा खेल रचावांगा। ज़िमीं असमानां नाच नचावांगा। सूरज चन्द मुख भवावांगा। मण्डल रास रचावांगा। गोपी काहन नचावांगा। बल आपणा इक प्रगटावांगा। निहकलंक अख्वावांगा। सच सिँघासण सोभा पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राह चलावांगा। आपणा राह चलाऊँगा। साचा मार्ग लाऊँगा। कलिजुग कूड़ मिटाऊँगा। ज़ात पात ना कोई रखाऊँगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा रंग रंगाऊँगा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाऊँगा। ग़रीब निमाणयां फड़ उठाऊँगा। साचा मन्दिर इक वखाऊँगा। नर नरायण नज़री आऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साची करनी आप कमाऊँगा। साची करनी आप कमावांगा। भगत साचे फड़ उठावांगा। सन्त साजण मेल मिलावांगा। गुरमुख आपणा भेव खुल्हावांगा। गुरसिख साची गोद बहावांगा। वड योद्धन योद्ध सूरबीर आपणा नाउँ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव जणावांगा। आपणा भेव खोल्हांगा। सचखण्ड दवारे बोलांगा। पूरा तोल तोलांगा। आदि जुगादि कदे ना डोलांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया रोलांगा। सचखण्ड दुआर खोलांगा। घट घट अन्दर मौलांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वटावांगा। परवरदिगार अख्वावांगा। मुकामे हक़ डेरा लावांगा। लाशरीक नज़री आवांगा। सच तौफ़ीक इक वखावांगा। मिहबान बीदो वेस वटावांगा। साचा हुजरा इक बणावांगा। पीर पैगम्बर फड़ उठावांगा। साचा कलमा इक सुणावांगा। नबी रसूलां वेख वखावांगा। अञ्जील कुराना वक्त चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह जणावांगा। आपणा राह दस्सांगा। तीर निराला कसांगा। दो जहानां वसांगा। लोआँ पुरीआँ नठ्ठांगा। किसे कोलों ना ढठ्ठांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी करांगा। आपणी करनी किरत कमावांगा। चौदां तबकां फोल फुलावांगा। चौदां लोकां वेख खुशी मनावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलावांगा। करोड़ तेतीसा उंगली लावांगा। सुरप्त इन्द आप समझावांगा। सोहला इक पढ़ावांगा। बोला इक सिखावांगा। पिछला रौला सर्ब मिटावांगा। नाम विचोला इक जणावांगा। पीर पैगम्बर गोला आप बणावांगा। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी होला इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी करेगा। निरवैर जोत धरेगा। भगत भगवन्त वरेगा। आत्म सेजा चढ़ेगा। शब्द अगम्मी पढ़ेगा। सन्त सुहेले फड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे करेगा। आपणा खेल कराऊँगा। दो जहानां नाच नचाऊँगा। गुर अवातारां पीर पैगम्बरां इक्को राह वखाऊँगा। दीन मज़्हब झगड़े सर्ब मिटाऊँगा। साची ईन इक जणाऊँगा। पिछला दीन ना कोए रखाऊँगा। सतिजुग साचा सीन प्रगटाऊँगा। साचे घोड़े अस्व पाखर ज़ीन तंग कसाऊँगा। शाह सवार बहि के लोआँ पुरीआँ चरणां हेठ दबाऊँगा। सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता इक जणाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाऊँगा। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जाता परवरदिगार, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जन भगतां करे प्यार, लाशरीक फेरा पाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सच संदेसा देवे संसार, गुर अवतार पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण करदा रिहा विहार, रूप अनूप वेस वटाईआ।

सच संदेसा देंदा रिहा वारो वार, जगत अक्खर नाउँ कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे समरथ, समरथ आपणा खेल जणाइंदा। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, रथ रथवाही इक्को नज़री आइंदा। पीर पैगम्बर मार्ग दस्स, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार मेल मिलावा हस्स हस्स, साची सिख्या इक समझाइंदा। आत्म परमात्म देवे रस, रस रसीआ नाउँ जणाइंदा। आदि निरँजण जोत निरँजण कर प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। घट घट अन्दर कर कर वास, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्ता आपणा नाउँ रखाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाइंदा। गुर अवतार दासी दास, सेवक साची सेव जणाइंदा। अन्तिम कलिजुग सारे सद्दे पास, हुक्म हाकम इक जणाइंदा। दोए जोड़ करन अरदास, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। चार कुण्ट होए नरास, सगला संग ना कोए निभाइंदा। दीनां मज़्बां कीता पाश पाश, दूई पर्दा ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर साचे घर मंगाइंदा। पीर पैगम्बर गए आ, आ नाअरा इक्को लाईआ। तूं दाता बेपरवाह, तेरा अन्त कोए ना आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कलमा आए पढ़ा, कायनात कर जणाईआ। चौदां तबक आए खुल्हा, तेरी मन्नी इक रज़ाईआ। तेरी मंगदे रहे दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तैनूं सीस रहे झुका, सजदा सच्चे माहीआ। तेरा नाउँ काअबा गए वखा, मक्का तेरा चरण दरसाईआ। दो दो आबा तेरा आब हयात गए जणा, हयाती सब दी दए बदलाईआ। ईसा मूसा तेरा लैंदे रहे ख्वाब, मुहम्मद इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रगट होए हक़ जनाब, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। बण के बरदे करीए आदाब, आप आपणा माण गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे रिहा बहाईआ। गुर अवतार आ खलोते, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। लोकमात गुरुदुआर शिवदुआले मन्दिर बणाए कोठे, चार दीवारी वंड वंडाईआ। कोई ना मिल्या तेरी जोते, जोती जोत ना कोए मिलाईआ। तुध बिन कर्म किसे ना धोते, निहकर्म ना कोए बणाईआ। बिन तेरे नाम सारे खोटे, खोटी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच्चा दर, जिस दर मिले वड्याईआ। पीर पैगम्बर पए कूक, नाअरा इक लगाईआ। साडी अजे ना चुकी चूक, चुकन्ने हो के रहे सुणाईआ। उम्मत उम्मतीआं दिती फूक, कूड़ी क्रिया अग्ग लगाईआ। ज़ाहर ज़हूर ना वेख्या पंज भूत, काया काअबा ना कोए बणाईआ। तेरा मिल्या ना सच सबूत, सही सलामत नज़र किसे ना आईआ। बिन रूह ख़ाली दिसे बुत्त, बुत्तख़ाना जगत वड्याईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना पाईआ। कर किरपा अन्तिम उठ, इक्को तेरी ओट तकाईआ। मसीत मस्जिद पई लुट्ट, मुल्ला शेख़ देण दुहाईआ।

परवरदिगार सब ने लोकमात विच्चों कढ्ढुया कुट्ट, तेरा नाउँ ना कोए वड्याईआ। तेरी जड़ बैठे पुट्ट, नास्तिक रूप वटाईआ। तेरा नज़र ना आए कोई पुत्त, ईसा नैणां नीर वहाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं आ के पुच्छ, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। अल्ला राणी कहे मेरे कोल नहीं कुछ, ख़ाली झोली रही वखाईआ। सदी चौधवीं बूटा रिहा सुक्क, आब हयात ना कोए प्याईआ। साडा पैंडा रिहा मुक्क, दरोही तेरे नाम खुदा तोबा तोबा इक्को राग अलाईआ। कर किरपा आपणी गोदी चुक्क, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। करां सलाम निउँ निउँ झुक, अलैकम तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा दर, दर दरवाज़ा इक खुलाईआ। साचा खोल दर दरवाज़ा, पीर पैगम्बर ध्यान लगाइंदा। तूं साहिब सच्चा ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गोद उठाइंदा। तेरे सीस इक्को ताजा, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। शाहो भूप वड नवाबा, रय्यत आपणी वेख वखाइंदा। अन्तिम कम्म ना आए कोए काअबा, किबल तेरा इक्को नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस दवारे आसण लाइंदा। गुर अवतार दस्सण हाल, बीती आप जणाईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। गुर का शब्द ना किसे नाल, भरमे
६४१ भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कलिजुग कूड़ा वज्जे ताल, घर घर डंका रिहा सुणाईआ। तेरे भगत होए बेहाल, बिहबल हो हो ६४१
१३ देण दुहाईआ। ग़रीब निमाणयां सुणे ना कोए स्वाल, शाह पातशाह नज़र कोए ना आईआ। सन्त साजण तैनूं थक्के भाल, १३
तेरा राह ना कोए दसाईआ। तूं सचखण्ड वसिउँ धर्मसाल, धर्म दवारा इक जणाईआ। तेरे नाम बिनां जीव जंत होए कंगाल, ख़ाली हथ्थ फिरन वाहो दाहीआ। दीनां मज़्बां कीता ज़वाल, ज़रा ज़रा वंड वंडाईआ। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, काल नग़ारा इक वजाईआ। बेपरवाह तेरी अवल्लड़ी चाल, बेपरवाही ना अजे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, गुर अवतार मंग मंगाईआ। गुर अवतार दोए जोड़, हरि चरणी सीस निवाया। बौहड़ी बौहड़ी निरगुण बौहड़, सरगुण कम्म किसे ना आया। इक्को चढ़ साचे घोड़, घोड़ा शब्दी रूप वटाया। दो जहानां आपे बौहड़, तेरा ज़ोर ना लगे राया। लख चुरासी वेख रीठा मिट्ठा कौड़, चारों कुण्ट फेरा पाया। ईसा मूसा राह तेरा तक्को विच गोर, मकबरे देण दुहाया। तेरी खाणी बाणी पावे शोर, सच सोहला इक जणाया। कलिजुग होया अन्ध घोर, चौदस चन्द ना कोए चमकाया। चारों कुण्ट ठग्ग चोर, सच रहिण कोए ना पाया। कूड़ा राजा हथ्थ कूड़ी फड़ी डोर, ग़रीब निमाणे देण दुहाया। तूं साहिब वेख कर के ग़ौर, गहरा आपणा ध्यान लगाया। तेरे अग्गे चले ना किसे दा कोई ज़ोर, ज़ोरू ज़र रहिण ना पाया। तेरा मंत्र इक्को फोर, फुरना सब दा बंद कराया। आपणे हथ्थ फड़ लै डोर, जिउँ भावे लै

चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर ख़ाली झोली रहे वखाया। पुरख अकाल कहे मैं उठांगा। निरगुण दाता हो के तुठांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया लुटांगा। डूँघी जड़ पुटांगा। शौह दरयाए सुटांगा। मनमुखता नूं कुटांगा। शेर हो के बुकांगा। दो जहान कदे ना लुकांगा। नेड़े आ के ढुकांगा। ग़रीब निमाणे चुक्कांगा। शाह सुल्तानां मूँह दे भार सुट्टांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेख लिखांगा। साचा लेख लिखावांगा। सतिजुग राह चलावांगा । इक्को इष्ट वखावांगा। इक्को मन्दिर बणावांगा। इक्को अन्दर वखावांगा। इक्को जोत मिलावांगा। इक्को नाद वजावांगा। इक्को राग सुणावांगा । इक्को आग बुझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल रखावांगा। आपणा बल रखांगा। सृष्ट सबाई भखांगा । जन भगतां मार्ग दस्सांगा। हिरदे अन्दर वसांगा। तीर निराला कसांगा। पंच विकार झसांगा। साचे मन्दिर बहि के हस्सांगा। प्रेम प्यार अन्दर फसांगा। विभचार कोलों नस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर इक्को वसांगा। साचा मन्दिर वसावांगा। लोकमात उपजावांगा। आपणी सेव कमावांगा। गुरमुख नाल रलावांगा। हरिजन पल्लू फड़ावांगा। इक्को गंढु पवावांगा। मजीठी रंग रंगावांगा। अनडीठी खेल वखावांगा। काया सीतल सीती कर वखावांगा। सतिजुग रीती इक चलावांगा। मन्दिर मसीती पन्ध मुकावांगा। पिछली बीती ना फेर सुणावांगा। अग्गे नाम जपावांगा। सोहँ इक्को अक्खर पढ़ावांगा। नाम विचोला बण बण जोग कमावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करावांगा। आपणा खेल खलाऊँगा। गुर अवतार दर बहाऊँगा। पीर पैगम्बर पन्ध मुकाऊँगा। सब नूं इक्को राग सुणाऊँगा । तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आऊँगा। निरगुण प्रगट हो के शेरा, शेर भबक इक लगाऊँगा। नौ खण्ड पृथ्मी जम्बक रूप जणाऊँगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप वखाऊँगा। आपणी करनी आप करावांगा। जो घड़या भन्न वखावांगा। पिछला लेख मिटावांगा। अगली बणत बणावांगा। साचे सन्त उपजावांगा। गुर मंत्र इक पढ़ावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को घर वखावांगा। सत्तां दीपां इक्को इष्ट जणावांगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए रखावांगा। आत्म परमात्म मेल मिलावांगा। ब्रह्म पारब्रह्म पर्दा आप चुकावांगा। ईश जीव गंढु पवावांगा। जगदीश्र नाम धरावांगा। तपीश्र रूप वटावांगा। रखीशर इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक रचावांगा। साची खेल रचूंगा। त्रैगुण अग्नी विच मचूंगा। काल कलन्दर हो के नच्चूंगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणी करनी दस्सूंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर वसूंगा। आपणा मन्दिर वसावांगा । निहचल धाम बणावांगा। जोती जोत

जगावांगा। किला कोट वखावांगा। चोट नगारे लावांगा। सब दी सोच भुलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग अलावांगा। आपणा गीत गाऊँगा। साची रीत चलाऊँगा। पतित पुनीत कराऊँगा। धाम अतीत रखाऊँगा। अमृत मेघ बरसाऊँगा। हस्त कीट मिलाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाऊँगा। साची करनी रखे हथ्थ, हरि साहिब वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वसणहारा उच्चे टिल्ले पर्बत, पर्बत चोटी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल करे अगम्म, भेव अभेद जणाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी काया माटी तन चम्म, मन्दिर अन्दर खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बेड़ा बन्ह जुग चौकड़ी कंध उठाइंदा। देवणहारा नाम धन, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सुणावणहारा राग कन्न, सच संदेसा इक अलाइंदा। बन्नणहारा मनुआ मन, मन वासना मेट मिटाइंदा। देवणहारा बुध मति डंन, डंका आपणे नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा नाम वड्याइंदा। निरगुण नाउँ हरि निरँकार, आदि जुगादि सुणाया। जुग जुग सिफ्त करे गुरू अवतार, कोटन कोटि ढोला गाया। हरि का अन्त ना पारावार, बेअन्त कह कह शुकर मनाया। करदे रहे सर्ब गुफ़तार, रसना जिह्वा नाल मिलाया। उच्ची कूक कूक पुकार, भगत भगवन्त ढोला गाया। पर्दा उहला विच संसार, निरगुण सरगुण आप रखाया। कलिजुग अन्तिम बदलया चोला आप निरँकार, तत्तव तत्त ना कोए रखाया। इक्को बोला बोल जैकार, तूं मेरा मैं तेरा साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाया। वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड आपणा डेरा लाया। सम्बल खोल्ह आप कवाड़, बंद ताकी पर्दा दए चुकाया। गोबिन्द मीता मीत मुरार, पूत सपूता वेस वटाया। पुरख अकाल ख़बरदार, साची ख़बर रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह जणाया। साची ख़बर सुणावांगा। बेसबर प्याला तोड़ तुड़ावांगा। आबरू इज्ज़त सर्ब मिटावांगा। आपणा नाम बेइज़्ज़त ना कदे करावांगा। सृष्ट सबाई शक्ति वखावांगा। आपणा दस्त इक उठावांगा। वस्त सब दी खोह के आपणी झोली पावांगा। बिन रूह तों ख़ाली बुत्त जणावांगा। मकबरयां विच रखावांगा। अग्नी उत्ते सड़ावांगा। ख़ाक विच रलावांगा। पोश तन लुहावांगा। सोच विच ना आवांगा। नमाज़ रोज़ा मिटावांगा। तीर गोशा इक उठावांगा। कमान आपणा टंक चलावांगा। राउ रंक जणावांगा। बिन भगतां नज़र किसे ना आवांगा। आदि शक्ति वेस वटावांगा। चतुर्भुज नाम धरावांगा। अमाम मैहन्दी फेरा पावांगा। दिशा लहिंदी वेख वखावांगा। हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगावांगा। दुनिया ढहिंदी, ढाह ढाह ढेर करावांगा। अन्जील कुरान खहिंदी,

खहि खहि अग्न लगावांगा। अल्ला राणी पीहड़े बहिंदी, मस्तक टिक्का इक सुहावांगा। उम्मत नबी नूं जा जा कहिन्दी, वेला अन्तिम आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची गल्ल सुणावांगा। अल्ला राणी फिरे नट्ठी, चौदां तबक दए दुहाईआ। वेखो मेरी ख़ाली हट्टी, वणजारा कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीवां मेरी मीढी पट्टी, खुल्ही गुत्त रही वखाईआ। हथ्थों सट्टी मुहम्मद मौली अट्टी, साचा सगन ना कोए मनाईआ। दरोही मैथों भरी ना जाए चट्टी, सिर भार ना कोए उठाईआ। मैं बाली अज्जे नढ्ढी, मेरा मीआं अंग ना मोहे लगाईआ। फड़के बांहों घरों कढ्ढी, चारों कुण्टां फिरे वाहो दाहीआ। मैनूं रोटी मिले ना अद्धी, भुक्खी मरे तिहाईआ। अन्तिम आ गई चौधवीं सदी, चौदां तबकां सार कोए ना पाईआ। मैं हुक्मे अन्दर बद्धी, परवरदिगार दए सज़ाईआ। मैं पिछली कहाणी छड्डी, तुहानूं सब नूं दयां सुणाईआ। मेरी कोए ना रखे लज्जी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरी गुत्त मेरी उम्मत वढ्ढी, भुलया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। अल्ला राणी रोवे नीर, नैणां नैण मिलाईआ। वेखो मेरे पाटे चीर, चीथड़ सच ना कोए हंढ्ढाईआ। बिरहों अन्दर सुक्का सरीर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। मार्ग दस्स के गए पैगम्बर पीर, परा आपणी इक जणाईआ। शरअ ला के गए ज़ंजीर, शरीअत कुंजी विच रखाईआ। मैं अन्त होई दिलगीर, मेरा माही बैठा मुख भवाईआ। मेरी कोई ना कटे भीड़, मुल्ला शेख़ मसला हक़ ना कोए जणाईआ। वेखो अन्त होई अख़ीर, अमाम सब दी अक्खीं घट्टा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। मैं दस्सण आई चौदां तबक, तोबा तोबा करो सलाम। पिछला भुल्लो सारे सबक, अग्गे मन्नो इक अमाम। जिस दा नाँ सुणदयां ईसा मूसा मुहम्मद रहे तभक, दर बरदे बण के बैठे गुलाम। उस साहिब दी सच्ची बरकत, जिस नाल वसे जहान। ओस नाल कोई ना करयो सिरकत, सब दा मेटे ईमान। किसे दी रहिण ना देवे हरकत, हुलीआ कर दए बेपछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक महान। नाले दस्सां नाले रोवां, हाल बेहाल रही जणाईआ। सीस आपणे वाल खोवां, दोहा हथ्थां दयां दुहाईआ। दिवस रैण कदे ना सोवां, भज्जी फिरां वाहो दाहीआ। साहिब सच्चे दा ढोला गावां, तूं मेरा मैं तेरी तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग अन्तिम दे ठंडीआं छावां, इक तेरी ओट रखाईआ। तुध बिन भज्जीआं मेरीआं बांहवां, बांहों फड़ गले ना कोए लगाईआ। जे दर सद्दें ते नीवीं हो के आवां, धूढ़ी चरण ख़ाक रमाईआ। वारी घोली प्रभ तेरे सदके जावां, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। दिवस रैण तेरा नाउँ रावां, रहबर मिले बेपरवाहीआ। तुध बिन चार कुण्ट ख़ाली काग उडावां, बेबस रही कुरलाईआ। मैनूं चौदां तबकां विच्चों तेरा

६४४ १३

सच ना लम्भया नावां, अक्खरां नाल करन पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अल्ला राणी मारे नाअरा, हक़ हक़ ध्याईआ। बौहड़ी मिल परवरदिगारा, तेरी आस रखाईआ। नाता तुटया चार यारां, मुहम्मद अंग ना कोए लगाईआ। ईसा मूसा डिगा मूँह दे भारा, मुफ़लस रूप रहे वखाईआ। मैनूं उंगलां नाल करन इशारा, बिन महिबूब नज़र ना आउँदा कोए साईंआ। मैं सुणया साहिब तूं अजे कुँवारा, तेरी लाड़ी नज़र कोए ना आईआ। मैं तेरे चरणां बणां सेवादारा, बण फरमांबरदार सेव कमाईआ। मैं अक्खीं वेखां किवें चढ़दा आपणे खारा, वटणा सच सच लगाईआ। मैं तक्कां शकवें सीस बन्ने दस्तारा, जगदीश आपणी खुशी मनाईआ। मैं जाणां किवें बणे कन्त भतारा, सेहरा सुहाग इक हंढ्ढाईआ। मैं वेखां किवें बणे सिक्दारा, सिर आपणे ताज टिकाईआ। अल्ला राणी नार मुटयारा, जोबन आपणा रही दरसाईआ। श्री भगवान कहे दूर हो जा मेरे दवारा, तेरी करनी मोहे ना भाईआ। कलिजुग अन्तिम जा के मेरे भगतां कर प्यारा, तेरी पत्त लैण रखाईआ। जिन्हां पिच्छे लवां मात अवतारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम होवां पीर ज़ाहरा, ज़ाहर आपणा नूर दरसाईआ। सम्बल वसां धाम न्यारा, संभल संभल पैर टिकाईआ। डंका वज्जे इक जैकारा, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। जिस सोहँ कीआ प्यारा, सो साहिब सच्चे भाईआ। दीन मज़्हब दा छड्ड के अखाड़ा, आखर इक्को हुक्म सुणाईआ। अन्त अग्ग लग्गणी बहत्तर नाड़ा, जीव जंत सर्ब जलाईआ। सम्मत उन्नी कढ्ढ ला हाढ़ा, फेर वेला गया हथ्थ ना आईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर देण दुहाईआ। बिन परवरदिगार सच करे ना कोए प्यारा, कूड़ी क्रिया जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर आपणा राह जणाईआ।

६४५
१३

❇ २३ माघ २०१६ बिक्रमी समुंद सिँघ दे गृह माड़ी मेघा ज़िला अमृतसर ❇

सम्मत चले वीह सौ उनी, एका नाया खेल कराइंदा। अल्ला राणी सिर तों लहे चुन्नी, सीस हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। उम्मत चोटी जाए मुंनी, पर्दा अवर ना कोए पाइंदा। नाता तुटे मुस्लिम सुन्नी, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। श्री भगवान वड गुण गुणी, बेपरवाह आपणी धार जणाइंदा। लख चुरासी छाणी पुणी, जीव जंत खोज खुजाइंदा। भगत भगवान पुकार रिहा सुणी, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाइंदा। सम्मत उन्नी खेल उनीसा, परवरदिगार खेल कराईआ। लेखा जाणे मूसा ईसा, संग मुहम्मद मेल मिलाईआ। जणावणहारा

जुग जुग हदीसा, शरअ शरीअत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाईआ। सम्मत उन्नी ईसा मूसा धार, लाशरीक आप जणाइंदा। मुकामे हथ्थ हो तैयार, बेऐब वेख वखाइंदा। दो जहाना सांझा यार, श्री भगवान पर्दा लाहइंदा। नबी रसूलां करे ख़बरदार, पाक पाकी वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, हरि का अन्त ना कोए पाइंदा। चौदां तबकां लए उठाल, साचा सबक इक जणाइंदा। मुहब्बत रहे ना किसे नाल, सुहबत हक़ ना कोए जणाइंदा। जलवा नूर इक जलाल, ज़ाहर ज़हूर आप दृढ़ाइंदा। कलिजुग कूड़ी मिटे मिसाल, मिसल नवीं फेर बणाइंदा। मुरीद मुर्शद लए भाल, चेला गुर चंद चढ़ाइंदा। खेले खेल वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी धार वखाइंदा। शब्द अगम्मी तीर निराला उठाए बाण, अणयाला आपणे हथ्थ रखाइंदा। दाता योद्धा सूरबीर नौजवान, कलिजुग नईया वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। परवरदिगार लाशरीका, करे खेल बेपरवाहया। पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा तरीका, नाम खुदाई इक दृढ़ाईआ। मुहम्मद ईसा नेत्र नैण राह तक्क करदे रहे उडीकां, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। परवरदिगार भेव जाणे जीव जीअ का, घट घट रिहा समाईआ। आदि जुगादि नीकन नीका, वड वड्डा आप अख्वाईआ। अन्तिम कलिजुग शाह सुल्तानां ख़ाली करे खीसा, दर दर दए फिराईआ। किसे ताज रहिण ना देवे सीसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि कमावेगा। निरगुण जोत जगावेगा। गोबिन्द सुत उठावेगा। शब्दी डंक वजावेगा। नाम खण्डा इक चमकावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव हलावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड रुवावेगा। दीन दुनी वेख वखावेगा। लोआँ पुरीआँ फेरा पावेगा। तेई अवतार फड़ जगावेगा। भगत अठारां नाल रलावेगा। ईसा मूसा मूँह भवावेगा। कलमा नबी इक सिखावेगा। चारों कुण्ट वेख वखावेगा। दहि दिशा रंग रंगावेगा। निरगुण जोत प्रकाश करावेगा। साचे घोड़े आसण पावेगा। शाहसवारा डेरा लावेगा। दाता दानी आप अख्वावेगा। लोकमात फेरा पावेगा। सम्बल चरण टिकावेगा। हरि मन्दिर वेख वखावेगा। कलिजुग अन्तिम आपणा भेव जणावेगा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त इक्को हुक्म मनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमावेगा। आपणी करनी करेगा। प्रभ किसे कोलों ना डरेगा। पीर पैगम्बर फड़ेगा। घट घट अन्दर वड़ेगा। सच महल्ले चढ़ेगा। इक्को पुरख अकाल अक्खर पढ़ेगा। दो जहानां शब्दी लड़ेगा। अग्गे सूरबीर कोई ना अड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपे करेगा। हरि करनी सच कमावेगा। कलि कल्की अवतार कहावेगा। नाम डंका इक वजावेगा। ब्रह्मण्डां खण्डां आप हलावेगा। चौदां लोकां पर्दा उठावेगा। चौदां

तबकां नेत्र नैणां नीर वहावेगा। ईसा मूसा सजदा सीस झुकावेगा। बण बरदा भुल्ल बख्शावेगा। डरदा अग्गे ना कोई आवेगा। गोबिन्द खुशीआं खेल वखावेगा। कलिजुग रुस्सयां मेट मिटावेगा। गल्लां सच्चीयां आण सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगावेगा। साचा रंग रंगेगा। लोआँ पुरीआँ लँघेगा। भगवान भगतां कोलों कदे ना संगेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे चंगे मंदे दा। सम्मत उन्नी दए दुहाई, कूक कूक सुणाईआ। कलिजुग जीवो उठो भाई, वेला अन्तिम आईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाई, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। जिस दा जलवा तक्क के मूसा डिगा मूँह दे भार ना सके कोए उठाई, नैणां नैण नैण शरमाईआ। जिस नूं ईसा कहे मेरा बाप मेरी माई, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। जिस नूं मुहम्मद कहे मेरा अमाम सच गोसाईं, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। जिस नूं सतिगुर नानक कहे, वसे हर घट थाई, घट घट रिहा जणाईआ। जिस नूं गुर गोबिन्द किहा मेरा पिता पकड़े मेरी बांहीं, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। सो कलिजुग अन्तिम आवे निहकलंक नाउँ रखाई, रूप रेख ना कोए जणाईआ। सम्बल आपणा चरण टिकाई, डंका शब्द इक वजाई, नाअरा हक़ हक़ सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां लए उठाई, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ, आपणी करनी आप कराई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्ह्लाईआ। हरि साचा भेव खुल्ह्लावेगा। निरगुण जामा वेस वटावेगा। सम्मत बीसा वेख वखावेगा। ख़ाली खीसा सर्ब करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखावेगा। सम्मत बीस आया नेड़े, नेरन नेरा हरि जणाईआ। श्री भगवान देवणहारा उलटे गेड़े, गेड़ा इक्को इक भवाईआ। वसदे उजड़न वाले खेड़े, खेड़ा सके ना कोए वसाईआ। दीन मज़्ह्ब दे मेटे झेड़े, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। किसे करन ना देवे हेरे फेरे, कूड़ी क्रिया ना कोए वड्याईआ। कलिजुग अन्त ना लावे देरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह्लाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख हट्ट, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। चारों कुण्ट रिहा दस्स, कूक कूक सुणाइंदा। रैण अन्धेरा होया मस, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। आत्म परमात्म किसे ना मिले रस, रसना जिह्वा लख चुरासी गाइंदा। साहिब सतिगुर दरस ना देवे किसे हस्स हस्स, घर सज्जण नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ी क्रिया अन्दर गए फस, माया ममता मोह ना कोए तुड़ाइंदा। ना कोई रखे धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए रखाइंदा। घर घर वड़ी मनमति, गुरमति ना कोए प्रनाइंदा। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाइंदा। गुर गोबिन्द मार्ग गया दस्स, चार वरन एका घर वसाइंदा। नानक निरगुण इक वखाया साचा

मंत, पारब्रह्म ब्रह्म एका घर बहाइंदा। सृष्ट सबाई कूड़े धंदे गई लग्ग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होई कग्ग, कलिजुग जीव काग वांग कुरलाइंदा। शाह सुल्तानां घर लग्गे अग्ग, लग्गी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। किसे दे सिर ते रहे ना पग्ग, चोटी सब दी आप मुंडाइंदा। भगत भगवान लख चुरासी विच्चों लए रख, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। नव नौ चार उडणे कक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा दस्से खोल्ह, खालक खलक जणाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि जू तोले पूरा तोल, निरगुण कंडा नाम हथ्थ उठाईआ। गुरमुख रहे ना कोए अनभोल, शब्द सुरती रिहा जगाईआ। सच वस्त रही ना किसे कोल, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। साचा खेल दस्से भगवाना, भगवन आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग कूड़ा मिटे निशाना, जगत अन्धेरा अन्ध गवाइंदा। चार कुण्ट होए वैराना, दहि दिशा धीर ना कोए धराइंदा। सृष्ट सबाई होए हैराना, हरि जू की की खेल वरताइंदा। सिआसत वरासत कम्म किसे ना आणा, सफ़ारश अग्गे ना कोए कराइंदा। गोबिन्द खण्डा खिचण वाला विच्चों म्याना, म्यान हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा
६४८ दो जहानां, दोज़ख़ बहिश्त खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बीस ६४८
१३ बीसा राह तकाइंदा। बीस बीसा राह तक्के, नेत्र नैण उठाईआ। कलिजुग फल सारे पक्के, कच्चा नज़र कोए ना आईआ। १३
माया ममता पर्दा कोई ना ढके, त्रैगुण बैठी मुख छुपाईआ। जीव जंत दूई द्वैती फट फटे, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। सतिगुर सत्थर कोई ना घत्ते, कामनी सेज रहे हंढ्ढाईआ। हरि का बीज ना बीज्या वत्ते, नाम रस ना कोए चखाईआ। चारों कुण्ट वा वगे तत्ते, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी सद्दा रिहा जणाईआ। सदी बीसवीं देवे सद्दा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण आप समरथा, समरथ आपणी कार कमाइंदा। एकँकारा लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्था, जुग जुग उधार ना कोए रखाइंदा। आदि निरँजण आदि जुगादी पक्का, घर साचा सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता दो जहान निरगुण हो हो नच्चा, सरगुण भेव कोए ना आइंदा। अबिनाशी करता कहे मेरा गोबिन्द सुत शब्द दुलारा इक्को बच्चा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म कहे ब्रह्म मेरा जुग चौकड़ी निक्का निक्का संचा, घड़न भंनणहार आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ।

हरि पुरख निरँजण नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। एकँकारा वड मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाईआ। श्री भगवान सति निशाना, दो जहानां रिहा वखाईआ। अबिनाशी करता देवे दाना, दाता दानी इक हो जाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। कलिजुग होवे अन्त वैराना, वैरी घर घर नज़री आईआ। करे खेल वाली दो जहाना, साचे तख्त आसण लाईआ। तख्त निवासी हुक्मराना, हाकम इक्को इक वड्याईआ। सच संदेसा देवे धुर फ़रमाना, नर नरेशा रिहा जगाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी सब दा तुटे माणा, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के राजा राणा, रयत्त इक्को इक वखाईआ। सब नूं मन्नणा पए हरि का भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चौदां विद्या मात कुरलाणा, चौदां तबत नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी सद्दा इक सुणाईआ। सद्दा सुणाए हरि ब्रह्माद, पारब्रह्म वड्याईआ। साहिब सतिगुर वजाए नाद, अनादी नाद सुणाईआ। सन्तो भगतो जाओ जाग, गुरमुखो उठो वाहो दाहीआ। गुरसिखो सतिगुर चरणी जाओ लाग, वेला गया हथ्थ ना आईआ। पीर पैगम्बरां बुझण वाला चिराग़, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। लख चुरासी टुट्टण वाला साक, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द खण्डे करन वाला घात, घाउ गोबिन्द इक लगाईआ। बिन पुरख अकाल देवे ना कोए नजात, निज घर होए ना कोए सहाईआ। अन्तिम सब ने पौणी वफ़ात, फाता अन्त दए पढ़ाईआ। वेखणहारा कायनात, कादर करीम वड वड्याईआ। मुरीदो मुर्शद कोलों पीओ आबे हयात, हयाती सब दी दए बदलाईआ। जिस दा ईसा मूसा मुहम्मद लैंदा रिहा ख्वाब, सो ख़बर रिहा जणाईआ। उठ के चलो करो हक़ आदाब, बण बरदे सीस झुकाईआ। धुरदरगाही सुणो आवाज़, सो पुरख निरँजण रिहा सुणाईआ। आपणा आपणा धोवो दाग़, दुरमति मैल कम्म किसे ना आईआ। सतिगुर पूरे हथ्थ फड़ाओ वाग, नानक निरगुण गया समझाईआ। सृष्ट सबाई लग्गण वाली आग, चारों कुण्ट अग्नी तत्त वखाईआ। कर किरपा भगत भगवन्त लए काढ, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जिस नाल गुर गोबिन्द करे लाड, सो गुरसिख गुर गोदी बहि बहि खुशी मनाईआ। कूड़ी क्रिया छड्डो रसना स्वाद, आत्म परमात्म इक्को रस वखाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर दी सिख्या रखो याद, गुर शब्द गुर पंज तत्त गुरू ना कोए बणाईआ। कलिजुग अन्तिम मुक्के हद्द, हदूद कोए रहिण ना पाईआ। जो आया सो जाए लद्द, भाण्डा सब दा भन्न वखाईआ। वेखो घर प्रकाश अन्धेरी खड्ड, जोती जाता करे रुशनाईआ। निझर झिरना अमृत रस पीओ मध, गुर गोबिन्द जाम प्याईआ। पहली आदत दयो छड्ड, अग्गे पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। सम्मत उन्नी अन्तिम सब दा लेखा वखाए कढ्ढ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, सम्मत बीसा वेख वखाईआ। सम्मत बीसा चढ़े आ, लोकमात फेरा पाईआ। किसे ना बणे कोए गवाह, साचा संग ना कोए निभाईआ। किसे ना दिसे कोए राह, पल्लू गंढु ना कोए रखाईआ। किसे ना मिले सौखा लैणा साह, साह साह देण दुहाईआ। शाह सुल्तान ना देवे कोए पनाह, सब बैठण मुख भवाईआ। नाता तुटे पुत्रां माँ, पिता पूत ना गोद उठाईआ। जिन्हां जपया सतिगुर नाँ, तिन्हां अग्नी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी फेरा पाईआ। सति सतिवादी आवेगा। लख चुरासी ख़ाक मिलावेगा। भगत भगवान जगावेगा। सन्तां मेल मिलावेगा। गुरमुखां रंग रंगावेगा। गुरसिखां अक्ख खुल्हावेगा। प्रतख रूप वटावेगा। नस्स नस्स पन्ध मुकावेगा। हस्स हस्स गोद उठावेगा। दस्स दस्स राहे पावेगा। पुरख अकाल मिलावेगा। दूजा इष्ट नज़र कोई ना आवेगा। चार वरन इक्को घर बहावेगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध मुकावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण नेत्र नैण नैण नीर वहावेगा। ईसा मूसा मुहम्मद कलमा नबी इक्को गावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी कर वखावेगा। साची करने करे हरि निरँकारा, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गोबिन्द सूरा वड बलकारा, शब्दी रूप वखाईआ। नाम खण्डा तिक्खी धारा, चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। खड़ग खण्डा इक न्यारा, दो जहानां भय जणाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। इक खुल्हाए धर्म दवारा, धर्म दी जड़ जणाईआ। कलिजुग करे पार किनारा, नईया मँझधार डुबाईआ। जन भगतां करे सच प्यारा, सच प्रीती इक सिखाईआ। सन्तां देवे इक हुलारा, बण सेवक सेव कमाईआ। गुरमुखां वखाए इक घर बारा, घर घर विच पर्दा लाहीआ। गुरसिखां सुणाए नाद शब्द धुनकारा, अनहद नादी राग अलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआँ पुरीआँ गगन मण्डल पावे सारा, विष्न ब्रह्मा शिव हलाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारा, नूर ज़हूर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी सेवा लाईआ। निरगुण सेवा करे मात, जोती जाता वेस वटाइंदा। गुर गोबिन्द लिख के गया नाल कलम दवात, शाही रंग ना कोए वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलिजुग अन्तिम प्रगट होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी अपणा राह चलाइंदा। वरन बरन बणाए इक जमात, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो देंदा रिहा दात, वस्त अमोलक नाम झोली पाइंदा। सो साहिब कमलापात, समरथ आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हरि, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल बीस बीसा, बसन बनवारी आप जणाईआ। ताज रहे ना किसे सीसा, राज मिले ना कोए वड्याईआ। नव नौ चार

खाली खीसा, खालक खलक दए रुलाईआ। नाम निधान जिस जन पीता, तिस आपणा रंग वखाईआ। करे खेल इक अनडीठा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द नौ खण्ड पृथ्मी तपावणहारा अंगीठा, जोती लम्बू अग्नी इक्को लाईआ। पिछला वेला पिच्छे बीता, अग्गे लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीस वज्जे वधाईआ। बीस बीसा वज्जे नगारा, हरि नौबत नाम वजाइंदा। प्रगट होए कलि कल्की अवतारा, कलिजुग कलेश खपाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अथाह आपणा राह जणाइंदा। सृष्ट सबाई बण वणजारा, लख चुरासी हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी करनी तेरे लेखे लाइंदा। कलिजुग आया दर ते नट्ठा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म मैं तेरा पट्ठा, निक्का बच्चा दए दुहाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर लोकमात डटा, आपणा बल रखाईआ। तूं आपणी हथ्थीं लिख के दित्ता पट्टा, रसीद पिछली रिहा वखाईआ। मैं आपणे जोबन विच हट्टा कट्टा, बल इक्को इक धराईआ। लख चुरासी अक्खां विच पाया घट्टा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार वसाया पंजां तत्तां, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करी कुड़माईआ। मैं सब दी मारी मता, मनमति करी कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया मेरा ढोंदी रही भत्ता, बण सवाणी सेव कमाईआ। मैं चारों कुण्ट पाई फ़तहि, कूड़ा डंक वजाईआ। मेरे कोलों
६५१ कोई ना बचा, सब दे सिर ते चोट लगाईआ। तेरे चरणां हेठ बहि बहि सजा, दे माण मोहे वड्याईआ। तुध बिन पर्दा ६५१
१३ किसे ना कज्जा, सतिजुग त्रेता द्वापर मैनूं गए समझाईआ। मैं चार कुण्ट उठ उठ भज्जा, साचा यार नज़र कोए ना आईआ। १३
मुहम्मद कहिन्दा रिहा मैं तेरा दोस्त पक्का, अन्तिम बैठा मुख भवाईआ। ख़ाली दिसे मदीना मक्का, मकबरे नाअरा रहे लगाईआ। जिध्धर जावां मिले धक्का, मेरा संग ना कोए रखाईआ। मेरे कोलों सब दीआं शरमाउदीआं अक्खां, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। हुण तेरी चरणी आ के ढठ्ठा, परवरदिगार बेपरवाहीआ। भेव तैनूं साचा दस्सा, आप आपणा रिहा जणाईआ। जिउँ भावे तिउँ लै रखा, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। अन्त रखी तेरी आसा, आस आसा विच वखाईआ। फिरी दरोही पृथ्मी अकाशा, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला तेरा नूर ज़हूर ग़फ़ूर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। मेरा वेख ख़ाली कासा, तैनूं तरस ज़रा ना आईआ। चौदां तबक ना देवे कोई दिलासा, दिलगीर होया फिरां वाहो दाहीआ। तेरा इक नूर प्रकाशा, प्रकाशवान तेरी खुदाईआ। तकदीर तकबीर तदबीर तस्वीर तेरी रासा, तेरा दर वड्डा शहिनशाहीआ। चौदां सदीआं दा इक प्यासा, बूँद स्वांती मंग मंगाईआ। वेखीं मैनूं कर ना छड्डीं हासा, मेरा ज़ोर ना चले राईआ। मैं तेरे विच्चों उपजी तेरी शाखा, तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। पुरख

अबिनाशी हो मेहरवान धुर संदेस सुणाइंदा। कलिजुग वेख मार ध्यान, श्री भगवान तेरा लेख मुकाइंदा। लहिणा देणा चुकावे आण, मकरूज कर्ज़ा आपे लाहिन्दा। बीस बीसा लए पहिचाण, बेपहिचाण आप समझाइंदा। सतिजुग बच्चा उठे बाल अंञाण, श्री भगवान आप जगाइंदा। कर किरपा देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। पन्द्रां कत्तक कर प्रधान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सृष्ट सबाई दे ज्ञान, अक्खर आखर आप पढ़ाइंदा। अल्फ़ ये ना कोए नज़ाम, नज़म नग़मा आपणे विच समाइंदा। करे खेल इक अमाम, आमद आपणी आप जणाइंदा। पहलां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा पैग़ाम, सच संदेसा इक सुणाइंदा। अन्तिम खेल वेखे आण, नूर नुराना नूर धराइंदा। सतिजुग साचा बणे विधान, पिछली रेखा सर्ब मिटाइंदा। सत्तां दीपां एका झुल्ले निशान, सतिगुर गोबिन्द आप झुलाइंदा। सृष्ट सबाई मन्नणी पए आण, सिर अग्गे ना कोए उठाइंदा। करे खेल श्री भगवान, आपणी करनी आप जणाइंदा। अगला लेखा हुण दस्सया हो हैरान, थोड़ा भेत पहली चेत तक्क छुपाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग रीती इक अतीती, जन भगतां सच प्रीती, प्रीतीवान इक समझाइंदा ।

❇ २३ माघ २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड माल चक्क ज़िला अमृतसर❇

आदि जुगादी इक्को राह, जुग जुग खेल कराइंदा। सतिगुर पूरा पकड़े बांह, गुर शब्दी दया कमाइंदा। साचे मार्ग दए लग्गा, रहबर इक्को राह जणाइंदा। नव दवारे पार करा कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सुखमन टेडी बंक पार करा, ईड़ा पिंगल मोह चुकाइंदा। अमृत जाम इक प्या, सच सरोवर अशनान कराइंदा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ा, साची हाटी इक खुल्ह़ाइंदा। सुरती शब्दी मेल मिला, एका बन्धन पाइंदा। दीन दयाल बण मलाह, बेड़ा कंध उठाइंदा। पौड़े पौड़े लए चढ़ा, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। आत्म सेज सुहञ्जणी डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जिस जन आपणी किरपा दए करा, कर किरपा भेव जणाइंदा। सो गुरसिख गुरमुख गुर सतिगुर मिले आ, राह विच ना कोए अटकाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता दए जुड़ा, जुड़या नाता ना कोए तुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए वखा, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। ईश जीव एका घर वसा, जगदीश खुशी मनाइंदा। निर्मल नूर कर रुशना जोती जाता डगमगाइंदा। दस्म दवारी खेल रचा, आपणा रंग चढ़ाइंदा। आपणा पर्दा आप उठा, सुन अगम्म खोज खुजाइंदा। सुन अगम्मी डेरा ढाह, थिर घर आसण लाइन्दा। थिर घर साचे सोभा पा, सचखण्ड वड्याइंदा। सचखण्ड हरि भेव जणा, अभेद आपणा भेव चुकाइंदा। जन भगतां मार्ग

दए जणा, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। साचा सोहला दए पढ़ा, पर्दा उहला आप उठाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म ढोला गा, सोहँ अक्खर निष्अक्खर धार चलाइंदा। जगत विचोला वेखे थाँ थाँ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक्को दस्से, हर हिरदे अन्तर हरि जू वसे, भगत दुआर इक सुहाइंदा। सच्चा मार्ग सोहँ धार, हँ ब्रह्म कुड़माईआ। सो पुरख निरँजण वखाए ठांडा दरबार, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। आदि जुगादी जुग जुग विहार, जुग चौकड़ी जीवण दाता खेल कराईआ। लेखा जाणे जीव जंत अन्तर बाहर, गुप्त ज़ाहर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा राह, शब्दी गुर बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचा नाम साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। निउँ निउँ लागो सतिगुर पाउँ, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाइंदा। पकड़ उठाए आपे बांहों, फड़ बांहों गले लगाइंदा। एथे ओथे देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे कराए सच न्याउँ, आदल इक्को नज़री आइंदा। आत्म परमात्म ढोला साचा गाओ, जगत वछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देवे दस्स, परमात्म आत्म इक्को रस, रस फीका जगत वखाइंदा। किरपा अन्दर वसे ठाकर, कृपानिध वड्डी वड्याईआ।

किरपा अन्दर डूँग्घा सागर, गहर गम्भीर आप रखाईआ। किरपा अन्दर मेल मिलावा काया गागर, घर घर विच खुशी रखाईआ। किरपा अन्दर बणाए सच सौदागर, वणज वणजारा इक्को हट्ट चलाईआ। किरपा अन्दर देवे आदर गुरमुख साचे होए सहाईआ। किरपा अन्दर सिदक सबूरी देवे सादर, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। किरपा अन्दर करीम कादर, कुदरत करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा किरपन नाल मिलाईआ। मेहर करे हरि मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जन भगतां देवे नाम निशाना, निशाना इक्को इक जणाइंदा। आत्म परमात्म बख्शे सच ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। दीवा बाती इक महाना, कमलापाती आप जगाइंदा। जो जन रसना गाए साचा गाणा, गोबिन्द आपणा रंग चढ़ाइंदा। साहिब सुल्तान ठाकर स्वामी बीना दाना, वड मेहरवान मेहर नज़र इक टिकाइंदा। तारनहारा इक्को एक आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जन भगतां करे बुध बिबेक, विवेकी आपणा राह जणाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। निज नेत्र गुरमुख विरला लए पेख, जिस लोचण आप खुल्हाईआ। इक्को वखाए सच्चा देस, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवारा हरि निरँकारा मुच्छ

दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीश ना मूंड मुंडाईआ। सदा सदा सद रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सज्जण लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। तिस साहिब करो आदेश, जिस मिल्या दुःख रहे ना राईआ। जिस दी महिमा करे बाशक शेश, दोए सहँसर जिह्वा हलाईआ। आदि जुगादी आपे आप, घर आपणे सोभा पाइंदा। सृष्ट सबाई माई बाप, लख चुरासी गोद उठाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहारा जाप, नाम निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। सदा सुहेला दस्सणहारा पूजा पाठ, मंत्र अन्तर आप पढ़ाइंदा। सुहावणहारा तीर्थ ताट, तट किनारा सोभा पाइंदा। वसणहारा तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाइंदा। मिटावणहारा कोटन पाप, पतित पापी आप तराइंदा। पाक रसूल पाकी पाक, परवरदिगार वेस वटाइंदा। जन भगतां खोल्लणहारा ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहइंदा। दस्सणहारा भविख्त वाक्, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जन सन्तां बणनहारा सच्चा साक, हरि सज्जण आप अख्वाइंदा। गुरमुखां धूढ़ी बख्शणहारा ख़ाक, चरण कँवल टिक्का इक लगाइंदा। गुरसिखां देवणहारा दात, आप आपणी दया कमाइंदा। चार वरन बणावणहारा इक जमात, साची सिख्या इक समझाइंदा। उपजावणहारा कायनात, सृष्ट सबाई आपणे रंग रंगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा साथ, सगला संग निभाइंदा। हर घट वसे हरि जू आप, आप आपणा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब कला समराथ, महिमा अकथ आप जणाइंदा ।

६५४
१३

❇ २३ माघ २०१६ बिक्रमी गंडा सिँघ दे गृह दराजके ज़िला अमृतसर ❇

सति श्री श्री अकाल, अक्ल कल हरि अख्वाइंदा। सति पुरख निरँजण दीन दयाल, दयानिध दया कमाइंदा। सचखण्ड वसणहारा सच्ची धर्मसाल, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण जोती जाता बेमिसाल, नूर नूराना डगमगाइंदा। एकँकारा जुगा जुगन्तर जाणी जाण, बेअन्त बेपरवाह आपणी धार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति सति समझाइंदा। सति पुरख इक अकाल, दूजी अवर ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। निरगुण सरगुण करे प्रधान, लख चुरासी बन्धन पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच संदेसा दे फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति इक वड्याईआ। सति अकाला गुर गोपाला, महिमां अकथ कथी ना जाईआ। दीना बन्धन दीन दयाला, दीनन रक्षया आप कराईआ। जुग चौकड़ी मार्ग दे लोकमात सुखाला, जीव जंत करे पढ़ाईआ। आत्म

६५५
१३

परमात्म वसे नाला, सगला संग निभाईआ। निरगुण दीआ बाती करे उजाला, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी खाला, पंज तत्त करे रुशनाईआ। वस्त अमोलक देवे नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ीना इक वखाईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, महाबली सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति श्री अकाल वड्डी वड्याईआ। अकाल अकाल बेपरवाह, बेअन्त खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बण मलाह, दो जहानां बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे सलाह, साची सिख्या इक समझाइंदा। शब्द अगम्मी साचा ढोला गा, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जणा, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। अञ्जील कुरानां वेख वखा, तीस बतीसा आप जणाइंदा। बेपरवाह बेऐब नाउँ इक खुदा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सच दवारे आसण ला, मुकामे हक़ इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति आपणा नाउँ वखाइंदा। सति नाउँ सति पुरख, सति सतिवाद वड्डी वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता दुःख ना कोए जणाईआ। निरगुण जोत वखाए सच आदर्श, दूजा इष्ट ना कोए दृढ़ाईआ। जन भगतां देवे निज घर दरस, गृह मन्दिर पर्दा लाहीआ। अमृत मेघ देवे बरस, निझर झिरना आप झिराईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां उत्ते करे तरस, फड़ बांहों लए उठाईआ। लख चुरासी कलिजुग जीव जंत रहे भड़क, नव नौ पई दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति दए वड्याईआ। सति आप सति जाप, सति सति समझाइंदा। सति पुरख अकाल बाप, गुर शब्द बेटा इक समझाइंदा। सति पूजा सति पाठ, सति मंत्र इक दृढ़ाइंदा। सति तीर्थ सति घाट, सति तट किनारा इक उपाइंदा। सति सरोवर मारे ठाठ, अमृत रस इक वखाइंदा। सति बंधाए साचा नात, सच प्रीती इक समझाइंदा। सच सुणाए अगम्मी गाथ, जुग जुग शब्दी नाद वजाइंदा। सति देवणहारा दात, दाता दानी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति इक्को घर वखाइंदा। सति सति पूरा सतिगुर, दूजी अवर ना कोए वड्याईआ। लेखा लेख जाणे धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। आत्म अन्तर एका राग सुणाए साची सुर, अनहद नादी नाद वजाईआ। शब्द अगम्मी चढ़े घोड़, लोआँ पुरीआँ खोज खुजाईआ। भगत भगवान पए बौहड़, सति असति दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सति श्री श्री सति, सति सति वड्याइंदा। देवणहारा ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। जणावणहारा सच तत्त, तत्तव तत्त खोज खोजाइंदा। वेखणहार बहत्तर नाड़ी रत्त, रत्ती रत्त पर्दा लाहइंदा। जानणहारा मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, जीव जंत राह चलाइंदा। सन्तन मेला हस्स हस्स, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। गुरमुख

उठाए नट्ठ नट्ठ, बण पांधी सेव कमाइंदा। गुरसिखां अन्दर जाए वस, आप आपणा रंग चढ़ाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, श्री सति इक्को दया कमाइंदा। सति श्री श्री निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। थिर घर साचे शब्द दुलारा लए उठाल, हुक्म हाकम इक जणाईआ। जुग चौकड़ी चले नाल नाल, नव नौ चार वंड वंडाईआ। खेले खेल ख़ालक निराल, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक दृढ़ाईआ। साचा मंत्र सति जैकार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सिफ्त सालाही गुर अवतार, पीर पैगम्बरां कलमा आप पढ़ाइंदा। कागद कलम शाही पावे सार, लिख लिख कातब आपणी कार कमाइंदा। आलम उल्मा कोए ना करे विचार, भेव अभेद ना कोए समझाइंदा। श्री भगवान अबिनाशी करता नौजवान वसे सच सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आसण लाइंदा। खेल करे आप अकाल, कलिजुग काली रैण सर्ब मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। करे करनी आप अकाला, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जीवण जुगत दए समझाईआ। आत्म परमात्म दस्से राह सुखाला, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ।
६५६
१३
सतिगुर नानक सच सच सति सति दे के गया हवाला, साची सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंका इक वजाईआ। साचा डंका नाम अकाल, कलिजुग अन्तिम आप वजाइंदा। पीर पैगम्बर रखे नाल, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दो जहान सुणाए ताल, ताल तलवाड़ा इक वड्याइंदा। भगत भगवान आपे भाल, सन्त सज्जण वेख वखाइंदा। गुरमुख सुरत लए उठाल, अकाल मूर्त मेल मिलाइंदा। गुरमुख मोए लए ज्वाल, अमृत जाम इक प्याइंदा। एथे ओथे देवे माण, दो जहानां सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सति जैकारा सति श्री अकाल, सतिगुर पूरा इक्को लाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल धराइंदा। कलिजुग कल धरे सति करतारा, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। एकँकारा कर पसारा, अक्ल कल धार चलाईआ। आदि निरँजण जोत सरूपी खेल अपारा, भूपत भूप सच्चा शहिनशाहीआ। अबिनाशी करता राज राजान बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। श्री भगवान सत्त रंग निशाना दए हुलारा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आप हिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे विगसे वेखणहारा, सच महल्ले सोभा पाईआ। सचखण्ड सोहे इक दवारा, जिस घर सति सति समाईआ। श्री श्री नर कर प्यारा, हरि आपणा रंग रंगाईआ। अकाल अकाल वणज व्यपारा, इक्को हट्ट वखाईआ। गुरमुख बोले बोलणहारा, जो सतिगुर दर्शन पाईआ। रसना जिह्वा पार किनारा, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म

इक विहारा, बिवहारी आप जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यारा, निरगुण सरगुण रिहा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां इक्को राह जणाईआ। गुरमुख साचा बोले सच, सति सति जणाइंदा। काया माटी भाण्डा कच्च, कम्म किसे ना आइंदा। मन वासना जगत रिहा नच्च, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। कूड़ी तृष्ना देवे ना कोए तज, गुर का शब्द ना कोए कमाइंदा। चरण प्रीती जाए ना कोए बज्झ, नेत्र दरस कोए ना पाइंदा । सनमुख कोए ना बहे सज, आसण सिँघासण वेखण कोए ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बोला इक दृढ़ाइंदा । साचा अक्खर जो जन बोले, निरगुण दाता दया कमाईआ। आत्म ताकी पर्दा खोल्हे, बजर कपाटी पार कराईआ। सुरत सवाणी शब्दी मौले, मौला इक्को नज़री आईआ। उलटा करे नाभ कौले, अमृत झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए पढ़ाईआ। साची सिख्या साचा बोला, अनबोलत आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वसे कोला, घर घर विच आसण लाइंदा। आदि जुगादि रहे अडोला, ना डोले ना कोए डुलाइंदा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया पाए रौला, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा नर नरेशा, निरवैर पुरख जणाईआ। सच साहिब को करो आदेशा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आदि जुगादि जिस दा इक्को वेसा, गुर अवतार नाउँ प्रगटाईआ। जन भगतां करे साचा हेता, नित नवित्त वेख वखाईआ। सन्तन खोल्हे आपणा भेता, भेव अभेद समझाईआ। गुरमुखां जणाए अन्तर रेखा, पर्दा दूई आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बोला इक पढ़ाईआ। साचा बोल बोल होए निहाल, गुरमुख आत्म वज्जी वधाईआ। सतिगुर मिल्या दीन दयाल, सति सति दए समझाईआ। श्री रूप इक अकाल, अक्ल कल वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाअरा इक दृढ़ाईआ । साचा नाअरा लोक परलोक, परम पुरख आप जणाइंदा। सति धर्म दा सच सलोक, सोहला इक्को राग वखाइंदा। सुणावणहारा धर्म कोट, धर्म दवारा इक वड्याइंदा। कर्म दुआर लगाए चोट, साचा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवाना, एका एक जणाईआ। सति श्री नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। अकाल पुरख वड मेहरवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो बोलें सो पुरख सुजाना, पारब्रह्म दए वड्याईआ। होए निहाल घर सज्जण पाणा, मिले मेल साचा माहीआ। बिन पुरख अकाल कूड़ा नाता विच जहाना, साचा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच जैकारा इक्को लाईआ। सच जैकारा जाए लग्ग, हरि सज्जण आप लगाइंदा। करे

खेल सूरा सरबग्ग, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार हद्द, राह इक्को इक वखाइंदा। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव गए लद्द, पीर पैगम्बर गुर अवतार सेव कमाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर भगत भगवन्त गए बज्झ, साची रीती मात वखाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त गृह मन्दिर गए तज, उच्चे टिल्ले पर्बत आप फिराइंदा। कोटन कोटि मुल्ला शेख़ मसायक करदे फिरन हज्ज, हज़रत नज़र किसे ना आइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले बैठे सज, शहिनशाह हथ्थ ना किसे मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक वड्याइंदा। साचा नाम पुरख समरथ, श्री भगवान आप चलाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ वड्याईआ। सम्बल बहे सत्थर घत, यारड़ा सत्थर इक हंढ्ढाईआ। नव नौ चार मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल होए साथ, सगला संग निभाईआ। पुरीआँ लोआँ पाए रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। लेखा लिखे बिन कलम दवात, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक अकाल वड्डी वड्याईआ। इक अकाल वेखे मात, निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। नाता तोड़े क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जमात, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। उम्मत नबी पढ़ाए आयत, शरीअत लेखा आप चुकाइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। भेव चुका त्रिलोकी नाथ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। कलिजुग पार किनारा करे घाट, पत्तण इक्को इक वखाइंदा। सतिजुग साची देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाअरा सति इक जणाइंदा। नाअरा सति हरि लगाउणा, कलिजुग अन्त मिले वड्याईआ। पिछला लेखा सर्ब मुकाउणा, मुक्के जगत लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी डेरा ढाउणा, सत्त दीप ना कोए चतुराईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, राज राजान रहिण ना पाईआ । एका डंका नाम वजाउणा, दो जहानां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बोला इक दृढ़ाईआ। साचा बोला दृढ़ विश्वास, विश्व आपणी कार कराइंदा। प्रगट हो पुरख अबिनाश, अबिनाशी राह चलाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम इक समझाइंदा। साचा नाम अगम्म अथाह, नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण रहे गा, गा गा शुकर सर्ब मनाइंदा। भगत भगवन्त मिलण दा चा, चाउ घनेरा इक दृढ़ाइंदा। फड़ फड़ उठाए बांह, बांहों फड़ आप जगाइंदा। नथाव्याँ देवणहारा थाँ, थान थनंतर इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग रंगे रंगीला, रहमत हरि जू आप कमाईआ। प्रभ मिलण दा सच वसीला, गुरू शब्द दए जणाईआ। वेख वखाए उच्चा टीला, पर्बत चोटी फेरा पाईआ। भगत भगवान बणाए इक कबीला, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। प्रगट होए छैल छबीला, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति रूप समाईआ । सति समाया सति अख्वाया, सति पुरख निरँजण भेव कोए ना पाइंदा। सति दाई सति दाया, सति साची सेव कमाइंदा। सति निरगुण बणाए माया, सति वेखे कूड़ी छाया, छप्पर छन्न ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे सतिवाद, सति सति जणाइंदा। जिस खेल कराया बोध अगाध, अनादी नाद वजाइंदा। सो साहिब हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां करे लाड, सन्त सुहेले गोद बहाइंदा। गुरमुख लख चुरासी विच्चों काढ, इक्को दर वखाइंदा। गुरसिखां देवणहारा दात, नाम निधाना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति श्री श्री अकाल, अकाल आपणा रंग वखाइंदा। हरि साचा नाअरा लावेगा। इक्को नाम जपावेगा। इक्को इष्ट रखावेगा। इक्को दृष्ट खुल्हावेगा। इक्को मार्ग पावेगा। कलिजुग कूड़ मिटावेगा। सतिजुग राह चलावेगा। चार वरनां इक्को घर वखावेगा। साची सरन इक दरसावेगा। गुर गोबिन्द मेल मिलावेगा। सच निशान झुलावेगा। राज राजानां चरणी लावेगा। पंच प्रधान बणावेगा। धुर संदेस सुणावेगा। नर नरेश अख्वावेगा । कलि कल्की जामा पावेगा। सम्बल डेरा लावेगा। डंका नाम वजावेगा। राउ रंक उठावेगा। मेहरवान बण जावेगा। पुरख अकाल इक्को इष्ट मनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावेगा। गोबिन्द सूरा उठ्ठेगा। गुरमुखां उपर तुठ्ठेगा। लख चुरासी लुट्टेगा। कलिजुग दी जड़ पुट्टेगा। शौह दरयाए सुट्टेगा। दीनां मज़्बां कुट्टेगा। जूठयां झूठयां पुच्छेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जेधा सूरबीर कदे ना लुकेगा। सूरबीर अख्वावेगा। शब्दी तीर चलावेगा। दो जहानां पार करावेगा। अद्धविचकार ना कोए अटकावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नीर वहावेगा। करोड़ तेतीसा कुरलावेगा। धीरज धीर ना कोए धरावेगा। पीर पैगम्बर हू हू नाअरा लावेगा। चौदां तबक सबक ना कोए सिखावेगा। चौदां लोकां कुण्डां लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म मनावेगा। साचा हुक्म मनाएगा। धुर फ़रमाना आप सुणाएगा। निहकलंक फेरा पाएगा। जीव जंत सर्ब जणाएगा। बचया कोए रहिण ना पाएगा। बीस बीसा खेल कराएगा। हरि जगदीशा नाउँ वडयाएगा। छत्र एका सीस झुलाएगा। दूजा कोए रहिण ना पाएगा। सतिजुग रीती आप वखाएगा। कलिजुग नीती आप बदलाएगा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाअरा इक्को इक सुणाएगा। नाअरा इक्को हक़ लगावेगा। गुर अवतार मनावेगा। पीर पैगम्बर सलाहवेगा। दो जहान गावेगा। भगत भगवान शुकर मनावेगा। बण विचोला फेरा पावेगा। पर्दा उहला आप उठावेगा। मौला आपणा रंग चढ़ावेगा। परवरदिगार हुक्म मनावेगा। मुकामे हक़ सोभा पावेगा। लाशरीक नाउँ धरावेगा। एकँकारा रूप वटावेगा। फ़तहि डंका इक वजावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप करावेगा। साचा खेल करेगा। सच सिँघासण चढ़ेगा। सीस जगदीश ताज धरेगा। दो जहानां नाल लड़ेगा। जो घड़या सो भंनेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कर मूल ना डरेगा। डर भय ना को भगवान, भ्यानक रूप ना कोए जणाईआ। कलिजुग मेटे जीव शैतान, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। सच जणाए इक ईमान, अमाम इक्को दए दरसाईआ। कलमा पढ़ाए हक़ कलाम, कायनात ख़बर जणाईआ। सृष्ट सबाई दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर पन्ध मुकाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। हरिजन साचे वेखे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक जणाईआ। साचा नाम एको एक, आदि जुगादि जणाइंदा। साचा नाम साची टेक, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। साचा नाम निरगुण सरगुण पेख, निरवैर पुरख कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाइंदा। साचा नाम आत्म मंत्र, इक्को इक दृढ़ाईआ। साचा नाम जुगा जुगन्तर, लख चुरासी विच टिकाईआ। साचा नाम सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घर घर रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक दरसाईआ। साचा नाउँ हरि निरँकारा, निरगुण इक्को इक जणाइंदा। साचा नाउँ सति जैकारा, सति सतिवादी आपे लाइंदा। साचा नाउँ पुरख अकाला, श्री भगवान आप समझाइंदा। साचा नाउँ साचा बोला विच संसारा, रसना जिह्वा ढोला गाइंदा। साचा नाउँ तोला अगम्म अपारा, अलख अगोचर नज़र किसे आइंदा। साचा नाउँ कलिजुग अन्त बणे वणजारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। साचा नाउँ सतिजुग सच करे प्यारा, सच प्रीती इक वखाइंदा। साचा नाउँ सति पुरख दी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। साचा नाउँ वसे थिर घर दवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। साचा नाउँ सति पुरख दा सुत दुलारा, पिता इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाम इक वड्याइंदा। साचा नाम सोहँ सो, पुरख अकाल दए वड्याईआ। परमात्म आत्म हो, आत्म परमात्म विच समाईआ। कर प्रकाश जोती लो, निरगुण नूर नूर धराईआ। सच संदेसा ढोआ ढो, नाउँ निरँकार करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण कर कर मोह, मुहब्बत इक्को इक दरसाईआ। साचा बीज दित्ता बो, पत्त डाली आप महकाईआ। हरि

का भेव ना जाणे को, ढूंड थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक वखाईआ। साचा नाम इक्को वेख, बिन अक्खां रिहा जणाईआ। ना कोई रंग रूप ना दिसे रेख, निष्अक्खर खेल कराईआ। सो नाम सच्चे साहिब विच प्रवेश, अक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंत्र इक्को इक दृढ़ाईआ। इक्को मंत्र हरि गोबिन्द, गोबिन्द दाता आप जणाइंदा। सगल भवण की मेटे चिन्द, चिन्ता रोग ना कोए वखाइंदा। भगत भगवान बणाए साची बिंद, सुत अनादी नाउँ प्रगटाइंदा। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गवर वेख वखाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, सर सरोवर इक भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वखाइंदा। साचा नाउँ दए वखाल, आप आपणी दया कमाईआ। जिस जन बणाए आपणा लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक बणाईआ। जोती दीपक सच्चा बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अनहद नादी नाद वजाए ताल, ताल तलवाड़ा इक दरसाईआ। सतिगुर चरण प्रीती दए सिखाल, सच प्रीती हरि का नाउँ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर एका नाम एका राम एका अमृत एका जाम, इक घनईया एका शाम, एका बंसरी मधुर धुन सुणाईआ। मधुर धुन सच संगीत, सरंगी सारंग ना कोए वखाइंदा। गावणहारा इक अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। भगत भगवान चलाए रीत, रीती आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुखां काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। तिस नाम आवे चीत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हरि का नाम वसे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम देवे वर, वर इक्को घर कराइंदा। साचा नाम दाद जन मीता, मित्र प्यारा आप जणाईआ । साचा नाम सिफ्त करे अठारां ध्याए गीता, भगत भगवन्त इक्को इक समझाईआ। अर्जण कृष्न दी जाणो रीता, अनडीठी नज़री आईआ। नानक गोबिन्द नाम प्याला जिस ने पीता, ना मरे ना जाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सन्त भगत आपणे जिहा कीता, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जिस साहिब सतिगुर पूरन परमेश्वर मिल्या मीता, शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर मसीत ना खोजण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरनां इक्को नाम दरसाईआ। इक्को नाम हरी हरि नरायण, नर हरि सच्चा आप जणाइंदा। सिफ्त सालाही सारे कहिण, कह कह अन्त कोए ना पाइंदा। लिख लिख थक्के साक सैण, सज्जण लोकमात प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस आपणा घर वखाइंदा। नाम दाता पुरख बिधाता, पुरखोतम

वड वड्याईआ । ना कोई ज़ात ना कोई पाता, वरन गोत ना कोए रखाईआ। आत्म ब्रह्म जिस पछाता, पारब्रह्म वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण जुड़े नाता, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। नज़री आए इक इकांता, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी गाए गाथा, सो साहिब निरँजण नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति श्री अकाल इक। परम पुरख दयाल इक। परवरदिगार सांझा यार इक। लाशरीक मददगार इक। राम रहीम रहमान इक दो जहानां अमाम इक शाह सुल्तानां विधान इक। हुक्मराना सुल्तान इक, सच सुच्च निशान इक। दीन मज़्ह़ब ईमान इक। अञ्जील कुरान इस्लाम इक। खाणी बाणी पुराण इक। शास्त्र सिमरत ज्ञान इक। शब्द गुरू नौजवान इक। गुरमुख चतुर सुजान इक। भगत भगवान जोत इक। शब्द नाद धुनकार बोध अगाध लेख इक। नित नवित्त भगतां हित पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जामा भेख इक। निरवैर पुरख दीन दयाल सचखण्ड धर्मसाल वखाए इक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथवी सत्त दीप दो जहानां नज़री आए आप इक। आणा जाणा लेखा रहे ना कलिजुग मात। श्री भगवान गोदी चुक्कया, जो जन मंगे साची दात। हरिजन बूटा कदे ना सुकया, श्री भगवान देवणहार नजात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी लेखा लिख दए नाल कलम दवात। आवण जावण मुक्के पन्ध, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। धर्म राए दा टुटा फंद, मात गर्भ ना कोए भवाईआ। भगत भगवान दा चढ़े चन्द, घर साचे होए रुशनाईआ। एथे मिले आत्म अनन्द, अग्गे जोती जोत समाईआ। पिछली बीती गई हंढु, अगली सतिगुर लेखे लाईआ। लहिणा देणा चुकाए जीउँ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। अमृत आत्म राती सुत्तयां धार प्याए सागर सिन्ध, अमिउँ रस इक्को इक चुआईआ। हरिजन तेरी लेखे लग्गे हरि दे जिंद, ज़िंदगी हयाती हरि आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीवण जीवण जीवण विच बदलाईआ।

❇ २४ माघ २०१६ बिक्रमी लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड भूरे ज़िला अमृतसर ❇

सचखण्ड निवासी साहिब बख्शंदा, बख्शश इक्को इक जणाईआ। दीन दयाल गुणी गहिंदा, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। थिर घर आपणा चरण छुहंदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। खोल्ह़णहारा साचा कुण्डा, आपणी हथ्थीं पर्दा लाहीआ। फड़ उठाए निक्का मुंडा, सुत बाला इक जगाईआ। सच संदेसा इक सुणाउँदा, धुर फ़रमाना राग अल्ह़ाईआ। हुक्मी हुक्म

इक जणाउँदा, बेअन्त बेपरवाहीआ। साचे मार्ग आपे लाउँदा, रहबर बणे नूर खुदाईआ। करनी करता आप कराउँदा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। सुत दुलारा निक्का बाला, थिर घर पर्दा लाहीआ। निरगुण निरगुण हो जवाना, जोबन आपणा आप प्रगटाईआ। सति धर्म दा लै निशाना, सच दवारे आप झुलाईआ। दोए जोड़ चरण कँवल करे ध्याना, श्री भगवान ध्यान लगाईआ। हउँ सेवक नढ्ढा बाल अञ्याणा, तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। कर किरपा प्रभ दे माणा, दर तेरे आस रखाईआ। तेरा ढोला इक्को गाणा, सोहँ अक्खर करां पढ़ाईआ। तेरी रचना वेख वखाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा जणाईआ। सुत शब्द सच कर चाउ, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। पुरख अकाल पकड़ बांहों, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक दृढ़ाए साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा इक जणाइंदा। आपे बण बण पिता माउँ, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। वखावणहारा साचा थाउँ, सचखण्ड दवारा इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। सुत दुलारे उठ बल धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। थिर घर निवासी हो तैयार, थिर दरबारे कुण्डा लाहीआ। आपणी सेज आप स्वार, आप आपणा संग निभाईआ। जुग चौकड़ी तेरी धार, निरगुण सरगुण आप चलाईआ। गुर अवतार तेरी करदे रहे याद, ब्रह्म ब्रह्माद नाद वजाईआ। दो जहानां सज्जण साक, सगला संग इक्को नज़री आईआ। तेरा नाउँ पाकी पाक, पतित पुनीत तेरी वड्याईआ। तूं साहिब दा बण भविख्त वाक्, सच संदेसा इक सुणाईआ। तेरी मेरी इक्को ज़ात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा जणाईआ। सुत दुलारे लैणा जाण, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सति पुरख सति निशान, तेरे हथ्थ फड़ाइंदा । विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, संसा कोए नज़र ना आइंदा। बोध अगाधा धुर फ़रमान, तेरा इक्को राग वखाइंदा। लोआँ पुरीआँ वेख मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा राह जणाइंदा। गुर अवतार तेरी सन्तान, पीर पैगम्बर तेरा बंस बणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, तेरी सिफ्त सालाही सिफ्ती सिफ्त सिफ्त जणाइंदा। तेरी महिमां करे अञ्जील कुरान, लिख लिख लेखा सर्ब वखाइंदा। तेरा महल अटल उच्च मकान, थिर दवारा आप वसाइंदा। लोकमात हो प्रधान, सच मर्दानगी आप जणाइंदा। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बल मेरे विच टिकाइंदा। लख चुरासी पा आण, सिर सिर हुक्म मनाइंदा। एका दे धुर फ़रमान, श्री भगवान आप समझाइंदा। कलिजुग अन्त जगत होए हैरान, हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। साध सन्त सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। गुरमुख अन्दर वड़ वड़ करन ध्यान, नेत्र नैण ना कोए खुलाइंदा। गुरसिख खाली झोली मंगण दान, नाम भण्डारा कोए ना पाइंदा।

कलिजुग कूड़ी क्रिया होई शैतान, शरअ घर घर आप टकराइंदा। मुल्ला शेख़ होए बेईमान, मस्त अलमस्त नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। साचे सुत हो तैयार, हरि साचा सच जणाइंदा। थिर घर दवारे निकल बाहर, भेव अभेद खुलाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ लताड़, ज़ोर तेरा इक जणाइंदा। लख चुरासी कर ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। सच संदेसा दे विच संसार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। दीन मज़्हब रोवण ज़ारो ज़ार, शरअ शरीअत पार ना कोए कराइंदा। ख़ालक ख़लक तलबदार, दीद ईद चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। पीर पैग़बर गुर अवतार आपणी करनी कर कर गए आपणी वार, अन्तिम निरगुण राह सर्ब तकाइंदा । पंज तत्त चोला ना कोए प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन ना कोए पाइंदा। साचा डंका अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ फड़ाइंदा । राउ रंकां मार मार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। ग़रीब निमाणयां दे सहार, सिर सदका तेरा इक्को नज़री आइंदा। तेरा लेखा जाणे हरि करतार, निरगुण आपणी जोत जगाइंदा। निहकलंक नाउँ रख अगम्म अपार, करनी आपणी आप समझाइंदा। साचा खेड़ा दए वखाल, बिन नेत्र आप जणाइंदा। जिस घर वसे दीन दयाल, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। सचखण्ड दी सच्ची धर्मसाल, लोकमात आप प्रगटाइंदा। मुर्शद मुरीदां सुणे हाल, हरिजू आपणा फेरा पाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जणाइंदा। सुत दुलारा नीकन नीका, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दस्स इक तरीका, बिन तहिरीर कर लिखाईआ। मेरा दिसे ना कोई शरीका, शिरकत कोए नज़र ना आईआ। खेल करावां इक हकीका, हकीकत सब नूं दयां जणाईआ। नज़री आवां हो नजदीका, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरा नाम निशाना दस्सां ठीका, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। सति सति जणावां त्रैगुण अतीता, त्रैभवण तेरी शरनाईआ। पिछला वेला कलिजुग बीता, अग्गे इक्को मार्ग दयां लाईआ। दीन मज़्हब लख चुरासी परखां नीता, ज़ात पात खोज खुजाईआ । माया ममता हउमें हंगता भंनां कौड़ा रीठा, ठोकर इक्को नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा हरि जू इक्को वर, थिर घर दवारे सुत दुलारा मंग मंगाईआ। सुत दुलारा दोए जोड़े, चरण कँवल ध्यान लगाया। तेरा कीता कोई ना मोड़े, दो जहानां सके ना कोए उलटाया। सस्से उपर ला होड़े, होका दे दे गीत जणाया। हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़े, भगत भगवन्त वेख वखाया। सेवा करे बांके छोहरे, शहिनशाह तेरे रंग रंगाया। मेरा ना कोई चले ज़ोरे, ज़ोर तेरा इक जणाया। मेरी तेरे हथ्थ डोरे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाया। श्री भगवान देवे दात, अनमुलड़ी आप वरताईआ। शब्द सुत मेरा नाउँ वड करामात, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। चार वरन बणा जमात, बरन कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल जुड़े नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। गुर शब्द बणे साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। आत्म ताकी खुल्हे ताक, बंद पर्दा दए उठाईआ। सच दस्स भविख्त वाक, बेपरवाह आए वाहो दाहीआ। लख चुरासी वरोले ख़ाक, ख़ाका सब दा खिच वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे डूँग्घा घाट, पत्तण बहि बहि खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सुण संदेसा, सुत दुलारा खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म नर नरेशा, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, सेवक सेवा रूप जणाइंदा। लख चुरासी जा के वेखा, घर घर फेरा पाइंदा। कलिजुग मेटां कूड़ी रेखा, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकाइंदा। लेखा चुके ईसा मूसा मुहम्मद मुल्ला शेख़ा, शरीअत सब दी विच छुपाइंदा। निरगुण हो श्री भगवान धारे भेसा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। सम्बल वसे इक्को देसा, भूमिका रंग ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारा रंग रंगाइंदा। सुत दुलारे चड़िआं रंग, रंग रंगीला इक चढ़ाईआ। थिर घर दवारे नच्चे बण मलंग, घुम्बर एका एक पाईआ। चाईं चाईं जावां विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। कलिजुग मेटां झूठ पखण्ड, कूड़ा नाता मात तुड़ाईआ। सति धर्म दा इक सुणावां छन्द, सोहँ ढोला सच्चा गाईआ। आत्म परमात्म देवां इक अनन्द, अनन्द आत्म विच रखाईआ। सतिजुग कोए ना खाए कूड़ा गंद, वासना इक्को इक वखाईआ। साचे सन्त चढ़ावां चन्द, बिन चन्द करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, मेरी घाल लेखे पाईआ। मेरी घाल लेखे लावेगा। सो पुरख निरँजण दया कमावेगा। आदि निरँजण जोत जगावेगा। अबिनाशी करता राग सुणावेगा। श्री भगवान निशान हलावेगा। पारब्रह्म वेख वखावेगा। ब्रह्म सोया मात उठावेगा। आत्म परमात्म आप जगावेगा। धुर संदेसा इक सुणावेगा। अनहद नादी नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजावेगा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ावेगा। आत्म हाणी इक जणावेगा। बूँद स्वांती अमृत आप प्यावेगा। इक इकांती नज़री आवेगा। सेज सुहञ्जणी इक सुहावेगा। कन्त कन्तूहल आसण लावेगा। कँवल नैण नैण मटकावेगा। वस्त्र भूशन इक वखावेगा। सीस जगदीश ताज टिकावेगा। धुर फ़रमाना हुक्म सुणावेगा। लख चुरासी जीव मनावेगा। भुल्ले भटके राहे पावेगा। राह विच अटके तोड़ चढ़ावेगा। बेखटके कार कमावेगा। नधड़के खेल वखावेगा। उच्चे टिल्ले चढ़ के वेख वखावेगा। फड़ फड़ भगत जगावेगा। फड़ आपणी सरन लगावेगा। कलिजुग अलख मुकावेगा। सतिजुग राह चलावेगा।

चार वरन समझावेगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहावेगा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा माण दिवावेगा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को राग अलावेगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणे खाते पावेगा। गुरमुख सज्जण सुहेले चुग, सोहँ साची चोग चुगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकावेगा। श्री भगवान कहे हथ्थ सिर रखांगा। साचा मार्ग दस्सांगा। समरथ पुरख हो के नस्सांगा। हर हिरदे विच वसांगा। भगत प्रीती अन्दर फसांगा। साची रीती अन्दर हस्सांगा। कूड़ी रीती फड़ फड़ डस्सांगा। पैरां हेठां झस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर के दस्सांगा। साची करनी कर वखावेगा। पुरख अकाल आवेगा। निरगुण जामा पावेगा। जोती नूर धरावेगा। शब्दी डंक वजावेगा। गोबिन्द गुर उठावेगा। हरि मन्दिर इक बणावेगा। इट्टां गारा कोई ना लावेगा। दीवा बाती ना कोए जगावेगा। निर्मल जोती इक टिकावेगा। बिन पाठीआं राग सुणावेगा। बिन पाणी ताल भरावेगा। चौंह कूटां इक्को नज़री आवेगा। साचा डंक नाम वजावेगा। गृह मन्दिर बंक सुहावेगा। बेअन्त नाम धरावेगा। साध सन्त मिलावेगा। नार कन्त हंढावेगा। सेजा सोभा पावेगा। आत्म परमात्म मेल मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकावेगा। सिर साचे हथ्थ टिकाऊँगा। गृह मन्दिर वेख वखाऊँगा । धुर फ़रमाना इक जणाऊँगा। गुर अवतार नाल मिलाऊँगा। पीर पैगम्बर पकड़ उठाऊँगा। साचा कलमा इक पढ़ाऊँगा। नबी रसूलां आप समझाऊँगा। शरअ शरीअत मेट मिटांऊँगा। रय्यत इक्को घर वसाऊँगा। नौबत आपणे नाम वजाऊँगा। चौदां तबकां पन्ध मुकाऊँगा। साचा सबक इक सिखाऊँगा। कूड़ी क्रिया तौक लाहूंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण शेर जम्बक सर्ब डराऊँगा। साहिब मेरा आवेगा। दीन दयाल फेरा पावेगा। गोबिन्द नाल मिलावेगा। फड़ गोदी आप उठावेगा। चोटी चढ़ बहावेगा। राग नाद सुणावेगा। पिछली आसा पूर करावेगा। लख चुरासी हुक्म मनावेगा। सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। दो जहानां वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म चलावेगा। आपणा हुक्म चलाएगा। निहकलंक अख्वाएगा। सतिजुग साचा लाएगा। चार वरन पढ़ाएगा। इक्को मन्दिर बणाएगा। मन्दिर मसीत पन्ध मुकाएगा। पुरख अकाल नज़री आएगा। दो जहानां वेख वखाएगा। सच निशाना इक झुलाएगा। राज राजानां चरणी लाएगा। सच छत्र इक झुलाएगा। साचा मंत्र इक पढ़ाएगा। दूजा मंत्र नजर कोए ना आएगा। बिध जाणे अन्तर, हर घट वेख वखाएगा। हुक्म देवे गगन गगनंतर, गगन पातालां फोल फुलाएगा। सच सति बणाए साची बणतर, घड़न भंनणहार अख्वाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर इक्को नज़री आएगा।

❇ २४ माघ २०१६ बिक्रमी पिण्ड भूरे ज़िला अमृतसर ❇

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाइंदा। एकँकारा बेपरवाह, बेअन्त भेव ना आइंदा। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा सच्चे थाँ, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान सति निशाना आपणा झुला, निरगुण आपणे हथ्थ उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ साचा मार्ग इक लगा, निरगुण निरगुण वंड वंडाइंदा। शाहो भूप राज राजान आप अख्वा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि निरँकारा, इक इकल्ला आप कराईआ। सुहावणहारा सचखण्ड दवारा, बंक इक्को इक वड्याईआ। जोती नूर कर उज्यारा, ज़हूर इक्को इक रुशनाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगारा, लाशरीक आसण लाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, भेव कोए ना आइंदा। वसणहारा सच मकान, महल अटल इक सुहाइंदा। नाउँ निरँकारा आप प्रगटा, नाम निधाना इक जणाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, भूपत भूप वड वड्याइंदा। दूसर कोई संगी ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, हरि करनी आप कराईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, ब्रह्म पारब्रह्म वेस वटाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचा राह चलाईआ। आपणे मन्दिर आपे वस, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपे जाणे आपणा रस, रस रसीआ बेपरवाहीआ। आपे इच्छया कर दासी दास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करनेहारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वसे धाम न्यारा, अनडिठ डेरा लाईआ। एकँकारा वड बलकारा, बल आपणा इक प्रगटाईआ। आदि निरँजण शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। अबिनाशी करता चोबदारा, दर दरवेश अलख जगाईआ। श्री भगवान मंगणहारा, देवणहारा वड वड्याईआ। पारब्रह्म दोए जोड़ करे निमस्कारा, गृह आपणे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक वड्याईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप वड्याइंदा। कर खेल श्री भगवन्त, जोती नूर इक प्रगटाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। करे खेल हरि बेअन्त, बेऐब धार चलाइंदा। रूप धर नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी नार कन्त, हरि करता आप कमाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर

६६७
१३

कदे ना जाईआ। आपे जाणे साची मंत, मंत्र इक्को इक दृढ़ाईआ। आप बणाए आपणी बणत, मात पित ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण करे कुड़माईआ। निरगुण संग निरगुण मेला, निरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण होए सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। निरगुण वसे धाम नवेला, निहचल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाइंदा। सच दवारा सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। कर प्रकाश आदि निरँजणा, वेखणहारा चाईं चाईंआ। करे खेल दर्द दु:ख भय भंजना, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक सुहाईआ। साचा मन्दिर सोभनीक, सति सतिवादी आप सुहाया। ना कोई दूजा दिसे शरीक, लाशरीक इक खुदाया। ना कोई अन्धेरा ना तारीक, नूरो नूर डगमगाईआ। आपे जाणे आपणी सच प्रीत, प्रीतीवान नाउँ धराईआ। बैठा रहे इक अतीत, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। हरि सच्चा शहिनशाह, सच सिँघासण आसण लाइंदा। तख्त निवासी बेपरवाह, सीस जगदीश ताज टिकाइंदा। रूप रंग रेख कोई जाणे ना, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। रसना जिह्वा कोई गाए ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करनेयोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरगुण कर संजोग, घर साचे वज्जे वधाईआ। निरगुण निरगुण साचा भोग, भस्मड़ आपणी धार वखाईआ। निरगुण निरगुण दर्शन देवणहार अमोघ, पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। करे खेल हरि अवल्ला, भेव किसे ना आया। आदि जुगादी इक इकल्ला, सचखण्ड साचे आसण लाया। वसणहारा उच्च महल्ला, महल अटल इक रुशनाया। एका फड़े आपे पला, पल्लू एका गंढु पवाया। जोती धार आपे रला, जोत जोत विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाया। आपणा पर्दा आपे चुक्क, घर साचे वेख वखाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण लुक, भेव अभेद जणाईआ। आपे जाणे आपणा उत्तम मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। आपणी धारों आपे उठ, आपे करे रुशनाईआ। आपणे उत्ते आपे तुठ, जननी जन रूप वटाईआ। देवणहारा आपे सुख, दाई दाया सेव कमाईआ। उपजावणहारा साचा सुत, शब्दी शब्द लए प्रगटाईआ। आप बहाए आपणी गोद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक सुणाए सच सलोक, सोहला आपणा नाम पढ़ाईआ। तेरा मेरा मेरा तेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा इक प्रगटाईआ। साचा सुत छन्नयां बाला, पारब्रह्म प्रभ आपणी गोद उठाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा

साचा लाला, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। अबिनाशी करता हो कृपाला, किरपन आपणा भेव खुलाइंदा। आदि निरँजण बेमिसाला, नूरो नूर डगमगाइंदा। एकँकार वखावणहारा सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दवारा इक जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण चलणहारा नाल नाला, सगला संग निभाइंदा। सो पुरख निरँजण मार्ग दए सुखाला, साची सिख्या इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सुत आप प्रगटाइंदा। साचा सुत प्या जम्म, प्रभ साचे वज्जी वधाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार चलाईआ। पिता पूत बेड़ा बन्न्, आपणे कंध उठाईआ। एका राग सुणाए कन्न, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। ना छप्पर ना कोए छन्न, चार दीवार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत इक उठाईआ। साचा सुत गोदी चुक्क, सो पुरख निरँजण खुशी मनाइंदा। आ लाडले साचे सुत, सति सतिवादी राह जणाइंदा। तेरा मेला अबिनाशी अचुत, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। तेरी मेरी इक्को रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। मेरी धारों पयों उठ, मात पित ना कोए बणाइंदा। पुरख अकाल आपे तुठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरण सरोवर देवे घुट्ट, अमृत रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दया कमाइंदा। सुत दुलारे खोल्ही अक्ख, बिन नेत्र नैण उग्घाड़या। श्री भगवान नज़री आया इक प्रतख, रूप अनूप अगम्म अपारया। छोटा बाला चरणी गया ढठ्ठ, निउँ निउँ करे चरण निमस्कारया। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, मोहे तेरा इक सहारया। अग्गों कहे पुरख समरथ, उठ सुत सच दुलारया। मैं रखां तेरी पत, सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। तूं मेरी उपजिउँ रत्त, बिन रत्ती रत्त वखा रिहा। तेरा मेरा इक्को नात, ना कोई तोड़े तुड़ा रिहा। मेरा प्यार तेरी दात, वस्त अमोलक झोली पा रिहा। मेरा खेल तेरा तमाश, खेल खलारी सच खेला रिहा। तेरी पूरी करां आस, आसा आपणी नाल मिला रिहा। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आप समझा रिहा। सुत दुलारा बण बण दास, निउँ निउँ सजदा सीस झुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगा रिहा। सुत दुलारा मंगे मंग, इक्को आपणी झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबँग, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। मैनूं बख्श सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। मैं तेरा लाडला चन्द, नूर तेरे रुशनाईआ। तूं साहिब सदा बख्शंद, बख्शश तेरी बेपरवाहीआ। कर किरपा आपणी दात वंड, मेरी ख़ाली झोली दे भराईआ। मैं गावां तेरा छन्द, सोहला इक्को राग अल्हाईआ। तेरा मेरा मुक्के पन्ध, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पिता पूत नाल पा लै गंढ, ना कोई खोल्हे खोल्ह खुल्हाईआ। मैनूं तेरी इक सुगंध, दूजा नज़र ना कोए लिआईआ। कर किरपा देदे एका छन्द, शहिनशाह एका हुक्म सुणाईआ।

श्री भगवान सदा बख्शंद, दीन दयाल दया कमाईआ। तेरा आदि जुगादि मुक्का रंडेपा रंड, आपणे नाल करां कुड़माईआ। तूं मेरा हुक्म मन्न, मैं चलावां सद रज़ाईआ। इक्को देवां सच्चा धन, नाम तेरी झोली पाईआ। तूं मेरा बणया जन, हउँ बणां जणेंदी माईआ। राग सुणावां बिन कन्न, बिन तन्द सतार हलाईआ। सच संदेसा दे श्री भगवन, आदि सुत दुलारे रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। सुत कहे तेरा हुक्म मन्नांगा। चरणी तेरे लग्गांगा। आपणा आप तजांगा। हुक्मे अन्दर भज्जांगा। तेरा दरस कर कर रज्जांगा। तेरी चरणी बहि बहि सजांगा। वांग नगारे वज्जांगा। जिन्ना चिर ना कहें पिच्छे ना हटांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लाहा तेरे दर तों खट्टांगा। लाहा दर तेरे तों खटूँगा। बाल अञ्याणा हो के नचूँगा। सच कहाणी तेरी दसूँगा। अमृत पाणी पी पी हस्सूँगा। तेरे अग्गे पिच्छे नठूंगा। जे मारेंगा ते बचूँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन होर थाँ किसे ना वसूँगा। पुरख अकाल कहे मैं वसावांगा। पुत्त तेरा बंक बणावांगा। सचखण्ड आपणा आसण लावांगा। शाहो भूप अख्वावांगा। सिर आपणे ताज टिकावांगा। इक्को राह चलावांगा। बण सेवक सेव कमावांगा। तेरी छप्परी छन्न छुहावांगा। थिर घर नाँ रखावांगा। फड़ तैनूं विच बहावांगा। साची सिख्या सुणावांगा। इक्को नज़री आवांगा। बण पिता पूत उठावांगा। आपणी उंगली लावांगा। चार कुण्ट फिरावांगा। आपणा भेव समझावांगा। बेअन्त फेर अख्वावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक दृढ़ावांगा। दर तेरे आऊँगा। प्रभ तेरा दर्शन पाऊँगा। दर बहि के ख़ुशी मनाऊँगा। जो मन मन्नया सो कह सुणाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा ढोला गाऊँगा। पुरख अकाल कहे मैं ढोला दस्सांगा। थिर घर तेरे नाल वसांगा। निरगुण निरगुण हो के दस्सांगा। सच प्यार अन्दर फसांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को हुक्म रटांगा। तेरा हुक्म पाऊँगा। लख लख ख़ुशी मनाऊँगा। दर तेरे सीस झुकाऊँगा। ख़ाली झोली आप भराऊँगा। फिर तेरा सोहला गाऊँगा। गा गा तैनूं सुणाऊँगा। वर तेरे कोलों पाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आसा पूर कराऊँगा। आसा पूर करांगा। तेरा भण्डारा भरांगा। प्रेम इक्को वरांगा। आपणे जिहा करांगा। साची तरनी तरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहुड़ा घल्लांगा। सच स्नेहुड़ा सुणाऊँगा। सुत शब्द मेल मिलाऊँगा। तूं मेरा मैं तेरा इक्को गंढु पवाऊँगा। गुर चेला रूप वटाऊँगा। सोहँ ढोला समझाऊँगा। निरगुण निरगुण रंग चढ़ाऊँगा।

सचखण्ड आसण लाऊँगा। थिर घर मन्दिर तेरा वडयाऊँगा। फिर आपणा हुक्म जणाऊँगा। सच संदेसा इक अलाऊँगा। विष्नूं तेरी गोद बहाऊँगा। ब्रह्मा धार विच्चों प्रगटाऊँगा। शंकर धूंआँधार वखाऊँगा। अग्गे आपणा राह जणाऊँगा। पुरख अकाल अख्वाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच डंका इक वजाऊँगा। सुत दुलारा सुण संदेसा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सतिगुर नर नरेशा, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। तूं आदि जुगादि रहे हमेशा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। मैं हुक्मे अन्दर करां तेरा पेशा, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाइंदा। तेरी पूरन आस करावांगा। शब्दी नाच नचावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उपजावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड रचावांगा। लोआँ पुरीआँ ओढण पावांगा। किरन किरन प्रगटावांगा। रवि ससि चमकावांगा। मण्डल मण्डप दरसावांगा। त्रैगुण माया जोड़ जुड़ावांगा। पंचम घाड़न घड़ वखावांगा। तेरे तेरे सेवा लावांगा। लख चुरासी रूप वटावांगा। घर घर जोत जगावांगा। तेरा राग सुणावांगा। अनहद नाद वजावांगा। पर्दा इक्को पावांगा। बिन तेरे नज़र किसे ना आवांगा। जीव जंत मिलावांगा। आपणा खेल वखावांगा। आसा तृष्ना नाल मिलावांगा। हउमें हंगता गढ़ बणावांगा। माया ममता जोड़ जुड़ावांगा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रंग चढ़ावांगा। नारी पुरुष वंड वंडावांगा। काम कामनी खेल करावांगा। जगत कूड़ी सेज हंढावांगा। धीआं पुत्तर बणत बणावांगा। निरगुण धारों उतर, आपणा राह जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत इक प्रगटावांगा। शब्द सुत नेत्र रो, नैणां नीर वहाइंदा। प्रभ तेरा भेव ना आए को हउँ बाला मुख शरमाइंदा। कर किरपा मेरा मुखड़ा धो, तेरा अमृत मोहे भाइंदा। आपणा रूप दस्स सो, जो सचखण्ड आसण लाइंदा। हँ ब्रह्म आपे हो, नूर ज़हूर कवण कराइंदा। फिर मेरा बल टोह, जे घाटा नज़री आवे सिर तेरा हथ्थ रखाइंदा। कर किरपा मेरे नाल छोह, मैं तेरा रंग रंगाइंदा। मैं तेरे जोगा जावां हो, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। मेरी वस्तू कोई ना सके खोह, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। मैं लख चुरासी लै के जावां ढोआ ढो, मन मति बुध समझाइंदा। घर घर अन्दर करां लो, प्रकाश इक्को इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। वर सच्चा इक्को दयांगा। सच भण्डारा भरांगा। निर्भय रूप करांगा। किसे कोलों ना डरांगा। दो जहानां लड़ांगा। लोआँ पुरीआँ वड़ांगा। लख चुरासी फड़ांगा। साचे मन्दिर इक्को अक्खर पढ़ांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी करांगा। साची करनी कमावांगा। आपणा हुक्म मनावांगा। सुत शब्द राह चलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावांगा। संसारी भण्डारी दीबाण

इक जणावांगा। लख चुरासी रंग वखावांगा। काल महाकाल रूप वटावांगा। दीन दयाल वेस धरावांगा। धर्मसाल इक बणावांगा। शाह कंगाल उपजावांगा। जग आपणा खेल रचावांगा। सरबँग नाम धरावांगा। हँस काग उडावांगा। शाह रग दे उपर आसण लावांगा। सुखमन टेडी बंक जणावांगा। ईड़ा पिंगल दर रखावांगा। अमृत ताल इक भरावांगा। बजर कपाटी ताला लाहांगा। साची हाटी इक वखावांगा। दीआ बाती जोत जगावांगा। कमलापाती नज़री आवांगा। आत्म सेजा इक हंढावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा खेल खलावांगा। आत्म परमात्म वेस वटावांगा। ईश जीव बणावांगा। सच हदीस सुणावांगा। कलमा इक पढ़ावांगा। रहबर बण के जावांगा। साहिब सुल्तान आपणा नाम धरावांगा। जुग चौकड़ी वंड वंडावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ावांगा। शास्त्र सिमरत वेद लिखावांगा। पुराण अठारां भेव चुकावांगा। गीता ज्ञान दृढ़ावांगा। अञ्जील कुरान गावांगा। आपणा खेल करावांगा। खाणी बाणी तीर लगावांगा। मंत्र इक समझावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखवांगा। गुर अवतार प्रगटावांगा। पीर पैगम्बर हुक्म मनावांगा। नव नौ चार वंड वंडावांगा। शब्दी तेरा डंक इक सुणावांगा। राउ रंक जगावांगा। दुआर बंक सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी कर वखाऊँगा। ब्रह्मण्ड वरभण्ड नाच नचाऊँगा। जुग चौकड़ी सोहला गीत छन्द सुणाऊँगा। कोटन कोटि नाम प्रगटाऊँगा। आपणा भेव ना किसे जणाऊँगा। सिफ्त सालाह विच सारे लाऊँगा। गुर अवतार जणाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी खेल कराऊँगा। शब्दी खेल करावांगा। निरगुण सरगुण हो के जावांगा। जुग जुग राह वखावांगा। बोध अगाध पर्दा लाहवांगा। हिरदा सोध मंत्र इक जणावांगा। भगत भगवन्त मेल मिलावांगा। सम्मत सम्मती भेव खुल्हावांगा। गुरमुख रंग रंगावांगा। गुरसिख गोद बहावांगा। वड योद्धन योद्ध फेरा पावांगा। कोटन कोटि काल बितावांगा। बेअन्त नाम धरावांगा। शब्दी तेरा नाउँ उपजावांगा। सुत साचे माण दिवावांगा। आपणा मुख छुपावांगा। नज़र किसे ना आवांगा। सचखण्ड डेरा लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरा इक्को घर वसावांगा। शब्द सुत तेरा वसे खेड़ा, सतिगुर आप जणाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म बन्ने बेड़ा, आपणे कंध उठाइंदा। जुग चौकड़ी देवे गेड़ा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि इक्को हुक्म सुणाइंदा। आदि हुक्म धुर फ़रमाना, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। शब्द सुत बण साचा राणा, रय्यत नर हरि रिहा वखाईआ। तेरा हुक्म दो जहाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा नाउँ सच परवाना, श्री भगवान इक जणाईआ। तेरा प्यार ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। तेरा राग आत्म तराना, अनहद

नादी नाद सुणाईआ। तेरा रस अमृत आत्म पीणा खाणा, निझर झिरना इक झिराईआ। तेरा बल मर्द मर्दाना, महाबीर वड वड्याईआ। तेरा खेल सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लोकमात महाना, महिमां अकथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दए दृढ़ाईआ। सच दृढ़ा दए विश्वाश, विश्व आपणी धार जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेख खेल तमाश, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मण्डल मण्डप पा रास, गोपी काहन तेरे हुक्म नचाइंदा। गुर अवतार तेरे दास, साची सेवा इक समझाइंदा। पीर पैगम्बर रखण तेरी आस, सजदा सीस सीस झुकाइंदा। तेरी सिफ्त लिखे कलम दवात, शाही कागज़ नाल मिलाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर खाणी बाणी करे वफ़ात, फतवा सब दे उत्ते लाइंदा। तेरा लहिणा देणा कायनात, कादर करता आप जणाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर शरअ शरायत, शरीअत तेरी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द आप जणाइंदा। साचे शब्द तेरी वड वडयाई, हरि सतिगुर आप बणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे नाउँ दुहाई, दरोही दए सर्ब लोकाईआ। निरगुण सरगुण तेरी रुशनाई, लख चुरासी तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए समझाईआ। तेरा लेखा दस्से अन्तिम चौकड़, एका एक जणाइंदा। तेरी जुगा जुगादी पूरी करे औकड़, ओट इक्को इक समझाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे नाम दी दस्से रौणक, दूजा डंक ना कोए वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत आप दृढ़ाइंदा। साचे सुत सुण लै याद, सो पुरख निरँजण आप सुणाया। जुग जुग तेरा खेल तमाश, जुग चौकड़ी बन्धन पाया। अन्तिम चौकड़ करे खेल पुरख समराथ, वेस अनेका रूप धराया। तेई अवतार तेरे दास, अठारां भगत सीस झुकाया। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण तक्कण पृथ्मी आकाश, परवरदिगार इक्को नज़री आया। गुरु गुर खेल अबिनाश, गुर करता आप जणाया। दोए जोड़ करन आस, आसा आसा विच प्रगटाया। कलिजुग अन्तिम सारे होण निरास, बल सके ना कोए वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होए प्रभास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाया। साचा खेल दस्से करतारा, कुदरत कादर आप जणाईआ। नव नौ चार उतरे पारा, पारब्रह्म पन्ध मुकाईआ। शब्दी सुत तेरा विहारा, साची धारा दए समझाईआ। कलिजुग अन्तिम गुर गोबिन्द बण के आए सुत दुलारा, पुरख अकाल पिता माईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड इक उठाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा, रस इक्को इक वखाईआ। पतित पापी करे पार उतारा, मूर्ख मूढ़े आप तराईआ। साचा देवे इक सहारा, पुरख अकाल ओट तकाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलि कल्की लै अवतारा, कलिजुग धोवे काली शाहीआ। सम्बल वसे धाम

न्यारा, निरगुण जोती जोत मिलाईआ। शब्द डंका वज्जे अगम्म अपारा, ब्रह्मण्डां खण्डां दए जगाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, माया ममता मेट मिटाईआ। लख चुरासी खोलणहार कवाड़ा, घर घर बैठा वेख वखाईआ। लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, महल अटल करे रुशनाईआ। पर्दा लाहे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। शब्दी तेरा इक जणाए साचा नाअरा, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म दए आधारा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी बाणी राग अलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शाही रोवे मारे धाहींआ। समुंद सागर होवे खारा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शाह सुल्तान होवण ख़ाक छारा, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा साचा डंका हरि सतिगुर आप वजाईआ। साचा डंका वज्जे मृदंग, वड मर्दाना आप जणाइंदा। कलिजुग खेल करे सूरा सरबँग, अन्तिम आपणा रूप धराइंदा। लेखा जाणे तारा चन्द, चौदां तबक खोज खुजाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दर दरवेश मंग रहे मंग, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। अल्ला राणी होए नंग, पल्लू ओढण नज़र कोए ना आइंदा। उम्मत उम्मती वेखे मलंग, मुल्ला शेख़ मसायक खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द तेरा इक्को डंक वजाइंदा। डंका वज्जे दो जहान, दो जहानां आप वजाईआ। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकठ्ठे करे आण, सच संदेसा इक सुणाईआ। साचे तख़्त बहे नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। करे खेल वड मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत भगवान लए पहिचाण, बेपहिचाण फेरा पाईआ। सच बणाए इक विधान, चौदां विद्या कर हल्काईआ। चौदां लोक होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ निशान, अन्त देवे जड़ उखड़ाईआ। सतिजुग देवे सच्चा दान, दाता दानी दया कमाईआ। शब्द गुरू होए प्रधान, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। सोहँ ढोला सारे गाण, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नज़री आण, एका रूप दरसाईआ। नाता तुटे अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज खुजाईआ। मक्का काअबा वखाए निशान, साचे हुजरे सोभा पाईआ। तोहफ़ा लै के आए श्री भगवान, सोभा इक्को इक जणाईआ। तोबा तोबा करे जहान, मुस्लिम सुन्नी देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा डंका इक्को इक जणाईआ। डंका वज्जे राज राजान, हरि सतिगुर आप वजाइंदा। ज़िमीं असमान होण हैरान, हरि की की खेल रचाइंदा। जल थल सर्ब कुरलाण, महल अटल भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त पछताण, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। नाता तुटे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान पन्ध मुकाइंदा। नेत्र

रोवे अञ्जील कुरान, साचा मसला हल्ल ना कोए कराइंदा। पीर पैगम्बर नैण शरमाण, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। प्रगट होया इक अमाम, मैहन्दी सब दे रंग चढ़ाइंदा। लहिंदी दिशा खेल महान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण आपणा हुक्म मनाइंदा। अल्ला राणी कहिन्दी किसे दा साबत रिहा ना ईमान, परवरदिगार अक्ख आपणी आप उठाइंदा। सारे उठ के करो सलाम, अलैकम सब दी झोली पाइंदा। जेहड़ा देंदा रिहा पैग़ाम, सो ज़ाहरा पीर आइंदा। कलिजुग अन्तिम बदल देवे नज़ाम, सदी चौधवीं धक्का लाइंदा। बिन किरपा कोई ना सके पहिचाण, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। ढोले सारे घर घर गाण, आत्म पर्दा कोए ना लाहइंदा। शब्द सुत तेरा निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर इक्को हथ्थ टिकाइंदा।

६७५ १३

६७५ १३

❇ २५ माघ २०१६ बिक्रमी सूरत सिँघ दे गृह मस्त गढ़ ज़िला अमृतसर ❇

तख्त निवासी एकँकारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण वड सिक्दारा, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण भेव न्यारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी कार कमाइंदा। एकँकारा खेल न्यारा, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण जोत पसारा, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। श्री भगवान देवणहारा सति हुलारा, साहिब सुल्तान खेल कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, निरगुण आपणा हट्ट चलाइंदा। शाहो भूप वड सिक्दारा, राजन राज आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, जलवा नूर इक प्रगटाइंदा। मुकामे हक़ कर पसारा, हकीकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतारा, आदि जुगादी आप कराईआ। वसणहारा धाम न्यारा, निहचल आपणा आसण लाईआ। कर खेल अगम्म अपारा, बेअन्त बेअन्त रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। सच संदेसा नर नरेशा देवणहारा धुरदरबारा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी आदि अन्त, जुग करता आप कराइंदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, भेव अभेद आप खुल्ह्हाइंदा। सति सतिवादी साचा मंत, मंत्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाइंदा। साचा खेल खेलणहारा, एकँकारा वड वड्याईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। खोल्ह्णहारा हट्ट वणजारा, दो जहानां पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। निरगुण रंग निरगुण रंगीला, निरगुण आपणी धार जणाइंदा। निरगुण छैल वड छबीला, शाह पातशाह इक अख्वाइंदा। निरगुण बणाए आपणा सति कबीला, सुत दुलारा शब्दी जाइंदा। सुत दुलारा बणे सच वसीला, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखाइंदा। साची करनी करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी खेल तमाश, हरि करता वेख वखाईआ। पारब्रह्म देवे इक्को जाप, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सति सतिवादी सच्चा पाठ, मंत्र इक्को सोहला गाईआ। दरस दिखाए नैण खुल्हाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र खोल्ह, आपणा भेव जणाइंदा। निरगुण अन्दर निरगुण बोल, निरगुण नाद सुणाइंदा। सति सतिवादी तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। सचखण्ड निवासी बैठ सदा अडोल, थिर घर आपणी कार कमाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पर्दा खोल्ह, सति सरूपी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व आपणा राह जणाइंदा। विश्व विष्नूं राह दस्स, दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। निरगुण हो के अन्दर वस, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अमृत देवे साचा रस, झिरना आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे घट घट, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अमृत धारा, हरि सतिगुर आप चलाइंदा। विष्नूं अन्दर कर उज्यारा, जोती जोत जगाइंदा। जोती अन्दर खेल न्यारा, अपरम्पर आप कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ वंडणहारा, वंड आपणी आप कराइंदा। ब्रह्मा वेता कर उज्यारा, साची सिख्या इक समझाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां घर इक पसारा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा नाम दे आधारा, साची सिख्या इक समझाइंदा। सोहँ बोल बोल जैकारा, निरगुण निरगुण बन्धन पाइंदा। दूजा ना कोई मीत मुरारा, सगला संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा देवे इक वर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। इक्को वर देवे दात, दाता दानी दया कमाईआ। आदि जुगादि तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। साहिब सुल्तान चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सच दृढ़ाए पूजा पाठ, इक्को हवन कराईआ। इक सरोवर तीर्थ तट, किनारा इक्को दए जणाईआ। इक्को मन्दिर इक्को हट्ट, धर्म दवारा इक वखाईआ। इक्को नज़री आए पुरख समरथ, जोती जोत नूर रुशनाईआ। इक्को वेस वटाए चतुर्भुज महिमां अकथ, आदि शक्ति आपणी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा वेता इक दृढ़ाईआ। ब्रह्मा वेता एका नाउँ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे थाउँ, थिर घर आपणा सुत बहाइंदा। कर प्रकाश अगम्म अथाहो, बेपरवाहो आपणी धार चलाइंदा। आपे

पिता आपे माउँ, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी गोद सुहाइंदा। फड़ फड़ बांहो पाए राहो, रहबर आपणा रंग चढ़ाइंदा। परवरदिगार नूर नुराना इक खुदाओ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल पारब्रह्म, ब्रह्म करे पढ़ाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण वेस वटाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणा रंग वखाईआ। देवणहारा साचा दान, साची वंड इक वंडाईआ। सति सतिवादी बण काहन, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सदा सुहेला नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। इक्को पाए आपणी आण, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। शाहो भूप राज राजान, सो पुरख निरँजण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे लेखा दए जणाईआ। ब्रह्मे सुण कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाया। चरण कँवल इक ज्ञान, मंत्र आपणा नाम पढ़ाया। सति सरूपी शब्द बबाण, ब्रह्मण्ड खण्ड उडाया। सिफ्त सालाही बोध अगाध कर वख्यान, निःअक्खर आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाया। साची सिख्या लैणी सिख, ब्रह्म पारब्रह्म जणाईआ। बेपरवाह पाए भिख, अनमुलड़ी दात वरताईआ। बिन कलम शाही लेखा देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण निरगुण करे हित, नित नवित्त वेख वखाईआ। भेव जणाए अबिनाशी अचुत चेतन इक्को घर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुण कन्न, बिन कन्नां आप जणाइंदा। साचा हुक्म गया मन्न, मन वासना मेट मिटाइंदा। साचा बणना इक जन, बण जननी आप प्रगटाइंदा। लै साचा नाम धन, बिन हथ्थां आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। ब्रह्मा सुण पारब्रह्म वेसा, आपणा सीस निवाईआ। तूं सतिगुर साहिब नर नरेशा, बेअन्त तेरी वड्याईआ मैं सेवादार बणा हमेशा, जुग जुग सेव कमाईआ। तूं निरगुण करना हेता, नवित्त मेरे फेरा पाईआ। बेपरवाह भुल्ल ना जाए चेता, तेरी बेपरवाहीआ। मैं हुक्मे अन्दर खेड खेडां, जिउँ भावे तिउँ लैणा चलाईआ। मैनूं आपणा दस्स भेता, भेव अभेद तेरी वड्याईआ। तेरा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। आपणा दस्स दे सच्चा पेशा, कवण बिध हुक्म मनाईआ। तेरी धार निरगुण वेखां, दूजा इष्ट ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। दर तेरे अरदास, दोए जोड़ सीस झुकाया। प्रभ किरपा कर ख़ास, ख़ाहिश आपणी रिहा जणाया। तेरे मिलण दी रहे प्यास, दूजी तृष्ना ना कोए वधाया। मैं वेखां खेल तमाश, ख़ालक तेरा रंग वटाया। आदि अन्त ना होवां उदास, तेरे चरण ध्यान लगाया। तूं साहिब देणा साथ, हउँ सेवक मंग मंगाया। मैं पढ़ां तेरी गाथ, साचा

ढोला दे सुणाया। एका अक्खर इक्को जमात, दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाया। वेले अन्त पुछें वात, तेरे चरणां सीस झुकाया। तुध बिन देवे ना कोए नजात, निमाणा रो रो दयां दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा झोली रिहा डाहया। ब्रह्मा बाला नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी करते एका देणा साचा ढो, ढोआ तेरे नाम वड्याईआ। मैं साहिब तेरे जोगा जावां हो, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। इक्को अमृत आत्म चो, निझर आप वखाईआ। तेरा नाम जपां सोहँ सो, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। नज़री आए तेरी लो, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी आस तकाईआ। पुरख अबिनाशी सदा मेहरवाना, मेहर नजर उठाइंदा। सति पुरख हो प्रधाना, सति प्रधानगी आप कमाइंदा। सचखण्ड सुहाए इक मकाना, सोभावन्त आसण लाइंदा। सच संदेसा राज राजाना, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलाए एका थाना, थान थनंतर इक वड्याइंदा। सति सरूपी बन्ने गाना, सतिगुर साचा सगन मनाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, दूजा रस ना कोए वखाइंदा। साची सेवा इक कमाणा, सेवक आपणा हुक्म जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मंत्र इक पढ़ाइंदा। साचा मंत्र साचा नाद, अनादी नाद जणाईआ। लेखा जाणे धुर ब्रह्माद, ब्रह्म करे पढ़ाईआ। रस देवे बिन रसना स्वाद, रस रसीआ सच्चा माहीआ। सति सतिवादी साची रखणी याद, याददाशत इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा साचा दए जणाईआ। साचा लेखा देवणहारा, आपणी दया कमाइंदा। त्रैगुण माया कर पसारा, रजो सतो तमो तिन्नां झोली पाइंदा। एका हट्ट खोल्ह वणजारा, बण स्वांगी वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख ना कोए जणाइंदा। करे खेल आप निरँकारा, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। पंज तत्त घाड़न घाड़नेहारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग वखाइंदा। लख चुरासी कर पसारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बन्धन पाइंदा। चारे खाणी बण सिक्दारा, साचा हुक्म चलाइंदा। चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाइंदा। चारे वेदां बण लिखारा, भेव अभेद खुलाइंदा। चारे मुख बोल जैकारा, इक्को नाउँ सिफ्त सालाहइंदा। चारे जुगां वंड संसारा, वंडण इक्को इक दरसाइंदा। चारे वरनां खोल्ह किवाड़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बन्धन पाइंदा। चार यारी कर पसारा, आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी हो तैयारा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, कायनात रंग वखाइंदा। परवरदिगार हो न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। ख़ालक ख़लक वेखणहारा, मख़लूक आपणा भेव जणाइंदा। सच महिराबे हो उज्यारा, हकीकत हक़ हक़ दृढ़ाइंदा। एका कलमा नबी करे प्यारा, वाहद

आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे ब्रह्म विद्या इक समझाइंदा। ब्रह्मे सिख्या सच दुआर, हरि साचा सच जणाईआ। लख चुरासी खेल न्यार, त्रैभवण धनी आप कराईआ। पंज तत्त नाता जोड़ संसार, हड्ड मास नाड़ी रत्त बन्धन पाईआ। नौ दवारे खोल्ह किवाड़, जगत वासना नाल कुड़माईआ। आसा तृष्ना हउमें हंगता माया ममता भरे भण्डार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वेस वटाईआ। मन मति बुध कर श्रृंगार, नाद धुन शब्द शनवाईआ। सर सरोवर अमृत ठंडा ठार, गृह मन्दिर दए लगाईआ। लेखा जाण सुखमण टेडी नाड़, ईड़ा पिंगल वंड वंडाईआ। बजर कपाटी ला ताल, पर्दा उहला इक जणाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोत निरँजण जोती दीपक बाल, बिन तेल बाती डगमगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यार, आत्म सेजा सोभा पाईआ। परम पुरख परमात्म होए दयाल, दीनन आपणा नैण खुल्हाईआ। ईश जीव जगदीश वखाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे तेरा नाता ब्रह्म लख चुरासी वेख थम्म, गगन पाताल आपणा बन्धन पाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म नाता, पारब्रह्म जणाइंदा। पारब्रह्म शब्द गाथा, मंत्र इक समझाइंदा। गुर अवतार देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। बोध अगाध निरगुण सरगुण अक्खर वक्खर पढ़ाए गाथा, खाणी बाणी रचन रचाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान सुणाए पाठा, दस अठ्ठ बन्धन पाइंदा। ब्रह्मा तेरा साचा साका, साख्यात, इक्को नज़री आइंदा। जीव जंत वंड वंडी ज़ात पाता, वरन बरन खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाशा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। कलमा नबी रसूल पढ़ाए कायनाता, कातब कलम इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे तेरा साचा वर, वर दाता इक जणाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म दए वड्याईआ। लख चुरासी दे आधारा, चारे खाणी माण रखाईआ। चार जुग बण वणजारा, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, नित नवित्त सेव कमाईआ। भगतां वखाए इक घर बारा, गृह मन्दिर कुण्डा लाहीआ। सन्तां अमृत देवे ठंडा ठारा, अंमिउँ रस मुख चुआईआ। गुरमुखां चरण धूढ़ी देवे ख़ाक छारा, मस्तक टिक्का एका लाईआ। गुरसिख मंगण दर भिखारा, खाली झोली दए भराईआ। आत्म परमात्म करे प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। ब्रह्मा वेखे नैण उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्को इक जणाईआ। सुण संदेसा पारब्रह्म, ब्रह्मे चरण ध्यान लगाया। श्री भगवान तेरा साचा कर्म, निहकर्मी अन्त कोए ना आया। हउँ बाला नढ्ढा तेरी सरन, माण अभिमान ना कोए जणाया। तूं दाता

दानी तरनी तरन, तारनहार इक अख्वाया। सृष्ट सबाई खेल रचाया मरनी मरन, जन्म मरन बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आदि पुरख तेरे डिगा दर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरा अन्त कोए ना पाया। आपणा अन्त दस भगवान, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। कवण दवारे झुल्ले सच निशान, साचा निशान इक झुलाईआ। जुग चौकड़ी होवे कवण हुक्मरान, धुर फ़रमान सुणाईआ। सति सतिवादी देवे कवण ज्ञान, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआँ पुरीआँ वेखे कवण मार ध्यान, लोक परलोक होए सहाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे कवण दान, सच संदेसा कवण अलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता अञ्जील कुरान खाणी बाणी कवण बणाए विधान, विद्दत आपणी करे पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल करे कवण महान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन भेव ना कोए खुलाईआ। ब्रह्मे सच सच दस्सांगा। सचखण्ड साचे वसांगा। निरगुण हो के नठ्ठांगा। आपणा भेव दस्सांगा। लख चुरासी वसांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि कदे ना झकांगा। साचा हाल सुणाऊँगा। जोती जोत जोत रुशनाऊँगा। शब्दी सुत जगाऊँगा। विष्नूं रूप वटाऊँगा। ब्रह्मा गोद बहाऊँगा। शंकर उंगली लाऊँगा। त्रै पंज वेख वखाऊँगा। लख चुरासी गंढु पवाऊँगा। गुर अवतार नाल मिलाऊँगा। अक्खर इक पढ़ाऊँगा। दो जहानां नाम जपाऊँगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्मे विच फिराऊँगा। सूरज चन्न रवि ससि चमकाऊँगा। ज़िमीं असमान लोक परलोक वंड वंडाऊँगा। चौदां तबक खेल कराऊँगा। साचा सबक इक जणाऊँगा। रूह बुत्त मेल मिलाऊँगा। पारब्रह्म ब्रह्म आपणी अंस रखाऊँगा। घट घट राग अलाऊँगा। अनहद नाद वजाऊँगा। सच भेव चुकाऊँगा। सखीआं मिल साची सेजा इक हंढ्ढाऊँगा। परमानंद समाऊँगा। पूरब लहिणा अन्त चुकाऊँगा। नेत्र नैणां दरस दिखाऊँगा। जोती जामा वेस वटाऊँगा। पूरब लेखा पूर कराऊँगा। निहकलंक नाम अख्वाऊँगा। सम्बल डेरा लाऊँगा। लख चुरासी पर्दा फोल फुलाऊँगा। कलिजुग सोया ब्रह्म जगाऊँगा। वरन बरन मिटाऊँगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर वखाऊँगा। दूई द्वैती पर्दा लाहूंगा। कूड़ी क्रिया खेह मिटाऊँगा। साचा नेहु जुड़ाऊँगा। अमृत मेघ बरसाऊँगा। अग्नी तत्त बुझाऊँगा। आत्म परमात्म मेल मिलाऊँगा। मेहरवान अख्वाऊँगा। सच निशान झुलाऊँगा। पिछली कीती सब उलटाऊँगा। विष्नूं आपणे विच मिलाऊँगा। ब्रह्मे तेरा पन्ध मुकाऊँगा। शंकर घरों फड़ उठाऊँगा। करोड़ तेतीसा लहिणा झोली पाऊँगा। सुरप्त इन्द चरणां हेठ रखाऊँगा। अगला राह जणाऊँगा। नव नौ चार लेखा मुकाऊँगा। भरम भुलेखा सर्ब गंवाऊँगा। लोकमात सचखण्ड

आप बणाऊँगा। नर नरेशा हो के आऊँगा। साचा मार्ग लाऊँगा। इक्को नाम जपाऊँगा। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाऊँगा। चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आऊँगा। भगत भगवान समझाऊँगा। सन्त सुहेले नाल रलाऊँगा। गुरमुखां अक्ख खुल्लाऊँगा। बिन नेत्र दरस कराऊँगा। रातीं सुत्तयां आप जगाऊँगा। मार्ग भुल्लयां राहे पाऊँगा। माया डुल्यां धीर धराऊँगा। कलिजुग रुल्लयां गले लगाऊँगा। साची कुल इक बणाऊँगा। अनमुल्ल तोल तुलाऊँगा। सच दवारा खोल्ह सर्ब समझाऊँगा। नर नरायण नज़री आऊँगा। तेई अवतार संग रखाऊँगा। भगत अठारां बन्धन पाऊँगा। ईसा मूसा मुहम्मद चरणां नाल छुहाऊँगा। मुकामे हक़ दा नग़मा नजम इक सुणाऊँगा। तालब तुलबा इक पढ़ाऊँगा। सच आरफ़ इक अख्वाऊँगा। तुआरफ़ सब दे नाल कराऊँगा। आपणी मारफ़त राह जणाऊँगा। सफ़ारश विच कदे ना आऊँगा। इबादत इक्को इक सिखाऊँगा। कलमा नबी इक पढ़ाऊँगा। वड अमामा नाउँ धराऊँगा। मैहन्दी रंग इक रंगाऊँगा। दिशा लहिंदी वेख वखाऊँगा। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा आपे पाऊँगा। लख चुरासी वरोल मक्खण, गुरमुख बाहर कढ्ढाऊँगा। ब्रह्मे मार्ग आपे दस्स, पारब्रह्म आपणा पर्दा लाहूंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे तेरा ब्रह्म मिलाऊँगा। ब्रह्मे तेरा मेल मिलावांगा। श्री भगवान अख्वावांगा। विष्नूं जोत जगावांगा। साचा मन्दिर इक सुहावांगा। नूरो नूर डगमगावांगा। ना कुछ पीवांगा ना खावांगा। आशा तृष्ना सर्ब मिटावांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया शौह दरया रुढ़ावांगा। हउमें हंगता गढ़ उच्चा टिल्ला ढावांगा। निवण सो अक्खर इक पढ़ावांगा। साचा चिल्ला तीर उठावांगा। कमंद इक्को नाम वखावांगा। ब्रह्मण्ड खोज खुजावांगा। जेरज अंड माण गंवावांगा। उत्भुज सेत्ज फोल फुलावांगा। कलि कल्की अवतार अख्वावांगा। गोबिन्द डंक वजावांगा। राउ रंक समझावांगा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। सिर आपणे ताज टिकावांगा। दो जहानां हुक्म मनावांगा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म एका रंग रंगावांगा। सोहँ ढोला बण विचोला आप सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। सुण ब्रह्मा होया खुशहाल, घर साचे वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म होया दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। आदि अन्त चले मेरे नाल नाल, सगला संग वखाईआ। जुग चौकड़ी सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। सति धर्म वखाए इक सच्ची धर्मसाल, जै जै इक्को नाम कराईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, आप आपणा भेव खुल्लाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवन्त लए भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। गुरमुख उठाए आपणे लाल, गोदी इक्को इक दरसाईआ। सच सरोवर भरे नाम ताल, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सहाई सभनी थाईंआ। थाईं थाईं दए सहारा, साहिब हथ्थ वड्डी वड्याईआ।

जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ । कलिजुग खेले खेल अगम्म अपारा, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण निरगुण लै अवतारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सतिजुग साची बन्ने धारा, साची सिख्या इक समझाईआ। भगत भगवन्त कर प्यारा, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। घर विच घर वखाए गुरूदवारा, हरि मन्दिर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म, मेला घर साचे वज्जे वधाईआ। गृह मन्दिर मिले सज्जण सुहेला, सुख इक्को इक जणाईआ। वसणहारा धाम नवेला, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण चाढ़े तेला, साचा सगन मनाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म ब्रह्म नाल खेला, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। कलजुग अन्तिम वक्त होए दुहेला, दुहागण नार रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। आत्म परमात्म सदा संग, सो साहिब आप जणाइंदा। नारी कन्त लागे अंग, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। सच सुहञ्जणी सोहे पलँघ, वस्त्र भूशन आप वड्याइंदा। भगत भगवन्त इक अनन्द, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ जुड़ाइंदा। रल मिल गायण सच्चा छन्द, सोहँ ढोला इक सुणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा मुकया पन्ध, पांधी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आपणी अंस बणाइंदा। साची अंस ब्रह्म प्यार, पारब्रह्म जणाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, हरि करता रिहा समझाईआ। भगत सज्जण लए उठाल, भगवन दया कमाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ज़ात पात दए मिटाईआ। ऊँच नीच बणे ना कोए दलाल, आत्म परमात्म इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ब्रह्म लए प्रनाईआ। आत्म ब्रह्म साची नारी, पारब्रह्म प्रभ आप प्रनाइंदा। वेखणहारा काया महल अटल उच्ची अटारी, निरगुण आपणा कुण्डा लाहइंदा। सति सन्तोख शील धर्म शृंगारी, शहिनशाह इक्को रूप चढ़ाइंदा। प्रेम प्यार कज्जल धारी, नेत्र नूर नूर दरसाइंदा। सीस मींढी गुंदे इक्को वारी, दूजी पट्टी ना कोए वखाइंदा। मिले मेल नर नरायण हरि निरँकारी, दूजा खौंत ना कोए वखाइंदा। गुरमुख सेजा चढ़े पहली वारी, सेज सुहञ्जणी इक वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म करे प्यारी, प्रेम प्याला मधर रस इक प्याइंदा। दिवस रैण रैण दिवस चढ़ी रहे सच खुमारी, दूजी ख्वाहिश ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म लेखा आप जणाइंदा। ब्रह्म लेखा लैणा जाण, जानणहारा आप जणाईआ। कलिजुग कूड़ मिटे निशान, निशाना लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा होए सवाधान, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, जीव आत्म करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को भगवान, घट घट नज़री आईआ। नाता तोड़े शरअ शैतान, शरीअत कम्म किसे ना आईआ।

जिस दी पीर पैगम्बर गुर अवतार मन्नदे गए आण, सो पुरख निरँजण पुरख अकाल दीन दयाल इक्को इष्ट नज़री आईआ। सचखण्ड दवारा जिस दी सच्ची धर्मसाल, दूजा घर ना कोए बणाईआ। उस दा सारे करो जुमाल, ज़ामन होवे हर घट थाईंआ। आदि जुगादि इक्को राम, इक्को कृष्न नज़री आईआ। इक्को पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, इक्को अल्ला राणी नैण खुल्हाईआ। इक्को नानक गोबिन्द प्याए अमृत जाम, साचा साकी इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म वेता साचा नेता कर कर हेता, सच सच रिहा दृढ़ाईआ। ब्रह्म ब्रह्म नेत्र खोल्ह, पारब्रह्म जणाइंदा। मन मनुआ ना वज्जे ढोल, बुध मति ना कोए वड्याइंदा। साहिब सज्जण वसे कोल घर मन्दिर आसण लाइंदा । आपणी दिशा लए टटोल, धुर फ़रमाना इक सुणाइंदा। कलिजुग अन्त ना रहिणा अनभोल, भुल्यां मार्ग पाइंदा। तोलणहारा साचा तोल, अदल आदल आप कमाइंदा। हर घट रिहा मौल, मौला आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म इक्को घर वखाइंदा। इक्को घर इक टिकाणा, मन्दिर इक्को इक जणाईआ। इक्को नाम इक परवाना, संदेसा इक्को इक सुणाईआ। इक्को राग इक तराना, छत्ती राग सिफ्त सालाहीआ। इक्को शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, गीता ज्ञान इक दृढ़ाईआ। इक्को हुक्म अञ्जील कुराना, तीस बतीसा ढोला सुणाईआ। इक्को खाणी बाणी करे प्रधाना, सच प्रधानगी इक कमाईआ। इक्को पहरे जुग जुग बाणा, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। इक्को होए हुक्मराना, शहिनशाह इक वड्याईआ। इक्को करे ब्रह्म पछाणा, पारब्रह्म प्रभ पर्दा देवे लाहीआ। इक्को देवणहार ज्ञाना, अज्ञान अन्धेर इक मिटाईआ। इक्को होए अन्तरजामा, अन्तरजामी भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीव जंत रिहा समझाईआ। जीव जंत साची गाथा, सदा सदा जणाइंदा। सर्ब जीआं दा पिता माता, इक्को नज़री आइंदा। आत्म ब्रह्म बोध ज्ञाता, अन्तर मंत्र नाम जणाइंदा। शब्द धुन राग अनादा, ब्रह्माद खोज खुजाइंदा। मेट मिटाए वाद विवादा, विवेकी रूप कराइंदा । लेखा जाणे सन्त साधा, साधना इक्को इक वखाइंदा। भगत भगवन्त मार अवाज़ां, दिवस रैण आप उठाइंदा। निरगुण हो के फिरे भाजा, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम रच रच काजा, करनी करता आप समझाइंदा। करे प्रकाश देस माझा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा । पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत वेखणहार तमाशा, समुंद सागर डूँघी कन्दर फोल फुलाइंदा। ग़रीब निमाणयां जगत निताणयां रखे लाजा, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा आप समझाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म साचा लेखा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। गुरमुख विरले निज नेत्र पेखा, लख चुरासी

६८३
१३

गूढ़ी नींद सवाईआ। हरि का नाम विसरया भरम भुलेखा, कूड़ी क्रिया बन्धन इक बंधाईआ। कलिजुग खेड जीव जंत खेडा, सतिगुर मन्दिर बहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम गढ़ इक तुड़ाईआ। काया तुटे भरम गढ़, भाण्डा भउ भंनाइंदा। हरिजन वेखे अन्दर वड़, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। निरगुण बैठा सेजे चढ़, सरगुण राह तकाइंदा। सरन सरनाई जो जन जाए पढ़, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त आपणे जिहा कर, करनी आपणी इक जणाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, जन्म मरन फंद कटाइंदा। सच दवारे जाणा वड़, सचखण्ड राह इक वखाइंदा। सोहँ ढोला लैणा पढ़, जिस पढ़ियां धर्म राए डंन ना लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म विचोला इक बणाइंदा। ब्रह्म विचोला सोहँ रूप, सति पुरख निरँजण दए वड्याईआ। मेल मिलाए हरि जू भूप, भूपत भूप होए सहाईआ। होए सहाई चारे कूट, चारे वरनां लए जुड़ाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, ठग्गी यारी ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म भेव दए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म भेव अपारा, आपणा आप जणाइंदा। कूड़ क्रिया झूठ धारा, गुर सतिगुर कदे ना भाइंदा। नाता छड्डो जगत विभचारा, विख्या रूप सर्ब दरसाइंदा। इक्को करो पुरख अकाल निमस्कारा, दूजा सतिगुर नज़र कोए ना आइंदा। लख चुरासी कोटन कोटि साध सन्त जीव जंत नेत्र मूंद कर रहे पुकारा, लोचण दरस कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवणहार सहारा, महासार्थी इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म लहिणा आप चुकाइंदा। ब्रह्म लहिणा चुक्के मात, मता प्रभ जू इक बणाईआ। जो भगतां मिले जमात, तिस भगती दए जणाईआ। अन्तर मेट अन्धेरी रात, साची जोत करे रुशनाईआ। अठ्ठे पहर वखाए प्रभात, प्रभू इक्को रंग रंगाईआ। मन वासना रहिण ना देवे नार कमज़ात, गुरमति करे इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म इक्को इक दरसाईआ। ब्रह्म दरसाए इक दरस, दरसी दरस कराइंदा। जन्म जन्म दी मेट हरस, हवस होर ना कोए वधाइंदा। लेखा जाण अर्श फर्श, काया कुरा खोज खुजाइंदा। भगतां उत्ते कर कर तरस, भगवन मेहर मेघ इक बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पर्दा आप उठाइंदा। ब्रह्म पर्दा प्रभ देवे चुक्क, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। नज़र आए जो बैठा लुक, घर घर विच मुख वखाईआ। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, दुखियां दर्द गंवाईआ। आत्म परमात्म देवे सच्चा सुख, सुख सुख विच समाईआ। लेखे लाए जननी कुख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जिन जंम्यां सच्चा गुरमुख, गुरसिख मुख सदा सालाहीआ। प्रभ मिलण दी रखे भुक्ख, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। दीन दयाल आपणी गोदी लए चुक, नित नित होए सहाईआ। सचखण्ड लोकमात दा बूटा लाए

६८४
१३

पुट्ट, देवे माण वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। धर्म दवारा वखाए साचा किला कोट, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म सदा सदा समझाईआ। ब्रह्म वासना खेल अपारा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। मन वासना जगत संसारा, नौ दर आप नचाइंदा। मन वासना ठग्ग चोर यारा, मन वासना कूड़ कुकर्म कमाइंदा। मन वासना होए हत्यारा, हत्या जगत वखाइंदा। मन वासना वधे हँकारा, मन वासना काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काइंदा। मन वासना होए दुराचारा, दुष्ट रूप वटाइंदा। ब्रह्म वासना मिले मीत मुरारा, घर आ के दरस दिखाइंदा। दोहां विचोला सिरजणहारा, भेव कोए ना पाइंदा। नेत्र पेख सरवण सुण जो भुल्ल जाए गंवारा, तिस थाउँ नज़र कोए ना आइंदा। एथे ओथे ना कोए सहारा, फड़ बांहों गले ना कोए लगाइंदा। जिस भुल्लया नर निरँकारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेले अन्त ना कोए छुडाइंदा। सारे कर गए कलिजुग अन्त किनारा, नेत्र वेख्यां नज़र किसे ना आइंदा। इक्को तक्क के गए श्री भगवान दा सच विहारा, ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द पुरख अकाल आप उठाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, सब दा लेखा आप चुकाइंदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, मनमुखां दर दुरकाइंदा। झूठी वंड रहिण ना देवे अन्तिम वारा, अन्तष्करन सब दा फोल फुलाइंदा। जे कोई बाहरों कहे मैं करां प्यारा, अन्दरों आपणी दलील दौड़ाइंदा। हर घट प्रभ जू वेखणहारा, धोखे विच कदे ना आइंदा। गुरसिख मधरा मास जो रसना करे अहारा, तिस सतिगुर चरण कदे ना लाइंदा। हरिसंगत मिलण दा इक्को बिवहारा, हरि पुरख निरँजण आप जणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरण कँवल करो प्यारा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म वखाए इक दवारा, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। गुरसिख भुल्ल ना जाणा बण गंवारा, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। सदी बीसवीं सब ने तक्कणा इक सहारा, तक्कवा सब नूं इक जणाइंदा। आपणी कुदरत कादर करीम वेखे वेखणहारा, सृष्ट सबाई बेपरवाही खोज खुजाइंदा। जन भगतां कराए साचा वणज बण वणजारा, हट्ट इक्को इक दरसाइंदा। सोहँ नाम सति भण्डारा, वड भण्डारी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म इक मकान, घर घर विच आप सुहाइंदा।

सन्त जनां प्रभ सदा लोड़, बिन लोड़ों नज़र कोए ना आइंदा। सन्त साजण चढ़े साचे घोड़, घोड़ा सतिगुर आप वखाइंदा। सन्त साजण लोआँ पुरीआँ लए दौड़, सतिगुर दो जहानां राह वखाइंदा। सन्तां कूड़ी क्रिया कढ्ढण दी सदा लोड़, कूड़ कूड़यारा सतिगुर मोह चुकाइंदा। सन्त आत्म परमात्म मिलण दी सदा रखण लोड़, बिन मेल मिलावे सन्त कम्म किसे

६८५
१३

ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लोड़ इक जणाइंदा। साची लोड़ सदा सद, सति सतिवादी आप जणाइंदा। बिन सतिगुर नौ दवारे पार ना कोई लँघे हद्द, जगत वासना ना कोए मिटाइंदा। कूड़ा मन्दिर कोए ना देवे छड्ड, हरि मन्दिर आसण कोए ना लाइंदा। बिन लोड़ों ख़ाली हड्ड, पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। साची लोड़ अन्दर भगत भगवन्त इक दूजे नाल गए बज्झ, जुग जुग भगवन भगतां लोड़ पिच्छे आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लोड़ इक जणाइंदा। साची लोड़ आत्म नाता, बिन लोड़ परमात्म नज़र किसे ना आईआ। साची लोड़ करे उत्तम जाता, अजाति रूप ना कोए जणाईआ। साची लोड़ जणाए साची गाथा, बिन लोड़ सतिगुर नाद ना कोए सुणाईआ। लोड़ कराए पूजा पाठा, इष्ट देव हवन सिख्या इक सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिनां लोड़ों पुरख अकाल नज़र ना आईआ। लोड़ बिनां ना कोई बंदा, बंदगी लोड़ बिनां ना पाईआ। चाहे चंगा चाहे मंदा, बिन लोड़ों कोए नज़र ना आईआ। सतिगुर सच सच्चा अनन्दा, अनन्द आत्म इक जणाईआ। आत्म सेजा बैठा पलँघा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। बिन लोड़ वज्जे ना कदे मृदंगा, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। बिन लोड़ों कोई ना चले संगा, सगला संग ना कोए रखाईआ। बिन लोड़ों अन्तिम होए नंगा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिन लोड़ों मिले ना परमानंदा, रस सच ना कोए चखाईआ। बिन लोड़ों रसना जिह्वा बत्ती दन्दा गाए कोए ना छन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तां दस्से सदा लोड़, बिन लोड़ों सन्त लोकमात ना आईआ।

❇ २५ माघ २०१६ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड सुगा ज़िला अमृतसर ❇

सति पुरख सच सुल्ताना, सति सति अख्वाइंदा। सो पुरख निरँजण वड प्रधाना, सच प्रधानगी इक कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाइंदा। एकँकारा वड बलवाना, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेल महाना, निरवैर पुरख आप कराइंदा। श्री भगवान सच निशाना, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म कर ध्याना, ध्यान ध्यान विच समाइंदा। करे खेल नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। आपणी इच्छया कर परवाना, साची भिच्छया झोली पाइंदा। सूरबीर बण मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी इक कमाइंदा। साचा मन्दिर खेल महाना, निरगुण निरगुण आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड वखाए सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। परवरदिगार बेनज़ीर करे खेल आप भगवाना, भगवन आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, दर मन्दिर इक सुहाइंदा। दर मन्दिर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण दर्द दुःख भय भंजना, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। गहर गम्भीर साचा सज्जणा, अनभव प्रकाश कराईआ। ना घड़या ना भज्जणा, सति सति एका रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाईआ। सच दवारा सचखण्ड, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। अन्दर वड़ सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा आसण लाइंदा। ना कोई रूप ना कोई रंग, रेख भेख ना कोए जणाइंदा। ना कोई सगला ना कोई संग, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, प्रकाश प्रकाश इक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी शाहो भूप, राजन राज आप कराईआ। तख्त निवासी सति सरूप, सच सिँघासण सोभा पाईआ। वेखणहारा दिशा कूट, निरगुण नैण इक खुल्हाईआ। लेखा जाणे मात पित पूत, सज्जण अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव पुरख समरथ, निरगुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रगट, जोती जोत जगाइंदा। जोती जोत आपे रख, रूप अनूप वटाइंदा। रूप अनूप आपे वस, सचखण्ड डेरा लाइंदा। सचखण्ड दवारे आपे वस, शाह सुल्तान अख्वाइंदा। शाह सुल्ताना गाए जस, ढोला सोहला आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा बंक वड्याइंदा। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल बेपरवाह बेअन्त, अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। लेखा जाण नार कन्त, नर नरायण खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा खेल अपारा, निरगुण धारा जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। नूर नुराना परवरदिगार, बेऐब नाम अख्वाइंदा। मुकामे हक़ हो तैयार, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। लाशरीक सांझा यार, मिहबान बीदो बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। मेटणहार अन्ध तारीक, नूर ज़हूर इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची इक वड्याइंदा। दरगाह साची धाम अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप वड्याईआ। वसणहारा इक इकल्ला, हरि पुरख निरँजण डेरा लाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण निरगुण कर कुड़माईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ला, सेज सुहञ्जणी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करता पुरख, आदि आदि कमाइंदा। ना कोई चिन्ता सोग हरख़, दुःख दर्द ना कोए जणाइंदा। ना कोई सके निरवैर परख, पारखू इक्को इक अख्वाइंदा। आपणे उत्ते कर आपणा तरस आपणा भेव आप जणाइंदा। आपे शाह पातशाह आपे भिखारी देवणहारा दरस, दात अनमुल्ली आप

६८७
१३

वरताइंदा। आपे मकरूज आपे कर्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा फ़र्ज आप निभाइंदा। साचा फ़र्ज फ़रमांबरदार, लाशरीक इक खुदाईआ। कराए खेल अगम्म अपार, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी सच्चा माहीआ। खोल्हणहारा बंद कवाड़, थिर घर साची बणत बणाईआ। सुत दुलारे कर प्यार, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी इक जैकार, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा दस्सणहारा, निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। सचखण्ड निवासी खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। सुत दुलारा कर उज्यारा, शब्दी रूप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां ला अखाड़ा, निरगुण आपणा नाच नचाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न कर उज्यारा, मण्डल मण्डप आप रुशनाइंदा। त्रै पंज खेल न्यारा, खेलणहारा नज़र ना आइंदा। लख चुरासी बण वणजारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। धुर संदेसा देवणहारा, बोध अगाधा राग सुणाइंदा। लेखा जाणे अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा भेव खुल्हाइंदा। सेवक बण के सेवादारा, दर दर आपणी अलख जगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। निरगुण जोत जोत उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी पुरख समरथ, हरि करता आप कमाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रगट, निरगुण धार चलाईआ। सरगुण सरगुण खेल अकथ, अकथ करे पढ़ाईआ। तत्तव तत्त देवे वथ, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाणे अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन बुध मति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी दस्से करतार, आपणा भेव जणाइंदा। आदि पुरख हो निराकार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां कर पसार, उत्भुज सेत्ज आपणा राह चलाइंदा। खाणी बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। जुग चौकड़ी वंडणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण कर उज्यार, गुर अवतार नाउँ धराइंदा। नाम डंका अपर अपार, गृह मन्दिर आप वजाइंदा। दीवा बाती कर उज्यार, नूर नुराना नूर धराइंदा। साची हाटी खोल्ह कवाड़, चौदां तबकां राह चलाइंदा। चौदां लोक करे ख़बरदार, सच सलोक इक अल्हाइंदा। देवणहारा नाम सहार, मंत्र सति सति दृढ़ाइंदा। वेखणहारा निरगुण धार, सरगुण आपणा राह जणाइंदा। निष्अक्खर देवे कर विचार, विचार विच कदे ना आइंदा। लेखा जाण वेद

चार, शास्त्र सिमरत पुराण आप पढ़ाइंदा। देवणहारा गीता ज्ञान, अठ्ठ दस वंड वंडाइंदा। लेखा जाण अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज खुजाइंदा। मारनहारा अणयाला बाण, तीर अणीआला इक चलाइंदा। गुर अवतार दे ज्ञान, लोकमात धर्म चलाइंदा। वेखणहारा नौजवान, नज़र किसे ना आइंदा। वसणहारा सच मकान, बेमुकाम फेरा पाइंदा। परवरदिगार वड अमाम, हज़रत इक्को नज़री आइंदा। देवणहारा सच पैग़ाम, साचे हुजरे सोभा पाइंदा। दस्सणहार इलाही कलाम, कलमा सच्चा इक जणाइंदा। वेखणहारा कायनात, दो जहानां खोज खुजाइंदा। लख चुरासी वेखे मार झात, घट घट अन्दर डेरा लाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी धार वखाइंदा। निरगुण धार अगम्म भेव कोए ना पाईआ। ना मरे ना पए जम्म, जीवण मरन ना कोए वड्याईआ। हड्ड मास नाड़ी ना चम्म, तत्तव तत्त ना वंड वंडाईआ। राग नाद ना कोई सुणे कन्न, अनादी नाद ना कोए जणाईआ। निरगुण रूप श्री भगवन, जोती जाता डगमगाईआ। सदा सदा सद जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी बणे जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। बण बण जणेंदी माया, जननी आप अख्वाइंदा। बण बण सच्चा दाई दाया, सेवक आपणी सेव कमाइंदा। गुर अवतार भेव खुलाया, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग लाया, जुग जुग आपणा राह जणाइंदा। साचा सोहला इक सुणाया, ढोला इक्को इक वड्याइंदा। पंज तत्त चोला लए बदलाया, निरगुण नूर इक प्रगटाइंदा। पर्दा उहला जगत रखाया, भेव कोए ना आइंदा। मौला आपणा खेल रचाया, ख़ालक ख़लक डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म इक जणावांगा। पुरख अकाल अख्वावांगा। सचखण्ड दुआर सुहावांगा। उच्चे टिल्ले आसण लावांगा। जोती जोत डगमगावांगा। परवरदिगार नूर रुशनावांगा। ज़ाहर ज़हूर भेस वटावांगा। इक्को मार्ग लावांगा। हुक्मी हुक्म जणावांगा। सुत दुलार उठावांगा। शब्दी डंक वजावांगा। विष्नूं फड़ उठावांगा। ब्रह्मा अक्ख खुल्ह्वावांगा। शंकर धूढ़ी इक रमावांगा। सुरप्त माण चुकावांगा। करोड़ तेतीस ख़ाक मिलावांगा। हरि जगदीश इक अख्वावांगा। लोआँ पुरीआँ खोज खुजावांगा । ब्रह्मण्ड खण्ड पर्दा लाहवांगा। त्रैगुण भेव चुकावांगा। पंचम झेड़ा आप मिटावांगा। साचा खेड़ा इक वखावांगा। नेरन नेरा नज़री आवांगा । दूर दुराडा पन्ध मुकावांगा। इक्को राग सुणावांगा। तेई अवतार फड़ हिलावांगा। भगत अठारां जाग खुल्ह्वावांगा। निरगुण नानक तार हिलावांगा । गोबिन्द सूरा इक अख्वावांगा। नाम खण्डा इक चमकावांगा। ब्रह्मण्डां वेख वखावांगा। कलि कल्की अवतार कहावांगा। सम्बल डेरा लावांगा । कलिजुग रीती मेट मिटावांगा। मन्दिर

६८६
१३

मसीती सारे ढावांगा। जोत अतीती इक वखावांगा। पुरख अकाल घट घट नज़री आवांगा। दीन दयाल रूप धरावांगा। गुरमुख सच्चे लाल फड़ उठावांगा। रंग गुलाल इक चढ़ावांगा। कलिजुग काल नाल रलावांगा। महाकाल समझावांगा। धर्म राए हिलावांगा। चित्रगुप्त नाल मिलावांगा। लाड़ी मौत इशारे नाल जणावांगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी कर वखाऊँगा। सो पुरख निरँजण नाम धराऊँगा। हरि पुरख निरजण वेस वटाऊँगा। एकँकार पर्दा लाहूंगा। आदि निरँजण जोत जगाऊँगा। अबिनाशी करता राह चलाऊँगा। श्री भगवान घर घर अलख जगाऊँगा। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाऊँगा। चार वरन समझाऊँगा। बरन अठारां मेट मिटाऊँगा। गुर अवतारां हुक्म मनाऊँगा। ज़ाहर पीर नज़री आऊँगा। अमाम आपणा भेव चुकाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखाऊंगा। साची करनी कर वखावांगा। कलिजुग कूड़ मिटावांगा। मूर्ख मूढ़ समझावांगा। शब्द नाद तूर वजावांगा। अनहद रागी राग सुणावांगा। सृष्ट सबाई फड़ उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा रहबर इक अख्वावांगा। साचा रहबर इक अख्वाएगा। परवरदिगार फेरा पाएगा। शरकत सब दी मेट मिटाएगा। नफरत करदा नज़र
६९० कोई ना आएगा। साची हरकत इक वखाएगा। बरकत आपणी इक वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ६९०
१३ कर, साची करनी आप कराएगा। साची करनी हरि करावेगा। चौदां तबक हिलावेगा। पीर पैगम्बर कुरलावेगा। नेत्र नैणां १३
नीर वहावेगा। सदी चौधवीं भार ना कोई उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणा फेरा पावेगा। कल फेरा पाए भगवान, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। योद्धा सूरबीर नौजवान, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। सृष्ट सबाई वेखे मार ध्यान, आत्म खोज खुजाईआ। लेखा जाणे राज राजान, भूपत भूप भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा पर्दा आप उठाईआ। साचा पर्दा चुके आप, आप आपणी दया कमाईआ। मूसा नज़री आए ईसा बाप, पिता पूत वड वड्याईआ। मुहम्मद वेखे सज्जण साक, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। नानक निरगुण खोले ताक, दो जहानां दए वड्याईआ। गोबिन्द पूरा करे भविख्त वाक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रगट होवे पुरख समराथ, निहकलंका नाउँ धराईआ। सब दा पार किनारा करे घाट, मँझधार दए रुढ़ाईआ। कोई ना दीसे सज्जण साक, सगला संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर मंगाईआ। पीर पैगम्बर दर दर आ, घर घर वेख वखाइंदा। सदी चौधवीं पन्ध मुका, पांधी इक्को फेरा पाइंदा। अन्त

सलाम लओ बुला, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। रूह बुत्त होए जुदा, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह, नेत्र नैण उठाईआ। कवण दवारे परवरदिगार रिहा बोल, सच संदेसा इक सुणाईआ। चारे कुण्ट वज्जया ढोल, डंका इक्को इक जणाईआ। चौदां तबकां जिस कुण्डा दित्ता खोल्ह, खाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। वस्त रही ना किसे कोल, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। चौदां सदीआं रहे अनभोल, बेपरवाह चले ना कोए रजाईआ। अन्तिम आया तोलण तोल, तोला बणया इक रघराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड्डा शहिनशाहीआ। तोला बण फड़ तराज़ू, त्रैगुण अतीता फेरा पाइंदा। ईसा मूसा इक दूजे दा पकड़न बाज़ू, बाज़ी सब दी आप उलटाइंदा। मुहम्मद कहे मेरा वड्डा साकू, सज्जण नज़र कोए ना आइंदा। जिन्हां रसना जिह्वा पीता तम्बाकू, तुख़त तिन्हां आप उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईसा मूसा दर मंग मंगाइंदा। ईसा मूसा आए नठ्ठे, दोइ जोड़ जोड़ सरनाईआ। हरि सरनाई दोवें ढठ्ठे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। परवरदिगार तेरे मार्ग दस्से, अल्फ ये करी पढ़ाईआ। कलिजुग जीव उम्मत उम्मती दीन मज़्हब विच फसे, लाशरीक नज़र किसे ना आईआ। बिन ढाहयों अन्तिम सारे ढठ्ठे, बैठे पिठ वढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। तेरे अग्गे इक अरज़ोई, रोज़ा निमाज़ बांग कम्म किसे ना आइंदा। दरगाह साची मिले ना ढोई, परवरदिगार ना मेल मिलाइंदा। सुरत सवाणी ना जागी सोई, कलमा हक़ ना कोए जणाइंदा। तोबा तोबा तेरी दरोही, दरोही खुदाए नबी रसूल सर्ब जणाइंदा। तेरे नालों होई जुदाई, रूप अनूप ना कोई वटाइंदा। असां मार्ग देणा सिध्धा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। तुध बिन नज़र करे कौण बेनज़ीर, नज़र नज़र ना कोई मिलाईआ। शेख़ मुसायक पैगम्बर पीर, मिले ना कोई वड्याईआ। कूड़ी क्रिया वज्जा ज़ंजीर, तृष्ना ममता बैठी बन्धन पाईआ। तेरी नज़र ना आई सच तस्वीर, तसबी झूठी गल लटकाईआ। तुध बिन कवण बदले तकदीर, तदबीर सके ना कोई जणाईआ। साडे हथ्थ तेरी तकसीर, तालब तेरी ओट रखाईआ। कलिजुग अन्तिम दिसे भीड़, हौला भार ना कोए वखाईआ। तेरी लिखी कातब बन लेखणी अख़ीर, नाता जुड़या कलम शाहीआ। कलिजुग अन्तिम सदी चौधवीं प्रगट होवे ज़ाहरा पीर, अमाम अमामां फेरा पाईआ। सब नूं देवे अमृत नीर, आबे हयात सच प्याला दीन दयाला हथ्थ उठाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, राज राजान ना कोए जणाईआ। तेरे दर ते डिगे अन्त अख़ीर, आपणा माण ना कोई धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इके देणा साचा वर, तुध बिन होए

ना कोए सहाईआ। परवरदिगार इक अतीता, त्रैभवन धनी आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर पिछली छड्डो रीता, आपणा अगला मार्ग लाइंदा। नाता तुटे मन्दिर मसीता, मुसल्ला हेठ ना कोई वछाइंदा। सीना करे ठांडा सीता, अमृत मेघ बरसाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पतित पुनीता, पतित पापी पार कराइंदा। पिछला वेला पिच्छे बीता, अग्गे इक्को राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। साची सिख्या इक समझावांगा। ईसा मूसा नाम जपावांगा। मुहम्मद राग सुणावांगा। अल्ला राणी माण चुकावांगा। सच कहाणी इक प्रगटावांगा। दो जहानां राणी आप बणावांगा। खाणी बाणी बहि समझावांगा। बाणी अगम्म लिखावांगा। जन भगत लग्न लगावांगा। आपणी रंगन चढ़ावांगा। किसे दर ना मंगण जावांगा। कलिजुग कूड़ा झगड़ा अन्त चुकावांगा। पीर पैगम्बरां अक्खीं वखावांगा। गुर अवतारां आप समझावांगा। ज़ात पात मेट मिटावांगा। दीन मज़्ब ना कोई रखावांगा। आत्म परमात्म पर्दा लाहवांगा। ब्रह्म पारब्रह्म रलावांगा। ईश जीव गोद बहावांगा। धुर संजोग मेल मिलावांगा। दरस अमोघ करावांगा। पिछली हरस मिटावांगा। गोबिन्द कर्ज़ा लाहवांगा। आपणा फ़र्ज निभावांगा। इक्को तर्ज अलावांगा। सोहँ ढोला गावांगा। सतिजुग राह चलावांगा। नानक निरगुण इक दरसावांगा। गोबिन्द डंक वजावांगा। पीर पैगम्बरां उंगली ला के आपणा घर वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदी चौधवीं पन्ध मुकावांगा। सदी चौधवीं पन्ध मुकेगा। बेपरवाह कदे ना रुकेगा। सांझा पीर उठेगा। बेनज़ीर तुठेगा। शेर इक्को बुक्केगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार भगत भगवान एका रंग रंगेगा। गुर अवतार आया नेड़े, नेरन नेरा आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखो केहड़े, श्री भगवान आप उठाइंदा। सृष्ट सबाई पए झेड़े, झगड़ा अन्त ना कोई मिटाइंदा। कोई ना कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा मेल ना कोई रखाइंदा। त्रैगुण माया पाया घेरा, जगत जंजाल ना कोए गवाइंदा। कूड़ी क्रिया हेरा फेरा, माया पर्दा ना कोई उठाइंदा। किसे ना दिसे सञ्झ सवेरा, रैण अन्धेरा इक्को छाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेंहदा रिहा करके वड्डा ज़ेरा, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करदा रिहा मेहरां, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणी कल धराइंदा। कलिजुग कल धरावेगा। अछल अछल्ल करावेगा। बल पिछला माण मिटावेगा। अटल महल्ल बहावेगा। पंचम जोड़ जुड़ावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अन्त सुणावेगा। एका इष्ट जणावेगा। एका सृष्ट वसावेगा। इक्को फेरी पावेगा। पंच प्रधान आप जणावेगा। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात वखावेगा। भगत भगवान मिलावेगा। भगत दुआर

६६२
१३

सुहावेगा। छत्ती जुग दा पन्ध मुकावेगा। बत्ती दन्द ना कोई गावेगा। रत्ती रत्त सर्ब सुकावेगा। दीवा बाती ना कोई जगावेगा। कलिजुग हट्टी वेख वखावेगा। कूड़ी खट्टी कूड़यां सिरां चुकावेगा। अन्त वासना होई खट्टी, खटका सर्ब मिटावेगा। मुहम्मद वेखे मौली अट्टी, साचा तन्द ना कोई बंधावेगा। किसे मस्जिद दिसे ना मोमबत्ती, नूर ज़हूर ना कोई वखावेगा। चारों कुण्ट वा आवे तत्ती, अमृत मेघ ना कोई बरसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे राग छत्ती, छतीआं एका वंड वंडाइंदा। वंड वंडाए श्री भगवाना, भगवन आपणा खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवाना, आत्म परमात्म आप समझाइंदा। भगत भगवान बन्ने गाना, साचा सगन मनाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाणा, सच संदेसा इक सुणाइंदा। आत्म परमात्म सच ज्ञाना, बोध अगाध नाम पढ़ाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, निझर झिरना इक झिराइंदा। जोती नूर नूर नुराना, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी रीती तेरी झोली पाइंदा। कलिजुग तेरी रीती तेरी झोली पावांगा। हौली हौली नाल मिलावांगा। सृष्ट सबाई गोली अन्त बणावांगा। काया चोली सब दी आप बदलावांगा। डोली तेरे कंध चुकावांगा। मौली तन्द हथ्थ फड़ावांगा। अल्ला राणी नाल गौंदी, नेत्र नैणां पर्दा लाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी भावनी पूर करावांगा। तेरी
६६३ भावनी पूर करावांगा। लख चुरासी विच फिरावांगा। सन्त सुहेले साचे वखावांगा। आप आपणे जहे करावांगा। निरभउ ६६३
१३ हो ना कदे डरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे इक्को चढ़ावांगा। १३
घर साचा इक दरसाउणा एं। सम्बल नगर डेरा लाउणा एं। जोती नूर नूर चमकौंणा ए। आपणी कार कमाउणा ए। शाह सुल्तानां आप उठाउणा ए। राउ रंक हिलाउणा ए। सम्मत उनीसा वेख वखाउणा ए। बीस बीसा रंग चढ़ौणा ए। सच हदीसा राग अलाउणा ए। खाली खीसा सर्ब कराउणा ए। ताज सीस ना किसे टिकाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कर्म कमाउणा ए। एका कर्म कमावांगा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। राज राजानां दर दर फिरावांगा। ग़रीब निमाणे फड़ उठावांगा। फड़ बाहों राहे पावांगा। चार वरन मनावांगा। इक सरन दरसावांगा। नेत्र हरन फरन खोल्ह वखावांगा। तरनी तरन नज़री आवांगा। मरन डरन चुकावांगा। त्रैगुण अग्न सड़दे आप बचावांगा। जो सोहँ ढोले पढ़दे, गोबिन्द झोली पावांगा। जीव जंत कल अड़दे, ख़ाकी ख़ाक मिलावांगा। इक दूजे नाल लड़दे, लड़ लड़ सब दा मोह चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखावांगा। हरि आपणा खेल वखाएगा। नौ खण्ड उठाएगा। सत्त दीप लड़ाएगा। बचया कोई रहिण ना पाएगा। बीस बीसा हुक्म मनाएगा। नाम

खण्डा इक चमकाएगा। कलिजुग रंडा कर वखाएगा। भेख पखण्डा आप उठाएगा। बत्ती दन्दा गाउँदा नज़र कोई ना आएगा। अन्तिम छन्दा इक सुणाएगा। जो बचया बंदा कर बहाएगा। बचया कोई रहिण ना पाएगा। नेत्र अन्धा मूँह दे भार सुटाएगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटाएगा। निवण सु अक्खर इक समझाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम आपणी करनी आप कमाएगा। साची करनी आप कमावेगा। सचखण्ड दुआर हरि सुहावेगा। भगत भगवान मिलावेगा। ढोला इक सुणावेगा। पर्दा उहला आप चुकावेगा। मौला नज़री इक्को आवेगा। उलटा कँवला आप करावेगा। अमृत झिरना इक झिरावेगा। नादी नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजावेगा। विस्मादी विस्माद हो जावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक चलावेगा। साचा राह इक्को चलेगा। पुरख अकाल दो जहान खेड़ा मल्लेगा। नौ खण्ड पृथ्मी अन्दर रलेगा। दूई द्वैती कोई ना सल्लेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक्को घल्लेगा। सच स्नेहुड़ा इक घलाएगा। दीपक जोती नाम जपावेगा। दूजा इष्ट ना कोई मनावेगा। दृष्ट सब दी आप खुल्ावेगा। रामा वशिष्ट रूप वटावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकावेगा। करोड़ तेतीसा धूढ़ी ख़ाक रमावेगा। गुर अवतार लख लख शुकर मनावेगा। पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकावेगा। खाणी बाणी वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान नैण शरमावेगा। ज्ञान ध्यान वड विद्वान, चौदां विद्या माण करावेगा। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर शाह हकीर पंडत पांधा कलिजुग जीव थक्का मांदा आपणा बल ना कोई रखावेगा। पुरख अकाल इक समझांदा, सच स्नेहुड़ा आप घलांदा, गोबिन्द सूरा फेरा पांदा, नज़र किसे ना आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करावेगा। गोबिन्द गोबिन्द डंका वज्जेगा। जो घड़या अन्तिम भज्जेगा। गुरमुख दरस कर कर रज्जेगा। मनमुख कूड़ी क्रिया नच्चेगा। वेले अन्त ना कोई बचेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सरबँगे दा। सूरा सरबँग है। सद वसे संग है। रूप रंग ना कोई रेख है। जुगां जुगन्त वजाए मृदंग है। लोआँ पुरीआँ वेखे लँघ है। गुर अवतारां अन्तिम सेजा माणे अनन्द है। पीर पैगम्बर सेजा सुहाए पलँघ है। नाउँ निरँकारा जणाए छन्द है। जुग चौकड़ी देवे दंड है। आदि अन्त आत्म परमात्म पाए गंढु है। जन भगतां देवे ठंड है। कलिजुग जीव नार दुहागण रंड है। दूई द्वैती हउमें हंगता अन्दर कंध है। पारब्रह्म मिलण दा चुक्कया किसे ना पन्ध है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सदा बख्शंद है। आपे होए बख्शंद दीन दयाला, दयानिध दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, निरगुण निरवैर खेल आप कराइंदा। लेखा जाण काल महाकाला, भेव अभेदा आप खुलाइंदा।

६६४
१३

सच धर्म दा सच दुआर सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धुर दरबारी आप वखाइंदा। भगत भगवान बणे रखवाला, नित नवित्त कर हित समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलिजुग अन्त जीव जंत कूड़ी क्रिया कढ्ढे दिवाला, खाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग लाए सुखाला, साचा राह इक जणाइंदा। साचा राह जणाए आप, आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई इक्को जाप, जीवण जुगत दए जणाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। आत्म परमात्म सच्चा पाठ, साचा हवन इक कराईआ। अमृत सर सरोवर तीर्थ ताट, किनारा इक्को नज़री आईआ। मेल मिलावा पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी धार समाईआ। सेज सुहञ्जणी भोग बिलास, रस इक्को इक जणाईआ। लेखा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर चरणां हेठ दबाईआ। भगत भगवन्त रखे पास, आप आपणी गोद उठाईआ। साचा सन्त ना होए उदास, निराला रूप ना कोई रखाईआ। गुरमुखां दरस वखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी वेस वटाईआ। गुरसिखां देवे नाम दात, अनडिठड़ी झोली पाईआ। गुर का शब्द वड्डी करामात, घर घर दए वखाईआ। कलिजुग नाता तुटे कोई ना देवे साथ, सगला संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्को मार्ग दए जणाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। कलिजुग जीव हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, काग हँस रूप वटाईआ। निर्मल दीपक जोत जाए जग, जोती जोत करे रुशनाईआ। आत्म नाद वजाए विच ब्रह्म ब्रह्मादि, ब्रह्मांड भेव खुल्ाईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला, साचे मन्दिर बहे सज, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिले भज्ज भज्ज, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। साहिब सतिगुर पर्दा देवे कज्ज, सच दुशाला इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग राह इक वखाईआ। सतिजुग वखाए इक्को राह, रहबर पुरख अकाल अख्वाइंदा। शब्दी गुर बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। चार वरनां दए सलाह, बरन अठारां आप जणाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाए सहिज सुभा, गुण अवगुण ना कोई वखाइंदा। गुरमुख गुरमुख आपणा पर्दा लओ उठा, बिन सतिगुर पूरे पर्दा कोई ना लाहइंदा। गुर गोबिन्द निज नैण निज आत्म निज नेत्र दर्शन लओ पा, जोती जाता नज़री आइंदा। भरम भुलेखा कूड़ा सहिंसा दयो मिटा, सहिंसा रोग कम्म किसे ना आइंदा। धुर संजोग मेला लओ मिला, मिल्या मेल ना कोई तुड़ाइंदा। कँवल ऊँधा लओ करा, झिरना निझर आप झिराइंदा। बूँद बांदी मेघ लओ बरसा, छहबर आपणे नाम वखाइंदा। जीवण विच्चों जीवण लओ वटा, जीवदयां मरना इक्को समझाइंदा। सतिगुर सरनाई परम पुरख बहिणा जा, अकाल पुरख ध्यान लगाइंदा। आदि जुगादी पिता माँ, पूत सपूत गोद उठाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा इक सुणा, अलैहदगी सब तों रिहा जणाईआ। निरगुण सरगुण नाल करे सलाह, साहिब आपणा मता पकाईआ। कलिजुग अन्तिम पर्दा देवे लाह, पर्दानसीं आपणा मुख वखाईआ। मुख नकाब ना कोई जणा, हक़ जनाब कर रुशनाईआ। पुन्न सवाब वेख वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह इक वखाईआ। साचा राह चार वरन, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। पुरख अकाल रख सरन, आदि जुगादि होए सुहाईआ। गुर का मंत्र खोल्हे नैण हरन फरन निज नेत्र पर्दा लाहीआ। ठाकर स्वामी तरनी तरन, तारनहारा वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा चुकाए मरन डरन, बिन शब्द गुरू सतिगुर पूरा नज़र कोई ना आईआ। सन्त सुहेले मन्दिर साचे वड़न, घर आपणा कुण्डा लाईआ। गुरमुख पौड़े पौड़े चढ़न, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। भगत भगवान हथ्थी फड़न, फड़ बांहो विच बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती इक जणाईआ। साची रीती सतिजुग धारा, भगत भगवान मिले वड्याईआ। बण विचोला एकँकारा, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। साचा ढोला बोल जैकारा, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे चाढ़े रंगण, हरि का नाउँ दूजे दर कोई ना जाए मंगण, गृह गृह आपे झोली पाईआ। गृह गृह देवे निरगुण दात, दाता दानी आप वरताइंदा। कोई किसे दे अग्गे करे ना हाथ, खाली भण्डारे आप भराइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, अनाथ अनाथी वेख वखाइंदा। इक्को दस्से मंत्र पूजा पाठ, पाठशाला काया घर बणाइंदा। घर सरोवर देवे तीर्थ ताट, अठ सठ माण चुकाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती टेके माथ, सीस उपर ना कोई उठाइंदा। सर्ब जीआं दा दाता पुरख समराथ, सर्ब कल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग साचे घर घर पुछे वात, घर घर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक वड्याइंदा। साचा मंत्र वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप वड्याईआ। सो विचो हँ कढ्ढ, हँ ब्रह्म सो रूप वखाईआ। पंज तत्त नाता सब ने जाणा छड्ड, पीर पैगम्बर संग ना कोई लै जाईआ। आत्म सच्ची यद्द, विष्नूं आपणा खेल कराईआ। गुरमुख गुरमुख हरि चरण प्रीती जाणा बज्झ, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आपणा पड़दा आपे लए कज्ज, घर बैठा सतिगुर पूरा नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रहिंदे रहे अड्ड, लख चुरासी मुड़ मुड़ फेरा पाईआ। अन्तिम इक्को निशाना लओ गड्ड, गुर गोबिन्द रिहा चलाईआ। दीन मज़्हब तोड़ो हद्द, पुरख अकाल होए सहाईआ। सतिगुर गोबिन्द दा अमृत मध, जगत मध कम्म किसे ना आईआ। खाणे छड्डो जीवां हड्ड, हरि जू हड्डी हड्डी दए तुड़ाईआ। सच दवारयों देवे कढ्ढ, नानक देवे ना

कोई गवाहीआ। जिन्हां गाया पुरख अकाल दा सच्चा छन्द, तिन्हां नानक गोबिन्द लए बहाईआ। वेखो अन्दर सोहणा अनन्द, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। आपणा खोजो जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड घर विच नज़री आईआ। क्यों लग्गे झूठी निन्द, नानक निरगुण गया समझाईआ। सर्ब जीआं दा दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। अमृत धार पीओ सागर सिन्ध, नीर सीर इक वखाईआ। श्री भगवान दी बणो बिंद, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई रिहा समझाईआ। सृष्ट सबाई फतिह डंका, गुर गोबिन्द नाम वजाइंदा। सहिसा मेटे राउ रंका, राज राजान सिर ना कोई उठाइंदा। बीस इकीसा मिटे सब दा शंका भाण्डा भरम भंनाइंदा। कलिजुग वेला आया अन्ता, अन्त आपणा वेस वटाइंदा। लख चुरासी निरगुण कन्ता, सरगुण साची सेज हंढाइंदा। सति सरूप बणाओ बणता, अन्ध कूप मेट मिटाइंदा। हउमें गढ़ तोड़ो हंगता, हँ ब्रह्म इक दृढ़ाइंदा। पुरख अकाल गोबिन्द बणाए साची बणता, संगल शरअ ना कोई वखाइंदा। गुरमुख गुरमुख किसे दवारे ना होए मंगता, गुरू ग्रन्थ गुर इक्को नज़री आइंदा। सर्ब जीवां नूं देवे संथा, शब्द इक्को इक पढ़ाइंदा। पुरख अकाल सब दी बणाए बणता, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी सेवा लाइंदा। बण जाओ पारब्रह्म दी साची जंता, जीव जंत प्रभ ब्रह्म रूप रखाइंदा। कोई ना दिसे भुक्खा नंगता, हरिजन हरि हरि नाम ध्याइंदा। वेखणहारा जेरज अण्डजा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाइंदा। हरि का भेव किसे ना पाया पंडता, पढ़ियां हथ्थ किसे ना आइंदा। कर किरपा जिस चोली नाम रंगदा, रंग आपणा इक दरसाइंदा। करे खेल सूरे सरबँग दा, शहिनशाह आपणी गोद बहाइंदा। सम्मत बीस वेखो रंग चण्ड प्रचण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम पाया फेरा, फेरी आपणे नाम धराईआ। चार वरना चुक्के झेड़ा, झगड़ा सब दा दए गंवाईआ। माया राणी लाए रगढ़ा, अन्तिम चोटी दए मुनाईआ। गुरसिख गुरसिख कीता वक्खरा, वक्खरी धार जणाईआ। बजर कपाटी तोड़े पत्थरा, सिल पाहिन ना कोए मनाईआ। नेत्र नीर वरोले ना कोई अथ्थरा, गोबिन्द बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। सतिगुर पूरे दा विछाया इक्को सथरा, गोबिन्द सत्थर यार हंढाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे नखरा, नक्क सब दे नकेल पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पै गया खतरा, खतरे विच सर्ब लोकाईआ। कोई ना जाणे केहड़ी धारों पारब्रह्म उतरा, निरगुण आउँदा नज़र ना आईआ। ना कोई पढ़ सके पारब्रह्म दा सच्चा पत्रा, जिस दवारे आपणा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, डंका इक्को इक जणाईआ। डंका दो जहान वज्जेगा। पुरख अकाल इक्को गज्जेगा। कलिजुग जीव शरनाई भज्जेगा। साचे मन्दिर

कोई ना सजेगा। अन्त पर्दा कोई ना कज्जेगा। जो घड़या सोई भज्जेगा। गुरमुख विरला हरि सरनाई लगेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सूरबीर शाह सुल्तान साचे तख्त इक्को सजेगा। तख्त ताज सुहावेगा। आपणा मार्ग लावेगा। राज राजान मिटावेगा। राउ रंक इक्को घर वखावेगा। इक्को नाम जपावेगा। इक्को मार्ग लावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह सुल्तान आप हिलावेगा। शाह सुल्तान हिलाएगा। बीस बीसा खेल रचाएगा। पहली चेत्र हुक्म मनाएगा। रण भूमी खेत्र आप बणाएगा। नौ खण्ड पृथ्मी वेंतर इक लगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म मनावेगा। साचा हुक्म मनावेगा। घर घर लोहड़ा इक पावेगा। थोड़ा थोड़ा खेल वखावेगा। जोड़ा जोड़ा नज़र कोई ना आवेगा। मनमुख कोई रहिण ना पावेगा। प्रभ दर रोड़ा ना कोई अटकावेगा। साचा घोड़ा इक फिरावेगा। शाह अस्वारा आसण लावेगा। वागां आप भवावेगा। लोकमात फेरा पावेगा। जन भगतां लग्गी अग्ग आप बुझावेगा। दुरमति दाग़ धवावेगा। साचा राग सुणावेगा। अनहद वाजा आप वजावेगा। अमृत ताल सुहावेगा। नाम जाम प्यावेगा। पूरन काम करावेगा। गुरमुख इक्को रूप बणावेगा। सीस केस ना कोई कटावेगा। दस्मेस नजरी आवेगा। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकावेगा। बाशक शेश सहँसर मुख चलावेगा। पुरख अकाल सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। घर घर बहि बहि खुशीआं वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दिर इक्को इक वडयावेगा। इक्को मन्दिर सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। दूजा करे ना कोई वंड, हिस्सा हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर जन भगतां हो बख्शिंद, प्रभ आपणा कुण्डा लाहइंदा। निरगुण नूर चाढ़े चन्द, चन्द चांदना इक चमकाइंदा। शब्द अगम्मी साचा छन्द, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। जन्म जन्म दा मेट पन्ध, आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक वखाइंदा। साचा मन्दिर उच्च महल्ला, हरि महिफल आप लगाइंदा। वसणहारा इक अकल्ला, अक्ल कला हो जाइंदा। आपणी धार रखाए सदा बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार जणाइंदा। सुहावणहारा उच्चा टिल्ला, उच्च अगम्म फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी कदे ना हिल्ला, सृष्ट सबाई आप हिलाइंदा। बणावणहारा साचा किला, कोट बंक नाम धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। साचा मन्दिर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। जोत जगाए आदि निरँजणा, नूरो नूर रुशनाईआ। आदि जुगादी दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुर सतिगुर निज नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरण धूढ़ी देवे साचा मजना, दुरमति मैल धवाईआ। गुरमुख गुरमुख साचे सज्जणा, कलिजुग

वेला अन्तिम प्रभ मिलणा कर कर लम्मीआं बांहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृसना माया ममता कूड़ी क्रिया मथना, सच सच करे कुड़माईआ। बिन सतिगुर दरस किसे ना रज्जणा, माया ममता हल्की होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग इक जणाईआ। साचे मार्ग जाओ लग्ग, हरि लागत कोई ना लाइंदा। आपणे मन्दिर बहो सज, घर घर विच आप वखाइंदा। सुखमन टेडी बंक ताड़ा जाए वज्ज, अग्गे हो ना कोई अटकाइंदा। अमृत आत्म पीओ रज्ज, दीन दयाला हो किरपाला साचा रस इक वखाइंदा। सोहँ ढोले बोलो गज्ज, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। कलिजुग पार किनारा लँघे हद्द, हद्द अवर ना कोई रखाइंदा। सचखण्ड वेखणा सतिजुग लँघ, फड़ बांहों पार कराइंदा। कर्म धर्म वरन बरन सरन इक सरनागत, सरनाई इक्को इक वखाइंदा। पारब्रह्म दी ब्रह्म मति, मनमति सर्ब गवाइंदा। निज नेत्र खोल्ह के वेख अक्ख, गुरमति गुर नज़री आइंदा। परम पुरख हो प्रतख, वेस अवेस वटाइंदा। कूड़ी क्रिया मारो ना झक्ख, झाका सब दा आप गवाइंदा। पीआ प्रीतम नाल वेखो वस, वसल आपणा इक कराइंदा। दिवस रैण गाओ जस, जस ढोला इक सुणाइंदा। किसे कम्म ना आउणा तत्त अठ्ठ, मन मति बुध तत्त ना कोई रखाइंदा। बीज बीजो आपणे वत, नाम फुलवाड़ी इक महकाइंदा। जिस नूं गोबिन्द उत्ते पै गया शक़, सो गुरसिख आर पार पन्ध ना कोई मुकाइंदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगां जुगन्तर आउँदा जांदा कदे ना जाए थक्क, थकावट सब दी आप गवाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ चार दवारी कोई ना रखे डक्क, बसता बन्न बंद ना कोई कराइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित वसणहारा घट घट, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। आत्म मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या इक समझाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, हँस मुख सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। गुरमुख गुर इक दूजे दे होवण वस, आपणा आप ना कोए वड्याइंदा। जीव जंत साध सन्त साहिब सतिगुर इक्को जस, जस वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई करे इकट्ठ, इक्को देवे ब्रह्म मति, पिछला तत्त सर्ब गवाइंदा। पिता पुत्त ना कोई फुट्ट, फुटकल रूप ना कोई वखाइंदा। दूई द्वैती जाए छुट्ट, छुटकारा आप कराइंदा। कूड़ी तृष्ना कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डां इक चमकाइंदा। राती सुत्तयां लए पुच्छ, आप आपणा हुक्म मनाइंदा। गुरमुख बूटा जाए ना सुक्क, हरया सिंच आप कराइंदा। जिस नूं गोदी ल्या चुक्क, ज़िमी उत्ते ना फेर सुटाइंदा। सुफल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाइंदा। पिता पूत उज्जल मुख, मुख सिफ्तां नाल सलाहइंदा। जन्म जन्म दी कढ्ढे भुक्ख, तृष्ना तृखा रोग मिटाइंदा। जिस दीआं सुखणा रहे सुख,

सो सतिगुर दया कमाइंदा। तुहाढ्ढे अन्दरों पए उठ, उठ आपणा रंग वखाइंदा। जेहड़ा लुक्या रिहा गुड्ढ, आपणा पर्दा लाहइंदा। अन्दर वड़ के वेखे झुक, कवण नीवां कवण उच्चां दोहां लड़ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाइंदा। कूड़ी क्रिया रोवे, गुरमुख घर रहिण ना पाईआ। आपणी मैल धोवे, बण सेवक सेव कमाईआ । अमृत रस इक्को चोवे, सांतक सति वरताईआ। प्यो पुत्त पुत्त प्यो इक्को रंग होवे, रंग कसुंभड़ा होर ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दु:ख दु:ख ना कोई वखाईआ। कलिजुग कुरलावे मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी मैं निकर्मण क्यों गई आ, गुरसिख अन्दर फेरा पाईआ। मैनूं पावणहारा फाह, घर बैठा सच्चा माहीआ। जिन्ना चिर जपां ना एहदा नाँ, मेरा पल्लू ना कोए छुडाईआ। बण निमाणी करां हां, हउमें रोग मिटाईआ। कर किरपा फड़े मेरी बांह, कोझी कमली दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी दए समझा, नाम इशारा इक जणाईआ। गुरसिखां दे लग्ग पां, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। फेर तैनूं पिच्छे दयां भवां, इक्को धक्का लाईआ। तेरी हउमें मति दया गंवा, सोझी इक्को इक जणाईआ। तूं कलिजुग विच प्यो पुत्त दइें लड़ा, नाता रिहा ना भैण भाईआ। साक सज्जण दएं रुसा, सगला संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आई सिखा दे दाअ, तेरी मेंहढी दए खुल्हाईआ। तैनूं कलिजुग नाल दए रला, गल इक्को अल्फी पाईआ। शरअ कोलो मंग दवा, शरीअत तेरी भैण नज़री आईआ। गुरसिखां नूं सतिगुर मिलन दा चा, तेरी आस ना कोई रखाईआ। दर दरवाज़िउ दे दुरका, दुरगत इक बणाईआ। पिता पुत्त फिर फड़ाए बांह, बांहो फड़ गले लगाईआ। सतिगुर पूरा रोसा कदे जाणे ना, सो रुसयां आप मनाईआ। मान सिँघ मन लै मना, नरैण सिँघ नरायण अक्ख इक रुशनाईआ। गुरसिखां कोलो सतिगुर सदा मंगे मुआफी, आप आपणा भेव जणाइंदा। गुरसिख प्रेम नाल करन गुस्ताख़ी, सतिगुर पूरा आप सिखाइंदा। जे सतिगुर पूरा करे राखी, क्यों गुरसिख आपणा मुख भवाइंदा। इक्को खेल प्रभ सच्चे भाखी, रुस्सणा मनाउणा प्रभ आपणे हथ्थ रखाइंदा। उहनां दी लोकमात बणे साखी, जिनां गुरमुखां गुर आपणा रूप वखाइंदा। बिरहों तीर निराला मारे काती, काया कटाकश आप खुलाइंदा। आपे बंद करनहारा ताकी, आपणी हथ्थीं कुण्डा आपे लाहइंदा। आप सतिगुर बणके अमृत जाम प्याए साकी, प्याला आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे खेले खेल बण के बंदा ख़ाकी, ख़ाक ख़ाक विच रुलाइंदा। मान सिँघ तेरी बदल देवे हयाती, तेरा हया आपणी झोली पाइंदा। अठ्ठे पहर रहे प्रभाती, प्रभ इक्को नज़री आइंदा । दुरमति मेटे अन्धेरी राती, प्रेम इक्को चन्द चढ़ाइंदा। अग्गे रहिण ना देवे कोई बाकी, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। पिता पूत दोवें साजन साथी, सगला संग निभाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक करे राखी, राखा नज़र किसे ना आइंदा।

❇ २६ माघ २०१६ बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे घर पिण्ड मनयाला ज़िला अमृतसर ❇

ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ अधीनया, बेअन्त खेल कराइंदा। लेखा जाणे रूसा चीनया, शाह सुल्ताना वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो एका सीनया, शीना सब दा चाक कराइंदा। लेखा चुके लोक तीनया, त्रैगुण माया डेरा ढाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग चौकड़ी बदलणहारा सीनया, निरगुण सरगुण फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम सृष्ट सबाई देवणहारा तलकीनया, सच संदेसा इक सुणाइंदा। गुरमुख साचे करो याकीनया, यक्के बाद दीगरे राज राजानां आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपे खेलया। करे खेल हरि निरँकारा, समझ कोई ना पाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, धुर संदेसा हुक्म सुणाइंदा। सृष्ट सबाई सति हुलारा, नव नौ आप उठाइंदा। भूपत भूप शाह सिक्दारा, निरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाइंदा। चीन चीना ना कोई वणजार, चार कुण्ट दए दुहाईआ। भारत खण्ड ना कोई धार, नौ खण्ड वेखे थाउँ थाईंआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। दो धड़ करे संसार, साची वंड वंडाईआ। खड़ग खण्डा इक कटार, तीर कमान नाम हथ्थ उठाईआ। सब ते हमला करे आप करतार, यमला सब नूं दए बणाईआ। कमला रमला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। चीन चीना ना कोई ताकत, ताकतवर हरि अख्वाइंदा। सब दी मेटे अन्त ल्याकत, दानशमंद ना कोई वड्याइंदा। निरगुण सरगुण पिच्छे करे तुआकब, बेपरवाह फेरा पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट अन्तिम वेखण आए इबादत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाइंदा। साचा खेल करे दो धड़, दो धारा खण्डा इक चमकाईआ। सचखण्ड निवासी दरगाह साची वेखे खड़, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई मरे लड़ लड़, ना सके कोए बचाईआ। कलिजुग कूड़े मूर्ख मूढ़े डिगण दड़, ना सके कोए उठाईआ। शाह सुल्तानां अन्दर माया ममता हउमें हंगता जाए वड़, घर घर कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक मनाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरगाही आप जणाइंदा। कोई ना रहसी राजा राणा, खाली तख्त सर्ब वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी मन्नणा पए भाणा, सिर सिर हुक्म आप जणाइंदा। बीस बीसा हरि जगदीशा प्रगट होए शाह सुल्ताना, निहकलंक आपणा फेरा पाइंदा। मेटणहारा सर्ब माणा, अभिमान रूप ना कोए

वटाइंदा। मारनहारा तीर निशाना, अणयाला आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। चीन करे की विचारा, हरि का खेल विचार विच ना आईआ। अग्गे वेखो की की वरते भाणा, सम्मत बीसा राह तकाईआ। चारों कुण्ट आए हाणा, हाणीआं सके ना मेल मिलाईआ। नौ खण्ड भुल्यां प्रभ का गाणा, साचा राग ना कोए अलाईआ। हमलाआवर इक अख्वाणा, दो जहानां डेरा ढाहीआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। मेहरां अन्दर वसे ठाकर, ठाकर आपणी मेहर कराइंदा। गुरमुखां देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त नाल रंगाइंदा। सच कराए वणज बण सौदागर हट्ट इक्को इक खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहरवान इक्को दाता, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाशा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे दाता, भगत भगवन्त झोली नाम भराईआ। सदा सुहेला इक इकेला सद वसणहारा साथा, आत्म परमात्म संग निभाईआ। बोध अगाध पढ़ावणहारा गाथा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। लहिणा देणा चुके ज़ात पाता, वरन गोत इक वखाईआ। सृष्ट सबाई नज़री आए पिता माता, लख चुरासी गोद बहाईआ। चरण कँवल उपर धवल श्री भगवान बंधाए नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। मेहरवान इक्को पुरख समराथा, जुग चौकड़ी आपणी मेहर नज़र नाल तराईआ। मेहरवान बेनज़ीर, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। मुरीद मुर्शद वखाए सच तस्वीर, तसबी मणका ना कोए भवाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, शरअ ज़ंजीर तोड़ तुड़ाइंदा। बदलणहारा आप तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाइंदा। अमृत देवे सच्चा सीर, आबे हयात मुख चुआइंदा। नाम खण्डा फड़ शमशीर, धुँदूकारा डेरा ढाइंदा। जुग चौकड़ी कटणहारा भीड़, औझड़ राह पन्ध मुकाइंदा। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। मेहर नज़र करे वड पीरन पीर, लाशरीक आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्को इक वखाइंदा। मेहर नज़र सतिगुर अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। मेहरवान हो प्रतख, आत्म दरसी दरस कराईआ। मेहरवान भरे भण्डार ख़ाली सक्ख, नाम अतोट अतुट वरताईआ। मेहरवान मार्ग सच्चा दस्स, साचे मन्दिर दए चढ़ाईआ। मेहरवान दुरमति मैल कट, काग हँस रूप वटाईआ। मेहरवान लहिणा देणा चुकाए चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबक पार वखाईआ। मेहरवान मेहर नज़र कर देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नैण इक उठाईआ। मेहरवान खोल्हे नैण, निज नेत्र दया कमाइंदा। मेहरवान

साक सज्जण सैण, सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। मेहरवान नाता जोड़े मात पित भाई भैण, पिता पूत वंड वंडाइंदा। मेहरवान आदि जुगादि, जुग चौकड़ी चुकाए लहिण देण, पूरब सब दी झोली पाइंदा। मेहरवान रसना जिह्वा सारे कहिण, मिल मेहरवान आपणा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। मेहरवान लेखा चुकाए ऐन ग़ैन, अल्फ़ ये रंग ना कोए रंगाइंदा। मेहरवान इक नरायण, सदा सदा सद मेहर बखशिश बख्शीश आपणे हथ्थ रखाइंदा। बिरध बाल जगत जवान, जीवण रंग वटाईआ। जन्म कर्म धर्म निशान, पंज तत्त कुड़माईआ। आत्म परमात्म खेल महान, नज़र किसे ना आईआ। जो जन करे चरण ध्यान, रोग सोग चिन्ता दुःख दए गंवाईआ। इक वखाए पद निरबाण निरबाण, पद इक जणाईआ। लेखा चुके आवण जाण, चारे खाणी नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बुड़्हेपा लेखे लाईआ। जगत बुड़्हेपा लेखे जाए लग्ग, अग्नी तत्त बुझाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, काग हँस रूप वटाइंदा। जो साहिब सतिगुर सरनाई जाए लग्ग, रोग सोग चिन्ता दुःख सुख विच बदलाइंदा। निर्मल जोती जाए जग, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, उधार जगत ना कोए जणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ माणस जन्म लेखे पाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, अन्तिम आपणा मेल मिलाइंदा। बुढ्ढा ख़ाली हड्ड जाए छड्ड, परमात्म आत्म नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। दुक्खां दरदां दी पिच्छे रहि गई हद्द, अग्गे सांतक सति रूप जणाइंदा। भाग लग्गे साची यद्द, कुल आपणा बंक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणे घर लए सद्द, लोकमात कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा।

❇ २६ माघ २०१६ बिक्रमी बली सिँघ दे गृह कैरों ज़िला अमृतसर ❇

पिछला लेखा गया मुक्क, करता कीमत ना कोए लाईआ। अग्गे गोदी लए चुक्क, दुःख दर्द मिटाईआ। घर मन्दिर आवे सुख, गृह साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। लेखा लेखे जावे लग्ग, लावणहार आप लगाइंदा। गुरमुख गुर संगत विच बहे सज, हरिसंगत मेल मिलाइंदा। सताई पोह ख़िआल देणा छड्ड, खैहड़ा पिछला आप मुकाइंदा। पिछली बीती पिच्छे हद्द, अग्गे आपणा रंग रंगाइंदा। देवणहारा साची दाद, नाम वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर रख हथ्थ करतार, आपणी दया कमाईआ। दुःख दलिद्दर दए नवार, दर्दीआं दर्द मिटाईआ। चरण सरन बख्श प्यार, रीती साची इक दृढ़ाईआ। आदि जुगादी तारनहार, जुग जुग होए सहाईआ। भगत वछल इक गिरधार, भगवन निरगुण रूप वटाईआ। सदा सुहेला

मीत मुरार, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा दए झोली पाईआ। पिछला लहिणा नेत्र नैणां, नैण नैण दरसाइंदा। कूड़े वहण गुरसिख ना वहणा, साची धार इक समझाइंदा। हरि चरण दवारे साचे बहिणा, थल्ले उपर इक्को रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक समझाइंदा। साचा मार्ग सति सतिवाद, सति सति जणाईआ। पोह सताई छड्ड याद, पिछला लेखा सर्ब मुकाईआ। अग्गे मेला माधव माध, मोहणी आपणे रंग रंगाईआ। देवणहारा साची दाद, वस्त अमोलक इक वरताईआ। भरम भुलेखे देवे काढ, आपणे लेखे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवणहार वड्याईआ। गुरसिख बख्शे हरि जू भुल्ल, अभुल्ल दया कमाइंदा। हरिजन लोकमात ना जाए रुल्ल, फड़ बांहों गले लगाइंदा। आप महकाए साचा कँवल फुल्ल, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोलणहारा साचे तोल, तोल तराज़ू इक्को कंडा नाम वखाइंदा। नाम तराज़ू निरगुण तोला, निरवैर दया कमाईआ। इक्को धारन बोले साचा सोहला, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म आपे मौला, निराकार आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जानणहारा उपर धौला, धरनी धरत वेख वखाईआ। धरनी धरत वेखे धवल, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। नूर नुराना रूप रंग रेख ना कोए सवल, साँवल आपणी कार कमाइंदा। आदि जुगादि सदा सुहेला इक्को एक अव्वल, अलनेक कमच खेल खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देस दसन्तर वेख वखाइंदा। देस दसन्तर ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेस नरेश जणाईआ। वेखणहारा दो जहान, रूप अनूप आप वटाईआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। देवणहारा नाम निधान, नाम अनमुलड़ा झोली पाईआ। बख्शणहारा चरण ध्यान, सच प्रीती इक समझाईआ। मेटणहारा कूड़ निशान, सच सुच्च दए समझाईआ। बणावणहारा साचा काहन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखणहारा नूर मिहबान, बीदो आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भुल्ल अभुल्ल इक्को रंग वखाईआ। भुल्ल अभुल्ल इक्को रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। साहिब सतिगुर जिस दे संग, पिछली कीती सब उलटाइंदा। आत्म सेजा सुहाए पलँघ, परम पुरख आसण लाइंदा। इक्को देवे निझर अनन्द, गृह मन्दिर इक वखाइंदा। दो सत्त ढाहे कंध, नठ्ठ नठ्ठ आपणा पन्ध मुकाइंदा। सदा सदा सद हो बख्शंद, बख्शश आपणी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आपणे राह चलाइंदा। गुरमुख इक्को राह, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ।

सदा सुहेला बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। नाता जोड़ दो जहान, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। वेखणहारा थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जपावणहारा आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछली भुल्ल दए गंवाईआ। पिछली भुल्ल होए दूर, दूर दुराडी आप कराइंदा। अग्गे हरि जी आसा मनसा पूर, पूरी आसा आप कराइंदा। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाइंदा। बख्शणहारा सर्ब कसूर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। आदि जुगादि आपणा बन्ने सच दस्तूर, हुक्मे अन्दर सर्ब फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अलाइंदा। हुक्मे अन्दर खेल सरबग्ग, सरबग्ग वड्डी वड्याईआ। हुक्मे अन्दर दो जहान रवि ससि सूरज चन्द ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा भज्ज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। हुक्मे अन्दर निरगुण सरगुण हो के हर घट रिहा वस, आप आपणी खेल खलाईआ। हुक्मे अन्दर खेले खेल चौदां हट्ट, लोक परलोक सोभा पाईआ। हुक्मे अन्दर नाम निधान आपे रट, रट्टा घर घर दए वखाईआ। हुक्मे अन्दर बणाए तीर्थ तट, तट किनारा इक सुहाईआ। हुक्मे अन्दर करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा पर्दा लाहीआ। हुक्मे अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जन भगतां करदा आया पक्ख, नाता जगत तुड़ाईआ। हुक्मे अन्दर सन्त सुहेले लए रख, रखणहारा इक्को शहिनशाहीआ। हुक्मे अन्दर
७०५ १३ गुरमुखां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हुक्मे अन्दर गुरसिखां वखाए साचा हठ, धीरज धीर इक धराईआ। ७०५ १३
हुक्मे अन्दर वसे घट घट, हर घट रिहा समाईआ। हुक्मे अन्दर दूई द्वैती मेटे फट्ट, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। हुक्मे अन्दर भगत भगवान जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। हुक्मे अन्दर बणाए साचा साथ, साथी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भुल्यां मार्ग आपे लाईआ। भुल्यां मार्ग दए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। भुल्यां राह दस्से बिबेक, विवेकी रूप जणाईआ। भुल्यां लिखे आपणी हथ्थीं लेख, लेखा पिछला दए मिटाईआ। भुल्लयां भटकयां लए वेख, रुल्लयां आपणी गोद बहाईआ। सदा सदा सद कर कर सच्चा हेत, नित नवित्त फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पिछला लेखा दए मिटाईआ। गुरमुख नाउँ जगत निशाना, जुग जुग आप जणाईआ। गुरमुख नाउँ वड प्रधाना, प्रधानगी इक कमाईआ। गुरमुख नाउँ जगत ज्ञाना, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। गुरमुख नाउँ सच तराना, तरन्ना तरन्ना समझाईआ। गुरमुख नाउँ वड मर्दाना, मर्दानगी इक कमाईआ। गुरमुख नाउँ प्रगट होए जीव जगत जहाना, जीवण जुगत सर्ब समझाईआ। गुरमुख नाउँ मेल मिलाए श्री भगवाना, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख नाउँ मेट मिटाए आवण जाणा, जन्म मरन गेड़ चुकाईआ। गुरमुख

नाउँ जीव जंत जुग जुग गाणा, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सो गुरमुख औंत लोकमात ना जाईआ। गुरमुख नाउँ जगत सच, सच सच दृढ़ाइंदा। गुरमुख नाउँ घर घर पए नच्च, बण स्वांगी स्वांग वटाइंदा। गुरमुख नाउँ अमृत आत्म देवे रस, रस इक्को इक प्याइंदा। गुरमुख नाउँ हिरदे जाए वस, हरि हरि का रूप वखाइंदा। गुरमुख नाउँ करे प्रकाश लट लट, अज्ञान अन्धेर मुकाइंदा। गुरमुख नाउँ विके ना किसे हट्ट, करता कीमत आपे पाइंदा। गुरमुख नाउँ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी आप प्रगटाइंदा। गुरमुख नाउँ गहर गम्भीर, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख नाउँ ठांडा सीर, अमृत धार वहाईआ। गुरमुख नाउँ कटे हउमें पीड़, दूई जगत मिटाईआ। गुरमुख नाउँ तोड़े शरअ ज़ंजीर, शरीअत कोए रहिण ना पाईआ। गुरमखु नाउँ सच तस्वीर, दर दर घर घर नज़री आईआ। गुरमुख नाउँ बेनज़ीर, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख नाउँ सदा सदा जगत धराईआ। गुरमुख नाउँ सदा जग, जगत जुगत जणाइंदा। गुरमुख नाउँ सूरा सरबग्ग, सूरबीर वखाइंदा। गुरमुख नाउँ जगत किनारा कर कर पार हद्द, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। गुरमुख नाउँ अमृत रस मध, सबर प्याला इक प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख नाउँ सदा सदा सद जगत विच प्रगटाइंदा।

❇ २६ माघ २०१६ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड सभरां ज़िला अमृतसर ❇

सो पुरख सच सुल्ताना, सति सतिवादी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल महाना, भेव अभेद कोई ना पाइंदा। एकँकारा नौजवाना, रूप रंग रेख ना कोई रखाइंदा। आदि निरँजण वड बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। श्री भगवान सच निशाना, दरगाह साची इक झुलाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा अटल मकाना, सोभावन्त सोभा पाइंदा। पारब्रह्म कर ध्याना, ध्यान आपणे विच लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी परवरदिगार, हरि करता आप कराईआ। वसणहारा धाम न्यार, महल अटल सोभा पाईआ। आदि जुगादी सांझा यार, रहबर इक्को नूर खुदाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव अभेद खोल्हणहारा, अलख अगोचर वड वड्याईआ। शाह पातशाह सच सिक्दारा, सचखण्ड सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी

करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी करनी करने योग, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। जणावणहारा धुर संजोग, सति संजोगी आप अख्वाइंदा। वेखणहारा लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। सुणावणहारा सच सलोक, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। वसावणहारा साचा कोट, सच दवारा सोभा पाइंदा। लगावणहारा नगारा चोट, नाम डंका इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म आदि अन्त, बेअन्त आप वरताईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। नाम निधान जणाए महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। लख चुरासी वेखणहारा जीव जंत, साध सन्त फोल फुलाईआ। पावणहार माया बेअन्त, त्रैगुण पर्दा इक जणाईआ। तोड़नहारा गढ़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। जुग जुग खेल करे करतारा, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वरते वारो वारा, रूप अनूप आप वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नाद अनादी ब्रह्म पारब्रह्म आप सुणाइंदा। वसणहारा सचखण्ड दवारा, थिर घर आपणा चरण छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। भेव अभेदा रखे हथ्थ, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सदा सुहेला मार्ग दस्स, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे वस, गगन गगनंतर जोती जोत डगमगाईआ। देवे प्रकाश रवि ससि, किरन किरन किरन रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल आदि जुगादि, जुग करता आप कराइंदा। सति सति वजाए नाद, ब्रह्म ब्रह्म जणाइंदा। देवणहारा दाद, आत्म परमात्म झोली आप भराइंदा। लख चुरासी साजण साज, निरगुण सरगुण खोज खुजाइंदा। निरवैर पुरख चलाए जहाज़, भार आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण दाता वड वड्याईआ। सरगुण खेल करे अपारा, अपरम्पर आपणा राह चलाईआ। आत्म परमात्म दे सहारा, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। शब्द गुरू कर बलकारा, बल इक्को इक वड्याईआ। नाउँ धर गुरू अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। पंज तत्त दए सहारा, तत्तव इक्को इक जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। लेखा जाण पीर पैगम्बर गुर अवतार, भगत भगवान आप उठाइंदा। साचे सन्तां दे हुलार, हरि मन्दिर इक जणाइंदा। गुरमुखां खोल्ह कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। गुरसिखां चले नाल नाल, अन्दर बाहर सगला

संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल रचाइंदा। जुग जुग खेल पैगम्बर पीर, मुर्शद आपणी धार चलाईआ। खेले खेल बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। मुकामे हक़ चोटी चढ़ अखीर, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। लाशरीक सच तस्वीर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। पावणहारा शरअ ज़ंजीर, शरीअत लेखा वंड वंडाईआ। बदलणहारा आप तकदीर, तकसीर सब दी वेख वखाईआ। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गवर वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम हथ्थ रखे लेखा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। लोक परलोक अवण गवण त्रैभवण चौदां तबक आपे वेखा, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। लेखा जाणे औलीआ पीर शेख़ा, दस्तगीर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम धर हरि कल अक्ल कला अख्वाईआ। निरगुण निरवैर अछल अछल्ल, वल छल धारी भेव कोए ना पाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, जोती जोत जोत रुशनाईआ।

७०८ आदि जुगादि जुग जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर नाम संदेस जो रिहा घल्ल, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा डेरा लाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पर्बत चोटी बैठा मल्ल, समुंद सागर खोज खुजाईआ। सतिजुग ७०८

१३ त्रेता द्वापर कलिजुग दूई द्वैती मेटणहारा सल्ल, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। जोती नूर नूर प्रकाश साचा दीपक गया बल, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, परवरदिगार आपणी दया कमाइंदा। देवणहारा सच सलाह, सलाहगीर इक हो आइंदा। दो जहानां बणे मलाह, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पुरी लए जगा, नेत्र अक्ख सर्ब खुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार दर लए मंगा, नाम स्नेहुड़ा इक घलाइंदा। पीर पैगम्बर दए हला, हुजरा सब दा खोज खुजाइंदा। इक्को डंका दए वजा, डंका आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच दुआर एका दए सुहा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त नज़री आए इक खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार जो कीते जुदा, अन्तिम आपणा जुज़ बणाइंदा। इक्को मार्ग दस्से सिध्धा, दीन मज़ुब ना कोए रखाइंदा। तीर निशाना मार दो जहान विधा, आर पार आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी करे आप, हरि करता वड वड्याईआ। आदि जुगादि देवणहारा जाप, साचा नाउँ इक दृढ़ाईआ। उतारनहारा कोटन कोटि पाप, पतित पापी पार कराईआ। जिस नूं ईसा कहे बाप, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। सो वेखे खेल तमाश, खालक खलक रूप वटाईआ। जिस दी मुहम्मद रखी

आस, अमाम अमामां फेरा पाईआ। मेहरवान बुझाए तृष्ना प्यास, अग्नी अग्ग ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। गुर अवतारां देवे साथ, सगला संग आप निभाईआ। भगत भगवान पढ़ाए गाथ, ढोला इक्को इक जणाईआ। सर्ब कला बण समराथ, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। आपे बैठा साचे पत्तण ताट, घाट इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण जोती निरगुण जाता, नूरो नूर डगमगाइंदा। निरगुण नूर पुरख बिधाता, बेपरवाह फेरा पाइंदा। निरगुण वेखे खेल तमाशा, सरगुण नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण निरगुण पूरी करे आसा, नानक गोबिन्द मेल मिलाइंदा। निरगुण निरगुण खोल्ले सच खुलासा, भेव अभेदा आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, आकाश आकाशा चरणां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेस अवल्ला आप वटाइंदा। आपे धारे वेस अवल्ला, अव्वल आपणा नाम जणाईआ। आदि जुगादी इक इकल्ला, निरगुण दाता वड वड्याईआ। सच संदेसा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप घल्ला, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। शब्द निराला तीर फड़े इक्को भल्ला, चार कुण्ट कुण्ट जगाईआ। बोलणहारा साचा हल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महल अटल इक रुशनाईआ। महल अटल सोहे बंक, बंक दवारी आप सुहाइंदा। वेस वटाए श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह जणाइंदा। शब्द जणाए महिमा अगणत, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। कलिजुग वेखे अन्तिम अन्त, अन्त आपणा फेरा पाइंदा। लख चुरासी बण कन्त, सरगुण साची सेज हंढाइंदा। आत्म परमात्म जपावणहारा नाम मंत, मंत्र इक्को इक दरसाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ियां हथ्थ किसे ना आइंदा। वसणहारा जेरज अंडत, उत्भुज सेहज सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखावेगा। परवरदिगार नूर धरावेगा। ज़ाहर ज़हूर नज़री आवेगा। पीर पैगम्बर फड़ उठावेगा। नेत्र नैण खुल्लावेगा। पर्दा दर उठावेगा। डरदा डरदा सर्ब सीस झुकावेगा। हरि जू इक्को राग सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा खेल करावेगा। आपणा खेल करेगा। निरभउ कदे ना डरेगा। सचखण्ड दवारे चढ़ेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर फड़ेगा। दो जहानां आपे लड़ेगा। ना जीवेगा ना मरेगा। आपणी करनी साची करेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धाम आपे खड़ेगा। आपणा धाम सुहाएगा। सचखण्ड दवारे डगमगाएगा। थिर घर आपणा कुण्डा लाहेगा। शब्दी सुत उठाएगा। एका हुक्म जणाएगा। सिर आपणा

हथ्थ टिकाएगा। फड़ बांहों राहे पाएगा। विष्नूं अक्ख खुल्लाएगा। ब्रह्मा नैणां नीर वहाएगा। शंकर धूढ़ी टिक्का मस्तक लाएगा। करोड़ तेतीसा नैण शरमाएगा। रवि ससि धार बदलाएगा। त्रैगुण माया डेरा ढाहेगा। पंज तत्त खोज खुजाएगा। मन मति बुध आप समझाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिछली कीती आप वखाएगा। अनडीठी कार कमाएगा। मन्दिर मसीती फेरा पाएगा। शिवदुआले मठ्ठ पन्ध मुकाएगा। दो जहानां नठ्ठ नठ्ठ, लख चुरासी खोज खुजाएगा। वेखणहारा तीर्थ तट, जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा पन्ध मुकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताएगा। आपणा हुक्म वरतावांगा। गुर पीर अवतार नाल मिलावांगा। कलिजुग अन्तिम खेल खलावांगा। जो घड़या भन्न वखावांगा। नाम खण्डा इक चमकावांगा। ब्रह्मण्डां आप डरावांगा। वरभण्डां खेह उडावांगा। साचा छन्दा इक्को सुणावांगा। जन भगतां मेल मिलावांगा। परमानंदा रस चखावांगा। पापी गंदा बाहर कढ्ढावांगा। गुरसिख बंदा आप बणावांगा। सतिजुग चन्दा आप चढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणावांगा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, श्री भगवान आप जणाइंदा। नेत्र खोल्लो नर नरेशा, नर नरायण फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम बदलणहारा भेसा, भेख पखण्ड सर्ब गवाइंदा। दो जहानां नज़री आए इक्को नेता, नित नवित्त आपणा राह जणाइंदा। जन भगतां करे साचा हेता, बण हितकारी फेरा पाइंदा। पीर पैगम्बर चौदां सदीआं चौदां तबक खेडीआं खेडां, परवरदिगार खलारी इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। धुर संदेसा एका वार, एकँकार जणाईआ। पीर पैगम्बर आए दुआर, दर बैठण सीस झुकाईआ। तेरी कुदरत तूंहे जाणे परवरदिगार, हउँ बालक भेव ना राईआ। दर दरवेश मंगदे इक भिखार, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। साडी हिम्मत गई हार, तेरे कलमे ना कोए वड्याईआ। उल्मा रिहा ना कोए संसार, आरफ़ करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे सीस गया झुक, सजदा इक्को नज़री आईआ। साडे ख़ाली हथ्थ कोल नहीं कुछ, शब्द बाणी कोए ना आईआ। असीं उम्मत कोलों आए पुच्छ, दर दर घर घर फेरा पाईआ। तेरे नालों सारे गए रुस्स, बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इक रज़ाईआ। पीर पैगम्बर मारन नाअरा, नेत्र नैणां नीर वहाया। कलिजुग अन्तिम मिले ना कोए सहारा, चारे कुण्टां संग ना कोए निभाया। चौदां लोक चौदां तबक होया धूंआँधारा, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। मिल्या मेल ना मीत मुरारा, कलिजुग डेरा सब दा ढाहया। ईसा मूसा होया नाकारा, आपणा बल ना कोए जणाया। अल्ला राणी दिसे ना कोए किनारा, भज्ज भज्ज आपणा

पन्ध मुकाया। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, हक़ महिबूब नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा जणाया। पीर पैगम्बर तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। अन्तिम वेला गया आ, साचा संग ना कोए निभाईआ। जिस दी सिफ्त रहे गा, सो सिफ्त सालाही वेख वखाईआ। आपणा खेल रिहा रचा, रच्च रच्च वेखे चाईं चाईंआ। दर हुक्मे लए बुला, सच संदेसा इक घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। पीर पैगम्बर खोल्ह्ण अक्ख, नेत्र नैण उग्घाड़या। नज़री आया इक प्रतख, ज़ाहर ज़हूर परवरदिगारया। चरण कँवल जाइण ढठ्ठ, दोए जोड़ करन निमस्कारया। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, दूजा अवर ना कोए सहारया। चोदां तबक भाण्डे सक्ख, ख़ाली फेर ना कोए भरा रिहा। चौदां सदीआं तैथों रहे वक्ख, अद्धविचकार डेरा ला ल्या। कलिजुग अन्तिम प्रगट होइउँ पुरख समरथ, आप आपणा वेस वटा ल्या। कर किरपा मार्ग दस्स, दोए जोड़ वास्ता गल पल्लू इक वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखा ल्या। दर तेरे ओट रखाईआ। बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। चौदां लोक पई दुहाईआ। कलमा हक़ ना कोए सुणाईआ। पीर पैगम्बर रहे कुरलाईआ। जलवा इक्को नूर इलाहीआ। वसें हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरा कलमा कायनात, दो जहानां इक वड्याइंदा। तेरा कलमा साख्यात, नबी रसूल नज़री आइंदा। तेरा कलमा दए नजात, अमाम अमामां मेल मिलाइंदा । तेरा कलमा देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। तेरा कलमा डूँग्घा खात, हथ्थ किसे ना आइंदा। तेरा कलमा साची आयत, इक्को राह जणाइंदा । तेरा कलमा कदे ना पाए वफ़ात, मकबरे विच कदे ना आइंदा। तेरा कलमा लेखा जाणे ना कलम दवात, कातब लेख ना कोए वखाइंदा। तेरा कलमा देवणहारा हयाते आब, आबे हयात इक प्याइंदा। तेरा कलमा पीर पैगम्बर लैंदे रहे ख्वाब, आस आसा नाल मिलाइंदा। तेरा कलमा तेरा रूप हक़ जनाब, हकीकत तेरी वेख वखाइंदा। पीर पैगम्बर तेरे बरदे दर तेरे करन अदाब, आपणा माण ना कोए रखाइंदा । मेहरवान मेहरवान बेनज़ीर आपणे कलमे दे जवाब, जुमला होर नज़र कोए ना आइंदा। परवरदिगार सच जवाब जणाएगा। पीर पैगम्बरां पिछला ख्वाब पूर कराएगा। आबे हयात मध प्याला इक प्याएगा। ख़ाकी ख़ाक पाकी पाक रूप वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाएगा। आपणा भेव जणावांगा। अगम्म खेल करावांगा। जोती नूर प्रगटावांगा। शब्दी डंक वजावांगा। पीर पैगम्बर समझावांगा। अल्फ़ ये पन्ध मुकावांगा। नुक्ता नून ना कोए जणावांगा। ऐन अक्ख ना वंड वंडावांगा। प्रतख धार चलावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

राह दरसावांगा। साचा राह दस्से सच दलील, शाह सुल्तान दया कमाईआ। पीर पैगम्बर अन्त सुणे ना कोए अपील, अपरम्पर आपणा हुक्म मनाईआ। दरगाह साची बिन खुदावंद दिसे ना कोए वकील, वुकला रूप ना कोए वटाईआ। परवरदिगार सांझा यार कलिजुग अन्तिम वस्त्र पहरे नील, छैल छबीला आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म जणाएगा। पिछला हुक्म मिटाएगा। उल्मा आप पढ़ाएगा। मार्ग इक्को लाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखाएगा। साची करनी आप करावेगा। विष्नूं आपणी जोत मिलावेगा। ब्रह्मे पन्ध मुकावेगा। शंकर आप उठावेगा। तेई अवतारां गोद बहावेगा। भगत अठारां चोग चुगावेगा। ईसा मूसा मुहम्मद संजोग बणावेगा। गुर दस अमोघ दरस करावेगा। सतिजुग साचा किला कोट वसावेगा। नाम नगारे चोट इक लगावेगा। लख चुरासी खोट बाहर कढ्ढावेगा। गुरमुख आहलणयों डिगे बोट उठावेगा। निरगुण सरगुण मेल मिलावेगा। कूड़ी क्रिया मोह चुकावेगा। सचखण्ड दुआर सुहावेगा। सुरती शब्द रंग रंगावेगा। अकाल मूर्ती नज़री आवेगा। नाद तूरत इक सुणावेगा। सच महूरत आप करावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां इक्को कलमा आप सिखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगावेगा। साचा मार्ग इक्को लग्गेगा। पुरख अकाल सूरा गज्जेगा। साचे तख्त बहि के सजेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपे दस्सेगा। साची करनी देवे दस्स, दहि दिशा आप जणाईआ। कलिजुग खेड़ा होवे भठ्ठ, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणा राह चलाईआ। नव नौ चार पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आदि जुगादि एकँकार, हरि अक्ल कला अख्वाइंदा। आदि जुगादि ठांडा दरबार, सचखण्ड दवारा इक सुहाइंदा। आदि जुगादि थिर घर खोल्ह कवाड़, मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। आदि जुगादि शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आदि जुगादि बोल जैकार, नाउँ निरँकारा आप अल्हाइंदा। आदि जुगादि सति विहार, बण बिवहारी राह चलाइंदा। आदि जुगादि वणज वपार, निरगुण आपणा हट्ट खुल्हाइंदा। आदि जुगादि देवणहार, दाता दानी दया कमाइंदा। आदि जुगादि भर भण्डार, हरि करता वेख वखाइंदा। आदि जुगादि लाए कार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाइंदा। आदि जुगादि पावे सार, शब्दी सुत सुत सलाहइंदा। आदि जुगादि कर उज्यार, रवि ससि नूर धराइंदा। आदि जुगादि लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां कर पसार, पसर पसारी सोभा पाइंदा। आदि जुगादि लख चुरासी धार, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश जोड़ जुड़ाइंदा। आदि

जुगादि आत्म परमात्म वंड वंडे निरँकार, निरगुण आपणा राह जणाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग लए अवतार, गुर अवतार नाउँ रखाइंदा। आदि जुगादि शास्त्र सिमरत वेद पुराण बोल जैकार, नाअरा इक्को इक समझाइंदा। आदि जुगादि पीर पैगम्बर कर प्यार, कलमा नबी इक पढ़ाइंदा। आदि जुगादि वेखे विगसे वेखणहार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आदि जुगादि खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराईआ। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जीवण मरन ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादि करे कराए साचा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। आदि जुगादि निरगुण जोत चाढ़े चन्न, जोती जाता डगमगाईआ। आदि जुगादि एका राग सुणाए कन्न, राग रागणी सिफ्त सालाहीआ। आदि जुगादि करे वसेरा बिन छप्पर छन्न, चार दीवार ना कोए बणाईआ। आदि जुगादि जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। आदि जुगादि नज़र ना आए नेत्र अन्न, लख चुरासी भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। आदि जुगादि पुरख समरथ, समरथ आपणा खेल रचाइंदा। आदि जुगादि हो प्रगट, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। आदि जुगादि खोल्ह हट्ट, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि प्रगटाए नाम सति, सति सति आपणा आप बुझाइंदा। आदि जुगादि देवणहार ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक दृढ़ाइंदा। आदि जुगादि लेखे लावणहारा रत्ती रत्त, रत्त आप सुकाइंदा। आदि जुगादि चरण कँवल बंधाए साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आदि जुगादि इक्को ज़ात, वरन बरन वंड ना कोए वंडाइंदा। आदि जुगादि खेल तमाश, हरि ख़ालक आपणा आप खलाइंदा। आदि जुगादि भोग बलास, भस्मड़ भेव ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि पावे रास, गोपी काहन वंड वंडाइंदा। आदि जुगादि रहे विच प्रभास, जंगल जूह डेरा लाइंदा। आदि जुगादि गुर अवतार बणाए आपणी शाख़, शनाख़त आपणी विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। आदि जुगादि वजाए नाद, अनादी नाद इक जणाईआ। आदि जुगादि वसावणहारा ब्रह्माद, ब्रह्मवेता वड वड्याईआ। आदि जुगादि सुणावणहारा बोध अगाध, पीर अवतार करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि आपणे विच्चों काढ, लख चुरासी वंड वंडाईआ। आदि जुगादि भगत भगवन्त करे लाड, साची रीती इक जणाईआ। आदि जुगादि सन्त साजण रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वटाईआ। आदि जुगादि खुल्हाए जाग, नेत्र नैण नैण उठाईआ। आदि जुगादि सुणाए अगम्म राग, रागी इक्को ढोला गाईआ। आदि जुगादि देवणहारा सच स्वाद, अमृत रस इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आदि जुगादि इक्को राम, निरगुण निरगुण हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादि इक्को जाम,

अमर अमर आप कराइंदा। आदि जुगादि इक्को ताम, तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। आदि जुगादि इक्को शाम, नाम बंसरी हथ्थ उठाइंदा। आदि जुगादि इक पैग़ाम, कलमा नबी आप सुणाइंदा। आदि जुगादि इक अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। आदि जुगादी इक नज़ाम, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादी शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। आदि जुगादी जाणी जाण, घट घट अन्दर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आदि जुगादि इक्को मंत्र, हरि मंत्र आप दृढ़ाईआ। आदि जुगादि इक्को बणाए बणतर, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि इक्को वसे गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां फोल फुलाईआ। आदि अन्त इक्को थान सुहंतर, सोभावन्त सोभनीक लाशरीक इक इक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वेस वटाईआ। आदि जुगादि इक्को वेस, वेस अनेका आप कराइंदा। आदि जुगादि धारे भेख, निरगुण सरगुण नाम प्रगटाइंदा। आदि जुगादि मिटावणहारा रेख, रेखा आपणी आप प्रगटाइंदा। आदि जुगादि वसणहारा सचखण्ड साचे देस, धरत धवल सोभा पाइंदा। आदि जुगादि गुर अवतारां वसे पास, पासा सब दा आप बदलाइंदा। आदि जुगादि पूरी करे ख्वाहिश, ख्वाहिश सब दी मेट मिटाइंदा। आदि जुगादि जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। आदि जुगादी इक अवतारा, चार जुग वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी सच विहारा, बण बिवहारी सेव कमाईआ। आदि जुगादी इक्को नाअरा, गुर अवतार रहे जस गाईआ। आदि जुगादी इक पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। आदि जुगादी इक्को दवारा, धर्म दुआर इक सुहाईआ। आदि जुगादी इक नगारा, सति शब्द डंका रिहा वजाईआ। आदि जुगादी इक प्यारा, पुरख अकाल गुर गुर रूप समाईआ। आदि जुगादि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। आदि जुगादि इक दरवाज़ा, दो जहानां आप जणाइंदा। आदि जुगादि इक्को वाजा, अहिबाब रबाब आप वजाइंदा। आदि जुगादि इक्को साजा, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि उठ फिरे भाजा, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि इक्को राजा, लख चुरासी रय्यत वेख वखाइंदा। आदि जुगादि इक्को नवाबा, नौबत आपणा नाम सुणाइंदा। आदि जुगादि इक्को मक्का इक्को काअबा, हुजरा हक़ इक दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक्को पाका, पाक रसूल आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी इक्को ख़ाका, नकशा होर ना कोए वखाइंदा। आदि जुगादी देवे साथा, बण साथी संग निभाइंदा। आदि जुगादी खोल्हणहारा ताका, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। आदि जुगादी चुकावणहारा बाकी बाका, हिसाब बेबाक आप कराइंदा। आदि जुगादी होए सहाई नाथ अनाथां, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। आदि जुगादी इक्को पूजा पाठा, मंत्र इक्को इक

७१४
१३

दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक्को तीर्थ ताटा, आत्म सरोवर आप नुहाइंदा। आदि जुगादी इक्को बाटा, गुर गोबिन्द हथ्थ फड़ाइंदा। आदि जुगादी वेखणहारा वाटा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। आदि जुगादी खेले खेल बाज़ीगर नाटा, बण स्वांगी स्वांग रचाइंदा। आदि जुगादी भगतां बणे राखा, बण सेवक सेव कमाइंदा। आदि जुगादी रूप दरसाए साख्याता, मुख नक़ाब पर्दा लाहइंदा। आदि जुगादी साचे सन्तां नाल करे बातां, निरगुण निरगुण हाल सुणाइंदा। आदि जुगादी वेखणहारा नार कमज़ाता, कूड़ी क्रिया फोल फुलाइंदा। आदि जुगादी जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप जणाइंदा। आदि जुगादि इक्को राह, रहबर हरि हरि नज़री आईआ। आदि जुगादि इक मलाह, बेड़ा रिहा चलाईआ। आदि जुगादि इक सलाह, साचा नाम करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि पकड़नहारा बांह, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे अंग लगाईआ। आदि जुगादि वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। आदि जुगादि देवणहार पनाह, चरण कँवल दए सरनाईआ। आदि जुगादि बख़्शणहार गुनाह, मेहर नज़र इक उठाईआ। आदि जुगादि बणे पिता माँ, लख चुरासी आपणी गोद बहाईआ। आदि जुगादि उडावणहारा काँ, नौ खण्ड पृथ्मी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। आदि जुगादि त्रैगुण माया, बन्धन

७१५
१३

लख चुरासी पाइंदा। आदि जुगादि हउमें हंगता गढ़ बणाया, कूड़ी क्रिया विच वसाइंदा। आदि जुगादि काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया, चारों कुण्ट सवान दौड़ाइंदा। आदि जुगादि आसा तृष्ना रोग लगाया, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप जणाया। साचा हुक्म नव नौ चार, चार चार वंड वंडाईआ। चारे मुख खोल्ह कवाड़, ब्रह्म वेता इक दृढ़ाईआ। चारे वेद बोल जैकार, चारे जुग करी कुड़माईआ। चारे कुण्ट कर पसार, चार वरनां वंड वंडाईआ। चारे खाणी खोल्ह किवाड़, चारे बाणी भेव समझाईआ। चार यारी वजाए ताल, चौथे जुग भेव ना राईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। नव नौ चार होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे कलिजुग, अन्त आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग औध गई पुग, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। वेले अन्त कोई ना सके लुक, अबिनाशी करता फड़ बांहों आप उठाइंदा। नव नौ चार पए लुट, कूड़ी क्रिया हट्ट लुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा राह जणाइंदा। आदि जुगादी आवेगा। ब्रह्म पारब्रह्म राग सुणावेगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। सतिजुग मार्ग इक्को लावेगा। चार वरनां फड़ उठावेगा। अठारां बरनां पन्ध मुकावेगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र

वैश इक्को नज़री आवेगा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई आपणी गंढु पवावेगा। जगत दुहागण नार रंड खपावेगा। आत्म परमात्म इक्को कन्त वखावेगा। चोली चाढ़ रंग बसन्त, पत्त डाली फुल महकावेगा। निरगुण ढोला बण वचोला सरगुण आप सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी वेख वखावेगा। आदि जुगादी वेखेगा, निरगुण दाता वड वड्याईआ। सरगुण सरगुण हो के खेडेगा, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। सच संदेसा इक्को भेजेगा, दो जहान करे शनवाईआ। साचा नाम इक्को बीजेगा, फल फुलवाड़ी इक वखाईआ। जन भगतां उत्ते रीझेगा, निरगुण निर्मल निरवैर पुरख अकाल ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। प्रेम प्यार अन्दर सीजेगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। आपणी करनी सच कमावेगा। सृष्ट सबाई नाम जपावेगा। सोहँ ढोला इक्को गावेगा। पीर पैगम्बर शुकर मनावेगा। गुर अवतार सीस निवावेगा। हरि जगदीश सोभा पावेगा। छत्र सीस इक झुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कर वखावेगा। आदि जुगादि करे सच करनी, करता आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां नेत्र खोले हरनी फरनी, निज नेत्र दया कमाइंदा। मेल मिलाए दाता दातार तरन तरनी, तारनहारा फेरा पाइंदा। नाता तुटे मरनी डरनी, जन्म मरन गेड़ चुकाइंदा। जो जन साहिब सच्चे दी लग्गा चरणी, चरण चरणोदक मुख प्याइंदा। नाता तुटे वरनी बरनी, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग दाता आपणा फेरा पाइंदा। जुग दाता आया लोकमात, लख चुरासी दए जणाईआ। सृष्ट सबाई बणाए इक जमात, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म जणाए साचा साथ, ईश जीव जीव ईश कर कुड़माईआ। पत्तण वखाए इक्को घाट, पिछला घाटा पूर कराईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण जगाए ललाट, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सोहँ ढोला बण विचोला सुणाए गाथ, पर्दा उहला आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग इक्को रंग वखाईआ। सतिजुग चाढ़े इक्को रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा सोहे पलँघ, सच सिँघासण आसण लाइंदा। अनहद नाद वजाए मृदंग, सुर ताल ना कोए वड्याइंदा। सति सतिवादी अन्तर आत्म गुरमुख वेखे लँघ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख गुर गुर इक दूजे दा गायण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा नानक मार्ग इक जणाइंदा। खुशी कराए बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग दस्से, दस्सणहारा इक अख्वाईआ। हर हिरदे विच आपे वसे, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ झस्से, आसा तृष्ना दए खपाईआ। आत्म परमात्म मिल मिल हस्से, सोहँ हँसा हँस रूप वटाईआ। सतिगुर

पूरा दीन दयाल ठाकर स्वामी दूर दुराडा नेरन नेरा गुरमुख दवारे आपे नस्से, बण पांधी फेरा पाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख सन्त कीते इकठ्ठे, कठ्ठ इक्को घर वखाईआ। हरि सरनाई जो जन ढठ्ठे, फड़ बांहों लए उठाईआ। लख चुरासी धर्म राए दे खाते घत्ते, चित्रगुप्त हिसाब रखाईआ। लाड़ी मौत नक्क पाए नथ्थे, मैहन्दी रंगली रही लाईआ। कलिजुग कहे मैं सब दी मारी मत्ते, गुर का शब्द ना कोए ध्याईआ। अल्ला राणी कहे नबी रसूल तेरे दर ते नच्चे, बण स्वांगी स्वांग वटाईआ। बिन तेरे कल्मयों सारे कच्चे, कायनात रही कुरलाईआ। गोबिन्द कहे गुरमुख तेरे बच्चे, बच्चयां आपणी गोद उठाईआ। कर किरपा ढाले आपणे सच्चे, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। तेरे प्यार अन्दर फसे, फ़ासी जम दी गलों लाहीआ। तेरे खेड़े अन्दर वसे, जगत झेड़ा गए मुकाईआ। तेरे लेखे लग्गे तत्त अठ्ठे, नौ दर पन्ध ना कोए जणाईआ। पहलों दस्म दुआरे चढ़ के हस्से, फिर सुंन अगम्म पार कराईआ। थिर घर जा के वसे, सचखण्ड ध्यान लगाईआ। तेरा खेल पुरख समरथे, आदि अन्त भेव कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ी क्रिया चोला पुराणा फटे, सतिजुग वस्त्र भूशन इक छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सब दा लहिणा रिहा चुकाईआ। कलिजुग अग्गों दोए जोड़, प्रभ साचे सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी मेरी करनी वेख चढ़ के घोड़, नव सत्त तेरा राह जणाइंदा। मैं लख चुरासी रीठा कीता कौड़, मिठ्ठा नज़र कोए ना आइंदा। घर घर अन्दर पाया शोर, दर दर नाअरा इक सुणाइंदा। सृष्ट सबाई बणी चोर, तेरी चोरी सर्ब कमाइंदा। मुल्ला शेख़ होए हरामखोर, असल असलीअत हट्ट ना कोए वखाइंदा। पीर पैगम्बर डूँग्घी सुत्ते गोर, मकबरा अन्त ना कोए खुल्हाइंदा। अल्ला राणी चले ना कोए ज़ोर, तेरा मंत्र इक्को फोर, फुरना सब दा बंद कराइंदा। मैं तेरा निक्का बाला चौथा जुग छोहर, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। पहलों तैनूं मेरी रही लोड़, हुण मैं तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। वेखीं मेरा मारया ना देवीं कोई छोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक जणाइंदा। कलिजुग सुण सुत दुलारे, छोटे दए वड्याईआ। चार कुण्ट तेरे हुलारे, दहि दिशा झूटे नज़री आईआ। मुल्ला शेख़ पंडत पांधे होए ख्वारे, ख़ाली हथ्थीं देण दुहाईआ। कलिजुग जीव रोवण ज़ारो ज़ारे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप घर घर पए पुआड़े, सांतक सति ना कोए वरताईआ। श्री भगवान तेरा वेखणहारा अन्त अखाड़े, हुक्म इक्को इक जणाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा घोड़ी अन्तिम सब नूं चाढ़े, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। नव नौ चबाए दाढ़े, खा के आपणा शुकर ना फेर मनाईआ। लेखा जाणे सतारां हाढ़े, हस्ती सब दी दए मिटाईआ। मौत राणी पहली चेत्र चढ़ खारे, तन वटणा रही लगाईआ। कलिजुग जीव सर्ब कुँवारे, बिन मेरे ना

कोए प्रनाईआ। कूड़ी माया ममता तन श्रृंगारे, काम क्रोध नेत्र कज्जल पाईआ। वेखण आए खेल परवरदिगारे, बेपरवाह मुख नकाब पर्दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग अग्गों प्या हस्स, हस्स के खुशी मनाइंदा। तेरी लोकाई दिती तेरे हथ्थ, आपणा पल्लू मैं छुडाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मार्ग गए दस्स, सब दे कोलों मार्ग इक भुलाइंदा। मैं आपणे वलों खेड़ा कीता भठ्ठ, जे कोई बचया रिहा तेरी झोली पाइंदा। मैं तेरा हुक्म मन्नया डट, बल आपणा आप वखाइंदा। मैं ख़ाली कीते मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर मठ्ठ, तेरा नाउँ नज़र किते ना आइंदा। मैं सब दे दन्द खट्टे कीते नठ्ठ नठ्ठ, तेरा अमृत रस रसना ना कोए चखाइंदा। मैं वेखे जा के तीर्थ तट, कलिजुग जीव नारी पुरुष नंगा तारीआं लाइंदा। दहि दिशा वेख धीआं भैणां सारे रहे तक्क, नेत्र नैण ना किसे शरमाइंदा। मैं आपणा पूरा कीता हक़, तेरा हुक्म सच कमाइंदा। जे कोई मेरे उत्ते रहि गया शक़, वेख मांवां पुत्रां संग मिलाइंदा। तूं आपणा कर लै झट्ट, सृष्ट सबाई झटका रूप वखाइंदा। मैं दो हथ्थीं लाया फट्ट, दीन मज़्हब आप लड़ाइंदा। शरअ रखी विच वट्ट, बनां अग्गे हो ना कोई ढाइंदा। किसे दा रहिण ना दित्ता जत, धीरज धीर ना कोए जणाइंदा। घर घर उब्बले बहत्तर नाड़ी रत्त, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी सुख ना कोए वखाइंदा। जगत विद्या मारी मति, ब्रह्म मति ना कोए समझाइंदा। जगत विकारे गए फस, फाँसी गलों ना कोए कटाइंदा। मैं सच सच तैनूं दित्ता दस्स, कलिजुग दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे हाल सुणाइंदा। तेरे अग्गे हाल सुणावांगा। जो कीती कर वखावांगा। सृष्ट सबाई मुख थुक पवावांगा। आपणा डंक वजावांगा। राहे जांदयां आप भुलावांगा। शौह दरयाए फड़ रुढ़ावांगा। अठाई कुण्डां भर वखावांगा। जनक उलांभा लाहवांगा। तेरा शुकर मनावांगा। फिर दर तेरे ते आवांगा। निउँ के सीस झुकावांगा। गल विच पल्लू पावांगा। आपणे वड्डे भरा दा राह तकावांगा। तिन्न जुग दा सुत्ता तेरे कोलों उठावांगा। कलिजुग कहे सतिजुग सतिजुग वंड वंडावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, फिर तेरे विच समावांगा। सतिजुग साचा लग्गेगा। दीपक इक्को जगेगा। गुरमुख विरला सरनी लग्गेगा। कलिजुग जीव अग्नी तपेगा। हरि मंत्र कोई ना जपेगा। वेले अन्त कूड़ी क्रिया खपेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आपे रखेगा। जन भगतां रखे आप भगवान, जुग जुग रक्षा आप कराइंदा। देवणहारा साचा माण, अभिमान मेट मिटाइंदा। अन्तर आत्म इक ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। चरण धूढ़ी सच अशनान, दुरमति मैल धवाइंदा। एका राग सुणाए कान, नाद अनादी नाद वजाइंदा। सति सरूपी दे पहिचाण, आप आपणा राह

वखाइंदा। जुग चौकड़ी विछड़े मेले आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पन्ध मुकाइंदा। धर्म वखाए इक निशान, सच दवारे आप झुलाइंदा । इक्को देवे पीण खाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आप उठाइंदा। भगत भगवन्त साचा मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। एका घर वखाए गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द पर्दा लाहीआ। कलिजुग लेखा चुकाए सज्जण सुहेला, साहिब सुल्तान फेरा पाईआ। आदि जुगादि जुग जुग वसणहारा धाम नवेला, कलिजुग अन्तिम सम्बल नगर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सम्बल सतिगुर वेखे खेड़ा, खड़ग खण्डा हथ्थ चमकाईआ। निरगुण सरगुण चुक्के झेड़ा, इष्ट देव प्रभ इक जणाईआ। नव नौ चार खुल्हा कराए वेहड़ा, बंदीख़ाना ना कोए रखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त कल देवणहारा गेड़ा, उलटी लठ्ठ दए भुआईआ। करे कराए हक़ नबेड़ा, अदल अदालत इक जणाईआ। गुरमुखां चुकाए हेरा फेरा, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। कर किरपा बन्न्हे बेड़ा, नईया नौका एका चप्पू नाम लगाईआ। तारनहारा तारे कर कर आपणी मेहरां, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द सरूपी सति सतिवादी पाए घेरा, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान होए सहाईआ। भगत भगवान इक्को घर, घर मन्दिर आप वड्याइंदा। भगत भगवान इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। भगत भगवान नाता नारी नर, नर नरैण खुशी मनाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दी सेजे जाइण चढ़, सेज सुहञ्जणी इक वड्याइंदा। भगत भगवान आत्म परमात्म पल्लू लैण फड़, ब्रह्म आपणी गंढु वखाइंदा। भगत भगवान इक्को अक्खर लैण पढ़, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दा दरस करन खड़, मुख मनुक्ख ना कोए वड्याइंदा । भगत भवगान आदि जुगादि जुग जुग भाणा लैण जर, सद भाणे आप रहाइंदा। भगत भगवान ना जन्मे ना जाए मर, जगत रीती जगत कहाणी भगत गाथा भगवन साथा साचा राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाणी बाणी भगतां सेवा लाइंदा। खाणी बाणी भगतन सेवा, बण चाकर रूप कराईआ। हुक्म जणाए अलख अभेवा, अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई अमृत रस जणाए मेवा, फल इक्को इक लगाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल सदा निहकेवा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्को भगत दए सालाहीआ। भगत सालाहे आप प्रभ, जुग जुग खेल कराइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। अमृत चुआए कँवल नभ्भ, उलटा मुख वखाइंदा। करे कराए पार हद्द, हदूद वंड ना कोए वंडाइंदा। गृह आपणे साचे लए सद्द, चरण कँवल आप बहाइंदा। भगत भगवान करे लड्ड, पिता पूत गोद उठाइंदा। अन्त भगवान भगतां कदे ना जाए पिच्छे

छड्ड, फड़ बाहों अग्गे लाइंदा। कलिजुग डूँग्घी सुट्टे खड्ड, उत्ते आपणा भार पाइंदा। कोटन कोटि गए लद्द, गया फिर कोए ना आइंदा। श्री भगवान शाह सुल्तान निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां विच बहे सज, सज्जण इक्को फेरा पाइंदा। एथे ओथे दो जहान रखणहारा लज्ज, पत आपणी झोली पाइंदा। सुत्तयां जागदयां दरस कराए रज्ज रज्ज, सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ भगतां दासी आप बणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समां समें नाल टकराइंदा। उच्चा टिल्ला मन्दिर जाणे ढठ्ठ, पत्थर चोटी सर्ब कुरलाइंदा। भगत भगवन्त कहे सच, सच सच समझाइंदा। लख चुरासी काया माटी कच्च, कूड़ी गगरीआ अन्तिम भन्न वखाइंदा। मन वासना रहे नच्च, हरि शब्द ना कोए कमाइंदा। अन्त अग्नी जाणा मच्च, पुरख अकाल मवाता नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां इक्को रंग वखाइंदा। भगतां रंग चाढ़ गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। जोती देवे साचा नूरा, नूर नूर रुशनाईआ। गोबिन्द वाक् भविख्त करे पूरा, पुरख अकाल फेरा पाईआ। लिख्या लेख ना होए अधूरा, हद्द सब दी भन्न तुड़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। बहिश्ती किसे ना लभ्भी हूरा, उम्मत उम्मतीआं रही कुरलाईआ। सदी चौधवीं भरया इक्को पूरा, बेड़े कूड़े लए चढ़ाईआ। अल्ला राणी पा के हथ्थीं लाल चूड़ा, भज्जी फिरे वाहो दाहीआ। कोई रहिणा ना कक्का बूरा, ईसा मूसा ना कोए सहाईआ। मुहम्मद होया अन्त मजबूरा, मजबूरी सके ना कोए कटाईआ। मूसा कहे जिन जलवा दित्ता कोहतूरा, सो कुदरत वेखण आईआ। ईसा कहे मेरा परवरदिगार मेरा बचन करे पूरा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। निरगुण नानक कहे श्री भगवान सर्ब कला भरपूरा, महाबली नाउँ रखाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मेरा संग दए ज़रूरा, ज़रूरत मेरी पूर कराईआ। आदि जुगादी जिस दा इक दस्तूरा, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला दस्तयाब दस्तबरदार ना कदे अख्वाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना हाज़र हज़ूरा, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह धारया बल, बल बावन माण मटाईआ । अल्ला राणी गई डुल, नेत्र नैणां नीर वखाईआ। सूरबीर कोई ना दिसे उम्मती कुल्ल, कलमा भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कूड़े धंदे गई रुल, बंदे बंदगी ना कोए कमाईआ। पाणी प्या काया चुल्ह, हुक्का टोपी सब दी दए भंनाईआ। मुहम्मद ईसा मूसा चार यार दर दरवेश मन्नण भुल्ल, जबराईल मेकाईल असराफ़ील अज़राईल तोबा तोब सुणाईआ। बेपरवाह करते कादर करीम तुध बिन पाए ना कोई मुल्ल, चौदां हट्ट ना कोए विकाईआ। अन्तिम तेरा दवारा गया खुल्ह, दर आए वाहो दाहीआ। कलिजुग बूटा रिहा हुल, हुलीआ सब दा दे बदलाईआ। अन्त अन्धेर जाणा झुल्ल, पवण उणंजा रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आपणी करनी आप कमाईआ। अल्ला राणी लथ्था चीर, घूँगट मुख ना कोए रखाईआ। खुल्ही मींढी घत वहीर, वही खाता नाल लिआईआ। नक्क नाल कढ्ढणी फिरे लकीर, हथ्थ कलीरा ना कोए बंधाईआ। मेरे नठ्ठ गए साथी पीर फ़कीर, सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं मार के बैठी ज़ंजीर, परवरदिगार मेरी शरअ रिहा तुड़ाईआ। मैं वंड करां शाह हकीर, हरि जू इक्को वेखण आईआ। तोबा तोबा मेरी होई अख़ीर, सलाम दुआ ना कोए जणाईआ। सलामा अलैकम मेरी कटे कोए ना भीड़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैनूं मेरा नज़र ना आए कोई वीर, भैण भय्या संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट होए वहीर, बेसबर प्याला रिहा प्याईआ। मैं चौदां तबक फिर के होई दिलगीर, दिलबर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कराईआ। अल्ला राणी खुल्ही गुत्त, मींढी हथ्थ ना कोए रखाईआ। उठया इक अबिनाशी अचुत, चेता सब दा रिहा भुलाईआ। बिन ख़ाली कल्मयों बुत्त, रूह पाक नज़र ना आईआ। मैं घर घर आई पुच्छ, नठ्ठ नठ्ठ फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। बौहड़ी मैं किथे जावां लुक, थाँ कोए नज़र ना आईआ। श्री भगवान शेर हो के रिहा बुक्क, भबक आपणी इक लगाईआ। मेरी ख़ाली हुन्दी दिसे कुक्ख, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। अन्तिम बूटा जाणा सुक्क, सुक्के हरे ना कोए कराईआ। चलदयां चलदयां पैंडा गया मुक्क, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया सब दे मुख विच पैणा थुक्क, थुक्कां मूँह भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हुक्म इक वड्याईआ। इक्को हुक्म शाह सुल्ताना, शाह पातशाह आप जणाईआ। कलिजुग वेखो मिटदा निशाना, ख़ाकी माटी खेह उडाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए वैराना, वैरी घर घर दए बणाईआ। सत्त दीप होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। लाड़ी मौत बन्न्हे गानां, मौली तन्द हथ्थ उठाईआ। राए धर्म राह तकाना, नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग हथ्थ फड़ाए परवाना, परवानगी इक्को हथ्थ फड़ाईआ।

७२१
१३

✻ २७ माघ २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिंघ, मोहण सिंघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण हरि समरथ, सति सति अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, आदि अन्त भेव कोए ना पाइंदा। एकँकार सचखण्ड दवारे रिहा वस, महल अटल इक सुहाइंदा। आदि निरँजण निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेलणहारा खेल तमाश, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान सच सुल्तान अलखना

अलख, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा जाणे आपे रस, रस रसीआ नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोलणहारा, निरवैर वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख प्रभ हो उज्यारा, अक्ल कल अख्वाईआ। जोती नूर जोत उज्यारा, ज़हूर इक्को इक जणाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगारा, बेऐब रूप खुदाईआ। वसणहारा दरगाह साची ठांडे दरबारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणा राह जणाईआ। आदि पुरख आदि राह, इक्को इक जणाइंदा। निरगुण निरगुण बण मलाह, साचा बेड़ा कंध उठाइंदा। निरगुण निरगुण नाउँ उपजा, नाउँ निरँकारा आप अल्हाइंदा। निरगुण निरगुण दए सलाह, साची सिख्या इक प्रगटाइंदा। निरगुण निरगुण खेल खला, आप आपणी वंड वंडाइंदा। निरगुण निरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे सोभा पाइंदा। सच दुआर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। आदि जुगादी इक्को कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। सति बणाए साची बणत, घाड़न घड़न आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी अबिनाशी अचुत, सति सतिवादी आप कराइंदा। आपणी धारों आपे उठ, धार धार विच समाइंदा।
७२२ बण जननी जन जणे साचा सुत, शब्दी नाउँ धराइंदा। निरगुण गोदी लए चुक्क, फड़ बांहों गले लगाइंदा। जोती जोत ७२२
१३ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शब्द सुत निक्का बाला, सो पुरख निरँजण १३
आपणी गोद उठाईआ। हरि पुरख निरँजण हो दयाला, दीनन एका रंग रंगाईआ। एकँकारा बण प्रितपाला, प्रितपालक होए सहाईआ। आदि निरँजण जोत उजाला, जोती जोत लए जगाईआ। अबिनाशी करता मार्ग दस्से सुखाला, साची सिख्या इक समझाईआ। श्री भगवान बण दलाला, सच दलाली इक कमाईआ। पारब्रह्म इक जणाए सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणा राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सुत लए समझाईआ। शब्दी सुत साची सिख्या, हरि सतिगुर झोली पाइंदा। साचा लेख आपे लिख्या, कलम दवात ना वंड वंडाइंदा। निरवैर निराकार अजूनी रहित कदे ना दिस्या, मूर्त अकाल वड वड्याइंदा। सचखण्ड निवासी थिर घर वन्डया हिस्सया, हिस्सा इक्को झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी सुत दुलारे, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। महल अटल इक मुनारे, थिर घर साचे दए बहाईआ। चरण कँवल कँवल चरण इक निमस्कारे, निवण सो अक्खर इक जणाईआ। तेरा लेखा अगम्म अपारे, अगोचर देवणहार वड्याईआ।

सदा सुहेला सिरजणहारे, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। इक कराए वणज वपारे, हट्ट हटवाणा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत माण दिवाईआ। शब्द सुत माण दित्ता आदि, हरि आपणी दया कमाइंदा। तेरा वेखां खेल तमाश, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। तेरे अन्तर मेरा प्रकाश, नूर नुराना नूर वखाइंदा। मेरा प्रेम तेरे साथ, परम पुरख आप वड्याइंदा। मेरा नाउँ तेरी गाथ, साचा मंत्र इक समझाइंदा। मेरा खेल तेरा तमाश, तेरी रास इक रचाइंदा। मेरी इच्छया तेरी आस, आसा तेरी पूर कराइंदा। मेरा नूर तेरा प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। मेरा हुक्म तेरा राथ, निरगुण निरगुण आप चलाइंदा। मेरा मंत्र तेरा पाठ, पूजा इक्को इक समझाइंदा। मेरा मेल तेरा साक, सज्जण अवर ना कोए बणाइंदा। मेरा पर्दा तेरा ताक, ताकी पर्दा आपे लाहइंदा। मेरा पत्तण तेरा घाट, किनारा इक्को इक वखाइंदा। मेरा अमृत तेरा रस चाट, रस रसीआ इक जणाइंदा। मेरा चरण तेरा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि सुत दुलारे इक समझाइंदा। सुत दुलारे नेत्र खोल्ह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेरा कंडा तेरा तोल, तोलणहारा बेपरवाहीआ। मेरा नाउँ तेरा ढोल, मृदंगा इक्को इक जणाईआ। मेरा रंग तेरे अन्तर जाए मौल, मौला इक्को नज़री आईआ। मेरा अमृत तेरा कौल, कँवल आप भराईआ। मेरा हुलारा तेरा झोल, झूला इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त रिहा वरताईआ। मेरा प्यार तेरा रंग, रंग रंगीला इक जणाइंदा। मेरा मन्दिर तेरा पलँघ, सेज सुहञ्जणी इक वड्याइंदा। मेरा नूर तेरा संग, शब्दी तेरी धार रखाइंदा। मेरा गीत तेरा छन्द, शहिनशाह इक्को राह वखाइंदा। मेरा प्रेम तेरा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। थिर घर खेल तेरा कराए सूरा सरबँग, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। दोए जोड़ सच वस्त लैणी मंग, साची सिख्या इक वखाइंदा। पूत सपूते प्रभ दवारे ना जाणा संग, नेत्र नैण ना कोए शरमाइंदा। अंगीकार ला लाए आपणे अंग, अंग आपणे नाल मिलाइंदा। करे खेल सो पुरख निरँजण हँ वजाए इक मृदंग, सोहँ आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण देवे निरगुण वर निरगुण जोत निरगुण शब्द निरगुण पिता निरगुण मात निरगुण पूत झोली डाहइंदा। निरगुण सुत नेत्र रो, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। मैं तेरे जोगा गया हो, मेरी अवर ना कोए वड्याईआ। तेरी किरपा मिली लो, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। तेरे चरण गया छोह, छोहरा बांका आपणा मेल रखाईआ। मेरा मुखड़ा आपे धो, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। एका देणा ढोआ ढो, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तुध बिन जाणे अवर ना को, वेख सके ना कोए राईआ। एका बीज आपणा बो, फल इक्को इक लगाईआ। आदि जुगादि कोई ना सके खोह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि आदि तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरे अग्गे झोली दिती रख, सुत शब्द मंग मंगाइंदा। आपणा प्यार दे प्रतख, प्यार प्यार नाल प्रनाइंदा। मैं तैथों होवां कदे ना वक्ख, सगला संग संग निभाइंदा। इक्को दे सच्ची अक्ख, जुग चौकड़ी बंद ना कोए कराइंदा। आपणा मार्ग दे दस्स, बण सेवक सेव कमाइंदा। मैं सेवा करां नस्स नस्स, पांधी आपणा नाउँ रखाइंदा। मेहरवान तेरा गावां जस, सोहला ढोला इक प्रगटाइंदा। तूं मिलणा हस्स हस्स, मैं तेरा राह तकाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, वास्ता तेरे अग्गे पाइंदा। मेरे तुध बिन ख़ाली होए हथ्थ, दस्तबरदार इक्को नज़री आइंदा। तूं साहिब पुरख समरथ, हउँ बाला छोटा भेव ना कोए पाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सुत दुलारा कर प्यारा निरगुण धारा जोत उज्यारा, नूर नुराना बण निमाणा दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। साहिब सतिगुर देवणहारा दान, दाता दानी दया कमाईआ। चरण धूढ़ी करा अशनान, निर्मल निर्मल धार जणाईआ। सति सरूपी सति बणाए काहन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति सतिवादी देवे इक निशान, धर्म निशाना हथ्थ फड़ाईआ। एकँकारा अगम्म अथाह बेपरवाह देवणहार ज्ञान, निष्अक्खर इक पढ़ाईआ। तेरा मेरा मेरा तेरा इक मकान, मकबरा होर ना कोए वड्याईआ। तेरा वेखां खेल महान, ख़ालक रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरा राह चलाईआ। शब्द सुत तेरा राह चलावांगा। सिर तेरे हथ्थ रखावांगा। थिर घर इक्को माण दिवावांगा। अगम्म नाद वजावांगा। सुर ताल ना कोए रखावांगा। वस्त अमोलक तेरी झोली पावांगा। सच गोलक इक भरावांगा। धार धार विच्चों प्रगटावांगा। विष्नूं विश्व रूप वखावांगा। अमृत झिरना इक झिरावांगा। कँवल नाभ भरावांगा। ब्रह्म रूप वटावांगा। आपणा खेल करावांगा। तेरा संग जणावांगा। धूआं धार समावांगा। सुन अगम्म वखावांगा। शंकर रंग वटावांगा। तेरा बंस बणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलावांगा। तेरा रंग चढ़ावांगा। सीस सेहरा तेरे बन्न्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी माण रखावांगा। शब्दी तेरा माण रखाऊँगा। दो जहानां वेख वखाऊँगा। निरगुण निरगुण तेरा संग निभाऊँगा। आपणी करनी कर वखाऊँगा। त्रैगुण माया नाल मिलाऊँगा। पंज तत्त वंड कराऊँगा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पर्दा लाहूंगा। लख चुरासी घाड़न घड़, निरगुण सरगुण वेख वखाऊँगा। काया मन्दिर आपे वड़, तेरा डंक वजाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखाऊँगा। शब्द तेरा नाउँ प्रगटावांगा। दो जहान वसावांगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचावांगा। आकाश प्रकाश धरावांगा। सूरज चन्न

किरन किरन चमकावांगा। मण्डल मण्डप महकावांगा। धुर दरबारी रागी राग अलावांगा । तेरा गीत सुणावांगा। चारे खाणी वंड वंडावांगा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा मेल मिलावांगा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरा ताल वजावांगा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा हिस्सा पावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी सेवा लावांगा। भगत भगवान विच जहान आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। सन्त साजण श्री भगवन्त, ब्रह्म पारब्रह्म वखावांगा। ईश जीव नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक हंढावांगा। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, फुल फुलवाड़ तेरा महकावांगा। खेलां खेल जुगा जुगन्त, तेरा हुक्म चलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि तेरा राह वखावांगा। सुण संदेसा श्री भगवान, शब्द सुत सीस झुकाइंदा। तूं दाता वड मेहरवान, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। हउँ बालक बाला बच्चा इक अञ्याण, आपणा माण ना कोए वखाइंदा। नित नवित्त रखां चरण ध्यान, सीस जगदीश तोहे झुकाइंदा । इष्ट देव गुर बणना सच ईमान, सति सहारा इक तकाइंदा। जुग जुग देणा धुर फ़रमान, सति संदेसा नर नरेशा तेरा राग अल्हाइंदा। हुक्मे अन्दर खेलां खेल आवण जाण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी वंड वंडाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दयां ज्ञान, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। खाणी बाणी कर प्रधान, वेख वखावां जीव जहान, जीवण जुगत सर्ब जणाइंदा। लेखा जाणा काया मन्दिर हट्ट मकान, नव दर आपे खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जुग जुग तेरी सेव कमाइंदा। साची सेव लगावांगा। सुत शब्द समझावांगा। फड़ बांहों राहे पावांगा। दो जहान वसावांगा। लोक परलोक खेल रचावांगा । ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचावांगा। लोआँ पुरीआँ नाद सुणावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप उठावांगा। जुग चौकड़ी वेख वखावांगा। कोटन कोटि सिफ्ती नाम बणावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पढ़ावांगा। रच सुअम्बर वेख वखावांगा। भरतम्बर रूप जणावांगा। अडम्बर इक वखावांगा। शब्दी सुत लख चुरासी तेरा टब्बर, मात बणावांगा। घर विच घर सति सन्तोख धीरज सबर, आप रखावांगा। काया मन्दिर डूँघी कन्दर जगत अन्धेरा झूठी कबर, कूड़ा मकबरा इक जणावांगा। तेरा नाम नौजवान शेर बब्बर, दो जहान इक्को भबक सुणावांगा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त जीव जंत साध सन्त पढ़ावां सबक, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। चौदां लोक देवां वडयाई चौदां तबक, तालब तेरे सर्ब बणावांगा। वेख वखावां ख़ालक ख़लक, मख़लूक तेरी आस जणावांगा। पर्दा लाहवां अर्श फ़र्श, काया कुरा वेख वखावांगा। तेरे नाउँ दी साची ग़रज़, जीव जंत जणावांगा। आपणे विछोड़े दी रखां मर्ज़, तुध बिन होर ना किसे नाल मिलावांगा। तेरा राग तेरी तर्ज़, तेरे नाल सालाहवांगा। जिस वेले करें अर्ज़, फड़ बांहों गले लगावांगा। मैं पूरा करां

फ़र्ज, फ़र्ज सब दे उत्ते चलावांगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तूं मारीं आपणी गरज, गहर गम्भीर हो के तेरा संग निभावांगा। कूड़ कुड़यारा देणा वर्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकावांगा। सिर तेरे हथ्थ रखांगा। आदि जुगादि साथ ना छड्डांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां अन्दर वाड़ फिर आपणी किरपा कढ्ढांगा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फिर आपणे घर सद्दांगा। सुत दुलारा सुण संदेसा, थिर घर साचे खुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या इक नरेशा, शहिनशाह वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी जाणे मेरा पेशा, पेशतर आपणा हुक्म सुणाईआ। सेवा लावां विष्न ब्रह्म महेषा, शिव शंकर हुक्म जणाईआ। आदि जुगादि जुग जुग निउँ निउँ करन सर्ब आदेसा, सजदा सीस झुकाईआ। निरगुण सरगुण वेखां धार धार के भेसा, भेख अवल्लड़ा इक जणाईआ। ना कोई रूप ना कोई रेखा, रंग रंग ना कोए रंगाईआ । मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, ना कोई मुंडन मूंड मुंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द आपणा राह चलाईआ। शब्दी शब्द चले राह, हरि सतिगुर आप चलाइंदा। गुर शब्द बणे मलाह, जुग जुग बेड़ा मात उठाइंदा। गुर शब्द दृढ़ाए नाँ, नाउँ इक्को इक वड्याइंदा। गुर शब्द जणाए थाँ, थान थनंतर इक सुहाइंदा। गुर शब्द पकड़ उठाए बांह, फड़ बांहों आप जगाइंदा। गुर शब्द बणे पिता माँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तकाइंदा। गुर शब्द होए सच्चा दाता, दाता दान इक कराईआ । गुर शब्द होए ब्रह्म ज्ञाता, ब्रह्म विद्या इक दृढ़ाईआ। गुर शब्द आत्म परमात्म जोड़े नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। गुर शब्द पारब्रह्म ब्रह्म बणाए साथा, सगला संग रखाईआ। गुर शब्द सुरत शब्द करे दासी दासा, सेवक इक्को सेव जणाईआ। घर घर विच करे प्रकाशा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुर शब्द अनहद नाद वजाए वाजा, पंचम सखीआं मिल मिल राग अल़ाईआ। गुर शब्द अमृत आत्म देवे दाजा, निझर झिरना इक झिराईआ। गुर शब्द बणे सज्जण सच्चा साका, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईआ। गुर शब्द नज़री आए इक्को आका, आकी कोए रहिण ना पाईआ। गुर शब्द बंद कवाड़ी खोल्हे ताका, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। गुर शब्द पन्ध मुकाए चौदां लोक हाटा, पांधी नज़र कोए ना आईआ। गुर शब्द सुणाए साचा साका, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। गुर शब्द वखाए सच एहाता, चार दीवार ना कोए दसाईआ। गुर शब्द सच सरोवर मारे ठाठा, लहर लहर नाल मिलाईआ। गुर शब्द जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, पूरब लेखा झोली पाईआ। गुर शब्द होए सहाई अनाथ अनाथा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। गुर शब्द देवणहार नजाता, लख चुरासी फंद कटाईआ। गुर शब्द अठ्ठे पहर वखाए प्रभाता, दिवस रैण ना वंड वंडाईआ। गुर शब्द नज़री आए इक इकांता, इक इकल्ला

७२६
१३

सच्चा माहीआ। गुर शब्द नाता तोड़े ज़ाता पाता, वरन गोत ना कोए बणाईआ। गुर शब्द मेल मिलाए कमलापाता, जगत विछोड़ा दुःख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरू शब्द वड्याईआ। गुर शब्द सच संजोग, धुर करता आप जणाइंदा। गुर शब्द कटे रोग, हउमें हंगता ना कोए वखाइंदा। गुर शब्द दरस अमोघ, स्वच्छ सरूपी वेस वटाइंदा। गुर शब्द साची चोग, सोहँ हँसा माणक मोती मुख रखाइंदा। गुर शब्द कूड़ी क्रिया ढाहे झूठा कोट, बंक दुआर इक वखाइंदा। गुर शब्द तन नगारे लाए चोट, नाम डंका इक वजाइंदा। गुर शब्द करे प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। गुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक सलोक, सोहला सच्चा आप जणाइंदा। गुर शब्द सच्चा सोहला, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। गुर शब्द सद रखे उहला, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। गुर शब्द हर घट मौला, मौल रिहा सब थाईंआ। गुर शब्द उलटा करे नाभ कँवला, कँवल कँवला आप खुल्हाईआ। गुर शब्द सदा सदा सद होए बवला, बौरा रूप वटाईआ। गुर शब्द लख चुरासी जाणे कमला, बिन भगतां सार किसे ना आईआ। गुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। गुर शब्द साचा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। गुर शब्द सदा अनडीठा, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। गुर शब्द सदा रस मीठा, अंमिउँ रस इक चुआइंदा। गुर शब्द सदा अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। गुर शब्द ठांडा सीता, अग्नी तत्त बुझाइंदा। गुर शब्द किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता, घर घर अन्दर डेरा लाइंदा। गुर शब्द लख चुरासी परखणहारा नीता, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। गुर शब्द जुग चौकड़ी चलाए मात रीता, रीतीवान फेरा पाइंदा। गुर शब्द इक्को रंग वखाए हस्त कीटा, राज राजान ना कोए वड्याइंदा। गुर शब्द काया चोली चाढ़े रंग मजीठा, उतर कदे ना जाइंदा। गुर शब्द सिफ्त गाए अठारां ध्याए गीता, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। गुर शब्द आदि जुगादि पतित पुनीता, पतित पापी पार कराइंदा। गुर शब्द सदा नीकन नीका, निवण सो अक्खर राह जणाइंदा। गुर शब्द भेव जाणे जीव जीअ का, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर शब्द गुर आपणे हथ्थ रखे तरीका, जुग जुग तर्‍ा तर्‍ा समझाइंदा। गुर शब्द सदा वसे नज़दीका, दूर दुराडा ना कोए रखाइंदा। गुर शब्द निशान ठीका, कूड़ा ठीकर भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक वड्याइंदा। गुर शब्द साचा मजन, दूजी अवर ना कोए वड्याईआ। गुर शब्द साचा सज्जण, सदा सदा सहाईआ। गुर शब्द परदे कज्जण, सीस दोशाला इक टिकाईआ। गुर शब्द काया माटी बणाए कंचन, पारस आपणा रूप वखाईआ। गुर शब्द त्रैगुण माया मेटे अंचन, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। गुर शब्द गुरमुख तेरा बचन, सच ज्ञान इक

दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर शब्द इक जणाईआ। गुर शब्द सदा निर्भय, भय भउ ना कोए जणाइंदा। गुर शब्द सदा सदा सद रहे, जन्म मरन विच ना आइंदा। गुर शब्द खाणी बाणी इक्को नाम कहे, कह कह आप जणाइंदा। गुर शब्द आदि जुगादि सदा सद भाणे सहे, सद भाणे विच रहाइंदा। गुर शब्द गुरमुख विरला लए, बाकी हथ्थ किसे ना आइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त मरदे खहि खहि, ख्वाहिश पूरी ना कोए कराइंदा। माया ममता हउमें हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार वहिंदी नै, नईया पार ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द इक वड्याइंदा। गुर का शब्द साचा डंका, डौरु इक्को इक वखाईआ। आदि जुगादि उठाए राउ रंका, दो जहानां आलस निंद्रा दए मिटाईआ। गढ़ तोड़े कूड़ी हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जन भगतां चोली रंगदा, साचे सन्तां वेख वखाईआ। गुरमुख दवारे कदे ना संगदा, आवे जावे वाहो दाहीआ। नौ दवारे पार लँघदा, सुखमन टेडी बंक ना कोए अटकाईआ। ईड़ा पिंगल दोए जोड़ निमस्कार करदा, निउँ निउँ लागे पाईंआ। भगत भगवान आपे वरदा, पत पतवन्ता होए सहाईआ। अन्तर आत्म पौड़े चढ़दा, आपणे डण्डे चरण टिकाईआ। सुरत सवाणी आपे फड़दा, फड़ उंगली लए लगाईआ। चरण कँवल साची सेजा धरदा, देवणहार माण वड्याईआ। निरगुण हो के अग्गे खड़दा, निरवैर दया कमाईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला सतिगुर आपणे जिहा करदा, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुर का शब्द सदा सद बरदा, बण सेवक सेव कमाईआ। आत्म परमात्म सोहँ ढोला पढ़दा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द इक्को गुरू वखाईआ। शब्द गुरू वड देवी देवा, देवत सुर दया कमाइंदा। आदि जुगादि अलख अभेवा, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां कौस्तक मणीआं मस्तक लावे थेवा, थीऊरी आपणी आप जणाइंदा। सदा सुहेला इक इकेला वसणहारा निहचल धाम सदा निहकेवा, निहकर्मी कर्म कांड मेट मिटाइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुखां देवे इक्को मेवा, अमृत आत्म रस पिलाइंदा। सोहँ ढोला रसना जिह्वा, बण विचोला आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर का शब्द सेव कमाइंदा। गुर का शब्द साचा यार, सदा सदा अख्वाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां करे प्यार, ग़रीब निमाणयां इक्को घर वखाईआ। इक्को नाद शब्द धुनकार, जै जैकार इक्को राग अलाईआ। इक्को मन्दिर इक दुआर, इक्को बंक दए सुहाईआ। इक्को नज़री आए हरि करतार, करता करनी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर शब्द इक वड्याईआ। गुर शब्द सच वड्डा वड, हरि वड्डा आप वड्याइंदा। आपणी धारों

आपे कढ्ढ, दो जहानां आप फिराइंदा। आप सुणा अगम्मी छन्द, बोध अगाध पढ़ाइंदा। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शश इक्को हथ्थ फड़ाइंदा । गृह मन्दिर देवे इक अनन्द, अनन्द मंगल इक्को गाइंदा। भेव ना पाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द नगारा इक्को इक वजाइंदा। गुर शब्द नगारा जाए वज्ज, वजावणहार आप वजाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया जाए भज्ज, लोकमात रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ जाए नठ्ठ, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। लहिणा चुक्के अठसठ, तीर्थ तट देण दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, हक़ हकीकत ना कोए जणाईआ। कलिजुग साधां सन्तां जीवां जंतां मैली हो गई अक्ख, नेत्र निज ना कोए खुल्हाईआ। सतिगुर पूरे कोलों हो गए वक्ख, मनमति रहे कमाईआ। कूड़ी क्रिया मारन झक्ख, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। वासना काम क्रोध अन्दर रहे नस, आसा तृष्ना पूर ना कोए वखाईआ। वेखणहारा पुरख समरथ, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद्द, कलिजुग अन्तिम दए जणाईआ। दीन मज़्हब आपणी वेखो हद्द, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। साचा नाद ना रिहा वज्ज, रागी राग ना कोए सुणाईआ। मक्के काअबे दिसे ना कोई हज्ज, हज़रत बैठा मुख छुपाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक पर्दा सके ना कोई कज्ज, पीर दस्तगीर संग ना कोए निभाईआ। कलिजुग अन्तिम लौण ना देवे किसे अज पज, धोखे विच कदे ना आईआ। शरअ शैतान रही नच्च, नव नौ करे लड़ाईआ। गुर का शब्द ना सके कोई वाच, वास्ता प्या झूठी मात लोकाईआ। पिछली कहाणी पिच्छे रहि गई बात, बातन पर्दा रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह वेखो मार झात, झाकी सब दी रिहा पवाईआ। कलिजुग अन्तिम सब दा बंद कीता ताक, साध सन्त अन्दर वड़ दरस कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बोलण वाक, वाक्य नानक कबीर दा रहे सुणाईआ। आप हो गए माया नाल रल बदमुआश, बुद्धि मति ना कोए चतुराईआ। नज़र ना आया साख्यात, साखी आपणी दए जणाईआ। सब दे ख़ाली वेखो हाथ, उच्चे टिल्ले पर्बत जूह पहाड़ कन्दर जो बैठे आसण लाईआ। भेख धार बणाई जमात, ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। रैण दिवस खावण भात, भाख्या हरि ना कोए पढ़ाईआ। कलिजुग जीव नार होई कमज़ात, हरि जू कन्त नज़र किसे ना आईआ। तुहाढ्ढी सांभ के रखी ना किसे दात, कूड़े हट्ट गए विकाईआ। जा के पुच्छो ओनां वात, जो बैठे मन्दिरां डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण असीं देणा नहीं किसे दा साथ, सच्चा नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ सुणाउदे रहे गाथ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन तेरे भगतां तेरे अग्गे होए ना कोई पास, पर्चा हल्ल ना कोए कराईआ। तेरे

सन्त तेरी शाख़, तेरा रूप नज़री आईआ। बाकी सब दा कर दे घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। जो पढ़ पढ़ बणे चालाक, सीना चाक दे कराईआ। अन्तिम माटी उडे ख़ाक, ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। दरोही खुदा दी छड्ड गए असीं साथ, पीर पैगम्बर देवे ना कोए गवाहीआ। हक़ हकीकत पढ़ी ना किसे आयत, उल्मा आलम ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया वेखी कायनात, कलमा नबी ना कोए जणाईआ। नज़र ना आया प्याला आबे हयात, मुल्ला शेख़ अग्नी तत्त रहे तपाईआ। मुर्शद आपणे मुरीदां दे नजात, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। रूह रही ना कोई पाक, बुतख़ाने वड़ गई सर्ब लोकाईआ। तेरी अल्फ़ ये पढ़ी ना किसे जमात, युकती नज़र किसे ना आईआ। अन्त हुन्दे दिसण विनास, विस्तरा सब दा बन्नू वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा शब्द जपदे रहे स्वास स्वास, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। जिस जपया तिस वसया पास, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगतां दित्ता साथ, बण साथी सेव कमाईआ। पिछला खैहड़ा छड्ड गए त्रिलोकी नाथ, त्रै लोआँ पन्ध मुकाईआ। तेरा नाउँ सदा साख्यात, बणे सज्जण सच्चा साईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, वेखणहारा थाउँ थाईंआ।

❇ २७ माघ २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ, निरँजण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ❇

एह उह जो असुते प्रकाश करांदा रिहा। एह उह जो सो पुरख निरँजण रूप वटांदा रिहा। एह उह जो हरि पुरख निरँजण नाम धरांदा रिहा। एह उह जो एकँकार अख्वांदा रिहा। एह उह जो आदि निरँजण नूर प्रगटांदा रिहा। एह उह जो अबिनाशी करता भेस दरसांदा रिहा। एह उह जो श्री भगवान सच निशान झुलांदा रिहा। एह उह जो पारब्रह्म निरगुण रूप अख्वांदा रिहा। एह उह जो जोती जोत डगमगांदा रिहा। एह उह जो सचखण्ड दुआर वसांदा रिहा। एह उह जो सच सिँघासण सोभा पांदा रिहा। एह उह जो शाहो भूप वड वडयांदा रिहा। एह उह जो आदि आदि आपणे सीस जगदीश ताज सुहांदा रिहा। एह उह जो मुकामे हक़ डेरा लांदा रिहा। एह उह जो निरगुण जलवा नूर डगमगांदा रिहा। एह उह जो लाशरीक नज़र आपणी पांदा रिहा। एह उह जो आपणी कल आप वखांदा रिहा। एह उह जो निरगुण निरगुण मेल मिलांदा रिहा। एह उह जो नार कन्त रूप वटांदा रिहा। एह उह जो दाई दाया बण सेव कमांदा रिहा। एह उह जो जननी जन सुत दुलारा शब्दी शब्द बणांदा रिहा। एह उह जो लाल अनमुलड़ा आपणी गोद उठांदा रिहा। एह उह जो धुर फ़रमाना इक अलांदा रिहा। एह उह जो विश्व विष्नूं रूप वटांदा रिहा। एह उह जो अमृत झिरना आप झिरांदा रिहा। एह उह

जो कँवल नाभ उलटांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्म जोत प्रगटांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्म सरूप वखांदा रिहा। एह उह जो सुंन अगम्म रहांदा रिहा। एह उह जो शंकर रंग रंगांदा रिहा। एह उह जो सहँसर मुख फनिन्दर समझांदा रिहा। एह उह जो त्रैगुण माया बन्धन पांदा रिहा। एह उह जो पंज तत्त घाड़न घड़ांदा रिहा। एह उह जो धुर संदेस सुणांदा रिहा। एह उह जो गणपति गणेश बणांदा रिहा। एह उह जो विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगांदा रिहा। एह उह जो दर दरवेश अख्वांदा रिहा। एह उह जो दरगाह साची सोभा पांदा रिहा। एह उह हुजरा हक़ वडयांदा रिहा। एह उह रूप रंग रेख ना कोई जणांदा रिहा। एह उह जो सच टकसाल बणांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्मण्ड खण्ड रचांदा रिहा। एह उह जो लोआँ पुरीआँ आसण लांदा रिहा। एह उह जो मण्डल मण्डप सुहांदा रिहा। एह उह जो रवि ससि सूरज चन्द चमकांदा रिहा। एह उह जो धरत धवल आकाश पृथ्मी नाल मिलांदा रिहा। एह उह पवण पवणी मेल मिलांदा रिहा। एह उह दो जहानां रूप धरांदा रिहा। एह उह चौदां लोकां वंड वंडांदा रिहा। एह उह आदि जुगादि जुग जुग आपणा रचन रचांदा रिहा। एह उह ब्रह्म ब्रह्मादि समझांदा रिहा। एह उह नाद अनाद अनहद राग सुणांदा रिहा। एह उह चारे खाणी वंड वंडांदा रिहा। एह उह अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग चढ़ांदा रिहा। एह उह चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप समझांदा रिहा। एह उह विष्न ब्रह्मा शिव राह जणांदा रिहा। एह उह चारे वेदां रंग लगांदा रिहा। एह उह आपणा सच संदेस अलांदा रिहा। एह उह ब्रह्मा सुत सन्त कुमार उठांदा रिहा। एह उह बराह अपणीआं उंगलीआं नचांदा रिहा। एह उह यगै पुरुष हुक्म सुणांदा रिहा। एह उह हावग़रीव वंड वंडांदा रिहा। एह उह नरैण रूप जणांदा रिहा। एह उह कपल मुन वडयांदा रिहा। एह उह दत्ता त्रै बणत बणांदा रिहा। एह उह रिखप देव अंग अंगीकार करांदा रिहा। एह उह पिरथू पृथ्मी विच्चों मथन कर वखांदा रिहा। एह उह मत्तस आपणा बाल बणांदा रिहा। एह उह कछप सेव लगांदा रिहा। एह उह धनंतर राह जणांदा रिहा। एह उह मोहणी रूप वटांदा रिहा। एह उह हँस हँसा मोती चोग चुगांदा रिहा। एह उह बावन खेल वखांदा रिहा। एह उह नर सिँघ नाउँ जपांदा रिहा। एह उह हरी हरि आपणी धार जणांदा रिहा। एह उह नर नरायण आपणी अक्ख खुल्लांदा रिहा। एह उह परसराम चरण ध्यान जणांदा रिहा। एह उह दसरथ बेटा राम लोकमात प्रगटांदा रिहा। एह उह वेद व्यास पुराण अठारां समझांदा रिहा। एह उह कृष्न त्रिलोकी नाथ सुहांदा रिहा। एह उह गीता ज्ञान जणांदा रिहा। एह उह अठारां ध्याए वंड वंडांदा रिहा। एह उह मूसा मूँह दे भार सुटांदा रिहा। एह उह ईसा पित पूत बणांदा रिहा। एह उह मुहम्मद चौदां तबकां विच फिरांदा रिहा। एह उह पीर पैगम्बरां सबक पढ़ांदा रिहा। एह उह निरगुण धारों निरगुण नूर

धरांदा रिहा। एह उह सरगुण संग निभांदा रिहा। एह उह नानक अंग लगांदा रिहा। एह उह सचखण्ड दुआर वखांदा रिहा। एह उह महल अटल रुशनांदा रिहा। एह उह साचे तख्त सोभा पांदा रिहा। एह उह सीस जगदीश ताज सुहाउदा रिहा। एह उह सच संदेस नर नरेश सुणाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि नाम दृढ़ाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि राग जणाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि वैराग उपजाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि सुहाग हंढ्ढाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि शब्द रंग चढ़ाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि भगत भगवन्त तराउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि सन्त जगाउँदा रिहा। एह उह कोटन कोटि गुरमुख समझाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि गुरसिख पत रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि जुग उठाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि मनवन्तर मिटाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि मंत्र समझाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि गगन गगनंतर खोज खुजाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि बणतर बणत बणाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि खेड़े वसदे ढाउदा रिहा। एह उह कोटन कोटि वेस अनेक धराउदा रिहा। एह उह शब्दी डंक वजाउदा रिहा। एह उह दुआर बंक सुहाउदा रिहा। एह उह राउ रंक समझाउदा रिहा। एह उह जोती जोत जगाउँदा रिहा। एह उह नानक निरगुण विचोला बणाउदा रिहा। एह उह सति नाम ढोला सुणाउदा रिहा। एह उह सति नाम जपाउदा

रिहा। एह उह ओअँ आपणी कल जणाउदा रिहा। एह उह अछल अछल्ल खेल खलाउदा रिहा। एह उह रल मिल सखीआं मंगल गाउँदा रिहा। एह उह शरअ शरीअत वंड वंडाउदा रिहा। एह उह दीन मज़्हब ज़ात पात बणत बणाउदा रिहा। एह उह आत्म परमात्म खेल खलाउदा रिहा। एह उह पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप धराउदा रिहा। एह उह ईश जीव राह जणाउदा रिहा। एह उह आत्म जोती नूर धराउदा रिहा। एह उह अनहद नाद सुणाउदा रिहा। एह उह आत्म जाम प्याउँदा रिहा। एह उह बजर कपाट तुड़ाउदा रिहा। एह उह पंच विकार मिटाउदा रिहा। एह उह शाह सुल्तानां ख़ाक रलाउदा रिहा। एह उह नाम निधान जणाउदा रिहा । एह उह सच निशान झुलाउदा रिहा। एह उह जुग चौकड़ी मात उलटाउदा रिहा। एह उह गोबिन्द सुत बणाउदा रिहा। एह उह पुरख अकाल आपणा खेल खलाउदा रिहा। एह उह दीन दयाल ठाकर स्वामी ठोकर इक लगाउँदा रिहा। एह उह आदि जुगादि जुग जुग आपणी वंड वंडाउदा रिहा। एह उह ब्रह्मण्ड खण्ड तेज प्रचण्ड चमकाउदा रिहा। एह उह चिल्ला तीर कमान वखाउदा रिहा। एह उह शस्त्र वस्त्र तन सुहाउदा रिहा। एह उह अस्त्र चक्र चलाउँदा रिहा। एह उह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर ज़ाहर ज़हूर चवीआं अवतार अख्वाउदा रिहा। एह उह सच्चा अनन्द सतिगुर पास, दूसर नजर किते ना आइंदा। गुरसिख गुरमुख गुर गुर हो जाण

७३२
१३

दास, साची सिख्या इक समझाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे प्यास, तृष्ना रोग चुकाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, रसना जिह्वा खोज खुजाइंदा। कर किरपा निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए रास, गोपी काहन नचाइंदा। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। परमात्म आत्म इक्को ज़ात, दूजा रंग ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। सच अनन्द सतिगुर रंग, रंग रगीला आप जणाईआ। गुरमुख विरला मंगे मंग, सतिगुर ढह पए सरनाईआ। सतिगुर पूरा सदा बख़्शंद, दीनन आपणी दया कमाईआ। निरगुण जोत चाढ़े चन्द, निर्मल प्रकाश कराईआ। कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। खुशी कराए बंद बंद, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। घर आत्म परमात्म जणाए इक अनन्द अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सच्चा अनन्द सतिगुर हथ्थ, आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां देवे जुग जुग वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति सतिवादी इक्को मति, ब्रह्म मति आप दृढ़ाइंदा। देवणहारा धीरज जत, माया ममता रोग चुकाइंदा। जानणहारा मित गत, घर घर खोज खुजाइंदा। गुरसिख बन्ने चरण नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। साचा नूर कर प्रगट, प्रगट रूप वखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत्त, चमड़ी चम्म ना कोए दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा। सच्चा अनन्द काया मन्दिर, घर घर विच दए वखाईआ। सतिगुर बन्नणहारा मन वासना बन्दर, दहि दिशां ना उठ उठ धाईआ। तोड़नहारा वज्जा जन्दर, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। करे प्रकाश डूँघे खण्डर, ज़हूर जलवा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अनन्द इक समझाईआ। साचा अनन्द सतिगुर चरण, चरण चरणोदक आप प्याइंदा। खोलणहारा नेत्र हरन फरन, फुरना कूड़ा बंद वखाइंदा। तारनहारा तरनी तरन, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, सरन इक्को इक जणाइंदा। परमात्मा आत्मा आए फड़न, बण पांधी फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम सोहँ ढोला जो जन पढ़न, जगत वछोड़ा आप गवाइंदा। साचे पौड़े घर आपणे चढ़न, मन्दिर सच सुहञ्जणा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक जणाइंदा। सच अनन्द सतिगुर वैराग, वैरागी इक्को गुण जणाईआ। सतिगुर धोवे दुरमति दाग़, मैल कोए रहिण ना पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, काग हँस रूप वखाईआ। सुरत सवाणी जाए जाग, माया पर्दा दए उठाईआ। प्रकृती कोई ना देवे साथ, सुरती सुरत सुरत जणाईआ। अन्तर आत्म पारब्रह्म जणाए इक्को गाथ, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। नाल इशारे चाढ़े आपणे घाट,

घाटा पिछला पूर कराईआ । जन्म कर्म दी मेटे वाट, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिलाए ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। इक अनन्द वखाए साख्यात, सखी आपणा कन्त मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दात, जन भगतां झोली रिहा भराईआ। जिस जन सच्चा अनन्द लैणा, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। आओ चल के अन्तर आत्म दरस करो नैणां, तीजा नेत्र दए खुल्हाईआ। हरिसंगत मिल के नीवां हो के बहिणा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। फिर सतिगुर पूरा गुरसिख दा मन्ने कहिणा, जो किहा सो पूर कराईआ। तन वस्त्र भूशन पाओ नाम गहिणा, सालू चुन्नी रत्तड़ी रंग वखाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ । अनन्द आत्म अनन्द परमात्म निजानंद निज घर बहि के लैणा, दूजे दर ना मंगण जाईआ। सतिगुर गुरमुख गुरसिख भाणा कहिणा, भाणा इक्को हुक्म समझाईआ। कूड़ी क्रिया वहण ना वहणा, भव सागर पार तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म कट वछोड़ा, मेलणहारा जोती जोड़ा, देवणहारा शब्दी घोड़ा, सुरत सवाणी साचे हाणी नाल मिलाईआ। सच अनन्द निज घर पाओ, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। दूई द्वैती हउमें हंगता रोग मिटाओ, चिन्ता सोग ना कोए जणाइंदा। दिवस रैण जागत सोवत सोहँ ढोला साचा गाओ, गीत गोबिन्द इक अल्हाइंदा। मित्र प्यारा हरि निरँकारा गृह मन्दिर आसण सिँघासण सच बहाओ, सेज सुहञ्जणी इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। अनन्द लैण दा जिस जन चाउ, चाउ घनेरा दए जणाईआ। हरि सरनाई लागो पाउं, पानही आपणा रूप वटाईआ। हउमें हंगता माण गंवाओ, गुर शब्द वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां जागदयां सुत्तयां सुत्तयां जागदयां आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म साचा मेला, हरि बनवारी आप कराइंदा। खेले खेल गुरु गुर चेला, चेला गुर गुर रूप समाइंदा। साहिब सतिगुर सज्जण सुहेला, सद सद आपणे अंग लगाइंदा। परमात्मा खुश ना होवे रहि के इकेला, सदा आत्मा तेरा राह तकाइंदा। कलिजुग अन्तिम इक्को वेला, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। निरवैर पुरख अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, बन्धन आपणा इक्को पाइंदा। निरगुण सरगुण बण वसीला, वसल बिन वजूद आप कराइंदा। जोती धारों पार हो के आया नीला, नील बसन बनवारी आपणी खेल कराइंदा। साचे जीवण गुरमुख जी लै, बिन सतिगुर जीवण ना कोए बणाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवान दा सच कबीला, काबल गुरमुख विरला नज़री आइंदा। घर घर दर दर नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी अग्नी पंज तत्त लग्गी

तीला, सांतक सति ना कोए कराइंदा। परमात्म सदा सदा सद छैल छबीला, आत्म आपणे रंग रंगाइंदा। अनन्द मिले ना नाल दलीलां, गलीं बातीं प्रभ जू हथ्थ किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द इक वकीला, अग्गे ताअतील ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म इक्को घर वसाइंदा। आत्म परमात्म इक्को खेड़ा, नगर ग्राम गृह मिले वड्याईआ। परमात्म आत्म चुक्के बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। परमात्म आत्म कहे तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ रूप वटाईआ। श्री भगवान मिले ना कीत्यां झेड़ा, झगड़ा सब दा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म करनहारा हक़ नबेड़ा, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां ढाए भरमां डेरा, कूड़ी क्रिया गढ़ तुड़ाईआ। एका रंग वखाए सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए चतुराईआ। अनन्द अनन्द विच चाउ घनेरा, घनईया शाम मुकन्द मनोहर लखमी नरैण मोहण माधव इक्को नज़री आईआ। सच्चा अनन्द डूँघा सागर, बिन सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी बणी सौदागर, जीव दर दर अलख जगाइंदा। अन्तर देवे ना कोई आदर, बाहरों गल्लां कथनी कथ सर्ब सुणाइंदा। हरि का नाउँ शब्द बहादर, ज़ोरावर इक अख्वाइंदा। दर आया घर देवे आदर, आदर्श आपणा इक जणाइंदा। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाइंदा। भाग लगाए काया गागर, काया गगरीआ खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनन्द इक्को इक वखाइंदा। अनन्द अन्दर डूँघा रस, रस रसीआ आप चखाईआ। गुरसिख होवे गुर के वस, गुर वस हो के गुरसिखां अन्दर डेरा लाईआ। फिर सच्चा अनन्द देवे दस, जिस अनन्द विच रिहा समाईआ। ओथे मुख नाल कोई ना सके हस्स, नैणां नाल ना कोए समझाईआ। इशारा करे ना नाल हथ्थ, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, धूप दीप हवन ना कोए वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सरोवर रूप ना कोए वटाईआ। जिस आत्म सेजा चढ़या पुरख समरथ, तिस घर इक्को अनन्द वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा अनन्द नारी नर आप जणाईआ। सच्चा अनन्द गुरमुख नारी, आदि जुगादि मंग मंगाईआ। बिन सतिगुर पूरे सदा रहे कुँवारी, आत्म सेज ना कोए हंढाईआ। लख चुरासी रही झक्ख, मारी झाकी अन्तर ताकी खोल्ह किसे ना पाईआ। माया ममता आसा तृष्ना कूड़ बीमारी, कूड़ी क्रिया रही खाईआ। सतिगुर सज्जण मीत मुरारा करे इक प्यारी, पीआ प्रीतम वड वड्याईआ। साचा करे तत्त श्रृंगारी, सोलां श्रृंगार माण गंवाईआ। प्रेम कज्जल पाए धारी, निज नेत्र नैण मटकाईआ। दोए नैण शरमसारी, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। गुर सतिगुर किरपा आपणी धारी, धारना आपणी दए जणाईआ। दोहां विचोला बण निरँकारी, निरगुण फेरा पाईआ। आत्म कहे मैं परमात्म प्यारी, परमात्मा कहे मैं आत्मा इक प्रनाईआ। जिन्हां विच्चों अनन्द अनन्द अनन्द

निकले सच खुमारी, खुमार इक्को इक रखाईआ। सतिगुर पूरा अनन्द लै के फिरे गुरसिखां पिच्छे अगाड़ी, दास आपणी सेव कमाईआ। जिन्हां चरण छुहाई दाढ़ी, दहि दिशा वेख वखाईआ। सेवा करे बण वगारी, ऐर ग़ैर नेड़ कोए ना आईआ। बाहरों कोटन कोटि लाउदे वेखे यारी अन्दर यार ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा अनन्द लैण दी जाच रिहा सिखाईआ। पहलों सिखों सच्चा चज्ज, सिधी बोली नाल समझाइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डा जाए भज्ज, भाजड़ काम क्रोध वखाइंदा। तत्तव तत्त बुझे अग्ग, त्रै पंज डेरा ढाइंदा। घर विच घर सिखाए हज्ज, मक्का काअबा दो दो आबा आब हयात शाह नवाब इक्को जाम प्याइंदा। कलमा कायनात पढ़ाए साख्यात, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोड़नहारा बजरी सिला, तीर निराला इक चलाइंदा। तीर निराला मारे आप, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। आत्मा कहे परमात्मा मेरा बाप, आत्मा पुत्त गोद उठाईआ। दोहां बणाया इक्को जाप, सोहँ ढोला गाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन गोत ना वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे दा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। अनन्द मिले मिल जाईए ख़ाक, ख़ाक पाक रूप वटाइंदा। आत्म बण जाए परमात्म चाक, चाकरी इक कमाइंदा। सतिगुर गुर सतिगुर सदा सदा गुरमुखां पूरी करे ख्वाहिश, ख़शलत पिछली सर्ब गवाइंदा। चिट्टा फलूदा शब्दी धार, सच सच जणाइंदा। दूजी निकली नार मुटयार, लाड़ी मौत रूप वखाइंदा। कलिजुग कूड़ कूड़यारे कुत्ते दित्ते नाल, दिशा दिशा वेख वखाइंदा। करे खेल आप कमाल, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा । भेव अभेदा अछल अछेदा गुरमुखां रिहा वखाल, जो वखाए सो कर वखाइंदा। दिशा लहिंदी होए बेहाल, बिहबल हो सर्ब कुरलाइंदा। सब दे सिर ते कूके काल, कलिजुग डौरु डंक वजाइंदा। उच्चे उडदे जाण बीर बेताल, विस्तरे सब दे सिर बंधाइंदा। गड्डे मोटरां टांगे घोड़े किसे ना चले नाल, ज़िमीं असमान अद्धविचकार सर्ब फिराइंदा। कलिजुग अन्त अवल्लड़ी चली चाल, लेखा लिख ना कोए समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए ध्यान, ध्यान विच ना हरि जू आइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द लिख के गए जो ब्यान, ब्यान कलमबंद कराइंदा। वेद व्यासा मंगदा गया दान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा झोली पाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे महाबली बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। सम्बल वसे सच मकान, इट्टां गारा ना कोए लाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। नाम खण्डां चिल्ला तीर कमान, तरकश आपणे हथ्थ वखाइंदा। कागद कलम शाही वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह वेखण चौदां तबक

दुकान, मसला हक़ ना कोए पढ़ाइंदा। साबत रिहा ना किसे ईमान, आलमीन वेख वखाइंदा। बगले रख के फिरदे रहे कुरान, काअबा हक़ ना कोए जणाइंदा। प्रगट होया इक अमाम, मैहन्दी सब दे हथ्थ लगाइंदा। पीर पैगम्बर करे ग़ुलाम, बरदे आपणे अग्गे लाइंदा। निउँ निउँ सारे करन सलाम, सलामां लैकम सब दी झोली पाइंदा। सदी चौधवीं दे पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप समझाइंदा। इक्को कलमा पढ़ो कलाम, कादर कुदरत आप समझाइंदा। जिस नूं राम मन्नया राम, सो राम फेरा पाइंदा। जिस ने कृष्न बणाया भगवान, सो आपणा राह जणाइंदा। जिन ईसा मूसा मुहम्मद दित्ता हड्ड मास नाड़ी ख़ाकी तन चाम, चम्म दृष्टी सब दी खोज खुजाइंदा। जिस नानक निरगुण सचखण्ड वखाया मकान, गोबिन्द आपणा पुत्त बणाइंदा। जिन कबीर जुलाहे वखाया निशान, सच निशाना इक हलाइंदा। सो साहिब खेल करे महान, महिमां आपणी ना किसे समझाइंदा। तिन्ने डब्बीआं खोल्हे आण, डब्बे आपणे विच्चों बाहर कढ्ढाइंदा। लेखा मिटे सर्ब शैतान, हरामख़ोर रहिण कोए ना पाइंदा। करे खेल नौजवान, नौबत नाम इक वजाइंदा। गोबिन्द सूरा बेपहिचाण, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। नाम खण्डा खिच्चे शब्दी विच्चों म्यान, मीआं बीवी वंड वंडाइंदा। दो जहान आए तुफ़ान, तोहफ़ा सब दी झोली पाइंदा। नठ्ठी जाए अञ्जील कुरान, अल्ला राणी नैण शरमाइंदा। करे खेल आप भगवान, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर इक्को इक जणाइंदा। विष्नूं वेख आपणी कार, हरि करता रिहा जणाईआ। कलिजुग अन्तिम दुःखां भरया संसार, दुखियां दुःख ना कोए वंडाईआ। कोटन भुक्खे रोवण ज़ारो ज़ार, रातीं सुत्तयां नींद ना आईआ। कोटन करन मौज बहार, वेसवा रहे हंढ्ढाईआ। कोटन धाहां रहे मार, ख़ाली हथ्थ जगत फिराईआ। कोटन अस्व होए अस्वार, शहिनशाह बैठे सीस झुकाईआ। कोटन तेरे चरणां करन निमस्कार, दुखी दुःख रहे जणाईआ। कोटन सुत्ते पैर पसार, तेरी याद किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो तैयार, अबिनाशी करता रिहा वखाईआ। आपणी अक्ख लए उग्घाड़, नेत्र बंद ना कोए जणाईआ। श्री भगवान सब दे अन्दर करे पसार, पसर पसारी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं विश्व रिहा जणाईआ। विष्नूं कहे मैं की करां विचारा, तेरा खेल विचार विच ना आईआ। आदि भरया तूं मेरा भण्डारा, जुग जुग सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मैं वी हारा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तूं कूड़ी क्रिया बणाया वड सिक्दारा, सिख्या इक्को इक जणाईआ। जिन्ना चिर कलिजुग जीव ना रोवण ज़ारो ज़ारा, कलिजुग औध ना कोए मुकाईआ। पिछला लेखा लिख के गए चार लख बत्ती हज़ारा, वंडण साची झोली पाईआ। एसे कारन प्रभ जू करया खेल न्यारा, दुखियां भुख्यां दुःख विच रखाईआ। कलिजुग अन्त सारे कठ्ठे हो के मारन

इक्को नाअरा, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। नाल विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलि कल्की लै अवतारा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दुखियां भुक्खयां दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां मारे मारा, नेत्र वेंहदयां दए वखाईआ। कलिजुग बदले सतिजुग धारा, धार इक्को इक समझाईआ। ऊँचां नीचां ग़रीब निमाणयां वढ्ढुयां छोटयाँ बुढ्ढुयां बालां करे इक प्यारा, इक्को जिहा माण दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा इक्को वर, सृष्ट सबाई इक्को रंग रंगाईआ। पुरख अकाल खेल कराउणा एं। सच निशान इक झुलाउणा एं। लोकमात वेस वटाउणा एं। जोती जामा पाउणा एं। निहकलंक अख्वाउणा एं। राउ रंक जगाउणा एं। कूड़ कुड़यार मिटाउणा एं। कलिजुग खेड़ा ढाउणा एं। अन्त नबेड़ा कराउणा एं। धरत मात दा खुल्ह्या वेहड़ा वखाउणा एं। उलटी लट्ठ भवाउणा एं। नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाउणा एं। जन भगतां मार्ग दस्स, इक्को राह वखाउणा एं। हिरदे अन्दर वस वस, सोहँ अजपा जाप जपाउणा एं। कलिजुग मेट रैण अन्धेरी मस, सतिजुग साचा चन्द चमकाउणा एं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रचाउणा एं। आपणा खेल रचावांगा। निरगुण नूर धरावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। गुर अवतार नाल मिलावांगा। पीर पैगम्बर पर्दा लाहवांगा। लख चुरासी बण कलन्दर, लोकमात नचावांगा। जन भगतां वस हिरदे अन्दर, अन्तर आत्मा मेल मिलावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी दीसे खण्डर, इक्को खण्डां खड़ग इक चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगवांगा। आपणा रंग रंगेगा। किसे कोलों ना संगेगा। आउँदा जांदा मूल ना संगेगा। लख चुरासी धर्म राए दर टंगेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोआँ पुरीआँ आपे लँघेगा। लोआँ पुरीआँ पार कराएगा। आपणा खेल खलाएगा। विष्नूं लेखा आप जणाएगा। ब्रह्मा पर्दा आपे लाहेगा। शंकर जोती मेल मिलाएगा। तिन्नां विचोला आप अख्वाएगा। साचा चोला आप बदलाएगा। जन भगतां माण दिवाएगा। साची करनी फेर कमाएगा। मरनी मार फेर जवाएगा। तरनी तार तुरत मिलाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा राज जोग जणाएगा। सोहँ ढोला साचा बोला इक सुणाएगा। पर्दा उहला आप उठाएगा। दीन मज़्हब रौला कोए ना पाएगा। लख चुरासी होला आप जणाएगा। बण तोला जीव जंत तोल तुलाएगा। आदि जुगादी रहे अडोला, जन भगतां आपणी गोद उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह चलाएगा। आपणा राह जणावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी आप पढ़ावांगा। चौदां विद्या माण गंववांगा। राग अनादी इक सुणावांगा। विस्मादी नज़री आवांगा। सन्त सुहेले फड़ उठावांगा। गुर चेले नाल रलावांगा। हरि के नाम

तों जो बैठे वेहले, सारे मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करावांगा। आपणा खेल करांगा। सच सिँघासण आपे चढ़ांगा। निरभउ हो कदे ना डरांगा। लख चुरासी अन्दर वड़ांगा। गुरमुख सज्जण फड़ांगा। आपणी करनी आपे करांगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया अन्तिम हरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस धरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारे आपे खड़ांगा। सचखण्ड दुआर सुहाएगा। थिर घर कुण्डा लाहेगा। पिता पूत वेख वखाएगा। पुरख अकाल जोत जगाएगा। शब्द गोबिन्द डंक वजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणी गंढु पवाएगा। पिता पूत देवे गंढु, गोबिन्द पुरख अकाल मनाईआ। पिता पूत पए ठंड, सीतल धार जणाईआ। पिता पूत पिछली मेटे वंड, अग्गे हद्द ना कोए रखाईआ। पूत पिता टुट्टी लए गंढु, गंढुणहार गोपाल गोसाईंआ। पिता पूत देवे अनन्द, नंद चन्द इक रुशनाईआ। पूत पिता गाए छन्द, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। पिता पूत खुशी कराए बंद बंद, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, सर्ब कला वड वड्याईआ। लेखा जाण सर्ब वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। पिता पूत खोल्हे भेव, अभेद आप जणाइंदा। पिता पूत साची सेव, सेवक रूप वटाइंदा। पिता पूत सदा निहकेव, निहचल धाम इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाइंदा। पिता पूत रंग अगम्म, अगम्मड़ा आप रंगाईआ। पिता पूत इक्को कम्म, कल करनी आप कराईआ। पिता पूत हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता रूप ना कोए वटाईआ। पिता पूत ना मरे ना पए जम्म, गोबिन्द पुरख अकाल इक कुड़माईआ। पिता पूत ना रोवे छम्म छम्म, बंस सरबंस लेखे लाईआ। पिता पूत ना तृष्ना ना कोई तम, तामस अवर ना कोए रखाईआ। पिता पूत जाइण मन्न, इक्को घर वज्जे वधाईआ। पिता पूत बेड़ा देवे बन्ह्, बण खेवट खेटा रिहा चलाईआ। पिता पूत इक्को राग इक्को कन्न, इक्को नाद शनवाईआ। पिता पूत ना छप्पर ना कोए छन्न, बिन चार दीवार डेरा लाईआ। पिता पूत आदि जुगादि जुग जुग जो घड़या सो देवण भन्न, सुत शब्द पिता पुरख अकाल निरगुण नज़री आईआ। खेल अन्दर होए खेल, ख़ालक ख़लक खेल कराइंदा। खेल अन्दर चढ़े तेल, साचा सगन मनाइंदा। खेल अन्दर होए मेल, मेल मिलावा आप कराइंदा। खेल अन्दर कलिजुग जीव हो जाण फेल, पर्चा पास ना कोए कराइंदा। खेल अन्दर करे वेहल, लख चुरासी ख़ाक मिलाइंदा। खेल अन्दर धर्म राए दी घत्ते जेल, बंदीख़ाना इक जणाइंदा। खेल अन्दर मिले सज्जण सुहेल, घर आ आ आप उठाइंदा। खेल अन्दर कर दए रेल पेल, उलटी सिधी आप वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा खेल बेअन्त बेअन्त आदि अन्त आप जणाइंदा। खेल अन्दर मन दौड़े, आपणा बल धराईआ। खेल अन्दर रस वेखे फिके कौड़े, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। खेल अन्दर मन मनुआ गुर शब्दी होड़े, इक्को नाम सुणाईआ। खेल अन्दर विछड़े जोड़े, मेल मिलावा इक कराईआ। खेल अन्दर तरदे रोड़े, खेल अन्दर डुब्बदे लए तराईआ। खेल अन्दर दर आए ख़ाली मोड़े, खेल अन्दर ख़ाली झोलीआं दए भराईआ। खेल अन्दर मनमुख रखे कोरे, खेल अन्दर गुरमुख इक्को घर जणाईआ। खेल अन्दर काहना कृष्ना घर गवाल्यां बणया छोहरे, खेल अन्दर सीस मुक्ट ताज सुहाईआ। खेल अन्दर सस्से उपर लाए होड़े, खेल अन्दर हाहा टिप्पी हँ ब्रह्म रूप वखाईआ। खेल अन्दर वेखे ज़ोरो ज़ोरे, खेल अन्दर ज़ेर ज़बर मिटाईआ। खेल अन्दर भगत भगवान नूं मारन हनोरे, ताअना दे दे रहे डराईआ। खेल अन्दर सन्त कन्त प्रभ आपे बौहड़े, रुस्से लए मनाईआ। खेल अन्दर अग्गे दिन रहि गए थोड़े, साचा खेल सब नूं दए जणाईआ । खेल अन्दर नानक सुत्ता सेजां रोड़े, खेल अन्दर गोबिन्द सत्थर इक विछाईआ। खेल अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर काया पंज तत्त कीते बंद भोरे, भोरी भोरी आपणा दरस दिखाईआ। खेल अन्दर धन माल लुट्टण चोर चोरे, चोरी चोरी घर विच संन लगाईआ। खेल अन्दर गायण दोहरे, सरगुण निरगुण रहे ध्याईआ। खेल अन्दर धन्ने जट्ट वच्छीआं वच्छे मोड़े, खेल अन्दर खूहा रिहा गिढ़ाईआ। खेल अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वड्याईआ। खेल अन्दर गुर अवतार, खेल ख़ालक ख़लक जणाइंदा। खेल अन्दर शब्द धार, अनाद अनादी आप सुणाइंदा। खेल अन्दर कर पसार, खेल खेल नाल रलाइंदा। खेल अन्दर कोटन जित जित गए हार, खेल अन्दर बाज़ी आपणे हथ्थ कराइंदा। खेल अन्दर कराए वणज वपार, चौदां हट्ट चौदां लोक राह चलाइंदा। खेल अन्दर स्वांग रचाए बाज़ीगर नट, स्वांगी आपण स्वांग वटाइंदा। खेल अन्दर विके हट्टो हट्ट, आपणी कीमत ना कोए जणाइंदा। खेल अन्दर होए पुरख समरथ, सब नूं आपणी झोली पाइंदा। खेल अन्दर जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त इक्को इक वरताइंदा। खेल अन्दर जूठे झूठे रखे ख़ाली हथ्थ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस नूं किरपा कर आपणी खेल देवे दस्स, दहि दिशा दो जहान इक्को नज़री आइंदा। सो कहे मैं तेरे वस, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को ढोला सोहँ नाउँ वखाइंदा।

❇ २८ माघ २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ❇

सति पुरख सदा समरथ, समरथ खेल कराइंदा। आपणी करनी रखे आपणे वस, वसीकार आप अख्वाइंदा। आपे

७४०
१३

जाणे आपणी गथ, गाथा आपणे विच समाइंदा। आपे जाणे आपणा रथ, रथ रथवाही आप चलाइंदा। आपणे गृह आपे वस, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। आपणा जाण आपे रस, आपणे विच चुआइंदा। आपणा कर आप प्रकाश, प्रकाश आपणे विच्चों धराइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आप आपणा राह चलाइंदा। आपणे अन्तर आपे हस्स, आपणी खुशी आप मनाइंदा। आपणा गा आपे जस, सिफ्त सालाह आप बण जाइंदा। आपणी धार कर प्रगट, प्रगट धार नूर वखाइंदा। आपणा खोल्ह आपे हट्ट, आपणी वस्त वरताइंदा। आपणी महिमां जाण अकथ, आप आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आपणे विच धराइंदा। आपणी करनी दस्सण योग, करता इक वड्डी वड्याईआ। आपणा माणणहारा रस भोग, भोगी इक्को बेपरवाहीआ। आपणा करनहार संजोग धुर संजोगी मेल मिलाईआ। आपणा देवणहारा दरस अमोघ, पर्दा नक़ाब ना कोए रखाईआ। आपणा वसावणहारा कोट, बंक इक्को इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आपणे विच रखाईआ। साचा भेव पुरख अगम्म, अगम्म आपणे विच रखाइंदा। आदि जुगादि निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म कांड रूप ना कोए वटाइंदा। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, सच महल्ल आसण लाइंदा। निरवैर पुरख बेड़ा बन्न्ह, निरगुण आपणा राह जणाइंदा। अकाल पुरख जननी जन, अजूनी रहित वंड वंडाइंदा। कर खेल श्री भगवन, आपणी कल धराइंदा। सदा सद अछल अछल, भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाइंदा। आप आपणी वंडे वंड, वंडणहार वड वड्याईआ। आप आपणी मारे कंध, बण सेवक सेव कमाईआ। आप आपणी धार करे बंद, बंदश अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। खोल्हे भेव हरि अपारा, अपरम्पर आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण हो न्यारा, हरि पुरख निरँजण ब्रह्म आपणा पर्दा लाहइंदा। एकँकार वेखणहारा, आदि निरँजण जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता कर पसारा, श्री भगवान सच हुलारा पारब्रह्म प्रभ इक्को रंग वखाइंदा। देवणहारा वड भण्डारा, दर दरवेश बण लिखारा, अलख अलखना इक्को अलख जगाइंदा। शाहो भूप वड सिक्दारा, हुक्मी हुक्म खेल न्यारा, लेखा जाणे धुर दरबारा, धुरदरगाही राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। आपणी धार जोत सरूप, जोती जोत जोत रुशनाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, अनूप वड वड्याईआ। वसणहारा आपणे देस, साचे तख्त सोभा पाईआ। तख्त निवासी आपे करे आदेस, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आपे शाह बण नरेश, नर आपणा नाउँ प्रगटाईआ। आपे होए भिखारी दरवेश, खाली झोली अग्गे डाहीआ। आपे करे साचा हेत, हितकारी बेपरवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहार वड वड्याईआ। करे खेल करनी करतार, करता पुरख दया कमाइंदा। आपणी इच्छया आपे धार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। इच्छया भिच्छया एका सार, सार शब्द रूप वटाइंदा। सार शब्द कर तैयार, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सति वखा सच अस्थान, भूमका रूप ना कोए जणाइंदा। निरवैर पुरख अकाल मूर्त नज़री आए नर निरँकार, नौजवान सीस जगदीश इक्को ताज टिकाइंदा। आदि आदि हुक्मरान सति सति सति निशान, सति सतिवादी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाइंदा। साचा वेस वेस अवल्ला, इक्को इक जणाईआ। एका एक सद इकल्ला, इक्को घर वसाईआ। एका एक फड़ाए पल्ला, पल्लू गंढु बंधाईआ। एका एक रूप ना रंग रेख, रक्षक होए सभनी थाईंआ। एक एक इक आदेस, इक्को सीस झुकाईआ। इक नूर जोत प्रवेश, परवरश करे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धार सार कर प्यार, सार आपणी दए जणाईआ। सार सार सार समाल, सर्ब सर्ब जणाईआ। दीन दीन दीन दयाल, दयानिध अख्वाईआ। पाल पाल कर प्रितपाल, प्रितपालक दए वड्याईआ। लाल लाल अनमुलड़ा लाल, घर साचे इक प्रगटाईआ। सिखाल सिखाल सिख्या इक सिखाल, साचा मार्ग दए जणाईआ। घाल घाल घालन घाल, घाली घाल इक दरसाईआ। स्वाल स्वाल इक स्वाल, बण स्वाली आपणे अग्गे पाईआ। जवाब जवाब इक जवाब, लाजवाब इक दरसाईआ। नवाब नवाब शाह नवाब, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। ख्वाब ख्वाब ख्वाब, ख्वाहिश इक्को इक प्रगटाईआ। दाद दाद दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। समाज समाज समाज, सच सुच्च वड्याईआ। राज राज राज, राज जोगीशर इक दृढ़ाईआ। काज काज काज, करता पुरख आपणा काज रचाईआ। निरगुण निरवैर पुरख मार आवाज, आपणी धार आपणे विच्चों जगाईआ। सार तेरी पूरी करे ख्वाहिश, आशा तेरे नाल मिलाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, आपणी उंगली लए लगाईआ। कर कर दासी दास, साची सेवा इक समझाईआ। रूप दरसा साख्यात, साचा सच करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सार तेरी पाए सार, किरपा कर आप निरँकार, निराधार धार धार विच जणाईआ। धार धार हरि खेल रचाई, निरगुण आपणी कल वरताइंदा। इक्को इच्छया लई प्रगटाई, भिच्छया झोली पाइंदा। कर किरपा बणाई जगत माई, ममता अवर ना कोए रखाइंदा। तत्तव तत्त ना कोए रखाई, रूप रंग ना वंड वंडाइंदा। नार कन्त ना कोए हंढ्ढाई, सुंञीं सेज सुहाइंदा। साची सेवा आप लगाई, हुक्मी डण्डा मगर लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत कर प्रधान, प्रधानगी हरि जणाइंदा। पुरख

७४३
१३

अबिनाशी देवणहारा दान, साची वस्त झोली पाइंदा। करे खेल नौजवान, निरगुण आपणा राह चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर निशान, निशाना इक्को इक समझाइंदा। लेखा जाण आप भगवान, भगवन रूप ना कोए वखाइंदा। आदि शक्ति ना कोए माण, आशक रूप ना कोए वटाइंदा। नेत्र नैण ना कोए ध्यान, नाम ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। महल अटल ना कोए मकान, महिफ़ल सच ना कोए वखाइंदा। सरगुण दिसे ना कोए निशान, वंडन वंड ना कोए जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए विधान, मन मति बुध ना कोए रलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर ना कोए माण, सच संदेसा ना कोए सुणाइंदा। सूरज चन्द ना ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप ना कोए वखाइंदा। काग़ज़ कलम शाही ना कोई ब्यान, कातब कलम ना कोए चलाइंदा। एका खेल जाणे श्री भगवान, दूजे भेव ना कोए आइंदा। जिस देवे किनका किनका इक ज्ञान, सो कानी तीर चलाइंदा। जिस रचना रची आदि, सो आपणे हथ्थ खेल वखाइंदा। इक्को माई कर प्रधान, चेले तिन्न सेव लगाइंदा। कुड़माई करे आप मेहरवान, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा। ज्ञान ध्यान ना करे कोए वख्यान, वेख्यां नज़र किसे ना आइंदा। जो पढ़या करन ब्यान, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। माई सदा सदा जवान, बिरध बाल रूप ना कोए वखाइंदा। नेड़ आए ना कोए शैतान, शरअ सब दी बंद कराइंदा। कन्नी सुणे ना कोए कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची इच्छया इक्को माई जणाइंदा। साची माई सदा सुच्ची, सच सुच्च दृढ़ाईआ। जे कोई कहे जुग जुग लुच्ची, प्रभ जू मन्नण विच ना आईआ। जे कोई कहे कन्नां बुच्ची, श्री भगवान सति शृंगार कराईआ। जे कोई ला के वेखे रुची, ध्यान ना कोए मिलाईआ। सो माई प्रभ चरण दवारे बैठी उच्ची, नीवां ध्यान रखाईआ। जे कोई कहे आलस निंद्रा विच सुत्ती, सुत्तयां रैण ना कोए विहाईआ। जे कोई आखे लम्मीं गुती, सीस मींढी इक गुंदाईआ। जे कोई आखे किसे दी नहीं वौहटी, नार खौ़त ना कोए हंढुाईआ। जे कोई आखे होए औती, औंतरा जगत दए कराईआ। जे कोई आखे हथ्थ नूं पाए पौंची, पंच नाम तन्द बंधाईआ। जे कोई आखे बड़ी शौंकी, शौंक श्री भगवान इक हंढुाईआ। जे कोई आखे नेत्र रोंदी, हस्स हस्स जुग चौकड़ी आपणे विच समाईआ। जे कोई आखे ढोला गाउँदी, गा गा शुकर मनाईआ। जे कोई आखे औंसीआं पाउदी, जन भगतां राह तकाईआ। जे कोई आखे आपणा घर ढाउदी, उजड़े घर वसाईआ। जे कोई आखे जुग जुग खेल रचाउदी, रच रच खेल वेखे थाउँ थाईंआ। सो मइया इक अख्वाउदी, प्रभ चरण ध्यान लगौदी, दूजी ओट ना कोए तकौदी, आदि जुगादि समझाउदी, कीती भुल दर बख़्शाउदी, नेत्र नैणां नीर वहाउदी, दो जहानां पिट्टे डौंडी, सुत्ता रहे ना कोए आंढी गवांढी, दूर नेड़े सर्ब जगाइंदा। सो माता बणी राणी,

७४३
१३

राणा इक्को इक जणाइंदा। जिस दी नानक गाई कहाणी, बिन नानक भेव कोए ना पाइंदा। उह सुघड़ सुचज्जी सवाणी, जिस नूं हरि जू सेवा लाइंदा। ना अन्नी ना काणी, नेत्र नैण ना कोए वखाइंदा। ना पढ़े किसे दी बाणी, पाणी किसे कोलों चुल्ली ना मंग मंगाइंदा। उह वसे धाम अस्थानी, अस्थिल इक्को दुआर बंका राह तकाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। इक्को नाउँ लग्गा चंगा, हरि जू दए जणाईआ। इक्को रंगण नाम रंगा, रंग रंगीला इक वखाईआ। इक्को वार कीता कारज अनन्दा, दूजी वार गंढु ना कोए पवाईआ। जिस दी खेल अन्दर कोटन कोटि कोट ब्रह्मण्डा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। तिस माई दा सीस ना होया नंगा, जगत रंडेपा ना कोए हंढ्ढाईआ। उहदा नाँ लै के वाज मारे इक्को सूरा सरबँगा, दूजा कहिण कोए ना आईआ। ना नारी ना उह बंदा, लिंग रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाउँ इक्को इक जणाईआ। नाउँ उस दा सच्चा गुण, गुणवन्ता आप जणाइंदा। गुरमुख कन्नां नाल लवो सुण, सच संदेसा इक समझाइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत करो छाण पुण, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। सो माई प्रभ दी बच्ची, बचपन आप बणाया। आदि जुगादि होए ना कच्ची, कुचील रूप ना कोए वटाया। दर दरबार करे सेवा हो के सच्ची, सज्जण सच्चा नज़री आया। त्रैगुण विच कदे ना मच्ची, मुआता सब नूं दए लगाया। घूँगट पा कदे ना नच्ची, जुग जुग आपणा वेस वटाया। प्रभ चरण दुआर सच प्रीती विच रची, रुची होर ना कोए वधाया। एसे कारन सब दे कोलों रहीं बची, उहदी इज्ज़त नूं हथ्थ किसे ना पाया। नानक निरगुण गल्ल शब्द रूप दस्सी सच्ची, रसना नाल कहाणी ना कोए अलाया। ना रोटी खावे खंनी अद्धी, टुक्कर हथ्थ ना कोए फड़ाया। श्री भगवान दे हुक्मे बद्धी, बैठी सीस झुकाया। बण निमाणी कहे मैं तेरी नढ्ढी, तूं साहिब मेरा शहिनशाहीआ। कर किरपा मैनूं आपणे दवारयों मूल ना कढ्ढी, तेरे अग्गे वास्ता पाया। कोटन कोटि काल बीतण जुग चौकड़ी सदी, सदीव तेरा रूप इक्को नज़री आया। ना कोई तन ना कोई हड्डी, मास चमड़ी ना रंग चढ़ाया। तेरी पुश्त तेरी यद्दी, तेरी कार कमाया। तेरे प्रेम अन्दर मधी, मार्ग दो जहान वखाया। उच्चा लम्मां नज़र ना आए कोए कद्दी, हथ्थ पैर मूँह नक्क नेत्र अंग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सार तेरी साची इच्छया, पुरख अबिनाशी पाई भिच्छया, साची माई इक्को वार प्रनाया। साची माई करया परण, परम पुरख नाल गंढु पवाईआ। तुध बिन अवर ना कोई सरन, सरन मिले ना होर सरनाईआ। कर सेवा पूरा करां तेरा आचरण, अचरज राह चलाईआ। तूं दाता तरनी तरन, तारनहार तेरी वड्याईआ।

७४४
१३

त्रै त्रै पाणी तेरा भरन, पीसण पीस सेव कमाईआ। आदि जुगादि ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक गगन पाताल ज़िमीं आसमान तैथों डरन, कोटन कोटि तेरा भय रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाउँ बिन अक्खरां निॳक्खर आपणे नाल मिलाईआ।

❇ २८ माघ २०१६ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ❇

सतिगुर शब्द साचा गीत, गीत गोबिन्द इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द पतित पुनीत, पतित पापी पार कराइंदा। सतिगुर शब्द साची रीत, जुग चौकड़ी राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ राह वखाइंदा। सतिगुर शब्द मन वासना लए जीत, माया ममता मोह मिटाइंदा। सतिगुर शब्द काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ बरसाइंदा। सतिगुर शब्द परखणहारा नीत, नीतीवान इक्को नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द पार कराए हस्त कीट, ऊँच नीच ना वंड वंडाइंदा। सतिगुर शब्द सदा रस मीठ, अनरस नज़र कोए ना आइंदा। सतिगुर शब्द सदा अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा।
७४५ १३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द इक समझाइंदा। सतिगुर शब्द साचा रंग, रंग इक्को इक ७४५ १३
वखाईआ। सतिगुर शब्द सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। सतिगुर शब्द आत्म अनन्द, अनन्द रस इक चखाईआ। सतिगुर शब्द खुशी करे बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर शब्द जगत विकार करे खण्ड, खण्डा इक्को इक खड़काईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े दुहागण रंड, हरि कन्त दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द सुहागी छन्द, सति सतिवाद करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द परमानंद, परम पुरख दए वखाईआ। सतिगुर शब्द कूड़ा नाता तोड़े झूठा गंद, अमृत रस इक चखाईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग देवे वंड वंडणहारा फेरा पाईआ। सतिगुर शब्द देवणहारा डण्ड, डंका सब दे सिर वजाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक जणाईआ। सतिगुर शब्द सच निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। सतिगुर शब्द सच पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा राम, राम रहीम मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द सच अमाम, रसूल आपणी गंढु पवाइंदा। सतिगुर शब्द सच कलाम, कलमा इक्को इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द सच अशनान, दुरमति मैल धवाइंदा। सतिगुर शब्द साचा भान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सतिगुर शब्द खेल महान, ख़ालक ख़लक विच्चों नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द सच ईमान, दूजी शरअ ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द धुर ज्ञान, बोध अगाध पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द बेपहचान, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। सतिगुर शब्द बिरहों तीर

निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत रस देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। सतिगुर शब्द सुरत मिलाए हाणी हाण, घर मेला मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द चतुर सुघड़ बणाए सुजान, मूर्ख मूढ़े धंदे लाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आप वरताइंदा। सतिगुर शब्द साचा सज्जण, सज्जण इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द धुर दा मजन, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। सतिगुर शब्द सदा सदा सद पड़दे कज्जण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द गुरमुख विरले जपण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सतिगुर शब्द कोटन कोटि उतारे पापन, पापी इक्को गंढु पवाईआ। गुर का शब्द लेखा चुकाए हाकन डाकन, निरवैर इक्को रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द पाकी पाकन, पुनीत इक्को रूप दरसाईआ। सतिगुर शब्द पुच्छे वातन, नित नवित्त होए सहाईआ। सतिगुर शब्द ज़ाहर बातन, बैतल इक्को धाम प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द मकतूल कातिल, कतलगाह इक वखाईआ। सतिगुर शब्द सदा साथन, सगला संग निभाईआ। सतिगुर शब्द अनाथ अनाथन, नाथ अनाथां होए सहाईआ। सतिगुर शब्द पृथ्मी अकाशन, आकाश आकाशां डंक वजाईआ। सतिगुर शब्द दासी दासन, बण सेवक सेव कमाईआ। सतिगुर शब्द पूरी करे आसन, आसा सब दी पूर वखाईआ । सतिगुर शब्द निर्मल पाठन, पूजा इक्को इक वड्याईआ। सतिगुर शब्द तीर्थ ताटन, तट किनारा दए वखाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा हाटन, चौदां लोक पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द नटुआ नाटन, बण स्वांगी स्वांग रचाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े ज़ात पातन, वरन गोत ना कोए जणाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले भाखण, भाख्या जिस नूं आप जणाईआ। सतिगुर शब्द सच सुल्तान, सति सतिवादी आप बणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिगुर शब्द सच ज्ञान, ज्ञान ध्यान इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सच ईमान, इस्म आज़म इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द सिफ्त सालाहे अञ्जील कुरान, वेद शास्त्र सर्ब सुणाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण दोए दोए धार वखाइंदा। सतिगुर शब्द धुन रागी सुणाए सच्ची धुन्कान, धुन आत्मक राग अलाइंदा। सतिगुर शब्द महाबली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द मेट मिटाए कूड़ शैतान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि शब्द इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द पिता माता, आदि अन्त वड्याईआ। सतिगुर शब्द सच्चा नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर शब्द ढूँग्घा खाता, बिन गुरमुख नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द गुरमुख पछाता, लख चुरासी कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। सतिगुर शब्द उत्तम ज़ाता, भगत भगवन्त रूप वटाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा साका, गुर अवतार पीर पैगम्बर

ढोला गाईआ। सतिगुर शब्द इक्को आका, आकी रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द खोल्हे ताका, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ । सतिगुर शब्द सच सुणाए बाता, धुर दी बाणी बाण अल्हाईआ। सतिगुर शब्द एथे ओथे होए राखा, बण रक्षक सेव कमाईआ। सतिगुर शब्द साख्याता, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्को इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द साची ओट, ओट अकाल जणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अतोट, अतुट आप वरताइंदा। सतिगुर शब्द मिलाए निर्मल जोत, जगत वछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। सतिगुर शब्द रंग रंगाए काया माटी चमड़ा पोश, पुश्त आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द सदा निर्दोष, दोषी जीव सर्ब बणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा मदहोश, मधर धुन आपणा राग अल्हाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख विरला रिहा लोच, लोचण नैण ध्यान लगाइंदा। सतिगुर शब्द किसे विच ना आवे सोच, सोचयां अन्त कोए ना पाइंदा। सतिगुर शब्द कोटन कोटि रहे खोज, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाइंदा। सतिगुर शब्द बिन गुरसिख कोई ना माणे मौज, मौजूदा हाल सब नूं आप सुणाइंदा। पढ़न सुणन दी पै गई रौंस, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। बण हँकारी बण गए ग़ौंस, कुतबख़ाना सर्ब जणाइंदा। कन्त

७४७ मिलण दा रखे कोई ना शौंक, विभचार घर घर नजरी आइंदा। कलिजुग कूड़ा पाया तौंक, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाइंदा। ७४७

१३ बिन भगतां जगत दिसे औंत, जगत निशान ना कोए वखाइंदा। सुरत सवाणी रोवे बिनां ख़ौंत, ख़ावंद अक्ख ना कोए १३

मिलाइंदा। साध सन्त कूड़ी क्रिया मारन धौंस, धौंसा नाम ना कोए सुणाइंदा। सच महल्ल कोई ना गया पहुंच, काया अन्दर सब रो रो नेत्र नीर वहाइंदा। रसना जिह्वा शूकर रहे भौंक, पंज भूत नाता ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द जन भगतां झोली पाइंदा। सतिगुर शब्द वड्डी दात, दाता दानी आप वरताईआ। सतिगुर शब्द सच्ची करामात, कर्म कांड दए चुकाईआ। सतिगुर शब्द कढ्ढे भरम भरांत, भुलेखा सब दा दूर कराईआ। सतिगुर शब्द दिलाए नजात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरसिख झोली पाईआ। गुरसिख झोली लए अड्ड, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। आपणे विच्चों आपणा नाम कढ्ढ, हरिजन तेरे विच समाइंदा। जो संगत नाल गया रल पिच्छे जाए ना छड्ड, खैहड़ा जम दा आप छुडाइंदा। अग्गे पार कराए हद्द, पिछला पन्ध मुकाइंदा। दर आए कराए हज्ज, हाजत होर ना कोए वखाइंदा। सिर पर्दा देवे कज्ज, ओढण इक्को नाम वखाइंदा। सोहँ शब्द साचा नाउँ लैणा जप, जाप इक्को इक दृढ़ाइंदा। होए सहाई बण के सच्चा बाप, पूत आपणी गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर देवे सच्चा साथ, शब्द गुर आपणी सेव कमाइंदा।

❇ २८ माघ २०१६ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ❇

सतिगुर शब्द अगम्मी धार, सचखण्ड निवासी आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द सच्ची जैकार, सच जैकारा इक अल्हाइंदा। सतिगुर शब्द साची कार, हरि करता आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द साचा हट्ट वणजार, वस्त इक्को इक वरताइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे सर्ब संसार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा ला गुर अवतार, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द पीर पैगम्बर पाए सार, कलमा नबी रसूल जणाइंदा। सतिगुर शब्द भगत भगवान लए उठाल, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सतिगुर शब्द सन्तां वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुखां खोल्ह किवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। सतिगुर शब्द गुरसिखां चले नाल नाल, सदा सदा संग निभाइंदा। सतिगुर शब्द नाता तोड़े त्रैगुण माया जगत जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा चुकाए काल महाकाल, भय भ्यानक रूप ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द एथे ओथे बण दलाल, बण विचोला वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत आत्म सरोवर दए उछाल, निझर झिरना इक झिराइंदा। सतिगुर शब्द सुरत सवांणी करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द सुणे मुरीदां हाल मुर्शद आपणा नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द आप जणाए पंज तत्त काया माटी खाल, हरि मन्दिर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाइंदा। हरि का शब्द सतिगुर रूप, सतिगुर गुर गुर वेस वटाईआ। गुर गुर लेखा चारे कूट, दहि दिशा सोभा पाईआ। दहि दिशा देवे सच सबूत, साहिब आपणा नाम पढ़ाईआ। हरि का नाउँ लेखा जाणे काया पंज तत्त कलबूत, निरगुण सरगुण वेखे थाईं थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द सच्चा नाम, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा जाम, मधुर प्याला इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द करे कराए सच्चा काम, करनी किरत इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द मेटे अन्धेरी शाम, निरगुण जोत नूर रुशनाइंदा। सतिगुर शब्द देवे प्रकाश कोटन भान, मण्डल मण्डप आप सुहाइंदा। सतिगुर शब्द सृष्ट सबाई इक ज्ञान, ज्ञान ध्यान विच मिलाइंदा। सतिगुर शब्द इक निशान, धर्म निशाना इक झुलाइंदा। सतिगुर शब्द इक ईमान, चार वरनां सिदक निभाइंदा। सतिगुर शब्द इक्को रस पीण खाण, विख रूप ना कोए वटाइंदा। सतिगुर शब्द साचा सुणना कान, बिन कन्नां आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां देवे माण, अभिमान मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए सच विधान, राज जोग आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे राज राजान, शाह सुल्तान हुक्म मनाइंदा। सतिगुर शब्द लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डा

खण्डां पाए आण, अग्गे सिर ना कोए उठाइंदा। सतिगुर शब्द चारे खाणी दए ब्यान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भेव अभेद जणाइंदा। सतिगुर शब्द चारे बाणी दए बबाण, नाम बबाणा इक धराइंदा। सतिगुर शब्द भेव जणाए अञ्जील कुरान, काया काअबा वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द इक तौफ़ीक रहीम रहमान, मिहबान बीदो इक्को नूर धराइंदा। सतिगुर शब्द सच इस्लाम, इस्म इक्को इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द सच नज़ाम, दो जहानां बन्धन पाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पैग़ाम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप सुणाइंदा। सतिगुर शब्द सुण कलिजुग जीव होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। सतिगुर शब्द जन भगतां मिले दान, सन्तन झोली आप भराइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुखां देवे माण, गुरसिखां आपणे अंग लगाइंदा। सतिगुर शब्द मनमुख ना सकण पछाण, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि इक्को नाद सुणाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा नाद, अनादी आप सुणाईआ। सतिगुर शब्द सच ब्रह्माद, ब्रह्मांड रिहा समाईआ। सतिगुर शब्द सति आवाज़, धुरदरगाही बांग अल्हाईआ । सतिगुर शब्द रच रच काज, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ । सतिगुर शब्द सति सरूप, सति सति दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द नाता तोड़े जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया मोह मिटाइंदा। सतिगुर शब्द करे पाक काया कलबूत, पतित पुनीत दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द नज़र ना आए कोई वजूद, वाहद आपणी धार वखाइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए नाल महिबूब, मुहब्बत इक्को इक समझाइंदा। सतिगुर शब्द वसे सच अरूज, हुजरा इक्को इक वड्याइंदा। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग वखाइंदा। सतिगुर शब्द उच्च अटारी, अटल अटल जणाईआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए जोत निरँकारी, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर शब्द देवे सच खुमारी, खुमार इक्को इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कूड़ी क्रिया हउमें रोग कटे बीमारी, बिमल आपणी धार प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द नाम खण्डा वखाए तेज़ कटारी, कटाकश इक्को इक जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे आर पारी, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सतिगुर शब्द खेल न्यारी, ख़ालक खलक दए समझाईआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए परवरदिगारी, पर्दानसीं पर्दा इक उठाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे धुर दरबारी, बेनज़ीर शाह हकीर होए सहाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम जणाईआ। सतिगुर शब्द सूरा सरबँगा, सर्ब कला अख्वाइंदा। सतिगुर शब्द नाम मृदंगा वड मर्दानगी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिगुर शब्द पुरीआँ लोआँ आपे लँघा, राह विच ना कोए अटकाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहान वजाए मृदंगा,

तार सतार ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द चण्ड प्रचण्ड तिक्खी धार खण्डां, खड़ग इक्को इक रखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाइंदा। सतिगुर शब्द पाए वंडां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बन्धन पाइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग तोड़े घमण्डा, गढ़ हँकारी बुरज ढाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त सृष्ट सबाई सुणाए साचा छन्दा, सोहँ ढोला इक अलाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए साचा बंदा, बंदगी इक्को इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए गंदा, मूर्ख मूढ़ चतुर सुजान बणाइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब जीआं दा इक्को धन्दा, इक्को राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द वेखणहारा भुक्खा नंगा, भुख्यां नंगयां माण दिवाइंदा। सतिगुर शब्द बसता बन्न किसे ना टंगा, बंद संदूक ना कोए कराइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग निरगुण हो के वज्जा, साज बाज ताल ना कोए रखाइंदा। सतिगुर शब्द घर घर अन्दर फिरे भज्जा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख हिरदे बहि बहि सजा, घर सच्चा इक सुहाइंदा। सतिगुर शब्द बुड्ढा नढ्ढा ना कोई बच्चा, जवान रूप ना कोए बदलाइंदा। सतिगुर शब्द किसे घड़या ना जाए विच सच्चा, घाड़त घड़त ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी कदे ना होए कच्चा, काची माटी काया रंग चढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सदा सद सच्चा, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सब दी करे रिच्छा प्रितपालक नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द निरगुण सरगुण माण दिवाए जट्ट धन्ना, धन इक्को इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द राग सुणाए सच्चा कन्नां, काण सब दी मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश नेत्र अन्न्हा, अज्ञान अन्धेर मुकाइंदा। सतिगुर शब्द भोग लगाए नामा छन्ना, छन्न छपरी आप छुहाइंदा। सतिगुर शब्द बिन भगतां किसे कोलों ना मन्ना, मनसा पूर ना कोए कराइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द गूढ़ो गूढ़, गहर गम्भीर अख्वाईआ। सतिगुर शब्द नूरो नूर, नूर नूर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। सतिगुर शब्द ना नेड़े ना दूर, घट घट आसण लाईआ। सतिगुर शब्द सदा सद आसा पूर, पूरी आस कराईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग प्रगटे ज़रूर, ज़रूरत इक्को इक जणाईआ। सतिगुर शब्द पूरब बख्शे सर्ब कसूर, अग्गे मार्ग लाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द मेट मिटाए हंगता ग़रूर, ग़ुरबत कोए रहिण ना पाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग होया रिहा मफ़रूर, बिन भगतां आपणे अन्दर बंद ना कोए कराईआ। हरि का शब्द देवे सच शऊर, शुहरत इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर शब्द सदा अनमुल्ल, अनमुलड़ा आप बणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अनतुल, तोल विच

कदे ना आइंदा। सतिगुर शब्द धुरदरगाही फुल्ल, दो जहान महकाइंदा। सतिगुर शब्द पुरख अकाल दी कुल्ल, कुलवन्ता नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द बूटा कदे ना जाए हुल्ल, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सतिगुर जिहा, जेही कार कमाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर नेंहा, नेंह इक्को इक समझाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर मेंहां, मेघला इक्को धार बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द सच्चा राम, राम राम मिलाइंदा। सतिगुर शब्द सच पैग़ाम, पीर पैगम्बर रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पूरन करे काम, पूरी आसा पूर वखाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तिम लै के आए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द बदल दए नज़ाम, हाकम इक्को नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द भूपत भूप बण राजान, हुक्म हाकम इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द आप वड्याइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब कला समरथ, समरथ आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त महिमां गणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। सतिगुर शब्द जन भगतां देवे अगम्मी वथ, वस्त इक्को इक वरताइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, सन्त सज्जण मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख हिरदे जाए वस, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुखां देवे इक्को रस, रस फीका सर्ब गवाइंदा। सतिगुर शब्द हरिजन मेल मिलाए हस्स हस्स, आप आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, परम पुरख भेव चुकाइंदा। इक्को विके पुरख अकाल दे हट्ट, दूजा वणज ना कोए कराइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण सति सरूप मार्ग दए दस्स, अनभव प्रकाश इक्को नूर जणाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, ग़रीब निमाणयां वसे साथ, बोध अगाध सुणाए गाथ, भेव अभेदा आप जणाइंदा। निरवैर चलाए राथ, पार लगाए आपणे घाट, कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाइंदा। सतिगुर शब्द पुच्छे वात, कूड़ी क्रिया रहे ना नार कमज़ात, जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए पवण स्वास, आत्म परमात्म दए विश्वाश, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे आपणी शाख़, शनाख़त इक्को इक समझाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अबिनाश, जुग चौकड़ी खेले खेल तमाश, मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त करे प्रकाश, नूरो नूर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप वड्याइंदा। सतिगुर शब्द वड्डा बल, बल बावन भेव चुकाईआ। सतिगुर शब्द अछल अछल्ल, वल छल आपणा खेल रचाईआ। सतिगुर शब्द वसे धाम अटल, अटल महल्ल इक रुशनाईआ। सतिगुर शब्द करे वेस कलिजुग कल, कल

७५१
१३

कालख पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द सति सरूप धार गया रल, जोती जोत जोत समाईआ। सतिगुर शब्द सच संदेसा रिहा घल्ल, नर नरेशा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द पुठी लाहे खल्ल, मनसूर सूली उत्ते चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, पलक सके ना कोए बदलाईआ। सतिगुर शब्द जन भगत दवारा बैठा मल्ल, महिफल इक्को गुण दरसाईआ। हरि शब्द सतिगुर शब्द गुर शब्द शब्द गुर इक्को वजाए नाद अटल, अटल इक्को राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्द इक्को इक प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द सोहँ सो, सति सतिजुग राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द निरगुण निरमोह, कूड़ी मुहब्बत ना कोए रखाइंदा। सतिगुर शब्द वसे ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ, पुरी आकाश आसण लाइंदा। सतिगुर शब्द सतिगुर जिहा हो, होका आपणे नाम सुणाइंदा। सतिगुर शब्द धुर दा ढोआ लै के आए ढो, ढोलक इक्को इक रखाइंदा। हरि का शब्द भेव ना जाणे को, कलिजुग जीव काग वांग कुरलाइंदा। कूड़ी सेजा गए सो, सोया मात ना कोए उठाइंदा। वेले अन्तिम पए रो, रोंदयां चुप्प ना कोए कराइंदा। जो सतिगुर शब्द सुरती जाए छोह, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत मेघ देवे चो, निझर रस इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर शब्द इक उठाइंदा। सतिगुर शब्द इक उठावेगा। साचा नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्माद सुणावेगा। लोक परलोक हलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव इक्को सलोक अलावेगा। लख चुरासी देवे झोक, झोक ना शुकर मनावेगा। जन भगतां तन नगारे लाए चोट, डंका नाम वजावेगा। मन वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। जन्म कर्म दा मेटे रोग, धुर संजोग मेल मिलावेगा। वेखणहारा चौदां लोक, चौदां तबकां फोल फुलावेगा। देवणहारा साची मोख, मुफ्त आपणा नाम वरतावेगा। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता दुःख सर्ब गंवावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्को शब्द गुरू प्रगटावेगा। इक्को शब्द सतिगुर उठेगा। दो जहानां लुटेगा। कूड़ी क्रिया जड़ पुट्टेगा। जन भगतां उपर तुठेगा। लोकाया किसे कोलों ना लुकेगा। शेर हो के बुक्केगा। सन्त सुहेले गोदी चुकेगा। मनमुख मूढ़े शौह दरयाए सुट्टेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द गुर गुर शब्द उज्जल मुख रखेगा।

❇ २८ माघ २०१६ बिक्रमी केशो राम दे गृह जंडो के सिरहाली ज़िला अमृतसर ❇

सतिगुर शब्द साची बाणी, बाण इक लगाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा हाणी, हाणीआं मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द अकथ कहाणी, कह कह आप सुणाइंदा। सतिगुर शब्द धुर निशानी, सच निशाना इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत पाणी, मिठ्ठा ठंडा रस इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे चारे खाणी, भेव अभेदा आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा लाए चारे बाणी, हुक्म हाकम इक समझाइंदा। सतिगुर शब्द सुरत प्रनाए निरगुण राणी, आप आपणा बन्धन पाइंदा। सतिगुर शब्द घट घट होए जाण जाणी, गृह गृह खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द खेल महानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द इक्को इक वड्याइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा राग, रागी गा ना सके राईआ। सतिगुर शब्द सच आवाज़, धुरदरगाही आप सुणाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा समाज, कूड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर शब्द सच जहाज़, गुरमुख सज्जण लए चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सद रखे लाज, सदा सदा होए सहाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा बाज, उडारी इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर शब्द सदा सुच्चा, सूखम रूप जणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा उच्चा, साचे घर सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द सदा रुझा, लख चुरासी अन्दर सेव कमाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख विरले बुझा, जिस आपणा भेव खुल्हाइंदा। सतिगुर शब्द गुरसिख सज्जण सुझा, जिस आपणा पड़दा लाहइंदा। सतिगुर शब्द भेव खुल्हाए गुज्झा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द सन्त सुहेले सुझा, सोझी इक्को इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे जुग जुगा, जुगन्तर आपणा राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना मुक्का, अतोट अतुट वरताइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना रुक्खा, नाम वस्तू नाल रलाइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना भुक्खा, भुख्यां भुक्ख मिटाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सोहणा, सुहञ्जणा आपणे विच समाईआ। सतिगुर शब्द सदा मोहणा, मोहणी रूप वटाईआ। सतिगुर शब्द सदा अनहोणा, अणहुन्दी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द सदा गाउणा, गा गा शुकर मनाईआ। सतिगुर शब्द गुरमुख सच्चे पाउणा, प्रेम प्रीती इक वधाईआ। सतिगुर शब्द जन हिरदे इक वसाउणा, इक ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताल वजाईआ। सतिगुर शब्द ताल तलवाड़ा, नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, तन्दी तन्दी रबाब जणाइंदा। सतिगुर शब्द काया प्रभास वेखणहार अखाड़ा, डूँग्घी कन्दर सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घे सागर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द

करे कराए साची कारा, किरती आपणी किरत कमाइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब जीआं दा इक्को नाअरा, अक्खर वंड ना कोए वंडाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा नगारा, निगहबान आप वजाइंदा। सतिगुर शब्द सच हुलारा, दो जहानां आप वखाइंदा। सतिगुर शब्द सदा प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, परम पुरख मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द साची रंगत, इक्को रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े भुक्ख नंगत, भुक्खयां भुक्ख मिटाईआ। सतिगुर शब्द गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। सतिगुर शब्द हरिजन लाए अंग अंगद, अंगीकार इक कराईआ। सतिगुर शब्द दूजे दर ना जाए मंगत, मंगता रूप ना कोए वखाईआ। सतिगुर शब्द बोध अगाधा पंडत, जीव जंत सर्ब पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। सतिगुर शब्द गहर गम्भीरा, गवर आपणी खेल कराइंदा। सतिगुर शब्द माण दवाए कबीरा, जुलाहा आपणे घाट वखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए कसीरा, रविदास चुमार आप वड्याइंदा। सतिगुर शब्द कटे ज़ंजीरा, जम की फाँसी तोड़ तुड़ाइंदा। सतिगुर शब्द ज़ाहर पीरा, नूर नूराना नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द चोटी चढ़े अख़ीरा, मंज़ल आपणी इक दरसाइंदा। सतिगुर शब्द बेनज़ीरा, नज़र सब दी आप बदलाइंदा। सतिगुर शब्द बदलणहारा तकदीरा, रेख भेख आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द देवणहारा ठांडा सीरा, सीर अमृत रूप वटाइंदा। सतिगुर शब्द कटणहारा भीड़ा, औझड़ राह ना कोए पाइंदा। सतिगुर शब्द चुक्कणहारा बीड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। सतिगुर शब्द सोहणा सुच्चा नग नगीना हीरा, जड़त आपणे विच रखाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सदा इक्को चीरा, जन भगतां सिर बंधाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे हुक्म चलाइंदा। सतिगुर शब्द हुक्म हाकम इक्को इक जणाईआ। सतिगुर शब्द ब्रह्म आत्म, परमात्म मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द उत्तम ज़ातम, जीव जंत जुगत जणाईआ । सतिगुर शब्द इक्को राह जणाए धर्म सनातन, सति सति इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द खेल करे बातन, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए पुरख अबिनाशन, अबिनाशी रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पृथ्मी आकाशन दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द साचा सोहला, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द चुकाए पड़दा उहला, द्वैती रूप ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द चुक्के अन्तिम डोला, डोली आपणे कंध उठाइंदा। सतिगुर शब्द बण विचोला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोहां घर फेरा पाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पाए रौला, भगतां आप जगाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग खेले होला, रत्ती रत्त नाल रंगाइंदा । सतिगुर शब्द,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच झकोला इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा गभ्भरू, बल आपणा आप रखाईआ। सतिगुर शब्द सदा वजाए डब्बरू, डंका आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द अंगद कमाया अमरू, रामदास मिली वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। सतिगुर शब्द साची ग़रज़न, गरज इक्को इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द पाया गुर अर्जन, दोए जोड़ अर्ज वास्ता पाइंदा। सतिगुर शब्द पूरा करे फ़र्ज़न, ग्रन्थ पन्थ राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग कूड़ी क्रिया आए वर्जण, सच सच्चा राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द हउमें हंगता मेटे मर्जन, मरीज़ गुरमुख आप बचाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग दा लाहे कर्जन, मकरूज आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द कोई होण ना देवे हर्जन, हाजत भगतां पूर कराइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए आदि निरँजण, नर नरायण गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द सदा दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। सतिगुर शब्द इक्को नेत्र अञ्जण, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सतिगुर शब्द काया माटी करे कंचन, कंचन पारस नाल छुहाइंदा। सतिगुर शब्द हरि का बचन, भगवन्त भगत बच्चयां आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप सालाहइंदा। सतिगुर शब्द सदा सद नीवां, नीचों नीच नीच अख्वाईआ। सतिगुर शब्द हर घट वसे जीवां, जीव जीव करे कुड़माईआ। सतिगुर शब्द नाता तुड़ाए साढे तिन्न हथ्थ सीवां, त्रै त्रै अग्न ना लागे राईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को घर वखाईआ। सतिगुर शब्द इक दरवाज़ा, घर सच्चा सच दृढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द गुरसिख कहे आ जा, सद्दा नाम इक जणाइंदा। सतिगुर शब्द फिरे भाजा, अन्दर बाहर खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द बण राजन राजा, गृह साचा हुक्म मनाइंदा। सतिगुर शब्द अगम्मी वाजा, सुर ताल ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द इक रखाइंदा। साचा शब्द सुणावांगा। अगम्मी राग अलावांगा। सारंग सारंगा ना कोई वखावांगा। अनरंगा रंग चढ़ावांगा। मृदंगा इक वजावांगा। सुरती सोई आप उठावांगा। अकाल मूर्ती नज़री आवांगा। तुरती नाद इक अलावांगा। आसा पूरती पूरी आस करावांगा। बण जवान लँघां मूहर दी, मुख आपणा आप दिखलावांगा। एह गल्ल नहीं कोई ग़रूर दी, गुर गुरबत सब दी मेट मिटावांगा। एह खेल हाज़र हज़ूर दी, जो करनी कर वखावांगा। खेल चुक्के नेड़ दूर दी, तुरत गुरमुख आपणी गोद बहावांगा। कहाणी अकथ भरपूर दी, भरम सब दे मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाद वजावांगा । इक्को नाद वज्जेगा। कूड़ कूड़यारा भज्जेगा। काल कलन्दर नच्चेगा। गुरमुख

७५५
१३

विरला बचेगा। जिस आपणा मार्ग दस्सेगा। घर मन्दिर बहि बहि हस्सेगा। हरि सरन सरनाई वसेगा। अमृत रस चक्खेगा। प्रभ सरनी आ के ढठ्ठेगा। लहिणा चुके पत्थर वट्टे दा। लेखा जाणे कट्टे वच्छे दा। जट्ट हो के जट्ट रखेगा। फट्ट हो के फट्ट वज्जेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दस्सेगा। एका नाम दसाएगा। चार वरन समझाएगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाएगा। आत्म ब्रह्म सर्ब वखाएगा। कर्म कांड मिटाएगा। आंढ गवांढ उठाएगा। आपणा सारंग वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी जीव जंत इक्को राहे लाएगा। इक्को राह लग्गेगा। दीपक जोती इक्को जगेगा। होवे खेल सूरे सरबग्गे दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर गुर सतिगुर शब्द गजेगा। सतिगुर शब्द गूंजेगा। जन भगतां अत्थरू पूंझेगा। कूड़ी क्रिया किरकट हूंझेगा। सच प्रीती कर के झूझेगा। लख चुरासी विच्चों आपणे भगत आपे बूझेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा चुकाए एका दूजे दा।

❇ २८ माघ २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ❇

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, सति सति धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। एकँकारा नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए दरसाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेल महान, निरवैर पुरख आप कराइंदा। श्री भगवान सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर प्रधान, सच प्रधानगी इक जणाइंदा। शाहो भूप बण राजान, शहिनशाह आपणी कल रखाइंदा। योद्धा सूर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। राजन राज हुक्मरान, हाकम इक्को इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा वेस वटाइंदा। आदि पुरख हरि वेस अवल्ला, एका एक वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सच महल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। जोती नूर इलाही अल्ला, जलवा नूर नूर प्रगटाईआ। आपणे दीपक आपे बला, प्रकाश प्रकाश विच जणाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, उच्च महल्ल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। आपणी करनी करे भगवान, भेव अभेद कोए ना पाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। देवणहारा सच फ़रमान, धुर फ़रमाना आप

७५६
१३

७५७
१३

अल्हाइंदा। आपणी इच्छया कर बलवान, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी करनी रखे हथ्थ, वड दाता वड वड्याईआ। निरगुण जोत कर प्रगट, प्रगट आपणा खेल वखाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा नाउँ जणाईआ। सचखण्ड दवारे साचे वस, बंक दवारा इक वखाईआ। नाउँ निरँकारा बोल अलख, अलख इक्को इक जणाईआ। निरवैर पुरख हो प्रतख, अजूनी रहित मूर्त अकाल अक्ल कल वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी बणत आप बणाईआ। आपणी बणाए आपे बणत, भेव अभेद कोए ना पाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, अन्त आदि आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे नूर जोत भगवन्त, नूर नुराना पड़दा लाहइंदा। आपे खेल करे श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव हरि निरँकारा, आदि पुरख खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी हो तैयारा, मार्ग इक्को इक जणाईआ। मुकामे हक़ कर पसारा, लाशरीक नूर धराईआ। महल अटल इक मुनारा, महिफल आपणी इक्को लाईआ। करे खेल परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी आसा आप प्रगटाईआ। आपणी आसा आपे रख, हरि आपणा खेल कराइंदा। आपणे गृह हो प्रतख, आपणा पड़दा लाहइंदा। आपणे मन्दिर देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। आपे जाणे आपणी ज़ात, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। आपे खेलणहारा खेल तमाश, साची मण्डल रास रचाइंदा। आपे होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा राह जणाइंदा। आपे शहिनशाह शाहो शाबाश, शाह सुल्तान आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी करनी आप समझाइंदा। आपे शाह आपे सुल्ताना, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाईआ। आपे मर्द आप मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाईआ। आपे तीर आप निशाना, अणयाला आपणा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए उठाईआ। आपणा पड़दा देवे चुक्क, सो पुरख निरँजण भेव खुल्हाइंदा। निरगुण धारों आपे उठ, निरगुण एका नाउँ जणाइंदा। आपे चढ़ के आपणी चोट, चोटी इक्को इक वखाइंदा। आप वसाए साचा कोट, किला बंक नाम वड्याइंदा। आपे कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नूराना नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। आपणा खेल हरि जगदीश, एका एक जणाईआ। एका छत्र झुलाए सीस, शहिनशाह वड वड्याईआ। एका हुक्म धुर हदीस, सच फ़रमाना नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम घर घर दिसे पई भीड़ी,

नौ खण्ड पृथ्मी रही कुरलाईआ। सब नूं चेता नरायण तारे बण के कीड़ी, प्रहिलाद दए वड्याईआ। चार कुण्ट होई अख़ीरी, वरन बरन पई लड़ाईआ। शरअ शरीअत वज्जी ज़ंजीरी, दीन मज़्हब ना कोए तराईआ। घर घर दिसे कूड़ी पीरी, सांझा पीर नज़र किसे ना आईआ। शाह सुल्तानां होई दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साधां सन्तां लग्गी पीड़ी, हउमें रोग ना कोए मिटाईआ। साथ ना देवे कोए शाह हकीरी, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मदरा मास खावण रसना लावण तमाकू बीड़ी, बीड़ा नाम ना कोए उठाईआ। कलिजुग क्रिया कूड़ी रही पीड़ी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। अमृत देवे ना कोए सीरी, रस नज़र किते ना आईआ। हरि भुल्लया बेनज़ीरी, नज़र सब ने लई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भीड़ रिहा कटाईआ। कलिजुग राह दिसे भीड़ा, साचा मार्ग नज़र कोए ना आइंदा। सब दी हड्डी टुट्टी रीढ़ा, कूड़ा भार सिर ना कोए उठाइंदा। नज़र ना आए कोए योद्धा सूरबीरा, जो मन मनुआ मेट मिटाइंदा। सारे नेत्र रोवण नीरा, निज आत्म ध्यान ना कोए लगाइंदा। अल्ला राणी हथ्थीं पा के बैठी इक कलीरा, कली कली नाल महकाइंदा। चौदां तबक कोए ना देवे धीरा, चौदां लोक सर्ब कुरलाइंदा। नाता तुटा पीर फ़कीरां, दस्तगीर दस्त ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी भीड़ आप दरसाइंदा। सब नूं भीड़ पई कलिजुग, कालख टिक्का नज़री आईआ। साची चोग कोई ना सक्या चुग, हँस रूप ना कोए वटाईआ। ठग्ग चोर यार चोरी करदे रहे लुक लुक, रातीं सुत्तयां घर घर फेरा पाईआ। गुर सतिगुर कोलों कोई ना लए पुच्छ, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। माया ममता पिच्छे गए झुक, श्री भगवान सीस ना कोए निवाईआ। भगत बण के कोई ना सक्या उठ, भावी सब दे सिर ते छाईआ। चार कुण्ट पए लुट्ट, लुट्टी जाए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग भीड़ी गली रिहा वखाईआ। कलिजुग दिसे भीड़ी गली, नर हरि नज़र किसे ना आइंदा। योद्धा सूर वली छली, वल छल आपणा खेल कराइंदा। जिस दा राह तक्कदा गया अली, मुहम्मद दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो आपणी कार कमाइंदा। भीड़ी गली औझड़ राह, पन्ध नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई भुलया इक मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। बाहरों दिसदे जपदे नाँ, अन्दर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। रसना कहिन्दे भैण धी माँ, मन वासना दुराचार विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ सब दे सिर ते पाईआ। भीड़ी गली औखा घाट, घाटा घर घर नज़री आइंदा। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाट, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। नाता तुट्टा तीर्थ ताट, अठसठ मैल ना कोए धवाइंदा। पई दुहाई मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, शिवदुआले

रंग ना कोए रंगाइंदा। आत्म परमात्म साचा रस कोई ना लवे चट्ट, जीव जंत चारो कुण्ट फिर फिर धक्के खाइंदा। काया मन्दिर अन्दर कोई ना खोल्हे हट्ट, दर दर घर घर फिर फिर कूड़ी क्रिया अलख जगाइंदा। अनहद नाद अनादी कोई ना लावे सट्ट, पढ़ पढ़ रसना वाद वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग भीड़ी गली आप बणाइंदा। कलिजुग भीड़ी गली गई बण, बन्नां नज़र किसे ना आईआ। ना कोई प्रकाश देवे चन्न, चन्द चांदना ना कोए चमकाईआ। नेत्र हुंदयां हो गए अन्न्हे, मार्ग सच ना कोए वखाईआ। हरि का नाउँ ना सुणया कन्न, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान देवणहारा डंन, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह बण मलाह, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्को नैण, हरि नैणां आप वखाइंदा। कलिजुग जीव की कुछ रसना कहिण, कह कह सर्ब सुणाइंदा। नाता तुटा भाई भैण, साक सज्जण सैण ना कोए अख्वाइंदा। चार कुण्ट नौ खण्ड सत्त दीप कूड़ी क्रिया वहे वहण, साची धार ना कोए प्रगटाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वेले अन्त कोई ना आए लैण, लहिणा देणा ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह इक वखाइंदा। भीड़ा राह दिसे मात, वरभण्ड दए दुहाईआ। कलमा कोई ना देवे नजात, उल्मा माण ना कोए रखाईआ। सच दिसे ना कोए प्रभात, अन्धेरा इक्को नज़री आईआ। सृष्ट सबाई बैठी बण जमात, हक़ अड्डो अड्ड रखाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे कायनात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ सब दे सिर ते छाईआ। कलिजुग भीड़ आई सिर, सिर सके ना कोए उठाईआ। साची दिसे ना कोए थिर, धुर धरवासा ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट वेख्या फिर, फिर फिर थक्की सर्ब लोकाईआ। सच्चा नज़र ना आया पिर, पीआ प्रीतम होए सहाईआ। अन्तिम झड़न वाले बिर, बिरहों सट्ट रिहा लगाईआ। कूड़े किरम जाण किर, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिगुर शब्द इक्को थिर, थिर घर वासी दए सुहाईआ। उलटी लट्ठ रही गिढ़, गेड़ा इक्को वार भवाईआ। श्री भगवान अन्तिम आए आपणे पिड़, पैंतड़ा आपणा रिहा बणाईआ। लख चुरासी देवे भेड़, भेड़नहारा ख़लक ख़ुदाईआ। छप्पर छन्न देवे रेड़्ह, महल अटल ना कोए वड्याईआ। जीव जंत लए घेर, घेरा इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ चरण दवारे मंगण मेहर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। श्री भगवान क्यों लाई देर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलिजुग अन्तिम छेड़ां रिहा छेड़, छड़ी फूकी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाईंआ। सृष्ट सबाई

राह तंग, तंगदस्ती ना कोए कटाइंदा। ग़रीब निमाणे रहे मंग, मंगयां भिछयां कोए ना पाइंदा। राज राजान शाह सुल्तान होए मलंग, कूड़ी क्रिया नाच नचाइंदा। साधां सन्तां हरि दा छड्डुया छन्द, छन्द आपणो आपणा सब गाइंदा। नज़र ना आए परमानंद, निजानंद रस ना कोए चखाइंदा। नव नौ चार भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए वड्याइंदा। कलिजुग जीव नार दुहागण होई रंड, बिन हरि कन्त गले ना कोए लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंडां गए वंड, दीन मज़्हब इस्लाम वरन बरन आपणा खेल कराइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच स्वामी सदा निहकामी देवणहारा दंड, खण्डा आपणे हथ्थ उठाइंदा। लख चुरासी काया चोली चाढ़े इक्को रंग, रंग रंगीला आपणा फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणयां वसे संग, सगला संग समझाइंदा। भीड़ी गली पार करो फेर निसंग, जो सतिगुर दर्शन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पन्ध मुकाइंदा। भीड़ी गली पन्ध मुकावेगा। सो पुरख निरँजण निरगुण वेस वटावेगा। जोती जामा रूप धरावेगा। शब्द डंका इक वजावेगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां हलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नैण खुलावेगा। गुर अवतार नाल मिलावेगा। पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकावेगा। भगत भगवान रसना एका गुण सुणावेगा। सन्त सुजान ध्यान लगावेगा। गुरमुख ज्ञान दृढ़ावेगा। गुरसिख राह जणावेगा। माणस मनुख आप समझावेगा। धरत मात दी सफल कुक्ख करावेगा। दुखियां दुःख वंडावेगा। भुख्यां भुक्ख गंवावेगा। कलिजुग कूड़ खपावेगा। चार वरनां इक्को घर बणावेगा। राज राजान शाह सुल्तान ख़ाक मिलावेगा। इक्को नाम जपावेगा। इक्को राम नज़री आवेगा। इक्को कृष्न वेस वटावेगा। इक्को ईसा मूसा कलमा नबी पढ़ावेगा। इक्को मुहम्मद आयत शरायत इक जणावेगा। इक्को नानक निरगुण जोत डगमगावेगा। इक्को गोबिन्द कल्गी तोड़ा सीस सुहावेगा। इक्को जोती शब्द मेल मिलावेगा। कलि कल्की अवतार अख्वावेगा। भीड़ी गली राह मुकावेगा। गुरमुखां सीस तली उत्ते टिकावेगा। वल छल खेल करावेगा। महाबली बल जणावेगा। सतिजुग साची कली महकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पन्ध मुकावेगा। भीड़ी गली पन्ध मुकेगा। प्रभ सच्चा इक्को उठेगा। गुरमुखां उत्ते तुठेगा। निरवैर कदे ना लुकेगा। शेर हो के बुकेगा। ग़रीब निमाणे गोदी चुकेगा। वड हँकारी फड़ फड़ कुटेगा। शौह दरयाए सुटेगा। कलिजुग कूड़ी जड़ पुटेगा। सतिजुग बूटा इक्को फुटेगा। श्री भगवान घर घर सब नूं पुच्छेगा। मनमुख हो कोई ना रुस्सेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भीड़ी गली अन्तिम जड़ पुट्टेगा। भीड़ी गली पुट्टे जड़, जड़ दए उखड़ाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, किरपन वेखे थाउँ थाईंआ। दर्शन देवे उच्चे टिल्ले चढ़, पर्बत इक्को इक वड्याईआ। वेस

कर नर नरायण नर, नर हरि आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग देवे साचा वर, वर इक्को नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पन्ध मुकाईआ। भीड़ी गली मुके पन्ध, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। कलिजुग औध रही हंढु, सतिजुग साचा राह तकाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को गाए ढोला छन्द, सोहला आपणा नाम जपाइंदा। पंच विकारा कर खण्ड खण्ड, नाम खण्डा तन पहनाइंदा। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। वरन बरन ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शश आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताइंदा। भीड़ी गली वेख हरि निरँकार, निरगुण आपणा रूप धराईआ। जीव जंत धाहां रहे मार, धवल हौला भार ना कोए कराईआ। धरनी दर डिगी मूँह दे भार, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। धरत करे हाहाकार, हक़ हकीकत ना कोए जणाईआ। नेत्र नैण होए शरमसार, अक्ख परखत ना कोए दरसाईआ। कलिजुग जीव होए गंवार, गहर गवर तेरा भेव कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया होए अस्वार, चारों कुण्ट रहे दौड़ाईआ। माया ममता रहे झक्ख मार, झाकी अन्तर किसे ना पाईआ। काग रले कागां डार, हँस रूप ना कोए वटाईआ। गुर का शब्द ना कोए प्यार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ । बाहरों करन तन शृंगार, अन्तर दुरमति मैल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह इक दरसाईआ। भीड़ा राह लँघणा औखा, औखी घाटी हरि जणाइंदा। कलिजुग खेल खेलणा सौखा, बिन सोचों आप जणाइंदा। अन्तिम सब नाल होणा धोखा, श्री भगवान हुक्म मनाइंदा। किसे कम्म ना आउणा पंज तत्त कोठा, काया कपड़ ना कोए हंढाइंदा। कलिजुग जीव होया थोथा, थोथी मति सर्ब रखाइंदा। बिन हरि नामों होया होछा, होछी आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान वेखे लुक के गोशा, दो जहान नैण उठाइंदा। पावे सार लोक परलोका, भेव अभेदा आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखण आए मौका, मोहतबर आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह इक दरसाइंदा। भीड़ा राह दिसे जग, जग जीवण दाता नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण माया लग्गी अग्ग, पंज तत्त जलाईआ। हरि का दरस कोई ना पाए उपर शाह रग, शहिनशाह नज़र किसे ना आईआ। खाली दिसण हड्ड, बहत्तर नाड़ ना कोए रुशनाईआ। आत्मा परमात्मा प्यार गई छड्ड, मन वासना होई हल्काईआ। नौ दवारे कोई ना करे पार हद्द, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जूठ झूठ गए बज्झ, बद्धी लड़ी ना कोए छुडाईआ। नज़र ना आया साचा हज्ज, काअबा रूप ना कोए वटाईआ। अमृत पीवे कोए ना मध, नाम खुमार ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलिजुग अन्तिम साथ देणों गए भज्ज, आपणा पिच्छा गए छुडाईआ। श्री भगवान कोल जा के रहे

दस्स, साचा आपणा हाल सुणाईआ। साडा कोई अन्त ना चले वस, तेरी उम्मत बैठी तैथों मुख भवाईआ। असीं गाउँदे तेरा जस, तेरे जीव तैनूं लाअनतां रहे पाईआ। क्यों आपणा आप बैठो ढक, लज्यावान तैनूं लज्जया ज़रा ना आईआ। सचखण्ड दवारयों निरगुण आपणा आप कढु, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जुग चौकड़ी लारे दे दे सानूं लोकमात दित्ता छड्ड, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। कलिजुग अन्तिम असीं सारे कह के आए श्री भगवान होए प्रगट, निरगुण आपणा रूप वखाईआ। वेद व्यासा कहे उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़े झट्ट, आप आपणा आसण लाईआ। ईसा कहे आवे मेरा बाप, पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। मुहम्मद कहे मेरा अमाम आए साक, सज्जण इक्को फेरा पाईआ। नानक कहे निरगुण महाबली खोले ताक, मात पित ना कोए वड्याईआ। गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल कलिजुग अन्तिम देवे नजात, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। पीर पैगम्बर भगत भगवान रहे झाक, निज नैण नैण उठाईआ। कवण वेला पूरा करे भविख्त वाक्, जो जुग चौकड़ी रिहा सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक नाल मिलाईआ। नज़री आए परवरदिगार पाक, पाकीज़ा आपणा राह चलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा करे बेबाक, लहिणा झोली देवे टिकाईआ। चौदां तबकां खोल हाट, सौदां इक्को इक विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पन्ध मुकाईआ। भीड़ी गली पन्ध मुक्कणा, मेटणहार आप निरँकार। कलिजुग कूड़ा बूटा पुट्टणा, अन्त रहे ना विच संसार। बेपरवाह निरवैर साहिब सतिगुर इक्को बुक्कणा, शहिनशाह वड बलकार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेटणहार। श्री भगवान लख चुरासी कोलों पुच्छणा, घर घर लेखा दए वखाल, अन्तिम मिले ना किसे लुकणा, फड़ फड़ बांहों कढु बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली करे ख्वार। भीड़ी गली अन्त मिटावेगा। बेअन्त खेल करावेगा। साचे सन्त सति उठावेगा। भगत भगवान जोड़ जुड़ावेगा। हउमें ममता गढ़ तुड़ावेगा। साची रंगता रंग रंगावेगा। चार वरनां संगता इक बणावेगा। हरि का नाम इक्को पंगता विच वरतावेगा। मंगता कोई नज़र ना आवेगा। अखण्डता इक्को रूप दरसावेगा। जेरज अंडता लेखे लावेगा। उत्भुज सेत्ज फोल वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पड़दा लाहवेगा। भीड़ी गली पड़दा लाह, लहिणा सब नूं आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल बेपरवाह, बेपरवाह आपणा फेरा पाइंदा। गुर अवतार बैठे सीस झुका, पीर पैगम्बर सजदा इक जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर रहे वहा, दोए दोए जोड़ वास्ता सर्ब पाइंदा। लोक परलोक रहे कुरला, दो जहान धीर ना कोए धराइंदा। करोड़ तेतीसा मारे धाह, सुरप्त संग ना कोए रखाइंदा। चार कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर नज़री आइंदा। साबत रिहा ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाइंदा। नाता

७६२
१३

तुटा अञ्जील कुरान, काया काअबा ना कोए वखाइंदा। उम्मत उम्मती होई हैरान, हराम दर दर फेरा पाइंदा। चौदां तबक दिसे शाम, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। तारा चन्द मिटण वाला निशान, सदी चौधवीं वेख वखाइंदा। प्रगट होया इक अमाम, अमल सब दे फोल फुलाइंदा। पीर पैगम्बर कर गुलाम, बरदे आपणे अग्गे लाइंदा। अन्तिम बदल देवे नज़ाम, पिछला लेखा आप जणाइंदा। हरि जू हक़ बणाए मुकाम, हकीकत इक्को इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली लेखा आप मुकाइंदा। भीड़ी गली लेखा मुक्के मात, मता हरि जू रिहा पकाईआ। नाता छुट्टे जगत जमात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। नव नौ चार बंधाए नात, नर नरायण बेपरवाहीआ। प्रगट होए साख्यात, जोती जामा वेस वटाईआ। मेटणहार अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लेखा लिखे बिन कलम दवात, हरफ़ हरफ़ ना वंड वंडाईआ। अक्खर अक्खर ना कोए सफ़ात, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी धार चलाईआ। गुर अवतार बणा शाख़, शनाखत इक्को नाम दरसाईआ। पीर पैगम्बरां दे आब हयात, हयाती सब दी आप बदलाईआ। अन्तिम रखे डूँग्घा खात, कोटन कोटि पीर पैगम्बर अन्दर लए छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली इक बणाईआ। भीड़ी गली जाणे नीकन नीका, निक्की निक्की धार दिखलाइंदा। लेखा जाणे जीव जीअ का, जग जीवण दाता फेरा पाइंदा। भीड़ी गली लँघण दा इक्को तरीका, हरि सतिगुर आप समझाइंदा। प्रभ चरण करो प्रीता, प्रीतीवान इक्को नज़री आइंदा। कूड़ी क्रिया बदलो नीता, नीतीवान आप समझाइंदा। मिठ्ठा कौड़ा करो रीठा, अमृत इक्को रस वखाइंदा। काया होए ठांडी सीता, सीतल धार चुआइंदा। घर वेखो इक अतीता, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। लहिणा चुक्के मन्दिर मसीता, मसला इक्को नाम पढ़ाइंदा। मिलाए मेल लाशरीका, सिरकत सब दी आप गवाइंदा। दूर दुराडा नजर आए नज़दीका, बेनज़ीर फेरा पाइंदा। कलमा पढ़ो इक हदीसा, हज़रत हरि जू आप सुणाइंदा। जिस साहिब दे सिर ते झुल्ले सीसा, छत्र सीस रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम राज राजानां ख़ाली करे खीसा, दर दर आप फिराइंदा। राह तक्के बीस बीसा, विस्तरे सब दे बन्न्ह वखाइंदा। आपणा निशाना मारे ठीका, ठीकर सब दे भन्न जणाइंदा। निक्की गली जिस मार्ग कीता, औझड़ राह वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह तकाइंदा। भीड़ी गली रही उडीक, नेत्र नैण उठाईआ। प्रभ तेरे मिलण दी नेड़े आई तरीक, तोबा तोब करे खुदाईआ। तेरा मार्ग डूँग्घा इक बारीक, संभल चरण ना कोए टिकाईआ। गुर अवतार बणे शरीक, शिरकत घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह रिहा दरसाईआ। भीड़ा राह वेखो नेत्र,

नैण नैणां नाल दरसाइंदा। वरभण्डी बणे खेत्र, जट किरसाण फेरा पाइंदा। लेखा लिखे पहली चेत्र, चेतन सब नूं आप कराइंदा। पुरख अकाल आया वेखण, जुग करता वेस वटाइंदा। कलिजुग मेटे कूड़ी रेखन, रेखा साची फेर बदलाइंदा। नाता तोड़े मुल्ला शेख़न, कुतब ग़ौस नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी आया वेतण, बिन कदमां पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कीती आया पेखण, आप आपणा नैण खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ा राह इक जणाइंदा। भीड़ा राह डूँघा सागर, नज़र किसे ना आईआ। जीव जंत फिर फिर थक्के काया गागर, गगरीआ पार ना कोए कराईआ। नज़र ना आया करीम कादर, करता रूप ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया बणे बहादर, जूठा झूठा खण्डा रहे चमकाईआ। अन्तर रिहा ना कोए साबर, सबर सन्तोख ना कोए धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख लिख दे के गए पात्र, खाणी बाणी अञ्जील कुरान वेद पुराण मात समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर पुरख अकाल सब नूं देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, उजरत कीमत कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली लेखा दए मुकाईआ। भीड़ी गली चुक्के लेखा, हरि लेखा आप मुकाइंदा। गुरमुखां कढ्ढे भरम भुलेखा, भाणा आपणा इक समझाइंदा। निरवैर पुरख कर वेसा, अवल्लड़ा रूप वटाइंदा। वसणहारा साचे देसा, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेले खेडा, बण खलारी फेरा पाइंदा। जीव जंत कराए चेता, भेव अभेद खुल्हाइंदा। श्री भगवान करो हेता, साचा मार्ग इक वखाइंदा। भीड़ी गली मिले भेता, किस बिध पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम फेरा पाइंदा। भीड़ी गली होवे पार, भीड़ सब दी हरि कटाईआ। बीस बीसा खेल करे करतार, निरगुण आपणा बल धराईआ। हरि जगदीशा सब दी पाए सार, घट घट वेख वखाईआ। गुरसिख सज्जण हो तैयार, वेला अन्तिम गया आईआ। कलि कल्की लै अवतार, कलिजुग कलेश खपाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, साचे मन्दिर जोत रुशनाईआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, दो जहानां रिहा जगाईआ। फड़ के बांहों करे पार, पार किनारा इक वखाईआ। अन्त कोई ना डोबे मझधार, चप्पू इक्को नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पन्ध मुकाईआ। भीड़ी गली रही रो, वेला अन्तिम आइंदा। आपणी मींढी रही खोह, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। श्री भगवान लै के आया ढोआ ढो, नाम इक्को इक जणाइंदा। प्रगट होया निरगुण सो, सोहला इक्को इक समझाइंदा। हँ ब्रह्म आपे हो, लख चुरासी वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सच जणाए मोह, मुहब्बत इक्को घर वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म जाए छोह, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली वेख वखाइंदा। भीड़ी गली बूहा खोल्ह, हरि ख़ालक राह तकाईआ। कवण कूटे रिहा बोल, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम तोले तोल, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी मारन देवे ना किसे रोल, रौला घर घर वेख वखाईआ। अग्गे लँघण वासते प्या घोल, लड़ लड़ मरे लोकाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी वज्जण वाला ढोल, मृदंगा हरि जू हथ्थ उठाईआ। साची वस्त ना दिसे किसे कोल, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पार कराईआ। भीड़ी गली लँघणा पार, पारब्रह्म जणाईआ। कूड़ी क्रिया छड्डो हँकार, विकार कम्म किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द करो वणजार, सौदा इक्को हट्ट खुल्हाईआ। नेत्र नैण करो दीदार, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। अमृत रस पीओ ठंडा ठार, निझर झिरना सीर चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भीड़ी गली मूँह दे भार सुटाईआ। भीड़ी गली जाए ढठ्ठ, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता मारे सट्ट, चोट इक्को इक जणाईआ। दूई द्वैती मेट फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाईआ। सच दवारा खोल्ह हट्ट, निरगुण आपणा राह जणाईआ। पुरख अकाल करो जस, जस वेद पुराण सिफ्त सालाहीआ। प्रभ मिलण दी रखो आस, आसा अवर ना कोए वड्याईआ। दीनन हो हो बणो दास, दासी दास सेव कमाईआ। हरि सतिगुर
७६५ ७६५
१३ १३
वसे पास, घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भीड़ी गली रही कूक, कूक कूक सुणाया। मेरी अन्तिम चुके चूक, चारों कुण्ट दए दुहाया। कूड़ी मर्ज़ी प्रभ देवे फूक, नाम मवाता इक्को लाया। मेरी हथ्थीं पुट्ट दए चूथ, खुल्ह मुख मुख कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्लड़ा, निहकलंक बली बलवान। करे खेल इक इकल्लड़ा, सचखण्ड निवासी नौजवान। सच संदेस एका घलड़ा, गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए ज्ञान। कलिजुग अन्तिम भारी करे पल्लड़ा, प्रगट हो विच जहान। सच दवारे आपे खलड़ा, सति सतिवादी वड मेहरवान। जोती शब्द धार रलड़ा, देवणहारा धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहान। दो जहानां हरि जू वाली, आपणी खेल कराईआ। भीड़ी गली करे ख़ाली, ख़ालक ख़लक दए जणाईआ। इक्को लेखा हक़ हलाली, हकीकत आपणी दए दृढ़ाईआ। धुरदरगाही सच्चा वाली, वाली दो जहानां फेरा पाईआ। जन भगतां करे आप रखवाली, रक्षक इक्को सच्चा माहीआ। जो दर आए स्वाली, स्वाल सब दे हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, सतिजुग सच सच दृढ़ाइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्हे हरना फरना, फुरना सब दा बंद वखाइंदा। लख चुरासी

भाणा जरना, भाणे विच आप समाइंदा। भीड़ी गली गुरमुख कदे ना वड़ना, औझड़ राह कोए ना पाइंदा। जिस मिले प्रभ साची सरना, सो समरथ दया कमाइंदा। सोहँ अक्खर इक्को पढ़ना, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़ना, नाम डण्डा हथ्थ फड़ाइंदा। महल अटल आपे वड़ना, मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहइंदा। खुल्हा वेहड़ा सतिगुर करना, भीड़ा राह ना कोए जणाइंदा। लेखा चुकाए मरना डरना, जन्म जन्म ना कोए भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक वखाइंदा। साचा घर सच्ची धर्मसाल, घर घर विच रिहा जणाईआ। भीड़ा मार्ग चुके जगत कंगाल, सुल्तान इक्को रंग रंगाईआ। सति सति दा धर्म निशान, सति सतिवादी दए झुलाईआ। नज़री आए इक्को काहन, एका बंसरी नाम वजाईआ। नज़री आए इक अमाम, धुर संदेसा रिहा जणाईआ। नज़री आए इक भगवान, निहकलंक नाउँ धराईआ। नज़री आए गुण निधान, कलि कल्की फेरा पाईआ। नज़री आए इक मकान, सम्बल रूप वखाईआ। नज़री आए इक तूफ़ान, नौ खण्ड पृथ्मी दए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। साचा राह सोहणा सच्चा, सो सतिगुर आप जणाइंदा। गुरमुख कोए ना रहे कच्चा, काया माटी रंग रंगाइंदा। बिनां वेख्यां कोई ना कहे अच्छा, झूठा राह ना कोए जणाइंदा। निरगुण हो के लूं लूं रचा, सरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। खेले खेल पुरख समरथा, समरथ आपणी धार जणाइंदा। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्था, कलिजुग कूड़ी क्रिया झोली आप भराइंदा। सतिजुग उठाए नंन्हा बच्चा, बाली बुध आप जणाइंदा। पिछली गली निक्की अग्गे राह वखावे वड्डा, वड वड्डा दया कमाइंदा। पार कराए बुढ्ढा नढ्ढा, जो हरि सरनाई आइंदा। शब्द सरूपी देवे सद्दा, धुन अनादी नाद अल्हाइंदा। पिछली पार करो हद्दा, अग्गे मार्ग इक वखाइंदा। श्री भगवान प्रेम प्यार अन्दर बज्झा, साची डोरी तन्द वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम आवे भज्जा, भाजड़ घर घर आपे पाइंदा। सन्त सुहेले रखे लज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जगत नगारा इक्को वज्जा, वाहद आपणा हुक्म सुणाइंदा। पीर पैगम्बर जिस नूं कहिन्दे रहे नूर इलाही रब्बा, सो रबी उलसानी जमाद उलसानी आपणी कार कराइंदा। सच सिँघासण बहि बहि सजा, तख्त निवासी तख्त आसण लाइंदा। दो जहान कराए इक्को हज्जा, हुजरा हक़ हक़ प्रगटाइंदा। ना घड़या ना भज्जा, घड़न भंनण खेल वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम भीड़ी गली मेटे डूँघी खड्डा, खण्डर लोकमात बणाइंदा। सतिजुग वंडे साची वंडा, हिस्सा इक्को जिहा पाइंदा। चार वरन बणाए आपणी यद्दा, विश्व राह वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्को वड्डा, जिस घर बहि बहि सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की गली पार कराइंदा। निक्की गली पार लँघ, गुरमुख गुर जिहा जणाईआ। अन्तर वेख हरि पलँघ, सच सिँघासण रिहा

सुहाईआ। दिवस रैण वज्जे मृदंग, मृदंगा इक्को इक जणाईआ। अमृत आत्म इक अनन्द, झिरना निझर इक झिराईआ। इक्को ढोला इक्को छन्द, इक्को गीत गोबिन्द अलाईआ। इक्को सखी मेला परमानंद, कन्त कन्तूहल सेज सुहाईआ। भीड़ी गली मुके पन्ध, खुल्हा वेहड़ा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग वखाए खुल्हा वेहड़ा कूड़ी क्रिया चुके झेड़ा, झगड़ा मात ना कोए लड़ाईआ। खुल्हा खेड़ा दए वखा, दूई द्वैती विख धवाईआ। पिछला लेखा दए मुक्का, मुक्के लेखा सर्ब लोकाईआ। वक्त नेड़े ढुका रिहा जणा, ढोला इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा। कलि कल्की लै अवतारा, वेस अवेस धराइंदा। वेखणहारा साकत निन्दक दुष्ट दुराचारा, विभचारा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। निरगुण आपणा फेरा पाया, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा त्रैगुण माया, त्रै त्रै डेरा रिहा ढाहीआ। मिटावणहारा कूड़ी छाया, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। रहबर बणे इक खुदाया, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। मेहरवान मिहबान महिबूब इक्को नज़री आया, सबूत आपणा दए जणाईआ। सच अरूज इक सुहाया, उल्फ़त करे जगत लोकाईआ। चारे कूट फेरा पाया, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जूठ झूठ डेरा ढाहया, माया ममता मोह चुकाईआ। सच सुच्च इक वरताया, सतिजुग साचा राह दरसाईआ। सतिगुर शब्द इक पढ़ाया, इक्को कलमा करे शनवाईआ। इष्ट इक्को नज़री आया, दृष्ट सब दी दए खुल्हाईआ। वशिष्ट सरगुण सेवा लाया, राम सरगुण तिलक लगाईआ। निरगुण राम मुख छुपाया, नूर ज़हूर ना कोए दरसाईआ। पंज तत्त काया चोले बंद कराया, दशरथ बेटा भेव ना आईआ। काया माटी चम्म हाटी खेल कराया, बाज़ीगर स्वांगी नाट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खुल्हा खेड़ा दए दसाईआ। खुल्हा दिसे अन्तिम खेड़ा, हरि ख़तरा सर्ब मिटाइंदा। बीस बीसे चुके झेड़ा, झगड़ा अवर ना कोए वधाइंदा। नौ खण्ड पृथमी अन्दर सन्त भगत भगवन्त निक्का जिहा रहि जाए टब्बरा, दूजा कोई रहिण ना पाइंदा। कलिजुग जीव मेट मिटाए आपे बेसबरा, साबत मुरीद मुर्शद मेल मिलाइंदा। दरोही दरोही करन कबरां, कब्रिस्तान सर्ब कुरलाइंदा। मढ़ी मसाण कोई ना देवे सधरां, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। लेखा चुक्के गराँ नगराँ, खेड़ा रूप ना कोए वटाइंदा। प्रभ भीड़ी गली देवणहारा रगढ़ा, भार आपणा उपर पाइंदा। अन्तिम सब तों हो जाए वक्खरा, वक्खरी धार चलाइंदा। जिस नूं धन्ने पाया पत्थरां, सिल पाहन पाथर आप तराइंदा। जिस दा गोबिन्द वछाया सत्थरा, सो सत्थर यार हंढाइंदा। अन्तिम कलिजुग वेख अशारीआ कसरा, इक्को

नुक्ता मगर लगाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा पछड़ा, पछोताप सर्ब मिटाइंदा। राए धर्म हुक्म देवे करड़ा, चित्रगुप्त नाल मिलाइंदा। राणी मौत वेखे नख़रा, नैण कज्जल धार पवाइंदा। कोई रहिण ना देवे मकरा, फ़रेब सब दे फोल फुलाइंदा। हरि का शब्द फिरे लगढ़ा, दो जहानां फेरी पाइंदा। गुरमुख विरला बचे तकड़ा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहि जाए बकड़ा हकड़ा, हरि का भेव कोए ना आइंदा। लख चुरासी उम्मत रसूलां भेंट चढ़ाए बक्करा, छुरी करद नाम चलाइंदा। कूड़ी क्रिया करे झटका, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। आदि जुगादि अग्गे कोई ना अटका, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। गोबिन्द सीस चीरा बन्ने ना कोई पटका, जगदीश इक्को ताज सुहाइंदा। करे खेल बाज़ीगर नट दा, नटुआ आपणा स्वांग वरताइंदा। आपणी करनीयों कदे ना हट दा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण दवारे बहि बहि नाम रटदा, निउँ निउँ ध्यान सर्ब लगाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल पुरख समरथ दा, दूजा संग ना कोए निभाइंदा। गुर गोबिन्द मार्ग दस्सदा, दहि दिशा आप समझाइंदा। कलिजुग लेखा चुक्के कूड़े रथ दा, रथ रथवाही वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्हा वेहड़ा आप कराइंदा। खुल्हा वेहड़ा होवे धरत, धवल मिले वड्याईआ। निरगुण साहिब आया परत, प्रतिनिध इक अख्वाईआ। चार जुग दे वरके वेखे परत, खाणी बाणी फोल फुलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सति सतिवादी दस्स के गए सड़क, कौण बणया पांधी राहीआ। कवण अद्धविचकार रिहा अटक, पार किनारा नज़र कोए ना आईआ। कवण सुत्ता हो बेखटक, खटका सिर ना कोए जणाईआ। श्री भगवान वेखण आए नधड़क, निरवैर फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ी क्रिया कढ्ढे अड़क, रोड़ा सके ना कोए अटकाईआ। पुरख अकाल पिछला कढ्ढे फ़र्क, जो गोबिन्द गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक कराए आपणी चढ़त, धड़त मंगे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरवैर खेल खलाईआ। निरवैर खेल करे आलमीन, उल्मा आप जणाइंदा। दो जहानां कर तलकीन, तुलबा तालब आप समझाइंदा। साचा देवणहारा यकीन, अल्फ़ आपणा नाम वखाइंदा। वखावणहारा सच्चा सीन, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। लेखा जाणे शाह मबीन, मुहलत आपणे हथ्थ रखाइंदा। पीर पैगम्बर करनहारा अधीन, अदालत इक्को इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम ख़लक, ख़ालक आप जणाईआ। वेखणहारा आपणी ख़लक, पर्दा पर्दा दए चुकाईआ। पावे सार चौदां तबक, तरां तरां जणाईआ। देवणहारा इक्को सबक, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। नाम नाद सुणाए कड़क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली रहिण ना पाईआ। भीड़ी गली मुकावेगा। मीरी पीरी खेल

खलावेगा। चोटी चढ़ अख़ीरी, जोत जगावेगा। निरगुण नूर बेनज़ीरी, ज़हूर दृढ़ावेगा। तिक्खी रख नाम शमशीरी, शमा गुल करावेगा। लेखा जाण शाह हकीरी, हकीकत इक दृढ़ावेगा। कूड़ी क्रिया मेट दिलगीरी, दिलबर सच्चा यार मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक वसावेगा। साचा मन्दिर वसेगा। पुरख अकाल हस्सेगा। भगतां मार्ग दस्सेगा। निमाणा हो के अग्गे ढठ्ठेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, खुल्हे वेहड़े वसेगा। खुल्हे वेहड़े वड़ेगा। साचे पौड़े चढ़ेगा। सन्त सुहेले फड़ेगा। इक्को अक्खर पढ़ेगा। ना जन्मे ना मरेगा। आपणी करनी करेगा। निरभउ भय रख ना कोई डरेगा। सच महल्ले आपे खड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल उच्च मनार इक्को नूर रलेगा। इक्को नूर रलाएगा। मूसे कोहतूर चेता कराएगा। ईसे गल विच सूली वखाएगा। मुहम्मद तोबा तोब सुणाएगा। चार यारी पन्ध मुकाएगा। अल्ला राणी नैण शरमाएगा। मुख घूँगट आपे लाहेगा। पड़दा नक़ाब ना कोए पाएगा। हक़ जनाब फेरा पाएगा। चौदां तबक आप उठाएगा। साचा सबक इक पढ़ाएगा। कायनात वेख वखाएगा। शरअ शरीअत इक जणाएगा । नौबत नाम पैग़ाम अल्हाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्हा वेहड़ा इक बणाएगा। खुल्हा वेहड़ा सच बणावांगा। लोकमात खेल करावांगा। भगती रूप भगत दृढ़ावांगा। चारे कूट सच वरतावांगा। हिरदे अन्दर रच रच, आपणा नाम जपावांगा। मूर्खां कोलों बच बच, आपणा मुख छुपावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महल अटल इक रुशनावांगा। महल अटल जोती जगेगी। गुरमुख सुरती सोई मघेगी। सतिगुर सरनाई सच्ची लगेगी। आपणा पड़दा आपे कज्जेगी। सच दवारे बहि बहि सजेगी। दर्शन कर कर दर ते रज्जेगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सरबग्गे दी। सूरा सरबग्ग अख्वाएगा। कलिजुग जुग अन्त तरसाएगा। सतिजुग साचा राह चलाएगा। सन्त सुहेले चुग आपणा मेल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्हा वेहड़ा आप बणाएगा। खुल्हा वेहड़ा बिन चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। सूरज चन्द ना कोए उज्यार, तेल बाती दीपक ना कोए वखाइंदा। साक सज्जण सैण ना कोए यार, दोस्त दस्त ना कोए मिलाइंदा। मात पित भाई भैण कोए ना कन्त नार, पिता पूत ना गोद उठाइंदा। वणजारा हट्ट ना कोए बाज़ार, होका दे ना कोए जगाइंदा। पीर पैगम्बर ना कोए अवतार, सन्त संग ना कोए रखाइंदा। पंज तत्त ना कोए आकार, त्रैगुण वंड ना कोए वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए पसार, राग नाद ना कोए सुणाइंदा। खाणी बाणी ना कोए जैकार, शरअ शरीअत ना कोए रखाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, देस सुहञ्जणा इक वड्याइंदा। सतिजुग

साचा खोल्ह कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। भगत भगवन्त अन्दर दए वाड़, फड़ बांहों आप बहाइंदा। तत्ती वा ना लागे हाढ़, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, सरगुण नाता मोह चुकाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, शाही काग़ज़ वंड ना कोए वंडाइंदा। करे खेल आप करतार, कुदरत आपणा राह चलाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, बेपरवाह खेल कराइंदा। सिफ्त सालाही सांझा यार, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। सच दवारा खोल्ह किवाड़, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। तख्त निवासी नौजवान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नाउँ रख श्री भगवान, भवगन आपणा दर वखाइंदा। सति सतिवाद झुलाए निशान, निशाना इक्को नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल महान, खेल आपणी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पैंडा कट, अग्गे वखाए साचा हट्ट, सतिगुर आपणा दर जणाइंदा। साचा दर वेखो भाई, भाई भाईआं नाल मिलाईआ। सुरती शब्द करो कुड़माई, नाता इक्को जोड़ जुड़ाईआ। घर विच धी घर जवाई, घर विच सौहरे पेईए दए वखाईआ। घर विच पिता घर विच माई, घर घर विच रंग रंगाईआ। घर विच लागी बैठे नाई, डूम आपणा मुख छुपाईआ। घर विच नाद घर शनवाई, घर छहबर नाम लगाईआ। घर मुबारक घर वधाई, घर घर विच रंग वखाईआ। घर विच हार श्रृंगार सोभा पाई, घर कज्जल धार जणाईआ। घर कन्त कन्तूल लैणा मनाई, निवण सो अक्खर ध्यान लगाईआ। घर नारी नर नरायण लए हंढाई, गुरमुख आपणे अंग लगाईआ। आत्म परमात्म सेजा चढ़े चाईं चाईं, चाउँ घनेरा इक वखाईआ। बिन हथ्थां बांहवां गलवकड़ी लए पाई, तत्तव तत्त ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां खुल्हा वेहड़ा इक वखाईआ। खुल्हा वेहड़ा इक सुहञ्जणा, सतिगुर सच्चा आप जणाइंदा। जोत जगे इक निरँजणा, नूरो नूर डगमगाइंदा। होए सहाई दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर पार कराइंदा। गुरमुख कर लओ सतिगुर चरण मजना, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। खुल्हे वेहड़े जिस ने अन्तिम सजदा, तिस इक्को राह जणाइंदा। निहकलंक डंका वज्जणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। अन्तिम हरि ने पड़दा कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शेर हो के बुक्कणा, भबक इक्को इक लगाइंदा। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर सुक्खदे गए सुखणा, सो साहिब फेरा पाइंदा। उज्जल करे कलिजुग मुखणा, मुफ्त आपणा नाम वंडाइंदा। एस वेलिउँ किसे ना उकणा, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। बीस बीसे पैंडा मुकणा, कलिजुग आपणा मुख छुपाइंदा। सतिजुग सच्चा इक्को उठणा, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। जन भगतां गोदी चुक्कणा, चुक्क चुक्क खुशी मनाइंदा। सच्चा मार्ग जिस जन पुछणा, ज़ाहर ज़हूर आप समझाइंदा। निक्की भीड़ी गली

७७०
१३

पन्ध मुक्कणा, महल अटल इक वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खुल्हा घर इक वखाइंदा। खुल्हा घर खोल्ह दरवाजा, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। खेल कराए ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे रिहा मिलाईआ। शाह सुल्तान किसे सीस ना रहे ताजा, जगदीश हुक्म जणाईआ। बीस बीसे रचया काजा, करता आपणा वेस वटाईआ। निरगुण निरवैर आया भाजा, निराकार फेरा पाईआ। शाहो भूप बण बण राजा, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। सम्बल नगर इक्को साजा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। गुर गोबिन्द मार आवाज़ा, शब्दी शब्द जगाईआ। मेल मिल्या देस माझा, माझा निरगुण सरगुण रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल कराईआ। माझा देस पए माझा, हरि मजलस नाम लगाइंदा। दवाबे मारे इक्को दाबा, दो जहानां आप डराइंदा। वेखणहारा मक्का काअबा, काबल आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कर वखाइंदा। आपणी करनी हरि करावेगा। आत्म परमात्म ढोला गावेगा। शब्द विचोला इक बणावेगा। कलिजुग होला अन्त खलावेगा। रौला घर घर अन्दर पावेगा। मौला नज़र किसे ना आवेगा। गुर गोबिन्द कीता कौल, तोड़ निभावेगा। सम्बल नगर ढोल वजावेगा। आप बैठ अडोल, सृष्ट डुलावेगा। लख चुरासी कर कर घोल, डूँगघे खाते पावेगा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए वरोल, नाम मधाणा इक रखावेगा। भगत भगवन्त रखे कोल, कमलापाती मेल मिलावेगा। गुर शब्दी बदले चोल, चोला गोबिन्द इक हंढावेगा। भेव ना जाणे पंडत पांधा रौल, लेखा लिख ना कोए समझावेगा। सम्मत बीस तक्क सारे करदे रहिण मख़ौल, मुख नज़र किसे ना आवेगा। लख चुरासी मारे अन्त अनभोल, भुल्लयां फेर ना कोए बचावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक अख्वावेगा। कलि कल्की फेरा पाएगा। कलि कल्की हरि हरि आएगा। दर दर अलख जगाएगा। घर घर आप उठाएगा। पढ़ पढ़ नाम सुणाएगा। चढ़ चढ़ कुण्डा लाहेगा। लड़ लड़ सारे ढाहेगा। मर मर फेर जवाएगा। गुरमुख गोद बहाएगा। गोबिन्द अंग लगाएगा। चार वरन समझाएगा। इक्को राहे पाएगा। पुरख अकाल मनाएगा। दूजा इष्ट कोई रहिण ना पाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ लागे पाए, दोए जोड़ वास्ता पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्को राह वखाएगा। इक्को राह चलेगा। सच सिँघासण हरि जू मल्लेगा। नाम संदेसा इक्को घल्लेगा। जो अड़या अन्तिम डंनेगा। जो घड़या भगवन भंनेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची चाल आपे चलेगा। साची चाल चले निराली, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर जोत अकाली, अक्ल

कल फेरा पाईआ। आपणे हथ्थ रखे ख़ाली, ख़ालक आपणा हुक्म वड्याईआ। लख चुरासी बूटा वेखे माली, मालक आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों मंगे दलाली, जुग चौकड़ी गया समझाईआ। हकीकत वेखो हक़ हलाली, हुक्म हाकम रिहा जणाईआ। चारों कुण्ट होए सर्ब हरामी, शरअ शैतान करे लड़ाईआ। वेखणहारा अन्तरजामी, घट घट फोल फोलाईआ। नानक निरगुण गुर अर्जण तेरी भुल्ली बाणी, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। राम दास सरोवर ठंडा जल अमृत पीए ना कोए पाणी, अग्नी तत्त रही जलाईआ। अमरदास दे के गया सच निशानी, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। गुर अंगद गुर नानक जोत जगाई इक महानी, जीवदयां जगत जुगत जणाईआ। कलिजुग जीव करो ध्यानी, ध्यान ध्यान रिहा लगाईआ। वरन बरन ज़ात पात लेखा चुके चार खाणी, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सारे लभ्भो शब्द हाणी, अन्तर आत्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक खुल्हाईआ। सच दवारा हरि जू खोल्हे, खोल्ह खोल्ह समझाइंदा। शब्द अगम्मी हो के बोले, होका हक़ जणाइंदा। लख चुरासी अन्तिम राए धर्म दे पैणी डोले, लाड़ी मौत नाल प्रनाइंदा। धर्म राए लेखा गुप्त सब दा फोले, चित्रगुप्त नाल मिलाइंदा। लख चुरासी जीव बाहरों निग्गर अन्दरों पोले, पोल सब दा अन्त खुल्हाइंदा। कूड़ी क्रिया पाउदे रहे रौले, रमला यमला जट्ट नज़र किसे ना आइंदा। जिस नूं कहिन्दे पड़दे ओहले, सो पड़दा पाड़ वखाइंदा। जिस जणाए सोहँ बोले, अनबोलत राग अल्हाइंदा। सो अनडिठड़ी धार मौले, मौला आपणा खेल कराइंदा। कलिजुग बदल देवे हौले हौले, हौला भार आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेहड़ा इक बणाइंदा। साचा वेहड़ा बणे मात, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। चार वरन बणे इक जमात, इक्को अक्खर दए समझाईआ। आत्म परमात्म गावण गाथ, सोहँ शब्द नाम वड्याईआ। नाता तुटे ज़ात पात, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। मन वासना मेटे कमज़ात, मतिवाली मति ना कोए चतुराईआ। बुद्धी करे बिबेक आप, आप आपणी दया कमाईआ। बरन अठारां बणाए साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। लेखा जाणे रूह पाक, पुनीत करे कुड़माईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। लेखा चुके पिछली गाथ, अग्गे इक्को राग सुणाईआ। तेई अवतार कहिण असीं तेरी जमात, भगत अठारां इक्को गंढु पवाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण मिली नजात, नछावर आपणा आप कराईआ। चार यारी कहे डिगे डूँघे खात, फेर सके ना कोए उठाईआ। अल्ला राणी रही झाक, मीआं नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं सुंञीं खाट, विस्तर हक़ ना कोए विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेहड़ा इक बणाईआ। साचा वेहड़ा सोभावन्त,

सति सतिगुर आप बणाइंदा। नारी मिले निरगुण कन्त, आपणी सेज हंढाइंदा। चोली चाढ़े रंग बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाइंदा। नज़री आए इक अखण्डत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप वड्याइंदा। आपणा घर वेख वड्डा, हरि वड्डी करे वड्याईआ। सुत शब्द इक्को नढ्ढा, छोटा बाला आसण लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाई यद्दा, यद्द पुश्त होए सहाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे बद्धा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। गुर अवतार दे दे गए सद्दा, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। पीर पैगम्बर कहिन्दे रहिंदा पार हद्दा, हदूद नज़र किसे ना आईआ। भगत कहिण भगवान प्रेम बद्धा, नित नवित्त वेस वटाईआ। जिउँ धन्ने पत्थरों कढ्ढा, तिउँ गुरमुखां अग्गे आपणा दरस दिखाईआ। बिन नगारिउँ आपे वज्जा, आपणा नाद सुणाईआ। रूप रंग रेख ना कोई कद्दा, उच्चा लम्मा ना कोए जणाईआ। सचखण्ड दवारे सच सिंघासण बहि के सजा, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भीड़ी गली पड़दा कज्जा, खुल्ह्हा वेहड़ा दए वखाईआ। खुल्ह्हा वेहड़ा वेखो दीन दयाल, दयानिध आप वखाइंदा। सति धर्म दी सच धर्मसाल, धर्म दुआर इक प्रगटाइंदा। निरगुण सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। साचा मन्दिर कदे ना होए ज़वाल, ढेरी ढाह ख़ाक ना कोए मिलाइंदा। उच्चा वेहड़ा बेमिसाल, मिसल लिख ना कोए समझाइंदा। छोटी कुली विच्चों निकाल, मन्दिर आपणे आप वसाइंदा। कलिजुग जीव साचे बण जाओ लाल, हरि लालन आप समझाइंदा। एथे ओथे बण रखवाल, रक्षक आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भीड़ी गली मुख भवाइंदा। भीड़ी गली मुख देवे मोड़, मुहब्बत इक्को इक दरसाईआ। सतिजुग नाता देवे जोड़, जोड़ी आप जुड़ाईआ। शाहसवारा वेखे चढ़ के घोड़, अस्व पाखर ज़ीन तंग कसाईआ। लख चुरासी वेखे रीठा मिट्ठा कौड़, घर घर अन्दर कुण्डा लाहीआ। भेव चुकाए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चा टिल्ला पर्बत इक सुहाईआ। ज़ाहरा पीर जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे सर्ब लोकाईआ। निरगुण वेखे करके ग़ौर, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। करे बिध अवर की और, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग जीव अग्नी सड़दे क्यों सिर ते झुलदा चौर, सीस ताज कवण टिकाईआ। कूड़ी क्रिया पाउदे शोर, शौहर नज़र किसे ना आईआ। मन हंगता वखाउदे ज़ोर, ज़ेर ज़बर नज़र किसे ना आईआ। जिस दा आदि जुगादि मंत्र फोर, फुरना सब दा बंद कराईआ। जिउँ भावे तिव लए तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। कल्मयों काफ़र हो गए चोर, हरि का नाम ठग्गी ना कोए कराईआ। जगत वासना होई हरामख़ोर, खोजी बणया कोई ना पांधी राहीआ। अन्तिम कलिजुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां प्रभ सच्चे दी पै गई लोड़, सारे बैठे ध्यान लगाईआ।

श्री भगवान आए दौड़, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सस्से उपर लाए होड़, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म ब्रह्म हँ चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा रहिण ना पाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोर, चन्द चांदना इक रुशनाईआ। कँवल प्रीती नाता जोड़, चरण दए सरनाईआ। आपणे हथ्थ रखे डोर, लख चुरासी गुडीआ पतंग रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निक्की गली करे पार, वड्डा खोल्हे आप दुआर, जिस दरबार वसे सच्चा माहीआ।

सच्चा माही जिस जन पाउणा, पवण पाणी जणाइंदा। सोहँ ढोला इक्को गाउणा, विछड़े मेल मिलाइंदा। निहकर्मी निहकर्म बणाउणा, कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। गुरमुख दे बांह सरहाणे सौणा, तेरी सेवा सतिगुर आप कमाइंदा। आत्म परमात्म बीज इक्को बोणा, पत्त डाली फल फुल आप महकाइंदा। सृष्ट सबाई अन्तिम पवे रोणा, नेत्र नीर सर्ब वखाइंदा। कलिजुग काल फड़ के कोहणा, कोह कोह आपणे चरणां हेठ दबाइंदा । आपणा बल किसे ना मिले टोहणा, भाणा सब दे सिर ते छाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खुल्हावणहारा साचा दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा बेमुहताजा मुहब्बत आपणी विच खुल्हाइंदा।

❇ २६ माघ २०१६ बिक्रमी चरण सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ❇

सतिगुर शब्द मेला राम, राम रमईया मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द घनईया शाम, काहना बंसरी इक वजाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा जाम, अमृत रस इक चखाईआ। सतिगुर शब्द पूरन करे काम पूरी इच्छया मात कराईआ। सतिगुर शब्द सच दए पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द आत्म सच्चा देवे सच आराम, सच सिँघासण इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द पकड़ाए दाम, दामनगीर इक हो जाईआ। सतिगुर शब्द साचा रखे इक्को आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द इक वड्याईआ। सतिगुर शब्द सूरबीर, वड वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द निराला तीर, अणयाला आप चलाईआ। सतिगुर शब्द दूई द्वैती हउमें हंगता माया ममता देवे चीर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सतिगुर शब्द हउमें हंगता कढ्ढे पीड़, दु:ख दर्द दए गंवाईआ। सतिगुर शब्द आत्म मारे सच ज़ंजीर, प्रेम गंढुण इक्को पाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आख़र सतिगुर मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द गा गा थक्के पीर फ़कीर, पैगम्बर ढोला इक्को गाईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग घत्ते वहीर, लोकमात वेस

वटाईआ। सतिगुर शब्द बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द सच सतिगुर तस्वीर, नूर नूराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक समझाईआ। सतिगुर शब्द नाम प्याला, मधुर रस इक प्याइंदा। सतिगुर शब्द दीन दयाला, दीनन आपणे गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द सदा रखवाला, एथे ओथे दो जहान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रितपाला, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। सतिगुर शब्द मार्ग दस्से इक सुखाला, औझड़ राह पन्ध मुकाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे शाह कंगाला, राउ रंक राज राजान एका दर बहाइंदा। सतिगुर शब्द देवे सच फ़रमाना, धुर दी धार आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा नाम, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। साचा नाम सतिगुर प्यार, प्यार प्यार विच मिलाईआ। सतिगुर शब्द नाद धुन जैकार, सति सति शनवाईआ। सतिगुर शब्द काग़ज़ कलम ना लिखणहार, लेखा लिख लिख सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर शब्द दो जहानां वसे बाहर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन मण्डल चरणां विच रखाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को नाम आदि जुगादि वरताईआ। सतिगुर शब्द सदा बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द साचा कन्त, गुरमुख सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मणीआ मंत, मन वासना दए गंवाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत दए जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा चुकाए हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े भुक्ख नंगत, सच भण्डार झोली पाईआ। सतिगुर शब्द बोध अगाधा पंडत, निष्अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सतिगुर शब्द नाम निधान, निष्अक्खर धार चलाइंदा। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिगुर शब्द ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सच निशान, धर्म निशाना इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए आत्म राम, परमात्म आपणी गंढु पवाइंदा। सतिगुर शब्द वखाए सच भूमका अस्थान, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि नैण शरमाइंदा। सतिगुर शब्द जिस सतिगुर देवे आण सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सो सन्त सो भगत सो गुरमुख सो हरिजन चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ आपणे धंदे लाइंदा। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार शैतान, शहिनशाह आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम जिस जणाइंदा।

साचा नाम अमृत रस, आत्म आत्म आप जणाईआ। साचा नाम हिरदे जाए वस, हरि हरि जी लए मिलाईआ। साचा नाम पंच विकारा पाए नथ्थ, डोरी इक्को तन्द उठाईआ। साचा नाम वसे घट घट, गुरमुख विरला खोजण जाईआ। साचा नाम वजाए नाद अनहद अगम्मी सट्ट, राग धुन ताल तलवाड़ा आपणा राह जणाईआ। साचा नाउँ निरगुण जोत करे परकास, प्रगट आपणा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम, अमृत मध प्याए साचा जाम, रस इक्को इक जणाईआ। साचा नाम सतिगुर मीता, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। साचा नाम सिफ्त सालाही शास्त्र सिमरत वेद पुराणा अठारां ध्याए गीता, गीता ज्ञान गुण वड्याईआ। साचा नाम सदा अनडीठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। साचा नाम आदि जुगादि ना मरया ना जीता, जीवण मरन वंड ना कोए वंडाईआ। साचा नाम सदा अतीता, त्रैगुण बन्धन दए कटाईआ। साचा नाम सदा रस मीठा, रस फीका ना कोए जणाईआ। साचा नाम गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात लिख लिख देंदे रहे चिट्ठा, धुर संदेस इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक जणाईआ। साचा नाम सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण आपे हो, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म ढोआ देवे ढो, धुर दी वस्त धुरदरगाही झोली पाइंदा। गृह मन्दिर अन्दर करे सच प्रकाश लो, अज्ञान अन्धेरा अन्ध चुकाइंदा। सुरती संग सतिगुर नाम जाए छोह, बांकी छोहरी शहिनशाह इक्को रंग वखाइंदा। वसणहारा अन्ध घोर, मेटणहारा पंज चोर, मचावणहारा सच्चा शोर, अगम्म अथाह बेपरवाह अनादी नाद राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, नाता तोड़े तोर मोर, मेरा तेरा तेरा मेरा इक्को दर जणाइंदा। साचा नाम भगत भगवन्त, आदि जुगादि जणाईआ। साचा नाम सर्ब गुणवन्त, गुणवन्ता वड वड्याईआ। साचा नाम आत्म परमात्म मेल मिलावा सुरती शब्दी कन्त, कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, बसन बनवारी आपणा रंग वखाईआ। कलिजुग अन्त जो जन सोहँ जपे साचा मंत, मंत्र अन्तर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा दान, दाता दानी महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान इक्को एक एकँकार नज़री आईआ।

लोड़ बिनां पए लोहड़ा, गुरु गुरसिख दोवें लोड़ बिनां कुरलाईआ। लोड़ अन्दर मिले घोड़ा, गुर शब्दी घोड़ चढ़ाईआ। लोड़ अन्दर सस्से उपर लग्गा होड़ा, सो पुरख निरँजण निरगुण सरगुण धार जणाईआ। लोड़ अन्दर हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, पारब्रह्म वेस वटाईआ। लोड़ अन्दर गुरमुख गुर सतिगुर जुड़या जोड़ा, जोड़ी इक्को राम बणाईआ। गुरसिख मंगदयां गुर

भण्डार कदे ना होवे थोड़ा, देवणहार सहिज सुखदाईआ। दया अन्दर जन्म जन्म दी मिटाए औड़ा, कर्म कांड दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लोड़ सब दे विच रखाईआ।

❇ २६ माघ २०१६ बिक्रमी दलीप सिंघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ❇

सतिगुर शब्द चार वरन मीता, मित्र प्यारा सर्ब अख्वाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अतीता, त्रैभवण धनी आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द त्रैगुण ठंडा करे अंगीठा, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। सतिगुर शब्द जणाए सच प्रीता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सतिगुर शब्द इक्को घर वखाए हस्त कीटा, कीट हस्त इक्को दर बहाइंदा। सतिगुर शब्द भेव जाणे जीव जीअ का, गृह गृह आपणा आसण लाइंदा। सतिगुर शब्द वड नीकन नीका, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सदा सच, सच सुच्च वड्याईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए काया माटी कच्च, कंचन रूप वटाईआ। सतिगुर शब्द तत्तव तत्त बुझाए अंच, अग्नी पोह ना सके राईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां हिरदे अन्दर जाए रच, रोम रोम समाईआ। सतिगुर शब्द सच दवारे रिहा नच्च, आत्म अन्तर सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे आप जणाईआ। सतिगुर शब्द साचे मन्दिर, घर घर विच सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए डूँग्घे खण्डर, प्रकाश प्रकाश आप धराईआ। सतिगुर शब्द मेट मिटाए चांदना चन्द्र, रवि ससि माण गंवाईआ। सतिगुर शब्द मन वासना मारे बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सतिगुर शब्द भाग लगाए डूँग्घी कन्दर, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द सच्चा सज्जण, घर साचे मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द कराए मजन, दुरमति कूड़ी मैल धवाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए साचा हाजी हज्जण, काअबा इक्को इक वखाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां रखे लज्जण, लाजावन्त इक हो जाइंदा। सतिगुर शब्द साचा भजन, भव सागर पार कराइंदा। सतिगुर शब्द पड़दा पाए नंगण, ढाकण कू पत इक अख्वाइंदा। सतिगुर शब्द काया माटी बणाए कंचन, कंचन पारस नाल छुहाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश जोत निरँजण, जोती नूर डगमगाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक सुणाइंदा। सतिगुर शब्द अगम्मी नाद, सुर ताल ना कोए वड्याईआ। सतिगुर शब्द ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द सन्त सतिगुर साध, गुर गुर वेस वटाईआ। सतिगुर

शब्द लेखा बोध अगाध, खाणी बाणी वंड वंडाईआ। सतिगुर शब्द सदा विस्माद, बिस्मिल आपणा खेल चलाईआ। सतिगुर शब्द दो जहानां खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच धराईआ। सतिगुर शब्द मण्डल मण्डप पाए रास, पृथ्मी आकाश गोपी काहन नचाईआ। सतिगुर शब्द गुर अवतार बणाए शाख़, पीर पैगम्बर आपणा अंग बणाईआ। सतिगुर शब्द लख चुरासी करे वास, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी ना होए विनास, अबिनाशी आपणी धार वखाइंदा। सतिगुर शब्द सच संदेसा देवे ख़ाश, ख्वाहिश सब दी पूर कराइंदा। सतिगुर शब्द समाए पवण स्वास, उणंजा पवण सेवा लाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा लाए त्रिलोकी नाथ, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द विष्न ब्रह्मा शिव देवे साथ, साचा संग निभाइंदा । सतिगुर शब्द आदि जुगादी पूजा पाठ, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए तीर्थ ताट, सरोवर मठ आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द पार किनारा घाट, साचे पत्तण डेरा लाइंदा। सतिगुर शब्द जन्म जन्म दी मेटे वाट, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां अगम्मी दात, अलख अगोचर आप वरताइंदा। सतिगुर शब्द मेटे रैण अन्धेरी रात, चौदस चन्न इक चमकाइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म साची गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जीव जंत लख चुरासी करे घात, काल महाकाल आपणा हुक्म जणाइंदा। सतिगुर शब्द हो दयाल बणे दास, दासी दास बण बण सेव कमाइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना होए नरास, निराशा रूप ना कोए धराइंदा। सतिगुर शब्द बिन गुरमुखां कोई ना सके भाख, खोज्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। सतिगुर पूरा जिस जन खोल्हे अन्तर आख, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। तिस नज़री आए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। सो गुरमुख होए पारजात, परम पुरख मेल मिलाइंदा। मुरीद मुर्शद प्याए आब हयात, सद खुमारी इक जणाइंदा। हरिजन हरि हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक समझाइंदा। सतिगुर शब्द खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सतिगुर शब्द गुरसिख मेला बाप बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर गुरसिखां करे भेंटा, आपणी दया झोली पाईआ। सतिगुर शब्द काया पंज तत्त अन्दर लपेटा, नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी जाणे लेखा, लिख्या लेख भुल्ल ना जाईआ। सतिगुर शब्द मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द रहे हमेशा, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। सतिगुर शब्द सच नरेशा, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द सदा सद चलाए आपणा पेशा, पेशवा पेशतर आपणा हुक्म मनाईआ। सतिगुर शब्द सदा सद सद आदेशा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द देवणहार वड्याईआ। सतिगुर शब्द दाता दातार, दयावान

७७८
१३

अख्वाइंदा। सतिगुर शब्द बाल बिरध जवान, बुढ्ढे नढ्ढे करे इक प्यार, मात गर्भ वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द ईश जीव दस्से सच विहार, बिवहारी आपणी कार कमाइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मेला नार कन्त भतार, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। सतिगुर शब्द पारब्रह्म ब्रह्म मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। सतिगुर शब्द रागां नादां वसे बाहर, सारंग सरंगा भेव कोए ना पाइंदा। सतिगुर शब्द छत्ती राग कर ना सकण विचार, विचारयां विचार विच कदे ना आइंदा। सतिगुर शब्द शास्त्र सिमरत सिफ्त सालाही करन कार, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त समझाइंदा। सतिगुर शब्द सब तों वसे बाहर, पुस्तक आपणी ना कोए वखाइंदा। सतिगुर शब्द निष्अक्खर धार, अक्खर आपणी वंड वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो शब्द शब्द सार, सार गुरमुखां आपे पाइंदा। सतिगुर शब्द शब्द सार, सार किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द शब्द अगम्मी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द शब्द प्यार शब्द शब्द करे कुड़माईआ। सतिगुर शब्द शब्द धुनकार, धुनकार शब्द शनवाईआ। सतिगुर शब्द वसे धाम न्यार, धाम न्यार महल अटल अटल इक वड्याईआ। सतिगुर शब्द सच उज्यार, उज्यार नूर नूर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, आधार आधार इक्को आस जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा लेखे लाए तेई अवतार, अवतार अवतार आपणे हुक्म भवाईआ। सतिगुर शब्द भगत अठारां कर पसार, पसर पसारी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द ईसा मूसा मुहम्मद खोल कवाड़ कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द नानक गोबिन्द दए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाणी बाण जणाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि धुरदरगाही कलाम, कातब कोई लिख ना सके राईआ। सतिगुर शब्द सच अमाम, आमद आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग चौकड़ी बदल देवे नज़ाम, नौबत आपणा डंका नाम वजाईआ। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तिम जन भगतां बणे गुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले विरले पाण, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। सो सतिगुर गुर शब्द ग़रीब निमाणयां देवे आण, निरगुण सरगुण झोली भराईआ। जींवदयां जग करे कल्याण, मरयां दुःख ना लागे राईआ। लेखा चुक्के जगत मसाण, साढे तिन्न हथ्थ भूमी वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर गुरमुख गोदी चुक्के आण, वेले अन्त होए सहाईआ। सतिगुर शब्द सोहँ ढोला जो जन गाण, गावत गा गा खुशी मनाईआ। घर भगत मिले भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। आत्म परमात्म सिदक सबूरी सच देवे ईमान, अमानत आपणा नाम झोली पाईआ। सति सति सति वखाए निशान, निशाना इक्को इक झुलाईआ। जो जन गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो नाम सतिगुर अनडिठड़ा झोली पाईआ।

मन आत्मा लाओ चरण, सच सच दृढ़ाइंदा। नेत्र खुल्हे हरन फरन, हरि आपणा राह जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख पौड़े चढ़न, इशारे नाल चढ़ाइंदा। आपणे घर विच आपे वड़न, राह विच ना कोए अटकाइंदा। साची तरनी लोकमात तरन, तारनहारा पार कराइंदा। निवण सो अक्खर इक्को पढ़न, हंगता वंड ना कोए वंडाइंदा। सतिगुर नाल सनमुख हो के लड़न, क्यों साडी वस्त साडी झोली क्यों नहीं पाइंदा। नाता छड्डुण वरन बरन, बरन आत्मक राह वखाइंदा। कूड़ी अग्नी कदे ना जलन, जलवा इक्को इक दरसाइंदा। लेखा चुके अवण गवण, त्रैभवन पार कराइंदा। गूढ़ी नींदे प्रभ गोदी सवण, सोयां फेर ना कोए उठाइंदा। प्रेम प्यार दी वगे ठंडी पवण, अमृत जल मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणा गुरसिख, फेर लेखा देवे लिख, नाम पाए साची भिख, अन्दर बाहर आए दिस, गुप्त ज़ाहर आपणा रंग वखाइंदा।

❉ २६ माघ २०१६ बिक्रमी ईशर सिँघ, प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❉

सतिगुर सदा दयावान, दीन दयाल अख्वाइंदा। सतिगुर सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। सतिगुर सदा देवे दान, दात वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा ईमान, सिदक सबूरी इक रखाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा निगाहवान, दो जहानां खोज खुजाइंदा। सतिगुर सच्चा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हुक्म मनाइंदा। सतिगुर सच्चा शाह सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। सतिगुर सच्चा दो जहानां काहन, लख चुरासी गोपी नाच नचाईआ। सतिगुर सच्चा सच्चा राम, रहमत आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर सच्चा सच्चा अमाम, महिफल इक्को इक जणाईआ। सतिगुर सच्चा देवणहारा सति पैग़ाम, जुग चौकड़ी करे पढ़ाईआ। सतिगुर सच्चा देवणहारा इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सतिगुर सच्चा झुलावणहारा सच निशान, नाम निशाना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर दाता वड वड्याईआ। सतिगुर सच्चा साहिब प्रमुख, परम पुरख वड वड्याइंदा। सतिगुर सच्चा आदि जुगादि जुग जुग मेटे दुःख, दुखियां दर्द वंडाइंदा। सतिगुर सच्चा जन्म कर्म दी मेटे भुक्ख, तृष्ना रोग मिटाइंदा। सतिगुर सच्चा लेखे लाए माणस मनुख, मानव आपणा राह वखाइंदा। सतिगुर सच्चा सन्त सुहले गोदी लए चुक्क, बांहों फड़ गले लगाइंदा। सतिगुर सच्चा गुरमुख सज्जण लए पुच्छ, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। सतिगुर सच्चा अन्दर वड़ के वेखे झुक, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा सदा सद रहे लुक, बिन भगतां नज़र किसे ना आइंदा।

सतिगुर सच्चा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सतिगुर सच्चा देवणहारा गेड़ा, गेड़ा आपणे हुक्म भवाईआ। सतिगुर सच्चा बन्न्हणहारा बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। सतिगुर सच्चा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर सच्चा लेखा चुकाए तेरा मेरा, मेरा तेरा इक्को रंग रंगाईआ। सतिगुर सच्चा साहिब वड शेर शेरा, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। सतिगुर सच्चा दो जहानां पाए घेरा, लोआँ पुरीआँ बंद कराईआ। सतिगुर सच्चा जुग चौकड़ी धरत धवल खुल्ला करे वेहड़ा, आप आपणा भेव खुल्लाईआ। सतिगुर सच्चा वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सतिगुर सच्चा लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। सतिगुर सच्चा सज्जण सुहेला, सगला संग इक रखाईआ। सतिगुर सच्चा आपणा जाणे आपे वेला, घड़ी पल थित वार वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर सच्चा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। सतिगुर सच्चा राज राजान, रय्यत आपणी वेख वखाइंदा। सतिगुर सच्चा हुक्मरान, असलीअत आपणा हुक्म मनाइंदा। सतिगुर सच्चा श्री भगवान, भगतां साचा मेल मिलाइंदा। सतिगुर सच्चा ब्रह्म ज्ञान, ज्ञान आपणा नाम दृढ़ाइंदा। सतिगुर सच्चा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा चरण ध्यान, चरण सरोवर इक वखाइंदा। सतिगुर सच्चा शाह भूप, भूपत वड वड्याईआ। सतिगुर सच्चा सति सरूप, पुरख अकाल नाउँ रखाईआ। सतिगुर सच्चा वसणहारा दहि दिशा चारे कूट, ज़िमी असमान सोभा पाईआ। सतिगुर सच्चा मेटणहारा जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। सतिगुर सच्चा लेखा जाणे रूह बुत कलबूत, काया काअबा दो दो आबा फोल फुलाईआ। सतिगुर सच्चा आपणा देवे सच सबूत, साख्यात नूर नूराना नज़री आईआ। सतिगुर सच्चा सच महिबूब, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सतिगुर सच्चा दस्से इक अरूज, अर्श कुर्श ना कोए वड्याईआ। सतिगुर सच्चा हद अन्दर ना होए महिदूद, बंद ताकी ना कोए कराईआ। सतिगुर सच्चा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा पारब्रह्म, प्रभ इक्को इक अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। सतिगुर सच्चा कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड रहाए बिन थम्म, बिन थम्मां गगन टिकाइंदा। सतिगुर सच्चा आदि जुगादि जुग चौकड़ बेड़ा देवे बन्न्ह, चप्पू आपणा नाम लगाइंदा। सतिगुर सच्चा लख चुरासी राग सुणाए कन्न, बोध अगाधा आप सुणाइंदा। सतिगुर सच्चा लेखा जाणे बुध मति मन, मन वासना खोज खुजाइंदा। सतिगुर सच्चा नाता जोड़े पंज तत्त काया तन, त्रैगुण बन्धन इक वखाइंदा। सतिगुर सच्चा जन भगतां होए जननी जन, गोद सुहञ्जणी आप उठाइंदा। सतिगुर सच्चा करे वसेरा बिन छपरी छन्न, महल अटल ना कोए

रुशनाइंदा। सतिगुर सच्चा देवणहारा नाम धन, सच ख़जीना आप वरताइंदा। सतिगुर सच्चा जगत नेत्र होए अन्न्, ज्ञान नेत्र इक खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब इक अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा अख्वाउदा ए। सचखण्ड दवारे आसण लाउदा ए। थिर घर शब्दी राग सुणाउदा ए। जुग जुग आपणा वेस वटाउदा ए। सच संदेस अलाउदा ए। नर नरेश जणाउदा ए। ब्रह्मा विष्न महेष समझाउदा ए। इक आदेश कराउँदा ए। पंज तत्त हो प्रवेश, जोती जाता डगमगाउँदा ए। लख चुरासी वेख, आपणा आप छुपाउदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्को नाम दृढ़ाउदा ए। सतिगुर सच्चा नाम निधाना, निरवैर इक जणाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, कोटन कोटि नाम वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेलया खेल महाना, ख़ालक ख़लक गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम कलि कल्की पहरे बाणा, बावन बैठा सीस झुकाईआ। सति सतिवादी करे आपणा कामा, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। दो जहानां होवे अन्तरजामा, अन्तरगत खोज खुजाईआ। सृष्ट सबाई देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म पारब्रह्म इक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशाना, सच सुच्च दए जणाईआ। रूप धर विष्नूं भगवाना, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म गाए गाणा, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। योद्धा सूर बणे मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। उम्मत आपणी बन्न्हे गाना, मौली तन्द इक वखाईआ। लेखा जाण श्री भगवाना, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। भगतां देवे इक निशाना, निशान आपणा नाम वखाईआ। अन्दर बाहर नज़री आए इक्को काहना, घनईया अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकारा, अक्ल कला अख्वाइंदा। आदि आदि कर पसारा, मध खेल कराइंदा। अन्त अन्त हो न्यारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। शास्त्र सिमतर वेद पुराण वसे बाहरा, भेव अभेद ना कोए रखाइंदा। कागद कलम होए नाकारा, कहिण कथन ना कोए जणाइंदा। नर हरि नरायण अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहइंदा। नव नौ चार जो देंदा रिहा हुलारा, हुलीआ गुर अवतार पीर पैगम्बर मात बणाइंदा। शब्द अगम्मी दस्सदा रिहा धारा, धार धार विच जणाइंदा। जोती दीप करदा रिहा उज्यारा, दीपक इक्को इक रुशनाइंदा। करदा रिहा जगत वपारा, वणज इक्को हट वखाइंदा। अन्तिम कल रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। सज्जण मिले ना कोए प्यारा, मजन धूढ़ ना कोए कराइंदा। कूड़ी क्रिया मोह हँकारा, लोभ तत्त ना कोए मिटाइंदा। शास्त्र सिमरत कर कर गए पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए बण लिखारा, कलम शाही वंड वंडाइंदा। कलिजुग अन्तिम भेव न्यारा, भेव किसे ना आइंदा। वसणहारा सच मनारा, मोहतबर आपणा

७८३
१३

फेरा पाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार सुणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। देवणहारा सच सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलिजुग कूड़ा पार किनारा, उरार पार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा खेल कराइंदा। सतिगुर सच्चा खेल अपारा, अबिनाशी आप कराईआ। भगत वखाए इक दवारा, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। सन्त जणाए इक सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां खोल्ले बंद कवाड़ा, पड़दा आपणा आप चुकाईआ। गुरसिखां वजाए नाम नगारा, नाद अनादी नाद सुणाईआ। कर खेल अपर अपारा, प्रभ आपणा आप छुपाईआ। गा गा थक्के जीव गंवारा, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। फिर फिर थक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर आसण लाईआ। हरि जू मिल्या ना मीत मुरारा, मित्र प्यारा बैठा मुख भवाईआ। श्री भगवान हो उज्यारा, कलिजुग अन्त सृष्ट सबाई रिहा समझाईआ। सोहँ बोलो सच जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। सतिगुर सच्चा इक करतारा, करता पुरख खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर साहिब गहर गम्भीर, गवर नज़र किसे ना आइंदा। हरिजन ठांडा करे सरीर, सांतक सति सति वरताइंदा। मनमुखां खिच्चे विच लकीर, जीव जहान वंड वंडाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद वेले अन्त पढ़े ना कोए तकबीर, तकदीर सब दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। किसे चले ना कोए तदबीर, तसबी माला ना कोए भवाइंदा। करे खेल बेनज़ीर, नज़र आपणी इक बदलाइंदा। कूड़ी क्रिया कट भीड़, मजलस हक़ हक़ वखाइंदा। नज़री आए सच तस्वीर, तसल्ली सब दी आप कराइंदा। जिस भेज्या जुलाहा कबीर, भगत भगवान सेवा लाइंदा। सो कलिजुग अन्तिम प्रगट हो के आया अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म सुणाइंदा। गुरमुख कोए ना रहे दिलगीर, दिलदार आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिख कोए ना रहे शरीर, शिरकत सब दी आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे तौफ़ीक, तोबा तोब सर्ब कुरलाइंदा। सच तौफ़ीक इक रहमान, रहमत आप जणाईआ। हक़ मुकामे हक़ निशान, हकीकत रिहा दरसाईआ। लाशरीक नौजवान, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। बेनज़ीर नूर भगवान, ज़हूर शऊर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा पुरख अकाल, अक्ल कला अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, दयानिध धारी आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा सदा करे प्रितपाल, गुरमुख बाले गोद उठाइंदा। सतिगुर सच्चा हरिजन वेखे आपणे लाल, लाल अनमुलड़े आप आपणे हट्ट विकाइंदा। सतिगुर सच्चा लेखा जाणे काया माटी खाल, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सतिगुर सच्चा मुरीदां पुच्छणहारा हाल, अहिवाला दे सर्ब समझाइंदा। सतिगुर सच्चा कूड़ी क्रिया लाहे खाल, ख़ालक

ख़लक आप रुवाइंदा। करे खेल बेमिसाल, मिसल बणा ना कोए जणाइंदा। साहिब सतिगुर बण दलाल, दिल दलेरी इक रखाइंदा। अन्त रहिण ना देणा ईमान, उल्मा नज़र कोए ना आइंदा। बरदा रहे ना कोए गुलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा इक्को इक जणाइंदा । सतिगुर सच्चा निहकलंक, कल अन्त वज्जे वधाईआ। सुहावणहारा साचा बंक, सम्बल चरण टिकाईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमान तोले वज़न टंक, बनास्पत भार वंड ना कोए वंडाईआ। हरिजन उभारे किरपा धारे जिउँ जन जनक, जन जननी वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा वासी पुरी घनक, बार अनक फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुखां अन्तर आत्म लाए तनक, खिच्ची आए वाहो दाहीआ। हरि का कोए ना पाए अन्त, अन्त कहिण कोए ना आईआ। सारे कहिण बेअन्त बेअन्त, बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए छुडाईआ। साध कहिण तेरी महिमां अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। श्री भगवान कहे मैं आदि अन्त, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। सतिगुर सच्चा करे रहमत, रैहम आपणे विच रखाइंदा। सतिगुर सच्चा गुरमुखां नाल होए सहिमत, सहिम दुःख सर्ब गवाइंदा। सतिगुर सच्चा कदे ना होए अहिमक, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। सतिगुर सच्चा हरिजन लख चुरासी विच्चों उठाए नाल सैनत, नाम इशारा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे माण दिवाइंदा। सतिगुर साचा सच्चा माण, निमाणयां होए सहाईआ। सतिगुर साचा धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। सतिगुर साचा खेल महान, ख़ालक ख़लक रिहा वखाईआ । सतिगुर साचा कलिजुग अन्तिम प्रगट हो श्री भगवान, भगवन आपणी धार वखाईआ। सतिगुर साचा लख चुरासी जीव जंत साध सन्त देवणहार ज्ञान, अक्ख प्रतख नूर दरसाईआ। कागद कलम होए हैरान, दोए जोड़ वास्ता पाण, बेअन्त तेरा अन्त कोए ना आईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तेरा झुलदा इक निशान, तेरा वसे सचखण्ड मकान, जिस घर बैठों नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। सतिगुर साचा खेल करे महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। सतिगुर सच्चा उच्च महल्ला, इक्को इक वसाइंदा। सतिगुर सच्चा साचा पल्ला, पल्लू आपणा नाम फड़ाइंदा। सतिगुर सच्चा जुग चौकड़ी होवे झल्ला, झलक आपणे नाम जणाइंदा। सतिगुर सच्चा लेखा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर इक दरसाइंदा। सतिगुर सच्चा नाम निधाना तीर निराला तिक्खा फड़े भल्ला, चारों कुण्ट भय वखाइंदा। सतिगुर सच्चा लहिणा देण चुकाए राणी अल्ला, आदत आपणी आप बदलाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा सदा मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप दृढ़ाइंदा। सतिगुर सच्चा

खेले खेल, खेल अवल्लड़ी आप रचाईआ। जुग विछड़े जग लए मेल, जीवण जुगत जणाईआ। प्रभ पाओ सज्जण सुहेल, गुण गाओ इक्को माहीआ। वेखो अचरज निरगुण खेल, सरगुण रिहा दृढ़ाईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेल, गुर चेला वेस वटाईआ। कटणहारा धर्म राए दी जेल, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि जू करे सच विहारा, बिवहारी धार चलाइंदा। सति सतिवादी हो उज्यारा, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा। अनाद अनादी आत्म धुनकारा, धुन मधुर राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप पढ़ाइंदा। साची सिख्या पढ़ो मीत, हरि मित्र आप जणाईआ। पुरख अकाल गाओ गीत, सोहला इक्को इक समझाईआ। मन्दिर मठ्ठ शिवदुआले छड्डो जगत मसीत, मसला इक्को दए दृढ़ाईआ। आपणे हथ्थ रखाए इक तौफ़ीक, तोबा तोब करे लोकाईआ। मार्ग ला इक बारीक, बरीख़ाना रहिण कोए ना पाईआ। अमृत जाम सच प्याला पीता ला के झीक, झाकी सतिगुर आपणी दए दरसाईआ। सतिगुर सच्चा जाणे कवण मार्ग चढ़या ठीक, कवण रसना कह कह रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा आसण लाईआ। सतिगुर सच्चा लाए आसण, अबिनाशी खेल कराइंदा। सतिगुर सच्चा वेखे खेल तमाशन, ख़ालक ख़लक नाल रलाइंदा। सतिगुर सच्चा पावे मण्डल रासण, गोपी काहन नाच नचाइंदा। सतिगुर सच्चा होए दासी दासण, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप जपाइंदा। हरिसंगत हरि हरि करे हड़प, आपणे विच छुपाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तड़प, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रीती विच रहिण ना देवे कोई फ़र्क, फ़ुरना आपणे नाल मिलाईआ। लख चुरासी कर के तरक, तुरत गुरमुख रिहा जगाईआ। सब दे पत्रे रिहा परत, गुरमुखां आपणा नाम पढ़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करदा रिहा लिख्त पढ़त, हुक्म संदेस सुणाईआ। कोटन कोटि नाम विच रखदा रिहा धड़त, धरत धवल खेल कराईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पाए आप नधड़क, निरवैर बेपरवाहीआ। चढ़ावणहारा अगम्मी कड़क, काल महाकाल हुक्म जणाईआ। आपणी ताकत आपे रिहा फरक, बल आपणा आप जणाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ के अरक, हरिजन साचे बाहर कढ्ढाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत कलिजुग वहण विच चलो मटक मटक, चाल इक्को इक जणाईआ। सच्चे साहिब नूं मिलो हो नधड़क, धड़कण पिछली दए गंवाईआ। एथे ओथे करे तुहाड्डी चढ़त, चढ़दीआं कलां दए वखाईआ। जिस दे पिच्छे भुक्खे मरदे रहे रख रख बरत, सो दिवस रैण अठ्ठे पहर अमृत जाम प्याईआ। सृष्ट सबाई करे हरख, गुरमुख खुशी लए

प्रनाईआ। सतिगुर साहिब करे तरस, तरसदयां आपणे नाल मिलाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अमिउँ रस इक चुआईआ। पिछला लाहवे पूरब कर्ज़, अग्गे देवे माण वड्याईआ। इक्को राग सुणाया बिन ताल तर्ज़, तलवाड़ा साज ना कोए वजाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब ने कहिणा गरज, गर्ज़ सब दी पूर कराईआ।

हरिसंगत करे मंज़ूर अर्ज़, आरज़ू सब दी आपणे विच रखाईआ। दयाल हो के पूरा करे फ़र्ज़, बण फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। हरिसंगत होण ना देवे हर्ज, हर्जाना भरे थाउँ थाईंआ। वसौण ढौण मारन ज्वालण दी प्रभ नूं आदि जुगादि मर्ज़, मर्ज़ी आपणी ना किसे जणाईआ। जे कोई कहे मैं लवां वर्ज, भाणा सके ना कोए मिटाईआ। किसे हथ्थ ना आए गिरजे चरच, चर्चा करे सर्ब लोकाईआ। मन्दिर मसीतां रहे भटक, भटकणा सके ना कोए मिटाईआ। शिवदुआले मठ्ठ रहे लटक, फाँसी गल ना कोए कटाईआ। सच दवारयों प्रभ साचे दित्ते हटक, हाटी साची नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत चाढ़ नाम रंगत, नानक अंगद रूप वखाईआ।

❇ पहली फग्गण २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

सो पुरख निरँजण सतिगुर सूरा, सति सतिवादी इक अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण ज़ाहर ज़हूरा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। एकँकारा सर्ब कला भरपूरा, भेव अभेद आप छुपाइंदा। आदि निरँजण जोती नूरा, नूर नूराना डगमगाइंदा। श्री भगवान करे खेल नौजवान आपणी ज़रूरत करे पूरा, ज़रूरत अवर ना कोए रखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा नेड़े दूरा, दो जहानां चरणां हेठ दबाइंदा। पारब्रह्म निरगुण निरगुण रंग चाढ़े गूढ़ा, आदि जुगादि उतर कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल सो पुरख निरँजण, आदि जुगादी आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण दर्द दुःख भय भंजन, निरवैर आपणी कार कमाईआ। एकँकारा मीत मुरारा साचा सज्जण, सगला संग रखाईआ। आदि निरँजण जोती जाता करावणहारा साचा मजन, निराकार नूर धराईआ। अबिनाशी करता साहिब सुल्तान पड़दे कज्जण, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। श्री भगवान करे खेल घड़न भंनण, समरथ सच्चा शहिनशाहीआ। पारब्रह्म प्रभ दर दरवेश दर आए मंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी इक कमाईआ। साची करनी सचखण्ड, सति सतिवादी आप कराइंदा। पुरख अकाल सूरा सरबँग, निरवैर आपणी कल धराइंदा।

७८६
१३

नाम निधान वजाए मृदंग, राग धुन आपणे हथ्थ रखाइंदा। कन्त कन्तूहल साचा संग, नर नरायण नारी आपणा रूप वखाइंदा। सचखण्ड दवारा खेल सति अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। सच सिँघासण इक पलँघ, परम पुरख आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे सोभा पाइंदा। सच दुआरे सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता आदि अन्त, श्री भगवान सोभा पाईआ। जुगो जुग महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। कर खेल नार कन्त, सेज सुहञ्जणी साचे मन्दिर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, बेपरवाह भेव कोए ना आइंदा। आदि जुगादि जुग जुग वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। मण्डल मण्डप पावे रासा, लोआँ पुरीआँ नाच नचाइंदा। आपणी इच्छा आपे पूरी करे आसा, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। आपे दाता आपे सेवक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप रचाईआ। साचा खेल परवरदिगार, मुकामे हक़ हक़ जणाईआ। नूर नूराना नूर उज्यार, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ। अमाम अमामां वड सिक्दार, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह साची साचा राम, जोती जाता डगमगाइंदा। आदि जुगादि देवणहार पैग़ाम, सच संदेसा इक जणाइंदा। लेखा जाण दो जहान, निरगुण सरगुण भेव खुल्हाइंदा। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड सोभा पाइंदा। खोल्हणहार आप दुकान, थिर घर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाइंदा। साची करनी करनेहार, करता पुरख अख्वाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, जुग जुग आप जणाईआ। सुत दुलारा कर तैयार, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहार, रजो तमो सतो बन्धन एका पाईआ। पंज तत्त लेखा अगम्म अपार, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश करे कुड़माईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, अगाध बोध करे पढ़ाईआ। साचा मेला सिरजणहार, साख्यात आप कराईआ। कागद कलम ना लिखणहार, कातब चले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म मनाईआ। सचखण्ड दुआर सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह इक अख्वाइंदा। बेपरवाही बेपरवाह, बेअन्त नाउँ धराइंदा। जोती जाता नूर जगा, नूर नूराना डगमगाइंदा। बिन तेल बाती कर रुशना, अनभव प्रकाश धराइंदा। सच संदेसा इक सुणा, धुर फ़रमाना आप अल्हाइंदा। आपणा हुक्म आप मना, निउँ निउँ आपे सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वड्याइंदा। साचा हुक्म

शाह सुल्ताना, आदि पुरख वड्याईआ। हुक्मे अन्दर खेल महाना, आपणा आप लए प्रगटाईआ। हुक्मे अन्दर बण मर्दाना, सच मर्दानगी लए कमाईआ। हुक्मे अन्दर सूरबीर झुलाए निशाना, निशान इक्को इक दसाईआ। हुक्मे अन्दर करे ध्याना, ध्यान ध्यान विचों प्रगटाईआ। हुक्मे अन्दर बणाए सच मकाना, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। हुक्मे अन्दर बन्ने गाना, साचा सगन मनाईआ। हुक्मे अन्दर गाए तराना, नाउँ निरँकारा सिफ्त सालाहीआ। हुक्मे अन्दर खेल करे भगवाना, नार कन्त रूप वटाईआ। हुक्मे अन्दर सेज सुहाना, सच सिँघासण आसण लाईआ। हुक्मे अन्दर निरगुण निरगुण कर परवाना, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। हुक्मे अन्दर सुत निधाना, शब्दी बाल रूप वटाईआ। हुक्मे अन्दर खेल महाना, ख़ालक आपणा दए जणाईआ। हुक्मे अन्दर विश्व धार विष्नूं कल्याणा, हुक्मे अन्दर पारब्रह्म ब्रह्म आपणा हुक्म जणाइंदा। हुक्मे अन्दर शंकर ज्ञाना, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। हुक्मे अन्दर रवि ससि किरन किरन करे कल्याणा, अनक कल आपणा भेव जणाइंदा। हुक्मे अन्दर वेद महाना, मालक आपणे नाल मिलाइंदा। हुक्मे अन्दर राग तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची वंड, हुक्मे अन्दर आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे खेल सरबँग, सरबँग आपणी करनी आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे मंगे मंग, बण भिखारी झोली डाहीआ। सचखण्ड दुआरे गाए छन्द, सोहला ढोला इक अलाईआ। सचखण्ड दुआरे हो बख़्शंद, बखशिश आपणी दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर बेपरवाह, आपणी धार चलाइंदा। हुक्मे अन्दर सिफ्त सलाह, धुर संदेसा आप अलाइंदा। हुक्मे अन्दर बण मलाह, खेवट खेटा नाउँ धराइंदा। हुक्मे अन्दर रहबर बण ख़ुदा, नूर नूराना डगमगाइंदा। हुक्मे अन्दर पर्दा दए उठा, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। हुक्मे अन्दर मिहबान बीदो लए अख्वा, बी खैर या अल्ला इलाही नूर पड़दा लाहइंदा । हुक्मे अन्दर मुकामे हक़ दए वसा, हकीकत आपणे विच छुपाइंदा। हुक्मे अन्दर तारीक अन्धेरा दए मिटा, नूर नूराना चन्द चमकाइंदा। हुक्मे अन्दर लाशरीक बण ख़ुदा, शिरकत सब दी आप गवाइंदा। हुक्मे अन्दर तारीफ़ कर दए दुआ, तुआरफ आपणा आप जणाइंदा। हुक्मे अन्दर मारफत मार्ग देवे ला, सिफारश होर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, आदि जुगादि कराईआ। मध खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। धुर दरबारी बण भिखार, दर आपणी अलख जगाईआ। देवणहारा सच भण्डार, सति सतिवादी आप वरताईआ। गृह मन्दिर हो तैयार, साचा बंक इक सुहाईआ। अन्तर आत्म नाम जैकार, अनादी नाद सुणाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण

७८८
१३

७८६
१३

लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा इक्को रिहा सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण आसण लाइंदा। एकँकारा बल वधाइंदा। आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सीस ताज टिकाइंदा। श्री भगवान सच निशान झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ निरगुण वेख वखाइंदा। सचखण्ड रंग चढ़ाइंदा। मुकामे हक़ कुण्डा लाहइंदा। शब्द सुत इक जगाइंदा। साची रुत्त सर्ब वखाइंदा। अबिनाशी अचुत खेल कराइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वसाइंदा। विष्न आपणी धार जणाइंदा। ब्रह्मा कँवल रूप समाइंदा। शंकर धूंआँधार उठाइंदा। सतो आपणा रंग चढ़ाइंदा। रजो राज जोग रखाइंदा। तमो तृष्ना नाल मिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आसा पूर कराइंदा। शब्दी नाद धुन वजाइंदा। ब्रह्म ब्रह्माद वेख वखाइंदा। सज्जण साक आप हो जाइंदा। पाकी पाक नूर डगमगाइंदा। धुर फ़रमाणा साचा राणा इक्को हुक्म सुणाइंदा। त्रै त्रै मीता इक अतीता, साचा मार्ग आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी करदा आया, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया खेल रचाया, त्रै त्रै लेखा सच समझाईआ। त्रै त्रै मेला आप मिलाया, विष्न ब्रह्मा शिव कर कुड़माईआ। त्रै त्रैलोकी वंड वंडाया, सच सलोकी नाम जणाईआ। कोटी कोट वेस वटाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बन्धन पाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग चढ़ाया, चारे खाणी अंग लगाईआ। साचा घाड़न घड़ वखाया, लख चुरासी बणत बणाईआ। नाम निधाना इक्को गाया, निरवैर करे पढ़ाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म जगत मन्दिर इक वसाया, अन्दर आपणा आप छुपाईआ। नौं दुआरे राह चलाया, आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता मेल मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बण मंगता मंगण इक्को झोली डाहीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल घाड़न घड़, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे फड़, फड़ बांहों हुक्म मनाइंदा। इक्को अक्खर रिहा पढ़, निष्अक्खर आप जणाइंदा। देवणहारा साचा वर, वर आपणी झोली पाइंदा। निहकर्मी आपणा कर्म कर, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्नूं भण्डारा आपे भर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मे लाए आपणे लड़, पारब्रह्म अंगीकार अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर वखा एका घर, शाकिर आपणे उत्ते कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव साचा मेला, आदि आदि कराईआ। शब्द गुरू गुरु गुर चेला, गुर एका बन्धन पाईआ। लख चुरासी सज्जण सुहेला, घर आपणा डेरा लाईआ। वसणहारा सद नवेला, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म अचरज खेल आप प्रभ खेला, भेव किसे ना आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आदि जुगादी चाढ़े तेला, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी विच समाईआ। लख चुरासी हरि जू वड़या, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। साचे मन्दिर आपे चढ़या तख्त निवासी डेरा लाइंदा। निरवैर पुरख निरँकार निष्अक्खर आपे पढ़या, लिखण पढ़न विच कदे ना आइंदा। ना जन्मे ना कदे मरया, मात पित ना कोए बणाइंदा। आपे वसे आपणे घरया, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाइंदा। आपणा खेल लख चुरासी, श्री भगवान वंड वंडाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाशी, गगन मण्डल सोभा पाईआ। मण्डल मण्डप साची रासी, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण जोत जोत दासण दासी, बण सेवक सेव कमाईआ। आत्म परमात्म भोग बलासी, भरमड़ इक्को सेज हंढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप जणाईआ। साची धार चलाइंदा। लख चुरासी जोत जगाइंदा। नाम चोट इक लगाइंदा। ओत पोत वेख वखाइंदा। किला कोट सुहाइंदा। राज राजान वड्याइंदा। हुक्म हाकम मनाइंदा। आत्म परमात्म उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाइंदा। आपणा खेल वखाए एकँकार, अक्ल कला वड्याईआ। लख चुरासी कर तैयार, त्रैगुण अतीता विच समाईआ। साची करनी करे विहार, बिवहारी बेपरवाहीआ। सुत दुलारे कर प्यार, अबिनाशी अचुत जणाईआ। उठ बाल नौजवान, समरथ रिहा हिलाईआ। घट घट तेरा झुल्ले निशान, झलक इक्को इक जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, सति संदेसा इक सुणाईआ। आदि जुगादि मन्नण इक्को आण, दूजा इष्ट नज़र ना आईआ। सर्ब दा दाता श्री भगवान, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। खेले खेल आप महान, खेलणहार नज़र ना आईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत सुत जणाईआ। शब्द सुत कर असीस, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। साहिब सुल्तान तेरी सदा असीस, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दयां हदीस, साचा मंत्र इक पढ़ाइंदा। तेरा नाउँ सदा अतीत, दर घर साचा इक वखाइंदा। तेरा सोहला ढोला निरगुण गीत, लख चुरासी आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। तेरा खेल सदा अनडीठ, नज़र किसे ना आइंदा। मेरी नंगी होण ना देवीं पीठ, इक तेरी ओट तकाइंदा। तूं सज्जण साहिब मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाइंदा। धरनी धरत धवल चलावां रीत, तेरा नाउँ सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत सुत दुलारा निउँ निउँ करे दर निमस्कारा, बण बरदा सीस झुकाइंदा। हउँ बरदा दरवेश, दर तेरे अलख जगाईआ। तूं साहिब सुल्तान नरेश, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सेवा लावां ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, हुक्मी हुक्म इक मनाईआ। फेर वसावां तेरा देस, दहि दिशा खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण धरां वेस,

वेस अवल्लड़ा वड वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रवेश, अवतार गुर गुर रूप वटाईआ। धुर दी बाणी सच संदेसा तेरा लिखां लेख, महिमा अकथ कथ अलाईआ। मैं तेरा तूं मेरा तूं मैनूं लईं वेख, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी अन्दर करां हेत, नित नवित्त राह तकाईआ। जुग चौकड़ी खेलें खेड, बण खडारी खेल रचाईआ। तेरा कोए ना पाए भेत, अभेव तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। श्री भगवान दया कमाइंदा। सुत शब्द समझाइंदा। इक्को राह वखाइंदा। इक्को मकान बणाइंदा। इक्को नाम जपाइंदा। इक्को ध्यान लगाइंदा। इक्को राग सुणाइंदा। इक्को साक बणाइंदा। इक्को वाक अलाइंदा। इक्को ताक खुलाइंदा। इक्को घाट बुझाइंदा। इक्को वाट मुकाइंदा। इक्को ज़ात बणाइंदा। इक्को दात वरताइंदा। इक्को साथ निभाइंदा। इक्को नाथ अख्वाइंदा। इक्को जाग खुलाइंदा। इक्को वैराग उपजाइंदा। इक्को मंत्र पढ़ाइंदा। सोहँ रूप समझाइंदा। शब्द सुत सेवा लाइंदा। अबिनाशी अचुत वेख वखाइंदा। रुत्त बसन्ती आप सुहाइंदा। जोत निरँजण डगमगाइंदा। चरण धूढ़ मजण इक कराइंदा। सज्जण साहिब इक्को नज़री आइंदा। राग नाद तर्ज़ ताल इक वजाइंदा। जन भगतां वेख वखाइंदा। लाशरीक राह चलाइंदा। बेनज़ीर फेरा पाइंदा। सच तस्वीर आप प्रगटाइंदा। तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। तकदीर सब दी आप बदलाइंदा। तकसीर आप मेट मिटाइंदा। शरअ ज़ंजीर आप बणाइंदा। ब्रह्मावेता आप पढ़ाइंदा। चारे वेदां आप मिटाइंदा। शास्त्र सिमरत पुराण पाउणा पाइंदा। गीता ज्ञान खोज खुजाइंदा। अञ्जील कुरान पड़दा लाहइंदा। खाणी बाणी वड वड्याइंदा। शब्दी रूप गुर समझाइंदा। शाहो भूप इक्को नज़री आइंदा। सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। जुग करनी कर वखाइंदा। तेई अवतारां राह जणाइंदा। भगत भगवान आप उठाइंदा। सन्त साजन मेल मिलाइंदा। कन्त इक्को नज़री आइंदा। रंग बसन्त इक चढ़ाइंदा। हउमें हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। गुरमुखां पड़दा आपे लाहइंदा। बंद कवाड़ खुलाइंदा। गुरसिख सोए मात उठाइंदा। दुरमति मैल धोए, पतित पुनीत कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाइंदा। खाणी बाणी राह जणाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश खेल खलाइंदा। राज राजान साह सुल्तान सीस जगदीश ताज टिकाइंदा। राउँ रंक ऊँच नीच जगत जुगत वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करे आदि जुगादि, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लेखा जाण ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म आपणे विच छुपाईआ। दो जहानां वज्जे नाद, पुरी लोअ आप जणाईआ। चौदां लोक खेल तमाश, परलोक खोज खुजाईआ। चौदां तबक बणाए शाख़, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी

आप कमाईआ। आपणी करनी करे करता पुरख, पुरखोतम वड वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण देवे दरस, आत्म परमात्म होए सहाईआ। अमृत मेघ आत्म दान देवे बरस, झिरना निझर इक झिराईआ। जुग चौकड़ी लाहवे कर्ज़, मकरूज रहिण कोए ना पाईआ। साहिब सुल्तान पूरा करे आपणा फ़र्ज़, फ़र्ज़ी कार ना कोए समझाईआ। सदा सदा सद रखे आपणी ग़रज़, ग़फ़लत विच कदे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के गए अर्ज़, दोए जोड़ आरज़ू इक जणाईआ। खाणी बाणी राग नाद तेरा गाउँदे राग नाद ताल तर्ज़, तलवाड़ा तेरा नज़र किसे ना आईआ। गुरदेव सन्त सज्जण भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख गुर गुर सिख्या दे दे गए वर्ज, वाहद इक्को नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी आप कमाईआ। आपणी करनी करे पुरख अकाल, अक्ल कला अख्वाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी हो दयाल, दीनन आपणे गले लगाइंदा। मार्ग मंत्र नाम तत्त ब्रह्म मति राह दस्स सुखाल, साचे धंदे आपे लाइंदा। सतिगुर पूरा निरगुण सरगुण सूरा नाता तोड़ काल महाकाल, बेहाल आपणे चरण बहाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त आपणा बचन करे पूरा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दरस मंगदे रहे दर हज़ूरा, हज़रत इक्को वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकारा आप जणाइंदा। सच संदेसा एकँकार, निरगुण आपणा आप जणाईआ। धुर फ़रमाना सुणो खोल्ह किवाड़, ख़ालक ख़लक आप जणाईआ। नेत्र खोल्हो विष्न ब्रह्मा शिव होवो बेदार, आलस निंद्रा रिहा गंवाईआ। गुर अवतार करो विचार, विचला भेव रिहा खुल्हाईआ। पीर पैगम्बर करो गुफ़तार, गुफ़त शुनीद मुर्शद मुरीद आपणा पड़दा लाहीआ। भगत भगवान करो याद, सुणे फ़रयाद, जिस रचना रची आदि, अन्तिम निरगुण वेखण आईआ। साचे सन्त मन्नो कन्त पूरन भगवन्त, लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी विच समाईआ। ध्यान करो गुरमुख दूई द्वैत मिटाओ दुःख, माया ममता मिटे भुक्ख, सफल होए मात कुक्ख, सुख सतिगुर इक्को नज़री आईआ। गुरसिख चरण जाए झुक अग्गे पैंडा जाए मुक्क, नज़री आए जो बैठा लुक, आत्म अन्तर पड़दा लाहीआ। लख चुरासी लए पुच्छ, ख़ाली हथ्थ रोवण कोल ना कुछ, नाता तुटया सच सुच्च, कूड़ी क्रिया जगत कुड़माईआ। बिन गोबिन्द सच्चा नज़र ना आए कोई पुत्त, खेले खेल अबिनाशी अचुत, कलिजुग वेखे मौली रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। निरगुण दाता पए उठ, भगतां उपर जाए तुठ, अमृत जाम देवे घुट्ट, आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी फंद कटाईआ। कलिजुग

जड़ देवे पुट्ट, शौह दरयाए देवे सुट्ट, मुड़ के फेर ना सके उठ, सतिजुग बच्चा लए जगाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट्ट, नार दुहागण वढ्ढे गुत्त, बचया रहे ना कोई किसे गुठ्ठ, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दहि दिशा वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल दीन दयाल शहिनशाह शेर इक्को पए बुक्क, सब दा भंने ख़ाकी चम्म बुत्त, ख़ाली वखाए इक्को ठुठ, ठोकर सब नूं दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता इक्को एक नज़री आईआ। इक्को इक नज़री आवेगा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटावेगा। जोती जामा मात पावेगा। सच सलोकी राग सुणावेगा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड चरणां हेठ रखावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव कुरलावेगा। हरि का भेव किसे ना आवेगा। निरगुण सरगुण वेख वखावेगा। अवगुण कूड़ पार करावेगा। गुणवन्ता गुण राह जणावेगा। ग़रीब निमाणयां पुकार सुण, फड़ बांहों गले लगावेगा। वड हँकारीआं वड जरवाणयां निशान मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करावेगा। आपणा खेल करेगा। प्रभ किसे कोलों ना डरेगा। साचे तख़्त आपे चढ़ेगा। सिर जगदीश ताज धरेगा। ना जन्मे गा ना मरेगा। जो चाहे सो करेगा। बिन खंडिउँ तीर कमानों लड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को अक्खर नाम पढ़ेगा। इक्को अक्खर पढ़ावांगा। साचा खेल करावांगा। गुर अवतार नाल रलावांगा। पीर पैगम्बर पड़दा लाहवांगा। नूर इक्को नज़री आवांगा। ज़हूर आपणा सच दरसावांगा। कूड़ा फ़तूर अन्त मिटावांगा। ग़रूर ग़ुरबत ख़ाक मिलावांगा। बेकसूर सर्ब बचावांगा। दस्तूर इक वखावांगा। कलिजुग ज़रूर खपावांगा। शाह ग़फ़ूर इक्को नैण खुल्हावांगा। मुखीआ मुख करावांगा। शमस आपणी जोत रलावांगा। शमा इक्को दीप जगावांगा। चौदां लोकां तमां मिटावांगा। मुहम्मद नेत्र नैणां नाल मिलावांगा। ईसा उंगलीआं उत्ते नचावांगा। मूसा डिगा फेर हलावांगा। तेई अवतार पिछला कीता सब वखावांगा। नानक निरगुण आपणा रंग चढ़ावांगा। गोबिन्द डंका सच वजावांगा। राउ रंक उठावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड समझावांगा। सृष्ट सबाई राहे पावांगा। चार वरन अठारां बरन ज़ात पात खपावांगा। पुरख अकाल दीन दयाल साची सरन दृष्ट इष्ट इक जणावांगा। परवरदिगार सांझा यार नूर इलाही इक्को नूर धरावांगा। राम रमईया कर प्यार, सच घनईया मुकन्द मनोहर लखमी नरायण बंसरी नाम सुणावांगा। शब्द सुत बाला निक्का वड्डा छोहर, रूप अनूप आप जणावांगा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा अन्तिम रोड़्ह लोहड़ा घर घर प्या वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग दी पिछली कीती, वरन गोत दी जगत रीती, मन्दिर मसीती शिवदुआले मठ्ठ भेव चुकावांगा। गुर अवतार वेखण नैण, अन्त नैनन नैण दरसाईआ। कलिजुग अन्त अन्धेरी रैण, साचा चन्द नज़र ना आईआ। नाता तुटया भाई भैण,

मात पित पूत ना कोए वड्याईआ। रसना जिह्वा नाम सारे कहिण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल अबिनाशी करता मिल्या ना सज्जण सैण, कूड़ा नाता जगत बंधाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप लख चुरासी जम की फाँसी लाड़ी मौत खाए डैण, काल आपणा काल वखाईआ। भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख सज्जण विरले रहिण, जिन्हां रहबर मिल्या सच्चा माहीआ। शाह सुल्तान राज राजान जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर डूँग्घी कन्दर औझड़ राहे पैण, साचा राह नज़र ना आईआ। नेत्र खोल्हण वेखण उच्चा नज़र ना आए जिस दी सिफ्त वेद पुराण कहिण, जो भाणा रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव नौ चार चौकड़ कोटन कोटि काल हुक्मे अन्दर बिताईआ। गुर अवतार खोल्ह अक्ख, अक्ख रहे बदलाईआ। पुरख अकाल लख चुरासी भाण्डे सक्ख, नानक शब्द ना कोए कमाईआ। साचा मार्ग आए दस्स, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। मन वासना करो वस, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। श्री भगवान साचा जस, दूजी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। कलिजुग जीव सारे गए नठ्ठ, साचा हुक्म ना कोए मनाईआ। नाता जुड़या तत्त अठ्ठ, नव दर दर हल्काईआ। नाउँ निरँकार ना ल्या रट, रट्टा प्या जगत लोकाईआ। दूई द्वैत वज्जा फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। दीन मज़्हब झगड़ा हट्ट, सौदा हट्ट ना कोए वखाईआ। धर्म जड़ दिती कट, अधर्म रिहा लहराईआ। साध सन्त धीआं भैणां रहे तक्क, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाईआ। राज राजानां सच्चे साहिब उत्ते प्या शक़, शिकवा कोए ना पूर कराईआ। कूड़ी माया कहिण साडा हक़, हकीकत समझे ना कोए राईआ। काया चोला चीथड़ रिहा फट, नाम सूई नाल ना कोए सवाईआ। पीर पैगम्बर पिच्छे वेखण हट, अग्गे चरण ना कोए उठाईआ। कलमा नबी रसूल जो आए दस्स, कायनात समझाईआ। अन्तिम सारे होए बेवस, बिहबल उम्मत रही कुरलाईआ। सदी सदीवी राह तक्क, अक्खीं नीवीं ध्यान रखाईआ। बूटा रिहा पक्क, मुहम्मद पक्की तरां गया समझाईआ। सदी चौधवीं परवरदिगार सच अमाम होए प्रगट, इक्को नूर ज़हूर इलाहीआ। वेखणहारा हसन हुसैन दी रत्त, हुसन सब दा दए गंवाईआ। मुल्ला शेख़ मसायक मारी जाए मति, मसला हल ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया विच जाण फस, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। करे नबेड़ा हक़ हक़, अदल आदल इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल कराईआ। कलिजुग अन्तिम आवांगा। साची खेल करावांगा। पिछला लेखा पूरा कर वखावांगा। भरम भुलेखा कढ्ढावांगा। देस परदेसां फेरा पावांगा। जगत नरेशां आप उठावांगा। नाम संदेसा इक सुणावांगा। कलिजुग कूड़ा भुलेखा मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बर आप पढ़ावांगा। पीर पैगम्बर

७६४
१३

पढ़नगे। दर दवारे खड़नगे। निर्भय कोलों डरनगे। चरणी सीस धरनगे। तोबा तोबा करनगे। जींवदे ही मरनगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्को सरनी पड़नगे। साची सरन पावांगा। कलमा इक दृढ़ावांगा। उल्मा आप समझावांगा। आलम इक रखावांगा। कालम इक बणावांगा। आदम आप दरसावांगा। पवण हवा जणावांगा। अवण गवण वेख वखावांगा। साचा दामन इक पकड़ावांगा। ज़ामन हो के फेरा पावांगा। राम रहीम लेख जणावांगा। कादर करीम नज़री आवांगा। मुकाम अज़ीम शान इक जणावांगा। साची ताअज़ीम इक रखावांगा। आलमीन आदत इक्को पावांगा। मबीन मुहब्बत इक जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौदां तबकां कुण्डा लाहवांगा। चौदां तबकां खोल्हांगा। इक्को कलमा बोलांगा। आदि अन्त कदे ना डोलांगा। उम्मत उम्मती आपे रोलांगा। साचे कंडे तोलांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखां खेल पड़दे ओहले दा। पड़दा उहला नक़ाब पोश, सच महिबूब आप उठाईआ। मुकामे हक़ पूरा करे शौक, शौहर बणे बेपरवाहीआ। वेखणहारा किला कोट, कोटन कोटि वेस वटाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह हक़ नगारे ला चोट, सदा बांग आवाज़ इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।
७९५ १३ साची करनी करे कल्ल, हरि वड्डा वड वड्याईआ। प्रगट हो अछल अछल्ल, वल छल आपणी धार जणाईआ। निरगुण जोत शब्द आपे रल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सच संदेसा रिहा घल्ल, शब्दी राग अल्हाईआ। वसणहारा जल थल, समुंद सागर खोज खुजाईआ। लहिणा देणा चुकाए अज्ज कल्ल, कल काती मेट मिटाईआ। दो जहान जाइण हल्ल, धरनी धरत धवल टिकण ना पाईआ। शाह सुल्तान जगत आसण कोई ना बहे मल्ल, सीस ताज ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया ख़ाक जाणा रल, हरि ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। सच प्रकाश दीपक इक्को जाणा बल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरनां मिले इक्को फल, फल अमृत नाम खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच स्नेहुड़ा इक्को नाम सुणाईआ। सच स्नेहुड़ा सुणो गीत, हरि गोबिन्द आप जणाइंदा। अन्तिम नाता तुटणा मन्दिर मसीत, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अकाल निरवैर इक्को रहे अतीत, महल अटल सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी लए जीत, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग औध रही बीत, रफ़ता रफ़ता पन्ध मुकाइंदा। निरगुण लेखा जाणे हस्त कीट, कीट कीटां फोल फुलाइंदा। करवट बदल बदले पीठ, मुख आपणा आप भवाइंदा। जन भगतां सीना करे ठांडा सीत, सीतल धार इक वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा हुक्म मनाइंदा। सच्चा हुक्म मनावेगा। हाकम इक अख्वावेगा। आत्म आप समझावेगा। परमात्म मेल मिलावेगा। ज़ात पात खपावेगा। अमृत बूँद प्यावेगा। गोबिन्द मेल मिलावेगा। सगली चिन्द गंवावेगा। निन्दक निन्दया मुख ना कोए रखावेगा। सुत अनादी सर्ब बणावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी खुशी जणावेगा। आदि जुगादी रंग चढ़ावेगा। सम्मत बीस उनीस अन्त खपावेगा। अल्ला राणी सिर तों लथ्थे चुंनी, मींढी खुल्ही आप वखावेगा। नाता तुट्टे मुस्लिम सुन्नी, सीस सब दे हुक्म जणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म वखावेगा। एका हुक्म सुणाएगा। अग्गे सीस ना कोए उठाएगा। शाह सुल्तान चरणी लाएगा। बीस बीसा खुशी मनाएगा। नव नौ इक्को नज़री आएगा। चार चार गंढु पवाएगा। पंज पंज आवाज़ लगाएगा। छे छे घर वखाएगा। सत्त सत्त नाद सुणाएगा। अठ अठ खोज खुजाएगा। नव नौ पन्ध मुकाएगा। दस्स दस्स मेल मिलाएगा। दस इक गंढु पवाएगा । दस दो वंड वंडाएगा। दस तिन्न खण्ड खण्ड कराएगा। दस चार चण्ड प्रचण्ड चमकाएगा। दस पंज सूरा सरबँग हो जाएगा। दस छे दूई द्वैती कंध ढाहेगा। दस सत्त रुत्ती रुत्त वेख वखाएगा। दस अठ्ठ राज राजानां शाह सुल्तानां दर घर जा आप समझाएगा। दस नौ सृष्ट सबाई देवे भउं, बचया कोए रहिण ना पाएगा। दस दस बीस किसे छत्र ना झुल्ले सीस, माया राणी ख़ाली खीस, राज राजानां घर घर मंगण डाहेगा। कलिजुग होए अन्धेरा तारीक, सृष्ट सबाई बणे शरीक, बण विचोला शिरकत ना कोए मिटाएगा। कूड़ी सिआसत जाए पीस, करे खेल आप जगदीश जगत जुगती इक जणाएगा। हुक्म देवे साहिब ठीक, जिस दी ईसा मूसा मुहम्मद करदे गए उडीक, नानक गोबिन्द दस्सदे गए प्रीत, सो प्रीतीवान फेरा पाएगा। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, जिस दा अमृत पींदे ला झीक, जिस नूं मिलयां दो जहान लैण जीत, सो जगत नाता तोड़ तुड़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचे पौड़े चढ़ चढ़ सोभा पाएगा। साचा पौड़ा वेखे चौथा, चौथे जुग भेव खुल्हाईआ। पिछला लेखा करे थोथा, थोथी मति गंवाईआ। अग्गे सब नूं देवे सच्चा मौका, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। किसे नाल ना करे धोखा, धोखे विच आप कदे ना आईआ। सतिजुग मार्ग दस्से सौखा, सुत्तयां लए जगाईआ। निरगुण निरगुण हो के देवे होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चढ़नहारा चौथी मंज़ल, मज़ा इक्को इक दरसाईआ। चौथी मंज़ल वेखो मज़ा, मज़लूमां आप जणाइंदा। कलिजुग ज़ालम ज़ुल्म देवण वाला सज़ा, साहिब आपणा खेल कराइंदा। सब दे सिरे ते कूके कज़ा, काल आपणा डंक वजाइंदा। कलिजुग घर घर करदा गजा, सच सुच्च किसे घर रहिण ना पाइंदा। भुक्खा नंगा फिरदा भज्जा,

७९६
१३

वाहो दाही पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। साचा पन्ध मुकाए साहिब सुल्तान, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। निरगुण दाता हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नाता तुटे अञ्जील कुरान, मसला इक्को इक जणाईआ। शरअ रहे ना कोए शैतान, शरीअत आपणे विच छुपाईआ। इक दरसाए सच ईमान, अमाम इक्को नज़री आईआ। निरवैर दे पैग़ाम, कहर कलिजुग दए गंवाईआ। शायर करे ना कोए ब्यान, सिफ्त सिफ्त ना कोए सालाहीआ। अल्फ़ ये ना पाए मुकाम, बेमुकाम बेपरवाहीआ। नुक्ता नून ना कोए हैरान, ऐन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ग़फ्लत विच होए ग़लतान, ग़ालब कूड़ी क्रिया सिर ते छाईआ। मसकरा बणया नाल शैतान, नटुआ आपणा नाच नचाईआ। पंजे वक्त निमाज़ निमाज़ी सके ना कोए पहचान, नूर नजर किसे ना आईआ। बिन मुर्शद बिन कलमे सारे होए हराम, रहमान नज़र कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर देवण आप ब्यान, बैवा होई सर्ब लोकाईआ। ख़ावंद दिसे ना किसे नाल, ख़ौंत कन्त ना कोए हंढाईआ। नज़र आए ना नार रकान जोबन मती, आपणे पती परम पुरख ध्यान लगाईआ। चरण कँवल ना कोई सती, रत्त सुकाए ना कोए रत्ती, पलँघ रंगीला ना कोए हंढाईआ। अल्फ़ आरफ़ां पढ़ी ना कोए पट्टी, ये युकती कोई ना दस्सी, मुफ्तो मुफ्ती आपणा आप गए गंवाईआ। कलिजुग अन्तिम अल्ला राणी चतुर सुघड़ सवाणी होई हक़ी बक्की, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। परवरदिगार सांझा यार सब दी जड़ रिहा पट्टी, उखेड़ा इक्को इक लगाईआ। चौदां तबक दिसण ख़ाली हट्टी, हटवाणा नज़र कोए ना आईआ। हथ्थ विच लै के मौली अट्टी, तन्द तन्द नाल तुड़ाईआ। मक्के काअबिउँ आई नट्ठी, थलां विच देंदी दर्द दुहाईआ। मेरी पत किसे ना रखीं, सिर सालू ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट मारी गई मती, मतिवाली होई लोकाईआ। मैनूं वेख के पैंदी ग़शी, सुरत सम्बल ना सकां राईआ। जिस दे बिरहों वैराग विच तड़फदी रही मच्छी, सो समुंद आपणा नीर ना कोए प्याईआ। मैं कोझी कमली होई कच्ची, कुचील आपणा आप नज़री आईआ। क्यों मेरी उम्मत ना रही सच्ची, भुलया बेपरवाहीआ। मैं दर दर जा के नच्ची, मुख आपणा घूँगट लाहीआ। किसे मस्जिद रहिणा ना दीवा बत्ती, कब्रिस्तान देण दुहाईआ। बिन परवरदिगार खट्टी किसे ना खट्टी, खटका घर घर रही जणाईआ। वेखो दोज़ख़ बहिश्त दो जहान तपदी भठ्ठी, भाणा हरि जू रिहा वरताईआ। किसे दी रहिणी नहीं पंज तत्त मटी, मटका सब दा भन्न वखाईआ। पीर पैगम्बर वेखो ख़ाली हथ्थीं, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गल पा पल्लू वास्ता रहे घत्ती, बण बरदे सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणा खेल वरताईआ। पीर पैगम्बर तक्कण राह, नैण नैण ध्यान लगाया। अल्ला राणी होई बेपनाह, दर नज़र कोए ना आया।

बख्शे कोई ना जगत गुनाह, उम्मत लए ना कोए बचाया। होणा पए सर्ब फनाह, फतवा सादर आप कराया। चार कुण्ट होए हैरान, हरि का भेव किसे ना आया। मुल्ला शेख़ होए परेशान, परेशानी ना कोए गंवाया। मिल्या हक़ ना कोए ईमान, आदम रूप ना कोए जणाया। भुलया हज़रत इक पैग़ाम, बीड़ा किसे ना आत्म उठाया। निरगुण बदले अन्त नज़ाम, नग़मा इक्को नाम सुणाया। पिछला रहे ना कोए मुकाम, हुक्म इक्को इक दरसाया। लेखा चुके जगत तमाम, तुख्म सब दा दए मिटाया। प्रगट हो श्री भगवान, भाणा आपणा रिहा जणाया। चौदां लोक मिटे निशान, निशाना इक्को इक दरसाया। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए धारा राह वखाया। नेत्र पेखो इक्को राम, घर घर बैठा नज़री आया। मेटो रैण अन्धेरी शाम, शमा इक्को नूर रुशनाया। सारे बरदे बणो ग़ुलाम, बरीख़ाना दए वखाया। पीर पैगम्बर गुर अवतार कलमा पढ़ो कलाम, नाम सोहला इक जणाया। ढोला गाए आप भगवान, पड़दा उहला दए उठाया। मौला बणे नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाया। चौथी मंज़ल हो प्रधान, चौथा घर दए दसाया। नज़री आए इक्को काहन, गहर गम्भीर वड वडयाया। पहली चेत्र दिवस महान, चेता सब नूं दए कराया। लेखा लिखे आप जणाए सच विधान, विद्दत माण ना कोए वडयाया। अन्तिम झुल्लणा इक निशान, निशाना सब नूं दए दरसाया। शाह सुल्ताना चरणी डिगणा आण, चरण चरणोदक मुख चुआया। राष्ट्रपति दए पैग़ाम, परम पुरख हुक्म सुणाया। पंचम जेठ मिलणा पए नाल भगवान, राज मंत्री नाल मिलाया। घर दस्स के आवे अगला ब्यान, जिस दा भेव किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ लेखा साचा दए जणाया। पंचम जेठ दिल्ली दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भारत खण्ड रहिणा ख़बरदार, पारब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। मंत्री मण्डल रहिणा तैयार, मंत्र इक्को इक समझाईआ। जिस अन्तिम सब दी पौणी सार, होए सर्ब सहाईआ। कलि कल्की लै अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लुक्या रहे ना अन्तिम वार, पड़दा आपणा आप उठाईआ। जोती सरूपी करे ना कोए गरिफ़तार, गरिफ़त विच कदे ना आईआ। दो जहानां आप मुख़तैयार, मुफ्त आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग कूड़ा मेटे विकार, विश्व आपणा राह जणाईआ। पंडत पांधे लए उठाल, चौदां विद्या भेव खुल्हाईआ। लेखा जाणे दीन दयाल, देवणहारा थाउँ थाईंआ। मेल मिलाए शाह कंगाल, शाह कंगाल इक्को रूप जणाईआ। सुणनहारा मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत रहे भाल, भाल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुरत लए संभाल, सवाणी भज्जे ना वाहो दाहीआ। नानक गोबिन्द भविख्त वाक् लए पाल, वाक्य वेखे थाउँ थाईंआ। ख़ाका खिच्चे बेमिसाल, कलम शाही ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथा महल्ला इक

७६८
१३

इकल्ला एकँकारा इक जणाईआ। चौथे मन्दिर चढ़ के बोले, अनबोलत भेव जणाईआ। भगत जनां दा कुण्डा खोल्हे, आत्म पड़दा दए उठाईआ। निरगुण हो के निरगुण मौले, मौला नज़र किसे ना आईआ। सन्तन करे भार हौले, भार आपणे कंध उठाईआ। गुरमुखां वसे सदा कोले, कँवल नाभी अमृत झिरना आप झिराईआ। गुरसिख वेखे काया डोले, मुख घूँगट पड़दा लाहीआ। निरगुण सरगुण सुणाए ढोले, सोहँ इक पढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर रत्त मूल ना खौले, सांतक सति सति कराईआ। मन वासना ना पाए रौले, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। लख चुरासी आपे टोह लए, घर घर बैठा माहीआ। आपणी वस्त रखे कोले, जिस भावे दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्चे मन्दिर फेरा पाईआ। साचे मन्दिर चढ़े छत्त, हरिजन छाती नाल लगाइंदा। इक्को देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। चार वरन मार्ग दस्स, चार यारी पन्ध गवाइंदा। पुरख अकाल इक्को नत, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म देवे दात, दाता दानी झोली पाइंदा। सृष्ट सबाई बणे इक जमात, इक्को पट्टी आप समझाइंदा। इक्को कलम इक दवात, इक्को शाही पाणी मेल मिलाइंदा। इक्को नूर इक्को ज़ात, ज़हूर इक्को खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्च महल्ले आसण लाइंदा । उच्ची छत्त देवे सांत, सति सति वरताईआ। गुरमुखां कढ्ढे भरम भरांत, भरम गढ़ तुड़ाईआ। नज़री आए इक अबिनाश, अबिनाशी दया कमाईआ। पहली चेत्र सब दी पूरी करे खाहश, जो बैठे ध्यान लगाईआ। जूठ झूठ करके फ़ास फ़ास, फ़ैसला देवे दूर मुकाईआ। नज़री आए साख्यात, साहिब आपणा रूप वटाईआ। सच संदेसा दस्से इक्को बात, ज़ाहर बातन कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण इक दरसाईआ। उच्चे मन्दिर खोल्हे नैण, नैण नैण जणाईआ। साहिब सतिगुर आए लैण, लहिणा झोली पाईआ। हरिसंगत विच दस्सणा बहिण, दूई द्वैती पन्ध मुकाईआ। गुरमुख नाता भाई भैण, अक्ख अक्ख ना कोए उठाईआ। सतिगुर सरनाई गुरसिख ढहिण, ढह ढह खुशी मनाईआ। अन्त ना खाए लाड़ी मौत डैण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साहिब सतिगुर आए लैण, चित्रगुप्त लेखा दए मुकाईआ। साचे घर गुरमुख बहिण, जिस घर वज्जे हरि वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान गायण इक्को गायण, गहर गम्भीर खुशी मनाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रैण, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथा पद दए वखाईआ। गुरमुख वेखणा चौथा पद, प्रभाती आप जणाईआ। जुग जुग विछड़े लए सद्द, सद्दा नाम सुणाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया पार करो हद्द, हदूद कोई रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म दी इक्को यद्द, ब्रह्म वंड वंडाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच खैहड़ा दयो छड्ड, श्री भगवान चरण ध्यान लगाईआ। बिन हरि

७६६
१३

नामे ख़ाली दिसण हड्ड, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। अमृत पीयो इक्को नाम मध, मध प्याला दयो रुढ़ाईआ। हलाली कुठा खाणा दयो छड्ड, झटका झटक ना कोए कराईआ। प्रभ सच्चे दा माणो रस, जिस रस विच ब्रह्मा विष्न शिव समाईआ। आत्म परमात्म लै लओ हक़, हिस्सा आपणा अन्त वंडाईआ। श्री भगवान अग्गे भगतो जाओ डट, आपणा बल वखाईआ। जिन्ना चिर साडे अन्दर ना खोलें हट्ट, आपणी सेव कमाईआ। जोत प्रकाश ना होवे लट लट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पुरख अकाल तूं देंदया ना जाएं थक्क, तेरे घर तोट ना राईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेंहदयां गए थक्क, कवण वेला निहकलंक फेरा पाईआ। कलिजुग जीवां कोलों फिरदे बच बच, कोई देवे ना धक्का लाईआ। बौहड़ी दरोही खुदा दी परवरदिगार किसे दवारयों मिले ना सच, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, कूड़ी क्रिया कुकर्मी कुकर्म कमाईआ। धीरज सन्तोख छड्डया सब ने हठ, विभचार रहे कमाईआ। किसे सन्त ना रिहा सति, सती नार ना कोए जणाईआ। कलिजुग सब दी मारी मति, मतिवाली होई जगत लोकाईआ। राज राजान शाह सुल्तान हाकम मदिरा हथ्थीं पीण गट गट, रसना बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। फिर उच्ची कूकण पारब्रह्म दी जड़ देदीए पट्ट, साडे हथ्थ हुक्म आपणा बल जणाईआ। कूड़ी क्रिया सत्थर बैठे घत्त, विशा सच नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्को मार्ग देवे लाईआ। इक्को मार्ग लावेगा। हरि साजण सच मिलावेगा। राजन राज समझावेगा। काजन काज रचावेगा। लाजन लाज रखावेगा। नाचन नाच नचावेगा। आंचन आंच लगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को घर वखावेगा। जन भगतां इक्को घर वखावांगा। इक्को दर खुल्लावांगा। इक्को नर जणावांगा। इक्को डर मुकावांगा। इक्को सर नुहावांगा। इक्को गढ़ तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल इक रुशनावांगा। महल अटल इक रुशनाएगा। निहचल धाम सुहाएगा। अस्थिल घर वसाएगा। थिर घर सोभा पाएगा। सचखण्ड डेरा लाएगा। सो पुरख निरँजण नाम धराएगा। हरि पुरख निरँजण फेरा पाएगा। एकँकारा वेख वखाएगा। आदि निरँजण जोत निरँजण पड़दा लाहेगा। श्री भगवान सगला भेव चुकाएगा। अबिनाशी करता घर घर वेख वखाएगा। पारब्रह्म ब्रह्म समझाएगा। कर्म धर्म इक जणाएगा। निहकर्मी निहकर्मी कर वखाएगा। वरन बरन डेरा ढाहेगा। तरन तारन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथा पद इक वखाएगा। चौथें घर पहला कदम, जन भगतां आप रखाईआ। लेखा जाणे निरगुण अदम, अन्त वड वड्याईआ। सब दे निरगुण चरण विच निरगुण रखे पदम, पर्दा सरगुण चमड़ा उत्ते पाईआ। आत्मा बंद रखे काया बदन, पंज तत्त चोला इक वखाईआ।

कर किरपा जुग जुग भगतां आवे सद्दण, सदा इक्को इक सुणाईआ। अन्तिम लहिंदी दिशा मुस्लिम लेखा मेला होए अदन, अदना सब नूं दए कराईआ। जलों थलों बाहर आए कड्ढण, डूँग्घे सागर फेरा पाईआ। भाईआं कोल भाई आए छड्डण, खैहड़ा जगत लोकाईआ। गुरमुख सच्चे गुर दर गज्जण, सोहँ ढोला लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लख चुरासी आप पढ़ाईआ। लख चुरासी इक्को अक्खर पढ़ना, हरि सतिगुर आप पढ़ाईआ। साचे पौड़े घर विच चढ़ना, घर घर विच दए दरसाईआ। सुरत सवाणी शब्दी पल्लू फड़ना, एका गंढु पवाईआ। लेखा चुके जम्मणा मरना, जन्म मरन रहे ना राईआ। श्री भगवान इक्को वरना, कन्त भगवन्त बेपरवाहीआ। साची सेजे सहिज सुभाउ चढ़ना, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मिल के मेल सोहँ ढोला पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर तेरा भाणा जरना, पंज तत्त माटी कम्म ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्हे गोबिन्द, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। नव नौ चार मेट चिन्द, पिछला लेखा सब दी झोली पाइंदा। दीन दयाल बण बख्शंद, बखशिश मेहर नज़र उठाइंदा। लहिणा देणा चुका सुरप्त इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां अमृत आत्म धार दे सिन्ध, आपणे सागर विच मिलाइंदा। आप प्रगटा अनादी बिंद, पूत सपूते गोद सुहाइंदा। योद्धा सूरबीर मरगिंद, बल इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा आपणे रखे हथ्थ, हथ्थो हथ्थ मुकाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, डोरी आपणा नाम बंधाईआ। भगत भगवान कर इकठ्ठ, इक्को वार मंज़ल दए चढ़ाईआ। अद्धविचकार कोई ना जाए ढठ्ठ, ईड़ा पिंगल सुखमन टेडी बंक पंच विकार आसा मनसा कोए ना सके अटकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत जगाए लट लट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। गुरमुख गुरसिख सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मार्ग दस्स, आदि जुगादी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहञ्जणी साची सेज जन भगतां आप विछाईआ। हरि भगत सेज सुहावणी, सोभावन्त एक। श्री भगवान आप विछावणी, कर आत्म बुध बिबेक। करे कराए पूरी भावनी, पूरब लेखा वेख। मेट मिटाए कामन कामनी, देवे सच संदेस। सेज इक्को नर हरि रावणी, निरवैर खोल्हे भेत। प्रभ देवे सच्ची ज़ामनी, गुरमुख झूजे साचे खेत। दरस कराए करे आम्हणो साम्हणी, लेखा चुके नेतन नेत। गुरमुख पूरी करे भावनी, अन्दर वड़ के दस्से भेत। लेखा चुके बल बावनी, सतिजुग चले अवल्लड़ी खेड। नाता तुटे राम रावनी, तीर कमान लाए ना कोई छेक। लेखा जाणे कंसा काहना शामनी, शहिनशाह खेल करे अनेक।

८०१
१३

ईसा मूसा मुहम्मद करे सलामनी, अलैकम कोई ना जाणे भेत। नानक गोबिन्द इक पहचाननी, सतिगुर साहिब जन भगतां लग्गण ना देवे सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच संदेस। सच संदेसा सुणो गुरमुख, गुरसिख मिले वड्याईआ। जन्म जन्म दा मिटे दुःख, दलिद्दर रहिण ना पाईआ। सफल होए मात कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। श्री भगवान गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। कलिजुग वेला आया ढुक, नेरन नेर रिहा दरसाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया विच्चों जाओ उठ, जूठ झूठ तजाईआ। सतिगुरू दवारा लओ पुच्छ, जिस मिलयां अगला पिछला वछोड़ा रहे ना राईआ। अन्तिम बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। अबिनाशी करता बीस बीसा बहे ना लुक, लुकवीं खेल ना कोए जणाईआ। शहिनशाह हो के पए बुक्क, राष्ट्रपति दए समझाईआ। प्रभ साचे दे साचे बण जाओ पुत्त, पिता पूत वज्जे वधाईआ। पंचम जेठ जो गए रुस्स, रुसयां फेर ना कोए मनाईआ। किसे हथ्थ ना रहिणा कुछ, किशती कलिजुग रिहा डुबाईआ। मंगो दान सीस झुक, झुकवीं खेल समझाईआ। जो एस निशान्यौं गया उक, नशा लथ्थे जगत खुदाईआ। अन्तिम ख़ाली दिसणे बुत्त, रूह मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन खुल्हाए इक्को दर, बरन अठारां होए सहाईआ। चार वरन आओ नट्ठ, चारे खाणी रिहा जणाईआ। बरन अठारां हो इकट्ठे, पुराण अठारां दए दृढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां एका नाम रंग रत्ते, रत्ती रत्त कूड़ी दए सुकाईआ। विश्व देवे इक्को मत्ते, विश्वाश सब दा आप रखाईआ। पहली चेत्र ख़ाली दिसण भाण्डे मदीने मक्के, मतलब हल्ल ना कोए कराईआ। ईसा मूसा जो बण के बैठे भाई सके, भावी सब ते दए वरताईआ। अल्ला राणी किसे दा लै के जाए ना भत्ते, ठंडा पाणी ना किसे प्याईआ। कुरान टंगे रहि जाण उपर छत्ते, छाती नाल ना कोए लगाईआ। ख़िज़ां रुत्त झड़ने पत्ते, बसन्त रूप ना कोए वखाईआ। गोबिन्द डंका इक्को वज्जे फ़तहि, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। वेखे खेल दीगरे बाद यक्के, आपणा खेल रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे दरुसत हो के चुस्त चुकन्ना, नेत्रों अन्न्हां दो जहान फिरे भंनां, किसे कोलों ना मन्ना, पीर पैगम्बर रहे कुरलाईआ। अन्तिम किसे कोलों ना मन्नदा, सारे देण दुहाईआ। वेखो खेल श्री भगवान दा, लोक परलोक पढ़ाईआ। नाता तोड़े झूठे ज्ञान दा, शरअ वंड ना कोए रखाईआ। निशाना मारे तीर मेहरवान दा, मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखा चुकणा चौदस भान दा, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। हुण वेला होया निहकलंक नौजवान दा, बल सब दे दए गंवाईआ। पूरब जन्म दे विछड़े आप पछाण दा, जागदयां सुत्तयां रिहा मिलाईआ। लहिणा चुके ढोले गाण दा, राग सतार तन्द ना कोए हिलाईआ। इक्को आसरा रहि जाए श्री भगवान

दा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। लख चुरासी बेला जगत महिमान दा, अन्तिम बसता सब दा सीस टिकाईआ। आदि जुगादी सर्ब जीआं घट आपे जाणदा, जानणहारा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल निगहबान दा। निगहबान होया बिन अक्ख, बिन नेत्रां वेख वखाईआ। निगहबान होया प्रतख, बिन लत्तां बांहवां भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। निगहबान होया प्रगट, बिन मन्दिर मकान चार दीवार छप्पर छन्न डेरा लाईआ। निगाहबान खोल्ह हट्ट, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। निगहबान नाम निधान मारे सट्ट, अनहद नादी नाद जणाईआ। निगहबान दूई द्वैती शरअ शरायती मेट फट्ट, घाउ आपणी हथ्थीं बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज राजान शाह सुल्तान राउ रंक ऊँच नीच साध सन्त जीव जंत आत्म परमात्म मार्ग दस्स, पारब्रह्म ईश जीव जगदीश जगदीशर आप मिलाईआ। हरि सतिगुर आप मलंदड़ा, मेलणहार करतार। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, शहिनशाह शाह सिक्दार। दर दरवेश आप अख्वंदड़ा, मंगणहारा बण भिखार। सोभावन्त धाम सुहंदड़ा, सम्बल नगर अगम्म अपार। निरगुण इक्को विच वसंदड़ा, जोती जाता हो उज्यार। नाम डंका इक सुणंदड़ा, सति सतिवादी खेल अपार। दो जहानां वेख वखंदड़ा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां वसे बाहर। सन्त सुहेले मेल मलंदड़ा, मेल मिलावा कन्त भतार। भगत भगवान आप जगंदड़ा, नेत्र अक्ख खोल्ह कवाड़। शब्दी हुक्म आप सुणंदड़ा, उठो हो तैयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत कर प्यार। हरिसंगत मेला दो दो, दो दो धार चलाईआ। हरिसंगत चेला हो हो, हो हो सेव कमाईआ। हरिसंगत अमृत चो चो, निझर रस चखाईआ। हरिसंगत वस्तू खो खो, झोली तुहाढ्ढी रिहा भराईआ। हरिसंगत साची लो लो, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरिसंगत साची मोह मोह, मुहब्बत इक दरसाईआ। हरिसंगत साची टोह टोह, गुरमुख रूप वटाईआ। हरिसंगत कूड़ी क्रिया कोह कोह, बक्करा मारे बण कसाईआ। हरिसंगत वसे लूं लूं, रोम रोम समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेअन्त बेपरवाहीआ। दो दो मेल हरि का खेल, भेव भेव जणाइंदा। साचे वस्त्र चढ़े तेल, सच वछाउणा आप वछाइंदा। लेखा जाण सज्जण सुहेल, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा। हरिसंगत रंग अपार, गुरमुख वड वड्याईआ। दवाबा फड़या दित्ता तार, आपणे नाल मिलाईआ। सेवा पूरी करे इक्को वार, पिच्छे अग्गे रहिण कोए ना पाईआ। साचे बिस्तरे उत्ते दए स्वाल, जो सीस लए टिकाईआ। हरि का खेल बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। अठाई अठाई कुण्डां विच्चों कीते पार, अठाई गुरमुख बिस्तरे भेंट कराईआ। पहलों नहीं दित्ते सिखाल, बिन दस्सयां बिन

पुच्छयां लै के आए वाहो दाहीआ। प्रभ आपणी गोदी लए उठाल, फेर सके ना कोए जगाईआ। साचे मन्दिर ना कोए शाह रिहा ना कंगाल, शहिनशाह इक्को रंग वखाईआ। हरिसंगत फड़ फड़ बांहों प्रेम बिसतरयां उत्ते दए स्वाल, थपक थपक आपणी नींद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ला ठोकर लए उठाईआ। ठोकर ला उठाए छोकरे, शक्ती इक समझाईआ। कट्ठे हो जाओ बाबे पोतरे, निक्का वड्डा पिच्छे कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिख अन्त रिहो ना मात औंतरे, सौंतरा आपणा आप वखाईआ। सचखण्ड बहि जायो ला के चौंकड़े, सच सिँघासण हेठां दए विछाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ला के वेखण ओकड़े, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिस दे पिच्छे कईआं जन्मां विच मांवां धोंदीआं रहीआं पोतड़े, बणा पुत्तर लाड कराईआ। खारी चुक के फिरदीआं रहीआं विच टोकरे, होका देवण थाउँ थाईंआ। जिस दे अक्खरां नाल गिणदे रहे अंकड़े, उंगलां उत्ते हिसाब लगाईआ। उस दे सोईए जा के बंकड़े, बंक दवारा इक्को नज़री आईआ। अग्गों साहिब सच्चा टक्करे, टक्कर सिधी आपणे नाल लगाईआ। हुण रहिण ना देवे मकरे, पिछला फ़रेब दए गंवाईआ। गुरसिख क्यों होए बेसबरे, सबर प्याला दए प्याईआ। आपणी हथ्थीं भरती करे जबरे, ज़बरदस्ती करे लोकाईआ। गरजे इक्को सिँघ शेर बब्बरे, बब्बर सब दे पाड़ धराईआ। तुसीं चरणां हेठां किउं अम्बरे, अमर मिलो हो के इक्को थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेज सुहञ्जणी रिहा वछाईआ। सेज सुहञ्जणी हरि वछाउणा, नर हरि साचा आप वछाइंदा। राह तक्के मूल ना थक्के मेरे गुरमुख आउणा, नैण नैण नैण उठाइंदा। दोहीं हथ्थीं साफ़ कराउणा, आपणी सेवा आप कमाउणा, कर कर सेवा शुकर मनाइंदा। जिस सेजे मेरा भगत सौणा, उस नूं प्रेम नाल मैं धोणा, बण धोबी आपणा फ़र्ज पूर कराइंदा। जिस प्रेम विच सन्त सुहेले रौणा, सो आपणी अक्ख होर ना किसे वखाइंदा। जिस स्वाद नाल गुरमुख राग गाउणा, सो नाद ना किसे जणाइंदा। जिस गुरसिख पिच्छे लोकमात तजाउणा, फिर फिर चक्र लगाइंदा। सो गुरमुख गुर सतिगुर जिहा होणा, होर रंग ना कोए बदलाइंदा। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो अग्गे किसे ना पए रोणा, जींवदयां रोणा सर्ब मुकाइंदा। प्रभ दी सेजे चढ़ के सौणा, सुत्तयां ना कोए उठाइंदा। एह खेल होणा अनहोणा, जिस दा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मन मोहण मोहण मन मोहणा रूप वटाइंदा। मोहण आया लै के मोह, मोहर आपणे नाम लगाईआ। अन्दर वड़ के गया नाल छोह, बाहरों नज़र कोए ना पाईआ। जन भगतां जोगा गया हो, जुगती पिछली दिती गंवाईआ। डरदा डरदा लै के आया धुर दा ढोआ ढो, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण हो के रिहा सो, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। हँ ब्रह्म बीज आपणा बो, फुल फुलवाड़ी वेखे चाईं चाईंआ।

गुरमुख फुल दूजा कोई ना लवे खोह, कलिजुग कन्डयां वाड़ हथ्थ ना कोए पाईआ। हरिसंगत जिस नाता जोड़या छब्बी पोह, आपणा आप गंवाईआ। सब दे नालों हो निरमोह, मुहब्बत गुरमुखां विच प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिसंगत हरि शब्द करे कुड़माईआ। होए कुड़माई पाए सगन, सगली चिन्त मिटाइंदा। आत्म परमात्म प्रेम प्रीती रखे मघन, मोह मुहब्बत इक वधाइंदा। अनडिठ साहिब चाढ़े रंगण, रंग रंगीला दया कमाइंदा। कृपानिधान स्वामी ठाकर लाए अंगन, अंगीकार इक अख्वाइंदा। जन भगतां लाहे झूठी संगण, मुख पड़दा आप चुकाइंदा। देवणहारा अनन्द अनन्दन, अनन्द अनन्द विच जणाइंदा। तोड़नहारा बंदी बन्धन, बन्दन इक्को वेर लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा गीत छन्दन, सोहला सच दृढ़ाइंदा। छन्द बंद बिन बत्ती दन्द, सूरा सरबँग जणाईआ। नूर चन्द साहिब बख्शंद, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, हरिसंगत मेला दो जहान, गुर चेला वखाए इक अस्थान, नज़री आए श्री भगवान, भगवन आपणे रंग रंगाईआ।

८०५
१३

❇ २ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ❇

हरि वधाई संगत वाधा, सतिगुर दया कमाइंदा। पुत प्यो नाल तरे दादा, श्री भगवान आप तराइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे वाअदा, कीती करनी भुल्ल ना जाइंदा। ठाकर स्वामी बण के साका, सज्जण घर घर मेल मिलाइंदा। निरवैर जोड़ नाता, बिधाता आपणा रंग वखाइंदा। आत्म आत्म बणे साथा, परमात्म राह जणाइंदा। भाग लग्गे मस्तक माथा, मस्त खुमारी नाम वखाइंदा। सति पुरख दी साची गाथा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जीवण जुगती चले राथा, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। अग्गे पिच्छे रहे ना घाटा, एथे ओथे वेख वखाइंदा। उत्तम रखे हरि जू ज़ाता, ज़ात आपणी आप दृढ़ाइंदा। करे खेल बण के पिता माता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। माता पिता वेखे बालक, बचपन आपणा दए जणाईआ। दीन दयाल साचा ख़ालक, ख़ालक इक्को धंदे लाईआ। सति सरूपी बण प्रितपालक, समरथ देवे वड्याईआ। पिछली लाहे निंद्रा आलस, जाग इक्को इक जणाईआ। चार वरन अठारां बरन बणे ख़ालसा ख़ालस, ख्वाहिश आपणे नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द विचोला सालस, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बालक बाला बाल अञ्याण, एका गुण जणाईआ। चतुर सुघड़ वेखे मार ध्यान, बेअन्त बेपरवाहीआ। सति सतिवादी सच विधान, सति पुरख निरँजण आप बणाईआ। चार वरनां इक ज्ञान, चार कुण्ट समझाईआ। चार जुग खेल महान, जुग जुग कथ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बाल अंञाणा बाली बुध, बल इक्को इक जणाइंदा। गुरमुख वेख निर्मल दुद्ध, सीर सीर नाल मिलाइंदा। सति दवारे आपे पुज्ज, सच पूजा इक दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म भेव खोल्हे गुझ, तत्त तत्त नाल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सतिगुर ओट, ओट अकाल जणाईआ। कूड़ी क्रिया निकले खोट, दुर्गन्ध वासना रहिण ना पाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोत जोत रुशनाईआ। घर बंक दवारा वेखो कोट, कंचन गढ़ दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखाईआ। साचा रंग रंग रंगीला, रंग इक्को इक जणाइंदा। भगत भगवान बण वसीला, वस्त साची झोली पाइंदा। हरिसंगत बणाए नाम कबीला, गुरमुख सज्जण मेल मिलाइंदा। नज़री आए छैल छबीला, शहिनशाह आपणा रूप वटाइंदा। दूजी देवे ना कोए दलीला, दिलदार इक्को राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल जगत जुग, हरि करता आप कराईआ। पिछला पैंडा रिहा मुक्क, अग्गे मार्ग रिहा जणाईआ। चार वरन इक्को सुख, सुख आत्म इक समझाईआ। ऊँच नीच मेट दुःख, दुखियां दर्द वंडाईआ। नाता तोड़ माया भुक्ख, भुख्या दए रजाईआ। गुरमुख सज्जण गोदी चुक्क, इक हुलार वखाईआ। सफल करा मात कुक्ख, जन जननी दए वड्याईआ। बण विचोला करे उज्जल मुख, मुख मुखड़ा आप धवाईआ। हरिजन बूटा ना जाए सुक्क, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्को लाईआ। साचा मार्ग लग्गणा मात, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। सतिजुग बणना इक जमात, दूजा राह ना कोए वखाइंदा। बिन हरि नाम तों दूजी कोई ना देवे दात, भूशन वस्त्र कम्म किसे ना आइंदा। माता पिता पुत्तर धीआं समझावे साची गाथ, सोहँ अक्खर इक पढ़ाइंदा। बाली बाला जुड़े नात, नाता इक्को इक जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म इक्को ज़ात, पत पतणी इक्को ओट वखाइंदा। कहिण सुणन दी नहीं बात, सतिजुग करनी कर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा राह जणाइंदा। साचा राह जणाए आप, जन जननी वड वड्याईआ। भगत भगवन्त बण माई बाप, पिता पूत सगन वखाईआ। देवणहारा इक्को जाप, जीवण जुगत दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विचोला इक अख्वाईआ। हरिजन तेरा

शब्द वचोला, सौहरे पेईए फेरा पाइंदा। खुशीआं नाल सुणावे ढोला, दोवें घर समझाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना खोले उहला, पड़दा दूई ना कोए हटाइंदा। कूड़े साक पावण रौला, मुख थुक्कां नाल भराइंदा। हरिजन अमृत मिले आत्म कौला, कँवल नाभी आप उलटाइंदा। जिस ने जन्म दवाया उपर धौला, सो जन्म कर्म आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाइंदा। साचा घर सतिगुर, गुर सतिगुर दए वड्याईआ। मेल मिलाए लेखा धुर, धुर संजोगी वेख वखाईआ। लोक लज्जया विच ना आए मुख, मुख मुखड़ा गुर सालाहीआ। हरिसंगत विच मिटे दुःख, दुखियां दर्द आप वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत प्रीती भगतां नाल प्रनाईआ। भगत प्रीती भगत कुड़माई, कुड़म कुड़मेटा वेख वखाइंदा। इक्को घर धी जवाई, सौहरे पेईए इक्को घर बणाइंदा। इक्को परमात्म इक्को आत्म लए प्रनाई, प्रनाई आत्म आत्म नाल मिलाइंदा। निरगुण दाता पुरख बिधाता साचे दीपक कर रुशनाई, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। घर आया चल दवारे आदि शक्ति माई, निरगुण साचा सगन वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक समझाइंदा। आदि शक्ति चढ़या चा, सूहे कपड़े रही वखाईआ। आओ वेखो सच्चा थाँ, प्रभ साचा आसण लाईआ। हरिसंगत फड़ के बैठा बांह, सभनां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग साचा दस्से राह, रहबर बण नूर इलाहीआ। जगत नाता रिहा जुड़ा, पुरख बिधाता दया कमाईआ। पत पत्नी मेल मिला, पात्र इक्को इक दरसाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल सरगुण पंज तत्त काया बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणी गंढु पवा, पिछली गंढु दए खुल्हाईआ। गानां बन्ने नाल चा, तन्द इक्को नाम जणाईआ। वटणा मले सहिज सुभा, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख खारे दए चढ़ा, सच अशनान इक कराईआ। मातलोक विच्चों उच्ची छाती दए करा, सचखण्ड दुआर बहाईआ। भंनी आवे पिच्छे वाहो दाह, फड़या पल्लू छुट ना जाईआ। सच्चा विवाह सच्चा नकाह, बिन बेदी दए कराईआ। गुरमुख चार जुग दे विछड़े बणन गवाह, अन्त मुकर कोए ना जाईआ। प्रभ दा सारे कहिन्दे कदे ना करो वसाह, अछल अछल्ल आपणी धार चलाईआ। पारब्रह्म कहे मैं किरपा करके कोट जन्म दे बख्श देवां गुनाह, जो जन आयण सरनाईआ। जन्म देण वाले जगत पिता माँ, आत्म परमात्म पुरख अकाल आपणी अंस बणाईआ। नथाव्याँ देवणहारा थाँ, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए समझाईआ। हरिसंगत कूड़ी छड्डुणी आस, आसा आप मुकाइंदा। दाज दौण दी रहे ना प्यास, प्यास अमृत नाल बुझाइंदा। आत्म परमात्म आए रास, रस इक्को इक वखाइंदा। साची वस्त मंगो प्रभ वसीए चरणां पास, दूजा श्रृंगार कम्म किसे ना

आइंदा। पत पतणी होवण इक दूजे दे दासी दास, आपणा माण ना कोए रखाइंदा। दु:ख रोग सोग जाइण विनास, अबिनाशी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। साचा राह दस्से मीत, मित्र प्यारा वड वड्याईआ। इक्को हरि हरि गाओ गीत, गीत गोबिन्द रिहा जणाईआ। काया ठंडी होए सीत, सतिगुर मिले सरनाईआ। दिवस रैण पूरी करे रीझ, जिस जन आपणा दरस कराईआ। नेत्र नैण जाण पतीज, कज्जल धार ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नूं आपणी अक्ख दरसाईआ। वड्डा छोटा छड्डो खेहड़ा, हरि ख़ालक ख़लक जणाइंदा। जिस नूं प्रभ ने किहा तूं मेरा मैं तेरा, सो गुरमुख इक्को रंग नज़री आइंदा। लोक लज्जया छड्डो कर के वड्डा जेरा, जेरज अंड कम्म किसे ना आइंदा। कूड़ी क्रिया रंग माणया पिच्छे बथेरा, अग्गे सतिगुर पल्लू आप छुडाइंदा। सेवक बण के बन्न्हे बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत आप समझाइंदा। हरिजन नारी हरिजन कन्त, भगवन्त दए वड्याईआ। हरिजन साध हरिजन सन्त, सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन भूशन हरिजन चढ़े रंग बसन्त, रंग उतर कदे ना जाईआ। हरिजन मणीआं हरिजन मंत, हरि इक्को नाम पढ़ाईआ। हरिजन महिमा हरिजन अगणत, लेखा गणत विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मेला गुरमुख मीत, हरि सज्जण सच दृढ़ाया। नाता चुके पिछली रीत, पिच्छा दूर नेड़ा अग्गे आया। हरिसंगत नाता तुटे मन्दिर मसीत, मोह मुहब्बत इक जणाया। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाए गीत, जुग जन्म दी विछड़ी जोड़ी जोड़ जुड़ाया। गुरमुख कोलों गुरमुख चली रीत, गुरमुख गुरमुख झोली पाया। सतिगुर कहिणा मन्नो ठीक, काया ठीकर अन्तिम कम्म किसे ना आया। जिस नूं गोबिन्द कह के गया धार बारीक, सो नीकन नीकी रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग जणाए साची रीत, गुरमुख जोड़ी फूलनहार गल पहनाया।

✻ ६ फग्गण २०१८ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह ठीकरी छन्नां ज़िला करनाल ✻

बिरहों कुठी रोवे कूंज, मन वैरागी नैण उठाईआ। ज़िमी असमान पाए गूंज, चले वाहो दाहीआ। बिन सति प्रेम प्रीती कोई ना जाए झूज, रोवत रोवे सर्ब लोकाईआ। गुरमुख नेत्र गुर सतिगुर देवे पूंझ, छहबर आपणे विच मिलाईआ। हर घट अन्दर रिहा बूझ, बूझ आपणी आप जणाईआ। लेखा जाणे डूँग्घे सागर गूझ, भेव अभेद आप चुकाईआ। सति वस्त

हरिजन हरि दवारे रिहा लूझ, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। देवणहार आप महिबूब, मेहरवान बेनज़ीर दया कमाईआ। हुजरा हक़ वखाए अरूज, नूर ज़हूर महिराब रुशनाईआ। जगत किनारा पार हदूद, भगत दुआर वड्याईआ। देवणहारा असल नाल सूद, पूरब लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा तृष्ना तृष्ना आसा आसा नाल वखाईआ। आसा तृष्ना मिटे प्यास, धीरज धीर इक धराइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। जुग चौकड़ी पावे रास, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाइंदा। निरगुण निरवैर जोत कर प्रकाश, सरगुण साचा संग निभाइंदा। वेखणहार पृथ्मी आकाश, भगत भगवन्त भेव चुकाइंदा। जन्म कर्म धर्म पूरब पूरी करे आस, आसा पूरन आप अख्वाइंदा। गहर गम्भीर डूँग्घा वखाए खात, घाटा कोए नज़र ना आइंदा। हरिजन वेखे मार झात, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। नाता तुटे आफ़्ताब, चन्द नूर ना कोए चमकाइंदा। लहिणा चुक्के हयात आब, झिरना निझर ना कोए वखाइंदा। जिस जन कर किरपा मिले आप, आप आपणा रंग वखाइंदा। एथे ओथे माई बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। जिस जन देवे सच्चा जाप, पुत्त पोतरे रंग रंगाइंदा। सो साहिब पाकी पाक, पतित पुनीत वेख वखाइंदा। खोल्हणहार अगम्मी ताक, पड़दा द्वैत आप उठाइंदा। आत्म परमात्म वखाए इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरी आसा आसा पूर पूरन भरवासा इक वखाइंदा। पूरी आसा सतिगुर पाया, मन तन वज्जे वधाईआ। त्रैगुण डेरा जगत ढाया, ढाह ढाह ख़ाक वखाईआ। कूड़ी क्रिया पन्ध चुकाया, माया ममता मोह तजाईआ। आसा तृष्ना धक्का लाया, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। साची संगता मेल मिलाया, शरअ संगल कट वखाईआ। साचे अंगण आप उठाया, गोदी गोद गोद बहाईआ। नाम मृदंगण इक वजाया, नाद अनादी राग अल्हाईआ। साचा छन्दन इक सुणाया, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा देवणहार, दाता दानी इक अख्वाइंदा। भरनहार ख़ाली भण्डार, भरे ख़ाली आप जणाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी वस्त मात वरताइंदा। मातलोक खेल अपार, निरगुण सरगुण राह चलाइंदा। निरगुण सरगुण लेखा संसार, संसार सागर विच फिराइंदा। लख चुरासी जोत आधार, शब्द राग अल्हाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार, कोटन कोटि काल चरणां हेठ रखाइंदा। भगत वछल हो दयाल, भगवन आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे लाल, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरण दुआर सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वखाइंदा। निरगुण निरवैर चले नाल नाल, मूर्त अकाल अजूनी रहित नज़री आइंदा। सति सतिवादी बण दलाल, वणज वणजारा इक्को हट्ट वखाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सो जन गुरमुख रूप वटाइंदा। नाम धन अतुट ख़ज़ाना, शहिनशाह आप वरताईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। गुरमुखां मारे तीर निशाना, अणयाला बाण चलाईआ। देवे दरस श्री भगवाना, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। काग़ज़ कलम होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। भगत भगवान वसण इक मकाना, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर डेरा लाईआ। पिता पूत वेखे चतुर सुजाना, सुघड़ आपणा राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां इक्को नाम करे रुशनाईआ। जन भगतां लाए साची जड़, लोकमात ना कोए उखड़ाइंदा। धुर दरगाही आपे फड़, बेपरवाही मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ सीस धड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। डूँघी कन्दर आप वड़, सच महल्ले सोभा पाइंदा। सोहँ अक्खर इक्को पढ़, तूं मेरा मैं तेरा एका राह जणाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नड़, जोती जोत डगमगाइंदा। देवणहारा साचा वर, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। ईश जीव जगदीश किरपा कर, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस आपणा घर वखाइंदा।

❇ ६ फग्गण २०१६ बिक्रमी अर्जण सिँघ दे गृह बलोच पुरा ज़िला करनाल ❇

सचखण्ड दुआर सुहा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। थिर घर खेल बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। एकँकार अगम्म अथाह, निरगुण आपणी धार प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सच्चा शहिनशाह, शाहो भूप खेल कराइंदा। श्री भगवान बेअन्त अखवा, साचे तख्त सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दोए जोड़ सीस झुका, निउँ निउँ सजदा इक कराइंदा। शाह सुल्ताना नौजवां, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। मुकामे हक़ डेरा ला, लाशरीक सोभा पाइंदा। सच तौफ़ीक इक खुदा, नूर ज़हूर आप प्रगटाइंदा। महल अटल कर रुशना, निरवैर रंग रंगाइंदा। राजन राज भूपत भूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल सचखण्ड दुआर, हरि साचा सच कराइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह आसण लाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म अल्लाइंदा। निरगुण निरगुण पावे सार, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर उच्च महल्ला, मेहरवान दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण इक इकल्ला, हरि पुरख निरँजण सोभा पाईआ। एकँकार फड़ा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। आदि

निरँजण दीपक जोत प्रकाश आपे बला, दीवा बाती ना कोए वड्याईआ। श्री भगवान सच संदेस नर नरेश निरवैर पुरख एका घल्ला, बोध अगाध पढ़ाईआ। अबिनाशी करता आदि जुगादि अटल अटला, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म दर दरवेश गल पा पल्ला, अलख निरँजण इक अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे तख्त सोभा पाईआ। साचे तख्त सच तौफ़ीक, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला नूर नूराना डगमगाइंदा। मूर्त अकाल अजूनी रहित लाशरीक, बेनज़ीर वाहद आपणी कार कमाइंदा। आदि जुगादि सद रफ़ीक, वेखणहारा हक़ तहिकीक, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे आप खड़, निरगुण आपणा नैण उठाइंदा। निरगुण नैण खोल्ह अक्ख, आखर आपणी धार चलाईआ। सच दवारे हो प्रतख, दरगाह साची दए वड्याईआ। सर्ब कल हो समरथ, समरथ खेल कराईआ। आपणी महिमा जाण अकथ, आप आपणे विच छुपाईआ। आदि आदि चलाए रथ, जुग जुग वेस वटाईआ। वसणहारा हर घट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप कमाइंदा। निरगुण निरगुण कर कर वंड, हिस्सा आपणी झोली पाइंदा। प्रकाश प्रकाश साचा चन्द, किरन किरन वेस वटाइंदा। जुगादि जुगादि इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, परम पुरख आप कमाईआ। निरगुण देवे निरगुण दरस, दरस दरस नाल मिलाईआ। निराकार मिटाए निरगुण हरस, हवस हवस ना कोए वधाईआ। निरवैर करे निरवैर तरस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी कार कमाईआ। आपणी कार करे करतारा, करनहार आप अख्वाइंदा। आदि आदि कर पसारा, जुग जुग वेख वखाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। खोल्हणहारा धर्म किवाड़ा, थिर घर आपणा कुण्डा लाहइंदा। देवणहारा सच प्यारा, सुत दुलारा शब्द बहाइंदा। करावणहारा वणज वपारा, साचा हट्ट आप जणाइंदा। करनहार सति उज्यारा, विष्न ब्रह्मा शिव रंग रंगाइंदा। वेखणहार फुल फुलवाड़ा, त्रैगुण आपणा बन्धन पाइंदा। लगावणहार सच अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाच नचाइंदा। लेखा जाण धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। बोध अगाधा खेल न्यारा, अलख निरँजण बेपरवाह आपणी कल वरताइंदा। कातब कोए ना बणे लिखारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचे

८११
१३

तख्त निरवैर चढ़, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। दो जहानां वेखे खड़, बेअन्त बेपरवाहीआ। सुत दुलारा फड़ावे लड़, विष्न ब्रह्मा शिव करे कुड़माईआ। त्रै पंज लख चुरासी भाण्डा घड़, घड़ घड़ आपणा रंग रंगाईआ। सरगुण रूप आपे धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। निराकार अन्दर वड़, घट घट जोत करे रुशनाईआ। बोध अगाधी निष्अक्खर पढ़, अक्खर अक्खर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सृष्ट सबाई खोज खुजाईआ। सृष्ट सबाई खेल अपारा, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दे सहारा, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। बोध अगाधा बोल जैकारा, पारब्रह्म ब्रह्म वेता ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म दसाए साचा नेता, शाहो भूप इक्को नज़री आइंदा। दो जहान खेले खेडा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म देवे जाप, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को मंत्र इक्को पाठ, इक सरोवर मारे ठाठ, तट किनारा इक दृढ़ाईआ। तट किनारा एको एक, इक इकल्ला आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण साची टेक, हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। एकँकारा करे बिबेक, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता लिखणहारा लेख, श्री भगवान गंढु पवाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे हेत, नित नवित्त वेख वखाइंदा। लख चुरासी खेले खेल, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। मेल मिलावा गुरु गुर चेल, गुर चेला आप समझाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साहिब सज्जण सुहेल, सतिगुर आपणी कार कमाइंदा। आत्म परमात्म जोत निरँजण आदि पुरख अबिनाशी करता चाढ़े तेल, घर घर विच सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या आदि, आदि शब्दी सुत सति पढ़ाईआ। वजावणहारा नाद अनाद, ब्रह्म ब्रह्माद करे शनवाईआ। लेखा जाण बोध अगाध, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। आपणे विच्चों आपा काढ, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। विष्न करे विश्व लाड, वस्तू इक्को इक दरसाईआ । ब्रह्म मेला पारब्रह्म कमलापात, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। शंकर चरण धूढ़ी टिक्का लाए माथ, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। त्रैगुण माया दासी दास, रजो तमो सतो ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त खेल तमाश, ख़ालक खलक दए जणाईआ। लेखा जाणे रूह बुत्त पाकी पाक, तन माटी खोज खुजाईआ। मुरीद मुर्शद सच्चा साक, परवरदिगार आप बणाईआ। बंधावणहारा सच्चा नात, नाता इक्को घर जुड़ाईआ। वेखणहारा साची ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। आदि जुगादि जुग जुग पाए ना कदे वफ़ात, फ़तवा

रूप ना कोए दरसाईआ। वेखणहारा कायनात, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। धुर फ़रमाना शब्द संदेसा, नर निरँकारा आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी धर धर वेसा, वेस अनेका रूप वटाइंदा। हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेशा, दर दरवेशा सीस झुकाइंदा। हुक्मे अन्दर दो जहान जाणे लेखा, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्मे अन्दर आप फिराइंदा। हुक्मे अन्दर श्री भगवान बणे साचा नेता, धुर फ़रमाना हुक्म अलाइंदा। हुक्मे अन्दर निरगुण सरगुण करे हेता, हितकारी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप जणाइंदा। साची खेल हरि करतारा, कुदरत कादर आप जणाईआ। देवणहारा सच हुलारा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। करनहार सच शृंगारा, वस्त्र भूशन इक सुहाईआ। करनहार एकँकारा, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी इक अवतारा, जुग जुग फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी इक्को नाअरा, नर नरायण दए सुणाईआ। चारे वेदां कर प्यारा, चारे मुख मुख वड्याईआ। चारे खाणी पावे सारा, चारे बाणी नाद वजाईआ। चार जुग दए आधारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ। चार यारी अन्त किनारा, चारों कुण्ट दए जणाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। सेवा ला गुरू अवतारा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। पीर पैगम्बर दे सहारा, मुरीद मुर्शद करे जणाईआ। भगत भगवन्त इक विहारा, बिवहारी आप समझाईआ। सन्त सज्जण दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां खोल्ह बंद कवाड़ा, निज नेत्र दरस दिखाईआ। गुरसिखां बख्शे चरण प्यारा, चरणोदक अमृत मुख चुआईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करे खेल वारो वारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान सार कोए ना आईआ। खाणी बाणी उच्ची कूक कूक करे पुकारा, हाहाकारा सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोलण नाअरा, हक़ हक़ दृढ़ाईआ। कागद कलम शाही बण वणजारा, सेवक सेवा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना जाणे अन्त पारावारा, बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। हुक्मे अन्दर खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कमाईआ। सच संदेसा देवणहारा, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाईआ। साचा राह चलाए लोकमात, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतारां देवणहारा दात, पीर पैगम्बरां झोली आप भराइंदा। जणावणहारा साची गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। चलावणहारा सच्चा राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। अख्वावणहारा अनाथां नाथ, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म मनाइंदा।

ਜੁਗ चौकड़ी गुर अवतार, पीर पैगम्बर लोकमात वड्याईआ। शब्द अगम्मी सच गुफ़तार, गुफ़त शनीद करे पढ़ाईआ। मजलस लाए इक दरबार, महिबूब बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवारा खेल अपार, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक जणाईआ। निरगुण सरगुण करे ध्यान, इष्ट देव गुर इक मनाईआ। नाम सति इक प्रनाण, परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। नूरी जलवा नूर महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। वसणहारा सच मकान, मुकाम इक्को इक दृढ़ाईआ। देवणहारा नाम ज्ञान, वक्खर अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। जुग चौकड़ी पाए बन्धन, बंदगी आपणे नाम जणाइंदा। कोई कहे त्रिलोकी नंदन, कोई राम राम वड्याइंदा। किसे लाए जोत ललाटी चन्दन, मस्तक टिक्का इक वखाइंदा। किसे नज़री आए सूरा सरबँगन, शहिनशाह आपणा नाम वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सर्ब खण्डन, ब्रह्मण्डन खोज खुजाइंदा। ब्रह्मण्ड खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। आदि जुगादी इक इकल्ला, जुग जुग फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच स्नेहुड़ा दे के घल्ला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम खेल करे जला थला, महीअल आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा साचा गीत, जुग चौकड़ी आप जणाइंदा। गुर अवतारां दस्स दस्स रीत, राह रहबर आप समझाइंदा। खेले खेल मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ नाल वड्याइंदा। आप बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, घर घर काया बंक फोल फुलाइंदा। दस्सणहारा सच प्रीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे मार्ग लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साचा लेखा जुग जुग, जुग करता आप जणाईआ। लख चुरासी विच्चों चुग चुग, भगत भगवान दए वड्याईआ। उज्जल करे मुखड़ा मुख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म कर्म मेट दुःख, आत्म सुख इक उपजाईआ। लेखे लाए जननी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। सुक्का हरया करे रुक्ख, अमृत बूँद स्वांती मेघ बरसाईआ। दयाल ठाकर आपणी गोदी लए चुक्क, भगत भगवान दए वड्याईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, पांधी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। आपणी करनी कर भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी इक ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेला सच मकान, घर घर विच खेल कराइंदा। दीआ बाती इक महान, कमलापाती आप जगाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सच सिँघासण

सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले आपे लभ्भ, परम पुरख मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया पार हद्द, हदूद आपणी दए समझाईआ। अनहद वजाए साचा नद, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत जाम प्याए मध, मधुर रस इक वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दवारे सद्द, सदके वारी घोली निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। आपणे विच्चों आपणी धार कढ्ढ, धार धार करे रुशनाईआ। तेई अवतार विश्व यद्द, विश्व इक्को इक वखाईआ। पीर पैगम्बर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। साची सिख्या पैगम्बर पीर, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। दाता दानी दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाइंदा। लेखा जाण शाह हकीर, हकीकत आपणी आप समझाइंदा। बदलणहारा तकदीर, तकबीर तदबीर आपणे हथ्थ वखाइंदा। जुग चौकड़ी कटणहार ज़ंजीर, बेनज़ीर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग जुग हुक्म पुरख अकाल, अक्ल कला जणाईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणा रंग रंगाईआ। भगत भगवन्त कर प्रितपाल, प्रितपालक होए सहाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, बन्धन कूड़ा दए तुड़ाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, भय भ्यानक नज़र कोए ना आईआ। सति
८१५ १३ वखाए इक धर्मसाल, धर्म दवारे दए वड्याईआ। साहिब सतिगुर वसे नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम ८१५ १३
खेल कमाल, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। जोती जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची धाम सुहाईआ। दरगाह साची धाम सुहा, निहचल देवणहार वड्याईआ। पीर पैगम्बर दर मंगा, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। आपणा लेखा वेखो थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। चौदां तबक नैण लओ उठा, अक्ख प्रतख रिहा खुल्हाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा रिहा छा, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। शरअ ज़ंजीर ना रिहा कोई कटा, कूड़ी क्रिया वंड ना कोए वंडाईआ। टिल्ले पर्बत डूँघे सागर ज़िमी असमान नेत्र रोवण मारन धाह, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख लिख लेखा जो गए समझा, समझ समझ विच किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम वेला गया आ, अन्त होए ना कोए सहाईआ। गुर अवतार बणे ना कोए गवाह, पल्लू सारे रहे छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आए दर, दरवेश देण दुहाईआ। गल पल्लू मंगण वर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। निरवैर तेरे कोलों आवे डर, साडी चले ना कोए चतुराईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात रहे लड़, झगड़ा प्या सर्ब लोकाईआ। अक्खर वक्खर

नाउँ निरँकारा कोई ना लए पढ़, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर गए वड़, शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर धीरज धीर ना कोए धराईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार विके हट्ट, सच सुच्च वणज ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी जीव जंत साध सन्त कूड़ी क्रिया रहे तक्क, तकवा इक ना कोए रखाईआ। नज़र ना आए रब्बी रब्ब यामबीन, आलमीन बेवफ़ा होई सर्ब लोकाईआ। साहिब मेहरवान करे अन्त तलकीन, तअल्लक सब दे दए गंवाईआ। मुरीद मुर्शद रखे यकीन, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। नुक्ता रहे ना कोए सीन, शीन ऐन गैन ना कोए वड्याईआ। हमज़ा अन्त होए ग़मग़ीन, मुहम्मद नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ईसा मूसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर इक्को इक दरसाईआ। ईसा मूसा दर दरवेश, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। परवरदिगार बेपरवाह अग्गे चले कोए ना पेश, पेशवा इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरवैर हो के रिहा वेख, दीन मज़्ब शरअ वंड ना कोए लड़ाईआ। ना रूप रंग दिसे रेख, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। भगत भगवान करे हेत, हितकारी इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेलदा आया खेड, बण खडारी जोत निरँकारी निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करने आया, करता पुरख करतार। मेटण आया त्रैगुण माया, माया ममता करे ख्वार। बणनहारा दाई दाया, लख चुरासी पावे सार, भगत भगवन्त लए जगाया, नेत्र खोल्ह बंद कवाड़। आत्म परमात्म मेल मिलाया, सच सच्ची किरपा धार। नूरो नूर नूर रुशनाया, जोती जाता जोती जोत करे उज्यार। नाद अनादी नाद वजाया, शब्द राग धुनकार। गृह मन्दिर सोभा पाया, घर सखीआं मंगलाचार। महल अटल इक रुशनाया, महिफल ला एकँकार। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलाया, खेले खेल अगम्म अपार, बिन मास नाड़ी चम्म खेल रचाया, पवण स्वास ना कोए प्यार। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए सालाहया, तन ख़ाकी ना कोए आधार। जोती शब्दी शब्दी जोती आपणी गंढु पवाया, निरगुण निरगुण कर प्यार। कलिजुग अन्तिम रंडेपा रंड दए गंवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख वेखे सुलखणी नार। गुरमुख नार सुलखणी, सोभावन्त समझाइंदा। सचखण्ड दुआर चरण सरन प्रभ साचे रखणी, रक्षया करे आप करतार, लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया नथ्थणी, नाम मधाणा एका डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच दवारे आपे खड़, दर सद्दे गुर अवतार। गुर अवतार धुर दरबार, बैठे ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर कर निमस्कार, सजदा इक जणाईआ। बण वचोला एकँकार, आपणी कल समझाईआ। कलिजुग

८१७
१३

अन्तिम करो विचार, भेव अभेद खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई गई हार, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। दीन मज़्ब लग्गा अखाड़, ज़ात पात करे लड़ाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। आत्म परमात्म ना कोए प्यार, परम पुरख ना कोए मनाईआ। कूड़ी क्रिया जगत शृंगार, वेसवा रूप वटाईआ। हरि कन्त ना पाया घर सच्चे दरबार, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। लख चुरासी धूंआँधार, अन्ध अन्धेर ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां रिहा वखाईआ। पीर पैगम्बर मारन ध्यान, नेत्र नैण उठाया। सच ना दिसे कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढ्ढाया। मुल्ला शेख़ बग़ले पकड़ कुरान, काया कुरा ना किसे सुहाया। मक्का काअबा ना कोए निशान, सच महिराब ना कोए बहाया। नज़री आए ना हक़ अमाम, हुजरे हज्ज ना कोए कराया। कूड़ी क्रिया होए ग़ुलाम, गुरबत घर घर डेरा लाया। परवरदिगार भुल्लया इक निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा जणाया। पीर पैगम्बर वेखो चौदां तबक, परवरदिगार रिहा जणाईआ। कोई ना पढ़े कलमा सबक, साबत नज़र कोए ना आईआ। तीस बतीसा पत्रे लए परत, मन पड़दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैणां रिहा दरसाईआ। नेत्र वेख पीर पैगम्बर रोंदे, उच्ची कूकण मारन धाहींआ। तेरा नाउँ ईसा मूसा मुहम्मद ध्याउँदे, ध्या ध्या शुकर मनाईआ। सिफ्त सालाही तैनूं गाउँदे, अञ्जील कुरान कर पढ़ाईआ। कलिजुग जीव गूढ़ी नींदे सौंदे, ग़फ्लत घर घर घेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पीर पैगम्बर चरण ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर करो ख्याल, ख़ालक आप जणाइंदा। वेले अन्त बणो दलाल, सच दलाली आप जणाइंदा। हकीकत वेखो हक़ हलाल, लाशरीक पड़दा लाहइंदा। कलिजुग अन्तिम सदी चौधवीं औण वाला ज़वाल, ज़ेर ज़बर ना कोए रखाइंदा। सब दे सिर ते कूके काल, कलिजुग काल नगारा डंक वजाइंदा। उम्मत उम्मती होई बेहाल, बिहबल रूप सर्ब वखाइंदा। मुर्शदो मुरीद लओ भाल, दीद दीद नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पीर पैगम्बर आप उठाइंदा। पीर पैगम्बर मारन धाह, वेला अन्त नेड़े आईआ। तेरी रहमत इक ख़ुदा, इक दुआ मंग मंगाईआ। तेरे नालों ना होईए जुदा, जुज़ होर ना कोए वखाईआ। तेरे चरणां अन्त फ़िदा, फ़ितरत पिछली दईए गंवाईआ। उम्मत नबी रसूल तेरा कलमा गए भुला, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। ख़ालक ख़लक वेखण थाँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। साडी चले ना कोए वाह, चौदां सदीआं चोदां तबक दस्स दस्स थक्के सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर

संदेसा हुक्म सुणाईआ । धुर संदेसा करो कबूल, हरि साचा सच जणाइंदा। नाता छोडो नबी रसूल, रसूल इक्को इक वड्याइंदा। सारे मन्नो हक़ असूल, असलीअत आप वखाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। अग्गे कोई ना जाए भूल, भुल्लयां मार्ग पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवाना, एका एक जणाईआ। पीर पैगम्बर दे ज्ञाना, इष्ट देव इक वखाईआ। सतिजुग चले सच विधाना, विद्दत मिले ना कोए वड्याईआ। इक्को हुक्म दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड इक शनवाईआ। इक्को राग इक तराना, इक्को नाद धुन वजाईआ। इक्को मन्दिर इक मकाना, धाम इक्को इक दरसाईआ। इक्को नूर श्री भगवाना, इक्को जलवा नज़री आईआ। इक्को राग इक्को गाणा, इक्को अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। साचा लेखा दस्से आप, आपणा भेव खुलाइंदा। मूसे जिस दा वेख्या प्रताप, मूँह दे भार सुटाइंदा। ईसा कहे जिस नूं बाप, सो ख़ुदावंद, फेरा पाइंदा। मुहम्मद कहे मेरा साक, अमाम आपणा रंग रंगाइंदा। चार यारी करनहारा पाकी पाक, पतित पुनीत खोज खुजाइंदा। गोबिन्द किहा भविख्त वाक्, कलि कल्की फेरा पाइंदा। सम्बल देवणहारा साथ, सगला संग निभाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, कलिजुग अन्तिम फेरा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठा करे साथ, सगला संग जणाइंदा। अन्तिम लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, चार जुग दी कीती झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा अन्तिम इक जणाइंदा। सच संदेसा अन्तिम अन्त, अन्तरजामी हरि जणाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी वेखणहारा जीव जंत, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर कर कर गए मात पढ़ाईआ। भेव खुल्ह्रावणहारा मणीआ मंत, मंत्र इष्ट देव नमो नमो खोज खुजाईआ। दरसावणहारा वखावणहारा मिलावणहारा नार कन्त, आत्म परमात्म परम पुरख इक्को घर वखाईआ। बणावणहारा साची बणत, घड़न भंनणहार समरथ स्वामी निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बर साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दृढ़ावेगा। पुरख अकाल खेल रचावेगा। निरगुण इक्को हुक्म सुणावेगा। दो जहान उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर ख़ाली झोली सर्ब वखावेगा। लख चुरासी जीव जंत, नेत्र नैणां सर्ब रुवावेगा। गुरमुख विरला सन्त, हरि चरणी सीस झुकावेगा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, पड़दा लोकमात ना कोए उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर घर साचा इक वडयावेगा। दर घर साचा इक वडयाएगा। सचखण्ड दुआर वसाएगा। शब्दी सुत उठाएगा।

थिर घर कुण्डा इक्को लाहेगा। दो जहानां वेख वखाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाएगा। रवि ससि आप चमकाएगा। गोपी काहन नाच नचाएगा। कोटन कोटि जुग चौकड़ी वेख वखाएगा। तेई अवतार नाल मिलाएगा। भगत अठारां अंग फड़ाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद जोड़ जुड़ाएगा। नानक गोबिन्द घोड़ चढ़ाएगा। भगत भगवन्त लग्गी तोड़ निभाएगा। कलिजुग अन्तिम शौह दरयाए रोड़्, सतिजुग साचा राह चलाएगा। लख चुरासी रीठा वेख मिट्ठा कौड़, गुरमुख विरले बाहर कढ्ढाएगा। रैण अन्धेरी वेखे घोर, गुरसिख साचे चन्न चमकाएगा। नाता तोड़ चोर हरामख़ोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाएगा। आपणी करनी उठेगा। प्रभ दीन दयाल तुठेगा। ग़रीब निमाणयां पुच्छेगा। राजे राणयां तख्तों लाह सुट्टेगा। निरगुण हो के बुक्केगा। निरवैर कदे ना लुकेगा। कूड़ी क्रिया लुट्टेगा। कलिजुग जड़ पुट्टेगा। सतिजुग बूटा फुट्टेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख सज्जण आपे पुछेगा। पुछणहार गोपाल, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक दरसाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया कढ्ढे बाहर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। चार वरन कर प्यार, साची सरन इक दरसाईआ। चारे खाणी खोल्ह् किवाड़, चारे बाणी राग अल्ह्राईआ। चारों कुण्ट कर जैकार, जै जैकार ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंत्र दए समझाईआ। एका मंत्र सतिगुर धार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म कर प्यार, पारब्रह्म वड्याइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्ह्राइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म पैज स्वार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन जैकार, जै जैकार सर्ब अल्ह्राइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। सतिजुग साची करे कार, करनी करता आप कमाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वरतावणहारा नाम भण्डार, अतोट अतुट आप वरताइंदा। लेखा चुका चार यार, पंचम आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगत भगवान घर साचे सद्द, सद्दा नाम दवाईआ। इक्को वखाए मक्का काअबा हज्ज, शिवदुआला मन्दिर मठ्ठ इक दरसाईआ। इक वजाए अनहद नद, अनादी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि रंग अन रंग राता आप रंगाईआ। जन्म कर्म दी मिटे बीमारी, कर्म रोग रहे ना राईआ । अमृत नाम मिले ख़ुमारी, मख़मूर आप रखाईआ। रसना जिह्वा शब्द जैकारी, सोहँ ढोला गाईआ। जो जन दर आए बण वपारी, नाम ख़ज़ाना दए लुटाईआ। अन्तर आत्म वेखे डूँघी गारी, निज घर बैठा बेपरवाहीआ। सच प्रीती सच बिवहारी, बिध नाता जोड़ जुड़ाईआ। कागद

८१६
१३

कलम ना लिखणहारी, नेत्र रोवे जगत शाहीआ। जो जन सतिगुर चरण सरन करे प्यारी, तिस काया कूड़ा कपड़ रोग रहिण ना पाईआ। जगत सन्तान जगत नाता, पिता पूत गंढु पवाईआ। किरपा करे पुरख बिधाता, बिधना लेख ना कोए वड्याईआ। देवणहार अगम्मी दाता, अनडिठड़ी वस्त झोली पाईआ। आत्म परमात्म गाए गाथा, गा गा शुकर मनाईआ। साहिब सतिगुर सदा साथा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरास आस विच बदलाईआ। नाम धारी मिल्या नाम, नाम रंगण रंग रंगाईआ। अमृत आत्म प्या जाम, प्याला सतिगुर हथ्थ फड़ाईआ। काया खेड़ा वसे ग्राम, जिस घर गुर गुर बैठा डेरा लाईआ। हरिसंगत विच मिले जो जन आण, तिस जम की काण रहिण ना पाईआ। एथे ओथे करे पहचान, बेपहचान फेरा पाईआ। सोहँ ढोला गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गाण, बिन सोहँ रूप गुर अवतार पीर पैगम्बर नज़र कोए ना आईआ। नानक निरगुण सरगुण दे के गया ज्ञान, सिख्या साख्यात समझाईआ। गोबिन्द तीर भथ्था दे के गया निशान, चिल्ला कमान टंक हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक प्रगट होए बली बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। लेखा जाण ज़िमी असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ रखाईआ। दो जहानां देवे इक ज्ञान, पीर पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। धर्म वखाए इक निशान, धर्म दवारे आप झुलाईआ। ईश जीव देवे माण, जगदीश हो सहाईआ। सोहँ अक्खर कर प्रधान, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर पहचान, पसचाताप दए गंवाईआ। काया अन्दर मन्दिर वखाए मकान, गुरुदुआर सच वड्याईआ। जिस घर वसे भगवान, सो मण्डल मण्डप मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस धार आपणी विच चलाईआ।

❇ ७ फग्गण २०१६ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ❇

एका नांयां प्रभ दी उनी, उनत आपणे हथ्थ रखाइंदा। साहिब सुल्तान वड गुण गुणी, गहर गम्भीर वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवान फ़रयाद सुणी, दो जहानां वेख वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सज्जण रिहा चुणी, गृह गृह घर घर मन्दिर फोल फुलाइंदा। आत्म परमात्म बोध अगाध वजाए धुनी, नाद अनादी सेव लगाइंदा। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया चोटी जाए मुनी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जगत वासना श्री भगवान छाणी पुणी, अन्तरजामी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाया मेल मिलाइंदा। एका नाया एका रंग, एकँकारा दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सूरा सरबँग, वेखणहारा बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण देवणहार सति

अनन्द, एकँकारा आपणे अंग लगाईआ। आदि निरँजण निरगुण जोत चाढ़नहारा चन्द, अबिनाशी करता एका नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान सदा बख्शंद, बख्शश इक्को झोली पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवणहारा परमानंद, निजानंद अनन्द दरसाईआ। एका ढाए नाया कंध, नव नौ आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका उन्नी दए समझाईआ। एका उन्नी आदि अन्त, एका नाया खेल खलाइंदा। दो जहान श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह जणाइंदा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खेल बेअन्त, भेव अभेद ना कोए पाइंदा। जुग चौकड़ी सेवा ला साध सन्त, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। धुरदरगाही बेपरवाही कलमा नबी नाम मंत, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेलणहारा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता चाढ़नहार रंग बसन्त, नाम रंगण इक रंगाइंदा। दो जहान श्री भगवान देवणहारा साचा मंत, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाया वंड वंडाइंदा। एका नाया वंडे वंड, वंडणहार वड्डी वड्याईआ। लेखा जाण कोटन ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड सिफ्त सालाहीआ। सुणावणहार अगम्मी छन्द, ढोला सोहला इक प्रगटाईआ। पावणहारा लख चुरासी बंदी बंद, नाम डोरी तन्द रखाईआ। करनहारा लख चुरासी अन्तर अन्ध, अज्ञान अन्धेर इक दरसाईआ। मुकावणहारा जुग चौकड़ी पन्ध, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। नव नौ वेखणहारा कूड़ी क्रिया गंद, दर दवारे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह इक इकल्ला एकँकारा हरि अख्वाइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। जोती धार शब्दी रला, शब्दी शब्द रूप प्रगटाइंदा। थिर घर फड़ाए आपणा पल्ला, आपणी गंढु पवाइंदा। सति संदेस निरगुण घल्ला, विष्न ब्रह्मा शिव समझाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल इक रुशनाइंदा। जुग चौकड़ी अछल अछल्ला, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक इकल्ला वेख वखाइंदा। इक इकल्ला वेखणहारा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बण वणजारा, लोक परलोक अवण गवण त्रैगुण संग मिलाईआ। कागज़ कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख ना कोए समझाईआ। नव नौ खोल्ह दवारा, दर दर आपणा भेव जणाईआ। नव नौ चार हो उज्यारा, चार जुग डंक वजाईआ। चार खाणी दए सहारा, चारे बाणी नाम वड्याईआ। चारे कुण्ट बोल जैकारा, चार वरन दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाया मेल मिलाईआ। एका नाया निरगुण मेला, सरगुण संग निभाईआ। धार बंधाए गुरु गुर चेला, चेला गुरू

रूप समाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, सगला संग निभाईआ। वसणहारा धाम नवेला, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कटणहारा धर्म राए दी जेला, बन्धन आपणा नाम पाईआ। जानणहारा साचा वेला, थित वार ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करता पुरख, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोई जणाइंदा। जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त सन्त लए परख, बण पारखू फेरा पाइंदा। निरवैर निराकार इक वखाए आपणा आदर्श, दरस इक्को घर वखाइंदा। लेखा जाण अर्श फ़र्श, काया कुरा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाया मेल मिलाइंदा। एका नाया साचा जोड़ा, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। अगम्म अथाह साचा घोड़ा, शाहसवारा आप दौड़ाईआ। दो जहानां लाए पौड़ा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दो जहानां फिरे दौड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाईआ। जुग चौकड़ी आपे बौहड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा नाया एक, एकँकारा आप जणाइंदा। भगत भगवान साची टेक, सरन चरण इक वड्याइंदा। करनहारा बुध बिबेक, बिबेकी रूप दरसाइंदा। बिन नेत्र नैणां लए वेख, अक्ख पलक ना कोए उठाइंदा। आत्म परमात्म करनहारा हेत, नित नवित्त वेस वटाइंदा। लेखा जाणे नेतन नेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाइंदा। साची खेल पुरख समरथ, समरथ दए वड्याईआ। एका नाया महिमा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। अञ्जील कुरान तीस बतीसा आपे दस्स, उच्ची कूक कूक अलाईआ। खाणी बाणी पन्ध मुकाए नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण चले वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच ना आइंदा। जुग चौकड़ी करनी करे कम्म, करता पुरख सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण बेड़ा बन्न, आप आपणे कंध उठाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल श्री भगवन, भेव अभेदा आप जणाइंदा। देवणहारा साचा दान, दाता दानी दया कमाइंदा। उठावणहारा सच निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। वेखणहारा जीव जहान, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। सुणावणहारा राग कान, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। करनहारा प्रकाश कोटन भान, जोती जाता डगमगाइंदा। करनहार सच पहचान, बेपहचान फेरा पाइंदा। देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक अलाइंदा। एका नाया मिटे निशान, निशाना इक्को इक झुलाइंदा। गुरमुख चतुर सुघड़ सुजान, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावा गोपी काहन, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा।

घर मन्दिर सच मकान, शिवदुआला मठ्ठ इक्को नज़री आइंदा। करे खेल नौजवान, नईया जगत आप डोलाइंदा। चार वरन होण हैरान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश धीर ना कोए धराइंदा। अठारां बरन अन्त कुरलाण, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। पीर पैगम्बर नैण शरमाण, नेत्र अक्ख ना कोए उठाइंदा। ज़िमी असमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका उन्नी बणत बणाइंदा। एका उन्नी जणाए बणत, मेहरवान वड वड्याईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। गा गा थक्के कोटन कोटि साध सन्त, सादक सिदक सबूरी गए हंढ्ढाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स दस्स मणीआं गए मंत, नित नवित्त धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। भगत भगवान लभ्भदे रहे साजण कन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी आप कमावेगा। पुरख अकाल खेल रचावेगा। सचखण्ड वासी फेरा पावेगा। दो जहानां वेख वखावेगा। एका नाया पन्ध मुकावेगा। अग्नी तत्त वेख वखावेगा। रुत्त रुत्तड़ी नाल मिलावेगा। गुरमुख आत्म सुतड़ी आप जगावेगा। लख चुरासी टंग पुठड़ी, वेले अन्त खल्ल लुहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावेगा। साची करनी करेगा। किसे कोलों ना डरेगा। दो जहानां आपे वड़ेगा। गुरमुख सज्जण फड़ेगा। शाह सुल्तान हो के चढ़ेगा। सीस जगदीश ताज धरेगा। आपणा भाणा आपे जरेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे करेगा। आपणा खेल खलावांगा। दो जहान रुलावांगा। पीर पैगम्बर फड़ फड़ दर बहावांगा। जुग चौकड़ी करनी सब दी झोली पावांगा। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया होली इक वखावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पीर पैगम्बर मारी बोली, पूरी कर वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल इक रचावांगा। साची खेल रचाऊँगा। निरवैर पुरख अखवाऊँगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटाऊँगा। गुरमुख सज्जण आप उठाऊँगा। आत्म रंगण आप रंगाऊँगा। दर मंगण किसे ना जाऊँगा। दो जहानां सज्जण इक अखवाऊँगा। लख चुरासी चरण धूढ़ी मजन इक नुहाऊँगा। एका नाया पन्ध मुकाऊँगा। इक दुआर खुलाऊँगा। ग़रीब निवाजा नाम धराऊँगा। अनहद वाजा आप वजाऊँगा। जगत रीती वेख वखाऊँगा। नीती आपणे हथ्थ रखाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी वड वडयाऊँगा। आपणी करनी हरि वडयाएगा। जोती जामा वेस वटाएगा। बीस बीसा डंक वजाएगा। एका नाया डेरा ढाहेगा। जगत होली खेल खलाएगा। जन भगतां डोली आपणे कंध उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर हुक्म मनाएगा। हुक्मे अन्दर हुक्म मनावांगा।

सच संदेस सुणावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सोए आप जगावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नैण खुल्हावांगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान एका घर बंद करावांगा। राउ रंका सच निशान हो मेहरवान, लोकमात दरसावांगा। सृष्ट सबाई शब्द ज्ञान, आत्म परमात्म विद्या इक पढ़ावांगा। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना इक झिरावांगा। सर्ब जीआं दा सांझा भगवान, इष्ट देव इक मनावांगा। मुकामे हक़ हो प्रधान, नौबत इक्को नाम वजावांगा। लाशरीक मेहरवान, तौफ़ीक इक खुदाए दरसावांगा। मिहबान बीदो बी खै़र या अल्ला दे ध्यान, कलमा नबी इक पढ़ावांगा। साचा हुजरा कर परवान, दरगाह साची आसण लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंग वखावांगा। एका रंग रंगेगा। बेपरवाह कदे ना संगेगा। दूजा दर कदे ना मंगेगा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी गोदी चुकेगा। उन्नी हाढ़ हरिजन होली, हौली हौली आप खलाईआ। निरवैर पूरा तोल रिहा तोली, तोलणहार वड वड्याईआ। जन भगतां उपर घोल घोली, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। आत्म परमात्म खेल अनमोली, अनडिठड़ी कार कमाईआ। लख चुरासी पाए रौली, चार वरन रसना जिह्वा बत्ती दन्द लड़ाईआ। जन भगतां पड़दा रिहा खोली, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। नाम वस्त भराए झोली, मेहरबान बेनज़ीर मेहर नज़र उठाईआ। सृष्ट सबाई होए गोली, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोत अकालण बणी वचोली, बण सेवक सेव कमाईआ। हथ्थीं लै के अट्टी मौली, मौला वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची होली दए वखाईआ। साची होली वेखो होला, हरि हरि जू आप जणाइंदा। जन भगतां अन्दरों कढ्ढे पड़दा उहला, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस वखाइंदा। पूरब पूरा करे कीता कौला, इकरार आपणे हथ्थ रखाइंदा। देवे वडयाई उपर धौला, धरनी धरत धवल भार वंडाइंदा। सच दवारा इक्को खोल्हा, दर दरवाज़ा इक जणाइंदा। निरगुण हो के घट घट मौला, सरगुण आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची होली इक वखाइंदा। साची होली लाल गुलाल, रंग इक्को इक जणाईआ। जलवा नूर बेमिसाल, मिसल सके ना कोए लिखाईआ। बेपरवाह बण दलाल, परवरदिगार वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई होए बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलिजुग डौरु डंक वजाईआ। गुरमुखां अन्तर वज्जे ताल, छत्ती राग भेव ना राईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए हैरान, हरि का अन्त कहिण ना पाईआ। गुर अवतार करन ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। पीर पैगम्बर नीर वहाण, छहबर इक्को इक लगाईआ। साचे तख्त तख्त निवासी बैठा नौजवान, भूपत भूप राज राजान शाह सुल्तान इक अख्वाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल

आपणा आप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा मार ध्यान, सम्मत सम्मती पन्ध मुकाईआ। बीस बीसा खेल महान, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची होली इक्को वार दरसाईआ। साची होली रंग अपार, रंग रतड़ा आप रंगाइंदा। ख़ालक ख़लक वेखे संसार, वड संसारी फेरा पाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। गृह मन्दिर वज्जे ताल, शब्द अगम्मी राग अलाइंदा। सति दीपक इक्को बाल, जोती जाता डगमगाइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। उन्नी हाढ़ बेमिसाल, बसता सब दा आप बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख होली आपणे नाम रंग रंगाइंदा।

❇ ८ फग्गण २०१६ बिक्रमी नेशनल हाई स्कूल बादशाह पुर ❇

आपणी आत्मा करो सवाधान, सृष्ट सबाई हरि जणाइंदा। आत्म परमात्म मिले ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सति धर्म दिसे इक निशान, कूड़ी क्रिया मोह मिटाइंदा। जीव जंत नेत्र खोल्ह मार ध्यान, गृह मन्दिर भेव चुकाइंदा। निरगुण रूप हर घट वसे भगवान, भगवन आपणी खेल कराइंदा। जोती नूर जगे महान, ज़हूर इक्को नज़री आइंदा। चार वरन इक ध्यान, सरन सरनाई हरि जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। सवाधान करो मन, मन आसा जगत मिटाईआ। सवाधान करो कन्न, हरि जस सुणन चाईं चाईंआ। सवाधान करो तन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटाईआ। सवाधान हो बेड़ा लओ बन्न्ह, आप आपणा भार उठाईआ। सवाधान हो लाओ डंन, वैरी वेखो थाउँ थाईंआ। सवाधान हो गाओ जन गन मन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवाधान करे सर्ब लोकाईआ। सवाधान हो जाणा जाग, जागरत जोत इक जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी आग, चार वरन कुरलाइंदा। आत्म परमात्म कोई ना गाए सच्चा राग, वैरागी रूप ना कोए वखाइंदा। जगत वासना दयो त्याग, सच सुगंध इक जणाइंदा। काया अन्दर खोल्ह ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। निर्मल जोत होए प्रकाश, प्रकाश इक्को नज़री आइंदा। लेखे लग्गे पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। भेव चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म पूरी करे आस, ईश जीव गोद बहाइंदा। काया मण्डल साची रास, गोपी काहन नचाइंदा। राम रामा वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। सवाधान हो करनी बंद ख़लास, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। सवाधान हो खोल्हो अक्ख, आख़र हरि जणाइंदा। निरगुण रूप हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। नव नौ चार मार्ग रिहा दस्स, जीव जंत सर्ब पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावा हस्स हस्स, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण करे जस, जस वेद पुराण शास्त्र सिमरत सर्ब सालाहइंदा। गीता ज्ञान भगत भगवान एका जप, इक्को इक दृढ़ाइंदा। वेखणहार तीर्थ तट, सरोवर आत्म इक दरसाइंदा। पन्ध मुकाउणा नठ्ठ नठ्ठ, कदम अग्गे अग्गे बड़्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी इक्को इक जणाइंदा। सवाधान हो जवान, जीवण युगत इक जणाईआ। चार कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया दिसे तुफ़ान, ताअरीफ़ खुदा ना सिफ्त सालाहीआ। नज़र ना आए मेहरबान, मिहबान बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। परवरदिगार बेपहचान, बेनज़ीर खेल कराईआ। लेखा जाण दो जहान, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। देवणहार सति ज्ञान, असति दए मुकाईआ। काग़ज़ कलम शाही सर्ब पछताण, पसचाताप करे लोकाईआ। बिन भगतां सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग होए ना कोई सवाधान, गूढ़ी नींद सुत्ती जगत लोकाईआ। राज राजान शाह सुल्तान होए अणजाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सवाधान करे भगवान, सच संदेसा इक जणाईआ। वेखणहारा जगत विधान, चौदां विद्या फोल फुलाईआ। झुलावणहारा सच निशान, दो जहानां दए वड्याईआ। देवणहारा नाम निधान, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। बिन नेत्र होए निगहबान, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। टीचर उस्ताद सो परवान, जो अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। सो विद्या बलवान, जिस पढ़ियां मिले पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सो कलम करे परवान, जिस दा लिखा ना कोई मेट मिटाईआ। सो काग़ज़ होए सवाधान, जो लोकमात जीव जगत युगत दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक दरसाईआ। सवाधान करे आप, घर घर सेव लगाइंदा। अन्तर वड़ वड़ दस्से जाप, अजपा रूप वखाइंदा। त्रैगुण माया मेटे ताप, रजो तमो सतो मोह चुकाइंदा। पतित पापी करे पाक, पुनीत आपणे अंग लगाइंदा। दस्सणहारा भविख्त वाक, गुर अवतार पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ मसायक सिफ्त सालाहइंदा। वेखणहारा साख्यात, दयाल ठाकर स्वामी अन्तरजामी फेरा पाइंदा। उत्तम रखणहारा ज़ात, वरन गोत क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म बणाए सच्चा साक, भगत भगवान संग निभाइंदा। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, चार कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। विद्यार्थी अध्यापक इक जमात, जुमला इक्को अक्खर पढ़ाइंदा। हैड मास्टर देवे नाल साथ, मित्तल मित्र इक सदवाइंदा। इक्को राम इक्को कृष्न इक्को ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जणाए पाठ, नाम निधाना इक वड्याइंदा।

इक्को तीर्थ तट किनारा घाट, अमृत इक्को नज़री आइंदा। इक्को प्यावणहारा आब हयात, परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाइंदा। इक्को प्रगटावणहारा आफ्ताब, नूरो नूर डगमगाइंदा। इक्को करनहार आदाब, सजदा सीस इक झुकाइंदा। इक्को देवणहार ख़ताब, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्को देवणहार जवाब, लाजवाब इक अख्वाइंदा। इक्को पढ़ावणहारा किताब, बिन अक्खरां नाम सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। रोशन होए रोशन ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर आप जणाइंदा। चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, आख़र इक्को नज़री आइंदा। पढ़नहार सच तकबीर, तसबी माला इक वखाइंदा। बदलणहारा इक तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। कटणहार ज़ंजीर, शरअ ज़ंजीर इक कटाइंदा। देवणहारा धीर, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। पिलावणहारा सीर, अमृत मेघ बरसाइंदा। वेखणहारा शाह हकीर, ऊँच नीच रंग रंगाइंदा। बजर कपाटी पड़दा चीर, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, रोशन रोशन करे मनार, जिस जन देवे दरस दीदार, दरस इक्को इक दरसाइंदा। गुर किरपा मन शांत, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। गुर किरपा मन होए इकांत, मन वासना मन ही विच समाईआ। गुर किरपा मिटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। गुर किरपा खुल्हे ताक, बंद कवाड़ी पड़दा उठाईआ। गुर किरपा मिले अजपा जाप, बत्ती दन्द रसना जिह्वा ना सिफ्त सालाहीआ। गुर किरपा बूझे आपणा आप, आप आपणा वेख वखाईआ। गुर किरपा गुर दीजे साथ, सगला संग निभाईआ। गुर किरपा मन मिले नजात, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, मन शब्दी बन्धन पाईआ।

❇ ८ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुड़गाउँ ❇

हरिभगत मंगे इक्को मंग, चरण सरन मिले सरनाईआ। आत्म नाद वज्जे मृदंग, जगत राग ना कोए वड्याईआ। निजानंद मिले अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। गीत सुहागी सुणे छन्द, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। दूई द्वैती भरमां ढठ्ठे कंध, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। नाम ध्याए बिन बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना सिफ्त सालाहीआ। निरगुण वसे निरगुण संग, सरगुण सेज हंढुाईआ। मेल मिलावा सूरे सरबँग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म कटे भुक्ख नंग, मेहर नज़र इक उठाईआ। आवण जावण नाता तोड़े लख चुरासी फंद, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि जन्म गए हंढु, काया चोला जगत हंढुाईआ। कोटन

कोटि फिर फिर वेखे ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड वेस वटाईआ। तुध बिन कोए ना चले संग, सगला संग ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जगत सदीवी गए हंढु, थिर कोए रहिण ना पाईआ। ठाकर स्वामी दीन दयाल भगत भगवान टुट्टी गंढु, गंढुणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाता तुटे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। जगत विकारा होए खण्ड खण्ड, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। आत्म सुहागण होए रंड, परमात्म मेला चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत करे अरज़ोईआ। भगतन सुण अरदास, भगवन दया कमाइंदा। आदि जुगादी दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। लेखा जाण मण्डल रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। वसणहारा सदा पास, अन्तर बाहर सोभा पाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। सति सतिवादी देवे साथ, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी चलावणहारा राथ, बण रथवाही खेल कराइंदा। दस्सणहारा पूजा पाठ, इष्ट दृष्ट आप समझाइंदा। वखावणहारा सरोवर तीर्थ ताट, जल अमृत आप भराइंदा। करावणहारा पार घाट, नईया नौका आप चलाइंदा। पुच्छणहारा सदा वात, नित नवित्त फेरा पाइंदा। देवणहारा नाम दात, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। वेखणहारा साची ज़ात, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। वसणहारा इक इकांत, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। खोलणहारा बंद ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। वखावणहारा सच्चा हाट, चौदां लोक पड़दा लाहइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक भेव चुकाइंदा। भगतन पूरी करनहारा आस, भगवन आपणी दया कमाइंदा। लेखा जाण पवण स्वास, पवण पवणा फोल फुलाइंदा। लहिणा देणा चुका पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान वेख वखाइंदा। भगत मंगे दर दरबान, इक्को अलख जगाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। हरि पुरख निरँजण इक ध्यान, ध्यान ध्यान दए वंडाईआ। एकँकारा दए दान, दाता दानी वड वड्याईआ। आदि निरँजण नूर महान नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। श्री भगवान दए ज्ञान, सोहला ढोला इक सुणाईआ। अबिनाशी करते कर पहचान, बेपहचान तेरी सरनाईआ। पारब्रह्म वेख मार ध्यान, बिन नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत भगवान पए सरनाईआ। श्री भगवान सदा सुहेला, सगला संग रखाइंदा। आदि जुगादी इक इकेला, जुग जुग वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण करे मेला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती शब्दी गुरु गुर चेला, गुर चेला नाउँ प्रगटाइंदा। आपे जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन चाढ़े साचा तेला, दरगाह साची सगन मनाइंदा। भगत कहे मोहे तेरी उडीक,

८२८
१३

नित नित ध्यान लगाया। चारों कुण्ट अन्धेरा तारीक, साचा चन्द ना कोए चमकाया। नज़र ना आए कोई लाशरीक, परवरदिगार मेल ना कोए मिलाया। हक़ दिसे ना कोए तौफ़ीक, वाहद नूर ना कोए रुशनाया। सदा साहिब वस चीत, चेतन इक्को धार रखाया। नित नित गावां तेरे गीत, गीत गोबिन्द इक अल्ाया। तूं बैठा धाम अनडीठ, नज़र किसे ना आया। सचखण्ड निवासी तेरी सच प्रीत, चतुर्भुज तेरी वडयाया। आदि शक्ति तेरी कोई ना करे रीस, सीस जगदीश ताज ना कोए टिकाया। जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, लोकमात निरगुण सरगुण वेस वटाया। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान गाए तेरे गीत, गीत इक्को इक वडयाया। कुरान अञ्जील मसला हक़ मसीत, मुल्ला शेख़ मसायक देण दुहाया। पीर पैगम्बर गुर अवतार तेरी दस्सदे गए तारीख़, लिख लिख लेखा जगत सुणाया। कलिजुग अन्तिम आवे ठीक, ठोकर आपणे नाम लगाया। लेखा जाणे हस्त कीट, लख चुरासी वेख वखाया। अमृत देवे ठंडा सीत, निझर झिरना आप झिराया। पतित पापी पार उतारे वेखणहार पलीत, पावन आपणा रंग रंगाया। सदी चौधवीं रही बीत, चार कुण्ट अन्धेरा छाया। चौदां तबक होए शरीक, सिरकत घर घर वेख वखाया। निरगुण सरगुण परख नीत, नीतीवान बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाया। भगवान कहे भगत मीत, मित्र प्यारे तेरी वड वड्याईआ। तेरा ढोला सच्चा गीत, सो पुरख निरँजण सुणे चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्तिम नाता तुटे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर ना कोए वड्याईआ। भगत भगवान इक जणाए गीत, इक्को नाम वज्जे वधाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। लख चुरासी परखणहारा नीत, नेता बणे सच्चा माहीआ। सच निशाना दस्से ठीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेद आप जणाईआ। भगत कहे भगवान दस्स, दर तेरे अरज़ोईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया नस्स नस्स, बण पांधी फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण अन्दर वस वस, वस्त आपणी इक समझाईआ। अमृत आत्म दे रस रस, निझर झिरना इक झिराईआ। तीर निराला अणयाला मार कस कस, शब्दी शब्द बाण लगाईआ। आत्म परमात्म गा गा जस, जस वेद पुराण सुणाईआ। लेखा जाण तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध कर कुड़माईआ। उलटी गेड़ लठ्ठ लठ्ठ, गेड़ा इक्को इक जणाईआ। जगत विद्या खोल्ह हट्ट, चौदां विद्या कर पढ़ाईआ। निरगुण खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ प्रगटाईआ। भगत भगवान पूरी कर आस, आसा तेरे अग्गे इक्को इक टिकाईआ। जुग चौकड़ी तेरी शाख़, शहिनशाह शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। इक्को मंग दर दरवेश, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा।

८२६
१३

लेखा जाण विष्न ब्रह्मा शिव महेष, सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा रंग रंगाइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर खोज खुजाइंदा। जुग जुग बदलणहारा वेस, वेस अनेका रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण खेडे खेड, ख़ालक ख़लक फेरा पाइंदा। तेरा लेखा जाणे सदा हमेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या भगत भगवान, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। हरि साहिब सतिगुर हो मेहरवान, एकँकार होए सहाईआ। आदि निरँजण नूर महान, अबिनाशी करता दए वड्याईआ। श्री भगवान सति निशान, पारब्रह्म दए दरसाईआ। ब्रह्मा मेला विच जहान, निरगुण सरगुण लए मिलाईआ। एका शब्द सुणाए सच्ची धुन्कान, अनरागी राग अलाईआ। अन्तर आत्म अमृत बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। नाता तुटे आवण जाण, लख चुरासी फंद कटाईआ। सच वखाए मन्दिर मकान, हक़ हकीकत खोज खुजाईआ। लाशरीक हो मेहरवान, सिरकत सब दी दए गंवाईआ। हुजरा हक़ सुहाए आण, महिराब इक्को इक रुशनाईआ। साचा ढोला गाए गाण, गोबिन्द इक्को गीत अलाईआ। बण वचोला दो जहान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। चौदां लोक वेख दुकान, दर दर आपणी अलख जगाईआ। चौदां तबक होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर नेत्र खोल करन ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। गुर अवतार वेखण खेल नौजवान, निरगुण आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान रिहा समझाईआ। भगत कहे प्रभ सच जगदीश, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हउँ बालक करां असीस, निउँ निउँ लागां पाईआ। चार वरन चार कुण्ट देणी इक हदीस, इक्को इक पढ़ाईआ। एका रंग रंगाउणा हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। इक सुणाउणा साचा गीत, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, घर घर विच वज्जे वधाईआ। नज़री आए साहिब अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। पंज तत्त करे प्रीत, पंच नाद शब्द शनवाईआ। सांतक सति सति कराए सीत, ठांडी धार इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। श्री भगवान दस्से बोल, शब्द अगम्म जणाइंदा। आदि जुगादी तोले तोल, तोलणहारा इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी कुण्डा खोल, लोकमात राह चलाइंदा। निरगुण सरगुण कर कर घोल, जगत अखाड़ा वेख वखाइंदा। आप बैठा रहे अडोल, लख चुरासी जीव डुलाइंदा। सदा सदा सद खेलां होल, हौला धरनी भार कराइंदा। जन भगतां अन्दर जावां मौल, मौला आपणा नाउँ रखाइंदा। सदा सदा सद पूरा करां कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, शास्त्री शास्त्रां विच्चों भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण रहे आप अडोल, महल

अटल इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। साचे भगत लैणा जाण, जाणी जाण आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। आत्म परमात्म सच कहाण, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। ईश जीव करे कल्याण, कलमा नबी आप समझाइंदा। कायनात वेखणहार मार ध्यान, महिबूब आपणा रंग रंगाइंदा। मेटणहार शरअ शैतान, शरीअत वंड ना कोए वंडाइंदा। भगत भगवान कर पहचान, बेपहचान मेल मिलाइंदा। आत्म अन्तर दए ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। सच वखाए धर्म निशान, सचखण्ड दवारे आप झुलाइंदा। थिर घर होए शब्द प्रधान, शब्दी शब्दी वेस वटाइंदा। पीर पैगम्बर करन सलाम, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। गुर अवतार मंगण दान, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण फ़रमान, फ़रमांबरदार सर्ब अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम लेखा जाणे जीव जहान, जोती जाता फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगत आप जणाइंदा। साचे भगत दस्से हाल, हल्ल स्वाल कराईआ। कलिजुग अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। कूड़ी क्रिया वज्जा ताल, सच सुच्च नज़र ना आईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, शाह सुल्तान रहे कुरलाईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, ख़ाली हथ्थ रहे फिराईआ। गुर का शब्द ना कोए दलाल, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। त्रैगुण माया प्या जाल, चार वरन बद्धा थाउँ थाईंआ। माया ममता घाली घाल, हउमें हंगता नाल मिलाईआ। भुक्खा नंगता जीव जहान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेले अन्त आए ज़वाल, ज़ेर ज़बर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत रिहा समझाईआ। साचे भगत कर ख्याल, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कलिजुग अन्त होया बेहाल, बिहबल हो हो नैणां नीर वहाइंदा। चार लख बत्ती हज़ार ना चली नाल, नाता निरगुण आप तुड़ाइंदा। पत्त ना दिसे किसे डाल, ख़िज़ां रुत्त आप जणाइंदा। सच ना दिसे कोई धर्मसाल, जगत अखाड़ा नाच नचाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना करे प्रितपाल, अन्दर वड़ राह ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म वसे ना किसे नाल, दूई द्वैती डेरा कोए ना ढाइंदा। सर सरोवर अमृत मारे ना कोई उछाल, कूड़ी क्रिया ना कोए रुढ़ाइंदा। ना कोई सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद फेरा कोए ना पाइंदा। माया राणी वज्जे ताल, तलवाड़ा नाद ना कोए सुणाइंदा। चारों कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर नज़री आइंदा। दीन मज़्ब शरअ होई शैतान, शरीअत सच ना कोए जणाइंदा। असलीअत वेखणहारा निगाहबान, दो जहानां फोल फुलाइंदा। जन भगतां देवे इक ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म साची सिख्या इक समझाइंदा। सोहँ ढोला धुर फ़रमान, सच संदेसा

८३१
१३

आप अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सारे गाण, गा गा शुकर मनाइंदा। करोड़ तेतीसा सिफ्त सालाहण, सुरप्त इन्द वड वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप जगाइंदा। साचे भगत जाणा उठ, हरि सतिगुर आप जगाईआ। किरपा निधान जाए तुठ, मेहरवान होए सहाईआ। जाम प्याए रसना घुट्ट, दिवस रैण खुमार रखाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट्ट, माया ममता ना होए हल्काईआ। कलिजुग मेटणहारा फुट्ट, प्रेम बन्धन इक जणाईआ। वेखणहारा चढ़ के चोट, चोटी इक्को आसण लाईआ। लगावणहारा नाम चोट, सच नगारा रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत मेला रिहा मिलाईआ। साचे भगत हो तैयार, त्रैभवण धनी आप जणाइंदा। कलिजुग करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाइंदा। प्रगट होए सांझा यार, सगला संग रखाइंदा। मुरीद मुर्शद दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल वखाइंदा। रहमत कर आप निरँकार, रैहम आपणा दर खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। भगत भगवान मेले आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे जाप, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। जन्म कर्म दा मिटे ताप, त्रैगुण बन्धन दए तुड़ाईआ। दिवस रैण इक्को पाठ, पूजा इक्को इक समझाईआ। इक सरोवर सच्चा ताट, मजन इक्को घर कराईआ। इक्को जोत कर प्रकाश, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। इक्को प्याए आब हयात, सच खुमारी नाम चढ़ाईआ। इक्को मेट अन्धेरी रात, साचा चन्न करे रुशनाईआ। इक्को पुच्छणहारा वात, जन भगतां होए सहाईआ। इक्को देवणहारा दात, दीन दयाल बेपरवाहीआ। इक्को पूरी करनहारा ख्वाहिश, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। इक्को देवणहारा धरवास, धीरज इक्को इक धराईआ। इक्को वसणहारा पास, करवट आपणी दए बदलाईआ। इक्को करनहारा बंद खुलास, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। इक्को प्रगटावणहारा भगत भगवान साची शाख़, सच्ची शनाख़त इक्को इक जणाईआ। इक्को जिउँ भावे तिउँ लए राख, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत संग रखाईआ। साचे भगत साचा संग, सगल संगी आप जणाइंदा। उठ साजण लाग अंग, अंगीकार आप कराइंदा। जन्म कर्म दा मिटे नंग, पड़दा इक्को नाम पाइंदा। डूँग्घी कन्दर अन्दर लँघ, सच्चा संग समझाइंदा। शब्द अगम्म वजाए मृदंग, तार सतार ना कोए वखाइंदा। अमृत धार वहाए गंग, जमना सुरस्ती गोदावरी मूल मुकाइंदा। नौ दवारे चुके पन्ध, दसवें आपणी गंढ पवाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, मण्डल मण्डप आप रुशनाइंदा। सोहला सुणा साचा छन्द, गीत इक्को इक रखाइंदा। देवणहारा परमानंद, निजानंद आप दरसाइंदा। मुकावणहारा पिछला पन्ध, अगला मार्ग आप जणाइंदा। सुरत शब्द देवे गंढ, पल्लू आपणे नाल बंधाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आप सालाहइंदा। भगत भगवान सिफ्त सलाह, सलाहगीर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार सेवा ला, पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ। परवरदिगार इक खुदा, खुदी सब दी दए गंवाईआ। राम रूप आप अख्वा, घट घट डेरा लाईआ। मोर मुक्ट सीस टिका, काहना बंसरी नाम सुणाईआ। ईसा मूसा तौफ़ीक दस्स खुदा, ताअरीफ़ तुआरफ़ दए समझाईआ। मुहम्मद नेत्र नैण खुल्हा, अक्ख प्रतख दए वखाईआ। नानक गोबिन्द गोद बहा, समरथ देवणहार वड्याईआ। धुर दा लेखा आप जणा, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण जावे आ, दूजा संग ना कोए रलाईआ। निहकलंका नाउँ धरा, नाम डंका इक वजाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजा, रवि ससि वेखे नूर रुशनाईआ। मण्डल मण्डप पर्दा देवे लाह, करे खेल बेपरवाहीआ। धरत धवल डेरा लए लगा, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। वेद व्यासा दए भरवासा, सच संदेसा इक जणाईआ। ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता लए प्रगटा, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला ग़रीब निवाजा, इक इकल्ला आप कराइंदा। निरगुण निरगुण फिरे भाजा, सरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। राग अनाद वजाए अगम्मी वाजा, सुर ताल ना कोए वखाइंदा। शाहो भूप बण राजन राजा, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। सीस जगदीश सुहाए ताजा, तख्त निवासी वेस वटाइंदा। जन भगतां रखे कलिजुग लाजा, लाशरीक फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वसाइंदा। भगत भगवान इक्को दर, दर सच्चा दए जणाईआ। भगत भगवान इक्को घर, घर मन्दिर मिले वड्याईआ। भगत भगवान इक्को सर, सर सरोवर इक दरसाईआ। भगत भगवान घाड़न घड़, घड़ वेखे थाउँ थाईंआ। भगत भगवान इक दूजे दे अन्दर जाण वड़, नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान पल्लू लए फड़, फड़या लड़ ना कोए छुडाईआ। भगत भगवान अक्खर लए पढ़, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। भगत भगवान ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण खेल कराईआ। भगत भगवान आपणी करनी आपे कर, करता आपणी खेल कराईआ। भगत भगवान ना भउ ना कोए डर, भ्यानक रूप नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आपणी गोद बहाईआ। जन भगत साची गोदी बहिणा, श्री भगवान आप जणाइंदा। हरि का दर्शन करना नैणां, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। इक्को इक मन्नणा कहिणा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। सच सरनाई साची ढहिणा, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाइंदा। झूठे वहण कदी ना वहणा, कूड़ी क्रिया ना कोए रुढ़ाइंदा। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राए धर्म ना

डंन लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप उठाइंदा। साचे भगत गोदी चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। साचे मन्दिर बहि बहि रिहा पुच्छ, भेव अभेद खुल्हाईआ। कवण वस्त कोल कुछ, दयो मोहे बताईआ। भगत कहे क्यों बैठा लुक, लुकवीं खेल रचाईआ। बिन तेरे नाम नाल रख्या ना कुछ, चुक्क चुक्क ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। कर किरपा नेड़े ढुक्क, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। शेर हो के बुक्क, शहिनशाह तेरी भबक इक सुहाईआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग पैंडा जाए मुक्क, पांधी पन्ध ना कोए वखाईआ। साडे अन्दर वड़ के पुच्छ, तेरा वछोड़ा रिहा सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत झोली रिहा डाहीआ। भगवान कहे अन्दर वड़ांगा। भगत दवारे चढ़ांगा। सुरत सवाणी फड़ांगा। पंच विकारे लड़ांगा। इक्को अक्खर पढ़ांगा। तूं मेरा मैं तेरा दूजा होर ना कोई वरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत दवारे खड़ांगा। भगत दवारे जावांगा। सोहँ गीत अलावांगा। सतिजुग रीत चलावांगा। मन्दिर मसीत पन्ध मुकावांगा। हस्त कीट रंग रंगावांगा। अनडीठ खेल करावांगा। लख चुरासी जीत, सिर इक्को ताज वखावांगा। सदी बीसवीं जाए बीत, बीती कहाणी सब दी झोली पावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निशाना दस्स के गए ठीक, तीर अणयाला आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत मेल मिलावांगा। भगतां मेल मिलेगा। दो जहान हिलेगा। कूड़ कुड़यारा शौह दरयाए ठिलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आपे मिलेगा। कवण दवारे मिलें आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। भगत कहिण तूं सच्चा बाप, मात पित तेरी वड्याईआ। सति सतिवादी तेरा जाप, जपत जपत सुख पाईआ। आदि जुगादी तेरा नात, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। निरगुण सरगुण तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। जीव जंत तेरा पाठ, साध सन्त पढ़ाईआ। लहिणा देणा मस्तक माथ, झोली नाम भराईआ। आत्म परमात्म तेरी ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। सूरज चन्न तेरी दात, दिवस रैण रुशनाईआ। वरन बरन तेरी जमात, जगत जुग कुड़माईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी गाथ, कलम शाही कागज़ सेव कमाईआ। तट सरोवर तेरा घाट, अठसठ तेरी वड्याईआ। काया माटी खेल तमाश, काची गगरीआ वेख वखाईआ। मण्डल मण्डप तेरी रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। इष्ट देव गुर तेरा बलास, भेव अभेद तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी शाख, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण दुआर मिले सरनाईआ। कवण दवारे मिले सरना, सरनगति कवण वड्याईआ। नाता तुटे जम्मणा मरना, जन्म

८३४
१३

मरन विच ना आईआ। कर किरपा आपणे जिहा करना, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। नेत्र खुल्हे हरना फरना, निज नेत्र इक खुल्हाईआ। नाता तुटे बरनां वरनां, अठारां चार ना बंध बंधाईआ। सदा सदा सद भाणा जरना, सब तेरी ओट तकाईआ। तेरे गृह तेरे मन्दिर तेरे घर वड़ना, घर सच मिले वड्याईआ। अद्धविचकार कदे ना अड़ना, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। पारब्रह्म तेरा इक्को अक्खर पढ़ना, ब्रह्म तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर मिले सरनाईआ। साचा वर दए भगवान, भगत जन समझाइंदा। सोहँ शब्द सति ज्ञान, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। एथे ओथे देवे माण, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। सच दुआर मिले मकान, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड कर परवान, परवाना इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। नाता तोड़ ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाइंदा। चरण कँवल इक ध्यान, धरत धवल डेरा ढाइंदा। नज़री आए नौजवान, बेनज़ीर नज़र इक्को इक बदलाइंदा। धर्म वखाए सच निशान, शहिनशाह साहिब आप झुलाइंदा। तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप सोभा पाइंदा। दूसर दिसे ना कोए निशान, रूप रंग रेख वंड ना कोए वंडाइंदा। जन भगत करे परवान, परम पुरख मेल मिलाइंदा। दर सोहे इक दरबान, दर दरवेश आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत वचोला बण पांधी फेरा पाइंदा। भगत वचोला श्री भगवन्त, भगवान वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी देवणहारा साचा मंत, मंत्र इक्को नाम समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला नार कन्त, कन्त सुहागी शब्द वैरागी आपणे अंग लगाईआ। इक्को चाढ़ रंग बसन्त, सति जणाए महिमा अगणत, अलख अगोचर बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, जगत विद्या करे खण्डत खण्डा इक्को रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला दर सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। किरपा कर अलख निरँजणा, अलख अगोचर खेल वखाइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, दीनन आपणी दया कमाइंदा। करावणहारा धुरदरगाही साचा मजना, दुरमति मैल आप धवाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दा पड़दा कज्जणा, सगला संग आप रखाइंदा। सतिजुग सच नगारा वज्जणा, श्री भगवान ताल वजाइंदा। कलिजुग कूड़ा ठूठा भज्जणा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। काल कलन्दर घर घर नच्चणा, डौरु डंक वजाइंदा। भगत सुहेला गुरमुख विरला बचणा, जिस दा बचपन आप बणाइंदा। दो जहान अंगीठा तपणा, त्रैगुण भठ्ठी इक तपाइंदा। पंज तत्त लख चुरासी मघणा, जगत अँगयारा रूप वटाइंदा। चार कुण्ट किसे ना मिले भज्जणा, पांधी नज़र कोए ना आइंदा। हुक्मे अन्दर सब ने बज्झणा, धुरफ़रमाना हुक्म मनाइंदा। ना कोई साक सैण सज्जणा, साथी अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा।

लौण देवे ना अज्ज पज्जणा, पाजी सब नूं आप बणाइंदा। श्री भगवान इक्को गज्जणा, गरज आपणे नाम सुणाइंदा। राज राजानां तख्त ताज तजणा, तख्त निवासी खेल रचाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दे कोल बहि बहि सजदा, तीजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप मिलाइंदा। जन साचे भगत मिलावांगा। इक्को गीत अलावांगा। साची रीत चलावांगा। त्रैगुण अतीत कहावांगा। चार वरन प्रीत बणावांगा। सुरत सवाणी शब्द मिलावांगा। सच कहाणी इक अलावांगा। सोहला ढोला गावांगा। दो जहानां फड़ उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे विच छुपावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को भगत वडयावांगा। इक्को भगत वडयाएगा। प्रभ अचरज खेल रचाएगा। निरगुण इष्ट नज़री आएगा। सृष्ट सबाई दृष्ट खुल्हाएगा। जिउँ रामा वशिष्ट विष्नूं आपणी धार जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे रंग रंगाएगा। भगतां रंग रंगे अनमोल, अनमुलड़ी खेल कराइंदा। साचे कंडे साहिब तोल, तराज़ू आपणे हथ्थ उठाइंदा। धारन इक्को वार बोल, एकँकारा राग सुणाइंदा। दो जहानां पड़दा खोल्ह, भेव अभेदा आप समझाइंदा। निरँकार निराकार निराधार निरवैर हर घट जाए मौल, मौला आपणा वेस वटाइंदा। अमृत आत्म परमात्म देवे पौहल, रस मिठ्ठा इक वखाइंदा। चार वरन इक्को ढोला लैण बोल, अनबोलत आपणा राग समझाइंदा। सच दवारा देवे खोल्ह, खालक खलक आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान सच निशान इक्को इक झुलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद सद मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। प्रेम अन्तर प्रेम नाता, गुर शब्द प्रेम जणाईआ। मिले मिले पुरख बिधाता, बिध इक्को इक समझाईआ। आत्म परमात्म साची गाथा, सोहँ ढोला सच पढ़ाईआ। मिटे रैण अन्धेरी राता, निरगुण नूर नज़री आईआ। हरिभगत हरि भगवान पिता माता, पूत सपूत गोद सुहाईआ। देवणहारा साची दाता, नाम दान झोली पाईआ। बोध अगाध होए ज्ञाता, बुध बिबेकी रूप दरसाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताका, बजर कपाटी पार कराईआ। नज़री आए इक्को ख़ाका, बेतस्वीर बेनज़ीर नूर नूर रुशनाईआ। जाम प्याए इक्को साका, साकी सच सुराही हथ्थ उठाईआ। अन्तर बाहर पुछे वाता, मेहरवान हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त भण्डार हरि नाम आत्म झोली पाईआ।

८३६
१३

❇ ६ फग्गण २०१६ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छौणी ❇

श्री भगवान खेल अकथ, अकथ कथ दृढ़ाइंदा। सचखण्ड दवारे साचे वस, बंक दवारा इक वड्याइंदा। करे खेल पुरख समरथ, निरगुण आपणा राह जणाइंदा। गुर अवतारां रिहा दस्स, नेत्र नैण नैण दरसाइंदा। पीर पैगम्बरां इशारे नाल मिलाए हथ्थ, बेपरवाह दया कमाइंदा । जुग चौकड़ी रखे वक्ख वक्ख, भेव अभेद किसे ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। सच दवारा खोल्ह हट्ट, भगत भगवान आप वड्याइंदा। एका देवे नाम रस, रस इक्को इक चखाइंदा। आत्म परमात्म गाए जस, सोहला ढोला आप पढ़ाइंदा। मेल मिलावा नस्स नस्स, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। हिरदे अन्दर वस वस, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश घट घट, पूरब घाटा पूर कराइंदा। नेड़े रखे अग्गे वाट, बण पांधी फेरा पाइंदा। वखावणहारा सच सरोवर तीर्थ ताट, गृह झिरना इक झिराइंदा। देवणहार अगम्मी दात, नाम निधान झोली पाइंदा। देवणहारा सच्चा साथ, सगला संग निभाइंदा। होवणहार सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणा रंग रंगाइंदा। कूड़ी क्रिया करनहारा घात, नाम खण्डा इक चमकाइंदा। चार वरन बणावणहारा सच जमात, साची सिख्या इक समझाइंदा। वेखणहारा कायनात, नव सत्त फेरा पाइंदा। खेलणहारा खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल रास रचाइंदा। पूरी करनहारा आस, जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। दाता दानी सर्ब गुण तास, गहर गम्भीर आपणा राह चलाइंदा। शाहो भूप शाह शाबाश, शहिनशाह इक्को हुक्म मनाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, पुरीआँ लोआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। सच दवारे कर निवास, थिर घर आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जाता हो प्रकाश, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा वखाल, बिन नेत्र नैण जणाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सच दुआर सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। दीआ बाती कोई ना सके बाल, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। नाद धुन ना कोए ताल, तलवाड़ा नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त ना कोए ज्ञान, वेद शास्त्र सिमरत ना कोए पढ़ाईआ। सूरज चन्द ना कोए भान, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। नाता कोए ना ज़िमीं असमान, लोक परलोक ना कोए वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना देवे कोई दान, झोली अग्गे ना कोए डाहीआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी खेल कराईआ। इक इकल्ला नौजवान, निरवैर आसण लाईआ। तख़त निवासी शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, कोटन कोटि काल गेड़े विच रखाईआ। गुर अवतारां दे दे दान, समरथ आपणा भेव खुल्हाईआ। पीर पैगम्बरां

दस्स कलाम, कलमा नबी रसूल जणाईआ। मिहबान बीदो सच घर धाम, मुकामे हक़ खेल रचाईआ। दरगाह साची हो प्रधान, सति प्रधानगी इक दृढ़ाईआ। नेत्र खोल्ह करो पहचान, पहचान रिहा समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग देंदे रहे ज्ञान, जगत विद्या कर पढ़ाईआ। अक्खरां अक्खरां नाल कर वख्यान, वक्खरो वक्खर धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर रिहा जगाईआ। पीर पैगम्बर जागो खोल्हो अक्ख, सो साहिब आप जगाइंदा। निरगुण नूर वेख प्रतख, परम पुरख भेव खुल्हाइंदा। ना कोई दिसे कुली कक्ख, महल अटल ना कोए सुहाइंदा। घट घट अन्दर रिहा वस, वसणहारा नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, नूर नूराना डगमगाइंदा। खेले खेल अगम्म अथाह बेपरवाह साचे मण्डल पावे रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। गुर अवतार करदे गए कल्याण, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। सच्चा संदेसा देंदे गए वख्यान, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सरगुण निरगुण धरदे गए ध्यान, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। गुर अवतार शब्दी शब्द देंदे गए ब्यान, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी हो प्रधान, पंज तत्त दए वड्याईआ। तत्तव तत्त खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। परवरदिगार बेपहचान, नूर ज़हूर नज़र किसे ना आईआ। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। साचा लेखा दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी जिस दा करदे रहे जाप, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त जिस दा सच्चा पाठ, पाठशाला इक वखाइंदा। सच सरोवर वखाए घाट, तट किनारा नज़र कोए ना आइंदा। जिस दी तक्कदे रहे वाट, सो पांधी आपणा फेरा पाइंदा। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, निरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान दस्से साची गाथ, साचा मंत्र इक पढ़ाइंदा। लेखा जाण त्रैलोकी नाथ, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां लेखा आप जणाइंदा। आओ वेखो सच्चा राह, हरि सतिगुर आप जणाईआ। प्रगट होया बेपरवाह, बेअन्त वड वड्याईआ। सच इशारा दए जणा, रहबर नूर खुदाईआ। रहमत आप दए कमा, मेहर नज़र आप उठाईआ। लेखा चुके काग़ज़ कलम छाह, शहिनशाह इक्को हुक्म जणाईआ। वेखणहारा थाउँ थाँ, चौदां लोक चौदां तबक फेरा पाईआ। दृढ़ावणहारा सच्चा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लए मिला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों

८३८
१३

हँस उडाईआ। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत भगवान लए जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साची सिख्या दए दृढ़ा, दृढ़ विश्वाश इक सिखाईआ। ना कोई खाए सूर ना कोई गां, कूड़ी क्रिया नाता दए तुड़ाईआ। धर्म वखाए इक निशान, चार वरन इक सरनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगा, दुरमति मैल धवाईआ। घर डंका इक वजा, घर अनहद नाद सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, डूँग्घी कन्दर वेख वखाईआ। सूरा सरबँगा दया कमा, शहिनशाह मेहर नज़र उठाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब लेखा दए मुका, लेखा चुके सर्ब लोकाईआ। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका हुक्म दए मना, हुक्मे अन्दर सर्ब समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र वेखो नैण उठा, निरगुण निरँकार रिहा समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो वंडां आए पा, वेले अन्त लेखा दए मुकाईआ। पिछलीआं गंढ्ढां लओ खुल्हा, अग्गे बंद ना कोए कराईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चार खाणी चार बाणी इक्को मंत्र दए पढ़ा, चार वरन इक सरनाईआ। साचा मन्दिर महल अटल उच्च मनारा दए वसा, महिफ़ल आपणे नाम लगाईआ। सच संदेस नर नरेश निरगुण दाता पुरख बिधाता दो जहानां दए सुणा, विष्न ब्रह्मा शिव आप जणाईआ। करे खेल बेपरवाह, बेपरवाही आपणी आप जणाईआ। लख चुरासी खोज खुजा, घर घर आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त लए मिला, मिल मिल आपणा भेव जणाईआ। गुर अवतारां

८३६
१३

पीर पैगम्बरां पहलों लए उठा, फेर करे सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा जणाईआ। सच संदेसा देवे आ, मेहरवान दया कमाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म चलाइंदा। सचखंड दवारा इक खुल्हा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। साची सदा आवाज़ इक लगा, नाअरा हक़ हक़ दृढ़ाइंदा। मंत्र अन्तर इक पढ़ा, पुस्तक हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। बणतर साची लए बणा, भगत भगवान आप जणाइंदा। जिस दा तक्कदे राह, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। जिस नूं कबीर नानक रहे सालाह, सो साहिब फेरा पाइंदा। कलिजुग लहिणा दए मिटा, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी आप कमा, करता पुरख निहकर्मी कर्म कमाइंदा। दो जहानां मार्ग इक्को ला, देवत सुर आप समझाइंदा। ब्रह्मावेता नैण शरमा, शंकर अक्ख ना कोए उठाइंदा। विष्नूं दोए जोड़ सरना, सरनगति इक तकाइंदा। गुर अवतार बैठे ध्यान लगा, ध्यान ध्यान विच जणाइंदा। पीर पैगम्बर नेत्र नैणां नीर रहे वहा, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। करे खेल आप खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। वरन बरन जो कीते जुदा, सरन इक्को इक दरसाइंदा। भगत भगवान नेत्र हरन फरन दए खुल्हा, अज्ञान अन्धेर ना कोए रखाइंदा। साची उंगली आपे ला, साचे मार्ग आपे पाइंदा। महल अटल इक रोशना, दीवा बाती डगमगाइंदा। कमलापाती खेल खला, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर दी धार आप समझाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। जोती जाता शहिनशाह, पिछली करनी आपणे लेखे पाइंदा। अगला मार्ग दए समझा, साची रीती इक सिखाइंदा। दूसर देवे ना कोए सलाह, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा आत्म परमात्म एका थाँ, साचा संग आप रखाइंदा। आप आपणी सेव कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा सुणो मीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि जणाइंदा। सतिजुग चलाए साची रीत, रीतीवान फेरा पाइंदा। भगत भगवान रखे अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पंज तत्त करे ठंडा सीत, सीतल धारा अमृत मेघ बरसाइंदा। सच सुणाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर इक पढ़ाइंदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी लेखे लाइंदा। जिन्हां वसया साहिब चीत, चितवित ठगोरी कोए ना पाइंदा। लेखा इक्को जिहा हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याइंदा। करवट देवणहारा बदले आपणी पीठ, जन भगतां वेख वखाइंदा। साहिब सुल्तान कर बख्शीश, बख्शश आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रहबर इक्को इक अख्वाइंदा। रहबर बण श्री भगवन्त, साहिब वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत, जीवण युगती इक समझाईआ। भगत भगवान मेल मिलावा नार कन्त, आत्म परमात्म सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। अन्दर बाहर बणाए साची बणत, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। हरिजन वखाए महिमा अगणत, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्को इक अलाईआ। सच संदेसा देवे बोल, श्री भगवान दया कमाइंदा। सति दवारा इक्को खोल्ह, धर्म दवारा आप वड्याइंदा। भगतां रखे सदा कोल, जगत वछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। धाम जणाए इक अडोल, आदि जुगादि ना कोए डुलाइंदा। अमृत देवे साची पौहल, रस इक्को इक वखाइंदा। हरिजन लख चुरासी कढ्ढे वरोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक समझाइंदा। सच दुआर सुहावणा, सो साहिब आप सुहाईआ। बिन भगतां नज़र किसे ना आवणा, नेत्र बंद सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार ढोला गावणा, पीर पैगम्बर करन शनवाईआ। भगत भगवान वेख वखावणा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कलिजुग वेला अन्त सुहावणा, सोभावन्त रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। साचा मन्दिर इक वडयावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। परम पुरख एका पावणा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। पीर पैगम्बर वेख कुरलावणा, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। करे खेल की श्री भगवानना, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। पीर पैगम्बर होए हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। दूर दुराडे दस्सदे रहे निशान, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त

सलाहीआ। कलमा सिफ्त करे कुरान, काया काअबा दो दो आबा रूप नज़र कोए ना आईआ। नज़र ना आए हक़ अमाम, ईमान रूप ना कोए दरसाईआ। करे खेल नौजवान, कलिजुग अन्तिम बेपरवाहीआ। चौदां तबक सर्ब पछताण, पसचाताप करे लोकाईआ। प्रगट होया इक बलवान, ग़लबा सब दे उपर पाईआ। वसणहारा सच मकान, बेमुकाम आप अख्वाईआ। करनहारा बरदे ग़ुलाम, पीर पैगम्बर दर दरवेश बहाईआ। मिटावणहार अन्धेरी शाम, शमा नूर चन्द रुशनाईआ। जणावणहारा सच कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। अख्वौणहारा सच्चा राम, राम इक्को नज़री आईआ। प्रगटावणहारा सच्चा काहन, घनईया आपणा रंग रंगाईआ। प्यावणहारा सच्चा जाम, अमृत झिरना इक झिराईआ। देवणहारा सच पैग़ाम, हक़ हकीकत दए दृढ़ाईआ। दृढ़ावणहारा सति नाम, सति सतिवाद दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवणहार वड्याईआ। भगतन देवे हरि वडयाई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। कलिजुग अन्त कर कुड़माई, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म वज्जे वधाई, सगला संग रखाइंदा। सति दुआर इक खुल्हाई, दर दरवाज़ा आपे लाहइंदा। निरगुण सरगुण वेखे चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। सन्त सुहेले पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, फड़ बांहों गले लगाइंदा। गुरमुखां मेले इक्को थाईं, थान थनंतर आप जणाइंदा। गुरसिखां मेटे पिछली छाही, दुरमति मैल धवाइंदा। साचे मार्ग पाए राही, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। अग्गे पिच्छे हो के सेव कमाई, सेवादार आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। भगतां देवे माण, वड्डी वड्याईआ। सच संदेसा धुर फ़रमान, सति सतिवादी राह जणाईआ। निरगुण सरगुण कर पहचान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साचा ढोला सुणाए गाण, गावत गा गा खुशी मनाईआ। धर्म वखाए इक निशान, निशाना इक्को इक झुलाईआ। लेखा चुके आवण जाण, गेड़ चुरासी रहिण ना पाईआ। राए धर्म दी मुके काण, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत होए हैरान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, जन भगतां गोद उठाईआ। गोदी चुक्क बाल अंञाण, आप आपणे अंग लगाईआ। सच वखाए इक बबाण, नाम बबाणा आप प्रगटाईआ। चारे जुग करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर अवतार वेखण आण, आ आ शुकर मनाईआ। पीर पैगम्बर चरण धूढ़ी ख़ाक रमाण, टिक्का मस्तक इक्को लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गाइन गान, मंगलाचार थाउँ थाईंआ। भगत भगवान इकट्ठे जाण, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार रिहा वखाईआ। धुर दी धार दस्सण जोग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। भगत भगवान होया संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाइंदा। जिस जन सोहँ चुगी चोग, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। जन्म कर्म दा कट

रोग, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। सच दरसाए इक्को ओट, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। नाम नगारे लाए चोट, तत्तव तत्त ताल जणाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। जन भगत वडयाए कलिजुग अन्त, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। इक दृढ़ाए साचा मंत, मंत्र इक्को नाम समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर लाए अंगत, अंगीकार आप हो जाईआ। हरिजन दूजे दर ना होवे मंगत, अनडिठड़ी वस्त झोली पाईआ। नाता तोड़ जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज मोह मुकाईआ। सति सतिवाद बणाए बणत, घड़न भंनणहार हथ्थ वड्याईआ। साचा मेला नार कन्त, भगत भगवान सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर लेखा जाण, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम कर पहचान, परम पुरख मेल मिलाइंदा। सच वखाए इक्को धाम, धाम अवल्लड़ा आप सुहाइंदा। जिस गृह वसे निरगुण राम, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जिस मन्दिर सोहे काहन, बंसरी आपणे नाम सुणाइंदा। जिस हुजरे दए पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। जिस दवारे गाए गाण, नानक गोबिन्द राग अलाइंदा। सो साहिब हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। जन भगतां वेखे आण, आण पिछली सर्ब मुकाइंदा। दूजा इष्ट रहे ना कोए जहान, दृष्ट सब दी आपणे विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वसाइंदा। सच दवारे वसे भगत, श्री भगवान आप वसाईआ। नेत्र रोवे कलिजुग जगत, कूकण देण दुहाईआ। किसे लेखे ना लग्गे बूँद रक्त, पंज तत्त ना कोए चतुराईआ। हथ्थ ना आवे गया वक्त, पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वसाए साचे थाईंआ। साचा थाउँ उच्च महल्ला, हरिभगत जन वसाइंदा। जिथ्थे वसे इक इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाइंदा। सच संदेस साचा घल्ला, गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग ढोला गाइंदा। आप बणया रिहा अछल अछल्ला, वल छलधारी नज़र किसे ना आइंदा। वसणहारा जलां थलां, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कन्दर सोभा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। सच सिँघासण इक्को मल्ला, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। जोती शब्दी निरगुण रल्ला, सरगुण रंग ना कोए वखाइंदा। मंत्र मंत बोले अल्ला, धुर फ़रमाना हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप वसाइंदा। जन भगत वसे साचे खेड़े, खेड़ा इक्को इक जणाईआ। आवण जावण चुकण झेड़े, झेड़ा कोए रहिण ना पाईआ। प्रभ जू वसे नेरन नेरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेल मिलावा तेरे

मेरे, तेरा मेरा इक्को घर वसाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग निरगुण बैठा रिहा कर के वड्डे जेरे, सरगुण आपणा राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करन आया, करता पुरख दीन दयाल। जन भगतां देवे ठांडी छाया, सिर रख हथ्थ कृपाल, नाता तोड़े त्रैगुण माया, कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल। लेखा जाणे दाई दाया, सच सतिगुर सज्जण वसणहारा सच्ची धर्मसाल। एका माई लए उठाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेमिसाल। बेमिसाल ना कोई मिसल, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि जुगादी नूर जणाए इक असल, असलीअत आपणे हथ्थ रखाईआ। मुरीद मुर्शद कराए वसल, भगत भगवान सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, जन भगतां वंड वंडाईआ। सचखण्ड दुआर भगत जन चढ़ना, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाइंदा। निरभउ हो निरवैर दवारे वड़ना, अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। पुरख अकाल पल्लू फड़ना, फड़ बांहों गले लगाइंदा। हरिजन हरि दवारे बहि के अड़ना, साची सिख्या हरि जणाइंदा। साचा ढोला इक्को पढ़ना, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। लख चुरासी चुक्के जम्मणा मरना, जन्म मरन रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आप वसाइंदा। साचे मन्दिर हरि वसाएगा। जन भगतां दया कमाएगा। निरगुण नूर जोत मिलाएगा। काया काअबा इक वखाएगा। नाम नगारे चोट लगाएगा। वरन गोत पन्ध मुकाएगा। दीन मज़्ब सर्ब खपाएगा। कर ग़ज़ब खेल वरताएगा। लख चुरासी कर के आपणे विच जज़ब, जलवा नूर इक प्रगटाएगा। लेखा जाण अरब खरब, कोटन कोटि संख असंख आपणा नाम डंक वजाएगा। जुग चौकड़ी लाहवणहारा कर्ज़, मकरूज कर्ज अदा आप कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण रखाएगा। जन भगतां माण रखावेगा। सचखण्ड दुआर सुहावेगा। सीस जगदीश छत्र झुलावेगा। रहबर इक्को नज़री आवेगा। सबर प्याला जाम प्यावेगा। बब्बर शेर भबक लगावेगा। दो जहानां सबक पढ़ावेगा। चौदां तबक ख़ाक मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे दर वसावेगा। जन भगत सच दवारे वसेगा। मिल प्रभ नूं खुशीआं विच हस्सेगा। चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मार्ग साचा दस्सेगा। कूड़ी क्रिया कोलों नस्सेगा। माया ममता विच कदे ना फसेगा। प्रभ सरनी इक्को ढठ्ठेगा। निरगुण नाउँ इक्को जपेगा। त्रैगुण अग्नी कदे ना मच्चेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि का भगत कदे ना छुपेगा। हरिभगत कदे ना छुपणा, सो पुरख निरँजण आप वड्याइंदा। हरि पुरख निरँजण कलिजुग अन्तिम पुच्छणा, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले कदे ना लुकणा, प्रभ लुक्या

बाहर कढाइंदा। बिन दीन दयाल पैंडा किसे दा ना मुकणा, कोटन कोटि पांधी राह विच ध्यान लगाइंदा। बिन सतिगुर पूरे गोद किसे ना चुक्कणा, जून अजूनी सर्ब भवाइंदा। गुरमुख विरले कलिजुग अन्तिम उठणा, गुर सतिगुर आप उठाइंदा। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वसाइंदा। जन भगत वसे उच्च महल्ल, हरि सतिगुर आप वसाईआ। आदि जुगादि रहे अटल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। नाउँ रख हरि अबचल, सिँघासण आसण इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सज्जण आप टिकाईआ। हरि सज्जण देवे सच टिकाणा, टिक्का मस्तक नाम लगाइंदा। शब्द सरूपी सति बबाणा, दो जहानां पार कराइंदा। कोई वेख ना सके राजा राणा, शाह सुल्तानां नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां उपर होए मेहरवाना, भगवन आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्त कर परवाना, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सोहँ ढोला इक्को गाणा, नानक गोबिन्द गा गा शुकर मनाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका घर वसाना, गृह मन्दिर कुण्डा लाहइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म रंग रंगाना, रंग रंगीला इक्को माही नज़री आइंदा। सच संदेसा नर नरेशा इक सुणाना, धुर फ़रमाना शब्द जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिटे निशाना, कूड़ी क्रिया बाहर कढाइंदा। सतिजुग साचा बन्ने गाना, गुरमुख सगन मनाइंदा। गुर अवतार करन ध्याना, पीर पैगम्बर नैण उठाइंदा। प्रगट होया योद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप रखाइंदा। लेखा जाण दो जहानां, विष्न ब्रह्मा शिव समझाइंदा। करोड़ तेतीसा देवे दाना, सुरप्त इन्द नाल मिलाइंदा। रवि ससि होए हैराना, निउँ निउँ चरणी सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी विच्चों फड़ काया मन्दिर अन्दर चढ़, सच महल्ले आपे खड़, सोहँ ढोला इक्को पढ़, लेखा जाणे नारी नर, नरायण गुरमुख इक्को इक जगाइंदा। इक्को इक जाए जाग, जिस आपणी युगत जणाईआ। भगत भगवान करे वड वड भाग, वड भागी हरि जू नज़री आईआ। दिवस रैण रहे वैराग, बिरहों चोट इक लगाईआ। कूड़ी क्रिया दए त्याग, सच समग्री इक दरसाईआ। जन्म कर्म दी बुझे आग, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। चरण धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल धवाईआ। घर मिलावा कन्त सुहाग, भिन्नड़ी रैण खुशी वखाईआ। सोई सवाणी हँस बणी काग, कागों हँस रूप वटाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणी गोद सुहाईआ। साहिब सतिगुर करे लाड, प्रेम प्रीती इक सिखाईआ। शाहसवारा हरि निरँकारा पकड़े आपणे हथ्थ वाग, दो जहानां आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान लेखा एका

थाईंआ। इक्को धाम सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए राम। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, जन भगतां पूरन करे काम। नेत्र पाए नाम अंजना, अन्ध अन्धेरा मेटे शाम। चरण धूढ़ कराए मजना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे सच बिसराम। सच दवारे सच बिसराम, आसण सिँघासण इक दरसाईआ। नज़री आए इक्को राम, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। दरस दिखाए इक अमाम, आप आपणा पड़दा उठाईआ। लेखा वेख श्री भगवान, लेख आपणा दए जणाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस ना कोए निशान, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता भगतन विच समाईआ। भगतन मीता भगत समा, भगवन भेव चुकाइंदा। निरगुण देवे निरगुण राह, सरगुण सरगुण मार्ग लाइंदा। जोती जोत जोत कर रुशना, जोती जाता भेव चुकाइंदा। शब्दी शब्द डंक वज्जा, शब्दी शब्द सेव कमाइंदा। हरफ़ बहरफ़ जगत पढ़ा, चौदां विद्या वेख वखाइंदा। यकतरफ़ सच फ़ैसला दए सुणा, हुक्म हाकम आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। गुर अवतार अन्तिम लैणा जाण, जानणहार जणाइंदा। भगतां मिले आप भगवान, भगवन आपणा फेरा पाइंदा। दरगाह साची दए अस्थान, भूमका आपणी वंड वंडाइंदा। सतिजुग सच कर प्रधान, नाम प्रधानगी इक वखाइंदा। पिछली छड्डो सारे कलाम, कलमा रहिण कोए ना पाइंदा। सजदा करो इक अमाम, निरगुण तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। अग्गे बणो ना बाल अञ्याण, बाली बुध आप मुकाइंदा। रस्ता इक्को इक मेहरबान, दो जहान आप जणाइंदा। साची सिख्या करो परवान, सिखावणहारा आप समझाइंदा। इक्को इष्ट करो परवान, दृष्ट आपणे लेखे लाइंदा। लेखा छड्डो अञ्जील कुरान, कातब नज़र कोए ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, साह साह सिफ्त सालाहइंदा। जिस दा करदे रहे ध्यान, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। जिस उपजाया ज़िमीं असमान, सो आलमीन फेरा पाइंदा। जिस दे देंदे रहे पैग़ाम, ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील अज़राईल सीस झुकाइंदा। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव बणाया नज़ाम, नज़म इक्को इक अल्हाइंदा। जिस ने त्रै पंज खेल खलाया विच जहान, सो रहमत आप कमाइंदा। नेत्र खोल्ह सुण लओ कान, करनहार इक जणाइंदा। बिन भगतां मिले ना किसे माण, अभिमान सब दा मेट मिटाइंदा। सतिजुग साचा बणे विधान, विद्दत कम्म कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खुल्हेगा। दो जहान तुलेगा। जीव जंत रुलेगा। लेखा चुक्के काया कुले दा। कलिजुग बूटा हुलेगा। भगत भगवान फुलेगा। गुरमुख अमृत कदे ना डुल्लेगा। हरिजन लोकमात कदे ना रुलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर

इक्को उठेगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच्चा दान, जन भगतां उपर मेहरवान हो के तुठेगा।

पिता पुत्तर तुटा नाता, पंज तत्त ना संग रखाईआ। दुःख कलेश कूड़ा वासा, क्रिया जगत लड़ाईआ। सतिगुर सरनाई धर भरवासा, धुर दी धार जणाईआ। प्रभ मिलण दी रखो आसा, आसा अग्गे पूरी आप कराईआ। दुःख दलिद्र होए विनासा, अबिनाशी आप गंवाईआ। माणस जन्म करे बंद ख़लासा, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गया पूत पिता पुत्तर झोली पाईआ। हरिसंगत जन्म लेखे लाउणा, पिछला लेखा सर्ब चुकाइंदा। पिता पूत गोद उठाउणा, श्री भगवान कुक्ख सुहाइंदा। जन्म जन्म दा रोग मिटाउणा, पूरब पूरब वेख वखाइंदा। आवण जावण पन्ध गवाउणा, पतित पावण दया कमाइंदा। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाउणा, महिमा अकथ कथ जणाइंदा। हरिजन तेरा रथ चलाउणा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। नस्स नस्स जग पन्ध मुकाउणा, पांधी इक्को नज़री आइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु पवाउणा, गंढुणहार गोपाल स्वामी आप आपणे अंग लगाइंदा। गीत सुहागी छन्द सुणाउणा, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, घर मन्दिर इक वखाइंदा। दरगाह साची फड़ बहाउणा, सचखण्ड इक्को रंग रंगाइंदा। सरन सरनाई जिस जन सीस झुकाउणा, तिस सीस जगदीश आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत आपणे विच समाइंदा। हरिसंगत जन्म लग्गे लेखे, लेखा इक्को इक जणाईआ। कढुणहारा भरम भुलेखे, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। निरगुण आ के सरगुण वेखे, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। बेपरवाह ना भुल्ले चेते, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े मेले चाईं चाईंआ। पिता पूत करे साचे हेते, बण माता गोद उठाईआ। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सन्त बणाए पुत्तर जेठे, वर इक्को झोली पाईआ। हरिसंगत लेखे लग्गा जरम, जन्म विच कदे ना आईआ। लहिणा चुक्का पूरब कर्म, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। नाता तुटा वरन बरन, मिली सच सरनाईआ। नेत्र खोलू हरन फरन, अक्खीं नैणां दरस दिखाईआ। भेव चुकाए करनी करन, करता पुरख होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे लेखे पाईआ। हरिसंगत हरि कदे ना छड्डे, छेकड़ आपणा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे, फड़ बांहों आप उठाइंदा। फड़ बांहों लडाए लड्डे, थित वार ना वंड वंडाइंदा। विश्व बणा के इक्को यद्दे, भगत भगवान राह चलाइंदा। जगत किनार पार हद्दे, हदूद आपणी इक दरसाइंदा। कर किरपा दुआर जिस जन सद्दे, तिस

सदके घोली वारी आपणा बन्धन पाइंदा। गुरमुख गुरसिख नाम प्यार पीए मधे, मधर रस इक जणाइंदा। घर घर कराए साचा हज्जे, मक्का काअबा डेरा ढाइंदा। भगत भगवन्त इक्को नाद वज्जे, अनहद रागी राग सुणाइंदा। सेवक हो के श्री भगवान जन भगतां पिच्छे भज्जे, जुग जुग आपणा फेरा पाइंदा। मेहरवान हो पड़दा कज्जे, नाम दोशाला हथ्थ उठाइंदा। जिध्धर वेखो नज़री आए सज्जे खब्बे, अग्गा पिच्छा ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे जन्म लगाइंदा। लेखे लगे जन्म मात, मता सतिगुर इक पकाईआ। जन भगतां देवे नाम दात, अनमुलड़ी वस्त वरताईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिन्दे गए करामात, करामात चरण दए वड्याईआ। मेटणहार अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। जिस जन जणाए आत्म परमात्म गाथ, सोहला आपणा नाम वड्याईआ। तिस वेले अन्तिम पुच्छे वात, दर दर घर घर फेरा पाईआ। नेड़ ना आए लाड़ी मौत नार कमज़ात, कुलच्छीनी आपणा मुख छुपाईआ। राए धर्म चित्रगुप्त ना देवे कोई साथ, बैठण मुख भवाईआ। साहिब सतिगुर स्वामी चल के आए आप, शब्द बबाणा नाल रखाईआ। गुरमुख गुरसिख वेखे सच्चे साक, सज्जण आपणे नाल मिलाईआ। आप उतारे आपणे घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म लेखे लाईआ। माणस जन्म लेखे जाए लग्ग, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। जुग जन्म दी बुझे अग्ग, अमृत मेघ बरसाइंदा। जिस नूं आदि जुगादि कोटन कोटि रहे लभ्भ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गए छन्द, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहइंदा। जिस दा अन्तर आत्म मंगदे गए अनन्द, अनन्द हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। सो कलिजुग अन्तिम हो बख्शंद, बख्शश आपणी झोली पाइंदा। जन भगतां अन्दर होया आप बंद, बंदीख़ाना अन्त तुड़ाइंदा। आपणे मिलण दा आपे दस्से ढंग, जोग अभ्यास ना कोए कराइंदा। कर किरपा जिस नूं चाढ़े रंग, रंग इक्को नज़री आइंदा। अन्दर बाहर वसे संग, सगला संग निभाइंदा। गुरमुख कहे मेरा मुक्का पन्ध, सतिगुर कहे मैं नठ्ठ नठ्ठ फेरा पाइंदा। बण वचोला सूरा सरबँग, सुरती शब्द मेल मिलाइंदा। जागदयां सुत्तयां इक्को जिहा देवे अनन्द, काणी वंड ना कोए वंडाइंदा। गुरमुखां नाल सतिगुर पूरा जाए हंढ, आपणा जोबन होर ना किसे वखाइंदा। लख चुरासी विच अन्दर रखी कंध, जन भगतां पड़दा आपे लाहइंदा। बिन भगतां भगवान नूं कोई ना पावे ठंड, दो जहान अग्नी तत्त नज़री आइंदा। गुरमुख सच्चे चढ़न चन्द, ब्रह्मण्ड खण्ड आप रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन जन्म लेखे पाइंदा। जन्म लेखा हरि जू लिख्या, लिखण वाला नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जीव जगत जहान मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवान सदा सद देवे साची सिख्या,

करे सति पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम हरिसंगत पूरी करे इच्छया, निरिच्छत बेपरवाहीआ। दाता दानी पाए भिख्या, भिक्खक गुरमुख नज़री आईआ। नेत्र नैण निज आपणे दिस्या, जगत नेत्र रहे शरमाईआ। करे खेल आप अनडिठया, अनडिठड़ी कार कमाईआ। भगत भगवान इक दूजे नाल वंडण हिस्सया, जुग जुग राह जणाईआ। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी जगत कहाणी रहि जाए किस्सया, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। नेत्र लोचण नैण निज आत्म परमात्म जिस पेख्या, तिस पृथ्मी आकाश सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, जन्म कर्म धर्म वरन बरन आपणी झोली पाईआ।

❇ १० फग्गण २०१६ बिक्रमी हरिभजन सिँघ दे गृह लंगर पुरा मेरठ छौणी ❇

भगतां अन्दर वसाए नाउँ, श्री भगवान दया कमाइंदा। वेखणहारा थाईं थाउँ, नव नौ चार खोज खुजाइंदा। पकड़नहारा अगम्मी बांहों, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। करनहारा सच न्याउँ, साचे तख्त सोभा पाइंदा। भगत मिलावा जिउँ बालक पिता माउँ, पूत सपूता अंग लगाइंदा। सदा मिलण दा रखे चाउ, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप दरसाइंदा। साचा नाम देवणहारा, सतिगुर पूरा इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। धुर दी धार शब्द अगम्म जैकारा, पारब्रह्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म कर प्यारा, घर साचे दए वसाईआ। अनहद नाद सच्ची धुनकारा, धुन इक्को नाद अल्हाईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। जन भगतां देवे कर प्यारा, पीआ प्रीतम फेरा पाईआ। सदा सुहेला बण वणजारा, हट्ट इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक दरसाईआ। साचा नाम सतिगुर हथ्थ, दूसर नज़र किते ना आइंदा। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। अन्तर आत्म आपे वस, आप आपणा मेल मिलाइंदा। तीर निराला मार कस, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। पंच विकार जाए ढठ्ठ, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। दुरमति मैल देवे कट, अमृत आत्म सीर प्याइंदा। आत्म सेज वछाए खाट, सुहञ्जणी रुत्त आप प्रगटाइंदा। दूर दुराडी मेट वाट, नेरन नेरा नज़री आइंदा। करे खेल बहु बिध भांत, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। जन भगतां वसे साथ, नाउँ निरँकारा आप जपाइंदा। कोटन कोटि रसना जिह्वा करन जाप, बत्ती दन्द सर्ब कुरलाइंदा। सतिगुर पूरा कर किरपा जिस जन बुझाए आपणा आप, तिस आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम

इक वखाइंदा। साचा नाम एका एक, अक्ल कला वड्याईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे टेक, भगत भगवान आप समझाईआ। साधां सन्तां करे बुध बिबेक, बिबेकी आपणी धार दरसाईआ। जुग चौकड़ी किसे ना आवे विच भेख, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी सिफ्त सलाहीआ। निरगुण निरगुण करे हेत, नित नवित्त फेरा पाईआ। गुरमुख गुरसिख साचे नाउँ नाल लैण खेड, घर घर विच खेल वखाईआ। कर किरपा दस्से आपणा भेत, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म इक्को नाम दरसाईआ। आत्म अन्तर सच्चा नाम, श्री भगवान आप जणाइंदा। साहिब सतिगुर चरण चरण ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। गावत गाए बिन रसना जिह्वा ज़बान, आसा तृष्ना ना कोए वड्याइंदा। छन्द सुहागी सुणाए कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। अमृत अमिउँ रस प्याए सच्चा जाम, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। आत्म देवे परमात्म आराम, सुख इक्को घर वखाइंदा। सुख घर पाया मिल्या राम, बिन राम सुख नज़र कोए ना आइंदा। पाया सुख काया खेड़ा नगर ग्राम, नौ दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
८४६ १३ मेहरवान आपणा नाम आप पढ़ाइंदा। गुरमुख विरला जाए पढ़, जिस सतिगुर आप पढ़ाईआ। जिस किरपा कर लाए आपणे लड़, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। निरगुण वेखे अन्दर वड़, सरगुण अक्ख खुल्हाईआ। सच महल्ले आपणे खड़, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक जणाईआ। साचा नाम जननी जन, जगजीवण दाता आप जणाइंदा। अन्दर करे वस मनुआ मन, मन वासना मेट मिटाइंदा। नाम सुख वसे तन, जो तन सतिगुर चरण धूढ़ मस्तक टिक्का लाइंदा। एका राग सुणे कन्न, अनहद नादी राग अल्हाइंदा। कूड़ी क्रिया भाण्डा देवे भन्न, भरम भउ गढ़ तुड़ाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। एथे ओथे बेड़ा देवे बन्न्ह, सो नाम सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा नाम मंगो इक, जिस मंगयां भुक्ख रहे ना राईआ। प्रभ मिलण दी रखो सिक, जिस मिलयां विछड़ ना जाईआ। सच दवारे मंगो भिख, भिख इक्को इक वरताईआ। साहिब सतिगुर हर घट आवे दिस, दहि दिशा करे रुशनाईआ। दिवस रैण ना देवे पिठ, करवट लए ना कदे बदलाईआ। मेल मिलाए नित नवित्त, कर कर हित बेपरवाहीआ। माणस जन्म लैणा जित, हार नज़र कोए ना आईआ। साचा नाम कलिजुग अन्तिम लैणा सिख, जिस नूं सिख सिख गुर अवतार पीर पैगम्बर शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो नाम रिहा समझाईआ। सो पुरख निरँजण साचा नाम, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी पूरन करे काम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाइंदा। दो जहान

वसाए नगर खेड़ा ग्राम, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी वसे काया माटी चाम, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द देवे नाम, अंमिउँ रस इक्को इक चखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे सच कलाम, कलमा नबी रसूल सिखाइंदा। भगत भगवान देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। सन्त सज्जण कर परवान, साची सिख्या इक पढ़ाइंदा। गुरमुखां देवे गुर ज्ञान, गुर इष्ट इक्को नज़री आइंदा। गुरसिख मेला विच जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बन्धन इक वखाइंदा। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। साचा नाम कर प्रधान, वड प्रधानगी आप कमाइंदा। सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। हँ ब्रह्म बाल अञ्याण, पारब्रह्म खोज खुजाइंदा। दोहां विचोला नौजवान, निरगुण निरगुण गंढ पवाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। अन्तर वसाए आपणा नाम, बाहर सुख इक्को इक जणाइंदा। अन्तर वस श्री भगवान, बाहर भगवन्त सरगुण नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम घर घर आप वरताइंदा। साचा नाम सतिगुर वंड, वंडणहार दया कमाईआ। जुग जुग मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया मात खपाईआ। भगतन देवे इक अनन्द, निजानंद रस चखाईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ इक्को अक्खर पढ़ाईआ। खुशी कराए बंद बंद, बंदीख़ाना रहिण ना पाईआ। करे प्रकाश साचे चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। घर दे परमानंद, परम पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर बाहर इक्को सुख, देवणहार माणस मनुख, मानव आपणे रंग रंगाईआ। अन्दर वसाए कृपानिध आपणा नाम दया कमाईआ। हरिजन कारज करे सिध्ध, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखणहारा जीउ पिण्ड, घर घर खोज कराईआ। पावे सार जेरज अंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम दए वड्याईआ। इक्को नाम वड्डा सागर, गहर गम्भीर जणाइंदा। जन भगतां लुकाए काया गागर, आप आपणा खेल कराइंदा। सदा सदा हरि बण सौदागर, जुग जुग हट्ट चलाइंदा। हरिजन देवे इक्को आदर, आदर्श आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपाइंदा। साचा नाम उपमा जोग, परापत आप कराईआ। जोती शब्दी धुर संजोग, सुरत करे कुड़माईआ। जगत तृष्ना मिटे रोग, हउमें हंगता रहिण ना पाईआ। नात तुटे लोक परलोक, साचा सोहला इक सुणाईआ। चरणां हेठ रखाए मुक्ती मोख, जिस जन आपणा नाम समझाईआ। तिस दा विष्न ब्रह्मा शिव दर्शन रहे लोच, जो भगत भगवान मिल मिल खुशी मनाईआ। हरि का नाम किसे ना आवे विच सोच, सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। हरि का नाम वसावणहारा किला कोट, बंक दुआर दए वड्याईआ। जन भगतां लाए इक्को चोट,

८५०
१३

तन नगारे करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर इक्को नाम सालाहीआ। सच्चा नाम सच्चा रस, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। जन भगतां अन्तर आत्म वस, हिरदे हरि हरि नज़री आइंदा। बोध अगाध गावे जस, लेखा लिख्त ना कोए जणाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेल मिलावा हस्स, हँस मुख सोहँ शब्द साची चोग चुगाइंदा। जन जननी लेखे लाए कुक्ख, गर्भ वास फंद कटाइंदा। उज्जल करे मुख, जो हरि हरि नाम ध्याइंदा। अन्दर बाहर इक्को सुख, सतिगुर पूरा आप दरसाइंदा। कलिजुग अन्तिम जन भगतां गोदी चुक्क, आपणे अंगण आप बहाइंदा। लोकमात दा बूटा पुट्ट, सतिजुग फल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। अन्दर बाहर वखाए इक्को रुत्त, बसन्त बहार आप जणाइंदा। सन्त सुहेले साचे सुत, सति सतिवादी आप उठाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हिरदे नाम आप वसाइंदा। हिरदे नाम वसाए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जन भगतां बण माई बाप, घर वेखे चाईं चाईंआ। आत्म परमात्म इक्को जाप, जीवण युगत दए जणाईआ। जिस दा नानक निरगुण करया पाठ, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। सो साहिब पुरख समराथ, निरवैर नूर इलाहीआ। जुग जुग देवणहारा दात, वड भण्डारी बेपरवाहीआ। जन भगतां वसे सदा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। साढे तिन्न हथ्थ चलाए काया राथ, रथवाही नज़र किसे ना आईआ। अन्दर बाहर मेल मिलावा कमलापात, नैण नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्दर आपणा नाम टिकाईआ। जन भगतां लाए नाम टिक्का, मस्तक इक्को रंग रंगाइंदा। नज़र ना आए नीकन नीका, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। कूड़ा रस कद्धु फीका, अमृत मुख चुआइंदा। लेखा जाणे जीव जीअ का, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। हरिजन लहिणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ सीं का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम आपणे रंग वखाइंदा। हरि का नाम वखाए रंग, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। हरि का नाम सूरा सरबँग, सूरबीर सिफ्त सालाहीआ। हरि का नाम सच मृदंग, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। हरि का नाम निरगुण सरगुण वेखे लँघ, डूँग्घी कन्दर फेरा पाईआ। हरि का नाम करे प्रकाश निर्मल चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हरि का नाम गीत सुहागी छन्द, गुर अवतार रहे जस गाईआ। हरि का नाम सदा बख्शंद, बख्शश इक्को इक जणाईआ। हरि का नाम हरि सतिगुर दए वंड, गुर गुर शब्दी सेव कमाईआ। हरि का नाम हरिजन होण ना देवे रंड, नार सुहागण इक वखाईआ। हरि का नाम सिफ्त सालाहन सालाह ना सकण बत्ती दन्द, कातब करे ना कोए लिखाईआ। हरि का नाम गुरमुख जाणे जिस देवे परमानंद, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

८५१
१३

आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम इक्को नाम दए वड्याईआ। इक्को नाम साचा सोहला, सो पुरख निरँजण अन्त जणाइंदा। अन्तिम कलिजुग बदले चोला, सतिजुग साचा रूप वटाइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप लख चुरासी गाए ढोला, ढोला इक्को इक पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म रंग वखाए आपणा मौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक उपाइंदा। साचा नाम आदि जुगादि, इक्को इक वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन याद, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। गुर अवतार करन फ़रयाद, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। पीर पैगम्बर मंगण दाद, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो नाम इक प्रगटाईआ। सो नाम करे प्रगट, प्रगट आपणी धार चलाइंदा। आदि जुगादि वसे हर घट, घट घट डेरा लाइंदा। जुग चौकड़ी खेल बाज़ीगर नट, नटुआ स्वांग वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मार्ग दस्स, जुग चौकड़ी राह चलाइंदा। कोटन कोटि सिफ्ती नाम गए रख, सिफ्त सिफ्त नाल वड्याइंदा। अन्त मार्ग इक्को दस्स, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को घर सोभा पाइंदा। इक्को नाम करे प्रकाश, सार शब्द रूप वटाइंदा। सब दी पूरी करे आस, निरासा नज़र कोए ना आइंदा। थिर घर साचे करे वास, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ रखे आपणे पास, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, ख़ालक ख़लक आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम हिरदे आप वसाइंदा। साचा नाम हिरदे वसे, वस्त आपणी आप टिकाईआ। साहिब सतिगुर जन भगतां संग वसे, हस्स हस्स खुशी मनाईआ। अन्दर वड़ वड़ मार्ग दस्से, बाहर करे ना कोए पढ़ाईआ। पंच विकारा डर डर नठ्ठे, गुर शब्द इक्को डंक वजाईआ। आत्म परमात्म इक्को घर इकठ्ठे, पारब्रह्म मिल ब्रह्म खुशी मनाईआ। सोहँ ढोला दोवें रटे, रट्टा पिछला देण मुकाईआ। दूई द्वैती मिटे फट्टे, घाउ इक्को नाम लगाईआ। आत्म परमात्म रस चट्टे, परमात्म निझर झिरना इक झिराईआ। इक दूजे नूं दोवें जिते, हार जित ना कोए रखाईआ। भगत भगवान लेख कोए ना लिखे, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सन्त इक्को इक अक्खर सिखे, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। कोटन कोटि रस होण फिके, फिक रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हिरदे आपणा नाम धराईआ। हिरदे नाम देवे धर, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख सेव कमाइंदा। सन्त साजण साचे फड़ फड़, बांहों गले लगाइंदा। काया कवरी डूँग्घी भँवरी आपे वड़, उच्चा टिल्ला पर्बत फोल फुलाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपे चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। दर दरवेश नर नरेश वखावणहारा आपणा घर, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक

रूप आप मिटाइंदा। अन्दर बाहर इक्को जिहा कर, नाम आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण सीस धड़, नधड़क आपणा मेल मिलाइंदा। कर किरपा देवे नाम दान, दाता दानी इक अख्वाईआ। कलिजुग अन्त हो मेहरवान, श्री भगवन्त फेरा पाईआ। गुरमुख सज्जण कर पहचान, बेपहचान होए सहाईआ। दिवस रैण मिले आण, घड़ी पल ना कोए रखाईआ। बिन पढ़ियां देवे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। घर विच घर नज़र आए भगवान, निरगुण बैठा आसण लाईआ। गुरमुख साचे खुशी मनाण, घर सखीआं मंगल गाईआ। सृष्ट सबाई होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। अठसठ तीर्थ फिरे नादान, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मुल्ला शेख़ मसायक सर्ब कुरलाण काया काअबा किसे नज़र ना आईआ। पंडत पांधे कुल पछताण, बोध अगाध करे ना कोए पढ़ाईआ। साध सन्त होए वैरान, वैरी मन ना जितया जाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार शैतान, शरअ घर घर करे लड़ाईआ। रसना गावण हरि का नाम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कूड़ी क्रिया जगत नादान, मूर्ख मूढ़े देण दुहाईआ। जिन्हां उपर मेहर करे आप मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्दर नज़री आए राम, राम रमईया आपणा पड़दा लाहीआ। घर बसंरी वजाए शाम, मधर धुन इक सुणाईआ । घर ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, कलमा इक्को इक जणाईआ। घर नानक गोबिन्द मंत्र जणाए सति नाम, पुरख अकाल करे पढ़ाईआ। सो भगत होए परवान, जिस परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। सो सन्त होए निशान, जिस सच निशाना दए वखाईआ। सो गुरमुख चतुर सुजान, जिस चतुर्भुज नज़री आईआ। सो गुरसिख होए कुरबान, जिस काया आपणे रंग रंगाईआ। नाता तोड़ जगत जहान, सतिगुर सरन दए सरनाईआ । अन्तर दे इक्को नाम, नाम राम रहीम नज़री आईआ। राम राम करे कल्याण, साढे तिन्न हथ्थ खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां मन्दिर साचे चढ़, आपणा नाम दए जणाईआ। सच नाम बोल अलख, अलख अलखना आप जणाइंदा। पुरख अकाल हो प्रतख, प्रतख वेस वटाइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। जुग जन्म विछड़यां पूरी करे आस, आसा आपणे नाल मिलाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। घर घर विच वखाए रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। रातीं सुत्तयां वसे पास, जन भगतां पासा आप बदलाइंदा। अन्दर वड़या रहे स्वास स्वास, स्वास स्वासां आप समाइंदा। आत्म सेजा करे भोग बलास, भस्मड़ आपणी धार ना कोए जणाइंदा। इक्को नाम इक्को राम इक्को शाम इक्को कम्म करे ख़ाश, ख्वाहिश गुरमुखां पूर कराइंदा। अन्दर बाहर कर निवास, निज नेत्र दरस दिखाइंदा। सोहँ ढोला सच्चा पाठ, पाठशाला

काया मन्दिर आप जणाइंदा। दिवस रैण सरोवर अमृत मारे ठाठ, अठसठ तीर्थ नज़र कोए ना आइंदा। सच्चा नाम ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन गोत ना वंड वंडाइंदा। मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण इक्को नज़री आइंदा। गुरमुख गुरसिख अन्दर वेखे मार झात, झाकी सतिगुर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आपणी हथ्थीं आप टिकाइंदा। साचा नाम डूँग्घी कन्दर, सतिगुर पूरा आप टिकाईआ। कर किरपा मन वासना बन्ने बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईंआ। करे प्रकाश अन्धेरे खण्डर, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। हरिजन वखाए सच्चा हरि मन्दिर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। गुरमुख दोए जोड़ करे बन्दन, आत्म परमात्म लए प्रनाईआ। घर नज़र आए त्रिलोकी नंदन, अनन्द इक्को इक वखाईआ। नानक मेला सूरे सरबँगण, गोबिन्द अंगण गोद सुहाईआ। भगत भगवान इक्को नाम मंगण, प्रेम प्रीती वड वड्याईआ। मस्तक धूढ़ी लग्गे चन्दन, निम वासना सच महकाईआ। पिछला लेखा होवे खण्डन, खण्डा नाम विच फिराईआ। नाता तोड़े जेरज अंडण, ब्रह्मण्डण लेखा रहे ना राईआ। हरि भगत दूजे दर ना जाए मंगण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर बाहर आपणा नाम वसाईआ। अन्दर बाहर नाम वसे खेड़े, काया खेड़ा इक जणाइंदा। कूड़ी क्रिया मुक्के झेड़े, झगड़ा अवर ना कोए वखाइंदा। सुरती शब्दी देवे फेरे, घर साचा सगन मनाइंदा। लेखे लाए तेरे मेरे, मेरा तेरा इक्को घर जणाइंदा। नज़री आए नेरन नेरे, दूर दुराडा पन्ध चुकाइंदा। जन भगतां जुग जुग बन्ने बेड़े, कंध आपणे भार उठाइंदा। कलिजुग अन्तिम उलटी लठ्ठ आपे गेड़े, गेड़ा नज़र किसे ना आइंदा। जिस जन उपर करे मेहरे, मेहर नज़र इक उठाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख थोड़े होण बथेरे, बहुत्यां धर्म राए हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हिरदे हरि नाउँ वसाइंदा। हरि का नाउँ सदा वसनीक, घर घर डेरा लाईआ। दूजा रहिण ना देवे कोई शरीक, शिरकत सब दी दए मिटाईआ। मार्ग दस्से इक बारीक, औझड़ घाटी दए चढ़ाईआ। दूर दुराडा आए नज़दीक, नेरन नेरा फेरा पाईआ। साचा मन्दिर दस्से ठीक, काया ठीकर पड़दा लाहीआ। जिस दे नाम दी जुग जुग करदे रहे उडीक, सो नाम दाता फेरा पाईआ। कर किरपा दस्से इक्को चरण प्रीत, चरण प्रीती विच कोटन कोटि नाम छुपाईआ। जन भगतां काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। जो जन गाए सोहँ गीत, सो पुरख निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त साजण रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। माणस जन्म लैणा जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाम गुरमुखां जाम बिन प्यालिउँ रिहा प्याईआ। बिन प्यालिउँ प्याए नाम मदि, रस इक्को

इक वखाइंदा। हरिजन सज्जण साचे सद्द, धुर संदेस अलाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी नौ दवारे पार हद्द, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। चार वरन वखाए विश्व यद्द, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। कोटन कोटि लोकमात जीव जंत गए लद्द, बिन पूरे सतिगुर पार ना कोए कराइंदा। गुरमुख जीवदयां जगत नालों हो जाओ अड्ड, मरन इक्को इक समझाइंदा। सच प्रीती जाणा बज्झ, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। कृपानिधान अन्तिम पड़दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सचखण्ड दवारे बहिणा सज, हरिसंगत मेल मिलाइंदा। जिस नूं कोई ना जाणे अज्ज, बीते काल सर्ब पछताइंदा। जो घड़या सो रिहा भज्ज, कलिजुग काल नगारा डंक वजाइंदा। नाम निधान अमृत रस प्रभ चरण दवारे पीओ रज्ज रज्ज, पूरब जन्म तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। घर मन्दिर घर ठाकर बहे सज, घर मक्का काअबा घर हुजरा इक्को इक सुहाइंदा। उच्ची कूक सृष्ट सबाई कहो गज्ज, प्रभ अन्दर बाहर इक्को रस वखाइंदा। दूजी आस देणी छड्ड, खैहड़ा सब तों आप छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगत मेले भज्ज भज्ज, भाजड़ घर घर आप वखाइंदा।

❈ १० फग्गण २०१६ बिक्रमी शिव सिंँघ दे गृह मेरठ छौणी ❈

हरि नाम हरि अन्दर रखणा, रखणहार वड्डी वड्याईआ। गुरमुख कोए ना रहे सक्खणा, खाली भाण्डे आप भराईआ। सतिजुग साची देवे दक्षिणा, दहि दिशा कर रुशनाईआ। लूं लूं अन्दर आपे रचणा, रच रच खुशी वखाईआ। सच सुणाए इक्को बचना, बचपन सब दा दए बदलाईआ। काया माटी बणाए कंचना, कंचन सवरन रंग वखाईआ। साहिब सतिगुर जन भगत दवारे बहि बहि हस्सणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को दर वसाईआ। अन्दर रखे नाम निधान, बेपरवाह दया कमाइंदा। भाग लग्गे भगत मकान, काया बंक वड्याइंदा। नाद वज्जे सच धुन्कान, अनाद आप अलाइंदा। देवणहारा देवे माण, महान दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नाम हरिजन हिरदे आप वसाइंदा। साचा नाम गुरमुख मीत, गुर सतिगुर आप जणाईआ। सति सतिवादी साची रीत, शब्दी धार बंधाईआ। देवणहार सदा अनडीठ, अनडिठड़ी वस्त वरताईआ। सतिजुग साची चले रीत, रीतीवान वेख वखाईआ। सोहँ ढोला इक्को गीत, गहर गम्भीर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे थाउँ थाईंआ।

❇ १० फग्गण २०१६ बिक्रमी प्रेमी देवी दे गृह ग्रास मण्डी मेरठ छौणी ❇

सतिगुर दवारा नाम हट्ट, चौदां लोक मंग मंगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर औण नठ्ठ नठ्ठ, दो जहानां पन्ध आप मुकाइंदा। जन भगतां देवे हरि जू सद्द, सच्चा आपणा नाम लगाइंदा। आपणे नाल वंडे अद्ध, हिस्सा सांझा झोली पाइंदा। मेरा गाओ इक्को छन्द, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म कीता बंद, पड़दा आपणा इक जणाइंदा। मेल मिलावा साचा पद, दर घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरवाज़ा इक वखाइंदा। सच दरवाज़ा जाए खुल्ह, हरि नाम हट्ट चलाइंदा। देवणहार सदा अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाइंदा। दर दवारे आए जो जन भुल्ल, फड़ बांहों गले लगाइंदा। नाम बूटा ना जाए हुल्ल, पत्त डाली आप महकाइंदा। भगत भगवान दी साची कुल, जुग जुग आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को हट्ट विकाइंदा। इक्को नाम सच दुआर, दर दरबारी आप जणाइंदा। गुरमुख सज्जण बण भिखार, भिच्छया नर हरि सच्चा पाइंदा। मांगत बणो एका वार, दूजा दर ना कोए जणाइंदा। हरिसंगत मेला सच प्यार, गुर चेला गंढु पवाइंदा। वक्त सुहेला विच संसार, दुहेला, नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भण्डारा इक दरसाइंदा। नाम भण्डारा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि आपणे विच्चों कढ्ढ, अन्त आपणे विच रखाइंदा। जुग चौकड़ी कथा कहाणी गाए छन्द, रसना जिह्वा मेल मिलाइंदा। भगत भगवान अन्तर देवे इक अनन्द, आत्म आपणा रंग चढ़ाइंदा। चुरासी वछोड़ा कट फंद, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। द्वैत दूई ढाह कंध, घर इक्को इक वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सतार इक सुणाइंदा। नाम सतार सच सरंगी, सारंगा नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई तार ना कोई तन्दी, किली हथ्थ ना कोए रखाइंदा। खिचणहार सूरा सरबँगी, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। चले चाल आप बेढंगी, बिन भगतां ढंग ना किसे जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढी, कन्ढा दो जहानां वेख वखाइंदा। सच्चा नाम जणाए इक्को छन्दी, छन्द बंद आपणा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आपणे विच रखाइंदा। नाम अन्दर नाम उहला, नज़र किसे ना आईआ। नाम अन्दर नाम गोला, सेवक सेव कमाईआ। नाम अन्दर नाम बोला, अनबोलत राग अल्हाईआ। नाम अन्दर नाम पावे रौला, सुणे जगत लोकाईआ। नाम अन्दर नाम वसे कोला, नज़र किसे ना आईआ। नाम अन्दर नाम वजाए ढोला, मृदंग इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम अन्दर रहे मौला, मौला आपणा नाम सिफ्त सालाहीआ। नाम अन्दर नाम रस, रस रसीआ आप

जणाइंदा। नाम अन्दर नाम वस, वसीकार खेल कराइंदा। नाम अन्दर नाम मस, जस नाम सिफ्त सालाहइंदा। नाम अन्दर नाम रख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। नाम अन्दर नाम निवास, वासा नज़र किसे ना आइंदा। नाम अन्दर नाम दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। नाम अन्दर नाम आस, आसा आसा विच प्रगटाइंदा। नाम अन्दर नाम शाख़, गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग राग अलाइंदा। नाम अन्दर आपणा नाम रखे आपणे पास, पीर पैगम्बरां भेव ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम अन्दर नाम प्रकाश, प्रकाश आपणे विच मिलाइंदा। नाम अन्दर नाम अनडिठ, अनडिठड़े धाम टिकाईआ। नाम अन्दर नाम सिख्या लए सिख, सिख सिख करे पढ़ाईआ। नाम अन्दर नाम सिफ्त लए लिख, लेखा जाणे कलम शाहीआ। नाम अन्दर नाम वंडे हिस, हिस्सा देवे जगत लोकाईआ। नाम अन्दर नाम रिहा विक, कीमत नज़र किसे ना आईआ। नाम अन्दर नाम बणे मात पित, पिता पूत नाम अख्वाईआ। साचा नाम प्रभ देवे जन भगतां कर कर हित, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। नाम दित्ता जिस जिस, सो गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत हरि का ढोला गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाम आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम अन्दर नाम बोध, बोध करे पढ़ाईआ। नाम अन्दर नाम सति गोद, सुख आसण डेरा लाईआ। नाम अन्दर नाम करे योद्ध, योद्धा सूरबीर नाम अख्वाईआ। नाम अन्दर नाम लाए चोट, चोट नगारा इक लगाईआ। नाम अन्दर नाम होए मोहत, मुहब्बत इक्को इक रखाईआ। नाम अन्दर नाम ओत पोत, पुत्त पोतरे वंड वंडाईआ। नाम अन्दर नाम गोत, गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मज़्हब राह गए चलाईआ। नाम अन्दर नाम सरोत, सुणावणहारा नाम अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आपणे हुक्म चलाईआ। नाम अन्दर नार कन्त, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। नाम अन्दर रुत्त बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। नाम अन्दर जीव जंत, लख चुरासी नाच नचाइंदा। नाम अन्दर मणीआ मंत, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। नाम अन्दर भगत भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाइंदा। नाम अन्दर साध सन्त, कोटन कोटि सेव कमाइंदा। नाम अन्दर महिमां अगणत, गुरमुख गुर गुर आप पढ़ाइंदा। नाम अन्दर खेल अनन्त, गुरसिख गुर सिख्या इक दृढ़ाइंदा। नाम अन्दर बणाए बणत, नाम वणजारा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम आदि जुगादि जुग जुग जुग करता आप जणाइंदा। नाम अन्दर नाम सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। नाम अन्दर नाम हँ ब्रह्म हो, हरि जू आपणी खेल कराईआ। नाम अन्दर नाम आत्म परमात्म वधाए मोह, मोह मुहब्बत इक दरसाईआ। नाम अन्दर नाम जाए छोह, अंगीकार अंग लगाईआ।

८५७
१३

नाम अन्दर नाम देवे ढोआ ढो, साची वस्त झोली पाईआ। नाम अन्दर नाम करे लो, लोआँ पुरीआँ प्रकाश कराईआ। नाम अन्दर नाम रिहा रो, बण वैरागी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नाम अन्दर नाम जाणे को, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नाम अन्दर नाम जिहा प्रभ आपे हो, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। नाम अन्दर नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम आपणा आप जणाईआ। नाम अन्दर नाम अकाल, अक्ल कला अख्वाइंदा। नाम अन्दर नाम दयाल, दीन दयाल वेख वखाइंदा। नाम अन्दर नाम प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाइंदा। नाम अन्दर नाम लाल, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। नाम अन्दर नाम जलाल, जलवा नूर ज़हूर प्रगटाइंदा। नाम अन्दर नाम गुलाम, बण बरदा सेव कमाइंदा। नाम अन्दर नाम परवान, परम पुरख आप समझाइंदा। नाम अन्दर नाम निशान, सतिगुर साचा आप झुलाइंदा। इक्को नाम श्री भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाइंदा। सोहँ नाम सदा परवान, पार्बती शिव शिव शंकर ....।

❈ १० फग्गण २०१६ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छौणी ❈

सो पुरख निरँजण सच दरबारा, दरगाह साची आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। एकँकारा वड बलकारा, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। श्री भगवान परवरदिगारा, बेपरवाह खेल कराइंदा। अबिनाशी करता सति हुलारा, सति सतिवादी आप रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा, पेख आपणी खुशी मनाइंदा। सति सतिवादी खोल्ह दवारा, दर बंक इक वड्याइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। आपणी इच्छया कर वरतारा, साची भिच्छया आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे धार, अक्ल कल अख्वाईआ। खोल्हणहारा सच दुआर, दर दरवाज़ा वेख वखाईआ। महल अटल उच्च मनार, निरगुण दाता आप प्रगटाईआ। नाउँ रख सचखण्ड दुआर, सच सच दए वड्याईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कर कर आप, आपणी खेल कराइंदा। आदि आदी माई बाप, पिता पूत गंढु पवाइंदा। घर घर खेल खेल तमाश, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सच दवारे कर निवास, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल कराईआ। साचे तख्त निरगुण चढ़, तख्त निवासी सोभा पाईआ। निरवैर पुरख पल्लू फड़, पुरख अकाल गंढु पवाईआ। नर निरँकारा अक्खर पढ़, एकँकारा गीत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव दस्से खोल, भेद आप जणाइंदा। तोलणहारा साचा तोल, अतुल आपणी धार चलाइंदा। सच दवारा एका खोल, सच दवारे सोभा पाइंदा। सदा सदा रहे अडोल, अडुल कदे ना जाइंदा। साची वस्त रखे कोल, नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि सदा अनमोल, अनमुलड़ी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मन्दिर आप वड्याइंदा। दर मन्दिर वड्डा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। खेले खेल श्री भगवन्त, निरगुण आपणी कार कमाईआ। आपणा लेखा आदि अन्त, आपणे विच छुपाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को मंत, मंत्र आपणा नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड साचा सोभनीक, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। वसणहारा लाशरीक, शिरकत होर ना कोए जणाइंदा। धार रखे इक बारीक, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सच निशाना मारे ठीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप समझाइंदा। आपणी करनी श्री भगवान, आदि आदि जणाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। एकँकार वड बलवान, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता शाह सुल्तान, श्री भगवान छत्र झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ नौजवान, ना मरे ना जाईआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। भूपत भूप राज राजान, धुर फ़रमाना दए जणाईआ। निरगुण निरगुण खेल महान, निराकार कमाईआ। दरगाह साची कर परवान, परम पुरख वेस वटाईआ। नार कन्त नौजवान, सेज सुहञ्जणी इक हंढाईआ। सुत दुलारा बाल अंञाण, शब्दी गोद बिठाईआ। दाई दाया बण मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। थिर घर साची खोल दुकान, इच्छया भिच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी इक्को इक समझाईआ। थिर घर दवारा निक्का दर, सचखण्ड निवासी आप खुलाइंदा। देवणहारा साचा वर, समरथ आपणी दया कमाइंदा। छोटा बाला निक्का लाल, सुत दुलारा विच टिकाइंदा। लेखा जाण आदि जुगादि, चोटी मध आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक सुणाइंदा। धुर फ़रमाना हरि निरँकार, इक्को इक जणाईआ। सुत शब्द रहिणा ख़बरदार, बेपरवाह रिहा समझाईआ। थिर घर तेरा इक कवाड़, कुण्डा बंद ना कोए कराईआ। आदि जुगादी साची कार, हरि करनी झोली पाईआ। पुरख पुरखोतम हो उज्यार, नूरो नूर रुशनाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, मुकामे

८५६
१३

हक़ डेरा लाईआ। सच तौफ़ीक इक दिलदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर खोलॣ हरि दरवाज़ा, चरण कँवल कँवल टिकाइंदा। वेखणहार ग़रीब निवाज़ा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक टिकाइंदा। सुत दुलारे मारे वाज़ां, धुर दी बाणी आप अलॣाइंदा। निरगुण निरगुण रच रच काजा, हरि करता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द देवे वर, सार शब्द वसाए घर, निरभउ चुकाए भय डर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। छोटा बाला गया उठ, हरि शब्द लए अंगड़ाईआ। श्री भगवान गया तुठ, मेहरवान दया कमाईआ। करया खेल अबिनाशी अचुत, चेतन रंग रंगाईआ। आपणी गोदी ल्या चुक्क, अंगीकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दिती वड्याईआ। सुत दुलारा गया जाग, हरि चरण ध्यान लगाइंदा। बाले होए वड वड भाग, प्रभ आपणी गोद बहाइंदा। निरगुण बणया सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। थिर घर खोलॣया मेरा ताक, दूजा दर ना कोए वखाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे झाक, हरि जू इक्को नज़री आइंदा। सति सतिवादी साची गाथ, नर निरँकारा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे आप वड्याइंदा। सुत दुलारे निक्के बाले, सो पुरख निरँजण दए वड्याईआ। पुरख अकाल तेरे नाले, आदि जुगादि संग निभाईआ। जुग चौकड़ी करे प्रितपाले, प्रितपालक सेव कमाईआ। सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाले, धर्म दुआर इक वखाईआ। निरवैर पुरख तेरी घालन घाले, अजूनी रहित बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द आप जणाईआ। सुत दुलारा नीकन नीका, निउँ निउँ चरण ध्यान लगाइंदा। तेरा दिसे ना कोए शरीका, संगी संग ना कोए वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणे मिलण दा दस्स सच तरीका दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। लग्गी रहे इक प्रीता, प्रीतीवान साची मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप समझाइंदा। सुत शब्द सुण साची रीत, श्री भगवान आप जणाइंदा। आदि बंधाए तेरी प्रीत, जुगादि आपणी झोली पाइंदा। निरगुण बैठा रहे अतीत, सच दवारे सोभा पाइंदा। नाम जणाए इक्को गीत, गीत गोबिन्द अलॣाइंदा। सच वखाए निशाना ठीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत सुण ला कन्न, बिन कन्नां आप जणाईआ। साचा कहिणा लैणा मन्न, हुक्मी हुक्म मिले वड्याईआ। इक्को वस्त सच्चा धन, सच प्रीती झोली पाईआ। पुरख अकाल तेरा जननी जन, बणे धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जुग चौकड़ी तैनूं कोई ना देवे डंन, समरथ सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। आदि बेड़ा दित्ता बन्नॣ, थिर घर तेरा डेरा लाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न,

मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सुत दुलारा निक्का बाल, बाली बुध जणाइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, प्रभ तेरा अन्त ना आइंदा। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। धुर दरबारी हुक्मरान, तेरा हुक्म मोहे भाइंदा। मैं बाला नढ्ढा इक अञ्याण, होछी मति तेरा अन्त कहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। साची मति देवे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारे मार ध्यान, बिन अक्खां दए वखाईआ। सचखण्ड मेरा मकान, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। थिर घर तेरा सच अस्थान, प्रभ चरण कँवल सरनाईआ। जुग जुग सुणदे रहिणा धुर फ़रमान, सच संदेसा दए जणाईआ। दोए जोड़ कर प्रणाम, बेनन्ती इक्को इक वखाईआ। करता पूरा करे काम, कारज आपणा आप समझाईआ। तेरा पकड़े साचा दाम, दामनगीर इक अख्वाईआ। तेरा प्रगट करे नाम, नाम निधाना आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सच संदेसा आदि पुरख, हरि सतिगुर सच सुणाइंदा। सति सति कर दरस, दीद इक्को इक वखाइंदा। पहली वार मेटे हरस, हवस फेर ना कोए वधाइंदा। सचखण्ड निवासी करया तरस, सिर आपे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप जणाइंदा। साची खेल दस्से मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। सुत दुलारे तेरी रीत, रीतीवान आप समझाइंदा। मेरा नाउँ तेरा गीत, गीत इक्को इक वड्याइंदा। तेरा खेल करां अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। हथ्थ रखां तेरी पीठ, पिच्छा दे ना मुख भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धार आप बंधाइंदा। शब्द सुत तेरी धार बंधावांगा। साचा मार्ग लावांगा। आदि पुरख अख्वावांगा। जुगादि वेख वखावांगा। मध खेल इक रचावांगा। घर सच्चा सच सुहावांगा। हद्द आपणी पार करावांगा। थिर घर कुण्डा लाहवांगा। दर दरवाज़ा इक खुल्हावांगा। निरगुण मेला मेल मिलावांगा। घर साचे सोभा पावांगा। आपणा बंस प्रभ वडयावांगा। विष्नूं विश्व प्रगटावांगा। अमृत मुख चुआवांगा। कँवल नाभ दरसावांगा। ब्रह्मा रंग रंगावांगा। पारब्रह्म आपणा अंग वडयावांगा। नाम मृदंग सुणावांगा। सुंन अगम्म वसावांगा। धूंआँधार पार करावांगा। शंकर गंढु पवावांगा। तिन्नां मेल मिलावांगा। तेरा नाम समझावांगा। शब्दी डंक वजावांगा। साचा संख सुणावांगा। बार अनक खेल करावांगा। दर मंगण भिच्छया पावांगा। आपणी इच्छया नाल रलावांगा। त्रैगुण माया जोड़ जुड़ावांगा। रजो तमो सतो सगला संग वखावांगा। तेरा मृदंग वजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव ला ला अंग, अंगीकार इक अख्वावांगा। पंज तत्त नाता जोड़ जुड़वांगा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, आपणा बन्धन पावांगा। धुर दा दे धरवास,

धुर दी धार जणावांगा। मण्डल मण्डप पा पा रास, खण्ड ब्रह्मण्ड नाच नचावांगा। सूरज चन्न दे प्रकाश, किरन किरन नाल प्रगटावांगा। धरत धवल खेल तमाश, जल थल महीअल डेरा लावांगा। आपणा नाउँ रख पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कमावांगा। सुत दुलारा करके दासी दास, सेवा इक्को इक समझावांगा। चारे खाणी कार प्रकाश, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बन्धन पावांगा। चारे बाणी कर बंद ख़लास, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गावांगा। लख चुरासी अन्दर कर कर वास, निरगुण सरगुण मेल मिलावांगा। जुग चौकड़ी वेखां ख़ाश, ख्वाहिश सब दी पूर करवांगा। सरगुण निरगुण वसे पास, घर मन्दिर डेरा लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा खेड़ा इक वसावांगा। तेरा खेड़ा सच वसाऊँगा। बन्नृ बेड़ा आप चलाऊँगा। लख चुरासी मात प्रगटाऊँगा। घट घट आपणा नूर धराऊँगा। शब्द अगम्मी नाद वजाऊँगा। अमृत जाम इक वखाऊँगा। निझर झिरना इक झिराऊँगा। अचरज खेल आप वरताऊँगा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बन्धन पाऊँगा। आसा तृष्ना जोड़ जुड़ाऊँगा। माया ममता मेल मिलाऊँगा। हउमें हंगता गढ़ बणाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द तेरा राह चलाऊँगा। तेरा राह चलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगावांगा। पंज तिन्न लख चुरासी जोड़ जुड़ावांगा। साचा सोहला राग अलावांगा। ब्रह्मे मुख मुख सालाहवांगा। गुर अवतार आप प्रगटावांगा। पीर पैगम्बर नाल रलावांगा। भगत भगवान आप उठावांगा। सन्त साजण रंग चढ़ावांगा। गुरमुख गुर गुर बूझ बुझावांगा। गुरसिख लहिणा देणा चुका के एका दूज, एकँकारा वड वडयावांगा। आपणा भेव दस्स गूझ, पड़दा आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी करेगा। पारब्रह्म निर्भय हो, लख चुरासी अन्दर वड़ेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे साची सो, नाम निधाना इक्को पढ़ेगा। आत्म परमात्म आपे हो, जगत विकारा आपे लड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपे करेगा। साची करनी करे करतार, आदि पुरख जणाईआ। सुत दुलारे हो ख़बरदार, बेख़बर रिहा उठाईआ। जुग चौकड़ी तेरी धार, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। सेवा लाए गुर अवतार, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। लेखा जाण शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी दे आधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द तेरी निरगुण धार वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वार , सरगुण तेरा बन्धन

पाईआ। सुत दुलारा प्या रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन नज़र ना आए को, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कर किरपा मेरे जोगा हो, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तेरे चरणां जावां छोह, अंगीकार कर रघराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी लो, रोशनी इक्को इक नूर खुदाईआ। अमृत मेघ साचा चो, चरण चरण नाल रगढ़ाईआ। बीज इक्को देणा बो, लख चुरासी फुल फुलवाड़ी मात महकाईआ। आपणा नाम देणा ढोआ ढो, जुग चौकड़ी हुक्म मनाईआ। तेरी वस्त कोई ना लवे खोह, शाह सुल्तान सीस ना कोए उठाईआ। पारब्रह्म तेरा बणया रहे मोह, मेरी मुहब्बत तेरे नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि शब्द आपणी झोली रिहा डाहीआ। आदि शब्द सुण सच बात, हरि बातन आप जणाइंदा। धुरदरगाही इक्को दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाइंदा। पंज तत्त कर निवास, गुर अवतार पीर पैगम्बर मात वड्याइंदा। दीन मज़्ब बणा जमात, ज़ात पात खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द तेरा भेव आपणे विच समाइंदा। शब्द दुलारा प्या हस्स, वाह वा वड्डी तेरी वड्याईआ। प्रभ जू मैं होया तेरे वस, ढै प्या सरनाईआ। कर किरपा मार्ग दित्ता दस्स, मैं चलां सद्द रज़ाईआ। नव नौ चार चौकड़ी पन्ध मुकावां नस्स नस्स, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कोटन वार हंढाईआ। तेरे मिलण दी रखां आस, इक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होएं सहाईआ। साचा वेला दस्स भगवन्त, इक्को मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा मंत, कोटन कोटि नाम सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर राह तक्कण तेरा कन्त, बण नारी सेव कमाईआ। लख चुरासी गढ़ बणे हउमें हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए मिलाईआ। रसना जिह्वा गायण साध सन्त, बत्ती दन्द कर कुड़माईआ। तेरा कोई ना पाए अन्त, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। लख चुरासी खेल जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरी महिमां सदा अगणत, कथनी कथ ना सके कोए राईआ। तेरा लेखा कोई ना जाणे पंडत, बोध अगाध तेरी वड्याईआ। तेरा लेखा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज तेरी चतुराईआ। आदि जुगादि रहे अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरणां मिन्नत कर कर तेरा सुत आपणा वास्ता पाईआ। सुत दुलारे उठ बाल, बाली बुध जणाइंदा। जुग चौकड़ी बीतण काल, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। तेई अवतार होण बेहाल, भगत अठारां सर्ब कुरलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। नानक गोबिन्द करे पुकार, पुरख अकाल इक तकाइंदा। सृष्ट सबाई जाए हार, हरि का नाम ना कोए ध्याइंदा। शास्त्र सिमरत वेद

पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए ना कोए आधार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। लख चुरासी होए नार विभचार, नर हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाइंदा। दहि दिशा धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। चौदां तबक करन पुकार, चौदस नूर ना कोए रखाइंदा। चौदां लोक होण ख्वार, ख्वारी कोई ना होर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जणाइंदा। सुत दुलारे रखणी उडीक, निरगुण निरगुण हरि जणाईआ। जुग चौकड़ी जाए बीत, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरा संदेसा देवण ठीक, वाक् भविख्त कर लिखाईआ। कलिजुग अन्त होए अन्धेरा तारीक, नूर नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं जाए बीत, बीती कहाणी सब दी झोली पाईआ। चौदां तबक बणे शरीक, लाशरीक खेल कराईआ। तेरे संग करे इक प्रीत, दूजा नाता दए तुड़ाईआ। दो जहान सुणाए इक्को गीत, गोबिन्द इक्को नाम वड्याईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ देण दुहाईआ। तीर्थ तट रहे ना कोए रीत, त्रैगुण घर घर डेरा लाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीट, ऊँच नीचां संग ना कोए रखाईआ। मेरा साहिब प्रगट होवे निरगुण धार आप बारीक, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे इक्को गुण जणाईआ। सुत दुलारे आवांगा। कल अन्तिम फेरा पावांगा। जोती जामा वेस वटावांगा। ठीक नाउँ रखावांगा। डंका शब्द वजावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव हलावांगा। करोड़ तेतीसा अक्ख खुल्ल्हावांगा। जगत जगदीशा माण दिवावांगा। मनजीत अजित करावांगा। वेखणहारा वार थित्तया, साची थिता वंड वंडावांगा। करां खेल इक अनडिठया, नेत्र नज़र किसे ना आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी आप कमावांगा। कलिजुग अन्तिम फेरा पावांगा। शाहो भूप इक अख्वावांगा। राज राजानां ख़ाक मिलावांगा। क्रिया कूड़ी जड़्ह उखड़ावांगा। जूठ झूठ शौह दरयाए आप रुढ़ावांगा। सतिजुग साचा फेर लगावांगा। गोबिन्द मेला मेल मिलावांगा। चेला गुर वखवांगा। सम्बल आपणा डेरा लावांगा। चार वरन इक्को दर दरसावांगा। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान हस्त कीट, इक्को अक्खर नाम जपावांगा। आत्म सब दी जीत, परमात्म रंग रंगावांगा। नज़री आवां इक अतीत, त्रैगुण लेखा अन्त मुकावांगा। शब्द सुहागी तेरा गीत, बण विचोला आप सुणावांगा। निरगुण लग्गे निरगुण प्रीत, निरगुण फड़ फड़ आप हलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग अन्तिम वेख वखावांगा। कलिजुग अन्तिम वेखे आप, बेअन्त बेपरवाहीआ। सुत दुलारे तेरा जाप, इक्को इक करे पढ़ाईआ। दो जहान वड प्रताप, पारब्रह्म दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, साचा लेखा आप लिखाईआ। साचा लेखा लिखे लेख, लिखणहार आप अख्वाया। निरगुण निरगुण आपे पेख, सरगुण सरगुण बन्धन पाया। कलिजुग अन्तिम कर कर हेत, जोती शब्दी रंग चढ़ाया। लख चुरासी काया खेत, घर घर डेरा लाया। जन भगतां नज़री आए नेतन नेत, निज आत्म वेख वखाया। गुर शब्दी खोल्हे भेत, भेव आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा माण कलिजुग अन्तिम आप जणाया। सुत शब्द तेरा वड्डा बल, बल बावन भेव चुकाईआ। कलिजुग खेल अछल अछल, वल छलधारी आप कराईआ। निरगुण जोत रिहा रल, रूप रंग ना कोए रखाईआ। सम्बल आसण बैठा मल्ल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, पलक सब दी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द तेरा साचा राग, दो जहानां आप जणाईआ। दो जहानां इक्को राग, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। कलिजुग कूड़ा मिटे वैराग, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। भगत भगवान खोल्हे जाग, जागरत जोत इक दरसाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे आग, तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी ढोला इक्को गाइंदा। शब्दी ढोला गाए सो, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण आपे हो, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। एकँकार वधाए मोह, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। आदि निरँजण कर कर लो, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। अबिनाशी करता लै के आया ढोआ ढो, जन भगतां झोली पाईआ। श्री भगवान निरगुण निरगुण आत्म परमात्म जाए छोह, आप आपणा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लेखा देवे खोह, आपणी वंड आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द सिफ्त सालाहीआ। साचे शब्द सुत दुलार, सति सतिवादी दया कमाइंदा। सोहँ रूप सर्ब संसार, वड संसारी आप बणाइंदा। कलिजुग अन्त दए आधार, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। भगत भगवान बोलण इक जैकार, जै जैकार आप अल्हाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप प्रगटाइंदा। साचा नाम साचा बोल, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। सोहँ भण्डारा निरगुण खोल्ह, निरवैर राह चलाईआ। जन भगतां अन्तर देवे घोल, घोली घोल आप घुमाईआ। साहिब सतिगुर कूड़ा मारे ना कोई रोल, रौला सब दा दए मुकाईआ। सम्मत बीस करन सारे मख़ौल, कूड़ी क्रिया मुख रखाईआ। सम्मत इक्की वज्जे ढोल, घर घर नर नारी बैठण ध्यान लगाईआ। पिछली वस्त रहे ना किसे कोल, ख़ाली भाण्डे दए वखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले होल, होली इक्को रंग रंगाईआ। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया कढ्ढे पोल, पड़दा सब दा

दए चुकाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान बोलण इक्को बोल, जै जैकार करे लोकाईआ। शब्द दवारा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाईंआ। वेखणहारा थान थनंतर, निरगुण निरगुण खोज खुजाइंदा। बुझावणहारा लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। जपावणहारा साचा मंत्र, सोहँ नाम इक दृढ़ाइंदा। वेखणहार गगन गगनंतर, पृथमी आकाश डेरा ढाइंदा। सतिजुग सच बणाए बणतर, घाड़त घड़न आप हो जाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तरजामी वेख वखाइंदा। वेखणहारा ब्रह्म निरंतर, माया ब्रह्म डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक सालाहइंदा। साचा नाम सिफ्त सालाह, सालाहगीर इक अख्वाइंदा। साचा नाम जगत मलाह, जुग जुग बेड़ा मात चलाइंदा। साचा नाम साचा थाँ, सचखण्ड दुआर इक वखाइंदा। साचा नाम पकड़े बांह, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। साचा नाम साचा राम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को इक वखाइंदा। इक्को नाम सदा अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आया। इक्को नाम सदा अनडीठा, सतिगुर आपणे विच समाया। इक्को नाम सदा रस मीठा, फिका रस ना कोए जणाया। इक्को नाम आदि जुगादि जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान सिफ्त सालाही चलाए रीता, रीतीवान इक अख्वाया। इक्को नाम किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता, शिवदुआले मठ्ठ हट्ट ना कोए विकाया। इक्को नाम वसे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां अन्दर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाम जन भगतां अन्दरों आप प्रगटाया। जन भगतां अन्दरों कढ्ढे नाम, युगती इक्को इक जणाईआ। चरण प्रीती भगती निशकाम, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। घर मन्दिर नज़री आए राम, रमईया आपणा फेरा पाईआ। सच संदेसा दए पैग़ाम, ढोला सोहला इक सुणाईआ। अमृत मद प्याए जाम, रस इक्को इक रखाईआ। भाग लगाए काया खेड़ा ग्राम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को इक दरसाईआ। हरि का नाम हरि की हद्द, हदूद आपणी आप जणाइंदा। भगत भगवान दवारे सद्द, साची करनी आप कमाइंदा। दिवस रैण नाद वजाए अनहद, सेवक सेवा इक कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को इक वड्याइंदा। साचा नाउँ हँ ब्रह्म, पारब्रह्म जणाईआ। सतिगुर सरनाई साचा धर्म, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। गुर सरनाई साचा वरन, बरन अठारां डेरा ढाहीआ। श्री भगवान सरनाई तरनी तरन, तारनहार लेखे लाईआ। भगत भगवान इक्को अक्खर पढ़न, चौदां विद्या ना कोए वड्याईआ। इक दूजे दे अन्दर वड़न, मिल मिल खुशी मनाईआ। इक दूजे दी सिफ्त करन, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। इक दूजे दे चरण फड़न, निउँ

८६६
१३

निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भगतां हट्ट विकाईआ। नाम कहे मैं भगत वणजारा, जुग जुग हट्ट चलाइंदा। भगत कहे मैं नाम प्यारा, प्रीती इक रखाइंदा। दोहां विचोला सिरजणहारा, आपणी खेल कराइंदा। गुरू कहे गुरसिख प्यारा, सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सिख कहे गुरू पसारा, घट घट नज़री आइंदा। श्री भगवान कहे मेरा अन्त ना पारावारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। गुरमुख कहे ठांडा दरबारा, सतिगुर सरनाई इक तकाइंदा। सतिगुर कहे गुरमुख प्यारा, घर इक्को नज़री आइंदा। पुरख अकाल कहे मैं दोहां देवां सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सन्त कहे मैं सच दुलारा, प्रभ सरन मिली वड्याईआ। प्रभ कहे बिन सन्तां मैनूं दए ना कोए हुलारा, सच हुलार ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता कहे मेरा खेल अपारा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। भगत कहे भगवान अनडीठा, बिन नज़र नज़र ना आईआ। भगवान कहे भगत रस सब तों मिट्ठा, रस अवर ना कोए चखाईआ। सो पुरख निरँजण कहे मैं आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण हो के करां हिता, हितकारी इक अख्वाईआ। इक्को मेरा शब्द पुत्त मैं आदि जुगादी पिता, माता मेरा रूप वखाईआ। कलिजुग अन्तिम नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा कढ्ढे सिटा, सतिगुर इक्को फेरा पाईआ। सतिजुग धुर फ़रमाना लै के आवे चिठ्ठा, चार वरन करे पढ़ाईआ। भगत कहे मैं भगवान जिता, नित नवित्त सेव कमाईआ। भगवान कहे मैं भगतां गावां किस्सा, ख़ाणी बाणी राग सुणाईआ। मेरा लेख किसे ना लिखा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए छुडाईआ। शब्द सुत आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तूं बलकारा हो के जिता, तेरा बल ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेड़ा तेरा मन्दिर महल अटल करे रुशनाईआ। प्रभ जू मेरा दस्स महल्ला, कवण कवण बणाइंदा। तूं सचखण्ड वसें इक इकल्ला, थिर घर मेरा डेरा लाइंदा। निरगुण हो के लख चुरासी रला, सरगुण वंडण वंड वंडाइंदा। कलिजुग अन्तिम कवण दुआर फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढ बंधाइंदा। सच संदेस नर हरि घल्ला, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। सुत दुलारे हो ना झल्ला, हरि आपणी झलक जणाइंदा। ना दिसे अल्ला, वाहद आपणी खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी इक्को इक वड्याइंदा। शब्द सुत तेरा मार्ग इक, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए जणाईआ। सुत शब्द तेरा भेख इक, आदि अन्त वड्याईआ। सुत शब्द तेरा लेख इक, तेरा लेखा लेख समझ किसे ना आईआ। सुत शब्द तेरा हेत इक, हितकारी नित नित फेरा पाईआ। सुत शब्द तेरा पित इक, पुरख अकाल अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी शब्द देवे ज्ञान, दो जहानां सच निशान, निगाहबान आप झुलाईआ।

* ११ फग्गण २०१६ ग़ाज़ी आबाद दरबारी लाल दे गृह *

हरि भगती रंग अपार, भाउ भगत जणाइंदा। भाउ भगत आधार, भरम भउ मिटाइंदा। भरम भउ निवार, सहिज सुख उपजाइंदा। सहिज सुख धार, सतिगुर वेख वखाइंदा। सतिगुर मेला संसार, संसार सागर पार कराइंदा। संसार सागर डूँग्घी गार, गुरमुख विरला तारी लाइंदा। साची तारी तारनहार, हरि चरण कँवल जणाइंदा। हरि चरण कँवल प्यार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। नाता बिधाता वेखणहार, जुग चौकड़ी खोज खुजाइंदा। जुग चौकड़ी पार उतार, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन मेला अगम्म अपार, बेपरवाह खेल खलाइंदा। बेपरवाह सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दा लेखा आप मुकाइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, थल सागर फोल फुलाइंदा। पूरब कर्मां कर विचार, लहिणा लहिणे झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी पूरब लहिणा, वड प्रभासी आप चुकाईआ। नेत्र पेख्या दर्शन नैणां, नैण कँवल शरमाईआ। रसना जिह्वा सके ना कहिणा, अन्तर हुक्म कहिण ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पूरब लेखा, जुग जुग आप चुकाइंदा। बियाबान महाबीर पेखा, मेहरवान खेल खलाइंदा। करावणहारा हरि जू चेता, चेतन धार समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी दित्ता वर, अन्त ध्यान लगाया। खर चरणी डिगा दड़, सीस रघबंस चरण टिकाया। बिन धड़ बेनन्ती दिती कर, तेरा तेरी इक शरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द संदेसा इक सुणाया। शब्द संदेसा बिन रसना बोल, आत्म आत्म जणाईआ। तेरे नाल करया कौल, त्रेता त्रिया नार भुल्ल ना जाईआ। द्वापर जुग रहिणा अडोल, अडुल आप रखाईआ। चौथे जुग चल के आवे तेरे कोल, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। लहिणा चुकाए उपर धौल, धरनी तेरी रुत्त रंगाईआ। अन्तर आत्म जाए मौल, मोह मुहब्बत इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा लेखे पाईआ। खर तेरा देवे ख़राज, ख़र्चा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जंगल विच ना कर इतराज़, हरि भाणे सद समाइंदा। जिस दा सीस कटया आज, सो सीस अन्तिम लेखे लाइंदा। मिले मेल शाह पातशाह गुरू महाराज, महिमा अकथ कथ वड्याइंदा। लेखा देवे सिर रख के ताज, दो जहानां हुक्म चलाइंदा। पंज तत्त काया रखे लाज, आत्म आपणे रंग रंगाइंदा। एका नांयां देवे दाज, बेपरवाह खेल खलाइंदा। सच दरबार मार आवाज़, जगत दरबारी मेल मिलाइंदा। लाल लालन रच रच काज, करता पुरख वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा पिछला वर, खर लहिणा दर देणा चरण प्रीती झोली पाइंदा।

❇ ११ फग्गण २०१६ दर्शन सिँघ दे गृह धीरपुर ढक्का दिल्ली ❇

सतिजुग तेरा साचा रंग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण वजाए मृदंग, घर घर नाद सुणाइंदा। एकँकार सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। आदि निरँजण जोत निरँजण चाढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाइंदा। श्री भगवान सुणाए सुहागी छन्द, अनबोलत राग अलाइंदा। अबिनाशी करता लख चुरासी अन्दर वेखे लँघ, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाइंदा। आत्म परमात्म पाए गंढु, सगला संग रखाइंदा। सुरती शब्दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सतिजुग साचे चढ़े चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। सतिगुर शब्द बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत दए समझा, आत्म परमात्म भेव खुलाईआ। साचा मार्ग इक्को ला, इक्को मन्दिर दए दरसाईआ। नाम निधाना इक जणा, राग अनादी इक शनवाईआ। इष्ट देव गुर इक मना, दर दवारा आप खुलाईआ। तीर्थ तट इक जणा, दुरमति मैल दए धवाईआ। दूई द्वैती डेरा ढाह, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। चार वरन एका रंग रंगा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर वखाईआ। बरन अठारां पन्ध मुका, कूड़ी क्रिया लेखा दए चुकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सोहला ढोला इक्को गा, करे कराए सच पढ़ाईआ। चौदां विद्या नैण जाए शरमा, चौदां लोक इक्को राग अलाईआ। चौदां तबक दए समझा, वड दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश लए बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग इक्को राह जणाईआ। सतिजुग मार्ग देवे दस्स, दो जहानां खोज खुजाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां आपे वस, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। शब्द अगम्मी तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म जणाए साचा जस, जस वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। लेखा जाण अठ्ठ तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणा बन्धन पाइंदा। काया मन्दिर पाए रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाइंदा। घट घट अन्दर कर कर वास, तख्त निवासी वेख वखाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाइंदा। भगत भगवन्त इक दूजे दे रहिण दास, दासी दास सेवक रूप वटाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया विनास, कूड़ कूड़यारा आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। सतिजुग साचा लगे मात, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। निरवैर देवे इक्को दात, ज़ात पात

८६६ १३

ना वंड वंडाईआ। दीन मज़्हब ना कोई खात, शूद्र ब्रह्मण ना कोए अख्वाईआ। सर्ब जीआं प्रभ वसे साथ, दीना बन्धन दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। जन्म कर्म मेटे पाप, निहकर्मी कर्म कमाईआ। सच जणाए इक्को जाप, सोहँ अक्खर अक्खर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण इक्को नज़री आईआ। कँवल नैण इक स्वामी, घट घट डेरा लाइंदा। आदि जुगादि अन्तरजामी, भेव अभेद आप खुलाइंदा। सदा सुहेला हरि निहकामी, निहचल आपणा डेरा लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अगम्म सुणाए अकथ कहाणी, शब्द संदेसा इक अलाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराइंदा। वेखणहारा चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाइंदा। सुणावणहारा चार बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी घर घर राग अलाइंदा। मिलावणहारा सुरत शब्द हाणी, सच सवाणी वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे महानी, ख़ालक ख़लक फेरा पाइंदा। परवरदिगार देवे सच निशानी, लाशरीक वेस वटाइंदा। सच तौफ़ीक इक निगहबानी, बेपरवाह नज़र किसे ना आइंदा। दो जहानां वेखणहारा खेल करे लासानी, लाशरीक खेल कराइंदा। योद्धा सूर वड बलवानी, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा खेल कराइंदा। सतिजुग खेले खेल आप, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण देवे इक्को जाप, एकँकार करे पढ़ाईआ। आदि जुगादी कर प्रकाश, नूर ज़हूर इक दरसाईआ। अबिनाशी करता बण बण दासी दास, साची सेव कमाईआ। श्री भगवान वेखणहारा खेल तमाश, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रकाश, घर घर दीवा बत्ती इक टिकाईआ। शब्द गुर पावे रास, मण्डल मण्डप आपणी धार चलाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वेखणहारा पिछली गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पड़दा आप उठाईआ। पावे सार त्रिलोकी नाथ, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां भेव अभेदा आप जणाईआ। राम रमईया लेखा जाणे पुरख समराथ, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग इक्को रंग रंगाईआ। सतिजुग रंगे सच रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। भगत भगवान सुहाए सेज पलँघ, आत्म अन्तर डेरा लाइंदा। शब्द नाद अनादी वजाए मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। अमृत सरोवर निझर झिरना वहाए साची गंग, गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी नैण शरमाइंदा। आत्म परमात्म लाए अंग, अंगीकार आपे अख्वाइंदा। इक्को नाम सृष्ट सबाई दए वंड, कोटन कोटि नाम सिफ्त सालाही खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सति आपणी धार जणाइंदा।

सति सतिवादी साची धार, धर्म दवारे आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी हो तैयार, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। सुंन अगम्मी आर पार किनार, विष्न ब्रह्मा शिव सच संदेसा इक अलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लए उठाल, जुग चौकड़ नव नौ चार वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सतिगुर बण दलाल, संग रखा पुरख अकाल, महाकाल भेव अभेद आपणा आप खुलाईआ। दीनां बंधप हो दयाल, सतिजुग बणाए सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा इक जणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुर दर अन्तिम होण बेहाल, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता चतुर्भुज भेव जाणे गुझ, बोध अगाध शब्द नाद निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर नाम हरि का रूप निरगुण आपणे विच समाइंदा। तख्त निवासी शाहो भूप, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। वसणहारा दहि दिशा चारे कूट, अनभव आपणी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी दो जहान साचा साहिब सतिगुर देवणहार सबूत, त्रैभवण धनी आपणी खेल कराइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर ताणा पेटा पाए सूत, तन्दी तन्द गंढु बन्नाइंदा। किरन किरन देवे निर्मल जोत, नाद अनाद शब्द धुन राग अलाइंदा। पंज तत्त वखाए काया कोट, घर मन्दिर डेरा लाइंदा। अगम्म अथाह बेपरवाह लगाए चोट, सति सतार आप हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे इक्को इष्ट जणाइंदा। सतिजुग साचा इक्को इष्ट, इष्ट देव निरगुण निहकर्मी आप अख्वाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोलणहारा दृष्ट, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म इक्को नेत्र नैण खुलाईआ। इक्को नेत्र नैण खोले अक्ख, आखर आपणा भेव जणाइंदा। निरगुण नज़र आए प्रतख, जोती जाता डगमगाइंदा। सन्त सुहेले भगत भगवन्त लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आप आपणा पड़दा उठाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, काया कवरी डूँघी भँवरी सुखमन टेडी बंक पार कराइंदा। हिरदे अन्दर आपे वस, अमृत देवे साचा रस, कँवल नाभी आप उलटाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, लेखा जाणे सुखला किशना पक्ख, अन्ध अन्धेरा आप चुकाइंदा। निरगुण जोत कर प्रगट, भेव खुलाए चौदां लोक हट्ट, मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहइंदा। अनहद नाद लगाए साची सट्ट, दुरमति मैल देवे कट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। सुरत सवाणी शब्द हाणी आत्म सेजा लए सद्द, प्रेम जाम प्याए मदि, रस इक्को इक वखाइंदा। साची सेजा बहिण सज, दरस करन रज्ज रज्ज, आत्म परमात्म परमात्म आत्म घर इक्को सोभा पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करया हज्ज, मक्का काअबा देवे तज, हुजरा इक्को इक सुहाइंदा। करे खेल सूरा सरबग्ग, भगत भगवान बुझाए अग्ग, त्रैगुण नाता

८७१
१३

तोड़ तुड़ाइंदा। वसणहारा उपर शाह रग, फड़ फड़ हँस बणाए कग, शब्द चोग चुगाइंदा। एथे ओथे दो जहान निरवैर पुरख पड़दा दए कज्ज, सच दोशाला नाम हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग इक्को घर वखाइंदा। सतिजुग वखाए इक्को घर, चार वरन सरनाईआ। सतिजुग वखाए इक्को दर, चार वरन इक्को पढ़ाईआ। सतिजुग फड़ाए इक्को लड़, चार वरन वड्याईआ। सतिजुग चुकाए इक्को डर, निर्भय फेरा पाईआ। सतिजुग चार वरन अन्दर जाए वड़, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सतिजुग चार वरन इक्को रंग देवे कर, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग चार वरन साचा देवे वर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्को इक समझाईआ। चार वरन साची सिख्या, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नाम दान पाए भिच्छया, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। ग़रीब निमाणयां करे रच्छया, प्रितपालक खेल कराइंदा। जगत नेत्र कदे ना दिस्या, ज्ञान नेत्र नज़री आइंदा। पूरब लहिणा वेख लिख्या, कोझे कमले गले लगाइंदा। दो जहान कदे ना जितया, हार जित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां करे सदा हितिआ, नित नवित्त फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग इक्को धंदे लाइंदा। सतिजुग धंदे देवे ला, हरि आपणी दया कमाईआ। साहिब परवरदिगार फेरा पा, मुख नक़ाब दए उठाईआ। नूर इलाही हो रुशना, रोशन करे सर्ब लोकाईआ। पीर पैगम्बर दस्तगीर दर बुल्हा, बेनज़ीर खेल कराईआ। लाशरीक सब दे उपर फ़तवा दए लगा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कलमा अमाम दए समझा, कायनात इक शनवाईआ। सच संदेसा इक अल्ह, इलाही नूर इक दरसाईआ। चौदां तबक दस्से थाउँ थाँ, बेपहचान फेरा पाईआ। कातब लेख सके ना कोए लिखा, कुतबख़ाने नैण शरमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा झोली देवे पा, कलिजुग अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दीन इस्लाम सच कलाम सच असूल माकूल चौदां हट्ट इक्को इक जणाईआ। इक्को इक सतिजुग धार, चार वरन जणाइंदा। सुरत शब्द सति प्यार, प्रेम प्यार इक वधाइंदा। काया मन्दिर खोल्ह कवाड़, हरि मन्दिर इक वखाइंदा। मन्दिर मस्जिद नज़री आए उच्च मनार, हुजरा हक़ हक़ वखाइंदा। शिवदुआले मठ्ठ करे आप गुफ़तार, दीद ईद चन्द आपणा रंग रंगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, बोध अगाध अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग बणे सति मलाह, सच सुच्च जन्म दए दवा, जुग जुग कर्म धर्म इक्को इक वखाइंदा। दुःख अन्दर सदा सुख, दुःख सतिगुर मेल मिलाइंदा। सतिगुर उज्जल करे मुख, चिन्ता रोग सर्ब गवाइंदा। सुफल कराए मात

कुक्ख, जो जन सरनाई आइंदा। अन्दर वड़ के आत्म परमात्म गोदी लए चुक्क, बालक आपणी गोद सुहाइंदा। जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। करे प्यार जिउँ पिता पुत्त, पूत सपूत आप सुहाइंदा। हरिजन हरिभगत सुहाए सच्ची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। रातीं सुत्तयां वात लए पुच्छ, जागदयां बिन नैणां नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रोग सोग चिन्ता सति पुरख आपणी झोली पाइंदा।

❇ ११ फग्गण २०१६ बिक्रमी अवतार सिँघ निरँकारी नाल दिल्ली ❇

बाणी आई धुर दरगाह, धुर संदेस सुणाईआ। सचखण्ड वसे इक मलाह, बेपरवाह आसण लाईआ। परवरदिगार नूर खुदा, जलवा इक रुशनाईआ। निरवैर निराकार पुरख अकाल आप अख्वा, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। सीस जगदीश ताज टिका, दो जहानां हुक्म मनाईआ। शब्द अगम्मी धार चला, विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाईआ। साची सेवा आप समझा, लख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। त्रै पंज मेला मेल मिला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध सगला संग निभाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा राह वखाईआ। सदा सुहेला पंज तत्त काया भाग लगा, गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला सच्चा सतिगुर इक्को इक नज़री आईआ। सच्चा सतिगुर दीन दयाल, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला इलाही नूर घर साचे मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। एकँकारा खेल खला, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी धार बंधाइंदा। आदि निरँजण जोत रुशना, जोती जोत नूर डगमगा, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त विच टिकाइंदा। श्री भगवान सच मकान सुहा, सचखण्ड दवारा एकँकारा आपणा बंक आप वड्याइंदा। अबिनाशी करता शब्द निशाना रिहा झुला, सच निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल खला, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सतिगुर सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कोटन कोटि वार लए हंढ्ढा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणे चरणां हेठ दबाइंदा। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चार खाणी चार बाणी आपणा नाउँ जणा, निक्का निक्का नाद वजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलमा इलाही इक पढ़ा, कातब कोट सेव लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी बाणी धुर संदेस आदि जुगादि आप सुणाए नर नरेश, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी सेवा लाइंदा। तख्त निवासी नर नरेश, एकँकार वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर

रिहा वेख, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे आदेश, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीश ना कोए मुंडाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, सतिगुर सच्चा आपणा नाम रखाईआ। नानक सतिगुर सच्चा पाया। पुरख अकाल नज़री आया। भाण्डा कच्चा तन गंवाया। नौ दुआर खोज खुजाया। पारब्रह्म अबिनाशी करते नानक बच्चा आप पढ़ाया। साची पट्टी इक पढ़ाया। लूं लूं अन्दर आप रचा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाया। सौदा कीता इक्को सच्चा, आप आपणा हट्ट खुल्हाया। जे कोई होर कहे हुण कच्चा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाया। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, माया ममता नेड़ ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक एका इक्को इक सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल सच सिँघासण आसण लाया। नानक गुर पाया वार एक, एका घर वज्जी वधाईआ। रूप रंग ते वसया बाहर भेख, नज़र कोए ना आईआ। निउँ निउँ निमस्कार करे आदेश, दोए जोड़ लागे पाईआ। मेरा सतिगुर रहे हमेश, मरन जन्म विच ना आईआ। सचखण्ड वसे साचे देस, लोकमात आपणी धार शब्द चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर सच्चा इक्को इक, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे राह चलाईआ। सतिगुर सच्चा नानक वेख, नेत्र नैण नैण निहालया। चरण कँवल सच्चा हेत, धूढ़ी टिक्का मस्तक ला ल्या। बाली बुद्ध साची गोदी रिहा खेड, श्री भगवान आपणी गोद बहा ल्या। सच सुहञ्जणी वखाए सेज, सोभावन्त रंग रंगा ल्या। शब्द अगम्म आप आपणा नाउँ भेज, पंज तत्त काया चोला आपणा रंग रंगा ल्या। जोती नूर इक्को तेज, ब्रह्म पारब्रह्म वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण पाया इक्को हरि, निरवैर पुरख इक्को नज़री आ रिहा। नानक सौदा सच हट्ट, चौदां लोक भेव ना आईआ। चौदां विद्या सके ना कथ, रसना जिह्वा ना कोए पढ़ाईआ। दिती मति पुरख समरथ, महिमा अकथ आप जणाईआ। अन्तर प्रेम बाहर रत्त, तन खलड़ी चम्म हंढ्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण ब्रह्म मति, सरगुण नानक इक तत्त, दोहां वचोला पुरख समरथ, सौदा आपणे हट्ट विकाईआ। ठीक होए लग्गयां ठोकर, ठोकर नाम लगाईआ। बिन समझयां दिसे बाल छोकर, होछी मति जणाईआ। प्रभ मिलण दी इक्को औकड़, दूई द्वैती पड़दा विच रखाईआ। बिन सतिगुर पूरे काया तत्त दिसे फोकड़, ब्रह्म ज्ञान ना कोए समझाईआ । कोटन कोटि कलिजुग फिरदे जोकर, निरगुण नूर नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम सब ते औणी औकड़, बंदीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। हरि लेखा वेखे वही रोकड़, खाता सब दा वक्खो वक्ख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणा भेव जणाईआ। कहिण सुणन तों वसे बाहर, लिखण पढ़न विच ना आया। साहिब सतिगुर आत्म अन्तर करे प्यार, जगत नेत्र दरस कोए ना पाया। नर निरँकार आपणा खोल्ह किवाड़, भेव अभेद शब्द रूप जणाया। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, नूर नूर नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाया। सचखण्ड दी कहो गाथा, घर सज्जण सच्चा आया। प्रभ मिलण दी दस्सो बाता, किस बिध मेल मिलाया। जन्म कर्म दा तोड़े नाता, नाता बिधाता कवण बंधाया। पहलों मेटो आपणी अन्धेरी राता, फेर जगत चन्द रुशनाया। देवणहारा इक्को दाता, आदि जुगादी बेपरवाहया। साहिब दयाल सदा समराथा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा कर पसारा सच सिँघासण आसण लाया। नाता तोड़ ज़ाता पाता, वरनां गोतां सुट्टे खाता, पूरब जन्म पूरा करे घाटा, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा आपणा घर, घर दस्सो घर वसो घर वेखो घर पेखो कवण रूप निरगुण धार नरायण नज़री आया। निरँकार नाल मिले निरँकार, निरँकार निंरकार वेख वखाईआ। निरँकार आपणी करे गुफ़तार, निरँकार आपणी कहाणी दए सुणाईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई विचार, पिछला लेखा पिछल्यां झोली पाईआ। अग्गे नित नवित्त आपणी आप हिलाए सतार, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। पुरख अकाल सदा सदा राह पावणहार संसार, गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त भगत भगवन्त आपणी सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरँकार मेला निरँकार, दर दरवाज़ा निरँकार निरँकार दए खुल्हाईआ। निरँकार घर आया निरँकारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। इक दूजे दी पुच्छो धारा, कवण बैठे आसण लाईआ। कवण करे सर्ब पसारा, कवण घट घट रिहा समाईआ। कवण शब्द नाद धुनकारा, कवण अनहद राग अल्हाईआ। कवण अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना आप प्याईआ। धुर की बाणी ना जाणो आवारा, जीव जंत कहिण ना पाईआ। बिन सचखण्ड निवासी साचे शब्द ना बणे कोई लिखारा, लिख लिख थक्की सर्ब लोकाईआ। इक्को निरँकार घर घर पाए पुआड़ा, दर दर पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरँकार वेखे निरँकार घर, बिन निरँकार निरँकार वेखण कोए ना आईआ। तूं ही निरँकार तूं, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। ना बुत्त ना रूह, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ना हां ना हूँ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए रखाईआ। हथ्थ कन्न नक ना मूँह, नारी पुरुष इंग लिंग वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरँकार वेखे निरँकार, दर दर मन्दिर अन्दर महल अटल उच्च मनार, पर्दा आप उठाईआ। सच्चा

घर निरँकार दुआर, इट्टां पत्थर कम्म किसे ना आईआ। सच्चा दर हरिसंगत करे प्यार, दर दरवाज़ा इक सुहाईआ। इक दूजे दा इक्को जिहा विहार, निरँकार निरँकार मेला चाईं चाईंआ। सच्चा जणाओ मन्दिर महल अटल अपार, जिस घर निरँकार बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा साचा घर, सच सच रिहा दृढ़ाईआ। दिवस रैण मास रुत्त थित वार एथे रहिणा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। निरँकार वेखे आपणयां नैणां, नैण आपणा बंद खुल्हाईआ। निरगुण सज्जण साक सैणा, सगला संग निभाईआ। ना कोई नाता मात पित भाई भैणा, कन्त सुहाग ना कोए वखाईआ। प्रेम प्यार सच्चा गहिणा, तन श्रृंगार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रहिणा इक्को वार समझाईआ।

❇ ११ फग्गण २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह शकूर बस्ती दिल्ली ❇

भोला कहे भोले भाओ, भरम भाव जणाइंदा। बेपरवाह अगम्म अथाहो, अलख अगोचर खेल कराइंदा। वसणहारा साचे थाउँ, सच दुआर इक सुहाइंदा। उपजावणहारा साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। देवणहारा ठांडी छाउँ, सिर शंकर हथ्थ टिकाइंदा। पकड़नहारा सदा बांहों, निरगुण आपणी सेव कमाइंदा। बणनहारा पिता माउँ, बालक आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। पार्वती वेख आपणा पती, परतीत रही धराईआ। चरण बलिहार होवे सती, सति इक धराईआ। सिमरन ना जाणे साहिब रती, रती रत ना कोए सुकाईआ। बण वैरागण फिरे नठ्ठी, भज्जी वाहो दाहीआ। तत्तां अन्दर तत्तव बद्धी, बांदी बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। भोला कहे भोली नार, भेव अभेद जणाइंदा। तूं की जाणें साची सार, हरि जू की की खेल वरताइंदा। तेरा संग रंग प्यार, उमंग रूप ना कोए वखाइंदा। मृदंग अनहद धुर दी धार, तुरंग सुरंग जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव दस्से एक, एक एक वड्याईआ। पार्वती पर्बत टेक, चोटी पत्थर आस रखाईआ। आपे जणाए साचा लिखे लेख, शंकर कंकर इक जणाईआ। जिस दा लेखा अनन्त लेख, बेपरवाह वड वड्याईआ। नित नवित्त लए पेख, पेखणहार शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल दस्से भगवान, आपणा भेव जणाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती नूर नूर महान, प्रगट आपणी धार चलाइंदा। आपणा हुक्म कर बलवान, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप

जणाइंदा। साचा भेव श्री भगवन्त, आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच प्यार आपणा मंत, मंत्र आप दृढ़ाइंदा। सेज विछाए बण बण कन्त, कन्तूहल सेज हंढ्ढाइंदा। सच दरगाह चाढ़े रंगत, रंग रंगीला आप अख्वाइंदा। सच मेहरवान लाए अंगत, अंगीकार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाइंदा। साची सिख्या बाली नढ्ढी, निरगुण नरायण आप जणाईआ। शंकर वासना दर सद्दी, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। प्रेम डोरी नाम बद्धी, बन्धन होर ना कोए रखाईआ। भोली भाली वेखे लध्धी, चलण देवे ना कोए चतुराईआ। अंगीकार करे ना कोई हड्डी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। पार्वती सुण ला कर कान, भोला भोले भाउँ जणाइंदा। तेरा मेरे विच ध्यान, मेरा ध्यान इक्को भगवन नैण दरसाइंदा। तूं वेखी मेरी शान, मैनूं शहिनशाह नज़री आइंदा। तूं मेरी करी पहचान, मैं बेपहचान अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं मैनूं कर परवान, मैं आपणा परवाना प्रभ साचे अग्गे रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाइंदा। भोला कहे सुण साची रीत, सच सच दयां दृढ़ाईआ। नर नरायण कर प्रीत, प्रीतीवान मेरा माहीआ। बैठा रहे सदा अतीत, आप आपणी सेज सुहाईआ। करे खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। आदि जुगादि जुग जुग कदे ना देवे पीठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। जुग जुग चलावणहारा आपणी रीत, साची सिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या देवे भगवन्त, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। नर नरायण बण बण कन्त, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। रंग चाढ़ इक बसन्त, चोली आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेज सुहञ्जणी इक विछाइंदा। सेज सुहञ्जणी चरण दुआर, सो पुरख निरँजण आप विछाईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे नैण उग्घाड़, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा हो तैयार, सेजे आए चाईं चाईंआ। आदि निरँजण निरगुण बाती दीपक बाल, इक्को नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता साचे मन्दिर सुघड़ सुचज्जी आपे बिठाल, आप आपणे अंग लगाईआ। श्री भगवान सति सरूपी दे निशान, सति वस्तू झोली पाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। साचा कन्त करे खेल महान, महिमा आपणी दए जणाईआ। सच दुआर वखाए मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कन्त आपणा रंग रंगाईआ। सखी वेख साहिब कन्त, कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। जिस ने रचना रचाई आदि सो वेखणहारा अन्त, अन्त आदि आप हो जाईआ। सति प्यार दरसाए इक्को मंत, मंत्र करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग लगाईआ। आपणे अंग आपे रख, आपणी

दया कमाइंदा। साहिब दयाल हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। लेखा जाणे बिन रत्ती रत्त, रत्त आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वखाइंदा। साचा मन्दिर हो मेहरवान, इक्को इक जणाईआ। नार कन्त कर परवान, भगवन्त लए वड्याईआ। सेज सुहञ्जणी वेखे आण, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। दर्द दुःख भय भंजन देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। सदा सदा सद होए निगाहबान, नेत्र नैण नैण तकाईआ। बाली नढ्ढी वेख अञ्याण, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। कोझी कमली कर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अनमंगया देवे दान, झोली वस्त भराईआ। सो साहिब मेरा सुल्तान, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। देवणहार धुर फ़रमान, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। पार्वती सुण ला कर कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मेला सहिज सुभाईआ। पार्वती की जाणे सार, सार हथ्थ किसे ना आईआ। जगत विवहारी करे जगत विहार, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। जोबन रत्ती हो तैयार, नेत्र नैण रही मटकाईआ। भोला नाथ नैण श्रृंगार, दर मंगत भिक्खक रिहा समझाईआ। जटा जूट खेल अपार, त्रिसूल इक्को हथ्थ उठाईआ। हस्से रोवे रोवे हस्से वेखे दोहरी धार, छहबर नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाईआ। कदे प्यार कदे वक्ख, वक्ख प्यार विच वंडाइंदा। कदे निर्मल कदे उज्जल कदे तोलया लख, कदे भबूती आपणी रमाइंदा। कदे सवारे कदे पए उठ, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल इक्को इक समझाइंदा। जिस वक्त दी करो तलाश, ढूंडयां नज़र किसे ना आईआ। उह वक्त सतिगुर पास, छिन मात्र दए वखाईआ। गुर सतिगुर होवे दास, साची सिख्या दए पढ़ाईआ। साचे वक्त दी पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए रखाईआ। वक्त दी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए ख्वाहिश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग ध्यान लगाईआ। वक्त अन्दर गोपी काहन पाउदे गए रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। वक्त अन्दर निरगुण सरगुण वेंहदा रिहा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। वक्त अन्दर कोटन कोटि साध सन्त गा गा थक्के पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वक्त आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे वक्त दी जिस जन दलील, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। साहिब सतिगुर इक्को करो वकील, दो जहानां वेख वखाइंदा। सच दुआर करो अपील, मेहरवान दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त नेरन नेरा दूरन दूरा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस वक्त दा तक्को राह, तकवा इक रखाईआ। तिस वक्त दा पुरख अकाल मलाह, बेड़ा रिहा चलाईआ। गुर शब्द कोलों पुछो सलाह, सच

सच दए जणाईआ। फड़ फड़ बाहों राहे देवे पा, औझड़ पन्ध रहिण ना पाईआ। निज नेत्र नज़री जावे आ, पिछला लेखा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वक्त इक्को इक वड्याईआ। इक्को वक्त होए सुहेला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सुरती शब्दी होए मेला, गुर चेला एका रंग रंगाइंदा। नज़री आए वसणहारा धाम नवेला, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त आप सुहाइंदा। साचा वक्त होए सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। कर प्रकाश आदि निरँजणा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। मेल मिलाए दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। चरण धूढ़ कराए मजना, नेरन नेरा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त इक्को इक वखाईआ। साचा वक्त वेखो जग, वखावणहारा आप दरसाईआ। दरस कराए उपर शाह रग शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। निर्मल दीपक जाए जग, जोत जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म जो बैठी हो के अड्ड, दोहां मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वेला वक्त इक्को इक सलाहीआ। साचा वक्त रखो याद, याददाशत आप कराइंदा। हरि जू सुणनहारा फ़रयाद, शहिनशाह आपणा फेरा पाइंदा। पिछली मंग अगली पूरी देवे दाद, दाता दानी आप वरताइंदा। बिन पढ़ियां बिन सुणयां बिन जागयां बिन सुत्तयां वज्जे नाद, नाद अनादी आप वजाइंदा। बिन रसना बिन जिह्वा बिन चख्खयां आए स्वाद, अमृत रस इक वखाइंदा। जगत दवारा देवे काढ, पार हद्द आप वखाइंदा। सच सुहञ्जणी सेजा करे लाड, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र आप तकाइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा आए भाज, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। वक्त सुहेला गुर चेला करे काज, जगत मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप सुहाइंदा। साचे समें दी सच तलाशी, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। कोई भेव ना जाणे पंडत काशी, मुल्ला शेख़ समझ ना आईआ। अन्तर आत्म ला के बैठे आसी, आसा आसा नाल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ सतिगुर सज्जण लाहवणहार उदासी, चिन्ता दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त रिहा दरसाईआ। साचा वक्त आए नेड़े, नेरन नेरा आप जणाइंदा। हरिजन भाग लग्गे काया खेड़े, मन्दिर इक्को इक सुहाइंदा। सतिगुर सच्चा आ जाए आपणे वेहड़े, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। साचे सन्तां बन्ने बेड़े, कंध आपणे भार उठाइंदा। नाते चुक्कण तेरे मेरे, मेरा तेरा इक्को नज़री आइंदा। अन्तिम देवणहारा गेड़े, उलटी लठ्ठ आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वक्त सुहावणा आप सुहाइंदा। साचा वक्त होए सुहावणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। गुरमुखां गुर घर घर पावणा, दर मन्दिर वज्जे वधाईआ।

हरिजन नारी पिर पती रावणा, नर नरायण बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म ढोला गावणा, घर घर विच खुशी वखाईआ। दूर दुराडा नेड़े हो के पकड़े दामना, दामनगीर इक हो जाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी शामना, शमअ इक्को नूर करे रुशनाईआ। गुरमुखां दरस दिखाए आमणो सामणा, भरम भुलेखा दूर कढ्ढाईआ। सो वक्त होए सुहावणा, जिस वेले प्रभ मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे वक्त दी आपे रखे तलाश, जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, ख़सूसीअत आपणी आप जणाइंदा। भगत प्यार वड्डा भारा, तोल्यां तोल ना कोए तुलाईआ। श्री भगवान जन भगतां कोलों मंगे आप सहारा, निरगुण बण बण फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम आया पार किनारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ढेरीआं ढाहीआ। सृष्ट सबाई आई हारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए ख्वारा, दर दर घर घर पई लड़ाईआ। बिन भगत हरि का हक़ ना लाए कोई नाअरा, सच सच ना कोए जणाईआ। श्री भगवान जन भगतां कोलों डरदा आ आ करे प्यारा, प्रेम प्यार विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेस अवल्लड़ा रूप वखाईआ। प्यार सिखण आए भगवान, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। गुरमुख वेख सच्चा सुल्तान, घर जा जा अलख जगाइंदा। गुरमुख उठे नौजवान, आप आपणा बल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची रीती भगतां विच प्रगटाइंदा। भगतां अन्दर प्यार डूँघा, नज़र किसे ना आया। श्री भगवान बण के सूंघा, निरगुण अन्दर वड़ वड़ वेख वखाया। कँवल नाभी वड्डा होया मूधा, आप आपणा मुख भवाया। ब्रह्म भेव खुल्हाए गूझा, पारब्रह्म पड़दा आप चुकाया। लेखा चुक्कया एका दूजा, एकँकारा घर नज़री आया। एकँकार सच दुआर सूझा, दर भगतां फेरा पाया। प्रेम प्रीती अन्दर झूझा, नछावर आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत प्यार भगवान आपणी झोली पाया। सच प्रीती सतिगुर प्यार, सति सतिवादी झोली पाइंदा। सच प्रीती जोत आकार, निराकार नूर दरसाइंदा। सच प्रीती शब्द धुनकार, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। सच प्रीती बख्शे अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना इक झिराइंदा। सच प्रीती डूँघी कवरी करे पार, भँवरी रोड़ ना कोए रुढ़ाइंदा। सच प्रीती नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। सच प्रीती हउमें हंगता दए नवार, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। सच प्रीती गुरसिख रूप बणाए विच संसार, सच सुच्च इक्को झोली पाइंदा। सच प्रीती गुरमुख रंग रंगे करतार, रंग अनमोला आप चढ़ाइंदा। सच प्रीती सति बणाए सुत दुलार, पूत सपूता रूप वटाइंदा। सच प्रीती भगत भगवान दए वखाल, घर साचे मेल मिलाइंदा। सच प्रीती एथे ओथे बणे दलाल, दो जहानां पार कराइंदा। सच प्रीती नाता तोड़े काल महाकाल,

मेहरवान मेहर नज़र तकाइंदा। सच प्रीती लेखा चुकाए त्रैगुण माया जगत जंजाल, जीवण युगत इक जणाइंदा। सच प्रीती धर्म दवारा वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस गृह हरि जू आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप जणाइंदा। सच प्रीती सच दुआर, धुर दरबारी आप जणाईआ। सच प्रीती मेल मिलाए एकँकार, अक्ल कला वड वड्याईआ। सच प्रीती जुग चौकड़ी डूँग्घे सागर करे पार, भँवर सके ना कोए रुढ़ाईआ। सच प्रीती अठसठ तीर्थ तट किनारा करे पार, सरोवर इक्को इक जणाईआ। सच प्रीती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां झोली पाईआ। सच प्रीती जो जन करे, सो पुरख निरँजण हरि जणाइंदा। निरभउ हो कदे ना डरे, जम नेड़ कदे ना आइंदा। धर्म राए लेखा कोए ना मंगे, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाइंदा। मिले मेल सूरे सरबँगे, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सच प्रीती देवे सति अनन्दे, अनन्द आत्म आप जणाइंदा। सच प्रीती कर ना सके चकोर चन्दे, चन्द अमावस नज़र किसे ना आइंदा। सच प्रीती गुरमुख काया चोली रंग रंगे, रंग मजीठी इक चढ़ाइंदा। सच प्रीती गुरसिख कर लोआँ पुरीआँ पार लँघे, विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। सच प्रीती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले आप कराइंदा। सच प्रीती जिस लई कर, करता पुरख दए वड्याईआ। तिस गुरमुख मिले साचा घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। मेल मिलाए नरायण नर, नारी आपणे अंग लगाईआ। सच प्रीती सुरती शब्द लए फड़, फड़ पल्लू गंढु पवाईआ। साचे मन्दिर वेखे चढ़, उच्चे टिल्ले आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी सेवा लाईआ। हरिसंगत सेवा साचा मूल, अनमुल्ल आप जणाइंदा। प्रेम प्यार दे बरखो फूल, दूजी मंग ना कोए मंगाइंदा। कूड़ी क्रिया कांटा चुभौणी ना कोए त्रिसूल, त्रैगुण सूल आप जणाइंदा। गुरसिख गुरसिख दी चुग़ली निन्दया ना करनी भूल, सच सुच्च झोली पाइंदा। प्रभ मिलण दा इक्को असूल, गुरसिख असलीयत रूप वटाइंदा। जो सतिगुर बचन करे कबूल, सो गुरसिख हरिसंगत सेव कमाइंदा। सतिगुर लहिणा देणा चुकावे मूल, अगला पिछला लेखा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दी सच प्रीती, प्रेम प्यार दी इक्को रीती, जीवण युगत दी सच्ची नीती, इक्को रंग वेखणा हस्त कीटी, ऊँच नीच भेव ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती इक दरसाइंदा। सतिगुर चरण सच्चा सन्तोख, धीरज धीर इक धराइंदा। पार कराए मुक्ती मोख, मुफ्त आपणा नाम वरताइंदा। सचखण्ड बहाए साचे कोट किला बंक वड्याइंदा। देवे नाम भण्डार अतोट, तोट ना कोए रखाइंदा। आहलणयों डिगे उठाए बोट, फड़ बांहों गोद बहाइंदा। अन्त मिलावा

निर्मल जोत, जोती जोत विच समाइंदा। सतिगुर गुरसिख उत्ते कदे ना देवे दोष, निरदोश्यां पार कराइंदा। साची ग़रीबी काया अन्दर, बाहरों मंगयां हथ्थ ना आईआ। मन वासना रोको बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। कर प्रकाश सूरज चन्द्र, कोटन कोटि रवि ससि रुशनाईआ। गुरसिख ग़रीबी किसे दर ना जाए मंगण, सतिगुर पूरा प्रेम ग़रीबी हिरदे दए वसाईआ। नाता तोड़ भुक्ख नंगण, भुख्यां नंगयां आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खिमां ग़रीबी चाकरी जगत जुग बिन भगतां हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। बुद्धी मन चित करे विशेष, विशेषताई आप जणाइंदा। लेखा चुका ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति आपणा राह वखाइंदा। आदि जुगादि जीव जंत लिखणहारा लेख, लेखा सब दा आपणे हथ्थ वखाइंदा। जुग चौकड़ी बदलणहारा भेस, वेस अनेक वटाइंदा। वसणहारा सचखण्ड देस, काया अन्दर फेरा पाइंदा। मन मति बुध ना जाणे प्रभ का भेव, कर किरपा आपणा मेल मिलाइंदा। हितकारी करे साचा हेत, नित नवित्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा रंग रंग बिबेक, गुरमुख निज नेत्र लए वेख, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। मन वासना मन विच खपाए, मेहर नज़र उठाईआ। गुरसिख गुर गुर सतिगुर इक रंग हो जाए, दूसर रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मनुआ आप टिकाईआ। मन मनुआ की करे विचारा, निका बाला अख्वाइंदा। सतिगुर योद्धा सूर बलकारा, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। शब्द खण्डा खिच दो धारा, निर्भय भउ वखाइंदा। आसा रोवे ज़ारो ज़ारा, तृष्ना नीर वहाइंदा। मन करे हाहाकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मन ममता मोह चुकाइंदा। मन मारे मन दए ज्वाल। मन विचारे मन सिफ्त स्वाल। मन उठाले मन दए बहाल। मन काया अन्दर करे खेल न्यारे, पंज तत्त जगत धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस मन वासना होए ज़िवाल। मन उठ ना उठ उठ नठ्ठे, आपणी दौड़ लगाईआ। सतिगुर सरनाई ढै ढै ढठ्ठे, बलहीण हो जाईआ। अन्तर आत्म परमात्म निरगुण नाम जपे, जपत जपत सुख पाईआ। त्रैगुण माया मूल ना तपे, बुद्धी मति ना कोए चतुराईआ। अन्तर रस मिले निझर रसे, मुख बूँद स्वांत चुआईआ। गुरमुख मिल गुर सतिगुर हस्से, जगत तृष्ना रोग गंवाईआ। जिस गृह जिस घर जिस मन्दिर जिस खेड़े जिस दुआर सतिगुर शब्द वसे, तिस मन करे ना कोए चतुराईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि सरनाई ढठ्ठे, माण अभिमान मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस मन मंत्र मंतव इक्को इक जणाईआ। सच्चा पाठ सतिगुर चरण, चरण मिले सरनाईआ। सतिगुर

खोल्हे नेत्र हरन फरन, निज नेत्र करे रुशनाईआ। दीन दयाल तरनी तरन, तारनहारा होए सहाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुरू दवारे वड़न, दूई द्वैती पड़दा बजर कपाटी आत्म कुण्डा लाहीआ। रल मिल दोवें इक्को ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। नाता तुटे जम्मण मरन, मरन जन्म रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जाप इक्को इक समझाईआ। साचा जाप सतिगुर टेक, हरि सच सच जणाया। आत्म प्रकाश बुद्धी बिबेक, मति मतिवाली आप समझाया। त्रैगुण पंज तत्त ना लाए सेक, मन वासना मेट मिटाया। निज नेत्र निज खेत्र निज काया आप आपणा लए वेख, पेख आपणी खुशी मनाया। पारब्रह्म ब्रह्म करे हेत, दर मेला सहिज सुभाया। अन्तर आत्म सच्चा पाठ अचन अचेत, अजपा जाप बिन रसना जिह्वा गाया। गुर सतिगुर करे साचा हेत, हरिजन आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा पाठ अन्तर नाम दृढ़ाया। पूजा पाठ पवण स्वास, स्वासी स्वास जणाइंदा। निज घर वासी सद वसे पास, वसेरा इक्को घर जणाइंदा। भगत भगवान पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म सोहँ ढोला आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पाठ, पाठशाला काया घर वखाइंदा। बिन रसना जिह्वा आए स्वाद, रस मिट्ठा इक वखाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां जणाए आपणा मंत्र, निष्अक्खर अक्खर धार सिफ्त सालाहइंदा। ओथे चले सतिगुर साथ, सदा सदा सहिज सुखदाईआ। डूँग्घी कन्दर अन्दर वड़ के मारे झात, नौ दवारे सुखमन टेडी डूँग्घी गार पार कराईआ। ईड़ा पिंगल बणे सफ़ात, अमृत देवे बूँद स्वांत, निझर झिरना आप झिराईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, निर्मल जोत करे प्रकाश, अनहद नादी नाद सुणाईआ। शब्द अगम्मी दए दात, अठ्ठे पहर रखाए प्रभात, मिल सखीआं मंगल इक्को गाईआ। सुरती शब्द बंधाए नात, करे खेल पुरख समराथ, बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। आत्म सेजा खेल तमाश, कोटन कोटि रवि ससि प्रकाश, निरगुण शहिनशाह शाहो भूप शाबाश, सति सरूपी आसण लाईआ। गुरमुख वसे सदा पास, आत्म परमात्म मिल मिल पाए रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाए अगला घर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। अगला घर रंग महल्ल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। निरगुण दीपक रिहा बल, जोती जोत डगमगाइंदा। सच सिँघासण बैठा मल, पुरख अकाल सोभा पाइंदा। शब्द संदेसा रिहा घल्ल, गुरमुख सज्जण आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण जाए रल, रल मिल आपणा खेल कराइंदा। वखावणहारा निहचल धाम अटल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुरमुख विरला वेखे चल, कोटन कोटि पांधी

राह विच बैठा नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला दवारा हरि निरँकारा, शब्दी धारा जोती उज्यारा, इक्को इक जणाइंदा। अगला घर सच्चा सोहणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। ना हस्सणा ना ओथे रोणा, चिन्ता रोग ना कोए जणाईआ। ना जागणा ना कदे सौणा, चिन्ता दुःख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगले घर देवणहार वड्याईआ। अगला घर सदा सद चंगा, सतिगुर चंगी तरा समझाईआ। इक्को वसे सूरा सरबँगा, शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को जिहा अनन्दा, रस फिका ना कोए वखाईआ। ना कोई दिसे ख़ाकी बंदा, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। दाता दानी गुणी गहिंदा। गहर गम्भीर बैठा डेरा लाईआ। जन भगतां चढ़ाए फड़ के बांहों डण्डा, डण्डा चौथे डण्डे आपणा दरस दिखाईआ। पिछला पिच्छे रहि जाए कन्ढा, अग्गे आपणा कुण्डा लाहीआ। भगत भगवान सदा बख़्शंदा, बख़्शश इक्को इक जणाईआ। सच सुहजणा धाम सुहंदा, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला राह बण मलाह, हरिजन साचे आप वखाईआ। ओस मंन्दर सच्चा मेला, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। इक्को घर वसे गुरु गुर चेला, गुर चेला आपणे रंग रंगाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा सुहेला, साहिब सतिगुर दया कमाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। जन भगत मिलाए आप आपणे वेला, वार थित हथ्थ ना किसे रखाइंदा। राए धर्म दी कट जेला, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, उच्चे मन्दिर हरिजन साचे आप बहाइंदा।

❋ १२ फग्गण २०१६ बिक्रमी दिल्ली दरबार पहाड़ गंज ❋

सिँघासण सुत्ते शेर उठ, क्यों बैठा मुख लुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रोंदे तेरे पुत्त, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। निरवैर हो के क्यों बैठा लुक, निराकार बेपरवाहीआ। दो जहानां करनी पुच्छ, करता पुरख तेरी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथमी ख़ाली हथ्थ मिले किसे ना कुछ, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। जीव जगत जहान गए रुस्स, तेरा दरस कोए ना पाईआ। दातार स्वामी शेर हो के बुक्क, भबक इक्को इक लगाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले भगत भगवान गोदी चुक्क, तैनूं लाज कोए ना आईआ। मेहरवान निगाहवान नर नरायण क्यों बैठा चुप, तेरी चुप्प ना किसे खुलाईआ। दो जहान अन्धेरा घुप्प, तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी सेवा कर कर गए हुस्स, आपणा बल ना कोए धराईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डा खण्डा ख़ाली होए ठुठ, सच प्याला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दे उठाईआ। पड़दा लाह बेपरवाह, बेपरवाही तेरी कम्म किसे ना आईआ। दो जहानां बण शहिनशाह, शाह आपणा हुक्म ना क्यों मनाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तूं बणया रिहों वड गुमराह, गहर गम्भीर तेरा भेव कोए सक्या ना पाईआ । भेव अभेदा तेरा दस्सदे गए राह, फड़ बांहों तेरे नाल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दे उठाईआ। नहीं वेला सिँघासण सौण दा। नहीं वेला रागां गौण दा। नहीं वेला ठंडी पौण दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, घर आपणा इक सुहौण दा। उठ के नेत्र खोल्ह अक्ख, तेरी अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी सब तों रिहों वक्ख, वक्खरी धार चलाईआ। चार जुग तेरा मार्ग गए दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम होवे प्रगट, बेपरवाह बेपरवाहीआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरा नूर इक रुशनाईआ। सदा सदा सद तेरी रखी आस, कर किरपा खेड़ा दे वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दे चुकाईआ। पहली चेत पड़दा चुकांगा। जगत सिँघासण उत्तों उठांगा। पृथ्मी आकाश कोलों पुछांगा। दो जहान लुकाया किसे कोलों ना लुकांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कर, जन भगतां कोलों कदे ना रुसांगा।
८८५ वीह सौ नौ बिक्रमी थान सुहाया, सेहरा सीस जगदीश बंधाईआ। राम मिलाया खेल खलाया, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। दस ८८५
१३ साल ना भेव जणाया, अद्धा नाल मिलाईआ। निरगुण हो के मुख छुपाया, सरगुण राह चलाईआ। सरगुण गोबिन्द ढोला १३
गाया, पुरख अकाल पड़दा पाईआ। अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाया, लहिणा लहिणेदार रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा रिहा वखाईआ। सरगुण हो के होया निरगुण, निरगुण आपणा आप तजाया। निरगुण हो के बणया सरगुण, सरगुण रंग रंगाया। लेखा जाणे त्रैगुण, त्रैगुण आपणा वेस वटाया। लख चुरासी छाण पुण, गुरमुख सज्जण मेल मिलाया। कवण जाणे प्रभ साचे गुण, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाया। धरनी धरत धवल पृथ्मी आकाश पुकार सुण, जीव जंत वेख वखाया। सन्त सुहेले साचे चुण, गुरमुख आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाया। निरगुण हो के गया लुक, लुकवीं खेल रचाईआ। साढे दस हो चुप, बोल बुलारा ना कोए जणाईआ। बीस बीसा पहली चेत्र पए उठ, चेतन सब नूं दए कराईआ। गुर अवतारां लए पुच्छ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। आपणा बदले आपे रुख, दिशा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा लाहे पड़दा, पड़दा आपणा आप

उठाईआ। वेखो निरगुण सूरज केहड़ी तरफ़ों चढ़दा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्टां देण दुहाईआ। कलमा नबी रसूल दो जहान इक्को पढ़दा, कायनात सिफ्त सालाहीआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार निउँ निउँ सजदा करदा, सीस जगदीश झुकाईआ। पिछला कीता सब दा हरदा, अग्गे मार्ग इक्को लाईआ। निरभउ निरवैर निराकार कदे ना डरदा, डर सब नूं रिहा वखाईआ। लख चुरासी भाण्डे घड़दा, घड़ घड़ भन्न वखाईआ। शहिनशाह शाह पातशाह भूपत भूप आपे खड़दा, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। भगत भगवान सन्त सुहेले आपे वरदा, मेल मिलावे सहिज सुभाईआ। करे खेल नरायण नर दा, नर इक्को नजरी आईआ। उठ वेख लेखा दर दर दा, सच संदेसा आप सुणाईआ। एका सिफ़रा एका एकँकार इक्को अक्खर पढ़दा, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा सच सिँघासण आपणे उत्तों उठाईआ। पर्दा लाह आप भगवान, आपणी खेल वखाईआ। प्रगट हो योद्धा सूरबीर नौजवान, नाउँ आपणा इक वड्याईआ। राज राजानां शाह सुल्ताना अगम्मी तीर मारे बाण, तिक्खी मुखी धार वखाईआ। लेखा जाण ज़िमी असमान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आपे हो सदा मेहरवान, मेहर नज़र खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे तिन्न हथ्थ सति सतिवाद वखाए इक निशान, निशाना इक्को इक झुलाईआ। - - जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। पर्दा लाहे पिछली धार, धार धार आप जणाइंदा। सरगुण विच्चों निरगुण आए बाहर, निरगुण आपणा राह वखाइंदा। गुप्त होए ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर खेल कराइंदा। नाम खण्डा मारे इक्को वार, दूजी वार सिर ना कोए उठाइंदा। दे के आया तिक्खी धार, तलवार प्यार नाल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकार खेल अपार एकँकारा आप सुणाइंदा। सिँघासण सौणा देवे छड्ड, सुत्तयां कोटन कोटि काल बिताईआ। दो जहानां कर पार हद्द, हदीस इक्को इक सुणाईआ। भगत भगवान घर आपणे सद्द, सच मन्दिर दए वड्याईआ। चौथी मंज़ल बोले गज्ज, गरज इक्को नाम लगाईआ। निरवैर पुरख हो प्रतख, प्रतख दए वखाईआ। किसे फरकण ना देवे अक्ख, पलक पलक ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा इक्को वर, वर आपणे हथ्थ रखाईआ। पड़दा लाहे कल पाटे चादर, हरि नूर जोत रुशनाईआ। प्रगट होवे इक बहादर, पुरख अकाल वड वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार आया कादर, कुदरत वेखे चाईं चाईंआ। गुर अवतार कहिण पावे सार डूँग्घे सागर, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। भगत भगवान कहिण होया उजागर, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। श्री भगवान

हरिजन बणाए सच सौदागर, वणज इक्को इक कराईआ। धुर संदेसा देवे आडर, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पड़दा आपे दए हटाईआ। जगत पर्दा जाए हट, भगत वेख वखाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, साची कार कमाईआ। राज राजानां पाए नथ्थ, शब्दी तन्द उठाईआ। फड़ फड़ करे वक्खो वक्ख, वक्खरी कार कमाईआ। दो जहानां भाण्डे कर कर सख, चार कुण्ट फिरे इक दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत सिँघासण तज, शब्द घोड़े चढ़े भज्ज, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा फेरा पाईआ। सिँघासण छड्ड के आवांगा। निरँकार अख्वावांगा। शब्द जैकार बुलावांगा। महल अटल सुहावांगा। साचे पौड़े चढ़ के दरस दिखावांगा। उच्ची मंज़ल इक्को राग अलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल करावांगा। आपणी खेल करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। वीह सौ नौ बिक्रमी कीता सच विहार, सच सिँघासण आसण लाईआ। नौ जेठ ख़बरदार, ख़बर इक्को इक सुणाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी बाणी आप अल्लाईआ। करे कराए साची कार, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। वीह सौ उन्नी दए आधार, एका नाया जोड़ जुड़ाईआ। भगतन मीता अलख अपार, शहिनशाह आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख लाई फुलवाड़ वाड़, आपणे नाम कराईआ। गुलशन वेखे इक निरँकार, कली कली मात महकाईआ। प्रगट हो योद्धा बलकार, सूरबीर दरस दिखाईआ। सच सिँघासण उत्तों होए बाहर, बेपरवाह अक्ख खुल्लाईआ। ग़फ्लत विच सुत्ता रहे पैर पसार, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। चुप चुपीता करदा रिहा विहार, बण विवहारा धार रखाईआ। पंडत पांधा मुल्ला शेख़ कोई पा ना सके सार, सार हथ्थ किसे ना आईआ। हरि का लभ्भणा आदि जुगादि बड़ा दुष्वार, दुश्मण होए जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। वीह सौ नौ अन्दर वड़या, सच सिँघासण मुख छुपाईआ। वीह सौ उन्नी उपर चढ़या, बेपरवाह बेपरवाहीआ। आपणा नाम आपे पढ़या, आपे रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा रिहा उठाईआ। साचा पर्दा करे दूर, दूर दुराडा दया कमाईआ। घर अबिनाशी हाज़र हज़ूर, हरि इक्को नज़री आईआ। आपणी भुल्ल मन्न बख्शावे कसूर, जन भगतां अग्गे कर अरज़ोईआ। जुग चौकड़ी प्रभ दा सच दस्तूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी राज राजान शाह सुल्तान कर मफ़रूर, मन वासना कूड़ भराईआ। नव नौ चार मचा फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। हुक्मे अन्दर कर मजबूर, मुजरम सब नूं दए बणाईआ। अन्त करे चूरो चूर, ना सके कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप दृढ़ाईआ। आपणी करनी दस्से

८८७
१३

आप, भेव अभेद जणाइंदा। लुक लुक अन्दर वड़ वड़ जन भगतां दस्सदा रिहा जाप, नाम निधाना इक समझाइंदा। कलिजुग अन्तिम बीस बीसा प्रगट हो वखाए वड प्रताप, प्रतापी आपणा फेरा पाइंदा। नव नौ चार चरणां हेठां लए नाप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाइंदा। वेख खेल सिँघासण प्या हस्स, आपणी खुशी मनाईआ। प्रभ तूं मेरे उत्ते रिहा वस, वक्खरी धार चलाईआ। जांदी वार कुछ स्नेहुड़ा दस्स, तेरे चरण ध्यान लगाईआ। तूं साहिब सदा समरथ, हथ्थ तेरे वड्याईआ। पारब्रह्म मेहरवान महिमा जणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। मैं निरगुण हो के रिहा नस्स, दो जहानां फेरा पाईआ। हरिजन वेखां जो गाउँदे मेरा जस, कलिजुग अन्तिम अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया पावां नथ्थ, सरगुण बचया कोए रहिण ना पाईआ। फिर फिर वेखां तीर्थ तट, गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले फोल फुलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां घर घर वेखां लग्गी अग्ग, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी मेरा खेल जग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सिँघासण रिहा समझाईआ। जगत सिँघासण चरण लाग, इक करे अरज़ोईआ। प्रभ तुध बिन कोई दिसे ना कन्त सुहाग, जो मेरी सेज हंढ्ढाईआ। तुध बिन रखे ना मेरी कोई लाज, शाह सुल्तान रोवण मारन धाहींआ। सीस किसे ना रहिणा ताज, तख्त नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग तूं बदलणहार समाज, समग्री सब दी झोली विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तुध बिन कोई ना लाए भाग, भाग हीण सर्ब लोकाईआ। नज़र ना आए कोए चिराग़, दीपक दीआ ना कोए रुशनाईआ। सति सरूपी कोई ना लाए आवाज़, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाईआ । साचा करे ना कोई राज, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। तूं दाता ग़रीब निवाज़, मैं ढह प्या सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आसा रखाईआ। सुण सिँघासण मेरे सज्जण, हरि सच सच दृढ़ाइंदा। मेरा प्रेम तेरी लग्न, तेरा तेरे नाल रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम पहली वार पहली चेत करां सगन, जन भगतां वेख वखाइंदा। अठ्ठ पहर रहिण मग्न, सति सन्तोख इक दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई लगी अग्ग लग्गण, श्री भगवान आप लगाइंदा। तेरे उत्ते पंज तत्त हंढ्ढाया बदन, तत्तव तत्त रंग रंगाइंदा। मुस्लिम सुन्नी कठ्ठे होण सागर कन्ढे अदन, अदली इक्को हुक्म जणाइंदा। जगत विवहार देवे बदल, दलील पिछली ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप समझाइंदा। सिँघासण कहे प्रभ तेरा भरवासा, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। हउँ सेवक दासी दासा, सदा सद सेव कमाईआ। नित नवित्त तेरे मिलण दीआं रखां आसां, आस आस विच प्रगटाईआ । कर किरपा दे दिलासा, कवण वेला फेरा पाईआ। मेरा पूरा करीं घाटा, पिछला लेखा झोली पाईआ।

की होया चार पावे नाल बणी मेरी चुगाठा, चार जुग तेरी सेव कमाईआ। तेरा खेल नटुआ नाटा, बाज़ीगर आपणा स्वांग वखाईआ। मैं तेरे थल्ले प्या आपणी छाती अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान कहे सिँघासण, सुण सज्जण मीत मुरारया। तेरी पूरी करां आसन, लहिणा देणा कर्ज उतारया। तेरे उत्ते करया वासन, आप आपणा खेल वखा ल्या। तेरा देवां सच्चा साथन, श्री भगवान आप समझा ल्या। सति सतिवादी चले राथन, सच मार्ग इक वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा संग आप निभा ल्या। जगत सिँघासण रोवे नीर, पलक पलक उठाईआ। तुध बिन कोई ना देवे धीर, धीरजवान नज़र कोए ना आईआ। बौहड़ी मेरी भुल्ल बख्श तकसीर, मेरी तकदीर दे उलटाईआ। मेरी लग्गी निभे तेरे नाल अख़ीर, सुंञी सेज ना मोहे भाईआ। मैं सदा रहां दिलगीर, दिलबर तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। तूं मेरा सच्चा पीर, मुर्शद इक्को नज़री आईआ। मेरे उत्ते बैठ करें लील, गुणी गहीर गहर गवर तेरी वड्याईआ। तेरे भार नाल मेरी मिटे पीड़, दुःख दर्द ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे चरण कँवल मिले सरनाईआ। श्री भगवान बोले आप, शब्द अगम्म जणाइंदा। सच सिँघासण तेरा प्रताप, वड प्रतापी आप जणाइंदा। कलिजुग कूड़ा मेट संताप, फिर तेरे उत्ते आसण लाइंदा। लख चुरासी जपावां सच्चा जाप, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। तेरा आर पार किनारा लवां माप, साढे तिन्न हथ्थ तेरी झोली पाइंदा। तेरा पावां चूल करां पाकी पाक, दुरमति मैल ना कोए रखाइंदा। अग्गे पिच्छे तेरे साथ, भगत दवारा राह जणाइंदा। प्रगट हो पुरख समराथ, तेरा भार उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। सुण सिँघासण हरि की बात, हरि चरण प्या सरनाईआ। धन्न भाग प्रभ देवें साथ, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं बण विछाउणा रूप वटाया खाट, ताणा पेटा तन्द बंधाईआ। तूं उपर सुतों पुरख अबिनाश, किरपा धार आपणी दया कमाईआ। मैनूं भुल्ली दिन रात, घड़ी पल नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी तक्कदा रिहा आस, आसा इक्को ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ लोकमात होए प्रकाश, प्रकाशवान करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, सच सिँघासण आप जणाइंदा। सुण नढे साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। एका नाया बेमिसाल, मिसल साची आप बणाइंदा। सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा लोकमात प्रगटाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुणाइंदा। सच सिँघासण

भगत दवारे, हरि दर मिले वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरे पैंदे रहे पवाड़े, गुर अवतार पीर पैगम्बर करन लड़ाईआ। कोटन कोटि तेरे उत्ते बहि बहि प्रभ दे नाम उच्चारे, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तूं बेपरवाह जगत सिँघासण कोटन कोटि राज राजान शाह सुल्तान कर ख्वारे, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। आपे बैठा रिहों मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरूदवारे, उत्ते अक्खर सिफ्ती ढेरी लाईआ। दिने जागण रातीं सवाएं, जगत करनी बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी कीती घाल लेखे दए लगाईआ। तेरी कीती घाल लेखे लौणी, सच दरबार आप जणाइंदा। तेरी सेवा कीती पूर करौणी, ऊनी साल सेज हंढुइंदा। इक इकल्ले खेल खलौणी, नौ खण्ड पृथ्मी पन्ध मुकाइंदा। पहली चेत करे बौहणी, तेरा बौहड़ी हाल सुण तेरा दर्दी दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला मेल मिलाइंदा। तेरा मेल मिलावे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। धन्न वडयाई वड्डा भाग, भाग हिस्सा रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस घर विच लभ्भदे रहे चिराग़, जोती नूर नूर रुशनाईआ। निउँ निउँ सजदा करदे रहे गुरू महाराज, महिमा अकथ कथ जणाईआ। सो साहिब सतिगुर तेरी रखे लाज, आप आपणे चरण लगाईआ। लोकमात विच्चों चुक जहाज़, सच दवारे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत राज दए गंवाईआ। सच दस्स मेरे भगवान, किस बिध रहम कमाईआ। मैं बरदा तेरा ग़ुलाम, सद सद सेव कमाईआ। तूं शहिनशाह अमाम, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं मेरा लेखे लाए काम, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जुग चौकड़ी मैं बणया रिहा आम, कोटन कोटि मेरे उत्ते चढ़ चढ़ हुक्म सुणाईआ। माया ममता नाल दरसाउँदे रहे मेरा निशान, तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। जिध्धर वेखां मेरे नैण शरमाण, मेरे उत्ते राज राजन बहि धरोह ज़ुल्म कमाईआ। मेरे उत्ते बैठ किसे ना झुलाया सच निशान, कोटन कोटि जगत निशाने रंग रहे वटाईआ। मैं दोए जोड़ बेनन्ती करां मेरे मेहरवान, तेरे सरन मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा संग रखाईआ। तेरा संग रखां सुखआसण, सुख तेरे विच वसाइंदा। लेखा चुका पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर पार कराइंदा। प्रगट हो पुरख अबिनाशन, प्रभ तेरा मेल मिलाइंदा। सति सतिवादी पूरी करे आसन, तृष्ना रोग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला आप मिलाइंदा। धन्न भाग तेरा होए मेला, मिलणी हरि आप कराईआ। तूं गुरू मैं तेरा चेला, बण सेवक सेव कमाईआ। साचा दस्स धाम नवेला, जिस मन्दिर देवें टिकाईआ। तुध बिन मैं कदे ना होवां वेहला, नित नवित्त तेरा भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच सरनाईआ। सच सरनाई दस्से भगवन्त, आपणी दया कमाइंदा। निरवैर

पुरख निरगुण कन्त, कन्त कन्तूहल फेरा पाइंदा। धुरदरगाही साचा मंत, मंत्र गुरमुखां आप पढ़ाइंदा। चौथे जुग कर भस्मंत, नियम आपणी धार जणाइंदा। पंजां प्यारयां वस्त्र पा बसन्त, बसन्ती आपणी रुत्त सुहाइंदा। नाल रला हरि जू हरिसंगत, सगला काज रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रंग वखाइंदा। तेरा रंग वखाए करतार, हरि करता आप जणाईआ। पहली चेत करां विहार, बण विवहारी सेव कमाईआ। पंज प्यारे रखे नाल, लिखारी लिखे सिफ्त सालाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पुछे तेरा हाल, बेहाल लए बचाईआ। तेरे उत्ते रख के इक चिट्टा रुमाल, साची सेवा सच समझाईआ। दवाबा संगत करे तेरी प्रितपाल, माझे माली करे कुड़माईआ। मालवा मिल मिल वजाए ताल, जम्मू रिहा खेल खलाईआ। चौहां विच वड़े दीन दयाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आप नंगीं पैरीं बणे कंगाल, जन भगतां छत्र सीस झुलाईआ। तेरे पिच्छे गुरमुखां दा विंगा होण ना देवे वाल, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। जुग विछड़यां वेखे हाल, मुरीदां आप सुणाईआ। पिछला नाता तोड़ जंजाल, अग्गे इक्को रंग रंगाईआ। करे खेल आप भगवान, भगवन वड्डा बेपरवाहीआ। जगत सिँघासण तेरे उत्तों पंज तत्त कीता कुरबान, सिँघ शेर नज़र किसे ना आईआ। बब्बर हो के भबक मारे बलवान, दो जहानां रिहा जगाईआ। पिछली शरअ मेटे जगत जहान, साची करनी आप कमाईआ।
८६१ भगत दुआर खोल्ह महान, भगती इक्को इक सिखाईआ। डूँग्घी कन्दरों कढ्ढ देवे दान, दूजी मंज़ल आप चढ़ाईआ। दूजी ८६१
१३ मंज़ल कर परवान, तीजे दर दए बहाईआ। तीजे घर कर परवान, चौथे तेरा आसण लाईआ। उपर बैठ शाह सुल्तान, १३
सच फ़रमान हुक्म जणाईआ। भगत भगवान पाए इक्को आण, बन्धन इक्को इक जणाईआ। इक सौ इक लेख लिखे जगत राजान, नव खण्ड पृथ्मी आप समझाईआ। आओ वेखो खेल करे भगवान, भावी सब दे सिर ते छाईआ। सच सिँघासण तेरा माण, महल अटल आप रखाईआ। निहकर्मी करे तेरी कल्याण, कला कुदरत आपणे विच छुपाईआ। उपर चढ़ नाम खण्डा खिच्चे विच्चों म्यान, महिमां अगणत गणी ना जाईआ। चौथे महल्ल गुर अवतार पीर पैगम्बर दर आ के आपणा आप करन कुरबान, भेंटा सब कुछ देण चढ़ाईआ। पुरख अकाल तेरी मन्नीए आण, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तेरा हुक्म सुणीए फ़रमान, फ़रमाना इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सिँघासण देवे वर, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। पर्दा जाए लथ्थ, बिन हथ्थां आपे लाहइंदा। गुरमुख सड़दा जाए बच, कर किरपा आप बचाइंदा। निरगुण अन्दर हो के जाए रच, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। आपणी करनी करे सच, सच साची खेल वखाइंदा। जन भगतां देवे इक्को मति, ब्रह्ममत आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त सोभा

पाइंदा। साचा तख्त सिँघासण सुहाउणा, सुहावणी रुत्त महकाईआ। पंजां प्यारयां तेरा भार उठाउणा, हरि भगवान उंगली आप लगाईआ। हरिसंगत ढोला इक्को गाउणा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वज्जी वधाईआ। दो जहान घर घर रोणा, रोवे सर्ब लोकाईआ। सति पुरख निरँजण तेरे उपर डेरा लाउणा, सजा चरण आप टिकाईआ। खब्बा चरण चुक जगत ठोकर लाउणा, धक्का इक्को वार लगाईआ। चारों कुण्ट सिँघासण आप भवाउणा, गेड़ा गेड़े नाल रखाईआ। चौथे गेड़े बंद कराउणा, बंदीख़ाना सब नूं पाईआ। भगत अनन्द इक दरसाउणा, अनन्द अनन्द अनन्द वज्जे वधाईआ। पैंद सरहाणे तेरे सौणा, लैहन्दा चढ़दा दए हलाईआ। सजे खब्बे बाज़ू आप फैलाउणा, चारों कुण्ट रिहा डराईआ। फूलण माला हथ्थ रखाउणा, एका इक्की गंढु वखाईआ। साचा मेघ आप बरसाउणा, करोड़ तेतीसा सेव लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ढोला गाउणा, प्रभ चरण मिली सरनाईआ। सच सिँघासण इक वडयाउणा, प्रभ वड्डा रिहा जणाईआ। अमृत मेघ इक बरसाउणा, बूँद स्वांती गुरमुखां मुख चुआईआ। साची धार इक रखाउणा, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। हार श्रृंगार हरिसंगत आप कराउणा, आप आपणी सेव कमाईआ। चौथे घर बहि के गुरमखां दा ढोला गाउणा, जिस दा गा ना सक्या कोई पीर पैगम्बर लोकमात देवे गवाहीआ। सो मन्दिर साहिब इक सुहाउणा, जिस उपर तेरा आसण लाईआ। आपणे मस्तक सरगुण खूनी धार बहाउणा, गुरमुखां टिक्का आप लगाईआ। अजूनी रहित नज़री आउणा, सच तैनूं इक दृढ़ाईआ। पिछला कानून सर्ब मिटाउणा, ममनून करे आप लोकाईआ। दो जहान असूल इक बंधौणा, साहिब पड़दा दए चुकाईआ। माअकूल हुक्म इक जणाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणे नाल जुड़ाईआ। सिँघासण कहे प्रभ मेरे बाप, पिता तेरी वड्याईआ। किस बिध मैनूं देवें दात, मेहर नज़र उठाईआ। मैं ना जाता आपणा आप, भुलया विच लोकाईआ। चार जुग ना होया पाक, पतित आपणा आप नज़री आईआ। कोटन कोटि बणाए साक, सज्जण आपणे आप हंढुाईआ। साहिब साची किसे ना दिती दात, कूड़ी झोली गए भराईआ। दूजा मलदा रहि गया हाथ, मेरा संग ना कोए रखाईआ। नाच कर कर गए त्रैलोकी नाथ, मण्डल मण्डप रास रचाईआ। अन्तिम सब दा तुटा साक, सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं थक्क के सब दी लाही आस, हो निरासा तेरा ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ आए पास, मेरा दुःख मिटाईआ। मैं लभ्भ लभ्भ थक्का जंगल प्रभास, गगन गगनंतरां खोज खुजाईआ। तेरी कितों ना मिली सुराख, तेरी शूह ना किसे समझाईआ। मेरा मन होया उदास, हैरान हो के रिहा जणाईआ। जीवां जंतां लग्गी आग, राज राजान रोवण कुरलावण मारन धाहींआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख भाज, चार कुण्ट आपणा पन्ध मुकाईआ।

तेरा सच्चा ना मिल्या समाज, वरन बरन करे लड़ाईआ। शहिनशाह करे कोई ना राज, रय्यत नेत्र नैणां नीर रही वहाईआ। कर किरपा आप महाराज, मेरा दुखड़ा देणा गंवाईआ। तूं तख्त निवासी तख्त निवाज, तुध बिन तख्त ना कोए सुहाईआ। धन्न भाग प्रभ मिल्या आज, आप आपणा फेरा पाईआ। आपणे सिर तों लाह के ताज, मेरा ओढण उपर टिकाईआ। आप बणया ग़रीब निवाज, विच ग़रीबां डेरा लाईआ। शाह सुल्तानां कर दे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक रूप बणाईआ। मैनूं इक्को लभ्भा साक, हरिसंगत नज़री आईआ। जिस दा हो के रहां दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दित्ता इक्को वर, प्रभ आपणे चरण लगाईआ। सुण सिँघासण सच गल्ल, हरि सच सच जणाइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा वल छल, अछल छल धारी भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग वेला अन्त हरिसंगत रल, बिन हरिसंगत तेरा कदर कोए ना पाइंदा। प्रभ अबिनाश तेरा आसण लए मल्ल, निरगुण आपणा डेरा लाइंदा। अन्दरों कढु चौथी मंज़ल देवे घल्ल, घल्लू घारा वेख वखाइंदा। तेरा भार पंज प्यारे लैण झल्ल, जिन्ह़ां विच अन्दर वड़ के डेरा लाइंदा। हरिसंगत स्नेहुड़ा इक्को घल्ल, तेरा संग वखाइंदा। अमृत भण्डारा भर जल, जल ख़ुशीआं नाल बरसाइंदा। चार वरन मेट सल, इक्को घर वड़्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण सच साचा आसण लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ तेरा मन्नां कहिणा, तेरे चरण सरनाईआ। श्री भगवान तेरे भगतां वेखां नैणां, तेरी संगत दर्शन पाईआ। मैं करां परवान ओन्ह़ां विच रहिणा, वक्खरी धार ना कोए रखाईआ। जिस दवारे मैं मूधे हो के डहिणा, तिस दवारे जन भगतां सेव कमाईआ। ओथे इक भगवान इक भगत रहिणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखां मैनूं नज़री आए तेरे प्रेम प्यार दा गहिणा, गुरमुख गुरसिख हरि कन्त प्यारी नारी तन हंढ़ाईआ। दूजे वहण कदे ना वहणा, इक्को मिली सति सरनाईआ। तेरा भाणा सदा सद कहिणा, सद भाणे विच रखाईआ। लख चुरासी देवे मेहणा, मेरा घट कुछ ना जाईआ। तूं साहिब सानूं देणा, मंगते तेरे दर ख़ाली झोली वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिँघासण तेरा संग भगतां नाल रखाईआ। वेख सिँघासण साचे भगत, बिन भगतीयों प्रभ बणाए। पारब्रह्म दी ब्रह्म रक्त, रक्त बूँद वंड ना कोए वंडाए। कर किरपा आया परत, बेपरवाह फेरा पाए। इक दूजे नाल सच दवारे ला लओ शर्त, कूड़ी शरअ विच कोए ना आए। जे मेरे वलों रहि जाए फ़र्क, फड़ बांहों लओ मनाए। जे गुरमुख चौथे पद विच्चों जाए अटक, कठ्ठे हो के लओ ढाहे। क्यों झूठी दस्सी सड़क, राह विच चोर यार ठग्ग रहे डराए। अग्गों सतिगुर पूरा कहे खड़क, आओ मेरे बच्चो फड़ बांहों लए उठाए। पिछला लेखा करे तर्क, तुरत आपणा रंग रंगाए। लख

चुरासी नचोड़ कढुया अर्क, गुरमुख थोड़े गोद रहाए मेल मिलाए। भेव ना पाए नैण अक्ख फर्क, फुरती आपणी इक जणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सिँघासण हरि भगत इक्को रंग रंगाए। सिँघासण तेरे उत्ते चढ़या, श्री भगवान खुशी वखाइंदा। गुरमुखां दे अन्दर वड़या, नज़र किसे ना आइंदा। दोहां वचोला आपे बणया, आपे आपणी खेल कराइंदा। विछड़यां मेला आपणे दरया, दर आपणा इक समझाइंदा। भगत भगवान इक्को जिहा करया, सिँघासण तेरा रंग वखाइंदा। चौथी मंज़ल जो जन चढ़या, बांहों फड़ थल्ले कोई ना लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण तेरा साथण, सति पुरख निरँजण इक अख्वाइंदा। सिँघासण कहे प्रभ तूं बड़ा दलेर, मैं वेख होया हैराना। मैं निक्की जिही मंगी मेहर, तूं भरया वड ख़ज़ाना। कर किरपा मेरा चार जुग दा पैंडा दित्ता नबेड़, नाल भगतां बद्धा गाना। आपणा खेल दस्सया नखेड़, पड़दा कूड़ा पार कराना। मैं भुल्ल गया मेर तेर, तेरा मेरा इक्को घर टिकाणा। जिध्धर वेखां नज़री आए शहिनशाह शेर, शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना। मैं ना जाणया किस बिध हरि भगत ल्यांदे घेर, ना कोई राग सुणाया गाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाया आपणा घर, जिस घर झुल्ले सच निशाना। साचे तख्त हरि तख्त निवासी, ताकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच दवारे करे खेल सचखण्ड निवासी, साची कार कमाइंदा। दो जहानां पावे रासी, रास मण्डल आप रचाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पारब्रह्म पूरी करे आसी, आसा आपणे नाल मिलाइंदा। तेरी लाहे फेर उदासी, पिछला दुःख गवाइंदा। सति सतिवादी सति रंग निशाना इक झुलासी, आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया देवे फाँसी, फट्टा इक्को इक बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, सत्त रंग निशाना जम्मू संगत करे परवाना, उपर आपणा लेख लिखाइंदा। सत्त रंग निशाना फड़े हथ्थ, हथ्थ आपणे विच उठाईआ। नीचे उपर मार्ग देवे दस्स, अद्धविचकार समझाईआ। जो लिख्या सो होवे सच, सच मिले वड्याईआ। शब्द जोत जोत शब्द निरगुण निरगुण विच गए रच, सरगुण सरगुण खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा फेर समझाईआ। सिँघ गज्जण गज्जण गुरमेज, गुरमुख गुरमति राह चलाईआ। चिटी चादर बणौणी सेज, दोहां मेला सहिज सुभाईआ। प्रभ निरगुण लपेटे विच आपणा तेज, तिक्खी धार चलाईआ। शब्द संदेसा देवे भेज, भाजी घर घर आप पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे घर सिँघासण उपर दए विछाईआ।

❇ १२ फग्गण २०१६ बिक्रमी सरूप सिंघ दे गृह चाण्क्या पुरी नवीं दिल्ली ❇

सच सिँघासण सोहे सुल्तान, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। भूप बणे राज राजान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। सचखण्ड वसाए सच मकान, दरगाह साची कर रुशनाईआ। दो जहानां बण हुक्मरान, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, लोआँ पुरीआँ पन्ध मुकाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रधान, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, सति सतिवादी आप हंढाईआ। धुर संदेसा दए ज्ञान, नर नरेशा करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि राजन राजा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। आदि जुगादि रच रच काजा, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। नाम निधान देवणहारा दाजा, लख चुरासी जीव जंत झोली आप भराइंदा। बोध अगाध मारनहारा वाजा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म रच रच काजा, जीव जंत रंग रंगाइंदा। सदा सुहेला फिरे भाजा, आवण जावण खेल वखाइंदा। मुकन्द मनोहर लखमी नरायण माधव माधा, बेनज़ीर दस्तगीर आपणी धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी पेखणहारा समाजा, साची करनी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सच सिँघासण इक सुहाइंदा। सच सिँघासण सुहाए आप प्रभ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण निरवैर उपर बहे झब्ब, झलक इक्को जोत नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दुआर लए सद्द, सच संदेसा हुक्म सुणाईआ। नव नौ चार वेला रिहा लद्द, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। नव नौ अन्धेरा खड्ड, डूँघी गार सृष्ट लोकाईआ। किसे ना मिले अमरापद, अमर आत्म ना कोए कराईआ। कोटन कोटि मक्का काअबा करदे हज्ज, हाजत पूरी ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि मन्दिर मस्जिद बैठे सज, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कोटन कोटि नहा नहा थक्के तीर्थ तट, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सच सिँघासण प्रभ बैठ पुरख समरथ, अक्ल कल आपणी धार चलाईआ। चलावणहारा सच्चा रथ, रथ रथवाही नज़र किसे ना आईआ। अन्त भगवन्त वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। जोती जाता हो प्रगट, प्रगट आपणा राह वखाईआ। लेखा जाण चौदां लोक चौदां तबक जगत हट्ट, बण वणजारा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्को डेरा लाईआ। सच सिँघासण चढ़े आप, तख्त निवासी दया कमाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, दूसर संग ना कोए मिलाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, लोकमात राह जणाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, मण्डल आपणी रास वखाइंदा। पूरी करनहारा आस, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, डूँघे सागर फोल फुलाइंदा। शाहो भूप बण शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच सिँघासण इक सुहाइंदा। सच सिँघासण हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। जगे जोत आदि निरँजणा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। भगत भगवान बणे सज्जणा, घर मेला सहिज सुभाईआ। चरण धूढ़ कराए मजना, इक्को अमृत नीर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी रखे हथ्थ, बेपरवाह खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी मथन मथ, लख चुरासी वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा राह जणाइंदा। सच दवारे आपे वस, जन भगतां आप वड्याइंदा। मेल मिलावे नस्स नस्स, आत्म परमात्म पन्ध चुकाइंदा। निझर देवे इक्को रस, रस फिका मेट मिटाइंदा। कर किरपा पूरी करे आस, आसा इक्को इक जणाइंदा। सच सिँघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजण डेरा लाइंदा। सच सिँघासण डेरा इक, एकँकार आप लगाईआ। आदि जुगादि लेखा लिख, जुग जुग करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पाए भिख, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंडणहारा हिस, ज़ात पात वरन गोत क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश खाणी बाणी जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज बणत बणाईआ। चलावणहार रथ पुरख समरथ महिमा अकथ, बोध अगाध निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण अक्खर वक्खर करे जणाईआ। शाह सुल्तान राज़ राजान भूपत भूप मार्ग दस्स, रय्यत राउ रंक जीव जंत साध सन्त आपणा हुक्म जणाईआ। लेखा जाण जुगा जुगन्त, प्रगट हो श्री भगवन्त, मेला नार कन्त, आत्म सेजा सच सुहञ्जणी इक वखाईआ। शब्द अगम्मी मणीआं मंत, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, गढ़ तोड़े हउमें हंगत, निवण सो अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण इक सुहाईआ। सच सिँघासण हरि सुहाउणा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वेस वटाउणा, निरगुण आपणी कल वरताइंदा। एकँकार बल रखाउणा, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण दीप डगमगाउणा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। श्री भगवान साचा हुक्म सुणाउणा, हुक्मे अन्दर खेल रचाइंदा। अबिनाशी करते सीस झुकाउणा, बण बरदा सेव कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पड़दा लौहणा, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। तख्त निवासी साचा तख्त इक वडयाउणा, जिस आपणा चरण छुहाइंदा। भगत दवारे आप वछाउणा, भगवन आपणी कार कमाइंदा। साचा संग इक रखाउणा, एकँकारा संग जणाइंदा। धुर निशाना आप झुलाउणा, दो जहानां सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक वड्याइंदा। सच निशाना झुल्ले जग, जग जीवण दाता आप झुलाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, निहकलंक खुशी मनाईआ। दीन मज़्ब पार कर हद्द, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। अनहद नाद

८६६
१३

वजाए नद, अनरागी राग सुणाईआ। प्रेम प्यार आपणे विच्चों कढ्ढ, जन भगतां झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया देवे छड्ड, सच सुच्च करे कुड़माईआ। सच जणाए इक्को जाप, आत्म परमात्म ढोला आप सुणाईआ। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। जन्म जन्म दा मेटे पाप, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। नज़री आए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता दरस दिखाईआ। निज आत्म करे वास, घर मन्दिर डेरा लाईआ। शब्द जोती जोत जोत प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। साचे तख्त बैठ शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तख्त निवासी सच निशाना सति सतिवादी आप प्रगटाइंदा। वखावणहारा दो जहानां, निरगुण सरगुण दोए दोए रूप वखाइंदा। देवणहारा ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म प्रभ आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाइंदा। सुणावणहारा राग तराना, निष्अक्खर वक्खर नर नरायण आप सुणाइंदा। बिठावणहारा सच बबाणा, शब्द अगम्मी आप उडाइंदा। वखावणहारा सच मकाना, सचखण्ड कुण्डा आपे लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। आपणा रंग रंगे करतार, करता भुल्ल कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। वेद व्यासा करे विचार, उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा ध्यान लगाईआ। ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता प्रगट होए नौजवान, नईया नौका दो जहान चलाईआ। ईसा मूसा करे ध्यान, मुहम्मद चरण कँवल इक्को आस रखाईआ। प्रगट होए हक़ अमाम, परवरदिगार सच्चा माहीआ। सच सुणाए इक कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। नानक निरगुण वेखे मार ध्यान, आदि निरँजण नूर करे रुशनाईआ। प्रगट होए योद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। गोबिन्द वेखे पुरख अकाल, अक्ल कल हरि अख्वाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। अन्तिम आवे बण प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। शहिनशाह भूप बण राजान, रय्यत वेखे जगत लोकाईआ। सत्त रंग निशान झुलाए आण, राज राजानां हुक्म सुणाईआ। सति सतिवादी बणाए इक विधान, धारा इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म देवे भगवान, भगवन दया कमाइंदा। सति धर्म दा झुल्ले निशान, जगत निशाना मेट मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथमी इक ज्ञान, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। सत्तां दीपां इक राजान, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। लख चुरासी इक ध्यान, बन्धन इक्को इक पाइंदा। चार वरनां इक मकान, गुर इष्ट देव इक्को इक समझाइंदा। चारे खाणी इक निशान, चार कुण्ट वखाइंदा। चारे बाणी कर परवान, नाम बाण तीर चलाइंदा। चौथे पद हो प्रधान, सच सिँघासण इक वछाइंदा। कलिजुग अन्त कर कल्याण, भेव आपणे विच रखाइंदा।

८६७
१३

सतिजुग सति सुत दे माण, सति सतिवादी राह वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। सृष्ट सबाई इक चरण कराए ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक्को इक प्रगटाइंदा। साचा तख्त प्रगट मात, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सृष्ट सबाई बणे सज्जण साक, नाता इक्को घर वखाईआ। मुर्शद मुरीदां करे पाक, पतित पुनीत दया कमाईआ। श्री भगवान साची देवे भाख्या भाख, भविख्त लेखा दए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणे साक, घर मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म खोल्हे ताक, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। साचे गृह वखाए घाट, सरोवर तट तीर्थ इक्को नज़री आईआ। कलिजुग कूड़ी मिटे वाट, सतिजुग मार्ग इक लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले कमलापात, कँवल नैण दरस दिखाईआ। चतुर्भुज साख्यात, साहिब आपणा वेस वटाईआ। आदि शक्ति साथ साथ, नूर नूराना कर रुशनाईआ। परवरदिगार देवे दात, बेनज़ीर झोली पाईआ। पीर पैगम्बर बहाउणा इक जमात, दो दो आब मेल मिलाईआ। लेखा जाणे मक्का काअब, काअबा इक्को इक दृढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद पूजा पाठ, काया बंक इक वखाईआ। लेखा जाण पुरख समराथ, सर्ब सृष्ट दए समझाईआ। सच सिँघासण बहे आप, आप आपणी कल वरताईआ। जन भगतां बणे माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, निरगुण आपणा जोड़ जुड़ाईआ। साचे दर लडाए लाड, हरि मन्दिर इक वखाईआ। धर्म निशाना देवे गाड, सत्त रंगा आप लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक सिँघासण दए उपजाईआ। इक सिँघासण उपजे मात, श्री भगवान आप उपजाइंदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा आप गवाइंदा। सतिजुग सति कर प्रकाश, धुर धर्म वेख वखाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट नार कमज़ात, कमलापाती आपणे रंग रंगाइंदा। सच सुणाए इक्को गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। अन्तर बाहर गुप्त ज़ाहर देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वखाइंदा। आपणी कल रखे कल, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। करे खेल अछल अछल्ल, वल छल धारी बेपरवाहीआ। सच सिँघासण इक्को मल्ल, निरगुण सरगुण वेखे चाईं चाईंआ। पावे सार जल थल, डूँग्घे सागर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक वखाईआ। साचा मन्दिर सच महल्ला, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। निरगुण बैठा इक इकल्ला, सरगुण राह चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पकड़न पल्ला, पल्लू गंढु बंधाइंदा। लेखा चुकाए राणी अल्ला, मीआं वेस वटाइंदा। राम रहीम मेटे सल्ला, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार खाणी आपे रला,

दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। शब्द संदेस आदि जुगादि जुगा जुगन्तर घल्ला, अक्खर वक्खर लिख लिख आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मन्दिर इक्को इक वड्याइंदा। सो मन्दिर वड्डा होए जग्ग, जिस साहिब आप वड्याईआ। निर्मल दीपक जोत जाए जग, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। भगत भगवान लए सद्द, घर आपणा आप वखाईआ। रल मिल इक्को गाओ छन्द, सोहँ ढोला नाद अलाईआ। कूड़ी क्रिया तजो गंद, सच सुच्च झोली पाईआ। खुशी करे बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। घर वखाए साचा चन्द, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक अनन्द, दुःख दर्द दए गंवाईआ। नाता तोड़ भेख पखण्ड, एका नाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक जणाईआ। साचा मन्दिर उच्च अटारी, ऊँचो ऊँच अख्वाइंदा। निरगुण जोत जगे निरँकारी, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। आदि जुगादी शाह सिक्दारी, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। कलिजुग खेल अगम्म अपारी, बेपरवाह अथाह पड़दा आप चुकाइंदा। लेखा जाण धुर दरबारी, धुर दी कार आप कमाइंदा। निहकलंक नरायण नर अवतारी, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। करे खेल विच संसारी, वड संसारी आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। साचा मन्दिर वडयाए भगवान, भगवन दया कमाईआ। जिस उपर झुल्ले धर्म निशान, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जिस गृह गुर पीर अवतार मिले ज्ञान, नाम वस्त रिहा वरताईआ। जिस गृह इक्को दीपक जगे महान, तेल बाती ना कोए रखाईआ। सो कलिजुग अन्त करे प्रधान, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। भगतन मेला विच जहान, दो जहानां वाली आप कराईआ। चौथे जुग दा इक निशान, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। उपर चढ़ वेखे भगवान, आख़र आपणा कदम टिकाईआ। दस्म दवारी अद्धविचकारी नेत्र नैण शरमाण, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। साचे तख्त बहे नौजवान, हुक्म इक्को इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण आपे चढ़ के, शाह सुल्तान निरगुण सरगुण फड़ के, भाणा इक्को इक मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी जाए कर के, पिछली करनी जगत उलटाईआ।

❇ १३ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरचरण सिँघ दे गृह चाण्क्या पुरी नवीं दिली ❇

शाह पातशाह साहिब मरगिंद, महिबूब तेरी वड्याईआ। दो जहान तेरे नाम वज्जे किंग, किंगरी किंगरी नाद सुणाईआ। राह तक्कण विष्न ब्रह्मा शिव इन्द, करोड़ तेतीस नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साहिब बख्शिंद, भगत

भगवान मेल मिलाईआ। सन्त साजण कहिण गहर गम्भीर गुणी गहिंद, गवरा आपणी खेल कराईआ। गुरमुख कहिण सद मेटे चिन्द, चिन्ता रोग गंवाईआ। गुरसिख कहिण अमृत धार बख्शे बूँद सागर सिन्ध, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। मनमुख कहिण काल दवारे कढ्ढे जिंद, महाकाल भय जणाईआ। श्री भगवान कहे आदि जुगादी मेरी इक्को बिंद, शब्दी सुत वड्याईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल सच दुआर, सच साचा सच कराइंदा। साचा मेल सच निरँकार, सच साचा जोड़ जुड़ाइंदा। साचा नूर जोत उज्यार, सच साचा डगमगाइंदा। साचा मन्दिर खोल्ह किवाड़, सच साचा आसण लाइंदा। साचा नाम सति सतार, सच साचा आप सुणाइंदा। साचा रंग अगम्म अपार, सच साचा आप चढ़ाइंदा। साचा अनन्द विच संसार, हरि साचा सच जणाइंदा। साचा चन्द तेज प्रकाश, सच साचा आप चमकाइंदा। साचा पन्ध सर्ब गुणतास, सच साचा आप चुकाइंदा। साचा बख्शंद सच सिरजणहार, सच साचा दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सच साचा साहिब सुल्तान, साची कार कमाईआ। तख्त निवासी निगहबान, बिन अक्खां वेख वखाईआ। ओम आम खेल महान, हरि ख़ालक वेख वखाईआ। धर्म संदेस सति ज्ञान, सच करे पढ़ाईआ। नाम प्रधान परम निशान, दो जहान झुलाईआ। भगत मकान सन्तन दान गुरमुख अशनान गुरसिख माण, हरि सतिगुर सिर हथ्थ टिकाईआ। नाता जहान बिधाता भगवान, बूँद स्वांता पीण खाण, मेहरवान इक्को एक एक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सच सच रिहा समझाईआ। सच जाण होए सच, सच सच दृढ़ाइंदा। नाता तुटे माटी कच्च, कच्च कंचन रूप वखाइंदा। राम रहीम अन्दर रच, रच रच एका राह वखाइंदा। लख चुरासी कोलों बच, बच बच आपणा मुख छुपाइंदा। जन भगतां मार्ग भगती दस्स, भगवन आपणा भेव खुलाइंदा। निरगुण सरगुण दवारे आए नस्स, नस्स नस्स बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परम पुरख आपणी पूरी करे आस, आसा जन भगतां मेल मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच आप वड्याइंदा। सच सच सर्ब गुण मीत, गुणवन्ता आप जणाईआ। सच सच सदा अतीत, त्रैगुण लेखा रिहा मुकाईआ। सच सच हरि सच प्रीत, प्रीतीवान इक समझाईआ। सच सच हरि साचा गीत, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। सच सच हरि साची नीत, आत्म परमात्म इक्को नज़री आईआ। सच सच मेटे अन्धेरा तारीक, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। सच सच नज़र दरसाए लाशरीक, वाहद इक्को रूप वखाईआ। सच सच निशाना दस्से ठीक, गुरचरण मिले वड्याईआ। सच सच माणस मानुख मानव जन्म जाए जीत, आवण जावण फंद कटाईआ।

सच सच काया करे ठांडी सीत, सीतल धार इक वखाईआ। सच सच सच दृढ़ाए हस्त कीट, ऊँच नीच इक वड्याईआ। सच सच गुरसिख नंगी होण ना देवे पीठ, पुश्त दर पुश्त सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच सच मिठ्ठा करे कौड़ा, रीठ, अमृत मिठ्ठा रस भराईआ। सच सच ख़ाली भरे आप खीस, नाम भण्डारा झोली पाईआ। सच सच लेखा चुकाए दन्द बत्तीस, रसना जिह्वा पन्ध मुकाईआ। सच सच मेल मिलाए हरि जगदीश, जगदीश घर विच नज़री आईआ। सच सच नाम निधान सुणाए इक हदीस, कलमा नबी रसूल जणाईआ। सच सच भगत भगवन्त इक दूजे नूं करन असीस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सच सच लेखा जाणे बीस बीस, बीस बीसा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराईआ। सच सच सच सिँघासण, सच सच सोभा पाइंदा। सच सच पुरख अबिनाशन, सच सच कार कमाइंदा। सच सच दासी दासन, सच सच सेवक सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच सच खेल पृथ्मी आकासन, सच सच आकाश प्रकाश सोभा पाइंदा। सच सच विष्न ब्रह्मा शिव पूरी करे आसन, सच सच आसा तृष्ना सब दी मेट मिटाइंदा। सच सच गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि सच्चा करे भोग बलासन, नार कन्त निरगुण सच सच खेल कराइंदा। सच सच लख चुरासी आत्म ब्रह्म घट घट करे वासन, सच सच पारब्रह्म ब्रह्म साचा वंड वंडाइंदा। सच सच शब्द धुन राग अनाद शाहो शाबाशन, सच सच शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। सच सच भगत भगवान इक दूजे दे वसण पासन, सच सच पासा ज़िमीं असमान रखाइंदा। सच सच प्रेम प्यार प्रीती हास बलासन, सच सच परम पुरख आपणा रंग रंगाइंदा। सच सच हरि सज्जण वखाए साचा घाटन, सच सच तट किनारा नज़री आइंदा। सच सच सिर ओढन देवे पाटन, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। सच सच करे खेल बाज़ीगर नाटन, सच सच स्वांगी आपणा स्वांग रचाइंदा। सच सच जुग चौकड़ी मेटे वाटण, सच सच दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। सच सच खेल करे निरगुण बातन, सच सच ज़ाहर आपणी कल धराइंदा। सच सच जन भगतां बणे पिता मातन, सच सच गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाइंदा। सच सच ग़रीब निमाणयां संग करे बातन, सच सच परम पुरख आपणा खेल कराइंदा। सच सच निरगुण सरगुण बन्ने नातन, सच सच दो जहानां नाता जोड़ जुड़ाइंदा। सच सच कलिजुग मेटे लग्गी आगन, सच सच अग्नी तत्त वेख वखाइंदा। सच सच गुरसिखां कटे जम का फासन, सच सच फाँसी लख चुरासी गल पवाइंदा। सच सच लेखा जाणे मात गर्भ दस दस मासन, सच सच जूनी जून भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सच सच सुहागण रंग, सच सुहागी आप रंगाईआ। सच सच साहिब सरबँग, सच सच सूरबीर दए वड्याईआ। सच सच नाम मृदंग, सच सच परमानंद

दरसाईआ। सच सच जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, सच सच हरिजन दया कमाईआ। सच सच मेट भेख पखण्ड, सच सुच्च करे कुड़माईआ। सच सच नाम निधान इक्को वंड, सच सच सच सति झोली पाईआ। सच सच भाण्डा भरम ढाहे कंध, सच सच निरगुण इक्को नज़री आईआ। सच सच सोहँ ढोला गाए छन्द, सच सच दो जहान करे पढ़ाईआ। सच सच गुरमुखां अन्दर पाए ठंड, सच सच सृष्टी अग्नी रूप वखाईआ। सच सच हरिजन पूरी करे मंग, सच सच शाह सुल्तानां राज राजानां दर दर मंगण डाहीआ। सच सच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चढ़ावणहारा सच चन्द, सच सच करे रुशनाईआ। सच रुशनाई रोशन ज़मीर, रहमत रहमान कमाइंदा। वेखणहार ता आख़र अख़ीर, कायनात खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि दो जहान तलबगीर, तालब तुलबा आलम उल्मा आप पढ़ाइंदा। सदा सदा शाह हकीर, बेनज़ीर नैण खुल्हाइंदा। जुगो जुग ज़ाहरा पीर, बेपरवाह वेस वटाइंदा। वसणहारा चोटी अख़ीर, पर्दानशीं पड़दा आपणा आप उठाइंदा। कटणहारा दो जहान भीड़, भीड़ सब नूं आप वखाइंदा। लोक परलोक पैंडा पांधी चीर, दर दर घर घर दर दरबान अलख जगाइंदा। वेस कर जगत फ़कीर, फ़िकरा आपणा नाम पढ़ाइंदा। सच सुच्च पढ़ तकबीर, तक्कवा इक्को इक जणाइंदा। नजर ना आए बेतस्वीर, तसव्वर आपणा आप ना किसे समझाइंदा। बख़्शणहार सर्ब तकसीर, ताकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कदे ना होए दिलगीर, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुच्च साची कल, कल करता आप रखाइंदा। दिलगीर ना हो हक़ महिबूब, मिहबान वड्डी वड्याईआ। वसणहारा उच्च अरूज, अर्श कुर्श वेख वखाईआ। भेव ना पाए चन्द दूज, एकम रंग ना कोए वखाईआ। पीर पैगम्बर पा ना सके सूझ, समझ रमज़ ना कोए लगाईआ। आपणा भेव रखे गूझ, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुच्च इक्को घर वसाईआ। सच सुच्च अर्श नूरानी, नूर नूराना आप जणाइंदा। हक़ महिबूब लासानी, असलीयत हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। भेव ना पाए कोई विद्वानी, विद्वत रूप ना कोए वड्याइंदा। कलमा कलाम देवणहारा निक्की निक्की निशानी, निशाना आपणा आपणे विच छुपाइंदा। लेखा लिख ना सके कोई कलम कानी, काग़ज़ कलम ना कोए सालाहइंदा। वसणहारा आलमे जावदानी, जहान इक्को इक वखाइंदा। जुग चौकड़ी चढ़ावणहारा इक तुझानी, नाम लहर इक उठाइंदा। सृष्ट सबाई दिसे फानी, फ़तवा सब दे उपर लगाइंदा। मुरीद मुर्शद रखे इक निशानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सच सुच्च कलिजुग अन्तिम करे मेहरवानी, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाइंदा। जन भगतां उत्तों हो आप कुरबानी, करबला माण गवाइंदा। वेले अन्त मेटे परेशानी, पेशतर आपणा मेल

मिलाइंदा। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण धार वखाइंदा। आबे हयात अंमिउँ रस ठंडा पाणी, सति प्याला मुख लगाइंदा। दर दर घर घर सुणाए आपणी अकथ कहाणी, महिमां आपणे रंग वखाइंदा। लेखा चुके अल्ला राणी, रहबर इक्को फेरा पाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत लभ्भदी फिरे सच्चा हाणी, साहिब नज़र किते ना आइंदा। छोटी नढ्ढी बाल अञ्याणी, खुल्ली मींढी राह भवाइंदा। कर खेल खेले ख़लक रुहानी, रूह बुत्त भेव कोए ना पाइंदा। हदूद महिदूद महिबूब लासानी, लाशरीक शिरकत रूप ना कोए वटाइंदा। जानणहार जीव जंत जगत युगत पुराणी, परम पुरख आपणा वेस वटाइंदा। वेखणहारा तसबी मणके गल विच गानी, कुतबख़ाना फोल फुलाइंदा। कातब कोई ना जाणे कहाणी, तीस बत्तीस वंड ना कोए वंडाइंदा। पाक रसूल पाक निशानी, इतफ़ाकन इतफ़ाकीआ राह जणाइंदा। देवणहार नजात चरण कँवल ध्यानी, वफ़ात आपणी झोली पाइंदा। कोई लुगात ना जाणे हरि की कथा कहाणी, अकाथ आलम ना कोए वड्याइंदा। पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा निक्की निक्की बच्चयां वाली बाणी, आपणा बाणा ना किसे समझाइंदा। सच सुच्च इक्को जोत नूरानी, नूर आपणे विच प्रगटाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त गुरमुख गुरसिख जिस दी दस्सदे गए निशानी, सो निशाना कलिजुग अन्त गुरमुखां आप लगाइंदा। झूठ सच दोहां करे मेहरवानी, बिन झूठ सच नज़र किते ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि आपणी कार कमाइंदा।

६०३
१३

❋ १३ फग्गण २०१६ बिक्रमी चन्दा सिँघ राज सिँघ प्रताप नगर दिल्ली ❋

निरगुण शब्द निरगुण जोत, निरगुण निरगुण आप अख्वाईआ। निरगुण मन्दिर दुआर किला कोट, निरगुण निरगुण बैठा आसण लाईआ । निरगुण नाम नगारा वज्जे चोट, निरगुण निरगुण रिहा सुणाईआ। निरगुण निरगुण उत्ते होए मोहत, मुहब्बत इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण करनी आप कमाईआ। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, शहिनशाह निरगुण आप अख्वाइंदा। निरगुण राज निरगुण राजान, भूपत भूप निरगुण आप हो जाइंदा। निरगुण भिखारी निरगुण देवणहारा दान, निरगुण झोली अग्गे डाहइंदा। निरगुण वस्त वस्त महान, निरगुण दस्त बदस्त देवे आण, निरगुण आपणी धारा आप बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। निरगुण दर निरगुण दरवेश, निरगुण निरगुण अलख जगाईआ। निरगुण शाह निरगुण नरेश, नर नरायण निरगुण अख्वाईआ। निरगुण सदा सदा रहे हमेश, निरगुण रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। निरगुण निरगुण करे आदेश, निरगुण निरगुण सीस

झुकाईआ। निरगुण निरगुण लए वेख, निरगुण नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुलाईआ। निरगुण वसे साचे देस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। निरगुण दयाल ठाकर स्वामी, निरवैर पुरख निरगुण अख्वाइंदा। निरगुण आदि जुगादि सदा निहकामी, निरगुण निहचल धाम आसण लाइंदा। निरगुण सदा सदा अन्तरजामी, निरगुण दो जहानां वेख वखाइंदा। निरगुण बोध अगाध अगम्मी बाणी, निरगुण भेव अभेद खुलाइंदा। निरगुण निरगुण खेल महानी, निरगुण ख़ालक आपणी कार कमाइंदा। निरगुण परवरदिगार नूर नूरानी, निरगुण लाशरीक अख्वाइंदा। निरगुण मुकामे हक़ होए प्रधानी, निरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। निरगुण सचखण्ड वखाए आपणी सच निशानी, निरगुण सच निशाना आप झुलाइंदा। निरगुण महिमा गाए अकथ कहाणी, निरगुण भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण दाता पुरख समरथ, निरगुण निराकार अख्वाईआ। निरगुण चलावणहारा राथ, निरगुण खेवट खेट रूप वटाईआ। निरगुण निरगुण रखणहार हाथ, निरगुण बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरगुण पूरी करे आस, निरगुण आसा पूर आप हो जाईआ। निरगुण निरगुण देवे साथ, निरगुण सगला संग निभाईआ। निरगुण देवणहारा दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण साहिब कमलापात, निरगुण नारी कन्त रूप वटाईआ। निरगुण वेखे खेल तमाश, निरगुण मण्डल रास रचाईआ। निरगुण धार बंधाए पृथ्मी आकाश, निरगुण रवि ससि सूरज चन्न करे रुशनाईआ। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव करे दास, निरगुण एका डोरी नाम तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरगुण पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जीवण युगत ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड निवासी करे आपणा कम्म, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण आपणा बेड़ा बन्न, निरगुण आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि मध एका धार चलाइंदा। निरगुण आदि पुरख आप, निरगुण अन्त आप अख्वाईआ। निरगुण मध खेल तमाश, कोटन कोटि जुग आपणा राह जणाईआ। निरगुण खेल वेल जुगादि, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण लेखा जाण गुर अवतार, भगत भगवन्त साध साची साधना इक रखाईआ। निरगुण निरगुण शब्द अगम्म देवणहारा दाद, नाम निधान श्री भगवान इक जणाईआ। निरगुण वेखणहारा वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। निरगुण दाता दीन दयाल, दीना नाथ वेस वटाइंदा। निरगुण सेवा लाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा थिर घर

६०४
१३

आप प्रगटाइंदा। निरगुण हुक्मे अन्दर हुक्म रखाए महाकाल, महिमां आपणी आप समझाइंदा। हुक्म अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कल प्रगटाइंदा।

निरगुण जोत निरगुण प्रकाश, निरगुण अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निरगुण मण्डल निरगुण रास, गोपी काहन नचाईआ। निरगुण पृथ्मी निरगुण आकाश, निरगुण सूरज चन्द रुशनाईआ। निरगुण खेल निरगुण तमाश, खेलणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण मेला निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण नार निरगुण कन्त, सेज सुहञ्जणी निरगुण आप हंढाइंदा। निरगुण जोत निरगुण भगवन्त, निरगुण श्री भगवान नाउँ रखाइंदा। निरगुण पुरख अगम्म महिमां अगणत, निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभव प्रकाश कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दुआर खेल अपार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी वंड आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण वंड सरगुण रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। निरगुण दात निरगुण भिखारी मंगे मंग, सरगुण इक्को घर जणाईआ। तत्तव तत्त इक अनन्द, बन्धन बंधप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ। निरगुण खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। त्रैगुण माया कर पसार, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। मन मति बुध कर श्रृंगार, दर दवारा आप खुल्हाइंदा। आसा तृष्ना भर भण्डार, माया ममता हउमें नाल रलाइंदा। काया मन्दिर कर पसार, डूँग्घी कन्दर आसण लाइंदा। अनहद नाद शब्द धुनकार, अनरागी राग अल्हाइंदा। जोती जोत जोत उज्यार, नूर नूराना डगमगाइंदा। लख चुरासी कर तैयार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता साची रीता आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण संग लाए प्रीता, निरगुण प्रेम प्यार इक सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण इक्को भेव खुल्हाइंदा। निरगुण खोल्हे भेव, अभेद आप हो जाईआ। आदि पुरख सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाईआ। नाम जणाए रसना जिह्व, पवण स्वास समाईआ। अगम्म अथाह अलख अभेव, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। सरगुण नाता पंज तत्त, निरगुण जोत रुशनाईआ। निरगुण देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म पढ़ाईआ। सरगुण निरगुण होए वस, दोए जोड़ सरनाईआ। जगत जीवण चले रथ, रथवाही बेपरवाहीआ। शब्द अनादी वजाए नद, अगम्मी धार वखाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स,

पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। निझर देवे इक्को रस, अमृत झिरना आप झिराईआ । सति सतिवादी साचा राह दस्स, दहि दिशा खोज खुजाईआ। महिमां जणाए अकथना अकथ, कातब लिख लिख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आदि निरगुण जुगादि निरगुण जुग जुग वंड वंडाईआ। जुग जुग सरगुण धार, निरगुण आप चलाइंदा। लख चुरासी कर पसार, घट घट डेरा लाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी कार आप कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो तैयार, ब्रह्म आपणा मेल मिलाइंदा। नाउँ धर गुर अवतार, गुर गुर शब्दी राग अल्हाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह किवाड़, दो जहानां हट्ट चलाइंदा। लेखा जाण सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी रच संसार, खाणी बाणी मेल मिलाइंदा। धुर फ़रमाना देवे निरँकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुरान दए आधार, शब्दी धार वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण कर उज्यार, महासार्थी आपणा रथ चलाइंदा। सच संदेसा वारो वार, जुग चौकड़ी आप सुणाइंदा। सिफ्ती सिफ्त भरे भण्डार, गुर अवतार रसना जिह्वा गाइंदा। पीर पैगम्बर करन गुफ़तार, कलमा नबी रसूल समझाइंदा। भगत भगवान दरस दिखाल, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। सन्त सुहेले रखे नाल, सहिज सुभाउ मेल मिलाइंदा। गुरमुखां अन्तर आत्म कर पछाण, परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरसिखां लग्गी निभे नाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग आप सिखाल, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण पढ़ाए बोध, अगाध वड्डी वड्याईआ। निरवैर निरँकार सार समाल हिरदा सोध, हरि जू आपणा रंग वखाईआ। भाग लगाए काया माटी कोट, शब्द चोट इक जणाईआ। निराली प्रकाश कर जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ । निरवैर खोल्ह सोत, सुरती शब्दी आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग सरगुण देवे पंज तत्त वड्याईआ। सरगुण पंज तत्त वडया, लोकमात दया कमाइंदा। गुर अवतार मार्ग ला, पीर पैगम्बर सिफ्त सलाह जणाइंदा। कोटन कोटि नाम धरा, रसना जिह्वा सर्ब पढ़ाइंदा। आप छुपया रहे बेपरवाह, नेत्र नज़र किते ना आइंदा। चार जुग भविख्त भविख्त भविख्ती गया जणा, भाख्या आपणी आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण गवाह, शहादत इक्को नाम पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच निशाना गए जणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। कलिजुग अन्तिम आवे बेपरवाह, पड़दा आपणा आप उठाइंदा। कलि कल्की जामा पा, निहकलंका डंक वजाइंदा। शब्द अगम्मी चोट लगा, दो जहानां आप उठाइंदा। सम्बल आपणा डेरा ला, चाउ घनेरा इक रखाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी घेरा पा, सत्तां दीपां वंड वंडाइंदा। कूड़ी क्रिया डेरा ढाह,

६०६
१३

साचा मार्ग इक जणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। दो जहानां जणाए इक्को नाँ, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग दे विछड़े लए मिला, पूरब लेखा सर्ब वखाइंदा। दीन मज़्ब ज़ात पात नेत्र नैणां नाल दरसा, शब्द इशारा इक कराइंदा। सरगुण भुलया बेपरवाह, पारब्रह्म नज़र किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ विद्या श्री भगवान गए भुला, भुल्यां मार्ग ना कोए पवाइंदा। अञ्जील कुरान वेद पुराणां झगड़ा प्या थाँ थाँ, खाणी बाणी, वंड ना कोए वंडाइंदा। निरगुण दाता नेत्र नैण वेखे इक ध्यान, पड़दा उहला लाहइंदा। मुकामे हक़ हो रोशना, रोशन ज़मीर इक कराइंदा। तहिकीक करे आप खुदा, खुदी सब दी वेख वखाइंदा। चौदां तबकां पड़दा आप उठा, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। रहबर बण दो जहान, निरवैर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता निरवैर आपणी कार कराइंदा। निरवैर आए पुरख अकाल, अक्ल कला वड्याईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। चारे वरनां हो दयाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश अंग लगाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को घर वसाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, निरगुण आत्म निरगुण परमात्म निरगुण मन निरगुण बुद्धी निरगुण मति लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण अंस सरगुण बंस सरबंसा वेख वखाइंदा। निरगुण मणीआं निरगुण मंत, सरगुण मंत्र आप पढ़ाइंदा। निरगुण नार निरगुण कन्त, सरगुण काया चोली सेज हंढाइंदा। निरगुण महिमा निरगुण अगणत, सरगुण रसना जिह्वा गाइंदा। निरगुण गढ़ सरगुण हउमें हंगत, माया ममता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण आप उठाइंदा। निरगुण पारब्रह्म, ब्रह्म निरगुण आप जगाईआ। निरगुण करे साचा कर्म, निहकर्मी वड वड्याईआ। निरगुण आदि जुगादी इक्को धर्म, वरन गोत ना कोए रखाईआ। निरगुण निरवैर इक्को रखे सरन, शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर ना कोए जणाईआ। निरगुण निरवैर इक्को जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाईआ। निरगुण घट घट अन्दर रखे वास, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी इक्को नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। निरगुण नर निरगुण नार, निरगुण पूत सपूत बणाइंदा। निरगुण भूशण निरगुण श्रृंगार, निरगुण वेस अनेक वटाइंदा। निरगुण नाद शब्द धुनकार, निरगुण लिख लिख लेख जगत जणाइंदा। निरगुण शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर उज्यार, निरगुण खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। निरगुण सब दा लेखा करे आर पार, बेपरवाह आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त

शब्द शब्दी इक्को मंत, मंत्र इक्को इक जणाइंदा। निरगुण मंत आदि सो, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। निरगुण हँ ब्रह्म हो, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। दोहां विचोला भेव ना जाणे को नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा बीज आपे बो, पत्त डाली आप महकाईआ। अन्तिम मालण बण के आपे लए खोह, कली कली लख चुरासी आप तुड़ाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले भगत भगवान साची लड़ी लए परो, नाम तन्द हथ्थ उठाईआ। साचा नाम दृढ़ाए सोहँ सो, आदि अन्त मध आपणी धार जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे हो, ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म निरगुण याद, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण सुण फरयाद, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। मेल मिलावा माधव माध, मोहण मोहणी आपणा रंग वखाइंदा। देवणहारा धुरदरगाही दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रखणहारा साच लाज, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। वक्त सुहञ्जणा करे काज, आदि निरँजण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण वंड खेल ब्रह्मण्ड, हरि शब्द अगम्मी साचा छन्द, दो जहानां आप अलाइंदा। दो जहानां निरगुण धार, हरि शब्द शब्द जणाईआ। सतिजुग सति सति वरतार, सति सतिवादी आप वरताईआ। सति सति दए आधार, ब्रह्म मति इक जणाईआ । रत्ती रत्त कर ख्वार, चोली अगम्मड़े रंग रंगाईआ। गढ़ झूठ हँकार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच सच कर प्यार, सुरती शब्द दए मिलाईआ। गुरमुख हरिजन दए उधार, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। साचे सन्तन खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। भगतन मेला धुर दरबार, धुर दरबारा इक वखाईआ। साचे मन्दिर दए बहाल, चौथे पद मिले वड्याईआ। चौथे पद आप संभाल, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। थिर घर वखा सच्ची धर्मसाल, शब्द शब्दी विच समाईआ। जोती जोत कर प्यार, थिर घर पन्ध आप मुकाईआ। सचखण्ड देवे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। निरगुण निरगुण लै के जाए नाल, गुरमुख आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण रूप पुरख अबिनाशी जन भगतां रखे उत्तम ज़ात, आत्म जोड़े साचा नात, जोती जोत मिलाईआ। निरगुण मेला निरगुण जोत, जोती जोत मिलाइंदा। निरगुण गुरू निरगुण चेला निरगुण वसे साचे कोट, मन्दिर साचा सोभा पाइंदा। निरगुण खेल पिता पूत, सपूत आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्को काहन, वेखणहारा दो जहान, वसणहारा सच मकान, सचखण्ड निवास पुरख अबिनाशी अलख अगोचर अगम्म अथाह दाता दानी बेपरवाह, जन भगतां बणे आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। निरगुण

बेड़ा चुके कंध, कंध आपणे भार उठाईआ। संग सुहेला हरि बख्शंद, बख्शश आप कराईआ। दो जहानां मेट पन्ध, पांधी आपणा चरण उठाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला इक जणाईआ। आत्म परमात्म इक अनन्द, निज आत्म करे रसाईआ। सच दरवाज़ा जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। सचखण्ड दा सिँघासण सोहे पलँघ, पावा चूल ना कोए वड्याईआ। शब्द राग ना कोई मृदंग, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। निरगुण रूप सदा सरबँग, परम पुरख बैठा आसण लाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा रखण संग, विछोड़ा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण विछोड़ा निरगुण मेला निरगुण सरगुण आपणे घर मिलाईआ।

❇ १३ फग्गण २०१६ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह दिली ❇

कलिजुग अन्तिम अन्धेरा, नौ खण्ड पृथ्मी रही कुरलाईआ। कूड़ी क्रिया पाया घेरा, माया ममता हउमें हंगता करे लड़ाईआ। राज राजान शाह सुल्तान कहिण मेरा मेरा, तेरा नज़र किसे ना आईआ। जीवां जंतां अन्दर साधा सन्तां लाया डेरा, पंज तत्त जगत आसण रहे बंधाईआ। अन्तर आत्म चुके किसे ना झेड़ा, झगड़ा झंझट ना कोई मुकाईआ। सच ना दिसे साडे तिन्न हथ्थ खेड़ा, साची खिड़की ना कोई खुल्हाईआ। मन मनुआ ना करे हेरा फेरा, कटाकश तीर ना कोई लगाईआ। परमात्म नज़र ना आए नेरन नेरा, दूर दुराडा रहे जस गाईआ। सच महल्ल ना दिसे खुल्हा वेहड़ा, घर जोत ना कोई रुशनाईआ। आपणा बंध ना सकण बेड़ा, भार दूजिआं रहे उठाईआ। जिस प्रभ मिल्या शहिनशाह इक्को वेरा, शाह पातशाह आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन मुकाए तूं सतिगुर मेरा मैं तेरा, तेरा तुध बिन नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साध सन्त जीव जंत वेखे थाउँ थाईंआ। साध सन्त मानण रंग, रंग रलीआं जगत वखाइंदा। अन्तिम मिले ना किसे अनन्द, सच रस ना कोई चुआइंदा। आत्म सेज चढ़या ना कोई पलँघ, जगत कुड़यारी सेज सर्ब हंढाइंदा। बत्ती दन्द गाउँदे छन्द, बोध अगाध भेव ना कोए खुल्हाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण बख्शंद, बख्शणहार नज़र किसे ना आइंदा। निरँकार बोलण जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया खाइण गंद, सच सुच्च अमृत रस घर मन्दिर ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम कलिजुग खेल कलिजुग हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग सन्त रहे कुरला, उच्ची कूक कूक देण दुहाईआ। निरगुण मिले ना सरगुण आ, सार शब्द ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ पड़दा ना दए उठा,

ताकी बंद ना कोए खुल्हाईआ। सति सतिवादी सति शब्द अनरागी राग ना दए कोई सुणा, जगत रागी रसना जिह्वा रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी कल तेरे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्त कल वधाई, चार कुण्ट वेख वखाइंदा। रैण अन्धेरी इक्को छाई, छहबर कूड़ी क्रिया लाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ साध सन्त धीआं भैणां रहे तक्क, सति धर्म सन्तोख ना कोए रखाइंदा। नाम निधान श्री भगवान अगम्म अथाह बेपरवाह महिमा सुणाए ना कोई अकथ, जगत कहाणी जगत सुणाइंदा। वस्त्र पहन तन सुहाइण पट, सच पटोला नाम ओढण ना कोए रखाइंदा। आपणी करनी खोल्ह हट्ट, जगत वणजारा जगत वस्त वखाइंदा। किसे नज़र ना आए पुरख समरथ, समरथ हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग कूड़ा बन्धन पाइंदा। कलिजुग सन्त करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी नज़र ना आए काया अन्दर मन्दिर दुआर, नौ दर पार ना कोए कराईआ। आसा तृष्ना माया ममता हउमें हंगता तन माटी पहन करन शृंगार, साचा वस्त्र तन ना कोए सुहाईआ। अठ्ठे पहर काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण अस्वार, शाह अस्वार नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई दस्सण जगत विहार, विवहारी आपणी कार ना कोए कमाईआ। जोग अभ्यास हठ तप जप सति करन बाहर मुखी कार, अन्तर सुखी आत्म रंग ना कोए रंगाईआ। शानो शौकत जगत उज्यार, दुआर मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। नज़र ना आए निरगुण सुन्दर बेनज़ीर शाह हकीर शहिनशाह सुल्तान अन्दर गिरहबान, गृह अन्दर पड़दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग सन्त माया पाए आप बेअन्त, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग माया हो बलवान, चार कुण्ट लए अंगड़ाईआ। पंज तत्त वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र नैण उठाईआ। कलिजुग सिख्या कूड़ी क्रिया करे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर इक्को घर वखाईआ। गुर का शब्द भुल्ले बण अञ्याण, आप आपणा मार्ग लाईआ। सतिगुर शब्द इक ब्यान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देवे सच सालाहीआ। आत्म अन्तर करे ना कोए परवान, सिफ्त सालाही सिफ्त रहे गाईआ। जगत लेखा जगत विधान, विद्वत विद्या चौदां चौदां इक्को गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग देवणहारा वर, सन्त जगत सन्त बणाईआ। जगत सन्त कोटन कोटि, घर घर डेरा लाईआ। हरि का सन्त निर्मल जोत, निराकार विच समाईआ। शब्द अगम्म लगाए चोट, सच नगारा इक वजाईआ। साचा सन्त सति सतिवादी कढे कूड़ा खोट, क्रिया कर्म दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सब दी विथ्या दए जणाईआ। कलिजुग सन्त कलिजुग नाता, कलकाती रूप वटाईआ।

नज़र ना आए पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। गा गा थक्के रसना गाथा, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त सब दा लहिणा देणा बाका, बाकी सब दी फोल फुलाईआ। अन्तिम मेटे कूड़ा ख़ाका, ख़ाकी ख़ाक धूढ़ उडाईआ। श्री भगवान मेहरवान सर्ब जीआं दा इक्को साका, सगला संग निभाईआ। चार जुग पूरा करे लिख्या भविख्त वाक्, वातावरन आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट होए महाबली पुरख समराथा, नर नरायण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया कूड़ी रंगण जगत युगत करी कुड़माईआ। अन्तर आत्म सच्चा दरस, बिन अक्खां आप कराईआ। अन्तर आत्म अमृत बरस, निझर झिरना इक झिराईआ। अन्तर आत्म मेट हरस, हवस दए गंवाईआ। अन्तर आत्म कर तरस, निरगुण निरगुण पड़दा लाहीआ। अन्तर आत्म लाहे कर्ज, पिछला लहिणा झोली पाईआ। अन्तर आत्म सतिगुर पूरा करे फ़र्ज़, बण फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। अन्तर आत्म गुर गुरसिख होण ना देवे हर्ज, हर्जाना आपणी झोली पाईआ। अन्तर आत्म साचा राग अनहद नाद सुणाए तर्ज़, तलवाड़ा इक्को इक वजाईआ। अन्तर आत्म शब्द अगम्म सुणाए ग़र्ज़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। अन्तर आत्म जगत विकारा देवे वर्ज, भय भउ इक्को घर वखाईआ। अन्तर आत्म सुरत सवाणी सुण अर्ज़, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। अन्तर आत्म परमात्म वेख होए असचरज, महिमा अकथ कथ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस इक्को घर जणाईआ। अन्तर आत्म दर्शन नेत, नेरन नेर कराइंदा। अन्तर आत्म इक्को हेत, हितकारी आप जणाइंदा। अन्तर आत्म रुत्त बसन्ती चेत, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। अन्तर आत्म निज नेत्र गुरमुख लए वेख, जगत लोचण बंद कराइंदा। अन्तर आत्म सद रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस आप जणाइंदा। साचा दरस आत्म जोत, परमात्म मेल मिलाईआ। नाता तुट्टे वरन गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। अगली पिछली रहे ना होश, मदहोश फिरी दुहाईआ। कर दरस होए ख़ामोश, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। दोषी बणे दर निर्दोष, हाण ना लागे राईआ। सतिगुर पूरा हरि सज्जण लए खोज, खोज आपणी दए जणाईआ। सच दुआरे जाए पहुंच, बेपरवाह फेरा पाईआ। देवे दरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दीदार इक जणाईआ। आत्म अन्तर दरस दीदार, दीदन दीद कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दस्स गुफ़तार, गुफ़त शुनीद जणाइंदा। साचे मन्दिर खेल अपार, घर घर विच सोभा पाइंदा। डंका वज्जे अगम्म अपार, ढोलक छैणा ना कोए रखाइंदा। निर्मल दीआ बाती कर उज्यार, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। कमलापाती मीत मुरार, मित्र प्यारा नजरी आइंदा। आत्म सेजा कर पसार, सच विहारी खेल कराइंदा। दर्शन देवे आपणी

६११
१३

धार, धार धार विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस इक्को घर जणाइंदा। दरस होवे साचे घर, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म मिले वर, वर इक्को नज़री आईआ। दो जहान चुक्के डर, लोक परलोक भय ना कोए रखाईआ। सन्त सतिगुर पल्लू फड़, गुरमुख गुर गुर अंग लगाईआ। सच महल्ले जाण चढ़, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। दरस करन अग्गे खड़, खटका कोए रहिण ना पाईआ। साचा ढोला लैण पढ़, तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस इक्को दर वखाईआ। होवे दरस दर सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाइंदा। मिले प्रकाश आदि निरँजणा, जोत निरँजण मेल मिलाइंदा। होए सहाई दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराइंदा। नेत्र नाम पाए अंजना, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। चरण धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल धवाइंदा। अन्त पड़दा कज्जणा, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। सच दुआरे बहि के सजदा, धर्म दुआरा इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरस जिस जन बिन अक्खां आप जणाइंदा। साचा दरस कराए बिन जगत अक्ख, नेत्र दोए नज़र ना आईआ। निरगुण घर निरगुण हो प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा लए जगाईआ। साचा मार्ग सच दस्स, सति करे पढ़ाईआ। अन्तर देवे इक्को रस, रस रसीआ हरि चुआईआ। सच दुआरे होए वस, वस्तू आपणी हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, दरस इक्को मन्दिर दए वखाईआ। साचा दरस सोहँ हँसा, काग हँस बणाइंदा। भगत भगवान साचा बंसा, जुग जुग खेल कराइंदा। सन्त सतिगुर मेला नार कन्ता, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। गुरमुख गुर गुर लाए अंगता, अंगीकार आप हो जाइंदा। गुरसिख गुर चोली रंगदा, रंग मजीठी इक चढ़ाइंदा। साहिब सतिगुर बण दयाल, ठाकर स्वामी आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां दरस मंगदा, दरस भगतां आपणा आप कराइंदा। अन्दर बाहर सच दुआर आपे लँघदा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण हो के सरगुण नाल हंढुदा, आप आपणी कार कमाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्द दा, चौदस चन्द आप चमकाइंदा। पैंडा जाणे दो जहान दा, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दरस, तिस नाता तोड़े अर्श फ़र्श, काया कुरा इक्को वार पार कराइंदा। काया काअबा वेखे मुकाब, बेपरवाह बेपरवाहीआ। दीद दरस करे आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। शाहो भूप शहिनशाह नवाब, लाशरीक इक खुदाईआ। वसणहारा सच महिराब, महिबूब बेपरवाहीआ। दे दरस मुरीद मुर्शद करे लाजवाब, स्वाल जवाब कोए रहिण ना पाईआ। सन्त सतिगुर देवणहार ख़िताब, पिछली ख़ता सब दी दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

६१२
१३

आपणी किरपा कर, साचा दरस कर तरस, जन भगतां झोली पाईआ। पाओ दरस पए ठंड, त्रैगुण अग्नी रहिण ना पाईआ। पंज तत्त वंडे वंड, पंज विकार दए खपाईआ। तिन्न पंज ना होए रंड, कन्त सुहाग मिले चाईं चाईंआ। नाता तोड़े कोट ब्रह्मण्ड, साचा अनन्द इक दरसाईआ। सच प्रकाश निर्मल चढ़े चन्द, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा दरस रहे मंग, भगतां बिन भगवान कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सुणाए आपणा छन्द, संसा रोग दए चुकाईआ। दरस कर होए निहाल, निज नेत्र नैण निहालया। घर गोबिन्द मिले गोपाल, साहिब सतिगुर दीन दयालया। सदा सदा करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिका ल्या। गुरमुख उठाए अञ्याणे बाल, बालक आपणी गोद सुहा ल्या। वखावणहारा सच सच्ची धर्मसाल, चरण दुआर राह जणा ल्या। नाता तोड़ काल महाकाल, पुरख बिधाता मेल मिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा दरस दए वखाल, तिस लेखा चुके दो जहानयां।

❋ १३ फग्गण २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह करोल बाग़ दिल्ली ❋

६१३
१३

मेहर करे प्रभ दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। गुरमुख वेखे सच्चे लाल, बेपरवाह होए सहाईआ। अन्तर आत्म चले नाल, सुरती शब्दी संग निभाईआ। एथे ओथे करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण युगत इक जणाईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त दए वड्याईआ। अमृत सरोवर दए उछाल, निझर झिरना इक झिराईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। लहिणा देणा चुक्के काल महाकाल, महाबली आपणे चरण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी मेहर नज़र टिकाईआ। मेहर नज़र करे मेहरवान, लख चुरासी वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म देवे दान, जीव जंत खोज खुजाइंदा। सति वखाए इक निशान, धर्म निशाना इक झुलाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे इक ज्ञान, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। अनरागी राग सुणाए धुन्कान, अनहद नाद आप वजाइंदा। अमृत आत्म सरोवर देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। जिस जन उपर मेहर करे श्री भगवान, तिस आपणी सिफ्त सुणाइंदा। नाम अमोलक देवे दान, गुर ज्ञान झोली पाइंदा। लेखा तोड़ जगत जहान, नाता आपणे नाल बंधाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची देवे माण, दर सुहञ्जणा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेहर नज़र कर किरपा आप तकाइंदा। मेहर

नज़र पाए पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा दए मुकाईआ। जगत विकारा नाम डोरी पाए नथ्थ, मन वासना बंध वखाईआ। नज़री आए घट घट, घर बैठा आसण लाईआ। निर्मल कर जोत प्रकाश, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। मेहरवान पुरख अबिनाश, जोती जाता इक रघुराईआ। भगत भगवन्त होए दास, बण दासी सेव कमाईआ। पूरब कर्म माणस जन्म पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर अक्ख इक्को इक खुल्हाईआ। मेहर करे मेहरवान प्रभ दाता, दीन दयाल हरि अख्वाइंदा। उत्तम करे गुरमुख ज़ाता, ज़ात अजाति मेट मिटाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथा, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा भेव खुल्हाइंदा। सदा सदा सद देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। मेटणहारा पिछला घाटा, अग्गे झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक तकाइंदा। मेहर नज़र करे बेनज़ीर, नज़र नज़र नाल मिलाइंदा। बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। मेटणहार कूड़ी ज़मीर, सच खण्डा नाम चमकाइंदा। मेटणहार सरगुण भीड़, निरगुण आपणा राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी रहमत झोली पाइंदा।

❈ १३ फग्गण २०१६ रतन सिंघ दे नवित्त दिली दरबार पहाड़ गंज ❈

जगत सिंघासण पावा चार, चौखट रूप वखाईआ। भगत सिंघासण खेल अपार, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। कलिजुग सिंघासण पए भार, बलहीण दए दुहाईआ। भगत सिंघासण करे प्यार, घर खुशी इक वखाईआ। जगत सिंघासण जाए हार, आपणा माण गंवाईआ। भगत सिंघासण होए उज्यार, दो जहान वज्जे वधाईआ। जगत सिंघासण जगत ख्वार, जगत कूक कूक सुणाईआ। भगत सिंघासण सुहाए आप निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा रिहा जणाईआ। जगत सिंघासण रिहा चीक, रो रो नैणां नीर वहाइंदा। भगत सिंघासण रिहा उडीक, प्रभ चरण ध्यान लगाइंदा। जगत सिंघासण जगत शरीक, शिरकत घर घर आप बणाइंदा। भगत सिंघासण मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। जगत सिंघासण धोखा देवे हस्त कीट, ग़रीब निमाणयां धक्का लाइंदा। भगत सिंघासण सच कराए प्रीत, निमाण निमाणयां आप उठाइंदा। जगत सिंघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे खेल आप लगाइंदा। जगत सिंघासण नेत्र रोवे, नैणां छहबर लाईआ। भगत सिंघासण दुरमति मैल

धोवे, बण सेवक सेव कमाईआ। जगत सिँघासण सीस वाल खोहवे, खुली मींढी रिहा वखाईआ। भगत सिँघासण लै के आए साचा ढोए, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। जगत सिँघासण अन्तिम मोए, जीवण नज़र कोए ना आईआ। भगत सिँघासण लेखा जाणे जहान दोए, निरगुण सरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। जगत सिँघासण गया थक्क, आपणा बल गंवाईआ। भगत सिँघासण राह रिहा तक्क, जगत ध्यान लगाईआ। जगत सिँघासण गया अक्क, कूड़े राजे बैठे आसण लाईआ। भगत सिँघासण रिहा नठ्ठ, कवण वेला प्रभ मेरे उत्ते चरण टिकाईआ। जगत सिँघासण उलटी होई मति, साची सिख्या ना कोए दृढ़ाईआ। भगत सिँघासण चरण कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत सिँघासण ख़ाली वखाए हथ्थ, भण्डार नज़र कोए ना आईआ। भगत सिँघासण सेवा करे पुरख समरथ, बण चाकर सेव कमाईआ । जगत सिँघासण तुटा हठ, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। भगत सिँघासण हो प्रगट, पारब्रह्म वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्को इक जणाईआ। जगत सिँघासण मारे धाह, संगी नज़र कोए ना आइंदा। भगत सिँघासण बण मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। जगत सिँघासण करे ना, मैथों भार झल्लया ना जाइंदा। भगत सिँघासण करे हां, निउँ निउँ खुशी नाल सीस झुकाइंदा । जगत सिँघासण भुल्ले आपणा थाँ, थान थनंतर नज़र कोए ना आइंदा। भगत सिँघासण पकड़े बांह, फड़ बांहों आप उठाइंदा। जगत सिँघासण बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाइंदा। भगत सिँघासण कहे पारब्रह्म आया सब दा पिता माँ, मेरे उपर आसण लाइंदा। भगत जन वेखो नेत्र नैण करो चा, चाउ घनेरा इक रखाइंदा। भुल्लयां भटकयां पावे राह, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जग उजड़यां दए वसा, सच दुआरे आप बहाइंदा। गुरमुख मुकरयां लए मना, मोह मुहब्बत आपणे नाल बंधाइंदा। साचा दर दए खुल्हा, खुल्ल्हा वेहड़ा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सिँघासण इक वड्याइंदा। भगत सिँघासण उच्चा वड्डा, हरि वड्डा आप वड्याईआ। जगत सिँघासण जावे नस्सा, थाँ नज़र कोए ना आईआ। भगत सिँघासण भगत दुआरे देवे सद्दा, जन भगतां रिहा जगाईआ। जगत सिँघासण जाए भज्जा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। भगत सिँघासण घर घर देवे सद्दा, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। जगत सिँघासण टप्पदा जाए आपणी हद्दा, दूर दुराडा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। भगत सिँघासण करे अरदास, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। कर किरपा शहिनशाह शाबाश, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। नित नित रखदा रहां तेरी आस, जुग जुग ध्यान लगाईआ। कवण वेला करे जोत प्रकाश, जोती जाता बेपरवाहीआ। मेरी पूरी करे

६१५
१३

पूरब आस, मेहरवान हो सहाईआ। मेरी तृष्ना होए तृप्तास, भुक्ख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल इक टिकाईआ। भगत सिँघासण मंगे चरण धूढ़, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। साहिब सतिगुर आसा पूर, मनसा मन ही माहे खपाया। जुग चौकड़ी वसदा रिहों दूर, कलिजुग अन्तिम नेड़े आया। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त तेरी शहिनशाहया। मैं तेरा हुक्म मन्नां ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराया। कर किरपा बख्श नूर, नूर नूराना नूर दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाया। चरण कँवल रख भगवान, मैं इक्को ओट तकाईआ। उपर बैठ हो निगाहबान, जन भगतां दे वड्याईआ। मैं वेखां तेरा खेल महान, ख़ालक तेरी की चतुराईआ। हुक्म दे बण हुक्मरान, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। दो जहानां दे ज्ञान, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैं वेखां तेरे मिहमान, दर बैठण सीस झुकाईआ। मैं तेरा संदेसा देवां घर घर बण अञ्याण, बाली बाला वड सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल उपर धर, मेरी पूरी आस कराईआ। चरण रख प्रभ मेरे सीस, तेरे चरणां सीस निवाया। तूं साहिब सच्चा जगदीश, जगदीश्र तेरा अन्त किसे ना आया। तेरे छत्र झुल्ले सीस, दो जहान तेरे हुक्मे अन्दर हुक्म मनाया। तेरी कोई ना करे रीस, सानी नज़र कोए ना आया। तेरी इक्को इक हदीस, साचा कलमा लएं पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाया। आपणा चरण रख कंधे, दोए चरण ध्यान लगाया। भगत भगवान तेरे बंदे, बैठे तेरा राह तकाया। लख चुरासी जीव अन्धे, तेरा नूर नज़र ना आया। कूड़ी क्रिया लग्गे धंदे, धन्दा जगत ना किसे मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाया। आपणा चरण रख मेरी पिठ, मैं बैठा माण गंवाईआ। तेरा खेल सदा अनडिठ, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं हारया तूं गया जित, तेरी जित मेरी वड्याईआ। मैं साची सिख्या लवां सिख, सिखां इक्को नाम पढ़ाईआ। सेवा करन दा रखां हित, नित नवित्त सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल मेरे उपर टिकाईआ। चरण कँवल रख मेरे पट्ट, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। मैं तेरा वेखां खेल समरथ, निरगुण धार चलाईआ। किस बिध लहिणा देणा चुकाए चौदां हट्ट, चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रगट, प्रतख आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवान लए रख, भगवन आपणी दया कमाईआ। सच्चा मार्ग इक्को दस्स, साची सिख्या सिख समझाईआ। आत्म परमात्म होए वस, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे उपर आसण लाईआ। ला आसण मेरे प्रभ, परम पुरख तेरी वड्याईआ। आपणे चरण नाल मैनूं दब्ब,

६१६
१३

मेरा दुखड़ा रहे ना राईआ। मेरा नैण खुल्हा झब्ब, नित तेरा दर्शन पाईआ। तेरे चरणी बहिवां फब, मुख वेखां चाईं चाईंआ। दर्शन करां रज्ज, जुग चौकड़ी आपणी भुक्ख मिटाईआ। मेरा पड़दा सतिगुर कज्ज, उपर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पत मात रखाईआ। तेरे उत्ते चढ़ांगा। सज्जा चरण पहलों धरांगा। भगत भगवान बण के फड़ांगा। शाह सुल्तान बण के लड़ांगा। राज राजान बण के अड़ांगा। मूर्ख मुग्ध अञ्याण बण के चढ़ांगा। चतुर सुघड़ सुजान बण के सच्चा ढोला पढ़ांगा। गहर गम्भीर गुण निधान बण के हुक्म हाकम करांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपे करांगा। तेरे उपर आसण लग्गेगा। पुरख अकाल दीपक जगेगा। भगत भगवान प्रेम अन्दर मघेगा। लख चुरासी जीव जंत अग्नी तत्त दगेगा। परम पुरख सुल्तान मेहरवान सेवादार गज्जेगा। शब्द धुर निशान सज्जे हथ्थ विच सजेगा। चौथी मंज़ल चढ़ निगहबान, ग़रीब निमाणयां पड़दे कजेगा। कर ख़ालक खेल महान, आपणी करनी कर कर कदे ना रज्जेगा। गुरमुखां दे दान, सदा संग रखेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरण कँवल कँवल चरण मेरा पड़दा ढकेगा। प्रभ तेरे चरण दी इक आस, आसा सर्ब तजाईआ। तेरे मिलण दी इक प्यास, प्यास रिहा वधाईआ। तेरे दरस दी इक ख़ाहिश, ख्वाहिश रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मेला लए मिलाईआ। मेल मिलावांगा। निरगुण हो के आवांगा। भगत दुआर सुहावांगा। ढाडी हो के गावांगा। रागी हो के अलावांगा। बाग़ी हो के सब नूं ढावांगा। स्वांगी हो के जगत भुलावांगा। विस्मादी हो के गुरमुखां अन्दर डेरा लावांगा। ब्रह्मादी हो के ब्रह्म ज्ञान जणावांगा। धुर दी वादी पिछली मेट मिटावांगा। बण के गाडी नवां राह चलावांगा। सृष्ट सबाई थक्की मांदी, राए धर्म दे हथ्थ फड़ावांगा। गुरसिक्खी सच्ची आउँदी जांदी, यद्द आपणी फेर प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण तेरे उत्ते आपणा आसण लावांगा। तेरे उपर आसण लाएगा। मेहरवान दया कमाएगा। चरण कँवल उपर टिकाएगा। धरत धवल सर्ब हिलाएगा। ज़िमीं असमान सर्ब कुरलाएगा। जंगल जूह उजाड़ बियाबान धीरज धीर ना कोए धराएगा। समुंद सागर हाहाकार, नेत्र नैणां नीर वहाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ सीस झुकाएगा। भगत भगवन्त कर निमस्कार, सजदा इक्को इक जणाएगा। कुदरत वेखे कायनात, कादर कलमा नबी इक पढ़ाएगा। पिछला सब दा जाए एतबार, मुजरम सब नूं आप वखाएगा। सृष्टी भुल्ली भुल्ले जीव गंवार, गुरू पीर अवतार पैगम्बर अग्गे हो ना कोए छुडाएगा। वेखो पैंदी मार, मारनहार हुक्म चलाएगा। सृष्ट सबाई सुट्टे डूँघी गार, फड़ के बाहर ना कोए कढ्ढाएगा।

अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे नज़र ना आए कोई यार, चौथी यारी चौथे जुग मेट मिटाएगा। नार कन्त ना करे प्यार, पुत्तर धी गोद ना कोए सुहाएगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाल, अंग लगाएगा। इक्को घर सुहाए आप आपणे लाल, दूसरयां मुख ना कदे दरसाएगा। आप फिरे बण कंगाल, भगतां उच्चे तख्त बहाएगा। जलवा नूरी दे जलाल, जोबन आपणे रंग रंगाएगा। प्रगट हो दीन दयाल, दीनन आपणी गोद बहाएगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा हल्ल करे आप स्वाल, फिकरा अग्गे हो समझाएगा। वेखो आउँदा ज़िवाल, ज़ेर ज़बर मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपणा आसण लाएगा। सिँघासण कहे प्रभ मेरे उत्ते सज, तेरा ध्यान लगाया। वेखीं धोखा दे ना जाईं भज्ज, वेला वक्त दे सुहाया। शेर हो के शब्द गज्ज, क्यों बैठा मुख छुपाया। पीर पैगम्बर गुर अवतार सारे कहिन्दे साडी मुक्की हद्द, अग्गे राह ना कोए वखाया। मेहरवान हो के पड़दा कज्ज, दोशाला आपणे हथ्थ उठाया। तेरी किरपा बिन कोए ना सके बच, कलिजुग बाज़ी रिहा उलटाया। दीन दयाल तेरे अग्गे बोलया सच, सच्चा गुरमुख बिन तेरी किरपा नज़र कोए ना आया। जिध्धर वेखां भाण्डे कच्च, दर दर घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। जो तेरे अन्दर गया रच, तूं आपणी छाती लगाया। तेरा खेल पुरख समरथ, नज़र किसे ना आया। श्री भगवान हो के डट, डंका आपणा नाम वजाया। की होया पंज तत्त काया गंवार जट्ट, अन्दर समरथ पुरख बैठा आसण लाया। इक्को खोल्ह भगत हट्ट, बिन भगती सब दी झोली दए भराया। रातीं सुत्तयां दे दे मति, दिने उठदयां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सिँघासण भगत आपणी झोली रिहा डाहया। भगत सिँघासण उठ वेख मार ध्यान, प्रभ की की खेल रचाइंदा। सारे मंगण दर ते दान, नेत्र अक्ख ना कोए उठाइंदा। पुरख अबिनाशी बड़ा शैतान, शरअ सबद दी अगली शब्द फड़ाइंदा। किसे हथ्थ अञ्जील किसे हथ्थ बाईबल शास्त्र सिमरत वेद पुराण किसे पढ़ा गीता ज्ञान, त्रिलोकी नाथ वंड वंडाइंदा। किसे मार बाणी नाम बाण, अणयाला तीर चलाइंदा। आप बैठा हो बेपछाण, बेख़बर ख़बर आपणी आप समझाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग देंदा रिहा दान, सरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्त प्रगट होया आण, प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। साचे तख्त बहे नौजवान, तख्ता सर्ब उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत तख्त दए गंवा, भगत सिँघासण दए बिठा, आसण अबिनाशन आप लगाइंदा। सत्त नाल लग्गे वीह, बीस बीस ध्यान लगाईआ। सिँघासण कहे प्रभ मैं तेरे चरण लग्ग जावां जी, जीवण मेरी झोली पाईआ। जन भगतां घर खुशी वखावीं तीं, तृञण इक्को वार लगाईआ। सृष्ट सबाई पुट्ट दे नींह,

६१८
१३

जड़ रहिण किसे ना पाईआ। वख वख करदे बक्करी शींह, शेर आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां उपर थीं, थापड़ थापड़ गोद सलाईआ। मनमुख दोंह हथ्थां दे धरींह, शौह दरयाए आप रुढ़ाईआ। अग्गे बीज सच्चा बी, फुलवाड़ी भगत इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त वीह सति सतिवाद दूआ निरगुण सरगुण दाद सिफ़रा मेटे सर्ब स्वाद, सिफ़र सिफ़र सिफ़र सर्ब लोकाईआ।

❇ १४ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी ❇

दो जहान रहे तका, निरगुण ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नैण रहे उठा, नूर नूर वेखे रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान रहे लगा, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। करोड़ तेतीसा फूल रहे बरखा, सेवक सेवा सच कमाईआ। चौदां लोक शुकर रहे मना, शहिनशाह इक्को ओट तकाईआ। चौदां तबक कहिण बेपरवाह इक खुदा, बेनज़ीर वड्डी वड्याईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां लेखा रिहा चुका, वड दाता दानी दया कमाईआ। लोकमात प्रगट होया आ, जोती जाता वेस वटा, शब्द अगम्म डंक वजाईआ। सृष्ट सबाई रिहा जणा, वेखणहारा थाउँ थाँ, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ।
६१६
१३
सचखण्ड निवासी सच दुआर कर रोशना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाया। प्रगट होया बेपरवाह, पड़दा आपणा रिहा चुकाया। जन भगतां देवे सच सलाह, मंत्र इक्को नाम दृढ़ाया। वेखणहारा जल अस्गाह, टिल्ले पर्बत फोल फुलाया। पांधी बण दो जहान, निरगुण सरगुण पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह अक्ख, लोकमात ध्यान लगाईआ। योद्धा सूरबीर महाबली होया आप प्रतख, निरगुण दाता पुरख बिधाता नूर कर रुशनाईआ। महिमा जणाए इक अकथ, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। सतिजुग सच चलाए रथ, सृष्ट सबाई देवे मति, दो जहानां वेख वखाईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, वसणहारा घट घट, आत्म परमात्म लेखा जाणे बेपरवाहीआ। भगत भगवान दर साचे सद्द, अमृत नाम प्याए मदि, कूड़ी क्रिया पार कराए हद्द, साचा मन्दिर इक वखाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, श्री भगवान करे अड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। पीर पैगम्बर चढ़या चाउ, गुर अवतार खुशी मनाईआ। प्रभ खेल करे अगम्म अथाहो, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जन भगतां जणाए एका नाउँ, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। देवणहारा सच सलाहो, सलाहगीर फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण बणे पिता माउँ,

बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप दरसाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार मंगण धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। पुरख अबिनाशी रंग चाढ़े इक्को गूढ़, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। लेखा जाणे मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ सुचज्जे आपे खेल खलाईआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया हाज़र हज़ूर, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। गुरमुखां अन्तर देवे जोती नूर, नूर नूराना नूर रुशनाईआ। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया करे चूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा वेस आप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोलूण, खोलू खोलू समाईआ। शब्द अगम्मी इक्को बोलण, समझ किसे ना आईआ। श्री भगवान पूरा तोल आया तोलण, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी आया वरोलण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। सच दुआर आया खोलूण, चार वरन इक सरनाईआ। जन भगतां रखण आया अडोलन, सिर साचा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण रास, मण्डल मण्डप वज्जे वधाईआ। श्री भगवान वसया भगतां पास, भगवन आपणा रंग जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े पूरी करे आस, आसा आपणे नाल मिलाईआ। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, चरण कँवल दए सरनाईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, सगला संग निभाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जणाए इक्को गाथ, इक्को ढोला राग सुणाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, लोआँ पुरीआँ फोल फुलाईआ। साचा सरोवर तीर्थ ताट, गृह मन्दिर दए वखाईआ। पूरब लेखा इक्को इक वखाल निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। सदा सुहेला इक इकेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी हरि महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना पाईआ। निरगुण धारों निरगुण उठ, लोकमात करे कुड़माईआ। गोबिन्द मेला साचे सुत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बाहरों दिसे काया बुत्त, अन्तर श्री भगवान आसण लाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों आपणी गोदी चुक्क, आप आपणे अंग लगाईआ। जन्म जन्म दी मेटे भुक्ख, कर्म कर्म रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला मेल मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण आवण मेला, मेला हरि जू आप लगाइंदा। एका दर गुरु गुर चेला, गुर चेला रंग वखाइंदा। निरगुण होया सज्जण सुहेला, सरगुण आपणी गोद सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रभ मिलण दा इक्को वेला, वेला गया हथ्थ

ना आइंदा। साहिब सतिगुर आया सज्जण सुहेला, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। कटणहारा राए धर्म दी जेला, लख चुरासी नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आए नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। चलो वेखो गुरमुख खेड़े, हरि सतिगुर डेरा लाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खेल बेअन्त बथेरे, बहु भांती रूप वटाईआ। चार जुग कीते चेरे, चेला इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, बेपरवाह खेल खलाइंदा। आदि जुगादी सांझा यार, साहिब सुल्तान वेस वटाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँचां नीचां राउ रंकां करे प्यार, दूई द्वैत ना कोए रखाइंदा। बजर कपाटी काया हाटी पड़दा देवे पाड़, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अमृत बूँद स्वांती देवे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, आत्म परमात्म वखाए सच निवास, सेज सुहञ्जणी आप वड्याइंदा। निरगुण निरगुण होए दास, सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। भगत भगवान पूरी करे आस, भगतन आपणे लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे नच्च, सच दुआर वज्जे वधाईआ। प्रभ प्रगट होया इक समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले सज्जण लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निज आत्म खोल्ह अक्ख, आख़र आपणा दरस कराईआ। लख चुरासी नालों कर कर वक्ख, कूड़ा नाता दए तुड़ाईआ। लहिणा देण मुकाए हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना कोए जणाईआ। अन्तर आत्म तेरे वस, हरि जू आपणी बूझ बुझाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मथ, सच सुच्च दए समझाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश कोटन रवि ससि, नूरी जलवा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा कराईआ। साची खेल कराए ख़लक, बेपरवाह भेव ना आइंदा। परवरदिगार आए फकत, शाह हकीर वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आपणे बालक, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कदी ना करे आलस, निंद्रा रूप ना कोए वटाइंदा। जुग चौकड़ी बणे सालस, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आवण नठ्ठे, वाहो दाही पन्ध मुकाईआ। सच दवारे होवण कठ्ठे, घर इक्को वज्जे वधाईआ। हरि सरनाई सारे ढठ्ठे, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। श्री भगवान जुग जुग तेरे देंदे रहे पते, लिख लिख लेखा हुक्म सुणाईआ। तुध बिन वेले अन्त पत्त कोई ना रखे, लख चुरासी कूक कूक दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी त्रैगुण माया अग्नी कीते तत्ते, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिन भगतां तेरे रंग कोई ना रत्ते, रत्ती रत्त नज़र किते ना आईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह करो ध्यान, मेहरवान आप जणाइंदा। प्रभ प्रगट होया नौजवान, दूसर वंड ना कोई वंडाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। त्रैभवण धनी खेल महान, महिमा अकथ अकथ सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेला इक अख्वाइंदा। सन्त सुहेला दए उपदेश, आपणी दया कमाईआ। अमृत जाम देवे घुट्ट, अंमिओ रस चुआईआ। कर प्रकाश निरगुण जोत, जोत नूर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुका वरन गोत, ब्रह्म इक्को इक समझाईआ। नाता तुटे हरख़ सोग, चिन्ता ग़म रहे ना राईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। आत्म रस भोगे भोग, भस्मड़ रूप ना कोई वटाईआ। सच मुनारा सोहे गोबिन्द सेज, सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द गुरू लगाए चोट, सति नगारा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दवारा इक सुहाईआ। भगत दुआरे आया आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। कोटन कोटि जन्म उतारे पाप, पतित पुनीत करे बेपरवाहीआ। सोहँ सो जपाए जाप, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। आदि जुगादी सच्चा बाप, पुरख अकाल फेरा पाईआ। त्रैगुण मेटे तीनो ताप, अग्नी तत्त रहे ना राईआ। हरिसंगत मेला साचा साक, बंधप इक्को इक दरसाईआ। नज़री आए कमलापात, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। दूर दुराडी मुक्के वाट, पन्ध नेरन नेर जणाईआ। सच दवारे खोल्हे ताक, सौदा इक्को नाम वखाईआ। गुर अवतार जा बैठे आपणे घाट, सन्तन लेखा बेपरवाहीआ। नाम अनमुल्ली देवे दात, काया कुली आप टिकाईआ। प्यावणहारा आबेहयात, सबर प्याला हत्थ उठाईआ। वेखणहारा कायनात, कलमा नबी रिहा जणाईआ। जन भगतां देवे सच सौगात, सच समग्री झोली पाईआ। इक्को इक रंग रंगाए दिवस रात, घड़ी पल ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दवारा दए वड्याईआ। भगत दवारे वज्जे नगारा, हरि सतिगुर आप वजाइंदा। सन्त भगत परम पुरख हरि कर प्यारा, हरि मन्दिर इक्को इक दरसाइंदा। इक्को मन्दिर इक्को गुरूदवारा, ठाकर इक्को नज़री आइंदा। इक्को शहिनशाह सिक्दारा, शाह पातशाह इक्को हुक्म मनाइंदा। इक्को आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। इक्को राग इक्को छन्द सुणाए सर्ब संसारा, साध सन्त इक्को रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम कलि कल्की लए अवतारा, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदारा, निंद्रा आलस ना कोई जणाइंदा। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा । ग़रीब निमाणयां दए सहारा, दो जहानां पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची

करनी करने आया, पारब्रह्म करतार। हरिजन साचे लए जगाया, शब्द अगम्मी कर गुफ्तार। नेत्र नैण इक खुलाया, आपे तोड़े बंद किवाड़। हरिसंगत साचा संग निभाया, लेखा जाणे अन्दर बाहर। गुप्त ज़ाहर नाद वजाया, सच सुणाए सच्ची धुनकार। धुर संदेसा इक सुणाया, हरि सज्जण मीत मुरार। पांधी बणके फेरा पाया, दर आया बण भिखारा। हरिजन साचे रंग रंगाया, करे खेल आप निरँकार। जगत नगारा जगत सुणाया, ढोला मृदंग हाहाकार। गुरमुख प्रेम अन्त ना किसे नज़र आया, कलिजुग सुत्ता पैर पसार। सच सिँघासण सोभा पाया, तख्त निवासी नौजवान। गुरमुखां प्रीती चिट्टी चादर चरण टिकाया, तेग बहादर जगत विहार। आदर देण घर घर आया, लेखा जाण सच्ची सरकार। फूलन बरखा गुरमुख लाया, दो जहान पए फुहार। सचखण्ड साचे वज्जे वधाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे वेखणहार। कोट कोटन नगारा वज्जे मृदंग, ढोलक ढोल ना कोए जणाईआ। वेखणहार सूरा सरबँग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। आत्म अन्तर देवे अनन्द, बाहरों वेख गोबिन्द चन्द, निरगुण सरगुण धुर दी धार रुशनाईआ। छड्ड के आया कोट ब्रह्मण्ड, भगत दुआर वंडी वंड, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। गीत गोबिन्द सुहागी रसना जिह्वा गाए दन्द, साचा छन्द इक्को इक जणाईआ। कर दरस मिटे हिरस शब्द सुत पाए ठंड, अग्नी तत्त तत्त बुझाईआ। जुग जन्म दी टुटी गंढ, पल्लू आपणी गंढु रखाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, घर इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत प्यार जगत आधार सच सतार रिहा जणाईआ। भगत प्यार साची सिख्या, आदि जुगादि सुणावणहार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी धुर लेखा लिख्या, लेखा लेख अगम्म अपार। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित बिन भगतां किसे ना दिस्या, लख चुरासी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन उपजाए आपणी धार। हरिजन उपजे धार निराली, निरगुण निरवैर आप उपजाईआ। मेल मिलावा जोत अकाली, अक्ल कला अख्वाईआ। काया मण्डल दीपक थाली, जोती जोत डगमगाईआ। आत्म परमात्म साचे मन्दिर आप बहाली, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण अग्गे होए स्वाली, प्रेम भिच्छया मंग मंगाईआ। प्रेम भिच्छया प्रभ दी भुक्ख, बिन भगतां पूर ना कोए कराइंदा। दो जहान निरगुण विछोड़ा दुःख, बिन सरगुण सुख ना कोए उपजाइंदा। लोकमात होए ना उज्जल मुख, गुरमुख संग हरि सतिगुर चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत दवारे आए चल, जन भगतां बिन नेत्र दर्शन पाइंदा। शब्द गुरू इक्को चेला, सतिगुर पुरख

अकाल अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग जुग मेला, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। निरगुण हो के सरगुण खेल खेला, पंज तत्त दए वड्याईआ। अन्तिम होए इक इकेला, एकँकारा बेपरवाहीआ। जिउँ भावे तिउँ जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा चेला इक्को कर, लख चुरासी देवे वर, घर घर चेला गुर का राग सुणाईआ। चेला सुणावे गुर का नाद, बिन तन्दी तन्द राग अलाइंदा। कोटन कोटि सुणन ब्रह्माद, ब्रह्मांड भेव कोए ना पाइंदा।

स्वागत संगत होया कबूल, प्रभ लेखे आपणे पाईआ। लेखे लग्गा इक इक फूल, बच्चे बुढ्ढे नढ्ढे जवान जो रहे बरसाईआ। जन्म जन्म दी बख्श भूल, भुल्लयां गले लगाईआ। साहिब सतिगुर दा इक्को असूल, भगतां आपणे रंग रंगाईआ। मेल मिलाए आत्म परमात्म नार कन्त कन्तूहल, सुहञ्जणी सेज फूल विछाईआ। चुकावणहारा सूद नाल मूल, लहिणा सब दी झोली पाईआ। गुरमुख पंघूड़ा गुर सतिगुर रिहा झूल, हुलारा दो जहान लगाईआ। प्रभ कोल वड्डा बचन ना कोई माअकूल, जिस नाल गुरमुखां शुकरीआ अदा कराईआ। स्वागत होया रास, सगल समग्री मिली वड्याईआ। लेखे लग्गी संगत तेरे चरणां ख़ाक, जो उड उड मस्तक लाईआ। रूह बुत्त दोवें होए पाक, पाकीज़गी इक्को घर वखाईआ। हरि जू मिल्या हरिजन साक, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। पारब्रह्म जिध्धर वेखे मार झात, अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे गुरमुख फूल रहे बरसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुर नर मुन जन पीर पैगम्बर गुर अवतार भगत प्रभ ने लोकमात खोल्या ताक, आपणा पर्दा आप उठाईआ । दो जहानां श्री भगवान निरगुण कट के आया वाट, पन्ध मुका वाहो दाहीआ। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, गुरमुख साचा चन्द चमकाईआ। लै के आया धुर सुग़ात, नाम इक्को झोली पाईआ। गुरसिखां स्वागत कीता बन्ह हाथ, गुरमुखां प्रभ कर किरपा लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। फुल पंखड़ीआं गुंचे हस्सण, हस्स हस्स ख़ुशी मनाईआ। इक दूजे नूं हाल दस्सण, भेव अभेद समझाईआ। वेखो प्रभ जू हिरदे आया वसण, आप आपणी कल धराईआ। बाले बच्चे अग्गे अग्गे नस्सण, ख़ुशीआं रंग चढ़ाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी गायण जसण, वेद पुराण रहे शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वागत भगत सिँघ जो आए भागत, भगवती भगौती सिमरती सतिवादी अनादी विस्मादी ब्रह्मादी आदि शक्ति सर्ब दी दादी सेवा रही कमाईआ। माअकूल जवाब अज्जे छोटा, निक्की निक्की गल्ल समझाईआ। गुरसिख स्वागत एडा वड्डा मोटा, दो जहान कोई चुक्क

ना सके राईआ। श्री भगवान मेहरवान निरगुण आया कस लंगोटा, निरगुण आपणा बल धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिन्दे रहे दस्स प्रभ आपणा पोता, पुत्तर गुरमुख मात वड्याईआ। श्री भगवान सदा मेहरवान जुग चौकड़ी होए भगतां जोगा, आपणी रखे ना कोए वड्याईआ। उच्ची कूक सुणाए चौदां लोका, परलोक वज्जे वधाईआ। जिस ने हरि का नाम सति गाया सलोका, तिस दा भार सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच जवाब करे लाजवाब, क्यों, सच लोकमात नज़र किसे ना आईआ।

तख्त कहे प्रभ सच्चा ताज, आदि जुगादि वड्याईआ। ताज कहे शहिनशाह ग़रीब निवाज़, बेअन्त बेपरवाहीआ। बेपरवाह कहे मैं कल्गी रखां लाज, गोबिन्द बैठा ध्यान लगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पिता पुरख अकाल गुरू महाराज, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ताज कहे प्रभ साजण साज, साची तख्त वंड वंडाईआ। तख्त कहे मेरी रखी लाज, मेहरवान हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। तख्त कहे ताज बलकारा, बल आपणा आप रखाइंदा। ताज कहे शहिनशाह खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना आइंदा। शहिनशाह कहे मैं कल्गी देवां सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। कल्गी कहे मैनूं गोबिन्द लग्गे प्यारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। तख्त कहे ताज बलवान, एका एक एक अख्वाइंदा। ताज कहे मेरा साहिब सुल्तान, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। निरगुण कहे मैं कल्गी देवां दान, वस्त अमोलक वंड वंडाइंदा। कल्गी कहे मैं गोबिन्द करां परवान, दूसर अंग ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तख्त कहे ताज सच मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। ताज कहे श्री भगवान अतीता, आदि जुगादि सच सिँघासण सोभा पाईआ। श्री भगवान कहे गोबिन्द मेरी चलाए रीता, रीतीवान इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाईआ। तख्त कहे ताज अपार, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। ताज कहे शहिनशाह शाह पातशाह सच्ची सरकार, धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। धुरदरगाही कहे मेरा नूर किरन कल्गी चमत्कार, ज़हूर इक्को इक दरसाइंदा। कल्गी कहे मेरा गोबिन्द सरदार, दो जहानां इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वटाइंदा। गोबिन्द कहे मेरे सीस कल्गी, हरि सतिगुर आप टिकाईआ। हरि सतिगुर कहे मैं दिती वंनगी, लोकमात राह जणाईआ। दो जहान वाहो दाह फिरदी, बण बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ। कल्गी कहे मेरा साहिब एक, जिस दिती मैनूं वड्याईआ। मैं नेत्र लोचण लवां पेख, मुख पर्दा आप उठाईआ। दीन दयाल देवणहारा टेक, समरथ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी दए जणाईआ। कल्गी कहे मेरा ताजां वाला, साचा तख्त हंढ्ढाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, वेस अनेक कराइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, मंत्र नाम दृढ़ाइंदा। भूपत भूप राज राजानां, शाह सुल्ताना हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताइंदा। ताज कहे तख्त सुहञ्जणा, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। चरण छुहाए आदि निरँजणा, श्री भगवान बेपरवाहीआ। दो जहानां पर्दा कज्जणा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सच दवारे बहि के सजदा, सचखण्ड खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी इक्को इक जणाईआ। तख्त कहे मेरा ताज वीर, प्रेम प्रेम नाल वंडाइंदा। ताज कहे प्रभ गुणी गहीर, गहर गम्भीर समाइंदा। पारब्रह्म कहे मेरा गोबिन्द तीर, शब्द निशाना इक उठाइंदा। गोबिन्द कहे मैं तेरी उडीक रखां अख़ीर, आख़र इक ध्यान लगाइंदा। मेरी कल्गी होई दिलगीर, कल काती चार कुण्ट नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मेरी कल्गी होए निहाल, नेत्र दरस तेरे वड्याईआ। तेरा ताज होए परवान, मेहरवान तेरी शरनाईआ। तेरा जलवा नूर जमाल, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। मेरा तख्त तेरा अस्थान, भूमका रूप ना कोए वटाईआ। लेखा जाणे आप भगवान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर आपणी धार चलाईआ। तख्त कहे मेरा सच्चा शाह, शहिनशाह इक अख्वाया। शहिनशाह कहे मेरा लेखा बेपरवाह, अन्त किसे ना पाया। निरगुण सरगुण वेस वटा, आदि जुगादी खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाया। साचा भेव खोल्हे आदि, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। साचा खेल उपाए ब्रह्माद, ब्रह्मांड वज्जे वधाईआ। साचा राग सुणाए अनाद, नादी नाद अल्हाईआ। साचा खेल वेखे तमाश, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तख्त इक सिँघासण, एका ताज पुरख अबिनाशन, एका कल्गी दासी दासन चरण कँवल करे वास, निवासा इक्को घर रखाईआ। गोबिन्द कहे मैं तेरा पुत्त, पिता तेरे हथ्थ वड्याईआ। कल्गी कहे मेरी गई रुत्त, रुत्तड़ी होर ना संग निभाईआ। ताज कहे मैं पवां उठ, आपणा बल धराईआ। तख्त कहे मेरे उत्ते बहि अबिनाशी अचुत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। राह चलाए सच सुच्च, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ।

६२७
१३

दो जहानां लए पुच्छ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना सके लुक, लोक परलोक वेख वखाईआ। शाह सुल्तान हो पए बुक्क, भबक आपणे नाम लगाईआ। जन भगतां उपर जाए तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। तीर निराला एका जाए छुट्ट, शब्द अगम्मी बाण चलाईआ। कलिजुग कूड़ा बूटा देवे पुट्ट, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सुत कहे मैं तकां राह, नेत्र नैण नैण उठाया। ताज कहे कवण वेला प्रभ बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाया। श्री भगवान कहे मैं देवां सलाह, साची सिख्या इक दृढ़ाया। गोबिन्द कहे मैं पकड़ी बांह, पुरख अकाल सगला संग निभाया। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी धार वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाया। साचा भेव तख्त निवासी, हरि भगवान आप जणाइंदा। भूपत भूप शाहो शाबासी, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादि मण्डल मण्डप पावे रासी, गोपी काहन नाच नचाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। हर घट निरगुण सरगुण जोत करे प्रकाशी, प्रकाशवान आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल पुरख अकाल, एका एक जणाईआ। तख्त निवासी हो दयाल, दीनन वेखे थाउँ थाईंआ। शाह पातशाह बेमिसाल, साची मिसल नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तख्त दए दृढ़ाईआ। एका तख्त सच सिँघासण, सोभावन्त आप सुहाइंदा। उपर बैठ पुरख अबिनाशन, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। लेखा जाणे ख़ाक ख़ाकन, ज़िमीं असमानां खोज खुजाइंदा। निरगुण सरगुण खेल तमाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण बहि बहि हुक्म मनाइंदा। सच सिँघासण बहे निरँकार, निरगुण आपणी धार जणाईआ। आदि जुगादी इक अवतार, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। महल अटल उच्च मनार, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। शब्द डंका अगम्म अपार, दो जहान आप सुणाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा खेल समझाईआ। शहिनशाह सिर रख ताज, तख्त निवासी खेल कराइंदा। भगत भगवन्त रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग साचा रच रच काज, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। एका बेड़ा चलाए जहाज़, चप्पू आपणा नाम लगाइंदा। सन्त सुहेले उठाए मार आवाज़, निज नेत्र नैण खुलाइंदा। लख चुरासी रच रच काज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीश ताज रखाइंदा। ताज कहे मेरी कल्ग़ी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। कलिजुग कल्ग़ी कर प्यार, सच प्रीती इक समझाईआ। मेल मिलावा पुरख

अकाल, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची विच वसाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, महिमा इक्को इक सुणाईआ। कृपानिध हो दयाल, मेहरवान दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल्ही एका धार जणाईआ। कल्ही कहे मेरा कल्ही वाला, कल इक्को नज़री आइंदा। जिस दा नूर बेमिसाला, चन्द चमक ना कोए वड्याइंदा। जुग चौकड़ी खेल निराला, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। वसणहारा सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। लेखा जाण दो जहानां, तिक्खी धार शब्द खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। ग़रीब निमाणयां दे सहारा, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। दोए जोड़ करे निमस्कारा, निमख निमख आपणा आप कटाइंदा। नेत्र नैण उठा राह तक्के सांझे यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। गोबिन्द कहे मेरी इक्को आस, आसा आप जणाईआ। पुरख अकाल बुझा प्यास, तृष्ना तृखा रही सताईआ। निरगुण हो के दे साथ, साचा संग निभाईआ। प्रगट हो पुरख समराथ, समरथ खेल कराईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, वरन गोत दे खपाईआ। सृष्ट सबाई बणा के इक जमात, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। आत्म परमात्म सुणा के गाथ, सोहला इक्को इक वड्याईआ। सच दुआर वखा के घाट, पत्तण बहि बहि बेपरवाहीआ। मनमति मिटा के नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक समझाईआ। दर्शन देवे साख्यात, निरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। लेखा जाणे कायनात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव जणाईआ । गोबिन्द कहे मैं वेखां रंग, प्रभ इक ध्यान लगाईआ। कल्ही कहे मैं मंगां मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कवण वेला प्रभ आए सूरा सरबँग, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। बोध अगाध वजाए मृदंग, नाम मृदंगा हथ्थ उठाईआ। पुरीआँ लोआँ जाए लँघ, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड चरणां हेठ रखाईआ। सृष्ट सबाई इक सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ एका नाम दृढ़ाईआ। जन भगतां कटे फाँसी फंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। निरगुण जोत चाढ़े चन्द, जगत अन्धेर मिटाईआ। गुरसिख सुरत नार दुहागण ना होए रंड, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। कलिजुग मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रुढ़ाईआ। सच सच आपणा नाम देवे वंड, घर घर इक्को वस्त वखाईआ। ज़ात पात दूई द्वैत ढाहे कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे मैं रखी आसा, इक्को इक ध्यान लगाईआ। साहिब उत्ते पूरा भरवासा, भरम भुलेखा ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इस दीआं निक्कीआं शाख़ां, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान चार ख़ाणी चार बाणी उहदी सिफ्त दीआं करदे बातां, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। कर किरपा जिस जन दस्से आपणा साका, साख्यात नज़री आईआ। कलिजुग अन्तिम

६२८
१३

आ के मेटे अन्धेरी राता, निहकलंका नाउँ रखाईआ। कलि कल्की पुछे वाता, सम्बल आपणा चरण टिकाईआ। जन भगतां बणे पिता माता, गुरमुख बाल गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे मैं नेत्र खोल्हां, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। इक्को ढोला सच्चा बोलां, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। एका खेलां अन्तिम होला, लख चुरासी रंग रंगाईआ। दो जहान सुणावां सच्चा सोहला, पुरख अकाल करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर नज़री आए मौला, घट घट रिहा समाईआ। मेरा पूरा करे कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। भार हौला करे धौला, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कोई ना पाए रौला, सच सुच्च इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर वखाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल आवेगा। मेरी आसा पूर करावेगा। सगला संग निभावेगा। जोती जामा पावेगा। निहकलंका नाउँ रखावेगा। नाम डंक वजावेगा। दो जहान हिलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव कुरलावेगा। करोड़ तेतीसा धीर ना कोए धरावेगा। तेई अवतारां चरण बहावेगा। भगत अठारां सद्द ल्यावेगा। ईसा मूसा मुहम्मद निउँ निउँ सजदा सीस झुकावेगा। नानक गोबिन्द पुरख अकाल इक्को नज़री आवेगा। तूं मेरा मैं तेरा लेखा आदि अन्त वखावेगा। शब्द अगम्मी साचा सेहरा, गुर गोबिन्द ताज पहनावेगा। लख चुरासी पाए घेरा, सत्तां दीपां आप उठावेगा। कूड़ी क्रिया ढाहे ढेरा, साचा मार्ग लावेगा। भगत भगवान वसाए खेड़ा, भगत दुआर इक वडयावेगा। कलिजुग अन्तिम देवे गेड़ा, उलटी लठ गढ़ावेगा। शाह सुल्ताना भेड़ भेड़ा, जीव जंत कुरलावेगा। गुरमुखां नज़री आए नेरन नेरा, मेरा लहिणा अन्त चुकावेगा। इक्को ढय्या कर के बैठा जेरा, अन्तिम आपणा मेल मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर करावेगा। मेरी आसा अन्तिम करे पूर, परम पुरख भगवाना। दर मेले हाज़र हज़ूर, शहिनशाह सुल्ताना। मेरा संग देवे ज़रूर, निरगुण निरगुण उठ बलवाना। कलिजुग क्रिया करे चूर, नाम खण्डा खिच म्याना। जन भगतां देवे मस्तक धूढ़, मेहरवान हो मेहरवाना। गुरमुख चाढ़े रंग गूढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दाना। साचा दान देवे आप प्रभ, कल आपणी किरपा धार। निरगुण सरगुण वेखे लभ्भ, सन्त सुहेले विच संसार। उलटी करे कँवल नभ, अमृत झिरना, झिरे अपार। सन्त सुहेले सज्जण सद्द, देवे दरस दीदार। नाम वजाए साचा नद, धुन आत्मक सच धुनकार। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, बख्शे चरण प्यार। जगत दुआर पार हद्द, हरि सतिगुर मेला नार कन्त भतार। अंमिउँ रस जाम प्याए मध, दिवस रैण खुमार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करता कल आवेगा। अक्ल कला खेल करावेगा। कलि कल्की अख्खावेगा। सम्बल डेरा लावेगा।

साचा बंक सुहावेगा। राउ रंक उठावेगा। जीव जंत जगावेगा। साध सन्त मिलावेगा। तट तीर्थ वेख वखावेगा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले फोल फुलावेगा। चार कुण्ट राह तकावेगा। नठ्ठ नठ्ठ प्रभ आपणा पन्ध मुकावेगा। जन भगतां दुरमति मैल कट कट, कंचन रूप वटावेगा। सृष्ट सबाई फट फट, दो धारी खण्डा इक चलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पावेगा। आपणा फेरा हरि जू पाएगा। अचरज खेल रचाएगा। नज़र किसे ना आएगा। सृष्ट सबाई ख़ाक रलाएगा। गुरमुख सज्जण फड़ उठाएगा। धूढ़ी मजन इक कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी कार कमाएगा। हरि आपणी कार कमावेगा। सो पुरख निरँजण बण के आवेगा। हरि पुरख निरँजण राह जणावेगा। एकँकारा पड़दा लाहवेगा। आदि निरँजण जोत चमकावेगा। अबिनाशी करता शुकर मनावेगा। श्री भगवान निशान झुलावेगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल रचावेगा। लख चुरासी समझावेगा। शब्द अनादी नाद गावेगा। पिछली वादी सर्ब मिटावेगा। लख चुरासी हाडी नाड़ी फोल फुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप चुकावेगा। आपणा लेखा चुकाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। महाकाल हुक्म सुणाएगा। काल निउँ निउँ सीस निवाएगा। धर्म राए हथ्थ फड़ाएगा। चित्रगुप्त लाड़ी मौत नाल रलाएगा। लख चुरासी सत्त दीप नव खण्ड खंन खंन कराएगा। सजदा पीर पैगम्बर इक झुकाएगा। जगत बसन्तर मेट मिटाएगा। जन भगतां रंग रंगाएगा। आत्म अनन्द इक दरसाएगा। काया मन्दिर अन्दर लँघ, दरस दिखाएगा। आत्म सेज सुहञ्जणा पलँघ, सतिगुर बहि बहि खुशी मनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाएगा। आपणी करनी कमावेगा। सोहँ ढोला गावेगा। शब्द वचोला आप बणावेगा। पंज तत्त नज़र कोए ना आवेगा। ब्रह्ममत समझावेगा। गतमित आपणे हथ्थ रखावेगा। कमलापति वेस वटावेगा। सतिजुग साचा राह चलावेगा। चार वरन इक्को घर बहावेगा। श्री भगवान साची सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनावेगा। भगत भगवान खोल्ह दृष्ट, दृष्टी आपणी उत्ते पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमावेगा। आपणी करनी करे करतार, करनहार अख्वाइंदा। तख़्त निवासी हो उज्यार, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। ताज कहे प्रभ सुणे पुकार, तज अभिमान जो चरणी आइंदा। कल्ह़ी कहे कल करां परवान, जो गोबिन्द ध्यान लगाइंदा। गोबिन्द कहे मैं देवां दान, गुरसिख पुरख अकाल दी झोली पाइंदा। अन्तिम लेखा मुक्के जहान, श्री भगवान आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा इक सुहाइंदा।

❋ १५ फग्गण २०१६ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह इटारसी ❋

भगतो साचा दस्सो प्रेम, परम पुरख मंग मंगाइंदा। श्री भगवान करे नेम, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जिस भगती कीती कुण्ट हेम, सो कुंट गुरमुखां अन्दर वेख वखाइंदा। दरस करन आए नेत्र नैण, नैणां देवी राह तजाइंदा। विछड़े वेखे सज्जण सैण, सगला संग बणाइंदा। आपणी कहाणी आया कहिण, कह कह आप सुणाइंदा। पिछला लओ मैथों लैण, अगला लेखा अग्गे राह जणाइंदा। दूजा रहे ना कोई देण, दे दे आपणा शुकर मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाइंदा। भगतो दस्सो प्रेम रीत, रीतीवान मंग मंगाइंदा। सच सुच्च वेखो प्रीत, प्रीतीवान वेख वखाइंदा। मैं तुहाड्डा गावां गीत, ढोला विचोला इक बणाइंदा। सारे छड्डे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ ना कोई वड्याइंदा। लख चुरासी दे के पीठ आपणी करवट ना कोई बदलाइंदा। जन भगतां परखे नीत, निरगुण आपणी धार जणाइंदा। आओ रल मिल के प्रभ दा वेखो धाम अनडीठ, अनडिठड़ा आप दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची मंग मंगाइंदा। भगतो प्रीती दयो दस्स, हरि सतिगुर मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, आसा आसा विच समाईआ। दो जहानां मिटाए तरास, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। राह तक्कण पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन खाहश, ख्वाहिश आपणी नाल प्रगटाईआ। पवण उणंजा लए सास, ठंडी धार चलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे दास, बण दासी दास सेव कमाईआ। मण्डल मण्डप पाइन रास, बण गोपी काहन नाच नचाईआ। लोक परलोक मंगण दात, बैठे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन भगतां प्रगट होए ना किते साख्यात, सति सरूप ना कोई दृढ़ाईआ। भगतो दस्सो आपणा रंग, रंग रंगीला पुच्छ पुछाइंदा। कर किरपा दयो संग, सगला संग वड्याइंदा। जे आखो अन्दर आवां लँघ, मन्दिर काया सोभा पाइंदा। तुसीं सुणो मैं वजावा मृदंग, राग आपणा नाम सुणाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। बिन खादयां पीतीआं रसना जिह्वा दयां अनन्द, अनन्द इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मंग आप मंगाइंदा। भगतो दस्सो वक्त सुहेला, सुहञ्जणी रुत्त मिले वड्याईआ। कवण दवारे होवे मेला, मिलनी जगदीश कराईआ। राह तक्के गोबिन्द चेला, सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलणहारा खेल दरसाईआ। भगत कहिण सुण श्री भगवान, सच सुच्च दृढ़ाईआ। जिन्हां चिर साडा प्रेम ना करें परवान, परवाना तेरे हथ्थ ना कोई फड़ाईआ। दर आ के बण निधान, बण निमाणा सीस झुकाईआ। पहलो साडी मन्न आण, आपणा माण मिटाईआ।

पहलो साडा कर ध्यान, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। पहलों साडा सुण ब्यान, दुखी होए रहे कुरलाईआ। की होया तूं बणया भगवान, बिन भगतां तेरी चले ना कोई वड्याईआ। सच पुच्छें असीं तेरा निशान, जुग चौकड़ी रहे झुलाईआ। क्यों बणया नादान, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। असीं तेरे सुत चतुर सुघड़ सुजान, तेरी रहमत इक्को नज़री आईआ। साडा तन गात्रा तैनूं रखे विच म्यान, साडे बिना तेरा रूप ना कोई दिखाईआ। बिन साडे तेरा कोई ना गाए गान, बैठा रहे सचखण्ड आपणा मुख छुपाईआ। बिन साडे तूं मातलोक ना होए प्रधान, तेरी प्रधानगी कम्म किसे ना आईआ। बिन भगतां झुले ना तेरा निशान, तेरी ख़ाक मिटी मट किसे ना पाईआ। साडे दर बण दरबान, भगत इक्को इक हुक्म मनाईआ। पिछला लेखा चुक्कया पिछले जहान, अग्गे इक्को इक वखाईआ। जिन्ना चिर साडा प्रेम ना करें परवान, पक्खी वास बणे थाउँ थाईंआ। कोटन कोटि मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले तैनूं कुरलाण, तेरी सार किसे ना पाईआ। जिन्ना चिर सानूं ना मिलें आण, तेरी कीमत ना कोए रखाईआ। हुण भगत होए बलवान, बल तेरा देवण ढाहीआ। कलिजुग इकठ्ठे होए नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। भगत कहिण आ दर, दर सच्चा सच जणाईआ। पिच्छे देंदा रिहा वर, अछल अछल्ला खेल कराईआ। निरगुण हो के सचखण्ड दवारे बैठों वड़, आपणा पड़दा ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम अक्खर गए पढ़, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। हुण असीं हथ्थीं लईए फड़, फड़ बांहों विच लैणा बहाईआ। जे अग्गों जाएं अड़, बण बाले लईए मनाईआ। तेरी छाती उत्ते जाईए चढ़, आप आपणा बल रखाईआ। क्यों, निर्भय हो के कोई ना रख्या डर, भउ नज़र कोए ना आईआ। तेरा पल्लू ल्या फड़, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरा भाणा रहे जर, हुण आपणे भाणे विच तैनूं चलाईआ। साडी मर्ज़ी आपणी किरपा कर, तेरी किरपा साडी मर्ज़ी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा वर, दर तेरे तेरी अलख जगाईआ। भगवान कहे मैं सदा भगौड़ा, हथ्थ किसे ना आइंदा। मेरा पन्ध लम्मां चौड़ा, कोटन कोटि पांधी दर दर आप फिराइंदा। सब तों उच्चा मेरा पौड़ा, हथ्थ किसे ना आइंदा। कोटी कोट सुणावे मैं होया रहां ढोरा, जे कोई वेखण आए मैं नैण बंद कराइंदा। जे कोई कहे प्रभ साचा बौहड़ा, मैं शब्दी राग सुणाइंदा। जे कोई कहे मैं करां ज़ोरा, ज़ेर ज़बर सब दा रूप वखाइंदा। जे कोई कहे मैं प्रभ दा बांका छोहरा, भगत रूप वटाइंदा। आपणे हथ्थ रखे डोरा, डोरी आपणा तन्द वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। दाता शिश बणे दयाल, आपणी खेल कराईआ। जन भगतां अन्दर

वड़े हो बेपहचान, नज़र किसे ना आईआ। सेवा करे श्री भगवान, काया माटी अन्दर कूड़ी क्रिया हूंझ हुंझाईआ। सेवक बण के करे खेल महान, गुरमुख सोई सुरत जगाईआ। सुरत जगा के देवे दान, नाम निधान झोली पाईआ। नाम निधान दे ज्ञान, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर सच अस्थान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण नौजवान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जाता हो प्रधान, इक्को हुक्म सुणाईआ। परमात्म आत्म खेल महान, पुरख अकाल दए वड्याईआ। सतिगुर बणे शाह सुल्तान, चेला सुरती शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली धार बणे शिश, दूजी धार लेखा लिख, तीजी धार बदल पिठ, चौथी धार हो अनडिठ, आपणा रूप वटाईआ। भगत कहिण भगवान सुण गल्ल, अच्छी तऱ्हा जणाईआ। हुण करन नहीं देणा वल छल, अछल अछल्ल तेरी चले ना कोए चतुराईआ। शेर हो के जे वड़ें झल्ल, झल्ल भगत आपणी देण दरसाईआ। जे नट्ठ के लुकें जल, मच्छ कच्छ रूप ना कोए वटाईआ। जे उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ें अटल, फड़ चरणां हेठां लईए लाहीआ। जे डूँग्घी वड़ें डल, फड़ बांहों बाहर कढ्ढाईआ। जे निरगुण हो के जोत जाएं रल, आपणी जोत लईए मिलाईआ। जे दीआ हो के जाइए बल, आपणे नूर विच समाईआ। जे स्नेहुड़ा देवें घल्ल, शब्दी राग अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरा इक्को मंग मंगाईआ। भगत कहिण भगवान वेख, सच सच दृढ़ाया। निरगुण हो के करया भेख, सरगुण भरम भुलाया। जुग चौकड़ी तेरा थोड़ा थोड़ा कीता हेत, समुच्चा रंग ना कोए रंगाया। कलिजुग अन्तिम सानूं आया तेरा भेत, आपणा पड़दा दे उठाया। जे हो किरसाणा फिरें खेत, चारों कुण्ट घेरा पाया। जे वखाएँ धुप अग्नी जेठ, तेरा हथ्थ सीस टिकाया। जे लिखण लग्गें लेख, पिछला लेखा तैनूं दईए वखाया। फेर क्यों ना करें हेत, आप आपणा माण गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरा इक सुहाया। भगवान कहे ना मारो ताअना, मेरा तन नज़र ना आईआ। मेरा रूप बुड्ढा नढ्ढा नौजवाना, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। मेरा खेल गोपी काहना, मण्डल रासी रास रचाईआ। मेरा मेल दो जहानां, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। मेरा नाउँ नाम तराना, तुरिया नैण शरमाईआ। मेरा मन्दिर भगत मकाना, बिन भगतां सोभा दर ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा सालाहीआ। भगत जन ना मारो तीर, आपणा रूप ना कोए वखाइंदा। मैं तुहाड्डी कटां भीड़, जुग साची सेव कमाइंदा। भगत कहिण पहलों चोटी चाढ़ अखीर, इक्को मंग मंगाइंदा। भगवान कहे मैं बेनज़ीर, नज़र किसे ना आइंदा। भगत कहिण जिन्ना चिर ना वखाएँ आपणी सच तस्वीर, तेरा एतबार ना कोई धराइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करें दिलगीर, शरअ शरीअत विच फसाइंदा। दीन

९३३
१३

मज़ब पा लकीर, कूड़ी क्रिया वंड वंडाइंदा। कोई शाह कोई हकीर, दर दर अलख कोए जगाइंदा। तेरे भगत तेरा अमृत मंगण शीर, दूजी वंड ना कोए वखाइंदा। जिन्ना चिर ना बख्शे पिछली तकसीर, तदबीर आपणी आप समझाइंदा। भगवान कहे मैं सांझा पीर, सभनां संग निभाइंदा। भगत कहे तूं जुग जुग भगतां पावें भीड़, तेरा भेव कोए ना आइंदा। कलिजुग अन्त जिन्ना चिर ना बन्न्हे बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी इक जणाइंदा। भगत कहिण भगवान अनोखा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। भगवान कहे मैं जुग जुग देवां धोखा, मेरा अन्त कोए ना पाईआ। भगत कहिण कल सानूं मिल्या मौका, तेरी पिछली रीती देईए गंवाईआ। जिन्ना चिर ना दस्सें राह सौखा, असां नहीं मन्नणा रुस्से किवें मनाईआ। श्री भगवान वेख कहे बौहड़ी मैं हो ना जावां औंता, जे गुरमुख बैठे मुख भवाईआ। सचखण्ड मेरा पोचिआ रहि जाए चौंका, बहिण वाला नज़र कोए ना आईआ। निरगुण कूकर हो के भगत दवारे भौंका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मैं लाया आपणा ढौंका, अक्ख पलक ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत रिहा समझाईआ। भगत कहिण हो जा दूर, दूर दुराडे बेपरवाहीआ। पहलां कर साडा मुआफ़ कसूर, कसर पिछली रहि कोए ना जाईआ। दर्शन दे घर आ ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। जे सर्ब कला भरपूर, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरा जोती जोत नूर, निर्भय तेरी चतुराईआ। दर आ के साडे अन्दरों कूड़ा हूंझ, बण सेवक सेव कमाईआ। साडे नेत्र रोंदे पूंझ, आपणा पल्लू हथ्थ उठाईआ। पहलों साडे प्रेम अन्दर झूझ, साची सिख्या दे समझाईआ। आप आपणा भेव दस्स गूझ, दूई द्वैत पड़दा लाहीआ। फेर सानूं आवे सूझ, तेरी समझ समझ नाल मिलाईआ। पंज तत्त आपणा वेहड़ा कर के कूच, कूचे गली गुरमुखां होका दए सुणाईआ। तेरी कहाणी सुणीए सूचना सूच, सच सुच्च तेरी वड्याईआ। साडे मिलण दी रख भूख, प्रभ जे तूं भुक्खा होए आपणी प्रेम प्रीती तेरी झोली पाईआ। फेर तैनूं आवे सूख, तूं आपणा सुख जन भगतां विच टिकाईआ। जन भगत ना माणस रहे ना मनुक्ख, तेरी जोत रुशनाईआ। तेरा बालक बहि जाए तेरी कुक्ख, दूजा सके ना कोए उठाईआ। तूं प्रेम प्यार नाल वेख मुख, मुख आपणा दे वखाईआ। ओनां चिर नेड़े ना जावीं ढुक्क, असीं मन्नीए ना तेरी रज़ाईआ। जे तुठां ग़रीब निमाणयां आ के पुछ, क्यों रोंदे मारो धाहीआ। असीं अग्गों कहीए श्री भगवान साडे कोल नहीं कुछ, इक्को तेरे तेरी ओट तकाईआ। फेर वेखीं सानूं झुक, झुकवीं धार चलाईआ। सानूं एहो रीती रही पुग्ग, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जे सचखण्ड बैठा रिहों लुक, तेरा संग ना कोए रखाईआ। निर्भय निरवैर हो के बुक्क, भबक आपणी इक जणाईआ। तेरा नाँ अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दे कराईआ। तेरी सुहञ्जणी

सोहे रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी इक महकाईआ। की होया सानूं पंज तत्त दित्ता काया बुत्त, अंस तेरी रूप अख्वाईआ। क्यों बैठा हो के चुप, चुप बैठयां तैनूं लाज ना आईआ। तेरे भगत वसण अन्धेरे घुप्प, तेरा चन्द ना कोए रुशनाईआ। कृपानिध ठाकरस्वामी मेहरवान हो के उठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वधाईआ। भगवान कहे मेरा होए वाधा, वलदीअत आप जणाइंदा। भगत कहे असीं ना जाणीए प्यो दादा, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। भगवान कहे मैं सिध्धा सादा, वल छल ना कोए रखाइंदा। भगत कहे मैं पक्का रिध्धा, तेरे अग्गे आप टिकाइंदा। भगवान कहे मैनूं आए स्वादा, बिन रसना रस सुहाइंदा। भगत कहे तूं रखें लाजा, मेहरवान इक्को नज़री आइंदा। भगवान कहे मैं सन्त भगत मारां वाजां, बण दरबान सेव कमाइंदा। भगत कहे मैं आवां भाजा, चरणां राह तकाइंदा। भगवान कहे मैं वजावां वाजा, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। भगत कहे मेरा पड़दा काजा, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। भगवान कहे जन भगत मैं आपणा साजण साजा, बिन भगतां भगवान नज़र किसे ना आइंदा। भगत कहे मेरा ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणयां मेल मिलाइंदा। भगवान कहे भगत सच्चा राजा, दो जहानां राज कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक दूजे दा रखण डर, निडर दोवें रूप वखाइंदा। सचखण्ड सच्ची कुल्ली, कुलवन्ता आप बणाईआ। जन भगतां दए आप अणमुली, करता कीमत ना कोई लाईआ। भगत फुलवाड़ी साची फुल्ली, पत्त डाली आप महकाईआ। मंगी दात रसना जिह्वा बुल्हीं, बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा बन्धन चन्दन बन्दन नंदन दोहां दए चुकाईआ।

❇ १५ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिंघ दे गृह इटारसी ❇

हरि भगतो वेखो हरी दुआर, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। दर्शन करो अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण मन्दिर वखाए महल्ल अटार, ऊँचो ऊँच सच्चा शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण कर तैयार, निरगुण आपणी कार कमाईआ। एकँकारा कर पसार, वेखणहारा चाईं चाईंआ। आदि निरँजण कर उज्यार, नूरो नूर नूर धराईआ। अबिनाशी करता पावे सार, साहिब सतिगुर सहिज सुखदाईआ। श्री भगवान झुलाए निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सचखण्ड दुआर इक मकान, सच सिँघासण रिहा वछाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, नौजवान आपणा नैण उठाईआ। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह आपणी खेल कराईआ। देवणहारा

धुर फ़रमान, सच संदेसा इक सुणाईआ। मन्दिर सोहणा सच मकान, श्री भगवान आप बणाईआ। दिशा कूट सके ना कोए वखाण, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ। जन वेखो नेत्र नैण, निरगुण नरायण आप जणाइंदा। महिमा कोई ना सके कहिण, अकथ कथनी कथ कथ दृढ़ाइंदा। साहिब सतिगुर इक्को साक सज्जण सैण, श्री भगवान नज़री आइंदा। देवणहारा लहिण देण, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वखाइंदा। सच दवारा वेखो एक, एकँकार जणाईआ। आदि जुगादि जिस दी टेक, सो साहिब रिहा उपजाईआ। निरगुण सरगुण लिखणहारा लेख, लेखा आपणा दए जणाईआ। निरवैर निराकार अजूनी रहित धारनहारा भेख, वेस अवल्लड़ा, दए समझाईआ। सदा सदा सद करनहारा हेत, नित नवित्त कार कमाईआ। दो जहानां खेलणहारा खेल, ख़ालक ख़लक वड वड्याईआ। आपणा दस्सणहारा भेत, अनभव प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर रिहा समझाईआ। साचा मन्दिर वेखो आण, अनडिठड़ा आप वखाइंदा। मेल मिलाए श्री भगवान, मेला इक्को घर जणाइंदा। गुर अवतार करन ध्यान, पीर पैगम्बर नैण उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, निउँ निउँ सजदा सर्ब कराइंदा। निर्मल जोत जगे महान, शब्द अनादी राग अल्हाइंदा। भूपत भूप नौजवान, नर नरायण नज़री आइंदा। सदा सदा सद भगत भगवन्त करे परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। दर सदे आप मिहमान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। देवणहारा दरस दान, दाता दानी झोली आप भराइंदा। आदि जुगादी सच्चा काहन, सति सरूपी नज़री आइंदा। आ के वेखो हरि दी शान, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। साचे भगत वेखो दरवाज़ा, दीन दयाल आप खुल्हाईआ। किरपा करे ग़रीब निवाज़ा, जगत निमाणे रिहा जगाईआ। निरगुण हो के फिरे भाजा, सरगुण मेल मिलाईआ। शब्द अगम्म वजाए वाजा, सुर ताल ना कोए वजाईआ। आत्म परमात्म रचया काजा, ब्रह्म पारब्रह्म वखाईआ। सदा सुहेला रखे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल रिहा जणाईआ। आओ भगतो वेखो महल्ला, निरगुण निरवैर आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बैठा इक इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण दीपक आपे बला, तेल बाती कोए ना पाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, अस्थिल दवारा इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप मिलाइंदा। आओ भगतो वेखो भगवान, सच दवारा इक वड्याईआ। जिस दा झुलदा रहे

निशान, जुग चौकड़ी आप झुलाईआ। जिस दा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक अल्लाईआ। जिस दा नाम शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान दए समझाईआ। जिस दी पछाण अञ्जील कुरान, खाणी बाणी करे ध्यान, ध्यान विच कदे ना आईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी गावण गाण, गा गा शुकर मनाईआ। जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव करे ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। जिस दा इक्को नाम परवान, कोटन कोटि नाम सिफ्त सालाहीआ। जिस दा इक्को इक विधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर रिहा जणाईआ। आओ भगतो वेखो नठ्ठ, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। वसणहारा घट घट, दर मन्दिर कुंडा लाहइंदा। आपणा पड़दा लाहो झट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। निरगुण वेखो पुरख समरथ, नर नरायण नज़री आइंदा। लेखे लाओ आपणी रत्त, रत्ती रत रत रंगाइंदा। इक्को सिखो ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। नाता तुटे पंज तत्त, तत्त कम्म किसे ना आइंदा। मेल मिले कमलापति, कँवल नैण वेख वखाइंदा। सच सरनाई जाओ ढठ्ठ, सच दवारा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। भगत कहिण प्रभ आवांगे। तेरा दर्शन पावांगे। नेत्र नैण रजावांगे। मन बुद्धि मति तेरी भेंट चढ़ावांगे। सुरती सुरत चढ़ावांगे। शब्दी राग अलावांगे। बण वैरागी नेत्र नैणां नीर वहावांगे। तेरी पिछली वादी, कर फ़नाह आसान वखावांगे। तूं बणें कन्त सुहागी, हउँ सेवक नार अख्वावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मन्दिर वेख वखावांगे। तेरे मन्दिर वेखण दा चाउ, भगत भगवान रहे जणाईआ। आदि अन्त तेरा पसाउ, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। तेरा किसे नज़र ना आए थाउँ, जिस घर वसें सच्चे माहीआ। कर किरपा आपणी पकड़ा बांहों, पल्लू आपणे नाल गंढ्ढाईआ। पहलों दस्स आपणा सच्चा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। फेर दे ठंडी छाउँ, त्रैगुण अग्नी तत्त ना लागे राईआ। आप बण पिता माउँ, भगत बालक रूप सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे मन्दिर मिले वड्याईआ। तेरे मन्दिर आवांगे। गीत गोबिन्द अलावांगे। सोहँ ढोला गावांगे। तूं मेरा मैं तेरा इक्को बन्धन पावांगे। मन होए चाउ घनेरा, मन वासना मेट मिटावांगे। तेरे मन्दिर कर के डेरा, फिर बाहर कदे ना धावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर तेरा दर्शन पावांगे। घर दर्शन तेरा करांगे। श्री भगवान तैनूं वरांगे। कलिजुग अन्त मूल ना डरांगे। तेरे साचे पौड़े चढ़ांगे। निरगुण तेरी धार फड़ांगे। जोती शब्दी कर प्यार, तेरे महल अटल वड़ांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लग्ग चरणी तेरे तरांगे। चरण ला तरावांगा। सच मलाह अख्वावांगा। बेड़ा पार करावांगा। आपणे कंध उठावांगा। दो जहानां चरणां

हेठ दबावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव कोलों सीस झुकावांगा। सतिजुग साची रीत चलावांगा। दो जहानां इक हदीस पढ़ावांगा। लहिणा चुका तीस बतीस, छत्ती पन्ध मुकावांगा। लख चुरासी जीत, भगत भगवान वडयावांगा। गुरसिख काया मन्दिर देहुरा मसीत बणावांगा। पा सार डूँग्घी कन्दर, काया हाटी खोज खुजावांगा। मन वासना बन्नृ बन्दर, इक्को ध्यान जणावांगा। लेखा जाण डेरा खण्डर, खण्डा नाम चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल मिलावांगा। जन भगतां मेला होएगा। श्री भगवान दुरमति मैल धोएगा। अमृत निझर रस झिरना चोएगा। भगत भगवान इक्को जिहा होएगा। आत्मा परमात्मा नाल छोएगा। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा बीज बोएगा। गुरमुख विछोड़े विच कदे ना रोएगा। सुरती शब्दी जोड़ जोड़े, आपणे धागे विच परोएगा। कूड़ी क्रिया दर तों होड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप भगतां जोगा होएगा। भगतां जोगा होवांगा। दिवस रैण कदे ना सोवांगा। साचा नाम ढोआ ढोवांगा। लख चुरासी कोलों पिछली कीती सारी खोहवांगा। सतिजुग अग्गे बीज बोवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आत्म सेजा सोवांगा। प्रभ आत्म सेज विछावांगे। तेरे प्रेम दी बरखा लावांगे। नित नवित्त तेरा राह तकावांगे। तूं साहिब सदा अनडिठ, मिन्नतां कर कर तैनूं मनावांगे। तेरे प्रेम नाल तैनूं जित, आपणे घर वसावांगे। जे करवट बदल देवें पिठ, फड़ बांहों गले लगावांगे। करीए प्यार पुत्तर मात पित, तेरी सेज सुहञ्जणी चढ़ के ख़ुशी मनावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे मन्दिर सोहणे आवांगे। सोहणा मन्दिर वखावांगा। जग आउणा जाणा पन्ध मुकावांगा। साची सेजे सौणा आप समझावांगा। सोहँ ढोला नाम गाउणा, दूजा पढ़ना बंद करावांगा। चरणी छोहणा, साची रीत दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप उठावांगा। जन भगतां आप उठाऊँगा। बण सेवक सेव कमाऊँगा। दर दर घर घर फेरा पाऊँगा। जग रुसड़े आप मनाऊँगा। जग विछड़े गले लगाऊँगा। सुण दुखड़े दुःख मिटाऊँगा। अगम्मी कुखड़े भार कराऊँगा। उज्जल मुखड़े मात वखाऊँगा। सुकड़े रुख हरे कराऊँग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर आप जणाऊँगा। हरि मन्दिर इक वडयावांगा। डूँग्घी कन्दर पन्ध मुकावांगा। रवि ससि नैण शरमावांगा। हस्स हस्स जन भगतां अंग लगावांगा। नस्स नस्स दो जहानां पन्ध मुकावांगा। दस्स दस्स साचे मार्ग आपे लावांगा। रस रस अमृत रस इक छिटकावांगा। जस जस दो जहानां ढोला अलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग अन्तिम भेव जणावांगा। कलिजुग अन्तिम भेव खोलांगा। निरगुण हो के बोलांगा। सरगुण

तोल तोलांगा। भगत भगती विच्चों फोलांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि कदे ना डोलांगा। आदि जुगादि कदे ना डुल्लेगा। श्री भगवान बूटा ना हुलेगा। हरि भगत सदा सदा फुल फुलेगा। लोकमात कदे ना रुलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां कदे ना भुलेगा। भगत कहिण प्रभ सच रीत, इक्को वार जणाईआ। कवण दवारे बणें मीत, मित्र प्यारा अख्वाईआ। कवण सुणाएँ अगम्म गीत, अनडिठड़ी धार चलाईआ। कवण रूप वसें मीत, रेख रंग ना कोए जणाईआ। कवण बिध कराएं प्रीत, प्रीतीवान तेरी वड्याईआ। कवण धार लएं जीत, हार नज़र कोए ना आईआ। कवण मेहर करें काया ठांडी सीत, अमृत मेघ बरसाईआ। कवण जस करया अतीत, त्रैगुण लेखा मात चुकाईआ। कवण रंग वसें हस्त कीट, बेपरवाह सच्चे शहिनशाहीआ। कवण हुक्म परखें नीत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत मंग मंगाईआ। भगवान कहे की दस्सां सज्जण, सच सच जणाईआ। पहलां देवां चरण धूढ़ मजन, दुरमति मैल धवाईआ। प्रेम भगती जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, भरम भउ गढ़ रहिण ना पाईआ। निर्मल काया होए कंचन, काया माटी लेखे लाईआ। नेत्र नाम पावां अंजन, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अनहद नाद अनादी वज्जण, सुर ताल ना कोए समझाईआ। फिर होवां पड़दे कज्जण, मेहर नज़र इक उठाईआ। सन्त सुहेले कूड़ी क्रिया तज्जण, नज़री इक्को इक आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ। भगत कहिण प्रभ दस्स हाल, हालत आपणी दे जणाईआ। किस बिध तोड़ें त्रैगुण माया जंजाल, जीवण युगत दएं जणाईआ। किस बिध भय चुकाएं काल, महाकाल नेड़ ना आईआ। किस बिध जन्म जन्म ना होए ज़िवाल, लख चुरासी फंद कटाईआ। किस बिध चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। किस बिध लाड़ी मौत ना वजाए ताल, घर घर फेरा पाईआ। साडा तेरे अग्गे इक्को स्वाल, कर किरपा हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा जणाईआ। जन भगतो चरण करो ध्यान, हरि सरन मिले वड्याईआ। त्रैगुण माया रहे ना काण, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। काल महाकाल ना कोए निशान, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। आत्म परमात्म देवे इक्को ज्ञान, सोहँ ढोला गाउणा चाईं चाईंआ। साहिब सतिगुर मिले आण, बेपरवाह फेरा पाईआ। जीवंदयां करे कल्याण, मरयां नेड़ कोए ना आईआ। अन्तिम देवे शब्द बबाण, फड़ बांहों विच बिठाईआ। जोती जोत मिलाए श्री भगवान, आवण जावण रहिण ना पाईआ। उठो भगतो करो ध्यान, हरि ध्यानी रिहा जणाईआ। साचा मन्दिर वेखो मकान, बे मुकाम रिहा

वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाईआ। भगत कहिण असीं चल्लांगे। प्रभ तेरा दर मल्लांगे। जोती धार विच रलांगे। मुड़ के फेर कदे ना हल्लांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी साया हेठ पलांगे। तेरी साहिब साया तक्कांगे। आदि जुगादि कदे ना अक्कांगे। दरस कर कर मूल ना थक्कांगे। तेरे चरणां उत्ते आपणा सीस सट्टांगे। पिछांह करें ते मूल ना हटांगे। कर प्यार अग्गे डटांगे। तेरा नाम इक्को रटांगे। तेरा प्रेम रस चट्टांगे। तेरे दर ते लाहा खट्टांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे प्रेम विच आपणा प्रेम रंगांगे। सच प्रेम रंगावांगा। हरि भगतां मेल मिलावांगा। अंगीकार अख्वावांगा। संगी बण के जावांगा। बहु रंगी खेल करावांगा। अणमंगी भिच्छया पावांगा। सच सरंगी नाम वजावांगा। मृदंगी इक्को हथ्थ उठावांगा। गुरमुख नंगी ना होए कंडी, सिर आपणा हथ्थ टिकावांगा। लख चुरासी होए रंडी, कन्त सुहाग सर्ब वखावांगा। ना कोई दिसे भेख पखण्डी, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ावांगा। नाम फड़ चण्ड प्रचण्डी, दो जहानां वेख वखावांगा। जन भगतां इक्को छन्दी, सोहँ ढोला नाम जपावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रहबर हो के आवांगा। रहबर हो के आएगा। नूर इलाही नूर रुशनाएगा। मुकामे हक़ सोभा पाएगा। कलमा नबी इक जणाएगा। रसूल आपणा पड़दा लाहेगा। कायनात वेख वखाएगा। मार झात ताक खुल्हाएगा। पिछली वाट याद कराएगा। चौदां तबक वेख वखाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद उठाएगा। साचा सूसा तन पहनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां घर जणाएगा। जन भगतां घर जणावांगा। पिछला लेख मुकावांगा। अगला हेत दृढ़ावांगा। नेतन नेत नज़री आवांगा। पहली चेत रुत्त सुहावांगा। निरगुण हो के भेत खुल्हावांगा। सरगुण आपणे विच लपेट, पड़दा पावांगा। बण खेवट खेट, बेड़ा आपणे कंध उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। साची सेवा कार कमाऊँगा। जन भगत दवारे आऊँगा। बण बरदा फेरा पाऊँगा। डरदा डरदा पड़दा लाहूंगा। दर झोली मंग मंगाऊँगा। हौली हौली खेल वखाऊँगा। धरत धवल धौल भार लाहूंगा। नाल नाल अट्टी मौली बन्न्ह ल्याऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाऊँगा। आपणी मौली लै के आवां अट्टी, तन रतड़ा रंग रंगाया। पीर पैगम्बर भरन चट्टी, बैठे सीस झुकाया। पिछली वेखण लिखी पट्टी, अल्फ़ ये पड़दा लाहया। आलम उल्मा खट्टी किसे ना खट्टी, खटका घर घर नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तन्दी तन्द उठाया। एका तन्दी मैहन्दी रंग, मौला रूप वखाईआ। सच दवारे सच पलँघ, निरगुण नच्चे उपर मलंग, सेली टोपी

नज़र कोए ना आईआ। करे खेल सूरा सरबँग, दो जहानां इक अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। चार दीवारी पार कंध करे बख़्शंद, बख़्शश नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गाना इक वखाईआ। साचा गाना नौजवान, निरगुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। चौथे दर हो बलवान, मेहरवान भेव चुकाइंदा। दो जहानां हुक्मरान, सच संदेसा इक सुणाइंदा। पीर पैगम्बर करन ध्यान, नेत्र नैण सर्ब कुरलाइंदा। मीआं बीवी होए हैरान, शरअ शरीअत पन्ध मुकाइंदा। लेखा जाण अञ्जील कुरान, कलमा नबी फोल फुलाइंदा। पड़दा खोल्ह दीन इस्लाम, अलैकम इक्को घर समझाइंदा। नज़री आए इक अमाम, अमन दो जहान कराइंदा। पेशतर पेशीनगोई कोई ना सके पहचान, पश्चाताप सर्ब वखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार संदेसा दे दे दस्स गए निशान, पड़दा पाड़ बे पड़दा ना कोए कराइंदा। आपणी आप जाणे भगवान, जन भगतां वखाए साची शान, महल अटल इक मकान, बेमिसाल बेनज़ीर अख़ीर आपणी कल धराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप रंग रेख ना कोए निशान, शब्द अगम्म इक धुन्कान, राग नाद सब दा पन्ध मुकाइंदा।

❇ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी ❇

सचखण्ड कहे प्रभ दस्स सरोत, बिन सरवणां दे समझाईआ। सच तूं भगतां उत्ते होया मोहत, मेहर नज़र उठाईआ। मेल मिलाया निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाता तोड़या वरन गोत, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। माया ममता कढुया खोट, वासना दुर्गन्ध रहिण ना पाईआ। दित्ता नाम भण्डारा अतोट, अतुट आप वरताईआ। राह तक्के तेरा सच दुआर कोट, नैण नैण उठाईआ। कवण वेला तेरे भगतां पूरा होवे शौंक, संसा रहे ना राईआ। मैं अमृत तेरा देवां तरौंक, सदा सद सेव कमाईआ। कवण वेले जाण पहुंच, आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साची चले रौंस, रहबर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सचखण्ड कहे मैं करां सफ़ाई, आप आपणी सेवा लाईआ। कवण वेला वज्जे वधाई, गृह मन्दिर होए शनवाईआ। तेरे भगत आवण चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक रखाईआ। तूं पकड़ें आपणी हथ्थीं बांहीं, फड़ बांहों नाल मिलाईआ। वेख वखाएं थाउँ थाईं, लख चुरासी खोज खुजाईआ। चार वरनां देवें छाईं, गोबिन्द अंग लगाईआ। गोबिन्द लेखा चुके छींबे झीवर नाई, नेत्र नैणां नैण दरसाईआ। लोकमात पुटया बूटा काही, कागज़ कलम लिखे कोए ना शाहीआ। सचखण्ड साचे साचा रंग वखाईं, रंग इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरणां सीस टिकाईआ।

६४२
१३

सचखण्ड कहे मैं खोल्लां ताकी, पड़दा आपणा आप उठाइंदा। कवण वेला चढ़ें साचे राकी, अस्व इक्को नज़री आइंदा। जन भगतां देवें लहिणा बाकी, पूरब लेखा झोली पाइंदा। लोकमात बदल देवें हयाती, आप आपणे रंग रंगाइंदा। एका देवें नाम सच निशानी, नछावर आपणा आप कराइंदा। इक सुणाएं साची साखी, साख्यात आपणा रूप दरसाइंदा। निरगुण हो के बणे साथी, सरगुण संग निभाइंदा। करें खेल पुरख समराथी, समरथ आपणी कल वरताइंदा। नेत्र रोवे ऐरावत हाथी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। सचखण्ड कहे मैं तक्कां राह, नेत्र नैण उठाया। पुरख अबिनाशी दे सलाह, गल पल्लू इक्को पाया। कवण वेला जन भगतां बहाए मेरे थाँ, मेरी तृष्ना भुक्ख मिटाया। जो इक्को गावण तेरा नाँ, दूजा इष्ट ना कोए मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, बण दर्दी दर्द वंडाया। सचखण्ड सच कर ख्याल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण हो के बणां दलाल, लोकमात वेख वखाइंदा। भगत उठावां साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। मुरीदां जा के पुच्छां हाल, मुर्शद आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। गोबिन्द हल्ल करां स्वाल, पिछला लेखा झोली पाइंदा। शब्द अगम्म वजावां ताल, राग नाद ना कोए सालाहइंदा। नाता तोड़ कूड़ी क्रिया काल, कालख टिक्का मस्तक लाहइंदा। लोकमात कर प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। आपणी पूरी कर घाल, कीती घाल भगतां झोली पाइंदा। अन्दर बाहर चलां नाल नाल, दिवस रैण संग निभाइंदा। गगन मण्डल दीपक वेखां थाल, सति आपणा नूर धराइंदा। जगत युगत चलां अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाइंदा। भाग लगा काया माटी खाल, तन मन्दिर आप सुहाइंदा। जगत माया तोड़ जंजाल, जीवण युगत आप जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों भाल, भल्ला इक्को नाम हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति कर्म कमाइंदा। सचखण्ड सच लैणा वेख, सच सच दृढ़ाइंदा। सच प्रभ सच धारे भेख, सच साची कार कमाइंदा। सच दाता अलखना अलेख, सच आदेस कराइंदा। सच निरवैर खोल्हे भेत, नर निरँकार फेरा पाइंदा। सच सच सच करे हेत, हितकारी दया कमाइंदा। लख चुरासी वेख खेत, हरिजन साचे पकड़ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी आसा मेल मिलाइंदा। सचखण्ड प्रभ दए भरवासा, इक्को हुक्म जणाईआ। दीन दयाल पूरी करे आसा, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम उलटणहारा पासा, उलटावणहारा आप उलटाईआ। जन भगतां देवे सगला साथा, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। होए सहाई नाथ अनाथां, निर्धन सरधन वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा चुके ज़ात पातां, पत पतवन्ता इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड तेरी दस्से सच्चीयां बातां, सच कहाणी आप सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ जा दौड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। बिन भगतां लग्गी मैनूं औड़, मेरी तृखा ना कोए बुझाईआ। मेरा दुआर दिसे चौड़, चार कुण्ट ना कोए रुशनाईआ। जे मैं वेखां कर के ग़ौर, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। दो जहान कूड़ा प्या शोर, शौहर नज़र किसे ना आईआ। की तूं होर कि भगत होर, आपणा भेत दे समझाईआ। जे तेरे सिर ते झुलदा चौर, क्यों भगतां ख़ाक मिलाईआ। प्रभ तेरे हथ्थ डोर, क्यों गुडी असमानों नीचे सुटाईआ। की होइउँ अन्धा बोल, नेत्र ना पेखें भगतां आवाज़ कन्न तेरे सुणन ना पाईआ। कोटन कोटि कबीर तेरे दर ते वजा गए ढोल, तेरी सुरत ना किसे खुल्हाईआ। नानक निरगुण हो के तोल गया तोल, सरगुण आपणे कंडे पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तूं ग़रीबां नाल करें मख़ौल, तैनूं लज्जया ज़रा ना आईआ। तूं गोबिन्द नाल कीता कौल, कलिजुग अन्तिम आवां हो के बेपरवाहीआ। हौला भार करां धरनी धौल, धवल आपणा चरण टिकाईआ। जा के भगतां अन्दर मौल, आपणा मुल लै पवाईआ। सच दुआर जा के खोल्ह, सचखण्ड रोवे कुरलावे मारे धाहींआ। जा के बद्धी गठड़ी फोल, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। जे बणया रिहों अनभोल, तेरा निशाना जगत विच रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच रिहा मंग मंगाईआ। सचखण्ड मेरे अस्थान, तेरी मन्नां अरज़ोईआ। मैं वसां तेरे मकान, दर तेरे मैनूं ढोईआ। सुण तेरा फ़रमान, मैं आपणा बल गंवाईआ। सच मैं भगवान, मेरा कीता समझ कुछ ना पाईआ। दो जहान मैनूं कहिण अणजाण, मेरा भेव कोए ना पाईआ। बिन भगतां किसे ना आवे ज्ञान, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। मैं जा के देवां धुर फ़रमान, सच संदेसा इक सुणाईआ। आओ बच्चयो मिलो मेरे नाल, पिछला दुःख गंवाईआ। अग्गे मार्ग दस्सां सुखाल, सुत्तयां आप जगाईआ। अन्दर वड़ के चलां नाल नाल, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। ना कोई वेखां शाह कंगाल, ग़रीबां अन्दर वड़ वड़ खुशी मनाईआ। जे कोई लभ्भे मेरी चाल, दो जहान पैड़ नज़र किसे ना आईआ। निरगुण हो के घालण लवां घाल, सरगुण साची सेव कमाईआ। भगत प्यार पिच्छे होवां बेहाल, बिहबल हो के दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे रिहा समझाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ मैं तेरा लारा, जुग जुग वेंहदा आया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तूं रिहों कुँवारा, आपणे अंग ना किसे लगाया। दूर दुराडा हुक्मे अन्दर दस्सदा रिहों इशारा, शब्दी नाउँ उपजाया। पंज तत्त वजाउदा रिहों नगारा, आपणा मुख छुपाया। नाँ रख गुर अवातारा, भेव किसे ना हथ्थ फड़ाया। पीर पैगम्बर गाउँदे गए तेरी वारा, वितकरा सब दे विच भराया। आप वड़या रिहों मेरे अन्दर डूँघी ग़ारा, आपणा मुख ना किसे वखाया। जिस वेले तेरा भगत दुखी

६४३
१३

हो के मारे नाअरा, निरगुण सरगुण हो के मेल मिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लुक लुक करया खेल न्यारा, अछल अछल्ल आपणी धार चलाया। कलिजुग अन्तिम तेरा वेखणा सच पसारा, पसर पसारी बेपरवाहया। तेरे भगत तेरा मंगण दीदारा, दूजा दरस किसे ना भाया। गोबिन्द लिख के गया लिखारा, लिख्या लेख ना किसे मिटाया। कह के गया पुरख अकाल पिता हमारा, पूत सपूता गोद सुहाया। कल रखे नाउँ निहकलंक कलि कल्की अवतारा, कल कलेश मेट मिटाया। जा के भगतां दे सहारा, क्यों बैठा मुख छुपाया। उन्नी साल बणया रिहा वणजारा, जगत हट्टो हट्ट जणाया। हुण करीं ना होर उधारा, राह तक्कदयां तक्कदयां तेरयां भगतां औखा झट लँघाया। इक वार दे के आ इशारा, आस्म आपणा दे समझाया। बंद किवाड़ी खोल्ह कवाड़ा, घर मन्दिर सोभा पाया। अन्दर वड़ के तूं कह मैं भगतां प्यारा, प्यार भगतां विच वखाया। फिर तेरा लावण नाअरा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुण्ट नज़री आया। फिर तैनूं कोई ना कहे कुँवारा, क्यों, तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को घर जोड़ जुड़ाया। सचखण्ड कहे मैं दोह हथ्थां नाल वजावां नगारा, दो जहानां दयां सुणाया। पीर पैगम्बर करां ख़बरदारा, तेरी साची ख़बर जणाया। आओ वेखो परवरदिगारा, जिस ने आपणा नूर धराया। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद कहे साडा यारा, यारी यारां नाल हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, घर साचा सोभा पाया।

✻ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी सुरिन्दर सिँघ दे गृह इटारसी ✻

प्रभ भगतां दस्स आपणा ढंग, पड़दा आप उठाईआ। निरगुण हो चाढ़ रंग, सरगुण रंग रंगाईआ। अन्दरों वजा मृदंग, नाम सतार हिलाईआ। कर प्रकाश आपणा चन्द, नूर जोत रुशनाईआ। अमृत प्याया ठंड, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। पिछली टुट्टी आपणी हथ्थीं गंढ, गंढणहार गोसाईंआ। जगत रंडेपा कट रंड, सुहाग रूप वटाईआ। आपणा ढोला सुणा छन्द, सोहँ अक्खर कर पढ़ाईआ। खुशी करां बंद बंद, बंदीख़ाना रिहा तुड़ाईआ। लेखा चुका बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। अन्तर आत्म दे अनन्द, रस इक्को इक चखाईआ। जगत विकारा कर खण्ड खण्ड, खण्डा नाम खड़काईआ। आवण जावण मुका पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगतां जा के दस्सां आप, आपणी सेव कमाईआ। पूरब जन्म लाह पाप, पतित पुनीत कराईआ। निरगुण हो के बणां साक, सरगुण संग वखाईआ। नज़री आवां इक्को बाप, गुर अवतार पीर पैगम्बर चाचा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को दस्सां आत्म

परमात्म जाप, जीवण युगत जगत जणाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हां ताक, पड़दा आपणा आप उठाईआ। बिन नेत्र वेखां झाक, झाकी आपणी आप दिवाईआ। बिन रसना जिह्वा करां बात, शब्द अगम्म अथाह सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। भगतां कोल जा भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा घर दे तज, भगत दुआर मिले वड्याईआ। जा के दर्शन कर रज्ज, आपणी भुक्ख गंवाईआ। हुण लावीं ना कोई पज, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। सच सिँघासण बहि के सज, बैठा तेरा राह तकाईआ। निर्धनां जा के पड़दा कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच नगारा हो के वज्ज, नाम आपणे चोट लगाईआ। शेर बब्बर हो के गज्ज, गर्ज इक्को इक सुणाईआ। कोझयां कमल्यां रख लज्ज, लज पति तेरे हथ्थ फड़ाईआ। दर दरवेश हो के नच्च, मलंग रूप बणाईआ। सच ढोला जा के दस्स, सच्चो सच पढ़ाईआ। हिरदे अन्दर जा के रच, लूं लूं तेरा नाम ध्याईआ। वेखीं कौल ना करीं कच, इकरार इक्को इक जणाईआ। अग्गों श्री भगवान कहे हस्स, मैं जावां चाईं चाईंआ। जा के भगतां होवां वस, आपणा माण ना कुछ रखाईआ। जिध्धर कहिण ओधर जावां नठ्ठ, बण पांधी फिरां राहीआ। जे अग्गों घूरन मूधा पै के जावां ढठ्ठ, आपणा बल मिटाईआ। जे निउँ के वेखण नज़री आवां पुरख समरथ, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जे भज्जण लग्गण अन्दर वड़ के पावां नथ्थ, डोरी आपणा नाम बंधाईआ। जे गावण लग्गण जस, सोहँ ढोला दयां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ। जा छेती मेरे परवरदिगार, दो जहान आप सहाईआ। वेख आपणे यार, यारड़ा सथर इक हंढ्ढाईआ। तेरे पिच्छे होए ख्वार, ख्वारी सब दे सिर ते छाईआ। बिन तबीबों होए बीमार, सार कोए ना पाईआ। बिन हदीसों होए गंवार, कलमा हक़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे घर तोट ना दिसे राईआ। श्री भगवान कहे मैं की करां, करतब नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां कोलों डरां, डर डर आपणा मुख छुपाईआ। किस बिध जा के अन्दर वड़ां, औदां जांदा नज़र ना आईआ। रातीं सुत्तयां जा के फड़ां, ग़फ्लत विच वेखां सर्ब लोकाईआ। साचे मन्दिर जा के चढ़ां, चढ़ चढ़ खुशी मनाईआ। भगत भगवान दा इक्को अक्खर पढ़ां, सोहँ ढोला आपे गाईआ। पंच विकारे नाल लड़ां, आपणा बल धराईआ। निमाणां हो के सेव करां, सेवक आपणा रूप वखाईआ। भगतां मरनी आप मरां, जन भगतां तत्ती वा ना लागे राईआ। निरगुण हो के भाणा आप जरां, सरगुण आपणी गोद बहाईआ। पारब्रह्म हो के ब्रह्म वरां, नार कन्त रूप दरसाईआ। दो जहान लख चुरासी अग्गे बलकारी हो के अड़ां, बल आपणा आप समझाईआ। नाता तुड़ावां सिरां धड़ां, धड़ सीस रहिण कोए ना पाईआ। सब दीआं पुट्टां जड़ां, फेर सके ना कोए लगाईआ।

आदि जुगादि जुगा जुगन्तर किसे कोलों ना हरां, हार गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्न मन्न बैठे ढेरीआं ढाहीआ। जन भगतां भाणा सदा जरां, जर जर आपणा शुकर मनाईआ। कदे ना आवां विच शरअ, शरीअत उंगलीआँ उत्ते नचाईआ। पावां सार दर दरां, घर गुरमखां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची रिहा जणाईआ। सचखण्ड कहे मैं होया खुश, सुणी तेरी कहाणी। जिन्ना चिर भगतां वल ना वेखें झुक, तेरी मिले ना कोए निशानी। जे बैठा रिहों चुप, अन्त होऊ तेरी हानी। तेरा गोबिन्द बूटा रिहा सुक, जा के अमृत दे पाणी। छोटे बाल्यां गोदी चुक्क, जिन्हां नीहां हेठ दिती कुरबानी। जा आपणी मेट भुक्ख, राह तक्के तेरा चार खाणी। धरत धवल सुखणा रही सुख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चौकड़ी औध रही पुग, दिसे सुघड़ सुचज्जी ना कोए सवाणी। हुण क्यों बैठा साहिब लुक, पिच्छे जुग चौकड़ी आपणी दस्सदा रिहों बाणी। सूरबीर हो के उठ, कर खेल आप महानी। मेल मिला गोबिन्द सुत, दे आपणे नाम जवानी। दो जहानां जा के पुच्छ, शहिनशाह शाह सुल्तानी। आपणे निशान्यौं मूल ना उक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा घर पद निरबाणी। सचखण्ड सुण, सच्ची सच जणाईआ। मैं छेती जावां हुण, आपणा पन्ध मुकाईआ। भगत साचे लवां चुण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। इक समझावां आपणा गुण, गुरा इक देहि बुझाईआ। जीव जंत छाण पुण, साध सन्त बाहर कढ्ढाईआ। नाम निधान वजावां धुन, धुन आत्मक राग सुणाईआ। करां खेल आपणा फुन, फ़ुरे मंत्र सभनी थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे रिहा जणाईआ। सचखण्ड कहे साहिब बड़ा दूल्हा, बेअन्त तेरी वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी फलया फूला, लख चुरासी मात लहराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा लैंदे गए झूला, झूला जीव जंत जणाईआ। निरगुण तेरा दस्सदे गए सति असूला, असलीयत लिख लिख लेख समझाईआ। तेरा आदि ना जाणे कोई मूला, अन्त भेव कहिण ना पाईआ। तेरा हकीकत विच जवाब दित्ता ना किसे माअकूला, मुख़बर बण के मुख़बरी गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वज्जी वधाईआ। सचखण्ड रख उडीक, हरि हरि जू आप जणाइंदा। करे खेल लाशरीक, शिरकत सब दी मेट मिटाइंदा। तेरे वेंहदयां मेरी आई तरीक, जन भगतां मेल मिलाइंदा। सच दवारे बज्झे प्रीत, प्रीती इक्को इक समझाइंदा। सति धर्म दी चले रीत, रीतीवान आप दरसाइंदा। इक्को गावण ढोला गीत, मन्दिर इक्को नज़री आइंदा। इक्को बैठा रहे अतीत, त्रैगुण माया डेरा ढाइंदा। इक्को सब नूं लए जीत, जित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां कर काया ठांडी सीत, सीतल धार वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड तेरी आसा पूर कराइंदा।

९४७

१३

तेरी आसा पूर करावांगा। बण पांधी राही जावांगा। गुर अवतार पीर राह विच्चों नाल मिलावांगा। पैगम्बर इशारयां नाल समझावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव हनोरयां नाल उठावांगा। करोड़ तेतीसा फोरयां नाल मिलावांगा। बण शहिनशाह शाह पातशाह अस्व घोड़े आसण पावांगा। सेवा ला राग छतीसा, छत्ती जुग दा गेड़ चुकावांगा। ख़ाली कर सब दा खीसा, ख़ाली हथ्थ फिरावांगा। निरगुण वेख सरगुण बीसा, बिस्तरा सब दा गोल करावांगा। साचे तख्त बैठ जगदीशा, जगदीश्र आप अख्वावांगा। छत्र झुले एका सीसा, सीस जगदीश ताज वडयावांगा। दो जहानां पीसण पीसा, लोआँ पुरीआँ वेख वखावांगा। लेखा जाणे सिँघ मनजीता, मन जित सर्ब समझावांगा। खेले खेल आप जगदीशा, जगत जुग राह जणावांगा। भगत दुआर मेल अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमावांगा। मिट्ठा कर के कौड़ा रीठा, अमृत रस भरावांगा। भगत भगवान सच प्रीता, परम पुरख हो समझावांगा। निरगुण हो के वस चीता, चेतन सर्ब करावांगा। सच सिँघासण बैठ अतीता, लोक परलोक इक्को नाद वजावांगा। नाउँ धर पुरख अबिनाशन , अबिनाशी राह चलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत दवारे बहि बहि आपणा राग अलावांगा। सचखण्ड कहे केहड़ा भगत दुआर, कवण कूटे रिहा बणाईआ। जिस गृह करें श्रृंगार, आपणी शान वखाईआ। जिस अन्दर करें उज्यार, आपणा नूर धराईआ। जिस मन्दिर दएं आधार, दो जहान मिले वड्याईआ। जिस गृह भगतां करें प्यार, प्रेम प्रीती इक सिखाईआ। जिस दवारे गुर अवतार रखें नाल, पीर पैगम्बर चरणां विच बिठाईआ। जिस घर विष्न ब्रह्मा शिव वजावण ताल, बैठे ताड़ीआं लाईआ। जिस दर आपणी घालण लए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। सो मन्दिर कवण बेमिसाल, मिसल साची रिहा बणाईआ। मेरा पूरा कर स्वाल, आपणा खोल्ह हाल जणाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, सच दवारे रिहा जणाईआ। जिस दवारे नींहां हेठां दित्ते बाल, सो दवारा दो जहानां करे रुशनाईआ। उस दवारे नेड़ ना आए काल महाकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। पहली चेत्र सच्चा मार्ग आवां सिखाल, चौथी मंज़ल चढ़ के आपणा हुक्म सुणाईआ। दोहां हथ्थां उत्ते स्वाल, दोहां दा लेखा अग्गे फेर बुझाईआ। करे खेल आप कमाल, करतब नज़र किसे ना आईआ। भगत वछल हो कृपाल, भगतां देवे माण वड्याईआ। आपणी प्रीती कर हलाल, छुरी गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर रिहा बणाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्हे अक्ख, नैण नैण उठाईआ। मैं वेखां प्रभ दा खेल प्रतख, जो लोकमात रिहा कराईआ। जन भगतां करे किवें पक्ख, पत्त पतवन्ता सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी एहदा गाउँदे आए जस, क्यों एह भगतां जस रिहा गाईआ। निरगुण हो के होया वस, सरगुण अन्दर डेरा लाईआ। ग़रीबां विच गया फस, भुख्यां

अग्गे आपणा वास्ता पाईआ। भज्जा फिरे हो अनथक्क, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। अग्गों कोई ना सके डक्क, कोटन कोटि बैठे आपणा बल धराईआ। नेड़े आ के सब नूं वज्जे फट्ट, मूँह दे भार रिहा सुटाईआ। जन भगतां खोल्ह हट्ट, दवारा इक्को इक दरसाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कल वरताईआ। दवारा खोल्ह ना करे बस, अग्गे भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप विकया भगतां हट्ट, भगत आपणे प्रेम हट विकाईआ। प्रेम हट्ट औझड़ राह, पीर पैगम्बर गुर अवतार लए फसा, आप आपणी कल धराइंदा। फेर सूलीआं उत्ते दए चढ़ा, तन खलड़ी आप लुहाइंदा। ततीआं लोहां उत्ते दए बहा, सीस धड़ वंड वंडाइंदा। बाले नीहां हेठ दबा, सबर शुकर इक समझाइंदा। एसे कर के बेपरवाह, बेपरवाही खेल कराइंदा। जिस नूं आपणा प्रेम प्यार दित्ता सिखा, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सो गुरमुख गुर सतिगुर उत्तों होए फ़िदा, फ़ैसला इक्को वार जणाइंदा। भगत भगवान राह वखा सिध्धा, उच्चे डण्डे आप चढ़ाइंदा। आपणे मिलण दी आप जणाए बिधा, बिध अन्तर आत्म आप रखाइंदा। जे कोई पुछे भगवान किडा, कहे, निक्का हो के साडे अन्दर डेरा लाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर भिजा, भिन्नड़ी रुत्त सुहाइंदा। जे कोई पुछे किवें खोल्हे नैण तीजा, रसना कहे रातीं सुत्तयां दरस कराइंदा। जे कोई

पुछे क्यों कर रीझा, रसना कहे फड़ बांहों गोद बहाइंदा। जे कोई पुछे भगत बीज किवें बीजा, रसना कहे सुत अनादी नाउँ धराइंदा। जे कोई पुच्छे तुहानूं केहड़ी देवे चीजा, रसना कहे अमृत रस प्रेम प्याला निझर झिरना झिराइंदा। जे कोई पुछे किवें करे पार दहिलीजां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वसाइंदा। प्रभू असीं नहीं दस्सण जोग, भगत रहे जणाईआ। सानूं नहीं पता क्यों कीता संजोग, किस बिध मेल मिलाईआ। क्यों कटया वछोड़ा रोग, दुखियां सुख वखाईआ। ना जाणीए किव चुगाएं चोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे दर तेरा वर, तेरे विच वखाईआ।

६४८
१३

❇ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी कौड़ा मल दे गृह इटारसी ❇

सच दस्स प्रभ एकँकार, सचखण्ड दुआर ध्यान लगाइंदा। तेरा खेल अगम्म अपार, अथाह भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग अन्त लै अवतार, निरगुण रूप वटाइंदा। साचे मन्दिर हो उज्यार, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। सच संदेसा दए संसार, शब्द अगम्मी राह जणाइंदा। भगत भगवन्त मात उठाल, साची सिख्या सिख समझाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह

इक्को रंग वखाइंदा। धर्म दुआर इक धर्मसाल, शिवदुआला मठ्ठ इक्को नज़री आइंदा। इष्ट गुरदेव इक्को निभे नाल, आत्म परमात्म आप जणाइंदा। हरिजन अनमुलड़े वेख लाल, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। निरवैर हो बणे दलाल, निराकार सेव कमाइंदा। साची सिख्या इक सिखाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। सचखण्ड होए हैरान, हैरानगी आपणी रिहा जणाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, लोकमात दए वड्याईआ। जन भगत कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। सच संदेसा दए जहान, जीवण युगत इक जणाईआ। सोहँ अक्खर नाम महान, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्ध अंध्यान, जगत अन्धेरा दए गंवाईआ। सच वखाए इक मकान, भगत दुआर सोभा पाईआ। निर्मल नूर धर महान, दीवा बाती इक्को डगमगाईआ। काग़ज़ कलम सर्ब शरमाण, हरि का जस लिख्या ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। सचखण्ड दुआर खोल्हे ताक, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पूरा करे भविख्त वाक्, पिछली करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। शाह अस्वारा चढ़ के जाए साचे राक, अस्व इक्को इक दौड़ाइंदा। लोक परलोक वेखे मार झाक, नैतर नैण आप खुल्हाइंदा। भगत भगवान लभ्भे साथ, सगला संग निभाइंदा। नाम अगम्म देवे दात, अनमुलड़ी दात वरताइंदा। आत्म परमात्म जणा सच करामात, करवट आपणी आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सचखण्ड दवारे मार ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कलिजुग अन्त हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। साचे सन्त कर परवान, भगत भगवान होए सहाईआ। साची किरपा करे आण, निहकर्मी कर्म कमाईआ। लेखा लिखे आप महान, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। साचा मन्दिर सति मकान, सति सतिवादी करे रुशनाईआ। भगत दुआर वड बलवान, बल बावन मंग मंगाईआ। दरगाह साची बणया इक विधान, पंचम मेला चाईं चाईंआ। पंचम पंच होए सवाधान, आप आपणी आलस लाहीआ। मंगण मंग नौजवान, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। त्रै पंज होए प्रधान, सच प्रधानगी दे सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। सचखण्ड दवारे तेरी वंड, लोकमात जणाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबँग, साहिब सतिगुर धार वखाइंदा। भगत भगवान पूरी करे मंग, आसा आसा झोली पाइंदा। नाम निधान वजाए मृदंग, दो जहान सुणाइंदा। पंचम चाढ़े साचा रंग, रंग रंगीला सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। पंच होए प्रधान, पंच मिले वड्याईआ। पंचां मिल्या दरगाह माण, दर साचे खुशी वखाईआ। पंचां दा गुर इक ध्यान, पुरख अकाल नज़री आईआ। पंजां मिल्या शाह सुल्तान, राज राजान बेपरवाहीआ।

पंचां दित्ता इक ज्ञान, निरगुण निरगुण कर पढ़ाईआ। पंचां चरण कँवल दे ध्यान, सच मकान इक वखाईआ। सचखण्ड बहाए नौजवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। पंचम होए नौजवान, आपणा बल धराईआ। नेत्र खोल्हण सच मकान, नैण अक्ख बदलाईआ। मंगण मंग श्री भगवान, हरि जू अग्गे झोली डाहीआ। पिछली चुके पिच्छे काण, अगला मार्ग इक दरसाईआ। तेरा मेला विच जहान, निरगुण इष्ट तेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। पंजे मंगण मंग, झोली डाहीआ। श्री भगवान दे अनन्द, इक्को आस रखाईआ। भगत तेरे चढ़न चन्द, लोकमात होए रुशनाईआ। तेरा ढोला गावण छन्द, गीत गोबिन्द इक अल्हाईआ। तेरा नाम वज्जे मृदंग, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। त्रैलोआँ बहिण लँघ, तेरे मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखाईआ। पंच कहिण प्रभ हो तैयार, तेरे अग्गे इक अरदास। जन भगतां कर सच प्यार, लोकमात हो प्रकाश। ग़रीब निमाणयां दे धरवास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद वसण तेरे पास। श्री भगवान गया मन्न, सति सच दृढ़ाइंदा। भगत भगवान चढ़ाए चन्न, चन्द किरन रूप रुशनाइंदा। अन्तिम बेड़ा देवे बन्न्ह, भार आपणे कंध उठाइंदा। लेखा जाणे जननी जन, दर घर साचा फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचां एका हुक्म जणाइंदा। पंच पंच मैं जावांगा। परपंच जगत मिटावांगा। रंचक इक्को नाम जपावांगा। सञ्झ सवेर इक वखावांगा। कलिजुग अन्त देर ना लावांगा। गुरमुख घेर घेर उठावांगा। सच दवारे फड़ बहावांगा। निरगुण रूप नज़री आवांगा। सति सरूप वखावांगा। चारे कूटां कूड़ी क्रिया डेरा ढावांगा। सच सपूत आप उपजावांगा। बिन ताणा पेटा सूत, आपणी गंढु रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलावांगा। पंच परवान पए हस्स, सोहँ ढोला गाईआ। की जो कुछ सानूं रिहा दस्स, सो लोकमात कमाईआ। वेखीं पिच्छा दे ना आईं नठ्ठ, अछल अछल्ल तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नाउँ तेरे भगत रहे रट, रट्टा प्या जगत लोकाईआ। जा के दूई द्वैत मेट फट्ट, पट्टी आपणे नाम बंधाईआ। हिरदे अन्दर जा के वस, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जा के साडा हाल दस्स, गुरमुख राह तक्कण चाईं चाईंआ। भगतो अग्गे पिच्छे आओ नस्स, प्रभ मिलदा कर के लम्मीआं बाहींआ। इक दूजे दा गाओ जस, जस वेद पुराण गा ना सके राईआ। पन्ध मुकाओ नठ्ठ नठ्ठ, दो जहान चरणां हेठ दबाईआ। एथे इक्को होवे इकठ्ठ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण मिले पुरख समरथ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा जा सुणाईआ।

सच स्नेहुड़ा दस्सांगा। जन भगतां हिरदे वसांगा। फड़ बांहों सचखण्ड नठ्ठांगा। इक्को लाहा लोकमात विच खट्टांगा। किरपा करनों पिच्छे ना हटांगा। मेहर गुरमुखां झोली सट्टांगा। हो शेर जगत नूं तकांगा। हरिजन आपणी गोदी चक्कांगा। सचखण्ड दवारे आ के लुकांगा। फिर पंचां ताईं पुछांगा। भगत दुआर कर इकठ्ठे, निउँ निउँ सब दे अग्गे झुकांगा। आपणी करनी करनों कदे ना उकांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सूरबीर हो के उठांगा। पंज कहिण तेरी वडयाई, तूं वड्डा नज़री आइंदा। जा भगतां नाल कर कुड़माई, क्यों बैठा देर लगाइंदा। सौहरे पेईए इक्को घर वखाई, दूजा दर नजर ना आइंदा। इक्को घर धी जवाई, सेज सुहञ्जणी इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। उठ जा पारब्रह्म, पंच रहे जणाईआ। निहकर्मी कर आपणा कर्म, जन भगतां कर्म कांड मिटाईआ। सच दवारे दस्स सच धर्म, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। नाता तोड़ बरन वरन, साची सरन इक समझाईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, आपणा फुरना दे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल थाउँ थाईंआ। जन भगतां मेल मिलावांगा। कठ्ठे कर के एथे बहावांगा। निहथ्थे कर बहावांगा। साचे रस्ते आपे पावांगा। पिछले बसते बंद करावांगा। बिन दन्दां राग अलावांगा। बिन कन्नां आप सुणावांगा। बिन छन्नां आप वसावांगा। बिन मन्दिरां डेरे लगावांगा। बिन रंगां रंग चढ़ावांगा। बिन कन्दरां खेल वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल मिलावांगा। जन भगत साचे औणगे। पंच बहि बहि खुशी मनौणगे। साचा ढोला इक्को गौणगे। तेरा नाम ध्यौणगे। गूढ़ी नींदे सौणगे। तेरी सेजा इक हंढौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लख लख शुकर मनौणगे। जन भगत लै के आऊँगा। फड़ बांहों सर्ब मिलाऊँगा। पिछला लेखा मूल चुकाऊँगा। इक्को रंग रंगाऊँगा। कूड़ी क्रिया संग मिटाऊँगा। अनन्द अनन्द विच जणाऊँगा। बिन चन्द प्रकाश कराऊँगा। सचखण्ड दुआर वसाऊँगा। फिर बहि के खुशी मनाऊँगा। पंचम राह इक जणाऊँगा। दो जहानां जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण निरगुण आप समझाऊँगा। जद भगत मिलावा होवेगा। दुखिया फेर कोई ना रोवेगा। सिख्या इक्को इक बलोवेगा। अमृत रस आपणा चोवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर कदे ना सोवेगा। जन भगत दवारे आवणगे। गीत सुहागी गावणगे। प्रभ दा दर्शन पावणगे। चुप हो बहि जावणगे। पुच्छ पुच्छ वेख वखावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल खलावणगे। भगत दुआर बहिणगे। सो पुरख निरँजण नाम लैणगे। धन्न धन्न इक्को वार कहिणगे। नाते बज्झण

९५१
१३

साक सैण दे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणे मुकाए लहिण देण दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, घर इक्को मन्दिर भगत भगवान इकट्ठे रहिणगे।

❇ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी टोपन राम दे गृह इटारसी ❇

पिछला लेखा मेटया, जो लिख्या बण अणजाण। अग्गे करे हेतिआ, कर किरपा श्री भगवान। जो दर तों जावे छेकया, जगा मिले ना दो जहान। पूरब कदे ना भुल्ले चेतिआ, वेखणहारा निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान देवे मेहरवान पिछला लेखा चुकाए आण। तुसीं कहो प्रभ तेरे पुत्त, तेरे हथ्थ वड्याईआ। प्रभ कहे क्यों इक दूजे नालों गए रुठ्ठ, हथ्थ नाल हथ्थ लओ मिलाईआ। जे मैनूं लओ पुच्छ, तुहाढ्ढे बिना दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे कोल एहो कुछ, गुरमुख नज़री आईआ। जे अन्दर वेखो झुक, निरगुण हो के आसण लाईआ। जे ओहले जाओ लुक, फड़ बोदीयों बाहर कढ्ढाईआ। हुण वेला रिहा ढुक, क्यों बैठे मुख छुपाईआ। मार छाल बहो उठ, प्रभ मिल्या इक्को माहीआ। जगत कूड़ अन्धेरा घुप्प, अज्ञान बैठा अन्धेरा पाईआ। श्री भगवान तुहाढ्ढीआं सुखणां रिहा सुख, चार जुग मेल मिलावा एका थाईंआ। क्यों लुकाउदे फिरदे मुख, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। थल्ले डिगयां गोदी लए चुक्क, हलूणा दो जहान वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा लेखे नाल मिटाईआ। किस दे नाल होवो गुस्से, गुस्सा कवण जणाईआ। प्रभ नालों क्यों बैठे रुस्से, रुसयां लए मनाईआ। जे तुसीं नहीं झुकदे प्रभ तुहानूं झुके, तुहाढ्ढे कोलों आपणी भुल्ल लए बख्शाईआ। जसवन्त रो रो दिने रात पुच्छे, प्रभ एह की खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणे बच्चयां इक्को हथ्थ रखाईआ। पिछली रुस्सण दी छड्ड दयो वादी, अगला हाल सुणाइंदा। तुहाढ्ढे अग्गे हो के प्रभ आप फ़रयादी, तुहाढ्ढी फ़रयाद आपणी झोली पाइंदा। जे सच पुच्छो गोबिन्द कहे माता गुजरी सब दी दादी, वंड होर ना कोए वंडाइंदा। तुहाढ्ढे पिच्छे तरन आंढी गवांढी, कर किरपा पार कराइंदा। प्रभ दा दित्ता सृष्ट सबाई खांदी, दूजा वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तुट्टी गंढ्ढ वखाइंदा। प्रेम प्रीती क्यों बैठे तोड़, प्रीत रही शरमाईआ। नेत्र रोवो प्रभ सानूं जोड़, गल पल्लू वास्ता पाईआ। दूई द्वैती विच्चों होड़, हाढ़ा कढ्ढे नैण छहबर लाईआ। जगत वासना ना पाए शोर, संसा अवर ना कोए रखाईआ। फड़ के बांहवां नाल दोहां नूं आपणे अग्गे तोर, मेहरवान हो गोसाईंआ। जे एन्हां नूं नहीं लोड़, प्रभ तैनूं एन्हां

९५२
१३

दी लोड़, बिन भगतां ना कोए वड्याईआ। जे आपणा वखौण ज़ोर, तूं नीवां हो के वक्त लै लँघाईआ। जे औकड़ बणे ते जावीं बौहड़, तेरे भगतां तत्ती वा ना लागे राईआ। तिन्हां अग्गे किसे दा कोई ना चल्ले ज़ोर, जिन्हां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरमुखां नाल मिलाईआ।

✻ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी ✻

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवाना, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। एकँकारा वड बलवाना, बल आपणा आप धराईआ। आदि निरँजण खेल महाना, अनभव प्रकाश कराईआ। अबिनाशी करता मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाईआ। श्री भगवान सच निशाना, निरवैर पुरख झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सति पुरख निरँजण दानी दाना, दाता दानी इक हो जाईआ। करे खेल आप महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणी इच्छया कर परवाना, साची भिच्छया झोली पाईआ। महल अटल इक मकाना, बिन छप्पर छन्न छुहाईआ। सचखण्ड वसाए हो निगाहबाना, बेअन्त बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण राज राजाना, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाना, धुर दी धार आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण एको मीता, अजूनी रहित नज़री आइंदा। एकँकारा सदा अतीता, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि निरँजण खेल अनडीठा, आपणी कार कमाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी रीता, रीतीवान आप हो जाइंदा। श्री भगवान सच बन्हाए प्रीता, प्रीती इक्को दर वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग चाढ़े आप मजीठा, दूजा वेस ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अवल्ला, हरि पुरख निरँजण आप जणाईआ। एकँकार फड़ाए पल्ला, आदि निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। अबिनाशी करता वसे निहचल धाम अटला, श्री भगवान सोभा पाईआ। पारब्रह्म सच संदेस घल्ला, नर निरँकार आप जणाईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, निरगुण धार धार विच्चों दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रच करतार, निरगुण आपे वेख वखाइंदा। ना कोई दूजा मीत मुरार, सगला संग ना कोए निभाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। आपणा लेखा

वेखणहार, दूजा लेख ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता साची खेल रचाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, वेखणहारा चाईं चाईंआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। आपणा फड़ आपे लड़, पल्लू गंढु वखाईआ। आपे बण नारी नर, नरायण सेज सुहाईआ। आपे बण जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपार, निरगुण आप कराइंदा। सचखण्ड सोहे इक दुआर, हरि साचा आप सुहाइंदा। नूर इलाही हो उज्यार, जलवा इक्को इक प्रगटाइंदा। मुकामे हक़ कर पसार, सोभावन्त सोभा पाइंदा। शब्द अगम्म बोल जैकार, जै जैकार इक्को नाम सुणाइंदा। महल अटल कर उज्यार, दीवा बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल रखे हथ्थ, लेखा लिख्त विच ना आईआ। पारब्रह्म पुरख समरथ, बेअन्त बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रगट, प्रगट आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। साची करनी करने जोग, करता पुरख इक अख्वाइंदा। दरगाह साची भोगे भोग, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। निरगुण निरगुण कर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाइंदा। भाग लगाए साचे कोट, किला बंक आप वसाइंदा। मेल मिलावा निरगुण जोत, जोती जोत विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सचखण्ड दुआर, सच साचा आप कराइंदा। निरगुण नारी कन्त भतार, निरगुण साची सेज हंढाइंदा। निरगुण अन्दर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त ज़ाहर रूप वखाइंदा। निरगुण निरगुण करे पसार, आप आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण निरगुण करे वणजार, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। निरगुण निरगुण खेल खलार, आप आपणा खेल खलाइंदा। निरगुण निरगुण कर पसार, पसर पसारी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, अक्ल कला वड्याईआ। निरगुण घर निरगुण हो प्रतख, घर साचे वज्जे वधाईआ। घर खेल पुरख समरथ, घर इक्को रूप धराईआ। शब्द अगम्म बोल अलख, अलख अलखना दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्हे आप, घर आपणे सोभा पाइंदा। निरगुण पिता माई बाप, पूत निरगुण गोद सुहाइंदा। शब्दी शब्द वड प्रताप, बाल बाला रूप जणाइंदा। इक जणाए आपणा जाप, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ रूप जानणा आप, निरगुण निरगुण धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची आप सुहाइंदा। सुत दुलारा शब्दी जा, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता बण मलाह, साचा राह समझाईआ। श्री भगवान हो सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, दीवा बाती इक जगाईआ। एकँकारा फड़ बांह, आप उंगली रिहा लगाईआ। हरि पुरख निरँजण देवणहारा सच्चा थाँ, थान थनंतर इक दरसाईआ। सो पुरख निरँजण बण पिता माँ, सुत दुलारे सति समझाईआ। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण बैठा आसण ला, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा मन्दिर दए बणा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। थिर घर दवारा आप खुल्ला, सुत शब्दी वंड वंडाईआ। नाम नगारा दए वजा, आदि जुगादि करे शनवाईआ। निरगुण जोत कर रुशना, एका दीप टिकाईआ। मेल मिलावा सहिज सुभा, पड़दा विच ना कोए टिकाईआ। अलख अगम्म अथाह बेपरवाह भेव जणाईआ। तेरी सेवा दए लगा, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सुणा, दूजा राग ना कोए अल्लाईआ। विचोला बणे आप खुदा, परवरदिगार होए सहाईआ। मुकामे हक़ इक दरसा, नौबत इक्को नाम वजाईआ। कलमा इक्को इक पढ़ा, निश्अक्खर दए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे उत्तों होया फ़िदा, फ़ितरत नज़र कोए ना आईआ। तेरा मेरा राह सिध्धा, द्वैत विच ना कोए रखाईआ। शब्दी सुत खुशी विच पाए गिधा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख आप जणाईआ। शब्द सुत उठ दुलारे, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। अस्थिल सोहण तेरे चुबारे, थिर घर तेरा रंग रंगाइंदा। तेरा पिता पुरख अकाले, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सद वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाले, बंक इक्को इक वड्याइंदा। आदि जुगादि जुग जुग चले तेरे नाले, सगला संग निभाइंदा। निरगुण हो के सुरत संभाले, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। शब्द सुत चरण दुआर, ढह ढह सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ दे प्यार, इक्को मंग मंगाईआ। तेरी धूढ़ी मस्तक लावां छार, शहिनशाह देणी वड्याईआ। सेवा करां बण सेवादार, जुग चौकड़ी तेरा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी इच्छया पूर कराईआ। तेरी इच्छया पूर करावांगा, श्री भगवान सच सुणाइंदा। तेरा मन्दिर सच वसावांगा, कर किरपा भेव जणाइंदा। तेरी धार चलावांगा, निरगुण नूर डगमगाइंदा। तेरा डंक वजावांगा, आपणा नाम प्रगटाइंदा। तेरा बंस बणावांगा, विष्नूं रूप धराइंदा। तेरा रंग रंगावांगा, पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडाइंदा। तेरा चन्द चढ़ावांगा, निरगुण जोत जोत चमकाइंदा। तेरा अँध्यार गंवावांगा, शंकर तेरा कुण्डा लाहइंदा। तेरा राग गावांगा, ढोला इक्को इक दृढ़ाइंदा। तेरी गंढु पवावांगा, त्रैगुण माया वेस वटाइंदा। तेरा रंग जणावांगा, पंज तत्त अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल

६५५
१३

खलाइंदा। सूरा सरबँग अख्वावांगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत जणाइंदा। साचा सुत निक्का बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। दीन दयाल साहिब कृपाला, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं चलां नित नित तेरी चाला, जिउँ भावे लैणा चलाईआ। मैनूं दस्सणा राह सुखाला, सिख्या इक्को वार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। साची सिख्या लै पढ़, श्री भगवान आप जणाइंदा। निरगुण फड़ाए आपणा लड़, पल्लू तेरे नाल बंधाइंदा। साचे मन्दिर वेख खड़, श्री भगवान पड़दा लाहइंदा। निरगुण नज़री आए इक्को नर, नर नरायण खेल कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव खोल्हे तेरा दर, दर दवारा आप खुल्हाइंदा। त्रैगुण माया भण्डार देवे भर, पंज तत्त जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़, तेरा खेल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप जणाइंदा। शब्द सुत कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा नाम दयां ज्ञान, आपणा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन प्रणाम, निउँ निउँ चरणां सीस झुकाईआ। साचे घर बणावां विधान, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। धर्म झुलावां इक निशान, दो जहान करे रुशनाईआ। महिमां अकथ सुणावां गान, कथनी कथ ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आप जणाईआ। सुत शब्द चरणी ढठ्ठ, दोए जोड़ वास्ता पाया। कर किरपा पुरख समरथ, दर तेरे मंग मंगाया। लख चुरासी तेरी वथ, हउँ सेवक सेव कमाया। तेरा नाउँ होए प्रगट, दो जहानां हट्ट चलाया। कर किरपा दे इक्को मति, ब्रह्म मति आप समझाया। मेरा नाता जुड़े पंज तत्त, तत्तव आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आदि आदि जणाईआ। उठ शब्द सुत साचे लाल, हरि लालन रंग रंगाईआ। तेरा खेड़ा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक जणाईआ। लख चुरासी अन्दर बहाल, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। अनाद अनादी वज्जे ताल, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, तेरी रहमत झोली पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव घालण घाल, पीसण पीस सेव कमाईआ। दो जहान वज्जे तेरा ताल, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा राग अलाईआ। तेरी सेवा करे महाकाल, काल तेरे चरणां सीस झुकाईआ। राए धर्म सेवक दयां बहाल, चित्रगुप्त करे लिखाईआ। तेरा खेल करां कमाल, बेमिसाल धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक जणाईआ। साची सिख्या सुण कन्न, बिन कन्नां ध्यान लगाइंदा। सुत दुलारा गया मन्न, बिन मन आस तकाइंदा। तेरी वडयाई साहिब धन्न, धन्न कह कह शुकर मनाइंदा। तूं आदि पुरख जननी जन, दाई दाया अख्वाइंदा। हुक्मे अन्दर

दित्ता घल्ल, बण सेवक सेव कमाइंदा। तेरा महल्ल इक अटल, निरगुण साहिब नज़री आइंदा। मैं लख चुरासी अन्दर जावां रल, आप आपणा फेरा पाइंदा। घर विच घर लवां मल्ल, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। तेरा पीवां अमृत जल, निझर झिरना इक वखाइंदा। तेरा दीपक जाए बल, जोत निरँजण रंग रंगाइंदा। तूं आदि जुगादि रहिणा मेरे वल, मैं तेरी आस तकाइंदा। तेरी किरपा नाल लग्गे मैनूं फल, फुल फलवाड़ी लोकमात महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। साचे सुत उठ जा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। लख चुरासी बण मलाह, बेड़ा मात चलाईआ। सरगुण देणी सति सलाह, निरगुण नाम दृढ़ाईआ। चार खाणी वंड वंडा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा मार्ग पाईआ। चारे बाणी डंक वजा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। चारे जुग खेल खला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट फेरा पा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। चार वरन वंड वंडा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भेव जणाईआ। चौकड़ गंढु आप पवा, नव नौ वेस धराईआ। चार यारी अंग लगा, एका गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या सुण बालक, श्री भगवान आप जणाइंदा। तेरा खेल वेखे ख़ालक, मख़लूक तेरे रंग रंगाइंदा। आदि जुगादि ना करना आलस, निंद्रा रूप ना कोए वटाइंदा। जुग चौकड़ी बणना सालस, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा रूप इक्को ख़ालस, ख्वाहिश सब दी पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। साचा सुत दोए जोड़, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। श्री भगवान मेरी पूरी करनी लोड़, नित नित तेरा ध्यान लगाईआ। चढ़ के आउणा अगम्मी घोड़, शाहअस्वारा फेरा पाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाउणा दौड़ दौड़, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। मेरी तृष्ना बुझौणी औड़, देणा दरस रघुराईआ । आदि जुगादि तेरी लोड़, जुग जुग विसर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। साचे सुत प्रभ दए दिलासा, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखां तेरा खेल तमाशा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा । चरण कँवल इक भरवासा, श्री भगवान आप समझाइंदा। सदा सदा सद पूरी करे आसा, निराशा रूप ना कोए रखाइंदा। पावां सार पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। तेरे गृह वेखां रासा, गोपी काहन नचाइंदा। गुर अवतार तेरीआं शाखां, पीर पैगम्बर गंढु पवाइंदा। धुरदरगाही तेरीआं दातां, सरगुण झोली आप भराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान गाए तेरीआं गाथां, अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहइंदा। खाणी बाणी टेके माथा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। तेरा खेल पुरख समराथा, गुर

चेला रंग वखाइंदा। तेरा नाउँ पूजा पाठा, दो जहानां आप समझाइंदा। तेरा प्रेम सरोवर तीर्थ ताटा, अमृत मेघ बरसाइंदा। तेरा प्यार चौदां हाटा, चौदां लोक कुण्डा लाहइंदा। तेरा खेल ख़लक तमाशा, चौदां तबकां भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचे सुत आप जणाइंदा। शब्द सुत मंगे असीस, प्रभ निउँ निउँ लागे पाईआ। किरपा कर हरि जगदीश, इक तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल खेलां ठीक, लख चुरासी ठीकर वेख वखाईआ। अन्तिम वेला दे तारीख़, जिस वेले लएं मिलाईआ। तूं साहिब लाशरीक, सिरकत विच कदे ना आईआ। तेरी सिफ्त करे ना कोए तारीफ़, लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी पढ़ां हदीस, कलमा इक्को नज़री आईआ। तेरी किरपा दो जहान लवां जीत, हार रूप ना कोए वखाईआ। तेरे मन्दिर बैठा रहां अतीत, त्रैगुण पोह ना सके राईआ। निरगुण दस्सां सच प्रीत, साहिब सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला दए जणाईआ। साचा वेला श्री भगवान, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाइंदा। नव नौ हो आप प्रधान, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। तेई अवतार कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। अठारां भगत कर कल्याण, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दे पैग़ाम, पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। नानक निरगुण सचखण्ड दवारे वखा इक निशान, सच निशाना इक झुलाइंदा। मंत्र इक्को सति नाम, दो जहानां झोली पाइंदा। चार वरनां दे ज्ञान, ऊँचां नीचां राउ रंकां इक्को घर वसाइंदा। शब्द अगम्मी सति बबाण, जीवां जंतां आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा नाउँ धराइंदा। शब्द सुत तेरा नाउँ सतिगुर, गुर गुर रूप वखाईआ। नानक निरगुण जाए जुड़, सरगुण करे कुड़माईआ। सच सुहेला जाए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी इक्को राग अलाईआ। शब्द गुर दाता गहर गम्भीर, हरि सतिगुर गुर आप जणाइंदा। नाता जोड़ पंज तत्त शरीर, सरगुण आपणी गंढु पवाइंदा। अमृत आत्म दे ठंडा सीर, साचा झिरना इक झिराइंदा। चोटी चाढ़ फड़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा रंग वखाइंदा। शब्द रंग रंग अपारा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। एका जोती दस अवतारा, दहि दिशा वेख वखाईआ। गोबिन्द सूरा शाह सिक्दारा, शहिनशाह इक्को अख्वाईआ। कल्की तोड़ा सीस दस्तारा, चण्डी इक्को नाम चमकाईआ। खण्डा खड़ग वेख दो धारा, दो जहानां रिहा डराईआ। पुरख अकाल मीत प्यारा, जीवां जंतां रिहा समझाईआ। शब्द अगम्म वज्जे नगारा, नौबत इक्को नाम सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए ख़बरदारा, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाईआ। जोती जोत

९५८
१३

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द दए वड्याईआ। सुत शब्द तेरा रूप अगम्म, नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। पवण स्वास ना लए दम, नेत्र नैण ना कोए वहाइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना कोए चम्म, दृष्टी दर ना कोए जणाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता ना कोए जणाइंदा। बुध मति ना कोए मन, ब्रह्म वंड ना कोए वंडाइंदा। राग नाद ना कोए कन्न, रसना जिह्वा ना कोए हलाइंदा। मन्दिर महल्ल ना कोए छन्न, छप्पर रूप ना कोए वखाइंदा। तेरा मेला इक्को श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। तेरा नाम सच्चा धन, जुग चौकड़ी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। देवणहारा सच सहार, साहिब इक्को दए सरनाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, बेपरवाह आप समझाईआ। सरगुण नाता जोड़ विच संसार, गुर अवतार वंड वंडाईआ। पीर पैगम्बर ला अखाड़, बण मलंग नाच नचाईआ। कलमा नबी रसूल दे धार, कायनात करे पढ़ाईआ। आलम उल्मा कर ख़बरदार, बेख़बर आप सुणाईआ। ग़फ्लत विच ना आए परवरदिगार, बेदार करे लोकाईआ। राम रहीम सांझा यार, रहमत आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द गुर कर प्यार, दो जहानां दए वड्याईआ। तेरा रूप अपर अपार, जग नेत्र नज़र ना आईआ। शब्दी शब्द खेल करतार जन भगतां दए वखाल, जलवागर परवरदिगार नूरो नूर डगमगाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगोचर जाणे ना कोए वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिख लिख गए हार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सुत शब्द तेरा प्यार, प्रभ अन्त लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। सुत शब्द तैनूं वडयावांगा। जुग चौकड़ी राह वखावांगा। गुर अवतार खेल खलावांगा। पीर पैगम्बर मेल मिलावांगा। बिन नानक निरगुण सचखण्ड दुआर किसे ना जणावांगा। बिन गोबिन्द साचा चन्द ना किसे दरसावांगा। निरगुण हो के निरवैर वेस वटावांगा। तेरा लेखा पूर करावांगा। कलि कल्की फेरा पावांगा। जोती जामा वेख वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। करोड़ तेतीस हलावांगा। सच नगारा इक वजावांगा। बण वणजारा सेव कमावांगा। भगत प्यारा गले लगावांगा। कलिजुग अँध्यारा अन्त मिटावांगा। सतिजुग साचा राह चलावांगा। चार वरनां इक्को घर वसांगा। जन भगतां मंत्र फोर, फुरना इक समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी गंढु पवावांगा। शब्दी गंढु गंढेगा। कलिजुग अन्तिम हंढेगा। श्री भगवान कदे ना संगेगा। देणा लहिणा सब तों मंगेगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा बेड़ा आपे बन्नेगा। सुत शब्द रख साची धीर, धुर दरबारी आप जणाइंदा। नव नौ चार आए

६५६
१३

अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। प्रगट होए ज़ाहरा पीर, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। दो जहानां बणे दस्तगीर, दस्त आपणा आप मिलाइंदा। लेखा जाण गुणी गहीर, गहर गवर खेल खलाइंदा। जन भगतां दरसाए सच तस्वीर, नूरो नूर नज़री आइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लाशरीक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तौफ़ीक तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। सच तौफ़ीक देवे खुदा, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। कलिजुग अन्तिम रहिण ना देवे जुदा, जुज़ आपणे विच समाईआ। सतिजुग मार्ग दस्से सिध्धा, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार शब्द वड्याईआ। शब्द सुत तेरा साचा माण, श्री भगवान आप रखाइंदा। कलिजुग अन्त हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक जणाइंदा। राज राजान शाह सुल्तान सर्ब मिट जाण, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। कलिजुग भेख पखण्ड ना दिसे निशान, कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रुढ़ाइंदा। सच सुच्च कर परवान, नाम परवाना भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे इक ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। अमृत बख्शे पीण खाण, निझर झिरना रस झिराइंदा। दीपक जोत जगाए महान, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। तेरा नाउँ ढोला सारे गाण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। वचोला बणे नौजवान, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। काग़द कलम होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा राह चलाइंदा। शब्द सुत तेरा साचा राह, श्री भगवान आप चलाईआ। सतिजुग बणे सति मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जन भगतां दृढ़ाए इक्को नाँ, सोहँ ढोला सच्चा गाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, कोझे कमल्यां गले लगाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिला, ऊँचां नीचां इक्को घर बहाईआ। एका मन्दिर दए प्रगटा, जिस घर वज्जे प्रभ वधाईआ। पुरख अकाल नज़री जाए आ, इष्ट इक्को इक दरसाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठण सीस झुका, भगत भगवान ध्यान लगाईआ। सन्त साजण लैण गा, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। गुरमुख सज्जण लैण ध्या, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। गुरसिख धूढ़ी ख़ाक लैण रमा, मस्तक इक्को टिक्का लाईआ। सतिगुर गोबिन्द बणे मलाह, हरिजन साचे पार कराईआ। दो जहानां इक्को डंका दए वज्जा, नाम नगारा हथ्थ वखाईआ। सीस जगदीश ताज सुहा, ताजां वाले चरण लगाईआ। रहबर बण बेपरवाह, वस्त देवे सर्ब लोकाईआ। सबर प्याला जाम प्या, बेसबरी दए मिटाईआ। धुर दी ख़बर आप सुणा, सच संदेसा इक अल्लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे दी पकड़न बांह, दीन मज़्हब शरअ शरीअत कोए रहिण ना पाईआ। जिध्धर वेखण सही सलामत नज़री आए खुदा, खुदी सब दी रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द मिले वड्याईआ। साचे शब्द तेरा जैकार, कलिजुग

अन्त अन्त कराईआ। साचे शब्द तेरा प्यार, चार वरन कुड़माईआ। साचे शब्द तेरा आधार, गुरसिख ध्यान लगाईआ। साचे शब्द तेरा वापार, गुरमुख हट्ट चलाईआ। साचे शब्द तेरा उज्यार, जन भगतां नैण खुल्हाईआ। साचे शब्द तेरा भण्डार, हरि भगतां आप वरताईआ। साचे शब्द तेरा दुआर, थिर घर साचा दए वसाईआ। साचे शब्द तेरा करतार, सचखण्ड इक्को नज़री आईआ। साचे शब्द तेरा संसार, सरगुण वंड वंडाईआ। साचे शब्द तेरा विहार, विवहारी आप कराईआ। साचे शब्द तेरा लेखा जुग चौकड़ी चार, चारों कुण्ट खेल कराईआ। साचे शब्द तेरा लहिणा देण चुकाए अगम्म अपार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द तेरा माण, दो जहान रखाइंदा। साचे शब्द तेरा फ़रमान, खाणी बाणी रूप वटाइंदा। साचे शब्द तेरा निशान, निरगुण सरगुण नज़री आइंदा। साचे शब्द तेरा मकान, घट घट अन्दर फेरी पाइंदा। साचे शब्द तेरा पीण खाण, लख चुरासी धीरज धीर धराइंदा। साचे शब्द तेरा बबाण, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द शब्द नाउँ रखाइंदा। साचे शब्द तूं सच्चा गुर, आदि जुगादि तेरी चतुराईआ। तेरा मेला सदा सदा सद धुर, धुर मेला तेरे हथ्थ रखाईआ। निरगुण हो के सरगुण नाल जाईं जुड़, लोकमात

९६१ १३

करीं कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर तेरा रूप वखाईआ। शब्द गुरु गुरदेव, शब्दी वड वड्याईआ। पंज तत्त करे तेरी सेव, सतिजुग चले ना कोए चतुराईआ। तेरा लेखा अलख अभेव, अगम्म तेरी वड्याईआ। तेरा लहिणा सदा निहकेव, निहचल धाम तेरी रुशनाईआ। क्या कोई गाए रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। तेरा लेखा जाणे कुण्ट हेम, दूजा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द तेरी शरनाईआ। गुर शब्द तेरी सरनागत, जीव जंत जणाइंदा। आत्म परमात्म तेरी मति, ब्रह्म विद्या इक दृढ़ाइंदा। नाड़ बहत्तर तेरी रत्त, हाडी तिन्न सौ सठ्ठ जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण हो के सरगुण जाणे मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम भगतां रखणी पत, भगवान तेरी सेवा लाइंदा। घर घर जा के मार्ग दस्स, निरगुण आपणा राह वखाइंदा। निक्का हो के हिरदे वस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। सुत दुलारा शब्दी गुर, उठ उठ करे धाईआ। जन भगत दवारे जाए बौहड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। संदेसा देवे प्रगट होया ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता हुक्म मनाईआ। दो जहानां वाली निरगुण आया दौड़, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सम्बल नगर वसया कर के वेखो गौर, गहर गम्भीर आसण लाईआ। गोबिन्द चेले कलिजुग अन्तिम बौहड़, रूप रंग रेख ना कोए दरसाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर भगतां नाल मिलाईआ। शब्द गुर उठ उठ धावे, आपणा बल जणाईआ। सोए भगत मात उठावे, रातीं सुत्तयां लए मिलाईआ। कोई ना मरे प्रभ के हावे, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। जिन्हां गोबिन्द दित्ते बेदावे, अन्तिम आपणी झोली पाईआ। आपणे कंडे तोले सांवें, तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। जिन्हां तेरे लाए नावें, तिन्हां इक्को गया नाम पढ़ाईआ। जो नानक निरगुण ढोले गावे, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सो नार सुहञ्जणी आपे रावे, रव रिहा हर घट थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दए वड्याईआ। शब्द गुर कहे मैं सतिगुर पूरा, आदि जुगादि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी कौल करां पूरा, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जन भगत दवारे हाज़र हज़ूरा, मुख आपणा पड़दा लाहइंदा। नाम वजावां अगम्म तूरा, तुरिया राग मुख शरमाइंदा। जन भगतां अन्दरों हूंझां कूड़ा, दुरमति मैल धवाइंदा। गुरमुख सवाणी चाढ़ां चूड़ा, लाल रंगीला रंग रंगाइंदा। इक्को जोती देवां नूरा, इक्को सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द आप समझाइंदा। शब्द गुरू कहे मैं साचा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी चलावां आपणी रीत, नित नित आपणी धार बंधाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव गाउँदे मेरे गीत, गाउँदयां अन्त कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेल करावां शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मसीत, गुरदवारे गंढु पवाईआ। आप वसां धाम अनडीठ, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराणी सिफ्त सालाही गीत, साहिब आपणी सेवा लाईआ। साचे सन्तां धाम वखावां इक अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुखां दस्सां सच प्रीत, चरण कँवल प्रभ सरनाईआ। गुरसिखां मेल मिलावां ठीक, कूड़ी क्रिया ठीकर भन्न वखाईआ। जुग चौकड़ी लवां जीत, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेरा देणा इक्को साचा वर, तेरे भगतां सेव कमाईआ। तेरे भगतां सेव कमावांगा। प्रभ घर घर जा उठावांगा। निरगुण जोती मेल मिलावांगा। शब्दी राग अलावांगा। सोई सुरती आप हिलावांगा। अकाल मूर्ती इक दरसावांगा। नाद तूरती इक जणावांगा। आसा पूरती पूर करावांगा। सतिजुग सच महूरत तेरे चरणां नाल वखावांगा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़त, सच सुच्च झोली पावांगा। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़त, अज्ञान अन्धेर मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां रंग रंगावांगा। तेरे भगत रंग चढ़ेगा। दर मन्दिर तेरे वड़ेगा। निर्भय हो ना डरेगा। सोहँ ढोला इक्को पढ़ेगा। चरण दवारे तेरे खड़ेगा। जे बाहर कढ्ढें तां अग्गों अड़ेगा। हो निमाणा सरनी पड़ेगा। तेरी प्रीती इक्को वरेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर शब्द साची सेव करेगा।

सच साची सेव कमावांगा। प्रभ तेरा जस सुणावांगा । जन भगतां हस्स हस्स मेल मिलावांगा। नस्स नस्स पन्ध मुकावांगा। दस्स दस्स बांह फड़ावांगा। अन्दर वड़ डूँग्घी कन्दर ढठ्ठ आप जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दो जहानां लठ्ठ उलटावांगा। दो जहानां गेड़ा गिढ़ेगा। कूड़ी क्रिया बेड़ा रुढ़ेगा। गुरमुख विरला हरि सरन सरनाई जुड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी करनी आपे करेगा। शब्द गुरू कहे तेरा नाउँ सच, सच तेरी वड्याईआ। सृष्ट सबाई देवां दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रगट होया पुरख समरथ, वड दाता बेपरवाहीआ। जीव जंत साध सन्त चरणी जाओ ढठ्ठ, दर डिगयां पार कराईआ। नाता तोड़ तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध रहे ना चतुराईआ। बीज बीजे साचे वत, बण किरसाणा हल्ल चलाईआ। देवणहारा धीरज जत, सति सन्तोख झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा संदेसा दयां सुणाईआ। तेरा संदेसा सुणावां ढोला, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम कोई ना रहे उहला, हरि पुरख निरँजण वेस जणाईआ। निरगुण हो के बणया विचोला, एकँकारा फेरा पाईआ। आदि निरँजण

९६३
१३
आपणे नूर मौला, मौला इक्को नज़री आईआ। श्री भगवान पूरा करे कौला, पिछला कीता तोड़ निभाईआ। श्री भगवान ९६३
१३
धरनी भार करे हौला, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म चुकाए आपणा उहला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सेव कमाईआ। दर तेरे प्रभ साची सेवा, इक्को नज़री आईआ। दो जहान दा सच्चा मेवा, तेरे चरण मिले सरनाईआ। चौदां रतन मस्तक थेवा, तेरी मेहर नज़र वड्याईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि गा गा थक्की रसना जिह्वा, बण मस्त तेरा दर ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि गाउँदे देवी देवा, सुरप्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम देणा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे अलख निरँजण, इक्को अलख जगाईआ। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। किरपा कर पावे नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। निरगुण सरगुण होवे सज्जण, सगला संग निभाईआ। अन्तिम आएयों पड़दे कज्जण, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवान तेरी चरणी आए लग्गण, नेत्र नैण रहे तरसाईआ। कोट जन्म दी बुझे अग्न, त्रैगुण तत्त रहिण ना पाईआ। कर किरपा आपणा नाम मुख लगा सगन, सोहँ ढोला गौण चाईं चाईंआ। दिवस रैण तेरे नाम अन्दर रहिण मग्न, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। बिन तेरे नाम होए नग्न, उत्ते पड़दा ना कोए पाईआ। चार कुण्ट चार वरन ख़ाली हथ्थ मंगण, दर दर घर घर फेरा

पाईआ। बिन तेरे पारब्रह्म ब्रह्म कोई ना आए सद्दण, अन्तर आत्म होका ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि साध सन्त आपणा भार लद्दण, दूजा भार ना कोए उठाईआ। ग़रीब निमाणे कलिजुग अन्तिम तेरे अग्गे हाढ़े कढ्ढण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दरोही खुदा दी तेरे पिच्छे कूड़ी दुनिया छड्डण, परवरदिगार मिले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां दयां मिलाईआ। भगत मिलावा एका घर, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। अबिनाशी करता देवे वर, श्री भगवान झोली पाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाइंदा। सन्त साजण ल्याए फड़, अन्दर वड़ वड़ सेव कमाइंदा। भगत दवारे आपे चढ़, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। गुरमुखां दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। गुरसिख लगाए आपणे लड़, पल्लू गंढु पवाइंदा। प्रेम प्यारयां दी मरनी मर, साचा मरना आप सिखाइंदा। मेहरवान सरनाई जाणा तर, तारनहार दया कमाइंदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, डूँग्घी कन्दर वेख वखाइंदा। सुरत सवाणी सोई फड़, गुर शब्दी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप मिलाइंदा। भगत मिलावा साचे मन्दिर, निरगुण सरगुण आप कराईआ। मन वासना बन्ह् बन्दर, डोरी तन्द पवाईआ। बजर कपाटी तोड़ जन्दर, पड़दा आप उठाईआ। कर प्रकाश अन्धेरी कन्दर, निरगुण जोत जोत जगाईआ। कोटन कोटि प्रकाश रवि ससि सूरया चन्द्र, मण्डल मण्डप नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप मिलाईआ। जन भगत मेले आप प्रभ, आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, भेव अभेद खुल्ह्ाईआ। नौ दवारे पार हद्द, दसवें बूझ बुझाईआ। नाद अनादी सुणाए छन्द, अनहद राग अलाईआ। अमृत जाम प्याए मध, कँवल नाभी आप उलटाईआ। आत्म सेजा साची सद्द, जन भगत करे कुड़माईआ। लेखे लाए काया माटी हड्ड, रक्त बूँद होए सहाईआ। विश्व बणाए इक्को यद्द, वरन गोत ना कोए रखाईआ। देवणहारा चौथा पद, चौथी मंज़ल दए चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नालों कर अड्ड, अड्डरा घर वखाईआ। फड़ बांहों भगत भगवान सच दवारे आए छड्ड, जिस दर कबीर बैठा ध्यान लगाईआ। इक्को नानक निरगुण निरवैर पार कर के गया हद्द, गोबिन्द आपणे नाल मिलाईआ। कोटन कोटि पीर पैगम्बर बैठे विच अद्ध, थल्ले उपर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवान इक निशान एथे ओथे इक मकान, मढ़ी मकबरा नज़र कोए ना आईआ।

❇ १८ फग्गण २०१६ बिक्रमी लैफ़टीनैंट महिन्दर सिँघ दे गृह औरंगाबाद ❇

सुत शब्द करे निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण तेरा ठांडा दरबारा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा सहारा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। एकँकार तेरा पसारा, बेपरवाह वेख वखाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान तेरा जैकारा, नाद अनादी नाद शनवाईआ। अबिनाशी करते तेरा हुलारा, दो जहान दए वड्याईआ। पारब्रह्म तेरा प्रेम प्यारा, आदि अन्त भुल्ल ना जाईआ। हउँ बालक सेवक चाकर पा ख़ारा, साची सेव कमाईआ। महल अटल तेरा मनारा, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे रंग रंगाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। सुत दुलारे नौजवान, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमान, तेरी झोली पाइंदा। दो जहानां इक ज्ञान, निरगुण निरबाण आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, करोड़ तेतीसा राह तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र नैण उठाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुत दुलारा प्या हस्स, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ । साहिब सुल्तान मेरे समरथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं पन्ध मुकावां नठ्ठ नठ्ठ, बण पांधी फेरा पाईआ। लोक परलोक तेरा संदेसा देवां चार कुण्ट गावां जस, दहि दिशा राग अल़ाईआ। कर किरपा कृपानिधान मेरे अन्तर वस, निज आपणा डेरा लाईआ। सदा सुहेले तेरा इक्को मिले रस, दूजा रस नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। श्री भगवान पुरख समरथ, बेपरवाह आप जणाइंदा। सुत दुलारे साची वथ, निरगुण तेरी झोली पाइंदा। लोकमात हो प्रगट, साचा मार्ग इक जणाइंदा । सति सतिवादी खोल़्ह हट्ट, सति पुरख निरँजण आप समझाइंदा। आत्म परमात्म तेरे वस, पारब्रह्म ब्रह्म तेरी वंड वंडाइंदा। बोध अगाध तेरा नद, शब्दी राग अल़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या देवणहार, एकँकार इक अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण सिफ्त सालाहीआ। एकँकारा दए आधार, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता खोल़्ह किवाड़, श्री भगवान दए वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। शब्दी सुत बण वणजार, दो जहानां हट्ट चलाईआ। चौदां लोक तक्कण तेरा इक नजार, चौदां तबक इक ध्यान लगा निरगुण सरगुण दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। साची करनी समझाए अबिनाशी अचुत, चेतन आप कराइंदा। सुत दुलारे छेती उठ, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। निरगुण

हो के निरगुण पुछ, बेपरवाह प्रभ आपणा भेव खुल्हाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बैठा रिहों लुक, तेरा पड़दा कोए ना लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आप जणाइंदा। सुत दुलारा हो तैयार, आपणा बल धराईआ। निरगुण हो के पावां सार, सरगुण भेव जणाईआ। नाम निधान बोल जैकार, अगम्म अथाह ढोला राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करां बेदार, सदा सुहेला संग जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैण दयां वखाल, वड दाता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। लोकमात हो प्रधान, सच प्रधानगी मात जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखणहारा नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक समझाईआ। सुत शब्द कहे मैं जावांगा। पारब्रह्म प्रभ तेरी सेव कमावांगा। बोध अगाधा नाद वजावांगा। शब्द अनरागी सेवा लावांगा। विस्मादी हो विस्माद, आपणी कल धरावांगा। चार जुग दा पिछला लहिणा, कलिजुग अन्त मुकावांगा। जगत विछड़े तेरे भगत, श्री भगवान तेरे नाल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह मन्दिर साची सेव कमावांगा। सुत दुलारा दोए जोड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। श्री भगवान इक तेरी लोड़, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। तेरे सुत तेरे नाल देवां जोड़, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। रस वेखां मिट्ठा कौड़, कूड़ी क्रिया खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। सुण सुत मेरे साचे लाल, पुरख साजण रिहा जणाईआ। लोकमात बण दलाल, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। चार वरन चार कुण्ट वखा सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर अन्दर वसे बेपरवाहीआ। लख चुरासी फल ना दिसे किसे डाल, सिंमल रुक्ख रहे लहराईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, कोई तोड़ ना सके राईआ। पढ़ पढ़ जीव जंत साध सन्त होए बेहाल, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। कलिजुग अवल्लड़ी चली चाल, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। अमृत आत्म सरोवर कोई ना सके उछाल, कोटन कोटि अठसठ तीर्थ रहे नहाईआ। धुन अनाद अनहद वज्जे ना कोए ताल, सुंन समाध ना कोए खुल्हाईआ। जोत निरँजण दीपक दीआ कोई ना सके बाल, सच प्रकाश ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को शब्द सुत उठाईआ। शब्द सुत कहे मैं बड़ा बलवान, बल आपणे विच रखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवां दान, खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरा नाम दृढ़ाइंदा। दो जहानां वेखां मार ध्यान, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां इक्को राह वखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करां महान, महिमा अकथ कथ समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नव नौ चार वेखां आण, अनडिठ फेरा पाइंदा। मेरा रूप रंग रेख कोई ना सके पहचान, नज़र नज़र नाल ना कोई मिलाइंदा।

मैं वसां तेरे चरण कँवल सच अस्थान, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। तेरा मन्दिर सचखण्ड मकान, बेमुकाम तेरा भेव कोए ना आइंदा। परवरदिगार मुकामे हक़ तेरा निशान, बेनज़ीर तेरी खेल जणाइंदा। सच तौफ़ीक तोहे मिहबान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला तेरा नाअरा इक जणाइंदा। लोकमात हो प्रधान, सच निशान इक वखाइंदा। सर्ब जीआं दा श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। आत्म परमात्म देवां आप ज्ञान, दूई द्वैती पड़दा पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरी सेव कमाइंदा। तेरी सेव कमावांगा। निरगुण हो के जावांगा। शब्दी राग अलावांगा। चारे खाणी वेख वखावांगा। चारे बाणी भेव चुकावांगा। गुरमुख सज्जण हाणी आप उठावांगा। साचे सन्तां अकथ कहाणी, तेरा नाम जणावांगा। भगत भगवान तेरी दरगाह साची राणी, नार कन्त मेल मिलावांगा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, निझर झिरना सच झिरावांगा। एका पद दे निरबाणी, तेरे चरण कँवल दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, बिन तेरे दूजी आस ना कोए रखावांगा। प्रभ मेरे दीन दयाल, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मैं कलिजुग अन्तिम दो जहान वखावां इक सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। जिथ्थे लेखा चुके शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे के गए आपणा ब्यान, शब्द ब्यान जगत रखाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण आपणा जामा पाईआ। लेखा जाणे दो जहान, घर घर दर दर वेख वखाईआ। शब्द अगम्म देवे सर्ब ज्ञान, जीव जंत करे पढ़ाईआ। अणयाला मारे हरि निशान, मँझधारे पार कराईआ। भगत भगवन्त लए पछाण, बेपहचान फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। साचा मार्ग दस्से रीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। शब्द सुत वेख कलिजुग रीत, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। लख चुरासी मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गाउँदी गीत, मसला हल्ल ना कोए कराइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निज आत्म बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान आपणे रंग रंगाइंदा। जन भगत मंगण इक प्रीत, सच प्रीती तेरे नाल बंधाइंदा। काया कर ठांडी सीत, अग्नी तत्त नेड़ ना आइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, ईसा मूसा मुहम्मद नैण उठाइंदा। सदी बीसवीं गुर अवतार रहे उडीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द आप समझाइंदा। सुत शब्द कहे मैं बलकार, बल आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादि मेरे हुक्मे अन्दर कार, दो जहान सेव कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करन निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण

परवरदिगार, लोकमात फेरा पाईआ। मेरा सिफ्ती सालाहन नाम निरँकार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। मेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त कह कह गए शुकर मनाईआ। मैं वसां तेरे चरण दुआर, चरण चरणोदक मिले सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम लोकमात खोल्हां कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। भगत भगवन्त देवां उठाल, फड़ बांहों दयां जगाईआ। साचे सन्तां चलां नाल नाल, निज आत्म मेल मिलाईआ। गुरमुखां पूरी करां घाल, जो जन्म जन्म तेरा नाउँ रहे ध्याईआ। गुरसिखां वखावां सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। साची वस्त देवां नाम धन माल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा नाम वर, जन भगतां झोली पाईआ। साचा नाम सति चरण, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जन भगतां खोल्ह हरन फरन, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। नाता चुके मरन डरन, भय भउ ना कोए वखाइंदा। साहिब सतिगुर आवे करनी करन, करता पुरख आपणा वेस वटाइंदा। नाता तोड़े वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। कूड़ी क्रिया आया फड़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। शब्द सुत दए संदेसा, आपणा आप जणाईआ। प्रगट होए नर नरेशा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोत सरूपी धारे भेसा, भेखी आपणा भेख वटाईआ। रूप रंग ना कोए रेखा, रेख आपणी ना कोए जणाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, पारब्रह्म मूंड ना कोए मुंडाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहे हमेशा, जन्म मरन ना कोए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम नव नौ चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम लेखा भगवान, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। हरि प्रगट होवे नौजवान, दाता दानी वेस वटाइंदा। हरिजन साचे लए पहिचाण, निरगुण आपणी कल धराइंदा। बोध अगाध दे ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। काग़ज़ कलम शाही होए हैरान, हरि का लेखा लिख्त विच ना आइंदा। सन्त साजण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। गुरमुखां दे इक ध्यान, ध्यान ध्यान विच रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। प्रगट हो सांझा यार, सगला संग निभाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, नूर नूराना सच्चा माहीआ। आपणी हकीकत लए विचार, लाशरीक फेरा पाईआ। मुरीद मुर्शद लए उठाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। कलमा नबी दए सिखाल, रसूल इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार दए सहार, पीर पैगम्बर गोद बहाईआ। भगत भगवन्त मिलाए नाल, कल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी इक्को इक वड्याईआ। इक्को शब्द सुत दुलारा, गुर सतिगुर आप उठाइंदा। कलिजुग करे पार किनारा, सतिजुग साचा रंग चढ़ाइंदा। भगत

भगवान मेला इक दवारा, दूजा घर ना कोए वखाइंदा। देवणहारा दरस दीदारा, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। खोलू्णहारा बजर किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। देवणहारा वस्त ठंडा ठारा, नाभ कँवल उलटाइंदा। बख्शणहार जोत चमत्कारा, जोत निरँजण दीआ डगमगाइंदा। प्रेम प्रीती कर प्यारा, पीआ प्रीतम मेल मिलाइंदा। भगत वछल सदा गिरधारा, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। कलिजुग अन्तिम दए सहारा, सति सतिवादी पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाइंदा। साचा मेला शब्दी धार, गुर सतिगुर आप मिलाईआ। पतिपरमेश्वर मीत मुरार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। ईश जीव खोलू् किवाड़, जगदीशर होए सहाईआ। साचे मन्दिर आपे वाड़, गृह पड़दा दए उठाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जगत अन्धेर गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावे सहिज सुभाईआ। मेल मिलावा शब्दी गुर, गुर चेला धार जणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्माद इक्को सुर, नाद अनाद जणाइंदा। भगत भगवान अन्तर आत्म जाइण जुड़, रूप अवर ना कोए वखाइंदा। इक दूजे दी पूरी करन थुड़, घाटा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंगे आप प्रभ, प्रभ आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, गुर शब्दी बूझ बुझाईआ। धर्म दवारे आपे सद्द, सद्दा नाम लगाईआ। जगत क्रिया पार हद्द, हदूद इक दरसाईआ। अमृत जाम प्याए निरगुण मदि, सरगुण खुमार रखाईआ। लख चुरासी नालों कर अड्ड, आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला थाउँ थाईंआ। हरिजन मेला थान थनंतर, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। आत्म परमात्म एका मंत्र, सोहँ ढोला इक पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट खोज खुजाइंदा। पावे सार गगन गगनंतर, लख चुरासी पड़दा लाहइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सतिजुग बणाए साची बणतर, कलिजुग कूड़ी क्रिया कालख टिक्का लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले आप मिलाइंदा। सन्त सुहेला सज्जण मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस मिल्या प्रभ अतीत, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। शब्द अगम्मी ढोला गीत, गृह मन्दिर राग सुणाईआ। चरण कँवल उपर धवल सच सच प्रीत, प्रीतीवान इक समझाईआ। नाता तुटे मन्दिर मसीत, जिस सतिगुर पूरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा रिहा चुकाईआ। हरिजन लेखा चुक्के मात, श्री भगवान आप चुकाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दात, नाम निधान झोली पाइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शाही रंग ना कोए रंगाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल वेखणहारा मार झात, अनभव आपणी धार चलाइंदा। परवरदिगार बेपरवाह देवणहार नजात, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मुरीद

मुर्शद होण ना देवे वफ़ात, फतवा अन्त ना कोए लगाइंदा। प्यावणहारा आब हयात, सच प्याला इक वखाइंदा। वेखणहारा कायनात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत वछल दया कमाइंदा। भगत वछल वछल गिरधारा, आपणी दया कमाईआ। बिन नेत्र नैणां वेखे संसारा, बिन कन्नां सुणे लोकाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए वारा, वारता आपणी आप अलाईआ। बिन पंज तत्त करे श्रृंगारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना बन्धन पाईआ। बिन त्रैगुण माया दए सहारा, बिन ब्रह्मा विष्न शिव करे वड्याईआ। बिन काग़ज़ कलम बणे लिखारा, आपणा लेखा दए समझाईआ। इक्को शब्द सुत दुलारा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वणज वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, निरगुण सार कोए ना आईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक लै अवतारा, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पुच्छे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दर दर घर घर भगत भगवान इक्को अलख जणाईआ। सचखण्ड निवासी सच दरबार, सति सतिवादी खेल कराइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह राह चलाइंदा। निरगुण जोत कर उज्यार, दीआ बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। महल अटल उच्च मनार, सोभावन्त आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। सो पुरख निरँजण करे खेल अपार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण ठांडा दरबार, निराकार आप वसाइंदा। एकँकारा वड बलकार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण निराकार निरवैर हो ज़ाहर, ज़हूर आपणा इक दरसाइंदा। अबिनाशी करता खोल्ह कवाड़, मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। श्री भगवान साचे लाल, पुरख अकाल आप जगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो तैयार, आप आपणी खेल कराइंदा। करनी करता करे आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। शब्दी सुत योद्धा बलकार, बलधारी आप उठाइंदा। थिर घर पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सति पुरख निरँजण, सति सतिवादी आप कराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहान लेखा जाणे दर्द दुःख भय भंजन, भेव अभेदा भेव आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीन दयाल ठाकर स्वामी नाम निधान पाए इक्को अंजन, जुगा जुगन्तर एका एक पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सच सुल्ताना, सोभावन्त आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण वड मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। शब्दी शब्द हो मेहरवाना, बेपरवाह आपणा राह चलाईआ। जुग चौकड़ी खेल महाना, करनी करता आप कमाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाना, सच संदेसा इक अलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवणहारा इक ज्ञाना, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी कर निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड

६७०
१३

निवासी पुरख अबिनाशी आपणी करनी आप कराईआ। सचखण्ड दुआर इक महल्ला, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। निरगुण धार निरगुण नूर निरगुण दीपक बला, निरगुण शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। निरगुण फड़ाए निरगुण पल्ला, आप आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपे चढ़, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता रोग ना कोए राईआ। निरगुण होए सति पुरख, नित नवित्त वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव रखे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। निरगुण नूर हो प्रगट, हरि जू आपणा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्म चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, निरगुण सरगुण राह जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सति सतिवादी दे वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाम निधान जणाए महिमा अकथ, मित्र मीता नाम समझाइंदा। आत्म परमात्म साचे मन्दिर वस, काया बंक डेरा लाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, जोत निरँजण डगमगाइंदा। लेखा जाण स्वास स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। खेल कर पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा इक समझाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम तत्त करे कुड़माईआ। चार खाणी बोल जैकार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। चार बाणी कर पसार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी कार कमाईआ। निरगुण देवणहार सहार, सति पुरख निरँजण इक्को नज़री आईआ। निरगुण लै मात अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी जुग जुग करदा, करता पुरख करनहार। निर्भय हो कदे ना डरदा, दो जहानां पावे सार। लख चुरासी अन्दर वड़दा, जोती जाता खेल अपार। साचे मन्दिर आपे चढ़दा, महल अटल उच्च मनार। आत्म परमात्म ढोला इक्को पढ़दा, सोहँ शब्द जैकार। सचखण्ड दुआर गुर अवतार पीर पैगम्बर आपे घड़दा, थिर घर देवे आप बहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दीन दयाल। दीन दयाल खेल अपार, थिर घर शब्दी दए वड्याईआ। शब्दी शब्द वड भण्डार, बेपरवाह आप वरताईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुर अवतार खेल न्यार, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आपणी खेल रचाईआ। आदि खेल रच निरँकार, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। लख चुरासी कर प्यार पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड

वंडाइंदा। आत्म परमात्म भेव न्यार, आप आपणा खेल खलाइंदा। ईश जीव दए आधार, जगदीश रंग रंगाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुनकार, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। सेवा ला गुर अवतार, आप आपणा कर्म कमाइंदा। निहकर्मी हो ख़बरदार, साची ख़बर आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी दए आधार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेस लोकमात, निरगुण सरगुण आप कराईआ। सरगुण देवणहारा दात, इच्छया भिच्छया पूर कराईआ। बोध अगाध शब्द ज्ञान, नाम निधान करे पढ़ाईआ। निश्अक्खर कर परवान, परवाना घर घर वंड वंडाईआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा राह जणाईआ। जुग चोकड़ी राह अनडिठ, नर निरँकार आप जणाइंदा। गुर अवतार कर कर हित, पीर पैगम्बर भेव खुल्हाइंदा। वेस वटाए नित नवित्त, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव धुर दरबार, धुरदरगाही आप जणाईआ। हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव आधार, करोड़ तेतीसा आपणी खेल कराईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार, तेई अवतार निरगुण निरगुण खेल खलाईआ। हुक्मे अन्दर पीर पैगम्बर दे आधार, कलमा नबी रसूल जणाईआ। हुक्मे अन्दर भगत भगवान खोल्ह कवाड़, आत्म हाटी कुण्डा लाहीआ। हुक्मे अन्दर मेल मिलावा घर जैकार, शब्द शब्दी नाद सुणाईआ। हुक्मे अन्दर शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। हुक्मे अन्दर बण भिखार, दर दरवेश अग्गे आपणी झोली डाहीआ। हुक्मे अन्दर बणे वरतार, दाता दानी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी करनेहार, करता पुरख इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लै अवतार, निरवैर पुरख आपणा राह चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे वारो वार, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखार, गीता ज्ञान इक दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुरान कर प्यार, काया काअबा मन्दिर सुहञ्जणा इक सुहाइंदा। खाणी बाणी बोल जैकार, साचा नाअरा इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। जुग चौकड़ी वंड, गहर गम्भीर आप जणाईआ। आदि जुगादि आपे जाणे आपणा कम्म, दूसर भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बेड़ा बन्न्ह, दो जहानां पार कराईआ। वसणहार बिन छप्पर छन्न, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। देवणहारा नाम धन, वस्त अमोलक इक जणाईआ। सुणावणहारा राग कन्न, बिन रसना जिह्वा गाईआ। चढ़ावणहारा साचा चन्न, बिन सूरज चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग

जुग आपणा हुक्म जणाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि करतार, हरि करता आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख्या वारो वार, नव नौ चार वंड वंडाइंदा। गुर अवतार सेवादार, पीर पैगम्बर सीस झुकाइंदा। वरन बरन ज़ात पात रंग रंगे करतार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल ख़ालक, मखलूक रंग चढ़ाईआ। पीर पैगम्बर बण सालस, सच सालसी मात कराईआ। निरगुण धार सरगुण ख़ालस, ख़ालस आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करदा आया, करनहार इक अख्वाईआ। लेखा जाण त्रैगुण माया, पंज तत्त करे कुड़माईआ। जुग चौकड़ी राह चलाया, गुर अवतार सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत दए उपजाया, नाम निधान सिफ्त सालाहीआ। रसना जिह्वा सरगुण गाया, निरगुण भेव चुकाईआ। कलम शाही माण दवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। आपणा खेल करे मात, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। जुग जुग पूरी करे ख्वाहिश, ख्वाहिश ख्वाहिश नाल प्रनाइंदा। निरगुण सरगुण वेखे खेल तमाश, गोपी काहन मण्डल रास रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर एकँकार एका एक सुहाइंदा। सचखण्ड दवारे निरगुण जोत, निरवैर पुरख अख्वाईआ। वसणहारा एका कोट, दूजा बंक ना कोए वड्याईआ। शब्द अगम्म नगारा चोट, दो जहान शनवाईआ। देवणहार सद अतोट, भण्डार इक्को इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण निरगुण बणाए गोत, सरगुण सरगुण घर वखाईआ। शब्दी धार ओत पोत, पुत पोतरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे एकँकार, अक्ल कला अख्वाइंदा। निरगुण नूर जोत उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जुग चौकड़ी कर पसार, परम पुरख फेरा पाइंदा। लेखा जाण गुर अवतार, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। दर दरवेश मंगदे गए बण भिखार, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। देवणहार हरि भण्डार, आदि अन्त आप वरताइंदा। काग़ज़ कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग जुग पन्ध गया मुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम नेड़े आया ढुक, दो जहान देण गवाहीआ। चौदां तबकां बूटा रिहा सुक्क, आबे हयात ना कोए प्याईआ। चौदां लोक वेखण लुक लुक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी राह तक्कण सुत, कवण दवारे फेरा पाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दए कराईआ। निरवैर सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। लख चुरासी वेखे काया बुत्त, घर घर

आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पांधी बणे इक्को राहीआ। कवण वेला बणे पांधी राही, रहबर इक्को नज़री आईआ। दो जहानां कटे फाही, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग कूड़ी मिटे शाही, दुरमति मैल धवाईआ। गोबिन्द एका बूटा पुट्टया काही, कूड़ी क्रिया दए उखड़ाईआ। मेल मिलाए झीवर छींबे नाई, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। चार वरन बणाए भाई भाई, बरन अठारां दए रुढ़ाईआ। निर्मल जोत करे रुशनाई, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। आत्म परमात्म होए सहाई, दूजा लेख रहिण ना पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाए सच गोसाईं, गहर गम्भीर थाउँ थाईंआ। ग़रीब निमाणयां कोझे कमल्यां पकड़े बांही, जगत रुसयां लए मनाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां दए ख़ाक रलाई, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता कलिजुग आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार रहे उडीक, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। निरवैर पुरख तेरी आई तरीक, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरा नाउँ लाशरीक, शिरकत मेट खुदाईआ। तेरे विच इक तौफ़ीक, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर बेपरवाहीआ। वेला अन्तिम आया ठीक, गोबिन्द लेखा गया समझाईआ। निरगुण जाणे सच प्रीत, श्री भगवान तोड़ निभाईआ। वेद व्यासा वेखीए नज़दीक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा श्री भगवान, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। विष्नूं उठ कर ध्यान, हरि विश्व खेल कराइंदा। ब्रह्मे ब्रह्म ना हो अणजाण, बाली बुध वड्याइंदा। शंकर वेख धूंआँधार, हरि निरगुण जोत जोत चमकाइंदा। करोड़ तेतीसा चुके काण, सुरप्त इन्द रहिण ना पाइंदा। त्रैगुण माया होए वैरान, वैरी घर घर नज़री आइंदा। पंज तत्त चढ़े तूफ़ान, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। लख चुरासी होए वैरान, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली डाहइंदा। तूं दाता दानी वड मेहरवान, तेरी मेहर अन्दर सब कुछ नज़री आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दस्स दस्स आए विच जहान, कलम शाही काग़ज़ रंग रंगाइंदा। तेरा भेव ना पाए कोई नौजवान, निज घर नज़र किसे ना आइंदा। कूड़ी क्रिया घर घर वड़या शैतान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर घर आसण लगाइंदा। गुर अवतार तक्कण राह, नेत्र नैण उठाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मिले मलाह, दो जहानां बेड़ा रिहा तराईआ। भगत अठारां करन सलाह, मिल मिल आपणा मता पकाईआ। कवण वेला बख़्शे सर्ब गुनाह, गुण अवगुण मेटणहारा हरि निरँकार अख्वाईआ। कवण वेला देवे चरण पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा मुकाए थाउँ थाँ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, दर तेरे दस्त उठाईआ। विष्न कहे प्रभ छेती आ, मैं तेरी आस रखाईआ। ब्रह्मा कहे पारब्रह्म फेरा पा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। शंकर कहे मैं मस्तक चरण धूढ़ी टिक्का रिहा लगा, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। करोड़ तेतीसा कहे साडा पन्ध मुका, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। तेई अवतार कहिण साडी चले ना कोई वाह, कलिजुग जीव तेरा नाउँ गए भुलाईआ। भगत अठारां मारन धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कबीर कहे मैं आया समझा, प्रभ इक्को सच्चा माहीआ। मूसा कहे तेरा जलवा तक्कया बेपरवाह, मेरी सुध रही ना राईआ। ईसा कहे मैं कह के आया इक खुदा, मेरा पिता मेरे पिच्छे आवे वाहो दाहीआ। मुहम्मद कहे मैं तेरे दर मंगदा रिहा पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अमाम अमामां सिर आवे नूर धरा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। आपणा जलवा दए वखा, बेनज़ीर फेरा पाईआ। चोदां तबक लहिणा देणा दए मुका, चौदस चन्द वेख वखाईआ। नानक निरगुण कहे मैं निरगुण आया समझा, पुरख अकाल वड वड्याईआ। इक्को ढोला लैणा गा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सोहँ वचोला लैणा बणा, अंगीकार इक कराईआ। मंत्र सति नाम दृढ़ा, दृष्ट इष्ट दए खुल्लाईआ। एका जोती जोत सच रुशना, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। गोबिन्द नूरी नूर धरा, पिता पुरख अकाल माईआ। सुत दुलारा इक वडया, खड़ग खण्डा नाम चमकाईआ। चार वरनां भेव चुका, अमृत आत्म जाम प्याईआ। कर कर खेल विच जहान, दर दर इक्को आण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा राह रहे तकाईआ। श्री भगवान हो खुशहाल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। एकँकार वड बलवान, बलधारी भेव चुकाइंदा। आदि निरँजण जोत महान, नूर नूराना नूर रुशनाइंदा। श्री भगवान देवणहारा दान, सच संदेसा इक सुणाइंदा। अबिनाशी करता हथ्थ लै निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। पारब्रह्म कर परवान, सति परवाना आप अल्लाइंदा। ब्रह्म देवणहारा माण, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी करे कल्याण, मेहर नज़र आप टिकाइंदा। तेई अवतारां करे परवान, पिछला लेखा आपणी झोली पाइंदा। भगत अठारां बख्शे इक ध्यान, चरण सरन सरनाई इक रखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद जणाए इक कलाम, कलमा निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। नानक गोबिन्द कर प्रणाम, परम पुरख वेख वखाइंदा। साचे मन्दिर वसे आण, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, श्री भगवान आप जणाईआ। प्रगट होए नर नरेशा, निरगुण आपणी कल धराईआ। वेखणहारा देस परदेसा, ब्रह्मण्डी खण्डी खोज खुजाईआ। जोती नूर करे वेसा, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेडा, बण खलारी फेरा पाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक समझाईआ। कलिजुग अन्तिम आवांगा। बेपरवाह अख्वावांगा। निरगुण जोती जामा पावांगा। जोती जोत रुशनावांगा। शब्दी राग सुणावांगा। दो जहान उठावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा लाहवांगा। लोआँ पुरीआँ फोल फुलावांगा। गुर अवतार दर बहावांगा। पीर पैगम्बर हुक्मे विच रखावांगा। सृष्ट सबाई वेख वखावांगा। हरिजन साचे आप जगावांगा। आत्म परमात्म दे टेक, बुध बिबेक वखावांगा । कलिजुग अन्तिम मेट रेख, सतिजुग साचा राह चलावांगा। जन भगतां कर हेत, हितकारी हरि अख्वावांगा। अन्दर वड़ के दस्सां भेत, दूई द्वैती पड़दा लाहवांगा। दो जहानां बण नरेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह इक्को इक अख्वावांगा। लेखा लिख के पहली चेत, वीह सौ वीह शाह सुल्तानां मूँह दे भार सुटावांगा। अग्ग लग्गे पंचम जेठ, सृष्ट सबाई जोती लम्बू लावांगा। गुरमुख रखां साया हेठ, गुरसिख चरणी आप बहावांगा। हरि जी वेखे जगत खेत, कलि कल्की फेरा पावांगा। उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारों कुण्ट बालू रेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां एका घर वखावांगा। आपणी खेल रचावांगा। पिछला लेखा सर्ब वखावांगा। कलिजुग वेला पन्ध मुकावांगा। गुरमुख मेला मेल मिलावांगा। बण सज्जण सुहेला डंक नाम इक वजावांगा। जन भगतां वाली अख्वावांगा। सन्त साचा सगन मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा । साची करनी कर वखावांगा। निहकलंक हो के आवांगा। दुआर बंक इक सुहावांगा। सम्बल आपणा आसण लावांगा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वडयावांगा। उच्चे टिल्ले पर्बत ढावांगा। समुंद सागर फोल फुलावांगा। डूँघी कन्दर पन्ध मुकावांगा। लख चुरासी पड़दा लाहवांगा। गुरमुख सड़दा आप बचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां इक्को राहे पावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्हो अक्ख, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रतख, प्रतख आपणी धार चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दो जहानां उडण कक्ख, कुल्ली कक्ख नज़र कोए ना आएगा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरसिख सज्जण श्री भगवान लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। आत्म परमात्म देवे नाम वथ, वस्त अमोलक आप वरताएगा। बण रथवाही चलाए रथ, रथ इक्को नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक जणाएगा। साचा मार्ग दस्सांगा। हर घट अन्दर वसांगा। प्रेम प्यार अन्दर फसांगा। दूई द्वैत कोलों नस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी करनीयों कदे ना हटांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दर, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जुग जुग तेरा मन्नदे रहे डर, तेरे हुक्मे सेव

६७६
१३

कमाईआ। सदा सदा सद देंदा रिहों वर, वर आपणा नाम झोली पाईआ। तेरा सिफ्त सालाही अक्खर नाउँ आए पढ़, निष्अक्खर तेरे दर ते नज़री आईआ। कर किरपा अन्त बांहों फड़, आपणी करवट लै बदलाईआ। नाता छड के आए सीस धड़, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। तेरी सरनाई डिगे दड़, नधड़क तेरी ओट तकाईआ। तूं ही चोटी तूं ही जड़, मध तूं ही नज़री आईआ। तेरा दुआर सच्चा घर, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। लोकमात दीन मज़्हब ज़ात पात कलिजुग जीव रहे सड़, झगड़ा तेरे नाम पाईआ। मुल्ला शेख़ मसायक सच हदीस सके ना कोई पढ़, कलमा नबी ना कोए समझाईआ। अल्फ़ ये गई हर, हैरानी चार कुण्ट छाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ आवे डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पीर पैगम्बरो तक्को राह, हरि रहबर आप जणाइंदा। जो सिख्या आए सिखा, कवण लोकमात नाल निभाइंदा। उम्मत उम्मती गए भुला, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। आपे दस्सो परवरदिगार की देवे सज़ा, कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद लए सीस झुका, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। तेरे अग्गे इक दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जिउँ भावे तिउँ कर रज़ा, साडा बल ना संग निभाइंदा। तूं लाशरीक वाहद इक खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। जो तेरे नालों होए जुदा, जुज़ तेरा ना कोए रखाइंदा। अजूनी जून दे भवा, राए धर्म राह तकाइंदा। लाड़ी मौत हथ्थ फड़ा, ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील अज़राईल संग ना कोए निभाइंदा। मुर्शद आपणे मुरीद लै बचा, जो तेरा कलमा इक ध्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। तेरे दर अलख मेहरवान, मेहर नज़र टिकाईआ। दर बरदे बणे गुलाम, गुरबत रही ना राईआ। अग्गे चले ना कोए इस्लाम, इस्म आज़म ना कोए जणाईआ। तेरा कलमा हक़ कलाम, कायनात तेरी तेरे विच समाईआ। तूं अमाम महिदी देवणहार पैग़ाम, सच संदेस सुणाईआ। तूं आदि जुगादी इक्को राम, रमिआ हर घट थाईंआ। तेरा खेल अन्त महान, पीर पैगम्बर भेव कोए ना पाईआ। अञ्जील कुरान होई हैरान, तीस बतीस ना कोए सालाहीआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, सदका सच ना कोए रखाईआ। जिउँ भावे तिउँ मेट निशान, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। कर किरपा सानूं कर परवान, दूर दुराडे तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन मिले सरनाईआ। साची सरन देवांगा अन्त, श्री भगवान आप जणाइंदा। सदी बीसवीं बणाए बणत, घड़न भंनणहार खेल कराइंदा। लख चुरासी लेखा वेखे जीव जंत, जगत जहान फोल फुलाइंदा। कवण गाए मणीआं मंत, आत्म परमात्म कवण वेख वखाइंदा। कवण हंढाए सच सुहञ्जणा कन्त, विभचार कवण हंढाइंदा। कवण महिमां जणाए अगणत, भेव अभेद

९७७
१३

खुलाइंदा। कवण तोड़े गढ़ हउमें हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। कवण होए साचा पंडत, निष्अक्खर नाम सालाहइंदा। लेख मुकाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेख लिखाइंदा। भगत अठारां पए रो, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। श्री भगवान सवाधान हो, तेरी ग़फ्लत कम्म किसे ना आईआ। चार कुण्ट चौथे जुग चार वरन आत्म परमात्म सब दी टोह, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तेरा नाम निशान बैठे खो, कूड़ी क्रिया कर कुड़माईआ। अमृत आत्म कोई ना सके चो, अठसठ फिरन वाहो दाहीआ। दुरमति मैल कोई ना सके धो, गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले बैठे डेरे लाईआ। तेरी सच ना सुणे कोई सो, सो पुरख निरँजण तेरा रूप नजर किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया फसे काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा छोह, होछापन जगत वड्याईआ। चन्द प्रकाश करे ना कोई लो, अन्ध अन्धेर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, भगत तेरा राह तकाईआ। भगत जनो मैं आवांगा। दुखियां दुःख मिटावांगा। आत्म सुख उपजावांगा। मात गर्भ दा उलटा रुख, आपणी हथ्थीं जड़ उखड़ावांगा। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, लख लख शुकर मनावांगा। उज्जल करां मात मुख, शब्द बोध अगाध पढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बण सेवक सेव कमावांगा। सेवक हो के आएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। लख चुरासी खोज खुजाएगा। भगत भगवान फड़ उठाएगा। अन्तर आत्म बूझ बुझाएगा। सोहँ मंत्र इक पढ़ाएगा। गगन गगनंतर खोज खुजाएगा। बिध अन्तर आप वखाएगा। ब्रह्म निरंतर मेल मिलाएगा। ब्रह्म नज़र ना आएगा। निहकर्मी कर्म कराएगा। सरन इक्को वेख वखाएगा। मरन इक्को इक सिखाएगा। नौ खण्ड पृथमी राज राजानां चरणां हेठ दबाएगा। सीस ताज इक टिकाएगा। गुरू महाराज आप अख्वाएगा। शब्द राग इक सुणाएगा। छत्ती राग पन्ध मुकाएगा। भेव अभेदा भेव खुल्हाएगा। चार वरन नैण शरमाएगा। अठारां बरन डेरा ढाहेगा। अञ्जील कुरान रहिण ना पाएगा। गीता ज्ञान भगत भगवान इक दृढ़ाएगा। काया मन्दिर इक वसाएगा। जिस घर बहि बहि खुशी वखाएगा। अनहद नादी नाद सुणाएगा। ब्रह्म ब्रह्मादी फेरा पाएगा। पिछली वादी आप मुकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां इक्को राह तकाएगा। जन भगत इक्को राह लभ्भेगा। पुरख अकाल सूरा गज्जेगा। जगत विकारा कूड़ा भज्जेगा। मूर्ख मूढ़्हा चरणी लग्गेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहान श्री भगवान शाह पातशाह शहिनशाह सच सिँघासण इक्को सजेगा। नानक गोबिन्द पए हस्स, दर साचे आसण लाईआ। पारब्रह्म तेरा खेल समरथ, भेव कोए ना आईआ। जगत पन्ध मुकाएं

६७८
१३

नस्स नस्स, बण पांधी पांधी राहीआ। जन भगतां पूरी करें आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जिन्हां तेरे मिलण दी लग्गी प्यास, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। घर मन्दिर वखाएं रास, गोपी काहन नचाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, ब्रह्म पारब्रह्म दरसाईआ। डूँग्घी कन्दर पुछें वात, उच्चे मन्दिर दएं वड्याईआ। बंद कवाड़ी खोलें ताक, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। लेखा मुकाए चौदां लोक वाट, परलोक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग हथ्थ तेरे वड्याईआ। नानक गोबिन्द सच ख्याल, हरि साचा सच जणाइंदा। गोबिन्द शब्द इक दलाल, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। लख चुरासी विच्चों वेखे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवान लए भाल, आप भाल्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। घर विच घर वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक जणाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत डगमगाइंदा। जा के पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल नाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप दृढ़ाइंदा। नानक गोबिन्द कर ध्यान, नेत्र नैण नैण निहालया। तेरा खेल वड महान, बेपरवाह श्री भगवानया। कलिजुग अन्तिम होएं प्रधान, निहकलंक नौजवानया। कलि कल्की तेरा निशान, योद्धे सूर मर्द मर्दानया। तेरा सम्बल इक मकान, बेमुकाम आप सुहा ल्या। तेरा धर्म इक निशान, दो जहानां आप झुला ल्या। तेरा नाम इक निधान, सोहँ अक्खर आप सिखा ल्या। गोबिन्द अन्त कह के गया मेरा सोहँ चिला तीर कमान, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठा ल्या। खण्डा कोई ना रखे म्यान, लोहार तरखाण ना कोए घड़ा ल्या। मेरा नाता जुड़या नाल श्री भगवान, पुरख अकाल मेरा संग निभा ल्या। कलिजुग अन्त होए प्रधान, दो जहानां वेख वखा ल्या। जन भगतां करे परवान, आप आपणा मेल मिला ल्या। सत्तर बहत्तर चुहत्तर कर परवान, किला इक्को इक दरसा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा भेव जणा ल्या। आपणा भेव दस्स गोबिन्द, गहर गम्भीर दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण ना पाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले वेखे अनादी बिंद, पूत सपूते लए जगाईआ। पावे सार जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। धार अमृत देवे सागर सिन्ध, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा जणाईआ। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाना, धुर शब्दी शब्द जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तख्तों लाहवां राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। चार वरन अठारां बरन सर्ब कुरलाणा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। ना कोई दिसे मुल्ला शेख़ मुलाणा, पंडत पांधा पन्ध मुकाइंदा।

क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मिटे निशाना, आत्म परमात्म भेव खुलाइंदा। चार वरनां इक्को गाणा, राग अनाद इक अलाइंदा। चार वरनां इक मकाना, काया मन्दिर अन्दर आप वखाइंदा। चार वरनां इक सुल्ताना, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। चार वरनां इक्को माणा, ऊँच नीच ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी करे करतार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। बीस बीसा हो उज्यार, जगत जगदीशा रंग रंगाईआ। सच संदेसा देवे इक्को वार, एकँकार कर सिखाईआ। ना कोई मेटे मेटणहार, अमिट भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति संदेसा नर नरेशा निरगुण इक्को इक जणाईआ। शब्द संदेसा उठे दूत, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। पहली चेत जगाए चारे कूट, दहि दिशा पड़दा लाहइंदा। कलिजुग मेटणा जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाइंदा। द्वैत रहिण ना देणी फूट, माया ममता मोह चुकाइंदा। एका तागा एका करना ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी इक्को नज़री आइंदा। मनुश मनुख रहे ना कोए कपूत, विभचारी धीर ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द आप जगाइंदा। शब्द गुर उठ जाणा दौड़, दो जहानां वाली आप जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखणा रस मिट्ठा कौड़, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जन भगत दवारे जाणा बौहड़, तेरा मेरा भेव चुकाईआ। नेत्र खोल्ह वेखणा ग़ौर, गहर गम्भीर रिहा समझाईआ। अग्गे पिच्छे वेला होर अग्गे होए होर, वार थित आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी बीसवीं राज राजान शाह सुल्तान इक दूजे दे पिच्छे दित्ते तोर, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम रहिण ना देवे कोई ठग्ग चोर, कूड़ी क्रिया शौह दरया रुढ़ाईआ। माणस मानुख कोई ना दिसे ढोर, मनुश मानव इक्को रंग रंगाईआ। अग्गे चलण ना देवे किसे दा ज़ोर, ज़ोरू ज़र ख़ाक मिलाईआ। एका मंत्र फोरे फुरना फोर, फुरने सब दे बंद कराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे हथ्थ रखे डोर, जिउँ भावे लए चलाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह बेनज़ीर चढ़ के वेखे साचे घोड़, शाहसवारा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द रिहा जणाईआ। सुत शब्द कहे मैं उठांगा। तेरे हुक्मे अन्दर नट्ठांगा। प्रभ लख चुरासी कुठांगा। कलिजुग जड़ पुट्टांगा। शौह दरयाए सुट्टांगा। तेरे भगतां जा के पुच्छांगा। ओनांह दे अन्दर वड़ के लुकांगा। निर्भय हो के बुकांगा। आपणे निशान्यौं कदे ना उकांगा। ग़रीब निमाणयां गोदी चुकांगा। वीह सौ इक्की कर खेल तेरे चरणां सुटांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भाणयो कदे ना उकांगा। गुर शब्द भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम पैंडा मुक्कणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। लख चुरासी बूटा सुक्कणा, हरया सिंच

ना कोए कराईआ। गुरमुख विरला लोकमात फुट्टणा, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जिस सति पुरख निरँजण गोदी चुकणा, तिस मिले माण वड्याईआ। कूड़ कूड़यारां मिले ना अन्तिम लुकणा, चार कुण्ट थाउँ नज़र कोए ना आईआ। धर्म राए फड़ फड़ कुसणा, चित्रगुप्त लेख वखाईआ। श्री भगवान बिन भगतां सब दे नालों रुस्सणा, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। दो जहान निरगुण चरणी झुकणा, सरगुण मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा समझाईआ। तेरा संदेसा सुण भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव नीर वहाईआ। हउँ बाले नढ्ढे अञ्याण, बेवस ध्यान लगाईआ। कर किरपा श्री भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। अन्तिम दे इक्को दान, दर तेरे मंग मंगाईआ। चरण कँवल रहे ध्यान, दूजी पलक ना कोए खुल्हाईआ। तेरा नाम मिले ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो इकठ्ठे, इक ध्यान लगाया। अन्तिम सरनी तेरी ढठ्ठे, आपणा माण गंवाया। दीन मज़्हब चुके सब दे रट्टे, रट्टा कोई रहिण ना पाया। असीं लिख लिख दे के आए तेरे पते, सच निशाना दे झुलाया। तेरी वेख खेल होए हक्के बक्के, तेरा अन्त कोए ना पाया। तेरी धूढ़ी चरण ख़ाक, नाल रत्ते, रत्ती रत्त ना कोए दसाया। दरोही खुदा असीं छड्डे मदीने मक्के, मकबरयां विच दिती दुहाया। असीं गुर अवतार

बण गए सारे भाई भाई सके, पिछला रट्टा ना कोए रखाया। नानक निरगुण सानूं इक्को मार्ग दस्से, सच सच रिहा समझाया। श्री भगवान हर घट हिरदे वसे, लख चुरासी डेरा लाया। क्यों दीनां मज़्हबां विच फसे, आत्म सब दा शब्द दयो वडयाया। साडे पिछले लेखे रहि जाण ठप्पे, अञ्जील कुरान तेरी झोली पाया। तेरे दर ते आए सद्दे, आपणा माण गंवाया। साडी कोई ना रही हद्दे, किनारा रूप ना कोए वखाया। असीं तेरी बण गए यद्दे, विष्नूं आपणा आप मिलाया। जिस धारों हरि जू आप कढ्ढे, अन्त ओसे विच लए मिलाया। क्यों चौदां सदीआं अद्ध विच छड्डे, अग्गे मिली ना कोई सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश, बण के फेरा पाया। परवरदिगार सच समझाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म अल्हाइंदा। नूर इलाही डगमगाइंदा। मुकामे हक़ इक रुशनाइंदा। हकीकत हक़ फोल फुलाइंदा। तारीक जगत मेट मिटाइंदा। लाशरीक वेख वखाइंदा। हो नज़दीक भेव चुकाइंदा। पहली चेत्र नेड़े आइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी राह तकाइंदा। चौथी मंज़ल डेरा लाइंदा। भगत भगवान नाल रलाइंदा। धुर फ़रमाना इक सुणाइंदा। पिछली कीती सर्ब मिटाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद ख़ाली खीसी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा सर्ब सुणाइंदा। सच संदेसा देवे आप, आपणी दया कमाईआ। पहली चेत चल के आउणा जिथ्थे वसे सच्चा बाप, पिता

इक्को इक अख्वाईआ। चौदां तबक कदमां नाल औणे नाप, कदम कदम समझाईआ। वेख के आउणा उम्मत उम्मती पाक, पाक रसूल रिहा समझाईआ। आपणयां मकबरयां दी लै के औणी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक दए विछाईआ। चौथी मंज़ल चढ़ के फेर वखा खोल्हे ताक, अग्गों पिच्छों नज़री आईआ। गुर गोबिन्द दा पूरा करे भविख्त वाक, वाक्य अक्खीं दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नजात आपणे हथ्थ रखाईआ। पीर पैगम्बर कहिण प्रभू असीं आवांगे। दर आ के दर्शन पावांगे। सजदा सीस झुकावांगा। धूढ़ी टिक्का मस्तक लावांगे आपणा आप मिटावांगे। सगन इक्को इक मनावांगे। जो कहें सो झोली पावांगे। तेरे हुक्मे अन्दर आपणी कार कमावांगे। मक्के काअबे वज्जे जन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लख लख शुकर मनावांगे। सच संदेस जणाऊँगा। फड़ उंगली राहे पाऊँगा। आपणा पर्दा आप खुल्हाऊँगा। मुख नक़ाब ना कोए रखाऊँगा। सच नवाब नज़री आऊँगा। पुन्न सवाब पन्ध मुकाऊँगा। अस्व घोड़े चरण रकाब टिकाऊँगा। महिराब हुजरा वेख वखाऊँगा। आदाब इक्को इक समझाऊँगा। सच नवाब नज़री आऊँगा। नग़मा नाम आपणा दृढ़ाऊँगा। नूर नूर विच मिलाऊँगा। ज़हूर ज़हूर विच रुशनाऊँगा। मजबूर मजबूर कर समझाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेद खुलाऊँगा। भेव अभेद खोलांगा। सच दवारे इक्को बोल बोलांगा। पीर पैगम्बरो पूरा तोल तोलांगा। अन्दर वड़ के सब नूं फोलांगा। आदि अन्त कदे ना डोलांगा। लख चुरासी ख़ाक वरोलांगा। जन भगतां उत्तों आपणा आप घोल घोलांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाअरा इक्को बोलांगा। साचा नाअरा इक सुणाऊँगा। फड़ बांहों मार्ग लाऊँगा। सोहँ ढोला इक जणाऊँगा। पड़दा उहला आप उठाऊँगा। घर घर विच मौला हो के नज़री आऊँगा। पिछला रौला सर्ब चुकाऊँगा। उलटा कर कौला आबे हयात प्याऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पहली चेत्र सच सच दृढ़ाऊँगा। सच सच दृढ़ावांगा। गुर अवतारां नाल रलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ उठावांगा। इकवंजा बवन्जा धार इक्को घर जणावांगा। सत्त चार कर चुहत्तर अंक आप बणावांगा। बहत्तर कर प्यार, दो सत साता सच्ची खेल रचावांगा। सत्तर नाल रलावांगा। दो जहानां दे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ावांगा। लख चुरासी जाण आप घट घट, तन्द आपणे हथ्थ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा भेव खुल्हावांगा। साचा भेव खुल्लेगा। गुरमुख कदे मात ना रुलेगा। जन भगत कदे ना भुल्लेगा। भगत भगवान कदे ना डुलेगा। सन्त सुहेला फले फुलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच

संदेसा इक्को घल्लेगा। गुरसिख भुल्ल वड्डी होई परवान, सतिगुर आपणी झोली पाईआ। गुरसिख जगत भुलया जहान, नेंह सतिगुर नाल लगाईआ। गुरसिख दी भुल्ल लख चुरासी विच्चों प्रगट कीता ज्ञान, घर परमात्म मेल मिलाईआ। गुरसिख वड्डी भुल्ल घर पाया पुरख सुजान, छड्डी जगत लोकाईआ। गुरसिख वड्डी भुल्ल होई चतुर सुघड़ सुजान, जिस आपा तज परमात्म गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां दी गुरसिक्खी भुल्ल, धुर दी लिखी रखे अडुल, आपणे लेखे लए लगाईआ। एह भुल्लां दी वड्डी राणी, जेहड़ी शब्द मिलावे हाणी, घर साचे सोभा पाईआ। सतिगुर दी सुणावे अकथ कहाणी, वेद पुराण कहिण ना पाईआ। जिस दी चार बाणी बणी सवाणी, सो साहिब मेल मिलावा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख भुल्ल अमृत देवे ठंडा पाणी, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। भुल्ल कहे मैं बड़ी वड्डी, गुरमुख जगत नालों भुलाया। कूड़ी वासना विच्चों कढ्ढी, माया ममता मोह चुकाया। आपणा नाम पंज तत्त वसाया हड्डीं, रत्त नाड़ी मास रंग रंगाया। कर जोत प्रकाश डूँग्घी खड्डी, अन्ध अन्धेर गंवाया। मैं भगतां घर आई सद्दी, सद्दा सतिगुर नाम सुणाया। नौ दवारे कर के पार हद्दी, सुखमन टेडी बंक डूँग्घी भँवरी डेरा ढाया। आसा तृष्ना माया ममता छड्डी, जगत विकार नाता तोड़ तुड़ाया। भुल के सवाणी मिली शब्द हाणी गुरसिख आत्म सेज बहि के सजी, घर आपणा कन्त पाया। प्रेम प्यार अन्दर बद्धी, मति मतिवाली होई नैण शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाया आपणा घर, तिस लेखा लेखे लए लगाया। गुरमुख भुल्ल कहे मैं सदा सुहागण, रंडेपा नज़र कोए ना आईआ। अठ्ठे पहर रहां वैरागण, बिरहों रोग सताईआ। दिवस रैण मेरे नैण जागण, आलस निंद्रा दिती मुकाईआ। मैं हँस होई कागण, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। चरण धूढ़ी अशनान मिल्या माघन, दुरमति मैल धवाईआ। मैं दस्सण आई आंढण गवांढण, प्रभ मिलो सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाए आपणा घर सो भुल्ली भटकी दर तेरे आ सोभा पाईआ। एका ढय्या दे के गया मुनयाद, गुर गोबिन्द लेख जणाईआ। कलिजुग अन्त सुणे फ़रयाद, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी फेर कराए याद, बीस बीसा हरि रघुराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार वरन लए साध, साधना इक्को इक जणाईआ। अग्गे समां थोड़ा रहि गया कोई सीस तों बाल ना सके काट, जो कटे तिस देवे सज़ाईआ। कलिजुग अन्तिम खेलया खेल बाज़ीगर नाट, बण नटुआ स्वांग वरताईआ। सूरत सच रब्ब दी करे साख्यात, सखी सरवर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव खण्ड पृथ्मी जटा जूट बणाईआ। चरण कँवल डूँग्घा सागर, संसार पार कराईआ। भाग लगाए काया गागर, गहर गम्भीर

वेख वखाईआ। देवे नाम रती रत्नागर, रतन अमोलक झोली पाईआ। दर आयां घर देवे आदर, आपणा आदर्श वखाईआ। नाम पाए चिटी चादर, गुर तेग़ बहादर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल कँवल चरण इक्को इक दरसाईआ। चरण कँवल सच सहारा, लोकमात दरसाइंदा। गुर सतिगुर सिख करे प्यारा, प्रेम प्रीती राह जणाइंदा। कलिजुग अन्त बण वणजारा, सच सच हट खुल्ाइंदा। गुरमुख गुर गुर इक्को धारा, धार धार विच्चों जणाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जाता नूर रुशनाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठारा, भर प्याला जाम प्याइंदा। बजर कपाटी तोड़ ताला, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दए सिखाला, सो पुरख आप जणाइंदा। अजपा जाप अन्तर पाए माला, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। पूरब लेखे लाए घाला, घाली घाल लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल इक वड्याइंदा। जन चरण कँवल साची धूल, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। मन मनसा होए दूर, रोग सोग ना कोए वखाईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हरिजन आसा पूर कराईआ। सर्ब कला सतिगुर भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस जलवा दित्ता मूसे कोहतूर, तुरत आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दए वड्याईआ। चरण कँवल मिले मीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आइंदा। आत्म परमात्म गाए गीत, सोहँ ढोला राग अल्ाइंदा। नज़री आए सतिगुर अतीत, त्रैगुण बन्धन ना कोए पाइंदा। कर किरपा वसे चीत, मन चित ठगौरी ना कोए वखाइंदा। काया करे पतित पुनीत, पतित पापी पार कराइंदा। अमृत मेघ बरसे ठांडा सीत, अग्नी तत्त बुझाइंदा। घर विच घर वखाए ठीक, कूड़ी क्रिया ठीकर भन्न वखाइंदा। चरण कँवल लग्गी प्रीत, प्रीतीवान तोड़ निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरण कँवल मंगे मंग, दोए जोड़ सरनाईआ। सुरती शब्द डोर पतंग, घर मन्दिर खेल वखाईआ। अनहद शब्द वजा मृदंग, अनादी नाद सुणाईआ। सेज सुहञ्जणी वेख पलँघ, आत्म सोभा पाईआ। निज घर देवे अनन्द, निजानंद इक दरसाईआ। भाण्डा भरम भउ ढाहे कंध, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जिस जन आपणा नाम देवे सोहँ सुहागी छन्द, आवण जावण पतित पावण लख चुरासी फंद देवे कटाईआ।

❇ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी औरंगज़ेब दे मकबरे उत्ते खुलदाबाद ❇

नाबूदे बतरफ़, पेशवा पेशगोई। मुज़ाहर दाऊदे हरफ़, तालब उल्माना हज़रते अनोही। गोबिन्दे शरक, आफ्ताब तलोई। शहिनशाह शकर, नोशे नज़ोही। खुदावंद मुशरक्क, मसलते सनोही। रहमत करीम, कयामते दरोही। बेनज़ीर आमद, खुशामद मबोही। ज़री ख़ाक दामन, पुश्त बे वजोही। कादरे कायनात मुशाहिद, मुसतफ़ा शनोई। ज़ाहरा पीर वाहद, लाशरीक इक शनोई। रहबर नजात वफ़ात आकात लुग़ाते सफ़ात महिवख़ाना सुराही। कदमबूस शबनूस हवस हूस हाजत अलोही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलमा आलमीन मेहरवान या मबीन गोबिन्द सच तलकीं तुआरफ़ बेनज़ीं मुतयन्न मुतआसर मुहासर ख्वाब फ़र्शीरे बज़ूद आज़र्गीं।

❇ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह औरंगाबाद ❇

तेरा खेल अनडिठ भगवान, आदि जुगादि नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कठ्ठे कीते आण, धुर संदेसा सच सुणाइंदा। पीर पैगम्बर चरण कँवल करन ध्यान, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। भगत दरवेश होए हैरान, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। कलिजुग कूके आपणा देवे, ब्यान उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। तूं साहिब सदा निगाहबान, आदि जुगादि जुग जुग वेख वखाइंदा। मैं तेरा बाल अञ्याण, छोटा सुत अख्वाइंदा। चार कुण्ट मेरा निशान, प्रभ तेरे सहारे झुलाइंदा। तूं दित्ता मैनूं दान, मैं तेरी आस रखाइंदा। नव खण्ड पृथमी वेख मार ध्यान, घर घर मेरा रंग नज़री आइंदा। मैं साबत रहिण ना दित्ता किसे दा ईमान, शरअ शरअ नाल टकराइंदा। लख चुरासी अन्दर वाड़या इक शैतान, हुक्म हाकम आप समझाइंदा। चार खाणी होई वैरान, बाणी बाण ना कोए लगाइंदा। इकवंजा बवन्जा तेरा खेल महान, पंज दो तोहे सोभा पाइंदा। मैं सुण के होया हैरान, निरगुण की की खेल रचाइंदा। सभना कोलों लए ब्यान, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। कलिजुग कहे सुण भगवान, मेरी तेरे अग्गे अरज़ोईआ। मैं योद्धा सूर बड़ा बलवान, बल आपणा आप धराईआ। तेरा मन्नया धुर फ़रमान, लोकमात सेव कमाईआ। किसे दा चल्लण ना दित्ता ज्ञान, अज्ञान अन्धेर रखाईआ। नाद सुणन ना दित्ता किसे कान, आत्म रस ना कोए वखाईआ। नव नौ चार कीती बियाबान, फुल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो दस्स के गए शरअ ईमान, मैं शिरकत घर घर दिती पाईआ। सच धर्म दा रहिण ना दित्ता निशान, कूड़ा रंग इक रंगाईआ।

भरम भुलाए राज राजान, तख्त निवासी नज़र कोए ना आईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कुठ्ठा खाण, छुरी हलाल जगत कसाईआ। तेरा रूप नज़र ना आए मेहरवान, जग नेत्र धीआं भैणां रहे तकाईआ। साचा मन्दिर ना दिसे कोए मकान, दीन मज़्हब ज़ात पात करे लड़ाईआ। भोज मिले ना किसे खाण, भक्ख खाए जगत लोकाईआ। पवण स्वास मेल ना कोए प्राण, प्राणी आपणा आप पड़दा ना कोए लाहीआ। नेत्र नैण शरमाए अञ्जील कुरान, अक्ख प्रतख ना सके उठाईआ। ऊँच नीच राउ रंक नेत्र नैण सर्ब वहाण, सुख आत्मक ना कोए दरसाईआ। कूड़ी क्रिया जगत ढोला गाण, तेरा बोला ना कोए सुणाईआ। क्यों अन्त होएं अञ्याण, प्रभ मैनूं रिहा भुलाईआ। तेरी चरणी डिगा आण, दोए दोए जोड़ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलिजुग रोवे मारे धाहींआ। कलिजुग रोवे मारे कूक, कूक कूक सुणाइंदा। मैं आपणा देवां सच सबूत, साबत मानुख नज़र कोए ना आइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार वसया पंज तत्त कलबूत, कलमा नबी ना कोए वसाइंदा। कूड़ी क्रिया झूठी मली भबूत, तन माटी ख़ाक ना कोए रमाइंदा। साचा मन्दिर ना दिसे अरूज, अरस कुरस डेरा ढाइंदा। साध सन्त कोई रहिण ना दित्ता महिफ़ूज़, मुफ़लस सब नूं आप बणाइंदा। श्री भगवान क्यों मेरे लई होया कंजूस, दर तेरे वास्ता पाइंदा। मेरी करनी कर महिसूस, महिबूब इक्को ओट तकाइंदा। मैं हुक्म जणाया खूब, साची ख़सलत आप जणाइंदा। नव खण्ड पृथ्वी सत्त दीप मेरी हदूद, हद्द तेरी विच कदे ना आइंदा। किसे दी रहिण ना दिती सूझ बूझ, बुध बिबेक ना कोए रखाइंदा। सब दे उत्ते चढ़या कूद, बल आपणा आप वखाइंदा। दर तेरे आया निरगुण ढूंड, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। मेरी इच्छया आपे बूझ, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरा भेव सदा गूझ, गहर गम्भीर नज़र ना आइंदा। तूं मेरे नाल करें दूज, मैं तेरा निक्का बाला दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। मैनूं गोबिन्द दस्सी सूझ, साची सिख्या इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाइंदा। कलिजुग रोवे मारे धाह, नाअरा इक सुणाईआ। नेत्र खोल्ह बेपरवाह, आपणी अक्ख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान लए दर बुला, क्यों मैनूं दित्ता भुलाईआ। उठ वेख मेरा राह, मैं आपणी सेवा दयां जणाईआ। लख चुरासी कूड़े धंदे दिती ला, माया ममता नाल प्रनाईआ। हउमें हंगता सेजे दिती सवा, सेज सुहञ्जणी नज़र कोए ना आईआ। किसे नूं सूर खवाया किसे नूं गां, साबत कोए रहिण ना पाईआ। सब नूं भुलया तेरा नाँ, नाउँ निरँकार नज़र किते ना आईआ। लोकमात वेख मेरा थाँ, थान थनंतर इक्को अग्न वखाईआ। जगत जीव बणे हँसों काँ, काग हँस ना रूप वटाईआ। पुत्तर मांवां रहे तका, मावां पुत्रां ध्यान रखाईआ। नाता तुट्टा भैण भ्रा, चतुराई रही ना धी

जवाईआ। नूंह सस्स ना शरम हया, प्रभ जू मैं आपणी खेल वखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ वेसवा घर दित्ते बणा, साबत नज़र कोए ना आईआ। अठसठ तीर्थ कलिजुग जीव नंगे तारीआं रहे ला, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नैण ना कोए उठाईआ। नेत्र रोवण थाउँ थाईं रहे कुरला, करबला घर घर नज़री आईआ। मेरे लई क्यों होया बेवफ़ा, मैं तेरा वफ़ादार बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरणां सीस रखाईआ। कलिजुग रो दस्से हाल, आपणा हाल जणाईआ। पारब्रह्म मेरा इक्को मन स्वाल, तेरे अग्गे रिहा लिखाईआ। कर किरपा मेरे नाल दे दे महाकाल, काल मेरी पूरी आस कराईआ। मेरे सिर ते दे रुमाल, ओढन इक्को पड़दा पाईआ। मेरी करनी वेख कमाल, मैं तेरी करनी दिती गंवाईआ। तेरा नज़र ना आवे कोई सच्चा लाल, बिन गोबिन्द चेला रूप ना कोए वटाईआ। शहिनशाह होए कंगाल, नाम हट्ट ना कोए चलाईआ। पृथमी आकाश वज्जे ताल, गगन मण्डल देण दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए बेहाल, बिहबल हो हो रहे कुरलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अपणीआं घालां गए घाल, लिख लिख तेरा संदेसा लोकमात जगत पढ़ाईआ। मैं किसे नूं चल्लण ना दित्ता किसे दे नाल, अन्दर वड़ के पड़दा पाईआ। जोती जोत
९८७ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे अरदास सुणाईआ। तेरे अग्गे मेरी अरदास, अरदासा ९८७
१३ इक्को वार कराइंदा। तूं साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता नाउँ धराइंदा। जुग जुग तेरा खेल तमाश, सतिजुग १३
त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा गीत अलाइंदा। मैं तेरा छोटा पुत्त तेरे प्यार विच होया बदमाश, बदमाशी घर घर आप सिखाइंदा। ख़ाली कोई रहिण ना दिती लाश, पंज तत्त अन्दर डेरा लाइंदा। माया ममता गृह गृह पावे रास, कूड़ी क्रिया नाच नचाइंदा। तेरी निक्की जिही मुहम्मद शाख़, महिमान लोकमात अख्वाइंदा। तेरा गोबिन्द दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। मैं तेरा पुत्तर ख़ास, ख़ालक तेरे रंग रंगाइंदा। मेरे वल वेख मार झात, झाकी तेरी आप जणाइंदा। चारों कुण्ट पई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। कलिजुग जीव नार होए कमज़ात, हरि जू कन्त ना कोए हंढाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाउँदे गाथ, अन्तर आत्म मेल ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। कलिजुग अन्त हो बलवान, आपणा बल जणाईआ। साहिब मेरे वेख सुल्तान, सुत्ती जगत लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर छड्ड गए मैदान, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। मसला घर घर तेरी महिमा लिख गए अञ्जील कुरान, खाणी बाणी राग अलाईआ। अन्त सारे पए पछताण, पसचाताप इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा सुत तेरी ओट तकाईआ। मैं छोटा पुत्त सोहणा चंगा,

कलिजुग इक्को इक्को सुणाइंदा। तेरा हुक्म वजाया मृदंगा, मर्दानगी आपणी इक रखाइंदा। जीव जहान कीता नंगा, पड़दा उपर ना कोए पाइंदा। नेत्र हुंदयां होया अन्धा, तेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। बिन बंदगीयों ख़ाली कीता बंदा, बंदीख़ाना इक वखाइंदा। तेरी मेहर अन्दर आया अन्तिम कन्ढा, कन्ढी बहि के डेरा लाइंदा। तेरा खेल सदा बहुरंगा, भेव अभेद ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली हथ्थ दर वखाइंदा। कलिजुग कहे मेरे ख़ाली हथ्थ, ख़ाली करी लोकाईआ। जीव जंत साध सन्त पाई नथ्थ, कूड़ी क्रिया डोरी इक उठाईआ। वरन बरन ज़ात पात लाए फट्ट, दूई द्वैत ना कोए मिटाईआ। राज राजान शाह सुल्तान खेड़ा होया भठ्ठ, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। हउमें हंगता दूई द्वैत माया ममता कूड़ी क्रिया वज्जी सट्ट, सिर सके ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म तेरा मंत्र साचा नाम सके ना कोई रट, रट्टा दीन मज़्हब लड़ाईआ। चौदां लोक वेख हट्ट, चौदां तबक नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा तेरी पए सरनाईआ। कलिजुग कहे मैं डिगां सरन, तेरी ओट तकाईआ। मेरा भाणा सारे जरन, तेरा नाउँ भुलाईआ। बिन तेरे मैनूं कोई ना आए फड़न, गुर अवतार पीर पैगम्बर दे के गए गवाहीआ। अन्तिम आए प्रभ करनी करन, करता पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्त तेरी सार तेरे विच्चों नज़री आईआ। पुरख अबिनाश हो दयाल, ठाकर स्वामी आप जणाइंदा। छोटे सुत मेरे लाल, लालन तेरा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, कोटन कोटि रूप वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मार्ग मात सिखाल, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चलां नाल नाल, आत्म परमात्म खोज खुजाइंदा। सदा सदा सद हो कृपाल, किरपन आपणी दया कमाइंदा। वेले अन्त ना हो बेहाल, तेरा दुखड़ा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र नाल तक्क, तक्कवा इक्को इक जणाईआ। कलिजुग मेटणा शक़, शहिनशाह समझाईआ। करे नबेड़ा हक़ो हक़, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। तेरा फल गया पक्क, श्री भगवान तोड़न आईआ। तेरी लेखे लग्गे रत्त, रत्ती रत्त रत महकाईआ। तेरी सोहणी चंगी मति, कलिजुग जीव दए भुलाईआ। सब दा खेड़ा कीता भठ्ठ, त्रैगुण अग्नी इक्को लाईआ। साचा मार्ग देवां दस्स, नेत्र खोल्ह खोल्ह समझाईआ। तूं उठ के जाणा नस्स, प्रभ साचा रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग इक्को इक जणाईआ। कलिजुग कहे प्रभ दस्स सेवा, मैं सेवक दर ते आया। तूं आदि जुगादि सदा निहकेवा, निहचल आपणा धाम सुहाया। अमृत आपणा दे मेवा, रस इक्को मिठ्ठा नज़री आया। वड गहर गम्भीर देवी देवा, देवत

सुर तेरी सरनाया। गुण गावां रसना जिह्वा, साचा ढोला नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग साचे आप जगाया। कलिजुग उठ बाल अञ्याणे, बाली बुध जणाईआ। तेरे खेल बेमुहाणे, जीव जंत कुरलाईआ। जगत संदेस तेरे गाणे, कूके सर्ब लोकाईआ। नज़र ना आए श्री भगवाने, अन्तर आत्म दरस कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा कूड़े खाणे, अंमिउँ रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग इक्को इक जणाईआ। कलिजुग उठ हो तैयार, सो साहिब आप समझाइंदा। जा के मेरे भगतां कर निमस्कार, जो मेरा नाम ध्याइंदा। तेरा दुखड़ा दए निवार, दुःख सुख विच बदलाइंदा। तैनूं लै के आए नाल, मेरे चरणां विच बहाइंदा। फिर तेरा पूरा करां स्वाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। कलिजुग दोए जोड़ मंगे निशानी, प्रभ भगतां भेव जणाईआ। श्री भगवान कहे मेरी जोत नूरानी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। घर घर दस्स के आया आपणी सच कहाणी, सति सतिवादी कर पढ़ाईआ। जो आत्म परमात्म सोहँ गाए बाणी सो भगत भगवान नज़री आईआ। बाकी दिसे ना कोई चार खाणी, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहुड़ा इक जणाईआ। कलिजुग कहे मैं जावांगा। प्रभ तेरा शुकर मनावांगा। दर भगतां वेख वखावांगा। सोहँ ढोला सुण के, आपणा पन्ध मुकावांगा। लख चुरासी विच्चों चुण के, चरणी सीस निवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेले उठ धावांगा। साचा वेला हरि समझाएगा। हुक्म इक्को इक सुणाएगा। कलिजुग भुल्ल कदे ना जाएगा। अनमुल्ल आपणी धार वखाएगा। पहली चेत्र दिवस जणाएगा। कलिजुग खेत्र इक वडयाएगा। बण हेतर दया कमाएगा। भगत भगवान कलिजुग नेत्र आप वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महिफ़ल इक्को घर लगाएगा। पहली चेत्र नस्सांगा। प्रभ तेरे भगत दवारे ढठ्ठांगा। सिर चरणां उत्ते सट्टांगा। पिच्छे मूल ना हटांगा। आपणा हक़ लैण नूं डटांगा। मूँहों उच्ची कूक कूक बकांगा। अनझक हो ना झकांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब दी कीती दस्सांगा। भय विच कदी ना नस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को मंगांगा। पुरख अबिनाशी कहे चल के आउणा, वार थित जणाईआ। भगत दवारे सीस नवाउणा, मिले माण वड्याईआ। श्री भगवान आसण लाउणा, सच महल्ले सोभा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बहाउणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। आमृणो सामृणा सब दा ब्यान कराउणा, चुग़ली निन्दया ना कोए रखाईआ। चार जुग दा लेखा अग्गे कढ्ढ वखाउणा, करनी करता

भुल्ल कदे ना जाईआ। जो मंगे सो झोली पाउणा, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच जणाईआ। मैं मंगां इक्को दात, कलिजुग रिहा जणाईआ। मेरी सोहे अन्धेरी रात, साचा चन्द नज़र ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात छड्डण साथ, जगत संग ना कोए निभाईआ। तेरे चरण मंगण नात, दीन मज़्ह़ब नाता ना कोए जुड़ाईआ। फिर मैं वी जोड़ां दोवें हाथ, ढै पवां सरनाईआ। कर किरपा मेरे रघुनाथ, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। प्रगट हो पुरख समराथ, समरथ आपणी कल धराईआ। मेरा लहिणा मेरी झोली घत्त, लख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। भगत भगवान विच्चों लैणे रख, जिन्ह़ां आपणा मेल मिलाईआ। गोबिन्द खोल्ह़े इक्को हट्ट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण जोत जगे लट्ट लट्ट, इष्ट देव अवर ना कोए मनाईआ । पुरख अकाल तेरा ढोला तेरी गाथ, दर तेरे इक्को गाईआ। पिछला लेखा वेखीं फ़ेल पास, परचे सब दे हल्ल कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी शाख़, बिन तेरे शनाख़त ना किसे कराईआ। मैं सच सच सच दरबारे देवां आख, मैं सब दे उत्ते हुक्म चलाईआ। इक गोबिन्द तेरे नाल बन्न्ह़ के आया नात, पुरख अकाल मेरा पिता माईआ। मैं निरगुण उस दी ज़ात, सरगुण चोला जगत हंढाईआ। अन्तिम वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। निहकलंक नरायण नर जोती जामा श्री भगवाना नौजवाना

९९० ९९०

१३ १३

मर्द मर्दाना शाह सुल्ताना मण्डल पावे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। उच्च महल्ले सदा अटले निहचल धाम आदी राम पावे सार, सार शब्द कर तैयार हरि हो न्यार, दो जहान बेपहचान श्री भगवान एका डंक आपणा नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरणां राह तकाईआ। चरण दवारे आउणा भज्ज, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरा पड़दा लवां कज्ज, मेहर नज़र उठाइंदा। चरण दवारे बहिणा सज, पिछला पन्ध मुकाइंदा। लोकमात दा मुक्के हज्ज, हाजी रूप ना कोए वटाइंदा। पिछला नाता देणा तज, अग्गे जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक सुणाइंदा। तेरी चरणी प्रभ जू आवांगा। बहि चरणां ख़ुशी मनावांगा। धूढ़ी टिक्का मस्तक लावांगा। पिछला लेखा लिखा, आपणी झोली पावांगा। अग्गे तेरे नाम दी मंगां भिच्छा, दूजी वस्त ना कोए वखावांगा। तिन्न जुग करनी रछा, इक्को ओट रखावांगा। सच दुआर तेरा दिसा, दहि दिशा नेत्र बंद करावांगा। तेरे भगतां अग्गे विका, कीमत आपणी ना कोए रखावांगा। जे पिच्छे बोलया फिका, पहली चेत्र चरणी डिग के भुल्ल बख़्शावांगा। मैं तेरा बाला निक्का, निक्की निक्की गल्ल सुणावांगा। मेरा सच्चा हो जाए सिका, सिक्दार तैनूं इक अख्वावांगा। जे तूं मेरा खेल डिठा, मैं ख़ुशी ख़ुशी तेरा ढोला गावांगा। मैनूं दे ना जावीं पिठा,

बिन तेरे प्रभू जी जीवंदयां मर जावांगा। मेरा मेरी झोली पा दे हिस्सा, लख चुरासी मंग मंगावांगा। तेरा भगत तेरा गावे किस्सा, उस दे कोल कदे ना जावांगा। उह मैनूं लोकमात विच जिता, मैं हार मन्न के आपणा मूँह भवावांगा। तूं सच्चा कीता हिता, नेंह तेरा वेख खुशी खुशी गुण गावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे भिक्खक बण के आवांगा। भिक्खक बण के आवां स्वाली, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तेरी निरगुण जोत अकाली, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे तेरा ध्यान लगाईआ। तूं आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहानां माली, लख चुरासी बूटा आप लगाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरुगण वज्जे तेरी ताली, ताल तलवाड़ा इक्को नज़री आईआ। शब्द अगम्म बण मात पिता जो पिता बण करी दलाली, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। तेरे दर तों कोई ना जाए ख़ाली, निरासा रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। खाली कोई ना गया जग्ग, जो हरि सरनाई आइंदा। कलिजुग तेरी लाज रखे पग्ग, पगड़ी तेरी वेख वखाइंदा। तेरी करनी वेख हरि जू गया रज्ज, रज्ज रज्ज आपणी ख़ुशी मनाइंदा। तेरा वेला अन्तिम जाए सज, साहिब सतिगुर आप सुहाइंदा। मेहरवान पड़दा देवे कज, नाम दुशाला उपर रखाइंदा। भगत भगवन्त लए सद्द, तेरा संग निभाइंदा। पिछली पार कर के हद्द, अग्गे आपणा राह वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, जम की फाँसी आप तुड़ाइंदा। अमृत जाम प्याए मध, मधुर धुन राग अलाइंदा। सच नगारा जाए वज्ज, निरगुण सरगुण आप सुणाइंदा। चार वरन इक्को डोर जाए बज्झ, ज़ात पात रहिण ना पाइंदा। सतिजुग साचा धरत मात दी छाती चढ़े भज्ज, आप आपणा बल वखाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। इक्को देवे नाम वथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा मुक्के लहिणा आप वखाए नेत्र नैणां, घर आपणे खेल कराइंदा। घर आपणे खेल वखावांगा। तेरी करनी झोली पावांगा। साची सरनी इक रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पहली चेत कर के हेत, साचे दर आप मंगावांगा।

❊ २० फग्गण २०१६ बिक्रमी महिंदर सिंघ दे गृह औरंगाबाद ❊

धरनी कहे मेरी सोहे कुक्ख, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। सतिजुग साचे वेखां मुख, गृह साचे वज्जे वधाईआ। पिछला मिटे मेरा दुःख, दर्द रहिण ना पाईआ। नेत्र नैण वेखां झुक, अक्ख प्रतख खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। धरनी कहे मैनूं चढ़े चाअ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। सतिजुग मल्ले कलिजुग था, आप आपणा फेरा पाईआ। तेरा जणाए इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा वड वड्याईआ। दो जहानां दए समझां, लोआँ पुरीआँ भेव खुल्हाईआ। चोदां तबकां पाए राह, चौदां लोक राग शनवाईआ। बण के बाला मेरी पकड़े बांह, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, घर साचे खुशी वखाईआ। धरत कहे मेरा सोहणा रंग, सतिजुग साचा वंड वंडाईआ। श्री भगवान वज्जे मृदंग, नाद इक्को इक सुणाईआ। सच दवारा आपे लँघ, सुहञ्जणी सेज सोभा पाईआ। आत्म परमात्म देवे अनन्द, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, खण्डा प्रभ का नाम खड़काईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। खुशी कराई बंद बंद, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। मेरी पूरी होवे मंग, तृष्ना रहे ना राईआ। घर मेरे चढ़े चन्द, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पूरी आस कराईआ। धवल कहे प्रभ हो दयाल, दीनन दया कमाईआ। भगत भेजे आपणे लाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आ के सुणे ग़रीबां हाल, निमाणयां लए जगाईआ। निरगुण मिलाए हो दयाल, शब्दी खेल कराईआ। चार वरन दसाए इक्को धर्मसाल, बरन अठारां इक्को घर वड्याईआ। इक्को नाम इक्को अनाद इक्को नाद वज्जे ताल, अनादी आपणा राग सुणाईआ। इक सरोवर अमृत मारे उछाल, लहर लहर नाल मिलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण युगत दए जणाईआ। साची चले आपणी चाल, अवल्लड़ी इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धौल हौला भार कराईआ। धवल कहे मेरी इक्को मंग, प्रभ तेरे अग्गे सीस निवाया। धरनी कहे प्रभ चाढ़े रंग, दूजी वार उतर कदे ना जाया। धरत कहे मेरा साहिब सूरा सरबँग, मेहरवान इक अख्वाया। जुग जुग वजाए मृदंग, नाम ढोला रिहा गाया। करे खेल सूरा सरबँग, दूजी ओट ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाया। साचा लेखा साहिब सुल्तान, आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी धरत देवे दान, धवल इक्को इक वड्याईआ। सुण संदेसा ला के कान, मेहरवान रिहा जणाईआ। सतिजुग आवे बाल अञ्याण, आपणा बल रखाईआ। अबिनाशी करता देवे इक ज्ञान, अक्खर इक्को इक समझाईआ। चार वरन करन परवान, सरन इक्को इक रघुराईआ। आत्म परमात्म दस्से खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। सतिजुग साचा देवे भेज, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती शब्दी देवे तेज, नूर नुराना हो सहाईआ। भगत भगवान लए वेख, भेव अभेद खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी मेट रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। नाता

तोड़ मुल्ला शेख, पंडत पांधे माण गंवाईआ। ग्रन्थी पन्थी करे ना कोए हेत, हितकारी इक्को नज़री आईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निज आत्म लए पेख, बंद किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। सतिजुग साचा जाए उठ, उठ आपणी लए अंगड़ाईआ। सो पुरख निरँजण गया तुठ, हरि पुरख निरँजण देवे सिफ्त सालाहीआ। एकँकारा भण्डारा दए अतुट, आदि निरँजण वेखणा थाउँ थाईंआ। अबिनाशी करता अमृत जाम प्याए घुट्ट, श्री भगवान इक्को रस वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कोलों लए पुछ, लख चुरासी अन्दर घर घर फेरा पाईआ। वेखणहार सच सुच्च, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल करदा रिहा लुक लुक, गुर अवतार हुक्म मनाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शेर हो के रिहा बुक्क, भबक आपणे नाम लगाईआ। धरनी धरत धवल रिहा पुछ, पिछला पड़दा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। सतिजुग कहे दो दो जोड़, प्रभ जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर चढ़ां घोड़, अस्व इक्को नज़री आईआ। लोकमात जावां दौड़, पुनहि पुनहि सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेटां कूड़, अमृत तेरा रस खवाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब वेखां कर के ग़ौर, गहर गम्भीर तेरी मन्न सरनाईआ। रहिण ना देवां कोई ठग्ग चोर, माया ममता होए ना कोए हल्काईआ। काम क्रोध हँकार ना पाए शोर, हाहाकार ना करे लोकाईआ। भगत भगवान तेरी लोड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाम अगम्मी साची डोर, सुरती शब्दी तन्द बंधाईआ। पावां सार अन्धेरे घोर काया मन्दिर डूँग्घी कन्दर फोल फुलाईआ। साचे मार्ग देवां तोर, राह इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बण बरदा सेव कमाईआ। बरदा बणां पा ख़ाक, पाकी पाक रूप वटाइंदा। तेरी किरपा खोल्हां ताक, आत्म परमात्म पड़दा लाहइंदा। पूरा करां भविख्त वाक्, पूरब लेखा पन्ध मुकाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, पारब्रह्म ब्रह्म जीव जंत समझाइंदा। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सृष्ट सबाई गाए इक्को गाथ, ढोला सोहला तेरा नाम पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त मिले इक्को दात, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक बणा इक जमात, पट्टी इक्को इक वखाइंदा। निरगुण सरगुण बज्झे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। कूड़ा कलिजुग छड्डे नात, कूड़ी क्रिया धक्का लाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेख खेल तमाश, ख़ालक ख़लक तेरे रंग रंगाइंदा। तूं सर्ब जीआं पिता मात, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। तुध बिन कोए ना पुच्छे वात, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। मैं लै के जावां तेरी दात, सोहँ मंत्र झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६६३
१३

कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। तेरा राह तक्कण समुंद सागर, नेत्र नैण नैण तरसाईआ। तूं वसणहारा डूँग्घी गागर, बेअन्त बेपरवाहीआ। तेरा आदि जुगादी खेल जगत सौदागर, बण वणजारा वेख वखाईआ। तेरा नाउँ करता कादर, कुदरत तेरा रंग दरसाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर, बल आपणा आप प्रगटाईआ। तूं पिसर पिदर मादर, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। दे वस्त अनमोल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सतिजुग सच दुआर जा के खोल्ह, श्री भगवान आप समझाइंदा। सतिजुग साचा तोल तोल, कंडा तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। सोहँ शब्द वजाउणा ढोल, ढोलक छैणा ना कोई रखाइंदा। बजर कपाटी पड़दा देणा खोल्ह, जन भगतां राह जणाइंदा। तेरे कोल वस्त अनमोल, अनमुलड़ी दात झोली पाइंदा। कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्त कोई ना आइंदा। तेरा मेरा इक्को कौल, साची करनी आप समझाइंदा। दए दलासा धरनी धरत धवल धौल, तेरा हौला भार कराइंदा। हर घट अन्दर जाणा मौल, मौला इक्को रंग वखाइंदा। बोध अगाधा शब्द लैणा बोल, अन्तर आत्म आप जणाइंदा। सच प्रीती घोली घोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप चुकाइंदा। साचा लेखा दस्स मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। धुर संदेसा इक ज्ञान, इक्को इक पढ़ाईआ। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह हुक्म जणाईआ। कलिजुग अन्तिम मेट निशान, सतिजुग रंग रंगाईआ। जा के भगतां कर परवान, पहलों आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा देवे पुरख, पुरखोतम आप जणाईआ। हरख ना कोई सोग ना कोई परख, प्रीख्या विच कदे ना आईआ। भगत दवारे जा के कर दरस, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। आपे मेहरवान अमृत मेघ देवे बरस, करोड़ छिआनवे नैण शरमाईआ। तेरी साची करे चढ़त, चढ़दीआं कला आप वखाईआ। तेरा कोई ना मंगे धड़त, जगत दुकान ना कोई वखाईआ। तेरी आपणे नाल करे लिख्त पढ़त, दूजा खाता होर ना कोई वखाईआ। वेखीं डरके ना जाईं परत, पारब्रह्म प्रभ आप समझाईआ। जन भगत ला के बैठे शर्त, लोकमात खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी रिहा जणाईआ। सति सतिवादी दस्से मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। साचा गाउणा इक्को गीत, गोबिन्द राग अल्हाइंदा। अन्तिम नाता तुटे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ माण ना कोई रखाइंदा। घर पारब्रह्म बैठा रहे अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सतिजुग तेरी सच्ची रीत, साहिब सुल्तान आप लगाइंदा। ढोला गाउणा सोहँ गीत, राग ताल ना कोई वजाइंदा। पिछली कीती पिच्छे गई बीत, अगली कहाणी आपणे हथ्थ रखाइंदा। अबिनाशी करता बीठलो

बीठ, बेअन्त बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। मेहरवान वसे सदा नज़दीक, निज नेत्र दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण सतिजुग, सति सति ध्यान लगाया। प्रभ तेरे भगत मेलां चुक्क चुक्क, लख चुरासी खोज खुजाया। अन्दर वड़ां लुक लुक, आपणा मुख छुपाया। सच स्नेहुड़ा तेरा नाम देवा निमस्कार करां झुक झुक, झुक झुक माण अभिमान गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा संग लैण निभाया। श्री भगवान वड दातार, दयानिध अख्वाईआ। आपणी हथ्थीं दए प्यार, बाले रिहा वड्याईआ। लोकमात कर विहार, बिवहारी आप समझाईआ। मेरा भगत तेरा अधार, तेरा संग रखाईआ। सदा सदा करे प्यार, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरे नाल साचे सन्त आप मिलाईआ। साचे भगतो उठो जग्ग, श्री भगवान आप जगाइंदा। हँस बणो होए कग्ग, कागों हँस बणाइंदा। सोहँ मोती माणक चोग चुगो रज्ज, तृष्ना भुक्ख मुकाइंदा। करो दरस उपर शाह रग, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। कूड़ी क्रिया देवो तज, सच सुच्च दृढ़ाइंदा। अन्तिम सेजा चढ़ो भज्ज, पारब्रह्म ब्रह्म राह तकाइंदा। सच दवारे बहिणा सज, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। बिन मक्के काअबिउँ कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक वखाइंदा। अमृत जाम पीओ रज्ज, सच प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाइंदा। उठो भगतो करो ध्यान, श्री भगवान रिहा जगाईआ। बिन पढ़ियां देवे ज्ञान, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। नाता तोड़े शरअ ईमान, दीन मज़्हब मोह मिटाईआ। नज़र आए इक भगवान, भावी होर ना कोए डराईआ। सच धर्म दा सच निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। आवण जावण लेखा चुक्के दो जहान, लख चुरासी मात गर्भ देवे ना कोए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। उठो भगतो खोल्हो अक्ख, श्री भगवान आप खुल्हाइंदा। पारब्रह्म प्रभ प्रगट होया प्रतख, प्रतख खेल वखाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लए रख, आप आपणी कल धराइंदा। लख चुरासी नालों होवो वक्ख, वक्खरा राह चलाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग देवे दस, दहि दिशा पन्ध मुकाइंदा। मन मनुआ हँकारी जाए ढठ्ठ, मति मतिवाली पन्ध मुकाइंदा। बुध बिबेकी जाणे मितगत, गतमित आपणी धार रखाइंदा। देवणहारा धीरज सन्तोख सति, जत इक्को इक जणाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त वेख वखाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा चरणीं जाए ढठ्ठ, किसे सीस ना कोए झुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण बस्स, बसते सब दे आप बंधाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, सतिजुग आपणा राह चलाइंदा।

९९५
१३

जीव जंत चढ़ाए इक्को रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। एथे ओथे रखणहारा पत्त, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अलाइंदा। उठो भगतो मारो झाक, हरि झाकी आप जणाईआ। प्रभ खोलूण आया बंद ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। मन्दिर अन्दर वखाए आपणा हाट, चौदां लोक नैण शरमाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, आदि निरँजण दीप डगमगाईआ। अमृत आत्म देवे बूँद स्वांत, निझर झिरना आप झिराईआ। अनहद शब्द वजाए नाद, अनरागी राग सुणाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, रेख रूप रहिण ना पाईआ। दरस दिखाए बहु बिध भांत, जोती जाता सच्चा शहिनशाहीआ। नज़री आए इक इकांत, इक इकल्ला आसण लाईआ। सच सुणाए आपणी गाथ, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। पिछला चुक्के पूजा पाठ, मंत्र इक्को नाम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मन्दिर इक दरसाईआ। उठो भगतो वेखो महल्ल, उपर महिफ़ल आप लगाइंदा। निरगुण वसे इक अटल, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। नाउँ रखाए सदा अस्थिल, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को इक दरसाइंदा। उठो भगतो वेखो अटारी, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जगाए जोत आप निरँकारी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जुग जुग वेखे खेल अपारी, पीर पैगम्बर आपणी धार चलाईआ। सतिजुग साचे आई वारी, आपणी वारता रिहा सुणाईआ। सन्त भगत भगवान खेल न्यारी, कोई समझ ना सके राईआ। मन मति बुध ठग्गणहारी, ठगौरी इक्को इक दसाईआ। भगत आत्म सदा कुँवारी, बिन भगवान ना किसे प्रनाईआ। लख चुरासी जूए बाज़ी हारी, जित ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव खुलाईआ। उठो भगतो वेखो भेव, अभेदी आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, निरगुण रूप वटाइंदा। दाता दानी वड देवी देव, देवत सुर पन्ध मुकाइंदा। वसणहारा निहचल धाम सदा निहकेव, नर नरायण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। उठो भगतो करो संग, सगला संग निभाईआ। आपणा दवारा वेखो लँघ, घर बैठा बेपरवाहीआ। पारब्रह्म दे गाओ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। निज आत्म माणो इक अनन्द, निजानंद रस वखाईआ। दूई द्वैती ढाओ कंध, भाण्डा भरम भंनाईआ। लेखा चुके जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। चारे बाणी मुक्के पन्ध, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बैठी सीस झुकाईआ। दर्शन पाओ दवारे सचखण्ड, सच दुआर इक्को नज़री आईआ। मेल मेले सूरा सूरा सरबँग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतां रिहा उठाईआ। भगतो उठो करो विचार, हरि विचार विच किसे ना आईआ। सोच सोच गए गुरू अवतार,

६६६
१३

सोच विच पन्ध ना कोए मुकाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, अन्त लिखण विच ना आईआ। दोए दोए जोड़ करदे गए निमस्कार, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा लेखा बेअन्त पारावार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। सारे मंगदे गए दीदार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जुग चौकड़ी बण लिखार, लेखा जीव जंत समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक लए अवतार, कलि कल्की फेरा पाईआ। साचे भगत लए उठाल, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। साचे सन्तां करे वसाल, वसल इक्को इक वखाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, अन्दर बाहर होए सहाईआ। गुरसिखां बणे आप दलाल, शब्द सरूपी सेव कमाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह इक रंग चढ़ाईआ। सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर अन्दर घर घर विच पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान मेल मिलावा सच समझाईआ। भगत जनां जग साचा मेला, मिलणी जगदीश कराइंदा। साहिब सतिगुर सज्जण सुहेला, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात फेरा पाइंदा। लेखा जाण गुरु गुर चेला, चेला गुर वंड वंडाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। आपणे हथ्थ रखे आपणा वेला, वार थित ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धरनी धरत धवल सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। धरनी धरत धवल रख उडीक, समुंद सागर उच्चे टिल्ले आप जणाईआ। सतिजुग तेरी गोदी बहे ठीक, लोकमात फेरा पाईआ। भगत भगवान बन्न्हाए प्रीत, प्रीती इक्को इक जणाईआ। ज़िमीं असमान रल के गाउणा गीत, सोहँ ढोला इक वड्याईआ। लेखा चुकाए त्रैगुण अतीत, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा थाउँ थाईंआ। धरनी धरत धवल ना हो निरास, निरगुण आसा इक रखाइंदा। कूड़ी क्रिया तेरी बुझे त्रास, तृष्ना रोग आप मिटाइंदा। सति सतिवादी सतिजुग वसे तेरे पास, श्री भगवान आप वसाइंदा। भगत भगवान लेखा जाणे ख़ास, ख़ालस आपणे रंग रंगाइंदा। सति धर्म दी लाए साख, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट रात, चन्द चांदना इक चमकाइंदा। लख चुरासी शब्द स्वास गाथ, अन्तर आत्म आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाइंदा। धरनी धरत धवल कहे प्रभ छेती कर, शहिनशाह दु:ख ना झल्लया जाईआ। चारों कुण्ट आए डर, कूड़ कुड़यारे रहे डराईआ। साध सन्त डूँघी भँवरी गए वड़, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। काम क्रोध दा वहे हड़, माया ममता नाल रलाईआ। सब दी उखड़न वाली जड़, फेर सके ना कोए लगाईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी ठग्ग चोर यार फड़, आप आपणा बल धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां कोलों हो गए निडर, सिर भय ना कोए रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा फेरा पाईआ। धरनी धरत धवल ना नेत्र रो, नर नरायण आप समझाइंदा। गुर दुरमति मुखड़ा देवे धो, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। अमृत रस देवे चो, तेरी तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। साचा ढोआ देवे ढो, वस्त तेरी झोली पाइंदा। सतिजुग बीज देवे बो, सति सरूपी आप सुणाइंदा। नाम देवे सोहँ सो, सो पुरख निरँजण खेल खलाइंदा। जन भगत जोगा आपे हो, भगवान आपणा संग रखाइंदा। लोआँ पुरीआँ करे लो, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाइंदा। चरण कँवल तेरे नाल जाए छोह, छहबर इक्को इक लगाइंदा। पिछली वस्तू सब दे कोलों लवे खोह, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समग्री आपणे हथ्थ वखाइंदा।

❇ २० फग्गण २०१६ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह औरंगाबाद ❇

फुल्ल कहे प्रभ तेरे नाल छूह, शहिनशाह मिली वड्याईआ। मेरी बदल गई खुशबू, खुशनूदी इक्को नज़री आईआ। मैं बनास्पत छड्डी जूह, चरण सरन मिली सरनाईआ। मेरी बख्शी गई रूह, दर तेरे सेव कमाईआ। ना हां रही ना हूं, मैं तूं ना कोए दरसाईआ। जिध्धर वेखां नज़री आएं तू ही तूं, तुध बिन नज़र ना कोए उठाईआ। मेरा खुशी होया लूं लूं, पंखड़ी पंखड़ी नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र मेरे उत्ते उठाईआ। फुल कहे मेरी पंखड़ी पत्त, पत पतवन्त तेरी सेव कमाईआ। धन्न भाग मेरी लेखे लग्गी रत्त, तेरे चरणां घोल घुमाईआ। खण्ड खण्ड हो के चरण दवारे गया ढठ्ठ, आपणा मूल मुकाईआ। अग्गे जिउँ भावे तिउँ रख, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं तेरे चरणां सथर बैठा घत्त, तूं सथर यारड़ा सेज हंढ्ढाईआ। मेरा लहिणा देणा मुकया डाली पत, कंडा तन ना कोए चुभाईआ। मैं सुण के आया तेरा जस, जस तेरा वेद पुराण ना सके गाईआ। हो निमाणा चरणी गया ढठ्ठ, आपणा आप मिटाईआ। इक तेरा नाम लवां रट, रट्टा मुक्के जगत लोकाईआ। मैं विकया तेरे हट्ट, करता कीमत आपे पाईआ। मैनूं मार्ग देणा दस्स, दर इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर मिले वड्याईआ। दर तेरे आ के होया शहीद, शहादत आपणी आप जणाइंदा। मेरी इक्को अन्तिम ईद, आदर्श तेरा नज़री आइंदा। आपणे हथ्थीं कट के दे रसीद, तेरा लेखा कोई रहिण ना पाइंदा। मेरी जन्म जन्म दी चुके नींद, आलस रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे आस रखाइंदा। फुल कहे

मेरी पत्ती डोडी, तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोई ज्ञानी बोधी, पढ़ पढ़ सार किसे ना आईआ। मेरी आत्म परमात्म सोधी, सुध आपणे चरण लगाईआ। दूजे घर मेरी कीमत होवे ना कौडी, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। तेरा लेखा जाणया वेदी सोढी, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। बेशक मैं चढ़ के बहिवा उच्ची चोटी, बोदी विच कन्डयां आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देणा नाम वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। फुल्ल कहे मैं लाल गुलाबी, गुलशन विच सुहाइंदा। तेरा नूर आफ्ताबी, ताब ना कोए ल्याइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी बदल दे हयाती, तेरे चरणां सीस निवाइंदा। आवण जावण लख चुरासी विच्चों मिले आज़ादी, इक्को तेरा ध्यान लगाइंदा। मैं ना जाणा मात पिता प्यो दादी, कवण मैनूं गोद उठाइंदा। मैं सुणया सच तेरी आदि जुगादी इक्को वादी, जन भगतां मेल मिलाइंदा। श्री भगवान मैं वी तेरे दर दा बणया हाजी, दर तेरे फेरा वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। फुल्ल कहे मेरा रंग फिका, नज़र किसे ना आईआ। बेशक मैं वज़ूदों निक्का, प्यार विच तेरा राह तकाईआ। मेरा मेरे भगवान मेरी झोली पा दे हिस्सा, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। पिच्छों तेरा कहाणी रहि जाए किस्सा, हाज़र हज़ूर हज़रत तेरा मेला इक गोसाईंआ। तेरे चरण कँवल दुआर रस मिल्या मिट्ठा, अमृत इक्को नज़री आईआ । वेखीं करवट बदल ना देवीं पिठा, पुश्त मेरे हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। फुल्ल कहे मैं कंडा ख़ार, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। मेरा गुलशन मेरा गुंचा तेरा रूप वेखां बहार, बिहबल हो हो ध्यान लगाइंदा। तेरा विछोड़ा तेरा वैराग करे ख्वार, ख्वारी विच नीर वहाइंदा। कवण वेला मिले प्रभ सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गल विच पा पा गए हार, मेरी हार जित विच ना कोए ल्याइंदा। शाह सुल्तानां नौजवानां बिरध बालां करया तन श्रृंगार, सुहंदा आपणे अंग रखाइंदा। जिध्धर वेख्या चारों कुण्ट अन्त पैंदी मैनूं मार, फड़ फड़ बांहों सर्ब बाहर कढ्ढाइंदा। दुखी हो के आया तेरे दरबार, दर आ के सीस निवाइंदा। पंखड़ी पंखड़ी हो के डिगा मूँह दे भार, आपणा बल ना कोए जणाइंदा। मेरी हालत वेख ग़मख़ार, ग़मगीन दिलगीर दर तेरे नेत्र नीर वहाइंदा। मैं वेख होया शरमसार, मेहरवान नेत्र नैण अक्ख ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या सुण फुल्ल, श्री भगवान आप जणाईआ। तेरा अन्तिम पए मुल्ल, करता कीमत आप चुकाईआ। लोकमात ना जाएं रुल्ल, ख़ाकी ख़ाक ना कोए मिलाईआ। तूं दर ते आएयों भुल्ल, प्रभ भुल्यां मार्ग पाईआ।

लेखे लाए तेरी कुल, कुलवन्ता बेपरवाहीआ। तेरा बूटा ना जाए हुल, पत डाली आप महकाईआ। तूं चरण प्रीती ग्यों घुल, घोल घोली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच रिहा जणाईआ। सुण फुल कर ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तेरी अन्त होए कल्याण, करनी करता आप कमाइंदा। तैनूं गुरमुखां चाढ़या दान, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। नाल गुरसिखां देवे माण, अभिमान रूप ना कोए जणाइंदा। तेरी पिछली चुक्की काण, अग्गे आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। फुल्ल आएयों गुरमुख हथ्थ, तैनूं मिले वड्याईआ। तेरी पत लए रख, रक्षया करे हर घट थाईंआ। तेरी महिमां अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। तूं सेवा करी पुरख समरथ, समरथ आपणी झोली पाईआ। तूं डाली नालों आयां लथ्थ, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी पंखड़ी आपणे चरण छुहाईआ। साचे फुल तेरा गुरमुख संगी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। तेरी खेल सदा बहु रंगी, भेव अभेद खुल्ाइंदा। मिले दात मूँहों मंगी, आवण जावण पन्ध कटाइंदा। तेरी जन्म जन्म दी कटे तंगी, दुःख सुख विच बदलाइंदा। तेरी पिठ ना होवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दीन दयाल सदा बख्शंदी, बख्शश इक्को इक वरताइंदा। वेख खेल विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूल तेरा नाउँ वड वड्याइंदा। साचे फूल तेरा गुरसिख सहारा, तेरा संग मिलाईआ। दोहां विचोला आप निरँकारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। प्रेम नाल करे प्यारा, प्यार प्रेम नाल वटाईआ। नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़ा, अक्ख प्रतख रूप प्रगटाईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, बनास्पत नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिस साहिब सतिगुर मिल्या पीर ज़ाहरा, तिस अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। जिस दा नाउँ जपदे गए गुर अवतारा, पीर पैगम्बर ढोला राग अल्ाईआ। सो प्रगट होया महाबली अवतारा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। कर किरपा जिस चाहे तिस करे पार उतारा, जन्म मरन कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वड्याईआ। फुल निमाणा प्या हस्स, हस्स हस्स खुशी मनाइंदा। श्री भगवान मैं होया भगतां वस, तेरे भगतां नाल हथ्थ मिलाइंदा। दोहां अन्दर ग्यों वस, दूजा रंग ना कोए रखाइंदा। की गाईए तेरा जस, जस गायां तेरा अन्त ना कोए पाइंदा। तेरी वड्याई सचखण्ड दवारयों आएं नठ्ठ, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। मेरी पखंड़ी मेरी डोडी मेरा फूल मेरा कँवल फड़ आपणे हथ्थ, आप आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, मेरी पिछली पूरी आस कराइंदा। सुण फुल्ल हरि दी गल्ल, हरि जू आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अछल अछल्ल, भेव किसे ना आईआ।

१००० १३

तूं गुरमुखां नाल ग्यों रल, गुरमुख तेरा संग निभाईआ। दोहां मिले इक्को फल, इक्को वस्तू झोली पाईआ। वेखणहार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख फुलवाड़ी आप महकाईआ। उठ फुल वेख गुरमुख रंग, सो सतिगुर आप रंगाइंदा। आत्म सेजा सोहे पलँघ, उत्ते तेरी बरखा लाइंदा। निरगुण हो के अन्दर लँघ, निरवैर आपणी कल धराइंदा। शब्द अगम्म वजाए मृदंग, अनहद राग सुणाइंदा। अमृत धार वहे गंग, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म परमात्म इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। ढोला सुणाए इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा रूप ना कोए वखाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, जगत आपणा मेल मिलाइंदा। बंदीख़ाना तोड़ बंद, बंदश आपणे नाम पाइंदा। लेखा चुके गाउणा बत्ती दन्द, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। कर प्रकाश निरगुण चन्द, जोत निरँजण डगमगाइंदा। पिछली जगत नाल गई हंढु, अग्गे गुरमुखां मेल मिलाइंदा। एथे ओथे मुक्के पन्ध, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। फुल कहे मेरे वड्डे भाग, गुरमुखां संग रखाया। मेरा सज्जण मिल्या साक, घर साहिब इक्को पाया।
१००१ मेरा बंद खुलया ताक, अन्ध अन्धेर मुकाया। मैं नेत्र वेख्या झाक, पारब्रह्म प्रभ इक्को नज़री आया। मेरी लेखे लग्गे राख, १००१
१३ पत्त डाली प्रेम प्रीती विच भस्म कराया। चरण कँवल बज्झे नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। लेखा लिख्या जगत विहार १३
कलम दवात, बिन कलम शाही रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा लेखा अन्त मुकाया। लेखा अन्तिम मुकया गुल, लोकमात रहिण ना पाईआ। हरि जू खेल करे अनमुल्ल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल, गृह मन्दिर आप टिकाईआ। सति दवारा गया खुल्ह, ख़ालक खलक रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार जगत वड्याईआ। जगत वड्याई भगत भगवान, भय भंजन भेव जणाइंदा। साचा मेला जीव जहान, जागरत जोत जोत डगमगाइंदा। आत्म परमात्म दे ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सच वखाए इक मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। दीवा बाती जगे महान, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा नूर प्रगटाइंदा। सन्त साजण कर परवान, गुरमुख आपणे अंग लगाइंदा। गुरसिखां बख़्शे चरण ध्यान, चरणोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक्को इक अख्वाइंदा। वर दाता हरि गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। सब दा लेखा वेखे अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। भगत भगवान चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, जगत जहान भगत हद्द मुकाईआ। नाता तोड़ शरअ ज़ंजीर, साख्यात दरस दिखाईआ। आवण जावण

कट भीड़, लख चुरासी फंद कटाईआ। अमृत आत्म बख्श सीर, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। बदलणहार आप तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आप चुकाईआ। हरिजन लेखा चुक्के मात, बाकी नज़र कोए ना आया। जिस जन बख्शे नाम दात, तिस आपणा रंग रंगाया। दरस दिखाए बहु बिध भांत, रूप अनूप आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख सन्त सुहेले फड़, गुर चेले आपणी गंढु पवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन लगाया आपणे लड़, पौड़े साचे फड़ चढ़ाया।

✻ २० फग्गण २०१६ बिक्रमी जगजीत सिँघ दे गृह औरंगाबाद ✻

गुरसिख बाल सदा अञ्याण, बाली बुध रखाईआ। गुर शब्द चतुर सुघड़ सुजान, सदा सदा समझाईआ। साहिब सतिगुर हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। नाम निधाना दे ज्ञान, करे सच पढ़ाईआ। मन्दिर वखाए इक अस्थान, सच दुआर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बाले वेख वखाईआ। गुरमुख बाला निक्का नढ्ढा, जुग जुग वेख वखाइंदा। प्रेम प्यार अन्दर बद्धा, आपणा बन्धन पाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढा, आपणे रंग रंगाइंदा।
१००२ आवण जावण पार कराए हद्दा, घर साचे मेल मिलाइंदा। आपणी उपजाए साची यद्दा, विश्व आपणा राह वखाइंदा। जोती १००२
१३ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणा खेल वखाइंदा। गुरमुख बाला बाली बुध, बचपन हरि जणाईआ। १३
बुध बिबेकी देवे सुध, सुरती शब्द मिलाईआ। आत्म परमात्म वेखे कुद्द, घर घर विच होए सहाईआ। आप आपा लए बुज्झ, ममता मोह मिटाईआ। हरि चरण प्रीती जाए रुझ, इक्को सेव कमाईआ। भेव चुके आत्म परमात्म गुझ, पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग वखाईआ। गुरसिख नंन्हां निक्का बच्चा, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। हिरदे अन्दर आपे रचा, रच रच वेख वखाईआ। नाम जणाए इक्को सच्चा, साची सच करे पढ़ाईआ। धुर दरगाही देवे पता, पाती इक्को हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख सदा बाल अञ्याण, बाली बुध रखाइंदा। गुरमुख देवे इक ज्ञान, ज्ञान अन्तर आत्म जणाइंदा। सति सतिवादी मिले आण, सति सति भेव खुलाइंदा। भगत भगवान करे कल्याण, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। लेखा जाण जीव जहान, हरिजन साचे खोज खुजाइंदा। शब्द अगम्म इक बबाण, पारब्रह्म वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर सेव लगाइंदा। गुरसिख बाल करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपणी

किरपा गुर सतिगुर धार, तेरी धार समझ विच ना आईआ। चरण कँवल दे प्यार, प्रेम प्रीती इक सिखाईआ। नेत्र दरस दीद दीदार, दर्दी दर्द वंडाईआ। हाल सुण मुरीदां आण, मुर्शद फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां कर पहचान, पिछला दुःख गंवाईआ। अगला दे धुर फ़रमान, सच संदेस सुणाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। पूरब विछड़े मेले आण, आपणे अंग लगाईआ। सोहँ दित्ता इक ज्ञान, नाम मंत्र दृढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे परवान, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख बाल गुरसिख अञ्याण, बाली बुध फड़ बांहों पार कराईआ।

❇ २० फग्गण २०१६ बिक्रमी सरमैल सिँघ दे गृह औरंगाबाद ❇

सतिगुर साहिब सदा दयाल, दया धार अख्वाइंदा। गुर गुर होए सदा कृपाल, कर किरपा वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त खेल महान, श्री भगवान आप कराइंदा। सन्त सुहेले देवे दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़े धंदे लाइंदा। गुरसिख चरण धूढ़ी देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। मनमुख जीव सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव खुल्हाइंदा। सतिगुर दाता योद्धा सूर, महाबली अख्वाईआ। गुर गुर सदा आसा पूर, मनसा मेट मिटाईआ। भगत भगवान मेला हाज़र हज़ूर, नित नवित्त वेख वखाईआ। सन्तन नाते तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। गुरमुखां बख्शे चरण धूढ़, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। गुरसिखां माण गुरबत तोड़े ग़रूर, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। मनमुखां रखे दूर दूर, दर कोए बहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेख वखाईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, निरगुण निराकार अख्वाइंदा। गुर गुर रूप शब्द दयाल, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। भगत भगवन्त बण दलाल, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। सन्तन देवे नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुरमुखां देवे इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। गुरसिखां वेखे मार ध्यान, नेत्र लोचण नैण खुल्हाइंदा। मनमुख जीव सर्ब पछताण, दर ढोई कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल कराइंदा। सतिगुर पूरा सदा बलवान, बल आपणा आप धराईआ। गुर गुर खेल विच जहान, बोध अगाध पढ़ाईआ। भगत भगवान कर पहिचाण, मेल मिलाए बेपरवाहीआ। सन्त साजण बख्श ध्यान, चरण कँवल सरनाईआ। गुरमुख नाता तोड़ शरअ शैतान, शख़सीयत इक्को इक जणाईआ। गुरसिख

१००४ १३

राग सुणाए कान, मंत्र नाम पढ़ाईआ। मनमुख जीव सर्ब कुरलाण, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, गुणवन्त अख्वाइंदा। गुर गुर मेला जुग जुग पीर, पीर पैगम्बर वेख वखाइंदा। भगत भगवान चोटी इक अख़ीर, आख़र आप चढ़ाइंदा। सन्त साजण बेनज़ीर, निरगुण नूर नूर दरसाइंदा। गुरमुखां कट मात भीड़, मार्ग साचे लाइंदा। गुरसिखां लेखा चुका शाह हकीर, इक्को रंग वखाइंदा। मनमुख जीव सदा दिलगीर, सच भरवासा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा भेव चुकाइंदा। मनमुख नेत्र रोवे नीर, नैण रहे कुरलाईआ। गुरसिख मिले इक्को धीर, सांतक सति जणाईआ। गुरमुख पड़दा चीर, आपणा घर दरसाईआ। सन्त साजण मेट लकीर, द्वैती पन्ध चुकाईआ। भगत भगवान नाम शमशीर, इक्को हथ्थ फड़ाईआ। गुर गुर नाता तोड़ सरीर, शब्दी शब्द रूप वटाईआ। सतिगुर दाता गुणी गहीर, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। सतिगुर साहिब पुरख अगम्म, अगम्मड़ी खेल कराइंदा। गुर गुर रूप ना मरे ना पए जम्म, शब्दी धार जणाइंदा। भगत भगवान जाणे कम्म, निहकर्मी वेख वखाइंदा। सन्त साजण बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। गुरमुख राग सुणा कन्न, अनादी नाद वजाइंदा। गुरसिख साचे चाढ़ चन्न, लोकमात रुशनाइंदा। मनमुखां अन्तिम देवे डंन, लख चुरासी विच भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन, भगवान आपणी धार चलाइंदा। मनमुख रोवण मारन धाह, हौला भार ना कोए कराईआ। गुरसिख तक्कण इक्को राह, नेत्र नैण उठाईआ। गुरमुखां मिले आप मलाह, प्रभ आपणा फेरा पाईआ। सन्त साजण लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगत भगवान लेखा दए चुका, आप आपणा पड़दा लाहीआ। गुर गुर डंका दए वजा, शब्द शब्दी सेव कमाईआ। सतिगुर पूरा निरगुण जोत कर रुशना, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। दो जहानां शाह पातशाह, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खला, ख़ालक वेखे थाउँ थाईंआ। रहबर बण आप खुदा, खुदी सब दी दए मिटाईआ। मुरीद मुर्शद रहिण ना देवे जुदा, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेले गोद उठा, भगत भगवान दए वड्याईआ। शब्द नाद धुन ब्रह्माद हो विस्माद दए वजा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर सज्जण धूढ़ी मजन दए नुहा, जन्म कर्म दुरमति मैल धवाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच स्वामी पकड़े बांह, निहकामी निहकर्मी कर्म कांड गुरमुख दए मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद देवणहारा ठंडी छाँ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

❇ २० फग्गण २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह औरंगाबाद ❇

तख्त निवासी एकँकारा, अक्ल कल हरि खेल खलाइंदा। शाहो भूप वड सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। निरगुण निरगुण खोलू किवाड़ा, बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। पकड़ उठाए सुत दुलारा, शब्दी नैण खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे खेल रचाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अगम्म, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। निरवैर जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाईआ। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्नू, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सच संदेसा नाम धन, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अथाह, आपणी कार कमाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, भेव अभेद जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। एकँकारा दए सलाह, साची सिख्या आप समझाइंदा। आदि निरँजण दीप जगा, नूर नुराना डगमगाइंदा। श्री भगवान खेल रचा, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। अबिनाशी करता पकड़नहारा बांह, पल्लू आपणी गंढु बंधाइंदा। पारब्रह्म लेखा दए जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी धार जणाइंदा। सचखण्ड निवासी श्री भगवान, वड्डा वड वड्याईआ। योद्धा सूरबीर नौजवान, बल आपणा आप रखाईआ। जोती जाता हो प्रधान, पुरख अकाल आपणा हुक्म मनाईआ। सच संदेसा देवे आण, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल रचाईआ । सचखण्ड हरि खेल अवल्ला, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आदि जुगादी इक इकल्ला, अक्ल कल आपणी धार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा भेव जणाइंदा। सचखण्ड निवासी भूपत राजा, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा आपणा सच तमाशा, मण्डल रास आप रचाईआ। साचे गृह कर प्रकाशा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। दर दरवेश बण दासी दासा, घर बैठा सीस झुकाईआ। आपणी इच्छया पूरी करे आसा, भिच्छया आपणी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड निवासी साचा रंग, निरगुण निरवैर आप रंगाइंदा। सिँघासण सुहाए इक पलँघ, पावा चूल ना कोए वखाइंदा। सति सतिवाद वजाए मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, निर्मल जोत डगमगाइंदा। आपणी वंडे साची वंड, वंडणहार आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा राह चलाइंदा। सचखण्ड निवासी सच सुल्तान, साचा राह चलाईआ। पुरख अबिनाशी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जाता

हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। धुर संदेसा सच फ़रमान, सति सतिवादी आप अल्हाईआ। करे खेल श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। आपणी करनी कर परवान, करता पुरख धार बंधाईआ। सीस जगदीश सुहाए आण, बेपरवाह आपणा पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा भेव चुकाईआ। सचखण्ड हरि खोल्हे भेव, अभेद भेद आप जणाइंदा। निरगुण करे निरगुण सेव, सेवक सेवा रूप वटाइंदा। दाता दानी बण अलख अभेद, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे चढ़, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे निरगुण चढ़या, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। साचे मन्दिर आपे खड़या, भूपत भूप वड वड्याईआ। नाउँ निरँकार आपे पढ़या, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, तत्तव तत्त ना कोए वड्याईआ। आपणा प्रकाश आपे धरया, असुते वेस धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड सुहाए सच महल्ल, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। दीपक दीआ गया बल, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। आपणे अन्तर आपे रल, आपे वेख वखाईआ। आपणा सिँघासण आपे मल, हरि जू आपे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ।
१००६ सचखण्ड दवारा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, भेव अभेद ना कोए रखाइंदा। १००६
१३ एकँकारा कर खेल नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढ्ढाइंदा। आदि निरँजण नाउँ निरँकारा मणीआं मंत, सोहला ढोला इक दृढ़ाइंदा। अबिनाशी करता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, श्री भगवान आप सुहाईआ। दीपक जगे आदि निरँजणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे वसेरा दर्द दु:ख भय भञ्जणा, बेअन्त बेपरवाह जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहाए आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोए रखाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, किनारा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल वखाइंदा। सचखण्ड हरि खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। ना कोई शब्द नाद धुनकार, रागी राग ना कोए अल्हाईआ। ना कोई जीव जंत पसार, साध सन्त ना कोए वड्याईआ। ना कोई सूरज चन्द सतार, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। ना कोई ज़िमीं असमान पहाड़, समुंद सागर ना कोए दरसाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। इक इकल्ला एकँकार, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह करे आपणी कार, दूजा संग ना कोए रलाईआ।

आपणी इच्छया कर तैयार, निरिच्छत आपणी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड इक्को इक सुहाईआ। सचखण्ड दवारा होए वड्डा, हरि वड्डा आप वड्याइंदा। निरगुण वसे बाला नढ्ढा, नज़र किसे ना आइंदा। आपे जाणे आपणी आर पार हद्दा, हदूद विच कदे ना आइंदा। आपणे प्रेम प्यार आपे बद्धा, दूजा बन्धन ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक वसाइंदा । सचखण्ड दुआर वसाए निरगुण जोत, निरवैर पुरख वड्डी वड्याईआ। आप बणाए आपणा कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। करया खेल बेअन्त बहुत, बहु बिध धार आपणा राह चलाईआ। आपणे उत्ते होए मोहत, मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। आपणी देवे सच सरोत, सोभावन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्को इक रुशनाईआ। सचखण्ड दवारे इक्को नूर, नूर नुराना आप अख्वाइंदा। प्रगट हो ज़ाहर ज़हूर, ज़ाहरा कल धराइंदा। मुकामे हक़ सच दस्तूर, बेपरवाह राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूरी जलवा डगमगाइंदा। नूरी जलवा परवरदिगार, एका एक नजरी आईआ। आदि जुगादी एकँकार, आपणी कल धराईआ। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड वसे साचे थाईंआ। सचखण्ड दुआर वसे सति, सति सति समझाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल हरि समरथ, समरथ आपणी धार वखाइंदा। सचखण्ड दवारे निरगुण निराकार हो प्रगट, प्रगट आपणी कल वखाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को हट्ट, हटवाणा इक्को नज़री आइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को तट, सरोवर इक्को इक जणाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को वत, बीज मंत्र आपणा आप बिजाइंदा । सचखण्ड दवारे इक्को कमलापति, नर निरँकारा नज़री आइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को जस, साचा सोहला आपे गाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को खाट, श्री भगवान सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को वाट, पांधी अग्गे पन्ध ना कोए मुकाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को ज़ात, दूजा रूप ना कोए धराइंदा । सचखण्ड दवारे खेल तमाश, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। सचखण्ड दवारे पूरी करे आस, आपणी आसा पूर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे आपणा डेरा लाइंदा। सचखण्ड दुआर मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण चाढ़या मैनूं रंग, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण दित्ता इक अनन्द, अनन्द अनन्द दरसाईआ। एकँकार हो बख्शंद, बख्शश मेरी झोली पाईआ। आदि निरँजण चाढ़या चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते गाया छन्द, साचा ढोला इक अल्हाईआ। श्री भगवान पाई ठंड, मेरे अन्तर

चरण कँवल टिकाईआ। पारब्रह्म मेरा देणा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सरन सरनाईआ। श्री भगवान हो दयाल, सचखण्ड दुआर जणाइंदा। तेरा लेखा बेमिसाल, तेरी मिसल ना कोए बणाइंदा। आदि जुगादि वेखां तेरा हाल, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। सति सतिवादी बण दलाल, जुग जुग वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सचखण्ड दुआर नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। धन्न भाग तेरे चरण गए छोह, मेरी छाती उत्ते टिकाईआ। मैं सुणदा रहां तेरे नाम दी सो, छन्द इक्को इक अलाईआ। मेरी वस्त मेरे कोलों ना लईं खोह, तेरे चरण पवां सरनाईआ। मैं तेरे जोगा गया हो, मैं दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड सुण मेरी आस, आसावंद जणाइंदा। तेरा संग पुरख अबिनाश, आदि जुगादि रखाइंदा। तूं रहिणा दासी दास, साची सेवा इक समझाइंदा। तेरे थल्ले खेल करां पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। सचखण्ड कहे मैं हो निमाणा, प्रभ तेरी सेव कमाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, हउँ भिक्खक रूप वटाईआ। दर दरवेश हो के मंगां दाना, आपणी ख़ाली झोली रिहा डाहीआ। तूं मेहरवान
१००८ मेहरवान मेहरवान मेहरवाना, तूं मेहर नज़र इक रखाईआ। मैं बरदा बणां ग़ुलामा, तूं ग़फ़लत विच कदे ना आईआ। मेरी १००८
१३ सलामा कर परवाना, अलैकम इक्को इक जणाईआ। तेरे प्रेम बद्धा गाना, तुध बिन सके ना कोए खुल्हाईआ। तूं साहिब १३
मर्द मर्दाना, तेरी मर्दानगी मोहे भाईआ। तूं शहिनशाह सुल्ताना, सीस ताज इक रखाईआ। तेरा हुक्म दो जहानां, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे रिहा जणाईआ। सचखण्ड दवारे सुण ला कर कान, हरि करता आप जणाइंदा। तेरे घर विच बणावां मकान, थिर घर नाउँ रखाइंदा। थिर घर देवां माण, शब्दी सुत वंड वंडाइंदा। शब्दी सुत कर परवान, साची भिच्छया झोली पाइंदा। साची भिच्छया इक महान, आपणी दात आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे सुण लै बोल, अनबोलत आप जणाईआ। सदा सदा सद वसां तेरे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। थिर घर कुण्डा देवां खोल्ह, शब्द सुत बहाईआ। अग्गे खेल करां अनमोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। तूं सुत्ता ना रहिणा बण अनभोल, बेपरवाह रिहा जगाईआ। आदि जुगादि रहिणा अडोल, डोल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक सुणाईआ। सचखण्ड दवारे खोल्ह अक्ख, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाइंदा। सुत

दुलारा करां प्रतख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। थिर घर साचे देवां रख, रक्षक आपणा भेव चुकाइंदा। अगला मार्ग देवां दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाइंदा। त्रैगुण माया बन्नां नत्त, पंज तत्त मेल मिलाइंदा। लख चुरासी कर प्रगट, साची घाड़न घड़त घड़ाइंदा। निरगुण निरगुण खेल तमाश, लोकमात राह चलाइंदा। रवि ससि कर प्रकाश, मण्डल मण्डप तेरा देस सुहाइंदा। घट घट अन्दर कर कर वास, जोती जाता खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआर गया मन्न, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी वड्याई साहिब धन्न, हउँ बालक कहिण ना पाईआ। सुत दुलार प्रगट होवे तेरा जन, विष्न ब्रह्मा शिव करे कुड़माईआ । तूं सब दा बणना जननी जन, मात पित अख्वाईआ। दाई दाया बण के बेड़ा देणा बन्न, निरगुण आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। सचखण्ड दवारे दे दिलासा, श्री भगवान आप समझाइंदा। निरगुण हो के खोल्हां खुलासा, सरगुण आप समझाइंदा। वेख वखावां पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल राह जणाइंदा। आत्म परमात्म देवां भरवासा, पूरी इच्छया आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी शब्द दुलार, गुर सतिगुर आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मार्ग दयां सखाल, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। दीना बंधप हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ । सच वखावां इक धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआर तेरा भेव न्यार आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ दस्स कहाणी, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। निरगुण रूप तेरा नुरानी, निरँकार तेरी शहिनशाहीआ। तेरा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भरन पाणी, बण सेवक सेव कमाईआ। तेरा नाउँ रचाए खाणी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण जस जस सुणाईआ। तेरी सच कवण निशानी, लोकमात लएं प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे रिहा जणाईआ। सचखण्ड सच निशाना, श्री भगवान आप जणाइंदा। निरगुण हो के सरगुण पहनां बाणा, बाण निराला तीर चलाइंदा। घट घट अन्दर होवां जाणी जाणा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। अगम्म अथाह बोध अगाध शब्द अनाद गावां गाणा, अनहद आप पढ़ाइंदा। भूपत भूप बण के राणा, आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। एका घर करे टिकाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल जणाइंदा। सचखण्ड कहे प्रभ दस्स हाल, किस बिध आपणी खेल चलाईआ। कवण अवल्लड़ी चलें चाल, निराली मात रखाईआ। निरगुण सरगुण मार्ग दएं सखाल, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। कवण दवारे होएं दलाल, जगत वचोला

१००६ १३

बणें माहीआ। वेख वखाए हक़ हलाल, हकीकत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर साचे साची कहाणी दए समझाईआ। सचखण्ड सुण साची बात, हरि बातन आप जणाइंदा। सतिजुग खेलां खेल तमाश, मेहरवान वड्याइंदा। सुत दुलारा कर प्रकाश, सन्त कुमारा सोभा पाइंदा। बराह रूप पृथ्मी आकाश, आपणा रंग रंगाइंदा। यगै पुरुष कर दासी दास, साचा मार्ग लाइंदा। हाव ग़रीव खेल तमाश, नर नरायण आप जणाइंदा। कपल मुन पूरी करे आस, रिखप देव पड़दा लाहइंदा। प्रिथू देवे आपणा साथ, मत्तस आपणा रंग रंगाइंदा। कच्छप वेखे खेल तमाश, धनंतर आपणा भेव चुकाइंदा। मोहणी वखाए आपणी रास, हँसा आपणा राग अलाइंदा। बावन भेख धरे पुरख अबिनाश, नर सिँघ आपणी कल वटाइंदा। हरी हरि कदे ना होए उदास, गज लेखा आप चुकाइंदा। नर नरायण शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा भेव चुकाइंदा। पंडत देवे इक ज्ञान, बोध अगाध समझाइंदा। राम रामा कर परवान, परम पुरख खेल खलाइंदा। वेद व्यासा दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। त्रिलोकी नाथ भेव महान, काहना कृष्ना बंसरी राग सुणाइंदा। बोध अगाधा नौजवान, शब्द अनादा नाद वजाइंदा। मूसे भेव चुकाए आण, जलवा नूर नूर समझाइंदा। ईसे देवे इक ध्यान, आप आपणा घर वखाइंदा। मुहम्मद दे धुर फ़रमान, नाम संदेसा इक सुणाइंदा। पंज तत्त कर परवान, निरगुण आपणी जोत जगाइंदा। नानक नाम कर प्रधान, जोती जाता वंड वंडाइंदा। दस दस वेखे खेल महान, काया चोला आप हंढाइंदा। गोबिन्द मेला विच जहान, चेला गुर रूप समझाइंदा। भगतां दे चरण ध्यान, सरन सरनाई इक समझाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, साचा परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण प्रगट हो विच जहान, जीवण युगत जगत जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे सच सच दृढ़ाइंदा। सचखण्ड वेखे प्रभ तेरी वड्याई, दूजे नज़र कोए ना आईआ। किस बिध करें मात कुड़माई, सरगुण आपणे अंग लगाईआ। साचा ढोला गाएं चाईं चाईं, नाउँ निरँकारा नाम प्रगटाईआ। वेख वखाएं थाउँ थाईं, नव नौ चार फेरा पाईआ। भगत उठाएं फड़ के बांहीं, फड़ बांहों गले लगाईआ। सन्तां देवें ठंडी छाईं, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं वी वेखां तेरा घर, लोकमात मेरी बणत बणाईआ। सचखण्ड प्रभ चरणां रखे सीस, आदि आदि सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा जगदीश, जगदीशर तेरी वड्याईआ। तेरी कोई ना करे रीस, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी पीसण लए पीस, तेरी सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी पढ़न हदीस, कलमा नबी रसूल जणाईआ। तेरा लेखा तेरी महिमा तेरा राग तेरा नाद तेरी

सिफ्त करे छतीस, राग रागां विच कदे ना आईआ। सद स्वामी हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। तूं मेरी रचना रची आदि, आदि पुरख तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लोकमात मैं वेखां तेरा घर, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, सचखण्ड दवारे आप जणाइंदा। तेरी बेनन्ती होई परवान, परम पुरख झोली पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते विच जहान, कोटन कोटि काल विहाइंदा। निरगुण प्रगट होवे विच जहान निरवैर आपणी धार चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे जाण दान, दोए दोए जोड़ वास्ता सर्ब पाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेले खेल नौजवान, निहकलंका आपणा नाम जणाइंदा। योद्धा सूर बली बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारा कहे मैनूं मंज़ूर, प्रभ चरणी सीस निवाया। जुग चौकड़ी पैंडा नहीं दूर, तेरे प्यार अन्दर ख़ुशी नाल बिताया। अन्तिम प्रगट होए ज़ाहर ज़हूर, निरगुण आपणा नूर कर रुशनाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी आसा रख के गए ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराया। बेपरवाह नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तूं होया रिहा मफ़रूर, हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी कहे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो के आवां विच जहान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मंगया दान, बण के दाता झोली पाईआ। दो जहानां वेखां मार ध्यान, विष्न ब्रह्मा शिव फड़ बांहों लवां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे रिहा दृढ़ाईआ। सचखण्ड दवारा रखे आस, प्रभ आसा पूर कराईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। कर किरपा तैनूं खड़े साथ, आप आपणी उंगली लाईआ। तेरा लहिणा चुके मस्तक माथ, पूरब झोली पाईआ। चरण कँवल बंधाए नात, नाता लोकमात जुड़ाईआ। फिर पुछे मेरी वात, कहाणी आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारे रहिणा तैयार, श्री भगवान आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार, चार यारी पार कराइंदा। कलि कल्की लए अवतार, गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा। प्रगट हो विच संसार, श्री भगवान राह जणाइंदा। शब्द अगम्म बोल जैकार, अनादी नाद सुणाइंदा। सच दुआर खोल्ह कवाड़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी वासना पूर कराइंदा। तेरी वासना अन्तिम करे पूरी, प्रभ आपणी दया कमाईआ। आसा रहे ना अन्त अधूरी निरगुण जोत करे रुशनाईआ। परम पुरख परमात्म कटे मजबूरी, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम गया आ, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं गए ध्या, ध्यान रहे लगाईआ। जिस नूं कहिन्दे वाहद लाशरीक इक खुदा, शिरकत सब दी दए मिटाईआ। वेद पुराण बणाए आप गवाह, जगत शहादत इक वखाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता जोती जाता आप आपणा वेस वटा, नूरो नूर रुशनाईआ। सच दुआर हरि निरँकार धरनी धरत धवल दए सुहा, आप आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे दात, चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता आप जुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे तेरा लहिणा, सो पुरख निरँजण अन्त चुकाईआ। आप वखाए तेरे नैणां, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। हरि सरनाई साची बहिणा, मिले माण वड्याईआ। इक्को मन्नणा प्रभ दा कहिणा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वसाईआ। सच दवारे वसणा खेड़ा, सचखण्ड निवासी आप वसाइंदा। जिस घर बहि के भगतां बन्नुणा बेड़ा, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। धरत मात दा खुल्हा करना वेहड़ा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। लख चुरासी उलटा देणा गेड़ा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। दीन
१०१२ मज़्ब दा चुकणा झेड़ा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। चार वरनां पाउणा घेरा, शरअ शरीअत डेरा ढाइंदा। कूड़ी क्रिया १०१२
१३ चुकणा हेरा फेरा, सच सुच्च इक समझाइंदा। सब ने कहिणा तूं मेरा मैं तेरा, बिन पारब्रह्म ब्रह्म नज़र कोए ना आइंदा। १३
नाउँ रखा श्री भगवान सिँघ शेरा, दो जहानां भबक लगाइंदा। चौथे जुग ढहिणा डेरा, अग्गे सिर ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ला इक वसाइंदा। सच महल्ला वसे मात, सचखण्ड दए वड्याईआ। भगत भगवान इक जमात, इक्को अक्खर पढ़ाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। मनमति रहे ना नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक जणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाए पुरख समराथ, मिलावणहारा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा माण वधाईआ। सचखण्ड दवारे मातलोक, तेरा रंग रंगाइंदा। जिस दवारे सुणाए इक सलोक, सोहला आपणे नाम पढ़ाइंदा। पावे सार लोक परलोक दो जहानां खोज खुजाइंदा। बंक दुआर सुहाए कोट, कोटन कोटि दवारे ढाइंदा। जन भगतां दस्से इक्को निरगुण ओट, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। मेल मिलाए निर्मल जोत, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा मात बणाइंदा। सच दवारा बणना मात, मित्र प्यारा आप जणाईआ। देवे वड्याई कायनात, कलमा नबी रसूल जणाईआ। अमृत जाम प्याए हयात आब, आब हयात मुख चुआईआ। मेल मिलाए

सच अहिबाब, महिबूब सच्चा शहिनशाहीआ। नज़री आए इक नवाब, नौबत आपणे नाम वजाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दे पूरे करे ख्वाब, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गए ध्यान लगाईआ। नज़री आए पाकी पाक, पतित पुनीत इक अख्वाईआ। सच दवारा खोल्हे ताक, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। नज़री आए शहिनशाह शाह शाबाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआर समझाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू तेरी पनाह, पुनहि पुनहि सीस झुकाईआ। लोकमात चलाएं सच राह, रहबर इक अख्वाईआ। लख चुरासी दएं पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार वरनां एका दर दएं बहा, कूड़ी क्रिया नाता तोड़ तुड़ाईआ। आत्म परमात्म मेला लएं मिला, जगत वछोड़ा पन्ध कटाईआ। साचा सोहला दएं सुणा, सोहँ ढोला गाईआ। पड़दा उहला दएं चुका, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। निझर झिरना इक झिरा, कँवल नाभ उलटाईआ। निरगुण जोत कर रुशना, जोत निरँजण डगमगाईआ। आत्म सेजा डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। भगतां खेड़ा दएं वसा, घर आपणा मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आवां चाईं चाईंआ। सचखण्ड दवारे अन्तिम आउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी
१०१३ जुग सच दवारे गूढ़ी नींद सवाउणा, फड़ बांहों ना तैनूं कोए उठाइंदा। निरगुण निरवैर अकाल दीन दयाल जोती जामा भेस १०१३
१३ वटाउणा, भेव अभेद आप खुलाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाउणा, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। भगत भगवान १३
आप मिलाउणा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। मिल मिल भगतां मंगल गाउणा, गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक जणाइंदा। सचखण्ड दवारे तेरी वड्याई साढे तिन्न हथ्थ, श्री भगवान आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, तेरा महल्ल दए सुहाईआ। निर्मल जोत जगे लट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सति पुरख दा खुल्हे हट्ट, दो जहानां वणज कराईआ। वसणहारा घट घट, तेरे मन्दिर डेरा लाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, तोड़े भरम भउ लोकाईआ। लहिणा देण चुकाए तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रोवे मारे धाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होण बेबस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक्को इक समझाईआ। सचखण्ड दुआर पुरख अबिनाशा, इक्को इक समझाइंदा। जिस मन्दिर वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक पन्ध मुकाइंदा। तेरी पूरी कर आसा, तृष्ना तेरी झोली पाइंदा। शाहो भूप हरि शाह शाबाशा, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। जन भगतां देवे धुर भरवासा, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। सचखण्ड कहे प्रभ तेरा मन्दिर, तेरे नाल सुहाईआ । कर किरपा जिस वसें अन्दर, तिस मिले माण वड्याईआ। भाग लग्गे

अन्धेरे कन्दर, जिस गृह जोत करें रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, तेरा दर्शन वेखां चाईं चाईंआ। सच दरस करन दा चाउ, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम मेल मिलाए बेपरवाहो, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। सच सिंघासण पुरख अबिनाशन वेखणहारा थाईं थाउँ, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे अन्तिम वार, वर आपणा इक जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। सचखण्ड दा सच दवारा, हरि सतिगुर आप वसाईआ। गुर गुर वज्जे शब्द नग़ारा, नाद अनाद सुणाईआ। भगत भगवान करे प्यारा, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। सन्त साजण दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां खोल्हे बंद कवाड़ा, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। गुरसिखां देवे चरण धूढ़ छारा, मस्तक टिक्का लाईआ। मुरीद मुर्शद इक अधारा, आसा पूर वखाईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर उच्ची बोलण इक जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, पुरख अकाल नज़री आईआ। कलिजुग अन्तिम पार किनारा, दीन मज़्हब

१०१४ रहिण ना पाईआ। नज़री आवे इक्को परवरदिगारा, बेमुकाम सच्चा शहिनशाहीआ। आत्म परमात्म देवे सच नज़ारा, नज़रीआ १०१४

१३ आपणा इक टिकाईआ। मुकामे हक़ हो उज्यारा, हुजरा हक़ हक़ सुहाईआ। सचखण्ड वसणहारा एकँकारा, आप आपणी १३

कल धराईआ। लोकमात दा धर्म अखाड़ा, इक्को इक वखाईआ। जन भगतां खोल्हे सच दवारा, दर दरवाज़ा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सच दवारा खोल्हे आप, आपणी दया कमाइंदा। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत वेख वखाइंदा। चार वरन जणाए इक्को जाप, सोहँ मंत्र आप पढ़ाइंदा। त्रैगुण माया मेटे ताप, अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, ब्रह्म इक्को इक समझाइंदा। पंज तत्त नाता जगत ख़ाक, ख़ाकी रूप ख़ाक समाइंदा। मढ़ी गोर ना कोई पुन्न ना सवाब, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम अन्त अन्त प्रभ आया, आपणी दया कमाईआ। मेटणहारा त्रैगुण माया, त्रै त्रै लेखा दए जणाईआ। देवणहारा ठंडी छाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा राग इक अल्हाया, अनादी नाद वजाईआ। आत्म परमात्म ढोला गाया, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। चौदां विद्या नैण शरमाया, चौदां लोक भेव ना पाईआ। चौदां तबकां कर रुशनाया, ज़िमीं असमान ना कोए सुहाईआ। सति सतिवादी साचा राह चलाया, रहबर बणया नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे देवे वर,

लोकमात आप वड्याईआ। सच दवारा सचखण्ड, लोकमात वड्याइंदा। जन भगतां दिती इक्को वंड, श्री भगवान झोली पाइंदा। अन्तर आत्म इक अनन्द, बिन बत्ती दन्द वखाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी चढ़े चन्द, चन्द चांदना आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दवारा एकँकारा जोत उज्यारा शब्द नगारा, संगत सहारा घर इक्को इक वसाइंदा। इक्को वसे सच्चा घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। प्रभ आप चुकाए भउ डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म सेजा वेखे चढ़, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, चतुर्भुज सच्चा शहिनशाहीआ। साचा ढोला लए पढ़, बिन रसना जिह्वा गाईआ। आपणी किरपा करता पुरख कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जींवदयां जग जाए मर, प्रभ चरण मिले वड्याईआ। दोज़ख़ बहिश्त दोहां नूं पार जाए कर, स्वर्ग चरणां हेठ दबाईआ। साहिब सतिगुर दा पल्लू फड़, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां डेरा ढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि भगत तेरा दर्शन करन, नेत्र नैण नैण उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस ल्या वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवान साची रीती, नाता तुटा मन्दिर मसीती, शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर गुरमुख काया विच वखाईआ। गुरसिख काया
१०१५ सच दवारा, गुरु गुर अन्दर आसण लाइंदा। अठ्ठे पहर वज्जे नगारा, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। मन मनुआ ना होए १०१५
१३ पनहारा, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। गृह मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप १३
हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। भगत कहे प्रभ दर्शन पा, मेरी नीती रही ना राईआ। पूजा पाठ तों खैहड़ा ल्या छुडा, हवनी हवन ना कोए वड्याईआ। निरगुण मिल्या निरगुण आ, पंज तत्त लेखा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म गंढु लई पवा, ना सके कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगतां बणे गवाह, शहादत इक्को इक जणाईआ। जिन्हां दा दाता बेपरवाह, तिन्हां डर ना कोए वखाईआ। राए धर्म नैण रिहा शरमा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचे भगतां प्रभू अन्तिम आपणी गोदी लए उठा, पंज तत्त काया माटी कम्म किसे ना आईआ। कोई साड़े कोई देवे दफ़ना, कोई पंछीआं कोलों तुड़ाईआ। कोई जल धारा दए वहा, कोई अंग भंग कटाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म प्रभ भगतां लए आपणी गोद बहा, दो जहानां नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आपणा मेल मिलाईआ।

❇ २१ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह पूना ❇

साहिब सतिगुर खेल करया, करते हथ्थ वड्याईआ। भगतां अन्दर चोरी वड़या, आपणा माण गंवाईआ। गुरमुख साचे सीस हथ्थ धरया, जगदीश होए सहाईआ। निमाणा हो के गुरमुखां लेखा चुकाए सीस धड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करनी गुरमुखां हथ्थ वखाईआ। होया निमाणा दर दरवेश, दर दर घर घर फेरा पाईआ। गुरमुख वेखे सच्चे नरेश, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। अन्दर वड़ के करे हेत, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कीता खेल साचे हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। खेल अगम्म अपार, भेव ना आया। वेखो भगत दुआर, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। मंगता आया बण भिखार, ख़ाली झोली अग्गे डाहया। गुरमुख बाहरों आवण हो हुशियार, आप आपणा बल धराया। वेखो किथे लुक्या ठग्ग चोर यार, जुग चौकड़ी जो गुर अवतारां रिहा भुलाया। पुरख अबिनाशी कृपानिध, ठाकर स्वामी हौली हौली आए बाहर, जन भगतां वेख ख़ुशी मनाया। बिन गुरमुखां कोई नज़र ना आए विच संसार, जो कर स्वागत उडीक प्रेम प्रीती साची रहे जणाया। धुर दरगाही सच्चा माही गुरमुखां गल पाए आप हार, बण सेवक सेव कमाया। आपणा तजा सर्ब शृंगार, गुरसिख आपणे रंग रंगाया।
१०१६ गुरसिखां धूढ़ी मस्तक लावे छार, आपणा टिक्का गुरसिख सेहरा सीस बंधाया। हरिसंगत करे आप प्यार, चाढ़े रंगत एकँकार, १०१६
१३ रंग रंगीला इक रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा संगत वर, पूना संगत दो जहान १३
श्री भगवान आपणे अग्गे अग्गे रखाया। गुरमुख घर सतिगुर डेरा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। अबिनाशी करता कर के मेहरां, मेहरवान आया वाहो दाहीआ। रूप दस्से बण के चेरा, चेला आपणा नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन दवारे आपणा आसण लाईआ। हरि दुआर लग्गा मिट्ठा, श्री भगवान ख़ुशी मनाईआ। करया खेल इक अनडिठा, अनडिठड़ी धार चलाईआ। हरिजन हरी हरि आपे जिता, हार नज़र कोए ना आईआ। घर आउँदयां दा श्री भगवान गुरसिखां मुख डिठा, अग्गों हो के मिले चाईं चाईंआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर जगत संदेसा देंदे रहे चिठा, सो शहिनशाह आपणा दर वखाईआ। पूरब जन्म दा पिछला हिस्सा, दर आ के झोली पाईआ। श्री भगवान भगतो तुहाढ्ढे नालों निक्का, देवणहार सर्ब चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां फूलनहार पहनाईआ। फूलनहार कहिण प्रभ तेरी लोड़, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा जुग जन्म दे विछड़े जोड़, जोड़ी भगतां मेल मिलाईआ। बेअन्त स्वामी कलिजुग कली फूल तेरी पई लोड़, दूजा नज़र कोए

ना आईआ। गुरसिखां अन्दर वड़यों आप आ के गोर, दीवा बाती ना कोए जगाईआ। सच तैनूं सारे कहिन्दे रहे चोर, चोरी चोरी गुरमुखां कारज पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच शृंगार जन भगतां आप जणाईआ। दो हथ्थीं प्रभ चुक्के कंधे, गुरमुखां भार उठाईआ। कोई ना वेखे गंदे मंदे, निर्मल नूर रूप दरसाईआ। आप बणाए आपणे बंदे, बिन बंदगीयों पार कराईआ। साचे पौड़े चाढ़े डण्डे, डण्डा आपणा नाम वखाईआ। कोई ना रहे उरार कन्ढे, पार किनारा इक्को चरण दवारा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे कंध उठाईआ। हरिजन तेरा चुक्कया भार, भावी जगत वरताईआ। अन्दरे अन्दर सच प्यार, बाहरों बहु रूपी भेव ना कोए जणाईआ। सच सिँघासण दे आधार, अबिनाशी आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर घर रिपोट ना होए ख़राब, ख़राबी जगत मिटाइंदा। श्री भगवान भगतां करे आप आदाब, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तुसीं मेरे साहिब जनाब, हउँ सेवक रूप वटाइंदा। प्रभ देवण आया ख़ताब, मस्तक टिक्का नाम लगाइंदा। जिस दा कोई दे ना सके जवाब, सो करनी आप कमाइंदा। गुरमुख रोशन करे आफ्ताब, नूर जलवा इक दरसाइंदा। अग्गे कोई ना देवे अज़ाब, जन्म मरन दा दुःख मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पिछला लेखा साफ़ कराइंदा।

१०१७
१३

❇ २१ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह पूना ❇

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणी खेल कराईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। एकँकारा बण प्रधान, सच प्रधानगी आप जणाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, बेपरवाह बेपरवाहीआ। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरगुण रिहा झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, सच परवानगी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। साची खेल करे पुरख समरथ, भेव अभेद जणाइंदा। निरगुण निराकार निरवैर हो प्रगट, अजूनी रहित वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जाण खेल तमाश, दो जहानां श्री भगवाना आपणी कार कमाइंदा। आदि पुरख देवणहारा इक्को साची दात, सचखण्ड दवारे सच सच समझाइंदा। जुग चौकड़ी पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण

आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, एकँकारा दए वड्याईआ। आदि निरँजण साचा दान, अबिनाशी करता झोली पाईआ। श्री भगवान मर्द मर्दान, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाए मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। भूपत भूप राज राजान, सीस ताज टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेद खोल्हे भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जन भगतां जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण सरगुण देवणहारा नाम मंत, बोध अगाध पढ़ाईआ। लख चुरासी बण नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। साचा भेव देवे खोल्ह, बेअन्त बेपरवाहीआ। अगम्म अथाह तोले आपणा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। निरवैर निराकार रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण वेखे घोल, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप जणाईआ। करनी करता दस्से मीत, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए बीत, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात चलाई रीत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वरन बरन वंड वंडाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान सुणाया गीत, अञ्जील कुरान सोहला ढोला आप जणाइंदा। नाता जुड़या शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मसीत, गुरुदुआर आपणा भेव जणाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठ, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। सद बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। वसणहारा हस्त कीट, घट घट जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। साचा भेद सो पुरख निरँजण, इक इकल्ला आप खुल्हाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सच सरोवर कराए एका मजन, दुरमति मैल धवाईआ। नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। काया माटी करे कंचन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी रखे आपणे हथ्थ, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मार्ग दस्स, करोड़ तेतीसा करे पढ़ाईआ। सरगुण अन्तर आपे वस, ब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। निर्मल जोत कर प्रगट, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए अनहद, अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणी धार बंधाईआ। जुग चौकड़ी बन्न्हे धार, निरगुण सरगुण खेल खलाइंदा। लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यार, जलवा नूर नूर रुशनाइंदा। सचखण्ड साचा खोल्ह कवाड़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। घर विच घर न्यार, थिर घर आपणा

रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जुग चौकड़ी जाए लँघ, लोकमात रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण सगला संग, पुरख अकाल आप निभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगदे गए मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। दाता दानी सूरा सरबँग, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। काया चोली चाढ़नहारा रंग, रंग मजीठी इक रंगाईआ। अस्व घोड़े कसणहारा तंग, शाहसवारा फेरा पाईआ। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, लोक परलोक चरणां हेठ दबाईआ। लहिणा देणा वेख रवि ससि सूरज चन्द, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। रागां नादां कर खण्ड खण्ड, नाम वजाए इक मृदंग, राग इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा दए जणाईआ। साचा लेखा दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत वेख वखाइंदा। सति सतिवादी साचा जाप, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। मेटणहारा तीनों ताप, त्रैगुण माया पड़दा लाहइंदा। सच बंधाए एका नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। बंद कवाड़ी खोलू ताक, आत्म अन्तर कुण्डा लाहइंदा। अमृत दे बूँद स्वांत, निझर झिरना इक झिराइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। आत्म परमात्म कर के दासी दास, साची सेवा इक समझाइंदा। नाता तुटे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ना खोज खुजाइंदा। सदा सुहेला

१०१६ १३ वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। अगम्मी सुणाए आपणी गाथ, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। प्रगट हो पुरख समराथ, लोकमात फेरा पाइंदा। वेखणहार त्रिलोकी नाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप दृढ़ाइंदा। साची सिख्या देवण जोग, हरि इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी भोगया भोग, भस्मड़ आपणी धार चलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर संजोग, निरगुण सरगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। नाम सुणाया इक सलोक, निष्अक्खर रूप वटाईआ। मन्दिर वखाया सचखण्ड दुआर किला कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। होए प्रकाश निर्मल जोत, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप जणाईआ। भेव अभेदा दस्से मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक कमाईआ। सचखण्ड दा सच मकान, धरत धवल दए वखाईआ। लेखा जाण दो जहान, जीवण युगत जगत दए समझाईआ। आदि जुगादी सच्चा काहन, लख चुरासी गोपी वेखे थाउँ थाईंआ। निरगुण रूप श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, नेत्र सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश मंगण दान, आपणी झोली रहे वखाईआ। करे की खेल वाली दो जहान,

कलिजुग अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। कवण दुआर कवण मकान कवण डेरा जिस देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। साचा लेखा दस्से मीत मुरारा, श्री भगवान दया कमाइंदा। कलि कल्की लै अवतारा, जोती जामा वेस वटाइंदा। सचखण्ड सुहाए इक दवारा, जन भगतां सेव कमाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्द अगम्म वज्जे नगारा, दूजा राग ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा दस्सांगा। निरगुण हो के वसांगा। शब्दी तीर निराला कसांगा। दो जहानां चरणां हेठां झस्सांगा। अगला मार्ग जन भगतां साचा इक्को दस्सांगा। नेड़े आ पिच्छे ना हटांगा। शाह पातशाह हो के डटांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां हिरदे आपे वसांगा। साचा मार्ग लावांगा। सचखण्ड दुआर वखावांगा। भगत भगवान रूप बणावांगा। सच निशान इक वखावांगा। अन्तिम कन्ता इक मिलावांगा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ावांगा। निझर झिरना इक झिरावांगा। बूँद स्वांती कँवल प्यावांगा। अनहद रागी राग सुणावांगा। रसना जिह्वा बोलणा बंद करावांगा। सुरती शब्द नाल मिलावांगा। दूर दुराडे सुत्ते
१०२० फड़ उठावांगा। जुग चौकड़ी लेखे आप जणावांगा। भाग लगा के पंज तत्त काया बुत्ते, अगम्मी रीती सच वखावांगा। जेहड़े १०२०
१३ गुरमुख हो जाण गुस्से, फड़ बांहों गले लगावांगा। जे कोई सच्ची पुछे, साम्हणे हो के नज़री आवांगा। हुण भेव ना रहिणा १३
लुके, पड़दा आपणा चुक उठावांगा। शाह सुल्तानां मूँह दे भार सुट्टे, सीस ताज ना कोई रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलावांगा। जन भगतां मेल मिलाएगा। नर नरायण दया कमाएगा। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दहि दिशा वेख वखाएगा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी लुक्या कोए रहिण ना पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहिण ना देवे कोई सफ़ारशी, आपणी अक्खीं वेख हरिजन आपणे नाल मिलाएगा। हरिजन साचे नाल रलावांगा। पिछली भुल्ल बख्शावांगा। सतिजुग राह वखावांगा। इक्को नाम जपावांगा। निरगुण नूर नज़री आवांगा। परवरदिगार खेल करावांगा। अमाम मैहन्दी रूप वटावांगा। कलमा नबी रसूल पढ़ावांगा। सच असूल आप बणावांगा। कातिल मकतूल खेल करावांगा। बेनज़ीर नज़र किसे ना आवांगा। मुरीद मुर्शद सच तस्वीर वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे घर बहावांगा। गुरमुखां गोदी चुकेगा। वेला नेड़े ढुकेगा। प्रभ शेर वांगू उठेगा। भाणा कदे ना रुकेगा। शाह पातशाह कोई ना लुकेगा। हरि जू मूँह दे भार सुट्टेगा। लख चुरासी दिन

दिहाढ़े लुट्टेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपे पुच्छेगा। जन भगतां आप उठाएगा। सो पुरख निरँजण दया कमाएगा। हरि पुरख निरँजण सेव कमाएगा। आदि निरँजण जोत जगाएगा। श्री भगवान घर घर फेरा पाएगा। अबिनाशी करता अन्दर वड़ राह वखाएगा। पारब्रह्म ब्रह्म आपणे अंग लगाएगा। निरगुण सरगुण इक मृदंग वजाएगा। काया चोली रंग चढ़ाएगा। नव खण्ड पृथ्मी खण्ड खण्ड वखाएगा। लख चुरासी नार दुहागण रंड, हरि जू कन्त नज़र ना आएगा। जन भगतां पूरी करे मंग, बण दरवेश सेव कमाएगा। आत्म सेजा बैठ पलँघ, सच स्नेहुड़ा आप सुणाएगा। नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दूर दुराडे नेरन नेरा हो के आप उठाएगा। गुरमुख सच्चा उठेगा। श्री भगवान तुठेगा। घर घर जा के पुछेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग अन्त कदे ना लुकेगा। साचे भगतो करो ख्याल, श्री भगवान आप जणाइंदा। निरगुण बणया आप दलाल, शब्द विचोला विच रखाइंदा। गोबिन्द नीहां हेठां दित्ते बाल, कलिजुग नींह जगत उखड़ाइंदा। सति दुआर बणे सच्ची धर्मसाल, जीवां जंतां आप वखाइंदा। ओथे लेखा चुके शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाइंदा। नज़री आए पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। सतिजुग चले अवल्लड़ी चाल, कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाइंदा। भगतां तोड़े नाता काल महाकाल, भगतां आपणी गोद उठाइंदा। देवे नाम सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट कोए ना जाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर दूर दुराडा चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। तुहाड्डा हल्ल करे स्वाल, प्रगट हो अबिनाशी दीन दयाल आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा देवे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। बुढ्ढे नढ्ढे बाले सर्ब परिवार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जिस जन निज नेत्र दित्ता इक दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। बेपरवाह परवरदिगार, पल्लू आपणा नाम फड़ाईआ। लेखा जाणे सांझा यार, सखी सरवर इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला दए समझाईआ। साचा वेला आउणा जग, जग जीवण दाता आप जणाइंदा। प्रभ स्नेहुड़ा देवे उपर चढ़ के शाह रग, जन भगतां आप जणाइंदा। भगत दवारे आओ भज्ज, राह इक्को इक वखाइंदा। जिथ्थे किसे दा कोई निशाना ना जाए लग्ग, तीर तलवार घाउ ना कोए रखाइंदा। कलिजुग अग्नी पोह ना सके अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। गुरमुखो तुहाड्डी दो जहान हद्द, श्री भगवान वंड वंडाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणी गोद बहाइंदा। सोहँ ढोला गाउणा छन्द, साची सिख्या इक जणाइंदा। सोवत जागत इक्को अनन्द, जीवण मरन इक्को

घर वखाइंदा। एथे ओथे मुक्के पन्ध, लेखा होर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भरम भुलेखा आप कढ्डाइंदा। भरम भुलेखा करो दूर, दर दुआर रिहा जणाईआ। प्रगट होया हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। पहलों बख्शे सर्ब कसूर, फेर दिती चरण सरनाईआ। अन्तिम आसा करे पूर, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। नाता तुटे सृष्टी कूड़, सतिगुर चरण मिले सरनाईआ। सतिगुर सरन साची धूढ़, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़, जिस जन आपणा भेव खुल्हाईआ। नाद सुणाए इक्को तूर, तुरिया नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां चाढ़े इक रंग, रंग रंगीला दया कमाईआ। आत्म सुहाए सेज पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। दिवस रैण वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग सुणाईआ। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। निज आत्म देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच दरसाईआ। सोहँ ढोला साचा छन्द, चार वरन करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग लेखा रिहा चुकाईआ। कलिजुग लेखा मुक्के मात, मात रहिण ना पाईआ। जन भगतां बणे इक जमात, पट्टी इक्को इक पढ़ाईआ। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म साची गाथ, ब्रह्म पारब्रह्म शनवाईआ।

१०२२ १३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सिख्या दए दृढ़ाईआ। सतिजुग सिख्या चार वरन, हरि करता आप जणाइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। नाता तुटे मरन जन्म, जन्म मरन इक्को घर वखाइंदा। साहिब आया तरनी तरन, हरिजन साचे पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डूँग्घी भँवरी वेख वखाइंदा। डूँग्घी भँवरी वेखे सागर, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त काया गागर, त्रैगुण लेखा थाउँ थाईंआ। ग़रीब निमाणया जगत निताणयां देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे मेहर मेहर मेहर बेपरवाहीआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान देवे दान, दाता दानी इक अख्वाइंदा। कलिजुग अन्त हो प्रधान, सन्त साजण वेख वखाइंदा। बिन कल्मयों करे कल्याण, मुरीद मुर्शद आप जणाइंदा। कायनात वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। पीर पैगम्बर होण हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग अन्त उठावांगा। धुर संदेसा हुक्म सुणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव दर बहावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रलावांगा। त्रैगुण लेखा आप चुकावांगा। पंज तत्त भरम भुलेखा बाहर कढ्डावांगा। मुल्ला शेख़ पड़दा लाहवांगा। पंडत पांधे दस्स संदेस जणावांगा। लख चुरासी होणा खेत, रण भूमी १०२२ १३

रंग रंगावांगा। निरगुण हो के खेलां खेड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मृदंग वजावांगा। सच मृदंग वज्जेगा। कलिजुग कूड़ा भज्जेगा। सतिजुग साचा सजेगा। भगत भगवान पड़दा कज्जेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले आपे सद्देगा। गुर गोबिन्द धुर दी कार, निरगुण सरगुण रिहा जणाईआ। अमृत आत्म भर भण्डार, जीव जंत वरताईआ। शब्द म्यानों खिच कटार, खड़ग खण्डा चमकाईआ। जीव रक्षया करे सर्ब संसार, दुष्टां मेट मिटाईआ। बेज़बानां उत्ते कदे ना करे वार, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। गोबिन्द सूरा सूरबीर बलकार, निहथ्यां उत्ते हथ्थ ना कदे उठाईआ। जीवां जंतां सांझा करे प्यार, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। नानक निरगुण जोती दिती बाल, गोबिन्द जोत रुशनाईआ। जिस दा पिता पुरख अकाल, क्यों दुष्ट रूप वटाईआ। उहदे प्रेम अन्दर सारे होए हलाल, झटका करन दी लोड़ रही ना राईआ। जिन्हां अन्दर वसे आप दीन दयाल, मेहरवान आपणा डेरा लाईआ। ओन्हां दा गुरू गोबिन्द बणे काल, काल ग्रासी आप हो जाईआ। सतिगुर सदा सदा दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा दर, गोबिन्द खण्डा तिक्खी धार, गुरसिखां करे सच प्यार प्रेम प्यार, कटार लाल धार वखाईआ। गुर गोबिन्द ना कीता झटका, सीस धड़ ना अड्ड कराईआ। एहो सब नूं खा गया खटका, खट्टी हथ्थ किसे ना आईआ। धर्म दवारे जीव लटका, जो बणया बक्करा मात कसाईआ। अग्गे किसे ना पलटया पत्रा, नानक गोबिन्द दए ना कोए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच रिहा जणाईआ। सतिगुर गोबिन्द बक्करे कदी ना वढ्ढे, दुखियां दर्द आप वंडाइंदा। जिस आपणे बच्चे नीहां हेठां दब्बे, क्यों मासूमां उत्ते हथ्थ उठाइंदा। रसन हल्काए सारे बद्धे, कूड़ी रस जगत लोभाइंदा। अमृत धार गुरमुख प्यार गोबिन्द विचार लख चुरासी विच्चों थोड़े लभ्भे, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। बाकी धर्म राए दवारे छड्डे, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर गुरमुख प्यार रंग रंगाइंदा। मन पंखी ना जाए दौड़, उड उड ना दहि दिश धाईआ। जिस सतिगुर पूरा जाए बौहड़, शब्द डोर बंधाईआ। बुद्धी करे अवर दी और, मन चले ना कोए चतुराईआ। पंच विकार ना पाए शोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। माया ममता हउमें हंगता गढ़ हँकारी देवे तोड़, निवण सो अक्खर इक समझाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी देवे जोड़, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुख चढ़े साचे घोड़, काया मन्दिर अन्दर नठ्ठे वाहो दाहीआ। सतिगुर वखाए इक्को पौड़, पौड़ा आपणा नाम जणाईआ। नज़री आए प्रकाश अन्ध घोर, अन्धेर रहे ना राईआ। मन दा रहे ना कोई ज़ोर, निउँ निउँ लागे पाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, मन ममता दए मिटाईआ। मन ममता मिटे आसा, तृष्ना रहे ना राईआ। जिस सतिगुर चरण कँवल देवे भरवासा, घर इक्को नज़री आईआ। लेखा जाणे पवण स्वासा, पवण पवणी आप समाईआ। आपणा खोल्ह सुणाए खुलासा, भेव अभेद आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन इक्को बन्धन पाईआ। मन वासना पाए बन्धन, तन्दी तन्द बंधाइंदा। गुरमुख मस्तक लाए चन्दन, टिक्का इक जणाइंदा। अन्तिम देवे सच अनन्दन, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मन वासना बंद कराइंदा। मन वासना देवे कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सच दुआर वखाए हट्ट, जिस घर सतिगुर आसण लाईआ। हरिजन चरणी जाए ढठ्ठ, माण अभिमान मिटाईआ। दीन दयाल सिर रखे दे कर हथ्थ, समरथ होए सहाईआ। कर किरपा पाए नाम नथ्थ, मन चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, मन वासना मन ही विच खपाईआ। मन वासना मन विच दब्बे, आपणा भार रखाईआ। गुरमुख आत्म अन्तर साची सेजा सद्दे, नाम स्नेहुड़ा जणाईआ। पार कराए कूड़ी हद्दे, साचे मन्दिर आप बहाईआ। जो जन गाए सोहँ छन्दे, तिस मन सके ना कदे डुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिन सतिगुर शब्द मन हथ्थ किसे ना आईआ। एथे ठीक ओथे नाल, विछोड़ा ना कोए रखाइंदा। किरपा कर आप कृपाल, जगत दु:ख जन्म दु:ख कर्म दु:ख आप मिटाइंदा। देवणहारा साचा सुख, उज्जल करे मात मुख, मुख मुखड़ा आप सालाहइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान आदि जुगादि गोदी लए चुक्क, चुक आपणी ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एथे ओथे दो जहान साचा सुख उपजाइंदा।

❇ २२ फग्गण २०१६ बिक्रमी जमादार हरचन्द सिँघ दे गृह सी० ऐम० ई० किरकी बंगला जे ६ पूना ❇

भगत सेजा आत्म पलँघ, जुग जुग ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले सूरा सरबँग, शाह पातशाह फेरा पाईआ। आत्म परमात्म देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, अनबोलत राग अल्हाईआ। निर्मल जोत चाढ़े चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अनहद वजाए नद, धुन आत्मक नाम जणाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार हद्द, सच दवारा इक दरसाईआ। माया ममता खैहड़ा जाए छड्ड, हउमें हंगता रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण पड़दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत जाम प्याए मध, रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान होए आप सहाईआ। भगत सेजा तक्के राह, नित नित ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। बोध अगाध दए सलाह, शब्दी नाम दृढ़ाईआ। डूँग्घी कवरी बाहर लए कढ्ढा, भँवरी भेव रहे ना राईआ। साचा मार्ग दए दरसा, गृह मन्दिर कुण्डा लाहीआ। अन्दरे अन्दर लए मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। भगत सच्चा करे पुकार, नित नित ध्यान लगाया। कवण वेला प्रभ मिले परवरदिगार, बेपरवाह फेरा पाया। मुरीद मुर्शद दए दीदार, निरगुण दीद इक्को चन्द चढ़ाया। लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर, भेव अभेदा आप खुलाया। महल्ल सुहाए इक मनार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। कमलापति करे प्यार, बहु भांती वेख वखाया। बूँद स्वांती देवे ठंडी ठार, अमृत आत्म जल प्याया। जुग जुग दा दुखड़ा दए नवार, लख चुरासी फंद कटाया। चरण कँवल देवे सच प्यार, प्रेम प्रीती इक जणाया। फड़ बांहों करे पार, राए धर्म ना दए सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी वेख वखाया। भगत आत्म सेजा रही उडीक, इक्को ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले लाशरीक, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। मेरा मिटे अन्धेरा तारीक, साचा चन्द करे रुशनाईआ। पिछला लहिणा चुक्के ठीक, अग्गे ठीकर भन्न वखाईआ। वसणहारा हस्त कीट, दर मेरा दए सुहाईआ।

सच सुहञ्जणी दस्से प्रीत, पीआ प्रीतम वड वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार जणाए गीत, बिन मन्दिर मसीत आप सुणाईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे इक वर, ख़ाली झोली दए भराईआ। भगत आत्म सेजा नेत्र खोल्ह, नैण नैण तकाईआ। कवण वेला प्रभ वसे कोल, घर साचे होए सहाईआ। शब्द अगम्म वजाए ढोल, अनादी नाद सुणाईआ। बजर कपाटी पड़दा देवे खोल्ह, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। नाम भण्डारा दए अतोल, तुल कदे ना जाईआ। उलटा करे नाभ कौल, झिरना निझर आप झिराईआ। लेखा चुके धरनी धरत धौल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साचा अमृत आत्म रस प्याए इक्को पौहल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक दए वरताईआ। भगत सेजा हो निमाणी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कवण वेला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिले शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दी सुणाए कहाणी, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। अन्तर देवे ठंडा पाणी, अमृत रस प्याईआ। भेव खुल्हाए चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को घर जणाईआ। नाता तुटे चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बन्धन रहे ना राईआ। इक जणाए पद निरबाणी, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नित नित आसा पूर कराईआ।

१०२५ १३

भगत सेजा नेत्र रो, इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मेरे नाल जाए छोह, चरण कँवल आप टिकाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी मेहरवान मेरे जोगा जाए हो, मैं उस दी सेव कमाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर करे लो, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। दुरमति मैल देवे धो, काग हँस रूप वटाईआ। साचा ढोआ देवे ढो, धुर दी वस्त झोली पाईआ। मेरा भेव ना जाणे को, बिहबल हो हो दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मेरा दुखड़ा दए गंवाईआ। भगत सेजा नित नित उठ, हरि चरण ध्यान लगाईआ। सो पुरख निरँजण जाए तुठ, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। एकँकारा अमृत जाम प्याए घुट्ट, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवे भण्डार अतुट, श्री भगवान झोली दए भराईआ। पारब्रह्म कर किरपा मैनूं लए पुछ, ब्रह्म मिले सहिज सुभाईआ। मेरी सुहञ्जणी सोहे रुत्त, पत डाली फुल महकाईआ। मैं दरस करां अबिनाशी अचुत, बिन नैणां नज़री आईआ। अगला लेखा लवां पुच्छ, क्यों बैठा मोहे भुलाईआ। केहड़ी गलों गया रुस्स, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाईआ। घर विच घर बैठों लुक, आपणी माया पड़दा पाईआ। अन्तिम वेला गया ढुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। भगत सेजा मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी तेरा संग, विछड़ कदे ना जाईआ । ठाकर स्वामी दीन दयाल तूं होए कदे ना नंग, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। कर किरपा मेरे अन्तर लँघ, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सुंञी होई सेज पलँघ, बिन पावा चूल तेरा राह तकाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरी इक्को इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, तेरे चरणां सीस निवाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दीनन दया कमाइंदा । निरगुण हो के वेखां आण, सरगुण भेव चुकाइंदा। काया मन्दिर वड़ मकान, दोंह हथ्थीं पड़दा आपे लाहइंदा। दीपक दीआ बाल महान, जोती जोत डगमगाइंदा। बिन अक्खां वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र नैण खुल्हाइंदा। बिन रसना जिह्वा गाए गान, बिन बत्ती दन्द सिफ्त सालाहइंदा । बिन पढ़ियां देवे ज्ञान, बोध अगाधी ज्ञान दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा निरँकारा निरगुण धारा आप जणाइंदा। भगत सेज सुहावांगा। निरवैर हो के आवांगा। मेहरवान आप अख्वावांगा। धुर दा दान झोली पावांगा। शब्द निशान इक वखावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकावांगा। भगत साचे कर परवान, परवानगी इक्को इक जणावांगा। अमृत आत्म पीण खाण, वस्त अमोलक झोली पावांगा। निष्अक्खर दे ज्ञान, अक्खर वंड ना कोए वंडावांगा। चौदां विद्या होए हैरान, चौदां तबकां डेरा ढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१०२६
१३

कर, जन भगतां सेज सुहावांगा। जन भगतां सेज सुहाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। घर घर निरगुण फेरा पाएगा। सोई सुरती आप जगाएगा। अकाल मूर्ती मेल मिलाएगा। नाद तूरती राग सुणाएगा। आसा पूरती कर वखाएगा। रंग गूढ़ती इक चढ़ाएगा। लोकमात उतर ना जाएगा। गुरमुख सेजे बहि के शुकर मनाएगा। कीता कौल मुकर ना जाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक्को दर खुल्हाएगा। भगत दवारे आवांगा। भेव अभेद खुल्हावांगा। देवी देव आप जणावांगा। बण सेवक सेव कमावांगा। बिन रसना जिह्व गीत गोबिन्द अलावांगा। आत्म सेजा वेख निहकेव, निहचल आपणा धाम वडयावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां पन्ध मुकावांगा। जन भगतां पन्ध मुकाएगा। आवण जावण फंद कटाएगा। लख चुरासी रहिण ना पाएगा। जम की फाँसी आप तुड़ाएगा। राए धर्म दर दुरकाएगा। चित्रगुप्त ना लेख वखाएगा। लाड़ी मौत नैण शरमाएगा। पारब्रह्म ब्रह्म इक्को नज़री आएगा। निहकर्मी आपणा कर्म कमाएगा। साची सरन इक दरसाएगा। नेत्र हरन फरन खुल्हाएगा। नाता चरण प्रीती जुड़ाएगा। ज़ात पात ना कोए रखाएगा। अन्दर मार झात, आपणा आसण लाएगा। बंद कवाड़ी खोल्ह ताक, दस्म दवारी कुण्डा आप तुड़ाएगा। पूरा करे भविख्त वाक्, गोबिन्द मेला आप कराएगा। गुर चेला इक्को घर वसाएगा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण वेख वखाएगा। घर आए सज्जण सुहेला, पुरख अबिनाशी फेरा पाएगा। बिन भगतां कोई ना जाणे वेला, लख चुरासी भरम भुलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म सेजा तेरी पूरी आस कराएगा। तेरी पूरी आस करावांगा। जन्म जन्म दी त्रास मिटावांगा। कर प्रकाश मात प्रगटावांगा। शब्द अनादी नाद सुणावांगा। बण हाजी हज्ज करावांगा। मक्का काअबा इक्को दर वखावांगा। हुजरा हक़ नज़री आवांगा। लाशरीक फेर अख्वावांगा। जगत तारीक अन्धेर मिटावांगा। पीर पैगम्बर नाल मिलावांगा। कूड़ा अडम्बर आप मिटावांगा। सच सुअम्बर इक रचावांगा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को घर वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे आपे चढ़, जन भगतां वेख वखावांगा। आत्म सेजे चढ़ांगा। सच दवारे आपे खड़ांगा। आत्म परमात्म ढोला पढ़ांगा। निर्भय हो कदे ना डरांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले सच दवारे खड़ांगा। आत्म सेज सुहावांगा। निरबाण पद दरसावांगा। जगत दुआर हद्द पन्ध मुकावांगा। गीत सुहागी छन्द अलावांगा। अजपा जाप करावांगा। बत्ती दन्द ना कोए हिलावांगा। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआला घर घर विच आप प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सेज सुहञ्जणी इक्को रावांगा। प्रभ सेज सुहञ्जणी रावेगा।

१०२७
१३

कन्त कन्तूहल अख्खावेगा। जन भगतां सेज फूल बरसावेगा। अनमोल सेवा कमाएगा। अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाएगा। साची कुल आप उपजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेज सुहञ्जणी इक वडयाएगा। सेज सुहञ्जणी चढ़या चा, घर आपणे खुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले आ, मेरी आसा रहे ना राईआ। सच सिँघासण डेरा लए ला, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। मेरा मन्दिर दए सुहा, अन्दरे अन्दर कर रुशनाईआ। दीपक दीआ दए जगा, बाती तेल कोए ना पाईआ। साकी जाम दए प्या, मधुर इक्को रस वखाईआ। मेरी पिछली रीती दए मिटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे आपणा वर, घर मेरे फेरा पाईआ। घर मेरे आवे मेरा माही, मैं इक ध्यान लगाया। सच सुहञ्जणी सेज विछाई, आपणा आप आसण डाहया। हो निमाणी सेव कमाई, बलहीण दए दुहाया। नेत्र नैण कज्जल कोए ना पाई, मीढी सीस ना कोए गुंदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे इक वर, घर साचे होए सहाया। श्री भगवान अग्गों हस्स, सच संदेस सुणाइंदा। मैं पन्ध मुकावां नस्स नस्स, अन्तिम राह तकाइंदा। बीस बीसा हो प्रगट, घर घर डेरा लाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे नद्द, छत्ती राग भेव ना आइंदा। पूरब जन्म दी मुक्के हद्द, अगला जन्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त सुहेले दर आपणे सद्द, दर दरवाज़ा इक्को इक वखाइंदा। नव दवारे पार कर हद्द, घर
१०२८ १३ दसवें आसण आप लाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर बज्झ, सच प्रीती इक जणाइंदा। तेरे उत्ते बहिवां सज, रूप रेख रंग ना १०२८ १३
कोए रखाइंदा। तेरा पड़दा लवां कज्ज, नाम दोशाला नाल ल्याइंदा। भगत भगवान दोहां दा इक नगारा जाए वज्ज, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ आप चुकाइंदा। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार किरपा धार गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान लए सद्द, सद्दा आपणा नाम दिवाइंदा। दर्शन करना रज्ज रज्ज, निज नेत्र नैण खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सेजा कर परवान, पुरख अबिनाशी देवे दान, हो मेहरवान दया कमाइंदा। मेहरवान प्रभ ठाकर स्वामी, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी शब्द अगम्म जणाए बाणी, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। धुर दरगाह दी सच निशानी, सचखण्ड निवासी झोली पाईआ। लेखा जाणे शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाम सिफ्त सालाहीआ। निष्अक्खर सब तों वक्खर गुर अवतारां लाहे सत्थर, भेव अभेदा अछल अछेदा अगम्म अथाह बेपरवाह निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, आत्म सेज सुहञ्जणी, जोत जगे इक निरँजणी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण फेरा पाए आप, आपणी दया कमाईआ। भगत भगवान करे मिलाप, विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ। दोवें इक दूजे दा करन जाप, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म नाता बणे साक, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच्चा घाट, पत्तण बैठा इक्को माहीआ। इक्को पतण इक्को घाट, हरि इक्को वेख वखाइंदा। इक्को दाता देवणहारा दात, इक इकल्ला आप वरताइंदा। इक्को वेखणहारा मार झात, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। इक्को पूरी करनहारा ख्वाहिश, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। इक्को मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। इक्को ब्रह्मा विष्न शिव करे दासी दास, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द सेव लगाइंदा। इक्को गुर अवतारां पीर पैगम्बरां निर्मल जोत करे प्रकाश, शब्द अनाद अनादी राग सुणाइंदा। इक्को भगत भगवान वसे सदा पास, आत्म सेजा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत आपणा दर वखाइंदा। भगत सेज रहिणा तैयार, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। श्री भगवान आवे निरगुण धार, रूप रंग ना कोए वखाईआ। रातीं सुत्यां लए उठाल, अन्दर वड़ वड़ आप जगाईआ। पुच्छे आण मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। साची वेख धर्मसाल, काया मन्दिर दए वड्याईआ। दीपक दीआ इक्को बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, रस इक्को इक वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण कँवल दए सरनाईआ। पूरब लेखे लाए घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। अग्गे वसे सदा नाल, निज आत्म डेरा लाईआ। सतिजुग दस्से अवल्लड़ी चाल, पूजा इक्को इक दृढ़ाईआ। लेखे लग्गे काया माटी खाल, पंज तत्त कंचन रूप वटाईआ। त्रैगुण माया होए बेहाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन इक्को रंग रंगाईआ। भगतन सेज रंग चलूल, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण जुग चौकड़ी कदे ना जाए भूल, भुल्ल विच कदे ना आईआ। एकँकारा चुकाए तेरा मूल, लहिणा पूरब झोली पाईआ। परवरदिगार दा सच असूल, असलीयत वेखे थाउँ थाईंआ। मुरीद मुर्शद करे कबूल, बेपरवाह बेनज़ीर नज़रीआ नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सेज इक्को इक वड्याईआ। सच सेज सोभावन्त भगत भगवान जणाइंदा। घर मिले नर नरायण कन्त, निरिच्छत फेरा पाइंदा। चाढ़े रंग इक बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, निवण सो अक्खर इक पढ़ाइंदा। महिमा जणाए आप अगणत, बोध अगाध समझाइंदा। आत्म परमात्म इक्को मंत, गुर शब्दी भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्को लाइंदा। सच

सिँघासण जाए लग्ग, सेज सुहञ्जणी मिले वड्याईआ। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, निरगुण आपणा दरस दिखाईआ। मेल मिलावा उपर शाह रग, नौ दुआर डेरा ढाहीआ। कृपानिधान रखे लज्ज, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच नगारा जाए वज्ज, नौबत नाम शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आत्म सेज तेरा निरगुण जाणे लेख, भगत भगवान मिल मिल लए खेड, खेल आपणी ना किसे जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण जोत नूरी तेज, शब्दी गुर सतिगुर धार आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को इक अख्वाईआ ।

❋ २२ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरबलविन्दर सिँघ दे गृह किरकी पूना ❋

भगत सेज सुहावणी, हरि पाया कन्त भतार। पूरी होई भावनी, भाउ मिटया संसार। मिटी अन्धेरी शामनी, शौह किरपा कीती आण। अग्गे देवे ज़ामनी, सिर हथ्थ रख निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला विच संसार। भगत सुहेला साहिब सतिगुर, सदा सदा वड्याईआ। लेखा जाणे जन्म कर्म पूरब धुर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कर किरपा दीनन जाए बौहड़, जुग जुग फेरा पाईआ। आत्म परमात्म देवे जोड़, जोड़ी इक्को घर वखाईआ।
१०३० पूरी करे भगतन लोड़, आसा मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा हो सहाईआ। १०३०
१३ भगतन आसा पूरी कर, परम पुरख दया कमाइंदा। दर्शन देवे आत्म घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। लेख चुकाए चेतन १३
जड़, जड़ चेतन आपणे विच मिलाइंदा। गहर गम्भीर सतिगुर फड़, फड़ बांहों पार कराइंदा। सोहँ अक्खर जिस जन ल्या पढ़, तिस पार किनारा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, हरिसंगत लगाए आपणे लड़, पल्लू इक्को नाम बंधाइंदा।

❋ २२ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह किरकी पूना ❋

भगत भगवान इक्को राग, इक्को घर वधाईआ। भगत भगवान इक्को नाद, इक्को इक शनवाईआ। भगत भगवान इक्को साज, ताल तलवाड़ा इक अख्वाईआ। भगत भगवान इक्को आवाज़, सोहँ ढोला सदा गाईआ। भगत भगवान इक्को काज, आत्म परमात्म होए कुड़माईआ। भगत भगवान इक्को स्वाद, रस फीके जगत तजाईआ। भगत भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को रंग वखाईआ। भगत भगवान इक्को घर, घर सच्चा इक अख्वाइंदा।

भगत भगवान इक्को वर, नार कन्त रूप वटाइंदा। भगत भगवान इक्को डर, भय भय विच समझाइंदा। भगत भगवान इक्को लड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगवान इक्को धड़, सीस जगदीश ना वंड वंडाइंदा। भगत भगवान इक्को अक्खर लैण पढ़, दूजी विद्या ना कोए अलाइंदा। भगत भगवान इक दूजे नूं वेखण खड़, नैण नैण नैण दरसाइंदा। भगत भगवान इक दूजे दी सरनी जाइण पढ़, अभिमान दोहां विच नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवान भगत इक्को रंग रंगाइंदा। भगवान भगत इक्को डेरा, मन्दिर इक वड्याईआ। भगवान भगत इक्को घेरा, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। भगवान भगत इक्को वेहड़ा, चार दीवार ना कोए वखाईआ। भगत भगवान इक्को बेड़ा, जुग जुग बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। भगत भगवान इक्को खेड़ा, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। भगवान भगत इक्को झेड़ा, इक दूजे नूं कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। भगत भगवान इक्को नबेड़ा, अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान इक्को गुर चेला, चेला गुर रूप जणाईआ। भगत भगवान कलिजुग अन्तिम होए मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रखे आपणा वेला, वेद पुराण कहिण ना पाईआ।

१०३१
१३

❃ २२ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिंघ दे गृह किरकी पूना ❃

सच दरबार शाह सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। एकँकारा बण बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण खेल महान, नूर नूराना नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता हो जवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरवैर आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, बिन नेत्र नैण अक्ख खुलाइंदा। सच दवारा कर परवान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमान, नाम संदेसा इक अलाइंदा। साचे सुत उठ बलवान, शब्दी शब्द जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राणा खेल कराइंदा। शब्दी सुत उठ जाग, सचखण्ड निवासी आप जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ सति कराए याद, भेव अभेद खुलाईआ। निरगुण वजाए निराकार नाद, धुन आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा उठाईआ। सुत दुलारा खोल अक्ख, प्रभ चरण ध्यान लगाइंदा। सच सिँघासण हो प्रतख, अबिनाशी करता आसण लाइंदा। बण निमाणा चरणीं गया ढठ, मस्तक टिक्का सीस लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे अलख जगाइंदा। साचे सुत रहि तैयार, सति सतिवादी आप जणाईआ। शब्दी शब्द तेरा नगार, निरगुण

दाता आप वजाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साची दस्से तैनूं कार, करनी करता हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक द्रिड़ाईआ। सुत दुलारे कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्नूं दस्स इक फ़रमान, अबिनाशी करता आप अल्हाइंदा। दाता दानी दो जहान, निरवैर आपणी कल धराइंदा। नेत्र खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। शब्द दुलारा ल्या उठा, रहबर आप अख्वाईआ। विष्नूं विश्व दए जगा, सच संदेस सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ रिहा फ़रमा, धुर संदेसा इक घलाईआ। चरण दवारे जाणा आ, देवणहारा इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा जणाईआ। विष्नूं कहे सच दस्स, दर तेरे ध्यान लगाईआ। कवण वेला आवां नस्स, प्रभ सरन मिले सरनाईआ। सच दवारे जावां ढठ्ठ, मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। शब्द कहे सुण सच कहाणी, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। पुरख अकाल दी अगम्म बाणी, बोध अगाध द्रिड़ाइंदा। सच संदेसा दो जहानी, निरगुण दाता आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। आपणी किरपा आपे धार, वेखणहारा चाईं चाईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। शंकर वेख आपणी ज़ात, अजाति आप समझाइंदा। जिस ने दिती तैनूं दात, सो साहिब हुक्म सुणाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण बंधौणा नात, नाता बिधाता इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक जणाइंदा। सच संदेसा त्रैगुण माया, त्रैभवण धनी आप जणाईआ। आदि पुरख आदि बणया जो दाई दाया, बण सेवक साची सेव कमाईआ। जिस दी सब दे उपर छाया, सो शहिनशाह हुक्म सुणाईआ। सच संदेसा इक घलाया, धुर फ़रमाना आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पड़दा सब दा रिहा उठाईआ। सच संदेसा पंज तत्त, तत्तवेता आप जणाइंदा। देवणहारा साची मति, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाइंदा। सच दवारे आउणा नठ्ठ, दर इक्को इक समझाइंदा। वसणहारा घट घट, पड़दा आपे लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा श्री भगवाना, एका इक जणाईआ। ब्रह्मा सुत उठे नादाना, नेत्र नैण खुल्हाईआ। सच संदेस दए ज्ञाना, मंत्र इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप जणाईआ।

१०३२
१३

साची करनी दस्से मेहरवान, भेव अभेद खुल्हाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार करो ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त कुमार रिहा जणाईआ। सन्त कुमार कहे दोए जोड़, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। दर तेरे ते आवां दौड़, पिछला माण गंवाईआ। निरगुण निरवैर जाणा बौहड़, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। सन्त कुमार बराह दस्स, इक्को इक जणाईआ। बराह यगै पुरुष मेल मिलावा हस्स हस्स, श्री भगवान रिहा दृढ़ाईआ। यगै पुरुष हाव गरीव उठाउणा नठ्ठ नठ्ठ, वेला अन्त रिहा आईआ। हाव गरीव नरायण मिलणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक जणाईआ। सच स्नेहुड़ा कपल मुन, बेपरवाह आप जणाइंदा। बिन कन्नां लैणां सुण, बिन रसना आप सुणाइंदा। दत्ता त्रै लहिणा देण रिखव देव नाल मिलाइंदा। प्रिथू दस्से साचे कन्न, मत्तस आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा स्नेहुड़ा आप जणाइंदा। सच स्नेहुड़ा कच्छप धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। मोहणी रहिणा ख़बरदार, मन मोहण रिहा समझाईआ। धनंतर तेरी पावे सार, मंत्र आपणा नाम दृढ़ाईआ। हँसा तेरा बोल जैकार, बेअन्त वेख वखाईआ। नर सिँघ उठ नैण उग्घाड़,

१०३३ १३ नर नरायण रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बल बावन रिहा हिलाईआ। १०३३ १३

बल बावन उठ हो तैयार, सतिगुर साचा आप जणाइंदा। नर सिँघ नाल कर प्यार, हरी हरि तेरी गंढु पवाइंदा। नरायण खोल्हणहार कवाड़, परसराम पड़दा लाहइंदा। वेखणहारा दसरथ बेटा राम अवतार, रमईया इक्को हुक्म जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप समझाइंदा। धुर दी खेल वेद व्यास, पुराण पुराणी आप जणाईआ। बारां अक्षरी जिस निवास, निहचल बैठा आसण लाईआ। करया खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल सोभा पाईआ। दो जहानां पावे रास, निरगुण सरगुण रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा मुकन्द मनोहर लखमी नरायण, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। वेखणहारा साचे नैण, नैण इक्को इक खुल्हाइंदा। साचा ढोला आया कहिण, अनबोलत आप जणाइंदा। चुकावणहारा लहिण देण, त्रिलोकी नाथ आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक जणाइंदा। साचा हुक्म शाह सुल्तान, इक्को इक जणाईआ। भुल्ल ना जाए कोई अणजाण, बेपरवाह रिहा दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, शहिनशाह इक्को नजरी आईआ। लेखा जाणे विच जहान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। बुद्धी पावणहारा सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, अवतार तेई रिहा जगाईआ । अवतार तेई खोलो अक्ख, हरि आख़र आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस रखी तुहाढ्ढी पत, सो पतिपरमेश्वर खेल वखाइंदा। जिस सरगुण नाल बंधाया नत, निरगुण आपणी धार जणाइंदा। जिस धीरज दित्ता सति, सन्तोख आपणा इक्को इक समझाइंदा। निर्मल जोत कर प्रगट, नूर नुराना नूर रुशनाइंदा। जिस चौदां लोक वखाया हट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, एकँकारा आप जणाईआ। चतुर्भुज करे अदेसा, आदि शक्ति सीस झुकाईआ। जिस दा कोई ना जाणे लेखा, बेअन्त बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी खोले भेता, बेअन्त बेअन्त आपणी कार कमाईआ। नित नवित्त करे हेता, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। सारे पिछला करो चेता, प्रभ चेतन रिहा कराईआ। पंच तत्त काया झूठा खेता, लोकमात अन्त रहिण ना पाईआ। राम राम दा इक्को बेटा, काहन काहन दए वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या नौजवाना, इक्को इक जणाइंदा। धुर संदेसा सच परवाना, बेपरवाह आप घलाइंदा। जो देंदा रिहा धुरदरगाही दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सो साहिब मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। लेखा
१०३४ जाण दो जहानां, लोआँ पुरीआँ ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १०३४
१३ साचा वर, सच स्नेहुड़ा इक जणाइंदा। सच शब्द विष्न ब्रह्मा शिव धार, शंकर आप जणाईआ। सच तख़्त निवासी साचे १३
तख़्त बैठ सच्ची सरकार वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस लेखा दित्ता वेद चार, चार वरन कर पढ़ाईआ। जिस विष्न भरया भण्डार, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जिस शंकर दिती धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। जटा जूट पाए सार, त्रिशूल आपणे नाम वड्याईआ। त्रैगुण माया कर शृंगार पंज तत्त करी कुड़माईआ। लख चुरासी हो उज्यार, चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा नाम जणाईआ। तेई अवतार कर ख़बरदार, ख़बर आपणी आप जणाईआ। लहिणा देणा चुक्के सच दरबार, धुर दरबारी भुल्ल कदे ना जाईआ। वेखणहारा जुग चौकड़ी चार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहुड़ा इक घलाईआ। सच स्नेहुड़ा सुणया कन्न, इक ध्यान लगाया। इक दूजे दा निकले जन, भरम भुलेखा भउ चुकाया। जिस ने दित्ता पंज तत्त तन, सो साहिब वेखण आया। जेहड़ा आदि बणया जननी जन, धन्न धन्न जणेदी माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा मंगे थाउँ थाया। अवतार तेई इक दूजे नूं रहे दस्स, आपणा हाल सुणाईआ। लेखा मंगे पुरख समरथ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। चारों कुण्ट कोई ना सके नट्ठ, जिध्धर वेखो नज़री आईआ।

त्रिलोकी पिच्छे गए छड्ड, अग्गे इक्को इक बैठा बेपरवाहीआ। जिस दा गाया नाम जणाई पूजा पाठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा वड वड्याईआ। हरि सच्चा बेपरवाह, बेपरवाही खेल कराइंदा। साचे भगत लए उठा, ध्रू प्रहलाद पर्दा लाहइंदा। बल उंगली नाल लए लगा, अमरीक आपणा राह जणाइंदा। जनक लेखा सच समझा, भेद अभेद जणाइंदा। बिदर सुदामा जै देव लए जगा, जग जीवण दाता आप उठाइंदा। रविदास चुमारा संग रला, कबीर जुलाहा आपणे मन्दिर आप वसाइंदा। साची करनी दए वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्म इक्को इक जणाइंदा। कबीर सुणया हरि का राग, कूक कूक सुणाईआ। भगतो सुणो अगम्म आवाज़, बेपरवाह लगाईआ। जिस ने वखाया आपणा स्वांग, सो स्वांगी स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला सहिज सुभाईआ। मेल मिलावा इक्को इक, एक एक जणाइंदा। शब्द अगम्मी रखो टेक, दूजा हुक्म ना कोए मनाइंदा। जिस ने लोकमात दित्ता भेज सो आपणा खेल खलाइंदा। जिस दा जोती नूर तेज, नूर नुराना पड़दा लाहइंदा। वेखणहारा साची सेज, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। सच स्नेहुड़ा परवरदिगार, एका एक जणाईआ। मूसा हो

१०३५
१३

ख़बरदार, बेपरवाह रिहा समझाईआ। जिस दा जलवा तक्क डिगा मूँह दे भार, कोहतूर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा अल्लाईआ। सुण ईसा हज़रत आप जणाए, सच सच समझाईआ। जिस नूं मन्ने नूर खुदाए, नूर नूराना बेपरवाहीआ। पिता पूत जिस वडयाए, सो वड्डा दए वड्याईआ। लेखा अन्तिम दए चुकाए, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। दरगाह साची लए मिलाए, मुकामे हक़ हक़ रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक संदेसा रिहा जणाईआ। सच संदेसा मुहम्मद मीत, मेहरवान जणाइंदा। जिस जणाई आपणी रीत, कलमा नबी पढ़ाइंदा। सो साहिब निशाना दस्से ठीक, धुर दरगाही आप अल्लाइंदा। अन्तिम नेड़े आई तरीक, चौदां सदीआं पन्ध मुकाइंदा। चौदां तबक वेखे लाशरीक, वाहद आपणा फेरा पाइंदा। उम्मत उम्मती वेखे नीत, नीतीवान वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप अल्लाइंदा। धुर फ़रमाना अलमीन, नबी रसूलां आप जणाईआ। धुरदरगाही करे तलकीन, तालब तुलबा लए उठाईआ। दर दे बरदे बणो मस्कीन, मसला इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद्दा देवे थाउँ थाईंआ। सद्दा देवे निरगुण जोत, नानक धार धार जणाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। शब्द अगम्म लगाए चोट, नगारा

इक्को इक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। धुर फ़रमाना नौजवान, इक्को इक जणाइंदा। नानक निरगुण कर परवान, नानक सरगुण आप समझाइंदा। दोहां वचोला मेहरवान, नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जाता खेल महान, बेपरवाह आप कराइंदा। जिस ने दित्ता सति नाम, मंत्र आपणा इक दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक ज्ञान, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कहाणी आप समझाइंदा। सच कहाणी सुण निरँकार, नानक खुशी मनाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ सेवक सेवादार, बण चाकर सेव कमाईआ। तेरा लेखा विच दरबार, सच सच तेरी वड्याईआ। दाता दानी देवणहार भण्डार, अतोट अतुट वरताईआ। तेरी महिमां जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान तेरा जस गाईआ। गुर अवतार दर मंगण बण भिखार, आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ चलां सद रज़ाईआ। सच संदेसा नानक निरगुण, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। श्री भगवान मेटणहारा चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए रखाइंदा। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिंद, भेव अभेद आप जणाइंदा। शब्द अनादी गोबिन्द बिंद, सुत दुलारा
१०३६ इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द वड्याइंदा। शब्द अगम्म गोबिन्द रंग, १०३६
१३ श्री भगवान आप जणाईआ। बेपरवाह वजाए मृदंग, मृदंग इक्को इक दरसाईआ। एथे ओथे दो जहान आपे लँघ, पर्दा १३
उहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द नैण अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द गोबिन्द खोल्ह नैण, निरगुण दाता आप समझाइंदा। मैं मन्नया तेरा कहिण, तेरी कीती भुल्ल ना जाइंदा। निरगुण हो के बणया साक सज्जण सैण, सरगुण रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा देवे घर घर, सुहञ्जणा सच्चा थाँ आपे खोज खुजाइंदा। गोबिन्द कहे दस्स भगवान, कवण संदेसा दएं सुणाईआ। मैं तेरा सुत नादान, बालक बाला रूप वटाईआ। पुरख अकाल हो मेहरवान देणा दान, दाते दानी तेरी वड्याईआ। कवण वेला मेला करें विच जहान, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। मैं तीर चिला छड्डुया कमान, पंज तत्त देह ना कोए रखाईआ। शब्द सुत हो नौजवान, तेरा ध्यान लगाईआ। तूं यारड़े सत्थर करया परवान, मैं सूलां सेज हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर आवां चाईं चाईंआ। साचा दर दस्से भगवाना, कलिजुग अन्त अन्त जणाइंदा। पहली चेत्र दिवस महाना, बीस बीसा वेख वखाइंदा। सच दरबार लगाए नौजवाना, पुरख अबिनाशी आसण

१०३७
१३

लाइंदा। देवे हुक्म धुर फ़रमाना, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दर आए होए निमाणा, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। त्रैगुण माया अन्त पछताणा, पसचाताप ना कोए मिटाइंदा। पंज तत्त होए हैराना, हरि का भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची थित आप दृढ़ाइंदा। पहली चेत्र तेई अवतार औणगे। दर बहि के सीस झुकौणगे। दोए जोड़ वास्ता पौणगे। चार जुग दा लेखा कढु वखौणगे। साचा ढोला इक्को गौणगे। राम राम विच समौणगे। कृष्न कृष्न विच रलौणगे। जोत जोत विच मिलौणगे। आपणे अन्तर विच शरमौणगे। चोट चोट विच डंक वजौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, दर बंक इक वखौणगे। पीर पैगम्बर आवणगे। बेपरवाह ढोला गावणगे। बण बरदे सीस झुकावणगे। सजदा कर कर शुकर मनावणगे। कलमा इक्को इक गावणगे। आपणा लेखा प्रभ अग्गे कढु वखावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल वेख वखावणगे। भगत अठारां औणगे। प्रभ नेत्र दर्शन पौणगे। चरण कँवल सीस टिकौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिख्या इक दरसौणगे। नानक गोबिन्द दस दस धारी आवेगा। प्रभ आपणा मेल मिलावेगा। जोती नूर चन्द रुशनावेगा। गीत सुहागी छन्द सुणावेगा। अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे विछड़े घर साचे मेल मिलावेगा। कलिजुग अन्तिम मेल मिलावांगा। पहली चेत्र रुत्त सुहावांगा। बीस बीसा नींह धरावांगा। जगत जगदीशा फेर अख्वावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाम हदीसा इक पढ़ावांगा। ख़ाली खीसा सब दा आप करावांगा। पिछली रीता लोक मात मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। चार वेद बोलणगे। पुराण अठारां तोलणगे। शास्त्र सिमरत आपणा भेव वरोलणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहान दर इक्को सच्चा खोलृणगे। अठारां ध्याए गीता गुण गाएगी। प्रभ इक्को वेख वखाएगी। अञ्जील कुरान दर्शन पाएगी। नेत्र नैण ना कोए दसाएगी। अल्ला राणी मुख नक़ाब चुकाएगी। पर्दानशीं बेपर्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण जोत इक्को वेस वटाएगी। गुर दस उठणगे। प्रभ साहिब कोलों पुछणगे। सचखण्ड दुआर ना लुकणगे। शेर वांगूं बुक्कणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दोए दोए जोड़ सर्ब झुकणगे। सच संदेसा दो जहान, दोए दोए धार आप जणाईआ। करे खेल आप भगवान, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। प्रगट हो विच जहान, निहकलंक नाउँ रखाईआ। आदि पुरख जिस दित्ता दान, अन्त आपे वेखण आईआ। जुग चौकड़ी

कर पहचान, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सच स्नेहुड़ा इक्को इक उपजाईआ। सच स्नेहुड़ा शब्द अमोला, धुरदरगाही आप उपजाइंदा। सचखण्ड दवारे जिस ने तोल तोला, सो लोकमात वेख वखाइंदा। जो जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों रखदा रिहा उहला, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। नाम निधान श्री भगवान सुणाउदा रिहा सोहला, कोटन कोटि नाम धराइंदा। सरगुण हो के बदलदा रिहा चोला, पंज तत्त काया जगत हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जो दीन मज़्हब ज़ात पात पाउदा रिहा रौला, वरन गोत वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाइंदा। साची धार जो रिहा वंड, वंडणहारा बेपरवाहीआ। जिस ने रचे कोट ब्रह्मण्ड, मण्डल आपणी रास जणाईआ। जिस नूर दित्ता सूरज चन्द, किरन किरन जोत रुशनाईआ। जिस लख चुरासी बेड़ा बन्न्ह, जग सागर दित्ता तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सो निरगुण दाता हो मेहरवान, निरवैर खेल कराईआ। प्रगट हो विच जहान, पिछला लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, माया ममता दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार सच निरँकार इक्को इक लगाईआ। सच

१०३८ १३ दरबार लग्गे अन्त, श्री भगवान आप लगाइंदा। नाम जणाए इक्को मंत, मंत्र आपणा नाम समझाइंदा। लख चुरासी नज़री १०३८ १३

आए साचा कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक समझाइंदा। सच दवारा लोकमात, मेहरवान लगाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे दात, सतिजुग धार चलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निरगुण चन्द करे रुशनाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक खुल्हाईआ। सच दुआर इक्को खोल्हणा, बेअन्त आप जणाइंदा। नाम ढोला इक्को बोलणा, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। साचा तोल इक्को तोलणा, दो जहान कंडा हथ्थ ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी आप वरोलणा, भगत भगवान बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक वखाइंदा। सच दरबारा इक वखावेगा। जिस दर बहि के हुक्म चलावेगा। नव नौ चार पन्ध मुकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को माण जणावेगा। जुग चौकड़ी विछड़यां मेल मिलावेगा। मुहम्मद गोबिन्द अग्गे झोली डाहवेगा। नानक निरगुण वस्त वरतावेगा। दस्त दस्त नाल मिलावेगा। कीट हस्त नज़र कोए ना आवेगा। हुक्म इक्को सख्त सुणावेगा। कलिजुग वेला वक्त सर्ब समझावेगा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया

होवे ग़रक, ग़रक आप करावेगा। कर के ग़रक, शौंह दरयाए रुढ़ावेगा। लेखे विच ना रहे फ़र्क, गोबिन्द फ़ुरना इक जणावेगा। पिछली कीती करे तरक, तुरत आपणा हुक्म मनावेगा। सचखण्ड विच्चों आया परत प्रतिनिध इक अख्वावेगा। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता दुःख ना कोए जणावेगा। अद्धविचकार ना जावे अटक, दो जहानां चरणां हेठ दबावेगा। कलिजुग कूड़ कूड़यार देवे झटक, मूँह दे भार सुटावेगा। जन भगतां सवाउणा हो बेखटक, सिर आपणा हथ्थ रखावेगा। लख चुरासी धर्म दवारे रही लटक, फाँसी इक्को वार लटकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा सर्ब चुकावेगा। सच दरबार लगेगा। साहिब सुल्तान सूरा फबेगा। दीपक जोती इक्को जगेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता निरवैर पुरख अजूनी रहित इक्को मघेगा। अजूनी रहित प्रभ खेल अवल्ला, अक्ल कलधारी आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम हो अछल अछल्ला, वल छल भेव ना जाणे कोई राईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ला, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। धुर संदेस नाम घल्ला, सच सच करे पढ़ाईआ। नूर इलाही नूर अल्ला, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। वसणहारा मुकामे हक़ सच महल्ला, महिफ़ल आपणे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी प्रभ आप कमावेगा। दूजा संग ना कोए
१०३६ रलावेगा। नाम मृदंग इक सुणावेगा। दो जहानां लँघ, आपणा डंक वजावेगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया ढाह कंध, सतिजुग १०३६
१३ साचा राह वखावेगा। सृष्ट सबाई इक्को छन्द, सोहँ ढोला आप पढ़ावेगा। जन भगतां मुक्के पन्ध, पुरख अबिनाशी मेल १३
मिलावेगा। सतिजुग साचा दे रस, मदिरा मास रसना कोई ना लावेगा। अमृत आत्म जाम प्यावेगा। सुरत सवाणी कोई ना रहे रंड, हरि कन्त इक्को नज़री आवेगा। नाता तुटे बत्ती दन्द, अजपा जाप करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगावेगा। साचा मार्ग इक्को दस्सेगा। प्रभ हर हिरदे विच वसेगा। मुख मोड़ कदे ना नस्सेगा। निर्धन हो के भगतां चरणी ढठ्ठेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धन्ने लहिणा वट्टे चुकेगा। लहिणा वट्टे आप चुकाएगा। गुरमुख धन्ना रूप वटाएगा। जन भगतां राग सुणाएगा। नेत्र अन्न्हा पड़दा लाहेगा। बिन सूरज चन्नां चन्द चमकाएगा। सोहँ छन्दा इक पढ़ाएगा। बंदा बिन बंदगीयों पार कराएगा। नाम रंदा इक फिराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाएगा। साचा खेल खलावेगा। चार वरन समझावेगा। एका नाम दृढ़ावेगा। एका राम मिलावेगा। एका काहन समझावेगा। एका जाम प्यावेगा। एका इस्लाम चलावेगा। एका अमाम नज़री आवेगा। एका पैग़ाम पढ़ावेगा। एका नज़ाम बणावेगा। एका निशान झुलावेगा। एका

हुक्मरान अख्वावेगा। एका दान वरतावेगा। एका माण धरावेगा। एका भगवान आपणा राह वखावेगा। एका मन्दिर शिवदुआला मठ्ठ समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप करावेगा। साची करनी आप करावेगा। धुर दा ढोला राग अलावेगा। कलिजुग चोला नज़र कोई ना आवेगा। सतिजुग होला आप खल्हावेगा। मौला इक्को नज़री आवेगा। धरनी धरत धौला, हौला भार करावेगा। गोबिन्द कीता कौला, तोड़ निभावेगा। वेद व्यासा पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चा टिल्ला पर्बत वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट नज़री आवेगा। चार कुण्ट अमाम अख्वाएगा। कलमा नबी इक जणाएगा। सजदा सीस इक वखाएगा। जगदीश आपणी कल धराएगा। हदीस आपणे नाम पढ़ाएगा। लाशरीक फेरा पाएगा। हकीकत हक़ खोज खुजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम इक्को इक वडयाएगा। इक्को नाम सदा जुग चार, जुग जुग वेस वटाईआ। इक्को नाम थिर घर दुआर, शब्दी गुर प्रगटाईआ। इक्को नाम सुन अगम्म करे पार, पड़दा आप चुकाईआ। इक्को नाम विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, सच संदेसा इक जणाईआ। इक्को नाम करोड़ तेतीसा दए आधार, सुरप्त इन्द वेख वखाईआ। इक्को नाम काया पंज तत्त करे शृंगार, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। एका नाम शब्द धुनकार, घट घट रागी राग सुणाईआ। एका नाम लख चुरासी कर पसार, काया मन्दिर बंद रखाईआ। एका नाम वेद चार, चार चार सिफ्त सालाहीआ। एका नाम धार अवतार, तत्तव तत्त करे पढ़ाईआ। एको नाम कर पसार, पसर पसारी वेख वखाईआ। एको नाम भगत आधार, भगवन इक्को इक जणाईआ। इक्को नाम सन्त करे प्यार, सज्जण साचे वेख वखाईआ। इक्को नाम गुरमुखां खोल्ह किवाड़, बंद हाटी दए जणाईआ। इक्को नाम गुरसिखां करे प्यार, निवण सो प्रीती इक जणाईआ। इक्को नाम पीर पैगम्बर करे उज्यार, उजरत मूल ना लागे राईआ। इक्को नाम मुल्ला शेख़ मसायक करे शृंगार, मेहरवान दया कमाईआ। इक्को नाम गुर गुर खेल करे संसार, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। इक्को नाम अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर करे पढ़ाईआ। इक्को नाम खाणी बाणी हो उज्यार, चार चार रंग रंगाईआ। इक्को नाम दिसे जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। इक्को नाम वखाए सच दरबार, दर दरवाज़ा इक्को नाम खुल्हाईआ। इक्को नाम वंडण वंडे विच संसार, वरन बरन गोत दए जणाईआ। इक्को नाम करे पार, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। इक्को नाम सर्ब प्यार, सांझा यार इक अख्वाईआ। इक्को नाम तलबगार, आदि जुगादि ध्यान लगाईआ। इक्को नाम कातब बण के बणे लिखार, देवे वड्याई कलम शाहीआ। इक्को नाम समुंद सागर, बन्ने धार, इक्को नाम जंगल जूह उजाड़ पहाड़ करे रुशनाईआ। इक्को नाम खेल करे सूरज चन्न सतार, मण्डल मण्डप

करे रुशनाईआ। इक्को नाम लेखा जाण पृथमी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। इक्को नाम गोपी काहन पाए रास, वेस अनेक धराईआ। इक्को नाम वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्को नाम पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। इक्को नाम आदि अन्त पवण स्वास, उणंजा पवण छत्र झुलाईआ। इक्को नाम सुणाए धुर दी बात, जुग जुग बाणी इक प्रगटाईआ। इक्को नाम डूँग्घा खात, हथ्थ किसे ना आईआ। इक्को नाम देवणहार नजात, एथे ओथे वेख वखाईआ। इक्को नाम नाम पारजात, पारस कंचन लोहा रूप वटाईआ। इक्को नाम साख्यात, आदि जुगादि कोई ना सके छुपाईआ। इक्को नाम सब दा पिता मात, पुत्त पोतरे गुर अवतार पीर पैगम्बर गोद विच उठाईआ। इक्को नाम आबहयात, अमृत इक्को नाम वखाईआ। एका नाम कायनात, निरगुण आपणा आप जणाईआ। सो नाम साहिब सच्चे दी साची दात, सो पुरख निरँजण सार शब्द आपणा नाम जणाईआ। कलिजुग अन्तिम लै के आया आपणे साथ, मेहरवान दया कमाईआ। मेहर नज़र कर जिस वल लए झाक, तिस पड़दा दए खुल्हाईआ। एथे ओथे आवण जावण दो जहानां मुक्के वाट, लख चुरासी पन्ध रहिण ना पाईआ। चरण कँवल उपर धवल बन्ने नात, सचखण्ड मिले सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। देवे वड्याई प्रभ जू भगत, भगतन मीता आप अख्वाइंदा। वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत विच जगत, युगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। फोलणहारा हड्ड मास नाड़ी बूँद रक्त, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आदि अन्त श्री भगवन्त साचा कन्त आपणे हथ्थ रखे वक्त, वार थित ना किसे समझाइंदा। नव खण्ड पृथमी सत्त दीप शब्द अगम्मी चाढ़े कटक, बेपरवाह आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणी खेल वखाइंदा। साची खेल करे सचखण्ड, सचखण्ड लोकमात प्रगटाईआ। लेखा जाण जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लहिणा रिहा मुकाईआ। भगत भगवान देवे इक अनन्द, अनन्द आत्म रस चखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी जणाए छन्द, सोहला ढोला इक्को इक गाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरसिख तेरी नंगी ना होए कंड, प्रभ आपणा हथ्थ सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम हरिजन वेखे हर घट थाईंआ। हर घट थाईं खोजे आप, खोजत खोजत वेख वखाइंदा। भगत सुहेला पिता बाप, पूत सपूत आप जगाइंदा। शब्द अगम्म बंधाए नात, बिधाता निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म बणाए सच्चा साक, सज्जण इक्को नज़री आइंदा। कर किरपा खोल्हे ताक, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। पूरी करे आस, पूरी आसा आप कराइंदा। गृह मन्दिर कर के वास, साची सेज सुहाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, दीआ बाती

इक जगाइंदा। प्रगट हो प्रभ साख्यात, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, दवारा इक्को इक वड्याइंदा।

❇ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह किरकी पूना ❇

गुरमुख झुग्गी सब तों चंगी, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जिथ्थे मिले वस्त अनमंगी, भगत भगवान इक दूजे दी झोली पाईआ । जिथ्थे जन्म जन्म दी मिटे तंगी, दु:ख दर्द रहे ना राईआ। जिथ्थे साहिब सतिगुर बणे संगी, बण सेवक सेव कमाईआ। जिथ्थे नेत्र नैण अक्ख ना रहे अन्धी, प्रतख रूप दरसाईआ। जिथ्थे नाता तुट्टे ख़ानाबंदी, बन्धन दूई दए मिटाईआ। जिथ्थे पार किनारा दिसे कन्ढी, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। जिथ्थे वासना चुक्के मंदी, सुगंधी इक्को नाम दरसाईआ। जिथ्थे राग सुणे बिन राग तन्दी, सतार नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस झुग्गी देवे वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरी सोहणी कंध, इट्टां पत्थर मिले वड्याईआ। जिस अन्दर साहिब आया लँघ, हरिसंगत दए वड्याईआ। दो जहान ना मिले अनन्द, जो मेरे घर विच रिहा वखाईआ। मैं सुलखणी भागां वाली गावां छन्द, सच्चा ढोला इक्को माहीआ। मेरी कंकर कंकर आपणे नाल गंढ, गंढणहार स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिध्धर वेखां पवे ठंड, तत्ती वा ना लागे राईआ। दूर दुराडे तरसण सूरज चन्द, तेरी सरन ना मिले वड्याईआ। धन्न भाग तूं कट के आएयों आपणा पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ । दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शंश इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झुग्गी देवे माण वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरी सोहणी छत्त, गगन मण्डल नैण शरमाईआ। जिस अन्दर पुरख अकाल रिहा वस, निरगुण आपणा आसण लाईआ। मैं कोझी कमली रही हस्स, प्रभ आया बेपरवाहीआ। मैं दो जहानां रही दस्स, वेखो घर ग़रीबां बैठा सत्थर विछाईआ। अमृत आत्म देवे रस, सच अमृत इक चुआईआ । जिस दा गुर अवतार गाउँदे आए जस, सो गुरसिखां ग़रीब निमाणयां ढोला गाईआ। ख़ाली हथ्थीं हो गया वस, आप आपणा माण तजाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर गया फस, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सच्ची रुत्त सुहाईआ। झुग्गी कहे उठ भिन्नड़ी रैण, सच दयां दृढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया मेरा साक सज्जण सैण, घर चल के आया माहीआ। जन भगतां चुकावे लहिण देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। मेरी रसना कुछ ना सके कहिण, कहिण जोग ना मेरी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। भिन्नड़ीए

रैणे खोल्ह अक्ख, झुग्गी उठ उठ आप जणाइन्दी। प्रगट होया प्रतख, सच सच तैनूं जणाइन्दी। जिन रखी मेरी पत्त, परमेश्वर इक्को इक मनाइंदी। साहिब दाता पुरख समरथ, ढह चरणां सीस निवाइन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कुली आपणा शुकर मनाइंदी। झुग्गी कहे मैनूं आवे हासा, प्रभ किस बिध फेरा पाईआ। आदि जुगादि जुग जुग वेखणहारा खेल तमासा, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। होई हैरान कलिजुग अन्तिम जन भगतां देण आया भरवासा, प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मेरे सोभा पाईआ। गृह मेरा होए सुहञ्जणा, झुग्गी घर आपणे खुशी मनाइंदी। प्रभ आया आदि निरँजणा, जिस दा गीत सृष्ट सबाई गाइन्दी। दुःख कटे दर्द दुःख भय भंजना, हरिसंगत शुकर मनाइंदी। नेत्र नाम पाए अंजना, कलिजुग अन्धेरी रैण शरमाइन्दी। चरण धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल धवाइन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर वेख खुशी मनाइंदी। झुग्गी कहे प्रभ देवे झलक, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। मैं परत ना सकी पलक, नैण नैण ना कोए उठाईआ। ठंडी ठार होई करके दरस, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। गुरमुखां बुझाई प्यास कर तरस, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आया दर्द वंडाईआ। झुग्गी कहे मेरा वेख रंग, श्री
१०४३ भगवान खुशी मनाईआ। मेरे घर हरि भगतां बणया संग, संगत वज्जी वधाईआ। बिन ताल तलवाड़े आए अनन्द, अनन्द १०४३
१३ इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। १३

तितर बणया उह मलाह, जिस बाज़ कोलों दित्ता तुड़ाईआ। अन्तिम वेले मंगी पनाह, गुर गोबिन्द वल ध्यान लगाईआ। शाह पातशाह सच्चे शहिनशाह, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। पिछले गुनाह दी दिती सज़ा, अग्गे बेड़ा किवें चलाईआ। हस के किहा बेपरवाह, अचरज खेल वखाईआ। पंखीयों माणस देह दए वटा, आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द चोला आए बदला, शब्दी रूप धराईआ। दक्खण दिशा देस वसा, दहि दिशा खोज खुजाईआ। दर तेरे आवे बेपरवाह, आपणा फेरा पाईआ। हरिसंगत बेड़ा दए वखा, बिन चप्पू जगत चलाईआ। कन्ढी डेरा लवे ला, पतण मिले सच्चा माहीआ। सज्जा चरण विच लए टिक्का, खब्बा अद्धा फेर उठाईआ। पिच्छों अग्गे आसण लए ला, सच सेज सुहाईआ। तिन्न वेर तेरे वल नेत्र नैण वेखे उठा, अगला पिछला जन्म लेखे लाईआ। जिस वेले कन्ढी लग्गे आ, पार किनारा इक दरसाईआ। हिरदे अन्दर चोट लगा, सुरती सुरत भवाईआ। छड्ड बेड़ी चरणी डिगे आ, दोए जोड़ पए सरनाईआ। एसे कारन धुर दी माया हरिसंगत

हथ्थ ल्यांदी फड़ा, पंचम वंड वंडाईआ। पिच्छे पुछदे रहे दस्सया ना राह, वेले सिर दिती वरताईआ। चार रुपयीए चार जुग दा बख्श गुनाह, चौथे जन्म लेखा मूल चुकाईआ। किरपा कर सच्चा शहिनशाह, आवण जावण दए मुकाईआ। नौ साल बत्ती दिन होर काया चोला लए हंढ्ढा, फिर लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन करनीयों किसे थाँ ना आवे जाईआ।

पिछले गुरू दा चुक्का झेड़ा, घर विच रहिण ना पाईआ। साहिब सतिगुर दा वसे खेड़ा, निरगुण आप वसाईआ। वढ्डयां छोटयाँ बन्ने बेड़ा, बिरध बालां लए तराईआ। अग्गे ना करे हेरा फेरा, देवे माण वड्याईआ। जगत दुःख जो पाया घेरा, सुख विच बदलाईआ। किरपा निधान करे मेहरां, मेहर नज़र उठाईआ। बत्ती साल जो रख्या डेरा, बत्तीवें साल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुश्त उत्ते रखे हथ्थ, अंगुशत नाल देवे दब्ब, कूड़ कूड़यार मेटे आप, सब्बब आपणा इक जणाईआ। दुःख लथ्थे उपजे सुख, सुख दुःख नाल वटाइंदा। उज्जल करे मात मुख, मुख मुख सिफ्त सालाहइंदा। सफ़ल करे मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाइंदा। आप आपणी गोदी चुक्क, रोग

सोग गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा विच्चों कढ्ढे कुट्ट, अग्गे आपणे घर वसाइंदा।
१०४४ १३
नाम बाज़ शब्द उडारी, गोबिन्द रिहा उडाईआ। निरगुण जोत नूर निरँकारी, पुरख अकाल वड्याईआ। साचे घोड़े शाहसवारी, शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। सोलां कलीआं करे श्रृंगारी, सोलां इच्छया पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ दए दरसाईआ। साचा बाज़ चुगे चोग, प्रेम रस इक्को रखाइंदा। मार उडारी गुरमुखां अन्दरों कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। नाम अगम्म वजाए चोट, नगारा गोबिन्द हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ इक दरसाइंदा। साचा बाज़ इक्को एक, आदि जुगादि रखाया। बाज़ पकड़ी गोबिन्द टेक, टेक गोबिन्द पुरख अकाल धराया। कलिजुग अन्तिम धार भेख, अवल्लड़ी चाल जणाया। जोत शब्द इक्को हेत, हितकारी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाज़ इक उडाया। साचा बाज़ लए अंगड़ाई, आपणा बल धराईआ। गोबिन्द पृथ्मी आकाश तेरे नालों ना होए जुदाई, तेरी उंगली इक्को सोभा पाईआ। पिछले जन्म मैं बणया रिहा शौदाई, आपणे पैर तेरे हथ्थां उत्ते टिकाईआ। मेरी चुंज किसे कम्म ना आई, जिस तेरे चरणां ना सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे मिले वधाईआ। वेले

अन्त बाज़ होया शरमसार, गोबिन्द अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं मेरे नाल कीता प्यार, क्यों नहीं मैनूं आपणा प्यार सिखाइंदा। मैं असमान विच लावां उडार, तेरे चरणां क्यों नहीं मस्तक लाइंदा। बिन तेरे होवां ख्वार, दर नज़र कोए ना आइंदा। मैं सुणया तूं ग़रीबां दा यार, निक्कयां बच्चयां माण दिवाइंदा। मेरे नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, जिन्हां नेत्रां नाल आपणी ख़ाक उडाइंदा। वेखीं मुड़ के मेरे नाल एवें ना करीं प्यार, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। मैनूं आपणे चरणां दी देवीं सच्ची छार, मस्तक टिक्का इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाज़ आपणी आप समझाइंदा। गोबिन्द कहे सुण बाज़, बाज़ां वाला तैनूं समझाईआ । एस जन्म दा तेरा काज, पंज तत्त वड्याईआ। पीर पैगम्बर साहिब सतिगुरू महाराज, मेहरवान होए सहाईआ। तेरी रखे लाज, मेरा बन्धन पाईआ। सच उडारी धुर दी आवाज़, तेरा खम्ब नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । बाज़ अग्गों चरणी ढठ्ठ, आपणा माण गंवाईआ। गोबिन्द उह वेला दस्स, जिस वेले मेला लएं मिलाईआ। तेरे कोलों फेर ना जावां नठ्ठ, विछोड़ा कोए नज़र ना आईआ। मैं तेरा माणां रस, तूं मेरा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल इक्को इक जणाईआ । गोबिन्द कहे सुण बाज़ मित्र, मित्र प्यारा जणाईआ। हुण तेरा शिकार बटेरा चिढ़ीआं तितर, फिर लख चुरासी वेख वखाईआ। दो जहान तैनूं वेखण बिटर बिटर, तेरा भेव कोए ना पाईआ। तेरा गोबिन्द सच दवारयों आए निकल, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। नाम खण्डा धुर दरगाहों होए सिकल, कारीगर ना कोए बणाईआ। ना कोई सोना रुपा चांदी लाए पित्तल, लोहार तरखाण ना देवे कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ इक्को इक जणाईआ। बाज़ कहे मैं तक्कां राह, इक ध्यान लगाया। वेखीं लख चुरासी ना पाईं फाह, तेरी ओट तकाया। मैं पंछी बेगुनाह, पंखी हो के सेव तेरी कमाया। मैं अक्खीं दर्शन करां आ, निज नेत्र ध्यान लगाया। सिर रखीं ठंडी छाँ, इक तेरी ओट जणाया। तूं पकड़ीं मेरी बांह, दोए जोड़ वास्ता पाया। मेरा पिछला बख़्शीं गुनाह, मैं तेरे सीस उत्ते आपणा आप झुलाया। अन्तिम दोए जोड़ मंगां पनाह, चरण कँवल ध्यान रखाया। वेखीं मैनूं ना देवीं सज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव आपणे विच रखाया। गोबिन्द कहे जगत बाज़, तेरी बाज़ी दए उलटाईआ। गोबिन्द निरगुण हो के करे काज, निरगुण तेरी धार चलाईआ। पुरख अकाल मार आवाज़, दोहां लए मिलाईआ। तूं मेरी वेखी कल्ग़ी मैं तैनूं वखावां ताज, ताज इक्को नज़री आईआ। तूं सदा सुणीं मेरी आवाज़, सच संदेसा दयां जणाईआ। जिन्हां हथ्थां उत्ते रख के तैनूं करया जगत काज, तेरे कोलों आपणा लेखा लवां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साचे बाज़ दए वड्याईआ। बाज़ कहे गोबिन्द दस्स सच, की विच भेद रखाया। मैं तेरे उत्ते रिहा नच्च, आपणा स्वांग वरताया। तूं योद्धा सूरबीर हो के रख्या हठ, मेरा माण वधाया। मैं चौंती साल तेरे चरणां ना गया ढठ्ठ, मूर्ख मुग्ध मूढ़ अख्वाया। कवण वेला मेरा पिछला लेखा दएं कट, कटाकश आपणा नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा खेल जणाया। तेरा पिछला लेखा कटांगा। आपणी करनीयों कदे ना हटांगा। फड़ चरणां उत्ते सट्टांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ इक्को दवारे रखांगा। गोबिन्द बाज़ दोवें नज़र ना आउँदे, हरि शब्दी रूप वटाईआ। पुरख अकाल दा ढोला गाउँदे, वज्जे नाम वधाईआ। भगत भगवान मेल मिलाउदे, घर घर फेरा पाईआ। नाम उडारी इक रखाउदे, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बाज़ गोबिन्द दए जणाईआ। गोबिन्द बाज़ पहली चेत्र देवे दस्स, कवण रूप वटाईआ। चौथी मंज़ल जाए ढठ्ठ, चढ़ चरणां सीस निवाईआ। मेरा पिछला लेखा कट, अग्गे दुःख रहे ना राईआ। प्रेम प्यार दी मार चपट, झपट इक्को इक दरसाईआ। बिन ढाहयां जावां ढठ्ठ, जित तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत बाज़ रखे लाज, गुरमुख साचे माणस रूप वटाईआ।
१०४६ ९३ जीवण विच बदले जीवण, जीवण युगत वड्याईआ। नाम रस अमृत पीण पीवण, पी पी खुशी वखाईआ। सरनाई सदा थीवण, माण अभिमान मिटाईआ। चरण कँवल गुर साचे नीवण, निउँ निउँ लागण पाईंआ। साचा बीज नाम बीवण, पत्त डाली फुल महकाईआ। नाता तुटे साढे तिन्न हथ्थ सीमन, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला दुःख मेट करे सुरजीत, सरजीत प्रभ चरण होए अतीत, त्रैगुण तीनों ताप रहिण ना पाईआ।

❇ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह किरकी पूना ❇

हरि नाम कहे मेरी होई ख्वारी, कल सार किसे ना पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी यारी, सच प्यार ना कोए रखाईआ। तेरी भुल्ली प्रभू सिक्दारी, भय सीस ना कोए रखाईआ। मेरी लए ना कोए खुमारी, जगत वासना रस वड्याईआ। मैं बैठा बंद कवाड़ी, मेरा कुण्डा ना कोए खुल्हाईआ। जगत जीव खेलण खेल नव दवारी, आप आपणा रंग रंगाईआ। जिध्धर वेखां रैण अँध्यारी, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। कर किरपा तेरे चरण जावां, बलिहारी, बल आपणा आप धराईआ। साचा मन्दिर वसा अटारी, मेहर नज़र उठाईआ। बण वणजारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, दर इक्को मंग मंगाईआ। नाम कहे मेरा कोई ना कम्म, नकम्मा नज़री आइंदा। कोई ना सुणे राग कन्न, ध्यान ध्यान ना कोए वखाइंदा। जे साहिब मैं तेरे घर प्या जम्म, क्यों मैथों मुख छुपाइंदा। आ वेख मेरे भगवन, मैं तेरा राह तकाइंदा। सृष्ट सबाई होई नादान, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। लोकमात करे ना कोए पहचान, बेमुख जीव नज़री आइंदा। मेरे पिच्छे तैनूं आवे हाण, तेरी सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, चरण कँवल आस रखाइंदा। नाम कहे मैं गया लुट्ट, हट्ट नज़र ना आईआ। मैनूं कोई ना कहे तेरा पुत्त, माण ताण ना कोए वड्याईआ। तूं डूँघी कन्दर दित्ता सुट्ट, अन्दर मिलण कोए ना आईआ। मैं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां ल्या पुच्छ, अन्तिम मिलो आपणे साक सज्जण भैण भाईआ। जेहड़े सीस नवाउदे रहे झुक, किधर गए पांधी राहीआ। जिन्हा चिर ना पवें उठ, प्रभ आपणा बल धराईआ। किरपा कर ना फड़ें गुट, आप आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, देवणहार इक गुसाईंआ। हरि नाम कहे मेरी खुस्सी पूंजी, ख़ज़ाना नज़र कोए ना आईआ। तूं सन्तां हथ्थ दिती कुंजी, कलिजुग सन्त धीआं भैणां रहे हंढाईआ। कूड़ी क्रिया खाण जगत रसना चुंजीं, बत्ती दन्द होए हल्काईआ। मेरी रमज ना जाणे कोए गुझी, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना रुझी, माया ममता नाल मिलाईआ। मेरी निशानी ना किसे बुज्झी, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। ठग्ग चोर यार पावण लुड्डी, गुरमुख बैठे मुख छुपाईआ। सब दी मारी गई बुद्धि, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। क्यों मैनूं बंद कीता काया कुजी, उपर आपणा पर्दा पाईआ। पिछली औध सब दी पुज्जी, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। हुण आपणी जोत कर उग्घी, उदे असत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा जणाईआ। हरि नाम कहे मैं होया हैरान, हैरानगी बंद ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट जीव शैतान, शरअ करन पढ़ाईआ। अन्तर वेखे ना कोई मार ध्यान आपा चीन ना कोए जणाईआ। मेरी करे ना कोई पहचान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। प्रभू मेरे पिच्छे तेरी हो जाऊ बंद दुकान, लोकमात तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। जे सुत्ता रिहों बण अञ्याण, ग़फ्लत आलस निंद्रा इक रखाईआ। मिट जाऊ तेरा निशान, तेरी आण ना कोए रखाईआ। तूं मेरा संदेसा कर परवान, अक्खीं वेख्या हाल रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर आपणा देणा खुल्हाईआ।

१०४७
१३

✻ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह किरकी पूना ✻

हरि नाम तेरा वज्जे नाद, श्री भगवान आप जणाइंदा। मिले वड्याई ब्रह्म ब्रह्माद, लख चुरासी ध्यान लगाइंदा। मेट मिटाए कलिजुग वाद विवाद, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। सृष्ट सबाई ढोला गाए बोध अगाध, आत्म परमात्म आप समझाइंदा। चार वरन बणाए सांझ, सगला संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा आप चुकाइंदा। सच नाम तेरा वज्जे ढोल, सो पुरख निरँजण आप वजाईआ। सच दवारा देवे खोल्ह, नौ खण्ड पृथ्मी दए वखाईआ। निरगुण तोले सरगुण तोल, तोलणहारा फेरा पाईआ। आप चुकाए पड़दा ओहल, दूई द्वैती दए मिटाईआ। घट घट अन्दर जाए मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। साचे नाम तेरी गायण गाथा, जीव जंत पढ़ाईआ। चारों कुण्ट तेरा साका, अकथ कथा समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म होए पूजा पाठा, हवन इक्को इक वखाईआ। घर घर नज़री आए पुरख समराथा, मेहरवान फेरा पाईआ। होए सहाई नाथ अनाथां, दीनन आपणे गले लगाईआ। नाता तोड़ ज़ात पातां, ऊँचां नीचां एका दर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। सच नाम तेरा होए गीत, गोबिन्द आप जणाईआ। घर घर विच मक्का काअबा नज़र आए मसीत, शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर इक्को इक जणाईआ। जीव जंत काया होए ठंडी सीत, मेला तेरा सहिज सुभाईआ। घर नज़र आए अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। हरि नाम प्रभ देवे माण, अभिमान ना कोए रखाइंदा। सति धर्म दा झुल्ले निशान, धुरदरगाही आप झुलाइंदा। वरनां बरनां इक ज्ञान, ढोला इक्को इक जणाइंदा। इक्को दर सर्ब प्रणाम, नमो नमो सर्ब समझाइंदा। इक्को कलमा दस्से कलाम, मेहरवान इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नाम तेरा रंग वखाइंदा। हरि नाम तेरा रंग अपार, पंज तत्त काया चोली दए चढ़ाईआ। घर घर वज्जे नाम शब्द धुनकार, अनहद रागी राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार किनार, माया ममता हउमें हंगता डेरा ढाहीआ। सच वसाए इक दरबार, जिस दर तेरा डेरा लाईआ। दो जहान वज्जे नगार, पुरीआँ लोआँ राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक प्रगटाईआ। नाम प्रगटाए लोकमात, निरवैर पुरख दया कमाईआ। जन भगतां देवे आपणी दात, दाता दानी झोली पाईआ। कलिजुग अन्तिम पुछे वात, बेपरवाह होए सहाईआ। चार वरन बणा इक जमात, करे सति पढ़ाईआ। तेरी पुछणहारा वात, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती नूर करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा गाए तेरी गाथ, सुरप्त

इन्द दर दर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम लए प्रगटाईआ। साचा नाम प्रगटाए श्री भगवान, सतिजुग साचा माण रखाइंदा। पंज तत्त ना कोए प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाइंदा। नज़री आए श्री भगवान, दूजा इष्ट ना कोए रखाइंदा। ढोला गाए जीव जहान, सोहला तेरा नाम सुणाइंदा। सोहँ शब्द कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपाइंदा। साचा नाम उपाए आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। लख चुरासी जीव जंत इक्को जाप, जीवण युगत जणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर होए पूजा पाठ, दूजा नगर ना कोए वसाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वखाए तीर्थ ताट, सच सरोवर इक नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंत्र इक्को इक उपजाइंदा। सच नाम तेरा मंत्र मात, श्री भगवान आप उपजाईआ। पिछला लेखा चुके गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान आपणी झोली पाईआ। सति धर्म दा इक्को पाठ, निरगुण सरगुण दए दृढ़ाईआ। घर घर होवे पारब्रह्म ब्रह्म पूजा पाठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरि नाम होए बलवान, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाण, अजपा जाप आपणी कार जणाइंदा। आत्म धुन राग सुणाण, मधर रस इक्को इक वखाइंदा। जोती नूर जलवा महान,
१०४६ शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। चार कुण्ट जणाए धुन्कान, दहि दिशा राग अल्ह़ाइंदा। डंका वज्जे दो जहान, ज़िमीं असमान १०४६
१३ भेव खुल्ह़ाइंदा। गगन मण्डल सारे गाण, पुरी लोअ राग अल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १३
साचा वर, इक्को नाम इक्को इष्ट, इक खुल्ह़ावणहारा दृष्ट, सृष्ट लेखा इक चुकाइंदा।

❇ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे गृह किरकी पूना ❇

हरिनाम तेरा होए जस, सार शब्द मिले वड्याईआ। सरगुण होवे तेरे वस, तेरी ओट तकाईआ। तेरा मिले इक्को रस, दूजा रस नज़र ना आईआ। भगतां मिलावा हस्स हस्स, श्री भगवान आप कराईआ। तेरी धार कर प्रगट, प्रगट दए वखाईआ। तेरा खोल्ह़े सच्चा हट्ट, बण हटवाणा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दए वड्याईआ। सच नाम तेरा तुले तोल, सतिगुर पूरा आप तुलाईआ। तेरा दवारा देवे खोल्ह़, ग़रीब निवाजा होए सहाईआ। वरन बरन वज्जे ढोल, जीव जंत करे शनवाईआ। भगत भगवन्त वसे कोल, मेल मिलावा एका थाईंआ। तूं रहिणा अन्त अडोल, तेरा बेड़ा दए चलाईआ। तेरी वस्त अनमोल, गुरमुखां आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। हरिनाम तेरा चढ़े रंग, रंग सतिगुर आप रंगाइंदा। हरिनाम तेरा वज्जे मृदंग, परमेश्वर आप वजाइंदा। हरिनाम तेरा उपजे छन्द, हरि सतिगुर ढोला गाइंदा। हरिनाम तेरा मिले अनन्द, हरि सतिगुर अनन्द वखाइंदा। हरि नाम तेरा चढ़े चन्द, हरि सतिगुर आप चमकाइंदा। हरिनाम तेरी पूरी होए मंग, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सूरा सरबँग तेरा दर वड्याइंदा।

❈ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह किरकी पूना ❈

हरि नाम तेरी साची रीत, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। जन भगतां बन्नृ सच प्रीत, प्रीतीवान आप समझाइंदा। तेरा ढोला गायण गीत, सोहला इक्को इक वड्याइंदा। तेरा गृह मन्दिर मसीत, गुरूदवारा इक वखाइंदा। सो खेड़ा होए पतित पुनीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धार वड्याइंदा। हरिनाम कहे मेरे भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं बाला नढ्ढा बाल अञ्याण, चले ना कोए चतुराईआ। कलिजुग भुल्ले जीव जहान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ होए हैरान, वैरी घर घर नजरी आईआ। तेरा मिले ना सच निशान, धुर निशान ना कोए झुलाईआ। काग़ज़ कलम शाही लिखणहारी नैण शरमाण, नेत्र रोवे मारे धाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ता मात ब्यान, आप आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन मिले न कोए वड्याईआ। श्री भगवान कहे सति, सति सति दृढ़ाइंदा। इक्को नाम होए प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आप प्रगटाइंदा। सतिजुग खुल्हाए साचा हट, घर इक्को इक वखाइंदा। भगतां बज्झे साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। सृष्ट सबाई आवे इक्को मति, मनमति मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे नाम तोहे वड्याइंदा। हरिनाम कहे मैं निक्का बाला, नज़र किसे ना आइंदा। काया वड़या डूँग्घी धर्मसाला, बंद कवाड़ी कुण्डा कोए ना लाहइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोटन कोटि हथ्थां नाल फेरदे माला, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। त्रैगुण माया कोए ना तोड़े ताला, गृह मन्दिर खोज ना कोए खोजाइंदा। मैं कलिजुग अन्तिम होया बेहाला, बिहबल बहि बहि वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। श्री भगवान हो मेहरवान, सच नाम दृढ़ाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग सति होए प्रधान,

मिले तैनूं माण वड्याईआ। भगत तेरा ढोला गाण, होर करन ना कोए पढ़ाईआ। साचा मन्दिर सोहे सच मकान, सच दुआर इक खुल्हाईआ। जीव जंत साध सन्त लख चुरासी सुणन तेरा फ़रमान, भुल्ल कोए रहिण ना पाईआ। तेरे नाम वज्जे धुन्कान, अनहद रागी नाद सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम तेरा घर दए वसाईआ। हरि नाम तेरा वसे घर, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। निरगुण सरगुण खुल्हा दर, दर दरवाज़ा इक जणाईआ। सन्त सुहेले साचे फड़, तेरा मेल मिलाईआ। निरभउ चुका भय डर, भेव आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निष्अक्खर नाम वक्खर देवणहार वड्याईआ। अक्खर नाम कहे निष्अक्खर दस्स, आपणा भेव खुल्हाईआ। निष्अक्खर कहे अक्खर मेरे वस, जुग जुग बणत बणाईआ। दोहां दा दाता पुरख समरथ, हुक्मे अन्दर फिराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ पाताल आकाश गगन जिमीं असमान विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस गुर अवतार पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ मसायक दस्तगीर इक्को राग अल्हाईआ। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिंद परवरदिगार, प्रगटे हो विच संसार, लेखा सब दा दए मिटाईआ। काग़ज़ कलम शाही नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, समुंद सागर करे पुकार, धरनी धरत धवल उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कन्दर फोल फुलाईआ। इक्को नाम जणाए निशकाम, सोहँ ढोला जगत विचोला आदि जुगादी पारब्रह्म ब्रह्म जणाए आपणा बोला, राग अनाद नाद इक्को इक जणाईआ। त्रैगुण अतीता सच स्वामी होए तोला, नाम कंडा विच ब्रह्मण्डा जेरज अंडा तोल तुलाए थाउँ थाईंआ। दीन दयाल सदा बख़्शंदा, जन भगतां देवे परमानंदा, गुरमुखां रखे सदा ठंडा, अमृत मुख निज दुआर साचा रस धार चुआईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे कन्ढा, प्रगट हो विच वरभण्डा, नाम उठाए साचा खण्डा, तेज़ धार रखाए चण्ड प्रचण्डा, दो जहानां श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना सच मर्दानगी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सति देवे वर, सच नाम वसे घर, घर मन्दिर भगत दुआर कर उज्यार, निरगुण दवारा हरि निरँकारा, निरवैर आपणी कल वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक अवतार, जुग जुग खेल करे अपार, अपरम्पर स्वामी सदा निहकामी, निहचल धाम इक्को इक वसाईआ।

❇ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरबख़्श सिँघ दे गृह किरकी पूना ❇

हरि का नाम गुरमुख वंड, हरि सतिगुर झोली पाइंदा। हरि का नाम गुरमुख ठंड, हरि सतिगुर आप वरताइंदा। हरि

का नाम गुरमुख चन्द, हरि सतिगुर आप चमकाइंदा। हरि का नाम गुरमुख छन्द, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। हरि का नाम गुरमुख बख्शंद, हरि बख्शश आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नाम आप वड्याइंदा। हरि का नाम गुरमुख मेला, श्री भगवान कराईआ। हरि का नाम सज्जण सुहेला, श्री भगवान दए वड्याईआ। हरि का नाम धर्म राए दी कटे जेला, श्री भगवान लख चुरासी फंद कटाईआ। हरि का नाम आत्म परमात्म चाढ़े तेला, श्री भगवान सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। हरि का नाम गुरमुख मीत सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। हरि का नाम गुरसिख रीत, सो पुरख निरँजण राह चलाइंदा। हरि का नाम गुरमुख परखे नीत, सो पुरख निरँजण खोज खुजाइंदा। हरि का नाम गुरसिख गीत सो पुरख निरँजण राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। हरि का नाम गुरमुख रस, हरि पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि का नाम गुरमुख वस, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। हरि का नाम गुरमुख दस्स, हरि पुरख निरँजण भेव खुलाईआ। हरि का नाम गुरमुख घट, हरि पुरख निरँजण आप वसाईआ। हरि का नाम गुरमुख तट, हरि पुरख निरँजण सरोवर इक सुहाईआ। हरि का नाम गुरमुख हट्ट, हरि पुरख निरँजण आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१०५२
१३

आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। हरि का नाम गुरमुख मीत, एकँकारा आप रखाइंदा। हरि का नाम गुरमुख चीत, हरि निरँकारा आप वसाइंदा। हरि का नाम हो अनडीठ, हरि निरँकारा गुरमुखां अन्दर आप टिकाइंदा। हरि का नाम गुरमुख आत्म लए जीत, एकँकारा परमात्म आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाइंदा। हरि का नाम गुरमुख लाल, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। हरि का नाम गुरमुख वखाए सच्ची धर्मसाल, आदि निरँजण अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख बणे दलाल, आदि निरँजण भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। हरि का नाम गुरमुख वेसा, श्री भगवान आप धराइंदा। हरि का नाम गुरमुख देसा, श्री भगवान आप सुहाइंदा। हरि का नाम गुरमुख नेता, श्री भगवान नरेश इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। हरि का नाम गुरमुख सागर, अबिनाशी करता दए जणाईआ। हरि का नाम गुरमुख भाग लगाए काया गागर, श्री भगवान होए सहाईआ। हरि का नाम गुरमुख सौदागर, श्री भगवान हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। हरि का नाम गुरमुख प्यार, पारब्रह्म प्रभ आप कराइंदा। हरि का नाम गुरमुख श्रृंगार, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। हरि

का नाम गुरमुख भण्डार, पारब्रह्म प्रभ आप वरताइंदा। हरि का नाम गुरमुख यार, पारब्रह्म प्रभ बणत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप मिलाइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख धर्म, ब्रह्म आपणा भेव जणाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख कर्म, ब्रह्म वेखे थाउँ थाईंआ। हरि का नाउँ गुरमुख वरन, ब्रह्म वंड ना कोए वंडाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख मृदंग, शब्दी नाद वजाइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख अंग, गुर गुर आपणी गोद सुहाइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख मेटे पन्ध, दूर दुराडा नेरन नेरा नजरी आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, इक्को नाम गुरमुखां काया मन्दिर आप टिकाइंदा।

❇ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी मल सिँघ, सन्तोख सिँघ ओम प्रकाश सकन्दराबाद ❇

भगतां अग्गे सीस रिहा झुक, श्री भगवान आप झुकाईआ। नव नौ चार जो रिहा लुक, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। उज्जल करे मात मुख, देवणहार वड्याईआ। लेखा जाणे मात कुक्ख, जन जननी वेख वखाईआ। सच सुहाए आपणी
१०५३ १३ रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। दया कमाए अबिनाशी अचुत, चेतन दए कराईआ। जुग जन्म जो बैठे रुस्स, फड़ १०५३ १३
बांहों लए मिलाईआ। ठाकर स्वामी इक्को तुठ, दीनन दए वड्याईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस इक्को इक वखाईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। लोकमात दा बूटा पुट्ट, सचखण्ड दए टिकाईआ। इक वखाए साचा कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा पूरा करे शौक, शहिनशाह आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सीस झुकाईआ। जन भगतां बणे गोबिन्द सैण, प्रभ आपणी खेल कराइंदा। प्रगट हो नर नरायण, निरवैर आपणा फेरा पाइंदा। सच दवारे हरि निरँकारे बणया साक सज्जण सैण, सगला संग निभाइंदा। पूरब जन्म दा चुकावण आया लहिणा देणा, अगला लेखा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराइंदा। सीस झुके भगत दवारे, भगवान आप झुकाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपारे, अगम्म अगोचर आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारे, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। एकँकारा कर पसारे वेखणहारा थाउँ थाईंआ। आदि निरँजण नूर उज्यारे, जोती जोत जोत जणाईआ। अबिनाशी करता हो ख़बरदारे, बेख़बर आप सुणाईआ। श्री भगवान दए हुलारे, हुलारा इक्को इक जणाईआ।

पारब्रह्म प्रभ बण सेवादारे, साची सेवा इक कमाईआ। चल के आया विच संसारे, निरगुण जोती जाता वेस वटाईआ। भगत भगवन्त आप उठाले, फड़ बांहों लए जगाईआ। साचा मार्ग इक वखाले, पिछली रीती दए मुकाईआ। नाता तोड़े शाह कंगाले, शहिनशाह इक्को इक दरसाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छे हाले, आपणा अहिवाल दए समझाईआ। शब्द अगम्म वजाऐ ताले, तुरिया बैठी नैण शरमाईआ। प्रगट हो पुरख अकाले, अक्ल आपणी रिहा वखाईआ। अन्दर बाहर चले नाल नाले, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सीस झुकाईआ। भगतन कहिण वेखो अक्ख, हरि आपणी खेल रचाइंदा। जेहड़ा गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मार्ग रिहा दस्स, सो ग़रीब निमाणयां दर दर अलख जगाइंदा। जिस दे अग्गे चले ना किसे दा कोई वस, सो बेबस हो सेव कमाइंदा। दर्शन करीए हस्स हस्स, हँस मुख वेख वखाइंदा। बण निमाणा श्री भगवान निरगुण दाता चरणी रिहा ढठ्ठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। भगत दवारे हरि जगदीश, आपणा सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, अग्गे चक्की ना कोए वखाईआ। भगतो इक्को सिखो मेरी हदीस, कलमा अवर ना कोए पढ़ाईआ। दो जहानां वाली ताज सुहाए एका सीस, राजन राज वड वड्याईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट आपणा डेरा लाईआ। कलिजुग अन्तिम रिहा बीत, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। सतिजुग साची चले रीत, रीतीवान आप जणाईआ। इक्को ढोला रल मिल गाउणा गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। हरि का भगत ना जाए मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ कम्म किसे ना आईआ। प्रभ दिवस रैण नज़री आए अतीत, घर घर आपणी जोत करे रुशनाईआ। दस्सणहारा निशाना ठीक, नाम निधाना तीर चलाईआ। चरण कँवल बंधाए प्रीत, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवणहार वड्याईआ। भगत कहिण उठो लओ भज्ज, श्री भगवान रिहा जणाईआ। पिछली करनी सारे दयो तज, सुगंध इक्को वार खाईआ। पारब्रह्म दी साची सेजा चढ़ो भज्ज, सति सतिवादी रिहा वखाईआ। दर्शन करो रज्ज रज्ज, बिन नैणां नैण मिलाईआ। बिन मकक्यों काअबिउँ करो हज्ज, हुजरा साचा दए सुहाईआ। किरपा निधान दर आपणे रिहा सद्द, सद्दा इक्को नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया छड्डो हद्द, माया ममता रिहा मिटाईआ। अमृत जाम पीओ मध, कूड़ी मध रसन ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। झुकया सीस भगत दुआर, श्री भगवान खेल कराइंदा। निरगुण हो के आया परवरदगार, जलवा नूर नूर धराइंदा। ठांडा खोल्ह इक कवाड़, दो जहान भेव खुल्हाइंदा। इकठ्ठे कर गुर अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाइंदा। पिछली छड्डो सर्ब गुफ़तार,

गुफ़त शनीद आप जणाइंदा। मन्नो इक एकँकार, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। सारे करन उच्ची पुकार, कूक कूक कूक अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवाना, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत करन परवाना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। प्रभ सदा सदा मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। भगत चरण कँवल करन ध्याना, नेत्र नैण नैण उठाईआ। श्री भगवान मर्द मर्दाना, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत निक्का बाल अञ्याणा, बाली बुध वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगतां देवे दात, भगत वड्याईआ। भगतां बंधाए नात, जगत जणाईआ। भगतां प्याए अमृत बूँद स्वांत, भगतन ठांडा दर वखाईआ। भगतां नज़री आए इक इकांत, भगतां इक्को घर दए वड्याईआ। भगतां बणे पिता मात, भगतां नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। भगत कहिण प्रभ मिल्या एक, एक एक वड्याईआ। जिस सच्ची दस्सी टेक, चरण कँवल सरनाईआ। बुद्धी करी बिबेक, बिबेकी आप जणाईआ। निरगुण हो के करे हेत, सरगुण मेल मिलाईआ। बालां वांगां रहो खेड, बचपन सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वड्याईआ। भगत जन गए उठ, नेत्र नैण उग्घाड़या। श्री भगवान गया तुठ, देवे नाम आधारया। घर घर दर दर लए पुच्छ, बण दरवेश अलख जगा रिहा। गुरमुख बूटा ना जाए सुक्क, बण माली सेव कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखा ल्या। भगत भगवान जुड़या नाता, जोड़ी सच बणाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग चन्द रुशनाईआ। इक सुणाए साची गाथा, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म नाथ अनाथा, दीनन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम दए जणाईआ। भगत जनो साचा नाम सो, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सन्त जनो साचा नाम सो, हरि पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। गुरमुख जनो साचा नाम सो, एकँकारा आप दरसाइंदा। गुरसिख जनो साचा नाम सो, आदि निरँजण हरि रुशनाइंदा। मुरीद जनो साचा नाम सो, परवरदिगार भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंत्र इक्को इक दृढ़ाइंदा। सो कहे मेरी अंस हं, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सो कहे मेरा बेटा ब्रह्म, ब्रह्म वंड वंडाईआ। सो कहे मेरा निर्मल कर्म, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। सो कहे मेरा साचा धर्म, अधर्म ना कोए जणाईआ। सो कहे मेरा साचा वरन, अवरन ना रूप वटाईआ। सो कहे मैं करनी करन, हँ आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ इक्को इक जणाईआ। हँ कहे मेरा सो बाप, चाचा गुरू नज़र कोए

ना आइंदा। जिस रचना रची आदि, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। जिस जुग चौकड़ी वजाया नाद, हँ ब्रह्म समझाइंदा। जिस दा लेखा बोध अगाध, भेव कोए ना पाइंदा। जिस दा अमृत इक स्वाद, अनरस ना कोए वखाइंदा। जो सदा रखे याद, भुल्ल विच कदे ना आइंदा। सो साहिब ग़रीब निवाज़, हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा। सदा सदा सद सुणे फ़रयाद, ग़फ्लत विच ना वक्त लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हँ सोहणा बंस बणाइंदा। सो कहे मेरी साची धार, हँ जणाईआ। हँ बिन ना कोए पसार, विष्न ब्रह्मा शिव रूप ना कोए वटाईआ। बिन हँ ना त्रैगुण प्यार, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। बिन हँ ना नाता जुड़े विच संसार, लख चुरासी रूप ना कोए धराईआ। बिन हँ गुर अवतार ना कोए विचार, ब्रह्म लेखा आप समझाईआ। सो पुरख निरँजण एका शब्द बोल जैकार, सच जैकारा दए लगाईआ। हँ कहे प्रभ इक्को मीता, जिस विच वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर जिस दी रीता, थिर घर शब्दी सुत सुहाईआ। शब्दी सुत खेल अनडीठा, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस कीता सरजीता, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो साहिब आपणे दर वसे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम दए वड्याईआ। सोहँ कहे मैं सच्चा नाम, गुर अवतार आप जणाइंदा। सोहँ कहे मैं धुर फ़रमान, नाम सति मेरा वणज कराइंदा। सोहँ कहे मेरा सच्चा काम, जुग जुग आपणा राह वखाइंदा। सोहँ कहे मेरा सच पैग़ाम, धुर दा कलमा छन्द सालाहइंदा। सोहँ कहे मेरा सच अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। सोहँ कहे मेरा लेखा तमाम, लख चुरासी विच समाइंदा। सोहँ कहे बिन साहिब कोई ना जाणे नाम, विष्नूं मेरे संग सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी धार आप चलाइंदा। सोहँ कहे मोहे चढ़या चा, घर साचे वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण ल्या जगा, चौकड़ी जुग पिच्छों मेरी अक्ख खुल्हाईआ। हरि पुरख निरँजण किरपा कर ल्या मिला, पिछला वछोड़ा पन्ध कटाईआ। एकँकार पल्लू ल्या फड़ा, आप आपणी गंढु पवाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, जुग चौकड़ी अन्धेरा दित्ता मिटाईआ। अबिनाशी करता हो सहा, सहायता करनी आप सिखाईआ। श्री भगवान सच निशान झुला, दो जहानां दित्ता जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लेख लिखा, धुर दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। धन्न भाग होए सचखण्ड नानक निरगुण बणया गवाह, बिन सोहँ गुर अवतार नज़र कोए ना आईआ। मैं वेख्या नैण उठा, गोबिन्द भथ्था तीर चिल्ला दित्ता सुटा, सोहँ मेरा रूप दरसाईआ। मैं आपणा नैण ल्या खुल्हा, चारों कुण्ट ध्यान लगा, पारब्रह्म प्रभ इक्को नज़री आईआ। होए निमाणां चरणी डिगा उच्ची मारी धाह, पिछला दुखड़ा फोल सुणाईआ। मेरे शहिनशाह पातशाह, तुध बिन देवे ना कोए वड्याईआ। मेरा नाँ अक्खरां विच आए लिखा,

निष्अक्खर धार ना किसे जणाईआ। मैं पत्थरां देवां डेरा ढाह, सत्थर सब दा दयां विछाईआ। वक्खरा तेरा रूप दयां वखा, आप आपणी सेव कमाईआ। प्रभ जो तैनूं गए भुला, तेरे नाल दयां मिलाईआ। तूं वी मेरे सिर ते हथ्थ टिका, मैं जावां चाईं चाईंआ। पहलों भगत लवां उठा, जिन्हां लेखा पिछला झोली पाईआ। फड़ बांहों दवारा तेरा दयां वखा, भुलया कोए रहिण ना पाईआ। तूं देवीं आपणे प्रेम दी सच्ची दवा, दुःख कोए रहिण ना पाईआ। जे भुल्ल ग्यों नानक निरगुण सद्द के ल्यावां गवाह, जो तेरा ढोला सोहँ आपे गाईआ। हुण पड़दा उहला रहिणा ना रा, पड़दे सब दे रिहा पड़ाईआ। जे तूं लुक के बैठा रिहों खुदा, तेरी खुदी कम्म किसे ना आईआ। हुण तैनूं रहिण ना देणा जुदा, मुर्शद मुरीदां नाल देणा मिलाईआ। तूं लुक लुक आपणा झट्ट रिहा लँघा, अन्तिम आपणा पड़दा दे उठाईआ। तेरी नक़ाब तैनूं रही शरमा, तेरे नैण ना कोए वड्याईआ। उठ कर किरपा जन भगतां दरस दिखा, पहली चेत्र नेड़े आईआ। अग्गे बीसा मारे धाह, गल पल्लू रिहा पाईआ। किस वेले देवां फाह, लख चुरासी बैठी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मंग इक्को मंग मंगाईआ। सो कहे मैं बणां निमाणा, आपणा माण गंवाईआ। हँ ब्रह्म तेरा खेल महाना, लोकमात वड्याईआ। तख्तों लाहवां राजा राणा, चार कुण्ट कुरलाईआ। दो जहान होवे बेमुहाणा, मलाह बेड़ा
१०५७ पार ना कोए कराईआ। नव खण्ड पृथ्मी होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ भुल्ले १०५७
१३ गाणा, राग ताल ना कोए वजाईआ। करे खेल श्री भगवाना, पूरब लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १३
आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हँ कहे प्रभ तेरी लोड़, दर तेरे ओट तकाईआ। कर किरपा संग साचा जोड़, जोड़ी जुड़े सच्चे शहिनशाहीआ। कलिजुग वेख अन्धेरा घोर, नूर नज़र कोए ना आईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब प्या शोर, साचा शौहर ना कोए मनाईआ। अन्तर विस विख होई कौड़, अमृत रूप ना कोए वटाईआ। आसा तृष्ना माया ममता हउमें हंगता रही दौड़, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। शाह सुल्तानां जीव जहानां जूठा झूठा वध्या ज़ोर, निवण सो अक्खर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, तुध बिन मेरी चले ना कोए वड्याईआ। सो कहे हँ बल धार, तेरा साचा संग निभाईआ। तेरे पिच्छे आप करतार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। दो जहानां बोल जैकार, जै जैकार इक अल्लाईआ। सृष्ट सबाई कर ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाईआ। प्रभ आया सांझा यार, परवरदिगार फेरा पाईआ। आत्म परमात्म करे प्यार, दूजी इच्छया ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेले आण, जगत जुग जन्म विछोड़ा रिहा कटाईआ। ईश जीव दए ध्यान, जगदीश हो सहाईआ। अणयाला

मारे इक्को बाण, तीर आपणा नाम चलाईआ। सन्त सुहेले कर पहचान, भगत भगवान लए मिलाईआ। गुरमुखां देवे साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरसिख वेखे बाल अञ्याण, बांहों फड़ गले लगाईआ। धुर संदेसा देवे आप फ़रमान, साची करे नाम पढ़ाईआ। नज़री आए इक भगवान, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। राग सुणाए एका कान, नाद धुन इक शनवाईआ। घर वखाए इक मकान, काया मन्दिर सोभा पाईआ। जोत जगाए इक महान, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को करे सच पढ़ाईआ। सच पढ़ाई इक्को अक्खर, हरि आखर आप जणाइंदा। बजर कपाटी तोड़े पत्थर, सिला रूप ना कोए वटाइंदा। जगत विकारा लाहे सत्थर, मूँह दे भार सुटाइंदा। नेत्र नीर ना वरोले कोई अथ्थर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक दृढ़ाइंदा। साचा मंत्र सोहँ सो, प्रभ देवणहार माण वड्याईआ। तेरे मन्दिर कर कर लो, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को जिहा जाए हो, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सोहँ शब्द साचा ढोला, सति सतिगुर आप जणाइंदा। सतिजुग बणे मात वचोला, गुर शब्दी सेव कमाइंदा । आप उठाए पड़दा उहला, सनमुख आपणा रूप दरसाइंदा। दिवस रैण वसे कोला, विछड़ कदे ना जाइंदा। प्रेम प्रीती खेले होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाइंदा। काया बदले सरगुण चोला, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। पंच विकार ना पावे रौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ इक्को नाम वड्याइंदा। सोहँ उठ बण मलंग, नाम स्नेहुड़ा हथ्थ फड़ाईआ। दो जहानां लोआँ पुरीआँ लँघ, घर घर नाच वखाईआ । पहलों भगत दवारे जा के लौहणी संग, तेरा पड़दा दए उठाईआ। मिल सखीआं वेख अनन्द, मंगल इक्को इक जणाईआ। तेरा पड़दा ढाहे कंध, दूई विच नज़र ना आईआ। तूं मेरा गावीं छन्द, मैं तेरी करां वड्याईआ। चार जुग मुक्के रंडेपा रंड, कन्त सुहागी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। सोहँ कहे मैं जावांगा। आपणा पड़दा लाहवांगा। भगत दवारे नाम वखावांगा। बिन पैरां धार जणावांगा। बिन हथ्थां खेल वखावांगा। बिन अक्खां वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा हुक्म सीस टिकावांगा। भगत दवारे जाऊँगा। प्रभ तेरा नाम सुणाऊँगा। हँ तेरे नाल मिलाऊँगा। ब्रह्म पड़दा आप चुकाऊँगा। निहकर्मी कर्म कांड ना कोए जणाऊँगा। तेरी सरनी आपणा सीस टिकाऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मार्ग इक्को इक दरसाऊँगा। श्री भगवान दस्से आप, आपणी दया कमाईआ। मेरे भगतां तेरा जाप, तेरा जाप भगत

१०५८
१३

वड्याईआ। लोकमात बणाया साक, नाता इक्को इक जुड़ाईआ। सच सुणा आपणा वाक, वाक्य आपणा दए जणाईआ। मैं चल के आया दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगतो मैनूं रखो पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को इक रिहा जणाईआ। भगत कहिण आ सच मीत, तेरा राह तकाईआ। हँ ब्रह्म रिहा उडीक, नैण नैण उठाईआ। सो पुरख निरँजण कवण वेला करे प्रीत, प्रीतीवान दया कमाईआ। साडा अन्दर बाहर होए ठंडा सीता, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। इक्को ढोला गाए गीत, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया मन्दिर अन्दर नज़र आए मन्दिर मसीत, गुरदवारे गुर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां वचोला जाणा बण, तेरी आस रखाईआ। भगवान कहे मैं भगत वचोला, जुग जुग सेव कमाइंदा। शब्द कहे मैं धुर दा ढोला, श्री भगवान राग अलाइंदा। भगत कहे मेरा पड़दा उहला, बिन तुध ना कोए चुकाइंदा। शब्द कहे मेरा कम्म ना आवे रौला, तुध बिन सार कोए ना पाइंदा। श्री भगवान कहे मैं दोहां दा इक्को मौला, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। दर दुआर करो कौला, करनी करता आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहुड़ा इक्को इक जणाइंदा। साचा कौल

१०५६ करन इकरार, दरगाह साची सीस निवाईआ। शब्द भगत दा बणे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। सतिजुग साची चले धार, १०५६

१३ धरनी धरत धवल वड्याईआ। नज़री आए इक दुआर, मेहर नज़र जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १३

कर, देवदहारा साचा वर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई सतिजुग रंग, हरि साचा आप रंगाइंदा। बिन मंगया झोली पाए मंग, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। साची सेजा सोहे पलँघ, सिँघासण इक्को इक वखाइंदा। आत्म परमात्म आए अनन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, दाता दानी दया कमाइंदा।

हरिसंगत तेरी पूरी घाल, साहिब सतिगुर लेखे लाईआ। पार उतारे बिरध बाल, नौजवान दए वड्याईआ। अन्त पोह ना सके काल, जो जन चरणां सीस निवाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सच्चा रूप, सतिगुर विच समाइंदा। सतिगुर वेखे चारे कूट, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। दहि दिशा नाता जूठ झूठ, गुरमुख विरला नज़री आइंदा। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण कलबूत, पंज तत्त पंच विकारा सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत

माण रखाइंदा। हरिसंगत वेखे बाले नढ्ढे, देवणहार वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे, इक्को प्रीती जणाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बद्धे, दिवस रैण रंग रंगाईआ। ढोले गाउँदे सोहँ छन्दे, गीत गोबिन्द अलाईआ। बाहरों दिसण मनुक्ख बंदे, अन्दर मिल्या प्रभ बेपरवाहीआ। हरिसंगत तेरी प्रीती हरि सतिगुर नाल हंढे, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। गुरमुख सच्चे सीने रहिण ठंडे तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सच प्यार, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाइंदा। हरिसंगत तेरा सच दीदार, सतिगुर वेख वेख बिगसाइंदा। हरिसंगत तेरा सच विहार, सति सतिवादी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेला आप मिलाइंदा। हरिसंगत तुहानूं दित्ता दुःख, दिवस रैण जगाईआ। क्यों, प्रभ वेख के खुश होवे तुहाडा मुख, लख चुरासी धक्का लाईआ। निरगुण बदलया आपणा रुख़, नज़र किसे ना आईआ। कोझे कमले ग़रीब निमाणे गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। जे कोई बाहरों लए पुच्छ, हरि का भेव दस्स ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां कोलों आपणी भुल्ल बख्शाईआ। जन भगत भुल्ल करो मुआफ़, श्री भगवान मंग मंगाइंदा। पारब्रह्म सदा गुसताख़, जुग जुग गेड़ भवाइंदा। नित नवित्त जन भगतां धूढ़ी मंगे ख़ाक, आपणे मस्तक लाइंदा। आप होए अनाथां नाथ, जन भगतां माण दिवाइंदा। आपणे रखे ख़ाली हाथ, गुरमुखां भण्डारे आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। जन भगतो पिछला बख्शो कसूर, बेपरवाह मंग मंगाईआ। जन्म जन्म दा तुटा ग़रूर, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम मिल्या ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। भगतन विच रिहा भरपूर, आप आपणा आप तजाईआ। इक्को कर के जोती नूर, नूर नूर नाल मिलाईआ। जन भगतां वेखे हाज़र हज़ूर, आपणी हाज़री भगत दुआर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। भगत जनो पिछली भुल्ल, भुल्ल ना कोए रखाईआ। साहिब सच्चे दी तुसीं कुल, कुलवन्ता होए सहाईआ। अन्तिम पाए कीमत मुल्ल, करता आप चुकाईआ। लोकमात रहिणा अडोल, सके ना कोए डुलाईआ। तुहाढे अन्दर रखी वस्त अनमोल, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। हँ ब्रह्म अतुल अतोल, कंडा आपणे हथ्थ रखाईआ। हो निमाणा अन्दर गया मौल, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। तुहाडा करे भार हौल, सिर आपणे आप उठाईआ। गोबिन्द नाल कीता कौल, कलिजुग अन्तिम पूर कराईआ। सम्बल नगर नज़र ना आए उपर धौल, धरनी मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान भगवान

१०६० १३

भगत दोहां दा इक्को घर वखाईआ। पूना संगत पुनहि प्रणाम, परम परम वड्याईआ। प्रीतम प्रीतम पूरा काम, पुरख पुरख शनवाईआ। शब्द शब्द मिले दान, भगत भगत समझाईआ। गुरमुख गुरसिख सदा बाल अञ्याण, पिता पुरख वेखे चाईं चाईंआ। सब दा लेखा होया परवान, दर मिले माण वड्याईआ। जिस जन सोहँ ढोला गाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिस आपणी गोद बहाईआ। सम्मत वीह सौ उन्नी दा रहे निशान, सच निशाना आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवन्त बन्ने लड़, जड़ आपणी हथ्थीं लाईआ। हार कहिण असीं फुल डाली पत्त, पतिपरमेश्वर तेरा ध्यान लगाईआ। बनास्पत दे ब्रह्म मति, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। हरिसंगत रख सिर दे हथ्थ, मेहर नज़र उठाईआ। तेरी महिमां गायण पुरख समरथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। असीं रल के नाल पईए वस, घर इक्को नज़री आईआ। चरण कँवल सरनाई ढठ्ठ, आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा सत्थर लईए घत, दूजी सेज ना कोए हंढ्ढाईआ। फुल्ल कहिण कली कली कल बणया हार, कलिजुग मिली वड्याईआ। भगतां कीता सच प्यार, हरिसंगत रूप वटाईआ। हरिसंगत पिच्छे असां कीता तेरा दीदार, नेत्र नैण खुशी मनाईआ। बख्शणहारे बख्श सच प्यार, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। हरिसंगत तेरे गल दा बण जाए हार, आपणा माण ताण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, फूलणहार हरिसंगत अन्तर आत्म प्यार, दो जहान विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ।

पूने दी हरिसंगत निशानी, सतिगुर पुरख मनाया। सृष्ट सबाई दिसे फ़ानी, बिन सतिगुर लेख कम्म कोए ना आया। अन्तिम कीमत पए ना पैसा धेला दवानी, जन भगतां हरि जू आपणे कंध उठाया। चरण कँवल दे ध्यानी, राए धर्म फंद कटाया। सच दरबार रहे सच निशानी, सतिजुग साचा माण दिवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए वसाया।

❇ ❇ ❇ ❇ ❇

१०६१
१३